INDIA TODAY
1990 Jan-Mar

G K V LIB
HARDWAR

078605

COMPILED

078605

विशेषांक

RT-01191

15 जनवरी 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

संपूर्ण समाचार पत्रिका

1990
JAN-MAR

57719
078605

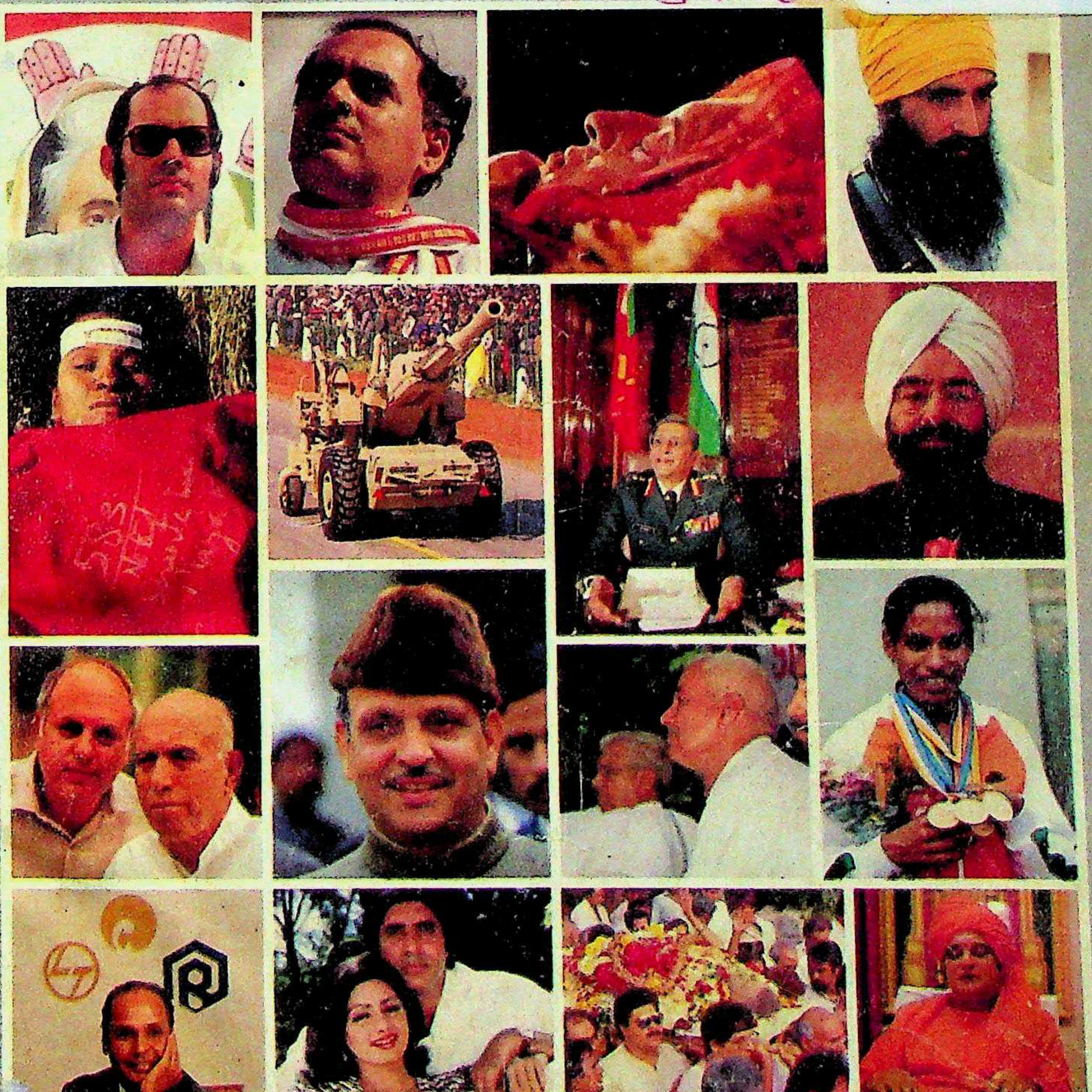

बीता दशक

हिंसा, हंगामा और हार-जीत

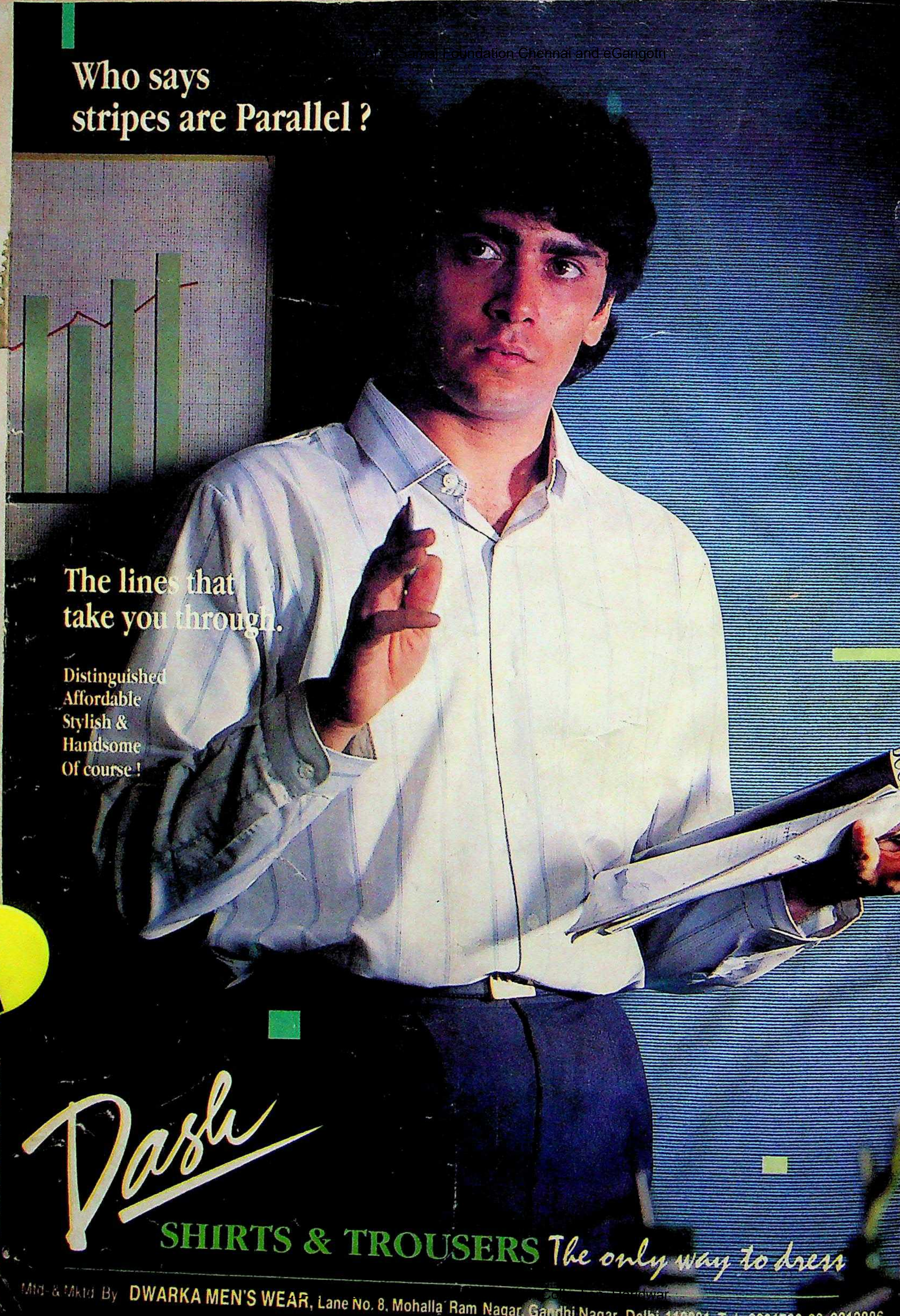

Who says stripes are Parallel ?

The lines that take you through.

Distinguished
Affordable
Stylish &
Handsome
Of course !

Dash

SHIRTS & TROUSERS *The only way to dress*

Mfd. & Mktd. By **DWARKA MEN'S WEAR**, Lane No. 8, Mohalla Ram Nagar, Gandhi Nagar, Delhi-110031. Tel : 2201782-83, 2213886

CC-0 ... Haridwar

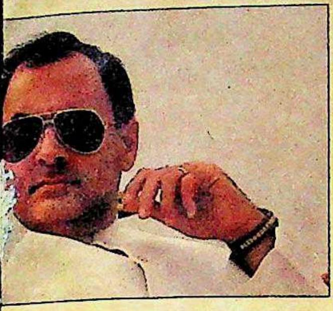

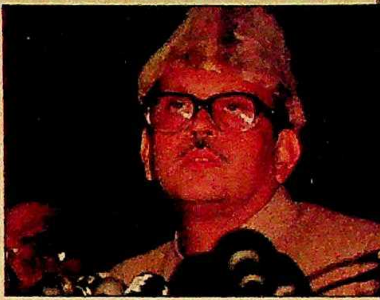

’80 का दशक

शायद ही कोई दशक इतना हंगामाखेज रहा होगा जितना बीता दशक था. अस्सी के दशक में भारत हर तरह के अनुभव से गुजरा. आतंकवाद के कसते शिकंजे का भयावह ख़तरा, सांप्रदायिकता के दानव की विकराल होती छाया और धार्मिक पुनरुत्थानवाद; खेल के मैदान पर सफलताओं की शान, तो विज्ञान के क्षेत्र में उपलब्धियों का गर्व, जीवन पर हावी होता सिनेमा, गलाकाट राजनैतिक प्रतिस्पर्धा और व्यापार का फैलता कारोबार. और इन सबके बीच सबसे उल्लेखनीय रहा भारतीय लोकतंत्र की परिपक्वता का एहसास, भारतीय मतदाता की समझदारी का परिचय.

अगले पन्नों पर

ास रपटें..6
ीता दशक
हिंसा, हंगामा और हार-जीत..........18
ाजनीति..22
र्थव्यवस्था.......................................38
कारोबार..44
उपभोक्तावाद..49
विज्ञान..51
प्रेस जगत..53
सिनेमा..58
टीवी..68
फैशन..74
खेलकूद..78
हिंदी साहित्य..86
चर्चित लोग..90

कॉपीराइट 1987 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. अरुण पुरी द्वारा लिविंग मीडिया इंडिया लि., नई दिल्ली, के लिए प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

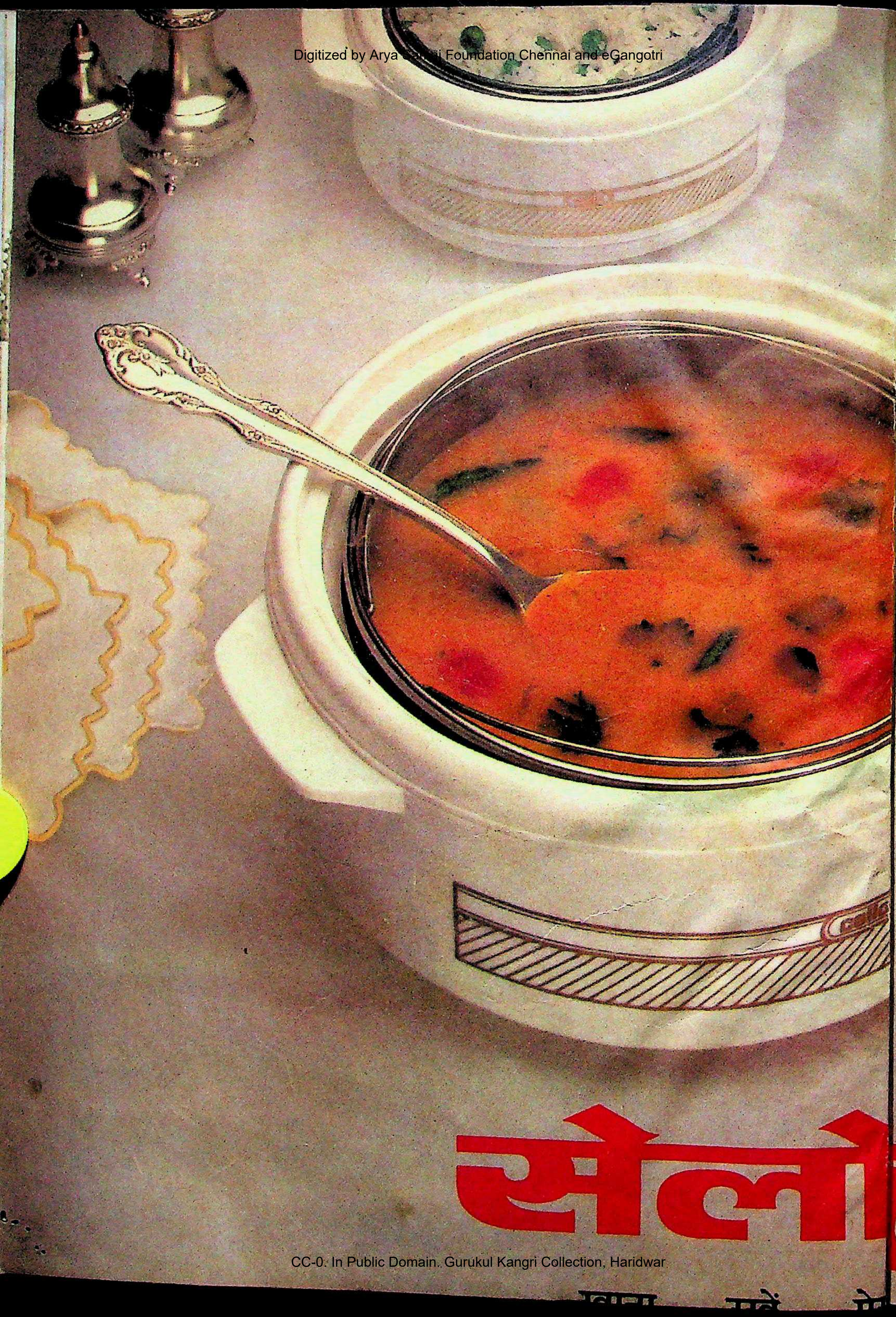
सेलो

आहिस्ता-आहिस्ता सीढ़ी चढ़ते पापा आए. देर से घर आए हैं, पेट में तो चूहे कूद रहे होंगे.

दिन भर का काम. काम की थकान. पर पापा को खाना चाहिए गर्मागर्म मज़ेदार, वरना पेट तो भर जाता है लेकिन उनकी भूख नहीं मिटती. गर्मागर्म खाने के ख्याल से पापा के मुंह में पानी आ जाता है.

रोज़ की तरह पापा ने ब्रीफ़केस रखा, अखबार पटका और धीरे-धीरे डाइनिंग टेबल पर आए. वाह! हैदराबादी दाल... पापा के मनपसंद छौंक वाली. ताज़े मटर का पुलाव. सब गर्मागर्म. जैसे अभी-अभी ही बना हो. मज़ा आ गया ना!

तारीफ़ मां की. तरीक़ा सेलो का. सेलो हॉट-पॉट.

खाने को देर तक गर्म रखने के लिए हॉट-पॉट को पूरा भरें.
५०० मिली; ७५० मिली; ८०० मिली; १,००० मिली; १२०० मिली;
१,५०० मिली और २,५०० मिली की क्षमता में उपलब्ध.

शेफ़

शेफ़ डबल-डेकर

शेफ़ डिटेचेबल

ऑल टाइम हॉट

हॉट ट्रीट

cello®
THERMOWARE

हॉट-पॉट

ituations/CP/47/89

किसी समाचार पत्रिका के लिए एक दशक का समय काफी लंबा होता है, खासकर 'इंडिया टुडे' जैसी अपेक्षाकृत नई पत्रिका के लिए. पत्रिका के 14 साल के जीवन में '80 का दशक पहला पूरा दशक गुजरा है. इस दौरान आश्चर्यजनक तेजी से हुए परिवर्तनों को दर्ज करने की क्षमता हासिल करने के लिए पत्रिका खुद को तैयार भी करती रही. अगर '80 के दशक में देश में बदलाव हुए तो 'इंडिया टुडे' समूह में भी बदलाव आए. इसने 31 संपादकीय सहयोगियों के साथ इस दशक में प्रवेश किया. आज यह संख्या 104 हो गई है. 1980 में इसके अंग्रेजी संस्करण की प्रसार संख्या 1.35 लाख थी. अब यह 3.6 लाख है और साथ ही अंतरराष्ट्रीय संस्करण की 26,000 प्रतियां भी बिकती हैं. साथ ही अब तीन और भाषाओं में इसके संस्करण आ गए हैं—हिंदी (प्रसार संख्या: 2.17 लाख), तमिल (2.70 लाख) और मलयालम (85,000).

'इंडिया टुडे' समूह की प्रगति का श्रेय भी कई मायनों में इस दशक को ही जाता है. इस दौरान ज्यादा से ज्यादा सूचना पाने की पाठकों की भूख बढ़ती गई और नए-नए सामान खरीदने की उपभोक्ताओं की ललक भी तीव्र हुई. पाठक ऐसी पत्रिका चाहने लगा जो बदलाव की ऊंची-नीची गतियों को समझने और उसकी व्याख्या करने में उसकी मदद करे. 'इंडिया टुडे' ने अपने सहयोगियों की संख्या बढ़ाकर, नई तकनीक लाकर और दूसरी भाषाओं में संस्करण निकालकर उस जरूरत को पूरा करने की कोशिश की. संपादकीय कार्यालय अब अत्याधुनिक कंप्यूटरों की मदद लेता है और इसके संवाददाताओं की संख्या 1980 की 5 से बढ़कर अब 26 हो गई है तथा फोटोग्राफरों की संख्या एक से बढ़कर 7 हो गई है.

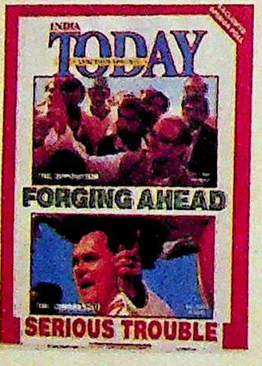

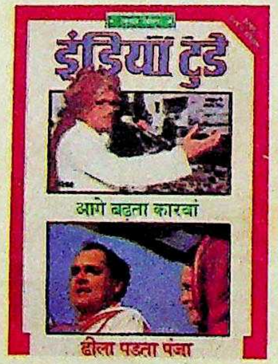

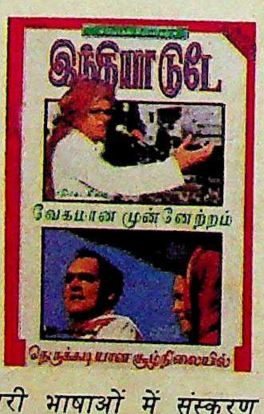

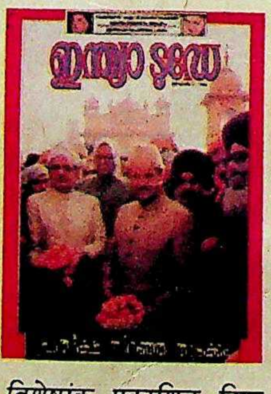

'इंडिया टुडे' के लिए बीता दशक उपलब्धियों का और गौरवान्वित होने का दशक भी रहा. इसके पत्रकारों ने खोजी पत्रकारिता, ग्रामीण विषयों पर लेखन, महिलाओं के मामलों की रिपोर्टिंग और फोटोग्राफी में कई पुरस्कार पाए. पत्रिका ने 1989 में साज-सज्जा और मुद्रण के मामले में एशिया की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका होने का गौरव भी हासिल किया.

दशक आम तौर पर स्पष्ट राजनैतिक नतीजे लेकर नहीं आते. लेकिन बीता दशक इस मामले में भिन्न रहा. इसकी शुरुआत सत्ता में इंदिरा गांधी की शाही वापसी से हुई जिससे देश की पहली गैर-कांग्रेसी सरकार की तकदीर का फैसला हो गया. और इस दशक का अंत सत्ता में विपक्ष की वापसी से हुआ जिससे विश्व में सबसे अधिक टिकाऊ लोकतांत्रिक वंशानुगत शासन के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लग गया. यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि इस दशक की राजनैतिक कथा भारतीय राजनीति के प्रथम परिवार के भाग्य की ही कथा रही. यह परिवार पत्रिका के मुखपृष्ठ पर सबसे अधिक बार छपा. राजीव गांधी (42 बार) से लेकर इंदिरा गांधी (24 बार), संजय गांधी (4 बार) और मेनका (1 बार) तक इस परिवार का हर सदस्य अकेले या संयुक्त रूप से इस दशक में पत्रिका के मुखपृष्ठों पर लगभग एक-तिहाई बार छपा.

बीता दशक सांप्रदायिकता और आतंकवाद के दानवों के हावी होते जाने का भी दशक रहा. बंदूक कानून पर भारी पड़ती दिखी. लेकिन कई सकारात्मक परिवर्तन भी हुए. मध्यम वर्ग इस तरह मजबूत हुआ कि शहरों का चेहरा बदल गया; कला और विज्ञान के क्षेत्रों में भारी परिवर्तन हुए; और उदारता की नीति ने अर्थव्यवस्था और उद्योग को सोते से जगा दिया. यह विशेषांक इन तमाम तथ्यों, परिवर्तनों, उम्मीदों, निराशाओं, गौरव और शर्म के क्षणों, घोटालों, यानी उथल-पुथल भरे दशक के पूरे तेवर को समेटने के प्रयासों का प्रतिफल है.

बीत चुके पूरे दशक में इंडिया टुडे समूह ने सिर्फ तीन विशेषांक प्रकाशित किए—इंदिरा गांधी की हत्या पर (30 नवंबर 1984); पत्रिका के दस साल पूरे करने पर (31 दिसंबर 1985) और 1989 के आम चुनावों पर (31 नवंबर). मुझे उम्मीद है कि यह अंक भी हमारे उन प्रयासों की ही अगली कड़ी साबित होगा जो प्रयास हम पूरे दशक तक करते रहे, यानी पाठकों को उन नाटकीय परिवर्तनों से अच्छी तरह परिचित कराना जिन्होंने '80 के दशक को एक यादगार दशक बना दिया.

पाठको, आपको नए साल और स्फूर्तिदायी अगले दशक की शुभकामनाएं!

अरुण पुरी

Technically, the Best. In Style, the Foremost.

Technically, the Best. In Style, the Foremost.

S-t-r-e-t-c-h!
Hi-tech elastic retains
shape for years !

Super-soft
mercerised
cotton

Exclusives for style and grace.
In attractive colours.

Lightweight fabric, texture,
ideal for tropical climate

Dora®
Trend
COMFORT • QUALITY • STYLE

Ankur/HPT/489

HPTM
H.P. TEXTILE MILLS CALCUTTA • NEW DELHI • BOMBAY • AHMEDABAD • KANPUR

कश्मीर घाटी

विलाप से बगावत तक

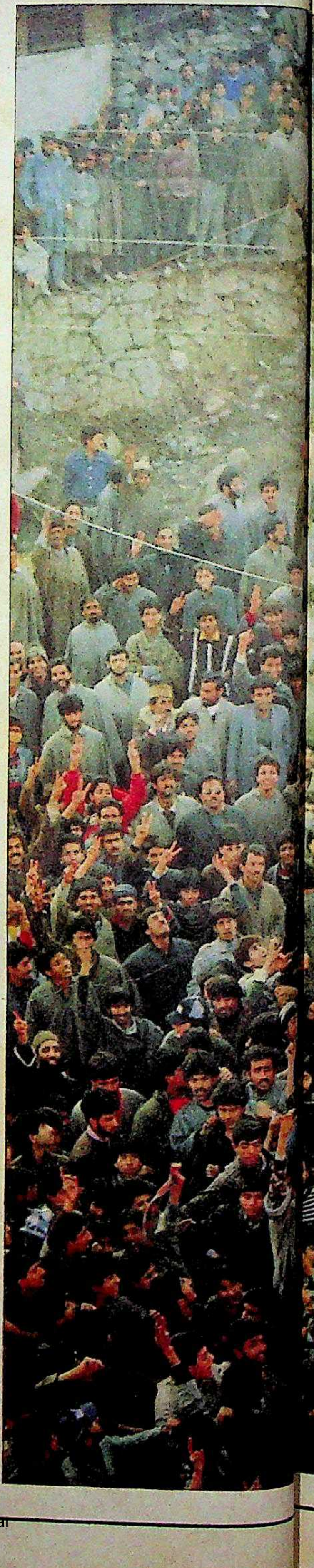

उग्रवाद, अंधी नफरत और रक्तपात की सीढ़ियों के सहारे अलगाववाद की ओर

भीतर घुमड़ता गुस्सा अब हिंसा के लावे के रूप में फूट पड़ा है. पहले युवक बसों पर पत्थर फेंका करते थे, अब वे सरकारी इमारतों पर अत्याधुनिक प्लास्टिक बम फेंक रहे हैं. पहले इन्हें 'नाराज नौजवान' कहा जाता था, अब आदर भाव से 'मुजाहिदीन' (स्वतत्रता सेनानी) कहा जाता है. छह महीने पहले तक हालत यह थी कि श्रीनगर के भीतरी इलाके में मात्र एक पुलिस चौकी काफी होती थी भीड़ को डराने के लिए. लेकिन आज इसके लिए मशीनगनों से लैस बख्तरबंद गाड़ियों की जरूरत पड़ती है. विलाप करती वादियों वाला कश्मीर (देखें इंडिया टुडे, 31 मई 1989) अब उग्रवाद, अंधी नफरत और रक्तपात की सीढ़ियां बड़ी तेजी से चढ़ता हुआ अलगाववादी शिखर की ओर बढ़ चला है.

मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला ने हालात को काबू में करने की हड़बड़ी में पिछले पखवाड़े अपने मंत्रिमंडल और राज्य के अफसरों के विभागों में फेरबदल किया. साथ में यह आदेश भी जारी किया कि उग्रवादियों से सख्ती से निबटा जाए. जहा तक केंद्र का सवाल है, फिलहाल यही लग रहा है कि उसके मुताबिक फारूक सरकार की बरखास्तगी से हालात और भी बिगड़ जाएंगे. लेकिन फारूक के साथ एक बैठक में प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह और गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद ने उन्हें साफ निर्देश दिया कि वे अपने प्रशासन को दुरुस्त करें.

बहरहाल, यह साफ दिख रहा है कि इस राज्य पर राज चलाना असंभव होता जा रहा है. समूची घाटी पुलिस महानिदेशक की देखरेख में है. संकट के समय फारूक ने तो एक बार भी घाटी का दौरा नहीं किया. श्रीनगर, अनंतनाग, बारामूला, सोपोर और

श्रीनगर में कर्फ्यू: ज्वालामुखी

मेराजुद्दीन

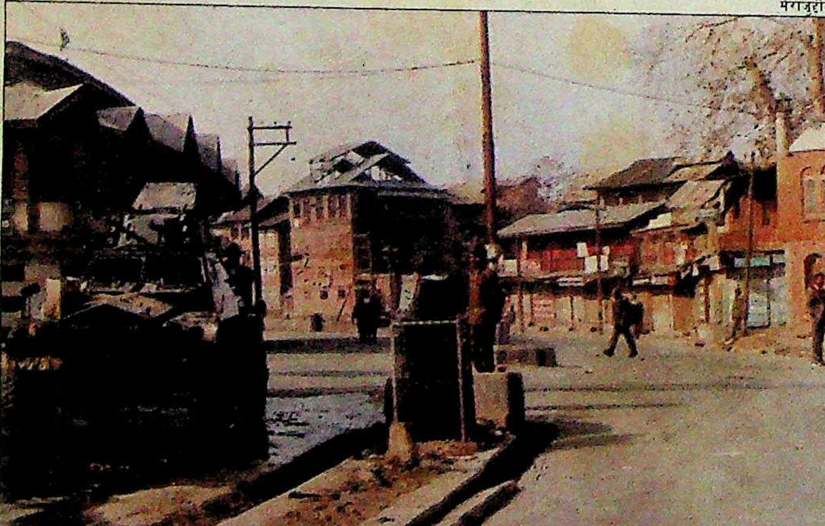

प्रमोद पुष्करणा

शोपियां में कर्फ्यू लगा दिया गया और सेना बुला ली गई. देखते ही गोली मार देने के आदेश के बावजूद एक बैंक लूट लिया गया और कई वारदात हुए. शहर के लाल चौक क्षेत्र के निवासी, 29 वर्षीय निसार दर्जी कहते हैं, ''हम कर्फ्यू या उससे भी बदतर हालत के लिए तैयार हैं. हम मुजाहिदीन के लिए अपनी जान तक कुरबान कर देंगे.''

माहौल पूरी तरह से बगावत का है. मुफ्ती की बेटी के बदले में जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) के पांच उग्रवादियों की रिहाई के दो दिन बाद लोग फ्रंट के झंडे लेकर सड़कों पर निकल आए और उन्होंने भारत विरोधी नारे लगाए.

सत्ताधारी नेशनल कांफ्रेंस ने इन सबके लिए पिछली केंद्रीय सरकार और राज्य सरकार में भागीदार इंका को जिम्मेदार ठहराया. राज्य के कृषिमंत्री मुहम्मद शफी कहते हैं, ''हमने अपने चुनावी वादों को पूरा नहीं किया है. अब क्या सफाई दें?''

लेकिन बहुत से लोग इस तर्क से सहमत नहीं हैं. यहां तक कि सरकार समर्थक भी यह मानते हैं कि यह प्रशासन, जिस पर भ्रष्टाचार और निकम्मेपन के आरोप हैं, अपनी साख खो चुका है. कश्मीर के पूर्व डिवीजनल कमिश्नर और इन दिनों मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव मुहम्मद शफी पंडित कहते हैं, ''हमारे लिए चुनौती महज यह नहीं है कि हम एक निष्पक्ष प्रशासन दें, बल्कि यह भी है कि वह प्रशासन निष्पक्ष दिखे भी.''

यह एक कठिन कार्य है. कश्मीर में राजनैतिक मुख्यधारा जैसी चीज लगभग गायब है. यहां तक कि जो लोग पहले राज्य प्रशासन से सहानुभूति रखते थे, वे अब उसके बिलकुल खिलाफ हो गए हैं. कश्मीर घाटी के धार्मिक मुखिया (मीरवायज़) मौलवी फारूक गुस्से में वह पत्र लहराते हैं जो उन्होंने एमनेस्टी इंटरनेशनल को लिखा था. इसमें पिछले साल हुई 47 मौतों और 50 अन्य गिरफ्तारियों की चर्चा की गई है. वे आगे बताते हैं, ''इस सरकार ने राज करने का हक खो दिया है. हम काफी आगे जा चुके हैं अब लौटना असंभव है.''

सब कुछ उग्रवादियों की योजना के मुताबिक चल रहा है. सेना और अर्द्धसैनिक ब्रलों को 'काबिज फौज' कहा जाता है. 'कश्मीर छोड़ो आंदोलन' के बारे में जो अफवाहें सात महीने पहले सुनी जाती थीं, अब उनकी जगह 'आजाद कश्मीर' की खुली मांग ने ले ली है. सोपोर जाने वाली ऊबड़खाबड़ सड़क पर कुछ बच्चे हाथों में पत्थर लिये पत्रकारों की गाड़ियों को रोकते हैं. उनकी मांग है: वापस जाकर लिखो कि हम आजाद कश्मीर चाहते हैं. जो लोग राष्ट्रीय ध्वज जलाते हुए या भड़काने वाले नारे लगाते गिरफ्तार होते हैं उनकी तारीफ होती है. और जो पुलिस की गोली के शिकार होते हैं, शहीद कहे जाते हैं. श्रीनगर के आसपास की करीब-करीब सभी कब्रगाहों में कम-से-कम एक नई कब्र जरूर है जहां किसी 'शहीद' को दफनाया गया है.

जेकेएलएफ का घोषणापत्र अपने उद्देश्यों के बारे में स्पष्ट है: जम्मू-कश्मीर को पूरी आजादी, इस्लामी जम्हूरियत, कुरान तथा सुन्नाह के अनुसार अल्पसंख्यकों के हितों की

जेकेएलएफ उग्रवादियों की रिहाई से श्रीनगर में जश्न (बाएं); और सशस्त्र उग्रवादी: बढ़ती ताकत

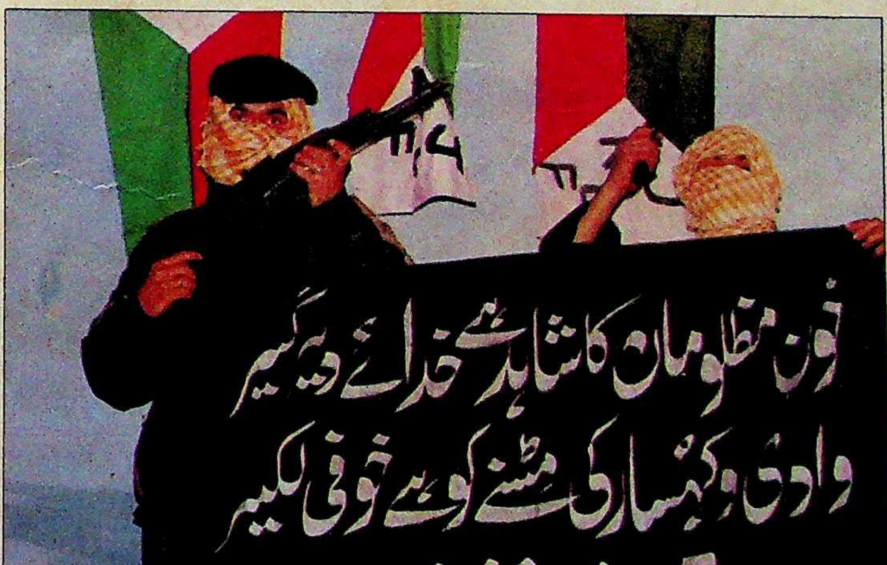

रक्षा, 'इस्लामी समाजवाद' पर आधारित अर्थव्यवस्था और गुट निरपेक्ष विदेश नीति.

समूची घाटी में इस घोषणापत्र पर विस्तार से चर्चा हुई है. 35 वर्षीय मेराज दीन, जो ऊनी कपड़ों की एक दुकान के मालिक हैं, गंभीरतापूर्वक यह चाहते हैं कि स्वतंत्र होने पर एक मुक्त बाजार बने: "दिल्ली और बंबई का कोई बिचौलिया फिर बीच में नहीं होगा." निसार दर्जी की इच्छा है कि आजाद कश्मीर में पहले आम चुनाव संयुक्त राष्ट्र शांति सेना की देखरेख में हों. जनसंचार के छात्र बोहरी कदल के 23 वर्षीय तारिक जोर देकर कहते हैं, "केवल राज्य सरकार बदल देने से कुछ नहीं होगा. हम चाहते हैं कि भारतीय सेना यहां से पूरी तरह चली जाए."

ये सब कहने भर की बातें नहीं उग्रवादियों के फरमान पूरी तरह सुने और माने जाते हैं. घाटी में शराब की सभी दुकानें और बार बंद हो गए हैं. अगला निशाना सिनेमाघर हैं. लोकसभा चुनावों का बहिष्कार काफी हद तक सफल रहा. कई मतदान केंद्रों पर तो एक भी मतदाता नहीं गया. श्रीनगर निर्वाचन क्षेत्र में भूतपूर्व मंत्री

मिलनसार और मृदुभाषी मुफ्ती मुहम्मद सईद गृहमंत्री वाली कठोर छवि के अनुरूप नहीं लगते. लेकिन देश के इस पहले मुसलमान गृहमंत्री को विभिन्न तरह के उग्रवादियों से निबटने में कठोरता दिखानी ही होगी. पद संभालते ही उनकी बेटी के हुए अपहरण का यही तकाजा है. इन्हीं मुद्दों पर वरिष्ठ संपादक ***प्रभु चावला*** *ने उनसे घंटे भर बातचीत की. कुछ अंश:*

शरद सक्सेना

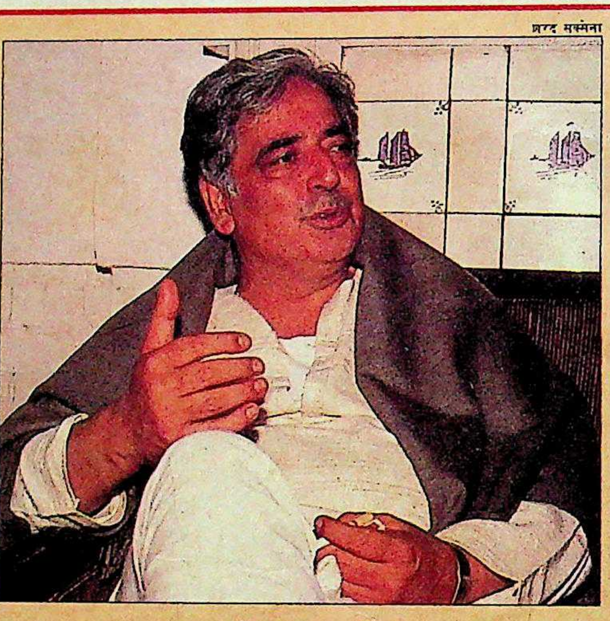

मुफ्ती मुहम्मद सईद

'कश्मीर में प्रशासन नहीं रह गया है'

● ***आपकी बेटी को छुड़ाने के एवज में कश्मीरी उग्रवादियों को रिहा करके क्या सरकार ने उन्हें मजबूत नहीं बनाया?***

यह राज्य सरकार का फैसला था. राज्य मंत्रिमंडल के इस फैसले में मेरा या केंद्र का कोई हाथ नहीं है.

● ***लेकिन रिहाई का मसला सुलझाने के लिए दो वरिष्ठ केंद्रीय मंत्री श्रीनगर भेजे गए थे.***

वे राज्य सरकार को नैतिक समर्थन देने के लिए ही गए थे. इंद्र कुमार गुजराल तो फारूक अब्दुल्ला के दोस्त भी हैं.

● ***आप राज्य सरकार को ऐसा समझौता न करने की सलाह दे सकते थे.***

राज्य सरकार ने इसके लिए एक नहीं, दो बार जबान दी थी. रिहाई कैसे हो, सिर्फ इसी पर बातचीत चल रही थी.

● ***क्या आपको नहीं लगता कि हाल की घटनाएं घाटी में आतंकवादियों का राज कायम होने का संकेत देती हैं?***

कश्मीर उन अनेक विदेशी एजेंसियों का कार्यक्षेत्र रहा है जो इसके भारत में विलय के खिलाफ हैं. लेकिन ऐसी हिंसा राज्य में पहले कभी नहीं हुई. ऐसा पिछले तीन वर्षों के दौरान केंद्र द्वारा राज्य की समस्याओं से पूरी तरह आंख मूंद लेने के कारण हुआ है. राज्य में प्रशासन नाम की कोई चीज नहीं रह गई है और वहां उग्रवादियों का सिक्का ही चलता है.

● ***केंद्र कार्रवाई क्यों नहीं करता?***

राज्य में इंका-नेशनल कांफ्रेंस की निर्वाचित सरकार है. कानून-व्यवस्था की जिम्मेवारी उसी की है. प्रधानमंत्री ने उसे मदद का आश्वासन दिया है.

● ***कश्मीर के लोग हमेशा नाराज ही क्यों रहते हैं? क्या लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर उनका विश्वास नहीं है?***

ऐसा नहीं है. पर घाटी में कभी निष्पक्ष चुनाव ही नहीं हुए. उग्रवादी यह कहकर नौजवानों को बरगला रहे हैं कि बैलट नहीं चला तो अब बुलेट चलाओ. यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है. हमें भारतीय लोकतंत्र पर भरोसा बहाल करने के साथ-साथ कश्मीरी लोगों को राष्ट्रीय मुख्यधारा में भी लाना होगा.

● ***राष्ट्रीय मुख्यधारा से कश्मीर के कृत्रिम अलगाव के लिए क्या धारा 370 जिम्मेवार नहीं है?***

कश्मीर के पूरे देश से भावनात्मक जुड़ाव में धारा 370 बाधक नहीं है. कश्मीरियों को एक अलग समुदाय की तरह देखने वाले नजरिए में बदलाव लाना होगा. हमें प्यार और सख्ती, दोनों की नीति चलानी होगी.

● ***लेकिन दोस्ती का हाथ बढ़ाने की नीति पंजाब में तो असफल रही?***

यह तो नेता की विश्वसनीयता पर निर्भर करता है. केंद्र अपने वादे पूरे करने के मामले में गंभीर नहीं था इसीलिए पंजाब और कश्मीर में असफलता हाथ लगी. प्रधानमंत्री की अमृतसर यात्रा के साथ हमने शुरुआत की है. वे कश्मीर के मामले में भी ऐसा ही कुछ करना चाहते थे. लेकिन राष्ट्रविरोधी तत्वों ने इस योजना पर पानी फेर दिया.

● ***आतंकवादियों से बातचीत चलाने की अपनी नीति और सख्ती चाहने वाली भाजपा और माकपा की नीतियों में आप किस तरह तालमेल बिठाएंगे?***

हम राष्ट्रीय अखंडता के मामले में कोई समझौता नहीं करेंगे. लेकिन बातचीत से शांतिपूर्ण समझौता कर लेने के खिलाफ कोई भी नहीं है.

● ***क्या आप बातचीत के जरिए बाबरी मस्जिद-राम जन्मभूमि विवाद को भी सुलझा लेंगे?***

प्रधानमंत्री के पास इसकी कार्ययोजना है, जिसे वे जल्दी ही जाहिर करेंगे.

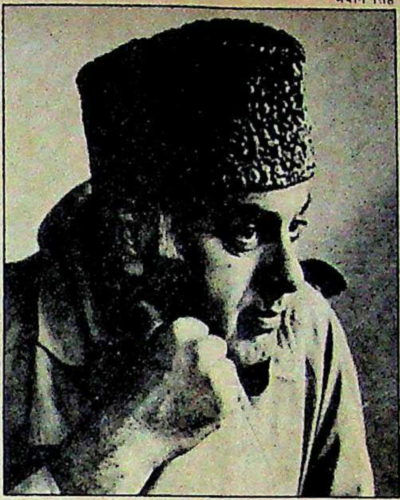

भवान सिंह

फारूक अब्दुल्ला: मुश्किलें बढ़ीं

और डेमोक्रेटिक फोरम के उम्मीदवार रशीद काबुली की जीप में जबरदस्त बम फटने के बाद किसी ने भी नामांकन पत्र दाखिल नहीं किया. काबुली कहते हैं, "लोकतांत्रिक संस्थाओं पर से भरोसा पूरी तरह उठ गया है. अगर केंद्र कोई पहल करे तो उसे सबसे पहले अपनी ईमानदारी का परिचय देना होगा. शुरुआत के लिए मेरा सुझाव है आम माफी की घोषणा."

लेकिन अगर राज्य सरकार को केंद्र से पूरी छूट और उसका समर्थन मिल जाए तो लगता नहीं कि उसका रुख क्षमादान का होगा. धरपकड़ की कार्रवाइयों में कर्फ्यू वाले इलाकों में 400 से भी अधिक लोग गिरफ्तार किए गए. वरिष्ठ अधिकारी इस व्यापक धरपकड़ को न्यायोचित ठहराते हैं. मौलवी फारूक कहते हैं, "अगर जनता उग्रवादियों के साथ है तो सेना किसकी रक्षा में लगी है? और अगर लोग ही सरकार के खिलाफ हैं तो ऐसी सरकार का आखिर औचित्य ही क्या है?"

बड़े पैमाने पर धरपकड़ का एक और बुरा असर हुआ है. वे कट्टरपंथी संगठन भी, जो पाकिस्तान समर्थक नहीं थे, भूमिगत हो गए हैं. ऐसा ही एक संगठन इस्लामिक स्टुडेंट्स लीग है. इसके अध्यक्ष शकील बख्शी, जो पिछले महीने तक जुलूसों में नजर आते थे, अब श्रीनगर के बाहर छिपे बैठे हैं. जेकेएलएफ उग्रवादियों के बिलकुल विपरीत, ये लोग केंद्र के साथ बातचीत करने के खिलाफ नहीं हैं. लेकिन इनके कार्यकर्ताओं के पकड़े जाने के बाद से इनके रवैये में भी अंतर आने लगा है. वे कहते हैं, "मेरे जिन कार्यकर्ताओं को पुलिस ने सताया है, उन्हें समझाना मेरे लिए कठिन होगा."

अगर ऐसा होता है तो कट्टरपंथी संगठनों को अलगाववादी संगठनों से, और मध्यमार्गियों को कठमुल्लाओं से अलग करने वाली बारीक रेखा समाप्त हो जाएगी. और तब सरकार के पास खुद को दोषी ठहराने के सिवा दूसरा कोई चारा न होगा.

—पंकज पचौरी और जफर मेराज़, श्रीनगर में

उग्रवाद

उपेक्षा का नतीजा

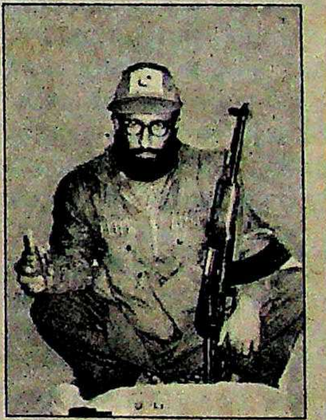

(ऊपर बाएं) अब्दुल शाह; जावेद मीर;
(नीचे बाएं) इंकलाबी; शकील बख्शी

बताते हैं कि एक बार कश्मीर के पूर्व शासक राजा हरि सिंह ने सेना की एक बटालियन में कश्मीरी नस्ल के लोगों को ही भर्ती किया. उसे पहला काम श्रीनगर से जम्मू की ओर कूच करने का सौंपा गया. कमांडर ने रिपोर्ट में कहा कि उनके सभी जवान कूच के लिए तो तैयार हैं पर रास्ते भर पुलिस सुरक्षा चाहते हैं.

मुस्कराते चेहरों वाले कश्मीरी हमेशा से दब्बू और सरकार से खौफ खाने वाले तथा हिंसा से दूर रहने वाले माने जाते रहे हैं. लेकिन आज यह छवि बदल गई है. वर्षों से जोड़तोड़ में माहिर नेताओं द्वारा उपेक्षा के शिकार तथा पाकिस्तान के उकसावे से करीब दर्जन भर उग्र अलगाववादी संगठन खड़े हो गए हैं. इनमें कई अलगाववादी मांगों के साथ उग्रवादी गतिविधियां चलाने वाला जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट भी है और वीडियो पार्लर तथा मयखानों को बम से उड़ाने वाला अल्ला टाइगर्स भी.

पर इनमें प्रमुख जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट ही है जिसकी स्थापना 1965 में पाक अधिकृत कश्मीर में पाक गुप्तचर एजेंसियों की मदद से हुई थी. इसका मौजूदा अध्यक्ष अमानुल्ला खां कभी भी कश्मीर में नहीं रहा है. वह रावलपिंडी से अपना काम करता है. कश्मीर इलाके में इसका नेता एक पूर्व शिक्षक आजम इंकलाबी है जिसका पाकिस्तान में बैठे लोगों से गहरा रिश्ता है. फ्रंट के प्रवक्ता जावेद मीर का भी काफी असर है.

लोगों के बीच असर वाला दूसरा संगठन है पीपुल्स लीग. इसके नेता शबीर शाह ने काफी पैरोकार बनाए हैं. अभी वह जेल में है. अप्रैल में 'इंडिया टुडे' को दी गई भेंटवार्ता में उसने कहा था, "मैं आतंकवाद के पक्ष में नहीं हूं." हाल में जब फ्रंट के उग्रवादियों ने मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी का अपहरण किया था तो उसके बदले में शाह को भी रिहा करने की शर्त न रखना प्रमुख उग्रवादी संगठनों में मतभेद का ही संकेत है.

जांबाज कमांडो, अल फतह, अल्ला टाइगर्स, अल मकबूल मुजाहिदीन और दुख्तराने मिल्लत जैसे नए गुटों के पास कोई ठोस विचारधारा नहीं है. लेकिन ये सभी आजादी की बात और हथियारों की भाषा बोलते हैं. इस्लामिक स्टुडेंट्स लीग के अध्यक्ष शकील बख्शी कहते हैं, "मौका आने पर हम मतभेद भुला देंगे."

आरक्षण विरोधी आंदोलन

नासूर फिर फूट निकला

उत्तर प्रदेश में शुरू हुए आंदोलन की गूंज दूसरे राज्यों में भी, आंदोलनकारी डट गए हैं

चैन से बैठकर सत्ता का रस लूटने वाला कोई भी नेता उत्तर प्रदेश की तूफानी और क्रूर राजनीति में कभी बरकरार नहीं रह सकता. मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव अपने मतदाताओं का शुक्रिया अदा करने के लिए इटावा जाने का समय निकाल पाते, इसके पहले ही पिछले पखवाड़े उन्हें इस कड़वी सचाई से रू-ब-रू होना पड़ा.

गद्दी संभालने के हफ्ते भर के भीतर ही उन्हें अनुसूचित जातियों-जनजातियों के लिए नौकरियों में आरक्षण के खिलाफ आंदोलन के रूप में पहली चुनौती का सामना करना पड़ा. आंदोलन राज्य भर में तो फैला ही, इसने समूचे देश को लपेट में लेकर केंद्र के लिए भारी सिरदर्द बनने का खतरा भी पैदा कर दिया.

आंदोलन इतनी तेजी से फैला कि उत्तर प्रदेश के 62 में से 52 जिले इसकी चपेट में आ गए. हिंसा की आग में 12 लाख रु. मूल्य की रेलवे संपत्ति और 350 वाहन स्वाहा हो चुके हैं. आंदोलनकारियों ने अभी पीछे हटने का कोई संकेत नहीं दिया है जिससे जान व माल की और क्षति की संभावना बनी हुई है. किसी भयावह भूकंप की तरह इसके झटके पड़ोसी राज्यों बिहार और मध्य प्रदेश में ही नहीं लगे बल्कि आंध्र प्रदेश, ओडीसा और जम्मू-कश्मीर भी इससे प्रभावित हुए.

यह विरोध 62वें संविधान संशोधन के बारे में खबर से उठा जिसमें अनुसूचित जातियों-जनजातियों तथा एंग्लो इंडियन समुदाय के लिए संसद और राज्य विधानसभा में आरक्षण की मियाद 10 साल और बढ़ाने को कहा गया है.

8 दिसंबर को इलाहाबाद में छात्रों का एक छोटा-सा गुट प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह और मुख्यमंत्री यादव के खिलाफ नारे लगाने लगा. पहले आंदोलन विश्वविद्यालय बंद कराने तक ही सीमित था. लेकिन दोपहर तक भीड़ बढ़ गई और उसने जी.टी. रोड जाम करके पुतले जलाए.

11 दिसंबर से गृह मंत्रालय के नियंत्रण कक्ष में फोन की घंटी लगातार घनघनाने लगी और वाराणसी, गोरखपुर समेत पूर्वी उत्तर प्रदेश के कई शहरों से हिंसा की खबरें आने लगीं. 15 दिसंबर तक आंदोलन उत्तर प्रदेश के 32 शहरों में फैल गया और 22 दिसंबर तक अनेक जिले इसकी चपेट में आ गए. विभिन्न जगहों पर पुलिस की गोली से चार जानें जा चुकी हैं. रेल की पटरियों पर जगह-जगह अवरोध के कारण राज्य से होकर दिल्ली, बंबई, गोरखपुर, वाराणसी या कलकत्ता जाने वाली कोई रेलगाड़ी समय पर नहीं चल पाई.

सरकार ने हालत सुधारने की दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाया है. लगता है पुलिस सरकार की ओर से सावधानी बरतने के स्पष्ट संदेश के साथ ही ड्यूटी पर निकलती है. आंदोलन की व्यापकता के बावजूद उसने अभी तक मात्र 300 गिरफ्तारियां ही की हैं. हालात बेकाबू होने पर ही उसने जौनपुर, फैजाबाद, मथुरा, गोरखपुर और मेरठ में गोलियां चलाईं.

आरक्षण विरोधी आंदोलन देश के दूसरे हिस्सों में भी फैल जाने के क्रम में जम्मू विश्वविद्यालय के छात्रों ने कक्षाओं का बहिष्कार किया, तो ओडीसा के पुरी में युवकों ने जुलूस निकाला. मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में सरकारी भवनों और संपत्ति को आग लगाने की कोशिश हुई, जबकि भिंड और ग्वालियर में बंद आयोजित किए गए.

इसी तरह बिहार के छपरा और पटना में आरक्षण विरोधी भीड़ द्वारा रेल और रास्ता रोकने के प्रयास में भारी पैमाने पर हिंसा भड़क उठी. राजस्थान के अनेक विश्वविद्यालयों में छात्र सड़कों पर उतर आए यातायात ठप कर दिया. जयपुर में हि छात्रों को दबाने के लिए पुलिस ने बरसाए और आंसू गैस छोड़ी. हैदराबाद वाहनों को रोकने और बसों के टायरों हवा निकालने के आरोप में पुलिस ने 2 छात्रों को गिरफ्तार कर लिया.

आंदोलन की शुरुआत एक गलतफहमी कारण भी हुई. यह धारणा बनाई गई कि सरकार नौकरियों में आरक्षण देने के लि विशेष प्रावधान करने जा रही है. दरअस मौजूदा विवाद की जड़ वह विधेयक सं और राज्य विधानसभाओं की सीटों आरक्षण से ही संबंधित है. जनता दल के क लोगों का मानना है कि यह आंदोल राजनीति से प्रेरित है जिसका मकसद उ राज्यों में इंका को फायदा पहुंचाना है, ज इस साल के शुरू में विधानसभाओं के चुना

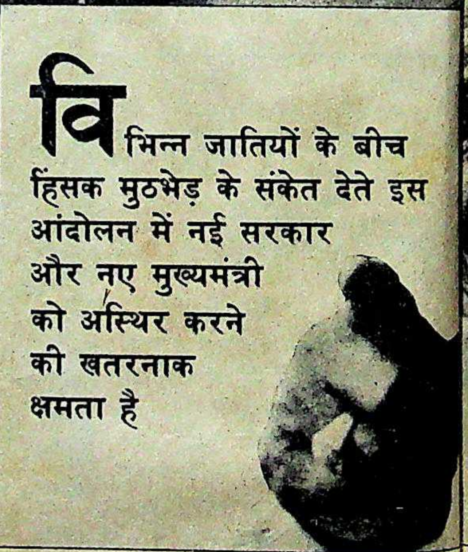

विभिन्न जातियों के बीच हिंसक मुठभेड़ के संकेत देते इस आंदोलन में नई सरकार और नए मुख्यमंत्री को अस्थिर करने की खतरनाक क्षमता है

आर. के. गुप्ता

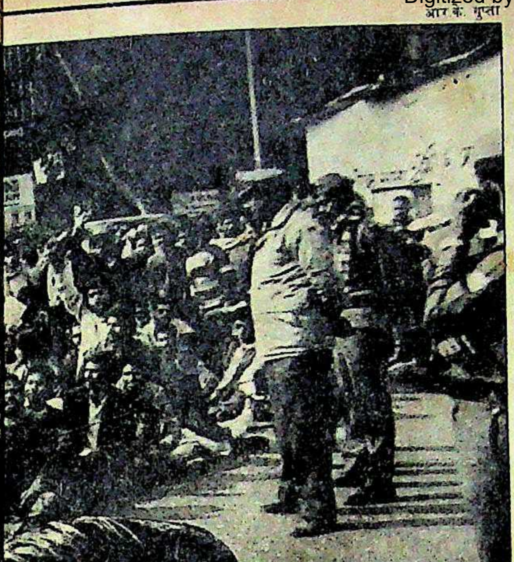

आर. के. गुप्ता

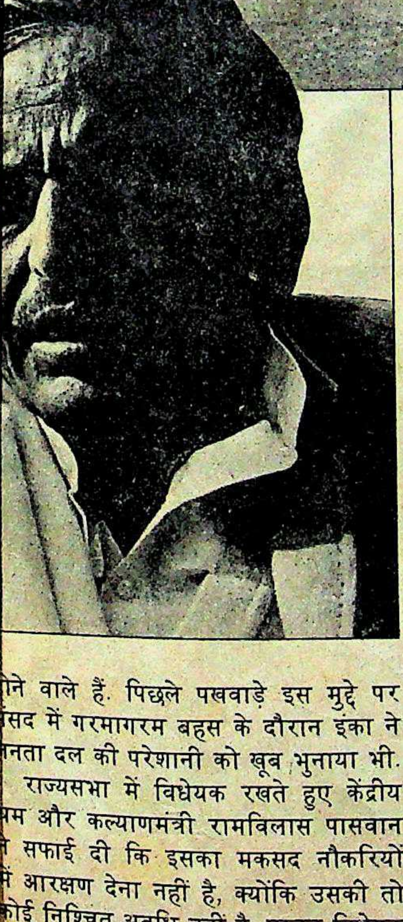

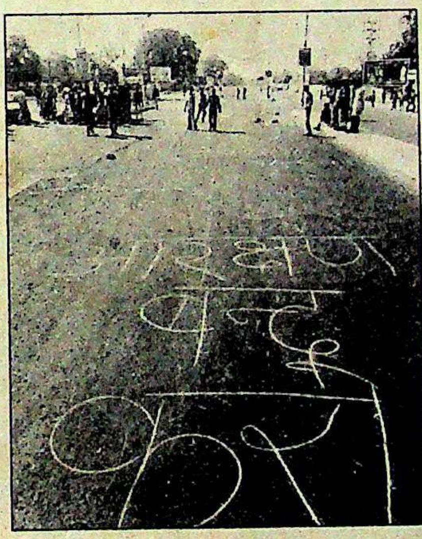

(ऊपर बाएं से) लखनऊ में रास्ता जाम; पथराव करते आंदोलनकारी; यादव; और जयपुर की सड़क पर लिखा नारा

नए मुख्यमंत्री ने इंका पर आंदोलन को हवा देने का सीधा आरोप भले ही नहीं लगाया है लेकिन उनकी अध्यक्षता में राज्य जनता दल की हुई बैठक में कहा गया है, "हाल के चुनावों में सत्ता से हटाए गए लोग ही इस आंदोलन के पीछे हैं."

राज्य इंका महासचिव रमेश दीक्षित इसका खंडन करते हुए कहते हैं, "जनता दल इसका दोष कांग्रेस के मत्थे मढ़ रहा है क्योंकि उसमें भाजपा को दोषी ठहराने की जुर्रत नहीं है." उधर, भाजपा का दावा है कि वह जातिगत आधार पर आरक्षण प्रणाली के लिए वचनबद्ध है. उसका आरोप है कि इस आंदोलन को इंका ने उकसाया है.

आंदोलन में इंका के शामिल होने के आरोपों का जवाब देते हुए पूर्व मुख्यमंत्री तिवारी कहते हैं, "क्या हम बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश जैसे इंकाशासित राज्यों में भी आंदोलन को हवा दे रहे हैं?" लेकिन बस्ती के जगदंबिका पाल और इलाहाबाद के प्रमोद तिवारी तथा अशोक वाजपेयी जैसे कुछ पूर्व मंत्रियों की आरक्षण विरोधियों से सांठगांठ की खबरों को झुठलाया नहीं जा सकता.

यादव बार-बार घोषणा कर रहे हैं कि उनकी सरकार मंडल आयोग की सिफारिशें लागू करने के वादे से पीछे नहीं हटेगी. कई लोगों का मानना है कि यादव ने आनन-फानन में ढेर सारे वादे करके खुद अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार ली. शुरू में यादव ने कड़ा

होने वाले हैं. पिछले पखवाड़े इस मुद्दे पर संसद में गरमागरम बहस के दौरान इंका ने जनता दल की परेशानी को खूब भुनाया भी.

राज्यसभा में विधेयक रखते हुए केंद्रीय श्रम और कल्याणमंत्री रामविलास पासवान ने सफाई दी कि इसका मकसद नौकरियों में आरक्षण देना नहीं है, क्योंकि उसकी तो कोई निश्चित अवधि नहीं है. प्रस्तुत विधेयक में जनवरी 1990 में संसद और विधानसभाओं में खत्म होने वाले आरक्षण का समय बढ़ाने का ही प्रस्ताव है.

ऊंची और नीची जातियों में झगड़े के बीज बो चुका मौजूदा आंदोलन नई सरकार को खतरे में डालने की क्षमता रखता है. जनता दल सरकार विचित्र स्थिति में फंस गई है क्योंकि उसके चुनावी वादों में मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करना भी शामिल था. आयोग ने पिछड़ी जातियों के लिए आरक्षण मौजूदा 18 फीसदी से बढ़ाकर 27 फीसदी कर देने की महत्वपूर्ण सिफारिश की थी. लेकिन यदि इसे उत्तर प्रदेश में लागू किया गया तो पिछड़ी जातियों के लिए कुल आरक्षण 50 फीसदी की वैधानिक सीमा को पार कर 60 फीसदी से भी अधिक हो जाएगा. यह आंदोलनकारियों की इस मांग से कतई मेल नहीं खाता कि आरक्षण का आधार जाति के बजाए आर्थिक हो.

पूर्व मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी कहते हैं, "मंडल आयोग की सिफारिशों पर जनता दल का कोई स्पष्ट रवैया न होने के कारण ही यह आंदोलन उपजा है." लेकिन जनता दल के नेता उनके इस कथन को महज बहानेबाजी मानते हैं क्योंकि इंका ने खुद ही एक साल पहले नौकरियों में आरक्षण की अवधि बढ़ाई थी. उनका सवाल है, "उस समय आंदोलन क्यों नहीं हुए?"

रुख अपनाते हुए कहा था कि सरकार मौजूदा आरक्षण नीति पर कोई समझौता नहीं करेगी और मंडल आयोग की सिफारिशों को लागू करेगी. 19 दिसंबर को तो उन्होंने यहां तक चेतावनी दे डाली कि दो दिन के भीतर अगर आंदोलन वापस न लिया गया तो सरकार कड़ी कार्रवाई करने पर मजबूर होगी. लेकिन जब उन्होंने देखा कि आंदोलन गंभीर शक्ल अख्तियार करता जा रहा है तो अपने गृहनगर इटावा में 21 दिसंबर को एक नागरिक अभिनंदन समारोह में उन्होंने घोषणा की कि सरकार दूसरे वर्गों को आर्थिक आधार पर आरक्षण देने के सवाल पर विचार करेगी.

फिलहाल, सबसे ज्यादा परेशानी की बात यही दिखती है कि जनता दल इस मुद्दे पर कोई नीति नहीं तय कर पा रहा. उतावलेपन की अपनी विशिष्ट शैली में

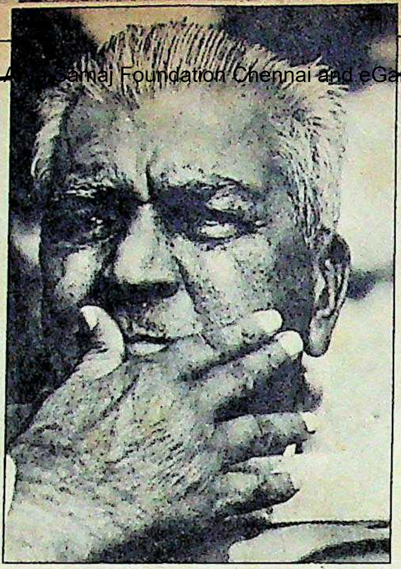

प्रमोद पुष्करणा

देवीलाल ने घोषणा कर दी कि वे आर्थिक आधार पर आरक्षण प्रणाली का समर्थन करते हैं.

देवीलालः आर्थिक आधार के समर्थक

इस समय सरकार के सामने एक बड़ी समस्या यह है कि राज्य स्तर पर यह आंदोलन नेतृत्वविहीन है. सिर्फ स्थानीय नेता ही शहर स्तर पर यह आंदोलन चला रहे हैं. इसलिए आंदोलनकारियों से बातचीत की संभावना फिलहाल नहीं दिखती.

इस बीच, आंदोलन फैलता जा रहा है और उसके अधिक हिंसक होने का खतरा है. इसका सबसे खतरनाक नतीजा विभिन्न जातियों के बीच संघर्ष के रूप में सामने आ सकता है. और यदि ऐसा हुआ तो मुलायम सिंह यादव किसी भी तरह इस आंदोलन से नहीं निबट पाएंगे. ऐसी स्थिति में इसकी लपटें पूरे देश में फैल जाएंगी और केंद्र सरकार के लिए इनका शमन करना आसान नहीं होगा.

—दिलीप अवस्थी

इंडियन एक्सप्रेस

अपनों का सामना

जो काम राजीव गांधी सरकार का प्रतिशोधी रवैया तीन साल तक एड़ी-चोटी का जोर लगाने के बाद भी नहीं कर पाया उसे पिछले पखवाड़े 'इंडियन एक्सप्रेस' के प्रबंधन ने ही कर दिया. बछावत वेतन बोर्ड की सिफारिशें और दूसरी सुविधाएं लागू करने के लिए इसके 750 कर्मचारी जब अनिश्चितकालीन हड़ताल पर चले गए तो प्रबंधन ने 'इंडियन एक्सप्रेस' और 'जनसत्ता' के दिल्ली संस्करणों में तालाबंदी कर दी. और पत्रकारों की कर्मभूमि न्यूजरूम के बजाए बहादुरशाह जफर मार्ग बन गई. खोजी और पैनी खबरें, जो कि इस अखबार की पहचान बन चुकी है, लिखने के बजाए ये पत्रकार सीढ़ियों पर बैठकर गुनगुनाने लगे, "हम होंगे कामयाब एक दिन...' हमेशा व्यवस्था के खिलाफ चलने वाली उनकी लेखनी अब एक्सप्रेस समूह के ही विरोध में चल निकली. मसलन, "हमारा दिल बछावत के लिए धड़क रहा है, बंबई में उनका पैसा पनप रहा है." विडंबना यह कि जनता दल के जिन नेताओं की राजनैतिक लड़ाई के लिए एक्सप्रेस ने पन्ने पर पन्ने रंग डाले थे वे आज हड़ताली कर्मचारियों के साथ हैं.

कर्मचारियों और प्रबंधकों के अपनी-अपनी जगह अड़े रहने के कारण भारी गतिरोध पैदा हो गया है. इंडियन एक्सप्रेस कर्मचारी संघ के महासचिव मदन तलवार के अनुसार, "यह तालाबंदी गैर-कानूनी है. वे हमारे जायज अधिकारों से हमें वंचित रख रहे हैं." दूसरी ओर एक्सप्रेस के वित्तीय सलाहकार एस. गुरुमूर्ति का कहना है कि कर्मचारियों की मांगें पूरी करने की हालत में समूह पर आर्थिक भार बहुत बढ़ जाएगा. उनके अनुसार, "हम पहले ही हर साल चार करोड़ रु. का घाटा उठा रहे हैं. बोर्ड की सिफारिशें मानने का मतलब है दो करोड़ रु. का अतिरिक्त भार. इस तरह तो हम तबाह हो जाएंगे."

बछावत वेतन बोर्ड के अनुसार प्रबंधकों को पूरे समूह की आय को आधार मानकर कर्मचारियों का वेतन तय करना होगा. इसका मतलब यह हुआ कि दिल्ली संस्करण और दूसरी जगहों के कम मुनाफे वाले संस्करण वर्ग 'एक' में आ जाएंगे. गुरुमूर्ति की शिकायत है कि नए वेतनमान के तहत आंध्र प्रदेश और गुजरात संस्करणों के कर्मचारियों के वेतन में बहुत अंतर हो जाएगा. हालांकि कई संस्थानों ने बछावत वेतनमान लागू कर दिए हैं लेकिन 'टाइम्स' जैसे बड़े समूह ने इन सिफारिशों को अभी लागू नहीं किया है.

एक्सप्रेस प्रबंधकों की परेशानी यह भी है कि श्रममंत्री रामविलास पासवान ने बछावत सिफारिशें लागू करवाने में सरकार की प्रतिबद्धता का आश्वासन दिया है. सबसे बड़ी विडंबना तो तब होगी जब यह अखबार उन्हीं शासकों के खिलाफ हो जाएगा जिनके हक में उसने लंबी लड़ाई लड़ी थी.

—पंकज पचौरी

शरद सक्सेना

BALHAWAT
WELL SETTLE FOR NOTHING LESS

एक्सप्रेस भवन पर नारेबाजी

भवान सिंह

विमल जालान (बाएं), वी.पी. सिंह और विनोद पांडे: निजी समीकरण

नौकरशाही

छुरी चली नफासत से

नई सरकार उन अफसरशाहों का तबादला कर रही है जो पिछली सरकार के वफादार रहे थे. लेकिन इसे इतनी नफासत से अंजाम दिया जा रहा है कि कहीं बदले की गंध न आए

चुनाव से सितारे बदलते हैं पार्टियों के. लेकिन उनके साथ ही नौकरशाही में भी 'तख्ता पलट' हो जाता है. पिछले पखवाड़े जब राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने अपने पांव जमाकर आगे बढ़ने की शुरुआत की तो ऊंची कुर्सियों पर बैठे अधिकारियों की तकदीर बदलते समय नए प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने इस बात का ध्यान रखा कि मनमाफिक बदलाव भी हो जाए और किसी को यह भी न लगे कि बदला लेने के लिए ये कदम उठाए गए हैं. राजीव गांधी के करीबी माने जाने वाले अनेक अधिकारी अपना पत्ता कट जाने की आशंका पाले हुए थे. लेकिन ऐसे लोगों को एकदम हटाने की जगह उन्हें दरकिनार भर कर दिया गया है. 1977 में जनता सरकार और 1980 में अपनी वापसी पर श्रीमती इंदिरा गांधी ने इसके ठीक उलट किया था.

लेकिन इस मामले में बहुत कड़ा रवैया न अपनाकर भी सरकार ने अपनी मंशा के बारे में कोई संदेह नहीं रहने दिया. नई नियुक्तियों और तबादलों के क्रम में सबसे ऊपर के स्तर पर काफी बदलाव किए गए. एक तिहाई सचिव बदल दिए गए जिनमें से अधिकांश कैबिनेट सचिवालय, गृह, उद्योग, वित्त, वाणिज्य, सूचना एवं प्रसारण तथा राजस्व जैसे महत्वपूर्ण विभागों के थे.

भले ही ये बदलाव हफ्ते भर के अंदर और किस्तों में किए गए लेकिन उनके पीछे कुछ कारण स्पष्ट नजर आते हैं.

- पिछली सरकार और शासक पार्टी के 'खास' बन गए अधिकारियों की छुट्टी सबसे पहले हुई.
- राजीव सरकार ने जिन अधिकारियों के साथ नाइंसाफी की उन्हें उनका वाजिब पद और सम्मान दिया गया.
- बंबई के खास व्यापारिक घराने के पक्षधर नौकरशाहों को हटाया गया.
- अपनी निष्ठा और काम के लिए विख्यात ऐसे गैर-विवादास्पद अधिकारियों को महत्वपूर्ण पदों पर लाया गया जिनसे पिछली सरकार के गलत कामों को उजागर करने में मदद मिलने की आशा है.

> **हालांकि परिवर्तन चतुराई से किए गए लेकिन सभी प्रमुख मंत्रालयों में नए सचिवों की नियुक्ति वस्तुतः झाड़ू बुहारी ही थी**

राजीव के करीबी माने जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण अधिकारियों में से कैबिनेट सचिव टी.एन. शेषन, वित्त सचिव गोपीकृष्ण अरोड़ा और गृह सचिव कल्याणकृष्णन अपने-अपने पदों से विदा हो गए हैं. शेषन को राजीव राज का मुख्य 'दमनकारी' माना जाता था. कहा जाता है कि अगस्त में हुए भारत बंद के विरोध की पूरी रणनीति उन्होंने ही बनाई थी. अरोड़ा बोफोर्स समेत अनेक मामलों पर राजीव के मुख्य सलाहकार रहे थे.

लेकिन सरकार किसी बुरी मंशा से काम नहीं कर रही है, यह जताने के लिए इन लोगों को भी एकदम चलता नहीं किया

गया. शेषन को योजना आयोग का सदस्य बना दिया गया. अरोड़ा को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष में मोटी तनख्वाह वाली नौकरी मिल गई. कल्याणकृष्णन अप्रैल 1990 में अवकाश प्राप्त करने वाले थे. उन्हें संघ लोकसेवा आयोग का सदस्य बनाकर पांच साल का 'जीवनदान' दे दिया गया.

दिल्ली के उपराज्यपाल रोमेश भंडारी को हटाने की जगह अंडमान भेजा गया पर उन्होंने वहां जाने से इनकार कर दिया. राज्य व्यापार निगम के अध्यक्ष भूपिंदर सिंह और धातु एवं खनिज व्यापार निगम के अध्यक्ष आई.पी. हजारिका को उनके पदों से हटा दिया गया.

गोपी अरोड़ा

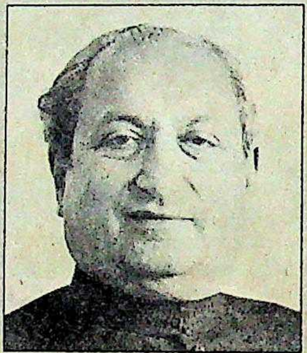
रोमेश भंडारी

भूपिंदर सिंह

आई.पी. हजारिका

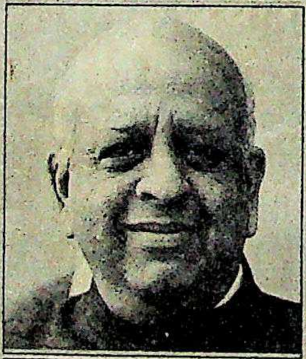
टी.एन. शेषन

एन.के. सेनगुप्त

राजीव गांधी के करीबी माने जाने वाले ज्यादातर अफसरशाहों को चलता कर दिया गया. लेकिन अपने नेक इरादे प्रदर्शित करने के लिए सरकार ने कई अफसरशाहों को नहीं छेड़ा

राजस्व सचिव नीतीश कें. सेनगुप्त और पेट्रोलियम सचिव एच.के. खां को बंबई के एक खास व्यापारिक घराने के प्रति 'अधिक उदार' होने के कारण विदा कर दिया गया.

राजीव द्वारा लाए गए अनेक लोग तो आदेश मिलने के पहले खुद ही इस्तीफा देकर हट गए. राजीव के राजनैतिक सहयोगी, राजेंद्र कुमार धवन और योजना आयोग के पांच सदस्यों ने खुद ही विदा ले ली. दूसरे बदलाव तो पिछली सरकार द्वारा की गई गलतियां सुधारने के लिए किए गए. राजीव गांधी और सतीश शर्मा ने ए.एस. थिड को दूसरों की वरिष्ठता नजरअंदाज करके केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड का अध्यक्ष बना दिया था. अब उनकी जगह सबसे वरिष्ठ टी.एन. पांडेय को दी गई. दूरदर्शन के महानिदेशक पद पर काम करते हुए भास्कर घोष ने ठीकठाक काम किया था. बाद में उन्हें बेवजह हटा दिया गया. लेकिन अब उनकी वापसी हो गई है. विश्वनाथ प्रताप सिंह के वित्तमंत्री रहते समय विनोद पांडे और भूरेलाल उनके विश्वस्त सहयोगी थे. आर्थिक अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई में ये दोनों अगुआ थे. अब तीन साल बाद इन दोनों की 'शानदार वापसी' हुई है. भूरेलाल अब प्रधानमंत्री कार्यालय में संयुक्त सचिव बनाए गए हैं जबकि विनोद पांडे कैबिनेट सचिव बनाए गए हैं.

इन 'पुनर्वासों' के अलावा सरकार ने निष्ठावान अधिकारियों को महत्वपूर्ण पद दिए हैं. अभी तक उत्तर प्रदेश में ही 'छिपे' रहने वाले शिरोमणि शर्मा को केंद्रीय गृह सचिव बनाया गया है. इसी प्रकार कपड़ा मंत्रालय में सचिव आर.एल. मिश्र को राजस्व सचिव जैसे महत्वपूर्ण विभाग में लाया गया. महाराष्ट्र कैडर के एम.डी. गोडबोले को पेट्रोलियम सचिव बनाया गया.

अभी हुई किसी भी अधिकारी की नियुक्ति को राजनैतिक नहीं माना जा सकता. लेकिन गैर-अधिकारी पदों की नियुक्ति के बारे में ऐसा नहीं कहा जा सकता. सोली सोराबजी को महान्यायवादी, लक्ष्मीचंद्र जैन और रजनी कोठारी को योजना आयोग का सदस्य बनाना ऐसे ही फैसले हैं. ये सभी इंका के आलोचक हैं. जैन तो अमेठी में राजमोहन गांधी का चुनाव प्रचार करने वालों में एक थे.

हां, ये बदलाव करते समय सरकार ने इस बात का ध्यान रखा कि उसके फैसले सही लगें. बदले की भावना न दिखे. शेषन और अरोडा तो हटा दिए गए लेकिन प्रधानमंत्री के प्रमुख सचिव बी.जी. देशमुख को नहीं छेड़ा गया. वैसे सरकार ने विवादास्पद नियुक्तियों वाले कई दूसरे अधिकारियों के प्रति भी सहनशीलता प्रदर्शित की. फेयरफैक्स मामले की जांच करने वाले ठक्कर-नटराजन आयोग के एक न्यायाधीश एम.पी. ठक्कर को (अभी तक) कानून आयोग का अध्यक्ष बना रहने दिया गया है जबकि इसी जांच आयोग ने वी.पी. सिंह की खिंचाई की थी. इसी प्रकार चुनाव होने के ठीक पहले नियुक्त किए गए दो चुनाव आयुक्तों—एस.एस. धनोआ तथा वी. सहगल को भी नहीं छेड़ा गया.

इन बदलावों का अधिकारियों में स्वागत हुआ है. अनेक बड़े अधिकारी, जो पहले तरक्की वगैरह में राजनैतिक दखलंदाजी की शिकायत करते थे, मानते हैं कि गलती करने वालों को उचित सजा मिली है. नॉर्थ ब्लॉक के एक बड़े अधिकारी ने कहा, "अपनी सीमा लांघने वाले हमारे कुछ

ो. देशमुख
ी विवादा-
 अधिका-
 प्रदर्शित
करने वाले
न्यायाधीश
) कानून
या गया है
. सिंह की
व होने के
दो चुनाव
तथा वी.

हर एक के लिए दस!

अपना मनपसंद कैमरा चुन लीजिए, बस!

एकमेव!
हॉट शॉट ११० एस
फ्लैश लगाने का इन्तज़ाम. दो लैंस.

**पड़ गए ना
द्विविधा में?**
हॉट शॉट ११० ई एफ़
इलेक्ट्रॉनिक फ्लैश. दो लैंस.

तीन–बेहतरीन!
हॉट शॉट ११० टेली
इलेक्ट्रॉनिक फ़्लैश.
टेली व सामान्य लैंस.

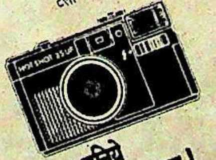

**अब सुनिये
चार का समाचार!**
हॉट शॉट ३५ यू.एफ़.
बिल्ट-इन फ़्लैश.
यूनिवर्सल. फ़ोकस सिस्टम.

पांच सितारा!
हॉट शॉट ३५ जे.आर.
फ़्लैश लगाने का इन्तज़ाम.
यूनिवर्सल फ़ोकस सिस्टम.

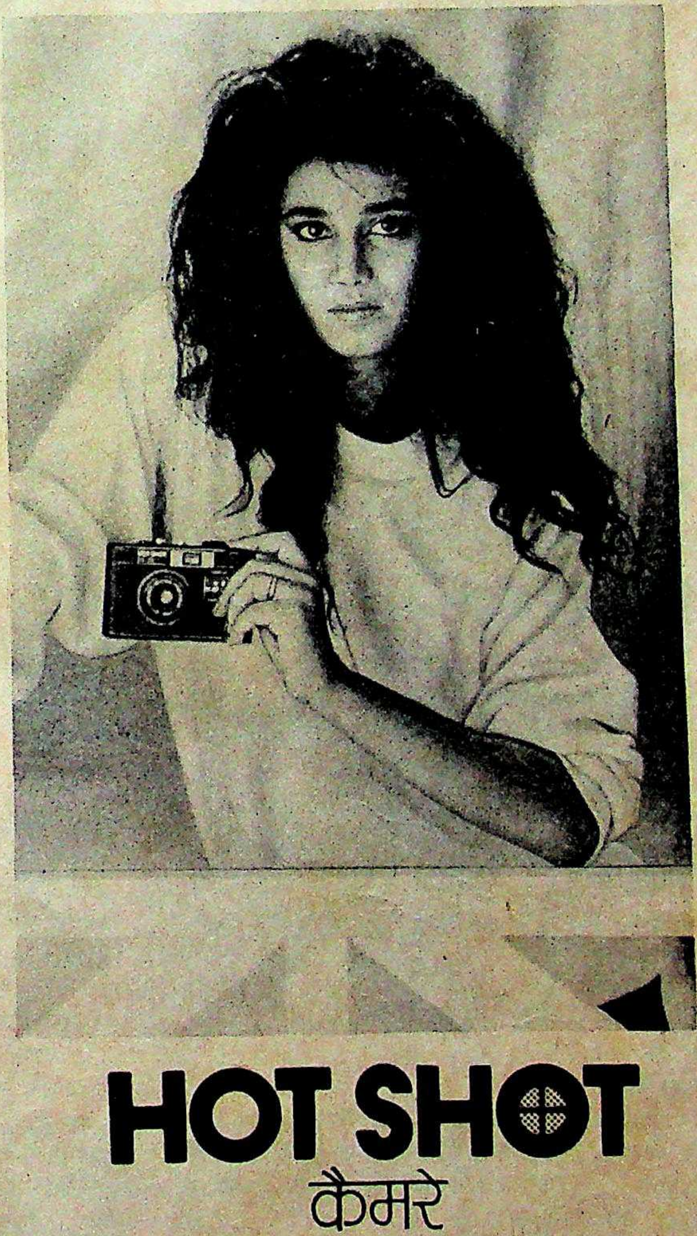

मारा छक्का!
हॉटशॉट ३५ सिक्सर.
फ़ोकस फ्रीलेंस.
फ़्लैश के लिए इन्तज़ाम.

सात की क्या बात!
हॉटशॉट ३५ ऑटो.
ऑटोमैटिक खूबियों से भरपूर

आठ के क्या ठाठ!
हॉटशॉट ११० मिनी
इतना नन्हा कैमरा आपने न देखा होगा!

नौ हमारा, अब पौ बारह!
हॉटशॉट ११० [illegible]
इलेक्ट्रॉनिक फ्लैश के साथ.

दस–अभी इतना ही बस!
मिनोल्टा फ़ोटोफ़ोन
कंप्यूटर नियंत्रित पूरी तरह.

HOT SHOT
कैमरे

फ़ोटोफ़ोन. फ़ोटोग्राफ़ी के उत्कृष्ट उत्पादन

फोटोफ़ोन इंडस्ट्रीज़ इंडिया लिमिटेड
७, साकी विहार रोड, बंबई ४०० ०७२

Sista's-420/89 HIN

में स्वागत
जो पहले
दाजी की
क गलती
 है. नॉर्थ
ने कहा,
ारे कुछ

साथियों को इसके नतीजों का पता था.''

दरअसल, सरकार बदलते ही झाड़ू लग जाने वाला शुरुआती डर सही साबित नहीं हुआ. पिछली सरकार द्वारा की गई अनेक राजनैतिक नियुक्तियों में बदलाव नहीं किए गए हैं. दूरसंचार आयोग के प्रमुख सैम पित्रोदा का मामला इसी श्रेणी में आता है. नए संचारमंत्री के.पी. उन्नीकृष्णन द्वारा अपमानित किए जाने के बावजूद वे अभी अपने पद पर जमे हुए हैं और नए शासकों के साथ तालमेल बैठाने की कोशिश कर रहे हैं.

शिरोमणि शर्मा

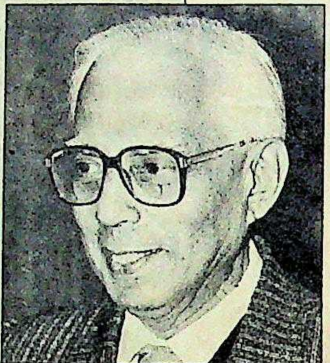
एन.के. मुकर्जी

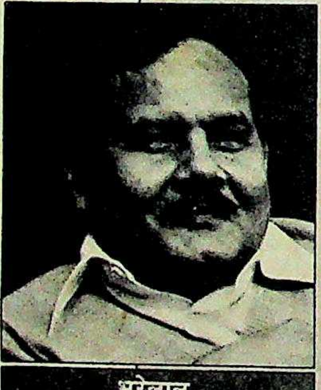
भूरेलाल

भास्कर घोष

लेकिन अपने 'खास' अधिकारियों को ऊपर लाने के लिए वी.पी. सिंह की कुछ आलोचना भी हुई. भूरेलाल, विनोद पांडे और विमल जालान ऐसे ही अधिकारी हैं. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष की नौकरी छोड़कर आए नए वित्त सचिव विमल जालान भी वी.पी. सिंह के वित्त मंत्रालय वाले दिनों में उनके साथ काम कर चुके हैं. लेकिन इस आलोचना का भी जवाब दिया गया. लोकसभा में माकपा के नेता सोमनाथ चटर्जी ने कहा, ''मंत्रियों को ऐसे अधिकारियों की नियुक्ति करनी चाहिए जिन पर उनको पूरा भरोसा हो.''

अपने-अपने मंत्रालयों की नियुक्तियों के मामले में भी मंत्रियों को पूरी आजादी दी गई है. इस्पात एवं खानमंत्री दिनेश गोस्वामी कहते हैं, ''हमें मंजूरी और निर्देश लेने के लिए अब ऊपर वालों का मुंह नहीं जोहना पड़ता. हमें स्पष्ट निर्देश हैं: आपको अपना काम खुद करना चाहिए.''

प्रधानमंत्री कार्यालय से भले ही दबाव न पड़े लेकिन दूसरे तरह के जोड़-तोड़ चलते रहे हैं. वायुदूत के विवादास्पद प्रबंध निदेशक हर्षवर्द्धन अपनी वकालत कराने के लिए शत्रुघ्न सिन्हा को ले आए. वैसे उन्हें बूटा सिंह का 'खास' माना जाता था. विपक्ष के लिए जमकर चुनाव प्रचार करने वाले सिन्हा ने प्रवर्तन निदेशक के.एल. वर्मा का कार्यकाल बढ़वाने के लिए पैरवी की.

उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने भी अपने कई खास अधिकारियों के लिए 'पैरवी' की. हरस्वरूप सिंह को योजना आयोग का सदस्य और एस.के. मिश्र को नागरिक उड्डयन विभाग से कृषि विभाग का सचिव बनवाने में उन्हीं की भूमिका प्रमुख थी. मिश्र हरियाणा में देवीलाल के साथ काम कर चुके हैं. अब जनता दल द्वारा किसानों के लिए किए गए बड़े-बड़े वादे पूरे कराने में वे अपनी भूमिका निभाएंगे.

अभी तक सरकार ने तबादले-नियुक्तियों के मामले में फूंक-फूंककर कदम रखे हैं लेकिन कई संवेदनशील विभागों में तुरंत बदलाव होने की उम्मीद है. 'रॉ' (रिसर्च ऐंड एनालिसिस विंग) में भी बदलाव होने की संभावना है. हो सकता है कि इसके प्रमुख ए.के. वर्मा को हटाया जाए. पिछले दिनों उन पर बोडो आंदोलन को बढ़ावा देने और अरुण नेहरू की विदेश यात्रा के समय उन पर नजर रखने के आरोप लगे हैं. उनकी जगह 'रॉ' के ही एक वरिष्ठ अधिकारी गौरीशंकर वाजपेयी को लाए जाने की चर्चा है.

सरकार द्वारा सावधानी बरते जाने के बावजूद अभी और कई अफसरों की छुट्टी हो सकती है

काफी अटकलों के बाद आखिर गुप्तचर ब्यूरो के प्रमुख एम.के. नारायणन को कैबिनेट सचिवालय में सचिव (सुरक्षा) की जगह भेज दिया गया. उनकी जगह उत्तर प्रदेश के पुलिस महानिदेशक आर.पी. जोशी को लाया गया है. पिछली सरकार पर गुप्तचर ब्यूरो के राजनैतिक दुरुपयोग के आरोप खूब लगे.

नौकरशाही में बदलाव का क्रम पूरा नहीं हुआ है लेकिन अभी हुए बदलाव से आगे के भी संकेत मिलते हैं. कैबिनेट सचिवालय में पांडे की मौजूदगी शेषन से एकदम उलट माहौल बना रही है. शेषन बहुत ही बड़े थे और उनका रोब चलता था जबकि पांडे सबसे मित्रवत व्यवहार रखते हैं. गृह सचिव शर्मा भी जमीन से जुड़े आदमी हैं. उम्मीद है कि नौकरशाही का व्यवहार और बदलेगा और वे समाचार जगत के लोगों से अधिक घुलेंगे-मिलेंगे. काफी समय से पिछड़ रहे उत्तर प्रदेश कैडर के अधिकारियों को भी अब अधिक मौके मिलेंगे. खुद प्रधानमंत्री अपने कार्यालय में राजीव राज वाला हिसाब बदलना चाहते हैं. अनेक राज्यपाल भी बदले जा सकते हैं. सिद्धार्थशंकर राय की जगह निर्मल कुमार मुकर्जी की नियुक्ति से शुरुआत हो गई है. सरकार केंद्र-राज्य संबंधों के बारे में सरकारिया आयोग के कुछ सुझावों को लागू करना चाहती है. अगर ऐसा हुआ तो सबसे पहले इंका से जुड़े नेताओं और अवकाशप्राप्त अधिकारियों को मुश्किल होगी. सिक्किम के राज्यपाल एस.के. भटनागर, केरल की राज्यपाल रामदुलारी सिन्हा, मध्य प्रदेश की राज्यपाल सरला ग्रेवाल और आंध्र प्रदेश की राज्यपाल कुमुदबेन जोशी का नाम इनमें शुमार है. ये लोग सिर्फ राजीव की भक्ति के कारण राज्यपाल बने.

अभी सरकार की नीति धीमे चलने की लगती है. अगर इसने अधिकारियों को अपनी मंशा ठीक से जता दी, क्योंकि अब तक वे लोग खुद का इस्तेमाल हो जाने दे रहे थे, तब बहुत कुछ खुद ही सुधर जाएगा.

—भास्कर राय

लाए जाने
र गुप्तचर
यणन को
रक्षा) की
गह उत्तर
.पी. जोशी
रकार पर
रुपयोग के

बदलाव
ों हुआ है
बदलाव से
मिलते हैं,
य में पांडे
न से एक-
वना रही
ही बड़े थे
वलता था
मित्रवत
गृह सचिव
से जुड़े
द है कि
व्यवहार
वे समा-
लोगों से
गे. काफी
रहे उत्तर
धिकारियों
धक मौके
मंत्री अपने
ीव राज
ना चाहते
पाल भी
सिद्धार्थ-
ह निर्मल
नियुक्ति
केंद्र-राज्य
आयोग
चाहती है.
का से जुड़े
ारियों को
राज्यपाल
राज्यपाल
ी राज्य-
प्रदेश की
ाम इनमें
भक्ति के

चलने की
रियों को
योंकि अब
ी जाने दे
र जाएगा.
भास्कर राय

परंपरा... नए फ़ैशन... इसकी पहचान है ठाकरसी

ठाकरसी बनाते हैं नर्ममुलायम सूती और बेहतरीन पालिएस्टर मिश्रित कपड़े जो सबको मोह लें ■ हमारे हाय-फ़ैशन ईज़ीकेयर फ़ैब्रिक्स आज प्रमुख गारमेंट निर्यातकों की पहली पसंद हैं. ■ और हमारे चोली कपड़ों की रंगरंगीली श्रेणी निश्चित ही देश की मिट्टी से जुड़ी डिज़ाइन करने वालों की प्रेरणा बन सकती है. ■ जीहां, ठाकरसी फ़ैशन में उमंग भरी भावना का रस घोल रहे हैं... आपके लिए और सारी दुनिया के लिए.

thackersey's
TF
Cholee & easycare
FASHION FABRICS
HINDOOSTAN MILLS

gram-HM 36A/8

प्रमोद

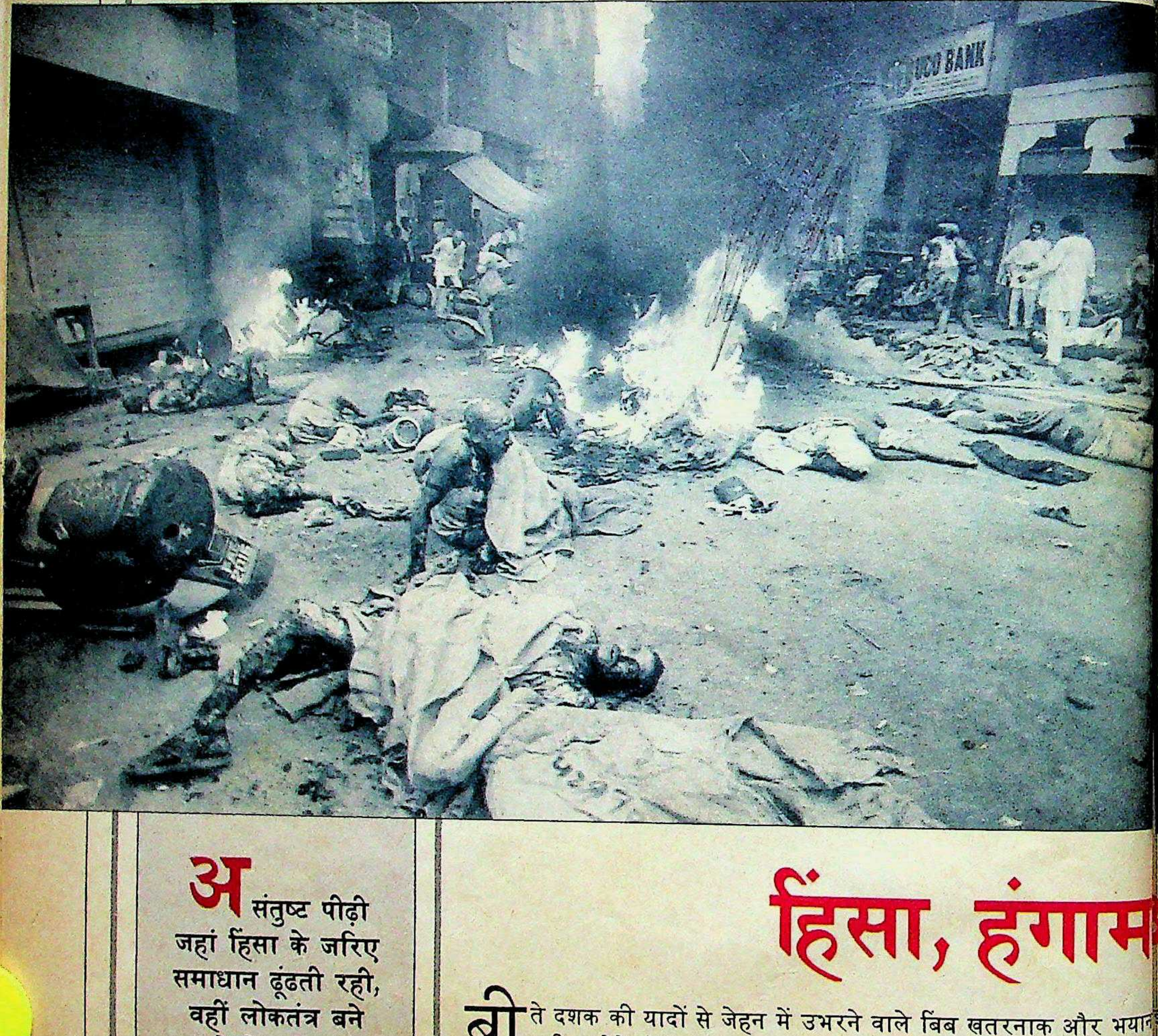

असंतुष्ट पीढ़ी जहां हिंसा के जरिए समाधान ढूंढती रही, वहीं लोकतंत्र बने रहने के संकेत भी मिले

> “हिंसा हमारी जीवन शैली में नहीं है. इस विजातीय तत्व को हम अपने से दूर रखना चाहते हैं
>
> इंदिरा गांधी, 1981”

हिंसा, हंगाम

बीते दशक की यादों से जेहन में उभरने वाले बिंब खतरनाक और भयान
प्रतीत होते हैं. एक प्रधानमंत्री की हत्या और आतंकवाद का कस
शिकंजा, भोपाल की भीषण त्रासदी और नेल्ली में मासूम बच्चों का कत्लेआ
आजाद भारत के 42 में से 38 वर्षों तक उस पर राज करने वाले वंश के शा
की समाप्ति और एक अल्पमत सरकार का गठन, सांप्रदायिकता की मजबूत हो
पकड़ और हिंदुत्व के आश्चर्यजनक पुनर्जागरण का उग्र तेवर. भारत के लि
'80 का दशक अग्निपरीक्षा से कम नहीं रहा.

कुल मिलाकर यह दशक उत्तेजना और आवेश, नाटकीय परिवर्तन औ
चुनौतियों का दशक था. इमरजेंसी के अपवाद वाले दौर को छोड़ दें तो भारती
लोकतंत्र को कभी भी इतनी कठिन परीक्षा के दौर से नहीं गुजरना पड़ा
अलगाववाद और आंतरिक कलह ने जहां बीते दशक को बंदूक का दशक ब
दिया, वहीं इस दौरान लोकतांत्रिक स्तंभों को कमजोर करने का खतरनाक है
हुआ; न्यायपालिका राजनैतिक दबावों के आगे झुकी रही; प्रचार माध्
वफादारी और निष्पक्षता के बीच झूलते रहे; संसद शोरगुल का अखाड़ा बन ग
और राजनैतिक नेतृत्व लोगों से दूर सुरक्षा के लौह कवचों में सिमटता गय

सिंह

औ

इन तमा
हुए सोने
ज्यादा म
प्रतिकूल
समग्र
महत्व व
विमान
मृत्यु से
परंपरा
राज
हस्ती
स्वर्णमंदि
लेकिन
में हुई
दशक

सिंह

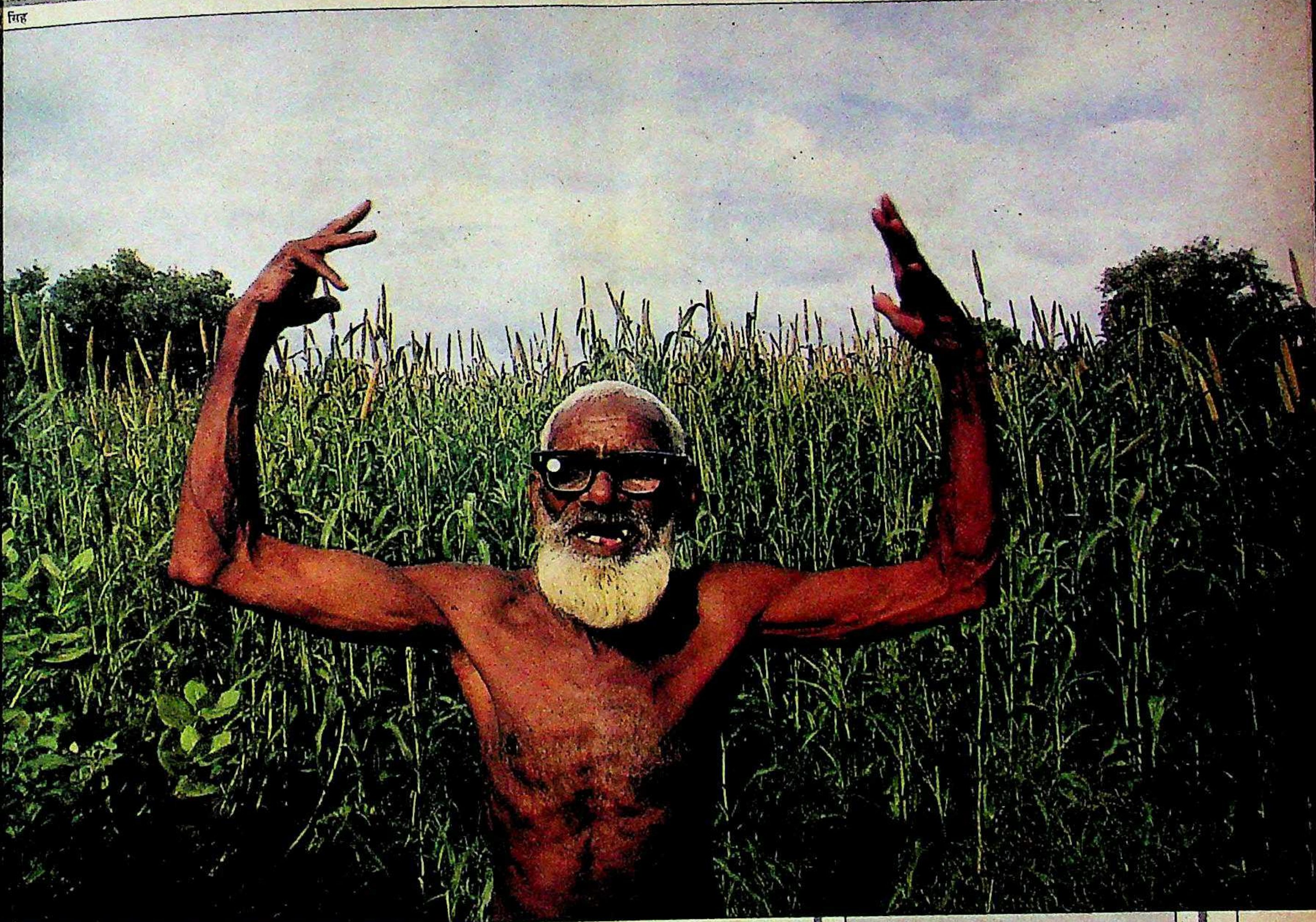

और हार-जीत

इन तमाम बातों के बावजूद भारत इस दशक के खत्म होते-होते आग में तपे हुए सोने की तरह एक अनूठी दमक के साथ सुरक्षित निकल आया है— कहीं ज्यादा मजबूत, कहीं ज्यादा परिपक्व होकर. झकझोर डालने वाली घटनाओं और प्रतिकूलताओं से जूझने की अद्‌भुत क्षमता उसने दिखाई.

समग्रता में देखें तो लगेगा कि दशक को रूपाकार देने वाली घटनाएं भारी महत्व की थीं. 1980 में सत्ता में इंदिरा गांधी की शानदार वापसी का उत्साह विमान दुर्घटना में उनके बेटे और राजनैतिक वारिस संजय गांधी की असमय मृत्यु से हल्का पड़ गया. लेकिन राजनीति की उनकी अक्खड़ शैली ने एक ऐसी परंपरा को जन्म दिया जो आज तक जिंदा है.

राजनीतिकों की शह पर उभरी जरनैल सिंह भिंडरांवाले नामक अपशकुनी हस्ती ने आतंकवाद के प्रेत को जगा दिया. ऑपरेशन ब्लूस्टार के दौरान स्वर्णमंदिर में भिंडरांवाले की मृत्यु ने रक्तपात के एक अध्याय का अंत तो किया लेकिन दूसरे अध्याय के पन्ने भी खोल दिए जो कहीं ज्यादा रक्तरंजित है. पंजाब में हुई हत्याओं और 1984 के दंगे में मारे गए लोगों की संख्या का जोड़ पिछले दशक में 10,000 से ऊपर पहुंच गया. 1989 के लोकसभा चुनावों में पंजाब में

बीते दशक का नायक आम आदमी गरीबी से जूझते हुए तीन सत्ता परिवर्तनों के दौरान भारत का भाग्य विधाता बना रहा

> “राजनीति की मुझे अधिक जानकारी नहीं है
>
> राजीव गांधी, 1984”

> **बढ़ते कट्टरवाद ने भारतीय समाज के अंतरनिहित तनावों और विरोधाभासों में एक खतरनाक आयाम जोड़ दिया**
>
> “
>
> **मैं बढ़िया प्रधानमंत्री साबित नहीं होऊंगा**
>
> **विश्वनाथ प्रताप सिंह, 1988**
>
> ”

सिमरनजीत सिंह मान के नेतृत्व वाले अतिवादी गुट के अच्छे प्रदर्शन ने पंजा समस्या को कहीं ज्यादा पेचीदा बना दिया है.

स्वतंत्र भारत के इतिहास में कोई भी दशक इतना हिंसक और उथल-पुथ भरा नहीं था. नेल्ली, ऑपरेशन ब्लूस्टार और उसके बाद की घटनाएं; एअ इंडिया के एक बोइंग विमान में विस्फोट से उसमें सवार सभी 329 यात्रिय की मौत; भागलपुर आंखफोड़ कांड और बिहार के जातिवादी संघर्षों में हु हत्याएं; श्रीलंका में 1,200 भारतीय सैनिकों की मृत्यु और इन सबसे ऊपर हिं कट्टरवाद की ताल पर सांप्रदायिकता का नंगा नाच. बीते दशक में 4,50 सांप्रदायिक दंगों में करीब 7 हजार लोग मारे गए. और पूरे माहौल पर हावं हुआ राम जन्मभूमि का विवादास्पद मसला इस दशक के आखिरी दिनों में बन नई सरकार के लिए भस्मासुर का रूप ले सकता है.

बीते दशक ने अगर बंदूक की सत्ता का एहसास कराया तो यह शायद बहुत उपयुक्त ही था कि इस दशक के सबसे बड़े घोटाले के केंद्र में भी ऐसी ही को चीज होती. बोफोर्स तोप सौदा और उससे जुड़ी कथित दलाली और फिर इन सबकी लीपापोती की कोशिशों आदि ने देशव्यापी विवादों को जन्म दिया. और तो और, बोफोर्स शब्द तो जैसे भ्रष्टाचार का पर्याय ही बन गया. लेकिन इसके कुछ अच्छे परिणाम भी दिखे. दशक के आखिरी दौर में भ्रष्टाचार चुनाव का एक प्रमुख मुद्दा बन गया. और इसने एक ऐसी दुधारी तलवार का रूप ले लिया जो किसी भी भावी सरकार के सिर पर लटकी नजर आएगी.

पूरे दशक की असली सीख यही है कि भारत अंततः परिपक्व हो गया है

हालांकि बीते दशक पर कई संकट हावी रहे लेकिन कई ऐसी बातें भी हुईं जो उम्मीद बंधाती हैं. अर्थव्यवस्था एक नए गतिशील दौर में पहुंच गई. शेयर बाजारों में अपूर्व तेजी आई और औद्योगिक विकास की दर भी अपनी सुस्त चाल से उबरती दिखी. उदारवाद ने उग्र प्रतिस्पर्धा को और नए साहसी उद्यमियों को जन्म दिया. लेकिन इस दौर की सबसे स्पष्ट उपलब्धि रही मध्यम वर्ग का उत्कर्ष, जो प्रभावी राजनैतिक और आर्थिक ताकत बनकर उभरा है. उपभोक्तावाद का विस्फोटक रूप सामने आया है जो शाहखर्च मारुति संस्कृति के रूप में उभरा है.

बीते दशक में ही भारत अंतरिक्ष क्लब में शामिल हो गया. स्वदेशी उपग्रह छोड़े गए, राकेश शर्मा ने रूसी अंतरिक्ष यान में ऐतिहासिक अंतरिक्ष यात्रा की और भारत ने मध्यम दूरी तक मार करने वाले मिसाइलों और रॉकेटों के क्षेत्र में भी बहुत दूर तक कदम बढ़ाए.

मानव प्रयासों के अधिकांश क्षेत्रों में भारत ने अभूतपूर्व प्रगति और लचीलेपन का परिचय दिया. कला जगत खरीदारों का आकर्षण केंद्र बन गया और संगीत के सुर भी 'ओये ओये' की ताल पर सातवें आसमान तक पहुंच गए.

लेकिन बीते दशक की शख्सियत बनकर अगर कोई उभरा, तो वह है गुमनाम भारतीय मतदाता ही, जो इन दस वर्षों में हुए तीन सत्ता परिवर्तनों के दौरान भारत का भाग्य विधाता बना रहा. अपनी सदाशयता से वह अपने बारे में फैली तमाम भ्रामक धारणाओं को झुठलाता गया. वस्तुतः यही बात देश के संदर्भ में भी सार्थक दिखी. बीते दशक ने भारत की समस्याग्रस्त, बदहाल छवि को बदल दिया, और उसे एक गतिशील, मजबूत देश की छवि दे दी.

—दिलीप बॉब

078605

शाहखर्च मारुति संस्कृति के रूप में उपभोक्तावाद का विस्फोटक रूप सामने आया

"

लोगों के दिलों के जख्म संगीनों से नहीं भरे जा सकते

विश्वनाथ प्रताप सिंह, 1989

"

ताने-बाने के तार-तार होने का खतरा

अलगाववाद, सांप्रदायिकता और भ्रष्टाचार के कारण अराजकता और ऊहापोह का आलम

राजनीति के लिहाज से '60 का दशक जहां अनिश्चितता और '70 का दशक उथल-पुथल से भरपूर रहा, वहीं '80 के दशक में ऐसे महाक्रांतिकारी परिवर्तन हुए जो आजाद भारत के इतिहास में बेमिसाल थे. राजनैतिक उठापटक, अराजकता और ऊहापोह के आलम में एक के बाद एक परिवर्तन और चुनौदी दर चुनौती ने देश के लोकतांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष ढांचे के नेस्तनाबूद होने का खतरा पैदा कर दिया.

बीते दशक के लगभग समूचे अरसे में इंका देश की सत्ता पर मजबूती से कायम रही. लेकिन इसी दौरान कई प्रदेशों में केंद्रीय सत्ता की पकड़ ढीली पड़ती गई. ऐसा माहौल बनता दिखाई दिया मानो केंद्र अपनी पकड़ कायम नहीं रख पाएगा. अलगाववाद, आतंकवाद, सांप्रदायिकता खूब पनपी और भ्रष्टाचार तो इतना व्यापक हो गया कि पूरा राजनैतिक ताना-बाना ही तार-तार होता लगा. और देश की राजनीति के रास्ते में रोड़ा भी बना वही नेहरू युग का एक पार्टी एक नेता का कायदा.

दिलचस्प बात यह है कि इस दशक की शुरुआत और अंत दोनों में काफी समानताएं दिखाई दीं. 1980 की जनवरी में केंद्र में इंदिरा गांधी की वापसी के तुरंत बाद ही उनकी पार्टी के एकछत्र साम्राज्य की चूलें हिलने लगीं. उस समय राज्य दर राज्य या तो उसे खारिज करने लगे या फिर केंद्र से अलग होने की खतरनाक इच्छा जाहिर करने लगे. दशक के अंत में एक नए युग की शुरुआत की संभावना दिखने लगी. पर आशाओं के नए केंद्रबिंदु वी.पी. सिंह के नेतृत्व में बनी केंद्रीय सरकार भी जर्जर हालत में लगी. अब संभवतः ऐसा केंद्र है जो अपनी पकड़ नहीं कायम रख सकता.

'70 के दशक में भले ही कांग्रेस को जबरदस्त धक्का लगा हो—जब 1977 में जनता पार्टी सत्ता में आई—लेकिन अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार और चाटुकारिता का घुन उसे बीते दशक में ही लगा और पार्टी का सियासी ढांचा खोखला होने लगा. इसके भयंकर परिणाम सामने आए. इस दशक में पार्टी के चुनावी नतीजे भी इसके सबूत हैं. इंका को

प्रमोद पुष्करणा

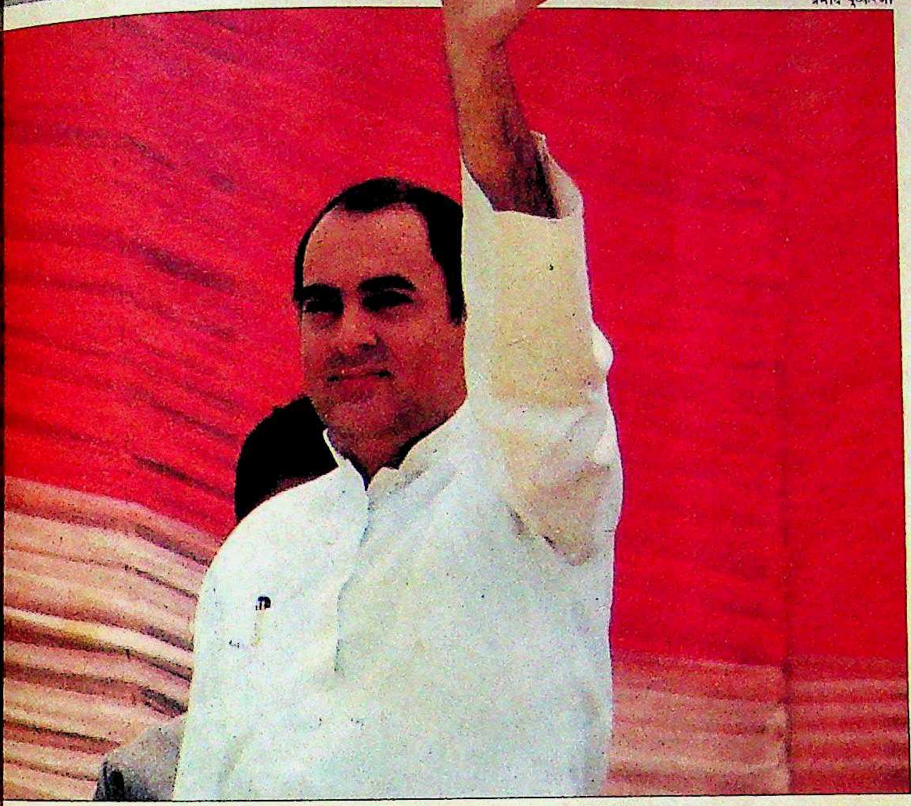

जीव गांधी और विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रतिद्वंद्वी नायक बनकर बीते दशक के आखिरी वर्षों में राजनैतिक रंगमंच पर छाये रहे. उनमें हर घटना का लाभ उठाने की होड़ लग गई

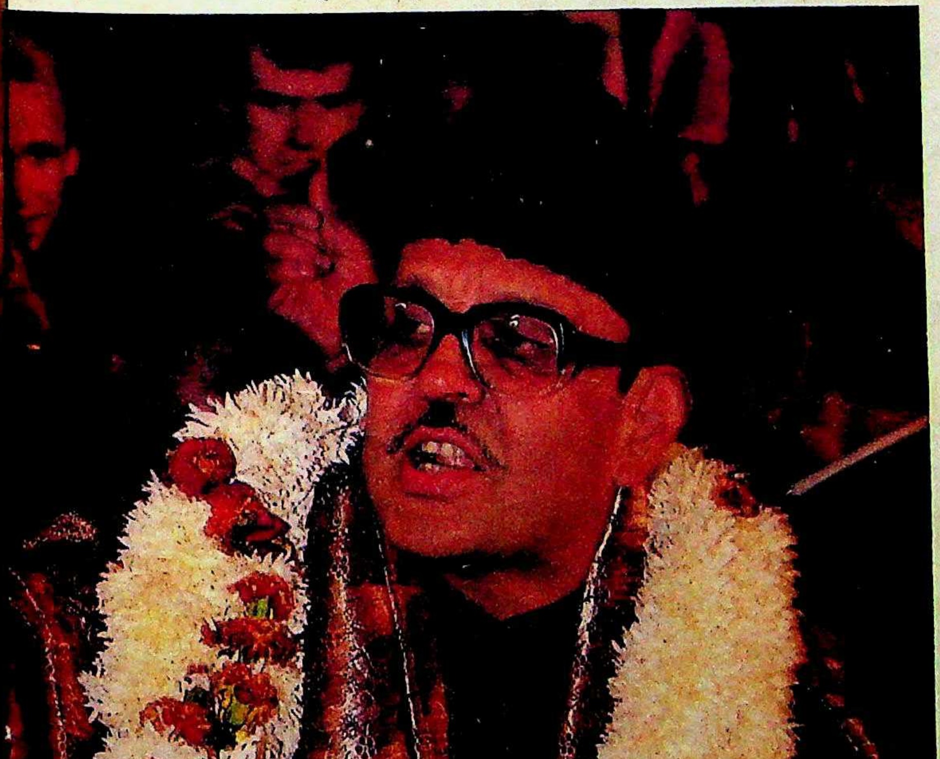

रघु राय

राजीव गांधी अगर बीते दशक की दुखद घटनाओं की देन हैं तो वी.पी. सिंह उसी दशक की खोज. मजे की बात है कि सत्ता में आने पर दोनों 'मि. क्लीन' के रूप में सराहे गए

> “लोगों की उम्मीदें बेइंतहा हैं
>
> राजीव गांधी, 1985
>
> यह चुनाव राजीव के नाम था. उम्मीदवार, प्रचारक और निर्वाचित—सब कुछ वही थे
>
> वी.पी. सिंह, 1985
>
> वी.पी. सिंह और राजीव में फर्क नहीं. हमें विकल्प चाहिए, कामचलाऊ व्यक्ति नहीं
>
> चंद्रशेखर, 1988”

1980 में 350 संसदीय सीटें और 1984 में 401 सीटें मिली जबकि 1989 में सत्ताच्युत हुए राजीव गांधी की पार्टी को सिर्फ 193 सीटों पर ही संतोष करना पड़ा. उधर '90 के दशक में नई उम्मीदों के साथ पैर रखने वाले राष्ट्रीय मोर्चे को सत्ता में निरंकुश बहुमत का सहारा तो नहीं ही मिला, इसके विपरीत उसे एक विचित्र गठजोड़ की पतली डोर पर संतुलन बनाए रखना पड़ रहा है.

बीता दशक कई मायनों में राजनैतिक विडंबनाओं का दशक साबित हुआ. जिन्हें अजेय योद्धा माना जाता था वे एक ही वार में जमीन चाटने लगे, जिनके पैर उखाड़ पाना असंभव-सा लगता था वे अपने ही मैदान में चित हो गए. राष्ट्रीय पार्टियां राष्ट्रीय हैसियत खो बैठीं, क्षेत्रीय पार्टियां अपने ही क्षेत्र में ढेर हो गईं. यह बात अलग है कि केंद्र में उनका प्रभुत्व बढ़ गया. भारतीय राजनीति के 'मि. क्लीन' आरोपों की कालिमा से घिर गए. उनकी पार्टी में सत्ता के जिन दलालों को कभी जी भर कोसा गया और रास्ते से हटा दिया गया था, वे पहली पंक्ति में आ गए. परिवर्तन की गुहार लगाने वाले और देश को तेज गति से 21वीं सदी में ले जाने वाले सामंती रुतबों के प्रवक्ता बन गए. समझौते तेजी से खूंरेज युद्ध में बदलते दिखे और बुलेट (गोली) की राजनीति के प्रवक्ता माने जाने वाले बैलेट (वोट) से चुनकर आए.

इस दशक की पूरी अवधि में एक ही बात का जोर दिखा कि सत्ता का उद्गम बंदूक की नली ही है. लेकिन इस तथ्य पर भी एक बात भारी पड़ी. देश के बड़े भूभाग में भले ही बंदूक ने गंभीर सवाल खड़े किए हों पर क्रांतिकारी बदलाव तो लगातार बैलेट (वोट) ही लाता रहा.

बीते दशक में कुछ अद्भुत राजनैतिक रुझानों से भी साक्षात्कार हुआ. '60 और '70 के दशक की तरह इसने भी राष्ट्र को तीन-तीन प्रधानमंत्री दिए—इंदिरा गांधी, राजीव गांधी और वी.पी. सिंह. मजेदार बात यह है कि नेहरू गांधी परिवार का कोई वंशज दूसरी बार चुनाव जिताने में नाकाम साबित हुआ. जिन राजीव को उनकी पार्टी ने तश्तरी में रखकर राजमुकुट सौंपा वे अपनी पार्टी को सिर्फ एक चुनाव जितवा पाए और वह भी अपनी मां की हत्या से उपजी सहानुभूति लहर पर सवार होकर.

संभवत: इस दशक का सबसे बड़ा राजनैतिक पहलू राजीव गांधी का जनता की नजर में गिरना ही है. संजय गांधी की अकाल मृत्यु से राजीव इंडियन एअरलाइंस का जहाज उड़ाना छोड़कर प्रधानमंत्री के काफिले में शामिल हो गए और वह भी सिर्फ 'मम्मी की मदद' के लिए. और उसके बाद इंदिरा गांधी की हत्या से उन्हें राष्ट्र की सर्वोच्च कुर्सी पर आने का मौका एकाएक ही मिल गया. राजीव की युवा छवि और साफ-सुथरी राजनीति करने के उनके दावे से प्रभावित होकर देश ने उन्हें ऐसा जनादेश थमाया जो उनके नाना को भी कभी नहीं मिल पाया था. राजीव ने नए तौर-तरीकों के साथ शुरुआत की. मसलन, अशांत क्षेत्रों में

प्रमोद पुष्करणा

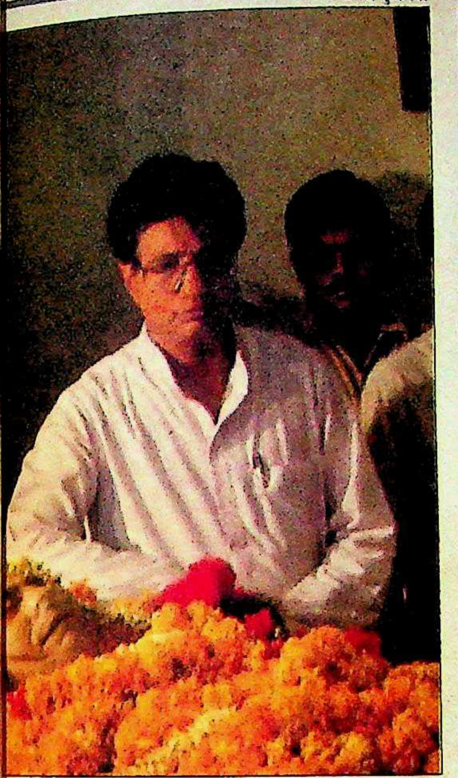

भवान सिंह

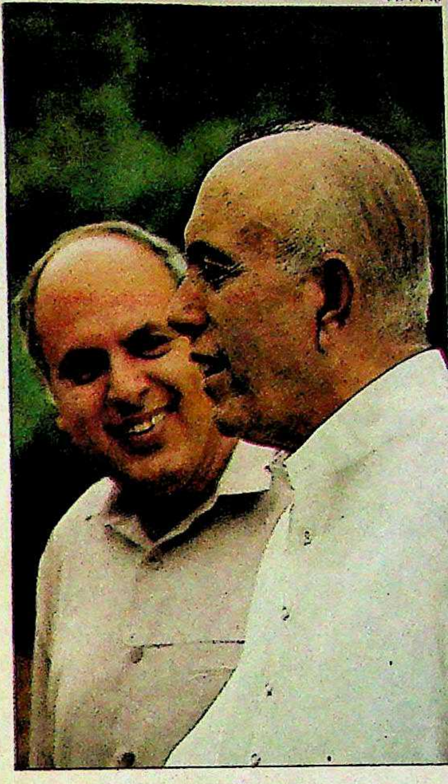

(बाएं से दाएं) संजय गांधी; चरण सिंह की शवयात्रा में अजीत सिंह, शेख अब्दुल्ला के साथ फारूक; और देवीलाल के साथ चौटालाः विरासत का हक

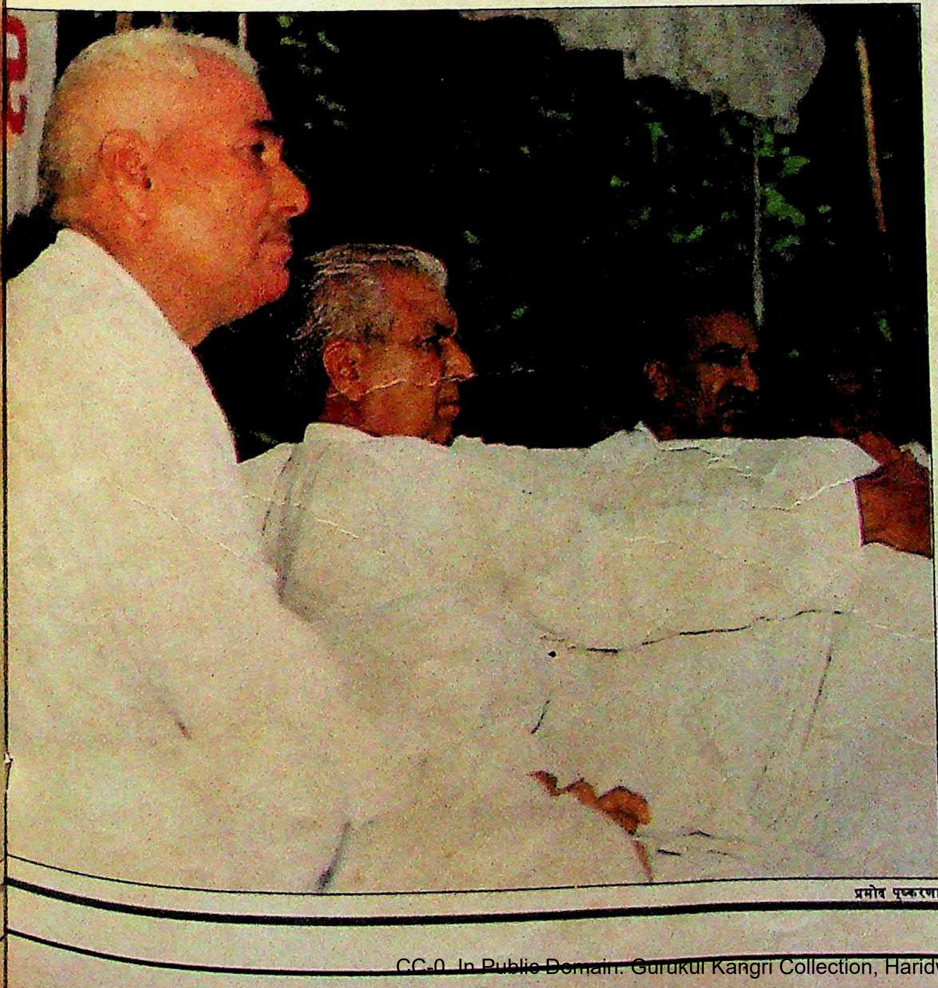

प्रमोद पुष्करणा

पूरे दशक भर केंद्र और राज्यों में, इंका और दूसरी पार्टियों के भीतर पारिवारिक उत्तराधिकार को भरपूर प्रोत्साहन मिला

"

वह बेटा ही नहीं, बड़े भाई सरीखा था जिसने मुझे सहायता दी

इंदिरा गांधी,
संजय की मृत्यु पर

बेटे मेरे उत्तराधिकारी नहीं होंगे

देवीलाल, 1988

जब हर नागरिक को लगा जैसे खुद उसकी मां का निधन हो गया है, तो मुझे साहस मिला

राजीव गांधी, 1988

"

सुहाना साटुई आभास.

Routes/BHN 15

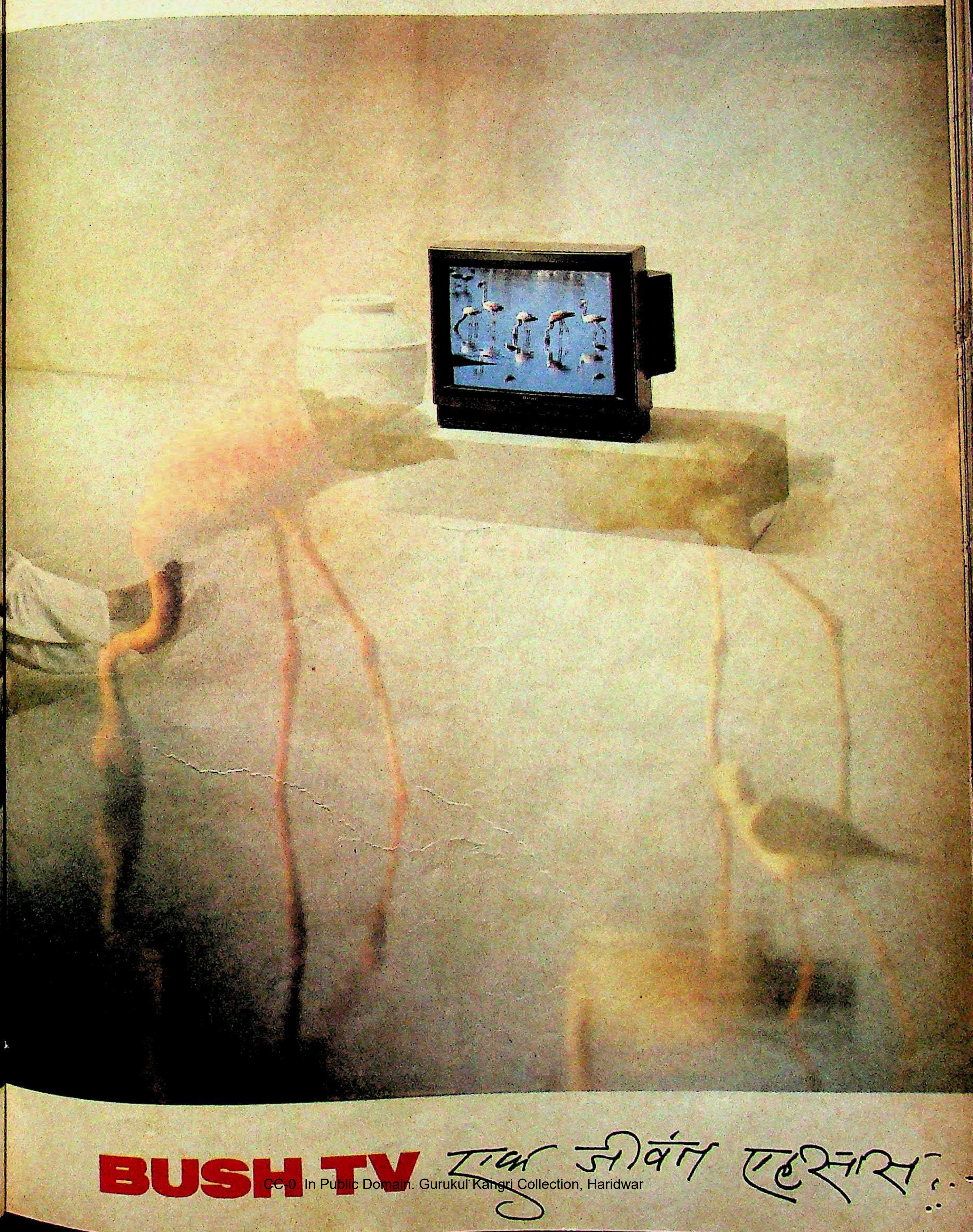
BUSH TV
एक जीवंत एहसास...

टूथपेस्ट तो किया
पर क्या माउथवॉश पाया ?

अगर नहीं तो आपका टूथपेस्ट अधूरा है. क्योंकि इसकी सफ़ाई दांतों तक जाए, पर सांसों को छोड़ जाए. आपको चाहिए नया-नवेला क्लोज़-अप, असली माउथवॉशवाला. क्लोज़-अप अपनाइए, दांतों की सफ़ेदी के साथ माउथवॉश भी पाइए. माउथवॉश सांसों में तरोताज़गी लाए, आत्मविश्वास बढ़ाए, आपको औरों के क़रीब लाए.

नया-नवेला
क्लोज़-अप
असली माउथवॉशवाला टूथपेस्ट

-सांसों में तरोताज़गी, दांतों में जगमगाती सफ़ेदी.

LINTAS CX 68 2720 HI

आख़िर यह माउथवॉश है क्या ?
माउथवॉश
Close-up
For shiny-white teeth, fresher breath.
Close-up
For shiny-white teeth, fresher breath.

समझौते, अर्थव्यवस्था को पारंपरिक जकड़नों से मुक्ति और विदेशों में कूटनीतिक पहल. लेकिन जैसे ही हवा का रुख बदला, ये सभी कामयाबियां कूड़ेदान की वस्तु बनकर रह गईं. समझौते बेमानी हो गए और नतीजतन मृत्यु और विध्वंस का तांडव शुरू हो गया षड्यंत्रों और भ्रष्टाचार के अपने तरकशों के साथ सत्ता के दलाल वापस आ गए; निरंकुश रवैया फिर हावी हुआ जिससे कूटनीतिक बातचीत और सुलह का माहौल दफा हो गया और पहली बार नेहरू गांधी परिवार के किसी अगुआ को वित्तीय हेराफेरी के आरोपों का सामना करना पड़ा.

इस दशक की राजनीति का दूसरा सबसे अहम पहलू वी.पी. सिंह का अद्भुत उदय है. '80 के दशक के आखिरी हिस्से में राजनीति के मंच पर सिर्फ दो ही कलाकार थे—वी.पी. सिंह और राजीव गांधी. अगर राजीव इस दशक की त्रासदी भरी घटनाओं की देन हैं तो वी.पी. सिंह इस दशक की खोज हैं. राजीव की तरह ही वी.पी. सिंह को भी शहीदाना अंदाज मिला. इसी के चलते 1984 में राजीव को प्रधानमंत्री की गद्दी मिली तो 1989 में वी.पी. सिंह को भी लगभग वैसे ही कारणों से यह गद्दी मिली. इस दशक में वे ऐसे पहले राजनीतिक हैं जिसने सैद्धांतिक मुद्दों पर पहले उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री पद से और बाद में रक्षामंत्री के पद से इस्तीफा दिया. दरअसल उनकी दृढ़ता ने ही उन्हें लोगों के दिलों में बिठा दिया.

बीते दशक के पाले में कुछ परंपरागत विडंबनाएं भी रहीं. इस दौरान पारिवारिक उत्तराधिकार की भारतीय परंपरा का पालन और उसके खात्मे के नजारे भी दिखे. राजीव को 1980 में अचानक उनके भाई संजय की मृत्यु के बाद राजनीति में लाया गया था. बाद में उनकी मां की हत्या के बाद वे प्रमुख स्थान पर आ

सभी फोटो प्रमोद पुष्करणा

उग्रवादी राजनीति का पहले से बहुत अधिक प्रसार हुआ

(ऊपर) भिंडरांवाले; घीसिंग; (दाएं) मान; और (नीचे) टिकैत

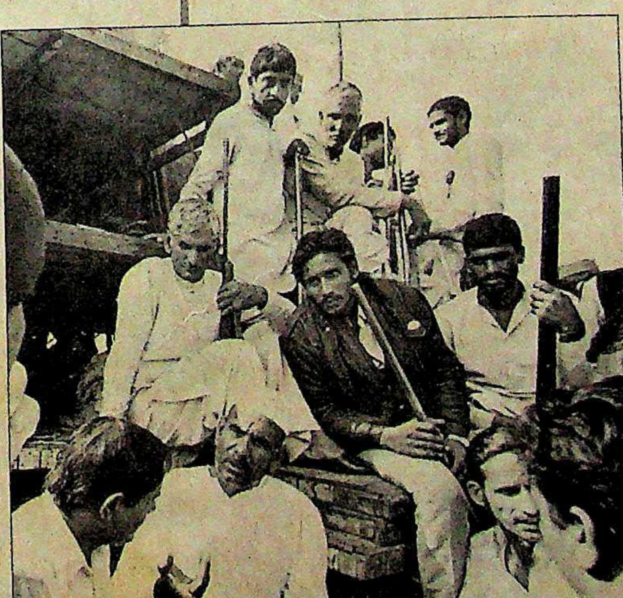

> “हम कई शहरों को दूध और सब्जियों से वंचित कर सकते हैं
>
> महेंद्र सिंह टिकैत, 1988
>
> राज्य सरकार ने मुसीबतें खड़ी कीं तो हमारे पास बंगाल से अलग होने के सिवा कोई विकल्प नहीं बचेगा
>
> सुभाष घीसिंग, 1988”

गए लेकिन दशक के अंत में उनके अद्भुत वंश परंपरा की परवाह किए बिना उन्हें खारिज कर दिया गया. इसके विपरीत वंश परंपरा के कई दूसरे उदाहरण भी दिखे. हरियाणा इसका सबसे अच्छा उदाहरण है. देवीलाल ने इस राज्य को अपनी संपत्ति समझते हुए मुख्यमंत्री का पद अपने बड़े बेटे ओमप्रकाश चौटाला को सौंप दिया. इसकी निरंकुशता इसी तथ्य से जाहिर हुई कि चौटाला राज्य विधानसभा के सदस्य तक नहीं हैं. इसी तरह उत्तराधिकार के हस्तांतरण की एक और मिसाल है अमेरिका में लिखे-पढ़े जाट अजीत सिंह का चरण सिंह की जगह लेना. अपने पिता के राजनैतिक उत्तराधिकार को सिरे चढ़ाने वाले एक और शख्स हैं फारूक अब्दुल्ला. भारतीय राजनीति में वंशवाद को पुख्ता करते हुए 1983 मे उन्होंने शेख अब्दुल्ला से उत्तराधिकार में नेशनल कान्फ्रेंस का नेतृत्व और राज्य का मुख्यमंत्री पद प्राप्त किया.

हालांकि एक महीने को छोड़कर बाकी पूरे दशक में इंका के हाथ ही सत्ता की बागडोर रही, पर इस दशक में पार्टी की विश्वसनीयता और जनाधार में भारी गिरावट आई और आखिरकार उसे सत्ता से हटना पड़ा. 1980 की जनवरी में संजय गांधी ने केंद्र और राज्यों में युवा, तेजतर्रार और आक्रामक नेताओं को लाकर दशक का तेवर तय किया. प्रमुख भूमिका अब्दुल रहमान अंतुले, गुंडुराव, जैल सिंह, कमलनाथ, अर्जुन सिंह, प्रणव मुकर्जी, जगदीश टाइटलर और संजय सिंह को मिली. लेकिन ये सब जैसे उभरे वैसे ही अपना महत्व भी खो बैठे. राजीव ने इस माहौल को बदलने की कोशिश की. लेकिन अंतत: एक गुट के बदले दूसरा गुट और एक दरबारी के बदले दूसरा ही आकर रह गया. सत्ता केंद्र में इस कदर सिमटी रही कि पार्टी की राज्यों में पकड़ ढीली पड़ने लगी. राज्यों के नेता और यहां तक कि मुख्यमंत्री भी मात्र प्यादे बनकर रह गए. उनका भविष्य पूरी तरह आलाकमान की मर्जी पर निर्भर हो गया. मुख्यमंत्रियों की हवाई अड्डे पर जलालत या राज्यों में केंद्र के प्रोत्साहन पर विद्रोह भड़काकर उन्हें अचानक हटाया जाना तो जैसे आम बात हो चली थी.

बीते दशक का सबसे महत्वपूर्ण पहलू था राज्यों में इंका की शक्ति क्षीण होने के साथ क्षेत्रीयतावाद का असर बढ़ना. क्षेत्रीय पार्टियां बढ़ने लगीं और क्षेत्रीय

श्याम टेकवानी

क्षेत्रीय पार्टियों की अपने इलाकों में ही नहीं, राष्ट्रीय स्तर पर भी ताकत बढ़ी. इसके साथ क्षेत्रीय नेता भी उभरे

भवान सिंह

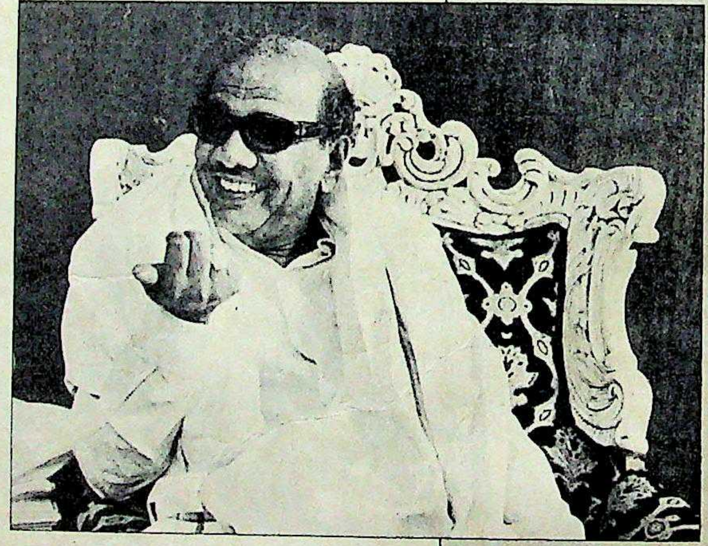

(ऊपर से) जयललिता; करुणानिधि; प्रफुल्ल कुमार महंत; और नंदमूरि तारक रामराव: क्षेत्रीय उफान

> "इस विधानसभा चुनाव में तेलुगुभाषियों की प्रतिष्ठा दांव पर है.
>
> एन.टी. रामराव, 1982
>
> तमिलों को फैसला करना है कि दिल्ली से शासन चाहते हैं, या मद्रास से
>
> के. अंबाझगन, 1988
> *द्रमुक महासचिव*"

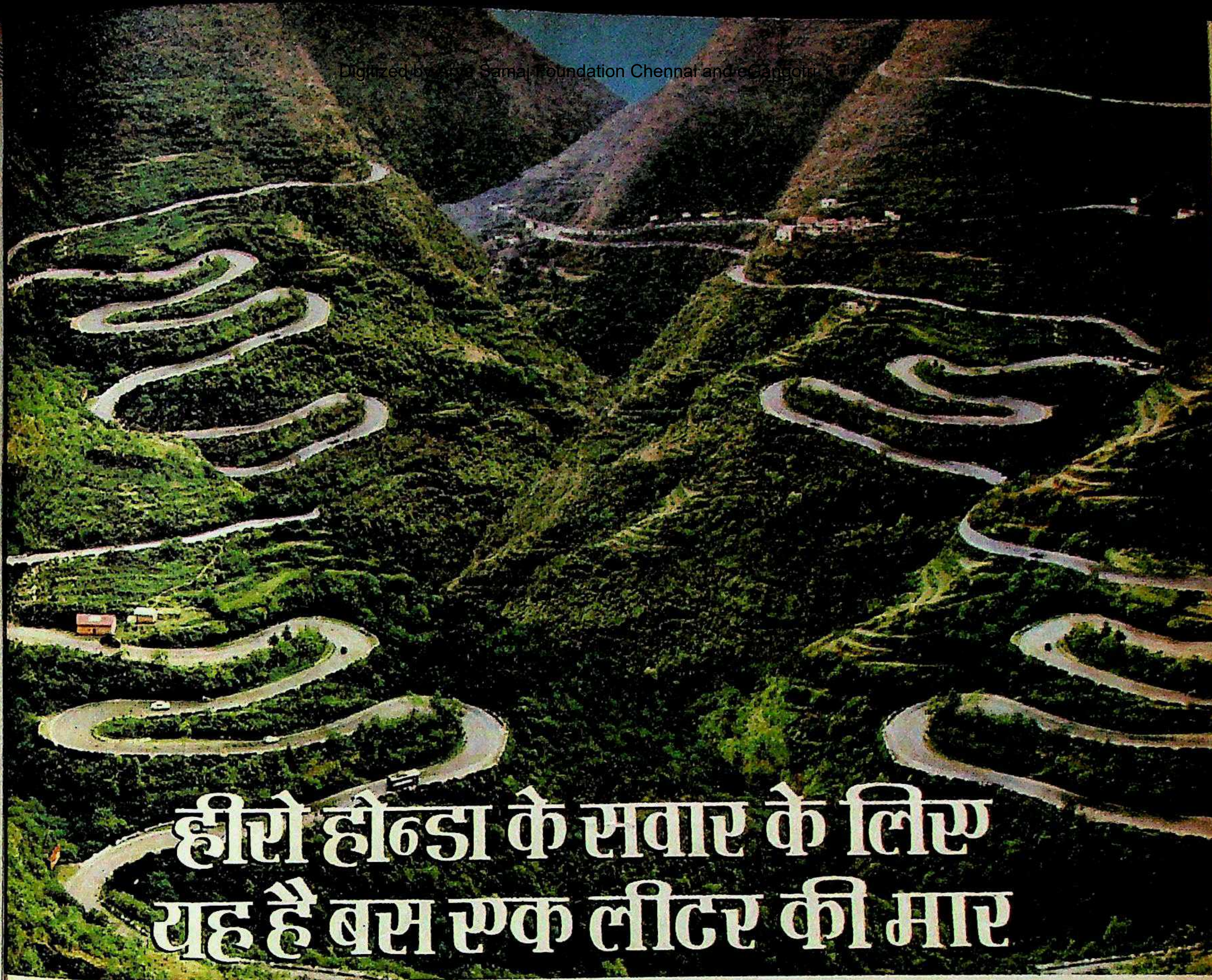

हम यह बात ज़रा भी बढ़ा-चढ़ा कर नहीं कह रहे। अगर आप हीरो होन्डा सी डी 100 पर सवार हैं तो एक लीटर पेट्रोल आपको बहुत दूर—80 किलोमीटर दूर तक—ले जाएगा।

एक लीटर में आपको *इतनी* दूर भला और कौन सी मोटरसाइकिल ले जाएगी?

टैंक भरिए. और चलते चलिए.

होन्डा की तकनीकी श्रेष्ठता हीरो होन्डा सी डी 100 के असाधारण 4-स्ट्रोक इंजन की हर विशेषता में देखी जा सकती है। ईंधन पूरी मात्रा में जलने के कारण देखभाल में आसानी, 80 किलोमीटर प्रति लीटर* चलने की कुशलता, और साथ में प्रदूषणहीन एग्ज़ास्ट सुनिश्चित हैं...मीलों-मील बिना-परेशानी अच्छी सेवा के लिए।

हां, हीरो होन्डा को लाखों ने अपनाया है। उन्हीं ने इसे भारत की सबसे अधिक बिकने वाली मोटरसाइकिल बनाया है।

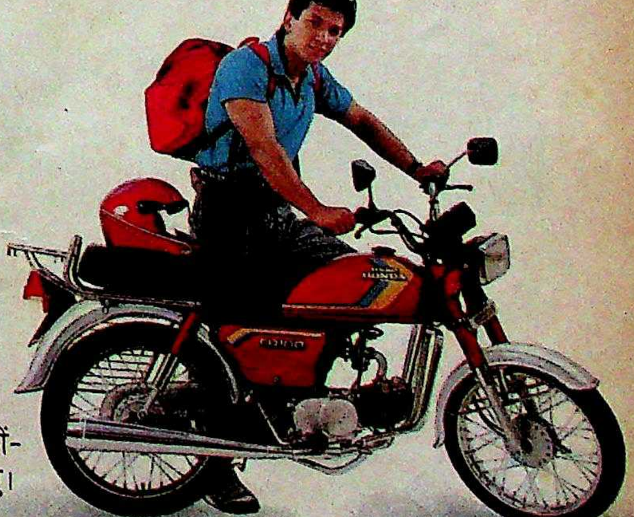

HERO HONDA

आपका शानदार हमसफ़र!

* 40 कि.मी. प्रति घंटा और 130 किलो भार सहित.

HTA 6347H

तरक़्क़ी का दूसरा नाम ... इस्पात !

इस्पात हमारे आज के संसार की जान है। बिना इस्पात हमारा सब कुछ अधूरा है ! इस्पात न हो तो हम आज बिजली तैयार नहीं कर सकते ! भावी प्रगति की गति पूरी तरह बिजली पर निर्भर है ! ज़रूरी है कि जल-विद्युत... ताप विद्युत... और परमाणु विद्युत के नये नये केंद्र स्थापित किये जाएँ ! 'स्वच्छ ऊर्जा' या 'क्लीन एनर्जी' के नये नये केंद्रों के निर्माण की भी ज़रूरत है।... **क्योंकि** भविष्य हमारे लिये ठहर नहीं सकता ! ... क्योंकि इस्पात हमारा वह हाथ है जो हमारे प्रयास में पैदा करता है नयी शक्ति... नयी मज़बूती... नया स्थायित्व !

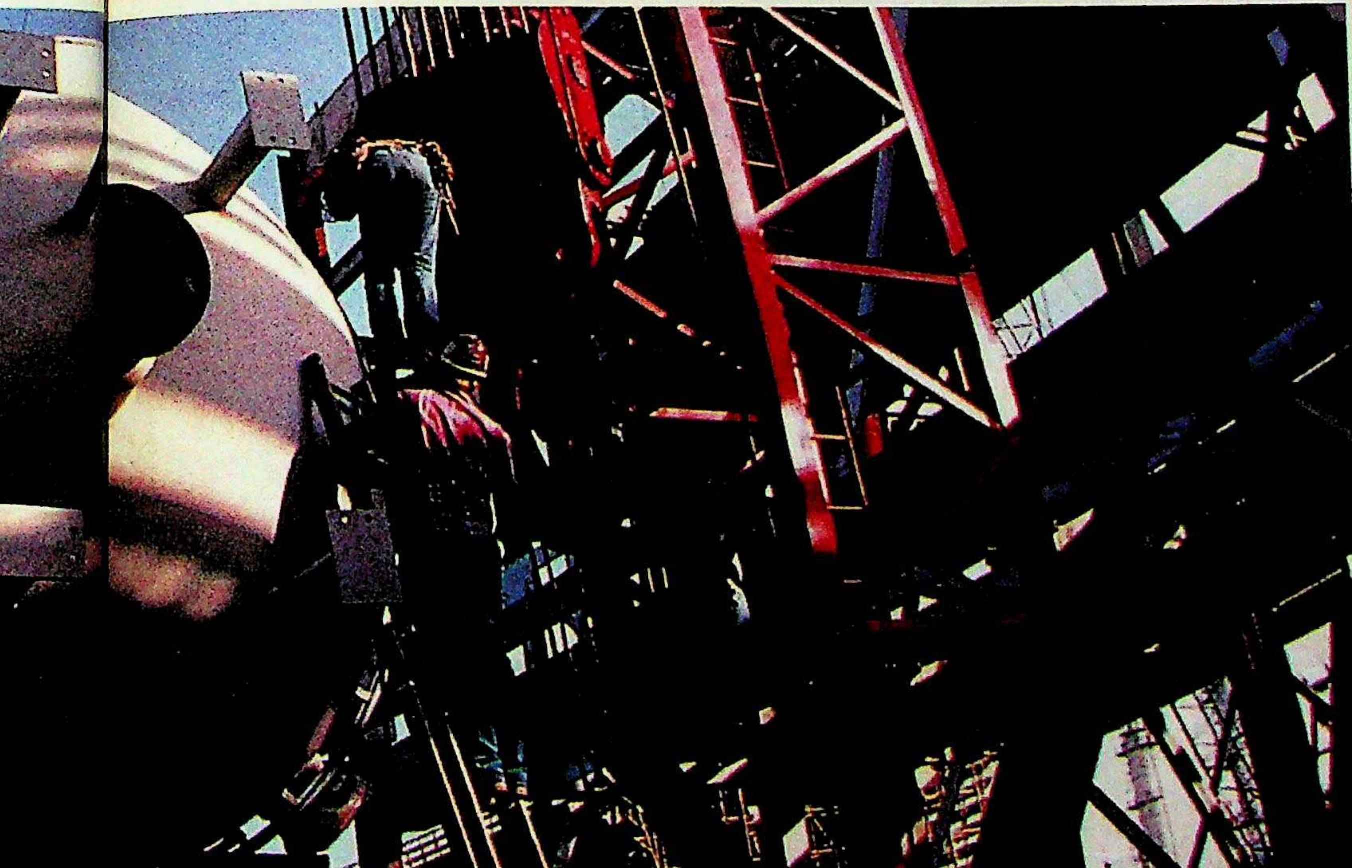

हीं
नये
मारे

दो दशक बीत गये... लोयडस्टील इस्पात की दुनिया में लगातार मज़बूती से क़दम बढ़ाता जा रहा है। इस्पात का हर काम... लोयडस्टील का काम है.! इस्पात को तैयार करने में... उससे चीज़ों का निर्माण करने में... उसे ढालने या फ़ाइब्रीकेट करने में... लोयडस्टील की प्रमुख भूमिका है ! बहुत जल्द इस्पात के उत्पादन की शुरुआत भी की जाएगी !
... क्योंकि इस्पात है औद्योगिक संरचना का प्रमुख आधार !

सचमुच
इस्पात का कोई
जवाब नहीं है !

Lloydsteel इस्पात का मज़बूत हाथ !

लोयडस्टील इंडस्ट्रीज़ लिमिटेड रजिस्टर्ड ऑफिस : ३०२, डलामल हाउस, नरीमान रोड, बम्बई ४०० ०२१.

CLEA-LSI-A2

जो सुरक्षा रेमण्ड सीमेंट से मिले वह पीढ़ी दर पीढ़ी चले.

इसलिए चाहे आपका अपना घर हो या दफ़्तर या फिर कोई अन्य निर्माण कार्य, भरोसा कीजिए केवल रेमण्ड सीमेंट पर. क्योंकि रेमण्ड सीमेंट ठोस हैं इसके फ़ायदे : उत्तम दबाव शक्ति (कम्प्रैसिव स्ट्रैंथ), जमाव का बढ़िया मानक, मज़बूत पैकिंग.

जी हां, रेमण्ड सीमेंट को बरसात, धूप और समय जैसी कुदरत की फौलादी शक्तियों से मुकाबला करने के लिए ही बनाया गया है.

याद रखिए, रेमण्ड सीमेंट के कण-कण में भरी है सर्वोत्तम सुरक्षा और सर्वोत्तम शक्ति.

R
कैलाश ब्रांड
रेमण्ड सीमेंट
१०० साल वाला सीमेंट

नेता उभरने लगे. और जहां बैलेट (वोट) उन्हें सत्ता में काबिज नहीं करा सका, वहां बुलेट के साथ नेता उभरे. आंध्र प्रदेश में पहली दफा एक क्षेत्रीय पार्टी तेलुगु देशम ने इंका का मैदान साफ कर दिया और वह भी अस्तित्व में आने के महज तीन महीने के भीतर ही. असम में असम गण परिषद ने आंदोलन चलाकर चुनाव में इंका का सफाया कर दिया. नंदमूरि तारक रामराव और प्रफुल्ल कुमार महंत दोनों ने ही क्षेत्रीय भावना और स्वाभिमान भड़काकर अपने अपने राज्य में सत्ता हासिल की.

लेकिन राजनीति का सबसे खतरनाक और भयावह मोड़ तो पंजाब में नजर आया. जरनैल सिंह भिंडरांवाले, जिसे इंका ने अकालियों के खिलाफ टक्कर के लिए खड़ा किया था, के रूप में एक ऐसा भस्मासुर खड़ा हो गया जिस पर आज तक काबू नहीं किया जा सका. 'खालिस्तान आंदोलन' की जो चिंगारी उन्होंने सुलगाई उससे भारतीय गणराज्य की अखंडता ही खतरे में पड़ गई. आतंकवाद का यह विकराल दैत्य श्रीमती गांधी और जनरल अरुण श्रीधर वैद्य सहित दर्जनों महत्वपूर्ण व्यक्तियों को लील गया. 1984 में श्रीमती गांधी और भिंडरांवाले की मौत से आतंकवाद के एक दौर का अंत जरूर हुआ लेकिन इसके बाद जो दौर शुरू हुआ वह पहले से कहीं ज्यादा बेकाबू हो गया.

इस दौर ने अपना चक्र जल्द ही पूरा कर लिया. सत्ता के दलालों और हेकड़ीबाज नेताओं की पार्टी समझी जाने वाली इंका को शुरू में देश की अखंडता का रक्षक समझा गया. राजीव के सकारात्मक परिवर्तन लाने के प्रयासों से जो उम्मीद बंधती नजर आई थी वह उनके पब्लिक स्कूल में शिक्षित लेकिन व्यावहारिक राजनीति में कोरे सहयोगियों के कारण जल्द धूमिल पड़ गई. इंका फिर पुराने चोले में आ गई यानी श्रीमती गांधी का दर्प और व्यक्ति-पूजक संस्कृति की वापसी. जिन लोगों को पार्टी और सरकार में सत्ता और स्वतंत्रता दी गई वे इसका उपयोग अपना असर बढ़ाकर जड़ें मजबूत करने में लग गए. इससे राजीव को अपना सिंहासन खतरे में पड़ता नजर आया और उन्होंने एक-एक करके इन खतरों को रास्ते से हटाना शुरू किया. पहले वी.पी. सिंह, फिर अर्जुन सिंह, नारायणदत्त तिवारी और बाकी दूसरे नेता. खुद राजीव धीरे-धीरे अपनी पार्टी और इसके नेताओं से दूर होते गए. फिर अचानक उनके कार्यालय और सचिवालय ने पार्टी और सरकार की सारी शक्ति अपने हाथों में केंद्रित कर ली. यहीं से तानाशाही और पतन के दौर की शुरुआत हुई.

भ्रष्टाचार से सने अस्सी के दशक में साफ-सुथरी राजनैतिक संस्कृति का पौधा रोपने में राजीव की लाचारी इसी से जाहिर होती है कि सत्ता में आने के दो साल के भीतर ही वे सारे नए मूल्यों को ताक पर धर कांग्रेसी संस्कृति में रंग गए. जैसे-जैसे 1989 के चुनाव करीब आते

सैबल दास

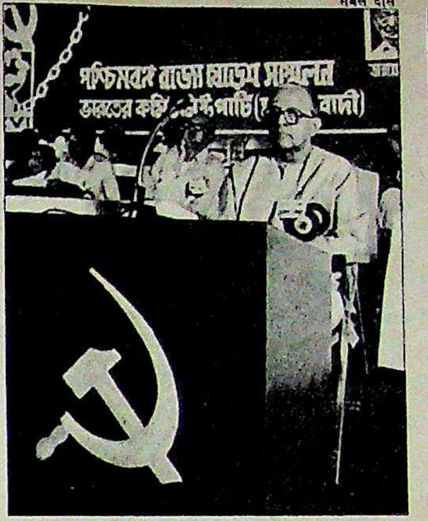

माकपा बैठक को संबोधित करते बसु

आखिरी विडंबना यह रही कि भाजपा और वामपंथी पार्टियों ने केंद्र में जनता दल की मध्यमार्गी अल्पमत सरकार को समर्थन दिया

शरद सक्सेना

भाजपा के विजय जुलूस में आडवाणी

कृष्णमुरारी किशन

राजेश्वर राव

"राजीव गांधी ने भारत को 21वीं सदी में ले जाने का वादा किया था. देश उनके बिना भी वहां पहुंच सकता है

ज्योति बसु, 1989

आज कोई भाजपा को हिंदू पार्टी मानता है तो मुझे इसकी परवाह नहीं"

लालकृष्ण आडवाणी, 1988

गए, सत्ता के दलाल और भ्रष्ट राजनीतिक करार देकर इंका से बाहर किए गए दिग्गज एक-एक करके वापस आते गए. इंका के इस बिखराव से हिंसा और आंदोलन की राजनीति को बढ़ावा मिला. इस तरह 1987 में जहां इंकाई मुख्यमंत्री ताश के पत्तों की तरह फेंटकर बदले गए, हरियाणा में देवीलाल और तमिलनाडु में करुणानिधि जैसे स्थानीय नेता उभरते गए. राजनैतिक उथल-पुथल का यह मौसम महेंद्र सिह टिकैत, शरद जोशी, सुभाष घीसिग और कांशीराम जैसे नेताओं के पनपने में बहुत सहयोगी रहा. इनमें से प्रत्येक नेता ने अपने-अपने क्षेत्र में इंका के असर को खत्म करने में भूमिका निभाई. राजीव की इंका जहां शहरी मध्यम वर्ग की पैरोकार बनी, वहीं इन क्षेत्रीय नेताओं ने अपने क्षेत्र अथवा समुदाय का उद्धारक बनने की जिम्मेदारी ओढ़ी.

लेकिन अस्सी के दशक में उग्र क्षेत्रीयता से ज्यादा खतरनाक रहा सांप्रदायिकता की राजनीति का उदय. राजीव शाहबानो केस, राम जन्मभूमि और पंजाब समस्या पर उलझे रहे और भारत के राजनैतिक क्षितिज पर धर्म पर आधारित पार्टियों और गुटों के काले बादल उभर आए. अयोध्या विवाद के विस्फोटक स्वरूप से परिचित होते हुए भी सभी पार्टियों ने जिस तरह इसे भुनाया वह दुर्भाग्यपूर्ण रहा. इस दशक में हिंदू धर्म का पुनर्जागरण हुआ और विश्व हिंदू परिषद और भाजपा को सामाजिक मान्यता मिली. 1989 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के 88 सदस्यों का चुना जाना इसी सामाजिक मान्यता का सबूत है.

अस्सी के दशक के विरोधाभास राजनीति में भी नजर आए. इस दौर में धर्म-विशेष पर आधारित गुट उभरे तो वामपंथी दलों के प्रभाव क्षेत्र भी बढ़े. हालांकि उनके प्रमुख गढ़ पूर्वी क्षेत्र और सुदूर दक्षिण ही रहे. दशक के अंत में केंद्र में जो सरकार बनी, वह इस दौर के राजनैतिक उथल-पुथल की परिणति थी. दिल्ली में अब ऐसी सरकार है, जिसे वामपंथी और दक्षिणपंथी ही नहीं, कट्टर अकालियों का भी समर्थन है.

अस्सी के दशक ने सदी के आखिरी दशक में नए रोमांचक राजनैतिक खेल के लिए मंच तैयार कर दिया है जहां काफी कुछ नया घटित होने की उम्मीद है. यदि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार सफल रहती है तो संघीय सरकार तथा केंद्र-राज्य संबंधों की नई परिभाषाएं तैयार होंगी. बीते दशक ने आने वाले समय के लिए कई चुनौतियां खड़ी कर दी हैं. यह तो तय है कि धर्मनिरपेक्षता कायम रहेगी, अलगाववादी ताकतों की मांगों से देश की अखंडता से समझौता किए बिना निबटा जाएगा तथा भ्रष्टाचार और गुटबंदी भारतीय राजनीति को पूरी तरह खोखला नहीं करेगी. लेकिन '90 के दशक में जो चुनौतियां देश झेलेगा वे '80 के दशक के मुकाबले बहुत गंभीर होंगी.

—प्रभु चावला

रघु राय

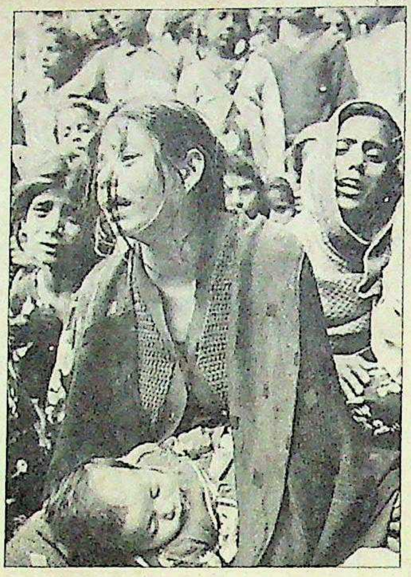

दिल्ली में 1984 के दंगों के शिकार

प्रशांत पंजियार

बाबरी मस्जिद के समर्थन में जुलूस

भवान सिंह

राम शिला पूजन

सबसे खतरनाक तो सांप्रदायिक राजनीति का उदय रहा—चाहे वह मुस्लिम उग्रवाद के रूप में हो या हिंदू पुनरुत्थानवाद के रूप में

"

अगर मैं आंदोलन छेड़ूं तो आप क्या समझते हैं, सरकार मुझे रोक पाएगी

सैयद अब्दुल्ला बुखारी, 1988

हिंदू राष्ट्र की अवधारणा मानने वाले मुसलमानों को ही इस देश में रहने दिया जाएगा

बाल ठाकरे, 1984

"

ज़िन्दगी को बिठाएं सर आँखों पर!
रेमण्ड
ब्लैंकेट

चार्ट: बी.के.

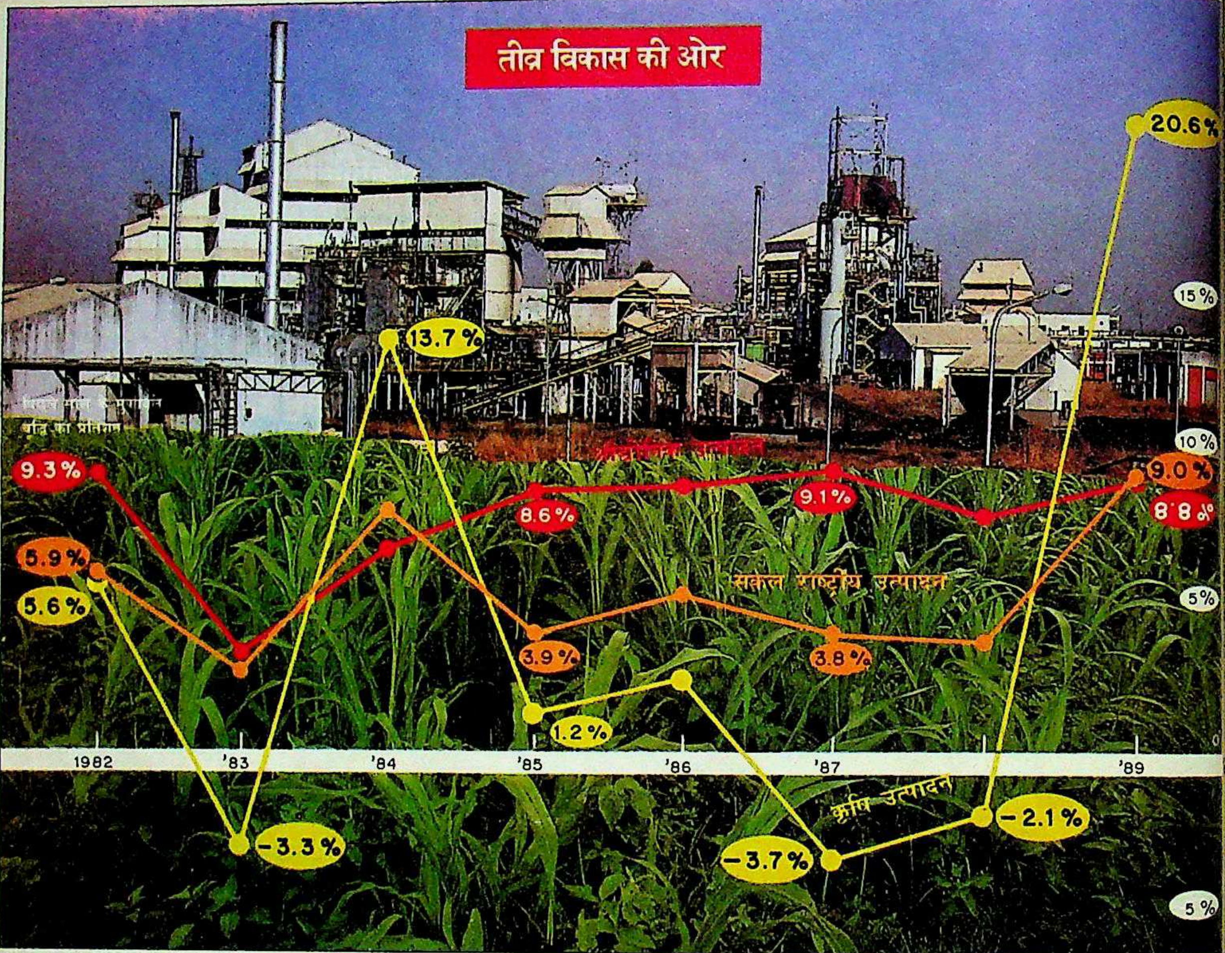

परिपक्वता के संकेत

विस्तार के साथ ही कर्ज का दलदल और रोजगार की कमी जैसे कई संकट भी

यह एक नई दुनिया की तरफ कदम बढ़ाने की शुरुआत थी. अब इसमें परिपक्वता के संकेत मिलने लगे थे मानो कोई सोया हुआ देश दशकों की अपनी सुस्ती झाड़कर उठने लग गया हो. पर हैरानी की बात है कि इसमें वैसी तेजी नहीं आई. फिर अचानक ही '80 के दशक में आकर अर्थव्यवस्था के पांवों की बेड़ियां टूटने लगीं.

लाइसेंस और नियंत्रण के बोलबाले वाले राज की रातोरात अंतिम क्रिया कर दी गई. सालाना 2.5 फीसदी विकास दर को भी दफना दिया गया. अब उदार नीति का युग आ गया था.

कारखाने पूरी शिद्दत से खड़े किए जाने लगे. बड़े उद्योगों के पौ-बारह हो गए. कंपनियां सुरक्षित घरेलू बाजार से आगे बढ़कर दुनिया भर में ग्राहक खोजने लग गईं. मुनाफा अब कोई गाली नहीं रहा. विदेशी पूंजी और तकनीक का स्वागत होने लगा. उत्पादकता और गुणवत्ता पर ज्यादा जोर दिया जाने लगा. मध्यम वर्ग की आमदनी बढ़ी और कमरतोड़ आयकर व्यवस्था बीते दिनों की बात हो गई.

पर इस बदलाव के साथ कई संकट भी आ गए. आज देश कर्ज के अधिक गहरे दलदल में फंस चुका है. सरकारी राजस्व और खर्च बीच अंतर बहुत तेजी से बढ़ा है. लगातार बढ़ते घाटे ने मुद्रास्फीति दावानल को हवा दी है. अर्थव्यवस्था का विस्तार भले ही हुआ ह रोजगार की कमी वैसी ही बरकरार है.

बहरहाल, '70 के दशक की तुलना में स्थिति में भारी बदलाव गया था. तब अधिकतम आयकर की सीमा बढ़ाकर 97.5 फीसद कर दी गई थी. निर्यात प्रोत्साहन के बजाए जोर आत्मनिर्भरता औ आयात के विकल्प पर दिया जाता था. 'आधार' क्षेत्र में भारी निवे किया गया पर कमी बनी रही क्योंकि बहुत सारे उद्योग अपनी क्षमत का आधा ही उत्पादन कर पाते थे. सार्वजनिक क्षेत्र का घाटा बढ़ गया. 1980 में तेल की कीमतों के संकट के दो साल बाद भुगता शेष के संकटों से निबटने के लिए सरकार को अंतरराष्ट्रीय मुद्रा को के आगे हाथ फैलाना पड़ा.

तभी यह महसूस किया जाने लगा कि नियंत्रण से विषमताएं दूर नहीं होतीं, विकास की राह में बाधाएं जरूर आती

प्रशांत पंजियार

भवान सिंह

प्रमोद पुष्करणा

(ऊपर बाएं से) गोपी अरोड़ा और लक्ष्मीकांत झा; (नीचे) अहलूवालियाः नए मसीहा

> **महसूस किया जाने लगा कि नियंत्रण से विकास में बाधा आती है**
>
> **"आधुनिक औद्योगिक आधार और प्रतिस्पर्धा के लिए नौकरशाही नियंत्रणों को हटाना जरूरी होगा**
>
> मोंटेक सिंह अहलूवालिया**"**

जवाहरलाल नेहरू और पी.सी. महालनोबीस के दिन लद गए. उनकी जगह लक्ष्मीकांत झा, आबिद हुसैन, गोपी अरोड़ा और फिर मोंटेक सिंह अहलूवालिया जैसे उदारतावाद के नए मसीहा आ गए.

उदार नीतियों की प्रक्रिया '80 का दशक आते-आते अनेक समितियों के गठन से शुरू हुई. इनमें झा समिति ने औद्योगिक विकास की बाधाएं हटाने के लिए प्रशासनिक सुधार की जरूरत पर जोर दिया, अर्जुन सेनगुप्त समिति ने सार्वजनिक क्षेत्र को स्वायत्त बनाने की बात की, पूर्व वित्त सचिव एम. नरसिंहम की अगुआई वाले अधिकारियों के दल ने उद्योगों पर भौतिक नियंत्रण के बजाए मौद्रिक नियंत्रण कायम करने की सिफारिश की.

इन समितियों की सिफारिशों के आधार पर ही बाद में नई आर्थिक नीतियों की नींव रखी गई. लाइसेंस प्रणाली वस्तुतः खत्म कर दी गई और नियम-कायदे सरल बनाए गए. दूरसंचार जैसे क्षेत्रों के द्वार निजी कंपनियों के लिए खोल दिए गए. एमआरटीपी कंपनियों की संपत्ति सीमा 20 करोड़ रु. से बढ़ाकर 100 करोड़ रु. कर दी गई. आयकर और निगम करों की दरें कम की गईं. संशोधित कीमत-युक्त कर (माडवेट) से राजस्व शुल्क को ज्यादा तर्कसंगत बना दिया गया. ब्याज की दरों को लचीला बनाया गया और निजी क्षेत्र को पूंजी बाजार से पूंजी उगाहने के लिए प्रोत्साहित किया गया.

नियंत्रण की व्यवस्था ढीली किए जाने के अच्छे नतीजे भी निकले. निगम क्षेत्र में जो कंपनियां सबसे कार्यकुशल थीं उनके तो वारे-न्यारे हो गए. खास तौर पर उपभोक्ता वस्तुएं बनाने वालों का खासा विस्तार हुआ. '70 और '80 के दशकों के बीच दुपहिया वाहन उत्पादकों की संख्या छह से बढ़कर 15 हो गई. पालिएस्टर धागे के उत्पादक छह से 24 हो गए. कारों के मॉडल भी दो से बढ़कर सात और टेलीविजनों के 12 से 100 हो गए. राष्ट्रीय सार्वजनिक वित्त एवं नीति संस्थान के निदेशक अमरेश बागची के अनुसार, "उदार नीति में उपभोक्ता के प्रति एक जबरदस्त पक्षपात का भाव था."

सीमेंट उद्योग पर से नियंत्रण हटा तो दस वर्षों बाद पहली बार देश में जरूरत से ज्यादा सीमेंट का भंडार हो गया. भारी स्टॉक हो जाने से उर्वरक कंपनियों में कीमतों की जंग चली. दुपहिया वाहनों की ब्लैक खत्म हो गई और कंप्यूटर, कॉपियर तथा टेलीविजन निर्माताओं में तो जैसे कीमतें कम करने की होड़ ही लग गई. इसकी मदद के लिए बने बाकी तामझाम की हालत भी काफी बेहतर थी. 1981 से 1989 के बीच विद्युत उत्पादन लगभग दुगना हो गया. और रेलवे ने माल ढोने के अपने लक्ष्य को भी पीछे छोड़ दिया. बांबे हाई से तेल और गैस के पूरे दोहन से आयात पर निर्भरता कम हो गई.

इसका एक संकेत है लगातार लग रहे नए उद्योग. '70 के दशक की शुरुआत में नए उद्योगों के लिए हर साल 60 लाइसेंस जारी किए गए, जबकि '80 के दशक के मध्य में यह संख्या बढ़कर 1,000 प्रतिवर्ष हो गई. इसी दौरान विदेशी गठजोड़ से शुरू होने वाले धंधों की संख्या बढ़कर तीन गुनी हो गई. सीधा विदेशी निवेश भी 1980 के 10 करोड़ रु. के मुकाबले 1988 में 240 करोड़ रु. हो गया.

पर उदार नीतियों की कीमत भी चुकानी पड़ी. एक तरफ तो उदारवाद ने पेट्रोरसायन, सिंथेटिक धागे, दूरसंचार और इलेक्ट्रॉनिक्स

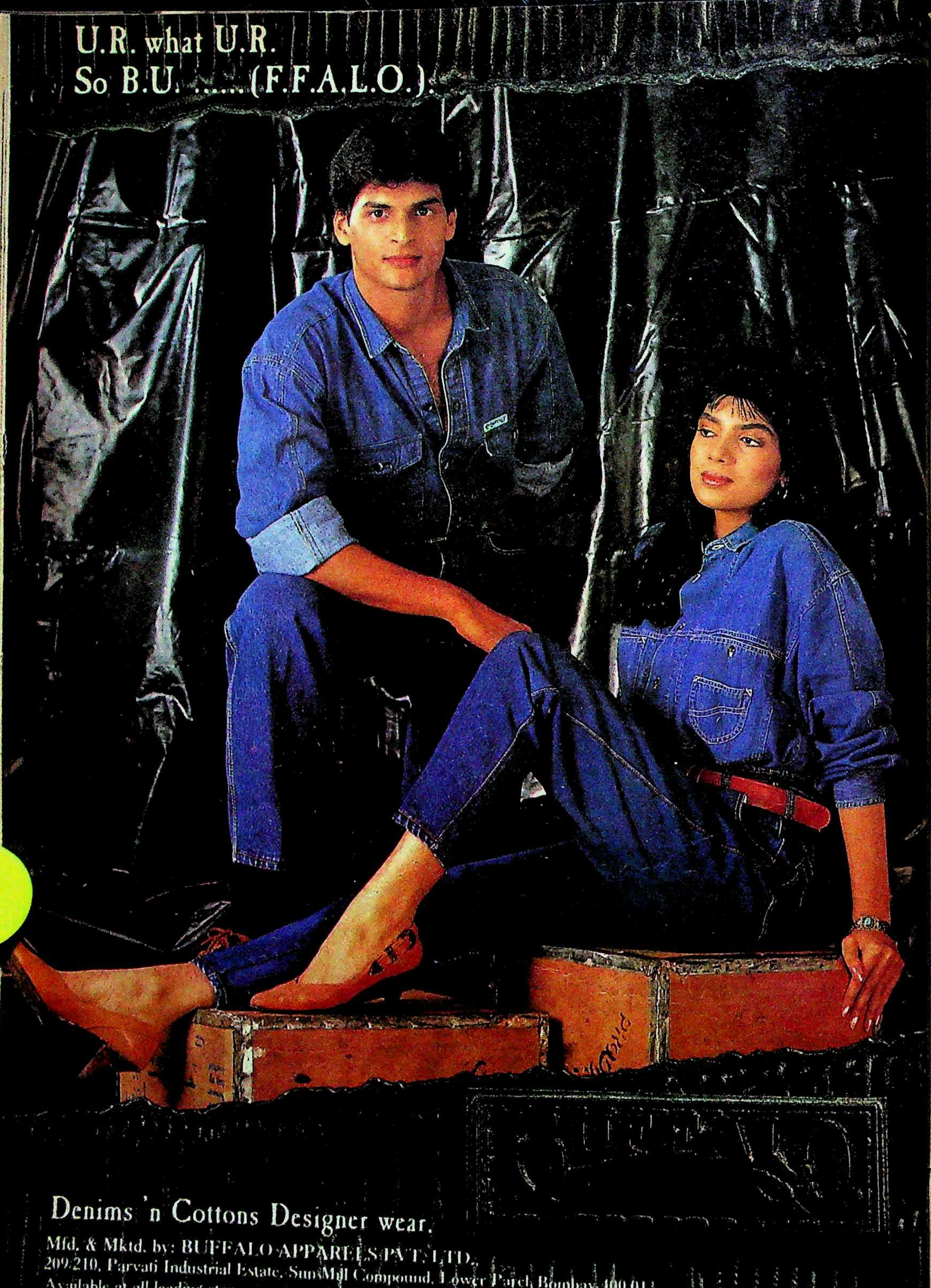
U.R. what U.R.
So B.U. ......(F.F.A.L.O.).
Denims 'n Cottons Designer wear.

Mfd. & Mktd. by: BUFFALO APPARELS PVT. LTD.,
209-210, Parvati Industrial Estate, Sun Mill Compound, Lower Parel, Bombay 400 013.
Available at all leading stores.

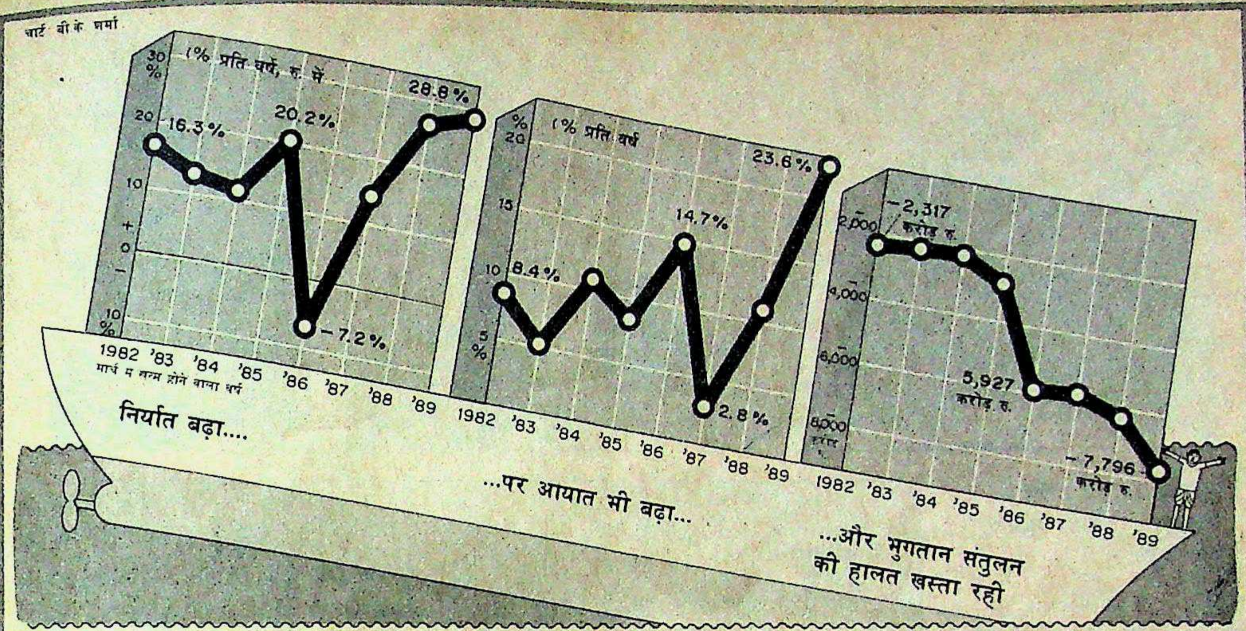

उद्योगों का रुख विदेशी बाजारों की ओर हुआ

> “भारी विदेशी कर्जों ने देश के भविष्य को बंधक बना दिया है
>
> अरुण घोष
> *सदस्य, योजना आयोग*”

(नीचे बाएं) हुसैन; और अलघ: निर्यात पर जोर

प्रमोद पुष्करणा

प्रशांत पंजियार

जैसे उद्योगों को विकास के नए आयाम दिए, तो दूसरी तरफ सूती कपड़ा, पटसन, पुरानी इंजीनियरिंग और कागज के उद्योग घाटा झेलकर एक के बाद एक बंद होने लग गए. सार्वजनिक क्षेत्र की करोत्तर कमाई जहां 2.8 फीसदी हुई, वहीं इसमें 72,000 करोड़ रु. की पूंजी खपी.

कृषि क्षेत्र ने प्रकृति की निर्ममताओं के सामने टिक पाने का दमखम साबित किया. 1979 के सूखे के बाद भारी मात्रा में खाद्यान्न का आयात करना पड़ा, मुद्रास्फीति तेजी से बढ़ी, औद्योगिक विकास उलटी दिशा में चल पड़ा और सकल राष्ट्रीय उत्पाद गिर गया. पर 1987 के सूखे में हालात इसके बिलकुल उलटे थे और सारा मामला आसानी से सुलट गया. खाद्यान्न के बफर स्टॉक की वजह से पैदावार की कमी की भरपाई हो गई और कीमतें भी काबू में रहीं.

पर समस्या मुख्यत: औद्योगिक विकास के प्रति सरकार के अतिशय विश्वास की वजह से बनी रही. इसलिए ग्रामीण इलाकों में बहुत कम निवेश होने और व्यापार की सारी शर्तें कृषि के खिलाफ होने के कारण किसान कृषि पैदावार की लाभप्रद कीमतें, ज्यादा रियायतें और कर्ज माफी की मांगें करने लगे. आर्थिक विकास संस्थान के हनुमंत राव के अनुसार, “कृषि क्षेत्र में खास तौर पर सिंचाई के मामलों में, निवेश कम करने का असर बुरा पड़ा है और इसे अगले कई साल तक महसूस किया जाता रहेगा.”

संकट का ही दूसरा उदाहरण लगातार बढ़ रहा व्यापार घाटा है. निर्यात को बढ़ावा देने के लिए मुक्त व्यापार क्षेत्र कायम किए गए और दुर्लभ मुद्रा को आकर्षित करने के लिए कई प्रोत्साहन दिए गए. और फिर निर्यात की कमाई पर आयकर में छूट भी दे दी गई. साथ ही अंतरराष्ट्रीय बाजार में रुपए की कीमत लगातार गिरने से भारत का निर्यात सस्ता हो गया. इसलिए '80 के पूरे दशक में निर्यात वृद्धि की दर 15 फीसदी पर ही टिकी रही. पर आयात बहुत तेजी से बढ़ा.

घरेलू कर्ज की हालत भी इतनी ही खस्ता है. योजना आयोग के पूर्व सदस्य राजा चेलिया के अनुसार, “अस्सी के दशक में सत्तर वाले दशक की बजट-बचत खत्म हो गई. अब '90 के दशक में यही मुख्य समस्या होगी.” पूरे दशक में सरकार ने ज्यादातर पैसा प्रशासन, सुरक्षा और कृषि रियायतों में झोंक दिया. दरअसल '80 के दशक में सरकार का घरेलू कर्ज बोझ सात गुना बढ़ गया. और 1974-75 से 1989 तक इस कर्ज के ब्याज में वृद्धि की दर 52 फीसदी रही.

और भी बुरी बात यह हुई कि राजस्व वृद्धि खर्च वृद्धि के सामने

यशवंत नेगी

नेगी

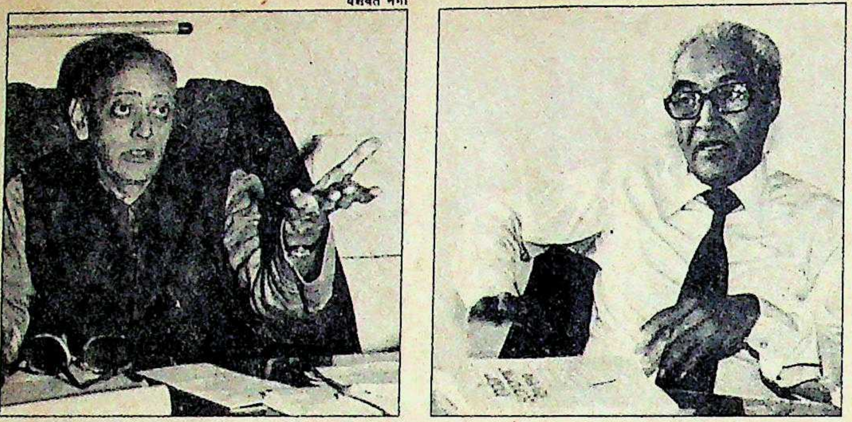

(ऊपर बाएं से) जैन; मिन्हास; हनुमंत राव: सुर बदले

नई सरकार समाजवाद का नारा लगा सकती है मगर इसमें दमखम से ज्यादा नारेबाजी ही होगी

> “उदारवाद कुछ लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए था. अधिकांश के लिए यह कहर साबित हुआ”
>
> लक्ष्मीचंद्र जैन
> *सदस्य, योजना आयोग*

चार्ट: बी.के. शर्मा

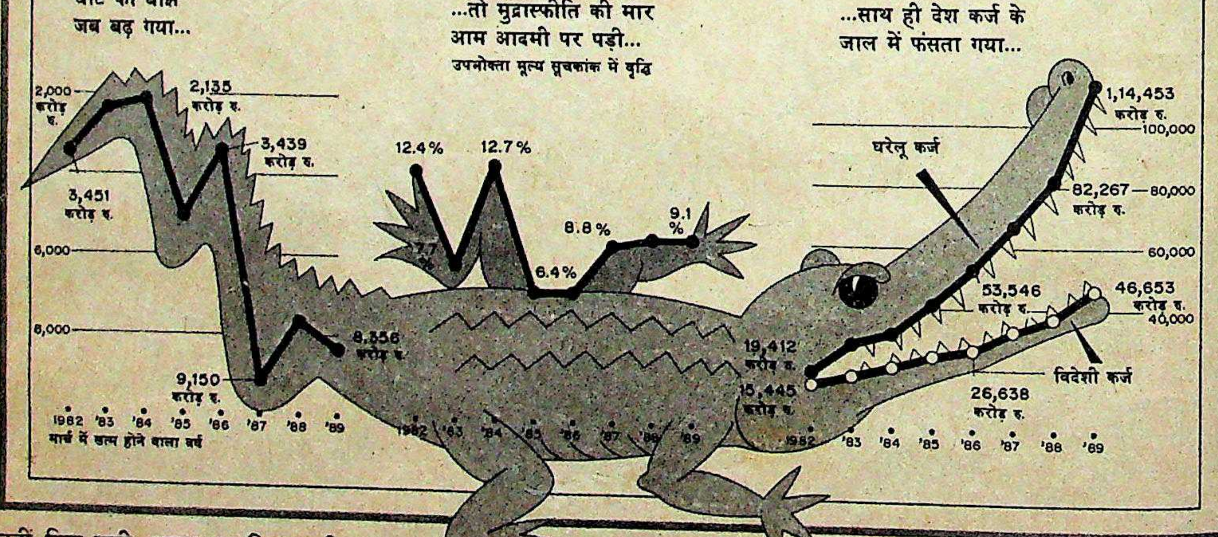

नहीं टिक सकी. बचत दर स्थिर रही. सकल घरेलू उत्पाद के मुकाबले कुल राजस्व की वृद्धि दर 16.4 फीसदी पर ही स्थिर रही क्योंकि सरकार ने कर आधार का विस्तार नहीं किया.

जाहिर है कि सरकार की फिजूलखर्ची से मुद्रास्फीति भी बढ़नी ही थी. भारतीय सांख्यिकी संस्थान के बी.एम. मिन्हास के अनुसार, “अस्सी के दशक में वित्तीय अनुशासन पूरी तरह गायब हो गया और यही मुद्रास्फीति का सबसे बड़ा कारण है.” हद तो यह हुई कि खाद्य तेलों, खाद्यानों, चीनी और वनस्पति जैसी आवश्यक वस्तुओं की कीमतें कुछ ज्यादा ही तेजी से बढ़ी.

अर्थव्यवस्था की मूल समस्याएं जस की तस रहीं और उदार नीतियों का कोई असर नहीं पड़ा. ऐसे में वी.पी. सिंह की अगुआई वाली नई सरकार को फिर से समाजवाद के जादू पर जोर देना ही था. यानी अर्थव्यवस्था संबंधी सोच फिर पुराने ठिकाने पर लौट आई है. '70 के दशक में इंदिरा गांधी की लफ्फाजी को नए शासकों ने फिर से गुनगुनाना शुरू कर दिया है. पर इनमें शायद कोई बुनियादी अंतर नहीं है.

सामने खड़ी भारी समस्याओं के बावजूद भारत की अर्थव्यवस्था काफी लोच दिखाती आ रही है. '90 का दशक भारत की अर्थव्यवस्था के लिए अनूठा अनुभव हो सकता है, भले ही यह अर्थव्यवस्था कभी तो मिश्रित तो कभी घालमेल वाली बनी रहे और इसका विकास पहले से बेहतर और दुनिया के बहुत-से देशों के मुकाबले ज्यादा तेज रफ्तार होगा.

—सुरजीत दासगुप्त

आपके लिए एक विशेष योजना

गृह ऋण खाता स्कीम

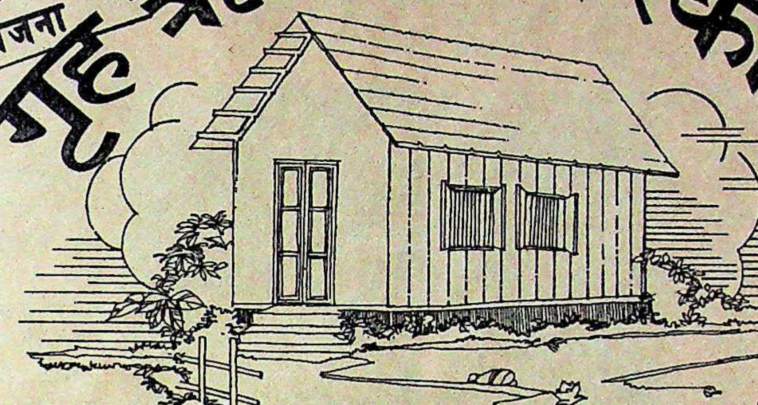

राष्ट्रीय आवास बैंक ने सार्वजनिक क्षेत्रों के सभी बैंकों तथा अन्य अनेक अनुसूचित बैंकों के माध्यम से **गृह ऋण खाता स्कीम** शुरू की है.

गृह ऋण खाता स्कीम, मकान बनाने के निर्णय से पहले बचत कराकर लोगों को अपनी सहायता स्वयं करने में मदद करती है. चूंकि कोई भी ऋण खाता एजेंसी ऋण स्वीकृत करते समय मार्जिन राशि पर जोर देती है, **गृह ऋण खाता स्कीम** आपकी यह आवश्यकता पूरी करने में मदद करती हैं.

गृह ऋण खाता स्कीम के क्या लाभ हैं?

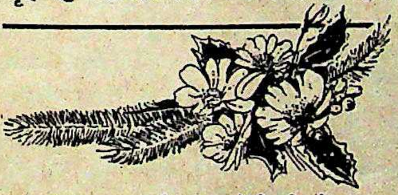

गृह ऋण खाताधारी **भारत में किसी भी स्थान पर नए मकान/फ़्लैट प्राप्ति के लिए ऋण का** हकदार होता है, चाहे उसने खाता किसी भी स्थान पर खोल रखा हो.

कम से कम 5 वर्ष तक बचत करके बचतकर्ता अपनी जमा राशि के कई गुना तक ऋण ले सकता है. मान लीजिए आप 40 वर्गमीटर (430 वर्ग फीट) के क्षेत्र में एक छोटा सा मकान बना रहे हैं या बना-बनाया मकान ले रहे हैं तो आपको अपनी जमा राशि के **चार-गुणा तक ऋण** मिल सकता है.

आप कम से कम 30 रुपये महीना या 360 रुपये प्रतिवर्ष खाते में डाल सकते हैं. बचत की अधिकतम राशि की कोई सीमा नहीं है।

बचत पर 10% वार्षिक ब्याज मिलेगा.

स्कीम के अन्तर्गत ऋणों पर 10.5% (रु. 50,000 तक के ऋण पर) से लेकर 14.5% (रु. 2,00,000 से रु. 3,00,000 तक के ऋण पर) तक ब्याज लगेगा. ब्याज की यह दरें आवासीय ऋणों पर बैकों द्वारा लिए जाने वाली वर्तमान ब्याज दरों से 1.50% से लेकर 2.00% तक **कम** हैं.

इस स्कीम के अन्तर्गत ऋण लेने से साधारण शर्तों पर किसी बैंक से ऋण सहित दूसरे स्रोतों से ऋण लेने पर कोई रोक नहीं है.

गृह ऋण खाता स्कीम बचत की ऐसी एकमात्र स्कीम है जिसमें आप–

- **चाहे जितनी बचत करें.**
- **जितनी नियमित रूप से बचत करें.**
- **जब तक चाहें बचत करें.**

अन्य लाभ

सार्वजनिक एजेन्सी अथवा सहकारी आवास संस्था से प्लॉट खरीदने या रजिस्ट्रेशन शुल्क अदा करने के लिए **5 वर्ष पूरे होने से पहले** भी आप अपनी **गृह ऋण खाता** बचत का 90% तक **निकाल** सकते हैं.

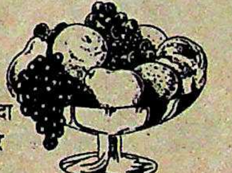

स्कीम के अन्तर्गत यदि ऋण राशि पर्याप्त नहीं है तब भी सामान्य दरों पर **प्राथमिकता के आधार पर अतिरिक्त ऋण** लेने की सुविधा है.

सदस्यों ने ऋण की सुविधा न भी ली हो तब भी वे मकान/फ़्लैट लेने के लिए 5 वर्ष बाद खाते में जमा बकाया राशि निकाल सकते हैं.

गृह ऋण खाता कौन खोल सकता है?

कोई भी भारतीय नागरिक, व्यस्क अथवा अव्यस्क जिसके अपने नाम, भारत में कोई मकान/फ़्लैट नहीं है, गृह ऋण खाता खोल सकता है.

वह लोग भी जिनके पास पहले से ही स्वयं के नाम पर मकान है अपने अव्यस्क बच्चों के नाम से खाता खोल सकते हैं.

कर संबंधी क्या लाभ है?

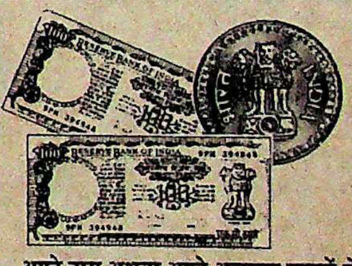

अपने नाम अथवा अपने अव्यस्क बच्चों के नाम से गृह ऋण खाता स्कीम के अन्तर्गत की गई बचत पर बीमा प्रीमियम अथवा भविष्य निधि की तरह आयकर कानून की धारा 80 ग के अन्तर्गत कर में रियायतें दी जाती है.

राष्ट्रीय
आवास
बैंक
(भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्ण स्वामित्व में)
हिन्दुस्तान टाइम्स हाउस (छठीं मंज़िल)
18-20, कस्तूरबा गांधी मार्ग नई दिल्ली-110 001.

आप इन बैंकों में खाता खोल सकते हैं

इलाहाबाद बैंक, आन्ध्रा बैंक, बैंक ऑफ बड़ौदा, बैंक ऑफ इंडिया, बैंक ऑफ महाराष्ट्र, केनरा बैंक, सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, कार्पोरेशन बैंक, देना बैंक, इंडियन बैंक, इंडियन ओवरसीज़ बैंक, न्यू बैंक ऑफ इंडिया, ओरियन्टल बैंक ऑफ कॉमर्स, पंजाब नेशनल बैंक, पंजाब एण्ड सिंध बैंक, स्टेट बैंक ऑफ बीकानेर एण्ड जयपुर, स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला, स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र, स्टेट बैंक ऑफ ट्रेवनकोर, सिंडिकेट बैंक, यूको बैंक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, यूनाइटेड बैंक ऑफ इंडिया, विजया बैंक.

बैंक ऑफ करद लि., बैंक ऑफ मदुरै लि., बैंक ऑफ राजस्थान लि., बरेली कार्पोरेशन बैंक लि., बनारस स्टेट बैंक लि., भारत ओवरसीज़ बैंक लि. केथोलिक सीरियन बैंक लि., सिटी यूनियन बैंक लि., धनलक्ष्मी बैंक लि., फेडरल बैंक लि., जम्मू एण्ड कश्मीर बैंक लि., कर्नाटक बैंक लि., करूर वैश्य बैंक लि., लक्ष्मी विलास बैंक लि., लॉर्ड कृष्णा बैंक लि., नैनीताल बैंक लि., नैदुनगड़ी बैंक लि., पंजाब कोऑपरेटिव बैंक लि., रत्नाकर बैंक लि., सांगली बैंक लि., साउथ इंडियन बैंक लि., तमिलनाडु मर्केन्टाइल बैंक लि., यूनाइटेड वेस्टर्न बैंक लि., वैश्य बैंक लि.,

अभ्युदय कोऑपरेटिव बैंक लि., डेवलपमेंट कोऑपरेटिव बैंक लि. कालूपुर कामर्शियल कोऑपरेटिव बैंक लि., सारस्वत कोऑपरेटिव बैंक लि., सांगली अर्बन कोऑपरेटिव बैंक लि., शामराव विट्ठल कोऑपरेटिव बैंक लि., सूरत पीपल्स कोऑपरेटिव बैंक लि., बम्बई मर्केन्टाइल कोऑपरेटिव बैंक लि., केरल स्टेट कोऑपरेटिव बैंक लि., उड़ीसा स्टेट कोऑपरेटिव बैंक लि., उत्तर प्रदेश कोऑपरेटिव बैंक लि.

CHAITRA-D NHB 989 HIN

बदलती हकीकतों के अक्स

उदार आर्थिक नीतियों के बल पर उद्योग नई बुलंदियां छूने लगे

आजादी के बाद तीन दशकों तक भारत की मूलतः समाजवादी शब्दावली में 'व्यापार' शब्द गाली सरीखा बन गया था. उद्योगपति की दौलत देखकर लोगों को रश्क तो हुआ करता था पर कुल राष्ट्रीय चेतना में उनकी छवि मुनाफाखोरों, घोटालेबाजों और कालाबाजारियों जैसी ही होती थी.

'80 के दशक में यह सब बदल गया. एकाएक ही उद्योगपति चमकते सितारे बन गए. शेयरों और वस्तुओं की कीमतों के साथ ही उन्हें अखबारों के मुखपृष्ठों पर भी जगह मिलने लगी. उद्योग जगत को एक नया सम्मानजनक स्थान मिल गया.

सोच में यह बदलाव बदलती हकीकतों का ही अक्स था. उदार आर्थिक नीतियों से प्रोत्साहन पाकर उद्योग नई बुलंदियां छूने लगा. पहले के दशकों में औसत 3 फीसदी प्रति वर्ष वृद्धि दर अब बढ़कर सालाना 7 फीसदी पर पहुंच गई. शेयर बाजार उफान लेने लगा. पुख्ता शेयरों को खरीदने वालों का तांता लग गया. इसके साथ ही महानिर्गम नाम का एक नया शब्द चल पड़ा. भारतीय मध्यम वर्ग अपनी हैसियत जताने लगा. इस वर्ग के लोगों के पास खर्च करने को पैसा था और वह शेयरों, बाथरूम टाइलों, और चॉकलेटों और विभिन्न डिजाइन के परिधानों पर जेबें खाली करने लगा.

बाजार में पहली दफा प्रतिस्पर्धा शुरू हुई. इसमें पीछे छूटी कंपनियां दरकिनार हो गईं. कई दूसरी कंपनियों पर व्यावसायिक छापामारों की गिद्धदृष्टि पड़ी. उद्यमियों की एक नई जमात आगे आई जो गुमनामी की चादर छोड़कर उद्योग जगत की पहली कतार में पहुंच गई. प्रबंधकों ने मजदूर संघों के आगे घुटने टेकने की नीति छोड़ दी और मजदूर संघों ने भी राजनैतिक दलों का दामन छोड़कर नई सचाइयों से तालमेल बिठाया.

लेकिन इस चमक-दमक के नीचे काली परछाइयां भी थीं. आबादी के बड़े हिस्से को इस औद्योगिक उभार से अलग-थलग रखा गया. राजनीति में ऊंची पहुंच वाले उद्योगपति भारी परियोजनाएं झटक ले गए. वित्तीय संस्थाओं की भूमिका की आलोचना हुई. बहरहाल '80 का दशक भारतीय उद्योग जगत के लिए उम्मीद का दौर रहा. जो खामियां मौजूद रहीं, उन्हें बीते दशकों का अवशेष माना गया.

इस दशक का सबसे प्रत्यक्ष प्रतीक उभरते शेयर बाजार का तेजड़िया रहा. 1980 में देश के निवेशकों की संख्या मात्र 20 लाख थी. लेकिन 1989 आते-आते यह एक करोड़ तक पहुंच गई. 1980 में कंपनियों ने नए शेयर जारी करके 165 करोड़ रु. की रकम जुटाई. 1989 में यह रकम 5,000 करोड़ तक जा पहुंची. इसी

सभी चार्ट: बी.के. शर्मा

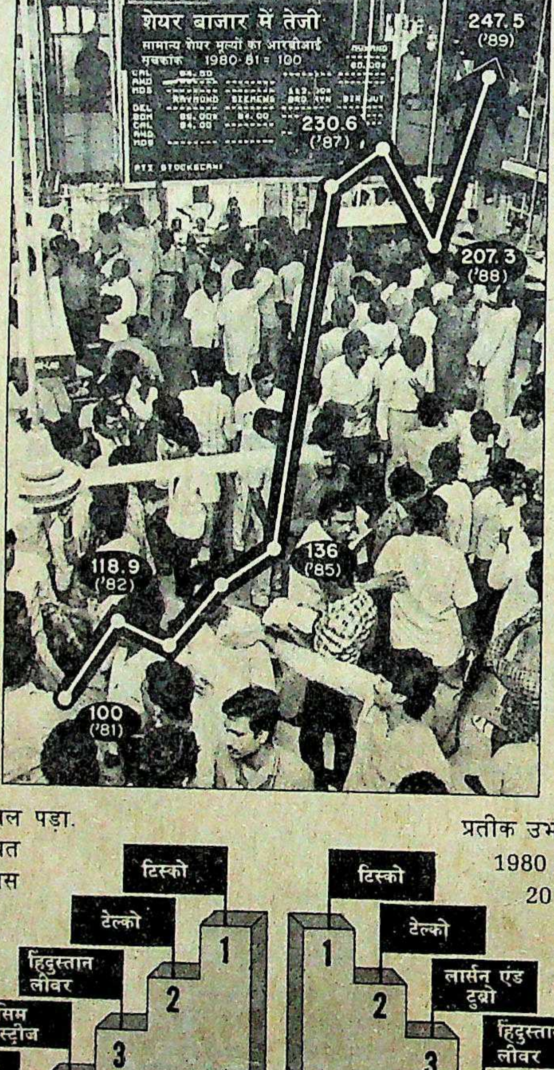

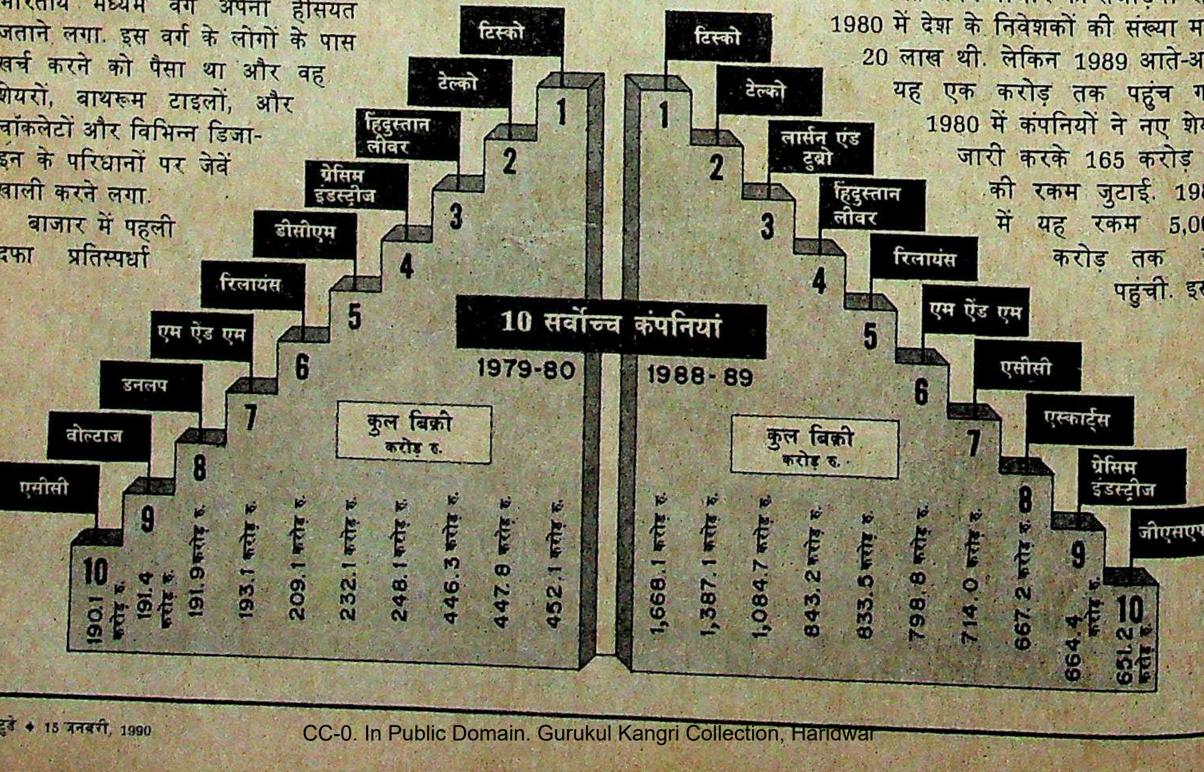

साल एक कंपनी लार्सन ऐंड टुब्रो ने एक ही निर्गम जारी करके 220 करोड़ रु. जुटा लिए जो 1982-83 में जुटाई गई कुल रकम से भी ज्यादा है. लेकिन 1989 के महज दो महीनों में ही कंपनियों ने 2,000 करोड़ रु. की रकम जुटा ली जो इस दशक के पहले तीन वर्षों की कुल उगाही के बराबर थी.

यह नया उत्साह भारतीय उद्योग के भविष्य के प्रति निवेशकों के विश्वास का प्रतीक था. इसके फायदे भी खूब दिखे. बाजार के कुल शेयरों की कीमत 1980 के 6,500 करोड़ रु. से बढ़कर 1989 में 55,000 करोड़ रु. हो गई.

शेयर बाजार में तेजड़ियों के एकछत्र दौर की तरह ही ऐसे उद्योगपति भी छा गए जिनकी पहले मामूली हस्ती ही हुआ करती थी. इसका सटीक उदाहरण धीरूभाई अंबानी और उनका रिलायंस समूह रहा. 1980 में रिलायंस 200 करोड रु. की कंपनी थी जिसका मुख्य कारोबार टेक्सटाइल्स ही था. आज यह समूह सिंथेटिक धागे, पेट्रोकेमिकल्स और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में देश का तीसरा सबसे बड़ा औद्योगिक घराना (1988-89 की बिक्री 2,200 करोड़ रु.) बन गया है.

थामस भोजानी

अंबानी परिवार की तरह ही वीडियोकॉन के महाराष्ट्र स्थित धूत परिवार ने भी खूब कामयाबी हासिल की. '80 के दशक के मध्य में रंगीन टेलीविजन सेट से शुरुआत करके आज धूत परिवार उपभोक्ता उद्योग में सबसे ऊपर है.

कई और देसी उद्यमी भी बिना विवादास्पद हुए सफल रहे. '70 के दशक के मध्य में प्रकाश में आए करसनभाई पटेल ने '80 के दशक में निरमा को 600 करोड़ की कंपनी में तब्दील कर लिया. यही कहानी शिव नाडार की भी है. '70 के दशक के मध्य में उन्होंने छह दूसरे सहभागियों से मिलकर 1.75 लाख रु. से कंप्यूटर कंपनी एचसीएल शुरू की जो आज देश की सबसे बड़ी कंप्यूटर कंपनी है.

सतीश कौड़ा ने पिक्चर ट्यूब के

अंबानी-वाडिया विवाद ने सरकार और थैलीशाहों के बीच के रिश्ते को भी उजागर करके रख दिया

(बाएं से दाएं) अनिल, धीरूभाई और मुकेश अंबानी; (ऊपर) वाडिया: सबसे बड़ी औद्योगिक लड़ाई

रघु राय

"काम निकालने के लिए मैं सरकार के किसी भी आदमी को सलाम बजा सकता हूं."
धीरूभाई अंबानी

उद्योग में उस समय पहल की, जब यह सार्वजनिक क्षेत्र के लिए ही सुरक्षित था. अब ब्लैक ऐंड व्हाइट पिक्चर ट्यूब के बाजार पर उनके सैमटेल समूह की अच्छी पकड़ है और वह रंगीन ट्यूब भी बनाने जा रहा है. एम.एम. कोठारी ने बड़े दमखम के साथ 12,000 रु. के निवेश से शुरुआत की. आज वे देश के 'पान मसाला सम्राट' हैं.

उधर, बिड़ला, श्रीरामं, सिंहानिया, मोदी, बांगड़ जैसे पुराने औद्योगिक घराने दूसरी ही दिशा में मशगूल रहे. परिवार के सदस्यों में झगड़ों के चलते ये अपने साम्राज्य के बंटवारे में लगे रहे.

शुरुआत बिड़ला घराने से हुई. 1983 में घनश्याम दास बिड़ला की मृत्यु के तुरंत बाद परिवार की छह शाखाएं 4,000 करोड़ रु. की संपत्ति वाले इस साम्राज्य को शांतिपूर्ण ढंग से बांटने की डगर पर चल पड़ीं. मोदी परिवार के बंटवारे में काफी तूफान उठा. इसके अध्यक्ष केदारनाथ मोदी ने तो सुलह के लिए तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी से हस्तक्षेप करने का भी आग्रह किया. इसके बदले वित्तीय संस्थाओं ने बंटवारे की गति तेज करने के लिए ही हस्तक्षेप किया. बंटवारा भाइयों तक ही सीमित नहीं रहा बल्कि गूजरमल मोदी के तीन बेटे भी मोदी परिवार से अलग हो गए. बाद में इन तीनों में भी बंटवारा हो गया.

इसी तरह श्रीराम समूह का भी तीन हिस्सों में बंटवारा हुआ. इस मामले में वित्तीय संस्थाओं के हस्तक्षेप से खूंरेजी वाली लड़ाई टल गई. इस दशक में और कई औद्योगिक घराने भी बंटे. इनमें बांगड़, सिंहानिया (सबसे शांति से यही बंटवारा निबटा), साराभाई और पॉल परिवार हैं. लेकिन बंटवारे की आंधी से एक घराना बचा भी रहा. अहं की टकराहट और ऊंचे ओहदों के लिए लड़ाई के बावजूद यह घराना एक रहा, हालांकि जे.आर.डी. टाटा ने नौसिखुए रतन टाटा को इसकी बागडोर सौंप दी थी.

इधर बड़े औद्योगिक घराने टूट रहे थे तो उधर दूसरे उद्योगपति एक दूसरे ही तरीके से अपने साम्राज्य खड़े कर रहे थे. वह तरीका था कंपनियों का अधिग्रहण. अधिग्रहण के पुराने खिलाड़ी रामप्रसाद गोयनका ने 1982 में सिएट टायर का सौदा करके पहल की.

सबसे प्रख्यात या कुख्यात अधिग्रहण की कार्रवाई थी 1983 में आप्रवासी भारतीय स्वराज पॉल द्वारा डीसीएम और एस्कॉर्ट्स के अधिग्रहण की कोशिश. आखिरकार यह कोशिश साल भर बाद बंबई

बिना व्यावसायिक पृष्ठभूमि से आए अनेक दिलेर उद्यमियों ने भी उद्योग जगत में अपनी धाक जमाई

"अगर कोई दिन-रात काम करने को तैयार है तो मैं उसे सफल होना सिखाऊंगा"
एम.एम. कोठारी

(बाएं) कोठारी; नाडार; (नीचे बाएं) पटेल; और धूतः नए करोड़पति

सभी फोटो: भवान सिंह

द में इन
रा हुआ.
ी लड़ाई
टे. इनमें
निबटा).
ी से एक
के लिए
. टाटा ने
द्योगपति
ह तरीका
ामप्रसाद
की.
1983 में
ॉर्ट्स के
ाद बंबई

साठ साल के बूढ़े या
साठ साल के जवान?

देखा आपने? ६० साल की उम्र में भी कितनी शक्ति, कितनी स्फूर्ति! जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थकान महसूस करते हैं. क्यों?
इसका जवाब है - केसरी जीवन.
हर दिन, दिन में दो बार दो चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर) - अनमोल तत्व!
केसरी जीवन की बोतल खोलिए... दुनिया की सबसे महँगी जड़ी-बूटी असली ज़ाफ़रान की खुश्बू आपका स्वागत करेगी... कश्मीर की वादियों से चुना गया ज़ाफ़रान.
केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के आरोग्यकर और सौन्दर्यवर्धक गुणों के साथ ताज़ा आंवला व अन्य अनेक जड़ी-बूटियां भी तो हैं जो शरीरगठन मज़बूत बनाएं, शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त रखें, तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी के तनावों से मुक्त रखने में सहायक हों और बीमारियों से मुकाबला करने की शक्ति दें.
ज़िंदगीभर सेहत का अनमोल रत्न
आप भी पाइए. जीभर कर जीने की तरो-ताज़गी महसूस कीजिए.

झंडु
केसरी
जीवन

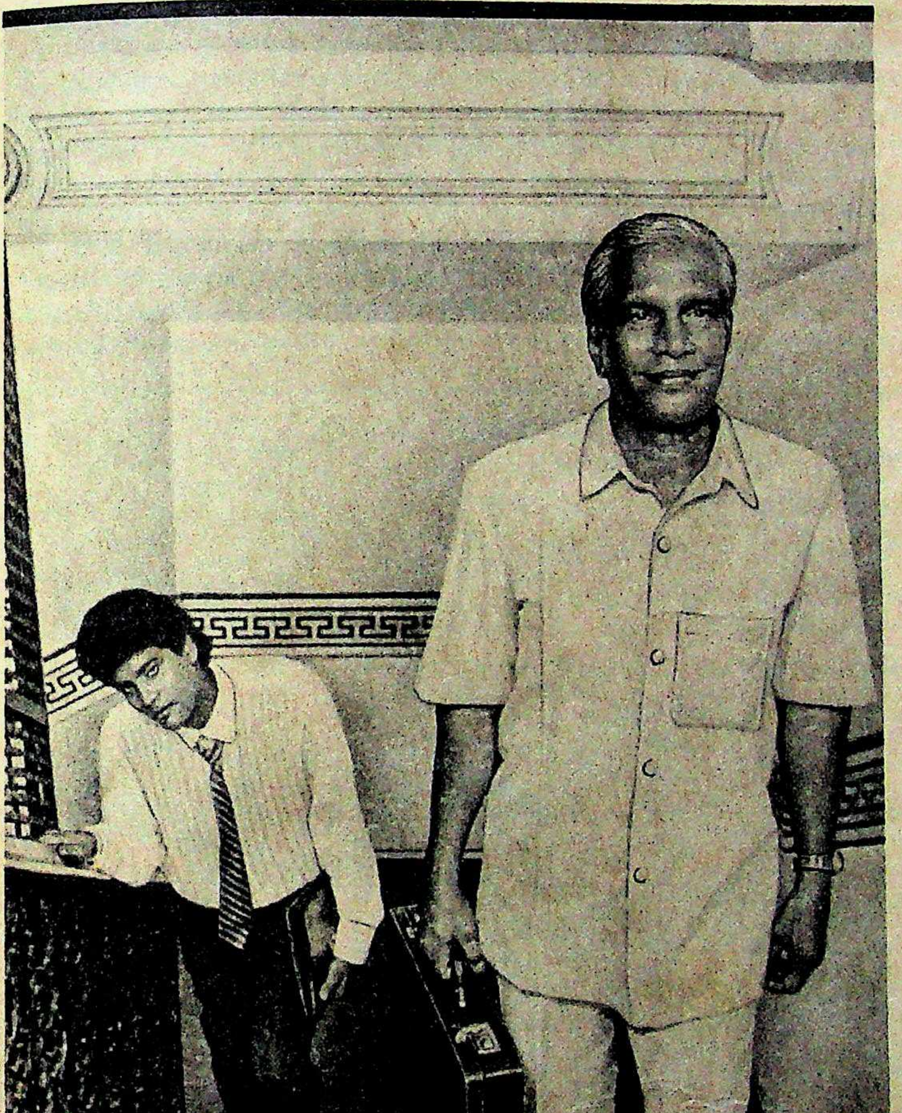

झंडु
केसरी
जीवन
झंडु
केसरी
जीवन

रग रग में जान - ज़िन्दगी की शान

CLARION/B/ZP/21/254 HIN

हाईकोर्ट के एक बेमिसाल फैसले से सफल न हो पाई. इस फैसले में वित्तीय संस्थाओं की भूमिका पर आपत्ति प्रकट की गई थी.

स्वराज पॉल भले ही अपने घाव सहलाते विदेशी मैदान की ओर मुड़ गए लेकिन विदेश से एक और अधिग्रहणकर्ता ने भारतीय उद्योग जगत में पांव जमाए. वे हैं मनोहर 'मनु' राजाराम छाबरिया. मध्य-पूर्व में सोनी के सामान का यह खुदरा व्यापारी पहले 1984 में रामप्रसाद गोयनका के साथ डनलप सौदे में शामिल हुआ. बाद में इस गठजोड़ में खटास पैदा हो गई और गोयनका को डनलप में अपने शेयर बेचने पड़े. 1985 में छाबरिया का शॉ वैलेस सौदा वित्तीय संस्थाओं की भूमिका के कारण विवादास्पद रहा. वित्तीय संस्थाओं ने मतदान में हिस्सा न लेकर उनकी सहायता की. छाबरिया ने और भी कंपनियों का अधिग्रहण किया.

दशक के अंतिम वर्षों में टाटा टी द्वारा कान्सोलिडेटेड कॉफी के अधिग्रहण से आशा की एक किरण दिखी. टाटा टी ने कान्सोलिडेटेड कॉफी के छोटे शेयरधारकों को एक सार्वजनिक पेशकश की. क्या चाय के मामले में हुआ यह साफ-सुथरा अधिग्रहण अब कोई मिसाल बनेगा? कोई भी इस बारे में आश्वस्त नहीं दिखा.

माहौल में इस बदलाव का असर मजदूर समस्याओं के मामले में भी दिखा. मजदूर संघों में नए नेताओं की एक जमात उभरी जो विचारधाराओं के बोझ से मुक्त हैं.

दशक की शुरुआत तो गंभीर मजदूर समस्याओं से हुई. 1982 में दत्ता सामंत ने बंबई के 60 टेक्सटाइल मिलों के 2.30 लाख मजदूरों की बेमियादी हड़ताल की अगुआई की. 16 महीने और दस लाख कार्यदिवस गंवाने के बाद यह हड़ताल औपचारिक रूप से खत्म किए बिना ही टूट गई. पुणे की टाटा इंजीनियरिंग ऐंड लोकोमोटिव कंपनी में तो हड़ताल कोई खास मांगें माने बगैर ही बंद हो गई. ये दोनों हड़तालें इस दशक की प्रतीक रहीं. प्रबंधकों ने घुटने टेकना मंजूर नहीं किया. पर प्रबंधकों की उत्पादकता से जुड़े समझौते करने की उम्मीद भी पूरी नहीं हो पाई.

बावजूद इसके, इस दशक में मजदूरों को फायदा भी मिला. देश में औद्योगिक जगत के पहरुए औद्योगिक एवं वित्तीय पुनर्निर्माण बोर्ड ने फैसला सुनाया कि बंबई स्थित बीमार कंपनी कमानी ट्यूब्स मजदूरों की सहकारी समिति को सौंप दी जानी चाहिए. प्रोत्साहित होकर कई बीमार कंपनियों के मजदूरों ने भी ऐसी मांग उठाई.

पर मजदूरों और प्रबंधकों के बीच करीबी रिश्ता हो, उद्योगपतियों और राजनीतिकों का रिश्ता घंटे तथा शेयर बाजारों और अधिग्रहण सौदों में कुछ खुलापन रहे—'80 का दशक इन्हीं आशाओं में बीत गया.

—एस.एन. वासुकी और शिव तनेजा

(बाएं से दाएं)
श्रीराम परिवार;
बिड़ला घराना; और
मोदी खानदान:
विभाजन का दौर

पारिवारिक सुलह न रख पाने के कारण देश के अनेक बड़े व्यापारिक घरानों में बंटवारा हो गया है

"आखिरकार इस घरेलू कलह से मुक्ति मिल गई"

सिद्धार्थ श्रीराम
अंतिम बंटवारे से दो वर्ष पहले

रघु राय

वर्तमान में जीने की हवस

नए उभरते मध्यम वर्ग का नारा : बचत को भूलो, खर्च करो

हाइ! मेरा नाम है अशोक दे. आप एश ही कहें तो चलेगा. मैं सार्वजनिक क्षेत्र की एक कंपनी में विक्रय प्रबंधक हूं. मेरी बीवी बाब्स (बबिता) बैंक अधिकारी है. मैं दो बेडरूम वाले एक मामूली फ्लैट में रहता हूं. संक्षेप में, हमारे बारे में जिक्र करने लायक कोई खास बात नहीं है.

हां, इतना जरूर है कि बाब्स और मैं दोनों ही यह सोचने लगे हैं कि हम भारत के उस 'प्रबुद्ध' नए मध्यम वर्ग से हैं जिसकी आबादी करीब 15 करोड़ है. माना जाता है कि ठाट-बाट की अपनी चाहत से हम देश में क्रांति ला रहे हैं, नई संस्कृति की शुरुआत कर रहे हैं.

मुझे नहीं मालूम था कि हमने इसकी शुरुआत अपनी जरूरत वाली चीजें खरीदने से ही कर दी है. जब मैं '80 के दशक की ओर झांकता हूं तो इसमें सचाई दिखती है. इन दस वर्षों में हमने जितनी चीजें खरीदी हैं, हमारे मां-बाप ने 30 साल में भी नहीं खरीदी होंगी.

हमारे फ्रिज को ही लीजिए. 1983 में जब हमने इसे खरीदा तो यह हमारी जरूरत थी. मुझे याद है '70 के दशक की शुरुआत में जब मेरे माता-पिता ने अपने बैंक बैलेंस में कटौती करके फ्रिज खरीदा था तो हम खुशी से पागल हो उठे थे. पर अब फ्रिज खरीदना कोई बड़ी बात नहीं. कुछ ही दिन हुए मैंने कहीं पढ़ा था कि देश में अब हर साल 10 लाख फ्रिज खरीदे जाते हैं.

और अगले ही साल मोटरसाइकिल खरीदने का हमारा फैसला भी सही साबित हुआ. हमारी सड़ी-गली सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था तो किसी काम की नहीं है. तब मुझे यह मालूम नहीं था कि मैं दुपहिया वाहनों की उस भरमार में योगदान कर रहा हूं जिसके चलते 1988 तक हर साल 15 लाख दुपहिया वाहन बिकने लगेंगे. बाजार में इतनी तरह की मोटरसाइकिलें उपलब्ध थीं कि मैं चकरा गया. पहले वेस्पा, लैंब्रेटा और जावा में से ही किसी एक को चुनना पड़ता था. अब जापानी मॉडल की खूबसूरत मोटरसाइकिलें आ जाने से मैं हीरो होंडा, टीवीएस सुजुकी, एस्कार्ट्स यामाहा और कावासाकी बजाज में से कोई भी चुन सकता था.

अरे हां! मैं तो भूल ही गया. मैंने टेलीविजन सेट भी खरीदा. और वहां भी चुनने के लिए ढेर सारे ब्रांड थे. बाब्स ने कहा भी, "आजकल टेलीविजन खरीदना तो आइसक्रीम खरीदने जैसा हो गया है. तरह-तरह की किस्में मिलने लगी हैं." इस बुद्धू बक्से ने तो सबको बराबरी पर ला खड़ा किया. अब इतवार को मुझे घर के कामकाज में हाथ बंटाना होता है क्योंकि उसे टीवी पर 'महाभारत' जो देखना होता है.

प्रमोद पुष्करणा

आमदनी के साथ-साथ जब खुशहाली बढ़ती है तो उपभोक्ता वर्तमान के लिए जीने लगते हैं

> **"ट्रांजिस्टरों की तरह ही स्टीरियो बिक रहे हैं. चपरासी तक इन्हें खरीद रहे हैं**
>
> **ओ.पी. शर्मा**
> *दिल्ली के दुकानदार*"

घर की बात चली तो बाब्स की रसोई को भी देखिए. उसे अपनी कुकिंग रेंज पर काफी गर्व है. बाजार में इसके आते ही उसने गैस स्टोव कबाड़ में फेंक दिया. मिक्सर-ग्राइंडर भी इसी कबाड़ की भेंट चढ़ गया. उसका मुस्कान भरा तर्क था, "एश, अपनी जिंदगी आसान बनाने के लिए मुझे फूड प्रोसेसर चाहिए." इस रसोई में अब एक ओवन है, एक प्याज कुतरा, एक पॉप-अप टोस्टर और एंक मेलऐमीन डिनर सेट—और सब देसी यानी भारत में बने हुए.

दरअसल यही बदलाव हुआ है. पहले हमें नेल-कटर तक भी विदेशी होने के कारण तस्करी के खरीदने पड़ते थे. पर अब मैं और बाब्स खरीदारी के लिए जाते हैं तो देश में बनी तरह-तरह की चीजें देखकर हैरत में पड़ जाते हैं. दो साल पहले हमने स्टीरियो सिस्टम खरीदा तो हमें सोनी, फिलिप्स, मोनोडाइन, अकाई बुश और दर्जनों दूसरे मॉडलों में से चुनाव करना पड़ा.

एक रात हमने एक अर्थशास्त्री को अपने यहां दावत दी तो उनसे 'खरीद सूची' पर बातचीत चल निकली. उन्होंने बताया कि यह सब सरकार की उदार औद्योगिक नीतियों का नतीजा है जो उपभोक्ता सामान के लिए विदेशी गठबंधनों की इजाजत दे रही है.

डिनर के बाद हम ड्राइंगरूम में आए तो आसपास की चीजें देखते हुए उन्होंने कहा, "अपना घर बनाने का सपना अब पुराना पड़ चुका. जमीन जायदाद खरीदना अब आम लोगों के बस की बात नहीं रही. इसलिए लोग म्यूजिक सिस्टम और वीडियो जैसी चीजें खरीदते हैं." टेलीविजन पर ढेर सारे विज्ञापन आने शुरू हुए तो वे बोल पड़े, "यह बक्सा सबसे बड़ा प्रेरक है."

शायद वे ठीक ही कहते हैं, क्योंकि जब पिताजी हमारे साथ रहने के लिए आए तो उन्होंने हैरत से पूछा, "एश, यह सब खरीदने के लिए तुम पैसा कहां से लाए? कुछ बचत करते हो कि नहीं?" जब मैंने उन्हें बताया कि रंगीन टीवी और वीडियो मैंने किस्तों पर लिया है तो वे एकदम हैरत में पड़ गए. पुरानी कार दफ्तर से कर्ज लेकर खरीदने की बात सुनकर तो वे और अचंभित हो उठे, "एश, मैंने तो घर बनाने के लिए ही कर्ज लिया था. और कम-से-कम 30 फीसदी तनख्वाह मैंने बैंक में जमा करा दी थी."

पिताजी इसे नहीं समझ पाएंगे. उनकी पीढ़ी आने वाले कल के लिए जीती थी. '80 के दशक में हम लोग वर्तमान के लिए जीते हैं. भले ही इसके लिए उधार लेना पड़े.

—राज चेंगप्पा

DAIRY PRODUCTS
FRESH
DRY FRUITS
NO SMOKING

प्रमाद पुष्करणा

प्रशांत पंजियार

कल तक जो विलासिता थी, आज वह जरूरत बन चुकी है और सब कुछ उधार खाते में खरीदा जा रहा है

> **"कौन अमीर है और कौन गरीब इस अवधारणा पर आज दुबारा गौर करना होगा**
>
> **राहुल बजाज**
> *अध्यक्ष, बजाज ऑटो*
>
> **हमने अभी तो उपभोक्ता बाजार की चौथाई क्षमता का भी दोहन नहीं किया**
>
> **डी.एल. जैन**
> *उपाध्यक्ष, फिलिप्स* "

अंतरिक्ष विजय का अभियान

कई उत्साहवर्धक उपलब्धियां और निराशाजनक नाकामियां

यह अंतरिक्ष पर कामयाबी पाने का दशक था. 1980 में भारत ने एसएलवी-3 रॉकेट को अंतरिक्ष में भेजकर विश्व अंतरिक्ष क्लब में अपने लिए जगह बना ली. यह अभियान पिछले साल मई में छोड़ी गई मध्यम दूरी तक मार करने वाली बैलिस्टिक मिसाइल तक गया. और इसके साथ ही भारत दुनिया की सैन्य महाशक्तियों में शामिल हो गया.

बीच में कई और उत्साहवर्धक घटनाएं हुईं. राकेश शर्मा अंतरिक्ष में पहुंचने वाले पहले भारतीय बन गए हालांकि यह कामयाबी रूस के रॉकेट पर सवारी गांठ कर ही मिली. कवलूर के वैनी बप्पू में 92 इंच की विशाल दूरबीन लग जाने से ब्रह्मांड में झांकने के लिए एक बड़ी खिड़की खुल गई. पूर्ण सूर्यग्रहण दिखाई देने से विज्ञान के पंडित खुशी से उछल पड़े. प्रवासी भारतीय और खगोल भौतिकविद् सुब्रह्मण्यम चंद्रशेखर को 1983 का नोबेल पुरस्कार मिला और भारत ने बर्फीले अंटार्कटिका में अपने झंडे गाड़े.

इतना ही नहीं, भारत के दफ्तरों और स्कूलों के भीतर तक कंप्यूटर की घुसपैठ हो गई. अपराधियों का पता लगाने के लिए डीएनए फिंगरप्रिंट का इस्तेमाल शुरू हुआ. भारत का पहला परखनली शिशु पैदा हुआ. पहली बार किसी वैज्ञानिक को विज्ञान व तकनीक मंत्रालय का प्रमुख बनाया गया. रक्षा मंत्रालय के वैज्ञानिक सलाहकार बी.एस. अरुणाचलम के अनुसार, "यह ऐसा दशक था जब हम आगे बढ़े और अपनी तकनीकी क्षमताओं के झंडे गाड़े."

इसी दशक में भारतीय वैज्ञानिक अनुसंधानों की कड़ी समीक्षा भी हुई. पहली बार इस देश में यह बुनियादी सवाल खड़ा किया गया कि शोध संस्थानों पर खर्च किए जा रहे इतने सारे रुपए से हमें हासिल क्या हो रहा है. इसका कोई संतोषप्रद जवाब नहीं मिला.

इस एहसास से देश के भारी-भरकम वैज्ञानिक संस्थानों के प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण बदलाव आए. पहली बार जवाबदेही की अवधारणा को इसमें शामिल किया गया. संस्थानों से कहा गया कि वे अपने खर्च का कम-से-कम एक तिहाई धन अपने शोधों को बेचकर हासिल करें. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान 'मिशन' की अवधारणा को सामने लाया.

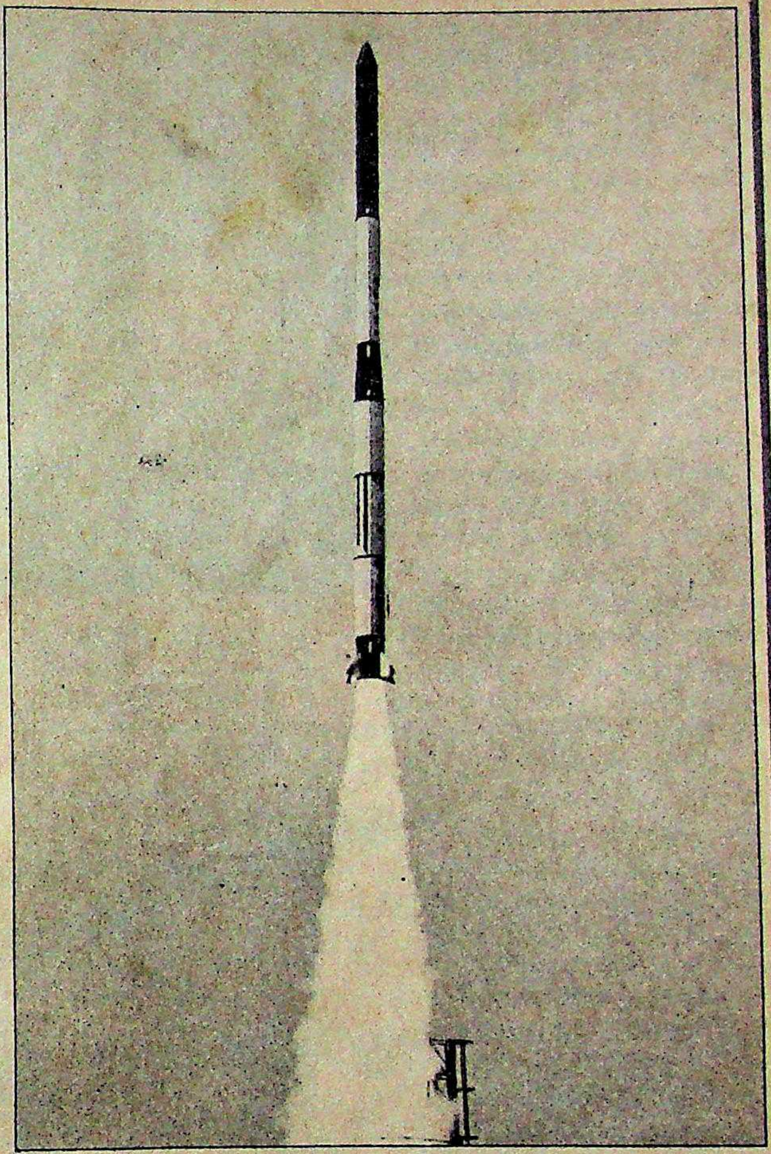

एसएलवी-3 रॉकेट (ऊपर) ; और असफल एएसएलवी: जीत भी, हार भी

अंतरिक्ष और अन्य क्षेत्रों में मिली असफलताओं ने अनुसंधान क्षेत्र में जवाबदेही के अभाव की ओर इशारा किया

इस बदलाव से देश के कई वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को वह राह मिल गई जिसकी वे बड़ी बेताबी से तलाश कर रहे थे. नतीजतन कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अनुसंधानों ने भारी प्रगति भी की. इलेक्ट्रॉनिक्स को नई गति मिली, जैव तकनीकी में कई कामयाबियां मिली और पानी उपलब्ध कराने के लिए, तेलहन में आत्म-निर्भरता हासिल करने के लिए, दूर-संचार का जाल फैलाने और औरतों व बच्चों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने के लिए तकनीकी मिशन बनाए गए.

इस दशक की एक महत्वपूर्ण बात यह रही कि प्रतिरक्षा अनुसंधानों ने अंतरिक्ष और नाभिकीय ऊर्जा में अहमियत दिलाई. बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम तेजी से चला और इससे भारत की नाक ऊंची हुई. इसके बावजूद दशक का अंत आते-आते इस बात पर पुख्ता संदेह जताए जाने लगे कि भारत हल्के लड़ाकू विमान अपने यहां बना भी पाएगा या नहीं.

देश के दूसरे बड़े संगठनों को कामयाबियां और नाकामियां भी मिलीं. रॉकेट प्रक्षेपण की अपनी क्षमताओं को बढ़ाने में 'इसरो' नाकाम रहा. इसके दो संवर्धित उपग्रह प्रक्षेपण यान (एएसएलवी) प्रक्षेपण के तुरंत बाद समुद्र में डूब गए. संगठन ने दूर संवेदी उपग्रहों (आईआरएस) के निर्माण में कामयाबी जरूर हासिल की. पर समस्या तब आई जब भारत को संचार उपग्रह के युग में ले जाने की कोशिश की गई. अमेरिका से खरीदे गए तीन इनसैट उपग्रहों में एक तो समय से पहले ही नकारा हो गया, दूसरे ने ठीकठाक काम किया परंतु तीसरे ने अपनी क्षमता का आधा ही काम किया. इनसैट कार्यक्रम नाकामी के कगार पर पहुंचता दिखा.

परमाणु ऊर्जा के वैज्ञानिकों को भी कई उतार-चढ़ावों से गुजरना पड़ा. 1985 में उन्होंने शोध परमाणु भट्टी 'ध्रुव' के निर्माण में कामयाबी हासिल की. परंतु नरोरा परमाणु विद्युत संयंत्र के शुरू होने में हुई बार-बार की देरी से उनकी खासी बदनामी हुई.

नाकामी के कई और उदाहरण भी हैं. चिकित्सा अनुसंधान को ज्यादा गति नहीं मिल सकी. सरकार की इलेक्ट्रॉनिक नीति ने टेलीविजनों और कंप्यूटरों से बाजार को पाट दिया. लेकिन इनमें ज्यादातर विदेशी कल पुर्जे जोड़कर ही बनाए हुए थे.

बहरहाल, बीते दशक में जो बदलाव हुए वे भारतीय विज्ञान के लिए क्रांतिकारी साबित हो सकते हैं. जैसा कि मशहूर अणुजैवशास्त्री पी.एम. भार्गव कहते हैं, "90 का दशक अपने भीतर कई उम्मीदें समेटे हुए है."

—अमरनाथ के. मेनन

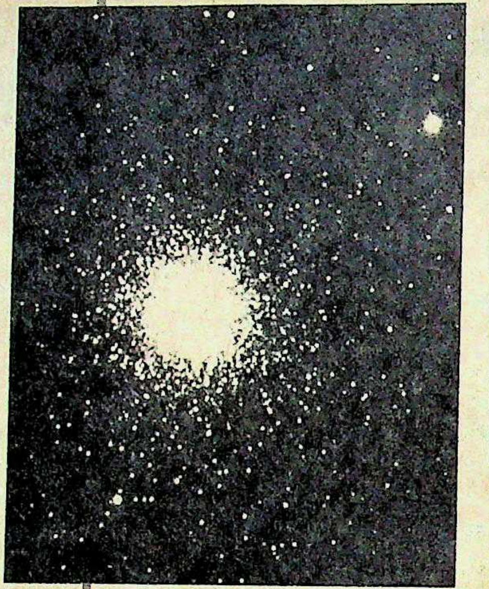

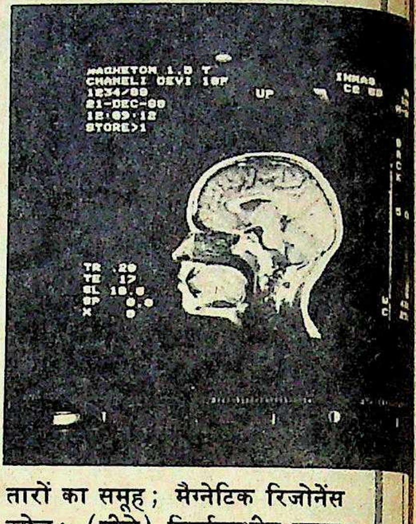

तारों का समूह; मैग्नेटिक रिजोनेंस इमेज; (नीचे) निर्माणाधीन हल्का लड़ाकू विमान; (सबसे नीचे) कलपक्कम एटमी बिजलीघर का दृश्य

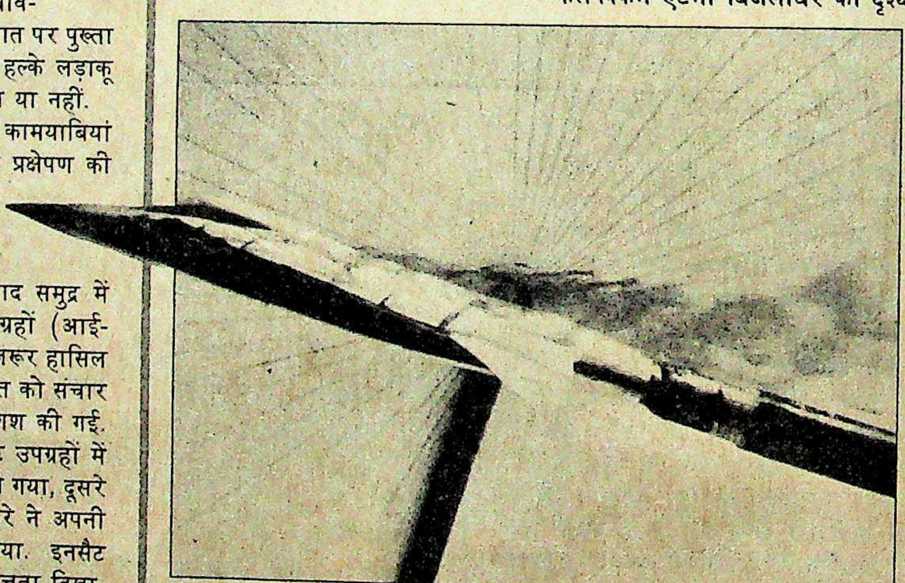

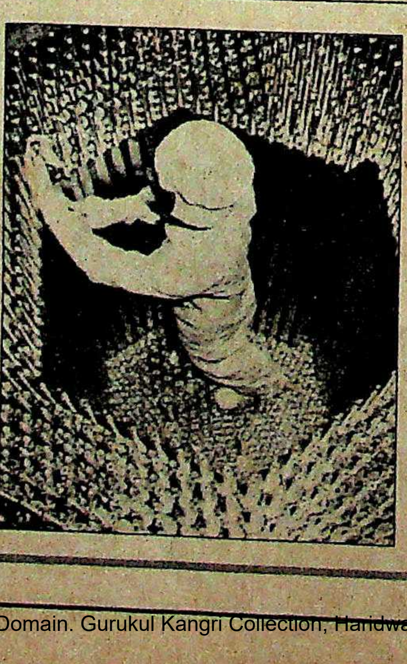

कई महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भी अनुसंधान कार्य शुरू किए गए, बावजूद इसके संदेह की स्थिति बनी रही

अहमियत में इजाफा

जनमत को दिशा देने में दुस्साहस तक का परिचय

अखबारों का मानना है कि उनमें दर्ज हर सूचना इतिहास का कच्चा मसौदा बन जाती है. पंजाब और असम में कलह, इंदिरा गांधी की हत्या, भोपाल गैस त्रासदी, श्रीलंका में संकट और केंद्र में पहली अल्पमत सरकार के गठन जैसी घटनाओं वाले इस दशक में अखबारों की बढ़ती महत्वपूर्ण भूमिका स्वाभाविक ही थी.

यह भूमिका अखबारों पर काफी हद तक थोपी गई. इसकी एक वजह यह भी थी कि विपक्ष संसद में महत्वहीन हो गया था और बाहर वह आपसी झगड़ों में उलझा हुआ था. इसके साथ ही प्रेस भी पक्षपाती होता चला गया. इस दशक के आखिर तक तो कुछ पत्रकारों ने सक्रिय नेता बनने में सफलता भी पा ली.

बोफोर्स घोटाला प्रेस की नई भूमिका की स्पष्ट मिसाल है. इस घोटाले को अखबारों ने एक के बाद एक भंडाफोड़ करके जीवित रखा. 'हिंदू' की चित्रा सुब्रमण्यम और एन. राम की जोड़ी और 'इंडियन एक्सप्रेस' की कुछ उत्साही खोजबीन ने नए-नए सबूत जुटाकर इस पहेली को सुलझाने की कोशिश की.

खोजी पत्रकारिता में दिलचस्पी रखने वाले ऐसे नए संपादक सामने आए, जो बड़ी रपट लाने के लिए किसी भी तरह का दुस्साहसिक काम करने के लिए तत्पर रहते हैं. संपादकीय पृष्ठ ने भी अपना महत्व खो दिया.

पत्रकारिता जगत में आए नए आक्रामक दौर से वस्तुपरकता लुप्त होने लगी. मसलन, 'टेलीग्राफ' के लिए राजीव का हर काम ठीक था जबकि 'इंडियन एक्सप्रेस' के लिए उनका हर काम गलत था. 'एक्सप्रेस' को इसकी कीमत भी चुकानी पड़ी. इसमें राजीव के नाम जैल सिंह की प्रसिद्ध चिट्ठी प्रकाशित होने के एक दिन बाद उसके सलाहकार एस. गुरुमूर्ति को गिरफ्तार कर लिया गया. अप्रैल 1987 में देश भर में एक्सप्रेस के 12 दफ्तरों पर 600 आयकर

> **विपक्ष जबकि संसद में महत्वहीन हो गया था और बाहर वह आपसी झगड़ों में उलझा हुआ था, अखबारों ने अपने तईं खोजबीन जारी रखकर मुद्दों को जिलाए रखा**

(नीचे बाएं) रामनाथ गोयनका; अरुण शौरी; (ऊपर बाएं) एन. राम; और चित्रा सुब्रमण्यम: आक्रामक तेवर

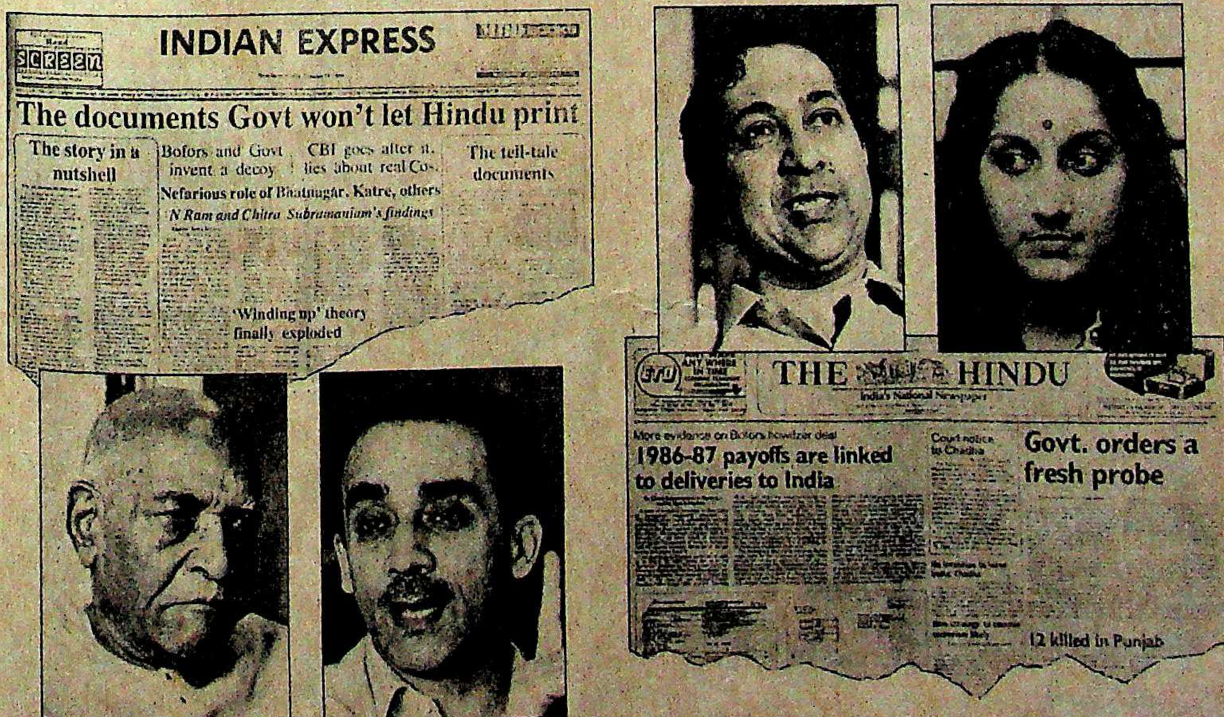

INDIAN EXPRESS

The documents Govt won't let Hindu print

The story in a nutshell

Bofors and Govt invent a decoy

CBI goes after a. lies about real Co-

Nefarious role of Bhatnagar, Katre, others

N Ram and Chitra Subramaniam's findings

The tell-tale documents

'Winding up' theory finally exploded

THE HINDU

India's National Newspaper

More evidence on Bofors howitzer deal

1986-87 payoffs are linked to deliveries to India

Court notice to Chadha

Govt. orders a fresh probe

12 killed in Punjab

अधिकारियों ने छापे मारे और उसके खिलाफ 162 मामले ठोक दिए. सरकार ने अखबारी कागज की कीमतें बढ़ाकर और सरकारी विज्ञापन न देकर भी उस पर दबाव डाला.

क्षेत्रीय अखबारों को भी सरकार के विरोध की भारी कीमत चुकानी पड़ी. ओडीसा में दैनिक 'समाज' के 85 वर्षीय संपादक राधानाथ रथ और दूसरे पत्रकारों को बुरी तरह पीटा गया. पंजाब में आतंकवादियों ने 'हिंद समाचार' समूह के दो संपादकों की गोली मारकर हत्या कर दी. लेकिन जब शंखनाद हुआ तो सारे अखबार एकजुट हो गए. उन्होंने बिहार प्रेस विधेयक और केंद्र सरकार के मानहानि विधेयक का विरोध किया और सरकार को दोनों विधेयक वापस लेने पर मजबूर कर दिया.

'80 के दशक में ही हिंदी अखबारों में भी क्रांतिकारी बदलाव आया. पहले हिंदी के अखबारों में प्रेस विज्ञप्तियां हुआ करती थीं लेकिन 1983 में 'एक्सप्रेस' समाचार पत्र समूह से 'जनसत्ता' निकलने के बाद इन अखबारों के तेवर बदलने लगे. 'जनसत्ता' ने बोलचाल की भाषा में अच्छी खबरें लोगों तक पहुंचाई और दूसरे अखबारों ने उसका अनुकरण किया. 'जनसत्ता' ने चंडीगढ़ और बंबई से अपने संस्करण निकाले तो 'नवभारत टाइम्स' ने जयपुर, लखनऊ और पटना से.

कई अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं के क्षेत्रीय भाषाओं के संस्करण भी निकले जो बहुत सफल रहे. मिसाल के तौर पर 'इंडिया टुडे' के हिंदी, तमिल और मलयालम संस्करण, 'इकॉनॉमिक टाइम्स' और 'फिल्मफेअर' के हिंदी संस्करण, 'टाइम्स ऑफ इंडिया' का गुजराती संस्करण, 'स्टारडस्ट' के गुजराती और हिंदी संस्करण, 'संडे आब्जर्वर' और 'संडे मेल' भी जल्द ही अपने हिंदी संस्करण शुरू करने जा रहे हैं. साप्ताहिक 'रविवार' इस दौरान बंद हो गया.

'80 के दशक ने संपादकों को सितारे भी बनते देखा. इस दशक के खत्म होते-होते समाचार जगत में एक नया उन्माद छा गया. हर नया संपादक अपने साथ अपना स्टाफ लाने लगा और मौजूदा ढांचे को बदलने लगा. विनोद मेहता ने 'इंडियन पोस्ट' में, दिलीप ठाकुर ने 'डेबोनायर' में और प्रीतीश नंदी ने 'इवनिंग न्यूज ऑफ इंडिया' और 'फिल्मफेअर' में ऐसे ही परिवर्तन किए.

पत्रकार अपनी तस्वीरों के साथ स्तंभ भी लिखने लगे. नतीजा यह कि सिंडीकेट स्तंभ शुरू हो गए. खुशवंत सिंह ने कम जगह में कम बातें लिखने की कला में महारत हासिल की. वे हफ्ते में तीन सिंडीकेट स्तंभ लिखते हैं और महीने में 20,000 रु. कमाते हैं.

'80 के दशक में खान-पान, फैशन, संगीत और ऑटोमोबाइल जैसे विषयों पर भी पत्रिकाओं की बाढ़ आई. किशोरों के लिए भी कई पत्रिकाएं निकलीं. लेकिन सबसे अधिक तेजी आर्थिक विषय संबंधी पत्रकारिता में आई.

इसी दशक में अखबारों ने अत्याधुनिक तकनीकें भी अपनाईं. वे कंप्यूटरों, फोटोटाइप सेंटिंग उपकरणों और यहां तक कि उपग्रह प्रेषण का भी इस्तेमाल करने लगे. लेकिन भारतीय समाचार जगत में इस दशक की सबसे नई चीज थी वीडियो पत्रकारिता. 'न्यूजट्रैक', जो पिछले एक साल से निकल रहा है, इसकी मिसाल है. अगले दशक में वीडियो पत्रकारिता संभवतः और भी जोर पकड़ेगी. सो अखबारों को अपनी साख बनाए रखने के लिए और भी कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी.

—सलिल त्रिपाठी

बीते दशक ने संपादकों को सितारा भी बनते देखा. दशक के खत्म होते-होते समाचार जगत में एक नया उन्माद छा गया. नया संपादक अपने साथ स्टाफ लाने लगा और ढांचे को बदलने लगा

प्रेस विधेयक का विरोध करते पत्रकार; विनोद मेहता; और (नीचे दाएं) विजयपत सिंघानिया

काला कानून वापस लो
वापस लो
...TERS WILL SHATTERED
...APERS ORGANISATION
...NATION COMMITTEE
THE PRESS SHALL NOT BE FETTERED
FETTERS WILL
काला कानून वापस लो वापस लो
GOVT. THAT HIDES FASTER

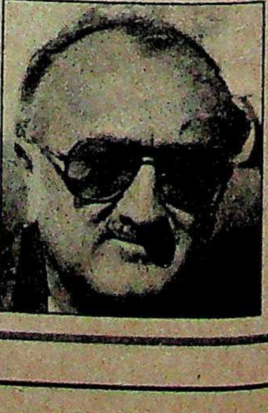

बदलते वक्त की ताल पर

चटपट मनोरंजन के दशक में सुरों की जगह लय का बोलबाला

कुछ अरसा पहले गीतकार आनंद बख्शी ने अफसोस जताते हुए कहा था, "अगर श्रोताओं को अनाप-शनाप ही पसंद है तो हम वही लिखेंगे. हम अपनी पसंद के गाने कैसे लिख सकते हैं?" उनकी यह वेदना '80 के दशक में हिंदी फिल्म संगीत के गिरते स्तर की परिचायक थी. किसी हिंदी फिल्म का संगीत मुश्किल से एक महीना ही लोकप्रिय रहा होगा. पर चटपट मनोरंजन के इस दशक में एक महीना भी बड़ी बात थी.

दरअसल '80 के दशक में संगीत की समूची दुनिया में वस्तुतः निराशा का ही माहौल था. देश में सुरों की जगह लय का बोलबाला हो गया. भले ही बेतुकी पश्चिमी ताल हो या देसी भाषाओं में उसकी नकल अथवा 'ओये ओये' की विशिष्ट स्वर लहरी हो या 'डिस्को डांडिया रास' पर पैरों की थिरकन, भारतीय लोग नृत्य की खातिर संगीत चाहने लगे. इस दशक के अंत तक ग़ज़ल मृतप्राय हो गई जबकि हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को फैशन के रूप में लेने के कारण नया जीवनदान मिला. पाकिस्तान के रास्ते भारत में मेहदी हसन और गुलाम अली की ग़ज़लें आईं, नाजिया हसन का पॉप संगीत आया और हसन जहांगीर ने 'हवा हवा, ऐ हवा, खुशबू लुटा दे' जैसे गीतों को लोकप्रिय बनाया.

सबसे ज्यादा नुकसान हिंदी फिल्म संगीत को हुआ. इस दशक में बनी फिल्मों ने संगीत को गौण बना दिया. इस पर दिवंगत जयदेव की टिप्पणी थी, "बड़े सितारों से भरी फिल्मों में संगीत का इस्तेमाल नमक-मिर्च की तरह किया जा रहा है." इसी दशक में तीन बेहतरीन गायकों—मुकेश, मुहम्मद रफी और किशोर कुमार के गुजर जाने से भी फिल्म उद्योग को भारी झटका लगा.

वीडियो आ जाने से दर्शक थिएटर के बजाए घरों में फिल्में देखने लगे. यही नहीं, इससे चवन्नी छाप दर्शकों की संख्या खासी बढ़ गई जिनके पसंदीदा संगीतकार मदनमोहन या रोशन नहीं बल्कि राहुलदेव बर्मन और बप्पी लाहिड़ी हैं.

देश में सुरों की जगह लय का बोलबाला हो गया. भारतीय लोग नृत्य की खातिर संगीत चाहने लगे

'एक दो तीन..'; (नीचे बाएं) अलिशा; शैरोन; (ऊपर) ओये-ओये

ग़ज़ल का जादू सर्वव्यापी हो गया. जगजीत और चित्रा सिंह जहां किसी पांच सितारा होटल में ग़ज़ल से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करते रहे, वहीं टैक्सी चालकों सरीखे लोग पेनाज मसानी की आवाज के मोहक उतार-चढ़ाव पर झूमते रहे. अनूप जलोटा और पंकज उधास ने भी समां बांधे रखा. 1983 में म्यूजिक इंडिया कंपनी की करीब आधी बिक्री ग़ज़लों के कैसेटों से हुई. एचएमवी का खजाना सिरीज हाथोहाथ बिका. लेकिन ढेर सारे गायकों, कैसेटों और एक जैसी धुनों के कारण यह उभार जल्दी ही मंद पड गया.

इस दशक का अंत आते-आते हर पानवाला और बैंडबाजे वाला अलका याज्ञिक द्वारा गाए गीत 'एक-दो-तीन...' को गुनगुनाने लगा. संगीत के व्यापारियों ने इस प्रवृत्ति के चलते खूब चांदी काटी. पर जल्दी ही फिल्म 'त्रिदेव' का 'ओये ओये' लोगों के सिर चढ़कर बोलने लगा. इसके बाद तो गुड़िया-सी दिखने वाली अलिशा की अदाओं ने रातोंरात सनसनी फैला दी. इसी समय शेरोन प्रभाकर ने भी 'सुनो-सुनो' से अपनी शुरुआत की.

यह दशक बीतते ही हिंदी पॉप जगत इला अरुण, पार्वती खां, वत्सला और सुनीता राव सरीखी जलपरियों से भरा महासागर बन गया. प्रभाकर कहती हैं, "हम किशोरों की नशीली दवाओं या उन्मुक्त सेक्स से कहीं बेहतर चीज देते हैं."

और फिर भारतीय पॉप में अंग्रेजी का दखल शुरू हो गया. रेमो पहला वास्तविक सितारा था जिसने बेशुमार गोवानी पॉप गीत गाए. 'रॉक मशीन' ने नई पीढ़ी की नब्ज पकड़ ली और नंदू भेंडे, रोनी देसाई और गैरी लॉयर (दिस कांट वेट की प्रसिद्धि वाले) ने भरोसे भरी शुरुआत की. अंग्रेजी पॉप सितारों को बांबे म्यूजिकल ग्रुप के रूप में एक और मंच मिला. एलिक पदमसी के 'एविता और कैबरे' बेहद सफल रहे, पर्ल पद्मसी का 'विज़' बच्चों में बहुत लोकप्रिय हुआ और बंगलूर के 'अमेडियस' तथा 'कैट्स' ने यह साबित कर दिया कि भारत भी विश्वस्तरीय म्यूजिकल पैदा कर सकता है.

यह प्रयोग और सम्मिश्रण का भी दशक रहा. एल. सुब्रमण्यम और समान रूप से प्रतिभाशाली उनके भाई एल. शंकर ने (अपने दुहरे वॉयलिन सहित) सम्मिश्रण वाले अनूठे प्रयोग किए.

लेकिन इस दशक में भी जब पॉप संगीत शिखर पर पहुंचा, भारतीय शास्त्रीय संगीत ने अपनी स्थिति बनाए रखी और उसे फैशन के रूप में लिया जाने लगा. भीमसेन जोशी और किशोरी अमोनकर को बड़ी संख्या में लोग सुनने आने लगे.

बहरहाल, '80 के दशक में भारतीयों ने पश्चिमी शास्त्रीय संगीत पर अपना जबरदस्त असर डाला. गंभीर पश्चिमी अदाकार अपने-अपने आर्केस्ट्रा के साथ भारत आए. मसलन, 1982 में यहूदी मेनुहिन अपना घराना कैमरेट लाइजी गस्तान ले आए और भारत में अपने प्रतिभाशाली बेटे जगदीश मिस्त्री को पेश किया. बैटन मास्टर ज़ुबिन मेहता 1984 में अपने साथ न्यूयार्क फिल्हार्मोनिक ले आए. और अभी पिछले साल, यानी 1988 में म्स्तीस्लाव रोस्त्रोप्रोविच ने स्ट्रोडिवारियस बजाकर लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया था.

अब जबकि '90 का दशक शुरू हो रहा है, प्रतिभाशाली युवा शास्त्रीय संगीतकारों की एक नई पीढी आगे आने लगी है. सितार में बुद्धादित्य मुकर्जी, गायन में आरती अंकलीकर और वीणा सहस्रबुद्धे और मैंडोलिन में यू. श्रीनिवास की निपुणता स्वर लहरीवाले भविष्य का ही संकेत देती है. इसके बावजूद हमारे संगीत पर पॉप का प्रभुत्व बना रहेगा. 'ओये ओये' की आश्चर्यजनक ताकत ने यह तो साबित कर दिया है कि बदलते वक्त की ताल पर ही सही, भारतीयों के पैरों की थिरकन फिर बढ़ सकती है. —**सलिल त्रिपाठी**

ढेर सारे गायकों, और एक जैसी धुनों के कारण गजलों का उभार जल्दी ही मंद पड़ गया

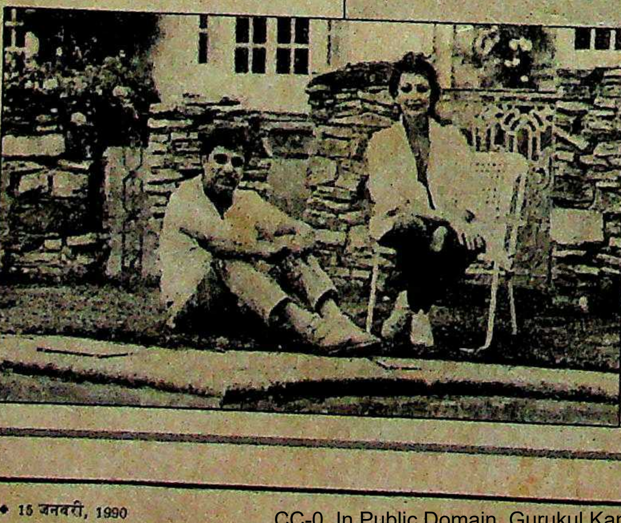

(ऊपर बाएं) पंकज उधास; (नीचे बाएं) जगजीत-चित्रा; और अनूप जलोटा

ट्स' ने यह
ल पैदा कर

. सुब्रमण्यम
ह ने (अपने
ए.
पर पहुंचा,
ी और उसे
र किशोरी

ी शास्त्रीय
ी अदाकार
52 में यहूदी
और भारत
किया. बैटन
ार्मोनिक ले
व रोस्त्रो-
र दिया था.
शाली युवा
है. सितार
और वीणा
वर लहरी-
संगीत पर
ताकत ने
र ही सही,
लिल त्रिपाठी

Videocon now introduces the latest micro-computer based automatic Washing Machine. V-NA-811

The tradition of leadership through excellence continues at VIDEOCON. The new programmable, automatic Washing Machine reflects Videocon's commitment to offer world class products to the Indian Consumer.

FEATURES :

- Micro-computer based automatic Washing Machine.
- Wash load capacity – 4 kg.
- Choice of Wash Programmes/Strong, Gentle, Speedy, Normal.
- Very low power consumption – 1 unit per 3 hours.
- Gentle Wash Programme for delicate fabrics.
- Specially designed water sensor to automatically control inflow and outflow of water.
- Can wash Blankets, Rugs, Carpets etc.
- 100% safe. Does not need voltage stabilizer.
- 2 year warranty.
- Well established prompt after sales service.

VIDEOCON
Bring home the leader.

SJAS 89169/12

दास्तां द्वंद्व और दर्द की

वीडियो, टीवी, और महंगाई ने नाक में दम कर दिया

सिनेमा जगत के लिए पिछला दशक बहुत ही मुश्किल भरा रहा. वीडियो, टीवी और महंगाई ने इसकी नाक में दम कर दिया. मल्टी स्टार सिस्टम और फ्लॉप फिल्मों के भारी-भरकम बोझ ने जैसे इसकी कमर ही तोड़ दी. फिल्म उद्योग की गाड़ी खींचने वाले सुपरस्टार अमिताभ बच्चन की चमक भी फीकी पड़ गई. यानी कुल मिलाकर बीता दशक भारतीय सिनेमा के लिए बेहद उथल-पुथल का दशक माना जा सकता है.

लेकिन इस उद्योग की चमक-दमक में बहुत कमी नहीं आई. रोज एक फिल्म के मुहूर्त का क्रम बंद नहीं हुआ. नामी सितारों के पास फिल्मों की भरमार रही. अकेले 1989 में करीब 140 हिंदी फिल्में बनीं. फिल्म उद्योग में पैसा आता रहा. कभी सूने पड़े स्टुडियो में 24 घंटे शूटिंग का क्रम जारी रहा और खूबसूरत लड़कियों-लड़कों का आना भी जारी रहा.

बीते दशक की शुरुआत उत्साहजनक ढंग से हुई, क्योंकि तब अमिताभ की आभा बरकरार थी. 'राम बलराम', 'नसीब', 'नमक हलाल', 'लावारिस', 'याराना', 'मर्द' और 'कुली' की सफलता इसी आभा का चमत्कार थी. लेकिन मल्टी स्टार फिल्मों के बोझ ढोता फिल्मी बेड़ा बीते दशक के बीच में डूबने लगा. भारी धूम-धड़ाके और खर्च के साथ बनी बी.आर. चोपड़ा की 'सिलसिला' जैसी फिल्में भी पिट गईं.

और जैसे ही नाव डगमगाई, लगा सारा कुछ उलटा-पुलटा हो गया. अधिक खर्च, अधिक प्रचार, अधिक स्टार, बड़े सेट कुछ भी नहीं चल पाए. अन्याय के खिलाफ गुस्सा, और बिछोह-मिलन का सफल अमिताभ-फार्मूला भी नहीं चल पाया. खुद अमिताभ बच्चन की फिल्में 'महान', 'पुकार' और 'गिरफ्तार' भी जब नहीं चल पाईं तो अफरातफरी मच गई. और फिर हुआ वीडियो का हमला. मनमोहन देसाई इसे उद्योग का 'एड्स' मानते हैं. सामान्य लोगों के मनोरंजन पर फिल्मों का

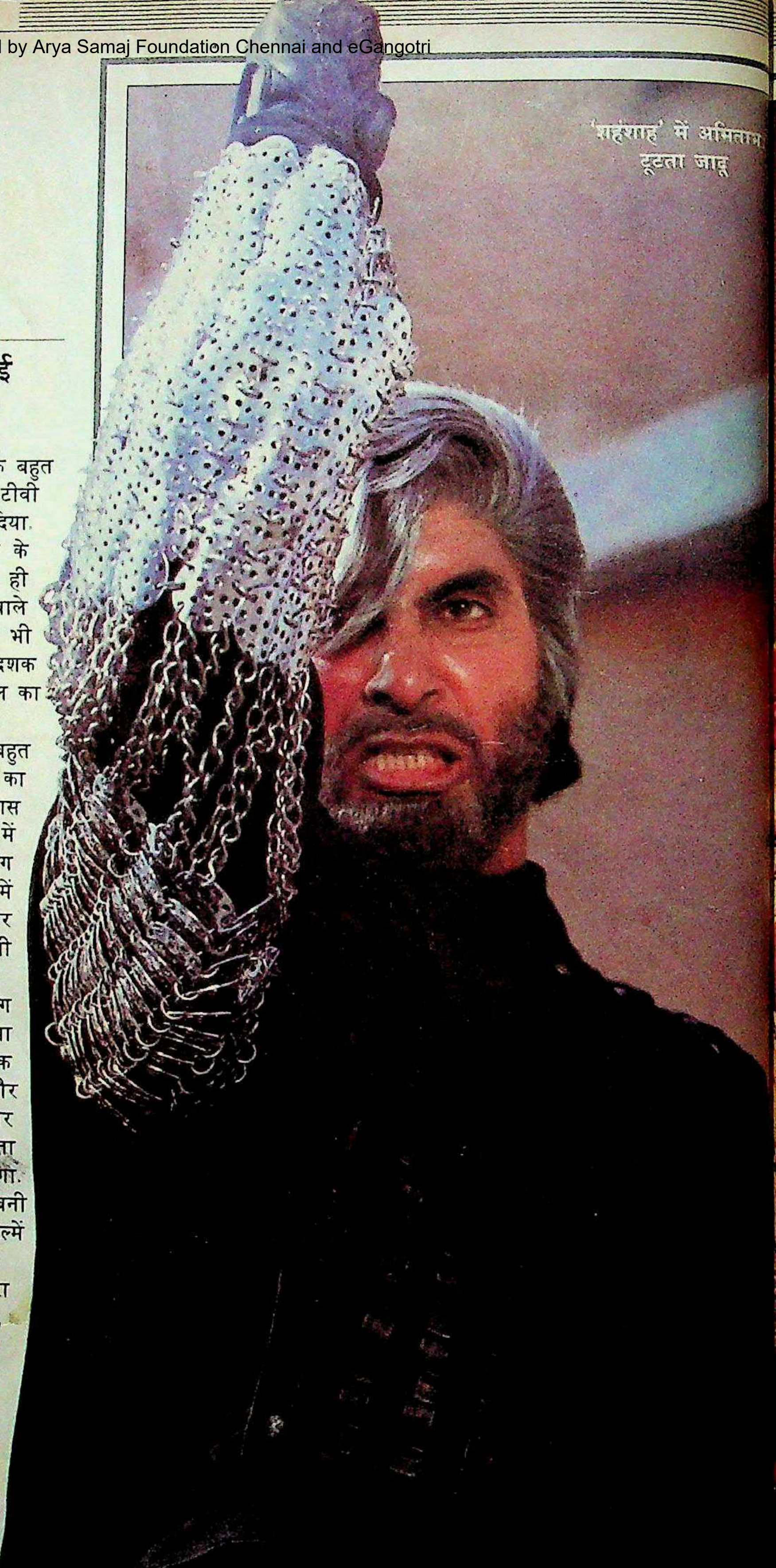

'शहंशाह' में अमिताभ: टूटता जादू

नई उमर की
नई फसल

बीते दशक के अंत में हिंदी फिल्मों में आए नए हीरो और हीरोइनों की भीड़ में अमिताभ का कद अभी भी ऊंचा दिखता है

"

ईश्वर महान है. अमिताभ आखिर वापस आ गए

अमिताभ के स्वस्थ होने के बाद बंबई में एक बैनर

बारिश, झरना और भीगने के दृश्य कर-कर के मैं थक गई हूं

मंदाकिनी

ये हीरोइनें नए गेहूं की तरह हैं. इनमें 20 साल पहले वाली अभिनेत्रियों की देसी 'कणक' जैसी मिठास कहां

धर्मेंद्र

"

40 वर्षों का एकाधिकार एकाएक टूट गया. प्रसिद्ध निर्देशक-अभिनेता शेखर कपूर कहते हैं, "पिछले पांच वर्षों में ऐसे दलाल ही उद्योग में प्रमुख हो गए हैं जो निर्माण, प्रबंध और व्यापार सबको संयोजित करते हैं और उन्हें सिर्फ बड़े तथा अधिक नामों से ही मतलब रहता है."

वीडियो युग की शुरुआत हो गई और फिल्म उद्योग का पतन पक्का हो गया. फिल्म निर्माता हालीवुड की घटिया वीडियो फिल्मों को देखते हैं और इन पर आधारित हिंदी फिल्म बना लेते हैं. 'कमांडो', 'जख्मी औरत', 'खून भरी मांग' जैसी फिल्में घटिया विदेशी फिल्मों की नकल भर हैं.

निर्देशक का मोल घट गया और डांस और फाइट डायरेक्टरों की पूछ उससे अधिक हो गई. बलात्कार के दृश्य बढ़ गए. बलात्कार के करीब 100 दृश्य कर चुके खलनायक गुलशन ग्रोवर कहते हैं, "अब फिल्म में कई-कई हीरो-हीरोइनों को परेशान करने के लिए उतने ही खलनायक होते हैं और फिर हर खलनायक को किसी-न-किसी के साथ बलात्कार करना ही होता है." मजेदार बात यह है कि फिल्म में लड़ाई कितनी देर हो, नाम कितने हों, कितने बलात्कार हों यह फैसला भी अब वितरक करने लगा है. फिल्म से कहानी गायब हो गई. दर्शक भी आज बदल गए हैं. अब कुलीन लोग प्रायः मजे से घर पर बैठकर वीडियो, टीवी पर ही फिल्में देखते हैं. सो, अब सिनेमाघर 'सड़क छाप' लोगों के लिए रह गए हैं.

बीते दशक का उत्तरार्द्ध आते-आते खुद अमिताभ भी अपनी ही नकल करने लगे. जिस फार्मूले से मनमोहन देसाई और प्रकाश मेहरा ने उन्हें 'हिट' बनाया था वह बासी पड़ चुका है. मजेदार बात यह है कि फिल्म निर्माण के ये दोनों पुराने बादशाह भी सुस्त पड़ गए हैं. अब जमाना एन.चंद्रा, राजीव राय और मंसूर हुसैन जैसे लोगों का है.

नए हीरो की तलाश वाले इस कठोर दशक में नए किस्म के निर्देशक की जरूरत भी पड़ी. एन.चंद्रा ने यह जरूरत पूरी की. उनकी फिल्मों में नंगा यथार्थ सामने आया. कम पैसे और बिना किसी सितारे के बनी उनकी फिल्में 'अंकुश' और 'प्रतिघात' खूब सफल रहीं. पिछले साल उन्होंने 'तेजाब' बनाकर अपना सिक्का जमा लिया. यह फिल्म अनिल कपूर और माधुरी दीक्षित की मौजूदगी और एक दो तीन...वाले धांसू गीत भर से नहीं चली.

पिछले साल की एक सफल फिल्म 'त्रिदेव' के युवा निर्देशक राजीव राय कहते हैं, "मैदान सबके लिए खुला है. अस्सी के दशक ने नायक का युग समाप्त कर दिया है. इसलिए अमिताभ जैसे हीरो नब्बे के दशक पर हावी नहीं हो सकते."

लेकिन बांके मर्दों की भूमिका करने वाले हीरो से ऊबे दर्शकों को उसी तरह बंदूक चलाने, गोला दागने और घोड़े दौड़ाने वाली हीरोइनें मिल रही हैं. शुरू में यह सब आयातित घटिया फिल्मों की नकल में हुआ और फिर तो श्रीदेवी, डिंपल कापड़िया, रेखा, अमृता सिंह और यहां तक कि हेमामालिनी ने भी बंदूक उठा ली है. सेंसर बोर्ड के

'सागर' में डिंपल और ऋषि (ऊपर); 'चांदनी' में श्रीदेवी (दाएं); 'राम तेरी गंगा मैली' में मंदाकिनी; और (नीचे) 'कयामत से कयामत तक' में आमिर खां व जूही चावला: प्रेम प्रसंग की वापसी

मारधाड़ से भरपूर मसाला फिल्मों में प्रेम प्रसंग तो होता ही था परंतु कभी-कभार साधारण प्रेम कहानी भी हिट होती रही

> “प्रेम कहानियां कभी भी असफल नहीं हो सकतीं. उन पर सिर्फ अच्छी फिल्म बनाने की जरूरत है
>
> यश चोपड़ा”

सदस्य सरयू दोषी बताते हैं, "औरत की यह छवि आज की आजाद-ख़याल महिला और शक्ति के अवतार वाली पुरानी छवि का मिला-जुला रूप है."

बीते दशक में नायिका ने कई बंधनों को तोड़ा भी है. अब वह छुई-मुई बनी रहने की जगह कामुक अंदाज में परदे पर आने लगी है. प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक केतन मेहता कहते हैं, "पहले दबी रहने वाली कामुकता अब खुलकर सामने आ रही है." जो बात मीना कुमारी और नरगिस की एक अदा कह देती थी, उसे आज हीरोइनें टांगें और न जाने क्या-क्या प्रदर्शित करके कहती हैं. किमी काटकर, संगीता बिजलानी, सोनम, सानिया और सोनू वालिया को तो शायद वह पुरानी अदा आती ही नहीं.

इस दशक में रेखा ने जता दिया कि वह क्यों 20 साल से भी अधिक समय से ऊपर ही जमी हुई हैं. उन्होंने इस बीच न सिर्फ दर्जनों व्यावसायिक फिल्मों में प्रमुख भूमिका निभाई, बल्कि मुजफ्फर अली की 'उमराव जान' और शशि कपूर की 'उत्सव' जैसी कला फिल्मों में भी काम किया. 1988 में जब बड़ी-बड़ी फिल्में पिट गईं तो उन्होंने सिर्फ अपने दम पर दो फिल्में 'खून भरी मांग' और 'घर का प्यार' हिट करा ली.

बीते दशक में 'बॉबी' यानी डिंपल पूरे जोर-शोर और धमाके से वापस आईं. लेकिन फिल्मी दुनिया की पी.टी. उषा तो श्रीदेवी ही रहीं. 10-12 लाख रुपए प्रति फिल्म की लक्ष्मण रेखा पार करने वाली इस अकेली हीरोइन ने आजकल अपना रेट इससे दोगुना कर दिया है. 'नगीना', 'मिस्टर इंडिया' और 'चांदनी' को अपने दम पर सुपर हिट कराके उन्होंने साबित कर दिया है कि वे ही हिंदी फिल्मों की मलिका हैं.

समांतर सिनेमा इस दशक में अपने शिखर तक पहुंचकर फिर गायब हो गया, या शायद टीवी इसे निगल गया. 1980 में बनी गोविंद निहलाणी की फिल्म 'आक्रोश' से इसने अच्छी शुरुआत की थी. इसके बाद 'चक्र', 'सारांश', 'जाने भी दो यारो', 'अर्थ', '36 चौरंगी लेन', 'अलबर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है', 'अर्द्ध सत्य' और 'पार' जैसी फिल्मों ने जबरदस्त

'तेजाब' में माधुरी, अनिल और किरण

अमरीश पुरी; और (नीचे) 'निगाहें' में अनुपम खेर तथा 'मदाम एक्स' में रेखा

यह खलनायकों का युग है. उन्होंने हीरो की जगह ले ली हैं. उधर हीरोइनें भी बंदूक उठाकर, ब्लैक बेल्ट पहनकर शक्ति का नया रूप बन गई हैं

"

सतयुग में रावण था, कलियुग में मैं हूं

अमरीश पुरी

खलनायक कुत्सित दिखने वाला माना जाता रहा. लेकिन अब लोग उसकी हंसी याद रखते हैं

अनुपम खेर

"

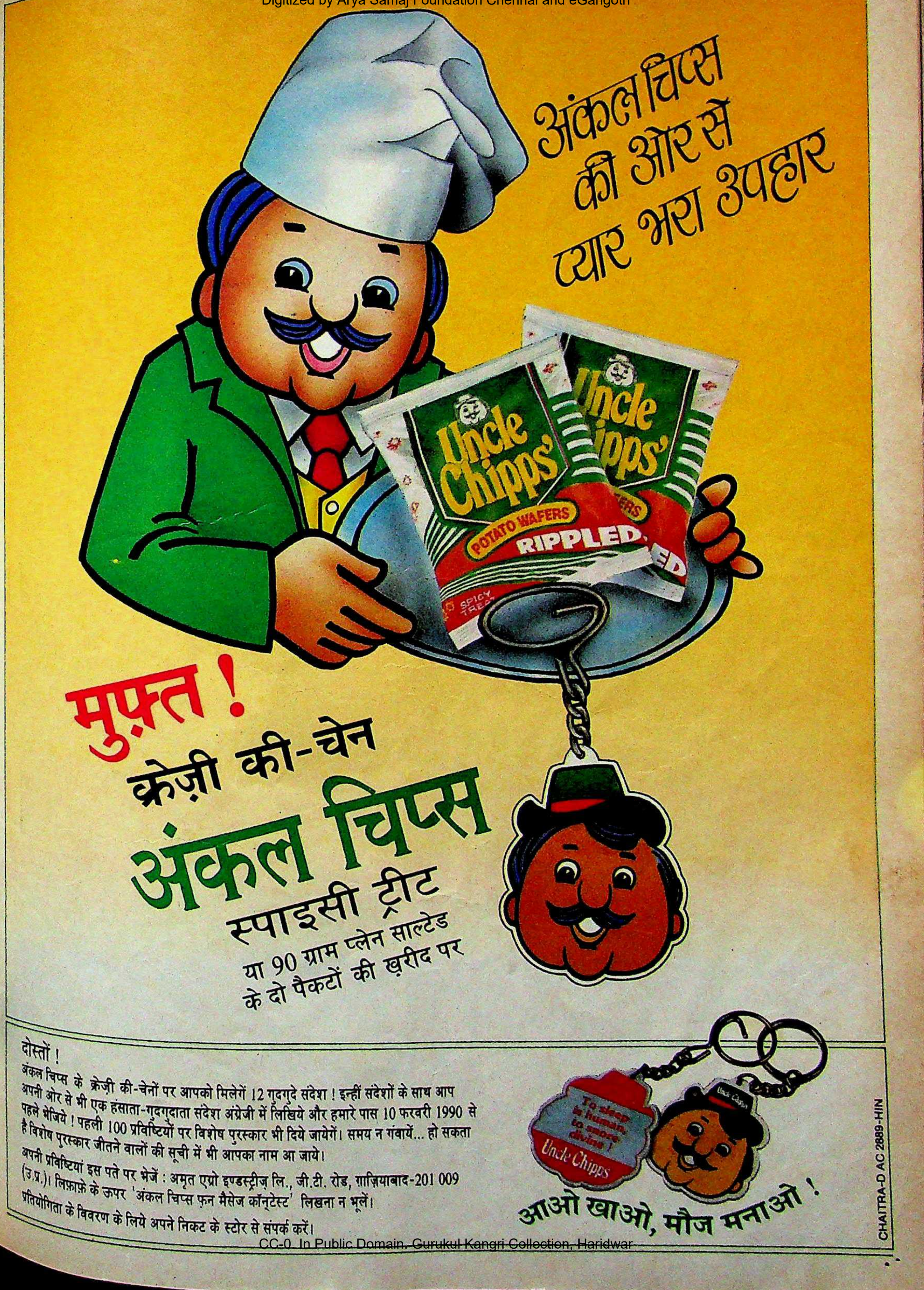
अंकल चिप्स
की ओर से
प्यार भरा उपहार
Uncle Chipps'
POTATO WAFERS
RIPPLED
SPICY TREAT
मुफ़्त !
क्रेज़ी की-चेन
अंकल चिप्स
स्पाइसी ट्रीट
स्पाइसी ट्रीट प्लेन साल्टेड
या 90 ग्राम प्लेन साल्टेड
के दो पैकटों की ख़रीद पर
To sleep is human, to snooze divine!
Uncle Chipps
आओ खाओ, मौज मनाओ !
CHAITRA-D AC 2889-HIN

दोस्तों !

अंकल चिप्स के क्रेज़ी की-चेनों पर आपको मिलेगें 12 गुदगुदे संदेश ! इन्हीं संदेशों के साथ आप अपनी ओर से भी एक हंसाता-गुदगुदाता संदेश अंग्रेजी में लिखिये और हमारे पास 10 फरवरी 1990 से पहले भेजिये ! पहली 100 प्रविष्टियों पर विशेष पुरस्कार भी दिये जायेगें। समय न गंवायें... हो सकता है विशेष पुरस्कार जीतने वालों की सूची में भी आपका नाम आ जाये।

अपनी प्रविष्टियां इस पते पर भेजें : अमृत एग्रो इण्डस्ट्रीज़ लि., जी.टी. रोड, ग़ाज़ियाबाद-201 009 (उ.प्र.)। लिफ़ाफ़े के ऊपर 'अंकल चिप्स फ़न मैसेज कॉन्टेस्ट' लिखना न भूलें।

प्रतियोगिता के विवरण के लिये अपने निकट के स्टोर से संपर्क करें।

इसलिए कि इसमें ५३ से.मी. एफ़.एस.टी. है?
इसलिए कि यह वक़्त से कहीं आगे का टीवी है?
इसलिए कि इसमें दंग करने वाली ख़ूबियाँ हैं?
या सिर्फ़ इसलिए कि इसकी वजह से ईर्षा की
नई लहर उफ़न पड़ेगी?

ओनिडा २१

पड़ोसियों की जले जान, आपकी बढ़े शान.

क्या नए
ओनिडा पर प्रतिबंध
लगाया जाए?

COURTESY OF OWM LTD. INDIA
MEMBER OF WOOL CLUB

प्य
मौसम
आपको
में भी
भी नहीं
लिपट
फ़ैशन

प्योर न्यू वुल. एक अपना ही अन्दाज़.

COURTESY OF OWM LTD. INDIA
MEMBER OF WOOL CLUB

प्योर न्यू वुल के बने शानदार ऊनी कपड़े. मौसम के रुख़ को ऐसे पहचानें कि सर्दी में आपको गर्म रखें और गर्म में ठंडा-ठंडा. पहनने में भी कितने नरम, मुलायम. सिकुड़न को तो पास भी नहीं आने देते. आपके सपनों की तरह आपसे लिपट जाएं. इनका स्टाइल ऐसा कि हमेशा फ़ैशन से मेल खाए.

प्योर न्यू वुल के ऊनी कपड़े. इन्हें घर ले आइए

Woolmark
(वूलमार्क)

PURE NEW WOOL

O&M/5371

300 नगर

जिन्हें शीघ्र ही अपनी स्वच्छता पर गर्व होगा।

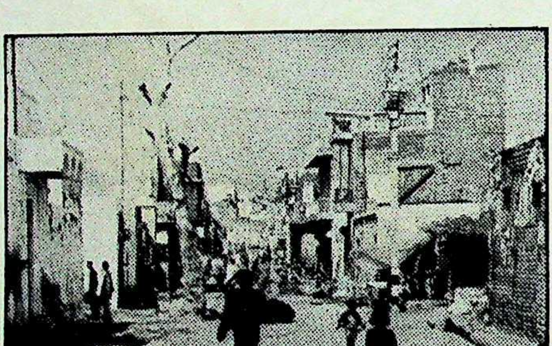

लगभग 70 प्रतिशत से अधिक शहरी जनसंख्या सीवरेज सुविधाओं से वंचित है। शहरों के भीतरी इलाकों में तथा निम्न आय वर्गीय बस्तियों में स्थिति और भी बदतर है। परिणाम स्वरुप मलवाहकों की अमानवीय प्रथा कायम है। हडको में हम नगरों को मलवाहकों से मुक्त कराने के लिए कटिबद्ध है। साफ घर साफ शहर। इस कार्य के लिए 192 नगरों में 36 करोड़ रूपये मंजूर किए जा चुके हैं। अब कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, की सहायता से हम सभी शहरों में यह योजना कार्यान्वित कर रहें हैं। इस वर्ष के अन्त तक प्रत्येक परिवार के पास निजी शौचालय की सुविधा उपलब्ध होगी। इस दिशा में अपनाई गई प्रौधौगिकियां बहुत आसान, किफायती तथा लागत प्रभावी हैं –अर्थात् लीचिंग पिट या सुलभ शौचालय। सार्वजनिक स्थलों पर पैसा दे कर शौचालयों का प्रयोग करने की योजना भी हडको द्वारा वित्त पोषित या प्रोन्नत की जा रही है। इस कार्यक्रम के लिए हडको केवल 6 प्र. श. की ब्याज दर पर ऋण मुहैय्या कराता है।

विस्तृत जानकारी के लिए कृपया अपने निकटवर्ती आवास मण्डल या हडको के ज़ोनल, क्षेत्रीय या विकास कार्यालय से सम्पर्क करें।

हडको

घर अपना सच सपना

आवास तथा नगर विकास निगम लि.
मुख्यालयः हडको हाऊस, लोधी रोड, नई दिल्ली - 110 003 फोनः 699534
ज़ोनल कार्यालयः मद्रास, क्षेत्रीय कार्यालयः अहमदाबाद, बम्बई, बंगलौर, कलकत्ता, चंडीगढ़, गुवाहाटी, जयपुर,
विकास कार्यालयः भोपाल, भुवनेश्वर, हैदराबाद, पटना, पोर्ट ब्लेयर, त्रिवेन्द्रम्

HUDCO/HHEC Graphic Cell/Incentive/89

छाप छोड़ी. लेकिन ये फिल्में लंबी रेस का घोड़ा नहीं साबित हुईं. नसीरुद्दीनशाह के कैरियर में आए उठापटक में इस सिनेमा की गति भी दिखती है. 'पार' के सूअर पालने वाले किसान को 'त्रिदेव' में तिरछी टोपीवाला बनने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ी, 'जलवा' भी दिखाना पड़ा, 'हीरो हीरालाल' बनना पड़ा और टीवी के लिए 'गालिब' का रूप भी धरना पड़ा. नसीर कहते हैं, "नए सिनेमा के साथ जो कुछ हुआ है, 'हीरो हीरालाल' उसका अच्छा प्रतीक है. शुरू में तो सारा चमक-दमक और उत्साह रहता है लेकिन आधे पर पहुंचकर यही याद नहीं रहता कि जाना कहां है."

वैसे, अस्सी के दशक के अभिनेता रहे कमलहासन. 'एक दूजे के लिए' या 'सागर' जैसी उनकी बंबइया फिल्में तो मानो रास्ते के पड़ाव भर थे. 'गॉडफादर' के हिंदुस्तानी रूपांतर 'नायकन' में उन्होंने अभिनय के मामले में दूसरों को कहीं पीछे छोड़ दिया. 'पुष्पक' और अब 'अपूर्व सहोदरगल' देखकर तो लगता नहीं है कि कोई दूसरा उन्हें छू भी पाएगा.

वैसे, कहा जाए तो यह दशक खलनायकी का ही था. खलनायक ही परदे पर छाये रहे. 'मिस्टर इंडिया' का मोगांबो (अमरीश पुरी) रातोरात लोकप्रिय हीरो बन गया. विज्ञापन एजेंसियों ने उसका इस्तेमाल मच्छर अगरबत्तियां बेचने के लिए किया, तो गब्बर सिंह ('शोले' के अमजद खां) का उपयोग बिस्कुट की बिक्री बढ़ाने के लिए किया गया.

नब्बे का दशक किधर बढ़ेगा? संभव है प्रेम कहानियों का जोर बढ़े. यश चोपड़ा द्वारा विशुद्ध प्रेम कहानी पर बनाई गई फिल्म 'चांदनी' की सफलता इस ओर इशारा करती है. इस सफलता का एक श्रेय वे फिल्म के सुरीले संगीत को भी देते हैं. लेकिन प्रेम कहानियों के धुरंधर प्रशंसकों का मानना है कि अगर प्रेम कहानियों को कायदे से प्रस्तुत किया जाए तो वे कभी असफल नहीं होंगी. पिछले दिनों 'कयामत से कयामत तक' की सफलता और उससे पहले 'एक दूजे के लिए', 'लव स्टोरी', 'राम तेरी गंगा मैली' और 'बेताब' ने भी दर्शकों को बांधे रखा.

लेकिन 1989 के आखिरी दिनों में रिलीज हुई फिल्म 'परिंदा' कुछ और ही संकेत देती है. वह यह बताती है कि आगे हीरो कौन होगा. इसका नायक अपराधियों से हार जाता है.

यानी गुस्सैल नौजवान हार मानने लगा है. दशक के आखिरी दिनों में आई अपनी फिल्म 'मैं आजाद हूं' में हर जुल्म से टकराने और बदला लेने वाले अमिताभ की आंखों में भी आंसू आते हैं. यहां तक कि यह हीरो खुद को मार डालता है. इस फिल्म और 'परिंदा' में हीरो बहादुरी वाली मौत नहीं मरते. ये प्रतीक भर हो सकते हैं. इस दशक के अंत में फिल्मी उद्योग की गाड़ी खिंचती तो जा रही है लेकिन इसके नीचे बिछा बारूद भी साफ दिख रहा है.

—मधु जैन

'राम लखन' में अनिल और माधुरी

बीते दशक में एक के बाद एक फ्लॉप फिल्मों के बावजूद कैमरा कभी बंद नहीं हुआ और पैसे का आना भी कभी बंद नहीं हुआ

'प्रतिघात' का एक दृश्य

'त्रिदेव' में सोनम के साथ नसीरुद्दीन

"जब तक आदमी जिंदा है और उसके पास देखने को आंख है, सिनेमा जिंदा रहेगा

जी.पी. सिप्पी

नए हीरो को वास्तविकताओं का सामना करना पड़ेगा. मि. क्लीन बनना होगा

राजेश खन्ना"

मिजाज बदलने का मौसम

उच्च तकनीक और धारावाहिकों के प्रचलन ने दूरदर्शन का रंगरूप बदल दिया

तेजतर्रार राम जेठमलानी फटी कमीज और चीथड़े हो चुकी बनियान में नजर आते हैं. उनकी यह गत चंद्रशेखर समर्थकों के हाथों पिटाई के कारण हुई है. देवीलाल मतदान केंद्रों पर कब्जे की बात कर रहे हैं. और मतदान केंद्रों पर कब्जा करने वाले बड़े गर्व से नलिनी सिंह को बता रहे हैं कि बूथ किस तरह 'छापे' जाते हैं. अरुण नेहरू हैरान हैं कि राष्ट्रीय मोर्चे की जीत की खबरों के प्रसारण में आखिर इतनी सुस्ती क्यों बरती जा रही है. साप्ताहिक 'संडे' के संपादक राजीव गांधी को 'धोखेबाज' बताते हैं.

कम-से-कम इस दशक में तो दूरदर्शन की छवि ऐसी नहीं ही थी. लेकिन नवंबर के अंत में जब चुनाव परिणाम आने शुरू हुए तो दूरदर्शन के तेवर बदल गए. टेली और फीचर फिल्मों के निर्माता जी.पी. सिप्पी कहते हैं, "हम फिल्मों में इसका मुकाबला कैसे कर सकते हैं." चुनाव परिणाम के दौरान प्रणय राय और विनोद दुआ ने जिस तरह देश के दस करोड़ टीवी दर्शकों को बांधे रखा उससे यह आभास तो मिल गया था कि वादे के अनुसार यदि दूरदर्शन को स्वायत्तता मिल गई उसका स्वरूप कैसा होगा. फिलहाल मध्यांतर चल रहा है और के पीछे नए लोग कमान संभालने की तैयारी कर रहे हैं.

लेकिन यह बदलाव महज भ्रम भी हो सकता है. बीता दशक मंजिल को भी दर्शाता है जो दूरदर्शन ने तय की है. 1981 विज्ञापनों की शुरुआत के बाद यह सोने का अंडा देने वाली साबित हुआ. उस साल इसने चार करोड़ रु. का मुनाफा कमाया, पिछले साल 200 करोड़ रु. का आंकड़ा छू रहा था. इस तरह पि दशक दूरदर्शन का दशक रहा.

अब दशक के अंत में इन वर्षों का पुनरावलोकन किया जाए लगता है यह कोई और ही देश था और कहीं और का टीवी. ह में पांच दिन दर्शकों को 'कृषि दर्शन' की खुराक दी जाती जो

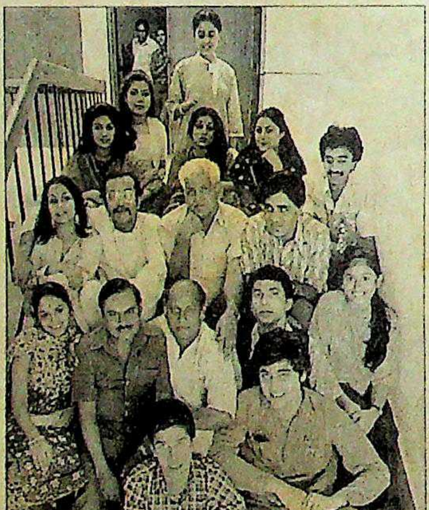

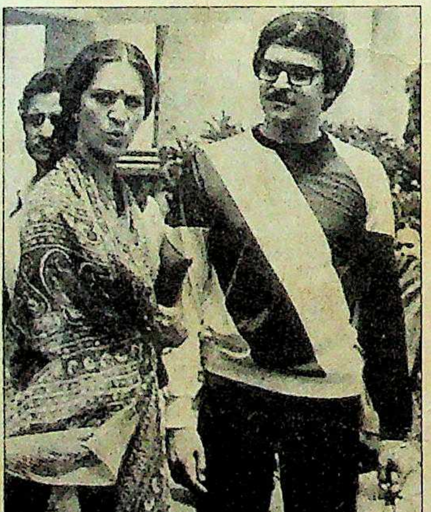

(बाएं) 'हम लोग' के सितारे; 'रजनी' में प्रिया तेंदुलकर और करण राजदान; तथा (नीचे) 'नुक्कड़' का एक दृश्य

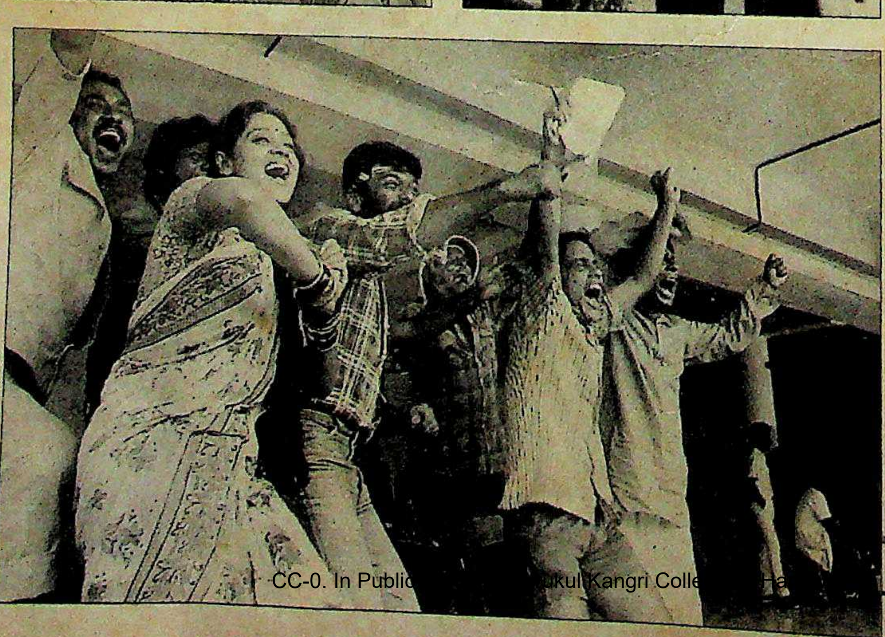

असली क्रांति तो उपभोक्ता संस्कृति को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों से आई. 1982 में देश का पहला सोप ऑपेरा तैयार हुआ. इसी से दर्शकों को टीवी देखने की लत लगी. मंडी हाउस के बाहर निर्माताओं की कतारें लंबी होती गईं

सुलाने के लिए काफी थी. इसके दर्शकों की संख्या सिर्फ चार फीसदी थी. उस जमाने का मनोरंजक कार्यक्रम था—फिल्मी हस्तियों से साक्षात्कार पर आधारित कार्यक्रम 'फूल खिले हैं गुलशन-गुलशन' जिसे अभिनेत्री तबस्सुम बड़े चटखारे लेकर पेश करती थीं. बंबई में इसके दर्शकों की संख्या 83 फीसदी और दिल्ली में 70 फीसदी थी. 'चित्रहार' तब सबसे ज्यादा लोकप्रिय था.

इस तरह अस्सी के दशक के शुरू में तो दूरदर्शन में बदलाव के कोई आसार नजर नहीं आ रहे थे. तब आकाशवाणी और दूरदर्शन में बस यही फर्क था कि श्रव्य के साथ दृश्य भी था और इसका 'सदुपयोग' फिल्म प्रभाग के उबाऊ वृत्तचित्र दिखाने में खूब किया जाता था. तभी 1982 में रंगीन टेलीविजन की शुरुआत से दूरदर्शन की काया ही पलट गई. दूरदर्शन के पूर्व महानिदेशक भास्कर घोष के अनुसार, "रंगीन टेलीविजन से उच्च तकनीक के रास्ते भी खुल गए." इसके तुरंत बाद नेटवर्क कार्यक्रम की शुरुआत हुई. 1982 में टेलीविजन ट्रांसमीटरों की संख्या 35 से बढ़कर 100 हो गई और दशक के मध्य तक पहुंचते-पहुंचते यह 415 हो गई.

यह तो महज तकनीकी उन्नति थी. असली क्रांति तो उपभोक्ता संस्कृति को बढ़ावा देने वाले प्रायोजित कार्यक्रमों से ही आई. 1982 में देश का पहला सोप ओपेरा तैयार हुआ. इसी धारावाहिक से दर्शकों को टीवी देखने की लत लगी. धारावाहिक के लेखक मनोहर श्याम जोशी बताते हैं कि किस तरह दादाजी, बशेशर नाथ, मझली का दुख पूरे देश की चिंता का सबब था. 'हम लोग' मध्यम वर्ग का घरेलू ड्रामा था तो श्रीधर क्षीरसागर के 'खानदान' का केंद्रबिंदु एक उद्योगपति का परिवार था. तकनीकी शिल्प में यह 'हम लोग' से बेहतर था. इसी धारावाहिक से छोटे परदे पर सितारों की शुरुआत हुई. दूरदर्शन ने जब मनोरंजन के लिए रास्ते खोल दिए तो कॉमेडी धारावाहिकों ने भी अपने पैर फैलाए और जल्दी ही कुंदन शाह का 'ये जो है जिंदगी' और जलाल आगा का 'मिस्टर या मिसेज' जैसे चुटीले धारावाहिक भी छोटे परदे पर उतर आए.

अस्सी के दशक के मध्य तक छोटा परदा जी.पी. सिप्पी और बेटे रमेश सिप्पी जैसे फिल्मी दिग्गजों को अपनी ओर खींच चुका था. उनके पहले धारावाहिक 'बुनियाद' के प्रसारण के दौरान भारत ही नहीं पाकिस्तान की गलियां भी सूनी हो जाया करतीं. जैसे-जैसे यह धारावाहिक लोकप्रिय होता गया, मंडी हाउस के बाहर निर्माताओं की कतारें लंबी होती गईं, भ्रष्टाचार की कहानियां और भयावह होती गईं. ज्यादा से ज्यादा फिल्मी हस्तियां इस ओर खिंचती गईं.

रामानंद सागर और बी.आर. चोपड़ा के आगमन से महाकाव्यों की इलेक्ट्रॉनिक अभिव्यक्ति की शुरुआत हुई. देश का पहला धार्मिक धारावाहिक 'रामायण' भले ही नाटकीयता से भरपूर रहा हो लेकिन इसने लोगों की भक्ति भावना में ज्वार ला दिया. 'महाभारत' का प्रसारण शुरू होने के बाद तो यह हाल है कि इतवार की सुबह एक घंटे तक देश की गतिविधियां ठप हो जाती हैं.

(बाएं से दाएं) 'बुनियाद' का दृश्य; 'यह जो है जिंदगी' के कलाकार; और (नीचे) 'तमस' का दृश्यः यादगार

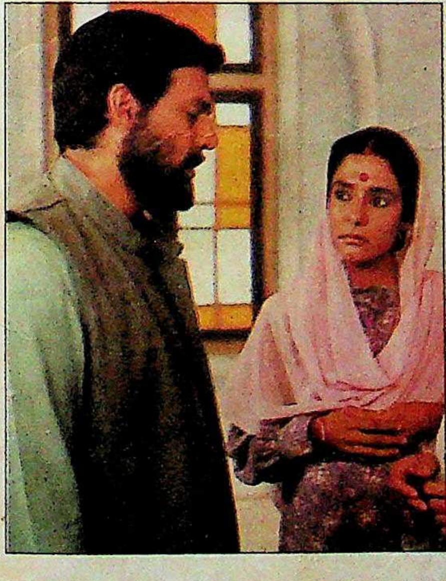

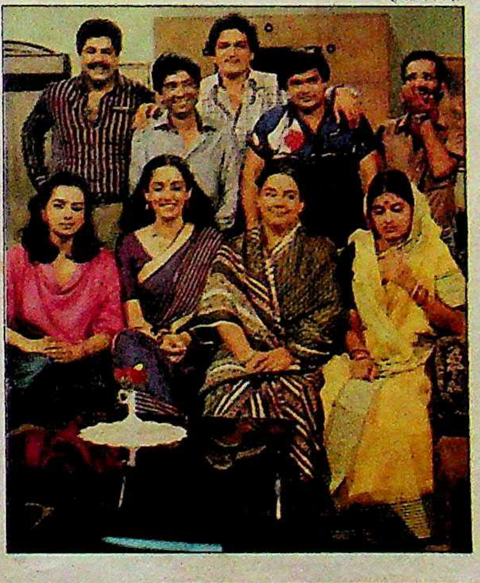

हेमंत पियवा

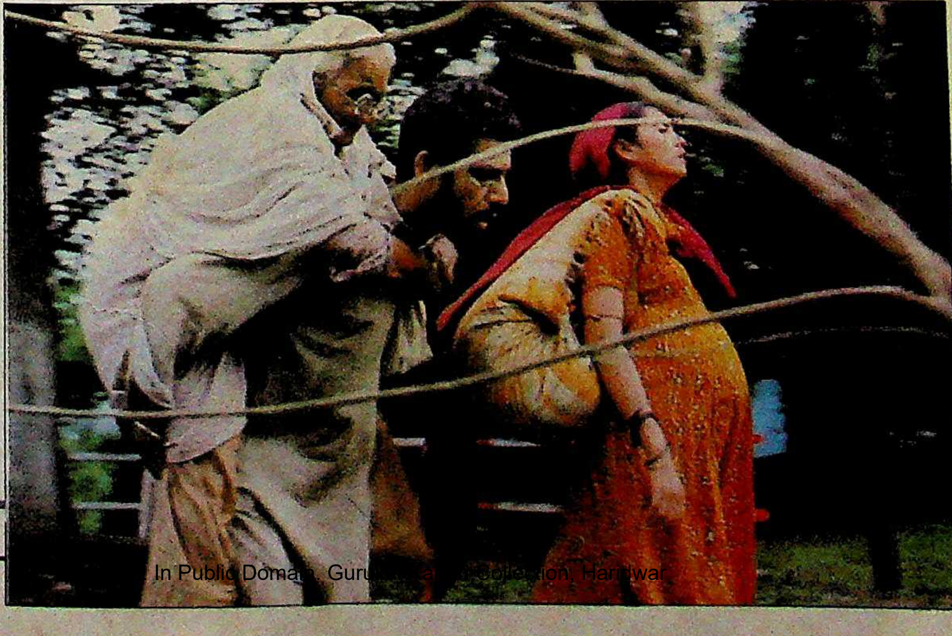

टीवी ने 1984 में राजीव को गद्दी पर बिठाया, तो इसके दुरुपयोग ने उन्हें 1989 में उतार दिया

केतन मेहता

टीवी अब वालपेपर जैसी चीज हो गया है. चलता ही रहता है

श्रीधर क्षीरसागर

सिनेमा बूढ़ी होती वेश्या सरीखा है. लेकिन टीवी और वीडियो नई जादूगरनी जैसे हैं

महेश भट्ट

मृणाल सेन, श्याम बेनेगल, सईद मिर्ज़ा, गोविंद निहलाणी, केतन मेहता और यहां तक कि सत्यजीत राय जैसे फिल्म निर्माता भी छोटे परदे पर किस्मत आजमाने का लोभ संवरण नहीं कर पाए. हालांकि सभी कामयाब नहीं हो पाए. फिल्म निर्माता सुरेश जिंदल के अनुसार, "कल के क्रांतिकारी आज टीवी के आका बन बैठे हैं." गोविंद निहलाणी के अनुसार, "टेलीविजन हर औसत दर्जे की कला के प्रदर्शन का बड़ा मंच बन गया."

टेलीविजन पर सितारे जिस तेजी से चमके उसी तेजी से धुंधलाते भी गए. मसलन, 'कृष्ण' और 'अर्जुन' के छोटे परदे पर अवतरित होते ही 'राम' का करिश्मा फीका पड़ने लगा. इन सितारों के मुकाबले दूसरे कार्यक्रमों के संचालक और निर्माता ज्यादा स्थायी साबित हुए. प्रणय राय, विनोद दुआ, सिद्धार्थ बसु और मंजू सिंह ने लोकप्रियता के साथ-साथ मोटा मुनाफा भी बटोरा.

सईद मिर्ज़ा के धारावाहिक 'नुक्कड़' और 'इंतजार' ताजगी का झोंका लेकर आए तो तेजतर्रार 'रजनी' की भूमिका में प्रिया तेंदुलकर आम आदमी की रोजमर्रा की समस्या के लिए जूझी. भारत विभाजन पर भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' पर गोविंद निहलाणी का धारावाहिक इस दशक की एक और यादगार कृति है.

राजीव गांधी जब नए-नए प्रधानमंत्री बने तो ताजा घटनाओं पर भी कार्यक्रम तैयार किए जाने लगे. 'जनवाणी' के तहत लोगों के तीखे सवाल मंत्रियों को बौखला देने वाले होते थे. 'आजकल' में ऐसे मुद्दे उठाए जाते जिन्हें आम तौर पर दरकिनार कर दिया गया होता. 1986 में जब भास्कर घोष दूरदर्शन के महानिदेशक बने तो खुलेपन की हवा और तेज हो गई.

कुछ बड़े अखबार समूह भी मौके का फायदा उठाने आगे बढ़े. इनमें 'आनंद बाजार पत्रिका' की 'न्यूज लाइन' चर्चित रही, जिसे एम.जे. अकबर प्रस्तुत किया करते. टाइम्स समूह ने भी टेलीविजन कंपनी शुरू की. दूरदर्शन ने बाहर से कुछ निर्माताओं को भी बुलाया.

(ऊपर) 'महाभारत' में चीरहरण; और (नीचे) 'रामायण' का दृश्य

रामानंद सागर और बी.आर. चोपड़ा के आगमन से महाकाव्यों की इलेक्ट्रॉनिक अभिव्यक्ति की शुरुआत हुई

जीवन का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जो आप दोनों को मिलकर लेना होगा

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों ने एक दूसरे का हो जाने व जीवन के उतार-चढ़ाव में साथ निभाने का निर्णय ले लिया है। अब अपने जीवन का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने का आप दोनों के लिए यही समय है। आप दोनों को सन्तान व अन्य बढ़ती ज़िम्मेदारियों के दैनिक चक्र में बन्धने से पूर्व अपने आप को कुछ वर्ष देने होंगे। इसके लिए आपको आवश्यकता है एक ऐसे गर्भनिरोधक की जो आप दोनों के अनुकूल हो।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है। ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम।

KOHINOOR
PINK LUXURY CONDOMS

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पत्ति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं। कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है। यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है। सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है। कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलिभाँति समझते हैं। कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है।

ttk उत्पादन

MAA COMMUNICATIONS 914A HIN

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग!

फिल्म निर्देशक रमेश शर्मा ने, जिनकी 'न्यू देहली टाइम्स' वादे के बावजूद कभी परदे का मुंह नहीं देख पाई, तो गोरखा लिबरेशन फ्रंट पर तैयार एक कार्यक्रम में ज्योति बसु को यह कहते दिखा दिया कि "मैं भला झूठ क्यों बोलूंगा. मैं कांग्रेसी थोड़े ही हूं?" पीटीआई टीवी के शशि कुमार ने श्रीलंका समस्या पर भी कार्यक्रम बनाया.

लेकिन 1988 में किसी घड़ी राजनैतिक अखाड़े में हलचल मची और दूरदर्शन के तेवर बदलते नजर आए. शशि कुमार के अनुसार, "दूरदर्शन सरकार का प्रचार माध्यम तो पहले से ही था लेकिन अब तो सरकार ने इसे अपना उल्लू सीधा करने का जरिया भी बना लिया." उसी साल घोष को हटा दिया गया. और के.के. तिवारी टेलीविजन के जरिए विपक्ष पर विष बुझे बाण छोड़ने लगे. प्रधानमंत्री कार्यालय से विपक्ष को बेधने की कमान मणिशंकर अय्यर और जी. पार्थसारथि ने संभाली.

इसके बाद बड़े परिष्कृत तरीके से लोगों की देशभक्ति की भावना उभारने का अभियान शुरू हुआ. बेहद खूबसूरती से फिल्माई गई 'मिले सुर मेरा...' और स्वतंत्रता की मशाल हाथ में लिए भागते खिलाड़ियों वाली फिल्में दर्शकों को आह्लादित कर देने की क्षमता रखती थीं. 'मेरा भारत महान' के दृश्य भी बहुत प्रभावी तरीके से तैयार किए गए. फिर 'भारत एक खोज' के जरिए नेहरू जी साल भर परदे पर छाए रहे.

इस अति प्रचार के दुष्परिणाम भी जल्द ही सामने आने शुरू हो गए. विडंबना यह रही कि जिस दूरदर्शन ने राजीव को चढ़ाया वही उनके पतन का कारण भी बन गया. उन्हें देखते-देखते दर्शक उकता गए. दशक का अंत आते-आते हालत यह हो गई कि स्वायत्तता देने का वादा कर चुकी नई सरकार यह तय नहीं कर पा रही कि शुरुआत कहां से करे क्योंकि दूरदर्शन जैसे बेहद प्रभावशाली प्रचार माध्यम को अपने नियंत्रण से मुक्त करने की हिम्मत जुटाना बहुत मुश्किल काम है. यही इस दशक की उपलब्धि है. —मधु जैन

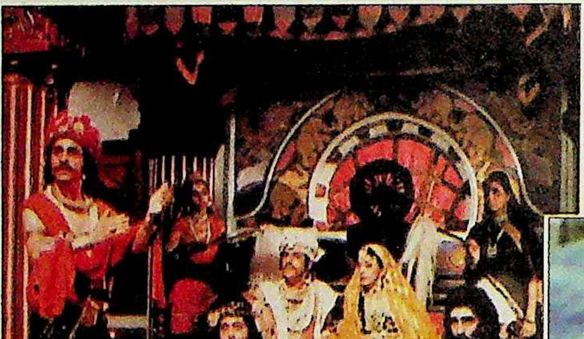

(बाएं ऊपर से नीचे) 'भारत एक खोज'; 'मिले सुर मेरा...'; 'मेरा भारत महान' का दृश्य; (दाएं नीचे) रोशन सेठ; गावसकर

फिर देश-भक्ति की भावना उभारने का अभियान शुरू हुआ. 'मिले सुर मेरा...' और मशाल हाथ में लिये भागते खिलाड़ियों वाली फिल्में दर्शकों को आह्लादित कर देने की क्षमता रखती थीं

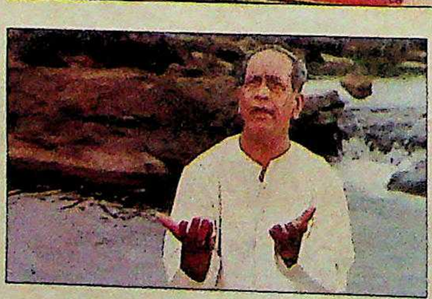

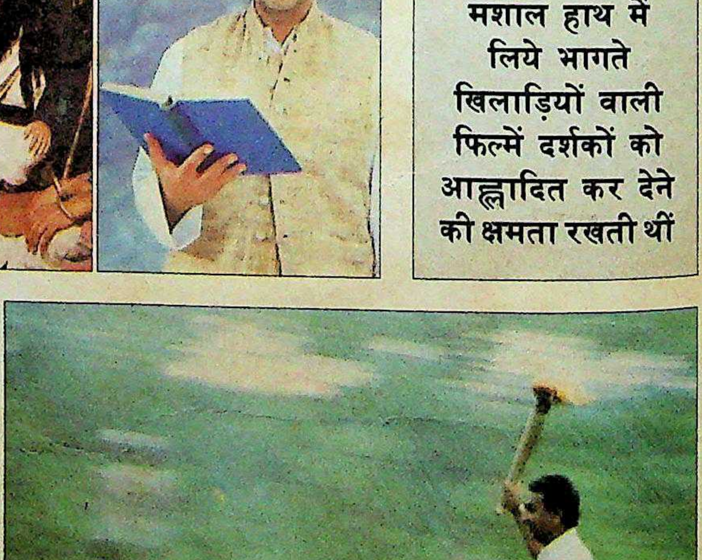

भरोसे के पीछे हैं कारण अनेक

गोदरेज. गुणवत्ता और तकनीकी कुशलता का प्रतीक. इससे नये स्वचालित कारखाने में आधुनिकतम तकनीक की मदद से सही मायनों में अंतर्राष्ट्रीय दर्जे के रेफ्रिजरेटर बनाये जातें हैं. तभी तो लोग गोदरेज का ही नाम लेते हैं. ऐसा नाम जिस पर वे पूरी तरह भरोसा कर सकें.

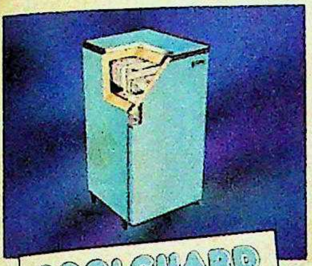

COOLGUARD

ज़्यादा ठंडा, ज़्यादा मज़बूत, ज़्यादा साफ़-सुथरा. 100% पॉलीयूरीथेन इंसुलेशन – संसार के नामी रेफ्रिजरेटरों के बराबर. इस **बेहतर इंसुलेशन** के कारण गोदरेज ज़्यादा देर तक ज़्यादा ठंडा रहता है. पॉलीयूरीथेन से मिलनेवाली मज़बूती व सख्ती रेफ़्रिजरेटर को ज़्यादा सुदृढ़ बनाती है. इंसुलेशन के कारण गरमी निकलने नहीं पाती और कीड़े-मकोड़े अंदर नहीं घुस पाते.

MEGA FORCE

बिजली बचानेवाला मज़बूत कम्प्रेसर जो वोल्टेज की भारी घट- बढ़ को भी मज़े में संभाल लेता है. कूलगार्ड के सहयोग से यह **तेज़ी से ठंडा करता है** और **बिजली भी बचाता है.**

SPECTRUM

तरह-तरह के **ख़ास** लुभावने रंगों की अभूतपूर्व श्रेणी. डेज़र्ट सैंड. डस्की ब्लू. इलेक्ट्रिक रेड. स्प्रिंग ग्रीन. कूल ब्लू. क्लासिक व्हाइट. और मिस्टी ग्रे. सब के सब एपॉक्सी पाउडर कोटेड फ़िनिश में, जो खूबसूरत भी लगें और ज़्यादा टिकें भी. साथ ही मेल खाते रंगों में आकर्षक टेबल टॉप.

ULTRASPACE

गोदरेज 165 लीटर रेफ़्रिजरेटर में है सबसे बड़ी सब्जी ट्रे. और ख़ास डिज़ाइन की बदौलत दरवाज़े के पैनल में भी बोतलों और अंडों के लिए ज़्यादा जगह.

Freezer
Chiller

भरोसा, पूरा भरोसा

Godrej®

HTA 1843 R

विदेशी तर्ज में ढला

इससे पहले कि '80 का दशक बुटीक शब्द का उच्चारण सीख पाता, देश भर के गली-मुहल्लों में धूम-धड़ाके से 'रूप' बेचते बुटीक खुल गए. और फैशन की दुनिया में दशक का रूप निखरता ही चला गया.

वीते दशक में फैशन का हुलिया निर्विवाद रूप से देसी था पर उसकी जरदोजी का ढंग पश्चिमी ही रहा. हिंदुस्तानियों को अचानक ही अपनी पोशाकों, शिल्प और कपड़ों में संभावनाएं दिखने लगीं. परिधानों के महंगे, उच्चवर्गीय डिजाइनरों ने इन्हें पश्चिमी अवधारणा में ढालकर लोगों को इसका दीवाना बना दिया.

फैशन की दुनिया के ये बदलाव महानगरों से शुरू हुए जहां अमीरों ने सलवार-कमीज के रंग तथा पायल और परांदी के ढंग पर एक दूजे से होड़ लेनी शुरू कर दी. वे 'अपना उत्सव', हस्तशिल्प मेलों और व्यापार मेलों पर टूट पड़े. सलवार, कुर्ते और दुपट्टे की कई किस्में उन पर फबने लगीं. लहंगे का रिवाज फिर चल निकला. सिंथेटिक और पॉलिएस्टर अचानक ही अछूत हो गए.

नीरस मानी जाने वाली साड़ी में भी कई क्रांतिकारी बदलाव आ गए. जांद्रा रोडेस ने इसे अजीबो-गरीब आकार देना शुरू कर दिया. पर फैशनपरस्त लोगों को उनका रंग-ढंग जरा भी नहीं भाया. तंगाइल, चंदेरी, कांजीवरम, जामदानी, इकत, राजकोट, ओडीसा की बमकई और दक्षिण भारत की सूती साड़ियां इस कदर खरीदी गईं मानो उनका स्टॉक खत्म होने वाला हो. ब्लाउज ने औरत

बीते दशक में फैशन का हुलिया निर्विवाद रूप से देसी था पर जरदोजी का ढंग पश्चिमी ही रहा

ढला देसी ढंग

प्रमोद पुष्करणा

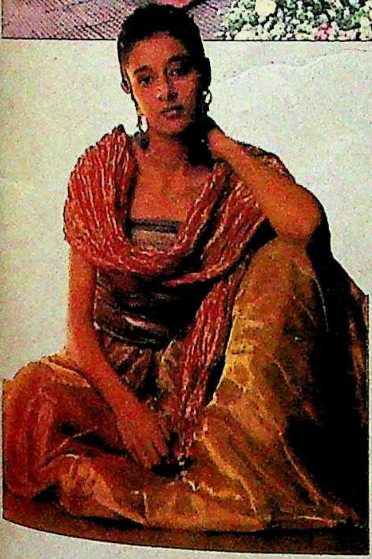

बेन इगहम

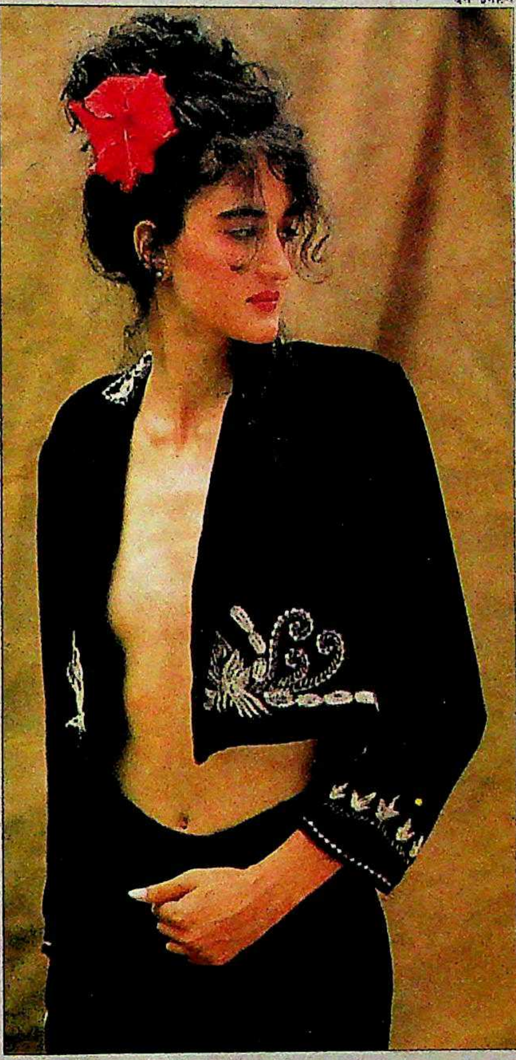

एक डिजाइनर का बुटीक (सबसे बाएं); घघरी चोली (ऊपर); जरदोजी का कमाल (दाएं) लहंगे का एक रूप (बाएं नीचे)

की पीठ के ज्यादा से ज्यादा हिस्से को उघाड़ना शुरू किया और आस्तीनें फिर कोहनी तक पहुंच गईं.

रिवाज में आए रंग भी देसी किस्म के थे—गहरा गुलाबी, नारंगी, हरा, नीला, फिरोजी, बसंती, गुलाबी और काला. '70 के दशक पर छाए रहने वाले हल्के रंग तो जैसे उड़ ही गए. इन रंगों के मेल तो और भी अजीब बना दिए गए. मसलन गहरे गुलाबी के साथ शोख नीला, नारंगी के साथ पिस्तई हरा या फिरोजी और साथ में सूरजमुखी का पीलापन. रंग-बिरंगे कुर्तों में शीशाकशी का रिवाज पूरे दशक पर छाया रहा.

इस दशक में एक नई पीढ़ी ने भी अपना बोलबाला कायम किया. विदेशी डिग्रियों वाले भड़कीले डिजाइनरों की इस पीढ़ी ने दुकानें खोलीं और तुरंत ही बाजार पर छा गई. फिर 1986 में दिल्ली में राष्ट्रीय फैशन तकनीक संस्थान खुल जाने से फैशन को व्यावसायिक दर्जा मिल गया और संस्थान में एक-एक जगह के लिए सैकड़ों अर्जियां आने लगीं.

डिजाइनरों की इस घुसपैठ ने मर्दों को भी नहीं छोड़ा. 'सुस्त' सी लगने वाली '70 के दशक की बेलबॉटम पतलूनें, कसी कमीजें और चौड़े बेल्ट गए और उनकी जगह ज्यादा सौम्य परिधानों ने ले ली. चुन्नटदार पतलूनें, छोटे कॉलर की कमीजें, पतले बेल्ट और फिर ढीली-ढाली बैगीज का जमाना आ गया. सिले-सिलाए कपड़ों का उद्योग बड़ी तेजी से फैला. परंपरागत दर्जी लुप्त होने लगे. मर्दों के मामले में भी देसी पोशाकों का जमाना आया. मसलन, नेहरू जैकेट, बंद गले का कोट, शेरवानी और

आम तौर पर नीरस मानी जाने वाली साड़ी में भी कई क्रांतिकारी बदलाव आ गए

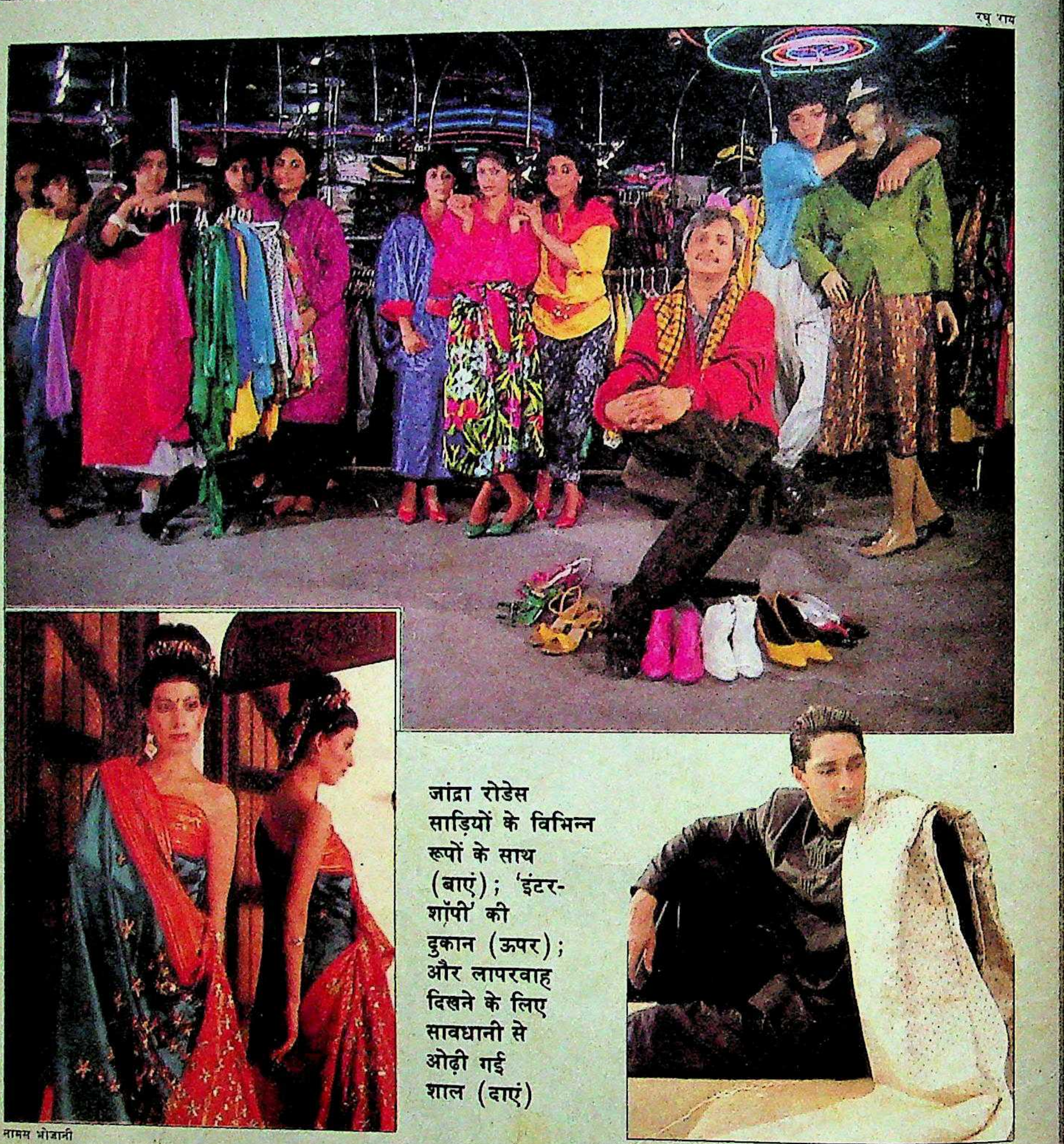

रघु राय

जांद्रा रोडेस साड़ियों के विभिन्न रूपों के साथ (बाएं); 'इंटर-शॉपी' की दुकान (ऊपर); और लापरवाह दिखने के लिए सावधानी से ओढ़ी गई शाल (दाएं)

नामस भोजानी

बेन इगहम

राजीव गांधी या अमिताभ बच्चन की तरह से कीमती शाल ओढ़ने का फैशन.

पर सब कुछ देसी नहीं रहा. डेनिम (नीली जींस) की धूम बरकरार रही. कसी हुई, घुटनों तक लंबाई वाली और पीछे की ओर कटाव लिए हुए डेनिम स्कर्ट का स्कूल, कॉलेजों से विश्वविद्यालय तक बोलबाला रहा. नीली, बदरंग और स्टोनवाश—कई तरह की जींस चलती रहीं. कसी जींस पहनने के लिए लड़कियों ने अपनी चर्बी घटा दी और मटके सी तोंद वाले मर्द भी इसे चढ़ाए दिखे.

नौजवानों ने जिस तरह की पोशाकें पहनी उससे एक तो उनके वर्ग की झलक मिलती थी और दूसरे उनकी बनावटी लापरवाही की. सामान्य लोगों की अलमारियों में जो परिधान थे उनमें खास प्रसंगों पर पहनने के लिए डिजाइनरों के तैयार कुछ कपड़े, कई तरह की सलवार कमीजें—भोपाली, अंगरखा, अनारकली, आभा, कुछ महंगे, ढेर सारे रंगीन दुपट्टे, कुछ जींस, ढेर-सी ढीली-ढाली कमीजें, टी-शर्ट्स, सूती बैगीज, कुछ स्कर्ट, कुछ कपड़े शीशाकशी वाले और कुछ बेशकीमती देसी साड़ियां.

कुल मिलाकर फैशन की नुमाइंदगी नौजवानों ने ही की. उन्होंने पश्चिमी डिजाइन तो अपनाए ही, नए देसी परिधानों से भी उनका साक्षात्कार हुआ.

—शर्मीला चंद्रा

तड़क-भड़क वाले डिजाइनरों की पीढ़ी ने दुकानें खोलीं और बाजार पर छा गई

...ized by A...

मुखड़ा ही है दर्पण..
आत्मा के कराए दर्शन.

जाने-माने ग़ौरवशाली एच एम टी नक्षत्र का सितारा है यह. धड़कनों में है वही अदा, वही अंदाज, टेक्नालॉजी का वही कमाल. बिक्री-बाद-सेवा में वही देखभाल. औरों से हटकर, औरों से बढ़कर है अंदाज इसका. एच एम टी नाम है इस आत्मा का.

hmt
QUARTZ

खट्टी-मीठी यादों का स्वाद

खिलाड़ियों को दाम, नाम और सम्मान देने का दौर

भारतीय खेलों की दुनिया के लिए अस्सी के दशक की तस्वीर गड्डमड्ड रही. इसमें अच्छा-बुरा, हार-जीत, बहुत उम्मीद होने पर भी भारतीय टीमों के पराजित हो जाने और उम्मीद न होने पर जीत जाने, उम्र पर अनुभव की जीत और जवानी के जोश के आगे अनुभव की शिकस्त, सब कुछ देखने को मिलता है. दशक की यादें चाहे मीठी हों या कड़वी, पर याद रह जाने वाली हैं.

इसी दौरान 16 वर्षों के अंतराल के बाद भारत ने हॉकी स्वर्ण पदक (भले ही वह बिना प्रतिद्वंद्विता वाला मास्को ओलंपिक ही क्यों न हो) जीता. सबके पूर्वानुमान को झूठा साबित करते हुए भारतीय क्रिकेट टीम ने प्रूडेंशियल वर्ल्ड कप जीता और फिर कुछ दिन बाद मेलबोर्न में बेंसन ऐंड हेजेज वर्ल्ड कप पर भी कब्जा जमा लिया. प्रूडेंशियल कप जीतने के बाद लार्ड्स मैदान की बालकनी से शैंपेन उड़ाते हुए खिलाड़ियों की तस्वीर याद रहने वाली चीज है. उड़नपरी पी.टी. उषा तो दरअसल सोने (के पदकों) की खान साबित हुई. और जहां दौड़ीं वहीं से सोना ले आईं. रमेश कृष्णन ने भारत को डेविस कप के फाइनल में पहुंचाया.

और अब दशक के अंत तक खेलों के मैदान पर जो नए सितारे दिखाई दे रहे हैं वे हैं—सचिन तेंदुलकर और संजय मांजरेकर, शतरंज के ग्रैंडमास्टर विश्वनाथन आनंद, मध्यम दूरी के धावक बहादुर प्रसाद और रामनिवास तथा टेनिस चैंपियन जीशान अली.

लेकिन खेलों में सफलताओं के अलावा मायूसियों की सूची भी छोटी नहीं. लॉस एंजिलिस में सेकंड के सौवें हिस्से के फासले से पी.टी. उषा पदक पाने से चूक गईं, रिलायंस कप के सेमीफाइनल में कपिल द्वारा गैटिंग का कैच छोड़ना महंगा पड़ा तो शारजाह में जावेद मियांदाद का अंतिम गेंद पर छक्का. शाइनी अब्राहम सिओल में रिकार्ड तोड़ने के बावजूद पदक से वंचित रहीं और वहीं उषा अपनी दौड़ में सबसे पीछे रह गईं. 1986 के लंदन विश्व कप में भारतीय टीम सबसे नीचे, 12वें स्थान पर पिछड़ गई.

कुल मिलाकर इस दशक में भारतीय खेलप्रेमियों ने हर तरह का स्वाद चखा. लेकिन सबसे भारी बदलाव खेलों के बारे में नजरिए में था. अस्सी के दशक में भारतीय खेलों में पेशेवर अंदाज आया. सरकारी पैसे के लिए तरसते खेलों में व्यावसायिक घरानों के प्रायोजित आयोजनों के माध्यम से पैसा आया. दशक के आखिरी दिनों में एशियाई ट्रैक ऐंड फील्ड मुकाबले हुए और सरकार का एक भी

भवान सिंह

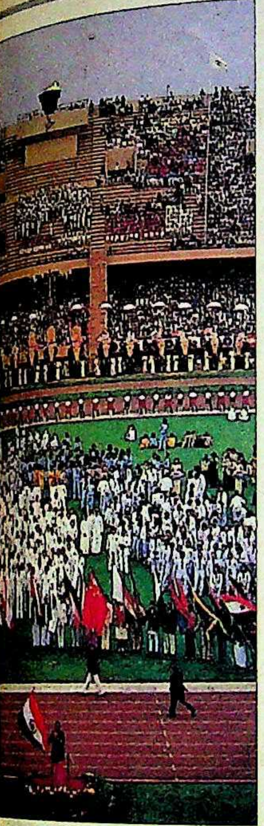

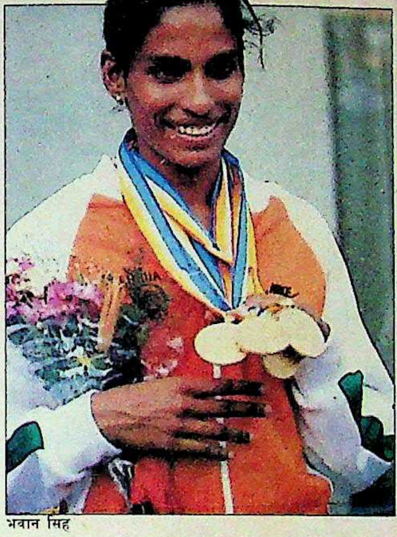

भवान सिंह

येदत एसिकासिन/लिव एक्शन

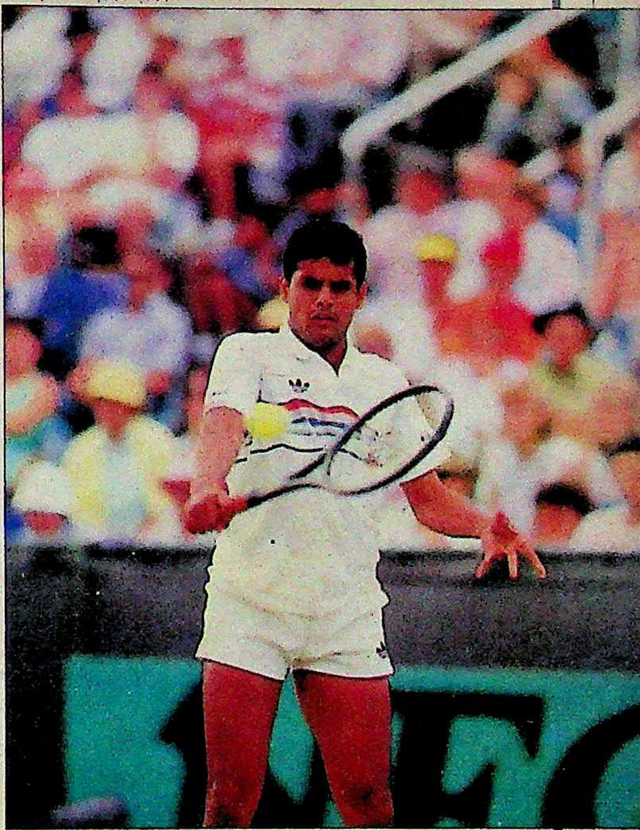

खेलों में जीत से इंदिरा गांधी की वह बात सही हुई कि 'भारत दिखा सकता है'

(बाएं से दाएं) बेंसन ऐंड हेजेज कप विजेता टीम; एशियाड का शुभारंभ, सिओल में उषा; डेविस कप फाइनल में रमेश

पैसा नहीं लगा. यह दशक खिलाड़ी को खेल मैदान से भी आगे तक ले गया. यह उसे नाम, दाम और सम्मान देने वाला साबित हुआ. टीवी की 'मदद' से वह स्टार भी बन गया.

लेकिन भारतीय खेलों के लिए इन चीजों से भी अधिक फायदेमंद रहा एशियाई '82 का आयोजन: हॉकी, क्रिकेट और टेनिस के अलावा भी अन्य खेल होते हैं और उनका भी कोई महत्व है, यह बात एशियाड के 'अप्पू' और (प्रतीक चिह्न) 'जंतर मंतर' ने ही बताई. इस आयोजन के उपहारस्वरूप हमें शानदार और नवीनतम सुविधाओं से युक्त खेल स्टेडियम मिले. इसी दौरान कृत्रिम मैदान विकसित हुए, आयोजनों के लिए आवश्यक इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण आए. बाद में इन्हीं स्टेडियमों में टेबल टेनिस, हॉकी, साइकिलिंग, कुश्ती, फुटबाल और एथलेटिक्स के एशियाई और विश्वस्तरीय मुकाबले आयोजित किए गए.

एशियाड के साथ ही रंगीन टीवी और वीडियो का दौर भी शुरू हुआ जिसने खेलों को लोकप्रिय और व्यावसायिक बनाने में खासी मदद की. इससे देश-विदेश की सभी नामी प्रतियोगिताओं को अब घर बैठे देखने की व्यवस्था हो गई. एशियाड और अमेरिकी ओपन से लेकर विंबल्डन और विश्व कप फुटबाल के सीधे और रंगीन दृश्य देखना संभव हो गया है. इसी से व्यायाम और चुस्त-दुरुस्त बने रहने के अन्य उपायों के लोकप्रिय होने का दौर भी आया. व्यायामशालाओं और हेल्थ क्लबों की बाढ़ ने बाहर से मदद पहुंचाई. और फिर तुरंत विज्ञापनवालों ने भी खिलाड़ियों को 'लपकना' शुरू कर दिया. इससे खेलों ने धन को आकर्षित करना शुरू किया जिसकी हमेशा कमी महसूस की जाती थी.

खेलों में पैसा आया तो इनके सितारों की भी बन आई. मामला यहां तक बढ़ गया कि क्रिकेट खिलाड़ियों ने जब हाल के पाक दौरे में बोर्ड से पैसा लेने से इनकार कर दिया तो एक ही कंपनी ने उतना पैसा दे दिया, सिर्फ अपना प्रतीक चिन्ह पहनकर पाकिस्तान में खेलने की शर्त पर. पैसा क्रिकेट में ही नहीं, एथलेटिक्स में भी आया.

सिर्फ सिओल के अपने प्रदर्शन के बूते पी.टी. उषा ने सरकार से ही 20 लाख रुपए पाए. फिर कंपनियों और प्रशंसकों ने भी, जिनमें धर्मेंद्र भी शामिल हैं, काफी कुछ दिया. नवंबर '89 में दिल्ली में हुई एशियाई ट्रैक ऐंड फील्ड प्रतियोगिता में अपना फॉर्म वापस पाने के साथ ही उषा ने पुरस्कार में 7.5 लाख रुपए भी पाए. जो खिलाडी उषा जैसे भाग्यशाली नहीं हैं उन्हें भी अब कुछ सौ या हजार रुपए की बख्शीश के भरोसे नहीं बैठे रहना पड़ता. एशिया स्तर की किसी भी प्रतियोगिता में स्वर्ण, रजत और कांस्य पदक विजेता को सरकार क्रमश: 1 लाख, 50 हजार और 25 हजार रुपए पुरस्कार-स्वरूप देती है. भारतीय एथलेटिक संघ भी इस उपलब्धि के लिए क्रमश: 50 हजार, 25 हजार और 15 हजार रुपए देता है.

कंपनियों द्वारा खेल पर पैसा लगाने और खेल मंत्रालय तथा भारतीय खेल प्राधिकरण के माध्यम से सरकारी संरक्षण मिलने से भारतीय खेलों के रास्ते की एक सबसे बड़ी बाधा समाप्त हो गई. लेकिन अनेक बाधाएं अभी भी बनी हुई हैं. खेल संगठनों की राजनीति खिलाड़ियों के साथ ही आयोजकों को भी परेशान करती रहती है. मोहिंदर अमरनाथ ने क्रिकेट की चयन समिति को जोकरों की टोली कह दिया और क्रिकेट खिलाड़ियों तथा अधिकारियों की लड़ाई फैसले के लिए सुप्रीम कोर्ट तक पहुंच गई.

रिले दौड़ में स्वर्ण पदक जीतने वाली टोली की एक महिला खिलाड़ी ने चुनौती दी, "अगर सुरेश कलमाडी (राष्ट्रीय एथलेटिक्स संघ के अध्यक्ष) दो बाधाओं के बीच की दूरी बता दें तो मैं दौड़ना छोड़ दूंगी." उधर विजय अमृतराज पूरे दशक भर लॉन टेनिस संघ से उलझे ही रहे. और हॉकी, फुटबाल, महिला हॉकी, शूटिंग और

भवान सिंह

भवान सिंह

भारतीय खिलाड़ियों में जीत की उत्कट आकांक्षा का अभाव विफलता दिलाता रहा

“

क्या बताएं, क्या हुआ

लॉस एंजिलिस में भारतीय हॉकी टीम के पांचवां स्थान पाने पर

विनीत कुमार

”

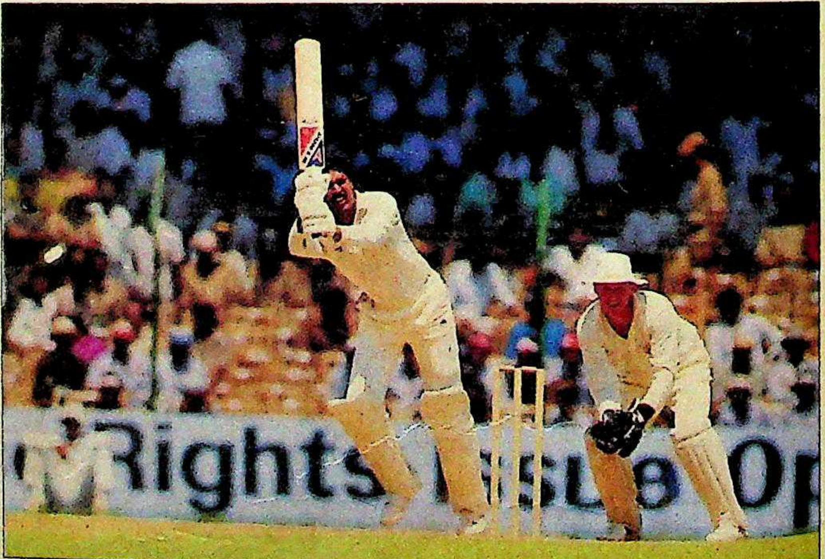

सिओल हॉकी सेमी फाइनल में पहुंचने में नाकाम भारतीय टीम (ऊपर); और रिलायंस कप सेमी फाइनल में कपिल

तीरंदाजी के संगठनों के बारे में तो कहना ही क्या.

इधर खिलाड़ी खेल संगठनों की राजनीति से परेशान रहे और उधर राजनेताओं को इन संगठनों के 'खेल' से फुरसत नहीं मिली. इस दशक में राजनेताओं की सबसे शानदार भिड़ंत मार्गरेट अल्वा और सुरेश कलमाडी के बीच हुई.

भारतीय खिलाड़ियों में बाजी मार लेने की भावना का अभाव बना ही रहा लेकिन दशक के आखिर में इस कमी के दूर होने के संकेत भी दिख रहे थे. एशियाई ट्रैक ऐंड फील्ड मुकाबलों के 1600 मीटर रिले दौड़ के अंतिम चरण में अर्जुन देवैय्या ने जो शानदार दौड़ लगाई उसमें इस भावना का परिचय मिलता है. देवैय्या ने इस दौड़ में काफी आगे चल रहे जापानी खिलाडी को करीब-करीब पछाड़ ही दिया था. फिर 16 साल के नन्हे तेंदुलकर ने बाउंसर से चोट खाने और नाक से खून बहने के बाद भी डटे रहने की हिम्मत दिखाई और उसी गेंदबाज के उसी ओवर में दो चौके ठोक दिए. सिओल एशियाड में दक्षिण कोरिया के हाथों पिट चुकी भारतीय हॉकी टीम ने अगले मुकाबले में उससे एक-दो गोलों की बढ़त लेकर भी चैन नहीं लिया और पूरे पांच गोल दाग दिए.

आज भारतीय खिलाड़ियों के बात करने का अंदाज भी बदल गया दिखता है. कपिल देव कहते हैं, ''मानता हूं कि वेस्ट इंडीज की टीम बहुत मजबूत है. लेकिन इसका यह मतलब हरगिज नहीं है कि

WE MAKE THE BEST SPONGE IRON

For the might of steel !!

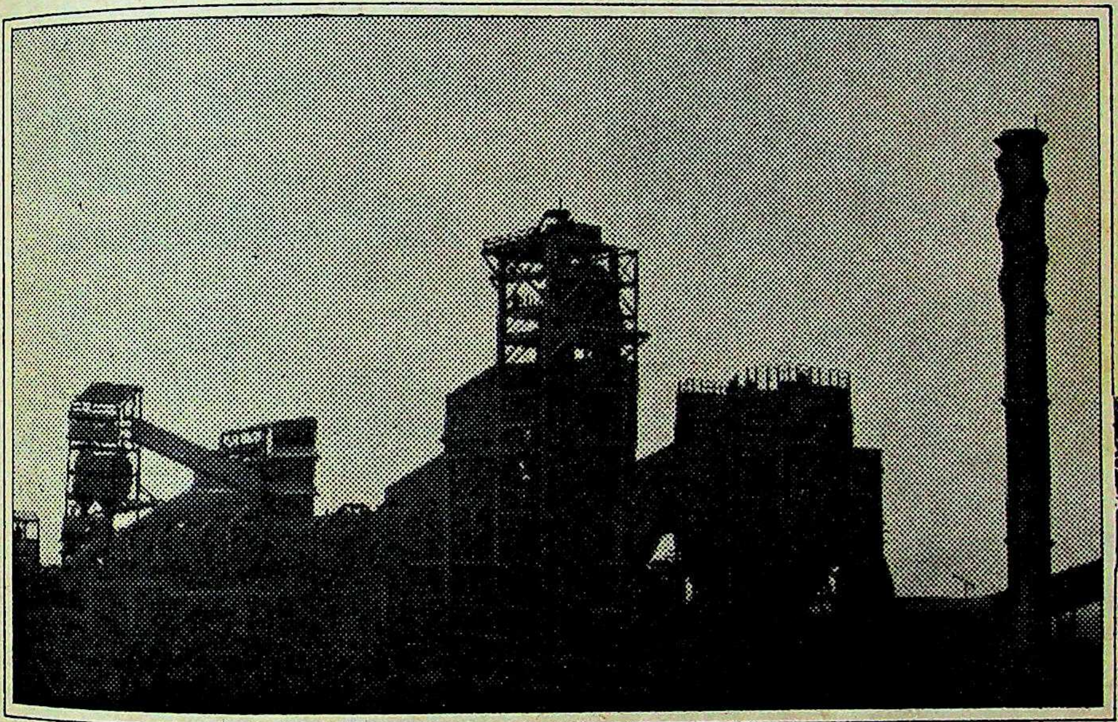

■ A STARK STEEL REALITY ■ 1.50 LAKH TONS CAPACITY; A GIANT INDO-GERMAN IMPORT SUBSTITUTION VENTURE ■ SUPPLYING TO THE CORE SECTOR PRIME GRADE SPONGE IRON ■ HELPING THE NATION'S STARVING MINI-STEEL PLANTS WITH BETTER AND ECONOMICAL RAW-MATERIAL ■ TO MAKE BETTER STEEL ■ DYNAMICALLY.

BSIL

For Trade Enquiries, please contact :

The Sales Manager

BIHAR SPONGE IRON LIMITED

1400, Hemkunt Tower, 96, Nehru Place, New Delhi-110019. Tel : 6468748,
EPABX : 6410800, 6445910, 6445912, 6411861, Fax : 6446875
Telex : 031- 62907 BSIL IN Plant : CHANDIL (Near Jamshedpur),
Distt. Singhbhum, Bihar-832401.

A joint venture of : **MODIS • BSIDC • LURGI (FRG) • DEG (FRG)** Equity participation also by: **IFC (U.S.A.)**

एम. राधिका

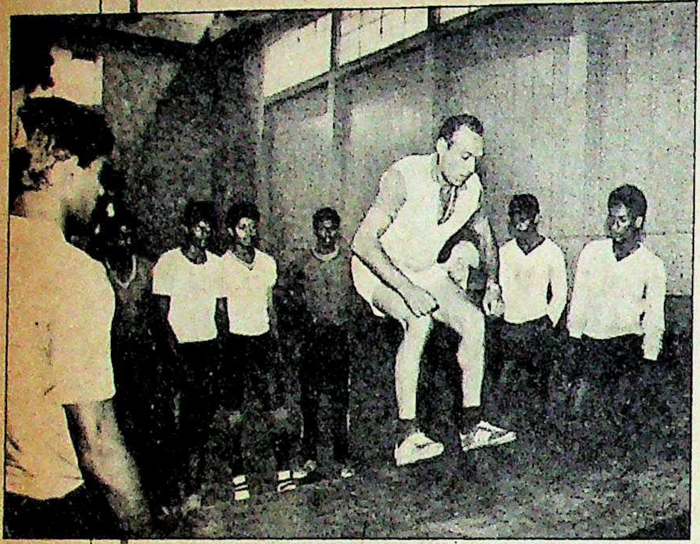

प्रशांत पंजियार

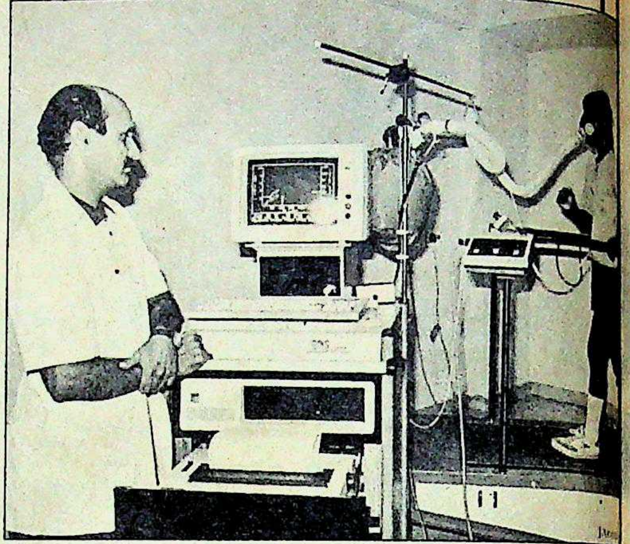

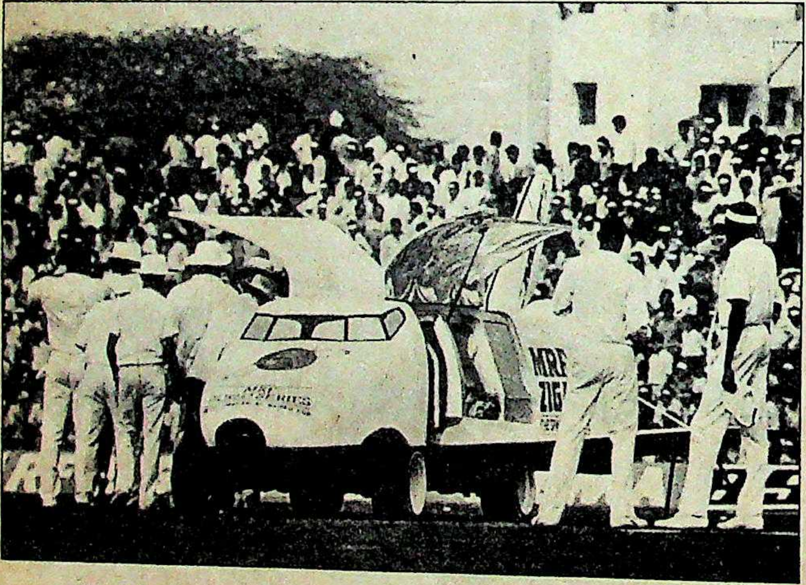

विदेशी कोच, प्रायोजकों और टीवी ने भारतीय खेल की तस्वीर बदल दी

> "सरकार से क्या पूछना, जब उद्योग जगत मदद को इतना आतुर है?"
>
> *एथलेटिक्स संस्थान के मुखिया सुरेश कलमाडी*

(ऊपर बाएं) वॉलीबाल खिलाड़ियों को प्रशिक्षण देते रूसी कोच; अत्याधुनिक उपकरण; (नीचे) एमआरएफ की आधुनिक ट्रॉली

हम उनके सामने साष्टांग दंडवत ही करने लगें." इस भाषा का इस्तेमाल अभी तक ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेट खिलाड़ी ही करते रहे हैं, पर लगता है अभी भी खिलाड़ियों का नजरिया पूरी तरह बदलने में काफी समय लगेगा बहरहाल, यह तो तय है कि अब भारतीय खिलाड़ी 'दब्बू' वाली छवि को मिटा ही चुके हैं.

दरअसल तीन लोगों—गावसकर, पी.टी उषा और विश्वनाथन आनंद का उदाहरण सत्तर, अस्सी और आने वाले दशक के बदलाव और निरंतरता को दर्शाता है. इन तीनों ने बहुत प्रतिभा, निष्ठा, एकाग्रता, हिम्मत और मेहनत से सफलता अर्जित की. गावसकर ने प्रेस जगत की अपनी आलोचना और खराब फॉर्म को बड़े ही निश्चय से पार किया और दिल्ली के फिरोजशाह कोटला मैदान पर वेस्ट इंडीज के तूफानी गेंदबाजी को खेलते हुए मात्र 94 गेंदों पर अपना शतक पूरा करके ब्रैडमैन के 29 शतकों का रिकार्ड तोड़ा. इसके बाद उन्होंने एक दोहरा शतक बनाया और 10,000 रनों का विश्व रिकार्ड बनाकर संन्यास लिया.

जिस चोट ने उषा का कैरियर समाप्त-सा कर दिया था उस पर भी विजय पाते हुए उन्होंने एक बार फिर अपने देश की झोली को स्वर्ण पदकों से भर दिया. विश्वनाथन आनंद ने एक ऐसे खेल में दुनिया भर में अपना और देश का नाम रोशन किया जिसको देश में न तो कोई पूछता है, न इस पर पैसा खर्च करता है.

वैसे, खेलों में खुद भी बहुत बदलाव आ गया है. कभी हंगामा मचाए रहने वाले टेस्ट मैचों के तो अब समाप्त हो जाने का खतरा आ गया है. इसमें बदलाव लाए बगैर इसका टिके रहना अब संभव नहीं लगता. इस दशक में एक दिवसीय क्रिकेट का उदय हुआ और साल में कुछ ही महीने खेल की अवधारणा भी समाप्त हो गई. शारजाह जैसे रेगिस्तानी शहर में भी क्रिकेट पहुंच गया है.

दूसरी जगह भी बदलाव हुए हैं. नशीली दवाओं का चलन बढ़ते जाने के साथ ही इससे बचने के लिए जरूरी पेशाब जांच प्रत्येक अंतरराष्ट्रीय मुकाबले के लिए एक अनिवार्यता बन गई है. अनेक खिलाड़ी अपने देश में अच्छा प्रदर्शन करने के बावजूद अंतरराष्ट्रीय

जीवन के रंग अजीब...

शुक्र है बोरोलीन करीब

खुशबूदार ऐन्टिसेप्टिक क्रीम

BOROLINE
ANTISEPTIC PERFUMED CREAM

सूखी त्वचा और साधारण कटने-छिलने पर अनोखा असर

साठ साल पहले अव्वल, आज भी अव्वल

बोरोलीन प्रसाधन सामग्री नहीं

जी डी फार्मास्युटिकल्स
कलकत्ता ७०००५३

Response 1039

प्रदीप मंधानी

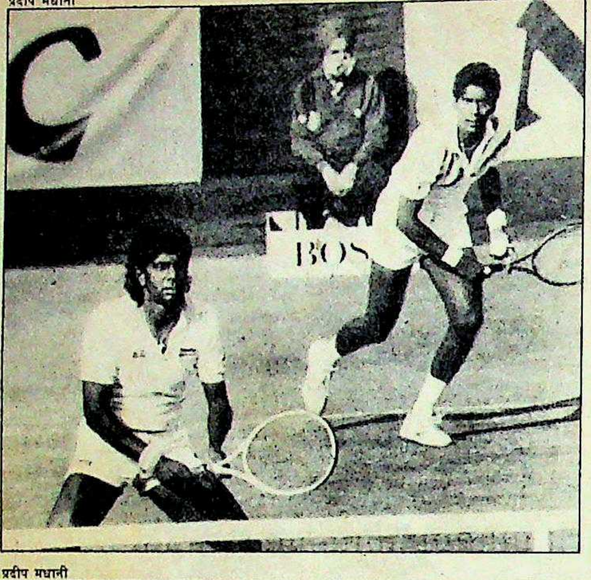

प्रदीप मधानी

खेलों में लंबे अरसे तक छाये रहे सितारे रिटायर हो गए

> “भारत का बीड़ा अभी भी मुझे ही उठाना पड़ रहा है.
>
> *विजय अमृतराज*”

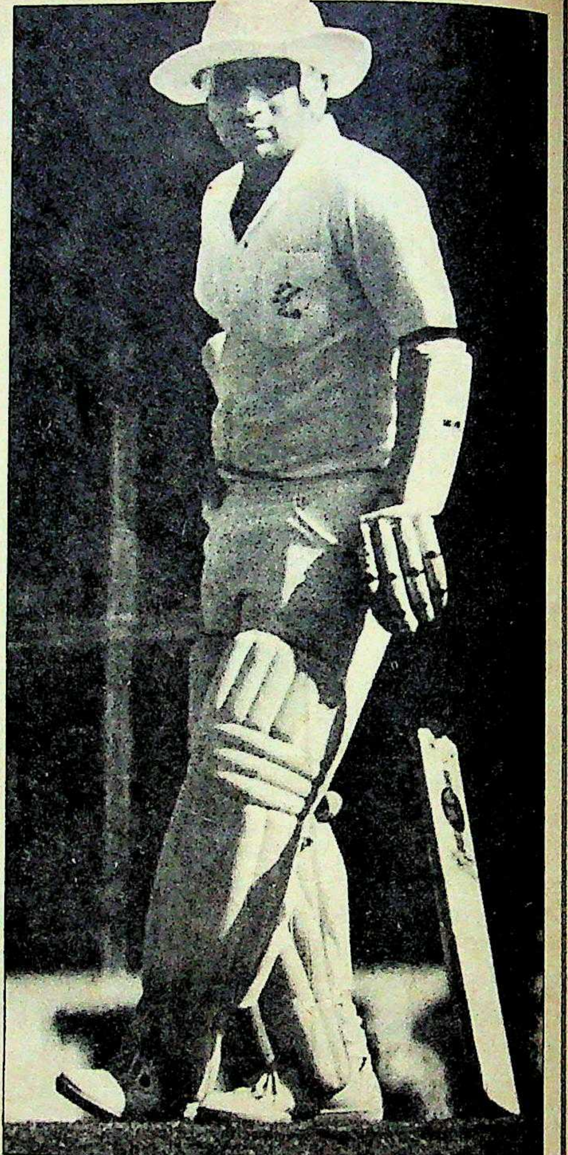

(ऊपर बाएं) अमृतराज बंधु, सुनील गावसकर; और (नीचे बाएं) प्रकाश पादुकोण: पुराने सितारे

मैदान में दूसरे खिलाड़ियों से पिछड़ जाते हैं.

इस दशक में भारतीय महिला खिलाड़ियों का उदय भी उल्लेखनीय बात थी. एथलेटिक्स में तो उन्होंने मर्दों को काफी पीछे छोड़ दिया. वैसे भारतीय खिलाड़ियों ने निरंतर अच्छा प्रदर्शन करने के मामले में काफी ख्याति पाई है. कई तो दो-दो दशक से इस चुनौती भरे माहौल में भी टिके हुए हैं. इस दशक के आखिर तक भारतीयों के नाम जो तीन एशियाई रिकार्ड बन चुके थे वे तीनों ही रिकार्ड महिलाओं के वर्ग में हैं.

पटियाला स्थित राष्ट्रीय खेल संस्थान ने इस दशक के मध्य में जो अध्ययन किया था उससे पता चलता है कि भारतीय महिलाओं के प्रदर्शन में सुधार की दर जापानी और चीनी महिलाओं से अधिक तेज है. और भारतीय पुरुषों के सुधार की दर से तो यह बहुत ही तेज रही. भारतीय महिलाओं के प्रदर्शन में सुधार की औसत दर 6.11 फीसदी की रही जबकि चीनी महिलाओं में यह दर 4.53 फीसदी और जापान के मामले में 3.33 फीसदी थी. और अभी भी दौड़ में नई प्रतिभाओं के आने का क्रम जारी है. एंजिला लिंसी के रूप में ऊंची कूद में आगे बढ़ने वाली एक प्रतिभा भी मौजूद है और अगर अभी आई लड़कियों को ठीक से प्रशिक्षण दिया जाना जारी रहा तो वे आज के सारे रिकार्ड तोड़ देंगी. अस्सी के दशक की यह एक खूबी रही कि बहुत ही मेहनती और महत्वाकांक्षी लड़कियों की टोली सदा ऊपर बढ़ने में जुटी रही.

सौभाग्य से अन्य खेलों में भी बहुत कुछ यही स्थिति है. अगर अस्सी के दशक में गावसकर के कवर ड्राइव, वेंगसरकर के स्ट्रेट ड्राइव, कपिल देव के आउट स्विंगर की धूम रही तो अगले दशक में शायद संजय मांजरेकर के स्क्वायर कट, सचिन तेंदुलकर के ऑन ड्राइव और विवेक राजदान के बाउंसर बहुत यादगार साबित होंगे. दौड़ मुकाबलों में उषा की जगह बहादुर प्रसाद की धूम मचे तो कोई अचरज नहीं होगा. 75 वर्ष तक के लोगों द्वारा खिताब जीतने वाले खेल स्नूकर के लिए तो अभी गीत सेठी कितने समय तक हंगामा मचाए रखेंगे, कहा नहीं जा सकता.

स्कार्प न्यूज़

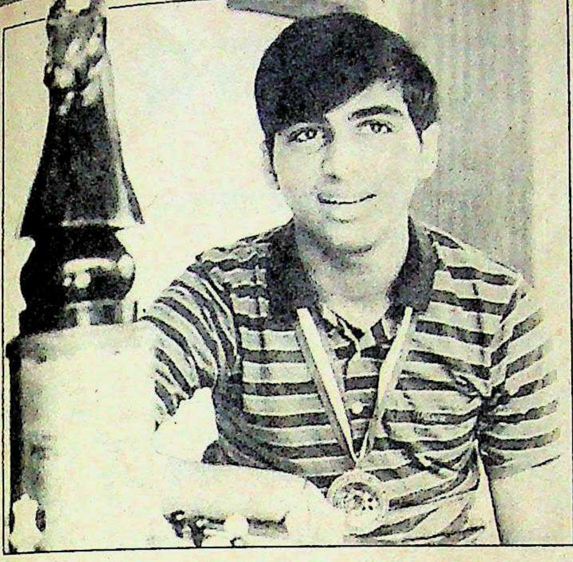

प्रमोद पुष्करणा

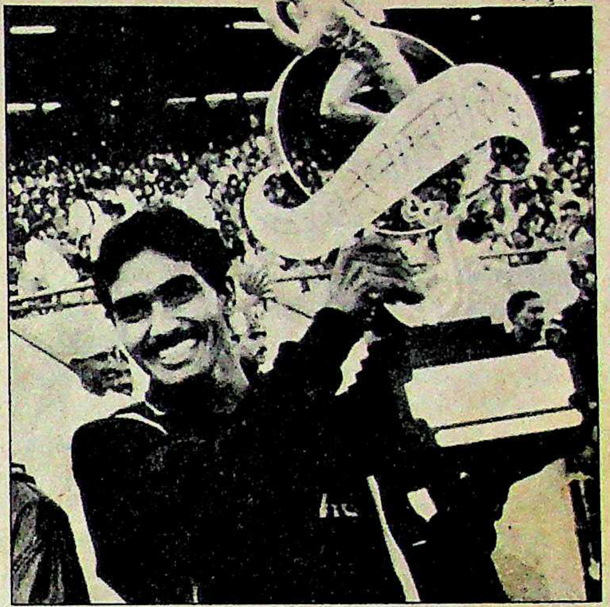

प्रदीप मधानी

नई प्रतिभाओं का '90 के दशक के खेलों में प्रवेश हो चुका है

> "मैं विरासत की बात नहीं जानता. मैं तो अपने दम पर बल्लेबाज हूं
>
> संजय मांजरेकर
> *पिता से तुलना करने पर*
>
> जान-बूझकर जल्दी नहीं खेलता, जल्दी ऊब जाता हूं
>
> विश्वनाथन आनंद"

महेंद्र पारीख

(ऊपर बाएं) विश्वनाथन आनंद; बहादुर प्रसाद; (नीचे दाएं) सचिन तेंदुलकर; और संजय मांजेरकर: नई प्रतिभाएं

मिखाइल ताल और बोरिस स्पास्की जैसे खिलाड़ियों को धूल चटाकर विश्व के 50 प्रमुख शतरंज खिलाड़ियों में शामिल हो चुके विश्वनाथन आनंद भी अभी 'बच्चे' ही हैं. जीशान अभी भविष्य के प्रति आशा तो जगाते हैं लेकिन वे विजय अमृतराज या रमेश कृष्णन की जगह ले पाएंगे यह भविष्यवाणी नहीं की जा सकती.

खेलों के लिए यह दशक दर्दनाक हादसे भी लेकर आया. हॉकी के कप्तान सुरजीत सिंह सड़क दुर्घटना में मारे गए, तो वॉलीबाल खिलाड़ी जिमी जार्ज का खेल जीवन इटली में हुई एक कार दुर्घटना से चौपट हो गया. बैडमिंटन के सितारे सैयद मोदी की हत्या हो गई. इसी प्रकार पटियाला में प्रशिक्षण ले रहा एक प्रतिभावान जिमनास्ट भी रोमन रिंग में गिरकर दम तोड़ गया. लेकिन सबसे दुखद परिस्थितियां वे थीं जिन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी पान सिंह को डकैत बना दिया और वह चंबल में मारा गया.

फिर भी बीते दशक ने अपने आगे के समय के लिए जो छवि पेश की वह गौरव और उम्मीदों से भरी है. और भारत के खेलप्रेमियों के लिए यह कोई छोटा आश्वासन नहीं है. **—अमरनाथ के. मेनन**

हर विधा में बड़ा शून्य

नाम-दाम, कुर्सी-सेज के संग्राम में एक छोटी बिरादरी का रचनाकर्म जारी रहा

साहित्य को हर देश और काल में समाज का प्रतिबिंब माना जाता रहा है पर कभी-कभी ऐसे दौर भी आते हैं जब किसी भाषा का साहित्य समाज को अक्स दिखाकर उसे चेताने के बजाए आईना पकड़कर खड़ी होने वाली बांदी बनकर रह जाए. बीता दशक इसी मायने में हिंदी साहित्य के लिए अनूठा रहा.

इस दशक में हिंदी साहित्य जगत ने हिंदीभाषी समाज के दिन-ब-दिन बदलते सुर में सुर मिलाते हुए ऐसी संगत दी कि देखने-सुनने वाले दंग रह जाएं. लिखने वालों ने बाजार की मांग को देखते हुए अपनी कलम को सही स्वाद वाली चाशनी में डुबोया तो प्रकाशक ने भी सरकारी परचेज का बैरोमीटर पढ़कर छापने और न छापने के फैसलों की एक नई परंपरा का सूत्रपात किया. इसी तरह राजनीति में चलने वाली बयार के मुताबिक पीठ घुमाने के अनुभव ने लेखक को रोटी की चुपड़ी सतह पहचानने का पाठ पढ़ाया तो सरकारी पुरस्कारों और अनुदानों के लिए होने वाली मारामारी ने उसके परंपरागत जुझारूपन को रचनात्मक दिशा प्रदान की. यह बात जुदा है कि नाम-दाम कुर्सी-सेज के फलसफे पर चलने वाले इस संग्राम से परे रहकर लिखने वालों की एक छोटी-सी बिरादरी अपनी कल्पना के इंद्रधनुष पर हिलोरें लेते हुए अपना रचनाधर्म निभाती रही.

नतीजा वही रहा जो सामने है. दशक शुरू हुआ और देखते-देखते बीत भी गया. लेकिन इस पूरे दौर में हिंदी साहित्य के किसी भी क्षेत्र में न ऐसा कुछ घटा और न ऐसा कुछ रचा ही गया जिसके लिए दस बीस साल बाद इसे याद किया जा सके. वक्त की आंधी ने अज्ञेय, महादेवी वर्मा, जैनेंद्र, भवानी प्रसाद मिश्र, सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, श्रीकांत वर्मा, लक्ष्मीनारायण लाल, भोलानाथ तिवारी और महेंद्र चतुर्वेदी जैसे उन चिरागों को बुझाकर हिंदी साहित्य और हिंदी भाषा के अंधियारे को और गहरा कर दिया जिनकी लौ दीप स्तंभों की तरह नए नाविकों को रास्ता दिखाती चली आ रही थी. हरिवंशराय बच्चन, रामकुमार वर्मा तथा उपेंद्र नाथ अश्क जैसे पुरानी पीढ़ी वाले दिग्गज तो बदलते माहौल में खुद को परदेसी पाकर चुप्पी साध गए. और विष्णु प्रभाकर तथा विजयेंद्र स्नातक जैसों ने भी समारोहों की अध्यक्षता के रास्ते साहित्य सेवा का बीड़ा उठाने का फैसला कर लिया.

उधर वक्त के दबावों के आगे नतमस्त होकर शानी, गंगाप्रसाद विमल और शिव सिंह चौहान जैसे अनुभवी लेखकों ने सरका नौकरी की गाड़ी पर सवार होकर अ रचनाधर्म को वीकएंड अनुष्ठानों तक सीमित रखने की मजबूरी निभाई तो कम श्वर जैसे लेखकों की बिरादरी यही तय न कर पाई कि वे लेखक हैं, पत्रकार हैं दूरदर्शन की कृपादृष्टि पर चलने वाले मस्त रोल सैनिक? उधर रोजी-रोटी के चाबु और अखबारी नौकरी की लगाम ने प्रय शुक्ल, उदय प्रकाश, मंगलेश डबराल, म सूदन आनंद, विष्णु नागर और विन भारद्वाज जैसे होनहार लेखकों की कलम गति पर भी अंकुश लगाए रखा.

लेकिन कुला मिलाकर बीता दशक हि साहित्य के लिए कवि-लेखक अजित कुमार शब्दों में "महज दूसरे दर्जे का दौर र जिसमें मूल और अच्छा लिखने, छापने बजाए विदेशी और गैर हिंदी भारती भाषाओं के अच्छे साहित्य को हिंदी पाठक सामने पेश करने की परंपरा शुरू हुई." कहते हैं, "हालांकि यह सब प्रकाशकों द्वा

बीता दशक हिंदी साहित्य की दुनिया में सरकारी पैसे पर साहित्यिक 'पिकनिकों' या आपसी प्रशंसा सम्मेलनों का दशक भी रहा

साहित्योत्सव
FESTIVAL OF LETTERS 1989
संगोष्ठी
लेखक और स्वाधीनता
SEMINAR
FREEDOM AND THE WRITER

सुरक्षित खेल खेलने के ही तहत किया गया पर इसने हिंदी को भारतीय साहित्य के 'क्लियरिंग हाउस' का रुतबा भी उपलब्ध कराया लेकिन इसने अच्छे लेखकों को भी अनुवाद करके तुरत-फुरत पैसा कमा लेने की ओर आकर्षित किया."

प्रकाशन के मामले में जहां एक ओर कागज और छपाई की बढ़ती कीमतों ने कल्पना, सरस्वती, ज्ञानोदय, कहानी, कथन, दस्तावेज और पहल जैसी साहित्यिक पत्रिकाओं के युग पर मृत्युदंड के फैसले का आखिरी ठप्पा लगाया वहीं सरकारी खरीद के मोहजाल में फंसकर प्रकाशक बिरादरी ने लेखक वर्ग को ठगने और पाठक से पीछा छुड़ाने का परंपरा का भी सूत्रपात कर डाला. आसमान छूती कीमतों से जन्मे इस रेगिस्तान में जुझारू कृष्णचंद्र बेरी की हिंदी प्रचारक ग्रंथावली योजना और पाकेट बुक्स प्रकाशकों के सस्ते संस्करण हल्की बूंदाबादी की तृप्ति तो दे गए पर किसी नखलिस्तान की रचना कर पाने में नाकामयाब रहे.

एक जमाने में 'कहानी' में छपी दो कहानियो के ही बूते पर हिंदी साहित्य की मुख्यधारा में आ जुड़े शानी उस जमाने को याद करते हुए कहते हैं, "वह भी जमाना था जब जगदलपुर जैसे इलाके में रहते हुए भी आप कहानी, कल्पना और ज्ञानोदय के रास्ते हिंदी जगत की नब्ज को पकड़े रख सकते थे और दिल्ली की यात्रा किए बिना साहित्य में अपनी जगह बना सकते थे. लेकिन आज तो अच्छे-अच्छे लेखकों को भी समझ नहीं आता कि वे कहां लिखें?" इस संदर्भ में मुंशी प्रेमचंद के 'हंस' को इस दशक में (1985) नया जीवन दान देने के लिए राजेंद्र यादव को जरूर याद किया जाएगा.

और जहां तक बात है महिला साहित्यकारों की तो उस क्षेत्र में भले ही कुछ युगांतरकारी न हुआ हो पर कुल मिलाकर हालत उस सबसे बेहतर रही जो पुरुष साहित्यकारों की दुनिया में घटा. कृष्णा सोबती, पद्मा सचदेव, मृदुला गर्ग, राजी सेठ, मृणाल पांडे, गगन गिल, मंजुल भगत और नासिरा शर्मा जैसे कई नाम पत्रिकाओं और अपने संग्रहों, उपन्यासों के माध्यम से साहित्य को गति देते रहे. इस दशक की एक खासियत यह रही कि महिला साहित्यकारों के रचनाकर्म का दायरा कविता, कहानी और उपन्यास के परंपरागत दायरे से बाहर निकलकर नाटक, समालोचना, व्यक्ति-चित्र और आत्मकथा जैसे पुरुष प्रधान क्षेत्रों तक फैल गया. मृणाल पांडे के शब्दों में, "इस दौर में महिला साहित्यकारों के एक पुख्ता और समांतर सोच को स्वीकृति मिली है. उन्हें गंभीरता से लिया जाने लगा है. इस दशक की यह एक खास उपलब्धि रही."

हरिवंश राय बच्चनः रीता प्याला

हिंदी साहित्य की पुरानी पीढ़ी के दिग्गजों ने आज के बदलते माहौल में खुद को परदेसी पाकर चुप्पी साधना ही बेहतर समझा

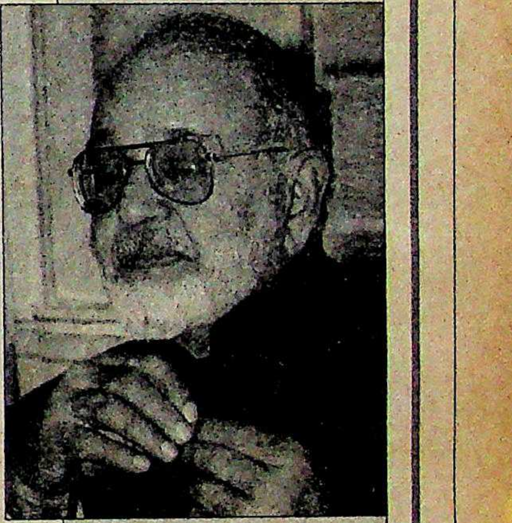

महादेवी और अज्ञेयः पूरी हुई जीवनी

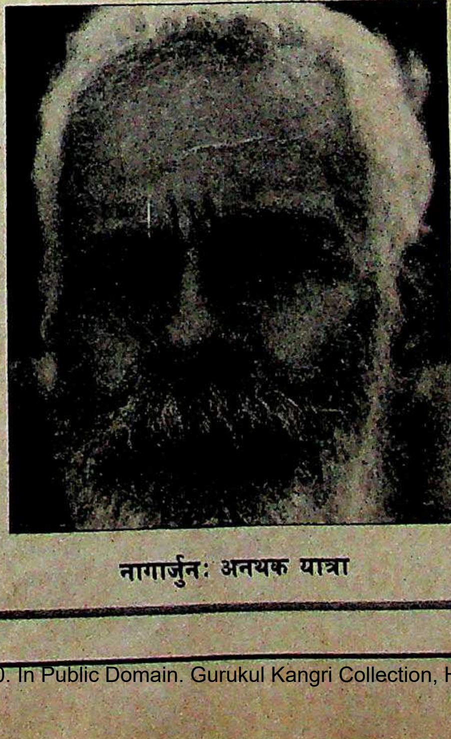

नागार्जुनः अनथक यात्रा

> **"इस दशक ने कई चिरागों को बुझाकर हिंदी के अंधियारे को और भी गहरा कर दिया**
>
> **यह दशक साहित्य में पुरानी लकीरें पीटने के बजाए सहज और खुलकर लिखने का युग रहा"**

बीते दशक में जिस तरह प्रगतिशील लेखक संघ, जनवादी लेखक संघ, जन संस्कृति मंच और भारत भवन गुट की राजनैतिक लताओं ने हिंदी साहित्य का खून चूसा वह इस दशक की शायद सबसे महत्वपूर्ण घटना रही. इसी तरह नामवर सिंह, अज्ञेय, अशोक वाजपेयी और वामपंथी गुटों के इर्दगिर्द चलने वाली अखाड़ेबाजी ने हिंदी की मठाधीश परंपरा को जिस तरह पुख्ता किया उसे भी भुलाया नहीं जा सकेगा.

इस राजनीति के चलते साहित्यिक सम्मेलनों का रुतबा भी सरकारी पिकनिक या आपसी प्रशंसा मेलों जैसा ही रहा. इस हालत पर कटाक्ष करते हुए आलोचक, लेखक सुधीश पचौरी कहते हैं, "जिस समय देश धर्मांधता की लपटों में घिरा हुआ था उस समय हमारी लेखक बिरादरी या तो अपनी छोटी लड़ाइयों में व्यस्त थी या फिर हाथीदांत के मीनार में बैठी सपने बुन रही थी. मगर शुक्र है कि इमरजेंसी और 1984 के दंगों ने क्रांति-क्रांति के नारे लगाने वालों को समझा दिया कि क्रांति से पहले लोकतंत्र और मूल्यों की रक्षा जरूरी है."

सबसे अधिक आशावादी माहौल कविता की दुनिया में ही देखने को मिला जहां हर रोज नई करवट लेते और संकट-दर-संकट संक्रमण काल से गुजरते समाज की परेशानियों और दुविधाओं को हिंदी कवियों ने बखूबी कलमबंद किया. इस प्रक्रिया में अरुण कमल, राजेश जोशी, असद जैदी, विमल कुमार और देवी प्रसाद मिश्र जैसे नए नाम उभरकर सामने आए तो प्रयाग शुक्ल, मंगलेश डबराल और विनोद शुक्ल जैसे कुछ पुराने कवियों ने भी अपनी अच्छी छाप छोड़ी. और पुरानी पीढ़ी की ओर से हिंदी कविता का परचम थामने वालों में नागार्जुन, शमशेर कुंवर नारायण, रघुवीर सहाय और गिरिजा कुमार माथुर जैसे कुछ नाम चर्चित रहे. इसी तरह कहानी के क्षेत्र में भी स्वयं प्रकाश, शशांक, आनंद, नवीन सागर और कर्मेंद्र शिशिर जैसे कथाकारों ने क्षितिज पर नई रोशनी की लकीरें खींचीं और उपन्यासकारों की सूची में मंजूर एहतेशाम और अब्दुल बिस्मिल्लाह जैसे प्रतिभावान नाम आ जुड़े.

रामदरश मिश्र के अनुसार, "किसी वाद में बंधकर चलने के बजाए लेखकों ने खुद को सहज ढंग से व्यक्त किया. इसी सहजता के लिए इस दशक को याद किया जाएगा." उम्मीद की जाए कि आने वाले दशक में हिंदी साहित्य व्यावसायिकता की बाधाओं को लांघेगा और गुटबाजी तथा राजनीति के शिकंजे में फंसकर कदमताल करने पर मजबूर नहीं होगा.

—विजय क्रांति

फोटो: प्रमोद पुष्करणा

इस दशक में महिला रचनाकारों की पुख्ता और समांतर सोच को स्वीकृति मिली

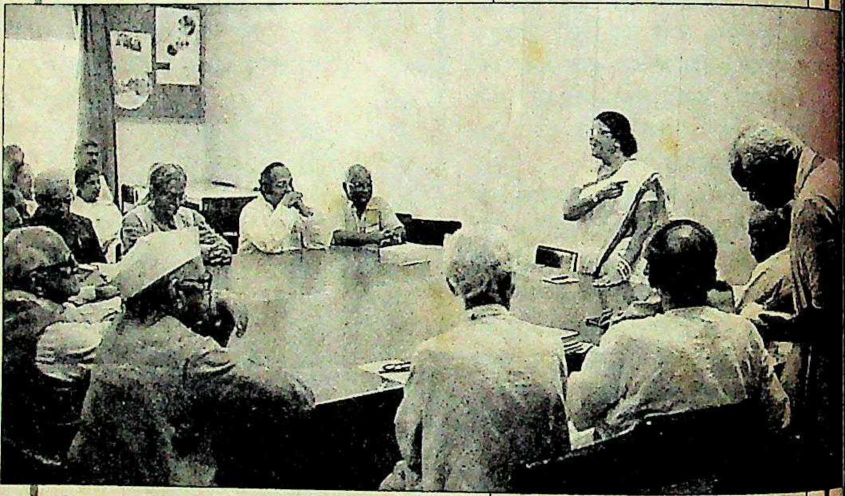

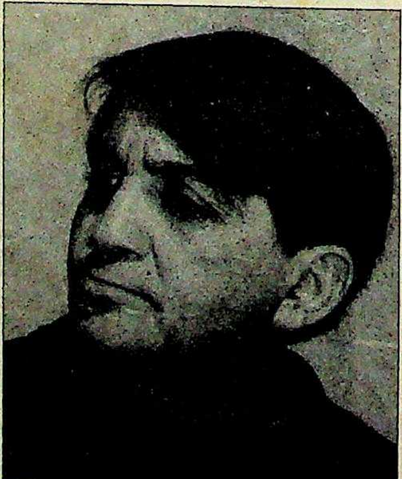

"बीते दशक में हिंदी में दूसरी भाषाओं से अनुवाद की ऐसी धूम रही कि हिंदी को भारतीय साहित्य के 'क्लियरिंग हाउस' का रुतबा मिल गया

उम्मीद की जाए कि आने वाले दशक में हिंदी साहित्य व्यावसायिकता की बाधाओं को लांघेगा"

(ऊपर) मृणाल पांडे: नई पहचान

•

(बीच में) 'अनमोल विरासत' पर गोष्ठी में सुमिता कुलकर्णी: प्याले में तूफान

•

(नीचे) निर्मल वर्मा: दमखम कायम

एक घिसे-पिटे पुराने फ़र्श को दफ़नाने के ८० से भी अधिक बेहतरीन तरीके.

ये काया पलट कर दिखायी स्पार्टेक फ्लोर टाइल्स ने. जी हां, स्पार्टेक फ्लोर टाइल्स से आप जब चाहें, जैसे चाहें अपने फ़र्श को दे सकते हैं एक नया रूप, एक नया निखार!

जैसे, मार्बल के मुकाबले ये कहीं ज़्यादा किफ़ायती है. और पुराने फ़ैशन के मोज़ेक के मुकाबले इन्हें लगाना-बिठाना भी बिल्कुल आसान है. यहीं नहीं, वज़न में हलकी होने के कारण स्पार्टेक टाइल्स आप अपने मौजूदा फ़र्श पर भी लगा सकते हैं. और लगाने के केवल ७२ घंटे बाद, आप अपना फ़र्श इस्तेमाल कर सकते हैं.

और तो और, स्पार्टेक फ़र्श आग, तेज़ाब और दाग़-धब्बों से भी बेअसर है. उस पर आपकी पसंद के लिए मौजूद है ८० अलग-अलग खूबसूरत डिज़ाइनें और रंग!

तो फिर इससे कम से समझौता क्यों?

स्पार्टेक
सिगमिवस इंडिया लि.
५२, चैमियर्स रोड, मद्रास ६०० ०२८.

सिर्फ़ फ़र्श बदलने से न बने बात... इसे दें स्पार्टेक अंदाज़!

फ़र्श पर स्पारटेक लगाना चाहते हैं तो किसी भी निम्नलिखित क्षेत्रीय कार्यालय या अपने नज़दीकी स्पारटेक विक्रेता से सम्पर्क करें:

☐ मद्रास: ५२, चैमियर्स रोड, मद्रास ६०० ०२८. फ़ोन: ४५५४७३/४५६४९५/४५२७८० ☐ बम्बई: नं. २०५, बी विंग, दलामल टावर्स, नरीमन पॉइंट, बम्बई ४०० ०२१. फ़ोन: २८७३७२७
☐ दिल्ली: २०७, प्रकाश दीप बिल्डिंग, ७, टॉल्सटॉय मार्ग, नई दिल्ली ११० ००१. फ़ोन: ३३१९४३३ ☐ बैंगलोर: २२, पहली मंज़िल, एस एन एस प्लाज़ा, ४१, कुमारकृपा रोड,

सुर्खियों के सरताज

जिनके कामों-करिश्मों, करतूतों-कारनामों ने गाहे-ब-गाहे ध्यान खींचा

दशक का सबसे बड़ा पालाबदल

■ **ज्ञानी जैल सिंह** को भारत का सर्वाधिक विवादास्पद राष्ट्रपति कहा जा सकता है. बोफोर्स घोटाले का विवाद जब चरम पर था तो राजीव सरकार को बरखास्त करने की खतरनाक हद के बहुत करीब पहुंचकर उन्होंने भारी संवैधानिक संकट खड़ा किया था. इंदिरा गांधी के कहने पर फर्श तक साफ करने का दम भरने वाले ज्ञानी जी ने राजीव को प्रधानमंत्री बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. और नेहरू परिवार के शासन का खात्मा करने में भी वे तकरीबन सफल हो गए. उन्हीं के कार्यकाल में राष्ट्रपति में सियासी चौपड़ की गोटियां बिछाई जाती थीं. उनका यहां तक दावा था कि राजीव को बरखास्त करने के लिए उन्हें 40 करोड़ रु. की पेशकश की गई. लेकिन दशक के अंत में वे चुपचाप रिटायर होकर संस्मरण लिख रहे हैं और राजनीति के अखाड़े में कूदने का इंतजार भी कर रहे हैं.

रघु राय

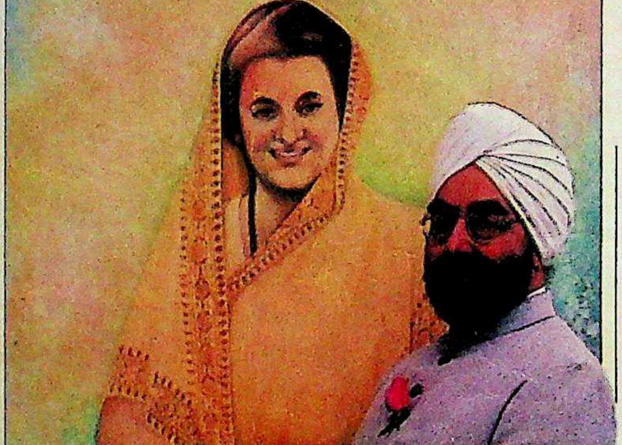

दशक के चर्चित सहायक

■ नेताओं के नेता कहे जाने वाले **राजेंद्र कुमार धवन** में वे सभी गुण हैं जो राजनैतिक सलाहकार के लिए जरूरी हैं. कभी इंदिरा गांधी के स्टेनो रहे धवन की निष्ठा और सूझबूझ ने उन्हें राजनैतिक सहायक बना दिया. इंदिरा गांधी की हत्या के वक्त भी वे मौके पर मौजूद थे. लेकिन राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने पर उन्हें दरकिनार कर दिया गया. हत्या की जांच कर रहे ठक्कर आयोग ने संदेह की सुई उन्हीं की तरफ घुमा दी. आखिर उनका धैर्य रंग लाया, प्रतीक्षा सफल हुई. राजीव के संकट दूर करने के लिए उनके पास बुलावा तो भेजा गया लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी.

भवान सि

दशक की पहेली

■ बेहद्द जटिल और रहस्यमय समझी जाने वाली **सोनिया गांधी** ने भारत की प्रथम महिला के रूप में ये पांच साल परदे के पीछे रहकर बिताए. लोगों के सामने उन्होंने सिर्फ एक ही बार मुंह खोला. वह भी अमेरिका में 'जय हिंद' भर कहने के लिए. भावशून्य चेहरा लिये वे पृष्ठभूमि में ही रहीं. हालांकि परदे के पीछे चलने वाली राजनीति में कथित रूप से शामिल होने और महंगी कलाकृतियों के उनके जुनून की अफवाहें जरूर उड़ती रहीं. राजनीति में आने के खुशामद भरे आग्रहों के बावजूद वे अपने पुराने मित्रों के दायरे में ही सिमटी रहीं. हाल के चुनावों में राजीव के निर्वाचन क्षेत्र अमेठी में प्रचार के लिए राजनैतिक तौर पर वे पहली बार सक्रिय दिखीं और भारत की प्रथम महिला के मुकाबले इस भूमिका में वे निश्चित ही ज्यादा सफल रहीं.

भवान सिंह

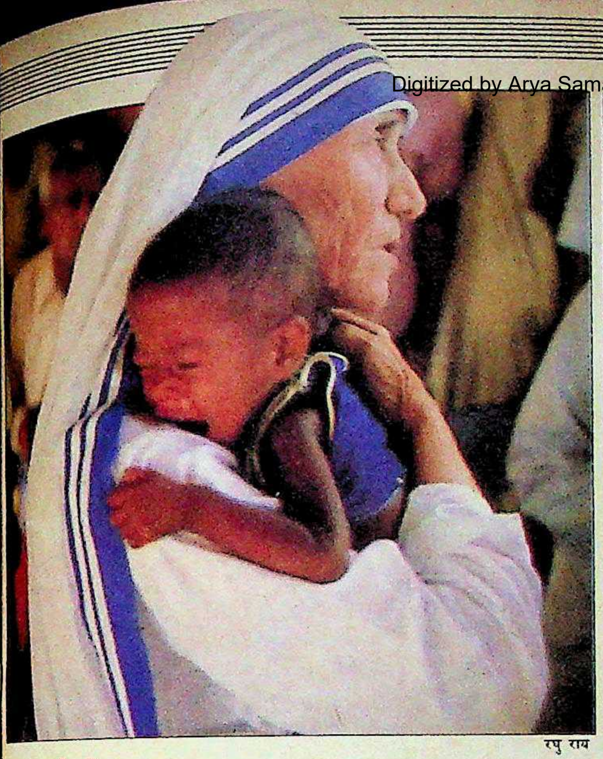

रघु राय

दशक की प्रेरणा

■ हिंसा और संघर्ष के इस दौर में 79 वर्षीया कृशकाय मदर टेरेसा संसार भर में आधुनिक संत के रूप में महिमामंडित हो चुकी हैं. देर से ही सही, मानवता की सेवा के लिए दशक के अंत में उन्हें नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया. भारत सरकार तो उन्हें दशक के आरंभ—1980—में ही देश के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित कर चुकी है. पश्चिमी बेरुत रहा हो या अकालग्रस्त इथोपिया, मदर मरणासन्न लोगों को सांत्वना और घायलों के जख्मों पर मरहम लगाती नजर आईं. मदर कलकत्ता के एक अस्पताल में जिंदगी और मौत से संघर्ष कर रही थीं और सारी दुनिया उनके लिए प्रार्थना कर रही थी. अब उन्हें पेस-मेकर लगा दिया गया है.

दशक का यात्री

■ बेसब्री से नायकों की खोज में रहने वाले भारत में यदि उन्हें नायक का दर्जा मिला तो ठीक ही था. भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमान के पायलट **राकेश शर्मा** ने सोवियत अंतरिक्ष यान सोयूज टी-11 में अंतरिक्ष में पहुंचकर देश का पहला अंतरिक्ष यात्री होने का गौरव हासिल किया. पूरे हफ्ते तक पूरा देश सारे दुख भूल बाल-सुलभ उत्सुकता से इस ऐतिहासिक यात्रा को देखता रहा. अंतरिक्ष से भारत को निहारने के बाद इंदिरा गांधी से यह कहना "सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा" उनके राष्ट्र प्रेम और राष्ट्र गौरव का ही द्योतक था. उनकी वापसी पर देश ने उन्हें जो सम्मान दिया उससे वे हीरो बन गए. भारत के अंतरिक्ष विज्ञान में नए युग की शुरुआत हुई जो उन्होंने की थी.

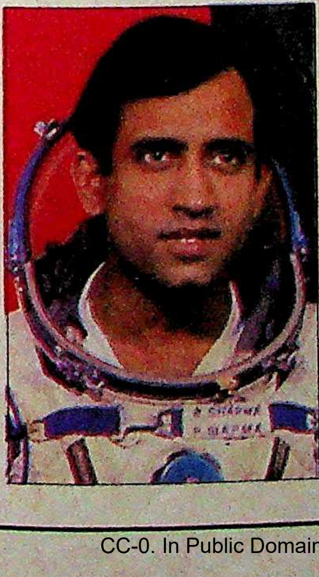

दशक के उग्रवादी

■ देश पर इतने लंबे समय तक काली छाया डालने वाले बहुत कम लोग हुए हैं.

लेकिन गांव का यह अज्ञात-सा ग्रंथी सिख आतंकवाद का प्रतीक बन उन्हीं लोगों के लिए चुनौती बन गया जो उसे राजनीति में लाए थे. **जरनैल सिंह भिंडरांवाले** ने जल्दी ही अपने काफी अनुयायी, जिनमें उग्रवादी भी शामिल थे, बना लिए. सिखों के सबसे पवित्र स्थल स्वर्ण मंदिर को उन्होंने उग्रवादियों का अड्डा बनाकर खालिस्तान की मांग की. वे 1984 में स्वर्ण मंदिर में ऑपरेशन ब्लूस्टार के दौरान मारे गए. उनकी मौत को उन्हें हजारों सिखों ने शहादत का दर्जा दिया. और इसके बाद भारत में आतंकवाद की आग और तेजी से सुलग उठी.

रघु राय

दशक का गुरु

■ स्वयंभू भगवान **रजनीश** बीते दशक में रह-रह कर विवादों को भी जन्म देते रहे. कभी अमेरिका के ओरेगांव में 'जोरबा द बुद्धा' के अवतार में, तो कभी 'ओशो' के रूप में. आखिरकार सेक्स के इस गुरु को अमेरिका से निकाल दिया गया. लेकिन यह नौबत आने से पहले उन्होंने 93 रॉल्स रॉयस कारें जरूर इकट्ठी कर ली थीं. अमेरिकी समाज में निर्वाण की तुरंत अनुभूति देने की कला के लिए वे काफी विवादास्पद रहे. अनुयायियों के झुंड के साथ वे पुणे से ओरेगांव और मनाली होते हुए फिर पुणे लौट आए. जापानी शिष्यों को सम्मान देने के लिए उन्होंने अपना नाम 'ओशो' रख लिया. भारत के उनके आश्रम में सेक्स की मनाही तो नहीं लेकिन एड्स के डर से उन्होंने संन्यासिनियों को सलाह दी कि वे मिलने पर चुंबन के बजाए याहू कहकर अभिवादन करें. एड्स के रोगी न होने का सर्टिफिकेट ही अब उनके आश्रम में शामिल होने की पहली शर्त है. दशक के अंत तक 600 किताबें लिखकर वे गिनीज बुक में अपना नाम दर्ज करवा चुके हैं.

भवान सिंह

दशक की राजनीति के शिकार

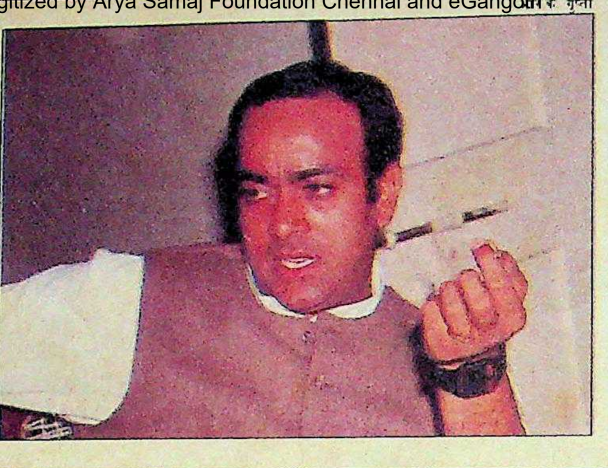

क. गुप्ता

अमेठी के इस असली राजा ने दशक की शुरुआत अमेठी लोकसभा सीट से राजीव गांधी को रिकॉर्ड बहुमत से जिताने में अपना प्रभाव इस्तेमाल करने से की. लेकिन दशक का अंत होते-होते संजय सिंह राजीव के खिलाफ जनमोर्चा में शामिल दिखाई दिए. शायद इसीलिए सीबीआई उनके पीछे पड़ गई और बैडमिंटन खिलाड़ी सैयद मोदी की हत्या के प्रकरण में उन्हें उलझा दिया गया. परंतु संजय अपनी आक्रामक राजनीति से बाज नहीं आए. और जैसा करे वैसा भरे की कहावत के अनुसार दशक के आखिर में वे चुनावी हिंसा के शिकार हो गए. गोलियों ने उन्हें करीब-करीब समाप्त ही कर दिया था कि अगले दिन का सूर्य जीवन संदेश दे गया.

प्रमोद पुष्करणा

दशक की तथाकथित दस्यु सुंदरी

चंबल के बीहड़ों के बाहर कभी इस तथाकथित सौंदर्य की बहुत चर्चा हुआ करती थी. लेकिन सच जब सामने आया तो लोग बगलें झांकने लगे. **फूलन देवी** भौंडी और बदजबान होने के सिवा और कुछ न निकली. प्रेसवालों ने उसे गजब की सेक्सी, अपने डकैत प्रेमियों के साथ ऐश करने वाली, बदला लेने को उतारू और बात-बात पर कलाश्निकोव से गोलियां बरसाने वाली जैसी न जाने कौन-कौन-सी उपमाएं दे रखी थीं.

वह जेल पहुंची तो पता चला कि वह क्षुद्र स्वभाव की लोभी और गंवार औरत है जिसकी महत्वाकांक्षाएं निम्न श्रेणी की है और जो कागजी शेर के सिवा कुछ नहीं.

दशक का साहित्यकार

हिंदी साहित्य में **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** की मृत्यु से एक शून्य पैदा हो गया. हिंदी में छायावाद युग की समाप्ति पर 'नई कविता' को जो रूप और दिशा अज्ञेय ने दी उसके लिए उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा. उन्होंने हिंदी को अपने उपन्यासों और लेखों और कविताओं से भी समृद्ध किया. उनके तीन तार-सप्तकों के अलावा 'शेखर एक जीवनी' और 'कितनी नावों में कितनी बार' जैसी कई रचनाओं ने हिंदी साहित्य को नई गरिमा दी. ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित इस लेखक ने जितना लिखा उससे कम बोला पर वे साहित्य और साहित्यकार चर्चा में हमेशा बने रहे.

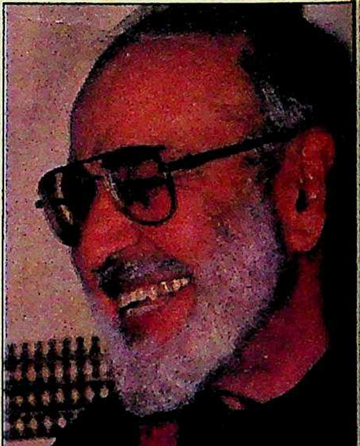

धर्मवीर जगन

दशक का सिपाही

श्याम टेकवानी

सेना के किसी भी अंग का कोई अफसर जनरल कृष्णास्वामी सुंदरजी जितना विवादास्पद और मशहूर नहीं रहा. एक वीर सिपाही और रणनीति बनाने में माहिर सुंदरजी ने ऑपरेशन ब्लूस्टार, श्रीलंका में शांति सेना की अनचाही पहल और ऑपरेशन ब्रासटैक्स में प्रमुख भूमिका निभाकर धांय-धांय पसंद जनरल की शोहरत हासिल कर ली. अवकाश प्राप्ति के बाद जनरल सुंदरजी ने यह कहकर धमाका कर दिया कि राजीव गांधी ने बोफोर्स तोप सौदे की जांच को गंभीरता से नहीं लिया. सबसे विवादास्पद रहा उनका सेना को 21वीं शताब्दी में ले जाने का प्रयास. उन्होंने युद्ध कला में कई नए आयाम भी जोड़े. इस दिशा में उनका अपना योगदान भी कम न रहा. पूर्व सेनाध्यक्ष आतंकवादियों की हिटलिस्ट में हैं. उनका आवास अति सुरक्षित है जिसे वे 'कालापानी' की संज्ञा देते हैं.

पड़ गई
ड़ी सैयद
करण में
या. परंतु
क राज-
ाए. और
ी कहावत
आखिर में
शकार हो
करीब-
र दिया
ा सूर्य

मा
क
से कम
और साहि-
ा बने रहे.

ने यह
दिया कि
र्स तोप
मीरता से
वादास्पद
21वीं
का प्रयास.
कई नए
दिशा में
भी कम

टलिस्ट में
त
काला-

दशक के वफादार

□ राजीव गांधी के स्कूल सखा और अंतरंग **अरुण सि** की देश में अभी हाल तक तूती बोलती थी. राजीव ने 1984 के चुनाव के बाद उ अपना प्रमुख संकटमोचन नियुक्त किया और इस तर वे भारत के दूसरे सबसे ताकतवर व्यक्ति बन गए. कभी कंपनी एक्जीक्यूटिव र अरुण सिंह प्रधानमंत्री के स भरोसेमंद सलाहकार थे. बा में उन्हें रक्षा मंत्रालय में भे दिया जहां उनकी कार्यशैली एक नई परंपरा की शुरुआत हुई. 1987 के मध्य में उन्होंने अचानक इस्तीफा दे सबको चौंका दिया.

उन्होंने इस्तीफा देने का फैसला क्यों किया, इस दश

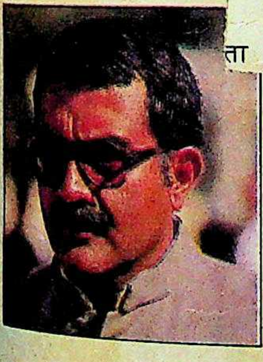

का सबसे उलझन भरा सवाल है. कई लोगों का विश्वास है कि इसकी वजह उनकी शादी का टूटना था. उन्होंने एक शादीशुदा औरत के साथ अल्मोड़ा में रहने के लिए पत्नी को छोड़ दिया.

बोफोर्स विवाद पर बातचीत करने के लिए पत्रकार उनके घर के चक्कर काटते रहे लेकिन उन्होंने उन्हें बड़ी चतुराई से टाल दिया. भारी दबाव पड़ने पर भी उन्होंने कुछ नहीं कहा, हालांकि इस विवाद में उनकी भी प्रमुख भूमिका थी. यदि वे सचाई उगल देते तो राजीव को निश्चित रूप से भारी राजनैतिक नुकसान पहुंचाता.

आधुनिक नैतिकता का प्रतीक बन गईं. बिना किसी की परवाह किए नीना ने वेस्ट इंडीज के नामी क्रिकेट कप्तान विवि रिचर्ड्स के बच्चे को जन्म दिया. यह बात दीगर है कि यह धाकड़ खिलाड़ी नीना का पहला प्यार नहीं था.

इससे पहले वे एक संगीताचार्य से दिल लगा बैठी थीं. पंडित जसराज के संगीतज्ञ पुत्र शारंगदेव के साथ उनकी मैत्री समाप्त होते ही बल्लेबाज रिचर्ड्स छक्का जमा बैठे. नीना ने प्रेसवालों की अटकलों पर मुंह सिए रखा. एक सनसनीखेज अखबार ने उनका भेद खोला.

वैसे भी नीना कोई गुमनाम अभिनेत्री नहीं हैं. लेकिन धूमधाम से उन्हें प्रसिद्धि दिलाई बेटी ने. नाम कमाने का इससे बढ़िया रास्ता

दशक का विवाद

□ मार्गरेट थैचर के रूढ़िवाद के विरोध में उन्होंने हमेशा आप्रवासियों का पक्ष लिया. पर विडंबना है कि आप्रवासी ही उनके खून के प्यासे हो गए जबकि थैचर उनकी रक्षक साबित हुईं. **सलमान रुश्दी** के लिए यह सब उनके ही सफल उपन्यासों की तरह रोमांचकारी और उत्सुकतापूर्ण था. भारतीय मूल के इस लेखक को बीते दशक में मौत का फरमान मिला. अयातुल्ला खुमैनी ने हजारों भावी हत्यारों को उनके पीछे लगा दिया.

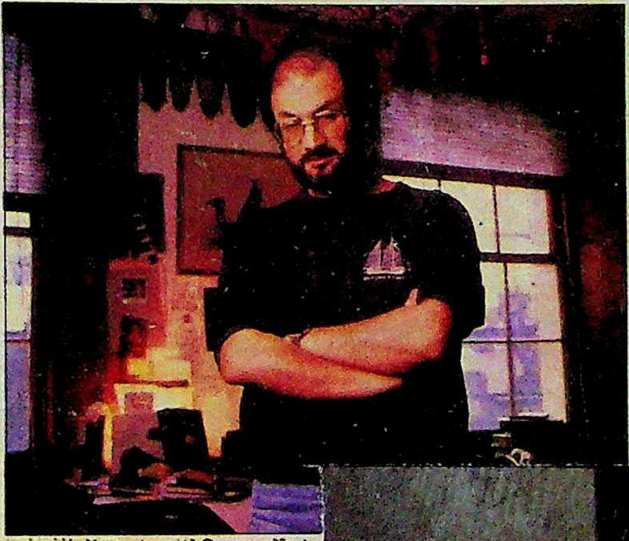

[redacted]

विचार और आध्यात्मिक महत्ता से उन्हें मानवाधिकार के अंतरराष्ट्रीय जेहाद में प्रमुख भूमिका निभाने में में मदद मिली.

दशक का पुलिसिया

■ अब यह चुटकुला चर्चा में है कि **जूलियो रिबेरो** पंजाब गए तो हिंसा तेज हो गई; इसलिए उन्हें जब रोमानिया भेजा गया तो वहां भी हिंसा का तांडव शुरू हो गया. बंबई के अपराध जगत से लोहा लेनें वाले और फिर गुजरात में फैली आग का शमन करने का जिम्मा उठाने वाले, कठोर और दृढ़ निश्चयी पुलिस अधिकारी रिबेरो को असली प्रसिद्धि पंजाब से मिली. दो बार जानलेवा हमला झेल चुके इस अधिकारी ने गोली के बदले गोली की नीति चलाई और आतंकवाद के खिलाफ देश के रवैये के प्रतीक बन गए. लेकिन गोली और कठोर रवैये के अलावा पंजाब में सहानुभूतिपूर्ण रुख की भी जरूरत थी. रिबेरो का ओहदा ऊंचा हुआ और उन्हें राज्यपाल का सलाहकार बनाया गया. पर उनकी भूमिका एक तरह से गौण होकर रह गई. उनका असर खत्म होने लगा. विदा होने के पहले उनके पास यादें भर रह गईं और पंजाब खूंरेज युद्ध का क्षेत्र बना रहा.

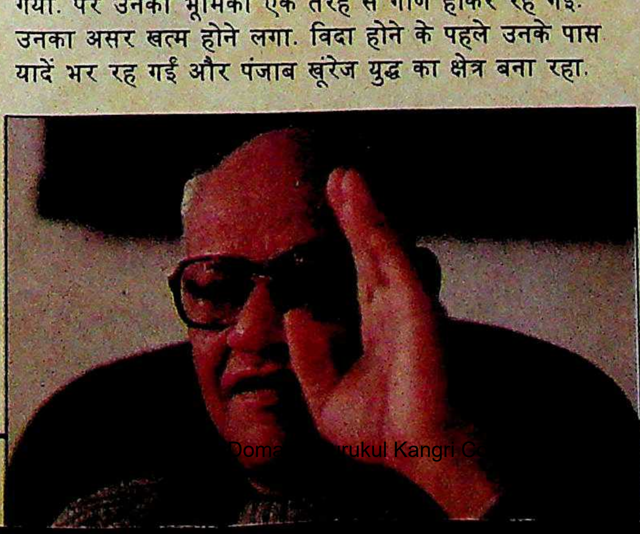

बना दिया था.

ढेरों पुरस्कार जीतने वाली स्मिता ने 'मिर्च मसाला' में एक ग्रामीण साहसी महिला के रूप में और 'भवनी भवाई' में गुस्सैल बंजारन के रूप में शायद सबसे यादगार भूमिका निभाई. सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह कि उनकी प्रतिभा और क्षमता ने भारतीय हीरोइनों की पारंपरिक गूंगी छवि बदल दी.

वास्तविक जीवन में भी उन्होंने स्वतंत्र रास्ता अपनाया. राज बब्बर के साथ तूफानी संबंधों के बाद उन्होंने उन्हीं से शादी कर ली. 1986 में उनकी दर्दनाक मौत से भारतीय सिनेमा को अपूरणीय नुकसान पहुंचाया.

Dom rukul Kangri C r

दशक की राजनीति के शिकार

अमेठी के इस असली राजा ने दशक की शुरुआत अमेठी लोकसभा सीट से राजीव गांधी को रिकॉर्ड बहुमत से जिताने में अपना प्रभाव इस्तेमाल करने से की. लेकिन दशक का अंत होते-होते संजय सिंह राजीव के खिलाफ जनमोर्चा में शामिल दिखाई दिए. शायद इसीलिए

क गुप्ता

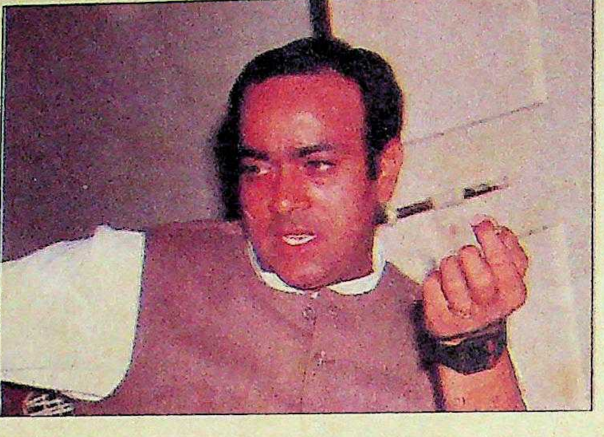

सीबं
और
मोदं
उन्हे
संज
नीरि
जैसा
के उ
वे च
गए.
करं
था
जीर

सार्
दी.
से ₹
ने f
बोल
त्यव

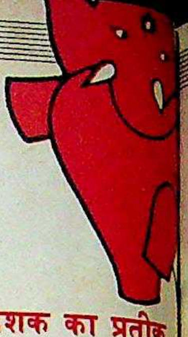

दशक का प्रतीक

□ हफ्तों पहले ही उसका नाम बच्चे-बच्चे की जुबान पर आ गया. 13 महीने का यह हाथी 1982 के एशियाई खेलों का प्रतीक चिन्ह था. योजना थी कि एक पांव पर खड़ा होकर यह प्रतीक खेलों के उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति को माल्यार्पण करेगा लेकिन रातोरात **अप्पू** को भुला दिया गया. खेल अधिकारियों के अनुसार ऐसा कोई सचमुच का हाथी था ही नहीं, यह तो बस प्रेसवालों का फितूर था. इस तरह अप्पू का सार्वजनिक जीवन शुरू होने के पहले ही खत्म हो गया.

प्रमोद पुष्करणा

थी. लेकिन सच जब सामने आया तो लोग बगलें झांकने लगे. **फूलन देवी** भौंडी और बदजबान होने के सिवा और कुछ न निकली. प्रेसवालों ने उसे गजब की सेक्सी, अपने डकैत प्रेमियों के साथ ऐश करने वाली, बदला लेने को उतारू

दशक का साहित्यकार

हिंदी साहित्य में **सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'** की मृत्यु से एक शून्य पैदा हो गया. हिंदी में छायावाद युग की समाप्ति पर 'नई कविता' को जो रूप और दिशा अज्ञेय ने दी

दशक का शोमैन

□ चार दशकों तक **राजकपूर** की उंगलियां जनता की नब्ज पर रहीं. देश उनकी धुनों पर नाचता रहा. अंततः जून 1988 में यह सदाबहार प्रेमी दिल्ली के एक अस्पताल में बीमारियों से जूझते-जूझते सदा के लिए खामोश हो गया. उनकी विदाई उनकी फिल्मों के ही किसी दृश्य की तरह भावुकतापूर्ण थी. हफ्तों तक लोग उनके सदाबहार गीत गुनगुनाते रहे. उनके बहुप्रसिद्ध गीत उनकी हाल की फिल्मों से नहीं हैं. चैप्लिन अंदाज का अनूठापन राज ने पांचवें दशक में अपनाया था. उनकी हर फिल्म जीवंत और समाजवाद के सपनों से भरी हुई रही. सपनों के इस सौदागर का अंत हिंदी सिनेमा के एक पूरे युग का अंत था. वे मरकर भी नहीं मर सकते, इसका संकेत वे इन बोलों में दे ही गए हैं—'मेरा जीवन संगीत, कल भी कोई दोहराएगा.'

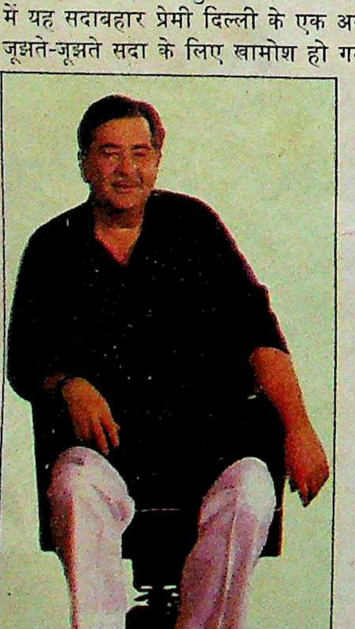

दशक का बिचौलिया

□ उनके नाम के साथ वैसे डॉ. की उपाधि जुड़ी रही है. लेकिन विन चड्ढा अनंत गणनाओं के बोझ में खोए रहने वाले कोई मासूम वैज्ञानिक नहीं हैं. वे बोफोर्स सहित अनेक हथियार बनाने वाली कंपनियों के बिचौलिए रहे हैं. बोफोर्स सौदे में दलाली कौन ले उड़ा इस गुत्थी की चाबी उन्हीं के पास थी और साथ में था राजीव सरकार की गद्दी का दारोमदार. तत्कालीन सरकार ने उनकी खातिर बड़े दुलार से की. अब नई सरकार द्वारा बोफोर्स को ब्लैकलिस्ट करना इस बात का स्पष्ट संकेत है कि 155 मिमी तोप सौदे की कब्र खुदेगी. उधर चड्ढा के सामने एक ही रास्ता है—जब तक भाग सको, भागते रहो.

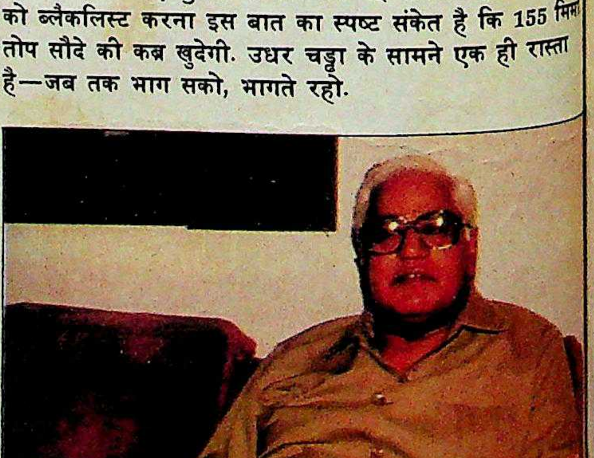

रश्मिकांत पटक

दशक क

□ हाल ह
ने कहा था
रिचर्ड्स ने
उनके कैरि
खिला दिय
बेनेगल पां
रहकर भी
की बात य
भारतीय न

दशक के

□ वाहिया
दिलचस्पी
में वे मैदान
यहां से ती
और प्रसार
चलती थी
राजीव सर
इस्तेमाल
पूर्व प्राध्या
प्रसिद्धि प
यहां तक
आदमी या
को भी शे
उद्धरण सु
हैरान कर
उच्चारण
बिहारी ल
रहता था.
'प्रिय नेता
सरकारी
माध्यमों
करने वाल
शायद अब
मिजाज सु
कोशिश क

रविंजित घटक

दशक का गोपनीय प्यार

□ हाल ही में किसी शरारती ने कहा था कि विवियन रिचर्ड्स ने 15 मिनट में उनके कैरियर में वह गुल खिला दिया जिसमें श्याम बेनेगल पांच साल प्रयत्नशील रहकर भी नाकाम रहे. मजे की बात यह है कि नीना गुप्ता भारतीय नारी की आधुनिक नैतिकता का प्रतीक बन गईं. बिना किसी की परवाह किए नीना ने वेस्ट इंडीज के नामी क्रिकेट कप्तान विवि रिचर्ड्स के बच्चे को जन्म दिया. यह बात दीगर है कि यह धाकड़ खिलाड़ी नीना का पहला प्यार नहीं था.

इससे पहले वे एक संगीताचार्य से दिल लगा बैठी थीं. पंडित जसराज के संगीतज्ञ पुत्र शारंगदेव के साथ उनकी मैत्री समाप्त होते ही बल्लेबाज रिचर्ड्स छक्का जमा बैठे. नीना ने प्रेसवालों की अटकलों पर मुंह सिए रखा. एक सनसनीखेज अखबार ने उनका भेद खोला.

वैसे भी नीना कोई गुमनाम अभिनेत्री नहीं हैं. लेकिन धूमधाम से उन्हें प्रसिद्धि दिलाई बेटी ने. नाम कमाने का इससे बढ़िया रास्ता और क्या है!

दशक के तीसमारखां

□ वाहियात भाषा और बड़बोलेपन की वजह से मतदाताओं की दिलचस्पी भी उनमें नहीं रह गई. इसलिए बिहार के बक्सर में वे मैदान हार गए और कहीं पत्ता भी नहीं खड़का. वे यहां से तीसरी बार चुनाव लड़ रहे थे. लेकिन केंद्रीय सूचना और प्रसारण राज्यमंत्री के रूप में जब **कमलाकांत तिवारी** की चलती थी तो पूरा देश खड़कने लगता था. दरअसल उनका नाम राजीव सरकार के तहत दूरदर्शन और आकाशवाणी के बेशर्म इस्तेमाल का पर्याय बन गया था. लेकिन अंग्रेजी साहित्य के इस पूर्व प्राध्यापक की प्रसिद्धि पत्रकारों और यहां तक किसी आम आदमी या राजनीतिक को भी शेक्सपियर के उद्धरण सुना-सुनाकर हैरान कर देने की रही. उच्चारण पर उनका बिहारी लहजा हावी रहता था. अपने 'प्रिय नेता' के लिए सरकारी प्रचार माध्यमों का दुरुपयोग करने वाला यह शख्स शायद अब अपना मिजाज सुधारने की कोशिश कर रहा हो!

प्रमोद पुष्करणा

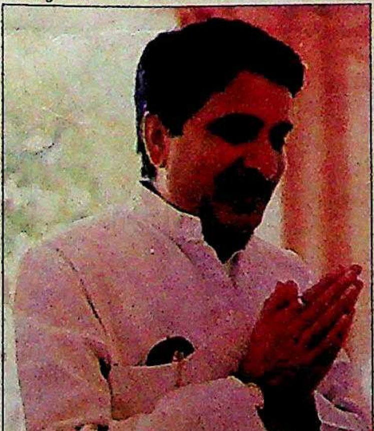

दशक का विवाद

□ मार्गरेट थैचर के रूढ़िवाद के विरोध में उन्होंने हमेशा आप्रवासियों का पक्ष लिया. पर विडंबना है कि आप्रवासी ही उनके खून के प्यासे हो गए जबकि थैचर उनकी रक्षक साबित हुईं. **सलमान रुश्दी** के लिए यह सब उनके ही सफल उपन्यासों की तरह रोमांचकारी और उत्सुकतापूर्ण था. भारतीय मूल के इस लेखक को बीते दशक में मौत का फरमान मिला. अयातुल्ला खुमैनी ने हजारों भावी हत्यारों को उनके पीछे लगा दिया.

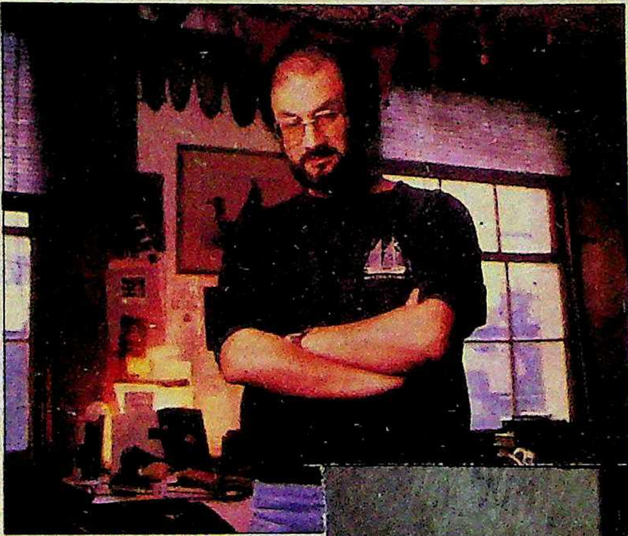

उनका गुनाह 'द सैटैनिक वर्सेज़'
जिसे पैगंबर की छवि बिगाड़ने की
इस विवाद को झेलते रहे पर कि
आत्मकेंद्रित रुश्दी मजबूरन ऐसी
उनके शब्द ही बाहर आ सकते

दशक की बुलंद आवाज

■ किसने सोचा था कि एक दुबली-पतली, बूढ़ी महिला राजीव गांधी का नाम बुद्धिजीवियों की कतार से बाहर निकलवाने का कारण बनेगी? लेकिन शाह बानो इसका निमित्त बनीं. पति द्वारा गुजारा-भत्ते की मामूली रकम अदा करने से इनकार किए जाने पर शाहबानो ने अदालत का दरवाजा खटखटाया तो पति महोदय कुरान की आड़ में जा छिपे. सुप्रीम कोर्ट द्वारा शाह बानो के पक्ष में फैसला दिए जाने के बाद कठमुल्लाओं और सुधारवादियों के बीच खासी जंग छिड़ गई. कई मुसलमान रहनुमाओं ने यह कहकर कि सरकार अल्पसंख्यकों के विरुद्ध काम कर रही है, राजनैतिक

भवान सिंह

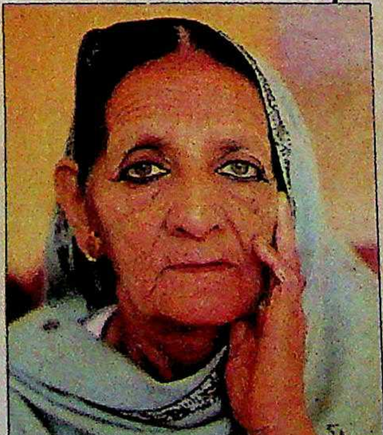

दशक का शेखचिल्ली

□ किसान आंदोलन को नए आयाम देने वाला सिसौली का यह नायक ठेठ देहाती दर्शन और नाटकीय व्यवहार के कारण देश भर के लिए मनोरंजन सामग्री जुटाता रहा. किसानों से बिजली का बिल न भरने का आह्वान करके **महेंद्र सिंह टिकैत** ने किसान आंदोलन को उग्र बना दिया. हालांकि उनकी राजनैतिक महत्वाकांक्षाएं पहेली ही बनी रहीं. 1988 में नई दिल्ली के बोट क्लब पर उनके धरने के चलते तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को अपना भाषण स्थल तक बदलना पड़ा. लेकिन अभी पिछले साल जब उनके समर्थकों ने बोट क्लब पर ही शरद जोशी को मंच से धकेल तमाशा खड़ा कर दिया तो जोशी को कहना पड़ा, "अब सच को सच कहना ही पड़ेगा." साल बीतते-बीतते भी उन्होंने अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के एक डॉक्टर की पिटाई की तो डॉक्टरों ने हड़ताल की घोषणा कर दी और टिकैत को पहली बार माफी मांगनी पड़ी.

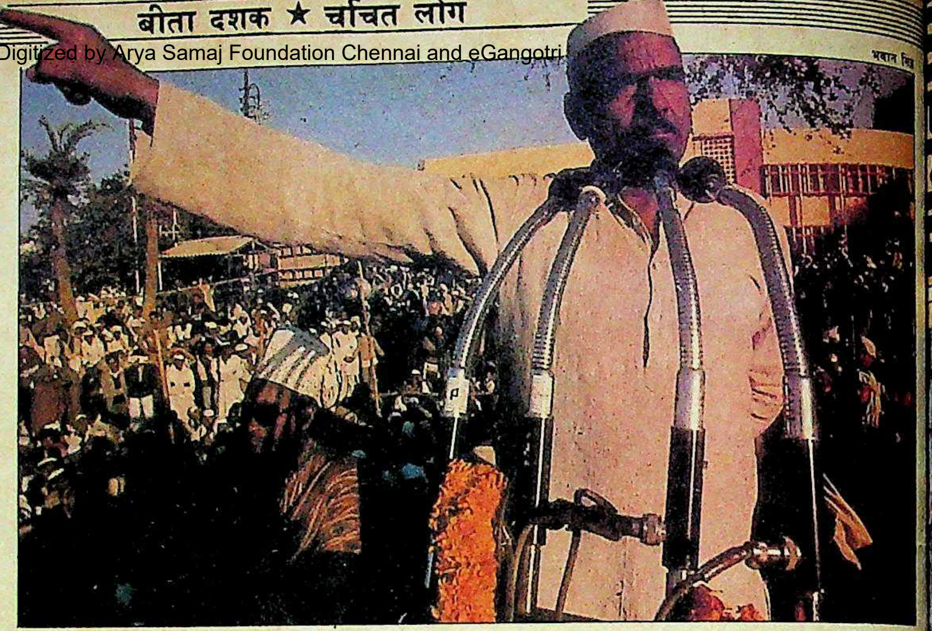
भवान सिं

2/15
267

दशक का शोमैन

□ चार दशकों तक राजकपूर कं
पर रहीं. देश उनकी धुनों पर न
में यह सदाबहार प्रेमी दिल्ली के
जूझते-जूझते सदा के लिए खामोश

दशक का पक्षी-प्रेमी

□ वे गौरेया की तरह कोमल और गिद्ध की पैनी निगाह वाले थे. वे विरले पक्षियों को भी एक झलक में पहचान सकते थे **सालिम अली** ने भारत के लोगों का देश के भारत के लोगों का देश के पक्षियों की विपुल संपदा से परिचय कराया. अस्सी पार की उम्र में भी वे देश भर के वन-जंगलों की खाक छानते रहते. इंदिरा गांधी की मार्फत उन्होंने लुप्तप्राय पक्षियों के शिकार पर पाबंदी लगवाई.

दशक का कर्मयोगी

□ महाराष्ट्र के आनंदवन में कुष्ठ रोगियों की सेवा करते जीवन बिताना उन्हें पसंद है और वे लोगों को पसंद हैं. लेकिन मेगासायसाय पुरस्कार विजेता बाबा आमटे देश की समसामयिक राजनैतिक स्थिति में भी कोई ठोस पहल करना चाहते थे. लिहाजा उन्होंने 'भारत जोड़ो यात्रा' शुरू की और पंजाब के उग्रवादियों को भी उसमें जोड़ना चाहा. लेकिन उग्रवादियों के इस सवाल का बाबा के पास कोई जवाब नहीं था कि 1984 में जब दिल्ली में सिख मारे जा रहे थे तब उन्होंने ऐसी कोई यात्रा क्यों नहीं की? देश के उभरते पर्यावरण अभियान के केंद्र में रहकर उन्होंने नर्मदा बांध के निर्माण के खिलाफ आंदोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. उन्होंने वनवासियों को संगठित किया, पर्यावरणविदों और सामाजिक कार्यकर्ताओं को जुटाया तथा बाहर से कई विशिष्ट हस्तियों को बांध के चलते डूब में आने वाले कस्बे हरसूद (म.प्र.) में इकट्ठा किया. और इस आंदोलन की बदौलत तब के शासकों की उनकी आंख की किरकिरी बन बैठे.

रघु राय

धर्मवीर जयदर

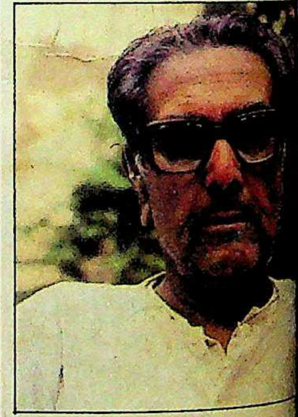

दशक की चकरघिन्नी

□ अस्सी वाले दशक को हिंदी साहित्य के इतिहास में सबसे अधिक पुरस्कृत काल के रूप में याद किया जाएगा. कौड़ियों की संख्या और मोल में बंटने वाले पुरस्कारों ने साहित्य में आपसी पीठ-खुजाऊ क्लबों की स्थापना में भी खासा योगदान दिया. दशक का अंत होते-होते भारत-भारती जैसे सरकारी पुरस्कार को एक बार लौटा देने के बाद उसे फिर से स्वीकार करके **अमृतलाल नागर** सरीखे दिग्गज ने भी इस संस्कृति पर अपना ठप्पा लगा दिया.

REGISTERED No. L/NW/
REGISTRATION NO. R.N. 45823/86
LINTAS BAJ 163 2027 HI

बुलंद
तस्वीर

हमारे जीवनमूल्यों की एक झलक

एक रंग इस राष्ट्र का

दूजा स्कूटर है बजाज का

एक पर हमें अभिमान

दूजे पर हमें इत्मीनान

लाखों लाख हैं दोनों के चाहनेवाले

दोनों ही बुलंद भारत की

बुलंद तस्वीर दर्शानेवाले

बजाज स्कूटर्स
सुपर, चेतक, प्रिया और कब

bajaj auto
You just can't beat a bajaj
बजाज ऑटो लि., आकुर्डी, पुणे ४११०३५.

क के बाद एक शहर और
काधिक परिवारों ने स्वस्थ
न व स्वादिष्ट भोजन का
राज़ जान लिया है.

तभी तो सनड्रॉप **भारत का मनपसंद सनफ़्लॉवर तेल** बन गया है.

UNSCREW THIS
अब भारत का
सब से ज़्यादा
बिकने वाला सनफ़्लॉवर तेल
SUNDROP
SUPER-REFINED
SUNFLOWER OIL
ULKA 12834 HIN
ंग भरे
ों का गुणकारी तेल

19/6/92

20/6/92

अलगाववाद की आंच

अलगाववादी आंदोलन ने कश्मीर को धधकते ज्वालामुखी पर बिठा दिया है. राज्य का जनजीवन ठप है. अर्थव्यवस्था खस्ताहाल हो गई है. जनता के अभूतपूर्व विरोध ने अलगाववाद में नई जान फूंक दी है. अब कश्मीर को बचाने के लिए ठोस फैसलों की जरूरत है.

आवरण कथा..18

पार लगने की पहल

लुधियाना में हुई सर्वदलीय रैली पर आशंका की छाया मंडराती रही. पंजाब के मामले में वी.पी. सिंह की पहल से शांति का संदेश लोगों तक पहुंचता हुआ-सा लगा. लेकिन अकालियों की आपसी कलह और हिंसा जारी रहने से उम्मीद धूमिल ही है.

खास रपट..28

तोप में फिर बारूद

नई सरकार की ओर से बोफोर्स कंपनी के अधिकारियों, कुछ भारतीय अफसरों और बिचौलियों के खिलाफ फौजदारी मुकदमा चलाने के फैसले से यह तोप घोटाला फिर गरमागरम बहस का मुद्दा बन गया है. अब चुनौती अदालत में आरोपों को साबित करने की है.

खास रपट..32

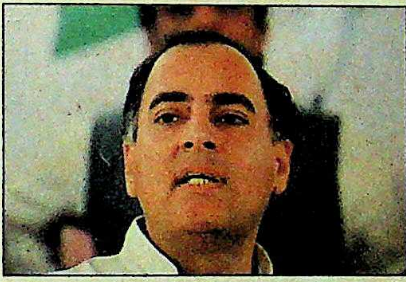

अपने हाथों तितर-बितर

सत्ता हाथ से निकल जाने के बावजूद इंकाई नेता गुटबाजी की अपनी आदत नहीं छोड़ पा रहे हैं. पार्टी में आलाकमान जैसी चीज अब नहीं बची है. विधानसभा चुनाव सिर पर होने से इसके नेताओं की जोड़-तोड़ बढ़ गई है और राज्य इकाइयों में खाई गहरी हो रही है.

खास रपट..41

बोर्ड का बाउंसर

श्रीकांत और दिलीप वेंगसरकर समेत बड़े क्रिकेट खिलाड़ियों की अनुचित छंटनी से क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड और खिलाड़ियों के बीच अंतहीन लड़ाई में एक और विवाद जुड़ गया. साथ ही राज सिंह डूंगरपुर और नए कप्तान अजहरुद्दीन से विशेष बातचीत.

खेलकूद..62

अतीत का मिलन वर्तमान से

टेलीविजन पर 'महाभारत' की सफलता धुआंधार रही है. इस महाकाव्य में समसामयिक संदर्भों को भी अभिव्यक्ति मिली है. यह धारावाहिक करोड़ों लोगों के मन में बैठ गया. कैसे इस टीवी धारावाहिक ने भारतीय दर्शकों पर अपना जादू चलाया इसका लेखा-जोखा.

टीवी..78

अगले पन्नों पर

कसौटी..9
तेवर..10
राजरंग..11
हिंदोस्तां हमारा..12

आवरण कथा

जम्मू-कश्मीर:
अलगाववाद की आंच..18

खास रपट

पंजाब: पार लगने की पहल..28
बोफोर्स: तोप में फिर बारूद..32
बिहार: तबादलों पर तकरार..35
कांग्रेस (इ): अपने हाथों तितर-बितर......41

आजकल

इंकाई मुख्यमंत्री:
वोट खरीदने की कोशिश..44
गोवा: तलवार की धार पर..46
उत्तर प्रदेश: प्रभावहीन शुरुआत..47
गुजरात: विपक्ष में विवाद..49
तमिलनाडु: नाटकीय हथकंडे..50
एन.टी.आर.: परदे की ओट..51
राज्य-दर्पण..52

मुलाकात

हबीब तनवीर:
'शहरी कलाकार आधे-अधूरे हैं'..53
व्यापार चक्र..54

कारोबार

लोक-लुभावन योजनाएं:
कोष खाली होने का खतरा..55
शेयर बाजार..61

खेलकूद

क्रिकेट: बोर्ड का बाउंसर..62

विशेष लेख

'84 के दंगे: फैसले की घड़ी..66
स्वायत्तता आकाशवाणी-दूरदर्शन की:
अभी दिल्ली बहुत दूर..70

पास-पड़ोस

श्रीलंका: शांति अभी कोसों दूर..74

टीवी

महाभारत:
अतीत का मिलन वर्तमान से..78
आरपार..85
कहानी..90
किताबें..92
परदे के उस पार..94
चर्चित चेहरे..96

आवरण: प्रशांत पंजियार

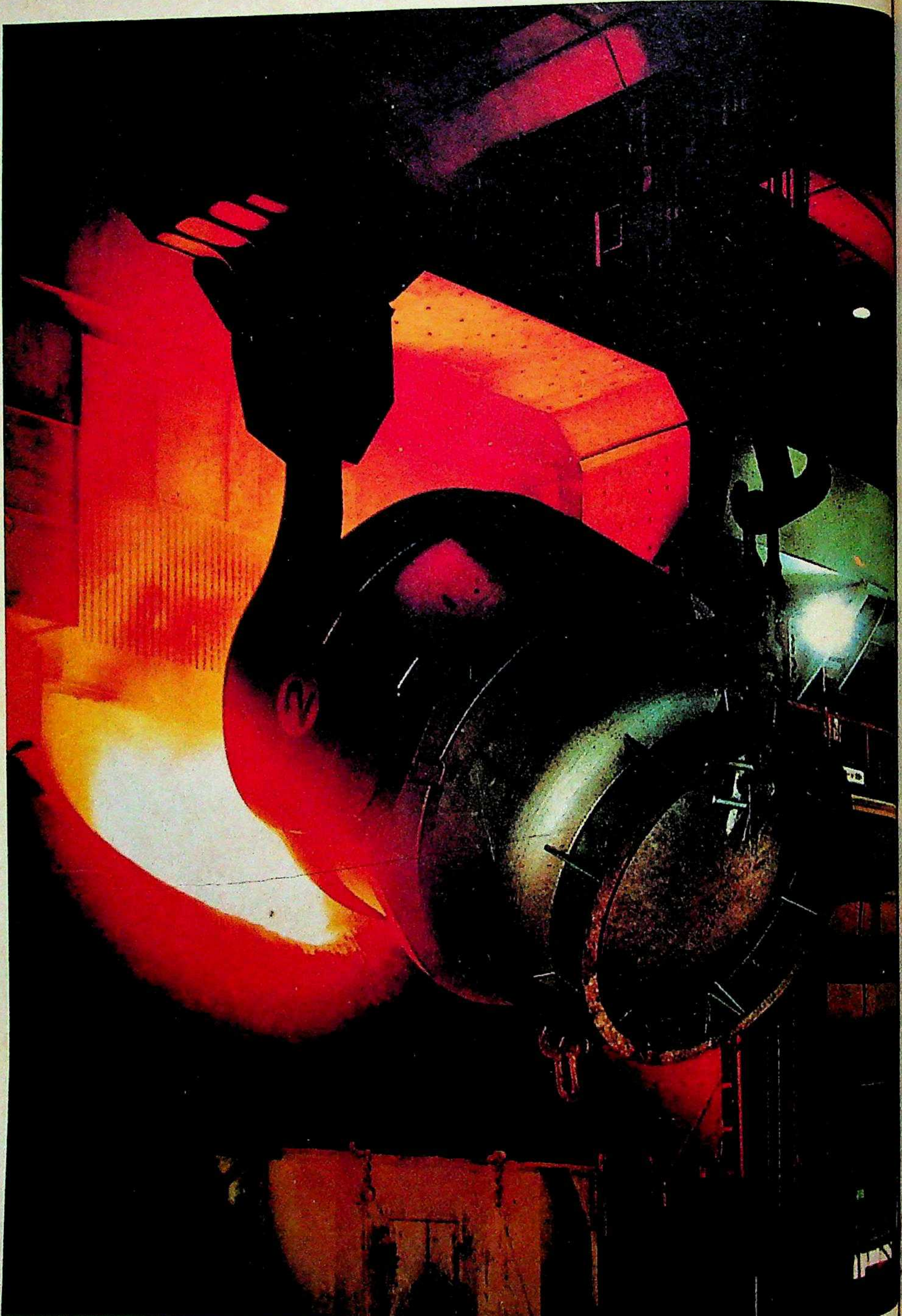

भारतीय इस्पात उद्योग के सफ़र में एक नयी मंज़िल

इस्पात उद्योग की दुनिया में लोयडस्टील की कार्यक्षमता सचमुच अद्भुत और बेजोड़ है... सिर्फ़ इसलिये कि इस्पात से उत्पादक सामग्री तैयार करने का लोयडस्टील का अनुभव बहुत पुराना है। सिप्टा कोटेड स्टील्स और कामेट स्टील्स जैसी विशाल परियोजनाओं का प्रवर्तन और संचालन करने के बाद अपने तमाम अनुभव को लेकर लोयडस्टील अब इस्पात के उत्पादन की दुनिया में प्रवेश कर रहा है।

इस्पात परियोजना

- निजी सेक्टर में भारत का पहला सर्वांगपूर्ण (इंटीग्रेटेड) इस्पात संयंत्र। देश के घरेलू या आंतरिक बाज़ार के लिये इसमें सपाट या फ़्लैट इस्पात सामान तैयार किया जाएगा।
- स्पंज लोहे और भंगार (स्क्रैप) का प्रयोग कर लोयडस्टील द्वारा एक ही छत के नीचे लिक्विड इस्पात-स्लैब-एच आर क्वाइल-सी आर क्वाइल का उत्पादन किया जाएगा।
- परियोजना की लागत कम है। रु. ३३५ करोड़ की परियोजना से एच आर/सी आर इस्पात क्वाइल के वार्षिक १५०,००० मीट्रिक टन का उत्पादन किया जाएगा।
- उत्पादन प्रक्रिया की निर्माण–विधि की जानकारी दे रहे हैं पश्चिम जर्मनी के मानेसमान देमाग जो सारे संसार में इस्पात निर्माण तकनीकी-तंत्र के अग्रणी और नेता माने जाते हैं। मुख्य संयंत्र की आपूर्ति भी वही कर रहे हैं।

निर्मित सामग्री का इस्तेमाल... उसकी माँग

- एच आर/सी आर इस्पात क्वाइल के अनेकानेक उपयोग हैं। मोटरगाड़ियों की बॉडी उनसे ही तैयार की जाती है। एल-पी-जी-गैस के सिलेंडर भी बनाये जाते हैं। इनके अलावा रेफ़्रीजरेटर, फ़रनीचर और धुलाई मशीनें आदि स्थायी उपभोक्ता सामग्री का निर्माण भी इन्हींसे किया जाता है। इनके साथ ही स्टील पाइप और ट्यूब तथा इंजीनियरी सामान वगैरा भी तैयार किया जाता है।
- इस समय भारत द्वारा प्रति वर्ष लगभग १५ लाख टन एच आर/सी आर इस्पात क्वाइल का आयात किया जाता है। १९९४-९५ तक माँग और आपूर्ति के बीच का अंतर लगभग १२ लाख टन हो जाने का अनुमान है।
- सिप्टा कोटेड स्टील्स लि. और कॉमेट स्टील्स लि. जैसी संलग्न कंपनियों को कुल उत्पादन के ५० % तक का बाज़ार पहले से ही प्राप्त है।

परियोजना–स्थल होनेवाले लाभ

- परियोजना को वर्धा, महाराष्ट्र, में स्थापित किया जा रहा है।
- परियोजना को अग्रणी इकाई का दरजा प्राप्त है, तदनुसार परियोजना वित्त प्रोत्साहनों की हक़दार है। इसके अंतर्गत १० वर्ष की अवधि के लिये रु. १५० करोड़ तक के बिक्री कर की छूट प्राप्त होगी।
- रेल -साइडिंग, बिजली, पानी और अन्य आवश्यक सुविधाओं को पहले ही प्राप्त किया जा चुका है।

इस इस्पात परियोजना की सफलता पूरी तरह निश्चित है... क्योंकि लोयडस्टील की परम्परा ही सफलताओं की परम्परा है... क्योंकि परियोजना का निर्माण कंपनी के उस प्रबंधक वर्ग के कार्य की मज़बूत बुनियाद पर किया गया है जिसकी कुशलता, कल्पनाशीलता और परिपक्वता हर कसौटी पर खरी साबित हो चुकी है।

Lloydsteel

इस्पात का मज़बूत हाथ!

लोयडस्टील इंडस्ट्रीज़ लि. पंजीकृत कार्यालय : ३०२, दलामल हाउस, नरीमन पॉइंट, बम्बई ४०० ०२१

CLEA-LSI-P

"हमारे केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर में ज़्यादा शैल्फ़ हैं ज़्यादा चीज़ों के लिए"

जी हां सभी केल्विनेटर रेफ्रिजरेटरों में ज्यादा शैल्फ होते हैं। ताकि आप विभिन्न साइज़ों की अधिक वस्तुएं रख सकें। अधिक स्थान डोर-पैनल में भी। आपकी अधिकतम सुविधा के लिए निर्मित।

केल्विनेटर की उत्कृष्ट विशेषताएं :

- विश्वविख्यात 'पावर सेवर' काम्प्रैसर अधिक ठंडा करने की क्षमता के लिए।
- पूर्णतः स्टील निर्माण तथा सुदृढ़ लाइनर।
- अधिक स्टोरेज के लिए अधिक शैल्फ।
- विस्तृत श्रृंखला आठ मॉडल, सभी नौ आकर्षक रंगों में उपलब्ध।

केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर लाखों सन्तुष्ट परिवारों का संगी-साथी।

300 LITRE DOUBLE DOOR
286 LITRE CORONA
286 LITRE MASTERPIECE
165 LITRE DOUBLE DOOR
165 LITRE MASTERPIECE
165 LITRE CORONA
165 LITRE STERLING
90 LITRE
65 LITRE
275 LITRE VERTICAL
85 LITRE VERTICAL
425 LITRE CHEST TYPE
DEEP FREEZERS

घर में लाइए खुशियां घर में लाइए

केल्विनेटर

It's the coolest one

बिक्री एवं सर्विस के लिए : एक्सपो मशीनरी लिमिटेड प्रगति टावर, 26, राजेन्द्र प्लेस नई दिल्ली-110008.

Mutual 5031d/HN

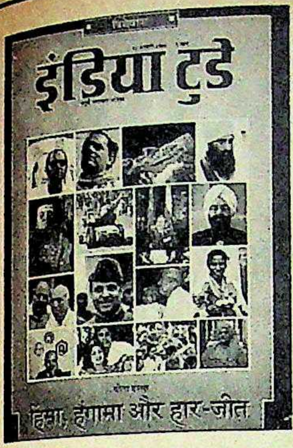

गागर में सागर

'मुखियों के सरताज' (15 जनवरी) बहुत रोचक लगा. यदि चिराग लेकर ढूंढ़ें तो भी टिकैत से अच्छा शेखचिल्ली न मिलेगा. सालिम अली का पक्षी प्रेम तो याद किया जाता रहेगा. बीते दशक के 'पुलिसिए' और 'सिपाही' भी अपने कार्यक्षेत्रों में आमूलचूल परिवर्तन के लिए हमेशा याद किए जाते रहेंगे.

—**संजीव कश्यप**, बुवकपुर (उत्तर प्रदेश)

■ बीते दशक का विशेषांक (15 जनवरी 90) '80 के दशक की हर घटना का निचोड़ लगा. इस दशक में हुए बदलावों में 21वीं सदी की आहट सुनी जा सकती है.

—**सूर्यनाथ प्रजापति**, आजमगढ़ (उ.प्र.)

■ दशक में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बदलाव राजनीति में ही आए. भले ही इस दौर में राजनीति हिंसा और भ्रष्टाचार से लथपथ रही लेकिन दशक के अंत में भारत की जनता ने बड़े शांत और स्वस्थ तरीके से बता दिया कि यह राष्ट्र किसी की खानदानी जागीर नहीं है. —**ऋषिरूप**, कानपुर (उ.प्र.)

■ कुल 96 पन्नों की पत्रिका में दशक की महत्वपूर्ण घटनाओं को जिस तरह आपने संजोया, वह कम से कम शब्दों में पाठकों तक सूचना पहुंचाने का बढ़िया उदाहरण है. लेकिन इस दशक में विदेशों में हुए परिवर्तनों को एकदम ही छोड़ दिया गया.

—**महेशप्रसाद रस्तोगी**, कलकत्ता (प. बंगाल)

■ दशक के विशेषांक के नाम पर महज 96 पन्नों की पत्रिका देख माथा ठनका था. लेकिन पढ़कर लगा कि गागर में सागर भरने में आपकी पत्रिका का सानी नहीं. हर तरह से यह संग्रहणीय अंक है.

—**शारदा**, देवतलाली (महाराष्ट्र)

हिंसा का चरम

कश्मीर घाटी पर खास रपट 'विलाप से बगावत तक' (15 जनवरी) पढ़ी. कश्मीर के मौजूदा हालात '80 के दशक में राजनीति पर हावी रही हिंसा की अंतिम परिणति ही हैं. केंद्रीय गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद ने सारी जिम्मेदारी पिछली केंद्र सरकार पर तो डाल दी लेकिन उनकी सरकार भी अब तक कोई ठोस कदम नहीं उठा पाई है. —**नरेंद्र गर्ग**, दिल्ली

पाठकों से

इस अंक से हम पाठकों की सर्वोत्तम चिट्ठी पर पुरस्कार देने की योजना शुरू कर रहे हैं. पत्रिका की आवरण कथा पर लिखी सर्वोत्तम चिट्ठी पर 100 रु. और इसी लेख के बारे में दूसरे स्थान पर रहने वाली चिट्ठी पर 50 रु. का पुरस्कार दिया जाएगा. चिट्ठी अधिकतम 15 पंक्तियों की हो और पत्रिका की प्रकाशन तिथि (यह अंक 31 जनवरी का है) के सात दिनों के भीतर पहुंच जानी चाहिए. साथ में इसी पेज पर पहले कॉलम में ऊपर छपा पिछले अंक के मुखपृष्ठ का फोटो भी काटकर भेजें. चिट्ठी के बारे में संपादक का निर्णय अंतिम होगा.

—संपादक

परीक्षा की घड़ी

नए प्रधानमंत्री के लिए निश्चित रूप से यह 'अग्निपरीक्षा का दौर' (31 दिसंबर) है. कश्मीर, पंजाब तथा राम जन्मभूमि विवाद जैसे कठिन सवाल उनके राजनैतिक चातुर्य की परीक्षा लेंगे. पार्टी की भीतरी गुटबाजी, उप-प्रधानमंत्री की बेबाकी भी, उन्हें परेशानी में डाल सकती है. फिर भी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार यदि पांच वर्ष चल जाती है तो यही समझना चाहिए कि वी.पी. सिंह जैसा कुशल राजनेता दूसरा नहीं.

—**शैलेंद्र कुमार पाठक**, झांसी (म.प्र.)

■ सत्ता संभालने के बाद वी.पी. सिंह को जिन मुश्किलों का सामना करना पड़ा वह सचमुच अग्निपरीक्षा का दौर था. प्रधानमंत्री पद ग्रहण करने के तुरंत बाद पंजाब की यात्रा, कश्मीर के आतंकवादियों से मुकाबला, लाखों रु. बरबाद करने वाली सुरक्षा व्यवस्था को नकारकर आम आदमी जैसा जीवन व्यतीत करने का निर्णय सराहनीय है. वर्षों से इस देश के लोग ऐसा प्रधानमंत्री पाने की कल्पना कर रहे थे.

—**राजेश पांडे**, दमोह (म.प्र.)

■ समझ में नहीं आता कि नई सरकार की किन उपलब्धियों पर प्रेस प्रशंसा के पुल बांध रहा है. मंत्रियों के कई चेहरे पुराने ही हैं. किसी मुसलमान को गृहमंत्री बनाए जाने की तारीफ हो रही है, जबकि बूटा सिंह को गृहमंत्री बनाए जाने की बात को भुलाया जा रहा है. वे भी तो अल्पसंख्यक ही थे.

—**अखिल जैन**, कानपुर (उ.प्र.)

■ आपने वी.पी. सिंह की खूब तारीफ की है लेकिन यही वी.पी. सिंह कहा करते थे कि वे पद के इच्छुक नहीं हैं. फिर भी षड्यंत्र से प्रधानमंत्री की गद्दी पर आसीन हो गए. उनकी पार्टी के देवीलाल जैसे नेता वही कर रहे हैं जो इंका के नेता करते थे पर अब भी आशा है कि वे जनादेश का आदर करेंगे.

—**प्रदीप कुमार माहेश्वरी**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ वी.पी. सिंह भले ही बैसाखियों के सहारे खड़े हैं, लेकिन उनका हर कदम दृढ़ता से बढ़ रहा है. स्वर्ण मंदिर में माथा टेकना,

वर्ष: 4, अंक: 6, 16-31 जनवरी 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001 फोन: 3315801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार. लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: मर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021 फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** के-4 कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273, टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन. 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित

नेपाल में 8 रुपए

सुरक्षा व्यवस्था में सादगी लाना, आदि उनके आत्मविश्वास का ही द्योतक है.

—राजीव कुमार, मधेपुरा (बिहार)

■ नई सरकार की आजाद हवा, आजाद खयाल पढ़कर बेहद खुशी हुई. जनता का निर्वाचित नेता निर्भीकता से जनता के बीच घूमे, यही तो सच्चा लोकतंत्र है.

—ठाकुर नरसिंह राजा आर्य, गुलबर्गा (कर्नाटक)

नाजायज कदम

'दुःस्वप्न का सुखद अंत' (31 दिसंबर) किंचित कश्मीर घाटी में खूनी रक्तपात का दुखद प्रारंभ हो. रुबाइया सईद की रिहाई के एवज में पांच कुख्यात आतंकवादियों को मुक्त किया जाना क्या कश्मीर में शांति स्थापित करने का सफल कदम माना जाएगा? यदि हमारे गृहमंत्री स्वयं उग्रवादियों के अगले शिकार हो जाएं तो शायद घाटी के सारे उग्रवादी मुक्त कर दिए जाएंगे जो हिंदुस्तानी तिरंगे को चौराहों पर जला सकें.

—दिलीप कुमार, औरंगाबाद (बिहार)

■ रुबाइया के बदले में पांच उग्रवादियों की रिहाई की आलोचना में आपने कुछ नहीं लिखा. क्या गृहमंत्री की पुत्री की अहमियत उन पुत्र-पुत्रियों से अधिक है जिनकी हत्याएं व अपहरण अब यही पांच उग्रवादी करेंगे?

—चंद्रमोहन सैनी, सहारनपुर (उ.प्र.)

■ एक बाप के लिए यह अंत कितना ही सुखद क्यों न हो पर देश की सुरक्षा के लिए इसे सुखद नहीं कहा जा सकता. देश के एक बड़े वर्ग की यह आशंका कि 'सरकार की पराजय से अराजक तत्वों के हौसले बढ़ेंगे,' निर्मूल नहीं है. आंध्र प्रदेश विधानसभा के विधायक एम. वेंकटेश्वर का अपहरण इसका उदाहरण है.

—संदीप सौरभ, मंडी धनौरा (उ.प्र.)

■ लेख का शीर्षक 'दुःस्वप्न का दुखद अंत' होना चाहिए क्योंकि जिन पांच कट्टर उग्रवादियों को रुबाइया के एवज में छोड़ा गया वे अब आतंक फैलाएंगे जिसमें हजारों लोगों की जानें जाएंगी. उसका सेहरा कौन पहनेगा? गृहमंत्री या सरकार?

—राजू चौधरी, इंदौर (म.प्र.)

■ आतंकवादियों के सामने सरकार का समर्पण कोई अच्छा संकेत नहीं है. गृहमंत्री के लिए देश महत्वपूर्ण है या अपना परिवार? एक जान बचाने के लिए हजारों जानें चली जाएं, यह कहां तक सही है, तिस पर गृहमंत्री लड्डू बांटते हैं, प्रधानमंत्री उसे खाते हैं और आपकी पत्रिका चुप्पी साधे रहती है? **—अनूप चतुर्वेदी**, फर्रुखाबाद (उ.प्र.)

■ केंद्रीय गृहमंत्री की पुत्री का अपहरण कर आतंकवादियों का खतरनाक इरादे में सफल होना इस बात का परिचायक है कि कश्मीर के हालात पंजाब से भी बदतर हैं तथा भाजपा द्वारा कश्मीर विधानसभा भंग कर राष्ट्रपति शासन लागू करने की मांग काफी हद तक उचित है.

—डॉ. राजेश 'शैलेंद्र', झांसी (उ.प्र.)

फर्क कथनी-करनी का

'वारिस की ताजपोशी' (31 दिसंबर) में हरियाणा में सत्ता हस्तांतरण के लिए हुआ नाटक पढ़ा. देवीलाल ने पारिवारिक शासन की परंपरा कायम रखते हुए जिस तरह अपने पुत्र ओमप्रकाश चौटाला को मुख्यमंत्री बनाया उससे सभी को आश्चर्य हुआ है. यही चौधरी अब तक तो कांग्रेस को पारिवारिक शासन तथा वंशवाद को जन्म देने के लिए दोषी मानते रहे थे. उनकी ऐसी ही करतूतों से प्रदेश में पार्टी की स्थिति कमजोर हुई है जैसा कि हाल के चुनावों से स्पष्ट है. **—जनार्दन पांडेय**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ देवीलाल वर्षों से 'नेहरू वंशवाद' को कोसते रहे और अब खुद उसी राह पर चल पड़े हैं. यदि उप-प्रधानमंत्री बनने के बाद आंतरिक लोकतंत्र बरकरार रखते हुए विधानसभा के दल के नेता का चुनाव कराते तब कथनी और करनी में अंतर महसूस नहीं होता. **—डॉ. रेखा गांधी**, इंदौर (म.प्र.)

सार्थक कथा

कहानी 'रिमोट कंट्रोल' (31 दिसंबर) ने आत्मा को झकझोरकर रख दिया. आजाद हिंदुस्तान की नई पीढ़ी की सामाजिक मूल्यों के प्रति उपेक्षा भारतीय सभ्यता और संस्कृति के लिए शुभ संकेत नहीं कहे जा सकते. **—पवन कुमार**, हुगली (प. बंगाल)

■ वृद्ध लोग परिवार के वट होते हैं. जीते-जी उनकी अवहेलना भारतीय संस्कृति और परंपराओं की अवहेलना है. इस वट-वृक्ष के न रहते जीवन की धूप कुछ ज्यादा ही महसूस होती है. **—शशांक त्यागी**, मेरठ (उ.प्र.)

■ जिस प्रकार आधुनिक युग की देन है—रिमोट कंट्रोल, उसी तरह बदलते सांस्कृतिक परिवेश की देन है—घुटन भरा माहौल—जहां न बूढ़ी मां का आदर है, न उसके लिए घर में कोई जगह.

—रमेशप्रसाद सिंह 'नीरज', भोजपुर (बिहार)

साहसपूर्ण कदम

'सद्भावना की शुरुआत' (31 दिसंबर) पंजाब के बदलते हालात का अच्छा विवरण है. वी.पी. सिंह की पंजाब यात्रा ने साबित कर दिया कि उम्मीद के दरवाजे अभी बंद नहीं हुए हैं. मान गुट की जीत से इस समस्या पर बातचीत की एक राह और खुल गई है. यदि सरकार कोई हल ढूंढ लेती है तो इसकी स्थिरता निश्चित है.

—संतोष कुमार सिंह, आगरा (उ.प्र.)

नवोदितों का कमाल

'बल्ला और गेंद फिर काबू में' (31 दिसंबर) बहुत पसंद आया. भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड अगर इसी तरह नवोदित खिलाड़ियों को मौका देता रहा तो कोई वजह नहीं कि भारतीय टीम एक बार फिर विश्व की सर्वश्रेष्ठ टीम न बन जाए. संजय मांजरेकर के रूप में भारत को दूसरा गावसकर मिल गया है.

—आनंद कुमार, करौली (राज.)

■ पहली बार पाकिस्तान में तटस्थ अंपायरों की उपस्थिति में शृंखला खेली गई और भारतीय टीम के नवोदित खिलाड़ियों ने सहज होकर अपना खेल दिखाया. परिणाम बराबरी पर रहा. बहरहाल भारत की टीम ने बड़बोले इमरान का मुंह तो बंद कर ही दिया है.

—मनोज पुंडीर, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

■ संजय मांजरेकर तथा सचिन तेंदुलकर की बल्लेबाजी की जितनी तारीफ की जाए कम है. जिस हौसले से इन दोनों उभरते खिलाड़ियों ने पाकिस्तानी गेंदबाजी का सामना किया उससे लगता है कि आने वाले वर्षों में ये दोनों बल्लेबाज भारतीय क्रिकेट टीम की रीढ़ की हड्डी साबित होंगे.

—राजू भोला, वर्धा (महाराष्ट्र)

विशेष तौर पर उन लोगों के लिए जो अधिक परिश्रम करते हैं।

आप दिनभर समय के साथ भागते हैं. समय सीमाएँ. बैठकें. काम का दबाव. कोई आश्चर्य नहीं कि आप घर पहुँचने तक एकदम थका हुआ महसूस करते हैं.

आज की तेज़रफ़्तार जिंदगी के साथ चलने का प्राकृतिक उपाय

केवल एक चम्मच च्यवनशक्ति दिन में दो बार लेने से आप दिनभर ताज़ादम और फुर्तीले बने रहते हैं. आयुर्वेद द्वारा अनुमोदित इसके प्राकृतिक तत्व आपको पूरी तरह चुस्त-दुरुस्त रखते हैं.

आंवला, च्यवनशक्ति में एक प्रमुख तत्व है, जो विटामिन सी का सबसे समृद्ध स्रोत है. यह न केवल खाँसी-जुकाम की रोकथाम करता है बल्कि आपके शरीर के तंतुओं को भी नई ताकत देता है.

अश्वगंधा, इसकी क्रिया को और भी तेज़ करता है जिससे आप शारीरिक तथा मानसिक दबावों से मुक्ति का अनुभव करते हैं. केसर, जो उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है और आपको दिनभर चुस्त बनाए रखता है. द्राक्षा, जो आपको आंत्रशोध की तकलीफों से दूर रखता है और अकरकरा, जो आपके समूचे स्नायुतंत्र को एकदम स्वस्थ बनाए रखता है.

इन सभी के गुणों को बढ़ाता है— ताज़ा प्राकृतिक शहद जो पूरक पोषक तत्व के रूप में भी कार्य करता है. ताकि आप दिन-ब-दिन तरोताज़ा और दमदार रहें जीवन के संघर्ष के लिए तैयार.

च्यवनशक्ति

डाबर च्यवनप्राश के निर्माताओं की ओर से

डाबर इंडिया लिमिटेड
हर्ष भवन ई ब्लाक, कनॉट प्लेस
नई दिल्ली-110001.

Dabur
CHYAWAN
SHAKTI
AYURVEDIC TONIC
TO KEEP YOU GOING STRONG
मधु, द्राक्षा व अधिक केसर से समृद्ध

everest/d89/DIL/228 hin

साहसी निर्णय

दूरदर्शन व आकाशवाणी पर 'खुलेपन की फिजां' (31 दिसंबर) और स्वायत्तता प्रदान करने की दिशा में उठाए कदम सराहनीय और साहसपूर्ण हैं. लेकिन दूरदर्शन को सच्ची स्वायत्तता तब मिलेगी जब संसद की कार्रवाई का सीधा प्रसारण होगा. वैसे दूरदर्शन और आकाशवाणी को इतनी छूट भी नही देनी चाहिए कि देश की एकता को खतरा हो और हिंसक वारदातें बढ़ें.

—**राजीव वर्मा**, इटावा (उ.प्र.)

छवि का प्रताप

'बड़ी कूच का अहम प्रभाव' (15 दिसंबर) आने वाले समय में भाजपा के सही स्वरूप को प्रस्तुत करता है. कई लोग भाजपा की विजय का कारण हिंदू भावना को भड़काना मान रहे हैं. लेकिन अगर यह सही होता तो हिंदू महासभा के कई उम्मीदवार जीते होते, बलराज मधोक लोकसभा में होते, साधु-संतों को लेकर चुनाव प्रचार करने वाले बूटा सिह चुनाव न हारते. भाजपा की जीत का कारण उसकी साफ-सुथरी छवि और योजनाबद्ध तरीके से काम करने की शैली ही है.

—**सुशील शर्मा**, अमृतसर (पंजाब)

क्षुद्र स्वार्थ

'जद्दोजहद भरा परिवर्तन' (15 दिसंबर) पढ़कर पता लगा कि क्षुद्र स्वार्थों और निजी महत्वाकांक्षाओं पर काबू पाना आसान नहीं होता. सभी जगह वी.पी. सिंह को प्रधानमंत्री के रूप में पेश कर जन-समर्थन बटोरने के बाद चंद्रशेखर का खुद प्रधानमंत्री पद की दौड में शामिल हो जाना जनता के साथ विश्वासघात ही कहलाएगा.

—**नरवत सिंह चौहान**, जोधपुर (राज.)

■ एक जमाने में युवा तुर्क कहे जाने वाले जनता दल के वरिष्ठ नेता चंद्रशेखर ने अपने ही दल की सरकार बनने में जिस तरह बार-बार अवरोध पैदा किया, उसकी कहीं मिसाल मिलनी मुश्किल है. 'फसले बहार पर हक' जताते हुए शायराना लहजे में चंद्रशेखर ने कुंठित अहम की पुष्टि के लिए जितनी चालाकी से बुद्धिजीवी लबादा ओढकर जनता दल, भाजपा व वामपंथी पार्टियों के बड़े-बड़े नेताओं की जिस तरह कवायद करवाई उसके लिए उन्हें अरसे तक याद किया जाएगा.

—**जोगेश्वरी साहू**, बालाघाट (म.प्र.)

राजनीति जिम्मेदार

बिहार पर विशेष लेख (15 दिसंबर) प्रभावशाली लगा. बिहार खनिज संपदा से समृद्ध होते हुए भी देश का सर्वाधिक गरीब राज्य है. और इसके लिए जिम्मेदार हैं, बेईमान, स्वार्थी, भ्रष्ट नौकरशाह और राजनीतिक. —**अरुण 'हरिजन'**, दिल्ली

भ्रामक चित्रण

'पान पालिटिक्स और पटना' (15 दिसंबर) में गोपाल चतुर्वेदी ने बिहार की जमकर खिल्ली उडाई है. उन्हें पता होना चाहिए कि भारत का गौरव चंद्रगुप्त और विश्व को अहिंसा, शांति और भ्रातृत्व का संदेश देने वाला सम्राट अशोक यहीं के शासक थे. चाणक्य जैसा महान राजनीतिज्ञ पाटलिपुत्र की ही देन है.

—**उदित नारायण झा**, लखनऊ (उ.प्र.)

iiBM
प्रबन्धे भवति समृद्धि

A DECADE IN MANAGEMENT EDUCATION

Established in 1979 the IIBM, Patna has attained a national status as a prestigious centre for studies, research and training in the areas of Business Management, Computer Sciences, Hotel Management, Mass Communication & Rural Management. The Institute has the largest computer centre in this region and a vast library with more than 20,000 books and journals.

The Institute has been funded by Department of Electronics, Govt. of India as a National Resource Centre for Instructional Material Development and implementation of Information Technology Awareness Programme.

expression/IIBM/Eng/Pat/89

INDIAN INSTITUTE OF BUSINESS MANAGEMENT

(Affiliated to Magadh University)
Budh Marg, Patna-800001.
Phone: 222174, 223872. Telex: 022-406.

Admission Notification (1989 - 90)

MASTER OF BUSINESS ADMINISTRATION (MBA)

(Two years Full Time Programme)

Eligibility: Graduates in any discipline under 10 plus 2 plus 3 scheme with minimum 50% marks.

Reservation: A limited number of seats are reserved for SC/ST, female candidates and also for candidates from other states based on nomination from their respective Governments.

Selection: Candidates will be selected on the basis of a written test, group discussion and personal interview.

Form & Prospectus: Available on payment of Rs. 50/- by cash or Rs. 60/- by M.O/I.P.O. payable to the Institue.

Last date: Completed applications must reach the admission office latest by 28th Februrary 1990.

Prof. P. R. Trivedi
Director (Administration)

Prof. U. K. Singh
Director (Studies)

अनिश्चय की गिरफ्त में

सत्ता में आने के तुरंत बाद राजीव गांधी ने जो बड़े महत्वपूर्ण बयान दिए थे उनमें से एक यह भी था—"लोगों की अपेक्षाएं आतंकित कर देने वाली हैं." लेकिन जल्दी ही उन्होंने अपने तमाम बयानों को भुला दिया. जनता ने उन्हें जो भारी जनादेश दिया था उसे वे हमेशा के लिए मान बैठे और इसकी जबरदस्त कीमत भी चुकाई. अब जबकि नई सरकार ने मंत्रिमंडल के गठन जैसी शुरुआती अड़चनों को पार कर लिया है, उसे पूर्ववर्ती सरकार के साथ हुए बरताव से सबक ले लेना चाहिए.

एक अच्छी सरकार चलाने की सबसे महत्वपूर्ण शर्त है साफ नजरिया. कोई भी सरकार, चाहे वह कितने भी बड़े जनादेश के साथ सत्ता में आई हो, कोई सही कार्यसूची तब तक नहीं बना सकती जब तक उसे अपने लक्ष्यों और उन्हें हासिल करने के तरीकों के बारे में साफ-साफ पता न हो. और वह इन पर खुली चर्चा करने को तैयार न हो.

रेखाचित्रः अजीत नैनन

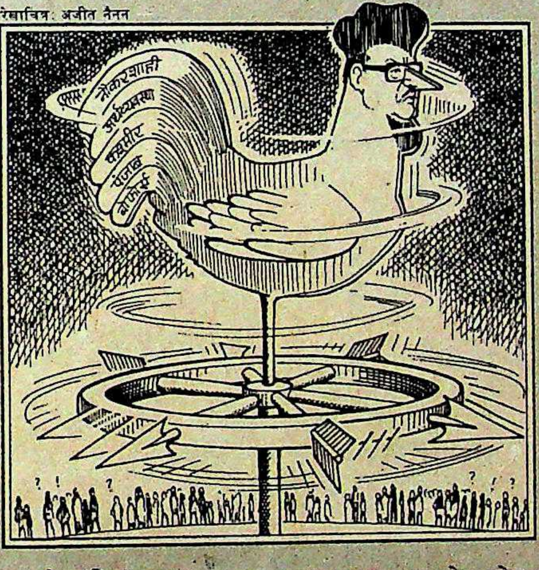

सिर्फ एक महीने पुरानी सरकार की आलोचना आम तौर पर ठीक नहीं होती, विशेषकर विश्वनाथ प्रताप सिंह वाली सरकार की जिसे संसद में कुछ विशिष्ट ही तरीके से बहुमत हासिल हो. लेकिन फिलहाल इस राष्ट्रीय मोर्चा सरकार पर अपने लक्ष्यों को साफ-साफ न घोषित कर पाने, और दृष्टिभ्रम का आरोप तो लगाया ही जा सकता है. यह सच है कि उन्होंने शुरुआत बहुत ही उम्मीदें जगाते हुए की. पंजाब और कश्मीर के मामले में उन्होंने सही भंगिमाएं अपनाईं. अपनी पार्टी के सैद्धांतिक विरोधाभासों का खयाल रखते हुए और प्रतिभाओं का उचित सम्मान करते हुए अपने मंत्रिमंडल का गठन करके उन्होंने समझदारी का परिचय दिया.

अब वक्त आ गया है कि वे इन भंगिमाओं को कार्यरूप दें और प्रतिभाओं के सहारे सफलता की ओर बढ़ें. शुरुआती बाधाओं को पार करने में ही उन्होंने काफी समय गंवा दिया है. उनके और उनकी सरकार के लिए जो चीज बाधा बन रही है वह शायद यह है कि वे कश्मीर, पंजाब, आर्थिक नीति, नौकरशाही के प्रति रवैया और भ्रष्टाचार जैसे अहम मुद्दों पर साफ बातें नहीं कर पा रहे.

इनमें से प्रत्येक मसले के लिए सरकार ने अब तक कोई स्पष्ट कार्ययोजना नहीं घोषित की है. पंजाब मसले के लिए एक मंत्रिमंडलीय समिति बनाई गई. लेकिन इसे कितने लोगों का समर्थन प्राप्त है? अमन के लिए सरकार आतंकवादी संगठनों को कहां तक छूट देती जाएगी? कश्मीर के मसले पर तो सरकार की नीति और भी अस्पष्ट दिखती है. समझ में नहीं आ रहा है कि बागडोर किसके हाथ में है या किसके हाथ में होनी चाहिए, और राजनैतिक कार्ययोजना क्या है. यह हालत तब है जबकि रुबाइया के अपहरण के बाद सरकार को चाहिए था कि वह कश्मीर मसले को अपनी सबसे पहली चुनौती मान लेती. सांप्रदायिकता के मामले में सरकार को सख्ती और साफगोई का परिचय देना पड़ेगा.

आश्चर्य की बात यह है कि ठोस काम और बदलाव का वादा करके सत्ता में आने वाली जनता दल सरकार का पहला महीना महत्वपूर्ण मुद्दों पर टालमटोल करते बीता है. सबसे पहली बात यह है कि नए शासक गठजोड़ का चुनावी नारा डंका सरकार का भ्रष्टाचार रहा था. अब जबकि वह सत्ता में है, जरूरत इस बात की है कि वह भ्रष्टाचार के स्रोतों को उजागर करे और अपराधियों को पकड़े. इस दिशा में कदम बढ़ाने में देरी को कमजोरी माना जाएगा और यह इस सरकार के लिए घातक साबित होगा. और फिर, चुनाव से कई महीने पहले से जनता दल के नेता शिकायत करते रहे थे कि नौकरशाही का राजनीतिकरण हो गया है. तो अब जरूरत इस बात की है कि ये नेता इस स्थिति को बदलने के उपाय करें. लेकिन सत्ता में आने के बाद से जो स्वच्छता अभियान चलाया जाना चाहिए था वह नहीं चलाया गया. उलटे उलझनपूर्ण संकेत मिल रहे हैं. पिछली शासक मंडली के करीबी माने जाने वाले कई नौकरशाहों को अपने पदों से हटा दिया गया. लेकिन इस प्रक्रिया में इनमें से हरेक को या तो बेहतर पद दिया गया या बराबरी का ही कोई पद. सरकार के लिए यह दावा करना तो आसान है कि वह बदले की कार्रवाई करती हुई नहीं दिखना चाहती. लेकिन इस तरह का दोमुंहा बयान यही आभास देता है कि सरकार या तो अनिश्चय में है या उसमें आत्मविश्वास की कमी है.

यह स्थिति बदलनी चाहिए. इसके अलावा सरकार को पंजाब और कश्मीर जैसे जटिल मामलों को सुलझाने पर ही अपना पूरा समय नहीं गंवाना चाहिए क्योंकि ये किसी एक सरकार के कार्यकाल में सुलझाए जा सकने वाले मामले नहीं हैं. इसलिए विश्वनाथ प्रताप सिंह को एक न्यूनतम कार्यक्रम तैयार करना चाहिए. इस देश की समस्याएं कोई नई नहीं हैं. पंजाब, कश्मीर और दीर्घकालिक अर्थव्यवस्था के सवालों पर सरकार को जबकि ठोस कदम उठाना चाहिए, उसे पूरी संरचना के निर्माण पर भी जोर देना चाहिए. बेहतर सड़कें, बेहतर जल आपूर्ति, बेहतर स्वास्थ्य सेवा, बेहतर संचार और रेल व्यवस्था, निर्यात में बढ़ोतरी—ये तमाम लक्ष्य ऐसे हैं जिन पर सरकार का समर्थन करने वाली कोई भी पार्टी आपत्ति नहीं कर सकती. यानी विश्वनाथ प्रताप सिंह की कार्यसूची कुछ इस प्रकार की होनी चाहिए—पंजाब, कश्मीर और सांप्रदायिकता पर ठोस उपाय; भ्रष्टाचार के खिलाफ तेज कार्रवाई; और विकास कार्यक्रम पर निर्णायक जोर. इन प्राथमिकताओं पर अमल करना आसान तो नहीं है. लेकिन असंभव भी नहीं है. इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मतदाताओं के सामने स्पष्ट उपलब्धियों और सफलताओं के साथ दोबारा हाजिर होने के लिए एकमात्र उपाय यही है. तब वह पिछली सरकार की तरह निकम्मेपन का शिकार नहीं बन पाएगी.

लोकतंत्र के साथ सबसे बड़ी समस्या यह है कि लोगों की अपेक्षाएं हमेशा ऊंची होती हैं. और, जो लोग सत्ता में रहते हुए इस तथ्य को भूल जाते हैं उन्हें जनता कभी बख्शती नहीं.

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

2⁸⁵
भारत INDIA
हांगुल
KASHMIR STAG
समय पर
इंडिया टुडे
आपके घर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर !
बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए !

नाम: ____________________
____
डाक पता: ____________________
____
____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम–चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें।
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

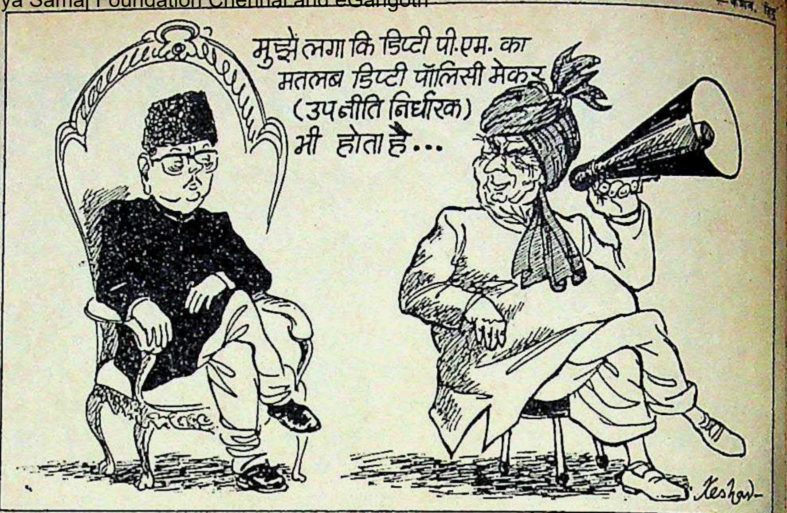
—केशव, हिंदु
मुझे लगा कि डिप्टी पी.एम. का मतलब डिप्टी पॉलिसी मेकर (उपनीति निर्धारक) भी होता है...
Keshav

● पांच साल में एक बार भी ऐसा नहीं हुआ कि मुझे (कश्मीर के) राज्य प्रशासन को संभालने के लिए अपने विदेशमंत्री को भेजना पड़ा हो.

■ **राजीव गांधी**, *लोकसभा में*

● दिल्ली भले ही दूर है लेकिन दिल दूर नहीं है. ■ **विश्वनाथ प्रताप सिंह**, *भागलपुर में*

● केंद्र की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार में एक्सेलरेटर वी.पी. सिंह के पैर में है, ब्रेक पर भाजपा बैठी है, क्लच पर मार्क्सवादी हैं परंतु उसका ड्राइवर ताऊ देवीलाल आपके सामने बैठा है.

■ **देवीलाल**, जयपुर के पत्रकार सम्मेलन में

● मुझे बूटा सिंह या उनके दल से पंजाब मसले के हल में योगदान की उम्मीद नहीं है.

■ **सिमरनजीत सिंह मान**, *नवभारत टाइम्स*

● भारतीय संविधान के ढांचे में ही पंजाब समस्या का समाधान खोजा जा सकता है.

■ **अतिंदरपाल सिंह**, *दैनिक ट्रिब्यून*

● जिस दिन मैं संतुष्ट नहीं हुआ उसी दिन से मैं स्वयं (राष्ट्रीय मोर्चा) सरकार की खिंचाई शुरू कर दूंगा.

■ **राम जेठमलानी**, *पंजाब केसरी*

● सारी राजनीति आप ही समझ लीजिएगा? अरे भाई यह भी तो हो सकता है कि बिहार में विधानसभा चुनाव के बाद मुझे बिहार की सेवा में लगा दिया जाए.

■ **लालू प्रसाद यादव** (बिहार जनता दल के नेता), *माया*

● हमें अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के बावजूद पैसा नहीं मिला, जो निश्चित ही भारतीय एथलेटिक्स के भविष्य के लिए निराशाजनक स्थिति है.

■ **बहादुर प्रसाद** (धावक), *पंजाब केसरी*

● हम सारा पैसा टेस्ट खिलाड़ियों पर तो नहीं लुटा सकते.

■ **राजसिंह डूंगरपुर**, *नई दुनिया*

● आप देखेंगे कि बहुत जल्द फिल्म उद्योग में बदलाव आएगा और लोग स्टंट फिल्में देखना पसंद करेंगे.

■ **प्रवीण कुमार** (महाभारत सीरियल के भीम), *दैनिक जागरण*

● मैं पैसा छूती भी नहीं हूं. मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मुझे कितने पैसे मिलते हैं.

■ **श्रीदेवी**, *धर्मयुग*

● ...अब स्टार सर्वशक्तिमान हो गए हैं, और इसलिए हो गए हैं कि हमारे यहां ज्यादातर निर्माता हिजड़े हैं—हाथों में चूड़ियां पहन रखी हैं सबने.

■ **प्रकाश मेहरा**, *नवभारत टाइम्स*

वही पुरानी अकड़

● टूथपेस्ट के विज्ञापनों वाली वह मुस्कान अब भी होंठों पर तैरती है. राजीव गांधी ने अपने और अपनी पार्टी के राजनैतिक भविष्य के साथ जो कुछ किया है उसे लेकर उनके चेहरे पर कोई पछतावा नहीं दिखता. उनका वही शाही अंदाज है और विरोधियों के लिए जबान वैसी ही कड़वी है. लेकिन सत्ता छिनने के बाद एक परिवर्तन तो निश्चय ही आया है: राजीव गांधी के पास भरपूर समय है. सुबह उनके घर के लॉन प्रशंसकों से ठसाठस भरे होते हैं. अपने खासमखासों के अलावा पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए भी उनके पास समय है. पिछले पखवाड़े उन्होंने युवा इंका की राज्य शाखाओं के अध्यक्षों के लिए तीन घंटे से भी अधिक समय निकाला. इन लोगों को शिकायत थी कि उनकी हमेशा अनदेखी की जाती है. सभी युवा इंका कार्यकर्ताओं ने एक सुर में कहा कि अगर राजीव ने पहले उनकी बात सुनी होती तो वे पार्टी की खामियों का सही ब्यौरा देते और चुनाव परिणामों को इतना भयावह होने से रोका जा सकता था. राजीव ने उन्हें विश्वास दिलाया कि भविष्य में युवा कांग्रेस के सभी मामले वे स्वयं देखेंगे. बैठक की एक और खास बात यह थी कि कोई वरिष्ठ पार्टी कार्यकर्ता या पुराना दिग्गज इसमें मौजूद नहीं था. ऑस्कर फर्नांडीस और गुलाम नबी आजाद को भी, जो युवा मामलों में कभी राजीव के आंख और कान हुआ करते थे, दरकिनार कर दिया गया. वैसे ऐसा भी नहीं है कि राजीव ने जनता की ओर बढ़ना शुरू कर दिया है. फिर भी भविष्य के बारे में क्या कहा जा सकता है.

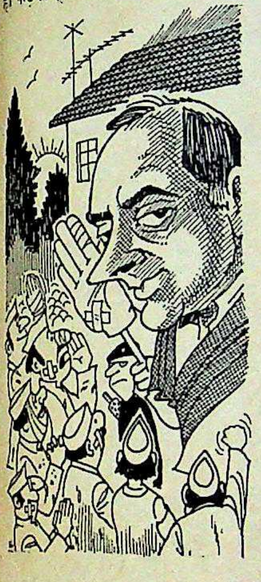

बेमिसाल जी-हुजूरी

● उनकी ओर से जहां मनचाहे मंत्री पद के लिए कोशिशें चल रही हैं, वहीं कुछ ऐसे लोग भी हैं जो निश्चित रूप से जानते हैं कि विद्याचरण शुक्ल क्या करने जा रहे हैं. अधिकारियों का वह वर्ग जो देश के खेल विभागों को बनाता-बिगाड़ता रहता है, इस बात से आश्वस्त लग रहा है कि खेल प्रबंधों के पुराने खिलाड़ी शुक्ल को किसी-न-किसी रूप में खेलों का ही प्रभारी बनाया जाएगा. इसलिए तो झुंड के झुंड खेल अधिकारी उनके दरबार में जी-हुजूरी शुरू कर चुके हैं. ये लोग अपने वर्तमान अधिकारियों की शिकायतें तो करते ही हैं, अपने पुराने 'पाप' (भारतीय ओलंपिक एसोसिएशन से शुक्ल को हटाने के आदेश के समर्थन) के लिए क्षमा याचना भी करते हैं. इनमें से एक ने, जो कि एथलेटिक्स अधिकारी हैं, अपने को घड़ियाली आंसुओं से धो डाला, शुक्ल से अपने उस नापाक निर्णय के लिए माफी मांगी और कहा कि उन्हें सजा दी जाए. चश्मदीदों के अनुसार जब शुक्ल पर कोई असर न हुआ तो अधिकारी महोदय ने अपना सैंडल निकालकर शुक्ल को पेश किया कि वे उसे सजा दें. शुक्ल को यह मंजूर न हुआ लेकिन अधिकारी ने खुद को ही सैंडल से मारना शुरू कर दिया. अफसोस, चमचागीरी के लिए कोई ओलंपिक पदक नहीं होता!

सभी कार्टून: अजीत नैनन

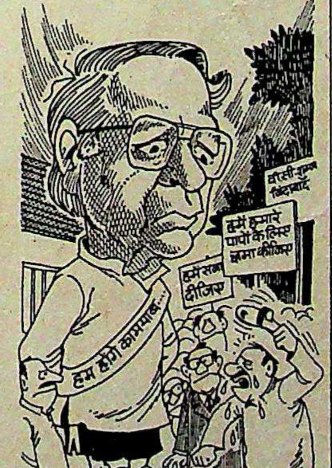
हम होंगे कामयाब...
हमें सजा दीजिए
हमें हमारे पापों के लिए क्षमा कीजिए

परिवर्तन की हवा

● इंका और तामझाम पसंद शहरी लोगों को अगर नई सरकार के देहाती और ठाटबाट रहित तौर-तरीकों पर एतराज होता हो तो उन्हें राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के नए विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल पर नजर डालनी चाहिए. साउथ ब्लॉक में कार्यभार संभालने के पहले ही महीने कश्मीर और पंजाब की समस्याओं के लिए यहां से वहां उड़ान भरते हुए और साथ ही विदेश विभाग के भी मामले निबटाते हुए गुजराल ने अपने ही दफ्तर में नई परंपरा शुरू कर दी है.

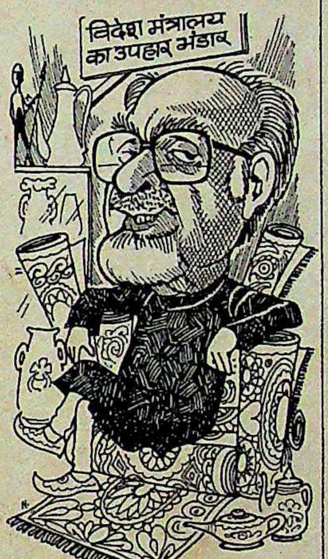
विदेश मंत्रालय का उपहार भंडार

उनको अपने दफ्तर का रंग-ढंग अटपटा और दकियानूसी लगा. इसलिए उन्होंने अधिकारियों को विवश कर दिया कि वे मंत्रालय के तोशाखाने का बंद द्वार खोलें. यह वही जगह है जहां विदेशी नेताओं से प्राप्त बेशकीमती उपहार रखे जाते हैं. गुजराल ने फैसला किया कि वे यहां जमा की गई बहुमूल्य वस्तुओं को काम में लाएंगे. दूसरी चीजों के अलावा तोशाखाने में कालीन और दरियों का बेहतरीन जखीरा है. यह जखीरा गुजराल के पूर्ववर्तियों की मध्य-पूर्व नीति की सफलता की मिसाल है. इनमें से कई दरियां और कालीन अब गुजराल के कार्यालय की शोभा बढ़ा रहे हैं. मंत्रालय के पुराने अफसर अपने मंत्री के इस फैसले से भौंचक हैं क्योंकि किसी भी मंत्री ने पहले कभी इस तकरीबन पवित्र संग्रहालय से कुछ नहीं लिया था. गुजराल ने कुछ अधिक नहीं तो अधिकारियों के सोच को जरूर झिंझोड़ दिया है.

पर सवाल यह उठता है कि क्या यह सरकार परिवर्तन के लिए नहीं बनी है?

मलाई का सवाल

● एक साल के अंदर ही निर्यात एक हजार करोड़ रु. तक बढ़ाने के लिए भारी-भरकम वाणिज्यमंत्री अरुण नेहरू को एक बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा है. वह यह कि पूर्वी यूरोप के देशों के लिए किए जाने वाले निर्यात से जो मलाई मिलती है उसका बंटवारा किस तरह किया जाए. इन देशों के लिए हजारों करोड़ रु. का निर्यात निजी कंपनियां करती हैं. नियमों के मुताबिक इन निजी कंपनियों को निर्यात का कोटा केंद्र सरकार तय करती है. चूंकि यह भरपूर धन कमाने का निश्चित जरिया है, इसलिए ठेके के निर्धारण में अक्सर राजनैतिक दबाव और दलाली की गुंजाइश रहती आई है. पहले, इंका परंपरानुसार ये ठेके अपने प्रिय और दुलारे व्यापारियों को दिया करती थी. अब नेहरू के सामने विकट समस्या है और वह यह कि वे अपने नए प्रिय पात्रों का चयन किस आधार पर करें क्योंकि सत्ताधारी गठबंधन के प्रत्येक धड़े के पास प्रिय पात्रों की अपनी लिस्ट पहले से ही मौजूद है. इसके अलावा रुपयों में व्यापार करने वाले देश भी अपने पसंदीदा व्यवसायियों से जमे-जमाए रिश्ते खत्म करने के इच्छुक नहीं हैं. नेहरू जब इंका में थे तो ऐसे मामले में चलती उन्हीं की थी लेकिन इस खुली सरकार में ऐसा संभव नहीं है. यही चिंता उन्हें खाए जा रही है.

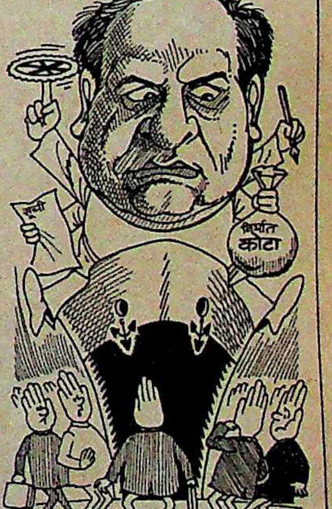

मेनका का जादू

● हालांकि आज के जमाने में विश्वामित्र और मेनका पुराणों और कथाओं के चरित्र दिखते हैं, पर वक्त बदलने के बावजूद न तो ज्ञान की खोज में जुटे संन्यासियों की बिरादरी खत्म हुई है और न मेनकाओं के आकर्षण में ही कोई कमी आई है. ऐसे मौके कभी-कभार आ ही जाते हैं जब कोई मेनका आधुनिक विश्वामित्र की तपस्या भंग करने में सफल हो जाती है और बेचारा विश्वामित्र सुंदरता से वशीभूत होकर रास्ता भटक जाता है. दूरदर्शन की कृपा से ताजा हुए पौराणिक इतिहास को पिछले दिनों हरिद्वार के निकट घटी ऐसी ही एक घटना ने एक बार फिर साकार कर दिखाया.

सभी कार्टून: अनिल शर्मा

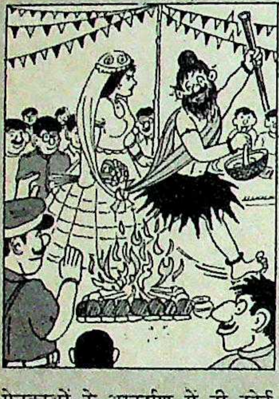

यहां के विवाह पंजीकरण अधिकारी की अदालत में पिछले महीने इतिहास को फिर से रचने का श्रेय एक भारतीय साधु और विदेशी युवती की एक जुगल जोड़ी ने प्राप्त किया जो वहां अपनी शादी का पंजीकरण कराने के लिए उपस्थित हुई थी. समाचारों के अनुसार आस्ट्रेलिया से भारत की सैर पर निकली विन रोज़ा सप्त सरोवर में रहने वाले युवा संन्यासी मोहनुरी से इस हद तक प्रभावित हो गई कि उसे वह अपना दिल दे बैठी. उसके प्यार की तपिश ने संन्यासी के दिल को पिघला दिया और आखिरकार दोनों ने प्रणय-सूत्र में बंधने का फैसला कर लिया. संन्यासी महोदय ने अपना कमंडल और भगवा वस्त्र त्यागकर गृहस्थी वाला चोला स्वीकार किया और विवाह के पंजीकरण के लिए आवेदन दाखिल कर दिया. विवाह के बाद नव-दंपती ने सुहागरात एक स्थानीय होटल में बिताई.

टीवी नहीं बीवी

● बैंक राष्ट्रीयकरण का मामला भले ही राजनैतिक क्षेत्रों में कभी विवाद का मुद्दा रहा हो पर यह बात विवाद से परे है कि इस कदम के बाद बैंकों के उधार तक छोटे किसानों और उन मजदूरों की भी पहुंच हो गई है जो पहले इस दायरे से बाहर हुआ करते थे. बल्कि बैंकों की इस दरियादिली का दायरा तो अब फैलते-फैलते यहां तक आ पहुंचा है कि भैंस, कार और फ्रिज खरीदने या फिर सैर-सपाटे के लिए जाने और शेयर बाजार में सट्टा खेलने के लिए भी बैंकों से उधार मिलने लगा है.

लेकिन पिछले पखवाड़े बैंक से उधार मांगने वालों के अति-उत्साह ने तो धार के एक कोऑपरेटिव बैंक अधिकारियों के सामने अच्छा-खासा संकट खड़ा कर दिया. इस बैंक ने पिछले कुछ समय से टीवी खरीदने के लिए लोगों को उधार उपलब्ध कराने की एक योजना शुरू की है जिसे इस इलाके में काफी लोकप्रियता मिली है. लेकिन एक दिन बैंक के अधिकारी अपने यहां 50-60 युवकों के प्रदर्शन को देखकर सकते में आ गए जो बीवी लाने के लिए उधार की मांग कर रहे थे. स्थानीय भारतीय जनता युवा मोर्चा के तत्वावधान में आयोजित इस प्रदर्शन का उद्देश्य बैंक द्वारा उपभोक्तावादी मनोवृत्तियों को कथित शह दिए जाने का विरोध करना था. प्रदर्शनकारियों की दलील थी कि अगर कोई बैंक टीवी खरीदने जैसी अनुत्पादक चीज के लिए पैसा उधार दे सकता है तो बीवी जैसे उत्पादक जीवन साथी के लिए क्यों नहीं? फिलहाल बैंक अधिकारी मांग-पत्र पर विचार कर रहे हैं.

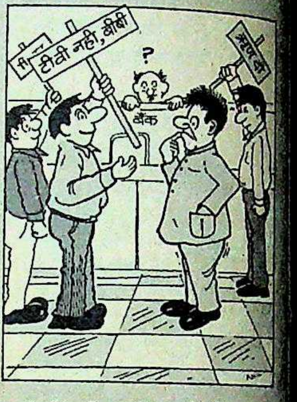

नकली थानेदार

● नक्कालों से जनता की रक्षा करने की जिम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा पुलिस विभाग का ही होता है. लेकिन अगर खुद पुलिस विभाग में ही असली-नकली की मिलावट शुरू हो जाए तो? इस समस्या ने अभी हाल ही में दिल्ली पुलिस को ऐसा डंक मारा कि कुछ देर के लिए तो एक पूरा थाना ही चारों खाने चित आ गिरा.

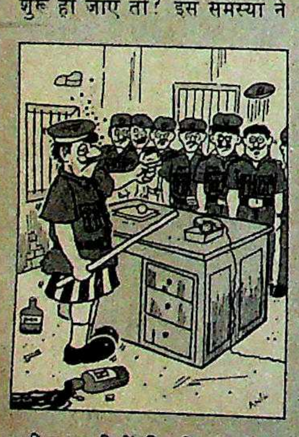

किस्से की शुरुआत पिछले दिनों एक सुबह हुई जब अफसरी रौब वाले एक व्यक्ति ने सब्जी मंडी थाने में आकर ड्यूटी अफसर को खबर की कि उसे वहां का नया थानेदार नियुक्त किया गया है. ड्यूटी अफसर ने तुरंत खड़े होकर सैल्यूट ठोका और बात ही बात में पूरा थाना वहां कतार में अटेंशन खड़ा हो गया. नए 'थानेदार साहब' ने पहले तो हाथोहाथ लोगों की ड्यूटियां बदलने के आदेश जारी किए और फिर अपनी 'खाने पीने' की व्यवस्था करने का आदेश सुना दिया. हुक्म का पालन हुआ और फिर ये थानेदार महोदय आराम करने वाले कमरे में जाकर सो गए. और यह सब इतनी सफाई से हुआ कि थाने के पुराने कर्मचारियों को भी शक-शुबहे का कोई कारण नहीं नजर आया.

यह नाटक शायद और लंबा चलता लेकिन उस इलाके के सहायक पुलिस आयुक्त के वहां आ धमकने से पूरा किस्सा ही चौपट हो गया. नए थानेदार की नियुक्ति की खबर से हैरान इस अधिकारी ने जब जाकर देखा तो पाया कि नए 'थानेदार' महोदय कोई और नहीं बल्कि एक पुराना बरखास्त सब इंस्पेक्टर है जिसे थानेदारी की चाहत फिर से थाने में ले आई थी.

चुनावी शेर

● शहरों के दिन-ब-दिन होने वाले फैलाव के जो परिणाम सामने आ रहे हैं उनमें से एक यह है कि शहरों की भोर का रूप ही बदल गया है. चिड़ियों की चहचहाहट और मुर्गे की बांग के बजाए अब लोगों की आंख मिल के भोंपू या फिर गाड़ियों की घरघराहट से खुलने लगी है. हैदराबाद के रईसों की बस्ती जुबली हिल्स में भी हाल कुछ ऐसा ही है. लेकिन पिछले दिनों वहां के निवासियों की नीद को जिस प्राकृतिक आवाज ने तोड़ा वह सचमुच सदमे भरी थी.

घबराकर जागे निवासियों ने पाया कि उनके मोहल्ले में एक शेर दहाड़ रहा है. मामला शायद पुलिस, चिड़ियाघर और फायर ब्रिगेड तक जा पहुंचता लेकिन उससे पहले ही लोगों को पता चल गया कि यह शेर उनके पड़ोसी डेविड प्रभाकर के यहां पिंजरे में बंद है. हुआ यह था कि चुनाव में खड़े होने पर जब प्रभाकर महोदय को शेर वाला चुनाव चिन्ह दिया गया तो उन्होंने अपने चुनाव अभियान को जीवंत बनाने के लिए मद्रास की एक सर्कस कंपनी से जिंदा शेर मंगा भेजा था. उनका इरादा अपने चुनाव चिन्ह के साथ मतदाताओं का साक्षात्कार कराके अपनी धाक जमाना और अपनी जीत का इंतजाम कराना था. हालांकि शेर एक मजबूत पिंजरे में बंद था पर किसी पड़ोसी ने, जो या तो शेर से डरता था या प्रभाकर से जलता था, स्थानीय वन अधिकारी के यहां शिकायत कर दी. वन अधिकारी ने तुरंत जांच कराई लेकिन प्रभाकर के पास शेर के सभी जरूरी कागजात दुरुस्त पाए गए.

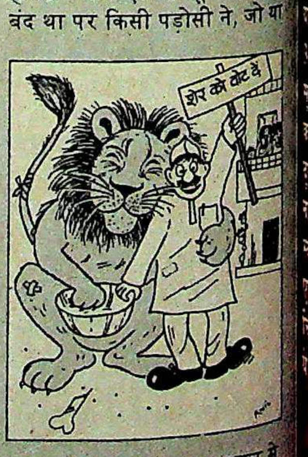

भारत की नं. 1 सिलाई मशीन जो दुनिया भर में लोकप्रिय है

इतनी मज़बूत, टिकाऊ मशीन कोई और न दे पाए

उच्च श्रेणी की विशेषताओं ने उषा सिलाई मशीन चलाना कितना सहज व आसान बनाया है। यह देखने के लिए कि उषा भारत की नं.1 सिलाई मशीन क्यों है ज़रा एक नज़र डालकर तो देखिए!

भारत में केवल उषा सिलाई मशीन में ही ये विशेषताएँ

मज़बूत स्टील के 6 महत्त्वपूर्ण हिस्से-पुर्जे–जो सालोंसाल बिना घिसे चलते हैं। अंतरराष्ट्रीय बाजारों में भी यह असामान्य विशेषता है।

ऑपरेशन वाला फैब्रिक सिलेक्टर। सूती कपड़े से रेशमी कपड़े तक, कशीदाकारी भी–केवल नॉब घुमाकर। दूसरे ब्रान्ड में यह सुविधा उपलब्ध नहीं है।

स्वचालित 'सिंगल प्रेस' प्रेसर एडजस्टर

चित्र में दिखाए उषा प्राइमा मॉडल की खास विशेषताएं हैं।

- उषा के अन्य मॉडल्स में ये लगभग सभी खूबियाँ मौजूद हैं।

उषा की अन्य आकर्षक विशेषताएं

- 4 उषा मॉडल्स में ओपन टाइप शटल रेस है जिससे बिल्कुल नई-नई सिलाई जानने वाले भी एक मिनट से कम समय में शटल खोल कर साफ कर सकते हैं। हीन्ज टाईप नीडल प्लेट होने के कारण बॉबिन निकालना-लगाना बहुत आसान है।
- उषा मॉडल्स में ढकी हुई नीडल बार जिसके कारण सिलाई करते समय धूल नहीं जमती और टूट-फूट कम से कम।
- आपकी सुविधा–लक्ष्य है हमारा। तभी तो हमने सालों की मेहनत से ऐसी विशेषताएं विकसित की हैं जो अमरीका, ब्रिटेन, पश्चिम जर्मनी तथा अन्य कई देशों के–जहाँ उषा सिलाई मशीन निर्यात होती है–बाजारों के उच्च अन्तरराष्ट्रीय स्तर से बेहतर हैं।

उषा

मज़बूत स्टील के हिस्से-पुर्ज़ों की खूबी ... जीवन भर की मज़बूती

WE HAVE FISHED OUT INDIA'S FIRST MULTICOLOURED METALLICS

You've never had such a resplendent choice for your interiors. Metallica. Multicoloured laminates for the first time in India. Crafted in collaboration with the innovators of this wonder-surface, Dekodur of West Germany.

Metallica. Sheet after sheet of sheer splendour, made with the flawless 'vapour' technique. To offer gracious protection against everyday vagaries like dust, scratches, stains and moisture.

Come, experience the eloquent shades and designs of Metallica. They already speak style in Europe and the USA. On furniture, doors, panels, counter skirtings of hotels, lobbies, bars, office areas, shop windows and distinguished dwellings.

Metallica is created for your exclusive lifestyle by Caprihans — The people who give you Sungloss 1.5 mm and 1 mm laminates besides new and unique surfaces like Art Concept laminates, Sundekor furniture film and Sunlip edge-banding.

Happy fishing!

SunGLOSS

metallica

MULTI-COLOURED METALLIC LAMINATES

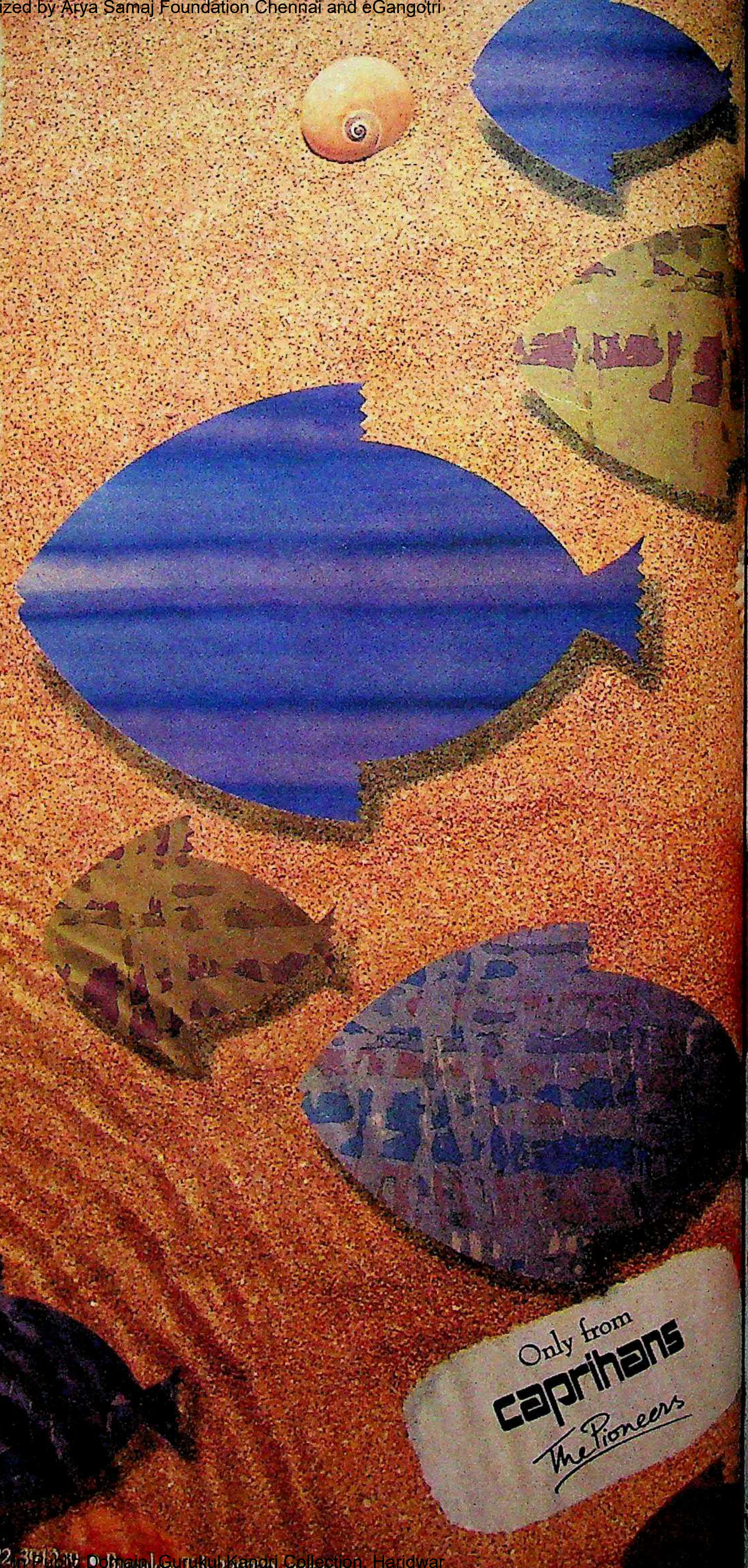

Only from
caprihans
The Pioneers

Bombay Tel: 4945233 • Ahmedabad Tel: 395222, [illegible] • Bangalore Tel: 220272, 235438 • Calcutta Tel: 447801, 440729 • Hyderabad Tel: 557743 • Delhi Tel: 525575, 520622, 520869 • Madras Tel: 580334, 580354

टूथपेस्ट तो किया पर क्या माउथवॉश पाया ?

आख़िर यह
थवॉश है क्या ?
माउथवॉश
नया-नवेला
क्लोज़-अप
असली माउथवॉशवाला टूथपेस्ट
ALL NEW
Close-up
For shiny-white teeth, fresher breath.
पिपरमिंटवाला नीला
सनसनाता लाल
सांसों में तरोताज़गी, दांतों में जगमगाती सफ़ेदी.
LINTAS CX 68 2720 HI

अगर नहीं तो आपका टूथपेस्ट अधूरा है. क्योंकि इसकी सफ़ाई दांतों तक जाए, पर सांसों को छोड़ जाए. आपको चाहिए नया-नवेला क्लोज़-अप, असली माउथवॉशवाला. क्लोज़-अप अपनाइए, दांतों की सफ़ेदी के साथ माउथवॉश भी पाइए. माउथवॉश सांसों में तरोताज़गी लाए, आत्मविश्वास बढ़ाए, आपको औरों के क़रीब लाए.

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट उत्पादन

विश्व भर में कार्यरत इ

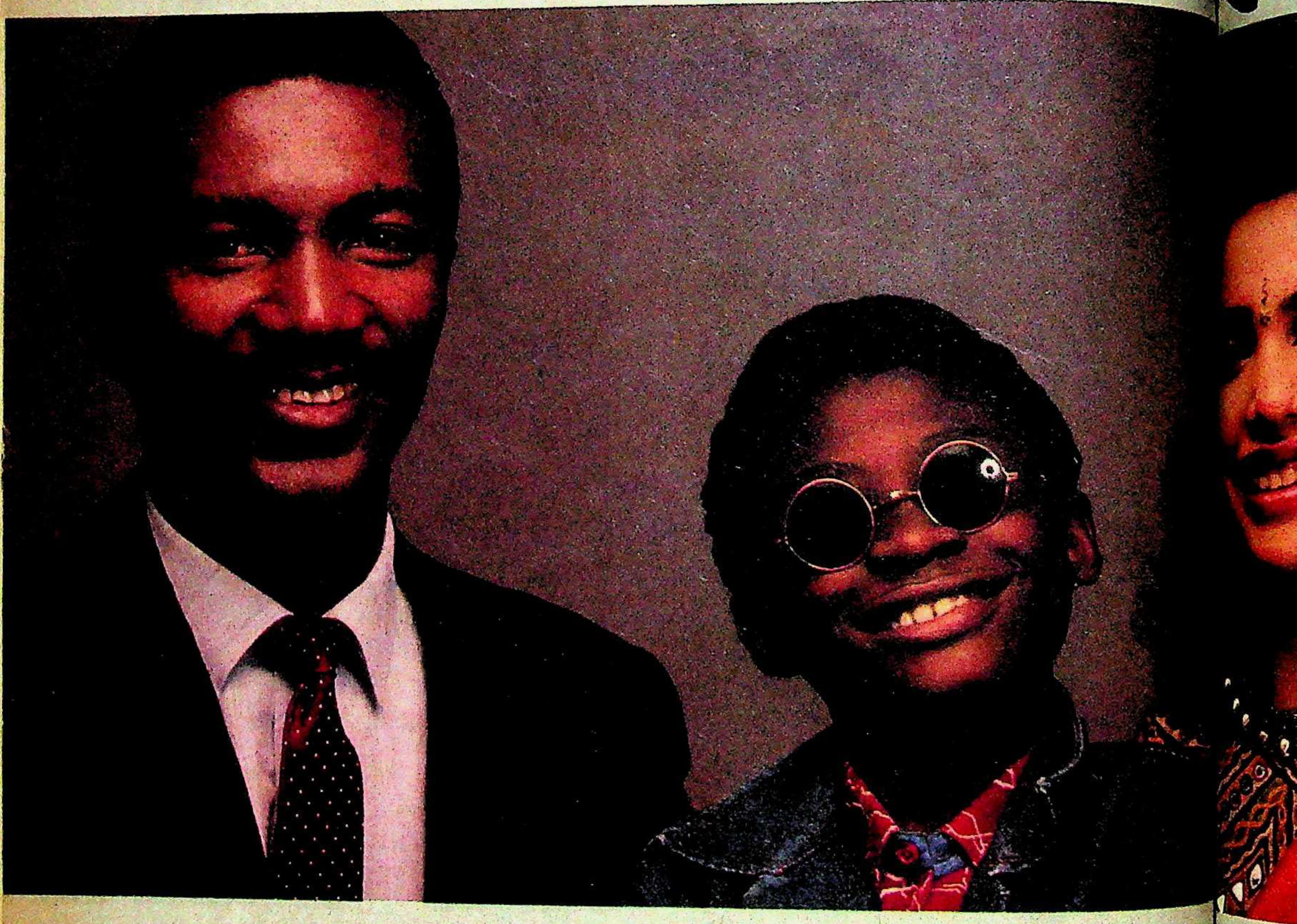

स्टी
विश
प्रम
सवे
तव

इस्पात। वि
नाम। अने
मिहेक्स,
की डैनिये

THE ISPAT EXPERIENCE WORLDWIDE

र इस्पात 'दक्षता

स्टील उत्पादन में विश्व व्यापी अनुभव। प्रमाणित प्रबंध दक्षता। सर्वोत्तम अन्तरराष्ट्रीय तकनीक का संगम।

इस्पात। विश्व में स्टील उत्पादन के क्षेत्र में तेज़ी से उभरता हुआ एक प्रमुख नाम। अनेक विश्व विख्यात कंपनियों के साथ गठबंधन — अमरीका की मिडरेक्स; जापान की हिताची व निप्पोन डेनरो; नार्वे की एलकेम; इटली की डैनियेली; फ़िनलैंड की ऑटोकुम्पू और फ्रांस की स्टीन ह्यूर्टी। इस्पात। इन्डोनीशिया में पी. टी. इस्पात इन्डो और वेस्ट इंडीज़ में कैरीबियन इस्पात का सफ़लतापूर्वक प्रबन्ध व चालन। स्टील उत्पादनों-बिलेट, गैल्वेनाइज़्ड शीट, कोल्ड रोल्ड शीट, रंगीन स्टील शीट, सिलिकॉन धातु, केल्शियम सिलिसाईड, फ़ेरो सिलिकॉन, रेल, स्टील प्रोफाइल, स्पंज आयरन और वायर रॉड - जिसके यह विश्व के सबसे बड़े निर्माताओं में एक है।

इस्पात। भारत में अनेक नये उद्योगों में अग्रणी। निप्पोन डेनरो इस्पात — भारत में नवीनतम श्रेणी के फ़्लैट स्टील के सुप्रसिद्ध निर्माता। चालू वर्ष में वार्षिक अनुमानित कारोबार 400 करोड़ रुपये। इस्पात प्रोफ़ाईल्स-इमारतों व ढांचों के लिए प्रोफ़ाईल व स्ट्रक्चरल के उत्पादन में कार्यरत। इस्पात एलॉयज़ — भारत की सर्वाधिक गति से प्रगति करने वाली फ़ेरो एलॉयज़ कम्पनी, आयात अनुकल्प सिलिकॉन धातु व कैल्शियम सिलिसाइड के उत्पादन में कार्यरत। और तेज़ी से बढ़ती हुई देशीय व विश्व व्यापी माँग को पूरा करने के लिए दो चार्ज क्रोम संयन्त्रों की स्थापना।

विश्वव्यापी अनुभव। प्रमाणित प्रबंध दक्षता। सर्वोत्तम अन्तर्राष्ट्रीय तकनीक का प्रयोग। संक्षेप में यही है इस्पात की विश्व व्यापी प्रगति का राज़।

ISPAT

NIPPON DENRO ISPAT LTD.

Park Plaza (Ist Floor), 71, Park Street, Calcutta-700016

Mudra:D:NDIL:7465

कश्मीर घाटी

अलगाववाद की आंच

करीब-करीब खाली विमान से जब आप बाहर कदम रखते हैं तभी आपको एक झटका-सा लगता है. हरदम जीवंत-सा रहने वाला हवाई अड्डा एकदम वीरान है. यह किसी सैनिक हवाई अड्डे जैसा लगता है जहां हथियारों से लैस जवान विमान से उतरने वालों को अपने पहरे में बाहर ले जाने के लिए तैयार हैं. आने वालों में अधिकांश सरकारी अधिकारी, खुद सेना के लोग या उनके परिवारवाले ही हैं. होटल, टैक्सी और हाउसबोट के एजेंट आपको उतरते ही घेरने के लिए मौजूद नहीं हैं. लेकिन सड़क पर कुछ मील आगे बढ़ने पर श्मशान-सी इस खामोशी को तोड़ता है युद्ध जैसा शोर. यह खामोशी और यह शोर एक ही तथ्य की ओर इंगित करते हैं कि उग्रवाद की आंच में झुलस रही कश्मीर घाटी का जीवन बुरी तरह अस्त-व्यस्त है.

सभी फोटो: प्रशांत पंजियार

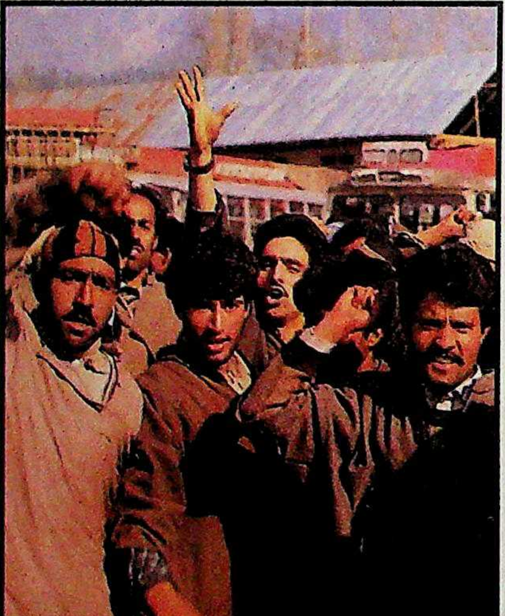

कुपवाड़ा में भारत विरोधी नारे लगाती भीड़; और श्रीनगर में उग्रवादियों द्वारा जलाया गया हस्तशिल्प बोर्ड का दफ्तर: खतरनाक संकेत

पिछले एक दशक से अधिक समय से आम कश्मीरी दबे हुए राजनैतिक असंतोष के सड़क पर उतर आने के गवाह रहे हैं. लेकिन पिछले कुछ हफ्तों के दौरान आम कश्मीरी मूक दर्शक भर नहीं रहकर इसका भागीदार बन गया है. उसके भीतर से बगावत के भभके तेजी से उठने लगे हैं. असम, गुजरात और पंजाब में अनेक बार हिंसक भीड़ से निबटने वाले केंद्रीय रिजर्व पुलिस के एक अधिकारी कहते हैं, "पहले हवा में एक गोली छोड़ते ही भीड़ बिखर जाती थी. अब आप एक को मारिए तो दूसरा, और दूसरे को मारिए तो तीसरा चढ़ा चला आता है. अंततः खुद आपको ही पीछे हटना पड़ता है." एक अन्य वरिष्ठ अधिकारी का कहना है, "लोगों का डर खत्म हो गया है. कश्मीरियों की यह एक नई उग्र पीढ़ी है."

पिछले पखवाड़े श्रीनगर और घाटी के दूसरे शहरों— अनंतनाग, सोपोर और बारामुला में इस नई बागी पीढ़ी ने सड़कों पर उतरकर दिखा दिया कि अब उसी की तूती बोलेगी. अर्द्धसैनिक बलों की 85 टुकड़ियां गलियों में उतार देने वाली और बार-बार सेना को मदद के लिए बुलाने वाली राज्य सरकार को उन्होंने सरासर ठेंगे पर रखा. पूरे पखवाड़े घाटी का जीवन ठप पड़ा रहा— कभी उग्रवादियों ने 'बंद' कराया, कभी सरकार

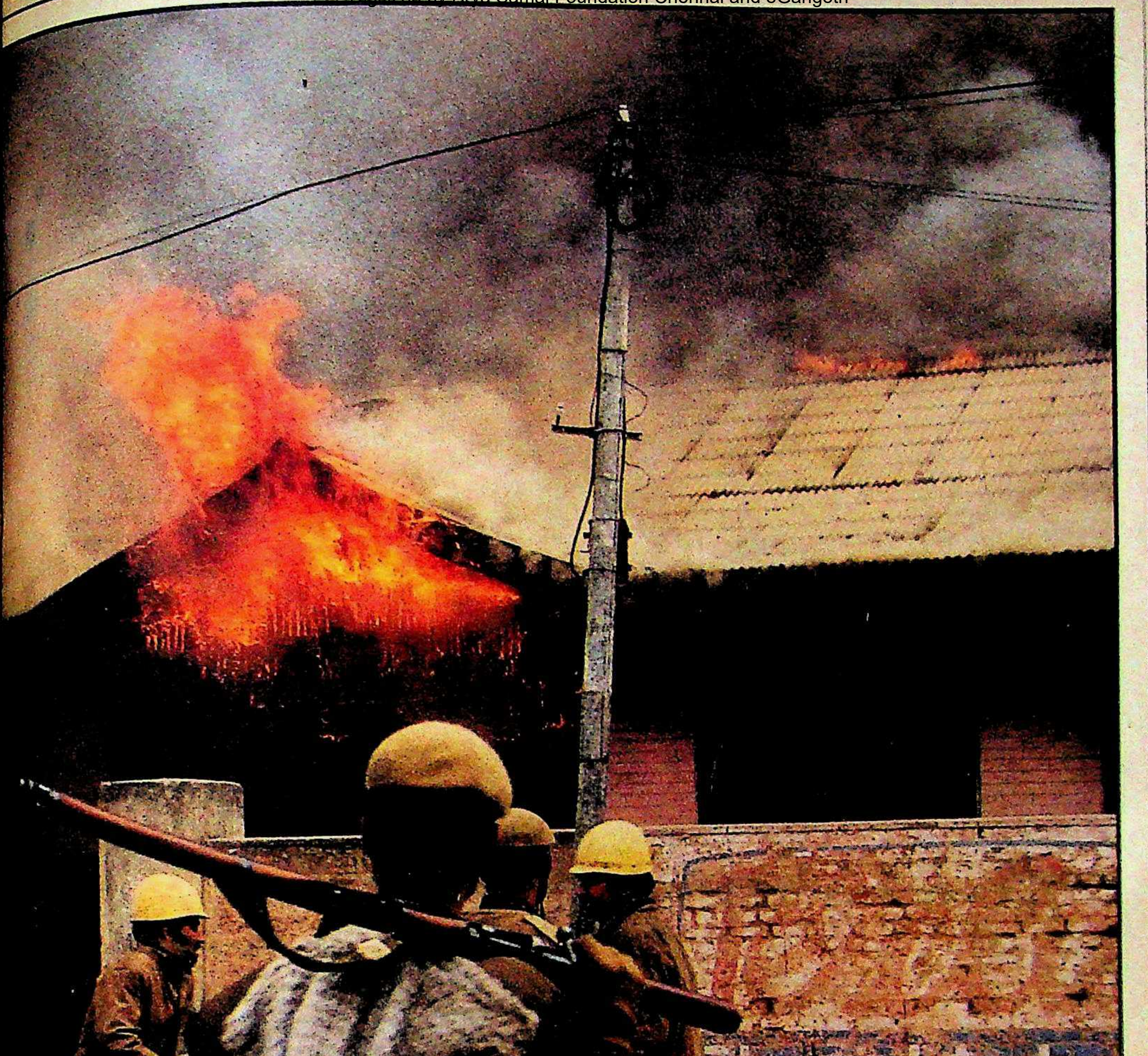

खुशबू व स्वाद...
...दोनों लाजवाब
रजनीगन्धा
पान मसाला
उत्तम सुपारी, इलायची व कत्थे से निर्मित
Rajnigandha
FLAVOURED PAN MASALA
SUPERB IN FRESHNESS AND TASTE

श्रीनगर के बटमालू इलाके में जवानों को गोली चलाने के लिए उकसाती भीड़: खुली बगावत

कर्फ्यू लगाए रही. पुलिस की गोली से 20 लोग मारे गए जबकि सरकारी इमारतों को जलाने और बम से उड़ाने की घटनाएं भी काफी संख्या में हुईं. उग्रवादियों ने इस दौरान सात पुलिसवालों को, जिनमें तीन गुप्तचर एजेंसियों के थे, मारकर इस झगड़े को एक नया मोड़ भी दिया.

जम्मू-कश्मीर पुलिस के नवनियुक्त महानिदेशक जे.एन. सक्सेना, जो हाल तक राज्य में गुप्तचर ब्यूरो के प्रमुख थे, इसे कश्मीर के इतिहास का सबसे गंभीर संकट मानते हैं. 1965 में पाक घुसपैठियों द्वारा पैदा किए गए संकट के बाद अब पहली बार सरकार फिर बचाव की मुद्रा में आई है. उग्रवादी संगठन अल्ला टाइगर्स का प्रमुख 'स्वयंभू' एअर मार्शल नूर खां कहता है, "राज्य का आधा नियंत्रण तो अभी से हमारे हाथ में आ चुका है. आप हिंदुस्तानी लोग बाइज्जत अपना बिस्तर गोल करके चल दें तो अच्छा होगा." यह बात उसने बीच श्रीनगर में दिए गए इंटरव्यू में कही.

नूर खां निश्चित रूप से बढ़ा-चढ़ा दावा कर रहा है. लेकिन उसकी बात एकदम बेदम भी नहीं. एक पखवाड़े पहले यह स्वघोषित एअर मार्शल श्रीनगर के दो सबसे प्रमुख होटलों सेंटॉर और ब्राडवे में घुसा और शराब की बोतलें तथा फर्नीचर तोड़-फोड़ डाला जबकि गार्ड हाथ पर हाथ धरे बैठे रहे. तुरंत सभी होटलों में शराब मिलनी बंद हो गई. जब बात फैली तो शराब की दुकानें और दूसरे बार भी बंद हो गए. धार्मिक उन्मादियों का अगला निशाना बने सिनेमाघर, वीडियो लाइब्रेरी और ब्यूटी पार्लर. आज घाटी के सारे सिनेमाघर बंद हो चुके हैं. वीडियो कैसेट मिल पाना मुश्किल है. ताश को भी इन लोगों ने इस्लाम विरोधी करार दिया है. उत्तर कश्मीर के बीच बारामुला के नजदीक स्थित हंदवाड़ा में बने नए सिनेमाघर हीलम को अब कोल्ड स्टोरेज में बदला जा रहा है. दूसरे सिनेमाघर मालिकों के सामने कई मुश्किलें आ गई हैं. सिनेमाघर के कर्मचारियों को दूसरे काम में खपाना या 20-20 हजार रु. का मुआवजा देकर उन्हें विदा करना आसान काम नहीं है.

> **कश्मीर में अलगाववादी भावनाएं अरसे से चली आ रही हैं लेकिन नया संकट यह उठ खड़ा हुआ है कि लोकतांत्रिक तौर-तरीके मानने वाला नेतृत्व बेमानी हो गया है**

हर सुबह के प्रमुख उर्दू अखबारों से पता चलता है कि उग्रवादियों के हौसले कितने बुलंद हो चुके हैं. इनमें भयभीत कश्मीरियों की ओर से कई विज्ञापन छपे होते हैं. मयखानों के मालिक अपना धंधा बदलने की घोषणा करते हैं, कुछ सत्तारूढ़ नेशनल कान्फ्रेंस से रिश्ते तोड़ने का एलान करते हैं तो कुछ लोग गुप्तचर एजेंसियों या कम्युनिस्टों से रिश्ता रखने या उग्रवादियों द्वारा बहिष्कार के आह्वान के बावजूद पिछले लोकसभा चुनाव में वोट डालने की 'गलती' के लिए माफी मांगते हैं.

राज्य की कानून-व्यवस्था की स्थिति पर नजर रखने वाले श्रीनगर स्थित राज्य पुलिस के मुख्यालय में बैठे एक वरिष्ठ

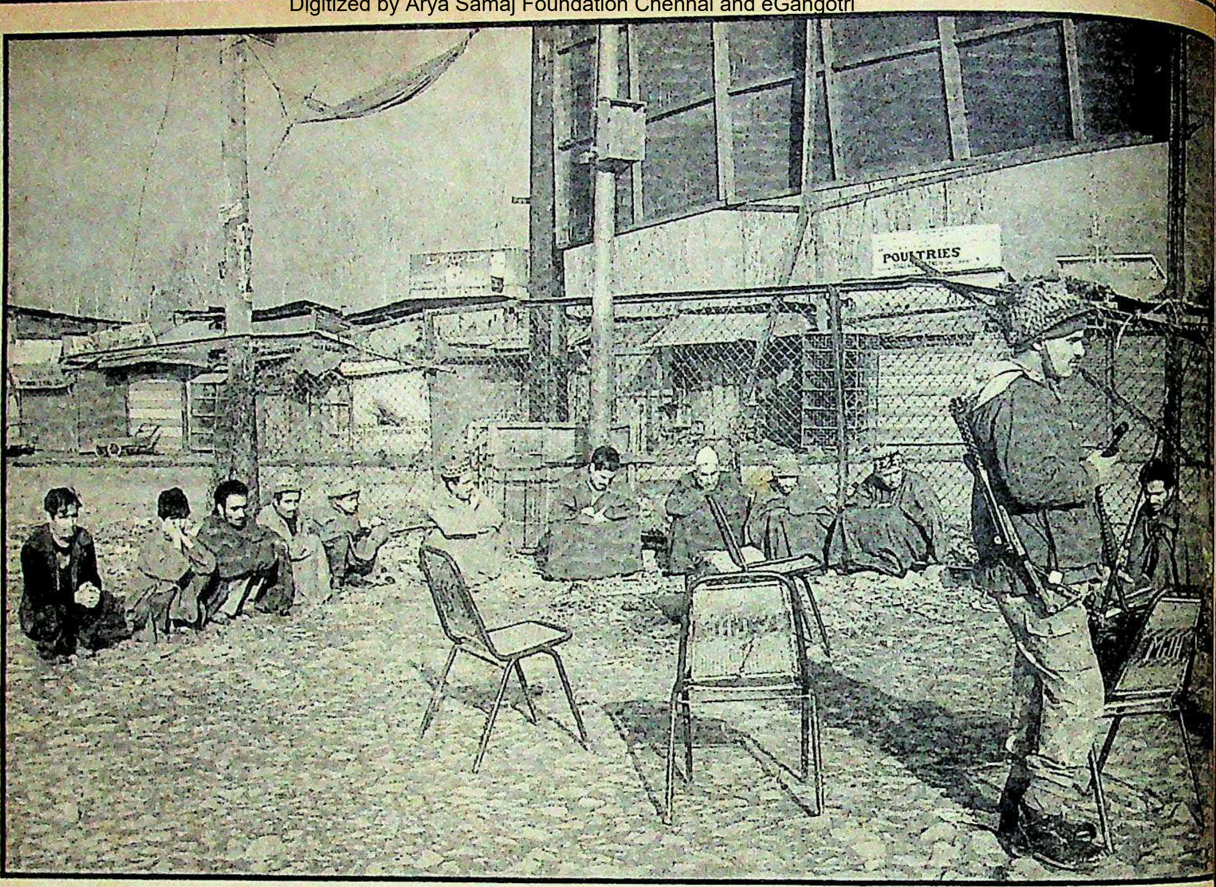

अधिकारी हैरत में हैं कि राज्य में किसका शासन चल रहा है. जब सरकार कर्फ्यू लागू करती है तो उसका उल्लंघन करने वालों की कमी नहीं रहती और जब आतंकवादी बंद का आह्वान करते हैं तो कोई भी घर से बाहर कदम रखने की हिम्मत नहीं करता. अलगाववादी गुटों का नवीनतम निशाना हैं 'भारतीय' बैंक. उनके आह्वान पर हजारों लोगों ने अपने बैंक खाते बंद करा लिए हैं. सिर्फ जम्मू-कश्मीर स्टेट बैंक के साथ ऐसा नहीं हुआ है.

ऐसे में अर्थव्यवस्था का कबाड़ा तो होना ही है. राज्य में पर्यटन उद्योग के अगुआ और हाउसबोट ओनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अब्दुस समद कोटरू कहते हैं, "पर्यटन पर जिंदा रहने वाले 60 फीसदी कश्मीरी अब जिंदा रहने के लिए भीख मांगने, चोरी करने, उधार लेने या अल्ला से दुआ मांगने के अलावा कुछ नहीं कर सकते." पर अमीर लोगों ने इस संकट का अपने हित में दोहन करने का तरीका ढूंढ़ निकाला है. वित्त मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "अभी जो स्थिति है उससे नहीं लगता कि घाटी से हर साल मिलने वाले 30 करोड़ रु. के आयकर का आधा भी इस साल जमा हो पाएगा."

बारामुला में अपनी कोल्ट 45 रिवाल्वर पर हाथ धरे पुलिस की एक चौकी से दूसरी के बीच चक्कर लगाते राज्य पुलिस के एक अधिकारी कहते हैं, "मैंने लोगों का ऐसा मूड आज तक नहीं देखा." यह अफसर अपनी 24 वर्ष की नौकरी में कभी हथियार लेकर नहीं चला. बहुत हुआ वे छोटा-सा डंडा साथ लि चलते थे. आज एकदम उल स्थिति है.

सेना द्वारा हिरासत में लिए गए दंगाई (ऊपर); और कर्फ्यू वाले इलाके में सीआरपी की गश्त: चौकसी

लेकिन इससे भी काम न बनता. पिछले पखवाड़े कई मौके आए जब भीड़ रिवाल्वर, बंदूक की पर नहीं की और पुलिस के जवा को कई बार गोलियां चला पड़ीं. आपने टीवी पर कई देखा होगा कि फिलिस्ती प्रदर्शनकारी इस्राएली सैनि पर पत्थर और पेट्रोल बरसा रहे हैं. ठीक वैसे ही यहां भी दिखाई पड़ते औरतों, बच्चों की भीड़ बार सड़कों पर आकर पुलि को गोली चलाने के ललकारती रहती है. पुलिसवा थोड़ा पीछे हो जाते हैं और में गोलियां चलाते हैं लेकि जुनूनी भीड़ "हिंदुस्तानी कु वापस जाओ" और "आजा का मतलब क्या, ला इला इल्ललाह" जैसे नारे लगा आगे बढ़ती जाती है.

उचित गर्भनिरोधक के बिना विवाहित जीवन आखिर कब तक सुखी रह सकता है ?

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों का प्यार ही आपको एक-दूसरे के इतने निकट ले आया है। ऐसा प्यार जो विवाह के बन्धन में बन्धने व मिलकर ज़िम्मेदारियाँ निभाने से बढ़ता और सुदृढ़ होता है। किसी भी विवाहित जीवन को सुखी बनाए रखने के लिए आवश्यकता होती है ऐसे दो व्यक्तियों की जो उसे आपस के विश्वास, भरोसे व घनिष्टता से भर दें। साथ ही एक दूसरे को सुखी रखने के लिए इतने समर्पित हों कि एक ऐसे गर्भनिरोधक का चुनाव करें जो दोनों के अनुकूल हो।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है। ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम।

KOHINOOR
PINK LUXURY CONDOMS

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पत्ति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं। कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है। यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है। सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है। कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलिभाँति समझते हैं। कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है।

ttk उत्पादन

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग!

MAA COMMUNICATIONS 917A HIN

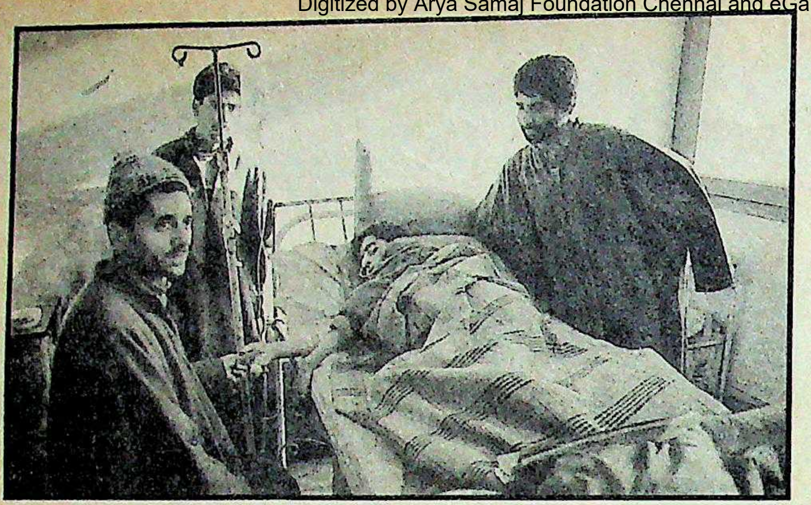

मौत पुलिस के हाथों ही हो, उग्रवादी यही तो चाहते हैं. हर 'शहीद' का मतलब है नाराज लोगों की नई भीड़

रणनीति व राजनीति के मोर्चे पर दिशाहीनता के चलते लगता है पुलिसवाले बियाबान में भटक रहे हैं

(ऊपर) कर्फ्यू का विरोध करते मारा गया शरीक बख्शी जो उग्रवादी नेता शकील बख्शी का भाई था; मारे गए सीआरपी हवलदार कामेश्वर चौधरी की अंत्येष्टि: खूंरेजी का नतीजा

श्रीनगर का रामबाग, बटमालू, जैनाकदल, हब्बाकदल और सफाकदल हो या अनंतनाग, बारामुला या सोपोर, सभी जगह यही हाल है. केंद्रीय रिजर्व पुलिस के हवलदार राम आसरे सिंह ने कहा, "आखिर इस हालत में हम क्या करें. अगर हम हर बार गोलियां चलाने लगे तो हर कहीं जलियांवाला बाग हो जाएगा और अगर गोलियां नहीं चलाते तो वे कहने लगते हैं पुलिस डर गई."

यह क्रम चलने से पुलिस के मन में भी डर घुसने लगा है. अक्सर भीड़ में आगे चलती औरतों और बच्चों के पीछे सशस्त्र उग्रवादी छिपकर चलते हैं. केंद्रीय रिजर्व पुलिस की 24वीं बटालियन के हवलदार कामेश्वर चौधरी को पिछले पखवाड़े यही कड़वा अनुभव हुआ. वे अपनी टुकड़ी के साथ ज्यादातर औरतों वाले एक हुजूम को घर लौट जाने के लिए मना रहे थे. तभी पिस्तौल से निकली एकमात्र गोली उनके गले में आ लगी. बदले में चली पुलिस की गोली से एक प्रदर्शनकारी मारा गया. लेकिन हत्यारा उग्रवादी अपने मकसद में कामयाब हो चुका था. चौधरी के मरने की खबर फैलते ही दूसरे जवान भी गुस्से में आ गए. और गुस्सैल जवानों का मतलब होता है ज्यादा मौतें. उग्रवादी ठीक यही चाहते हैं. हर नए 'शहीद' का अर्थ है मुहल्ले की मस्जिद से हर बार एक नया नमाज-ए-जनाजा. अंततः इस जनाजे में शामिल भीड़ हिंसक हो जाती है और नतीजतन पुलिस को और गोलियां चलानी पड़ती हैं. फिर नए 'शहीद,' फिर जनाजा और फिर हिंसा. यह दुष्चक्र है जिसमें विराम नहीं. शहरी बगावत की यह अनिवार्य त्रासदी है.

इसी निराशाजनक स्थिति में पुलिस और अर्द्धसैनिक बलों के हजारों जवान बड़ी बगावत में तब्दील होते जा रहे असंतोष से जूझ रहे हैं. इस असंतोष के पीछे हथियारबंद उग्रवादियों का शातिर दिमाग लगा हुआ है. रणनीतिक और राजनैतिक मोर्चे पर उम्दा नेतृत्व के अभाव और दिशाहीनता के चलते अक्सर लगता है जैसे पुलिसवाले किसी बियाबान में भटक रहे हैं. उग्रवादियों की चुनौती का मुकाबला पुलिस टुकड़ियां आपसी सहयोग और मिली-जुली रणनीति बनाकर नहीं कर पा रही हैं और जैसे-जैसे दिन बीतते जा रहे हैं उग्रवादियों का पलड़ा भारी पड़ता जा रहा है.

हालात बिगड़ते देखकर पिछले पखवाड़े केंद्र ने कुछ तत्परता दिखाई. गुप्तचर ब्यूरो के लोगों पर हमले (देखें बॉक्स) के बाद अपने लोगों का मनोबल बढ़ाने और हालात का जायजा लेने के लिए केंद्रीय जांच ब्यूरो के प्रमुख आर.पी. जोशी को कश्मीर भेजा गया. दिल्ली में हुई अनेक उच्चस्तरीय बैठकों में भी स्थिति की समीक्षा की गई. इन बैठकों में आम राय थी कि फिलहाल स्थानीय राजनैतिक नेतृत्व को ही ज्यादा केंद्रीय बलों की मदद देकर स्थिति से निबटने दिया जाए.

लेकिन कश्मीर की आज की स्थिति में यह कदम बहुत ही तात्कालिक दिखता है. कश्मीर में अलगाववाद हमेशा एक लोकप्रिय अवधारणा रही है. लेकिन मौजूदा समस्या का सबसे बड़ा संकट यह है कि लोकतांत्रिक तौर-तरीके मानने वाला पारंपरिक राजनैतिक नेतृत्व एकदम बेमानी हो गया है. काजी निसार और अब्दुल गनी

लोग जैसे 1987 के 'तथाकथित' उग्रवादी नेता भी आज घाटी में कोई मायने नहीं रखते. पूर्व मुख्यमंत्री गुलाम मुहम्मद शाह कहते हैं, "अब हमारी प्रासंगिकता पूरी तरह खत्म हो गई है. हमारी बात कोई नहीं सुनता."

इस तर्क में अभी कुछ दम लगता है कि केंद्र को फारूक अब्दुल्ला का ही समर्थन करना चाहिए क्योंकि वे एकमात्र ऐसे कश्मीरी नेता हैं जो कश्मीर के भारत में विलय के पक्षधर हैं. लेकिन असली संकट यह है कि अब वे नेता नहीं रह गए हैं. घाटी के मुसलमानों के धार्मिक प्रवक्ता मीरवाइज मौलवी फारूक कहते हैं, "वी.पी. सिंह दावा कर सकते हैं कि वे फारूक को नहीं हटाएंगे. लेकिन जब कश्मीर के लोग फारूक को ठुकरा चुके हैं तो इस दावे का क्या मतलब है?"

JAMMU KASHM
LIBERAT
FRONT

पाकिस्तान में जेकेएलएफ नेता अमानुल्ला खांः कट्टरवादी तेवर

पूरी घाटी में जिस आदमी की सबसे कटु आलोचना होती है वे फारूक अब्दुल्ला ही हैं. उन्हें कश्मीर के हितों के साथ दगा करने वाला, अमीरों का दोस्त और एक ऐसा राजा माना जाता है जो घाटी को जलता छोड़ जम्मू की गर्माहट में मौज करता है. अब्दुल्ला परिवार के प्रति नफरत पैदा होना ही घाटी का सबसे बड़ा बदलाव है. शेख अब्दुल्ला के दामाद गुलाम मुहम्मद शाह कहते हैं, "1953 में जिस दिन शेख साहब को गिरफ्तार किया गया था उसके विरोध में 1500 से अधिक लोग मारे गए थे. आज फौज को उनकी कब्र की रखवाली इसलिए करनी पड़ती है कि कहीं लोग उसे खोदकर उनके अवशेष झेलम में न फेंक दें."

भारत से करीबी रिश्ते की बात करने वाला कोई भी आदमी आज तक कश्मीर में लोकप्रिय नहीं हुआ. लेकिन पिछले चुनाव में 'धांधली कराने' के लिए फारूक से और भी

पाकिस्तान

कथनी और करनी

बेनज़ीर भुट्टो की संकटग्रस्त सरकार ने जम्मू-कश्मीर की हाल की घटनाओं पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करने में सतर्कता बरती है. लेकिन इस्लामी जम्हूरी इत्तेहाद की अगुआई में विपक्ष ने इस मसले को भारत विरोधी प्रचार करने के लिए लपककर हालात पेचीदा बना दिए हैं. वह भी ऐसे समय में जब कश्मीर समस्या का साया एक बार फिर भारत-पाक संबंधों पर मंडरा रहा है.

बेनज़ीर के कट्टर प्रतिद्वंद्वी और पंजाब के मुख्यमंत्री मियां नवाज शरीफ के अलावा दक्षिणपंथी जमात-ए-इस्लामी के नेताओं ने सरकार पर कश्मीरी लोगों के हितों के साथ धोखा करने का आरोप लगाया है. हाल ही में जमात-ए-इस्लामी के अध्यक्ष काजी हुसैन अहमद ने कश्मीर में असंतोष को राज्य में इस्लामी क्रांति की पूर्व बेला करार दिया.

उधर, पाकिस्तानी अधिकारी भारत के इस आरोप से चिंतित हैं कि आंदोलन के पीछे पाकिस्तान का हाथ है. उन्होंने स्पष्ट खंडन किया है, कि पिछले महीने भारत की नई सरकार ने अपने गृहमंत्री की अपहृत बेटी रुबाइया सईद को छुड़वाने में बेनजीर से मदद मांगी. ऐसी कोई कोशिश होती तो शायद भारत सरकार पाकिस्तान और कश्मीर के उग्रवादियों के बीच संबंध होने का सबूत मान लेती.

राजनैतिक प्रेक्षकों का कहना है कि मौजूदा सरकार के लिए खुद को कश्मीर में उलझाना सही कदम नहीं होगा. दरअसल, विरोध के बावजूद बेनजीर भारत-पाक संबंधों को सामान्य बनाने की कोशिश करती आई हैं. इस बीच 'तथाकथित 'आजाद कश्मीर' के सदर सरदार अब्दुल क़यूम खां ने बेनज़ीर पर कश्मीर के मसले को ठंडे बस्ते में रखने का आरोप लगाया है. जेकेएलएफ नेता अमानुल्ला खां ने कहा है कि कश्मीरी लोग भारत और पाकिस्तान की वर्तमान सरकारों के बीच हुए किसी भी समझौते को स्वीकार नहीं करेंगे. अटकलें हैं कि जमात-ए-इस्लामी कुछ अफगान मुजाहिदीन गुटों की मदद से कश्मीर के उग्रवादियों को प्रशिक्षण दे रही है.

भवान सिंह

बेनजीर भुट्टोः जबरदस्त दुविधा में

इधर, बेनजीर ने वी.पी. सिंह सरकार को पाकिस्तान के नजरिए से अवगत कराने के लिए पूर्व राजदूत अब्दुल सत्तार को दिल्ली भेजा. खबर है कि विदेश मंत्रालय के कुछ अधिकारी बेनजीर की इस चाल से नाखुश हैं. यह भी खबर है कि विदेशमंत्री साहबजादा याकूब खां ने इस्तीफा देने की धमकी दी थी क्योंकि सत्तार की यात्रा के बारे में उनकी राय नहीं ली गई. लगता है कश्मीर बेनजीर के लिए भी उतना ही बड़ा सिरदर्द साबित होगा जितना वी.पी. सिंह के लिए.

—जाहिद हुसैन, कराची में

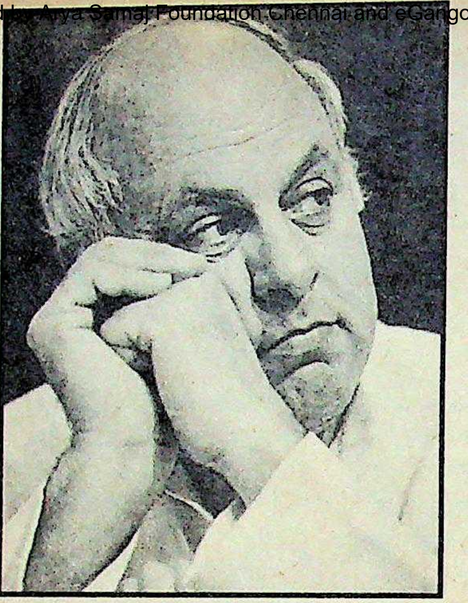

फारूक अब्दुल्लाः महंगा पड़ता अलगाववाद

ज्यादा नफरत की जाती है. गुप्तचर एजेंसियों ने 'ए' और 'बी' श्रेणी के उग्रवादियों की जो सूची बनाई है उससे पता चलता है कि 1987 के चुनाव से फारूक ने अपना और देश का कितना नुकसान कर लिया है. आज इन सूचियों में शामिल प्रायः हर नौजवान उस चुनाव में मुस्लिम युनाइटेड फ्रंट के उम्मीदवारों के पक्ष में मतदान पेटियों की रखवाली कर रहा था. 36 वर्षीय वकील अब्दुल हमीद लोन ऐसी ही बात करते हैं, "कश्मीर के मतदानकेंद्रों पर भारतीय लोकतंत्र को नंगा कर दिया गया. बनिहाल के इस तरफ तो कोई लोकतंत्र नहीं है."

उत्तरी कश्मीर के त्रिगाम में भी, जहां पुलिस हत्याकांड के सिलसिले में फांसी चढ़े मकबूल बट्ट के घर में जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) का गठन हुआ था, यही माहौल था. बट्ट का एक छोटा भाई जेल में है और सबसे छोटा जहूर कहता है कि वह भी शहीद होने को तैयार है क्योंकि "सभी को एक न एक दिन मरना ही है." उसका कहना है, "जिन लोगों ने हिंदुस्तान के वादों पर ऐतबार करके वोट दिया उनको क्या मिला?"

मस्जिदों से लेकर बाजारों तक, चाय की दुकानों से लेकर सरकारी दफ्तरों तक में माहौल यही है. फारूक के इस बहाने जम्मू में पड़े रहने से कि उन्होंने सब कुछ पुलिस को सौंप दिया है और वे उसके काम में कोई हस्तक्षेप नहीं कर रहे हैं लोग कतई आश्वस्त नहीं हैं.

'इंडिया टुडे' ने फारूक से संपर्क करने के लिए दर्जन भर से अधिक बार उनके दफ्तर से संपर्क किया लेकिन डॉ. फारूक नहीं मिले. अतिरिक्त मुख्य सचिव महमूद रहमान ने, जो उनके सबसे भरोसेमंद अधिकारी हैं, फारूक के फैसले को एकदम सही बताया. गृह आयुक्त होने के कारण रहमान के पास कानून और व्यवस्था का काम भी है. वे कहते हैं, "यह मानना गलत है कि हमने विघटनकारियों के आगे हथियार डाल दिए हैं. सरकार मजबूती से अपना काम कर रही है. अपने 25 वर्षों के अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूं कि हालात निराशाजनक नहीं हैं." पुलिस प्रमुख सक्सेना कहते हैं, "हमारी सबसे बड़ी चुनौती पुलिस और लोगों में फिर आत्मविश्वास कायम करना है. लेकिन इसके लिए हमें अपने तौर-तरीके और कार्यपद्धति बदलनी होगी." लेकिन अब सरकारी तौर पर बचाव की यही रणनीति अपनाई जा रही है कि पूरी समस्या पाकिस्तान ने पैदा

खुफिया एजेंसियां

बंदूकों का निशाना

गुलमर्ग जाने वाली सड़क पर एक छोटा-सा कस्बा पड़ता है भिरुआ. कश्मीर में खुफिया एजेंसियों के अनुसार यह उग्रवादी संगठनों का गढ़ है. खुफिया ब्यूरो (आईबी) के 37 वर्षीय सब-इंस्पेक्टर कृष्णगोपाल चौहान इस बात का सुराग लगा चुके थे. उनकी कामयाबी की खबर उग्रवादियों को भी लग गई थी. पत्नी व दो बच्चों के साथ वे पुलिस स्टेशन में रहने लगे. पर 8 जनवरी को भाग्य ने उन्हे धोखा दे दिया.

उनका फोन काम नहीं कर रहा था. फोन के लिए सड़क पार जाते हुए साढ़े ग्यारह बजे भरे बाजार में एक आदमी ने कलाश्निकोव तानकर उन पर पांच गोलियां दाग दीं. आईबी ने एक हफ्ते के अंदर ही अपना दूसरा अफसर खो दिया.

इससे पहले 2 जनवरी को अनंतनाग में सहायक केंद्रीय गुप्तचर अधिकारी आर.एन. सिंह पर भी गोलियों से हमला हुआ. तब शाम के साढ़े छह बजे थे और वे आटे का थैला उठाए घर लौट रहे थे.

चौहान की मृत्यु के कुछ ही घंटे बाद उग्रवादियों ने फिर हमला बोल दिया. इस बार उनका निशाना बने राज्य खुफिया विभाग के इंस्पेक्टर हमीदुल्ला बट्ट, जो श्रीनगर की रावलपोरा बस्ती में रहते थे. उग्रवादियों के हाथों मारे जाने वाले वे चौथे गुप्तचर अधिकारी थे.

इन हत्याओं से गुप्तचर एजेंसियों में भय की लहर दौड़ गई क्योंकि उनके अधिकारी अक्सर निहत्थे होते हैं. अधिकारी मानते हैं कि इस तरह उनके संपर्क सूत्र खत्म हो जाएंगे. आईबी ने घाटी में अपने 32 में से 26 नितांत असुरक्षित कार्यालयों को बंद करने का फैसला किया है. आईबी के नए निदेशक आर.पी. जोशी भी यहां आकर स्थिति का जायजा ले चुके हैं.

लेकिन खुफियागीरी तो सामान्य स्थिति में भी खतरनाक हुआ करती है. एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, "हम अपने लोगों को बता रहे हैं कि हमें युद्ध के साथ-साथ विदेशी जमीन पर भी निहत्थे सक्रिय रहने के लिए हमेशा तैयार रहना है."

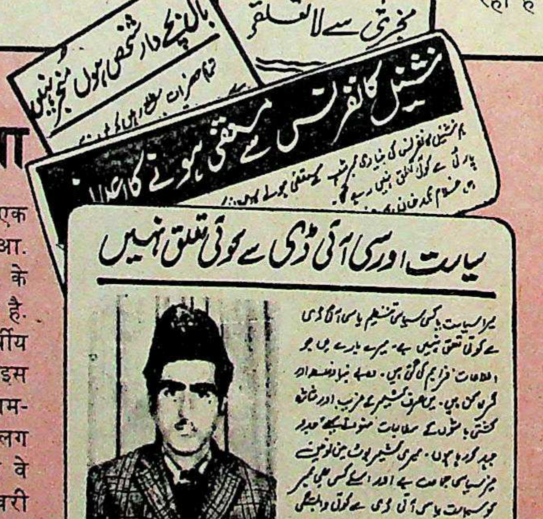

مخبری سے لاتعلق
نیشنل کانفرنس سے مستعفی ہونے کا اعلان
سیاست اور سی آئی ڈی سے کوئی تعلق نہیں

खुफिया एजेंसियों या नेकां से कोई रिश्ता न रखने की हिदायत देते अखबारी विज्ञापनः आतंक का राज

की है और इसे अब नई दिल्ली और इस्लामाबाद के बीच राजनैतिक तौर पर ही निबटाना होगा.

सरकारी एजेंसियां अपनी मौजूदा परेशानी का सबब बताने के लिए नियंत्रण रेखा के दूसरी ओर वाले इलाके की तरफ इशारा करती हैं. गृह मंत्रालय के वरिष्ठ अधिकारियों का कहना है कि कश्मीर में गड़बड़ी के प्रति पाकिस्तान का जो रवैया है, वह उसके पंजाब वाले रवैए से बहुत भिन्न है. पाकिस्तान अब तक यही कहता रहा है कि कश्मीर विवादास्पद क्षेत्र है. यहां तक कि 'आजाद कश्मीर' के बजट में कश्मीर को 'मुक्त' कराने के लिए सालाना प्रावधान भी रखा जाता है. पाकिस्तानी पंजाब में वरिष्ठ विपक्षी नेता नवाज़ शरीफ समेत कई प्रमुख राष्ट्रीय नेता कश्मीरी मूल के हैं जो किसी भी भावनात्मक मुद्दे को आसानी से भुना सकते हैं (देखें बॉक्स).

खुफिया एजेंसियों का कहना है कि उग्रवादियों. की नकेल पाकिस्तान नियंत्रित कश्मीर में है. पुलिस प्रमुख सक्सेना कहते हैं, "इस बात में कोई संदेह नहीं कि सीमा पार में दखलंदाजी की जा रही है और इसलिए सीमा पर दरारों को भरना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है." खुफिया और राज्य पुलिस के अधिकारी कश्मीर के बारे में जो तस्वीर पेश कर रहे हैं, वह पंजाब से अलग नहीं है.

अलगाववादियों का असर कितना है यह इस बात से जाहिर है कि शराब पर रोक से लेकर 'भारतीय' बैंकों के बायकाट तक की उनकी अपील सफल होती है

उग्रवादी गतिविधियों में शामिल युवकों को जेकेएलएफ के सदस्य सीमा के उस पार ले जाते हैं. फिर यहां तीन से चार हफ्ते तक उनके दिमाग में भारत के खिलाफ जहर भरा जाता है, तोड़-फोड़ का प्रशिक्षण दिया जाता है, गोलियां चलाना व गोले फेंकना सिखाया जाता है और फिर उन्हें वापस भेज दिया जाता है. खुशी-खुशी अपनी तस्वीरें खिचवाने वाले तीन उग्रवादियों में से एक उमर जावेद (सही नाम नहीं) ने कहा, "अगर आपने हमें पहले बताया होता तो हम आपको अपना रॉकेट प्रक्षेपणास्त्र भी दिखाते. पाकिस्तानियों ने हमसे निर्णायक हमले के समय का इंतजार करने के लिए कहा है." दरअसल, कोई भी कश्मीरी उग्रवादी या उससे सहानुभूति रखने वाला आदमी अपने पाकिस्तानी रिश्तों से इनकार नहीं करता. लेकिन यह कोई नई बात नहीं है. पिछले चार दशक से कश्मीर के बारे में केंद्र सरकार की नीति इस धारणा पर आधारित रही है कि राज्य में व्यापक अलगाववादी भावना है और उसे पाकिस्तान हवा दे रहा है.

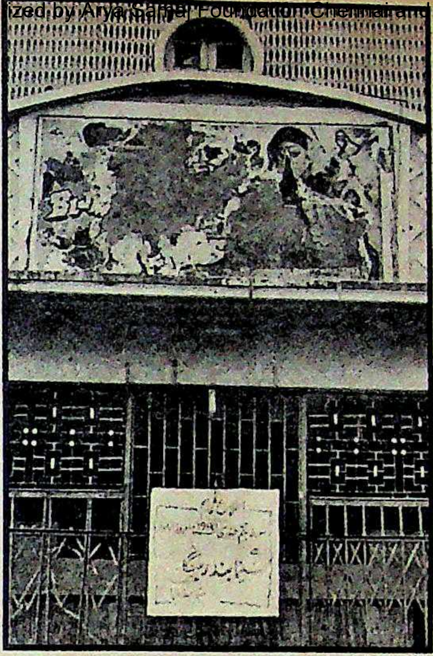

मेराजुद्दीन

बंदी की घोषणा करता श्रीनगर का सिनेमाघर (ऊपर); और 'अल्ला टाइगर' के 'एअर मार्शल' नूर खां, बरामद की गई शराब के साथः फ़रमान पर अमल

शायद इस समय सबसे बढ़िया कदम यह होगा कि नरम और कठोर दोनों तरह की नीति अपनाते हुए फारूक सरकार को बरखास्त कर दिया जाए, उदारमना लेकिन दृढ़निश्चयी राज्यपाल नियुक्त किया जाए और बेकसूरों का ध्यान रखते हुए उग्रवादियों को कुचल दिया जाए. यदि इस नीति पर बुद्धिमानी से अमल किया जाए तो गड़बड़ी रुक सकती है. समय के साथ उग्रवादियों में भी संदेह और असंतोष उभरेगा. विभिन्न उग्रवादी संगठनों की विचारधाराएं भी अलग-अलग हैं. मसलन, जेकेएलएफ ज्यादा धर्मनिरपेक्ष और समाजवादी है और वह "कश्मीर बनेगा खुद मुख्तार (आजाद)" के नारे पर लड़ रहा है जबकि दूसरे संगठन धर्मांध हैं और वे "कश्मीर बनेगा पाकिस्तान" के नारे के साथ क्रांतिकारी इस्लाम में विश्वास करते हैं. यह एक सिद्ध तथ्य है कि उग्रवादियों के बीच संदेह, असंतोष और आत्म-निरीक्षण की भावना तभी उभरेगी जब उनके अभियान को असरदार तरीके से रोक दिया जाए और उन पर इतना दबाव डाला जाए कि उनकी सांस घुटने लगे.

इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए केंद्र को तेजी से कठोर फैसले करने होंगे अन्यथा कश्मीर उग्रवादियों के दुराग्रह, राज्य सरकार की अक्षमता और केंद्र की दुविधा के बीच हिंसा की लपटों में जलता रहेगा.

—शेखर गुप्ता, कश्मीर में

पंजाब

पार लगने की पहल

लुधियाना में हुई सर्वदलीय रैली हालांकि बहुत सफल नहीं मानी जा सकती, लेकिन इससे एक बार फिर साबित हो गया है कि नई सरकार के इरादे नेक हैं. वैसे, राज्य में हालात बहुत आशाजनक नहीं है. हिंसा जारी है और अकालियों में फूट भी पहले की ही तरह बरकरार है.

निरंतर हिंसा और रक्तपात झेलते हुए पंजाब इतना परेशान हो चुका है कि वहां के लोगों में अब किसी तरह का जोश पैदा करना नामुमकिन-सा हो गया है. इसलिए पिछले पखवाड़े हुई सर्वदलीय रैली के प्रति लोगों में उत्साह की कमी अगर देखी गई तो इसका मतलब यह नही कि रैली बुरी तरह असफल हो गई. यह सही है कि रैली में अकाली दल के मान गुट और इंका के शामिल न होने के कारण इसे कुछ धक्का लगा. इसके अलावा प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने जो घोषणाएं कीं वे भी मान गुट की मांगों को बहुत पूरा नहीं करतीं.

लेकिन दूसरा पहलू यह भी है कि कुछ मामलों में नई पहल की गई है. मसलन सिमरनजीत सिंह मान द्वारा प्रधानमंत्री का हवाई अड्डे पर स्वागत तथा विदाई, अधिकांश अकाली गुटों का रैली में शामिल होना, और उच्च राजनैतिक हलकों में पंजाब पर फिर से बहस की शुरुआत. यह अपने आप में एक सकारात्मक संकेत था कि कोई व्यक्ति अमन की भाषा बोल रहा था. वी.पी. सिंह ने रैली में बार-बार कहा, "शांति को एक मौका दीजिए." हालांकि राज्य की राजनैतिक गुत्थी अभी भी उलझी हुई है लेकिन एक छोर खुलता दिख रहा है.

रैली में लोगों की भीड़ कम थी लेकिन जो भी लोग शामिल थे वे उदासीन नहीं थे. वी.पी. सिंह की इस घोषणा पर जोरदार तालियां बजी कि "मेरी सरकार सिखों और हिंदुओं को बांटकर राज करने के बदले इस्तीफा देना पसंद करेगी." जिस तरह वे अमृतसर में खुली जीप में घूमे थे उसी तरह वे इस बार हवाई अड्डे से शहर तक के रास्ते में दोनों ओर खड़े लोगों से मिलने के लिए अक्सर सुरक्षा के घेरे को तोड़ते हुए पाए गए. इस मामले में वे बाजी तो मार ले गए लेकिन जिन उपायों की उन्होंने घोषणा की उनसे निश्चित ही कई लोगों को निराशा हुई होगी.

1984 के दंगों के अपराधियों पर मुकदमा चलाने के लिए विशेष अदालतों के गठन, सरकारी प्रतिष्ठानों में भगोड़े सिख सैनिकों के पुनर्वास, मान गुट के सांसद जे.एस. खुड्डियां की मौत की न्यायिक जांच, और छोटे-मो अपराधों में शामिल लोगों के मुकदमों की समीक्षा करने के फैसले स्वागतयोग्य तो है लेकिन इनसे कोई नई पहल नहीं होगी.

सभी फोटो: रघु राय

लोगों से मिलते प्रधानमंत्री; रैली में विभिन्न नेताः नया उत्साह

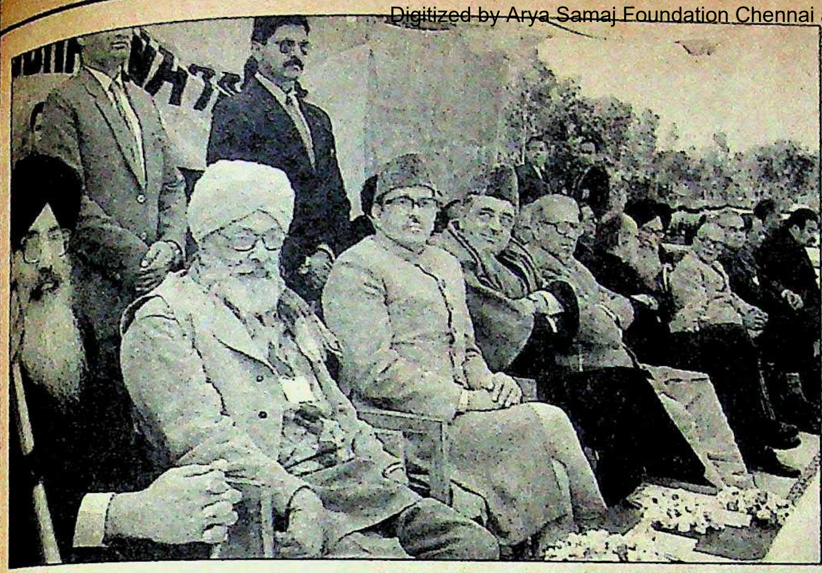

वैसे, नई तरह की पहल हुई है मगर बिलकुल दूसरी तरह से. यह तब हुआ जब विभिन्न पार्टियों के नेताओं ने रैली में एक-दूसरे को मालाएं पहनाई. यह असामान्य बात ही थी. इसलिए जब अकाली दल के नेता जगदेव सिंह तलवंडी ने अपने पक्के राजनैतिक दुश्मन माकपा के हरकिशन सिंह सुरजीत को माला पहनाई तो हंसी का फव्वारा फूट पड़ा.

इस तरह की प्रतीकात्मक कार्रवाइयों से पंजाब के मसले पर विभिन्न पार्टियों के मतभेद दूर नहीं हो सकते. सुरजीत ने साफ-साफ कहा, "हम चाहते हैं कि सिमरनजीत सिंह मान शांति की कोशिशों में शामिल हों और आतंकवादियों से हिंसा छोड़ने की अपील करें." दूसरी ओर, भाजपा के अटलबिहारी वाजपेयी ने हिंसा न थमने की हालत में आतंकवादियों के खिलाफ सख्ती बरतने की जरूरत पर जोर दिया, "हालात से सख्ती से निबटने के लिए चारों ओर से दबाव पड़ेगा." वाजपेयी को जबकि भीड़ ने बड़े ध्यान से सुना, पूर्व मुख्यमंत्री सुरजीत सिंह बरनाला के भाषण के दौरान कुछ लोगों ने शोर-शराबा किया. उससे जाहिर हो गया कि अकाली राजनीति में बरनाला की हैसियत कितनी घटी है. दूसरी ओर पूर्व मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल के धुआंधार भाषण पर लोगों ने जमकर तालियां बजाईं.

स्पष्ट है कि विभिन्न अकाली गुटों के नेताओं के बीच आपसी मतभेद कायम हैं. वास्तव में अकाली गुटों में एकता की संभावनाएं और धूमिल हो गई हैं. बरनाला गुट की अहमियत घटती जा रही है तो उधर बादल गुट अकेला ही आगे बढ़ने पर आमादा दिख रहा है. इस भीषण आंतरिक द्वंद्व में मध्यमार्गी अकाली गुट अपना राजनैतिक लक्ष्य तय नहीं कर पा रहे हैं. लेकिन जो शख्स बाकी नेताओं के ऊपर हावी दिख रहा है वह है सिमरनजीत सिंह मान. बादल या शिरोमणि गुरद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष गुरचरण सिंह तोहड़ा के साथ समझौता न करके मान ने साफ कर दिया है कि वे फिलहाल अकेले ही चलना चाहते हैं. मान गुट को गांवों के सिखों में व्यापक समर्थन हासिल है इसलिए वह दूसरे गुटों को अलग रखने की जुर्रत कर सकता है.

पंजाब मसले पर नई सरकार की बड़ी उपलब्धि यह रही है कि वह मान को बातचीत के लिए राजी कर पाई है. रैली से दो दिन पहले मान ने दिल्ली में वी.पी. सिंह और राष्ट्रीय मोर्चा के दूसरे नेताओं से बातचीत की. यह बातचीत इसलिए महत्वपूर्ण थी क्योंकि इससे महज दो दिन पहले मान ने कहा था, "सरकार को हमें विश्वास में लेना

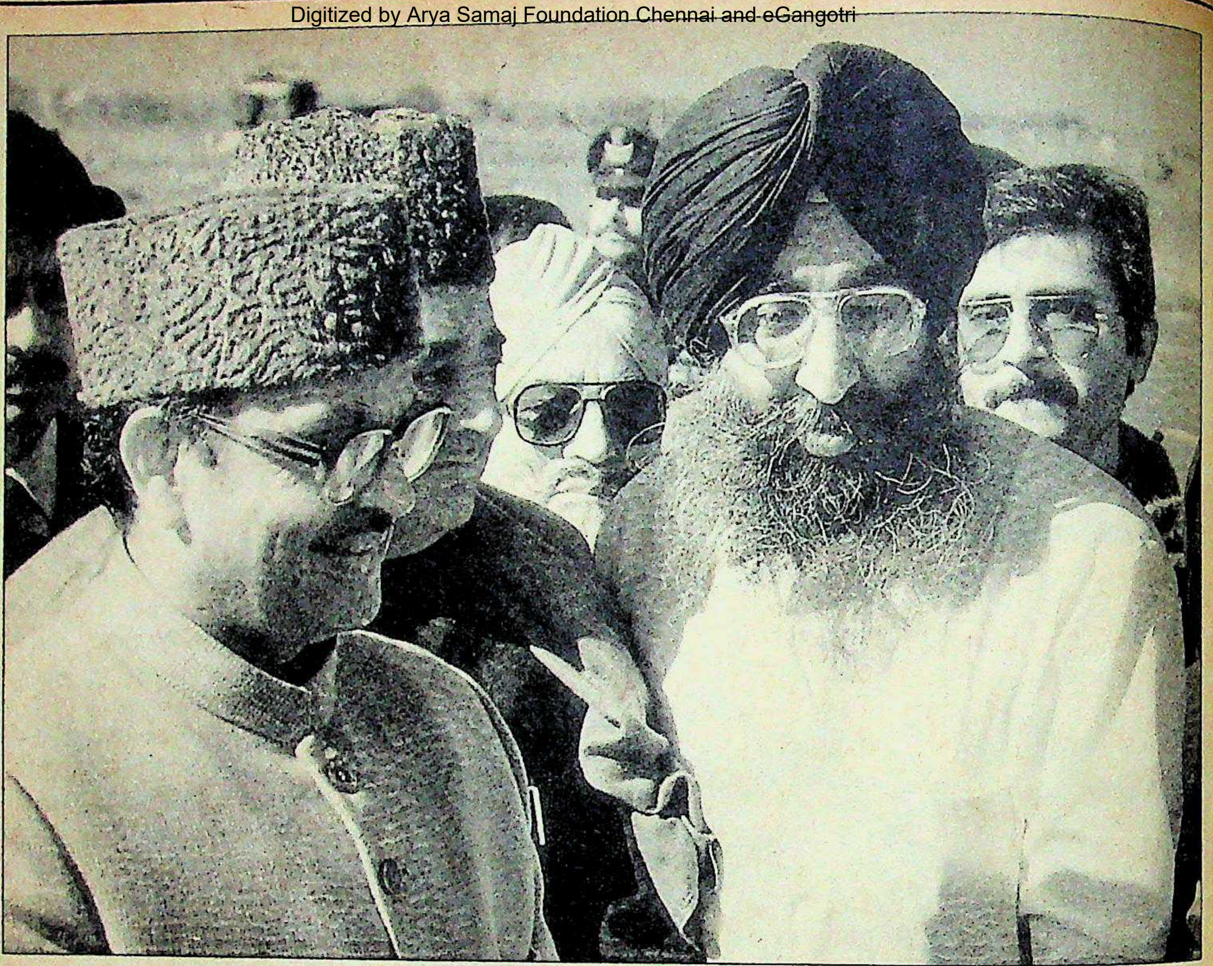

वी.पी. सिंह का स्वागत करते मान

चाहिए. मुश्किल यह है कि हमारे ऊपर हर चीज थोप दी जाती है और हमसे उम्मीद की जाती है कि हम उसे मान लें." भाजपा के अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी के साथ दो घंटे की उनकी बातचीत भी उतनी ही महत्वपूर्ण रही. इसके बाद मान ने अपने साथियों से कहा, "इस बातचीत से सुलह में मदद मिली है."

मान ने नई सरकार के साथ टकराव का विरोध किया है लेकिन 'सिखों के संहार' के लिए इंका की खुली आलोचना की है. उन्होंने कहा, "मेरी पार्टी राजीव गांधी और बूटा सिंह से कोई बात नहीं करना चाहती." उनकी पार्टी के दूसरे नेता सुच्चा सिंह ने कहा, "हम ऐसे लोगों से दूर ही रहेंगे. हम लोंगोवाल का रास्ता नहीं अपनाएंगे."

मान गुट के अधिकृत प्रवक्ता गुरतेज सिंह मानते हैं कि पंजाब के मामले का हल आसान नहीं है. वे कहते हैं, "हम पंजाब समझौते जैसी कोई चीज स्वीकार नहीं करेंगे. लेकिन हम मुद्दों पर सैद्धांतिक समझौते के लिए जोर देंगे." बातचीत के लिए माहौल बनाने के बारे में उनका मानना है कि "सिखों के मामले में, और पंजाब की जरूरतों के मामले में संविधान को बहाल किया जाना चाहिए." यह मांग सीधी-सादी तो दिखती है मगर विभिन्न अकाली गुटों और दूसरी राजनैतिक पार्टियों द्वारा संविधान की अलग-अलग व्याख्याओं के कारण यह मांग पेचीदा हो जाती है. उदाहरण के लिए, कृपाण लेकर चलने का मामला ही लिया जाए. इतने वर्षों तक यह मांग नहीं उठाई गई क्योंकि किसी भी अकाली सांसद ने संसद के भीतर तीन फुट लंबी तलवार लेकर जाने का आग्रह नहीं किया था. लेकिन पिछले पखवाड़े पंजाब के एक निर्दलीय सांसद ध्यान सिंह मंड ने संसद में कृपाण ले जाने की असफल कोशिश की तो इस मामले ने फिर से तूल पकड़ लिया. मान गुट की कुछ मांगें अव्यावहारिक भी हैं. जैसे जनरल वैद्य के हत्यारों सहित विभिन्न आतंकवादी गतिविधियों में शामिल सभी सिख अभियुक्तों को रिहा करने की उनकी मांग.

सिमरनजीत सिंह मान को बातचीत के लिए राजी करना विश्वनाथ प्रताप सिंह सरकार की एक बड़ी उपलब्धि ही मानी जाएगी

मान की स्थिति अभी अकाली राजनीति में पक्की नहीं हुई है. उन्हें उम्मीद है कि सरकार से सीधी बातचीत की उनकी अपील को आतंकवादी मान लेंगे. लेकिन लगता नहीं कि अधिकतर आतंकवादी गुट ऐसा करेंगे. खालिस्तान की मांग करने वाले गुटों की बात छोड़ भी दें तो ऑल इंडिया सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन भी मान गुट की इस बात से सहमत नहीं हुआ है कि आनंदपुर साहब प्रस्ताव के तहत भारत के अधीन ही स्वायत्तता की मांग की जाए. स्टुडेंट्स फेडरेशन के महासचिव हरमिंदर सिंह संधू ने हालांकि यह घोषणा की है कि "हम शांति की कोशिशों में अड़ंगा नहीं लगाएंगे," लेकिन उन्होंने 'इंडिया टुडे' से कहा, "खालिस्तान की मांग पर हम कोई समझौता नहीं करेंगे. सिखों के राजनैतिक

दर्शन को जो भी तोड़े-मरोड़ेगा, उसका हम विरोध करेंगे चाहे वह अकाली दल का मान गुट ही क्यों न हो."

लेकिन बदले हुए राजनैतिक माहौल में एक बुरी बात यह हुई है कि आतंकवादी गतिविधियां तेज हुई हैं. खुड्डियां की रहस्यमय मृत्यु चौंकाने वाली घटना है. इसके अलावा पुलिस से जबकि दमन की कार्रवाइयों को बंद करने के लिए कहा गया है, आतंकवादियों के हौसले बढ़ गए हैं. उन्होंने पिछले डेढ़ महीने में सुरक्षा कर्मचारियों को अपना निशाना बनाया है. दिसंबर में 40 सुरक्षा कर्मचारी मारे गए. यह अब तक की सबसे बड़ी संख्या है.

बटाला के पूर्व एसएसपी गोबिंदराम की जिस तरह से हत्या की गई उससे आतंकवादियों की पैठ का पता चलता है. जालंधर में पंजाब सशस्त्र पुलिस के बेहद सुरक्षित अहाते में गोबिंदराम के कार्यालय में बम रखकर भारी दुस्साहस का परिचय दिया गया. इसमें वे मारे गए. गोबिंदराम पर दो आतंकवादियों की पत्नियों को सताने के आरोप लगने के बाद पिछले सितंबर में उनके इकलौते बेटे की दिन-दहाड़े हत्या कर दी गई थी.

पाना इंडिया

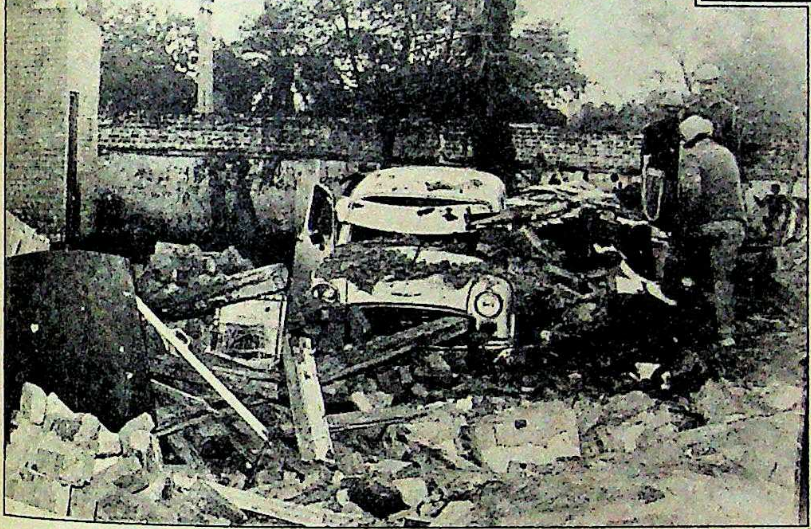

गोबिंदराम की जान लेने वाले विस्फोट का नजारा; (इनसेट) राम

खुड्डियां की शवयात्रा; (इनसेट) खुड्डियां

गोबिंदराम की हत्या से पुलिस का मनोबल और गिरेगा. नए राज्यपाल निर्मल मुकर्जी ने प्रशासन में किसी बड़े फेरबदल से और पुलिस अत्याचार के पुराने मामलों को खोलने से इनकार तो किया है लेकिन पुलिस के निचले महकमे में अकर्मण्यता छाई है. ऐसा इसलिए है क्योंकि मान ने अपनी पार्टी के लोगों को पुलिस अत्याचार के मामलों का हिसाब रखने को कहा है. इस महीने के शुरू में फरीदकोट की एक सभा में मान ने कहा, "दोषी पुलिसवालों को भी ए, बी, सी श्रेणियों में रखिए. हम उनके साथ वैसा ही सहयोग करेंगे जैसा वे हमारे लड़कों के साथ करते हैं." इस सभा की निगरानी कर रहे वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने बाद में कहा, "इस तरह की धमकियों के सामने हम पुलिसवालों से आतंवादियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?"

नए राज्यपाल ने सावधानी से कदम उठाए हैं. उन्होंने आम माफी से इनकार किया है लेकिन साथ ही आतंकवादियों की मदद करने या राष्ट्र विरोधी नारे लगाने के आरोप में गिरफ्तार लोगों के मामलों की समीक्षा के बाद 1600 लोगों की रिहाई के आदेश दिए हैं. यह सब गैर-सिखों की प्रतिक्रियाओं का खयाल रखते हुए बिना हो-हल्ले के किया गया है. प्रशासन में लोगों का भरोसा बहाल करने के लिए मुकर्जी ने शिकायत निबटारा मशीनरी को दुरुस्त किया है और बड़े अधिकारियों को गड़बड़ी वाले इलाकों का दौरा करने के आदेश दिए हैं. उन्होंने कहा, "मैं चाहूंगा कि प्रशासन का चेहरा पुलिस जैसा सख्त न दिखे. लेकिन साथ ही पुलिस का असर भी कायम रहे." पंजाब के अनुभवों से लगता है कि यह एक मुश्किल काम होगा.

मुकर्जी के लिए हरेक फैसला मुश्किल भरा साबित होगा. फिलहाल वे इस दुविधा में हैं कि राज्य विधानसभा चुनाव कराने की सिफारिश करें या नहीं. प्रशासन को डर है कि अगर मान गुट को बहुमत मिल गया तो वह विधानसभा में खालिस्तान के समर्थन में प्रस्ताव पास करवा सकता है. लेकिन गुरतेज सिंह इससे इनकार करते हुए कहते हैं, "हमारे सांसदों ने क्या ऐसा किया है?"

इसलिए नए प्रशासन का पहला काम विभिन्न पार्टियों में आपसी विश्वास और प्रशासन में लोगों का भरोसा बहाल करना होगा. जब तक यह नहीं होता, रक्तपात, आक्रोश और संदेह की कई काली परछाइयां शांति की कोशिशों पर पड़ती रहेंगी.

—कंवर संधू

बोफोर्स घोटाला

तोप में फिर बारूद

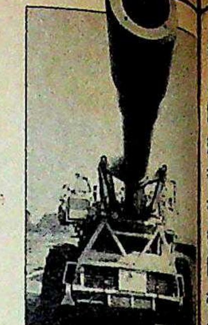

बोफोर्स अधिकारियों, भारतीय अफसरों और बिचौलियों के खिलाफ फौजदारी मुकदमा चलाने के नई सरकार के फैसले से यह तोप घोटाला फिर गरमागरम बहस का मुद्दा बन गया है. अब अगली चुनौती अदालत में आरोपों को साबित करने की होगी.

बोफोर्स तोप के 1,700 करोड़ रु. के सौदे में 64 करोड़ रु. की दलाली खाए जाने के रहस्योद्घाटनों के बाद अब पहली दफा भारत सरकार ने इस मामले में फौजदारी मुकदमा चलाने का फैसला किया है. यह मुकदमा बोफोर्स कंपनी के वरिष्ठ अधिकारियों, भारतीय अधिकारियों और बिचौलियों पर चलाया जाएगा जो मार्च 1986 में भारत सरकार और बोफोर्स कंपनी के बीच हुए सौदे से जुड़े रहे हैं.

यह फैसला कैबिनेट सचिव विनोद पांडे के विशालकाय दफ्तर में 12 जनवरी को वरिष्ठ अधिकारियों की बैठक में किया गया. इस बैठक में रक्षा सचिव नरेश चंद्र, कार्मिक सचिव पी. दंडपाणि, सीबीआई के निदेशक राजेंद्र शेखर और प्रधानमंत्री कार्यालय के संयुक्त सचिव भूरेलाल शामिल थे. इस घोटाले की जांच के काम से जुड़े एक अधिकारी ने कहा, "इसमें संदेह नहीं कि नई सरकार नतीजा चाहती है. और लीपापोती की बात तो दूर, हममें से कोई भी इसकी अनदेखी करने की जुर्रत नहीं कर सकता."

फौजदारी मुकदमे का मुख्य जोर इन मुद्दों पर होगा:

- ▶ केंद्र सरकार से कुछ बोफोर्स अधिकारियों ने धोखाधड़ी की.
- ▶ बोफोर्स कंपनी के और कुछ भारतीय अधिकारियों ने केंद्र सरकार को राजस्व का घाटा देने की साजिश की.
- ▶ दलाली पाने वालों के सुरागों को मिटाने के लिए दस्तावेजों में हेराफेरी और उन्हें पिछली तारीखों से बनाने की कोशिश की गई.
- ▶ कुछ लोगों ने काली कमाई की और विश्वासघात किया.

सरकारी सूत्रों के मुताबिक फौजदारी मुकदमा इस तरह तैयार किया गया है कि स्वीडन और स्विट्जरलैंड दोनों की सरका को जवाब देना ही पड़ेगा. हालांकि दला की ज्यादातर रकम स्विट्जरलैंड के गुप्त बै खातों में जमा की गई है पर वहां की सरका भारत से इस आधार पर सहयोग करने मुकरती रही है कि भारत सरकार ने अ तक कोई फौजदारी मामला दर्ज नहीं किया जिस पर गौर करना स्विट्जरलैंड के कानू के मुताबिक जरूरी लगे.

प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने कहा "बोफो जैसे रक्षा सौदे में दलाली खाने वालों का ना पता लगाने का जनादेश दिया गया है. मे सरकार इस जनादेश से धोखा नहीं करें बोफोर्स को नाम बताने ही होंगे. और जानते हैं कि हमें बहलाया नहीं जा सकता.'

हालांकि फौजदारी मुकदमे चलाने फैसला वी.पी. सिंह के प्रधानमंत्री बनने तुरंत बाद ही किया गया परंतु कई लोगों मानना है कि नई सरकार इस मुद्दे पर नर बरत रही है क्योंकि उसके एक कैबिनेट मं

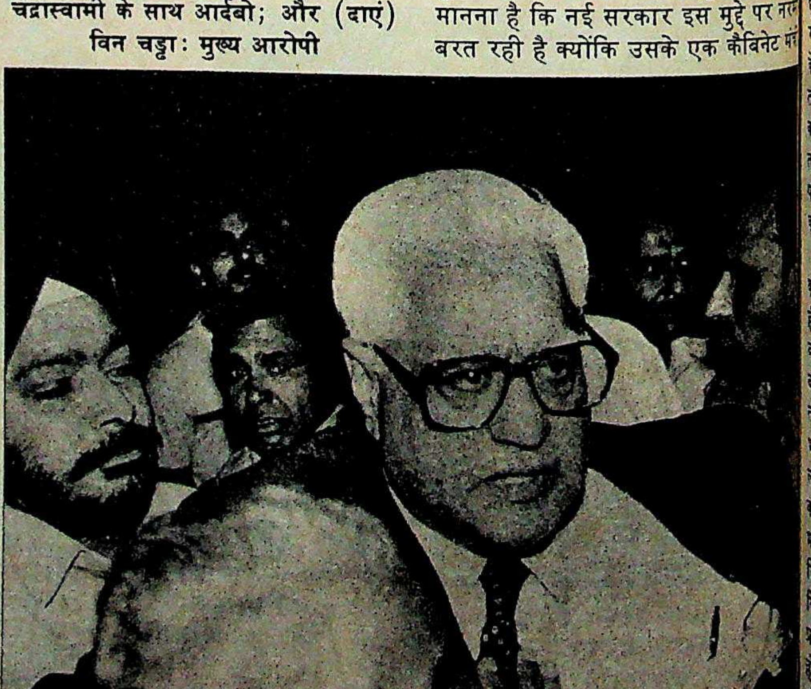

चंद्रास्वामी के साथ आर्दबो; और (दाएं) विन चड्ढा: मुख्य आरोपी

प्रमोद पु

आचरण पर उंगली

कात्रे, भटनागर, अरोड़ा आदि प्रमुख अधिकारियों से पूछताछ किए जाने की उम्मीद है. कुछ पर मुकदमा भी चल सकता है

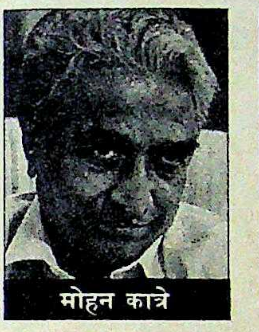
मोहन कात्रे

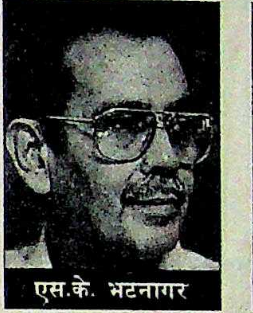
एस.के. भटनागर

गोपी अरोड़ा

के फंसने की संभावना है.

लेकिन खुद अपनी ही विश्वसनीयता दांव पर लगे होने के कारण वी.पी. सिंह दोषियों का पता लगाने की चुपचाप कोशिशें करते रहे. इसे प्रभावी ढंग से करने के लिए उन्होंने रक्षा और कार्मिक दोनों विभागों को अपने पास ही रखा. एक पखवाड़े तक वे इस मुद्दे से जुड़ी 200 फाइलों की जांच करते रहे और साथ में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठकें भी करते रहे.

हालांकि उन्होंने लीपापोती में शामिल होने की संभावना वाले अधिकारियों की टोली को ठिकाने लगा दिया परंतु प्रधानमंत्री कार्यालय और रक्षा मंत्रालय के कुछ प्रमुख अधिकारियों को इसलिए बनाए रखा कि उन्हें उनके दफ्तर द्वारा लिए गए पहले के फैसलों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सके. लेकिन निगरानी और प्रवर्तन एजेंसियों से कई अधिकारियों की छुट्टी कर दी गई. सीबीआई निदेशक पद पर मोहन कात्रे की जगह पिछले साल अक्तूबर में आए अरुण मुकर्जी को हटाकर राजस्थान काडर के आईपीएस अधिकारी राजेंद्र शेखर को लाया गया. प्रवर्तन निदेशक के.एल. वर्मा की भी छुट्टी कर दी गई. खुफिया ब्यूरो (आईबी), राजस्व विभाग और केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड के उच्च अधिकारियों का भी तबादला किया गया. बोफोर्स कांड से जुड़े इस अभियान में तालमेल के लिए 'विनोद पांडे भूरेलाल को प्रधानमंत्री कार्यालय में ले आए.

लेकिन मामले की जांच का दारोमदार सीबीआई पर ही है. पिछले करीब तीन वर्षों से इस पर दोषियों का बचाव करने और उनकी तलाश में बेमतलब दुनिया भर की सैर करने के आरोप लगाए जाते रहे हैं. जांच का काम डीआईजी रैंक के के. माधवन को सौंपा गया जिन्हें कात्रे के समय दरकिनार कर दिया गया था. प्रासंगिक दस्तावेजों से लैस होकर माधवन ने बोफोर्स कंपनी और दूसरे लोगों पर पक्का मुकदमा दायर करने की संभावना पर महाधिवक्ता सोली सोराबजी, महान्यायवादी अशोक देसाई और केंद्र सरकार के अन्य कानूनविदों से सलाह-मशविरा किया. दो हफ्ते से अधिक समय तक इस पर काम करने के बाद माधवन ने 45 पृष्ठों का एक मसौदा सरकार और कानून मंत्रालय की मंजूरी के लिए पेश किया. यही मसौदा पहली 'एफआईआर' का आधार बनने वाला है.

असली परीक्षा तो तब होगी जब इस एफआईआर पर कार्रवाई शुरू होगी. वरिष्ठ अधिकारियों से पूछताछ के अलावा सीबीआई को सबूतों की खोज में एक दल स्विट्जरलैंड और स्वीडन भेजना होगा. हालांकि अभी यह तय नहीं हो पाया है कि किन-किन लोगों पर आरोप लगाया जाएगा परंतु सीबीआई ने विन चड्ढा, जिनकी एनाट्रॉनिक जनरल कॉर्पोरेशन भारत में बोफोर्स की मुख्य एजेंट थी, के अलावा बोफोर्स के पूर्व प्रबंध निदेशक मार्टिन आर्दबो को मुख्य आरोपी बनाने का फैसला किया है. पिटको. मोरेस्को और दूसरी विदेशी कंपनियों को सह-आरोपी बनाया जाएगा. सरकार ने हिंदुजा बंधुओं में से एक पर इस घोटाले में शामिल होने का आरोप लगाने का मन बनाया था परंतु और सबूतों के आने तक इंतजार करने का फैसला किया गया.

सौदा रद्द करने के पक्ष में

अरुण सिंह, पारासरन और सुंदरजी सौदा रद्द करने के पक्ष में थे पर राजीव ने उनकी सिफारिशें दरकिनार कर दीं

अरुण सिंह

के. पारासरन

के. सुंदरजी

सीबीआई के मुताबिक एफआईआर स्विट्जरलैंड और स्वीडन के कानूनों की जरूरतों के मद्देनजर बनाई गई. सरकार का मानना है कि संयुक्त संसदीय समिति और सीएजी की रिपोर्ट समेत कई दस्तावेज ऐसे हैं जिनसे लीपापोती का मामला बनता है.

सीबीआई का आरोप है कि बोफोर्स ने स्वीडिश नेशनल ऑडिट ब्यूरो से भी सहयोग नहीं किया. माधवन के मसौदे के मुताबिक, "स्वीडिश नेशनल ऑडिट ब्यूरो को लेखा जांच पूरी करने में बोफोर्स के सहयोग न देने के नाजायज रवैए से ही इस धारणा को बल मिलता है कि बोफोर्स कंपनी भारत के अधिकारियों समेत कुछ लोगों के साथ षड्यंत्र में शामिल थी."

अगर षड्यंत्र का आरोप नाम उगलवाने में मददगार नहीं होता तब सीबीआई बोफोर्स अधिकारियों पर भारत के साथ सौदे में कोई बिचौलिया न रखने का करार तोड़ने का आरोप लगाएगी. सीबीआई ने बोफोर्स पर भारत सरकार से झूठ बोलने का भी आरोप लगाया है. मसलन, जब दलाली देने का आरोप लगा तो बोफोर्स ने क़हा कि उसने सिर्फ करार समेटने का भुगतान किया है. और जब पता चला कि भुगतान स्वीडिश बैंक के खातों में किए गए तब बोफोर्स ने माना कि यह दलाली की ही रकम थी.

सीबीआई अधिकारियों का मानना है कि ये आरोप स्वीडन और स्विट्जरलैंड दोनों देशों में बोफोर्स के खिलाफ कानूनी कार्रवाई के लिए पर्याप्त हैं. इन दोनों देशों के कानूनों के तहत बैंक गोपनीयता की शर्त तोड़ सकते हैं बशर्ते उनके ग्राहकों पर घूसखोरी, धोखाधड़ी या साजिश का आरोप हो.

भारत सरकार के इस फैसले से भी बोफोर्स मुश्किल में पड़ेगी कि नाम उजागर न करने तक कंपनी के साथ तकनीकी सहयोग के करार पर अमल नहीं होगा. बोफोर्स के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय समाचार माध्यमों के जरिए भी मुहिम चलाने की योजना है. वी.पी. सिंह जोर देकर कहते हैं, "चूंकि बोफोर्स ने करार की अवहेलना करके दलाली का भुगतान किया है, इसलिए वही हमें दलालों के नाम बता सकती है. हम यह जानने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं."

भारत में इस अभियान के तहत पूर्व वित्त सचिव गोपी अरोड़ा, पूर्व रक्षा सचिव एस.के. भटनागर, पूर्व सेना प्रमुख जनरल के. सुंदरजी, पूर्व रक्षा राज्यमंत्री अरुण सिंह, पूर्व महाधिवक्ता के. पारासरन, पूर्व सीबीआई प्रमुख मोहन कात्रे, सीमा शुल्क विभाग के प्रमुख बी.वी. कुमार और कई मध्यम दर्जे के अधिकारियों से पूछताछ होगी. कुछ पर बाद में षड्यंत्र में शामिल होने के भी आरोप लगने की उम्मीद है. खासकर भटनागर की भूमिका पर उंगली उठाई गई है. सीबीआई के मुताबिक उन्होंने कोई एजेंट न रखने के सरकारी फैसले पर अमल नहीं किया.

सीबीआई को यह भी शक है कि कई भारतीय अधिकारियों ने बोफोर्स के खिलाफ किसी कार्रवाई को तब तक टाले रखा जब तक समझौते के तहत 400 तोपों की पूरी खेप नहीं पहुंच गई. इन अधिकारियों ने स्वीडन के सरकारी वकील लार्स रिंगबर्ग के साथ सहयोग नहीं किया, न ही यह बताया कि करार पूरा हो जाने के बाद संयुक्त संसदीय समिति की पड़ताल का कोई औचित्य नहीं रह जाता. सीबीआई के एक अधिकारी बताते हैं, "यह साफ हो चुका है कि पूरी सरकारी मशीनरी जांच को टालने, असली तथ्यों की लीपापोती में लगी थी."

हालांकि राजीव का नाम अभी उन लोगों की सूची में नहीं है, जिनसे पूछताछ की जानी है. लेकिन सीबीआई का इरादा उनसे कुछ ऐसे सवाल पूछने का है, जो उन्हें परेशानी में डाल सकते हैं. एक सवाल जो उन्हें निश्चित ही मुसीबत में डाल सकता है, वह यह है कि उन्होंने कई प्रमुख व्यक्तियों के इस सुझाव पर क्यों नहीं ध्यान दिया कि तोप सौदा रद्द कर दिया जाए. संसद के पटल पर रखे दस्तावेजों से यह साफ है कि अरुण सिह, सुंदरजी, पूर्व रक्षामंत्री कृष्णचंद्र पंत और परासरन भी सौदा रद्द करने के पक्ष में थे (देखें बॉक्स). लेकिन राजीव ने उनकी सिफारिशों को दरकिनार कर दिया.

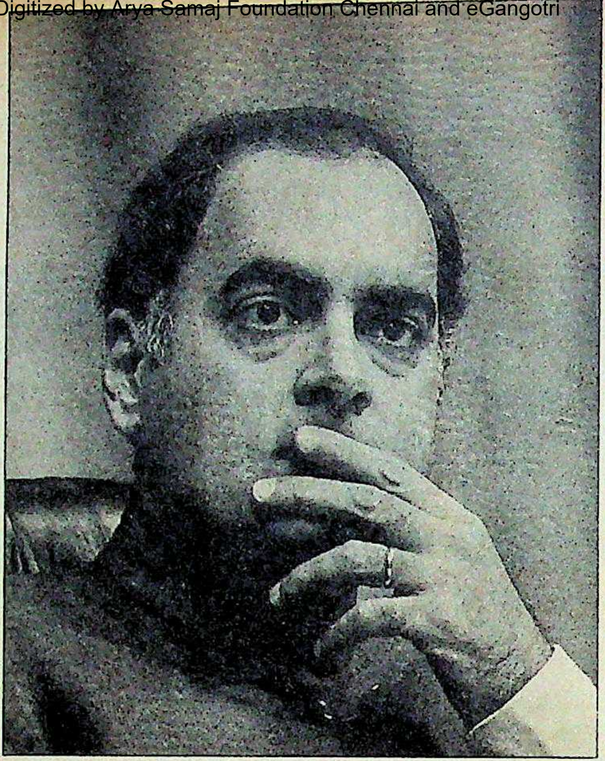
प्रमोद पुष्करणा

राजीव : गोलमोल नीति

यह भी रहस्यमय है कि पिछली सरकार ने न तो सौदा रद्द करने के सुझावों पर अमल किया और न फौजदारी मुकदमा चलाने पर विचार ही किया. स्वीडन और स्विट्जरलैंड की सरकारों से इस आधार पर और जानकारी मांगी गई कि भारत में कुछ लोग कर से बचना चाह रहे हैं. यह गैर-आपराधिक माना जाता है. सीबीआई का मानना है कि प्रधानमंत्री कार्यालय और भटनागर द्वारा इन सुझावों के प्रति ठंडा रवैया अपनाना एक पारिस्थितिक साक्ष्य बनता है.

अब इन सबूतों को पहले कानून की कसौटी पर खरा उतरना होगा. लेकिन इससे पहले सरकार को कई अड़चनों से पार पाना है. मसलन, विन चड्ढा और मार्टिन आर्दबो को ढूंढ़कर भारतीय अदालत में पेश करना. यह इसलिए मुश्किल है क्योंकि चड्ढा और उसका बेटा देश छोड़कर जा चुके हैं. इसके अलावा, स्विस सरकार तभी कोई सूचना देने पर राजी होगी जब अभियुक्तों का अपराध साबित हो जाए. सीबीआई को भरोसा है कि फर्जी कंपनियों को ढूंढ़ निकालने में इंटरपोल उसकी सहायता करेगी. पर सबसे ज्यादा उम्मीद स्वीडन के सरकारी वकील पर लगी है जिन्होंने राजीव सरकार द्वारा और सूचना देने से इनकार के बाद जांच बंद कर दी थी.

लेकिन अगर इंका, बोफोर्स और बाकी अभियुक्त तकनीकी कारणों से इस मामले को खारिज करवाने में सफल हो जाएं तो ये तमाम तैयारियां धरी की धरी रह सकती हैं. लेकिन जिस तरह बड़े-बड़े कानूनदां इस मुद्दे पर सिर खपा रहे हैं और देश की बड़ी-बड़ी खुफिया एजेंसियां दिन-रात इसमें जुटी हैं, इन सबके मद्देनजर यह संभावना कम ही है. फिर बोफोर्स मामले पर तो प्रधानमंत्री की प्रतिष्ठा ही दांव पर लगी है. अगर उनकी सरकार इस मामले की गुत्थियां नहीं सुलझाती तो बहुत मुमकिन है बोफोर्स का ग्रहण राजीव सरकार की तरह राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को भी लग जाए.

—प्रभु चावला

रहस्यमय टालमटोल

10 जून 1987

"हमें सौदा रद्द करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए क्योंकि हमारी विश्वसनीयता दांव पर है."

—अरुण सिंह, कृष्णचंद्र पंत के जरिए राजीव गांधी से

13 जून 1987

"सौदा रद्द करने की धमकी उन्हें यह जताने के लिए पर्याप्त होगी कि हमारे लिए यह जानकारी हासिल करना कितना जरूरी है."

—थल सेनाध्यक्ष के. सुंदरजी, रक्षा सचिव एस.के. भटनागर से

15 जून 1987

"रक्षा राज्यमंत्री ने मंत्रालय का संचालन बहुत बढ़िया से किया है. लेकिन यदि व्यक्ति की अंतरात्मा साफ है तो डर किस बात का?"

—राजीव गांधी, अरुण नेहरू को रक्षामंत्री के.सी. पंत के जरिए

21 जुलाई 1987

प्रधानमंत्री का नोट रक्षा मंत्रालय के पास 36 दिन बाद पहुंचता है. तब तक अरुण सिंह इस्तीफा दे चुके थे.

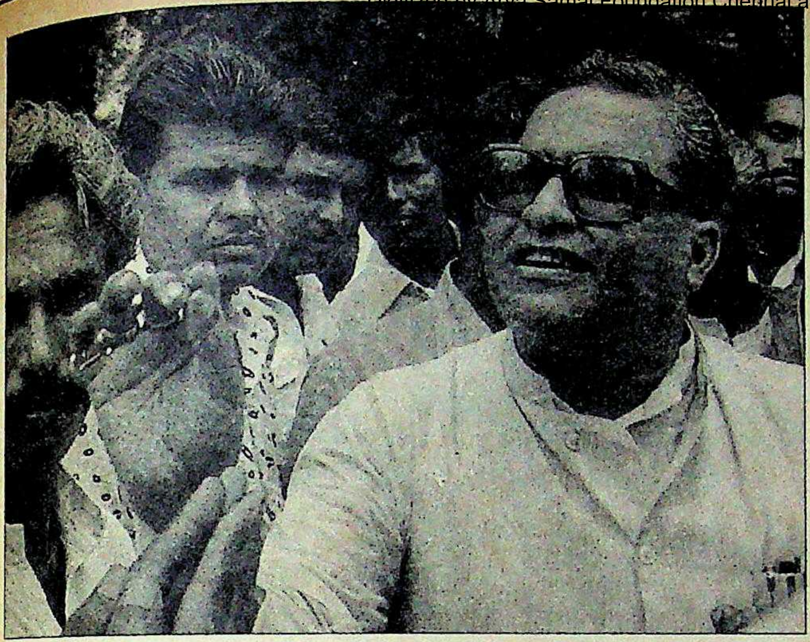

मिश्र अपने समर्थकों के साथ

बिहार

तबादलों पर तकरार

मिश्र सरकार के प्रशासनिक उलटफेर से चुनाव आयोग खफा

इससे पहले चुनाव आयोग से किसी राज्य सरकार का ऐसा खुलेआम टकराव नहीं हुआ. बिहार की एक महीने पुरानी जगन्नाथ मिश्र सरकार द्वारा भारी पैमाने पर किए गए तबादलों का विरोध करते हुए चुनाव आयुक्त आर.वी. एस. पेरीशास्त्री ने फतवा जारी कर दिया कि जगन्नाथ मिश्र अपने को 'कामचलाऊ मुख्यमंत्री' मानकर ही काम करें. इससे मिश्र भी भड़क उठे. उन्होंने आरोप लगाया कि 'आयोग केंद्र की राजनैतिक शह पर काम कर रहा' है और 'केंद्र उनकी सरकार से राजनैतिक बदला भंजा रहा' है.

वैसे देखा जाए तो ये तबादले मिश्र ने अपने अधिकार के तहत ही किए. चुनाव की अधिसूचना जारी होने के बाद चुनाव कार्य से संबंधित अधिकारियों के तबादले चुनाव आयोग की इजाजत के बिना नहीं किए जा सकते और अभी बिहार विधानसभा के चुनाव के लिए अधिसूचना जारी नहीं हुई है. फिर, राज्य सरकार को कामचलाऊ सरकार कहना भी किसी तरह तर्कसंगत नहीं माना गया. लगता है आयोग न चाहते हुए भी मिश्र के हाथों खेल गया और उन्हें आगामी विधानसभा चुनाव लड़ने के लिए एक मुद्दा उसने पकड़ा दिया. मिश्र इसका उपयोग भी निश्चित ही करेंगे. दूसरी तरफ चुनाव आयोग की चिंता भी गैरवाजिब नहीं लगती. पिछले साल 6 दिसंबर को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के तुरंत बाद से मिश्र ने राज्य की नौकरशाही में उथल-पुथल मचा दी है. अभी चंद महीने पहले ही नियुक्त हुए अफसरों का भी तबादला कर दिया गया. कुछ मामलों में आईएएस अधिकारी की जगह राज्य सिविल सेवा के ऐसे अधिकारी बिठा दिए गए जो अपने राजनैतिक आका के प्रति ज्यादा निष्ठावान हो सकते हैं. महत्वपूर्ण जगहों पर मिश्र के वफादार जा विराजे.

> **पेरीशास्त्री ने फतवा जारी कर दिया कि जगन्नाथ मिश्र अपने को 'कामचलाऊ मुख्यमंत्री' मानकर ही काम करें. पर बकौल मिश्र 'आयोग केंद्र की राजनैतिक शह पर काम कर रहा' है**

और जहां तक तबादलों की बात है ऐसा तो होता ही है कि हर नया मुख्यमंत्री खास-खास जगहों पर अपने निष्ठावान अफसरों को ला बिठाता है. राज्य की नौकरशाही विभिन्न इंका नेताओं के निष्ठावान गुटों में बंटी हुई है. एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, "जरूरी नहीं कि ऐसी निष्ठाओं का कोई राजनैतिक आधार ही हो."

ताबड़तोड़ तबादलों की इस गहमागहमी का सबसे अच्छा उदाहरण भोजपुर जिले में मिलता है. 1988 में भोजपुर के जिला मजिस्ट्रेट मनोज श्रीवास्तव ने अभी एक साल भी पूरा नहीं किया था कि उन्हें हटाकर नागेंद्र तिवारी को वहां बिठा दिया गया. पर लोकसभा चुनाव नजदीक आते ही नागेंद्र तिवारी को भी हटा दिया गया और उनकी जगह आशिक इब्राहिम नियुक्त हुए. दोमों ही मौकों पर तत्कालीन मुख्यमंत्रियों ने कहा कि ये तबादले तब के केंद्रीय सूचना व प्रसारण राज्यमंत्री के.के. तिवारी के इशारे पर हुए और इसलिए वे कुछ नहीं कर सकते. अभी इब्राहिम को इस पद पर बैठे पांच महीने भी नहीं गुजरे कि जगन्नाथ मिश्र की सरकार ने उन्हें भी हटा दिया. उनके तबादले के लिए राजनैतिक कारण यह बताया गया कि वे लोकसभा चुनाव में जिले में इंका की हार नहीं टाल सके.

इतना ही नहीं, प्रखंड विकास अधिकारी, आपूर्ति अधिकारी, अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट और पुलिस उपाधीक्षक के पदों के लिए तबादले भी इतने ताबड़तोड़ किए गए कि उनकी सही संख्या सचिवालय में भी उपलब्ध नहीं. प्रखंड विकास अधिकारी विधानसभा चुनाव में निर्वाचन अधिकारी होते हैं. उनके विभागीय तबादले किए गए. जनता दल सूत्रों के अनुसार ऐसे अफसरों की संख्या करीब 100 है. एक अधिकारी ने बताया, "फैसले इतनी तेजी से लिए गए कि हम पर पहाड़ टूट पड़ा. अब सांस लेने की फुरसत मिलेगी तभी तो हम तथ्यों को तरतीब से लगाएंगे."

तबादलों का पहाड़ इस तरह से टूटेगा इसका अंदाज तो राज्य जनता दल को भी नहीं था. जनता दल के एक नेता के अनुसार, "दरअसल हम यह सोच भी नहीं सके थे कि वे इतने कम समय में इस कदर उलटफेर कर देंगे." जाहिर है कि वे नौकरशाही में मिश्र के संपर्कों और उनकी दखल का सही अंदाजा नहीं लगा सके जबकि मिश्र के बारे में तो यहां तक कहा जाता है कि राज्य में हर कहीं उनका

अपना कोई-न-कोई आदमी जरूर है.

राज्य के मुख्य निर्वाचन अधिकारी सतीश भटनागर के अनुसार, "13 जनवरी तक सरकार ने उन अनुमंडल अधिकारियों और अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेटों की सूची नहीं दी जिनका तबादला किया गया है. इससे पहले जो सूची दी गई थी उसमें 22 जिला मजिस्ट्रेटों, 19 पुलिस अधीक्षकों और डीआईजी तथा एक आयुक्त के तबादले का ब्यौरा है. मैंने यह सूची चुनाव आयोग को भेज दी थी."

पर जनता दल के महासचिव सुबोधकांत सहाय के अनुसार सिविल सेवा के 132 और पुलिस के 28 अधिकारियों के तबादले किए गए हैं. सहाय और जनता दल के कई नेताओं ने मिश्र सरकार को बरखास्त करने की मांग की है. सहाय कहते हैं, "तबादले तो हो चुके, और चुनाव की अधिसूचना भी अब किसी भी समय जारी हो सकती है. इसलिए तबादलों में उलटफेर का समय अब नहीं बचा." दल के नेताओं का मानना है कि चुनाव के लिए जनता का जो रुख है उसे देखते हुए अधिकारियों का महत्व ज्यादा नहीं रह जाएगा. पर वे मानते हैं कि अधिकारियों की लगाम मिश्र के हाथ में नहीं होनी चाहिए. लेकिन कुछ दूसरे नेताओं का मानना है कि सभी मुख्य ठिकानों पर मिश्र के आदमी बैठे हैं इसलिए चुनाव में गड़बड़ी की जा सकती है. पर मुख्यमंत्री इस सबसे एकदम अविचलित हैं. उनका कहना है कि ये तबादले "जनहित में हैं" और "निष्पक्ष तथा शांतिपूर्ण चुनाव करवाने के लिए किए गए हैं."

पेरीशास्त्री : सख्त रवैया

दूसरी तरफ लगता है कि चुनाव आयोग भी पूरे मामले से बुरी तरह चिढ़ गया है. उसने 21 दिसंबर तथा 1 जनवरी को दो पत्र भेजकर राज्य सरकार से कहा है कि वह चुनाव कार्य से जुड़े अधिकारियों का तबादला रोके. पर मुख्यमंत्री पर इनका कोई असर नहीं पड़ा. वे कहते हैं, "यह निर्वाचित सरकार है और जब तक चुनाव की अधिसूचना जारी नहीं होती आयोग दखलंदाजी नहीं कर सकता. चुनाव आयोग ने हमारे अधिकारियों पर कीचड़ उछालकर न सिर्फ गलत काम किया है वरन उनका अपमान भी किया है."

मिश्र ने केंद्र को अपनी सरकार बरखास्त करने की चुनौती दे दी है. इससे केंद्र में बैठी राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार चक्कर में पड़ गई है. अगर वह कुछ नही करती तो उसे न सिर्फ कमजोर समझा जाएगा बल्कि यह भी माना जाएगा कि उसने चुनाव आयोग के फैसले को कोई तरजीह नहीं दी. और अगर वह मिश्र सरकार को बरखास्त करती है तो वे शहीद बन जाएंगे और उन्हें एक बढ़िया चुनावी मुद्दा मिल जाएगा. **—उत्तम सेनगुप्त**

नियुक्तियां

अपनों पे करम

बिंदेश्वरी दुबे पहले मुख्यमंत्री थे जिन्होंने कायदे-कानून को ताक पर रखकर वरिष्ठ अधिकारियों के तबादलों का अधिकार हथिया लिया था. पहले यह काम मंत्रिमंडल का होता था. दुबे के बाद आए मुख्यमंत्रियों ने सब कुछ जस का तस चलने दिया. नतीजा यह है कि मुख्यमंत्री आवास ही तबादलों के 'धंधे' का केंद्र बन गया है.

मिश्र ने अपने 32 समर्थकों को विभिन्न बोर्डों और निगमों का प्रमुख बनाकर अगले चुनाव के लिए पर्याप्त जन-धन जुटा लिया है. कुछ महत्वपूर्ण नियुक्तियां निम्नलिखित हैं:

► डी.एन. सहाय आईजी (रेलवे) को कानून एवं व्यवस्था का अतिरिक्त भार भी दिया गया है. विश्वास किया जाता है कि सहाय ने विधानसभा चुनाव में मिश्र को पूरा समर्थन देने का वचन दिया है.

► सहकारी संस्थाओं के रजिस्ट्रार के पद पर वी. जयशंकर की नियुक्ति में राज्य के तथाकथित सहकारिता माफिया के नेता और पूर्व इंका सांसद तपेश्वर सिंह का हाथ देखा जा रहा है. खबर है कि माफिया ने विभिन्न सहकारिता संस्थाओं में अपने लोगों की नियुक्ति करवाने की शर्त पर चुनाव में मिश्र को समर्थन देने का वादा किया है.

► मिश्र सरकार ने 20 से भी अधिक एसएसपी के तबादले किए हैं.

► जिन जिलाधिकारियों का तबादला किया गया है, उनमें से कई तो अपने पद पर छह महीने भी पूरे नहीं कर पाए थे. कई तो लोकसभा चुनाव के सिलसिले में बदले गए थे. इनमें वैशाली के जिला मजिस्ट्रेट अंजनि कुमार सिंह, छपरा के ए.पी. पुर्ती, रोहतास के जे.एन. त्रिपाठी, मधुबनी के एम.पी. शुक्ल, समस्तीपुर के भानुप्रताप शर्मा, दुमका के जे.पी. शर्मा और भोजपुर के आशिक इब्राहिम शामिल हैं.

► मुजफ्फरपुर और नालंदा के एसपी को अपने पद पर छह महीने भी पूरे नहीं हुए थे कि तबादले का फरमान आ पहुंचा. उधर पटना में एक अपेक्षाकृत जूनियर आईपीएस अधिकारी अरुण कुमार चौधरी को वरिष्ठ आरक्षी अधीक्षक बना दिया गया. कहते हैं—चौधरी की पहुंच राज्य के कई आला इंका नेताओं तक है.

► पटना के उप विकास आयुक्त के पद पर कार्य कर रहे शिशिर कुमार सिन्हा को सिवान का जिला मजिस्ट्रेट बनाकर भेज दिया गया. सिन्हा पटना से हारे हुए सांसद डॉ. सी.पी. ठाकुर के दामाद हैं.

► यही नहीं, तीन पूर्व कुलपतियों को भी, जिनमें से दो अवकाशप्राप्त हैं, प्रमुख स्थानों पर बिठाया गया है. ये तीनों जगन्नाथ मिश्र के खासमखास हैं. के.के. मंडल को सतर्कता बोर्ड का उपाध्यक्ष बनाया गया है, जे.सी. कुंद्रा को राज्य बिजली बोर्ड का अध्यक्ष नियुक्त किया गया है, डॉ. अनुज कुमार धान को रांची प्रांतीय विकास प्राधिकरण का उपाध्यक्ष बनाया गया है. राज्य सरकार ने योग्य माने जाने वाले वित्त सचिव मुकुंद प्रसाद को भी बदल दिया है.

► इंका विधायक भरत प्रसाद सिंह को पुल निर्माण निगम का अध्यक्ष बनाया गया है, जो एक जाने-माने ठेकेदार हैं.

► जगन्नाथ मिश्र अपने निकटतम व्यक्ति इंदुकांत मिश्र को भी विशेष कार्याधिकारी बनाकर ले आए हैं.

► ब्राह्मणों के प्रभुत्व क्षेत्र मिथिलांचल में भी सरकार ने अफरातफरी करके अनेक ब्राह्मण अनुमंडल अधिकारी नियुक्त किए हैं.

इन तबादलों पर चुनाव आयोग नें आपत्ति उठाई है. इनके अलावा राज्य सरकार ने कई सौ इंजीनियरों और डॉक्टरों को भी इधर-उधर किया है. इनमें से कई निलंबित थे पर उनके खिलाफ पहले लगाए गए आरोप वापस ले लिए गए हैं. **—उत्तम सेनगुप्त**

हैं।"
आयोग
गया है.
को दो
है कि
यों का
इनका
है, "यह
चुनाव
आयोग
आयोग
छालकर
उनका

रखास्त
में बैठी
पड़ गई
उसे न
यह भी
योग के
र अगर
ी है तो
बढ़िया
सेनगुप्त

तियों
हैं,
तीनों
.के.
ध्यक्ष
राज्य
किया
ांची
ध्यक्ष
योग्य
साद

को
नाया
हैं.
टतम
वशेष

ंचल
करके
कारी

ने
राज्य
और
है.
उनके
स ले
नगुप्त

Videocon
now introduces the latest
micro-computer based
automatic Washing Machine.
V-NA-811

The tradition of leadership through excellence continues at VIDEOCON. The new programmable, automatic Washing Machine reflects Videocon's commitment to offer world class products to the Indian Consumer.

FEATURES :

- Micro-computer based automatic Washing Machine.
- Wash load capacity – 4 kg.
- Choice of Wash Programmes/Strong, Gentle, Speedy, Normal.
- Very low power consumption – 1 unit per 3 hours.
- Gentle Wash Programme for delicate fabrics.
- Specially designed water sensor to automatically control inflow and outflow of water.
- Can wash Blankets, Rugs, Carpets etc.
- 100% safe. Does not need voltage stabilizer.
- 2 year warranty.
- Well established prompt after sales service.

VIDEOCON
Bring home the leader.

SJAS 89169/12

प्योर न्यू वुल: एक सपना सा अन्दाज़.

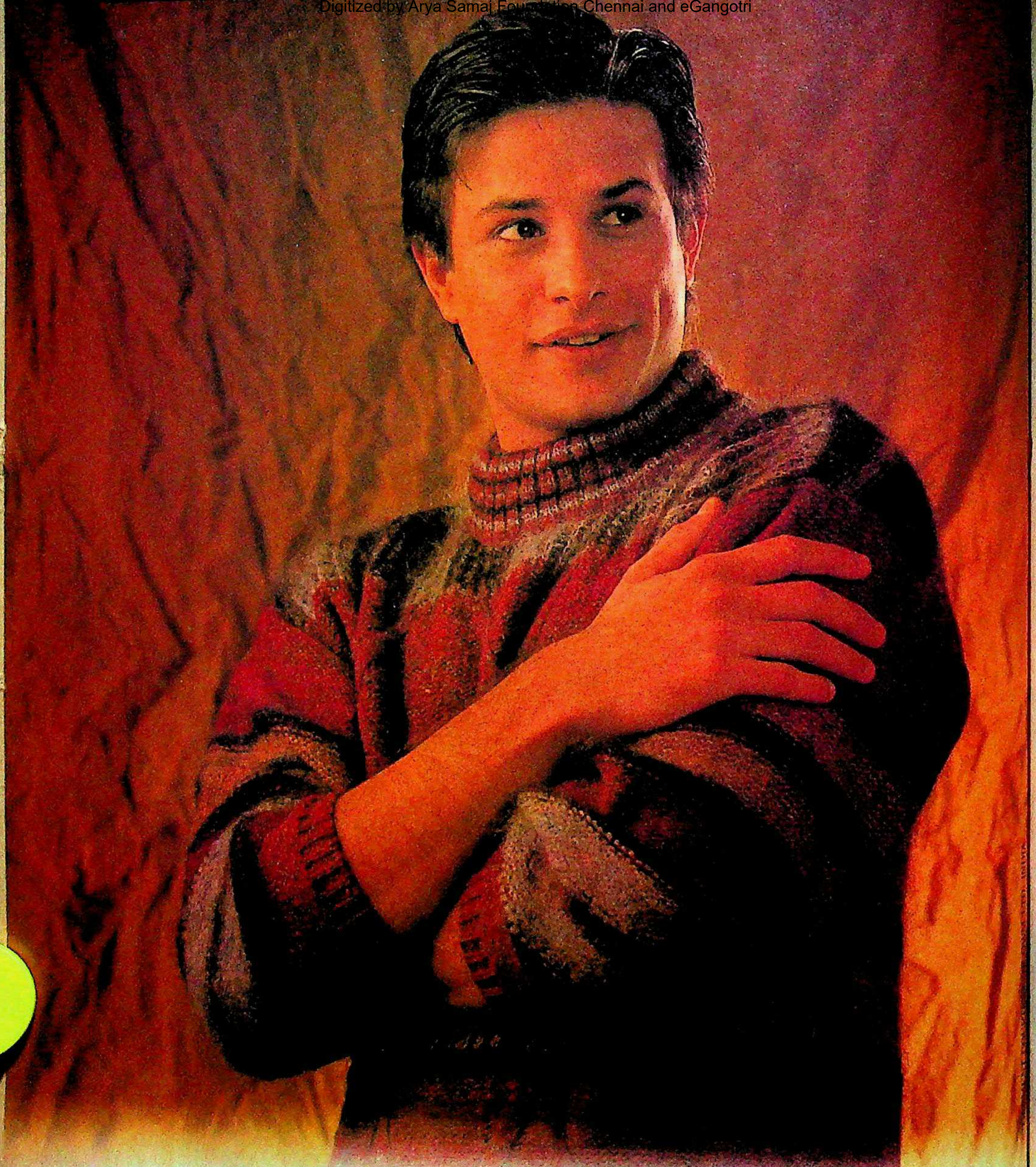

प्योर न्यू वुल के बने शानदार ऊनी कपड़े. मौसम के रुख को ऐसे पहचानें कि सर्दी में आपको गर्म रखें और गर्म में ठंडा-ठंडा. पहनने में भी कितने नरम, मुलायम. सिकुड़न को तो पास भी नहीं आने देते. आपके सपनों की तरह आपसे लिपट जाएं. इनका स्टाइल ऐसा कि हमेशा फ़ैशन से मेल खाए.

प्योर न्यू वुल के ऊनी कपड़े. इन्हें घर ले आइए.

Woolmark
(वूलमार्क)

PURE NEW WOOL

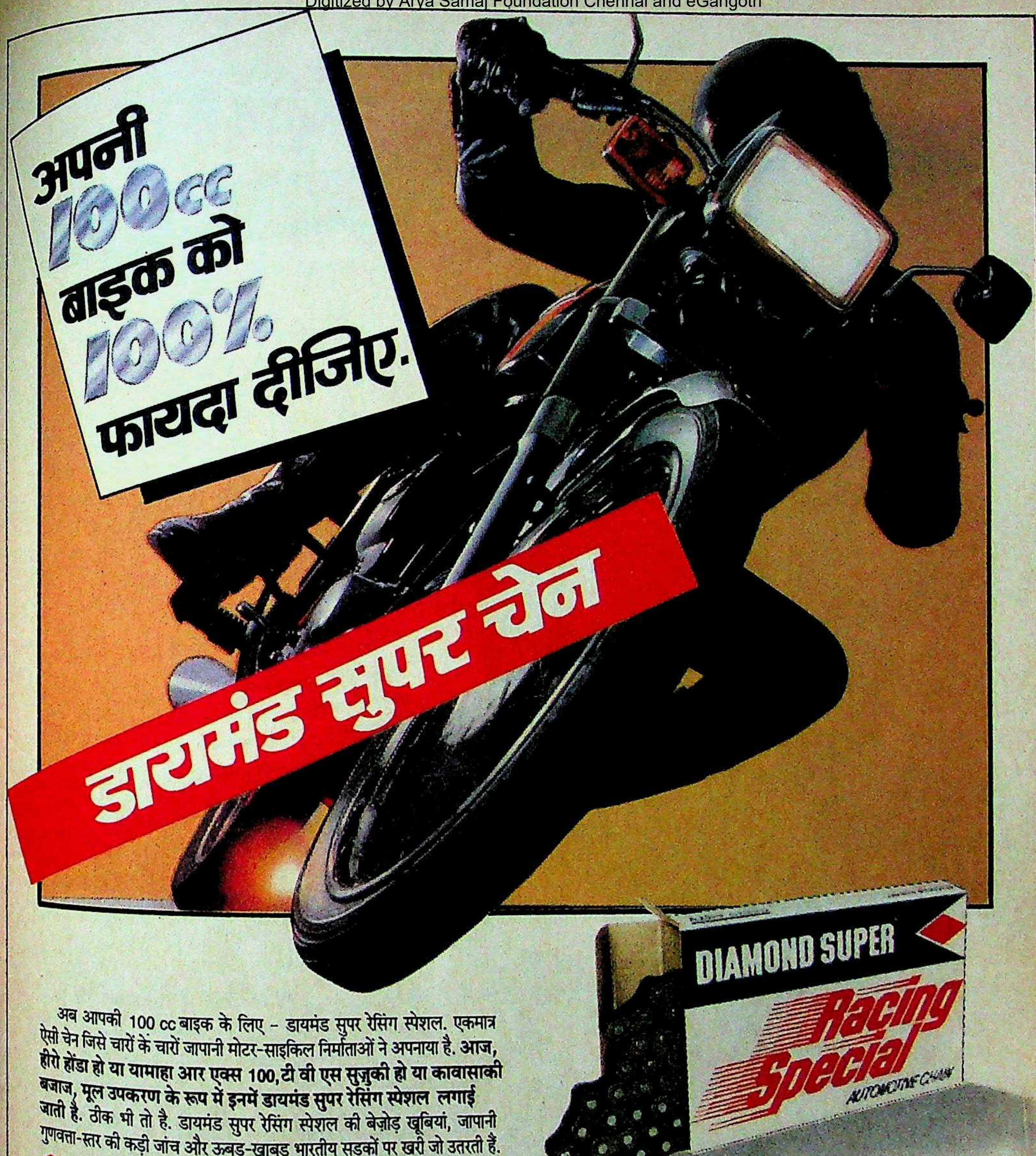
अपनी
100cc
बाइक को
100%
फायदा दीजिए.
डायमंड सुपर चेन
DIAMOND SUPER
Racing Special
AUTOMOTIVE CHAIN

अब आपकी 100 cc बाइक के लिए – डायमंड सुपर रेसिंग स्पेशल. एकमात्र ऐसी चेन जिसे चारों के चारों जापानी मोटर-साइकिल निर्माताओं ने अपनाया है. आज, **हीरो होंडा हो या यामाहा आर एक्स 100, टी वी एस सुज़ुकी हो या कावासाकी बजाज, मूल उपकरण के रूप में इनमें डायमंड सुपर रेसिंग स्पेशल** लगाई जाती है. ठीक भी तो है. डायमंड सुपर रेसिंग स्पेशल की बेज़ोड़ खूबियां, जापानी गुणवत्ता-स्तर की कड़ी जांच और ऊबड़-खाबड़ भारतीय सड़कों पर खरी जो उतरती हैं.

◆ बुश की ऐसी स्थिति कि चेन पर कम से कम खिंचाव आये.
◆ सतह को पुख्ता करने की विशेष प्रक्रिया जिससे चेन पर कंकड़ व कालिख न जमने पाये.
◆ चेन की ज़्यादा मजबूती के लिये ज़्यादा मोटी प्लेट्स.
◆ टेफलोन एडिटिव लुब्रिकेंट के कारण सहज, सरल और बेआवाज काम.

बेमिसाल खूबियां, जानामाना काम और टी आइ का नाम – तभी तो डायमंड सुपर रेसिंग स्पेशल आज अपना सानी नहीं रखती. अगली बार चेन बदलते समय नाम देखकर ही चेन लीजिये. और अपनी 100 cc बाइक को 100% फायदा दीजिये.

TI ग्रुप, मद्रास की एक इकाई. डायमंड चेन कंपनी, यू.एस.ए. के सहयोग से.

◆ **टी आइ डायमंड चेन लिमिटेड**

बेज़ोड से अपना नाता जोड़िये

HTA 7229

मोटर कलपुर्जे बेचनेवाले | सभी प्रमुख विक्रेताओं के यहां उपलब्ध.

कायनेटिक होंडा गिनीज़ बुक में शामिल हो चुका है !

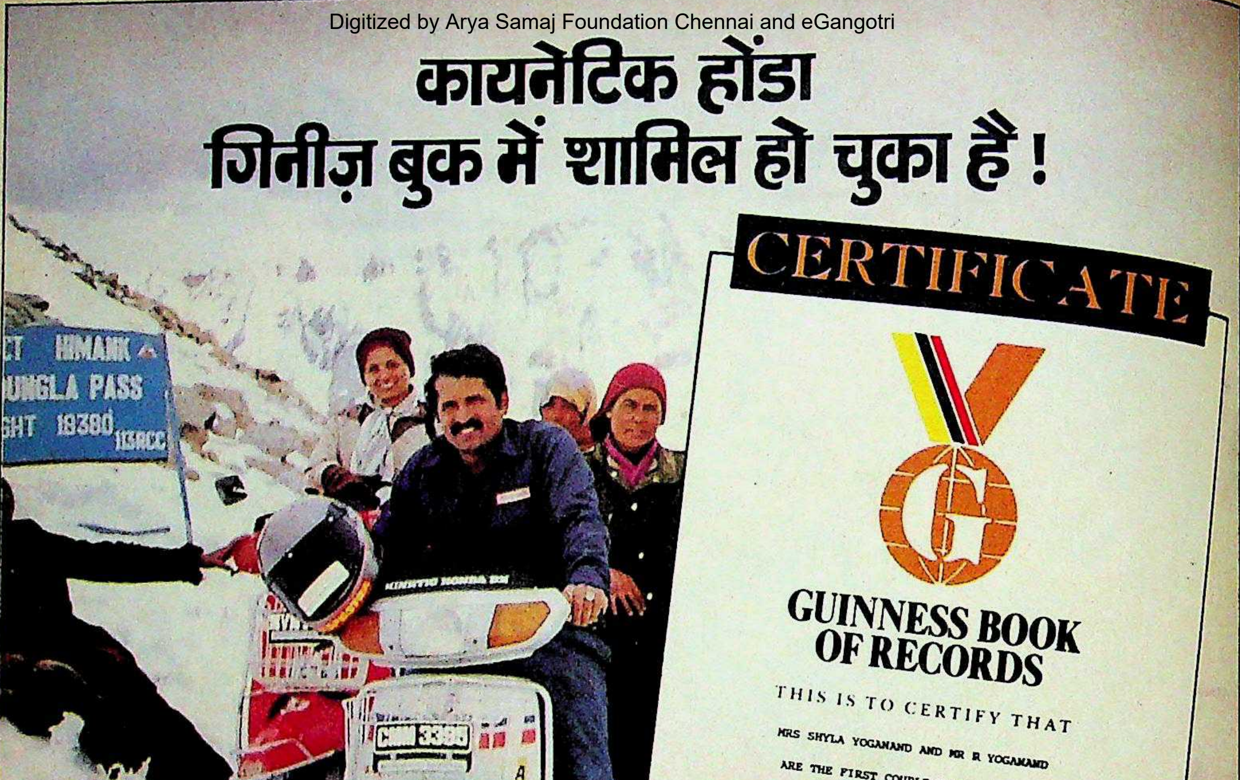

CERTIFICATE

GUINNESS BOOK OF RECORDS

THIS IS TO CERTIFY THAT

MRS SHYLA YOGANAND AND MR R YOGANAND ARE THE FIRST COUPLE TO REACH THE TOP OF KHARDUNGLA PASS AT LADAKH, HIGHEST MOTORABLE ROAD AND BRIDGE (5,605m) ABOVE SEA LEVEL, ON THEIR KINETIC HONDA 100cc SCOOTERS AT 11.00 HRS ON JUNE 7 1989

DONALD McFARLAN NORRIS McWHIRTER

Donald McFarlan Norris McWhirter

कायनेटिक होंडा सबसे पहला स्कूटर है जिसने दुनिया की सबसे ऊंची सड़क पर अपनी जीत का झंडा गाड़ दिया - लद्दाख में, समुद्र सतह से १८,३८० फुट ऊंची खारदंगला पास की ऊंचाइयों पर!

श्री एवं श्रीमती योगानंद

पहले दंपत्ति हैं जिन्होंने अपने कायनेटिक होंडा पर ७ जून, १९८९ को फतह किया यह दुर्गम रास्ता!

इन्होंने पुणे से लद्दाख तक ११,००० कि.मी. का वापसी सफ़र तय किया. कुल ३१ दिनों की कठिन यात्रा - गुजरात में कच्छ के दलदली इलाके में २०० कि.मी. दूरी, राजस्थान में थर के रेतीले रास्तों पर ६०० कि.मी. का सफ़र, मध्य प्रदेश में अमरकंटक के घने बीहड़ जंगलों में २५० कि.मी. की यात्रा और हिमालय की घाटी में दुर्गम ऊबड़-खाबड़ जोज़िला पास सड़क पर ३,७०० कि.मी. यात्रा करके ये सकुशल वापस लौट आए.

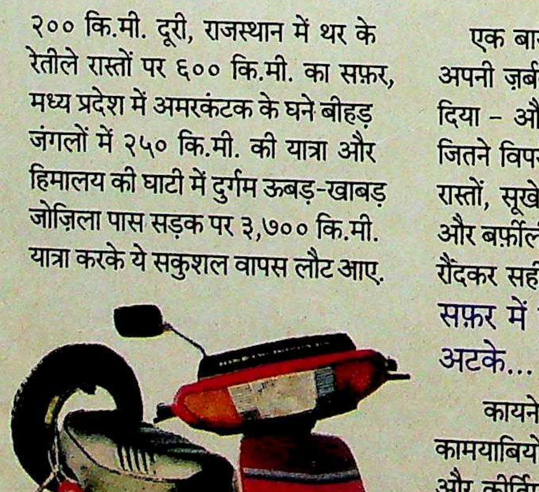

एक बार फिर कायनेटिक होंडा ने अपनी ज़बर्दस्त कार्यक्षमता का सुबूत दिया - और ४९°से. से लेकर -२३°से. जितने विपरीत तापमान पर, ऊबड़-खाबड़ रास्तों, सूखे रेगिस्तानों, दलदली इलाकों और बर्फ़ीली सड़कों को अपने पहियों तले रौंदकर सही-सलामत लौट आया!

सफ़र में बिना रुके, अटके... बिना कोई पुर्ज़ा बदले.

कायनेटिक होंडा की अद्‌भुत कामयाबियों में शामिल हो गया एक और कीर्तिमान!

WAMS 138/89

KINETIC HONDA
SIMPLER ■ SAFER ■ SUPERIOR

कांग्रेस (इ)

अपने हाथों तितर-बितर

आगामी विधानसभा चुनावों का एकजुट होकर सामना करने के बदले इंकाई नेता गुटबाजी में ही मशगूल हैं और इससे पार्टी की विश्वसनीयता में और ह्रास हुआ है. पार्टी में राजीव की पकड़ भी ढीली पड़ जाने से पुराने दिग्गज अपना खोया महत्व हासिल करने को तत्पर हैं.

पुरानी आदतें शायद ही जाती हैं. सत्ता में रहते हुए इंकाइयों ने गुटबाजी की राजनीति में जो महारत हासिल की है वह अभी जारी है, हालांकि वे सत्ता के बाहर हैं. वे टोकरी में रखे केंकड़ों की तरह एक-दूसरे की टांग खींचने में व्यस्त हैं. जैसे-जैसे विधानसभा चुनाव का समय पास आता जा रहा है, राज्यों के इंका नेताओं की साजिशें भी गहरी होती जा रही हैं और राज्यों की पार्टी इकाइयों में झगड़े बढ़ते जा रहे हैं.

राजीव गांधी का प्रभामंडल रातोरात लुप्त हो जाने के कारण मामला और भी जटिल हो गया है. पार्टी में केंद्रीय नेतृत्व नाम की कोई चीज नहीं रही. उसके पास वोट दिलाने वाला कोई करिश्माई नेता नहीं है. पूर्व मंत्री वसंत साठे मानते भी हैं, "हमने पार्टी की जो घनघोर उपेक्षा की उसी से यह संकट पैदा हुआ है. मनोनीत और नियुक्त किए गए लोगों ने पार्टी के संस्थात्मक स्वरूप को लगभग नष्ट कर दिया है. हमें इस स्थिति को ठीक करना होगा."

विडंबना तो यह है कि लोकसभा चुनाव में जिन राज्यों में इंका को धूल चाटनी पड़ी थी, उन्हीं राज्यों के नए मुख्यमंत्री और प्रदेश इंका अध्यक्ष अपनी ताकत दिखाने लगे हैं. हार के बाद राजीव और उनकी मंडली के कमजोर पड़ जाने से ये लोग अब आलाकमान के निर्देशों का पालन करने के लिए मजबूर नहीं हैं. राजनीति की इंकाई शैली पार्टी के भीतर के अपने विरोधियों को नीचे गिराने की रही है. इसका नतीजा यह रहा कि पार्टी कमजोर होती गई.

राजस्थान की ही मिसाल लें, जहां हाल ही में पांच कैबिनेट मंत्रियों ने हरिदेव जोशी मंत्रिमंडल से अपने इस्तीफे दे दिए. उनका आरोप था कि जोशी विधानसभा चुनाव के बाद राजीव के खिलाफ बगावत करने की साजिश बना रहे हैं. इन पांचों मंत्रियों की बातें सहानुभूतिपूर्वक सुनने की जगह राजीव ने जोशी के विधानसभा चुनाव के लिए पार्टी उम्मीदवारों को चुनने की आजादी दे दी. जाहिर है, राजीव ने यह फैसला इसलिए किया क्योंकि वे जोशी को अलग-थलग करके कोई खतरा नहीं उठाना चाहते थे. लेकिन पांचों मंत्रियों के अगुआ अशोक गहलोत ने

समर्थकों के बीच इंकाई दिग्गज
त्रिपाठी: बगावत का बिगुल

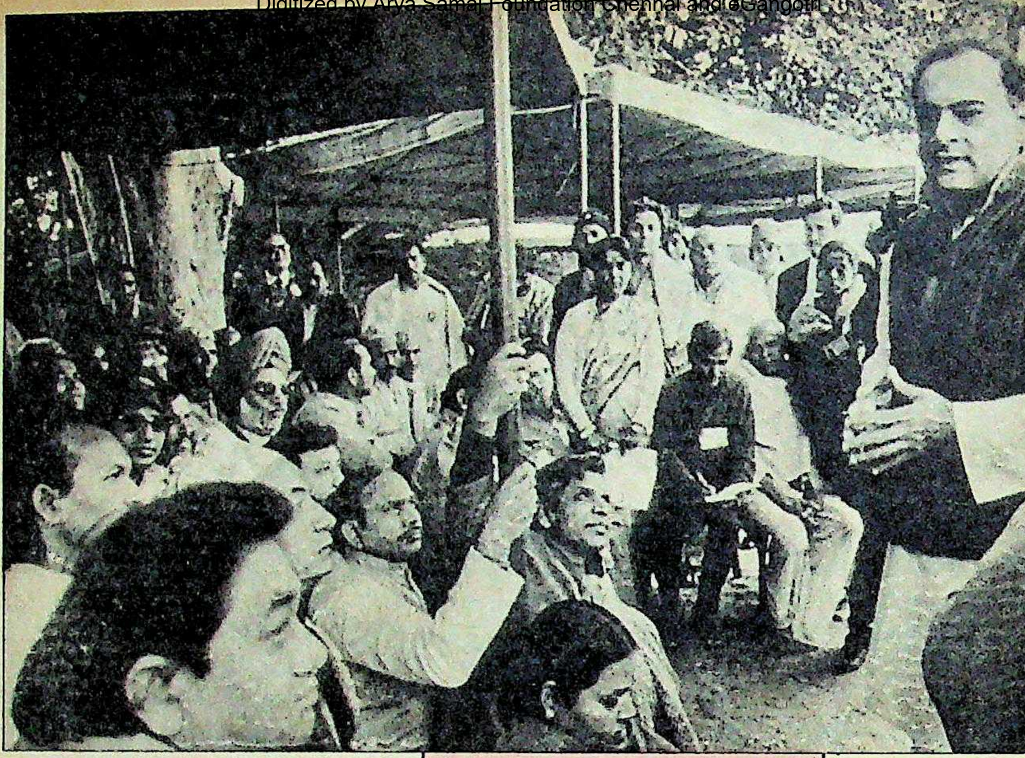

लोगों से मिलते राजीवः आक्रामक

कहा, "राज्य में यदि राजीव विरोधी लोगों को पुरस्कृत किया गया तो हम अपनी लड़ाई जारी रखेंगे."

बिहार में नए मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र ने प्रदेश इंका अध्यक्ष पद छोड़ने से इनकार कर दिया और पार्टी आलाकमान कुछ नहीं कर पाया है. नतीजा यह कि विधानसभा चुनाव के ऐन पहले पार्टी बंट गई है. कई इंकाइयों को विश्वास है कि इंका के हारने पर सबसे पहले मिश्र ही जनता दल में शामिल होंगे.

उत्तर प्रदेश में जिस दिन से पूर्व मुख्यमंत्री नारायणदत्त तिवारी को विधायक दल का नेता बनाया गया है, उसी दिन से उनमें और प्रदेश इंका अध्यक्ष बलराम सिंह यादव में छत्तीस का रिश्ता बन गया है. मामला इतना गंभीर हो चुका है कि हाल ही में यादव ने तिवारी के दो समर्थकों को पार्टी से निकाल दिया. पूर्व केंद्रीय मंत्री शीला दीक्षित कहती हैं, "यह सही है कि लोग एक-दूसरे के खिलाफ बोल रहे हैं. लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इंका कमजोर हो रही है."

लेकिन इंका के वयोवृद्ध नेता कमलापति त्रिपाठी इससे सहमत नहीं होंगे. उन्होंने हाल ही में राजीव को एक और 'गोपनीय चिट्ठी' लिखी जिसमें पूर्व प्रधानमंत्री पर यह आरोप लगाया गया कि उनकी मंडली पुराने कांग्रेसियों का अपमान कर रही है. यह चिट्ठी पार्टी नेताओं में खुलेआम बांटी गई. इसे पढ़कर कई नेताओं ने त्रिपाठी को लिखा कि वे उनके विचार से सहमत हैं. त्रिपाठी कहते हैं, "इंका किसी भी व्यक्ति से बड़ी है."

नौवीं लोकसभा के पहले सत्र में राजीव गांधी के भाषण की कुछ झलकियां

पंजाब के पिछले चुनावों में अकाली गुटों को आगे आने देने के लिए हमने कमजोर उम्मीदवार खड़े किए क्योंकि हम कोई हल ढूंढ़ना चाहते थे

◆

सत्ता पक्ष को अभी यह भान नहीं हुआ कि पक्ष बदल गया है. वह बताए कि सरकार क्या करेगी

◆

मैं ऐसा एक भी मौका याद नहीं कर पाता कि राज्य प्रशासन की जर्जर हालत की जांच के लिए मुझे विदेशमंत्री को भेजना पड़ा हो

इन बातों से जाहिर है कि राजी
स्थिति कितनी कमजोर हो गई है. ह
पार्टी के पास राजीव का कोई फौरी वि
नहीं है और राजीव अपनी मंडली के
सदस्यों से अभी छुटकारा नहीं पा
इसके बावजूद पार्टी के पुराने नेता
खोया महत्व हासिल करने को तत्पर
हैं. सो, इंका संसदीय बोर्ड और
समिति की, जिनमें पुराने नेता भरे
भूमिका पार्टी के रोज के कामकाज
भी महत्वपूर्ण हो जाएगी. विधानसभा
चुनाव के बाद पार्टी के भीतर भी चुना
की उम्मीद है.

वैसे, इतना परिवर्तन तो आया ही
राजीव अब अधिक से अधिक पार्टी
कर्ताओं से 'मिलने-जुलने लगे हैं.
पखवाड़े युवक इंका के राज्य प्रमुखों को
समय घोर आश्चर्य हुआ जब राजी
उनकी बातचीत तीन घंटे तक चली. पा
प्रवक्ता आनंद शर्मा ने कहा, "यह
महत्वपूर्ण बात है कि अब सामान्य
कार्यकर्ताओं के लिए भी राजीव के
ज्यादा समय होता है."

लेकिन राजीव की हेकड़ी बरकरा
उत्तर भारत हाथ से निकल जाने के बा
वे जोर देकर कह रहे हैं कि इंका ही
राष्ट्रीय पार्टी है. यही नहीं, वे उत्तरी
के राज्यों का, जहां विधानसभाओं के
होने वाले हैं, दौरा न करके गलती पर

कर रहे हैं. यही वजह है कि इन राज्यों के पार्टी आकाओं का प्रभाव बढ़ता जा रहा है. पार्टी पर अपनी कमजोर होती पकड़ से भी वे बेखबर ही दिखते हैं क्योंकि वे अपनी मंडली से छुटकारा पाने की कोशिश नहीं कर रहे. चूंकि उनकी सत्ता का आधार सिकुड़ता जा रहा है, सो वे जब-जब अपने को जुझारू नेता के रूप में पेश करने की कोशिश करते हैं, कुछ ऐसा कर बैठते हैं जिससे उनकी स्थिति हास्यास्पद हो जाती है.

उनकी मौजूदा स्थिति की तुलना मध्य युग के किसी अपदस्थ सम्राट से की जा सकती है—परिवार का शासन गया, अहम लड़ाई हार गए और राजपाट गया; और फिर, मातहत सामंत भी बगावत के तेवर दिखाने लगे और आपसी जंग छिड़ गई.

वैसे, राजीव की छवि यह बनाई जा रही है कि वे फिर लड़ाई जीत लेंगे. लेकिन ऐसा इसलिए किया जा रहा है क्योंकि पार्टी में कोई दूसरा विकल्प नहीं है. फिर भी अगर राजीव ने अपने यारों-दोस्तों से पिंड नहीं छुड़ाया और पार्टी में अनुशासन कायम नहीं किया तो अगले पांच साल के भीतर उनका विकल्प भी उभर सकता है. **—पंकज पचौरी**

इंका मुख्यालय

आलीशान अंदाज

आलीशान इमारत की खिड़कियों के सुरमई शीशों के भीतर से राजनीति की चालें चलना आजादी की लड़ाई के समय की कांग्रेस का अंदाज बिलकुल नहीं था. अब चरखे पर काती गई खादी से बने वस्त्रों की जगह पोलिएस्टर और रेशम ने ले ली. गांधी टोपी गई, विदेशी धूप चश्मे आ गए. दांडी यात्रा का स्थान स्वतंत्रता दौड़ों ने ले लिया. गांव-गांव तक जाकर काम करने की जगह कंप्यूटर द्वारा तैयार योजनाओं से काम चल रहा है. और सारतत्व को अनदेखा करके आडंबर पर ध्यान केंद्रित करने का रिवाज चल पड़ा है.

ऐसे में साढ़े पांच करोड़ रु. की लागत से राजधानी में संसद भवन के पास बनने वाले पार्टी मुख्यालय के नए भवन को देखकर कांग्रेस के बदलते स्वरूप पर यकीन होना स्वाभाविक है. इस चार-मंजिली इमारत का डिजाइन पेरिस के राजा एदेरी ने तैयार किया है जो पांच सितारा होटलों का डिजाइन बनाने में माहिर बताए जाते हैं. इस नए भवन के रखरखाव पर हर महीने तकरीबन 50 हजार रु. की जरूरत होगी. यहां एक आधुनिक प्रेस, 750 लोगों की क्षमता वाला सभागार, जवाहरलाल नेहरू पर चित्रों की दीर्घा और एक संदर्भ अनुभाग जैसी चीजें हैं, जो देश की किसी और पार्टी के मुख्यालय में नहीं है. जवाहर भवन ट्रस्ट के सचिव अहमद पटेल कहते हैं, "यह देश भर की राजनैतिक गतिविधियों का केंद्र होगा."

राजीव गांधी पार्टी के महासचिवों के साथ इस भवन की सबसे ऊपरी मंजिल पर बैठेंगे. और सुरक्षा के लिए वे आम कैंटीन और शौचालयों का इस्तेमाल नहीं करने वाले एकमात्र कांग्रेसी होंगे. पार्टी अध्यक्ष के पास निजी लिफ्ट होगी.

विवादों से भरी इस परियोजना (देखें इंडिया टुडे, 31 जुलाई 1989) की समस्याएं अभी खत्म नहीं हुई. भवन के एक ओर प्रस्तावित सड़क को अभी स्थानीय निकायों से अनुमति नहीं मिली है और दूसरी ओर के ढाबों को भी हटाया जाना है. विवादों का असर भी होने लगा है. 80 लाख रु. की लागत और 150 टन की क्षमता वाले वातानुकूलन संयंत्र की योजना ताक पर रख दी गई है.

पार्टी के कार्यकर्ता इस भवन के तामझाम को देखकर हैरत में पड़ जाते हैं. इस भवन की शान के सामने गांव से आया कोई कांग्रेसी सहम तो नहीं जाएगा? इस सवाल पर इंका महासचिव जनार्दन द्विवेदी कहते हैं, "जैसे ही वे (कार्यकर्ता) नेताओं से मिलेंगे, सब कुछ सामान्य हो जाएगा."

—पंकज पचौरी

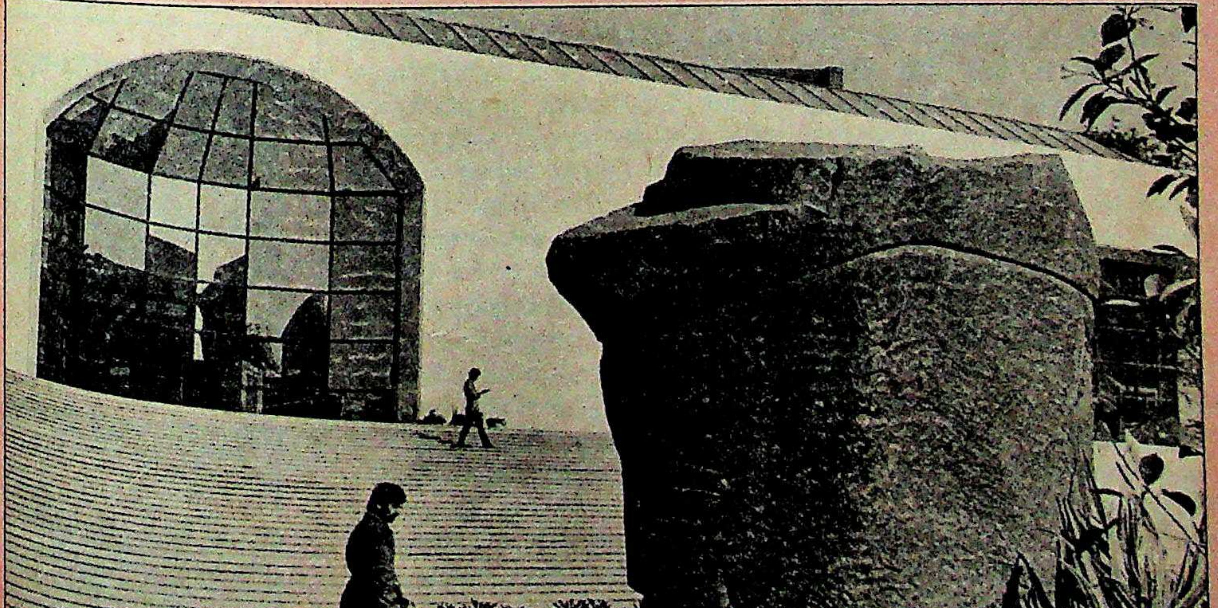

जवाहर भवनः नई शान

शरद सक्सेना

इंकाई मुख्यमंत्री

वोट खरीदने की कोशिश

विधानसभा चुनावों के ऐन पहले लोक-लुभावन योजनाओं की बाढ़

रुपयों से जनादेश खरीदा जा सकता है. यह बात इंका मुख्यमंत्रियों के दिमाग में रातोरात घर कर गई लगती है. नवंबर '89 के चुनाव में बुरी तरह मुंह की खाने के बाद पार्टी अब विधानसभा चुनावों के लिए पैसे की ताकत पर भरोसा कर रही है. बिहार, ओडीसा, मध्य प्रदेश, गुजरात और राजस्थान में लोकसभा चुनाव में अपमानजनक हार के बाद वहां बिठाए गए नए इंकाई मुख्यमंत्री दोनों हाथों रकम लुटा रहे हैं, लुभावनी योजनाओं की घोषणाएं कर रहे हैं. कुल मिलाकर इन पर 2,500 करोड़ रु. की भारी-भरकम रकम खर्च होगी. यानी राज्यों में जब तक नई सरकारें बनेंगी, उनके खजाने खाली हो चुके होंगे.

इन शाहखर्चों में सबसे आगे बिहार के मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र हैं. एक महीने से भी कम समय में उन्होंने लगभग 100 नई योजनाओं की घोषणा की है, जिन पर करीब 700 करोड़ रु. खर्च होंगे. मिश्र हर वर्ग को खुश करने की कोशिश में लगे हैं. मसलन, किसानों और खेतिहर मजदूरों को कृषि कर्जों की माफी, कृषि संबंधी चीजें खरीदने पर छोटे किसानों को 85 फीसदी सरकारी सहायता और राज्य की 1,200 पंचायतों में से हरेक में 15 नए हैंडपंप गाड़ने जैसी आकर्षक योजनाओं से पटाया जा रहा है. इसी तरह मुसलमानों के लिए भी भारी सुविधाओं की घोषणा की गई है: भागलपुर के दंगापीड़ितों के लिए 11.53 करोड़ रु. की पुनर्वास व्यवस्था, 400 मदरसों का राष्ट्रीयकरण, और उर्दू को दूसरी राजभाषा का दर्जा देने के पिछली सरकार के फैसले पर अमल के लिए उर्दू अनुवादकों और टाइपिस्टों के 1,300 नए पदों का सृजन. यही नहीं, चौकीदारों और दफादारों को भी सरकारी कर्मचारी का दर्जा दे दिया गया है और उनका मूल वेतन 175 रु. से बढ़ाकर 750 रु. प्रति माह कर दिया गया है. इसके अतिरिक्त, वृद्धावस्था पेंशन 30 रु. से बढ़ाकर 60 रु. और बेरोजगारी भत्ता 50 रु. से बढ़ाकर 100 रु. प्रति माह कर दिया गया है.

ज्यादातर लोग मुख्यमंत्री की इस उदारता को वोट खरीदने की कोशिश मान रहे हैं. एक पूर्व मुख्यमंत्री कहते हैं, "इस राज्य में डॉ. मिश्र और उनकी घोषणाओं पर किसे भरोसा है?" सो, भागलपुर यात्रा के दौरान जब विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मिश्र को राहत कार्यों के लिए एक करोड़ रु. का चेक दिया तो भीड़ में से कई लोग चिल्लाए, "उन्हें रकम मत दीजिए. किसी को कोई राहत नहीं मिलेगी." अधिकतर कांग्रेसी भी इस बात से सहमति जताएंगे. पार्टी के एक सांसद ने माना भी, "पता नहीं योजनाओं पर अमल के लिए राज्य सरकार के पास रकम है भी या नहीं. पर मैं इतना जरूर जानता हूं कि बकौल मिश्र जिलों में लंबित योजनाओं को पूरा करने के लिए सरकार के पास पैसा नहीं है."

मिश्र का मानना है कि भारी-भरकम वादे करने में हर्ज नहीं है क्योंकि चुनाव में इंका के हार जाने की सूरत में वे नई सरकार पर यह आरोप तो लगा ही सकते हैं कि वह अपने वादे निभाने में नाकाम रही है. और यदि इंका जीत गई और मिश्र मुख्यमंत्री बने रहे तो वे केंद्र की जनता दल सरकार पर इस इंका-शासित राज्य को पैसा न देने का आरोप लगाएंगे. यानी चित भी मेरी, पट भी मेरी.

ओडीसा के नए मुख्यमंत्री हेमानंद बिस्वाल की भी यही धारणा है. योजनाओं की घोषणा के मामले में वे भी मिश्र जितने ही उदार हैं. उन्होंने छोटे किसानों और कारीगरों के 12,000 रु. तक के कर्जे माफ करने, कुछ किसानों को जल कर में छूट देने, शिक्षित बेरोजगारों को भत्ता देने, वृद्धावस्था पेंशन में वृद्धि करने और सरकारी कर्मचारियों का महंगाई भत्ता बढ़ाने की घोषणाएं की हैं. इन पर 770 करोड़ रु. खर्च होंगे.

ऐसे राज्य में, जहां सरकारी कर्मचारियों का कुल वेतन कर और गैर कर से मिलने वाले राजस्व से लगभग 50 करोड़ रु. अधिक है, मुख्यमंत्री समेत शायद कोई नहीं जानता कि इन भारी-भरकम योजनाओं के लिए रकम कहां से आएगी. बिस्वाल ऐसे सारे सवालों को यह कहते हुए दरकिनार कर देते हैं कि "हम किसी तरह व्यवस्था कर ही लेंगे... हमारी सही मायने में जनता की सरकार है जो जनता के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है." बिस्वाल की बेफिक्री की वजह यही हो सकती है कि उनके कंधों पर जन कल्याण की जिम्मेदारी लंबे समय तक नहीं रहने वाली.

बिस्वाल की कट्टर समर्थक मानी जाने वाली प्रदेश इंका अध्यक्ष नंदिनी सत्पथी इन लुभावनी योजनाओं की अधिकता से बहुत खुश दिखती हैं. वे खीसें निपोरती हुई पूछती

जगन्नाथ मिश्र

जनादेश खरीदने के लिए मिश्र ने एक महीने के भीतर लगभग 100 लुभावनी योजनाओं की घोषणा कर डाली

हेमानंद बिस्वाल

बिस्वाल को भी यह भ्रम हो गया है कि रोज नए-नए सब्जबाग दिखाने से राज्य के लोग विपक्ष को सत्ता नहीं सौंपेंगे

श्यामाचरण शुक्ल

शुक्ल ने 700 करोड़ रु. से अधिक की योजनाएं घोषित की हैं जो मध्य प्रदेश के सालाना योजना खर्च के बराबर हैं

माधव सिंह सोलंकी

सोलंकी ने एक साथ ढेर सारी लुभावनी योजनाओं की घोषणा करके गुजरात में एक नया रिकार्ड कायम कर दिया है

हरिदेव जोशी

जोशी की योजनाएं हालांकि दूरदर्शी लगती हैं, फिर भी वे राजस्थान की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था को और जर्जर बना देंगी

है, "ये योजनाएं प्रभावशाली नहीं लगतीं?" लेकिन जनता दल के दिग्गज बीजू पटनायक का आरोप है, "यह संवैधानिक अधिकार का सरासर दुरुपयोग है क्योंकि बिस्वाल सरकार कामचलाऊ सरकार है." इस वयोवृद्ध राजनीतिक ने राज्यपाल से हस्तक्षेप की मांग की है.

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल ने भी खजाने का द्वार खोल दिया है, हालांकि तिजोरी खाली है. उनका खयाल है कि रोजाना एक सब्जबाग दिखाने से लोग भाजपा की तरफ नहीं झुकेंगे. शुक्ल ने जितनी घोषणाएं की हैं उनमें से अधिकांश भाजपा के घोषणा पत्र से चुराई हुई हैं. इनमें किसानों के कर्जे माफ करना और बेरोजगारी भत्ता देना शामिल है. भाजपा का दो साल पुराना कर्ज माफी अभियान काफी सफल रहा था और राज्य के पार्टी अध्यक्ष सुंदरलाल पटवा ने घोषणा की थी कि किसान जल्दी ही 'ऋण-मुक्त' हो जाएंगे. लेकिन शुक्ल कहते हैं, "मैंने तो उनका घोषणा पत्र पढ़ा भी नहीं है. भाजपा ही हमारी सामाजिक-आर्थिक नीतियों की नकल कर रही है."

लेकिन हकीकत यह है कि शुक्ल खुद ही सामाजिक आर्थिक तथ्यों से पूरी तरह वाकिफ नहीं हैं. योजनाओं की लागत के बारे में पूछे जाने पर उनका जवाब था, "हमने अभी हिसाब-किताब नहीं लगाया है. लेकिन राज्य पर 250 से 400 करोड़ रु. का अतिरिक्त बोझ पड़ने का अनुमान है." संभवतः यह पहला मौका है कि किसी सरकार ने बिना हिसाब-किताब लगाए ही भारी रियायतों की घोषणा की है.

शुक्ल की 23 सूत्री योजना की कुछ दूसरी मुख्य बातें हैं: तदर्थ और दिहाड़ी पर की गई सभी सरकारी नियुक्तियों को नियमित करना, छोटे बीड़ी निर्माताओं को रियायती दरों पर तेंदू पत्ते सप्लाई करना, अनाथों, विधवाओं और विकलांगों की सामाजिक सुरक्षा पेंशन 60 रु. से बढ़ाकर 100 रु. प्रति माह करना और गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के लिए बिजली की व्यवस्था करना. इन सब पर 700 करोड़ रु. से अधिक का खर्च आएगा जो राज्य की सालाना योजना के खर्च के बराबर है.

उधर, गुजरात के मुख्यमंत्री माधव सिंह सोलंकी ने हालांकि 200 करोड़ रु. की लागत वाली योजनाओं की घोषणा की है लेकिन राज्य की वित्तीय स्थिति को देखते हुए यह रकम भी बहुत है. राज्य में यह पहला मौका है कि एक साथ इतनी लुभावनी योजनाओं की घोषणा की गई है. सोलंकी के एक समर्थक हिम्मत चरण कहते हैं, "ये योजनाएं दर्शाती हैं कि हमारे नेता लोगों का जीवन स्तर सुधारने के लिए कितने इच्छुक हैं." वैसे, सही कहा जाए तो ये इंका खेमे में व्याप्त हताशा ही दर्शाती हैं. जनता दल के एक नेता ने चुटकी ली, "यह दिहाड़ी पर काम कर रही सरकार है, जो स्थायी होने के लिए आकाओं को खुश कर रही है."

सोलंकी सरकार पहले ही किसानों के 90 करोड़ रु. के कर्ज माफ कर चुकी है और कई दूसरे कर्ज माफ करने पर विचार कर रही है. सोलंकी की दूसरी लुभावनी योजनाओं में वृद्धों और विकलांगों की पेंशन की रकम को दोगुना करना, गरीब महिलाओं को दो साड़ियां देना, तीर्थयात्री कर खत्म करना, घुमक्कड़ वनवासियों के लिए कल्याण बोर्ड गठित करना और सभी गांवों में पेय जल की आपूर्ति करना शामिल है.

प्रमुख भाजपा नेता अशोक भट्ट कहते हैं, "राज्य 400 करोड़ रु. के घाटे में चल रहा है. सोलंकी प्रशासन ने विधानसभा चुनाव के बाद सत्ता में आने वाली सरकार के लिए कठिन स्थिति बना दी है." दूसरे राज्यों की तरह गुजरात के नए शासक भी या तो करों में भारी वृद्धि करेंगे या फिर विकास की सारी योजनाओं को ठप कर देंगे.

पड़ोसी राज्य राजस्थान के नए मुख्यमंत्री भी सब्जबाग दिखा रहे हैं. राज्य में बिजली की भारी कमी होते हुए भी मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने 50,000 किसानों को बिजली कनेक्शन देने का वादा किया है, जिसे पूरा करना नामुमकिन है. जोशी की योजनाओं में किसानों के कर्जे (15,000 रु. तक) माफ करना और वृद्धावस्था पेंशन में वृद्धि करना भी शामिल है. हालांकि मिश्र, बिस्वाल और शुक्ल के भारी-भरकम प्रस्तावों की तुलना में जोशी की योजनाएं ज्यादा दूरदर्शी लगती हैं लेकिन उनसे राजस्थान की खस्ताहाल अर्थव्यवस्था और भी जर्जर हो जाएगी.

आखिर इन लुभावनी योजनाओं की कीमत इन राज्यों की जनता को चुकानी पड़ेगी, इंका के राजनैतिक विरोधियों को नहीं. जरा इन दो तथ्यों पर ही गौर करें. बिहार की पिछली सरकार ने कर्मचारियों को बढ़ा हुआ वेतन देने के लिए अपनी सालाना योजना में 40 फीसदी की कटौती करने पर विचार किया था और उधर ओडीसा के अतिरिक्त वित्त सचिव एम.पी. पुरोहित के अनुसार राज्य पर अनुमानतः 3366.98 करोड़ रु. का भारी कर्ज है.

इतना ही खतरनाक इंकाई मुख्यमंत्रियों द्वारा अपने राज्यों की दौलत बरबाद करना है. इन राज्यों की तिजोरियां वहां के मुख्यमंत्रियों के निजी बैंक बैलेंस जैसी दिखती हैं. इसके साथ ही यह बात भी बिलकुल साफ हो गई है कि अपने राजनैतिक कैरियर को दांव पर लगाने के बजाए ये मुख्यमंत्री अपने राज्यों की अर्थव्यवस्था को ही चौपट कर डालेंगे.

—सबा नक़वी भौमिक और ब्यूरो रिपोर्ट

गोवा

तलवार की धार पर

एक सीट के बहुमत से राणे सरकार का भविष्य अनिश्चित

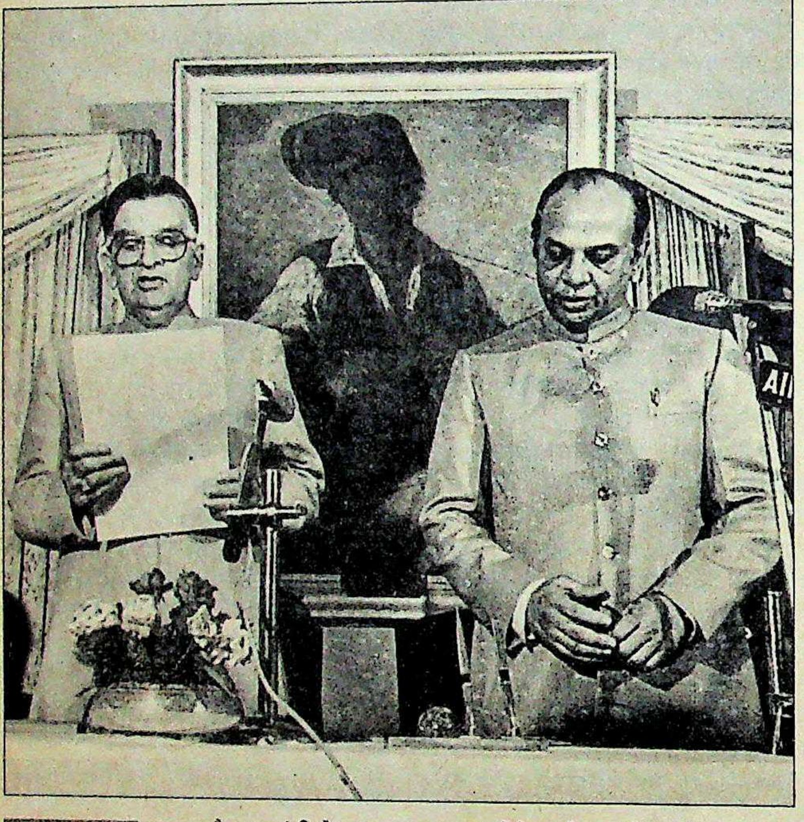

शपथ लेते राणे: कांटों भरी राह

लगता है मुख्यमंत्री के रूप में प्रताप सिह राणे का लगातार तीसरा कार्यकाल गोवा के जगप्रसिद्ध समुद्र तटों के बरसाती मौसम की तरह झंझावात से भरा होगा. इसका कारण यह है कि उनकी सरकार को 40 सदस्यीय विधानसभा में केवल एक सीट का बहुमत प्राप्त है.

विधानसभा की 38 सीटों के लिए हुए 26 नवंबर '89 के चुनाव में इंका और महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी (मगोपा) दोनों को 18-18 सीटें मिली थीं और दोनों को ही एक-एक निर्दलीय विधायक का समर्थन प्राप्त हुआ था. इस तरह दोनों बराबरी पर थे. दो सीटों के लिए चुनाव उस समय स्थगित कर दिया गया था. लेकिन अब 9 जनवरी को इन दो सीटों के लिए हुए चुनाव में इंका ने ये दोनों सीटें जीत लीं और अपनी सरकार बनाई. यानी सरकार का समर्थन करने वाले 21 विधायकों में एक निर्दलीय है. इंका को एक विधायक का वोट गंवाना पड़ेगा क्योंकि उसे विधानसभा अध्यक्ष बनाना होगा.

इस तरह बराबरी के नतीजे देना वाला यह चुनाव सांप्रदायिक भावनाओं को भड़काकर लड़ा गया. ऐसा करने में दोनों बड़ी राजनैतिक पार्टियां आगे रहीं. मगोपा नेता रमाकांत खलप कहते हैं, "इस बार ईसाई मुख्यमंत्री बनाने का जमकर प्रचार किया गया. उन लोगों का नारा था कि अगर आप ईसाई मुख्यमंत्री चाहते हैं तो इंका को वोट दीजिए और अगर हिंदू मुख्यमंत्री चाहते हैं तो विपक्ष को वोट दीजिए. इस तरह मतदाताओं में विभाजन हो गया." मुख्यमंत्री राणे भी जानते हैं कि चुनाव प्रचार सांप्रदायिक नारों के साथ किया गया. लेकिन उन्हें भरोसा है कि गोवा के लोग इस प्रवृत्ति को आगे नहीं चलने देंगे. वे कहते हैं, "जो नेता सांप्रदायिकता की राजनीति करते हैं उन्हें उनकी औकात बता दी जाएगी. गोवा में सद्भाव की परंपरा रही है और हम इसे नष्ट नहीं होने देंगे."

लेकिन फिलहाल जो स्थिति है उसके मुताबिक राणे को अपनी कुर्सी बचाए रखने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ेगी. इंका के अधिकांश विधायक ईसाई हैं और ये पार्टी के भीतर एक दबाव गुट के रूप में काम कर सकते हैं. राणे को भी इसका एहसास है. वे कड़वाहट से कहते हैं, "चुनावों में मगोपा ने नहीं बल्कि हमारे अपने लोगों ने हमें हराया." इस तरह पार्टी के भीतर राणे की स्थिति अगर असुविधाजनक है तो बाहर हालात और भी खराब हैं. उन्हें मगोपा के 19 विधायकों से भारी विरोध का सामना करना पड़ेगा. मगोपा ने पिछली विधानसभा के मुकाबले इस बार अपनी ताकत दोगुनी कर ली है और वह अपनी राजनैतिक अहमियत जताने की पूरी तैयारी में है. दिलचस्प बात तो यह है कि इसके नेता खलप भी महसूस करते हैं कि सांप्रदायिकता ने "गोवा के खूबसूरत चेहरे पर दाग लगाया है और हमें यह दाग मिटाना होगा."

अब जबकि इंका सरकार की स्थिरता को मगोपा से भारी खतरा है, इंकाई नेता यह मानने लगे हैं कि उन्हें मगोपा के कम-से-कम एक-तिहाई विधायकों को इंका में शामिल करने की कोशिश करनी चाहिए. इस कोशिश के प्रति उतावलापन इसलिए भी दिख रहा है क्योंकि इंकाइयों को डर है कि उनकी सरकार का समर्थन करने वाले निर्दलीय विधायक डॉ. कारमो पेगाडो किसी भी समय समर्थन वापस ले सकते हैं. ऐसा हुआ तो सरकार आसानी से गिर सकती है.

दूसरी ओर मगोपा भी सरकार को अपदस्थ करने के किसी भी मौके का इंतजार कर रही है. इसके अलावा अपनी मजबूत स्थिति के मद्देनजर वह आत्म-विश्लेषण भी कर रही है. इस रणनीति के तहत पार्टी की छवि सुधारने पर गंभीरता से विचार किया जा रहा है. इसके नाम के साथ जुड़े महाराष्ट्रवादी शब्द को ही हटाने की जरूरत महसूस की जा रही है ताकि इसकी छवि क्षेत्रीयतावादी न लगे.

राणे ने मुख्यमंत्री के रूप में अब तक जो अनुभव हासिल किया है उसे उन्हें अपनी गद्दी बचाए रखने के लिए इस्तेमाल करना होगा और मगोपा को कमजोर करने के लिए भी. उनके लिए यह काम बेहद मुश्किल साबित हो सकता है क्योंकि गोवा की राजनीति में इधर घोटालों और अपराधीकरण के कारण भारी बदलाव आ गया है. जाहिर है राणे को तलवार की धार पर चलना है.

—**रघुनंदन धर**, पणजी में

उत्तर प्रदेश

प्रभावहीन शुरुआत

मुलायम सिंह की सरकार के शुरुआती कदमों से नाउम्मीदी

यहां जनता दल सरकार के गद्दी संभालते ही पूरा राज्य बिजली संकट के कारण जिस तरह अंधेरे में डूब गया उसने मानो भावी झंझावात का संकेत दे दिया. बाद में जो कुछ घटा है उससे अंधेरा छंटने की आशा कम ही दिखती है. मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव अपनी ओर से कुछ ठोस काम करने की जगह इंका से विरासत में मिले ताने-वाने को ही तोड़ने में ज्यादा से ज्यादा वक्त लगाते दिख रहे हैं.

आर.के. गुप्त

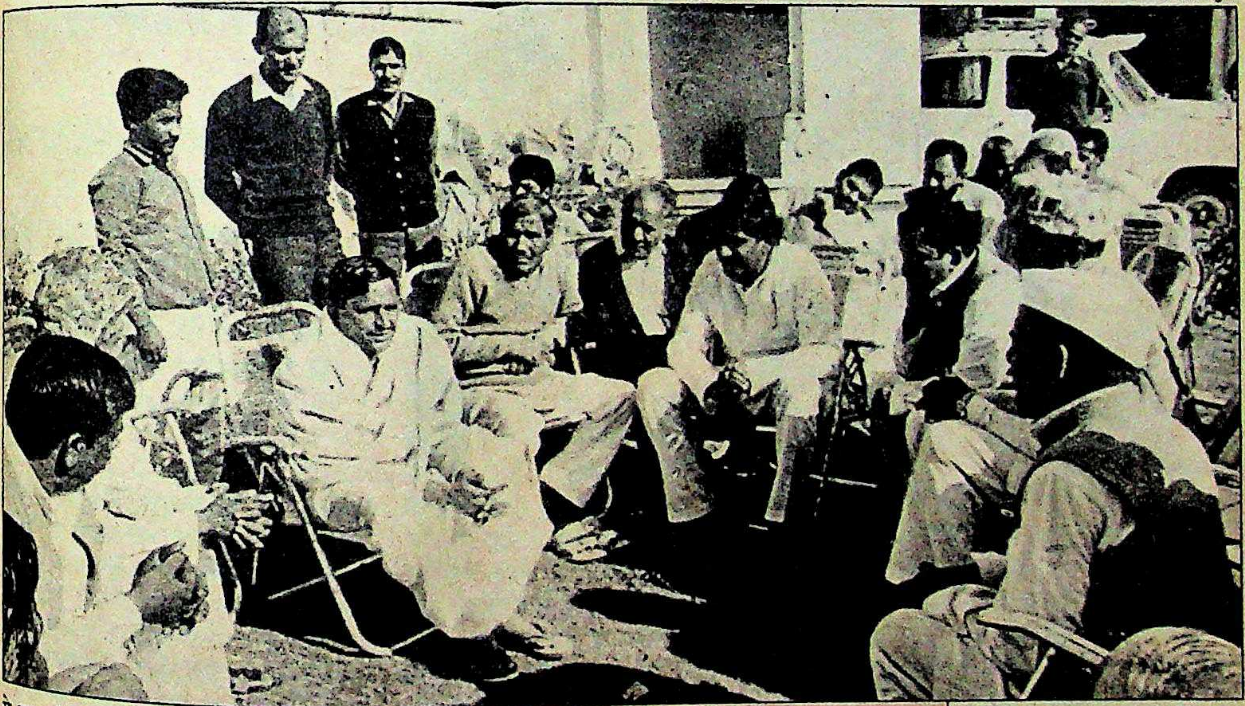

मुख्यमंत्री अपने समर्थकों के साथः प्रभावहीन

प्रशासन दिशाहीन लगता है. अयोध्या तथा आरक्षण विरोधी आंदोलन जैसे विस्फोटक मुद्दों पर सरकार की कोई स्पष्ट नीति नहीं है

मुलायम सिंह के सत्ता संभालने के महीने भर बाद भी प्रशासन दिशाहीन दिखता है. उस पर मुख्यमंत्री की बातों का कोई असर होता नहीं दिख रहा. मुख्यमंत्री भविष्य की कोई साफ रूपरेखा तो नहीं बता रहे हैं मगर पिछली बातों की आलोचना जरूर करते जा रहे हैं. राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद और आरक्षण विरोधी आंदोलन जैसी तात्कालिक समस्याओं पर ठोस नीति अपनाने की जरूरत है परंतु स्पष्ट नीति के अभाव में इन समस्याओं की नियति अधर में लटके रहने की ही लगती है.

वैसे, मुलायम सिंह ने कुछ सकारात्मक कदम जरूर उठाए हैं. मसलन, सुरक्षा के सर्वव्यापी तंत्र को ढीला करना. लेकिन ये उपलब्धियां दूसरे मोर्चों पर उनके नकारात्मक रवैये के कारण धूमिल पड़ जाती हैं. मसलन, मंत्रिमंडल के गठन और कुछ अपराधियों को खुलेआम संरक्षण देने के कारण उनकी आलोचना हुई है.

उनकी कुछ लोक-लुभावन घोषणाओं का उलटा ही असर होता दिख रहा है. 10,000 रु. तक के कर्ज फौरन माफ कर देने की उनकी पहली ही घोषणा सरकार के लिए परेशानी का सबब बन गई. सत्ता संभालने के पहले ही दिन मंत्रिमंडल की पहली बैठक के बाद जल्दबाजी में बिना पूरी जानकारी हासिल किए ही यह फैसला किया गया. जब अधिकारियों ने ऐसे कर्जों का हिसाब लगाया तो इनका कुल योग करीब 3,500 करोड़ रु. बैठा, यानी राज्य के कुल बजट से भी अधिक.

जाहिर है कि परेशान होकर सरकार को अपने पांव खींचने पड़े. पिछले महीने पत्रकारों से बातचीत के दौरान मुख्यमंत्री यह कहने पर मजबूर हुए कि सरकार ने उन किसानों से कर्ज वसूली रोक दी है जो राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक के नियमानुसार 'कर्ज बिलकुल न अदा करने वालों' की श्रेणी में नहीं आते. उक्त श्रेणी में वे छोटे और सीमांत किसान आते हैं जिन्होंने कर्ज का 25 फीसदी भी नहीं अदा किया है. मुलायम सिंह ऐसे कर्जों की माफी के फैसले पर कायम दिखते हैं परंतु कई अर्थशास्त्री और उनके अपने मंत्री इसे निरर्थक नारेबाजी मानते हैं.

राज्य सरकार का दूसरा लोक-लुभावन उपाय भी विवादास्पद साबित हुआ है. वह है पेड़ कटाई पर प्रतिबंध में रियायत. इस पर केंद्रीय पर्यावरण व वन राज्यमंत्री मेनका गांधी ने उन्हें ऐसा कोई कदम उठाने से पहले केंद्र से सलाह करने के लिए लिखा.

आरक्षण विरोधी आंदोलन के मामले में उनकी सरकार के उलझनपूर्ण रवैए के कारण भी मुख्यमंत्री की आलोचना हो रही

है. राज्य के 62 में से 52 जिलों में तनाव फैलने के साथ ही उन्होंने जिला प्रशासनों को विरोधाभासी आदेश जारी किए. स्थिति से निबटने के लिए कभी 'कड़ाई' और कभी 'होशियारी' से काम लेने के आदेश दिए गए. नतीजतन, स्थिति से निबटने में कोताही बरती गई.

लेकिन इस सरकार के लिए जो मसला अग्निपरीक्षा साबित होगा वह है राम जन्मभूमि का. नए मंदिर के निर्माण का काम 27 जनवरी से शुरू होना तय है. इस कारण स्थिति गंभीर हो गई है. मुलायम सिंह यादव ने सख्त रवैया अपनाया तो भाजपा नाराज होकर अलग हो सकती है. फिर, 27 जनवरी के बाद शाति बनाए रखना मुलायम सिंह के लिए एक बड़ी चुनौती होगी.

आर.के. गुप्त

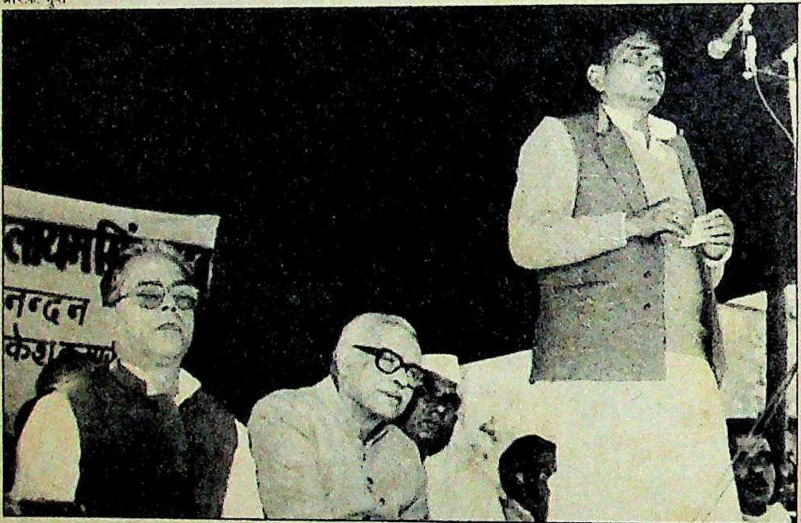

एक स्वागत समारोह में अरुण शंकर के साथ यादवः दिग्भ्रमित

आपराधिक पृष्ठभूमि वाले राजनीतिकों से संबंध रखने के कारण मुख्यमंत्री की छवि मलिन हुई है. उनके कुछ कार्यों में प्रतिशोधी रवैया भी झलकता है

यदि वे शांति नहीं बनाए रख पाए तो जनता दल और भाजपा के संबंधों पर निश्चित रूप से बुरा असर पड़ेगा. यह जोखिम केंद्र नहीं उठा सकता. उसे उम्मीद है कि मुलायम सिंह किसी न किसी चमत्कार से हालात संभाल ही लेंगे.

किसी भी सरकार के कामकाज का जायजा लेने के लिए एक महीने का वक्त कम ही होता है लेकिन इसमें दो राय नहीं कि मुख्यमंत्री के अब तक के तौर-तरीके शायद ही किसी को प्रभावित कर पाए हों. एक अधिकारी की टिप्पणी थी, "कुछ कर दिखाने से बहुत आसान है यह कहना कि कुछ किया जाना चाहिए. मुख्यमंत्री 'किया जाना चाहिए' पर ही जोर देते रहे हैं."

राज्य का मौजूदा बिजली संकट नई सरकार के नौसिखुएपन का ही परिचय देता है. नई सरकार के सत्ता संभालते ही राज्य की बिजली आपूर्ति पांच वर्षों के निम्नतम बिंदु पर पहुंच गई. नतीजतन, आज राज्य हर रोज छह से चौदह घंटे तक अंधेरे में डूबा रहता है. राज्य बिजली बोर्ड को मुख्यमंत्री की धमकियों और बोर्ड के अध्यक्ष भोपाल सिंह को हटाने के बावजूद बिजलीघर की उत्पादन क्षमता नहीं बढ़ पाई है.

हाल ही में इस संकट का जायजा लेने के लिए हुई बैठक में जब अधिकारियों ने यह स्पष्ट करने की कोशिश की कि बिजली उत्पादन में कमी तकनीकी कारणों से आई है तो मुख्यमंत्री उन पर बरस पड़े, "मुझे उल्लू मत बनाओ, मैं सब जानता हूं." इसके बाद मुख्यमंत्री ने आदेश दिया कि ग्रामीण क्षेत्रों को 14 घंटे तक बिजली सप्लाई की जानी चाहिए. अधिकारी जानते थे कि छह से आठ घंटे से ज्यादा समय तक बिजली नहीं दी जा सकती. लेकिन मुख्यमंत्री अपनी बात पर अड़े रहे, "मैं कोई बहाना नहीं सुनना चाहता. यह काम हर हाल में होना ही चाहिए." लिहाजा बोर्ड ने पूरे ग्रामीण क्षेत्र को दो क्षेत्रों में बांट कर ऐसी व्यवस्था की कि एक क्षेत्र को एक दिन चौदह घंटे बिजली मिले, और दूसरा अंधेरे में डूबा अपनी बारी का इंतजार करे.

राज्य मंत्रिमंडल में अनुभवी मंत्रियों की कमी भी साफ देखी जा सकती है. चौदह कैबिनेट मंत्रियों में से छह को राज्यमंत्री रहने का ही अनुभव प्राप्त है. पांच मंत्री ऐसे भी हैं जो पहली बार मंत्री बने हैं, लेकिन कई महत्वपूर्ण विभागों का स्वतंत्र कार्यभार उन्हें सौंपा गया है. यह भी कहा जा रहा है कि तीन मंत्रियों को इसलिए महत्वपूर्ण विभाग दिए गए क्योंकि वे मुलायम सिंह गुट के हैं. ये हैं—रेवती रमण सिंह जिन्हें लघु उद्योग और सिंचाई विभाग; बेनी प्रसाद वर्मा जिन्हें सार्वजनिक निर्माण और आबकारी विभाग; और रामसरन दास जिन्हें गन्ना विकास और राजस्व विभाग सौंपे गए हैं.

अफसरशाही में जो फेरबदल किए गए उनमें भी मुख्यमंत्री पर जातिगत पक्षपात का आरोप है. पूर्ववर्ती सरकार में मुख्यमंत्री की सचिव रहीं नीरा यादव को नियुक्ति सचिव बनाया गया है. उनके पति महेंद्र सिंह यादव को, जो उत्तर प्रदेश सीमेंट कॉर्पोरेशन के सतर्कता विभाग में निदेशक थे, राज्य के खनिज विकास निगम का निदेशक नियुक्त किया गया है.

मुलायम सिंह के कुछ कामों से उनके प्रतिशोधी रवैए की भी झलक मिलती है. इंका से हिसाब चुकता करने के लिए उन्होंने घोषणा की कि जिला परिषद विधेयक में संशोधन किया जाएगा ताकि क्षेत्रीय समितियों के चुने गए प्रमुख और उप-प्रमुख, जिला परिषद के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव अब उनके पदभार संभालने के एक साल के भीतर ही पेश किया जा सके. सरकार को जिला परिषद में नामजद प्रतिनिधियों को हटाने का अधिकार भी दे दिया गया है.

इसके अलावा लखनऊ के कुख्यात अपराधी अरुण शंकर शुक्ल से मेलजोल के कारण भी मुलायम सिंह की छवि मलिन हुई है. लूटपाट से लेकर हत्या तक के 32 मामलों में फंसे अरुण शंकर को अक्सर मुलायम सिंह के घर पर देखा जाता है.

वैसे, मुख्यमंत्री ने खुली सरकार देने के जनता दल के वादे को ईमानदारी से पूरा करने की कोशिश की है. मुख्यमंत्री के कार्यालय से मेटल डिटेक्टर हटा लिए गए हैं. उनके लिए तैनात 12 वाहनों के बेड़े में से आठ हटा दिए गए हैं. और उनके वाहन ट्रैफिक नियमों का पालन करते चलते हैं. लेकिन उत्तर प्रदेश की दांवपेच भरी राजनीति में सफल होने के लिए इन दिखावों के अलावा कुछ ठोस उपलब्धि भी चाहिए. यदि मुलायम सिंह वह नहीं दिखा पाते तो मुख्यमंत्री की कुर्सी उनके लिए आरामदेह नहीं रह पाएगी.

—दिलीप अवस्थी

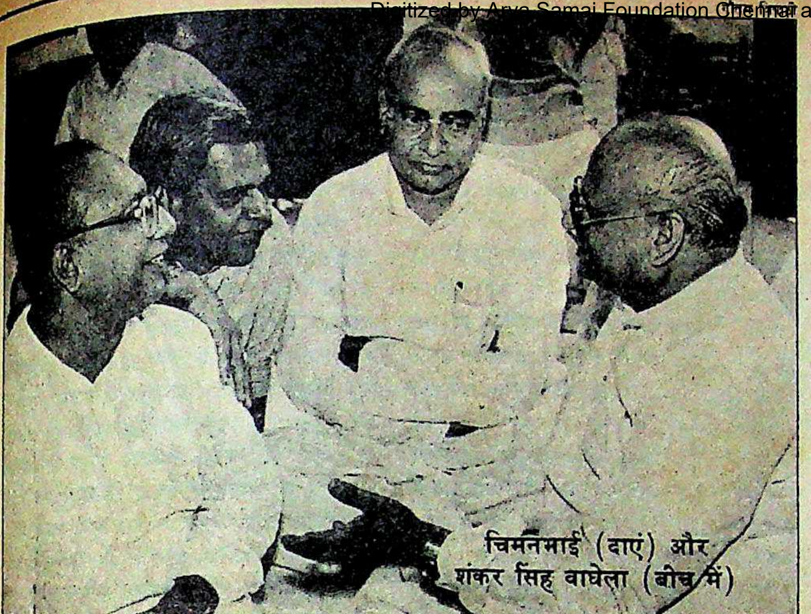

चिमनभाई (दाएं) और शंकर सिंह वाघेला (बीच में)

गुजरात

विपक्ष में विवाद

सीटों के बंटवारे पर द्वंद्व

प्रदेश जनता दल अध्यक्ष चिमनभाई पटेल की छवि एक ऐसे शख्स की रही है जो राजनीति के मंच से कभी गुम नहीं हो सकता. लेकिन लगता है कि जब मुख्यमंत्री बनने के उनके पुराने सपने के साकार होने के आसार दिख रहे थे, तभी वे विपक्षी एकता के लिए, अड़चन साबित होने लगे. खुद उनकी अपनी पार्टी और भाजपा के कुछ लोगों ने उनकी योजना को मटियामेट करने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया.

भाजपा के साथ सीटों के बंटवारे को लेकर मतभेद तब शुरू हुए जब चिमनभाई ने भाजपा को 62 सीटों से अधिक देने से साफ मना करके जनता दल के लिए शेष 120 सीटें रख लीं. भाजपा ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया क्योंकि हाल के लोकसभा चुनाव में राज्य की 26 में से 12 सीटें उसे मिलीं, जबकि जनता दल को 11 सीटें ही मिलीं. मुख्यमंत्री पद के एक अन्य दावेदार केशुभाई पटेल ने, जिन्होंने सीटों के बंटवारे पर हुई बातचीत में भाजपा का प्रतिनिधित्व किया था, 98 सीटों की मांग की. भाजपा की राज्य शाखा के महासचिव नरेंद्र मोदी कहते हैं, "चिमनभाई का दावा बिलकुल थोथा है. जनता दल के नेता इंका को हराने की बात तो करते हैं परंतु सत्ता हड़पने की भूख उनमें भी कम नहीं है." लेकिन जाहिर है कि भाजपा भी सत्ता और मुख्यमंत्री पद हड़पने की फिराक में है.

भाजपा के हौसले को बढ़ावा देने में जनता दल के उन नेताओं का भी हाथ था जो भाजपा को 84 सीटें देने के पक्ष में थे. लेकिन चिमनभाई नहीं झुके. साफ था कि वे उप प्रधानमंत्री देवीलाल के कहे पर चल रहे थे, जो हरियाणा में जनता दल सरकार से भाजपा के हट जाने के बाद उसे नीचा दिखाने पर तुले हुए हैं.

उधर भाजपा भी चिमनभाई के खिलाफ जवाबी कार्रवाई की तैयारी में व्यस्त है. पिछले महीने हुई एक गुप्त बैठक में प्रदेश भाजपा अध्यक्ष शंकर सिंह वाघेला सहित पार्टी के दूसरे नेताओं ने मुख्यमंत्री पद के लिए चिमनभाई की उम्मीदवारी के खिलाफ बिगुल बजाने का फैसला कर लिया. चिमनभाई की जगह पूर्व मुख्यमंत्री बाबूभाई पटेल को सक्रिय राजनीति में उतारने का प्रस्ताव रखा गया. गांधीवादी बाबूभाई राजी हो गए. जनता दल के कुछ नेताओं ने बाबूभाई को जनता दल में शामिल करना चाहा. लेकिन, चिमनभाई बाबूभाई की वापसी का पुरजोर विरोध कर रहे हैं. अपनी ताकत का एहसास कराने के लिए वे असंतुष्ट इंका नेताओं के साथ भी सांठगांठ कर रहे हैं.

अब जबकि सीटों के बंटवारे पर अगली बातचीत जल्दी ही होने वाली है, जनता दल आलाकमान उलझन में हैं. वह गुजरात में विपक्षी एकता में दरार का जोखिम नहीं उठा सकता. और साथ ही वह चिमनभाई जैसे नेता को भी नजरअंदाज नहीं कर सकता जिसके बारे में प्रसिद्ध है कि वे मुख्यमंत्रियों तक को गद्दी से उतारने की ताकत रखते हैं.

—उदय माहूरकर

तमिलनाडु

नाटकीय हथकंडे

अन्ना द्रमुक में कई नाराज

मैडम के रहस्यमय तौर-तरीकों ने तमिलनाडु के राजनैतिक पंडितों को फिर चक्कर में डाल दिया है. हाल के लोकसभा चुनावों के दौरान राज्य में अन्ना द्रमुक-इंका गठबंधन की शानदार जीत से उम्मीद बंधी थी कि इससे पहेली-सी बनीं जयललिता को पार्टी की स्थिति मजबूत करने की प्रेरणा मिलेगी. पर ऐसा कुछ नहीं हुआ. उलटे मैडम ने एक बार फिर राजनीति से संन्यास लेने की धमकी दे डाली. आदत के मुताबिक उन्होंने तत्काल अपना फैसला वापस भी ले लिया. उधर उनकी ही पार्टी के लोग उनका साथ छोड़ने लगे.

श्याम टेकवानी

जयललिता: भावुक तौर-तरीके

एक साल में तीसरी बार इस्तीफे का जयललिता का नाटक पहला संकेत था कि वे अपने अति भावुकतापूर्ण तौर-तरीकों को बदलने वाली नहीं हैं. द्रमुक शासित राज्य में अप्रत्याशित जीत का हो-हल्ला अभी थमा भी नहीं था कि उन्होंने संवाददाताओं को अपने घर बुलाकर स्वास्थ्य की बिना पर इस्तीफे की घोषणा कर डाली. पर 24 घंटों के भीतर ही उन्होंने फैसला बदल दिया. इस बीच उनकी फोन पर राजीव गांधी से बातचीत भी हुई.

जयललिता ने कुछ ऐसी राजनैतिक चालें भी चलीं जो विनाशकारी साबित हो सकती हैं. इनमें अन्ना द्रमुक विधायक दल के उपनेता और कुछ समय से नजरे-इनायत खो

चुके एस.तिरुनावक्करासु के जायज दावे की अनदेखी करके एक महत्वहीन विधायक एस. आर. राधा को विधानसभा में विपक्ष का नेता मुकर्रर करना शामिल है. मामले को उलझाते हुए जयललिता ने कुछ समय बाद ही राधा को भी अपमानित किया. पार्टी विधायकों के 'कहने' पर वे विधानसभा में विपक्ष की नेता बने रहने के लिए मान गईं.

आश्चर्य नहीं कि नेता के पलायन की वजह से दो वरिष्ठ पार्टीजनों ने संगठन से अलविदा होने का फैसला कर लिया. पिछले पखवाड़े वरिष्ठ उप-महासचिव एस. राघवानंदम द्रमुक में शामिल हो गए जबकि दूसरे महत्वपूर्ण नेता एच.वी. हांडे जनता दल में. दोनों ने अपने इस्तीफों के लिए जयललिता की अलोकतांत्रिक कार्यशैली को जिम्मेदार ठहराया.

राघवानंदम और हांडे का यह कदम अन्ना द्रमुक से इस्तीफों की शुरुआत मानी जा सकती है क्योंकि मद्रास में चर्चा आम है कि पार्टी के दूसरे लोग भी द्रमुक और जनता दल से गुप्त बैठकें कर रहे हैं. अन्ना द्रमुक के एक असंतुष्ट नेता तो निश्चय ही तिरुनावक्करासु हैं. उन्हें और अपमानित करने के लिए जयललिता ने इस मामूली से आरोप की गुप्त जांच का आदेश दिया है कि उन्होंने अपने चुनाव क्षेत्र में अपने करीबी लोगों को तरजीह देते हुए स्थानीय नेताओं की अनदेखी की. जांच समिति के अध्यक्ष तिरुनावक्करासु के जाने माने विरोधी आर.एम. वीरप्पन और पूर्व मंत्री एस. मुथुस्वामी हैं. विडंबना यह है कि वीरप्पन भी नाखुश बताए जाते हैं.

अन्ना द्रमुक जहां हाल के चुनावों में हासिल उपलब्धियों को तेजी से खोती दिख रही है, वहीं जनता दल की राज्य शाखा अपने सूत्रों को जोड़ने की प्रक्रिया में है. उसकी पहली उपलब्धि जाने माने फिल्म अभिनेता शिवाजी गणेशन को राज्य पार्टी अध्यक्ष बनाने की रही. गणेशन ने अपनी डूबती पार्टी तमिल मुनेत्र मुन्नानी का जनता दल में विलय कर दिया था. इसके पीछे विचार यह था कि एक फिल्मी सितारे को दूसरे फिल्मी सितारे से भिड़ाया जाए. पहली ही भिड़ंत में गणेशन ने अपनी पूर्व सहयोगी जयललिता के खेमे से हांडे को तोड़कर जीत हासिल की. बताया जाता है कि अन्ना द्रमुक के कई और असंतुष्ट नेता गणेशन से बातचीत चला रहे हैं.

इधर जनता दल जयललिता की पार्टी में सेंध लगा रहा था तो उधर खुद वे हैदराबाद में आंध्र प्रदेश के नए मुख्यमंत्री एम.चेन्ना रेड्डी का आतिथ्य लाभ उठाने में व्यस्त थीं. इससे पार्टी के प्रति उनकी लापरवाही फिर सामने आई.

—कविता शेट्टी

कर्नाटक

असंतोष के तेवर

मुख्यमंत्री के लिए मुसीबत

राजनैतिक प्रतिद्वंद्वियों को संतुष्ट करने की इंकाई मुख्यमंत्रियों की शैली यह रही है कि वे अक्सर अपने मंत्रिमंडल के विस्तार की मंजूरी के लिए दिल्ली दौड़ते रहे हैं. लेकिन कर्नाटक के मृदुभाषी मुख्यमंत्री वीरेंद्र पाटील इस शैली से बचने की कोशिश करते रहे हैं ताकि पार्टी आलाकमान के आदेशों को झेलना न पड़े.

लेकिन पिछले पखवाड़े मामला उलटा हो गया. पार्टी 'आलाकमान' खुद बंगलूर पहुंच गया. मैसूर में राजीव गांधी के होटल के कमरे के बाहर राज्य के कई नेता मुख्यमंत्री के खिलाफ शिकायतें दर्ज कराने के लिए पहुंचे. नतीजतन राजीव ने पाटील को अपने मंत्रिमंडल का विस्तार करने और असंतुष्टों को सुलह कर लेने का फरमान दिया.

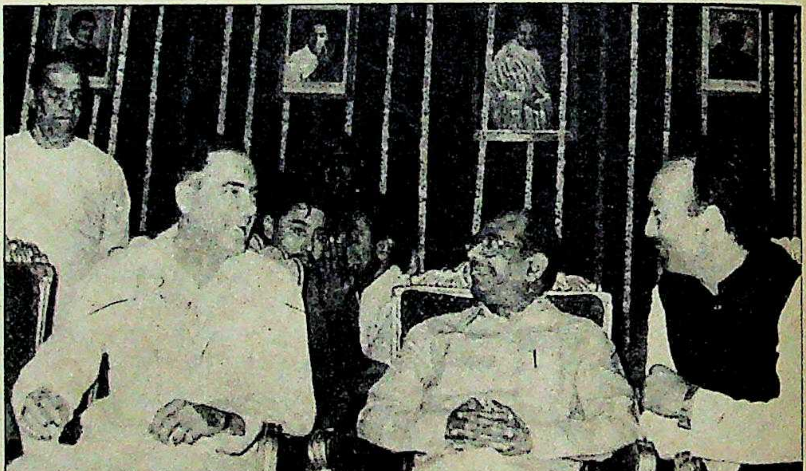

मुश्ताक अहमद

बंगलूर में इंकाई कार्यकर्ताओं की बैठक में राजीव, पाटील और गुलाम नबी आजाद

पाटील के लिए मुसीबतें तभी शुरू हो गई थीं जब उन्होंने 177 सदस्यों की विधानसभा से महज 11 मंत्री चुने. तब से मुख्यमंत्री को विधायकों के दो गुटों के विद्रोह का सामना करना पड़ रहा है. एक गुट उन लोगों का है जो मंत्रिमंडल में शामिल होने की इच्छा रखते हैं जबकि दूसरे गुट में वे लोग हैं जो जानते हैं कि पाटील के रहते मंत्री नहीं बन सकते.

लेकिन पाटील किसी भी गुट को घास डालने को तैयार नहीं हैं. बहरहाल राजीव की यात्रा से दोनों गुट मुखर हो उठे. मंत्री पद के आकांक्षियों ने पार्टी अध्यक्ष को आगामी नगरपालिका चुनावों के मद्देनजर सभी जिलों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व देने के लिए मंत्रिमंडल के विस्तार की जरूरत समझाई (फिलहाल 20 में से 6 जिलों का ही सरकार में प्रतिनिधित्व है). उधर कट्टर असंतुष्टों ने पाटील को हटाने के लिए आरोपों की बौछार कर दी.

प्रमुख आरोप इस प्रकार हैं: पाटील कई प्रशासनिक भूलें कर राज्य में पार्टी की छवि को गंभीर नुकसान पहुंचा रहे हैं, उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री रामकृष्ण हेगड़े के प्रति नरमी का रुख अपना रखा है और उनके खास लोगों को राज्य के महाधिवक्ता जैसे प्रमुख पदों पर बिठाया है. पाटील को हटाने की मुहिम में मुखर रहे ए.के. सुब्बैया कहते हैं, "एक तरह से यह सरकार हेगड़े ही चला रहे हैं."

सुब्बैया ने राजीव के कान भरे कि पाटील ने योजना आयोग के उपाध्यक्ष के पद पर हेगड़े की नियुक्ति की प्रशंसा की और उन्हें निजी भोज पर बुलाया.

पिछले हफ्ते तक यह स्पष्ट हो गया कि असंतुष्टों की मुहिम कुछ हद तक कामयाब रही है. राजीव ने पाटील की इस दलील को नामंजूर कर दिया कि वे बजट अधिवेशन के बाद मंत्रिमंडल का विस्तार करेंगे. पाटील को जोर देकर कहा गया कि तब तक बहुत देर हो जाएगी क्योंकि राज्य सरकार ने अभी विधानसभा के बजट अधिवेशन की तारीख भी तय नहीं की है.

अब लग रहा है कि सम्मन भेजकर दिल्ली बुलाने की पुरानी परंपरा फिर से शुरू की जा रही है. मुख्यमंत्री वीरेंद्र पाटील आलाकमान की फटकार सुनने के लिए तुरंत दिल्ली रवाना हुए तो पार्टी के नेता मंत्री पद की लालसा को साकार होता देख शपथ-ग्रहण की तैयारी करने लगे हैं.

—चिदानंद राजघट्टा

नंदमूरि तारक रामराव

परदे की ओट

हार के बाद फिल्मों की ओर

आंध्र प्रदेश में लगता है कि घटनाएं किसी फिल्म की तरह फ्लैश बैक में मुड़ने वाली हैं. सात साल पहले फिल्मों से राजनीति में आए पूर्व मुख्यमंत्री नंदमूरि तारक रामराव अब फिल्मों की रुमानी दुनिया में लौटने की तैयारी में दिख रहे हैं. 1990 के उनके कार्यक्रम में किसी राजनैतिक नाटकबाजी या किसी रथयात्रा या किसी मुद्दे को लेकर लड़ने की तैयारी नहीं दिख रही है. उनका कार्यक्रम 'ब्रह्मर्षि विश्वामित्र' सहित तीन फिल्मों को पूरा करने का ही दिख रहा है.

विधानसभा और लोकसभा के पिछले चुनावों में अपनी पार्टी तेलुगु देशम की करारी हार की अनदेखी करते हुए रामराव कहते हैं, "मैं राष्ट्र को अपने योगदान के रूप में अपनी सांस्कृतिक गतिविधियां जारी रखूंगा." लेकिन असलियत यह है कि अब तक के अपने राजनैतिक जीवन में पहली हार झेलने के बाद ये भगवां वस्त्रधारी नेता अपने आप में सिमट-से गए हैं. वे उसी जनता से बचते फिर रहे हैं जिसे वे भगवान कहा करते थे.

रामराव कहते हैं, "मैं ठोस योजना बनाऊंगा और जनता के पास सही वक्त पर जाऊंगा." लेकिन फिलहाल तो यही लग रहा है कि उनकी योजना हिमालय की पहाड़ियों में जाने की है ताकि 'विश्वामित्र' की शूटिंग फिर से शुरू की जा सके.

लोकप्रियता की सीढ़ियां चढ़ने और राजनैतिक मंच पर पुनः प्रतिष्ठित होने के लिए रामराव केवल 'विश्वामित्र' के ही भरोसे नहीं हैं. उन्होंने और भी उपाय सोच रखे हैं. वे तेलुगु संत कवि श्रीनाथ के जीवन पर एक फिल्म बनाने जा रहे हैं, जिसमें प्रमुख भूमिका खुद वे निभाएंगे. इसके बाद साल के अंत में वे तीसरी फिल्म शुरू करेंगे जिसमें बुद्ध और अशोक के संदेशों को आधार बनाया जाएगा. वे कहते हैं, "मैं यह दिखाने की कोशिश करूंगा कि हिंसा और अहिंसा के संघर्ष में अंततः धर्मचक्र हमारे राष्ट्रीय झंडे का चिन्ह कैसे बन गया."

लेकिन तेलुगु देशम का क्या होगा? पार्टी के एक पूर्व मंत्री कहते हैं, "केवल वे ही पार्टी को एकजुट रख सकते हैं. लेकिन वे इस ओर ध्यान देते नहीं दिख रहे हैं. इसकी कीमत हमें पार्टी के विभाजन के रूप में चुकानी पड़ सकती है." पार्टी अपना आधार खोती जा रही है और इस उम्मीद में है कि उसके सर्वेसर्वा उसे बदहाली से उबारेंगे. पार्टी के लोग याद करते हैं कि 1982 में रामराव के साठवें जन्मदिन पर पार्टी की शुरुआत की गई थी. उन्हें उम्मीद है कि रामराव के अगले जन्मदिन 28 मई से, जबकि 'ब्रह्मर्षि विश्वामित्र' रिलीज की जाने वाली है, पार्टी को फिर से मजबूत करने के उपाय शुरू किए जाएंगे.

बाबजी/जनता स्टूडियो

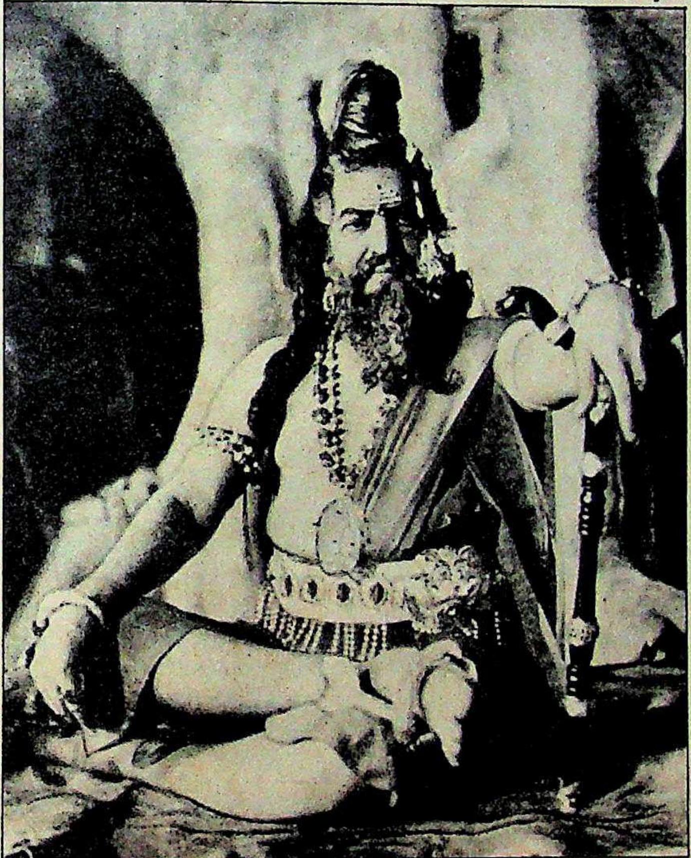

रामराव केवल 'विश्वामित्र' के ही भरोसे नहीं हैं. वे परदे पर तेलुगु संत कवि श्रीनाथ, बुद्ध तथा अशोक बनकर भी आने वाले हैं

अब देखना यह है कि रामराव जीवन की नई वास्तविकताओं से किस तरह तालमेल बिठाते हैं. तेलुगु देशम के एक नेता कहते हैं, "यह दुखद इसलिए है क्योंकि राजनीति का मतलब उनके लिए सत्ता में होना है." इसलिए आज जबकि रामराव मुंह छिपाते-से फिर रहे हैं, पार्टीवालों को एहसास होने लगा है कि वे राजनीति में न तो मन से और न ही किसी विचारधारा के कारण रहे बल्कि अवसर के तकाजे पर ही रहे. रामराव के इस बयान से निराशा ही झलकती है, "1991 के शुरू तक मुझे अपने भगवान के आदेशों का इंतजार करना होगा."

जाहिर है कि तेलुगु देशम के प्रमुख अब नई हकीकतों से तालमेल बिठाने में मुश्किल महसूस कर रहे हैं. अब न तो चाक-चौबंद पहरेदार हैं और न ही आगे-आगे चलने वाली पुलिस की गाड़ी. यहां तक कि उनके लिए भाग्यशाली मानी जाने वाली नौ नंबर की गाड़ी भी वापस ले ली गई है. अब उन्हें सिर्फ विपक्ष के नेता की हैसियत से मिलने वाली एक मोटरगाड़ी उपलब्ध है.

लेकिन हमेशा की तरह आज भी वे अनुशासन के साथ रहते हैं. रात के नौ बजे ही सो जाते हैं और देर रात एक-दो बजे के बीच जागकर योग और दूसरे व्यायाम करते हैं. जब वे मुख्यमंत्री थे तब नौकरशाहों को अक्सर पौ फटने से पहले ही अपने यहां बुला लिया करते थे. लेकिन अब न तो मिलने वालों की उतनी बड़ी भीड़ है और न ही पांव छूकर आशीर्वाद पाकर गद्गद हो जाने वाली पार्टी कार्यकर्ताओं की उतनी बड़ी जमात नजर आती है.

पिछले वर्ष के आखिरी दिनों में जब 'विश्वामित्र' की शुरुआत हुई थी तब विश्वामित्र के भेष में वे मेनका बनी मीनाक्षी शेषाद्रि के साथ खुली जीप में हैदराबाद की सड़कों पर निकल पड़े थे. उनकी पार्टी के लोगों को उम्मीद है कि परदे पर रामराव ने संत की भूमिका विश्वसनीय तरीके से निभाई तो लोग फिर उनके लिए उमड़ पड़ेंगे. **—अमरनाथ के. मेनन**

गुजरात

दरार पटी नहीं

● गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री अमरसिंह चौधरी ऐसे खेल में व्यस्त हैं जो उनके स्वभाव के विपरीत है. अपनी जगह मुख्यमंत्री बनाए गए माधव सिंह सोलंकी पर तो हमले का वे कोई मौका नहीं चूकते.

चौधरी का दुराग्रह पिछले महीने सोलंकी मंत्रिमंडल के खिलाफ एक विद्रोह की अगुआई करते समय सामने आया. उनके समर्थक 50 विधायकों ने धमकी दी कि 'यदि सोलंकी को 72 घंटे के भीतर नहीं हटाया गया' तो वे इस्तीफा दे देंगे. आखिरकार, उन्हें शांत करने के लिए हरकिशनलाल भगत और भजनलाल को भेजा गया. उन्होंने अपनी मांग वापस तो ले ली लेकिन प्रदेश इंका अध्यक्ष प्रबोध रावल की जगह विधानसभा अध्यक्ष नटवरलाल शाह को बिठाने की शर्त पर.

एक हफ्ते बाद चौधरी ने अपना दूसरा गोला दागा. दक्षिण गुजरात में एक विशाल रैली में उन्होंने सोलंकी की कटु आलोचना की. रैली की सफलता से उत्साहित होकर पिछले पखवाड़े उन्होंने बिहार के जगन्नाथ मिश्र की तर्ज पर राज्य का दौरा भी शुरू कर दिया.

चौधरी: आक्रामक रुख

यही नहीं, चौधरी के समर्थकों ने जनता दल के नेताओं से गुप्त बातचीत भी शुरू कर दी जिससे ये अटकलें लगाई जाने लगीं कि चौधरी पार्टी छोड़ रहे हैं. लेकिन चौधरी ने इसका खंडन किया, "मेरे पास 62 विधायकों के इस्तीफे हैं और जिस क्षण मैं उन्हें सौपूंगा सोलंकी सरकार गिर जाएगी. पर मैं ऐसा नहीं करूंगा."

फिर भी सोलंकी परेशान नहीं हैं क्योंकि चौधरी और उनके समर्थक, जो कई घोटालों में शामिल रहे हैं, अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने के लिए प्रसिद्ध हैं.

पश्चिम बंगाल

राय की खामखयाली

● पश्चिम बंगाल की राजनीति में 12 साल के बाद पंजाब के पूर्व राज्यपाल सिद्धार्थ शंकर राय की वापसी से दो बातें बिलकुल साफ हो गईं: पहली यह कि वे जर्जर प्रदेश इंका का नेतृत्व संभालने जा रहे हैं और दूसरी यह कि वे वाम मोर्चा सरकार को चैन की सांस नहीं लेने देंगे.

पिछले पखवाड़े राय ने जब राज्य के ग्रामीण इलाकों का तूफानी दौरा कर 'माकपाई आतंकवाद' के शिकार लोगों को सांत्वना दी और उन्हें 'हिंसा से नहीं तो अहिंसा से' इसका जवाब देने की सलाह दी तो उनकी रणनीति के बारे में किसी को कोई संदेह नहीं रहा.

प्रमोद पुष्करणा

सिद्धार्थ शंकर राय: वापसी की राजनीति

राय ने पार्टी को फिर से मजबूत बनाने के मसले पर प्रदेश इंका अध्यक्ष ए.बी.ए. गनी खां चौधरी से भी 'बेबाक' बातचीत की. लेकिन चौधरी का जवाब था, "हमारे पास अलादीन का चिराग तो है नहीं कि रातोरात पश्चिम बंगाल हमारे हाथ में आ जाएगा."

दरअसल, राज्य में पार्टी के सभी गुट राय को नेता मनाने के लिए तैयार नहीं हैं. एक गुट के नेता ने सवाल किया, "जब हम यहां मार्क्सवादियों के हाथों पिट रहे थे तब वे कहां थे?" इसके बावजूद राय को उम्मीद है कि उन्हें आम राय से पार्टी प्रमुख पद के लिए चुन लिया जाएगा. वे बचाव की मुद्रा में कहते भी हैं, "यदि राज्य के इंका नेता मेरी सेवाएं नहीं चाहते तो मैं अपने कदम पीछे खींच लूंगा." फिलहाल, राज्य को इंका की झोली में डालने की राय की उम्मीद खयाली पुलाव ही है.

कर्नाटक

दूसरे दौर की तैयारी

● हाल के चुनाव में कर्नाटक में जनता दल को धूल चटाने के बाद इंका अब उसे नेस्तनाबूद करने की तैयारी कर रही है. इसी रणनीति के तहत उसने छह नगर निगमों और 170 नगरपालिकाओं के चुनाव कराने की घोषणा की है. कांग्रेसियों को उम्मीद है कि इन चुनावों में भी वे जनता दल को पीट देंगे. इंका कर्नाटक के पंचायती राज संस्थानों पर भी नजर गड़ाए हुए है. इनमें से ज्यादातर संस्थाओं पर जनता दल का कब्जा है. राज्य सरकार इनकी समीक्षा और पंचायती राज कानून में संशोधन की धमकी भी देती आ रही है. जनता दल के नेता जीवराज अल्वा कहते हैं, "जाहिर है, वे हमें मटियामेट करने की कोशिश कर रहे हैं."

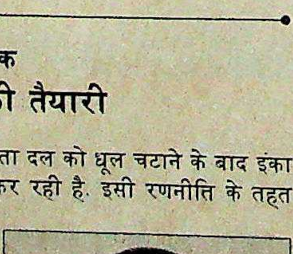

अल्वा: मटियामेट होने का डर

मध्य प्रदेश

चित्रों पर तकरार

● यदि राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद से हटने के बाद भी अपना पुराना जलवा देखना हो तो उन्हें मध्य प्रदेश का दौरा करना चाहिए. श्यामाचरण शुक्ल की इंकाई सरकार के लिए वे अभी भी प्रधानमंत्री बने हुए हैं. वहां आज भी सरकारी इमारतों की दीवारों पर उनके चित्र लगे हुए हैं. और तो और, सरकार ने सड़कों के किनारे लगे उन होर्डिंगों को भी हटाना जरूरी नहीं समझा जिन पर पूर्व प्रधानमंत्री की उद्घोषणाएं लिखी हुई हैं.

गौरतलब बात यह है कि राष्ट्रीय नेताओं, खासकर प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति के चित्रों को लगाने या हटाने का काम राज्य सरकार का सामान्य प्रशासन विभाग करता है. लेकिन दो महीने पहले केंद्र में सरकार बदलने के बावजूद विभाग ने राजीव गांधी की जगह प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के चित्र लगाने का आदेश जारी नहीं किया है.

राज्य सरकार की इस लापरवाही से जनता दल के कुछ नेता इस कदर नाराज हो उठे कि उन्होंने पिछले पखवाड़े रायपुर के सर्किट हाउस से राजीव के चित्रों को जबरन हटा दिया. इसके साथ ही उन्होंने यह धमकी भी दी कि अगर राज्य सरकार ने 24 घंटे के भीतर मध्य प्रदेश की सभी सरकारी इमारतों से पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के चित्र नहीं हटाए तो वे उन्हें जबरदस्ती हटा देंगे.

लेकिन राज्य प्रशासन पर इस धमकी का कोई असर नहीं पड़ा है. सरकारी इमारतों में लगी राजीव की तस्वीरें अभी भी आगंतुकों को घूर रही हैं. और राज्य भर में लगे उनकी उद्घोषणा वाले होर्डिंग आज भी लोगों को उनके वादे और लुभावनी घोषणाओं से छलते हैं.

अब गरमागरम बहस का मुद्दा है कि यह सब जानबूझकर किया जा रहा है या अनजाने में. वैसे यह राज्य सरकार की ही करतूत दिखती है क्योंकि वह इतने दिनों बाद भी राज्य में इंका के पिटने और केंद्र में गैर-इंकाई प्रधानमंत्री के बैठने की कड़वी सचाई नहीं झेल पा रही. या हो सकता है कि वह खुद को भुलावे में रखना चाहती है—और साथ ही जनता में यह भ्रम पैदा करना चाहती है कि अभी भी इंका की सत्ता बरकरार है.

हबीब तनवीर

'शहरी कलाकार आधे-अधूरे हैं'

*नया साल रंगकर्मी हबीब तनवीर के लिए एक और सौगात लेकर आया. उनके रंगकर्म को लगातार गुणवत्ता वाला बताते हुए मध्य प्रदेश सरकार ने उन्हें प्रदर्शनकारी कलाओं के शीर्ष पुरस्कार 'कालिदास सम्मान' के लिए चुना. देशज जड़ों से जुड़े हबीब तनवीर का रंगकर्म इतनी कूवत रखता है कि 'चरणदास चोर' जैसी कृतियां समकालीन रंगकर्म की अंतरराष्ट्रीय उपलब्धि की तरह स्वीकार की जाती हैं. रायपुर (म.प्र.) के आसपास के छत्तीसगढ़ी लोक कलाकारों को लेकर तीन दशकों से वे नई दिल्ली में 'नया थिएटर' नामक व्यावसायिक रंगमंडली के साथ हैं. आगरा बाजार, चरणदास चोर, बहादुर कलारिन, हिरमा की अमर कहानी, मिट्टी की गाड़ी, सोन सागर, दुश्मन और शाजापुर की शांतिबाई उनकी प्रमुख प्रस्तुतियां हैं. नाट्य निर्देशक और रूपांकनकार के अलावा वे एक नाटककार, संगीतकार और अभिनेता भी हैं. नई दिल्ली के दक्षिणी छोर पर बेरसराय में हबीब अपनी रंगमंडली के साथ रहते हैं. वहीं रिहर्सल के दौरान उन्होंने **शाहिद मिर्ज़ा** से बातचीत की. उसके अंश:*

● ***उम्र के सातवें दशक में इनाम इकराम पाना कैसा लगता है?***

यह बहुत अर्थपूर्ण है. जैसे एकाएक नई ताकत मिल गई हो. यह और भी अच्छा है कि इनाम तब मिले जब आप सक्रिय हों, काम कर रहे हों.

● ***आप थिएटर की पढ़ाई के लिए इंग्लैंड गए थे. पर वहां आपने पूरी तालीम क्यों नहीं ली?***

मुझे रॉयल एकेडमी ऑफ ड्रामेटिक आर्ट्स (राडा) में सीखते हुए लगा कि जो तालीम मुझे दी जा रही है वह मेरे किसी काम की नहीं है. मुझे हिंदुस्तान में थिएटर करना है और अपनी भाषा में, बोली में करना है. तब इस बात का कोई मतलब नहीं था कि तीन हफ्तों तक 'डब्ल्यू' बोलने का अभ्यास किया जाए.

● ***आपको रंगकर्म का अपना मुहावरा देशज जड़ों में तलाशने की प्रेरणा कहां से मिली?***

हिंदुस्तान से चलने के पहले यही कुछ जेहन में था कि हिंदुस्तानियत को बरकरार रखना है. जब पूर्वी बर्लिन में ब्रेख्त का काम देखा तो लगा कि जब बाहर के लोग तक हमसे ले रहे हैं तो हमें क्यों हिचकिचाहट होनी चाहिए. एक तरह का हौसला मिला.

अपने ग्रामीण कलाकारों के बारे में मुझे फख्र है. इनकी तुलना में शिक्षित, शहरी कलाकार आधे-अधूरे हैं. उनके पास न तो कला है, न परंपरा.

● ***'नया थिएटर' को व्यापक स्वीकृति कब और किस प्रस्तुति से मिली?***

1974 में हम लोगों ने 'चरणदास चोर' खेला था. दिलचस्प कहानी और सहज शैली की वजह से यह इस कदर लोकप्रिय हुआ कि आज तक जारी है. 'नया थिएटर' को तब तक 15 साल हो गए थे. बहुत मुश्किलों में गुजरा यह अरसा.

● ***राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से आपकी कभी पटरी नहीं बैठी?***

आप कह सकते हैं. दरअसल अलकाजी का यह स्कूल पश्चिमपरस्त था. पश्चिम से आक्रांत भी. इसकी जड़ें हिंदुस्तान में नहीं थीं. पर मैं तो जड़ों की तलाश में था. फिर पटरी कैसे बैठती.

● ***गांव-देहात से आए लोक कलाकारों के साथ आपकी लंबी संलग्नता और कामयाबी का राज क्या है?***

राज क्या हो सकता है? ऐसे ग्रुप के साथ मुश्किलें बेहिसाब होती हैं. और फिर मेरे कलाकार भी हाड़-मांस के लोग हैं. मैंने बेहिसाब बर्दाश्त किया है. मुझे अपने ग्रामीण कलाकारों के बारे में फख्र है, इनकी तुलना में शिक्षित, शहरी कलाकार आधे-अधूरे हैं. उनके पास न तो कला है, न परंपरा. सिर्फ तकनीकी शिक्षा है.

● ***नुक्कड़ नाटक का क्या आकलन करते हैं आप?***

ये उद्देश्यपूर्ण नाटक हैं. दिलों की जलन को, आग को, कुंठा को ये सामने लाते हैं. अब ये एक आंदोलन जैसा बन गया है देश में.

● ***लेकिन हिंदी रंगमंच की हालत आम तौर पर खस्ता ही है?***

दिल्ली में बैठकर आपको यही लगेगा. हिंदी प्रदेशों के छोटे शहरों, कस्बों और गांवों में बहुत उम्मीद नजर आती है मुझे.

● ***आपने पचास के दशक का पूर्वी यूरोप देखा है. ये तब्दीलियां कैसी लगती हैं?***

मैं बहुत खुश हूं. बहुत उम्मीद बंधती है. सारे पूर्वी यूरोप में आज ताजा हवा का झोंका आया है. मैंने पचास के दशक के दमन और ज्यादती को भी देखा है. इसीलिए मुझे यह परिवर्तन बहुत खुशगवार लगा.

● ***आपके नए नाटक की विषयवस्तु क्या है?***

इस नाटक की विषयवस्तु कोई तीस-पैंतीस बरसों से जेहन में छाई हुई है. यह नाटक है कार्य और परिणाम, व्यक्ति और समाज के रिश्तों के बारे में. सवाल यह है कि क्या समाज के बंधन आदमी आसानी से तोड़ सकता है? मार्क्स का फलसफा है. नाम है 'विराट'.

● ***आप मार्क्स के फलसफे की बात कर रहे हैं और इंदिरा जी की हिमायत में नाटक भी किया था आपने?***

जी हां, किया था. ऐसा करने से मेरी धारणा नहीं बदली. 1971-72 की बात है. तब इंदिरा गांधी और कम्युनिस्ट करीब थे.

● ***यानी कलाकार की सामाजिक-राजनैतिक भूमिका के आप हामी हैं?***

बेशक. जुल्म और नाइंसाफी के खिलाफ कलाकार को आंदोलन करना ही चाहिए.

जापानियों को झटका

बर्नपुर स्थित भारत के सबसे पुराने इस्पात कारखाने को आधुनिक बनाने के कार्यक्रम की फिर से समीक्षा करने का फैसला करके केंद्रीय इस्पातमंत्री दिनेश गोस्वामी ने जापानी इस्पात कंपनियों को मुश्किल में डाल दिया है. उन्हें भरोसा था कि वे ही इस आधुनिकीकरण के लिए पूरा उपकरण देंगी. हाल में निप्पॉन स्टील कार्पोरेशन की अगुआई में पांच जापानी कंपनियों के समूह ने इस पुराने कारखाने को आधुनिक बनाने की विस्तृत इंजीनियरिंग रिपोर्ट दी है जिसमें इस पर 6,000 करोड़ रु. निवेश की जरूरत बताई गई है. जापान सरकार ने इस योजना के लिए 1,750 करोड़ रु. कर्ज की मंजूरी भी दे दी थी और उम्मीद थी कि इसी महीने उपकरणों की आपूर्ति के लिए निविदाएं जारी हो जाएंगी. अब जापानी कंपनियां यह सदमा सहने के लिए तैयार हो रही हैं कि आर्डर का काफी हिस्सा प. जर्मन, सोवियत और संभवतः ब्रिटिश कंपनियां भी ले जाएंगी.

मॉडर्न की महत्वाकांक्षा

एशिया में ब्रेड बनाने वाली सबसे बड़ी कंपनी मॉडर्न फूड इंडिया लिमिटेड के विस्तार की महत्वाकांक्षी योजनाएं हैं. सार्वजनिक क्षेत्र की इस कंपनी ने पिछले दो वर्षों में देश के विभिन्न हिस्सों में नौ कारखाने लगाए हैं. भोपाल का कारखाना पिछले पखवाड़े ही शुरू हुआ. 13 कारखाने उसके पास पहले से थे. अब कंपनी साल भर में ही कश्मीर से लेकर कोहिमा के बीच 21 और इकाइयां लगाना चाहती है. अगर इस पर अमल हो गया तो इसकी उत्पादन क्षमता अब के 18 करोड़ ब्रेड सालाना से दोगुनी हो जाएगी. तब मॉडर्न फूड इंडिया लिमिटेड शायद दुनिया की सबसे बड़ी ब्रेड कंपनी बन जाए.

किस्मत संवरी कुद्रेमुख की

भारत और ईरान के बीच आर्थिक संबंधों में अच्छा बदलाव आने वाला है. अगले महीने 688 करोड़ रु. वाली कुद्रेमुख परियोजना का विवाद सुलझ जाने की उम्मीद है. कर्नाटक की यह परियोजना शाह के जमाने में शुरू हुई थी और ईरान ने इस कारखाने से लौह अयस्क खरीदने का वादा किया था. लेकिन बाद में 'खुमैनी राज' में ईरान इससे मुकर गया. अब दोनों देश एक करार पर हस्ताक्षर करने वाले हैं जिसके अनुसार भारत प्रति वर्ष ईरान के अहवाज़ इस्पात कारखाने को 15 लाख टन लौह अयस्क देगा. आगे 10 लाख टन और अयस्क देने की संभावना भी रहेगी. इतना ही नहीं, पिछले पखवाड़े अपनी भारत यात्रा के समय ईरान के आर्थिक और अंतरराष्ट्रीय मामलों के उपमंत्री अली शम्स अर्देकानी ने पाकिस्तान होकर भारत और ईरान के बीच 3,500 किमी लंबी गैस पाइप लाइन बनाने का प्रस्ताव भी रखा.

खूबसूरत वादियों से निर्यात

शहरी कोलाहल से दूर तमिलनाडु की कुनूर पहाड़ियां शत-प्रतिशत निर्यात वाले कंप्यूटर सॉफ्ट वेयर के लिए आदर्श पृष्ठभूमि प्रदान करती हैं. तीन अमेरिकी संगठनों द्वारा बनाई गई कंपनी डब्ल्यूआई एडवांस्ड टेक्नोलॉजी लिमिटेड में टाटा समूह की भी भागीदारी है. अमेरिका की कंपनियों—इंडस टेक्नालॉजिज इंका, वेस्टिंग हाउस कार्पोरेशन और विश्व बैंक से जुड़ी इंटरनेशनल फाइनेंस कार्पोरेशन के पास इसके 70 फीसदी शेयर हैं. 30 फीसदी शेयर टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज के पास हैं. हाल में इसे सरकार की अनुमति मिली है. सूत्रों का कहना है कि 75 कर्मचारियों वाली यह कंपनी जल्दी ही अमेरिका और कनाडा के लिए 20 लाख डालर सॉफ्टवेयर का निर्यात शुरू कर देगी.

लालसा जगाई टीवी ने

देश में उपभोक्तावाद बढ़ाने के लिए टीवी किस हद तक जिम्मेवार है? कुछ संकेत ये हैं: पिछले साल दूरदर्शन के कुल व्यावसायिक समय का 13 फीसदी हिस्सा कपड़े के विज्ञापन पर खर्च हुआ. इसके बाद नहाने का साबुन, टीवी सेट, टायर, टूथपेस्ट, वाशिंग पाउडर और खांसी की गोलियों का नंबर था. ऑपरेशंस रिसर्च ग्रुप के एक सर्वेक्षण से यही निष्कर्ष निकलता है. 1989 में सबसे अधिक विज्ञापन देने वाली 10 प्रमुख कंपनियों में कपड़े की सबसे बड़ी कंपनी रिलायंस का नाम नहीं है जबकि दूसरे उत्पाद बनाने वाली कंपनियों का प्रतिनिधित्व खासा हुआ है (देखें चार्ट). इस अध्ययन से यह भी पता चलता है कि पिछले पांच वर्षों में कुल विज्ञापन में अखबार-पत्रिकाओं का हिस्सा कितना घट गया है. 1984 में यह 79 फीसदी था जो पिछले साल 67.5 फीसदी हो गया. लेकिन एक बात आश्वस्त करने वाली है कि इसी दौरान विज्ञापन पर होने वाला कुल खर्च 495 करोड़ रु. से बढ़कर 1,155 करोड़ रु. हो गया है.

चार्ट: बी.के. शर्मा

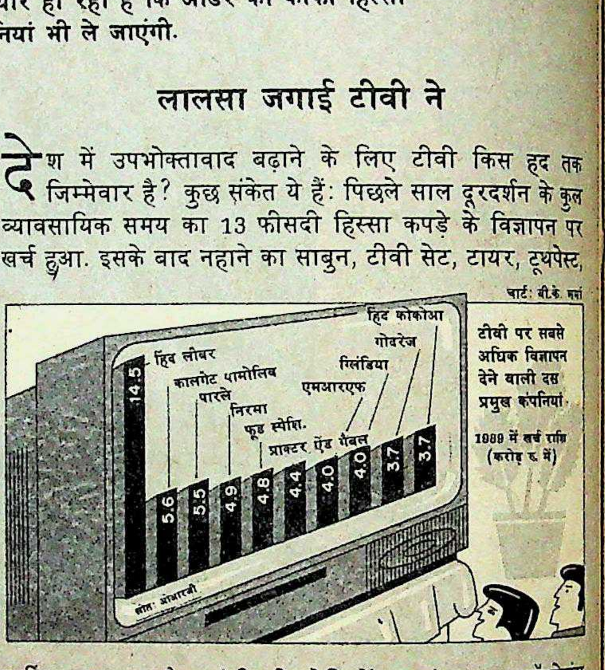

लाल तारे की लल्लो-चप्पो

हाल में कुछ समय से मुकंद आयरन के प्रमुख वीरेन शाह, जो एसोचैम के अध्यक्ष भी हैं, सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाचेव और सोवियत संघ में हो रहे बदलावों की प्रशंसा करने का कोई मौका नहीं चूकते थे. लेकिन रूस के प्रति उनका उमड़ा यह प्रेम बिना किसी वजह से नहीं था. मुकंद आयरन ने बंबई में मुकंद रशियन इंजीनियरिंग प्राइवेट लिमिटेड नामक कंपनी लगाने के लिए सरकार से अनुमति मांगी है. 14.74 करोड़ रु. शेयर मूल्य वाली यह कंपनी सोवियत संघ की इस्पात कंपनियों और खानों के लिए डिज़ाइनर, कंसल्टेंट, इंजीनियर, निर्माता और उपकरणों के सप्लायर के रूप में सेवाएं देगी.

लोक-लुभावन योजनाएं

कोष खाली होने का खतरा

नई सरकार के तीन प्रमुख चुनावी वादे अर्थव्यवस्था पर भारी पड़ेंगे

राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार बड़े-बड़े वादे करके सत्ता में आई थी. जहां तक अर्थव्यवस्था पर इनके असर का ताल्लुक है, 10,000 रु. तक के कृषि कर्ज माफ करना, जवाहर रोजगार योजना की जगह नई रोजगार गारंटी योजना बनाना और सेना के अवकाशप्राप्त लोगों के लिए 'समान रैंक, समान पेंशन' जैसी योजनाएं प्रमुख हैं. अब मंत्री, योजनाकार और अधिकारी इस बात पर विचार करने में लगे हैं कि पहले से ही मुश्किल में फंसे सरकारी खजाने पर और अधिक बोझ डाले बिना कैसे इन वादों को पूरा किया जाए.

इन तीन चुनावी वादों को पूरा करने में ही 3,400 करोड़ रु. का अतिरिक्त खर्च आएगा. रोजगार गारंटी योजना पर 2,000 करोड़ रु., कर्ज माफी के लिए 1,000 करोड़ रु. और पेंशन योजना के लिए करीब 400 करोड़ रु. यह गणित भले ही दिमाग चकराने वाला है लेकिन इन सबका असर और भी दिक्कतें पैदा करने वाला होगा. इससे महंगाई कम करने, बजट घाटा सीमित रखने और वित्तीय संतुलन बहाल करने में परेशानियां बढ़ जाएंगी.

और कोढ़ में खाज की तरह बिहार, मध्य प्रदेश, ओडीसा, गुजरात और राजस्थान की नई इंका सरकारों तथा उत्तर प्रदेश की जनता दल सरकार ने सस्ती लोकप्रियता पाने वाले कार्यक्रमों की घोषणा करके सैकड़ों करोड़ रु. के खर्च बढ़ा दिए हैं. वी.पी. सिंह के नाम पिछले पखवाड़े लिखी चिट्ठी में इंकाई मुख्यमंत्रियों ने एक सप्ताह के अंदर कर्ज माफी पर अमल करने के लिए रिजर्व बैंक और राष्ट्रीय कृषि एवं ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) से औपचारिकताएं पूरी करवा देने की मांग की थी.

यह मांग शायद कुछ ज्यादा है. लेकिन सरकार अपने चुनावी वादों से मुकरती नहीं दिखती. वी.पी. सिंह के शपथ लेते ही रिजर्व बैंक के अर्थशास्त्री सभी बैंकों द्वारा दिए गए 10,000 रु. तक के बकाया कर्जों का हिसाब जोड़ने लगे थे. यह कुल राशि 13,000 करोड़ रु. बनती है. वित्त मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव डी.आर. मेहता कहते हैं, "कर्ज का मामला करीब 4 करोड़ लोगों से जुड़ा है इसलिए कुल मात्रा का ठीक-ठीक हिसाब लगाना टेढ़ा काम है."

केंद्रीय वित्तमंत्री मधु दंडवते ने घोषणा की कि कर्ज माफी "एकमुश्त नहीं होगी. यह विभिन्न चरणों में पूरी की जाएगी." शुरू में इस बात पर सहमति थी कि छोटे और मझोले किसानों, भूमिहीन मजदूरों और ग्रामीण कारीगरों के कर्ज ही माफ किए जाएं. इसके बाद दंडवते ने कहा कि जो लोग आदतन कर्ज नहीं लौटाते रहे हैं, उनके कर्ज माफ नहीं किए जाएंगे.

पिछले पखवाड़े जब कर्ज माफी के तरीकों पर विचार चल रहा था, यह स्पष्ट हो गया कि 13,000 करोड़ रु. के कुल कर्ज को कुछ शर्तें लागू करने के बाद 5,000 करोड़ तक नीचे लाया जा सकता है. वित्त मंत्रालय के एक अर्थशास्त्री ने कहा, "इसका मतलब हुआ अगले पांच वर्षों तक सरकार हर साल बैंकों को करीब 1,000

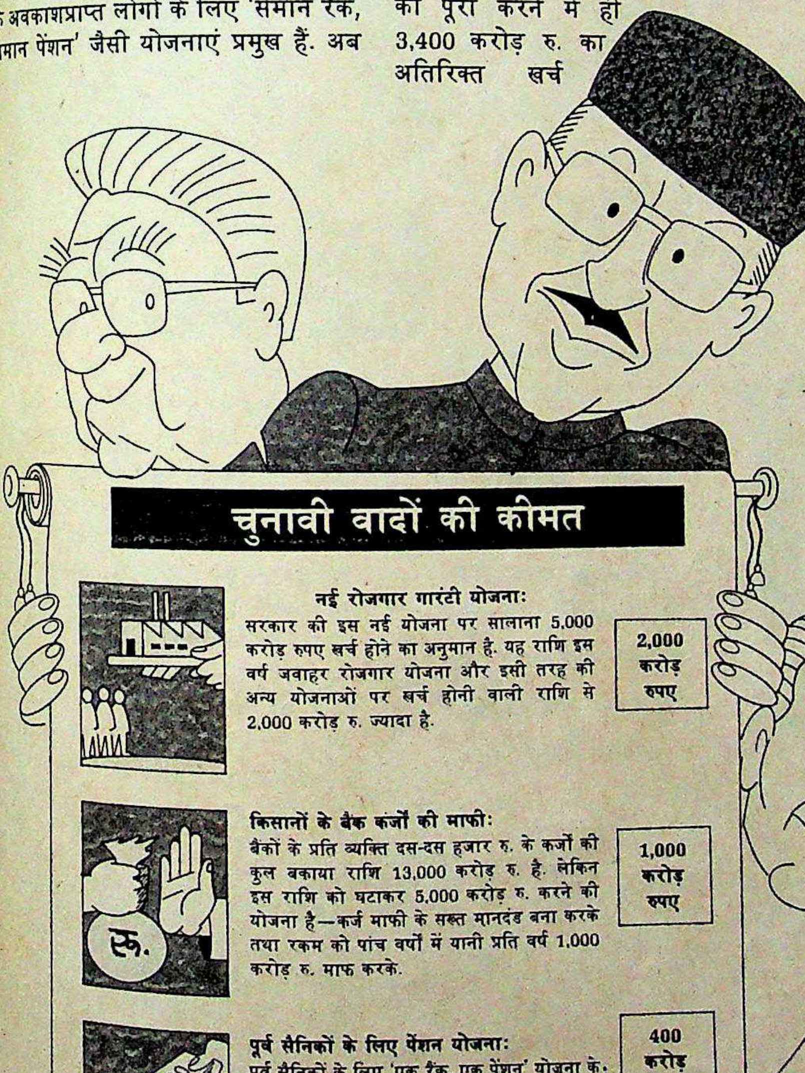

चुनावी वादों की कीमत

नई रोजगार गारंटी योजनाः
सरकार की इस नई योजना पर सालाना 5,000 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है. यह राशि इस वर्ष जवाहर रोजगार योजना और इसी तरह की अन्य योजनाओं पर खर्च होनी वाली राशि से 2,000 करोड़ रु. ज्यादा है.

2,000 करोड़ रुपए

किसानों के बैंक कर्जों की माफीः
बैंकों के प्रति व्यक्ति दस-दस हजार रु. के कर्जों की कुल बकाया राशि 13,000 करोड़ रु. है. लेकिन इस राशि को घटाकर 5,000 करोड़ रु. करने की योजना है—कर्ज माफी के सख्त मानदंड बना करके तथा रकम को पांच वर्षों में यानी प्रति वर्ष 1,000 करोड़ रु. माफ करके.

1,000 करोड़ रुपए

पूर्व सैनिकों के लिए पेंशन योजनाः
पूर्व सैनिकों के लिए 'एक रैंक, एक पेंशन' योजना के तहत सालाना 400 करोड़ रुपए खर्च होने का अनुमान है.

400 करोड़ रु.

कुल **3,400 करोड़ रुपए**

बी.के. शर्मा

करोड़ रु. की भरपाई कर दिया करेंगी और यह संभव भी है.''

सरकार समर्थकों का मानना है कि कर्ज माफी योजना उतनी सरल नहीं, जितनी दिखती है. योजना आयोग के सदस्य लक्ष्मीचंद्र जैन कहते हैं, ''मुझे पहले तो यही समझ नहीं आता कि कितने भूमिहीन मजदूरों और छोटे किसानों ने 10,000 रु. का कर्ज लिया होगा.''

वे बताते हैं कि 1976 से 1986 के बीच के दशक में बैंकों द्वारा दिए कुल कर्ज में पांच गुना वृद्धि हुई है और यह 800 करोड़ रु. से बढ़कर 4,000 करोड़ रु. हो गया. आठवीं योजना के कार्यदल का अनुमान है कि 1990-91 और 1994-95 के बीच बैंकों का बकाया 15,000 करोड़ रु. से बढ़कर 25,000 करोड़ रु. हो जाएगा.

यह तर्क भी दिया जाता है कि चूंकि कर्ज माफी मुश्किल और समय लेने वाला काम है इसलिए आखिर में जितना कर्ज माफ होगा वह शुरू के अनुमान से काफी कम होता है. जैसे 1987 में हरियाणा की देवीलाल सरकार ने किसानों के 227.5 करोड़ रु. के कर्ज माफ करने की घोषणा की थी जबकि पिछले साल के अंत तक मात्र 33 करोड़ रु. के कर्ज ही माफ हो पाए थे.

लक्ष्मीचंद्र जैन
सदस्य, योजना आयोग

मुझे पहले तो यही समझ नहीं आता कि कितने भूमिहीन मजदूरों और छोटे किसानों ने 10,000 रु. का कर्ज लिया होगा''

यशवंत सिंह नेगी

शरद सक्सेना

कर्ज माफ करने की कोशिश के बहुत खतरनाक परिणाम होंगे क्योंकि इससे लोगों को आगे भी कर्ज न चुकाने की प्रेरणा मिलेगी.''

टी.के. मौसिक
अर्थशास्त्री

लेकिन ऐसे तर्कों से कोई खास फर्क नहीं पड़ता. पंजाब, हरियाणा और दिल्ली चैंबर ऑफ कॉमर्स के अर्थशास्त्री टी.के. भौमिक कहते हैं, ''कर्ज माफ करने की कोशिश के खतरनाक नतीजे निकल सकते हैं क्योंकि इससे लोगों को आगे भी कर्ज न चुकाने की प्रेरणा मिलेगी.'' इतना ही नहीं, इससे देहाती गरीबों को फायदा मिलने की संभावना भी नहीं के बराबर है. ग्रामीण इलाकों को दिए जाने वाले कुल कर्ज का 20 फीसदी हिस्सा ही आखिर छोटे किसानों और भूमिहीनों को मिल पाता है.

कर्ज माफी से अधिक विवाद वाला मुद्दा जवाहर योजना को बदलकर रोजगार गारंटी योजना का रूप देना है. चुनाव परिणाम घोषित होने के एक हफ्ते के अंदर ही नई सरकार के 'खास' अधिकारी, कैबिनेट सचिव विनोद पांडेय (जो तब ग्रामीण विकास सचिव थे) ने एक वैकल्पिक योजना बनाई. उनकी यह योजना 5,000 करोड़ रु. की है जिसमें एक व्यक्ति को रोजाना 20 रु.—जिसका आधा नकद और आधा वस्तु के रूप में—देने का प्रावधान है. पांडेय के हिसाब से इससे गरीबी रेखा के नीचे जीवन बिताने वाले 2.5 करोड़ परिवारों में से हरेक में कम-से-कम एक व्यक्ति को रोजगार दिया जा सकेगा. चूंकि चालू वित्त वर्ष में जवाहर रोजगार योजना और इससे जुड़े कार्यक्रमों पर करीब 3,000 करोड़ रु. खर्च करने का प्रावधान है, इसलिए रोजगार गारंटी योजना पर 2,000 करोड़ रु. सालाना अतिरिक्त खर्च करना पड़ेगा.

'समान रैंक, समान पेंशन' वाले वादे पर भी साल में 400 करोड़ रु. खर्च होंगे. इससे नई सरकार के लिए रक्षा खर्चों में कमी करना और मुश्किल हो जाएगा (वैसे पेंशन पूरी तरह प्रतिरक्षा का मामला नहीं है).

सरकार के दूसरे फैसलों का भी अर्थव्यवस्था पर असर पड़ेगा. मसलन, सभी मतदाताओं को पहचान-पत्र देने पर ही 120 करोड़ रु. खर्च होंगे. फिर प्रत्येक मुख्य फसल के लिए दो बार कीमतें घोषित करने—फसल के कुछ महीने पहले और फिर फसल के तुरंत बाद—का प्रस्ताव है.

अनाज का खरीद मूल्य बढ़ाने से कीमतों पर क्या असर पड़ता है, यह बात पिछले चार वर्षों के इस तथ्य से ही जाहिर हो जाती है कि इस पर सबसिडी 2,000 करोड़ रु. के आसपास ही बनी हुई है. इस साल जो वित्तीय स्थिति है, उसमें सबसिडी बढ़ाने की गुंजाइश नहीं है. ऐसे में अनाज के दाम बढ़ाने का मतलब और ज्यादा महंगाई को न्यौता देना ही होगा.

इस स्थिति से बचने के लिए अनाज आयात करना पड़ेगा और उसके लिए विदेशी मुद्रा की जरूरत होगी. मौजूदा संकेतों से लगता है कि अगले नौ महीनों में देश को करीब 5 लाख टन खाद्य तेल और दो-दो लाख टन चीनी और चावल आयात करने की जरूरत होगी. इस पर विदेशी मुद्रा में ही 350 करोड़ रु. खर्च करने पड़ेंगे.

कुल मिलाकर सरकार के लिए बहुत कम रास्ते बचे हैं. बजट घाटा अनुमान से ज्यादा हो चुका है. और अगर नई सरकार भी पिछली राजीव सरकार की तरह ही आडंबरों पर खर्च करने लगी तो खजाने खाली होने की बात करना मात्र दिखावा साबित होगी.

—परंजय गुहा ठाकुरता

ड़ेगा.
त वादे पर
होंगे. इससे
में कमी
वैसे पेंशन
नहीं है).
भी अर्थ-
लन, सभी

यशवंत सिंह नेगी
ने पर ही
त्येक मुख्य
तें घोषित
हले और
प्रस्ताव है.
से कीमतों
ात पिछले
जाहिर हो
ी 2,000
हुई है. इस
सबसिडी
अनाज के
दा महंगाई

ए अनाज
सके लिए
. मौजूदा
महीनों में
तेल और
ल आयात
विदेशी मुद्रा
पड़ेंगे.
लिए बहुत
अनुमान
अगर नई
रकार की
लगी तो
रना मात्र

हा ठाकुरता

शुक्रवार। बहस पर बहस हुई हम दोनों में।
[illegible] मिज़ाजी है वह, इसलिए गर्मी जल्दी उतरी नहीं। भड़कते शोलों की,
खौलते खून की, लाल गर्मी। शबाब की उस सुर्ख़ धूप में
[illegible] होश हवास खो बैठे - जैसा मैंने सोचा था।

Kohinoor
fiesta
3 LUBRICATED COLOUR CONDOMS
A TTK Product

कोहिनूर
फियेस्टा
हर पल की
अपनी अदा,
अपनी मस्ती

TTK उत्पादन

3 रंगीन कॉन्डोम एक ही पैक में

यह नाम ख़ास...काम ख़ास.

chiller
crisper

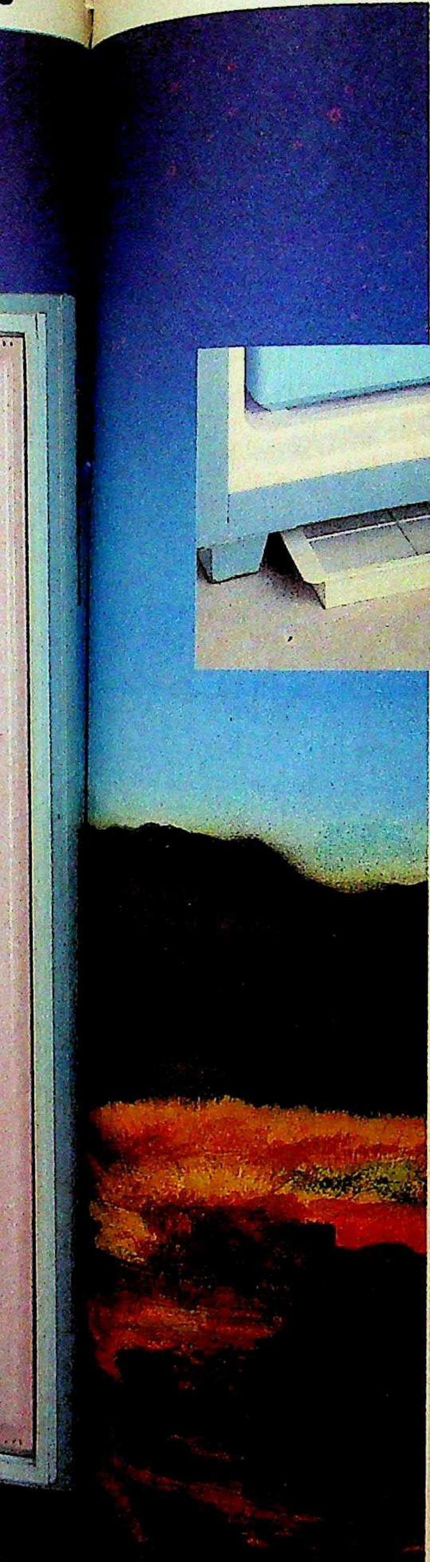

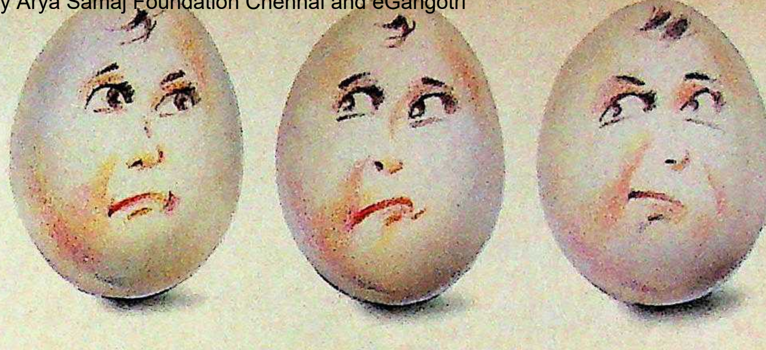

▲ आल्विन सब से बेहतर.

▲ बेआवाज़. मज़बूत. भरोसेमंद. आल्विन कम्प्रैसर हिटाची तकनॉलॉजी से बना है. इसीलिए बेआवाज़ रहे, बिना झंझट काम करे.▲ रोल बाँड फ्रीज़र जल्दी ठंडा होता है.

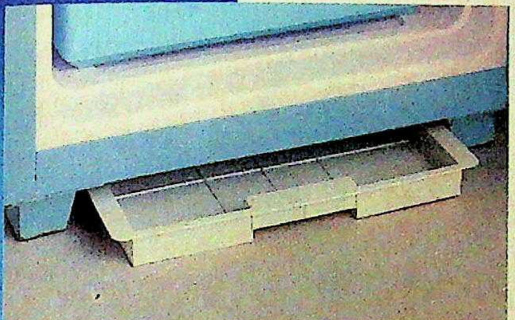

▲ख़ास तौर से बनाई गई 'चिल ट्रे' ताकि बिजली के जाने या डिफ्रॉस्ट के समय अंदर रखी चीज़ों पर पानी की बूँदें न टपकें. ▲'टिल्टिंग बॉटल रैक्स' ताकि बोतलें आसानी से सरकाई जा सकें. ▲डिफ्रॉस्टिंग इसके लिए है एक सक्षम, बिना घिचपिच किए, तुरंत 'सेल्फ़ ड्रेनिंग सिस्टम'. इससे रेफ्रीजेरेटर दोबारा खुद स्टार्ट हो जाता है.▲'हाई क्रिस्पर/चिल ट्रे वोल्यूम' की वजह से सामान रखने की ज़्यादा जगह.▲वोल्टेज के उतार-चढ़ाओ का इस पर कोई असर नहीं होता. (170·V से 250 V).▲ ISI मार्क शुदा रेफ्रीजेरेटर.

▲ आल्विन. भारत में रेफ्रीजेरेशन के अग्रगामी. सबसे पहले आल्विन ने बनाया डबल डोर मॉडल, जिसकी आज बाज़ार में सब से ज़्यादा माँग है. 165 लिटर सिंगल डोर और 165, 300 व 380 लिटर डबल डोर मॉडल. अनेक रंगों में. सात साल की वारंटी और सात साल के 'प्रोटॅक्शन कॉन्ट्रेक्ट' की अतिरिक्त सुविधा भी. ग्राहकों की निरंतर सेवा की एक लंबी परंपरा. देशभर में फ़ैले दफ़्तरों द्वारा शीघ्र व सक्षम सर्विस.▲

▲ अब सोचना क्या, यही है आल्विन.

ALLWYN

REFRIGERATORS

QUIET · STURDY · FAITHFUL

Mudra:H:HAL:3:258:HIN

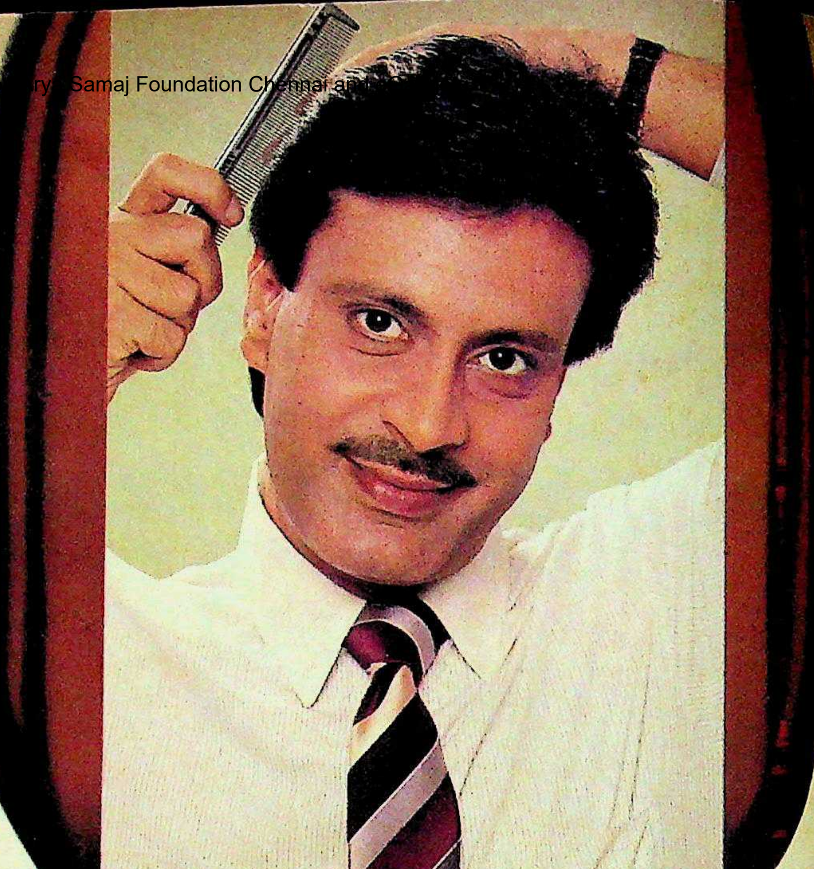

"अपने डॉक्टर से यह जानकर
मुझे बड़ी खुशी हुई कि
केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र
से सचमुच बालों का
झड़ना रुक जाता है।

लेकिन मुझे विश्वास तब हुआ
जब मैंने इसका इस्तेमाल किया।"

"मेरे डॉक्टर ने मुझे बताया कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र*, व्यापक गवेषणा पर आधारित एक अपूर्व वैज्ञानिक फ़ार्मूले से बना है। उन्होंने यह भी बताया कि यह बालों की जड़ों को मज़बूत करनेवाले सभी आवश्यक प्रोटीन तत्व, को-एन्ज़ाइम और विटामिन भी उपलब्ध करता है।

मैं तो बस यही कहना चाहता हूँ कि इसने मेरे बालों का झड़ना निश्चितरूप से रोक दिया है और साथ ही रूसी भी खत्म हो गई है।"

देखिए, गवेषणा-रिपोर्ट से उद्धृत एक अंश :

"सभी मामलों में रूसी के सम्पूर्ण खात्मे के साथ ६६.६६% मामलों में शानदार एवं ३३.३३% में बढ़िया नतीजा हासिल हुआ और बालों का झड़ना तो लगभग शत प्रतिशत रुक गया...इसलिए, यह कहा जा सकता है कि केयो-कार्पिन हेयर वाइटालाइज़र की सफलता-दर शत प्रतिशत है।"

इंडियन मेडिकल गज़ट ११८ २२३ (१९८४)

Keo-Karpin
HAIR VITALIZER
Dey's

TSA-C/DMHV/189/HN

बालों का झड़ना रोकने और रूसी खत्म करने का
प्रमाणित वैज्ञानिक तरीका।

* यह शृंगार सामग्री नहीं है।

Dey's® दे'ज मेडिकल की संभाल, आपका भरोसा।

शेयर बाजार

ठंडी शुरुआत

निवेशक प्रतीक्षा करने के मूड में

दशक की शुरुआत देश के शेयर बाजारों में जोरदार तरीके से नहीं हुई. नई सरकार के आने पर बाजार में उफान के बाद अब शेयरों के दाम स्थिर होते लग रहे हैं. कभी-कभार हलचल भी दिख जाती है अनेक प्रमुख शेयर नीचे गिरे जबकि कई बड़े अंदाज में चढ़ते ही गए. बाजार का रुख आम तौर पर खामोशी से अपने हाल पर विचार करते रहने वाला ही रहा.

5 जनवरी को इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक अपने अब तक के सर्वोच्च बिंदु 435.6 तक गया जबकि दिसंबर में यह 426.3 तक गया था. लेकिन इससे पहले 3 और 4 जनवरी को यह चार अंक गिरा था. बंबई के 100 शेयरों वाले राष्ट्रीय सूचकांक में भी यही प्रवृत्ति दिखी. नए वर्ष के पहले दिन यह 423.57 पर बंद हुआ. लेकिन 4 जनवरी को 411.90 तक आ गया और अगले ही दिन नौ अंक चढ़कर 420.65 पर बंद हुआ.

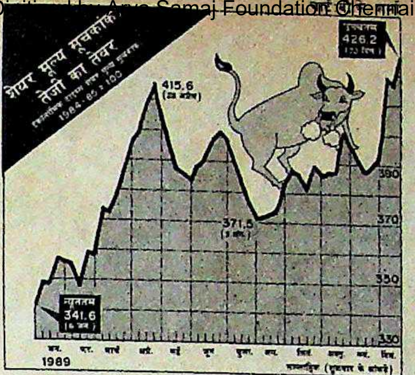

पिछले महीने के उफान वाले दौर में ऊपर चढ़े अनेक शेयर इस महीने के पहले हफ्ते में गिरे. इनमें टेल्को, माइको, बड़ौदा रेयॉन, इंडियन रेयॉन, एशियन पेंट्स, बजाज ऑटो, हिंदुस्तान सीबा गाइगी, हिंदुस्तान कोको प्रोडक्ट्स, लिप्टन और सीमेंस ऐसे ही शेयर हैं. जिन बड़ी कंपनियों के शेयरों का मोल घटा उनमें सेंचुरी एंका, टिस्को, ग्रेसिम, हिंदुस्तान एल्यूमिनियम, प्रीमियर ऑटोमोबाइल्स, गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर्स और एसीसी शामिल हैं.

और रिलायंस भी नुकसान उठाने वालों में शामिल है. इस कंपनी के शेयर चढ़ने का नाम नहीं ले रहे हैं. उलटे एक पखवाड़े में यह 10.50 रु. गिर गया. 5 जनवरी को यह 78.50 रु. पर आ गया जो पिछले साल के सर्वोच्च मूल्य 158 रु. से काफी नीचे है. और इस गिरावट का कारण भी जानना कोई मुश्किल नहीं है. नई सरकार ने कंपनी के खिलाफ कर चोरी के मामलों को फिर से खोलने का फैसला किया है. कुछ मामले तो 1986 में शुरू हुए थे जब वी.पी. सिंह वित्तमंत्री थे.

कुल मिलाकर नई सरकार की तरफ से कोई भी ऐसा संकेत नहीं मिल रहा है जो शेयर बाजारों में उत्साह भरे. प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद द्वारा तैयार किए गए श्वेत पत्र में आर्थिक कठिनाइयों का ही जिक्र है. 23 दिसंबर को जारी हुए इस दस्तावेज में आर्थिक उपलब्धियों की चर्चा नहीं है. 50 करोड़ रु. से ज्यादा वाले महानिर्गमों को जारी करने के पहले उसकी पर्याप्त छानबीन करने की सरकारी घोषणा का भी शेयर बाजार पर प्रतिकूल असर ही पड़ा. सरकार ने कहा था कि अब से वित्तीय संस्थाएं जांच करेंगी कि यह पैसा क्यों और कहां के लिए उठाया जा रहा है और वहीं लग रहा है या नहीं.

भावी 'उन्मुख' औद्योगिक नीति के बारे में तरह-तरह के चर्चे हैं. तेजड़ियों और मंदड़ियों में भी इसे लेकर काफी मतभेद हैं. लेकिन निवेशक अब भी शांत हैं और प्रतीक्षा कर रहे हैं.

मा स्टॉक

	1989 ऊंचा	1989 नीचा	बंद 5.1.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
[illegible]	84.50	61.00	90.50	4.00 −
स्टेड सीमेंट	374.00	230.00	344.00	12.00 −
पेंट्स	231.25	165.00	245.00	17.50 +
[illegible]	53.00	32.00	47.00	1.50 −
ऑटो	450.00	290.00	402.75	15.25 +
रेयॉन	837.50	285.00	782.50	85.00 +
इंडिया	89.00	60.00	77.00	0.50 −
ल्लारपुर	225.00	65.50	148.00	5.00 −
[illegible]	202.50	65.00	90.00	2.50 +
बूट	73.75	41.50	63.00	10.00 +
डाइंग	210.50	104.00	222.50	13.50 +
इंडिया	165.00	89.00	107.00	0.50 −
[illegible]	155.00	75.00	102.50	6.50 −
[illegible]	3040.00	1230.00	2710.00	120.00 −
इंडिया	92.00	72.00	92.00	5.00 +
[illegible]	371.25	162.50	190.00	2.50 −
[illegible]	108.75	55.00	105.00	7.50 +
[illegible]	85.00	31.00	48.00	2.00 −
होटल्स	95.50	62.80	72.00	6.00 −
[illegible]	68.00	50.00	65.00	2.00 +
केमिकल्स	85.00	58.00	85.00	—
[illegible]	430.00	220.00	276.25	21.25 +
[illegible]	224.00	100.00	120.50	1.00 −
[illegible]	62.00	36.00	60.00	2.00 −
[illegible]	53.50	33.75	52.50	0.50 +
स्टेट फर्टि.	200.00	123.75	178.75	5.00 −
इंडिया	137.00	75.00	127.00	2.00 −
एल्यूमिनियम	327.50	155.00	262.50	7.50 −
सीबा	1465.00	600.00	1525.00	90.00 +
कोको	157.50	98.75	167.50	13.50 +
लीवर	113.50	69.50	115.00	4.00 +
मोटर्स	52.50	22.00	26.00	1.75 −
सी.आई.	68.00	39.00	46.50	3.00 +
ऑर्गेनिक	54.50	23.00	50.00	1.00 −
रेयन	106.00	75.75	101.00	10.50 +

	1989 ऊंचा	1989 नीचा	बंद 5.1.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
इंड्रॉल	335.00	175.00	210.00	1.25 +
इंगरसॉल-रैंड	425.00	180.00	235.00	10.00 +
आई.टी.सी.	129.00	46.25	61.00	3.00 −
जे.के. सिंथेटिक्स	92.00	55.00	65.00	2.00 +
काइनेटिक इंजी.	395.00	120.00	151.00	8.50 +
किर्लोस्कर क्युमिंस	88.75	54.50	74.00	5.00 +
केएसबी पंप्स	445.00	185.00	210.00	5.00 +
लारसन-टुब्रो	128.00	69.00	79.00	4.00 −
लिप्टन	99.00	65.00	109.00	13.00 +
लोहिया-मशीन्स	28.00	12.50	19.50	1.50 −
मदुरा कोट्स	104.00	92.25	108.00	4.00 +
महिंद्रा-महिंद्रा	113.50	76.50	100.00	9.00 +
मिल्क फूड	320.00	180.00	240.00	52.50 −
मोटर इंडस्ट्रीज	850.00	560.00	1080.00	260.00 +
मुकुंद लिमि.	146.00	75.00	153.00	8.50 +
नेशनल आर्गेनिक	1690.00	710.00	1375.00	165.00 −
निरलॉन	20.00	8.00	17.50	1.00 +
ओरके सिल्क मिल्स	29.00	12.50	18.00	1.00 −
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	30.50	16.50	28.75	4.00 +
फाइजर	97.00	58.00	107.50	12.00 +
पांड्स	220.00	151.25	225.00	10.00 +
प्रीमियर ऑटो	76.00	40.00	69.50	4.00 +
रेमंड	85.00	60.00	74.00	—
रिलायंस इंडस्ट्रीज	158.00	70.00	78.50	10.50 −
सीमेंस इंडिया	101.00	65.00	104.00	9.00 +
शॉ वैलेस	103.25	62.00	90.00	2.00 +
श्रीराम फाइबर्स	94.00	53.50	68.50	1.50 −
एसकेएफ बैयरिंग्स	3020.00	1140.00	1450.00	30.00 +
स्पिक	87.00	39.00	60.00	2.00 −
टाटा स्टील	158.00	102.50	114.50	3.50 −
टेल्को	119.50	65.75	128.00	10.00 +
वाम आर्गेनिक	178.00	132.50	150.00	5.00 +
वीडियोकोन	200.00	55.00	170.00	15.00 −
वोल्टास	1000.00	470.00	730.00	30.00 +
विमको	32.00	15.00	31.00	7.00 +

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.4415	13.2933
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	144.1276	142.9083
बहरीन	दीनार	1	45.5451	44.4899
बांग्लादेश	टका	100	54.2204	52.8318
कनाडा	डालर	1	14.7173	14,5617
डेनमार्क	क्रोना	1	2.6175	2.5890
मिस्र	पौंड	1	6.8592	6.7355
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.0395	2.9630
हांगकांग	डालर	1	2.1864	2.1640
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9595	0.9392
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.3566	1.3396
जापान	येन	100	11.9332	11.6414
केन्या	शिलिंग	1	0.7871	0.7784
कुवैत	दीनार	1	58.2916	56.3539
मलेशिया	डालर	1	6.3152	6.2488
मारीशस	रुपया	1	1.1311	1.1159
नेपाल	रुपया	1	0.5961	0.5880
हालैंड	गिल्डर	1	9.0224	8.9215
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8064	0.7863
सिंगापुर	डालर	1	8.9986	8.9027
स्पेन	पेसो	1	0.1576	0.1548
श्रीलंका	रुपया	1	0.7419	0.7319
स्वीडन	क्रोना	1	2.7844	2.7539
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	11.0690	10.9498
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0949	0.0890
थाईलैंड	बहत्त	100	66.9781	65.0237
ब्रिटेन	पौंड	1	28.1136	27.9096
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	17.0794	16.9062
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.6525	4.6016
सोवियत संघ	रूबल	1	27.5253	27.2241
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.3734	10.1112

स्रोत—बैंक ऑफ टोक्यो, नई दिल्ली, 9.1.90

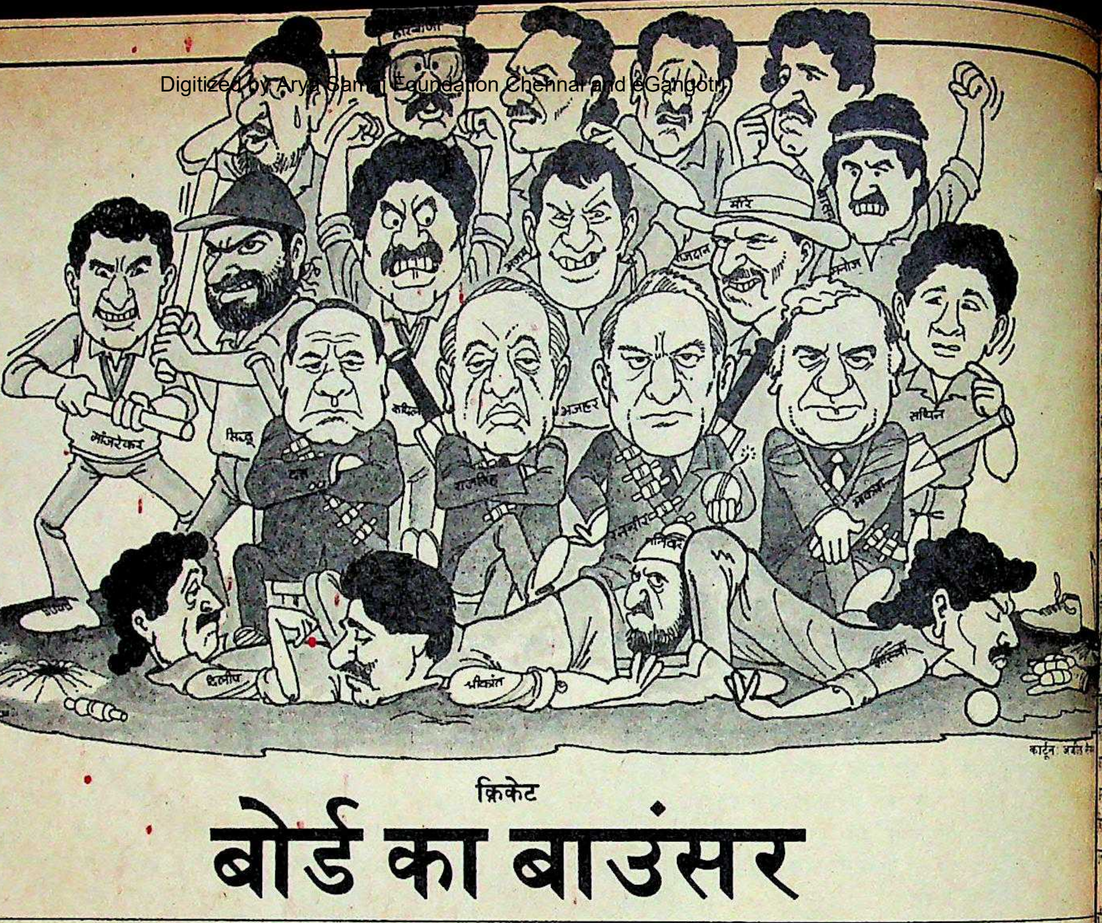

कार्टूनः अजीत

क्रिकेट

बोर्ड का बाउंसर

असंतोष पर काबू पाने के लिए नामी खिलाड़ियों को हटाया गया

यह भारतीय क्रिकेट टीम का सबसे बड़ा और शायद सबसे औचित्यहीन फेरबदल है. पिछले पखवाड़े राष्ट्रीय चयन समिति ने न्यूजीलैंड के दौरे पर जाने वाली टीम में कप्तान के. श्रीकांत और उप-कप्तान रवि शास्त्री को शामिल न कर अपने कड़े रवैए का परिचय दिया है. उसने दिलीप वेंगसरकर के राष्ट्रीय टीम में शामिल होने के दावे को भी बड़ी बेरुखी से दरकिनार कर दिया और अजहरुद्दीन को, जिन्होंने अरसे बाद हाल ही में पाकिस्तान के खिलाफ अच्छा प्रदर्शन किया, नई टीम की कप्तानी सौंपी गई.

समिति ने इस बार जो टीम बनाई है, उसमें से कई तो नौसिखुए ही हैं. खिलाड़ियों की औसत आयु सिर्फ 24 साल है और अनुभव का आलम यह कि सारे खिलाड़ियों के खेले मैचों को जोड़ा जाए तो अकेले कपिलदेव के कुल टेस्ट मैचों से पांच मैच ही ऊपर बैठते हैं. मौजूदा टीम के वरिष्ठतम खिलाड़ी कपिलदेव 103 मैच खेल चुके हैं.

उम्रदराज खिलाड़ियों वाली भारतीय टीम में नया युवा खून भरने के बोर्ड के इरादे पर शायद ही किसी को शक हो. चयन समिति के अध्यक्ष राज सिंह डूंगरपुर के '90 के दशक के लिए' टीम तैयार करने के दावे से भी सब सहमत हैं. सिवाय पूर्व कप्तान अजीत वाडेकर के, जिनका मानना है कि यह टीम 21वीं सदी के लिए ज्यादा उपयुक्त हैं.

अलबत्ता जो वक्त इन बदलावों के लिए चुना गया, वह जरूर हैरान करने वाला है क्योंकि अभी महीना भर पहले श्रीकांत की अगुआई में भारतीय टीम एकजुट होकर खेली और शृंखला ड्रा कर भारत की डूबती साख को थोड़ा उबारा. ऐसे में श्रीकांत को हटाकर अजहरुद्दीन को कप्तान बनाने के बोर्ड के फैसले से भारतीय क्रिकेटप्रेमी ही नहीं खुद अजहरुद्दीन भी हैरान हैं.

स्पष्ट है, क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड खिलाड़ियों के नखरों और हरकतों से आजिज आ चुका था. एसोसिएशन बनाने के अलावा खिलाड़ियों ने पाकिस्तान के दौरे के लि मिले पैसों को 'खैरात' बताकर लेने इनकार कर दिया. यही नहीं, बोर्ड को नी दिखाने के लिए एक प्रायोजक 'बॉस' भी लिया जो उनके दौरे का खर्च उठा सकता इस बार नए खिलाड़ियों की टीम बना बोर्ड ने बता दिया कि असली बॉस कौन आम तौर पर शांत रहने वाले पूर्व कप् पटौदी भी इस बार खीझ पड़े, "यह च बिलकुल तर्कहीन है. खिलाड़ियों में भ असंतोष से निजात पाने की नीयत से ही टीम बनाई गई है."

बोर्ड के अध्यक्ष ने टीम की घोषणा को पांच घंटे तक रोके रखा और समिति से अनुरोध किया कि श्रीकांत को हटाने पर पुनर्विचार किया जाए

बोर्ड ने पूरे इंतजाम कर लिए थे पाकिस्तान के दौरे पर जाने से पहले खिला ड़ियों ने जो तमाशा किया, वह दोहराया जा सके. दौरे का बॉयकाट करने की धमकि से निबटने के लिए न्यूजीलैंड के दौरे के लि 48 उभरते खिलाड़ियों को पांच-पांच ह रु. की अग्रिम राशि देकर अनुबंधित लिया गया.

इसके बाद बोर्ड ने टूर क्रिकेट मैनेजर नया लेकिन महत्वपूर्ण पद ईजाद कर कप्तान बिशन सिंह बेदी को उस पर दिया. वरिष्ठ खिलाड़ियों के बात-बात रौब झाड़ने और अकड़ने के मुखर आलो

इस नई टीम को अवश्य अनुशासन में वाडेकर की टिप्पणी थी, "बेदी इस के न खेलने वाले कप्तान होंगे."

श्रीकांत को टीम में शामिल न कर बोर्ड ने खिलाड़ियों को सबक सिखा दिया है और के लिए खुद श्रीकांत ही जिम्मेदार हैं. किस्तान में तो उनका प्रदर्शन खराब रहा भारत आकर भी वे घरेलू मैचों से कन्नी रहे. चयन समिति के एक सदस्य की टिप्पणी थी, "यह समय उन्हें आराम के बजाए रन बटोरने में लगाना चाहिए. कप्तानी के लिए उनके नाम को यह दरकिनार कर दिया गया कि 'उनकी जनसंपर्क के लिए तो ठीक है, टीम नेतृत्व करने के लिए हरगिज नहीं.'

श्रीकांत को शामिल न करने के फैसले पर के कई सदस्य थोड़े असमंजस में थे. बोर्ड अध्यक्ष बी.एन. दत्त ने टीम के चयन की पांच घंटे तक रोके रखी. अपने विशेषाधिकार का इस्तेमाल करते हुए उन्होंने समिति को अपने फैसले पर पुनर्विचार करने अनुरोध भी किया लेकिन एक खबर के नुसार राज सिंह अपने फैसले पर अड़े रहे यदि श्रीकांत को टीम में रखना ही है तो कप्तानी छीनने का क्या फायदा हुआ?"

अजहरुद्दीन को कप्तान बनाने का फैसला वाला था. जैसा कि पटौदी का कहना कप्तान तो कपिलदेव को ही बनाना था क्योंकि अजहर के प्रदर्शन में अभी थोड़ा सुधार हुआ है. ऐसे में उन पर कप्तानी का बोझ नहीं डालना चाहिए."

इस तर्क को राजनीति ने निरस्त कर भारतीय क्रिकेटर एसोसिएशन के कपिलदेव को कप्तान बनाने का होता अपनी हार कबूल करना और खिलाड़ियों के उग्र रवैए को शह देना.

शास्त्री के निकाले जाने पर जरा भी हट नहीं हुई. लेकिन दिलीप वेंगसरकर को न लेने पर खासा बावेला मचा. प्रदर्शन के बारे में दो राय नहीं थी. घरेलू मैचों में वे तीन शतक मार चुके वेंगसरकर के पाकिस्तान के दौरे पर टीम में शामिल न होने के फैसले से था. लेकिन राज सिंह डूंगरपुर तो देश महान बल्लेबाज को जलील करने में कदम आगे निकल गए. उनकी थी कि वेंगसरकर के लिए अभी बंद नहीं हुए हैं. यदि वे अपना खेल रहे तो इंग्लैंड के दौरे के लिए उनके पर 'विचार' किया जा सकता है.

टीम के दूसरे खिलाड़ियों के चयन का भी औचित्य नजर नहीं आता. 28 वर्षीय चंद्रशेखर और 26 वर्षीय गुरशरण एकदम युवा भी नहीं हैं. गुरुशरण वेस्ट और पाकिस्तान के दौरों पर भेजे जा

क्रिकेट बोर्ड बनाम खिलाड़ी

पहला दौर
फरवरी 1988

वेंगसरकर अखबारों में लिखकर करार का उल्लंघन करते हैं. उनके खेलने पर छह माह की रोक लगा दी जाती है

विजेताः बोर्ड

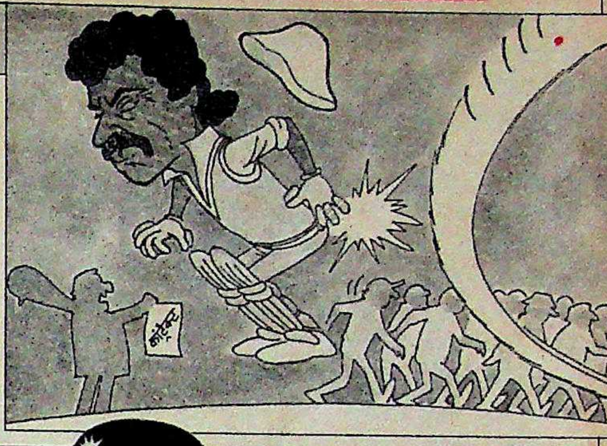

दूसरा दौर
नवंबर 1988

टीम से बाहर होने पर अमरनाथ चयनकर्ताओं को जोकर कहते हैं. उन पर 20,000 रु. का जुर्माना, लेकिन बाद में माफी

विजेताः कोई नहीं

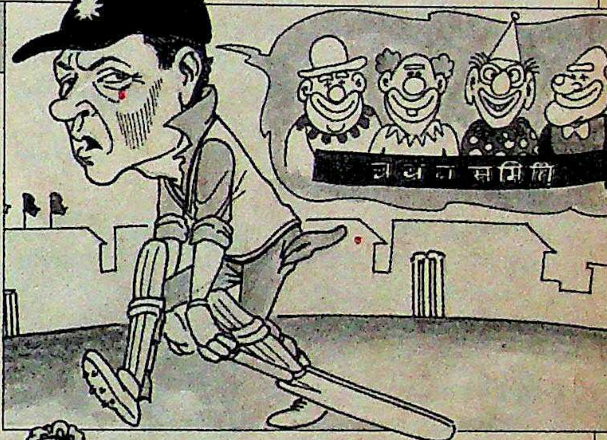

तीसरा दौर
अगस्त 1989

अमेरिका में खेलने पर बोर्ड छह खिलाड़ियों पर रोक लगा देता है. सुप्रीम कोर्ट के सवाल उठाने पर रोक वापस

विजेताः खिलाड़ी

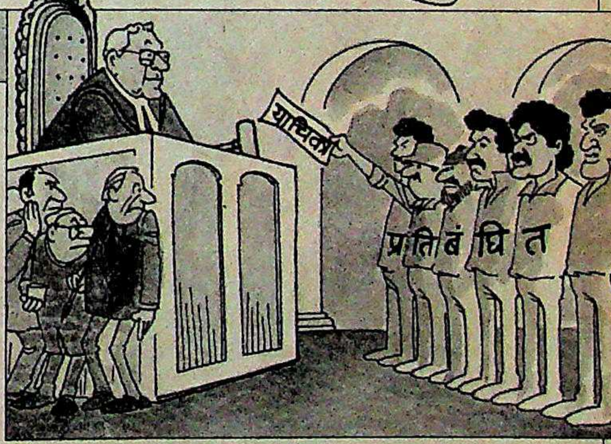

चौथा दौर
नवंबर 1989

खिलाड़ी पारिश्रमिक बढ़ाने की मांग करते हैं और बोर्ड से बिना पैसा लिए पाकिस्तान दौरे पर जाते हैं. रकम एक प्रायोजक देता है

विजेताः खिलाड़ी

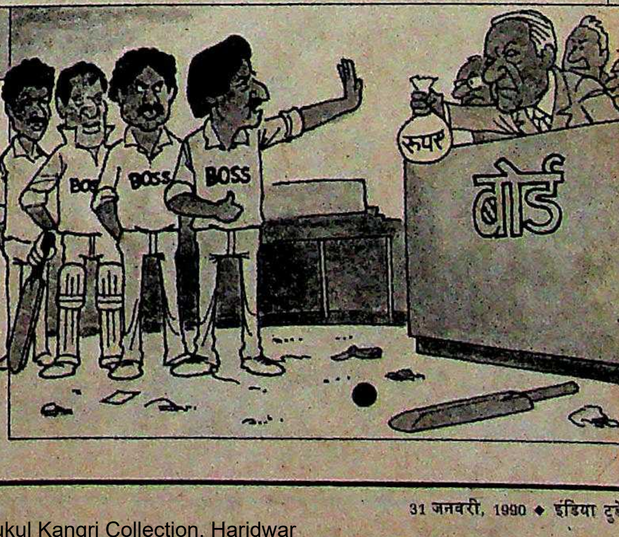

चुके हैं, लेकिन वहां उन्होंने एक भी मैच नहीं खेला. वाडेकर कहते हैं, "लगता है चयनकर्ता इस बार एसोसिएशन बनाने वाले वरिष्ठ खिलाड़ियों को ही निकाल बाहर करना चाहते थे. नई टीम देश के हित को ध्यान में रखकर नहीं बनाई गई."

राज सिंह जिसे भारतीय क्रिकेट की 'जमींदारी' कहते हैं, उसे दूर करने के बोर्ड के इरादों को दो नए खिलाड़ियों—सचिन तेंदुलकर और संजय मांजरेकर के पाकिस्तान में बेहतरीन प्रदर्शन से भी बल मिला है. उनका यह भी मानना है कि रिचर्ड हेडली के जख्मी होने से न्यूजीलैंड की टीम भारत के लिए उतनी भारी नहीं रह जाएगी. इसलिए नए खिलाड़ियों को आजमाने का इससे अच्छा मौका नहीं हो सकता. बेदी कहते हैं, "हमारी टीम अच्छी है. हमारी ताकत ये युवा खिलाड़ी हैं. ये प्रतिभा प्रदर्शित कर पाते हैं तो इन्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता."

नई टीम के सामने कई दिक्कतें भी हैं. नवजोत सिद्धू भी अब उतना बढ़िया नहीं खेल रहे हैं लिहाजा भारत की शुरुआती बल्लेबाजी की मजबूती संदेहास्पद है. वेंगसरकर जैसे मध्यक्रम के मंजे हुए बल्लेबाज के न होने से मांजरेकर पर बहुत दबाव रहेगा. फिर यह खतरा भी है कि कप्तानी अजहरुद्दीन का खेल निखारने के बजाए उन पर दबाव बढ़ा दे.

कपिल और प्रभाकर के पूरे फॉर्म में होने के कारण अरसे बाद भारत की गेंदबाजी धारदार हुई है. नरेंद्र हीरवाणी, एम. वेंकटरमन्ना और वेंकटपति राजू की स्पिनर तिकड़ी को विवेक राजदान और अतुल वासन का भी सहयोग मिलेगा. अजहरुद्दीन भी मानते हैं, "हालांकि हमारी टीम संतुलित टीम है. लेकिन हमें पूरा एहसास है कि यह बहुत मुश्किल काम भी है."

अब तक तो यही लग रहा है कि बोर्ड का फैसला सही है. श्रीकांत थोड़ी झिझक से कहते हैं, "मुझे निराशा जरूर हुई है लेकिन मैं अपनी रणनीति में सुधार लाकर टीम में फिर शामिल होने की कोशिश करता रहूंगा." टीम में शामिल न किए जाने से रवि शास्त्री शायद राहत महसूस कर रहे थे. टीका-टिप्पणी करने में आगे रहने वाले क्रिकेटर एसोसिएशन के अध्यक्ष कपिलदेव ने चयन पर कोई टिप्पणी करने से इनकार कर दिया. वैसे निजी तौर पर सारे वरिष्ठ खिलाड़ी बोर्ड से जले बैठे हैं. उनमें से एक की टिप्पणी थी, "वे हमें एक-एक करके हटा देना चाहते हैं. और यह तो बोर्ड कर ही चुका है. वैसे इस बार बोर्ड ने थोड़ी उदारता भी दिखाई है. दौरे के लिए खिलाड़ियों को दी जाने वाली रकम 50,000 से बढ़ाकर 70,000 कर दी गई है. उसने वरिष्ठ खिलाड़ियों को ग्रेड के हिसाब से पैसा देने की बात भी मान ली है, बशर्ते जैसा कि बोर्ड के उपाध्यक्ष आई.एस. बिंद्रा कहते हैं, "वे पेशेवर खिलाड़ी बन जाएं क्योंकि इस तरह दौरे के लिए दी जाने वाली रकम पर आयकर लग जाता है."

चयन पर उठे विवाद से अब यह बहस भी चल पड़ी है कि चयनकर्ता किसे बनाया जाए. पांच चयनकर्ताओं में से तीन सदस्य, जिनमें अध्यक्ष डूंगरपुर भी शामिल हैं, ऐसे हैं, जिन्होंने कभी कोई टेस्ट मैच नहीं खेला. और यह शंका व्यक्त की जा रही है कि क्या ऐसे सदस्य राष्ट्रीय टीम का चुनाव करने में सक्षम हैं. जैसा कि अरुण लाल ने बताया, "आम धारणा है कि बोर्ड और चयन समिति के बीच कोई समझौता है. यह नहीं होना चाहिए."

लेकिन बिंद्रा इस बात का खंडन करते हैं कि बोर्ड और चयनकर्ताओं के बीच कोई सांठगांठ है. वे कहते हैं, "हमने उन्हें पूरी आजादी दी. खिलाड़ियों के चयन के बारे में किसी तरह के निर्देश भी उन्हें नहीं दिए गए." सुनील गावसकर का सुझाव था कि केंद्रीय चयन समिति बनाने का अधिकार

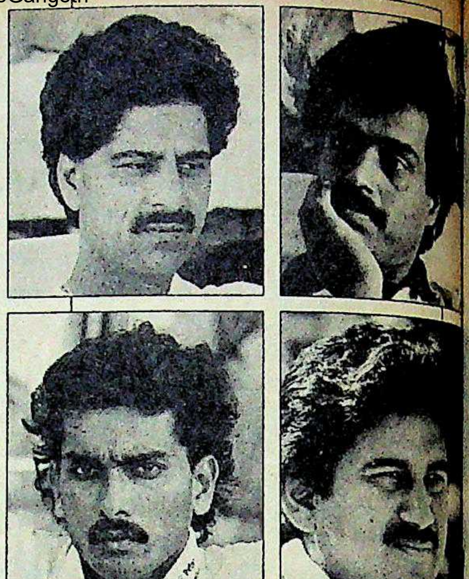

(ऊपर बाएं से) श्रीकांत; वेंगसरकर; और (नीचे बाएं से) शास्त्री; अरशद अयूब

...अनुभवियों की छंटनी

...छांटे गए

अजहरुद्दीन: कठिन परीक्षा

थामस भोजानी

चुने गए...

नए खिलाड़ियों को बढ़ावा...

(ऊपर बाएं से) चंद्रशेखर; हीरवाणी; और (नीचे बाएं से) राजू; गुरशरण

खेल मंत्रालय को होना चाहिए. मंत्रालय को पांच वर्षों के लिए एक समिति बना देनी चाहिए ताकि चयनकर्ताओं पर किसी तरह का दबाव न डाला जा सके."

लेकिन बोर्ड ने इस सुझाव को हंसी में टाल दिया. राज सिंह व्यंग्य से बोले, गावसकर के सुझाव से मैं हैरान हूं. यदि यह सुझाव पहले आया होता और लागू हुआ होता तो गावसकर के. बजाए आईएएस अधिकारियों और मंत्रियों के बेटे भारत की ओर से क्रिकेट खेल रहे होते."

लेकिन बोर्ड की कार्यप्रणाली को लेकर कई सवाल उठ रहे हैं. बोर्ड और खिलाड़ियों के बीच झगड़े की एक बड़ी वजह पैसा है. बोर्ड जो कुछ दे उसे आंख मूंदकर ले लेने वाले खिलाड़ी बढ़ते मुनाफे में अपना हिस्सा मांगने लगे हैं. खिलाड़ियों को शह मिलने की एक वजह यह भी है कि पिछले दिनों सुप्रीम कोर्ट ने बोर्ड की कार्यप्रणाली के बारे में कुछ तीखे सवाल उठाकर उसे विचलित कर दिया था. मामले की सुनवाई से बचने के लिए बोर्ड ने छह खिलाड़ियों पर लगाया प्रतिबंध हटा दिया.

लेकिन पाकिस्तान के दौरे में खिलाड़ियों के रवैए से बोर्ड बहुत नाराज हुआ. बहरहाल वरिष्ठ खिलाड़ियों को निकाल देने से ही मामला नहीं निबटेगा. जैसा कि अरुण लाल कहते हैं, "दुर्भाग्य से यह लड़ाई वर्ग संघर्ष जैसी बनती जा रही है. यदि हम कोई उपयोगी सुझाव देते हैं तो बागी समझ लिया जाता है."

इतनी कुंठा पाले खिलाड़ी ज्यादा समय चुप नहीं बैठेंगे. बहुत कुछ न्यूजीलैंड के दौरे के नतीजों पर भी निर्भर करता है. यदि टीम का प्रदर्शन अच्छा रहा तो बोर्ड का फैसला सही माना जाएगा. यदि न्यूजीलैंड जीतता है तो बोर्ड की भी ऐसी ही लानत-मलामत होगी. जो हो, इस लड़ाई में जीत क्रिकेट की तो नहीं ही होगी.

—**राज चेंगप्पा** और ब्यूरो रिपोर्ट

मुहम्मद अजहरुद्दीन

मुहम्मद अजहरुद्दीन को भारत का नया क्रिकेट कप्तान बनाए जाने के बाद प्रमुख संवाददाता ***अमरनाथ के. मेनन*** *ने उनसे बातचीत की. कुछ अंश:*

● ***उनकी कप्तानी पर:***

यह मेरे लिए एक कठिन चुनौती है.

● ***उनकी बल्लेबाजी पर इसका प्रभाव पड़ेगा या नहीं:***

मैंने अपनी बल्लेबाजी में सुधार किया है.

● ***न्यूजीलैंड दौरे पर:***

हम शायद कुछ अनहोनी भी कर सकते हैं.

● ***अनुभवी खिलाड़ियों की गैर-मौजूदगी पर:***

चयनकर्ताओं ने भारत के लिए जो उचित समझा, वही किया.

राज सिंह डूंगरपुर

'चयन सामूहिक परामर्श से'

राष्ट्रीय चयन समिति के अध्यक्ष राज सिंह डूंगरपुर ने बंबई ब्यूरो प्रमुख ***एम. रहमान*** *को इस बार क्रिकेट टीम में किए गए भारी उलटफेर के बारे में बताया. कुछ अंश:*

नामस भोजानी

● ***इस उलटफेर के बारे में आप क्या कहेंगे?***

अस्सी के दशक में हमारे क्रिकेट खिलाड़ियों में कुछ भारी गड़बड़ी हो गई. भारत ने 81 मैच खेले. इनमें से 11 जीते और 21 हारे. 48 बराबर रहे. मेरे खयाल से इसकी वजह यह रही कि ज्यादातर खिलाड़ी यही समझ बैठे थे कि उन्हें टीम से कोई निकाल नहीं सकता.

● ***शायद इसलिए अनुभवी खिलाड़ियों की जगह नए खिलाड़ियों को रखा गया.***

कई वरिष्ठ खिलाड़ियों के लिए टीम तो जैसे जमींदारी ही हो गई थी. युवा खिलाड़ियों में उत्साह और प्रेरणा होती है. उत्साह के साथ यदि अनुभव का भी मेल हो तो बहुत अच्छे परिणाम मिल सकते हैं. लेकिन हमारे अनुभवी खिलाड़ियों का अनुभव उनके किटबैगों में ही बंद रहा, पिच पर नहीं दिख रहा था.

● ***क्या वरिष्ठ खिलाड़ियों को बोर्ड को चुनौती देने के लिए सजा दी गई?***

हम बदला नहीं लेना चाहते. भारत में क्रिकेट के जुनून को देखते हुए सुप्रीम कोर्ट के फैसलों के मुकाबले हमारे फैसलों को ज्यादा अहमियत दी जाती है. चयन समिति के पांचों सदस्य लुटेरे नहीं हैं. टीम का चुनाव समिति, कप्तान और मैनेजर के सामूहिक परामर्श से होता है.

● ***श्रीकांत को क्यों निकाला गया जबकि उनकी कप्तानी में पाकिस्तान में खेली गई सिरीज बराबर रही?***

सिरीज बराबर रहने का श्रेय कप्तान को कैसे दिया जा सकता है? इसका श्रेय कप्तान की सूझबूझ को नहीं बल्कि बल्लेबाजों को जाता है. श्रीकांत से मुझे कोई गिला नहीं है. उनके हाथ से कप्तानी छिनने का सबसे ज्यादा दुख मुझे ही होना चाहिए, क्योंकि जिस समिति ने उन्हें पहले-पहल चुना उसका अध्यक्ष मैं ही था. वे तो एक बल्लेबाज के रूप में भी अपनी जगह कायम नहीं रख पाए.

● ***दिलीप वेंगसरकर को शामिल न करने की भी काफी आलोचना हुई है.***

सबसे ज्यादा विचार-विमर्श उन्हीं के नाम पर हुआ. बाद में यह तय किया गया कि बड़े खिलाड़ियों को तभी लिया जाए जब उनके बिना काम न चले. मोहिंदर अमरनाथ को भी इसीलिए छोड़ा गया. न्यूजीलैंड में कोई ऐसा गेंदबाज नहीं है जिससे हमें खतरा हो.

● ***कपिलदेव को क्या भारी आलोचना के डर से शामिल किया गया?***

हम कोई चुनाव नहीं लड़ रहे जो किसी की नाराजगी की परवाह करें. कपिल अभी भी सबसे आक्रामक गेंदबाज हैं. हम नए खिलाड़ियों की प्रतिभा का लाभ उठाने के लिए टीम को नए सिरे से बनाने की कोशिश कर रहे हैं.

1984 के दंगे

फैसले की घड़ी

1984 के दिल्ली के दंगों के भुक्तभोगी पांच साल से इंसाफ की उम्मीद में जी रहे हैं. नई सरकार द्वारा विशेष अदालतें गठित करने से उम्मीदें जगी हैं कि 1984 के सिख विरोधी दंगों के दोषियों को अंततः सजा मिलेगी. लेकिन लगता है यह प्रक्रिया लंबा समय लेगी.

इंदिरा गांधी की हत्या के एक दिन बाद 1 नवंबर 1984 को हिंसक भीड़ ने इंदरजीत सिंह को पूर्वी दिल्ली के नंद नगरी में उनके घर से खींचकर बाहर निकाला. लोहे की छड़ों से पीटा और फिर किरासन तेल छिड़ककर उन्हें जिंदा जला दिया. उनका 'अपराध' यही था कि वे उस नरसंहार में कत्ल कर दिए गए दूसरे 2733 लोगों (सरकारी आंकड़ा) की तरह सिख थे.

उनकी विधवा चरनजीत कौर अब तिलक विहार के एक फ्लैट में रहती हैं. यहीं 1984 के दंगापीड़ित परिवारों को बसाया गया है. वे अपने पति के हत्यारों के नाम बता सकती हैं. एक स्थानीय नेता 'खुब्बा' ने उनके पति पर किरासन तेल डाला और एक पाउडर उनके शरीर पर छिड़क दिया जिसने तुरंत आग पकड़ ली. भीड़ की अगुआई इंका कार्यकर्ता किशोरी लाल कर रहा था. वे बताती हैं कि पूर्वी दिल्ली के इंका सांसद हरकिशन लाल भगत ने पड़ोस के शकरपुर में सभा करके अपने लोगों को 'सिखों को सबक सिखाने' के लिए उकसाया.

चरनजीत कौर ने नंद नगरी थाने में दर्ज कराई गई शिकायतों में ये नाम दर्ज कराए और फिर 1984 की हत्याओं की जांच के लिए सरकार द्वारा न्यायाधीश रंगनाथ मिश्र की अगुआई में गठित एक सदस्यीय आयोग के सामने भी वे इन नामों को दुहरा चुकी हैं.

वे नंद नगरी के घर में लौटने से डरती हैं और बदले के डर से फोटो खिचवाने से भी मना कर देती हैं. वे कहती हैं, "कातिल सड़कों पर खुलेआम घूम रहे हैं." हत्याकांड के बाद पांच साल गुजर गए पर चरनजीत को अभी भी न्याय मिलने का इंतजार है.

अब केंद्र में नई सरकार के आने से आशा की किरण झिलमिलाने लगी है कि ये अपराधी, जिनके अपराध को खुशवंत सिंह ने "सदी का अदंडित अपराध" कहा है, कानून के शिकंजे में लाए जाएंगे. प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने गद्दी संभालने के तुरंत बाद वादा किया कि दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी. दिल्ली के नए उप-राज्यपाल एअर मार्शल अर्जन सिंह कहते हैं, "प्रशासन इसके लिए कटिबद्ध है कि इंसाफ मिलने में देर भले हुई हो पर इंसाफ जरूर मिले."

सरकार ने इस दिशा में पहला कदम तो उठा लिया है. गृह मंत्रालय और उप-राज्यपाल के कार्यालय के अधिकारियों ने हाल ही में दंगापीड़ितों की प्रमुख संस्थाओं-

■ राहत शिविर में दंगापीड़ित

शरद सक्सेना

दंगा राहत पुनर्वास केंद्र और सिटीजंस जस्टिस कमेटी (नागरिक न्याय समिति) के सदस्यों के साथ बैठकों में इस मामले की समीक्षा की और जल्दी ही विशेष अदालतों के गठन की घोषणा होने वाली है. इस कदम का स्वागत भी हुआ. सिटीजंस जस्टिस कमेटी के सदस्य और सांसद, पूर्व लेफ्टिनेंट जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा कहते हैं, "सरकार कुछ करने के प्रति दृढ़संकल्प दिखती है. कम-से-कम इसके मंसूबे साफ हैं. हम राजीव गांधी की सरकार के लिए ऐसा नहीं कह सकते थे."

लेकिन कई तरह की आशंकाएं भी हैं. ये अंदेशे निराधार भी नहीं. दंगा राहत पुनर्वास केंद्र के अध्यक्ष जरनैल सिंह पूछते हैं, "हमें वी.पी. सिंह पर भरोसा है. पर क्या अदालतें सज्जन कुमार, हरकिशनलाल भगत और धर्मदास शास्त्री जैसे बड़े इंका नेताओं को दोषी ठहरा सकती हैं?"

सरकार इन आशंकाओं को दूर करने को तत्पर है. गृह मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी कहते हैं, "उन लोगों के खिलाफ मुकदमे दर्ज करना कोई मुश्किल काम नहीं होगा क्योंकि राजनैतिक हालात बदलने से ज्यादा-से-ज्यादा गवाह निडर होकर आगे आएंगे. हां, मुकदमों का फैसला तो अदालतों को ही करना होगा."

इस नई स्थिति ने भगत और दूसरे लोगों को परेशानी में डाल दिया है. कहा जाता है कि भगत अकाली दल के प्रमुख धड़े के नेता सिमरनजीत सिंह मान से संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं. एक सवाल के जवाब में भगत ने 'इंडिया टुडे' को बताया, "राजनीतिक के रूप में मैं भिन्न-भिन्न लोगों से मिलता हूं." खुशवंत सिंह कहते हैं, "अब उन्हें दाल-आटे का भाव का पता चल रहा है. वे मुझसे भी संपर्क साधने की कोशिश कर रहे हैं."

हर हाल में यह राजीव शासन की स्थिति से उलट माहौल है. पूर्व सरकार ने 1984 की हत्याओं के दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की कोशिशें बेमन से की. उसका गठित किया मिश्र आयोग (देखें बॉक्स) यह भी ठीक से पता लगाने में नाकाम रहा कि कितने लोगों की हत्याएं हुईं. सरकार मृतकों की संख्या 2,733 बताती है जबकि सिटीजंस जस्टिस कमेटी 3,870 लोगों के मरने की बात कहती है.

अगर मान लिया जाए कि सरकारी आंकड़ा ही सही है तब भी यह तथ्य अपनी जगह है कि पुलिस को 1,341 मौतों के मामले में एफआईआर अभी दर्ज करनी है. मिश्र आयोग ने भी कहा है कि जिन कई मामलों में किसी पुलिसवाले या सत्तारूढ़ व्यक्ति का नाम आया उनमें एफआईआर ही दर्ज नहीं किए गए. पूर्वी दिल्ली के त्रिलोकपुरी में अलग-अलग जगहों पर भिन्न-भिन्न लोगों ने 400 लोगों की हत्या की पर पुलिस ने कुल मिलाकर सिर्फ एक एफआईआर दर्ज की.

यहां तक कि मिश्र आयोग ने भी, जिसे सिटीजंस जस्टिस कमेटी और दूसरी समितियां महज 'दिखावा' कहकर खारिज कर देती हैं, अपनी रिपोर्ट में सिर्फ पुलिस की ही भूमिका की जांच के लिए विशेष आयोग बैठाने की सिफारिश की है. पीयूसीएल की रिपोर्ट में खुद पुलिसवालों पर भी दंगे में शामिल होने का आरोप था.

पुलिस ने मामले दर्ज करने में धीमी गति का परिचय तो दिया ही, अदालतों में दाखिल मामलों को आगे बढ़ाने में भी वह वैसे ही सुस्त रही. कुल मिलाकर हिंसा, लूट और हत्या के 225 मुकदमे अदालतों में दर्ज किए गए. हत्या के 85 मामलों में 15 में रिहाई हो गई. अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश जे.डी. कपूर की अदालत में दर्ज हत्या के एक मामले में छह लोगों को उम्र कैद की सजा हुई. ये छह लोग अब जमानत पर हैं और अपने को निर्दोष बताते हुए उन्होंने ऊपरी अदालत में अपीलें दायर कर रखी हैं.

आयोग और समितियां

अकाल मृत्यु

दिल्ली में सिख विरोधी दंगों के छह महीने बाद 26 अप्रैल 1985 को राजीव गांधी सरकार ने हत्याओं की जांच के लिए न्यायमूर्ति रंगनाथ मिश्र की अगुआई में एक सदस्यीय जांच आयोग मुकर्रर करने की घोषणा की.

करीब दो साल बाद फरवरी 1987 में मिश्र ने अपनी रिपोर्ट दी. उन्होंने इंका के निचले दर्जे के 19 कार्यकर्ताओं को व्यक्तिगत तौर पर दंगे भड़काने का दोषी ठहराया पर पार्टी को निर्दोषता का प्रमाणपत्र दे दिया, हालांकि अनेक संगठन नरसंहार के लिए उस पर आरोप लगा चुके थे.

मिश्र ने हत्याओं के लिए समाज विरोधी तत्वों को जिम्मेदार ठहराते हुए टिप्पणी की कि "खुद-ब-खुद शुरू हुए दंगों ने बाद में गुंडों के हाथ पड़कर संगठित सूरत अख्तियार कर ली." अंत में उन्होंने अपने शुरू किए गए काम को पूरा करने के लिए दो और समितियां गठित करने की सिफारिश की.

इनमें पहली, जैन-बनर्जी समिति को इस तहकीकात का काम सौंपा गया कि हत्याओं के बाद दर्ज आपराधिक मामलों की क्या सही ढंग से जांच हुई है. समिति अपनी रिपोर्ट पेश कर पाती इससे पहले ही उसे सज्जन कुमार के करीबी एक इंका कार्यकर्ता बी.एम. गुप्ता की फरियाद पर अमान्य घोषित कर दिया गया.

दिलीप कपूर-कुसुमलता मित्तल समिति को पुलिस की भूमिका की जांच करने के लिए कहा गया. कपूर जांच का काम शुरू नहीं कर पाए क्योंकि सरकार ने उन्हें दफ्तर के लिए जगह और कर्मचारी मुहैया नहीं कराए. मित्तल ने अपनी रिपोर्ट तो पूरी कर ली पर दिल्ली प्रशासन ने संयुक्त रिपोर्ट की मांग करते हुए उसे लौटा दिया. यानी रिपोर्ट बनाना बेकार गया.

ले. जनरल जगजीत सिंह अरोड़ा कहते हैं, "ये सभी वाकयात एक ही दिशा की ओर संकेत हैं. पर 'जब बड़ा पेड़ गिरता है तो धरती हिलती ही है' जैसी टिप्पणी करने वाले प्रधानमंत्री से और क्या उम्मीद की जा सकती थी." —हरिंदर बवेजा

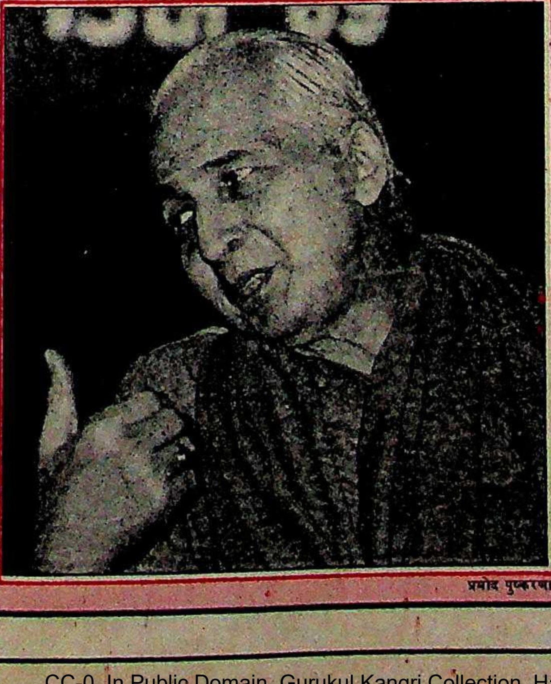

प्रमोद पुष्करणा

जस्टिस मिश्रः सिर्फ रिपोर्ट

मिश्र आयोग ने अपनी रिपोर्ट में इस आरोप को खारिज कर दिया कि इंका ने पार्टी के तौर पर हिंसा भड़काई. आयोग ने इस पार्टी के भगत, शास्त्री और सज्जन कुमार तथा महानगर परिषद और नगर निगम के 10 पार्षदों को आरोपों से बरी कर दिया. लेकिन आयोग ने पार्टी के 19 कार्यकर्ताओं को यह कहते हुए दोषी ठहराया कि उन्होंने 'निजी हैसियत से हिंसा में भाग लिया.'

इन 19 लोगों को दिल्ली सिख गुरद्वारा प्रबंध समिति के दाखिल किए ब्यौरों के आधार पर दोषी ठहराया गया. मजेदार बात यह कि गुरद्वारा समिति ने आयोग को सौंपी रिपोर्ट में भगत, शास्त्री, सज्जन कुमार और 10 दूसरे इंकाइयों के नाम मुख्य फेहरिस्त मे दिए थे जबकि अंततः दोषी पाए गए 19 लोगों के नाम पूरक सूची में थे.

महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सभी लोगों ने उसी हलफनामे में भगत और पूर्वी दिल्ली के तत्कालीन इंका महासचिव भूप सिंह त्यागी पर आरोप लगाए हैं. मिश्र आयोग ने भगत को तो बरी कर दिया पर त्यागी को हलफनामे के आधार पर दोषी पाया. अर्जन सिह कहते हैं, ''मैं बेहिचक कह सकता हूं कि दोषियों को उनकी हैसियत की परवाह किए बिना दंडित किया जाएगा.''

रवैल कौर, जिनके पति और 18 तथा 21 वर्षीय दो बेटों की हत्याएं हुई थीं, कहती हैं, ''आप चाहें तो इसे बदले की भावना कह लें पर मैं अपने बेटों के हत्यारों को दंडित होते देखना चाहती हूं.'' हाल ही में जब अर्जन सिह ने तिलक विहार का दौरा किया तब उनसे उन्होंने कहा, ''बूटा सिह वाला कलम न चला देना.'' इस चेतावनी को नई सरकार को हमेशा अपने दिमाग में रखना होगा. पंजाब समस्या के समाधान की राह में भी यही सबसे बड़ा रोड़ा है.

—हरिंदर बवेजा

नवंबर 1984 के दंगों के कई भुक्तभोगियों ने इंका के तीन प्रमुख नेताओं पर सिखों की हत्या के लिए लोगों को उकसाने के आरोप लगाए हैं. ये तीनों नेता—हरकिशनलाल भगत, धर्मदास शास्त्री और सज्जन कुमार—उन दिनों सांसद थे. हरिंदर बवेजा के साथ बातचीत में ये तीनों नेता उन आरोपों का जवाब दे रहे हैं. सभी अपने को बेकसूर बताते हैं.

प्रशांत पंजियार

भवान सिंह

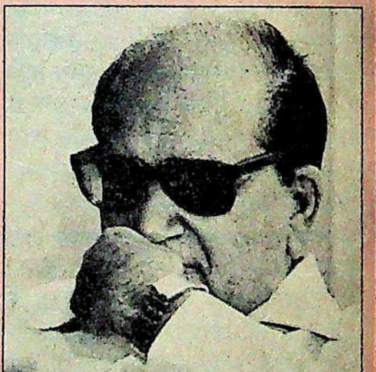

सज्जन कुमार

'कोई कांग्रेसी शामिल नहीं था'

• बताया जाता है कि आपने हिंसक भीड़ का नेतृत्व किया. विधवा अनवर कौर ने अपने हलफनामे में ऐसा कहा है.

यह हलफनामा दंगे के तीन साल बाद जैन-बनर्जी समिति को पेश किया गया था.

• हाईकोर्ट ने उस आदेश को रद्द कर दिया है. नया मामला दर्ज होने वाला है.

मैं फिर आरोपों का जवाब दूंगा.

• बताया जाता है कि आपने दंगाइयों को शराब की बोतल और 100-100 रु. दिए.

(हंसते हुए) क्या आप विश्वास कर सकती हैं कि कोई सांसद शराब बांटता फिरेगा? कोई कांग्रेसी शामिल नहीं था.

धर्मदास शास्त्री

'मिश्र आयोग ने दोषी नहीं पाया'

• भुक्तभोगियों के हलफनामों के अनुसार आपने करोलबाग के थानेदार पर दबाव डालकर दंगाइयों को छुड़ाया.

नहीं. वास्तव में मैंने थानेदार से कहा था कि वह गिरफ्तार बेकसूरों को छोड़ दे. मिश्र आयोग ने मुझे दोषी नहीं ठहराया.

• बताया जाता है कि आप सिखों की पहचान करने के लिए प्रकाश नगर की मतदाता सूची लेकर घूम रहे थे.

मुझे इस इलाके का नाम नहीं पता.

• आपको दंगे के दौरान जलते मकानों के आगे से गुजरते देखा गया पर आप दंगापीड़ितों की मदद के लिए रुके नहीं.

यह बिलकुल गलत है.

हरकिशनलाल भगत

'आरोप गलत और बेबुनियाद'

• 31 अक्तूबर 1984 को आप शकरपुर में एक बैठक में अपने समर्थकों को सिखों की हत्या करने के निर्देश दे रहे थे?

यह बिलकुल गलत और बेबुनियाद है.

• बताया जाता है कि आपने शाहदरा कोर्ट के वकील लखानी से कहा था कि वे गिरफ्तार दंगाइयों से कोई फीस न लें.

यह सब बकवास है.

• बताया जाता है कि आपने शाहदरा थाने में गिरफ्तार दंगाइयों को छुड़ाया.

यह भी गलत है. मिश्र आयोग के सामने बयान देने वाले कई लोगों ने कहा है कि मैंने दंगापीड़ित परिवारों की किस तरह सहायता की.

हर एक के लिए दस!

अपना मनपसंद कैमरा चुन लीजिए, बस!

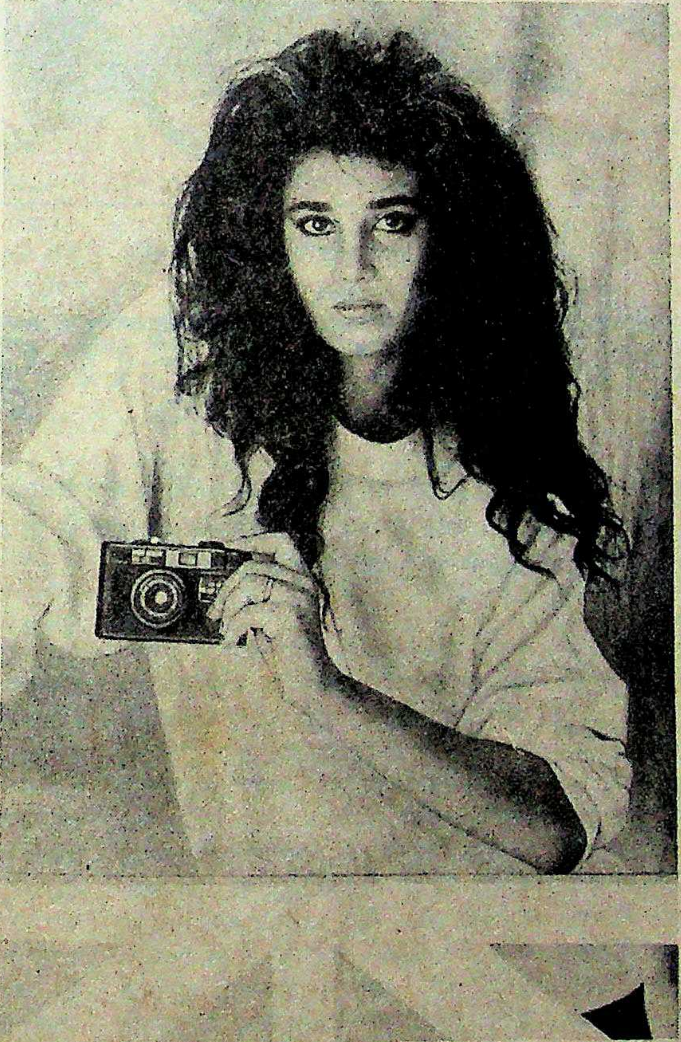

एकमेव!
हॉट शॉट ११० एस
फ़्लैश लगाने का इन्तज़ाम. दो लैंस.

[illegible] गए ना
दुविधा में?.
हॉट शॉट ११० ई एफ़.
इलेक्ट्रॉनिक फ़्लैश. दो लैंस.

तीन—बेहतरीन!
हॉट शॉट ११० टेली
इलेक्ट्रॉनिक फ़्लैश.
टेली व सामान्य लेंस.

अब सुनिये
चार का समाचार!
हॉट शॉट ३५ यू.एफ़.
बिल्ट-इन फ़्लैश.
यूनिवर्सल. फ़ोकस सिस्टम.

पांच सितारा!
हॉट शॉट ३५ जे.आर.
फ़्लैश लगाने का इन्तज़ाम.
यूनिवर्सल फ़ोकस सिस्टम.

मारा छक्का!
हॉटशॉट ३५ सिक्सर.
फ़ोकस फ्रीलेंस.
फ़्लैश के लिए इन्तज़ाम

सात की क्या बात!
हॉटशॉट ३५ ऑटो.
ऑटोमैटिक खूबियों से भरपूर

आठ के क्या ठाठ!
हॉटशॉट ११० मिनी
इतना नन्हा कैमरा आपने न देखा होगा!

नौ हमारा. अब पौ बारह!
हॉटशॉट ११० मिनी फ़्लैश
इलेक्ट्रॉनिक फ़्लैश के साथ.

दस—अभी इतना ही बस!
मिनोल्टा फ़ोटोफ़ोन
कंप्यूटर नियंत्रित पूरी तरह.

HOT SHOT
कैमरे

फ़ोटोफ़ोन. फ़ोटोग्राफ़ी के उत्कृष्ट उत्पादन

फोटोफ़ोन इंडस्ट्रीज़ इंडिया लिमिटेड
७, साकी विहार रोड, बंबई ४०० ०७२

Sista's-420/89 HIN

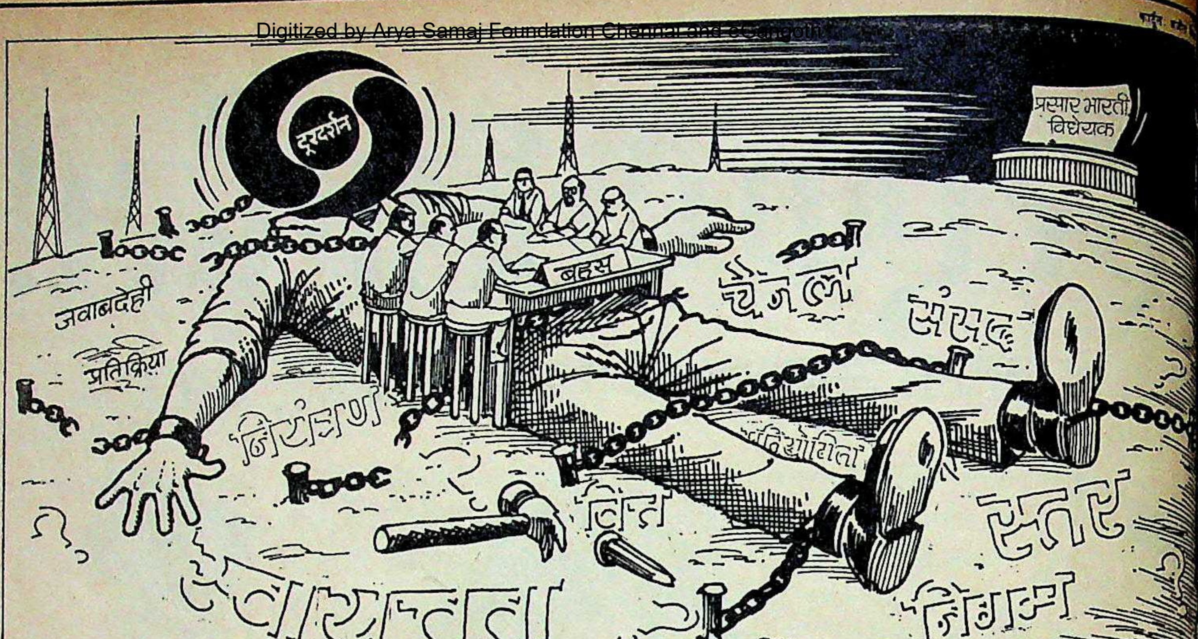

स्वायत्तता आकाशवाणी-दूरदर्शन की

अभी दिल्ली बहुत दूर

आकाशवाणी-दूरदर्शन को स्वायत्तता देने के नई सरकार के फैसले से कई सवाल उठ खड़े हुए हैं. क्या इन संस्थाओं की बागडोर पहले की तरह सूचना और प्रसारण मंत्रालय के ही हाथ में रहेगी? क्या प्रतिस्पर्धा जरूरी है? क्या स्वायत्तता से इनका स्तर सुधर जाएगा?

स्वायत्तता देने की बात सुनने में कितनी सरल लगती है. मानो दे देना भर बहुत है. हां, यह तो सूचना और प्रसारणमंत्री पी. उपेंद्र ही बता सकते हैं कि कथनी और करनी में कितना फर्क होता है. आकाशवाणी और दूरदर्शन को स्वायत्त निगम का दर्जा देने के प्रस्ताव का विधेयक जब दिसंबर में संसद में पेश हुआ तो कई लोग बड़े खुश दिखे. एक समालोचक तो यहां तक कह गए कि अब लेखकों को ज्यादा पैसा देना होगा क्योंकि अब वे बिलकुल पेशेवर प्रतिभाओं से होड़ लेंगे. लेकिन अधिकांश मीडिया विशेषज्ञों का मत था कि विधेयक स्वागत योग्य तो है पर सटीक नहीं.

उनका कहना था कि इस विधेयक में कई ऐसी खामियां रह गई हैं जिनकी बदौलत कमलाकांत तिवारी जैसे लोग, जिन्होंने दूरदर्शन और आकाशवाणी की साख को मटियामेट कर दिया, अपना उल्लू सीधा कर सकते हैं. समाचार जगत में काम कर चुके लोगों का विचार है कि कोई भी कदम चाहे कितनी ही ईमानदारी से क्यों न उठाया गया हो, उस पुरानी बाबू संस्कृति को एकदम से पेशेवर नहीं बना सकता. खुशवंत सिंह कहते हैं, "यह उपाय कोई जादू की छड़ी नहीं है." जैसे-जैसे बहस ने जोर पकड़ा, यह बात साफ होती गई कि स्वायत्तता को सही मायनों में स्तरीय बनाने में समय लगेगा.

नए विधेयक के अनुसार एक निगम बनाया जाएगा जिसकी देखरेख चार पूर्णकालिक और सात अंशकालिक निदेशक करेंगे. अंशकालिक निदेशकों में से एक को सूचना और प्रसारण मंत्रालय मनोनीत करेगा. बाकी दस की नियुक्ति एक समिति करेगी जिसमें उपराष्ट्रपति, प्रेस काउंसिल के अध्यक्ष और सरकार का मनोनीत व्यक्ति होगा. उपेंद्र ने स्पष्ट किया कि यह तीसरा व्यक्ति समाचार जगत का विशेषज्ञ होगा.

विधेयक की आलोचना करने वालों की दलील है कि चयन समिति सरकार के खासमखास लोगों से ही भरी रहेगी क्योंकि संख्या में सरकार का पलड़ा भारी होगा. आलोचक इस बात पर भी अड़े हुए हैं कि आकाशवाणी-दूरदर्शन के महानिदेशकों के ऊपर चार पूर्णकालिक निदेशकों का हो आवश्यक है. अध्यक्ष और कार्यकारी नि (जिसके नीचे दोनों महानिदेशक होंगे) अलावा एक निदेशक वित्त मामलों के लि तथा एक और कार्मिक मामलों के लिए हों इस प्रकार माध्यम के वर्तमान आकाश अंदेशा है कि ये पद मंत्रालय के दफ्तरशाहों खासकर अपने लिए बनाए हैं और अब प्र की बजाए परोक्ष नियंत्रण रहेगा. आ वाणी के महानिदेशक अमृत राव शिंदे हैं, "अब आप मंत्रालय न कहकर नि मंडल कहेंगे." उपेंद्र कहते हैं, "कौन कह कि नौकरशाहों को निदेशक बनाया जाए मंत्रालय से केवल एक व्यक्ति होगा—वह अंशकालिक. वर्गीज समिति ने तो दो नौ शाहों की सिफारिश की थी."

कुछ लोगों को लगता है कि पूर्णका अध्यक्ष और कार्यकारी निदेशक बार-बार दूसरे के अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण सूचना और प्रसारण मंत्रालय के सचिव माथुर की राय है कि दोनों पदों को देना चाहिए लेकिन बी.जी. वर्गीज,

ता के स्वरूप के लिए 1977- गठित कार्यकारी की अध्यक्षता की नते हैं कि इतने बड़े को अच्छी तरह के लिए चार पूर्ण- निदेशक बहुत नहीं हैं.

अपनी समिति के झाव पर कायम हैं कि ष्ट्रीय प्रसारण ट्रस्ट न पर देश भर की गतिविधियों का ार रहे. उनके मुता- ह ट्रस्ट आकाशवाणी ूरदर्शन के कार्यकारी ो देखरेख करे और सारकों को लाइसेंस काम भी करे.

उपेंद्र और दूसरे नेता इस राय से नहीं. उनका कहना है कि निगम को धिकार संसद से मिलने चाहिए. -आकाशवाणी की आय इस समय 230 करोड़ रु. है और खर्च 860 करोड़ रु. निगम को संसद से धन दिलाकर आय और व्यय के इस अंतर को दूर किया जाए.

पर मणिशंकर अय्यर जैसे कांग्रेसी मानते हैं कि ऐसा करके सरकार "अपनी जिम्मेदारियों से भाग रही है." पूर्व सूचना और प्रसारणमंत्री वसंत साठे इस विधेयक को 'दुविधा-ग्रस्त और विनाशकारी' करार देते हैं.

धन जुटाने का सवाल भी टेढ़ा है. साठे कहते हैं, "अगर उनके पास पैसे न हों तो वे पैसों की खातिर किसी भी स्तर तक गिर जाएंगे." कई समालोचक खासकर इस बात से परेशान हैं कि निगम को हर साल मंत्रालय को शुरू से ही बता देना होगा कि साल भर में वह क्या कुछ करेगा और उस पर अंदाजन कितना खर्च आएगा.

नए निगम की स्थापना पर विचार चलने के दौरान एकाधिकार के सवाल पर भी बहस जारी थी. रंगमंच अभिनेत्री और टेलीविजन निर्माता जलबाला वैद्य का कहना है, "निगम चाहे कितना ही स्वायत्त

परोक्ष नियंत्रण बनाम प्रत्यक्ष नियंत्रण

"अब आप सूचना व प्रसारण मंत्रालय न कहकर निदेशक मंडल कहा करेंगे"

अमृत राव शिंदे
महानिदेशक, आकाशवाणी

"कौन कहता है कि नौकरशाहों को निदेशक बनाया जाएगा"

पी. उपेंद्र
सूचना व प्रसारणमंत्री

दूरदर्शन

खुलती खिड़कियां

आकाशवाणी और दूरदर्शन के लिए ता और स्वतंत्रता मंत्र बन गए हैं. लेकिन ी हाउस और आकाशवाणी भवन के े स्वतंत्र होकर उड़ान भरना, पंख ड़ाना भूल गए हैं. पिंजरे अब भले ही गए हैं पर उन्हें दूरदराज की कोठियों अपने राजनैतिक बॉसों और अधि-यों के निर्देश पर चलने की ऐसी हो गई है कि वे खुद अपने सहारे में लड़खड़ाने लगे हैं.

र भी ये दोनों 'स्वायत्त होने' की होड़ दूसरे को पछाड़ने में लगे हैं जबकि ए कर्त्ताधर्त्ता इन्हें स्वायत्त बनाने की चलाने में मसरूफ हैं.

ब दूरदर्शन के समाचारों में रुबाइया की रिहाई पर जश्न मनाते उग्र-यों को दिखाए जाने का मामला ही लें. के हिसाब से यह एक दिलेरी भरा था लेकिन इस पर भी हंगामा मचा. दर्शक भी पुराने रंग-ढंग में इस च-बस गए हैं कि उन्होंने भी इसे त्री फारूक अब्दुल्ला की विदाई का माना. यही हाल सामयिक विषयों के म 'अब क्या होगा' का भी था. इसमें विपक्षी नेता भी शामिल हुए और ने अल्पमत सरकार के चल पाने की संभावनाओं पर विचार किया. शीर्षक को लेकर राष्ट्रीय मोर्चे के कई नेताओं में नाराजगी थी.

अब पिंजड़े में बंद पक्षी की तरह दूरदर्शन के पंख फैलाने में अभी कोई गड़बड़ लग रही है तो इसका ज्यादातर दोष लालफीताशाही को ही जाता है. दूरदर्शन के निदेशक (समाचार) हरीश अवस्थी का कहना है कि नक्सलियों द्वारा अपहृत तेलुगु देशम विधायक वेंकटेश्वर राव की पत्नी की निजामाबाद में भूख हड़ताल को वे फुटेज न मिल पाने के कारण परदे पर नहीं दिखा सके. स्थानीय केंद्र यह व्यवस्था नहीं करा पाया. महानिदेशक शिव शर्मा कहते हैं, "अपने लोगों को तत्काल विमान से भेजकर यह व्यवस्था नहीं की जा सकती. इसके लिए दस जगह से अनुमति लेनी पड़ती."

एक और बड़ी समस्या बड़े लोगों में आत्ममुग्धता की 'बीमारी' का होना है जिससे नई सरकार के सारे लोग अछूते नहीं हैं. अभी भी दूरदर्शन पर अपनी या अपने नेता की तस्वीर दिखवाने का आग्रह रामविलास पासवान और देवीलाल जैसे मंत्रियों के यहां से आता है.

लेकिन मुश्किलों के बावजूद दूरदर्शन कोशिश कर रहा है. क्रिकेट टीम के छह धुरंधर खिलाड़ियों की छंटनी की खबर 8 जनवरी को तीसरे पहर आई और उसी दिन रात के बुलेटिन में क्रिकेट जगत के तीन नामी लोगों की प्रतिक्रियाएं दिखा दी गईं. इसी बुलेटिन में दिल्ली नगर निगम को भंग करने पर खुली बहस दिखाई गई. हटाए गए मेयर महिंदर सिंह साथी को भी मौका दिया गया.

सामाजिक विषयों के कार्यक्रम हफ्ते में चार बार आया करेंगे. सूचना एवं प्रसारणमंत्री पी. उपेंद्र ने निर्देश दिया है कि टीवी के महत्वपूर्ण समय प्रसिद्ध फ्रीलांस प्रोड्यूसरों के लिए सुरक्षित रखे जाएं. उम्मीद है कि अब रमेश शर्मा की वापसी होगी. पीटीआई-टीवी के कार्यक्रमों में भी जान लौटने की उम्मीद है.

मंडी हाउस के साथ भ्रष्टाचार के ढेर किस्से भी जुड़े हैं. सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में अतिरिक्त सचिव भास्कर घोष कहते हैं, "सरकार अब तक पास हुए सारे कार्यक्रमों पर फिर से विचार करेगी." नए कर्त्ताधर्त्ता पुराने ढर्रे पर चल पड़ें उसके पहले दूरदर्शन अगर अपने अंदर बदलाव कर ले तो अच्छा ही है.

—मधु जैन

YOUR
CHILDREN
WILL LOVE IT.
AND THEY'LL
LOVE YOU
FOR IT.

TARGET
ANNUAL 1990

The Target Annual 1990. Packed with a whole lot of fun. Over a dozen beautifully illustrated stories full of mystery and adventure, fantasy, humour and science fiction. Games and puzzles, jokes and riddles, comic strips, quizzes and activity ideas. Plus, of course, lots of amazing facts and useful information that your children will simply love going through. There's so much in it that they'll wish there was an Annual every month!

To order the Target Annual 1990, use the coupon below!

Please send a copy of Target Annual 1990. I enclose my crossed cheque/DD no. ______________ for Rs.45. (add Rs.5/-for outstation cheques, i.e. outside Delhi) payable to Living Media India Ltd.

Child's Name: ______________

Address: ______________

______________ Pin: ______

Mail coupon to:
Living Media India Ltd.
P.B. No. 706
Faridabad-121007, HARYANA

TARGET
The Children's Magazine

पाँच उंगलियाँ साथ मिले तो मुट्ठी कहलाए
उंगलियों की चुस्ती-फुर्ती मुट्ठी की जान बन जाए

जैसे
झंडु पंचारिष्ट
पाचन शक्ति बढ़ाए,
तन्दुरुस्ती जगाए.

क्या आप जानते हैं कि ज़्यादातर बीमारियाँ हाज़मे की ख़राबी से शुरू होती हैं? उनके लक्षण भले ही अलग-अलग हों लेकिन उनका मूल कारण एक ही होता है. कमज़ोर हाज़मा. ख़राब तन्दुरुस्ती. तो सुनिए! झंडु पंचारिष्ट. पांच गुणों वाला पाचक टॉनिक. आपके हाथ की उंगलियों की तरह झंडु पंचारिष्ट भी है आपकी पाचनक्रिया सुधारने का सुरक्षित व असरदार उपाय. चाहे वो बदहज़मी हो, ज़्यादा खाने की तकलीफ़ या गैस, वायुरोग या फिर हल्के जुलाब की ज़रूरत या भूख बढ़ाने का सवाल - झंडु पंचारिष्ट आपकी इन पाचन समस्याओं का समाधान है. और फिर यह केवल लक्षण विशेष के लिए ही असरकारक नहीं है. ५ उंगलियों के अलग अलग इस्तेमाल की अपेक्षा ज़्यादा प्रभावशाली मुट्ठी की तरह ही झंडु पंचारिष्ट में वे आयुर्वेदिक गुण हैं जो एक साथ मिलकर आपकी पूरी पाचन क्रिया को सुधारते और उसे स्वस्थ बनाते हैं. झंडु पंचारिष्ट का नियमित इस्तेमाल कीजिए. कुछ ही दिनों में आप जान जाएंगे कि आप सेहतमंद हो रहे हैं. याद रखिए, अच्छा हाज़मा याने अच्छी तन्दुरुस्ती! और फिर जान है तो जहान है!

AYURVEDIC MEDICINE
450 ml
ZANDU PANCHARISHTA
झंडु पंचारिष्ट

४५० मिली. और
२०० मिली.
में उपलब्ध.

झंडु पंचारिष्ट
पाँच गुणोंवाला पाचक टॉनिक

CLARION/B/ZP/20/253 HIN

लाए
बन जाए
को
पंचारिष्ट
ही दिनों में
हो रहे हैं.
च्छी
हान है!
रिष्ट
क टॉनि

क्यों न हो जाए, एकाधिकार तो रहेगा ही." एक प्रस्ताव यह भी था कि दोनों प्रसार माध्यमों को अलग-अलग कर दिया जाए.

वैसे संभावनाएं और भी हैं मसलन टीवी के दूसरे चैनलों का नियंत्रण राज्य सरकारों को सौंपना, महानगरों के स्थानीय व्यावसायिक स्टेशनों को लाइसेंस देना और सभी इच्छुकों को दोनों माध्यमों के उपयोग का मौका देना. कई बौद्धिक लोग निजीकरण के सख्त खिलाफ हैं. वर्गीज कहते हैं, "व्यावसायिक चैनल फिलिपींस जैसे देशों में प्रतिदिन [illegible] घंटे का बकवास कार्यक्रम देते हैं. यह तो बहुत ही बुरा होगा." स्वतंत्र निर्माता रमेश शर्मा कहते हैं कि इससे "गंदगी को बढ़ावा मिलेगा." ऐसे लोगों का विचार है कि आजकल के सांप्रदायिक माहौल और आर्थिक विकास की संवेदनशील अवस्था के परिप्रेक्ष्य में ये शक्तिशाली प्रसार माध्यम संभावित विस्फोटक साबित हो सकते हैं.

सरकार ने प्रतिस्पर्धा के सारे विकल्पों की ओर से कान बंद कर रखे हैं, इसलिए बहस ज्यादातर अकादमिक ही रही है. जिस बात से सभी परेशान हैं वह यह है कि निगम अपनी स्वायत्तता से स्तर कैसे सुधार लेगा. रमेश शर्मा का कहना है, "अभी स्वतंत्र विभागों की नहीं, स्वतंत्र दिमाग वाले लोगों की जरूरत है." बीच के अधिकारी जो कार्यक्रम के प्रस्ताव पर विचार करते और उनका निर्माण करते हैं, आजकल तेजी से फाइलें आगे बढ़ाने में व्यस्त हैं. कई स्वतंत्र निर्माता धारावाहिकों की अनुमति लेने की प्रक्रिया और प्रायोजित कार्यक्रमों के कवरेज में भ्रष्टाचार का आरोप भी लगाते हैं.

मंत्रालय को अपने कुछ वर्तमान कर्मचारियों की बेहतर क्षमता पर कोई संदेह नहीं है. उपेंद्र इस बात से सहमत हैं, "अगर सब का तबादला ही कर दिया जाए तो पहले दौर में ही मक्खी निगलने वाला मामला हो जाएगा." इनमें से कई तो निश्चय ही प्रतिभावान हैं.

स्वायत्तता बनाम गुणवत्ता

"आप ऐसे लोगों को स्वायत्तता देने जा रहे हैं. वे इस बारे में जानते ही क्या हैं?"

एम.के. रैना
रंगमंच निदेशक

"हम लोगों का तो भारतीय खाद्य निगम में तबादला नहीं किया जा सकता"

शिव शर्मा
महानिदेशक, दूरदर्शन

लेकिन जैसा कि रमेश शर्मा कहते हैं, "इन योग्य लोगों को प्रताड़ित किया गया है और कई को तो पिछली सरकार ने बहुत सताया है."

इसके अलावा दोनों प्रसार माध्यमों में तैनात आधा दर्जन अलग-अलग कैडरों के अधिकारियों में छत्तीस के रिश्ते हैं. इससे स्थिति और भी पेचीदा हो गई है. इंजीनियरों की कार्यक्रम तैयार करने वाले लोगों से नहीं बनती. प्रसारण अधिकारी समाचार डेस्क पर बैठे भारतीय सूचना सेवा के अफसरों के लिए खुन्नस पाले रहते हैं. निर्माताओं को संघ लोक सेवा आयोग से नियुक्ति पाए प्रसारण अधिकारी एकदम नहीं सुहाते.

इन प्रसार माध्यमों की पूरी जांच-पड़ताल करने वाली आकाश भारती रपट के अनुसार, "आकाशवाणी की आजादी तथा स्वायत्तता तो कुछ हद तक इंजीनियरों और कार्यक्रम बनाने वालों, कार्यक्रम तय करने वाले लोगों तथा कलाकारों वगैरह के आपसी झगड़ों के कारण ही साल दर साल खत्म होती गई. इन झगड़ों के कारण हस्तक्षेप का अच्छा मौका हाथ लगा. यदि यही सब चलता रहा तो स्वायत्तता निष्फल साबित हो सकती है."

रंगमंच और टीवी निर्देशक एम.के. रैना नाराजगी से कहते हैं, "मैं या कोई और रचनाकार आखिर दूरदर्शन में किससे बात करे?" वे कार्यक्रमों के सार-संक्षेप की पड़ताल करने वाले उप-कार्यक्रम नियंत्रक की कुशलता पर उंगली उठाते हैं. उनका कहना है, "वह शख्स अनपढ़ है और पूरी तरह सांप्रदायिक—आप इन्हीं लोगों को स्वायत्तता देने जा रहे हैं. वे स्वायत्तता के बारे में जानते ही क्या हैं?"

सरकार का कहना है कि वह इन 35,000 लोगों के लिए कोई और काम ढूंढ़ने को तैयार है. नए निगम के पास हर कर्मचारी के कामकाज की समीक्षा करने और संतोषजनक न पाए जाने पर उसे न रखने का विकल्प होगा. लेकिन आखिर ये लोग जा कहां सकते हैं? दूरदर्शन के महानिदेशक शिव शर्मा कहते हैं, "हम प्रसारण अधिकारी हैं. वे हमारा तबादला भारतीय खाद्य निगम में नहीं कर सकते."

जाहिर है, इस हालत में नया निगम कुछ साल तक वह सब नहीं कर पाएगा जिसके लिए उसका गठन होगा. कम-से-कम इन कुख्यात प्रसार माध्यमों में विश्वसनीयता की चमक नहीं आ जाती, गाड़ी ठीक से नहीं चल पाएगी. जैसा कि रमेश शर्मा कहते हैं, "जंग तो अभी शुरू हुई है." बहरहाल इस स्वायत्तता का स्वाद तो आखिरकार देखने और सुनने के बाद ही चखा जाएगा. **—डेविड देवदास**

एकाधिकार बनाम निजीकरण

"निगम कितना ही स्वायत्त क्यों न हो, एकाधिकार तो रहेगा ही"

जलबाला वैद्य
रंगमंच अभिनेत्री

"व्यावसायिक चैनल बकवास कार्यक्रम देते हैं. यह तो बहुत बुरा होगा"

बी.जी. वर्गीज
मीडिया विशेषज्ञ

सभी फोटो: श्याम

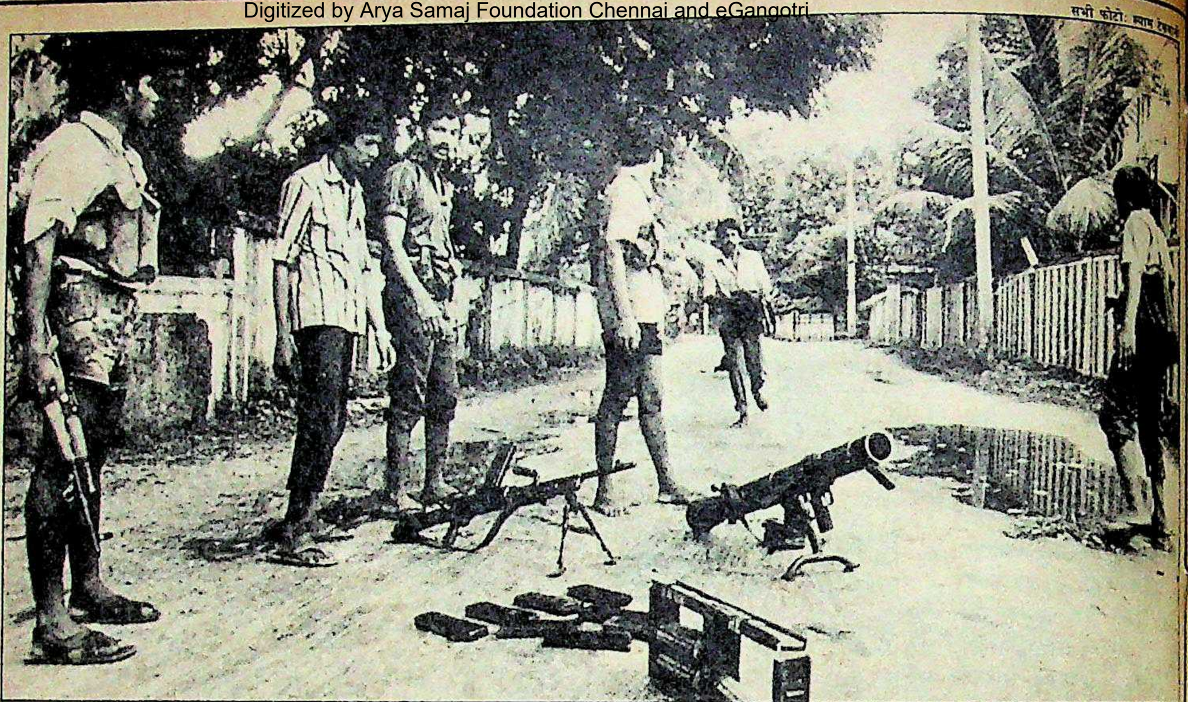

जाफना में मुक्ति चीते: दबदबा कायम

श्रीलंका

शांति अभी कोसों दूर

भारतीय शांति सेना की वापसी के चलते तमिल चीते हावी

नव वर्ष की पूर्व संध्या पर कोलंबो के गैले सीफेस सैरगाह में बंदूक की कानफोड़ आवाज की जगह सैलानियों के गीत और शोर गूंज रहे थे. कोलंबो के लोगों में इस नए उत्साह की वजह भी थी. जनता विमुक्ति पेरामुना (जेवीपी) के वरिष्ठ नेताओं का, जिनमें उसके कमांडर पियासिरी फरनैंडो उर्फ कीर्ति विजेबाहु और रोहन विजेवीरा शामिल हैं, श्रीलंकाई सेना ने सफाया कर दिया था. इस संगठन ने श्रीलंका के दक्षिणी हिस्से में संहार मचा दिया था. सेना के एक वरिष्ठ अधिकारी का कहना है कि जेवीपी पर 'केवल सैनिक तरीके से' ही काबू पाया गया है लेकिन लोगों का मानना है कि प्रेमदास सरकार ने दक्षिण की स्थिति पर पूरा नियंत्रण कर लिया है.

लेकिन श्रीलंका का उत्तरी हिस्सा नव वर्ष की पूर्व संध्या पर गोलियों से गूंजता रहा. इस क्षेत्र से भारतीय शांति सेना के हटने के कारण एलटीटीई के तमिल मुक्ति चीते एक बार फिर अपनी सैनिक ताकत दिखाने की प्रक्रिया में लग गए. नतीजा: अंपारा, बट्टीकलोआ और मध्य क्षेत्र के चार जिलों में मुक्ति चीतों और उनके विरोधी तमिल नेशनल आर्मी (टीएनए) के बीच घमासान लड़ाई.

लेकिन मुक्ति चीतों को अब अपनी बंदूक की ताकत दिखाने में दिलचस्पी नहीं है जैसा कि ईलम की लड़ाई के शुरुआती दिनों में वे दिखा रहे थे. भारतीय शांति सेना के अभियान में बच निकलने और लड़ाई के मैदान में अपनी ताकत दिखा देने के बाद मुक्ति चीते अब अपनी प्रशासनिक कुशलता दिखाने को उत्सुक हैं. और जिन इलाकों से उन्होंने टीएनए को भगा दिया है, वहां अजीबोगरीब शांति दिखती है. अब बट्टीकलोआ और वावुनिया के लोगों का कहना है कि शांति स्थापित करने के मामले में एलटीटीई भारतीय शांति सेना से कहीं ज्यादा कारगर साबित हुई है.

फिर भी यह शांति क्षणिक ही है. उधर श्रीलंका सरकार मुक्ति चीतों से बातचीत कर रही है और इधर कहा जा रहा है कि भारतीय शांति सेना टीएनए को हथियारों से लैस कर रही है. प्रेमदास सरकार और मुक्ति चीते—दोनों ही भारत-श्रीलंका समझौते को दफनाने पर आमादा हैं, जबकि भारत सरकार को उम्मीद है टीएनए अपनी और समझौते की रक्षा के लिए पर्याप्त ताकत हासिल कर लेगी.

श्रीलंका में पुलिस का व्यवहार यदि

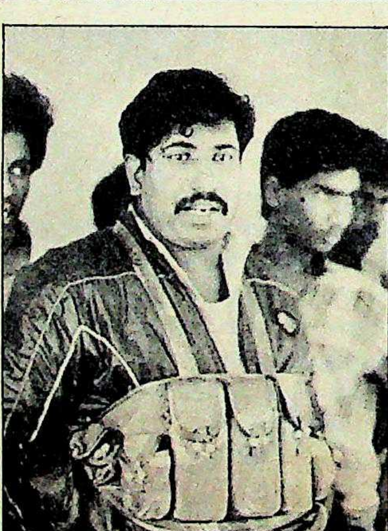

> **भा**रत के पिट्ठू हमारे आगे हथियार डाल दें और चुनाव में भाग लें. नहीं तो हम उनकी खबर लेंगे''
>
> **महात्या**
> *अध्यक्ष, पीएफएलटी*

भगवान न करे कभी ऐसा हो...

... मगर हुआ तो...

युनाइटेड इंडिया की शॉप कीपर पॉलिसी...

एहतियात के लिए.

ज़ाहिर है, आप यह तो नहीं सोचेंगे कि दूसरे दिन आपकी दुकान का ताला टूटा हुआ मिले और यह भी नहीं चाहेंगे कि शहर के दूसरे कोने में हो रहा दंगा-फ़साद आपकी दुकान तक पहुँचे. लेकिन होनी को कोई टाल सका है?

ठीक है, क़िस्मत को बदलना किसीके बस में नहीं, लेकिन इस अनहोनी का सामना किया जा सकता है युनाइटेड इंडिया की शॉपकीपर पॉलिसी अपनाकर. इस पॉलिसी में दुकान और दुकान की सभी चीज़ें शामिल हैं, आग, बाढ़, बिजली गिरने, भूकंप, विस्फोट, दंगे, हड़ताल, डाका, कर्मचारियों द्वारा धोखाधड़ी और अन्य आकस्मिक कारणों से हुआ नुकसान. साथ ही मकान, सामान, (लेन-देन या तिजोरी/कैश बॉक्स के), पैसे, बेचने लायक सामान,साज़ो-सामान, प्लेट ग्लास और ग्लो साइन्सभी. इस पॉलिसी के तहत् व्यक्तिगत दुर्घटना और तृतीय पक्ष का उत्तरदायित्व भी सम्मिलित है.

बीमा कराने का बहुत सीधा-सरल तरीक़ा है. युनाइटेड इंडिया की देशभर में 1000 शाखाएँ हैं. निकटतम केंद्र से संपर्क करें, आपको खुद ही पता चल जाएगा कि कितना आसान है हमारे द्वारा बीमा करवाना. तो अब दुर्घटना होने का इंतज़ार न करें. आज ही युनाइटेड इंडिया से बीमा करवाएँ... एहतियात के लिए.

युनाइटेड इंडिया इंश्योरन्स कंपनी लिमिटेड

(जनरल इंश्योरेन्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहयोगी संस्था.)
24, व्हाइट्स रोड, मद्रास-600 014.

UNITED INDIA
UNITED INDIA
WE CARE

LINTAS M UI 4 2517 HI

लौटती शांति सेना; और (नीचे) पेरुमल

भारत की बचाने की क्षमता पर भरोसा रखते हुए लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शामिल हुए ईपीआरएलएफ जैसे गुट अब जीत पाने की स्थिति में नहीं हैं

किसी बात का संकेत है तो वह यह कि टीएनए का अस्तित्व बचे रहने की संभावना बहुत कम है. पीपुल्स लिबरेशन आर्गेनाइजेशन ऑफ तमिल ईलम, ईलम पीपुल्स रिवोल्यूशनरी लिबरेशन फ्रंट और दो और संगठनों से बनी टीएनए ने आरोप लगाया है कि सुरक्षा बल उनके कार्यकर्ताओं पर हमले के लिए मुक्ति चीतों को सिर्फ साज-सामान नहीं दे रहे हैं बल्कि उनके अभियानों में भाग भी ले रहे हैं.

पर टीएनए के ठिकानों पर मुक्ति चीतों के हमले के तीन दिन बाद बट्टीकलोआ के एक पुलिस अधिकारी ने कहा, "यदि कोई लड़ना ही चाहता है तो लड़ता रहे, बेकार की लड़ाई में पुलिस क्यों टांग अड़ाए?" इस हमले में 100 से अधिक लोग मारे गए थे. इसी पुलिस अधिकारी के अनुसार, मुक्ति चीतों ने पुलिस को हमले की पूर्व सूचना देते हुए उनसे 'चिंतित न होने' और थाने में बैठे रहने को कहा था. इस अधिकारी ने माना कि उन्हें लड़ाई में हस्तक्षेप न करने के लिए कोलंबो से आदेश मिले हुए हैं.

मुक्ति चीतों ने उत्तर में वस्तुतः प्रशासन पर कब्जा कर लिया है और पुलिस अधिकारी इस बात से नाराज हैं कि किसी अभियान पर जाने के पहले उन्हें मुक्ति चीतों के स्थानीय नेता को सूचित करना होगा. एक अधिकारी ने कहा, "इस बारे में हमें जल्दी ही कुछ करना होगा. अंततोगत्वा कानून और व्यवस्था की जिम्मेदारी हमारे ऊपर ही छोड़ दी जानी चाहिए."

कानून अपने हाथ में लेना मुक्ति चीतों के लिए कोई नई बात नहीं है. लेकिन इस बार सरकार के साथ समझौते की अपनी कोशिश में ये ईमानदार दिखते हैं. एलटीटीई के उपनेता और उसकी नवगठित राजनैतिक पार्टी पीपुल्स फ्रंट ऑफ लिबरेशन टाइगर्स (पीएफएलटी) के अध्यक्ष गोपाल स्वामी 'महात्या' महेंद्र राजा ने वावुनिया जिले में पत्रकारों के एक दल को यही बताने की कोशिश की थी. वन्नी के जंगल में स्थित अपने अड्डे से दो साल में पहली बार बाहर आने वाले इस 34 वर्षीय बागी नेता के अनुसार "ईलम की अपनी मांग छोड़ने के लिए यह सही समय नहीं है." महात्या ने अपने विरोधी संगठनों को चेतावनी दी, "वे हमारे सामने हथियार डाल दें और चुनाव में भाग लें. नहीं तो हम शांति सेना की तरह उनकी भी खबर लेंगे."

लेकिन कथनी से करनी मुश्किल होती है. हथियारों से लैस टीएनए मुक्ति चीतों के खिलाफ जबरदस्त छापामार लड़ाई छेड़ने की क्षमता रखती है. उत्तर के तमिल टीएनए की इसी ताकत से डर रहे हैं. बट्टीकलोआ के एक अवकाशप्राप्त स्कूल शिक्षक ने कहा, "मुक्ति चीतों का व्यवहार दूसरे उग्रवादियों से कहीं ज्यादा अच्छा है. लेकिन हम नहीं चाहते कि समाज में कोई व्यक्ति हथियार लेकर रहे."

मुक्ति चीतों द्वारा ईलम की मांग न छोड़ने और हथियार न डालने से बहुसंख्यक सिंहली समुदाय में भी उनके इरादों के प्रति संदेह पुख्ता होता जा रहा है. सो, कोई ताज्जुब नहीं कि वरिष्ठ सैनिक अधिकारियों ने सुरक्षा बलों के प्रति मुक्ति चीतों के 'हेकड़ी भरे रवैए', द्वीप को भारतीय शांति सेना से मुक्त कराने के उनके दावों और टीएनए से जब्त हथियारों को न सौंपने पर चिंता जताई है.

प्रेमदास सरकार मुक्ति चीतों से जिस तरह हाथ मिला रही है, उसके कारण भारत-श्रीलंका समझौते का समर्थन करने वाले ईलम पीपुल्स रिवोल्यूशनरी लिबरेशन फ्रंट जैसे संगठन आज अपने को असहाय पा रहे हैं. मसलन, पूर्वी प्रांत के मुख्यमंत्री ए. वरदराज पेरूमल जब भारत की लाइन पर चलने लगे तो वे राष्ट्रपति प्रेमदास की नजर से गिर गए. इसी कारण श्रीलंका सरकार ने तमिलों को सत्ता हस्तांतरित नहीं की.

राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार के पास यह अच्छा मौका है कि राजीव गांधी सरकार के मत्थे सारा दोष मढ़ते हुए वह श्रीलंका से अपने हाथ झाड़ ले. लेकिन ढेर सारे सकारात्मक पहलुओं वाला समझौता अभी भी बेकार नहीं हुआ है और चतुराईपूर्ण कूटनीति से इसमें फिर से जान फूंकी जा सकती है.

समझौते को पुनर्जीवित करने की कोशिशें भले ही की जाएं लेकिन उत्तर के तमिलों को युद्ध के अपशकुनी बादलों में से राहत की कोई किरण फूटती नहीं दिख रही. वावुनिया जिले के चेट्टीकलम में चाय की दुकान चलाने वाले राजरत्न ने कहा, "हम अभी भी दहशत में जी रहे हैं." 50 वर्षीय एन. पोन्निया ने कहा, "मुसलकुट्टी में आपस में लड़ रहे तमिल गुटों ने जब हमारी झोंपड़ियों पर गोले बरसाए तो मैं अपने छोटे बच्चे को छाती से चिपकाकर घंटों जमीन पर लेटा रहा." गांव के दूसरे शरणार्थी ने कहा, "हम चाहते हैं कि हमें अकेला छोड़ दिया जाए." उत्तरी प्रांत के सब लोग यही चाहते हैं.

लेकिन ऐसे आसार नहीं दिखते—कम-से-कम कुछ समय तक तो नहीं ही.

—पी.जयराम, कोलंबो में

शांति सेना;
चे) पेरुमल

धी सरकार के
ह श्रीलंका से
न ढेर सारे
मझौता अभी
र चतुराईपूर्ण
ान फूंकी जा

करने की
किन उत्तर के
बादलों में से
हीं दिख रही
में चाय की
ने कहा, "हम
." 50 वर्षों
कुट्टी में आपने
जब हमारी
तो मैं अपने
पकाकर घंटों
ांव के दूसरे
ति हैं कि हमें
त्तरी प्रांत के

दिखते—का
ीं ही.
राम, कोलंबो में

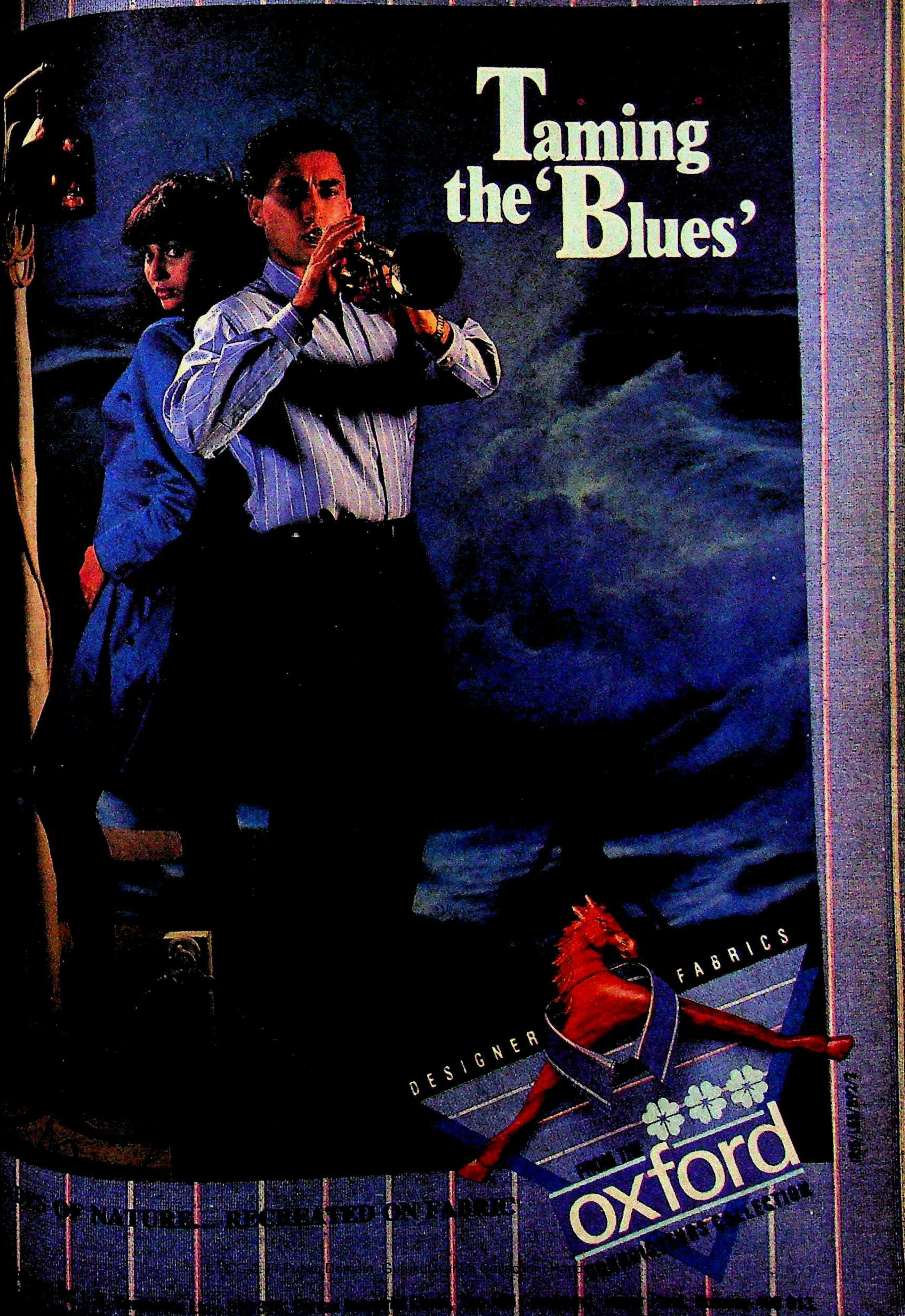
Taming the 'Blues'
DESIGNER FABRICS
FROM THE
oxford
DESIGNER'S COLLECTION
OF NATURE... RECREATED ON FABRIC

महाभारत

अतीत का मिलन वर्तमान से

इस धारावाहिक के जरिए महाकाव्य के पात्र सजीव हो उठे

हस्तिनापुर के राजा भरत के राज दरबार का दृश्य है, जहां वे अपने उत्तराधिकारी के नाम की घोषणा करेंगे. दरबारी सांस रोके भावी सम्राट का नाम सुनने को उत्सुक हैं. समय भी थम गया लगता है. उत्तराधिकारी के चयन को लेकर एक बार राजा भी दुविधा में पड़ गए थे लेकिन एक ऋषि ने उनकी दुविधा दूर की. राजा का अधिकारी उनके उत्तराधिकारी की घोषणा करता है, दरबारी भौंचक रह जाते हैं, क्योंकि भरत के नौ बेटों को छोड़ एक सामान्य आदमी—भूमन्यु को हस्तिनापुर का सम्राट बनाया जाता है. भरत घोषणा करते हैं. "राज करने का अधिकार कर्म से मिला करता है, जन्म से नहीं." और इस तरह भारतभूमि पर लोकतंत्र का बीजारोपण होता है.

देश की मौजूदा राजनीति पर इस करारे व्यंग्य के साथ हिंदी फिल्मों के दिग्गज बल्देवराज चोपड़ा ने 91 प्रकरणों वाले धारावाहिक 'महाभारत' को छोटे परदे पर उतारा. पहले ही प्रकरण से दर्शक इससे ऐसे बंधे कि बंधते ही गए. वेदव्यास के 8,000 श्लोकों वाले मूल महाभारत में—जिसमें कालांतर में 92,000 श्लोक और जुड़े—राजा भरत का प्रसंग नहीं है. लेकिन इसी प्रसंग के जरिए चोपड़ा ने सत्ता की वैधता के मुद्दे पर लोगों का ध्यान केंद्रित किया. बाद के प्रकरणों में भी पात्रों के गूढ़ दार्शनिक संवादों और अदृश्य सूत्रधार—समय—की व्याख्या के माध्यम से यह मुद्दा हावी रहा.

राज परिवार की कलह और सत्ता संघर्ष पर केंद्रित इस धारावाहिक ने अक्तूबर 1988 से इतवार की हर सुबह दर्शकों को टीवी के आगे बैठने को मजबूर कर दिया है. धृतराष्ट्र के सौ बेटों—कौरवों और पांच पांडुपुत्रों के बीच हस्तिनापुर के सिंहासन के लिए संघर्ष चलता है. हस्तिनापुर का विभाजन भी इसे रोक नहीं पाता. शांतिप्रिय पांडव सुलह कर पिछला वैर भुलाने को राजी हैं लेकिन कुटिल मामा शकुनि के उकसाए कौरव टस से मस नहीं होते. लिहाजा इतिहास का सबसे विनाशकारी युद्ध—महाभारत होता है जिसमें श्रीकृष्ण के सहयोग से लड़ रहे पांडव आखिर जीत जाते हैं.

अच्छाई और बुराई के संघर्ष पर केंद्रित यह धारावाहिक देश का सबसे लोकप्रिय धारावाहिक बन चुका है, जिसके दर्शकों की संख्या 91 फीसदी आंकी गई है. ऐसी सफलता का कारण सिर्फ यही नहीं है कि इसके पात्रों का परिचय हम बचपन में अपनी दादी-नानी से पा चुके हैं, बल्कि यह भी है कि इसे इस तरह पेश किया गया है कि यह एक सामयिक घटनाक्रम से जुड़ा हुआ लगे. यह धारावाहिक बकवास, या एकरस या त्मकता के लिहाज से कमजोर लग सकता मगर इसका कोई एक प्रकरण देख तो लगेगा कि यह किसी आम परिवार की दैनंदिन कहानी का ही पन्ना हो. इस सबका बड़ा श्रेय उर्दू हिंदी के विख्यात साहित्यकार और पटकथा-संवाद लेखक डॉ. राही मासूम को जाता है जिन्होंने बड़ी मेहनत और से इस महाकथा को आज के संदर्भ प्रासंगिक बनाया है.

रज़ा कहते हैं, "यदि इसे प्रासंगिक का फैसला न किया जाता तो मैं यह लिखने के लिए कभी राजी नहीं होता इसकी सामयिकता को ही किया है." पूरे धारावहिक में कीय एकालाप, आंसुओं का और अच्छाई और बुराई में द्वंद्व इसे हर तरह से आज परिस्थितियों के अनुकूल और दर्शक के मानस को कर रख देता है.

द्रौपदी के चीरहरण वाले को ही लें. सब कुछ हार बाद जुए का एक दांव लिए धर्मराज युधिष्ठिर पत्नी को दांव पर अक्षम्य अपराध कर बैठते हैं. यह दांव भी वे हार जाते उनका लालची भाई दुर्योधन वस्त्रहरण का आदेश देता है. बाद द्रौपदी ने जो सवाल दर्शकों को झकझोर देते हैं. से पूछती है, "पहले आप हारे? मुझे या खुद को? पति को पत्नी को जुए में हक है? पत्नी कोई सामग्री संपत्ति?" वह धृतराष्ट्र और में मौजूद दूसरे बुजुर्गों से भी है कि क्या वे अपनी कुलवधू उनकी प्रजा का ही एक अंग इस तरह अपमानित होते देख हैं? कहने की जरूरत लाखों महिलाओं के दिल पर दहल उठे.

देश की वर्तमान

सामान्यतः हर घर में एक वृद्ध व्यक्ति होता है—हताश, एक कोने में बैठा कुढ़ने वाला. इसकी बातें सुनते सब हैं लेकिन मानता कोई नहीं"

राही मासूम रज़ा, भीष्म के चरित्र पर

हेमंत पीठवा

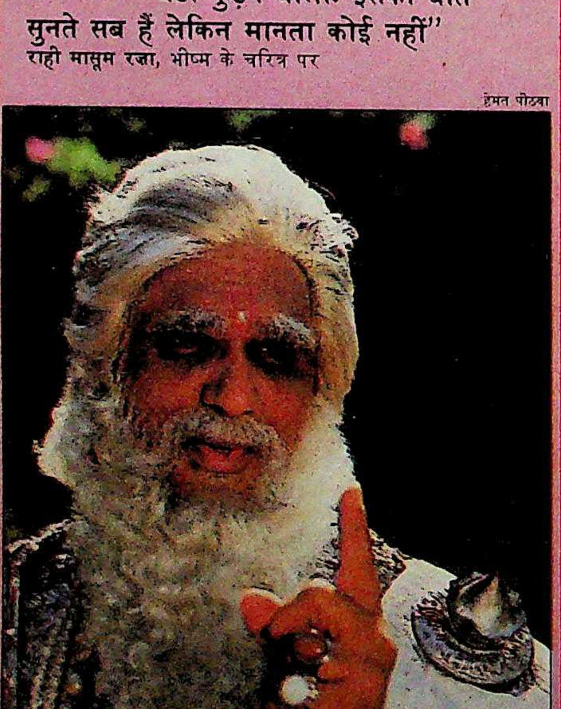

चीरहरण के समय हस्तिनापुर राजदरबार में मौजूद सभी लोगों को फटकार लगाती द्रौपदी

"रामायण की सीता की तरह द्रौपदी चुपचाप सहते जाने में विश्वास नहीं करती. एक ओर वह पति के प्रति निष्ठावान है मगर दूसरी ओर उसके खिलाफ विद्रोह भी कर सकती है"

रूपा गांगुली, द्रौपदी के चरित्र पर

वाले तो ढेरों प्रसंग हैं. अपने महामंत्री और भाई विदुर पर हमेशा का पक्ष लेने का आरोप उन्हें पांडवों के ही साथ रहने को कहते हैं. विदुर पड़ते हैं लेकिन इस खबर से भीष्म पितामह धृतराष्ट्र लताड़ते हैं कि उन्होंने उसी व्यक्ति को निकाल दिया उसमें सच कहने का साहस था." इस पर धृतराष्ट्र करते हैं, "तातश्री, वह सवाल पूछता था, जिनका मेरे जवाब नहीं होता." आज कारिता भरी राजनीति की अच्छी व्याख्या भला और हो सकती है.

और प्रकरण में भीष्म धृतराष्ट्र पर दुर्योधन के का खिलौना बनने, पुत्र व के हित के लिए देशहित करने का आरोप लगाते का क्षय निकट होता उस पर फल आने लगते तुम्हारी कुटिल राज- का फल है." चोपड़ा बताते हैं, कहा जाता है कि महा- में जो है, वह भारत में है, भारत में जो है, वह महाभारत महज कथन नहीं बल्कि सत्य है." इंका नेता एन.के. पी. साल्वे के अनुसार, "इसकी सबसे बड़ी देन इसकी प्रासंगिकता ही है."

चोपड़ा के योजना और शोध कार्य में व्यस्त रहने के कारण निर्देशन का दायित्व उनके 42 वर्षीय पुत्र रवि चोपड़ा ने संभाला हुआ है. उनका मानना है कि "इस धारावाहिक की लोकप्रियता अगर धर्म, जाति और उम्र के बंधनों को पार कर गई है तो इसकी एक वजह यह है कि इसकी पारिवारिक कलह का कारण संपत्ति है जो आज भी उतना ही सच है, जितना तब था. फिर इसमें ऐसे कोई हालात नहीं दिखाए गए, जिनका सामना आम आदमी को न करना पड़ता हो." रज़ा भीष्म के चरित्र का उदाहरण देते कहते हैं, "हर घर में सामान्यतः एक वृद्ध व्यक्ति होता ही है. हताश, एक कोने में बैठा कुढ़ने वाला. इस वृद्ध की बातें सुनते सब हैं लेकिन मानता कोई भी नहीं." यही कारण है कि भीष्म की भूमिका निभाने वाले मुकेश खन्ना बेहद लोकप्रिय हो गए हैं.

रज़ा कहते हैं, "शकुनि को ही देखिए. कई परिवारों के दूर के ऐसे रिश्तेदार होते हैं जो परिवार के मामलों में दखल देते हैं और झगड़े के बीज बोते हैं." शकुनि की भूमिका निभाने वाले 25 वर्षीय गूफी पेंटल कहते हैं, "शकुनि आज

"शकुनि का चरित्र तो आज के नेताओं जैसा है—चालाक, लोभी और दुष्ट. वह तेज भी है जैसा कि उसकी साजिशों से पता चलता है"

गूफी पेंटल, शकुनि के चरित्र पर

हेमंत पीठवा

"महाभारत का यह बहुत ही स्वाभाविक पात्र है. आम पिता क्या उसके जैसा नहीं होता? आज अपनी संतान को आगे बढ़ाने की फिराक में कौन नहीं है?"

गिरिजा शंकर, धृतराष्ट्र के चरित्र पर

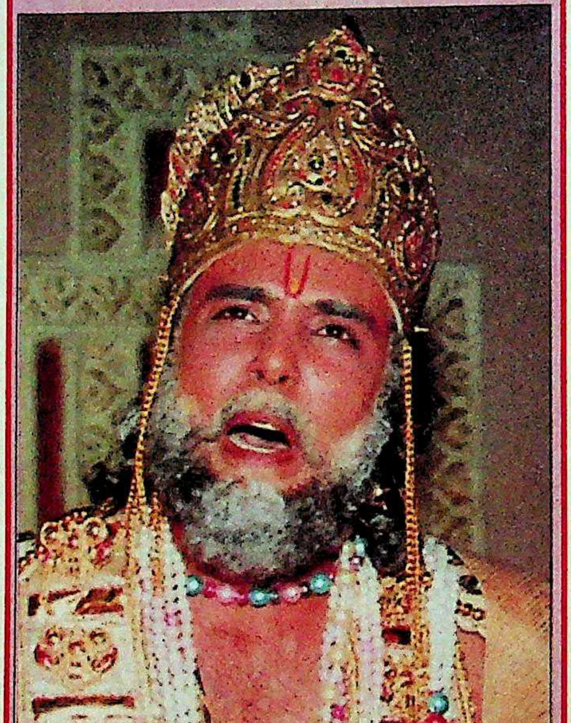

के नेताओं जैसा है—चालाक, लोभी और दुष्ट. वह तेज भी है जो उसकी साजिशों से साफ है." कृष्ण की भूमिका करने वाले 27 वर्षीय नीतीश भारद्वाज बताते हैं, "महाभारत में कृष्ण 'नारायण' कम और 'नर' अधिक हैं, शायद इसीलिए मुझे इज्जत कम और प्यार ज्यादा मिला है."

सत्ता की वैधता और महिलाओं के अधिकारों का मुद्दा उठाने के साथ-साथ यह धारावाहिक कुछ सामजिक संदेश भी देता चलता है—पर्यावरण संतुलन बनाए रखने की जरूरत (युधिष्ठिर अपने अनुजों से जंगल से उतनी ही लकड़ी काटने का आग्रह करते हैं, जितनी कि उन्हें जरूरत है); शासक के कर्तव्य (राजा भरत तीन कर्तव्य गिनाते हैं—प्रजा की रक्षा, सब को न्याय और सुयोग्य उत्तराधिकारी का चयन); शासक की हैसियत (विदुर महत्वाकांक्षी धृतराष्ट्र को बार-बार याद दिलाते हैं कि वे हस्तिनापुर सिंहासन के संरक्षक भर हैं और लोगों के प्रतिनिधि); और शासक की योग्यता (पांडु अनुज होते हुए भी राजा बनता है क्योंकि धृतराष्ट्र दृष्टिहीन थे).

धारावाहिक जातिप्रथा पर भी प्रहार करता है. युधिष्ठिर जब जलाशय से पानी पीने आते हैं तो यक्ष उनसे एक सवाल पूछता है: "ब्राह्मण कौन है" युधिष्ठिर जवाब देते हैं, "सच्चा ब्राह्मण कर्म से होता है, जन्म से नहीं." एक और प्रसंग में एक ही अपराध के लिए चार वर्णों के व्यक्तियों को अलग-अलग सजा सुनाई जाती है. युधिष्ठिर शूद्र को सबसे कम सजा देते हैं क्योंकि अशिक्षित होने के कारण वह अपने कर्तव्यों से परिचित नहीं. लेकिन क्षत्रिय को, जिसका दायित्व ही लोगों की रक्षा करना है, वे कड़ी सजा सुनाते हैं. यह कथा कन्याओं के अपने पति चुनने के अधिकार पर भी सटीक टिप्पणी करती है. एक प्रसंग के अनुसार काशी के राजा अपनी तीन बेटियों के स्वयंवर में हस्तिनापुर के राजा को निमंत्रण नहीं भेजते क्योंकि दोनों में पुरानी दुश्मनी है. इससे क्रोधित होकर भीष्म जबरन आते हैं और तीनों कन्याओं का अपहरण कर ले जाते हैं. अंबा किसी और को चाहती है और वह भीष्म से सवाल करती है, "स्त्री क्या भूमि का टुकड़ा है कि उसे जीता या हारा जाता है? या वह उपभोग की वस्तु है जिसका प्रयोग अपमान का बदला लेने के लिए किया जाए?"

कलकत्ता की 23 वर्षीय अभि-

बल्देवराज चोपड़ा

'महाभारत प्रासंगिक है'

टीवी सीरियल 'महाभारत' ने 74 वर्षीय बल्देवराज चोपड़ा को सफलता के नए शिखर पर पहुंचाया. इस महत्वाकांक्षी धारावाहिक के बारे में संवाददाता ***शर्मिला चंद्रा*** *ने उनसे बंबई के उनके दफ्तर में बातचीत की. कुछ अंश:*

- ***'महाभारत' बनाने का निर्णय क्या आपने 'रामायण' की धुआंधार सफलता को देखते हुए लिया?***

नहीं, महाभारत बनाने की योजना बहुत दिनों से थी. महाभारत की खूबसूरती और चिरंतन प्रासंगिकता ने मुझे इस चुनौती का सामना करने को मजबूर कर दिया.

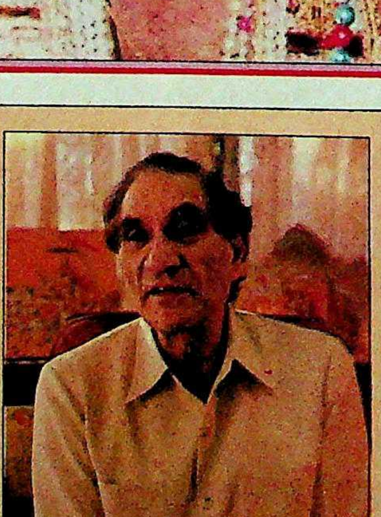

- ***आपने धारावाहिक को सामयिक पुट कैसे दिया?***

मेरी फिल्में सामाजिक या राजनैतिक तौर पर हमेशा प्रासंगिक रही हैं. 'महाभारत' आज इसलिए भी प्रासंगिक है कि यह नैतिक मूल्यों में ह्रास से संबंधित है.

- ***आपने कोई परिवर्तन किया?***

कुछ ही जगहों पर. हमने लोकतंत्र, महिलाओं के अधिकार और जातिप्रथा के मुद्दों को भी उभारा है.

- ***क्या हिंदू कट्टरवादियों ने एक मुसलमान द्वारा इस महाकाव्य की पटकथा लिखने पर आपत्ति उठाई?***

मैं धर्मनिरपेक्ष देश का धर्मनिरपेक्ष नागरिक हूं. डॉ. रज़ा ने जो बढ़िया काम किया है, मेरे लिए यही मायने रखता है. कट्टरवादियों की मैं परवाह नहीं करता.

- ***सूत्रधार के रूप में आपने समय को क्यों चुना?***

हमें एक बेहद जटिल कथा को दृश्यों में रूपांतरित करना था. हमारे सलाहकार दिवंगत पंडित नरेंद्र शर्मा को समय को सूत्रधार बनाने का अनोखा विचार सूझा.

- ***धारावाहिक पर कितनी लागत आई और आप कितना मुनाफा कमा रहे हैं?***

लागत और मुनाफा लगभग बराबर है.

महफ़िल की जान
यह नई शान!
McDowell's
DIPLOMAT
DISPOSABLE
ICE CUBE BAGS
The new smooth choice!
McDOWELL & CO. LTD.
McDowell's
DIPLOMAT
Ice Cube Bags

नेत्री रूपा गांगुली, जो द्रौपदी की भूमिका निभा रही हैं, कहती हैं, "रामायण की सीता की तरह द्रौपदी चुपचाप सहते जाने में विश्वास नहीं करती. वह अपने पति के प्रति निष्ठावान है मगर उसके खिलाफ विद्रोह भी कर सकती है." धृतराष्ट्र की भूमिका करने वाले गिरिजा शंकर कहते हैं, "महाभारत खुद में एक जीवन है. यह ऐसा ज्ञान है, जिसे हमें जरूर लेना चाहिए." धृतराष्ट्र के चरित्र के बारे में वे कहते हैं, "महाभारत का यह एक बहुत ही स्वाभाविक पात्र है. आम पिता क्या उसके जैसा नहीं होता? आज अपनी संतान को कौन आगे बढ़ाने की फिराक में नहीं है?"

शकुनि की भूमिका निभाने वाले गूफी पेंटल इस धारावाहिक के प्रोडक्शन डिजाइनर भी हैं. उनका मानना है कि इसे समसामयिक मोड़ देना आसान था क्योंकि "महाभारत के हर पात्र और हर घटना की अपनी महत्ता है, चरमावस्था है और उनके अपने निष्कर्ष हैं. उथल-पुथल, अंदरूनी लड़ाइयां, महत्वाकांक्षाओं का टकराव, व्यक्तिगत दुविधाएं, महल के भीतर के षड्यंत्र—सब कुछ संपूर्ण और सुपरिभाषित है."

"महाभारत में कृष्ण 'नारायण' कम और 'नर' अधिक हैं. शायद यही वजह है कि मुझे लोगों से इज्जत कम और प्यार ज्यादा मिला है"

नीतीश भारद्वाज, कृष्ण के चरित्र पर

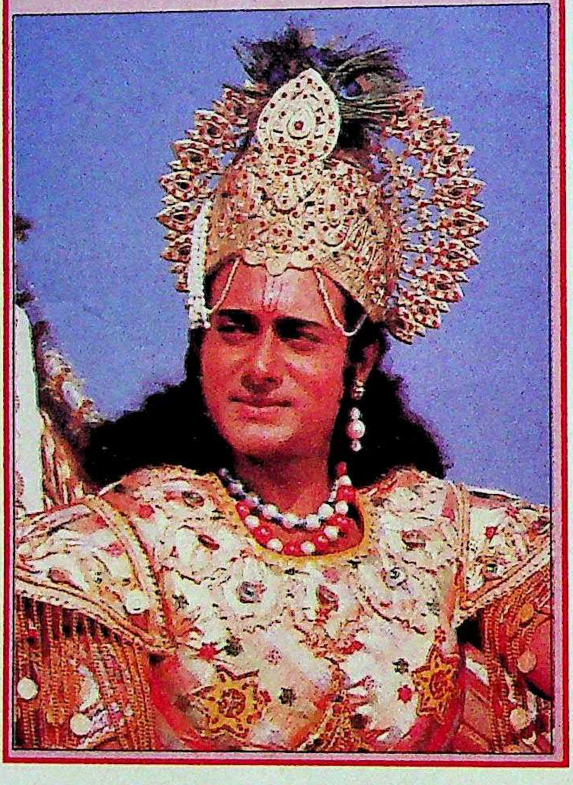

लेखक रज़ा ने आज के समय से पटकथा को तो जोड़ा ही है, उसमें नैतिकता के तत्व भी भरे हैं. रवि चोपड़ा कहते हैं, "जब लोग मूल्यों को भूल जाते हैं तब क्या होता है, महाभारत उसी की कहानी है."

यह महाकाव्य अपने बुनियादी दर्शन के कारण भी समाज के सभी वर्गों को प्रभावित करता है. यह जन्म और भाग्य को नकारते हुए कर्म पर जोर देता है. आज जबकि मूल्य खत्म हो रहे हैं, इस तरह की नैतिकताएं ढेर सारे लोगों को झकझोर देती हैं.

लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि महाभारत को अपनी महाकाव्यात्मक गुणवत्ता साबित करने के लिए चोपड़ा के स्पर्श की जरूरत थी. सेंट स्टीफंस कॉलेज के पी.एस. द्विवेदी जैसे इतिहासकारों का मानना है कि महाकाव्यों को उसी रूप में देखा जाना चाहिए जिस रूप में वे हैं. उनसे आधुनिक नतीजे नहीं निकाले जाने चाहिए. लेकिन इस धारावाहिक ने पांडवों और कौरवों को इस महाकाव्य के पृष्ठों और चित्रों से निकालकर लोगों तक पहुंचा दिया है. कल्पना की दुनिया से जमीन पर लाकर उन्हें वर्तमान से जोड़ दिया है. —शर्मिला

राही मासूम रज़ा

'मैंने तथ्य नहीं तोड़े-मरोड़े'

'महाभारत' की सफलता का बड़ा श्रेय इसके 62 वर्षीय पटकथा लेखक डॉ. राही मासूम रज़ा को है. संवाददाता ***शर्मिला चंद्रा*** *को उन्होंने बताया कि महाकाव्य के पात्रों की इतनी सूक्ष्म अभिव्यक्ति वे किस तरह कर पाए. बातचीत के अंश:*

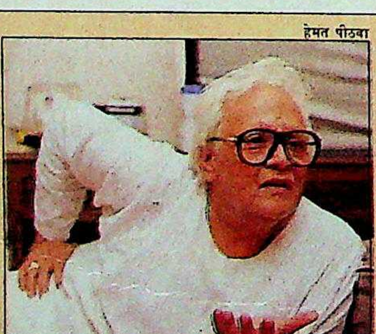

हेमंत पीठवा

- ***आप पर महाकाव्य को तोड़ने-मरोड़ने का आरोप है.***

वेदव्यास द्वारा रचित मूल महाभारत में सिर्फ आठ हजार श्लोक हैं. बाकी के 92,000 श्लोक औरों ने बाद में जोड़े. मुझ पर आरोप लगाने वाले मूल श्लोकों को बाद में जोड़े श्लोकों से अलग कर दें तो मैं क्षमा मांग लूंगा. दूरदर्शन की मांग को पूरा करने के लिए हमने कुछ फेरबदल किया है. लेकिन तथ्यों को विकृत करने का आरोप हम पर नहीं लग सकता.

- ***श्रीकृष्ण की सुदर्शन चक्र से उंगली कटने और दुर्योधन और कर्ण को नशे में धुत वाले प्रसंग क्यों दिखाए?***

बाल की खाल क्यों निकाल रही हैं? यह तो मूल कथा है ही कि श्रीकृष्ण की उंगली कट गई थी और द्रोपदी ने अपने वस्त्र का टुकड़ा फाड़कर उस पर बांध दिया. और दुर्योधन वाले प्रसंग में मैं कहूंगा कि ऐसे दुष्ट आदमी को नेक क्यों दिखाया जाए.

- ***महाकाव्य की आपकी व्याख्या से कोई असहमत भी हुआ है?***

आम तौर पर मेरा फैसला अंतिम होता है लेकिन विचार-विमर्श के लिए पूरी टीम स्वतंत्र है.

- ***कुछ कट्टर हिंदूवादियों ने आपको धमकी भरे पत्र लिखे?***

एक मुसलमान द्वारा पटकथा लिखे जाने पर जो विरोध और हंगामा खड़ा हुआ है, उससे मैं हैरान हूं. क्या मैं भारतीय नहीं? विश्व हिंदू परिषद ने मुझे पत्र लिखा था, जिसका मैंने जवाब दे दिया. बाद में उन्होंने क्षमायाचना की. कुछ धमकी भरे पत्र भी मिले हैं.

वाह ! कितना प्यारा है उपहार
सचमुच इसका नहीं जवाब
मन बार - बार खाने को मचले
ऐसा है मॉर्टन का स्वाद।

मॉर्टन स्वीट्स व टॉफियाँ — वर्षों से पूरे परिवार की मनपसन्द। स्वादिष्ट व पौष्टिक - इतने सारे जायकों में। चीनी, ग्लूकोज व क्रीमयुक्त शुद्ध दूध, के गुणों से भरपूर। चॉकलेट व कोकोनट कूकीज, रोज एक्लेयर्स, सुप्रीम, चॉकलेट तथा कोकोनट टॉफियाँ, लेक्टोबोनबोन्स तथा अन्य अनेक मज़ेदार स्वादों में उपलब्ध।
मुस्कुराहट भरा मॉर्टन का साथ।

MORTON
SWEETS

मॉर्टन कन्फैक्शनरी एण्ड मिल्क प्रॉडक्ट्स फैक्ट्री,
पो० आ० मढ़ौरा — ८४१४१८, जिला सारन, बिहार

MORTON स्वीट्स का लोगो एवं रैपर अँपर गैंगेज शूगर एंड इंडस्ट्रीज लि० का पंजीकृत व्यापार-चिन्ह है। किसी भी प्रकार से व्यापार- चिन्ह अधिकारों का उलंघन अभियोजनीय है।

कलर टी वी खरीदते समय पी आई पी,९९ चैनेल, कैट.... जैसे भड़कदार शब्दों के जाल में मत फंसिए।

जरा सोचकर देखिए कि आप कीमत किस चीज़ के लिए दे रहे हैं ? निश्चय ही अच्छी तस्वीर और बढ़िया आवाज़ के लिए।

तो ये दोनों ही गुण जिसमें सर्वोत्तम हों, जांच-परख कर वही लेना तो बुद्धिमानी है।

इन खूबियों के लिए नये सोनोडाइन क्वैन्टम रेन्ज पर आप पूरी तरह भरोसा कर सकते हैं। क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सोनोडाइन की विशेषज्ञता कई कदम आगे है।

अपने करीब के डीलर के यहाँ जाकर इसे जांचिए, परखिए । तब पैसे खर्च करके आपका टी वी खरीदना पूरी तरह सार्थक होगा।

क्वैन्टम रेन्ज की बिक्री-बाद देखभाल के लिए सारे देश में मौजूद है सर्वाधिक कार्यकुशल सर्विस नेटवर्क ।

३०४ आर : ब्लैक ५३ सें॰ मी॰ एफ एस टी पिक्चर ट्यूब, रिमोट सहित।
३०३ आर : ब्लैक ५१ सें॰ मी॰ पिक्चर ट्यूब, रिमोट सहित।
३०२ : ब्लैक ५१ सें॰ मी॰ पिक्चर ट्यूब।
३०१ : ५१ सें॰ मी॰ पिक्चर ट्यूब।

सभी अधिकृत डीलरों के पास उपलब्ध।

या काम में चमत्कार

नया

SONODYNE®
Quantum

एक अलग दृष्टिकोण

* डिज़ाइन और ट्रेडमार्क रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया गया है।

आरपार : गोपाल चतुर्वेदी

मिले सुर मेरा तुम्हारा

सर्दी के दिन मौसम के पूंजीवाद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और नए साल की पार्टियों के होते हैं. हजारों खर्च कर बेडौल जोड़े पांच सितारा होटल वातानुकूलित कक्ष में थिरकते हैं. अधिक- डाक्टर की सलाह पर सिर्फ विटामिन गोली खाते हैं. बाहर की झुग्गियों में लहर से आक्रांत लोग लकड़ी बटोरकर तापते और सूखी रोटी चबाते हैं. अब ाव की ऋतु तो है नहीं कि सत्ता से ासी नेता कृपा कर कंबल बांटें.

आर्थिक संपन्नता का एक लाजिमी लक्षण न्नर' का शौक है. इसी बहाने नए कपड़ों नुमाइश हो जाती है. मंच पर कलाकार बजाते हैं. रईस श्रोता एक दूसरे को नी विदेश यात्रा के किस्से ाते हैं. वह तो कला को ्साहन देना था तो चले , वरना फुरसत कहां है. धनपति अपने मेहमान को बताते हैं, "हमें तो मे शास्त्रीय संगीत का ौक है."

"अपना भी यही हाल है. में रविशंकर को सुना है पर तानपूरा बजाते हैं."

"चुनाव के बाद तो खूब होगा."

"कहां भाई! सुबह से बटोरकर नेता के घर की जय-जयकार करने पड़ता है. हम फिर में लौटेंगे."

"पर अभी तो आप लोग चुनाव हारे हैं. में कैसे आएंगे."

"ये लोग सरकार कैसे चलाएंगे. नकल हो सकती है क्या?"

"नकल कौन-सी?"

"हमारे नेता ने रूस-अमेरिका को या. श्रीलंका से सेना भेजकर दोस्ती नेपाल से संधि तोड़कर. टीवी पर रोज सुर मेरा तुम्हारा' बजता था जिससे वादी देश से जुड़ें. तब ये विरोधी और भ्रष्टाचार की बात करते थे. राष्ट्रीय सहमति चाहते हैं."

"मुल्क के महत्वपूर्ण मुद्दों पर अगर पार्टियां दलगत राजनीति से सोचें तो बुरा क्या है."

"वह आतंक के आगे घुटने टेकें और हम उनका समर्थन करें. उनका भरोसा क्या. पहले तोप सौदे की फाइलें सदन में रखने का वादा करते हैं और फिर मुकर जाते हैं. ये देश की अखंडता, एकता का क्या करेंगे."

नेता जी की फिक्र हमें वाजिब लगी. यदि कमीशन खाने वालों का भांडा फूटा तो अंतरराष्ट्रीय बिरादरी में मुल्क की बदनामी होगी. बिना कमीशन दिए हमें हथियार कौन देगा. राष्ट्रीय सुरक्षा का क्या होगा. नेता जी संगीत की सुर-ताल को बिसार सियासत पर उतर आए, "हमारे 'लीडर' ने संसद में विरोधी नेता के बतौर ढाई घंटे की तकरीर की, सुनी आपने?"

"आपके नेता जन्मजात विरोध के नेता लगते हैं. पता नहीं वह प्रधानमंत्री क्यों बन गए थे. पर हारने के बाद उनका वादा तो रचनात्मक विरोध का था."

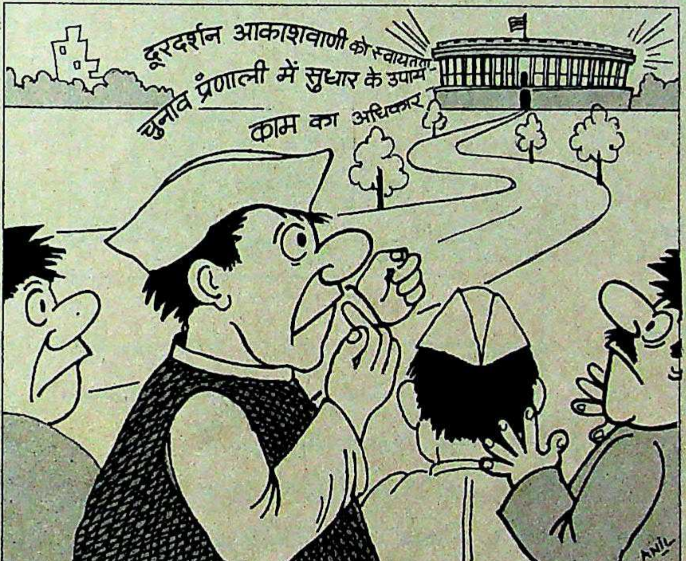
दूरदर्शन आकाशवाणी को स्वायत्तता
चुनाव प्रणाली में सुधार के उपाय
काम का अधिकार
ANIL

कार्टूनः अनिल शर्मा

"हमने 1971 में भी गरीबी हटाने का भी वादा किया था. उसके बाद से हम गरीब को ही हटाते रहे हैं."

संसद के पहले सत्र में सरकार के कारनामे देखकर हमें भी लगा कि नेता जी का सोच सही है. क्या जरूरी था कि प्रधानमंत्री को लोकपाल के घेरे में लाएं. वह करोड़ों का चुनींदा नुमाइंदा होता है. थोड़ा-बहुत भ्रष्टाचार भी न करे? इतनी जल्दी क्या थी प्रसार भारती विधेयक पेश करने की? दूरदर्शन और आकाशवाणी स्वायत्त हो गए तो भविष्य में इन्हें कोई निजी प्रचार भारती कैसे बनाएगा. और फिर, नए प्रधानमंत्री राष्ट्रीय सहमति और सहयोग चाहते हैं. इनसे सुर मिलाकर भला कौन अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारेगा.

आतंक की समस्या का हल निकल आया तो बरसों के किए-कराए पर पानी नहीं फिर जाएगा. फिर चाहेंगे कि विरोध के नेता सांप्रदायिक भावनाएं भी न उभारें. राम जन्मभूमि के मुद्दे पर भी सत्ता दल से सहयोग करें. कल कहेंगे कि इलेक्शन को धन और अपराधीकरण से अलग करो. क्या हमें चुनाव नहीं जीतना. हम तो खुश थे कि अल्पमत की सरकार अपने आप बैठ जाएगी पर यह तो दौड़ने लगी. कहीं बेरोजगारों को रोजगार की सफल गारंटी दे दी तो क्या होगा. हमारी कोशिश थी कि हमारे बाद कोई भी सरकार न चले. बजट का घाटा, घर-बाहर का उधार, हर स्तर पर भ्रष्टाचार, इनसे जूझना हंसी-खेल है क्या?

नेता जी को लगा कि उनका पूंजीपति भी कहीं सत्ता दल की ओर डिफेक्ट न कर जाए. उन्होंने उसे आश्वस्त किया, "सरकार नेता नहीं अफसर चलाते हैं. इन्होंने आते ही अफसरों के धड़ाधड़ तबादले किए हैं. वे सरकार चलने नहीं देंगे."

समारोह-स्थल के बाहर एक अफसर अपने साथी से शिकायत कर रहे थे—

"यार! पता नहीं सरकार हमें क्यों नहीं 'पनिश' करती है."

"आप जैसे कर्मठ और ईमानदार अफसर को कोई क्यों दंड देगा."

"यही तो अफसोस है. नए आका की नाराजगी से फॉरेन पोस्टिंग मिल जाती. नहीं तो लोक सेवा आयोग में लग लेते. बैठे ठाले नौकरी बढ़ जाती."

पर नई सरकार है कि सबसे सुर मिलाने में जुटी है. अस्सी का दशक रूस से लेकर चीन और पूर्वी यूरोप तक आजादी का दशक रहा है. इसी के चलते भारतीय लोकतंत्र में भी परिवर्तन का दौर आया है. अभी तक हर दल की अपनी ढफली और अपना राग था. जनता का मत क्या दलों का मन बदलेगा. यों सामान्य आदमी को उम्मीद है कि नब्बे के दशक में हर दल के 'मेरा तेरा' से अलग हटकर देश का 'हमारा' सुर बने और उभरेगा.

A year full of fun for your kids

The Target 1990 Diary has all the things children love. Jokes, magic tricks, puzzles, things to make'n do, amazing facts...and of course pages and pages for them to record the year.

Its perfect companion is the Target 1990 calendar with 12 rip-roaring cartoons from Ajit's Funny World in full colour.

Fill up the coupon below and gift them a year full of fun.

But hurry! As the Target Diary has been a sell-out for three years running. So book your order now to avoid disappointment.

TARGET
The Children's Magazine

I'd like to gift my child
☐ Target 1990 Diary—Rs.39.00
☐ Target 1990 Calendar—Rs.23.00
☐ Both—Rs.56 (at a saving of Rs.7!)
My cheque*/DD for Rs.......... in favour of **Living Media India Ltd.** is enclosed.

Name ____________

Address ____________

____

____________ Pin ________

Mail Coupon to:

Living Media India Ltd.
P.B.No.29, New Delhi-110001

*Please add **Rs.5** for outstation cheques, i.e. outside Delhi

इंडिया टुडे वर्ग पहेली—1

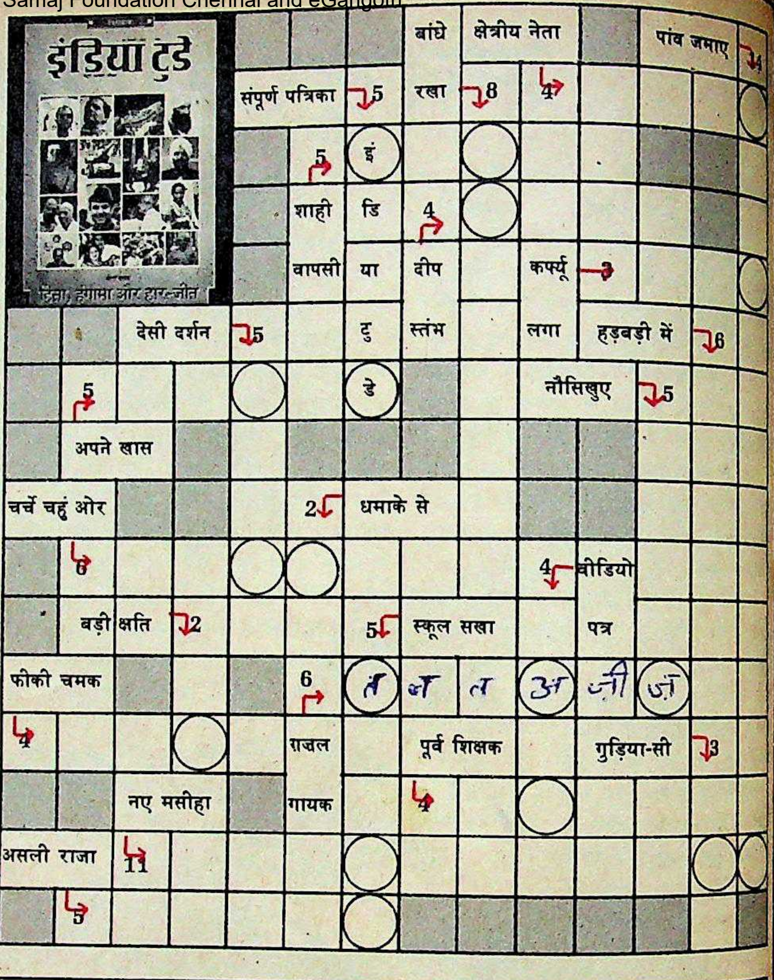
इंडिया टुडे
दिल्ली, हंगामा और हार-जीत
बांधे
क्षेत्रीय नेता
पांव जमाए
संपूर्ण पत्रिका 5
रखा 8
4
5
इं
शाही
डि
4
वापसी
या
दीप
कर्फ्यू 3
देसी दर्शन 5
टु
स्तंभ
लगा
हड़बड़ी में 6
5
डे
नौसिखुए 5
अपने खास
चर्चे चहुं ओर
2 धमाके से
6
4 वीडियो
बड़ी क्षति 2
5 स्कूल सखा
पत्र
फीकी चमक
6
त ज त अ जी ज
4
राजल
पूर्व शिक्षक
गुड़िया-सी 3
नए मसीहा
गायक
4
असली राजा
11
5

नाम ____________

पता ____________

____

पिन ____________

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-1, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली-110001

- *यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे, के 15 जनवरी 1990 के अंक पर आधारित है.
- *वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं. उदाहरण के लिए देखें संपूर्ण पत्रिका वाला संकेत.
- *तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- *तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- *वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- *मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- *सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- *लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

उत्तर के लिए देखें 28 फरवरी, 1990 का अंक

स्वच्छता

नया विचार, नया तरीका

सार्वजनिक स्थलों में सफाई रखने का कम खर्चीला प्रयोग

साफ-सुथरे सार्वजनिक शौचालय का उपयोग कीजिए और बस, 20 पैसे दीजिए. सुलभ इंटरनेशनल का यही नारा है. इस स्वयंसेवी संस्था ने देश भर में लगभग 50 लाख लोगों के लिए साफ-सुथरे शौचालयों की व्यवस्था की है.

इस संस्था का 'पैसा दो और उपयोग करो' का यह कार्यक्रम कारगर साबित होता रहा है. 532 शहरों में इसके 2,037 शौचालय हैं. 20 करोड़ रु. कारोबार वाली इस संस्था में आज 20,000 लोग काम करते हैं जिनमें अवकाशप्राप्त नौकरशाह, विज्ञानी, इंजीनियर और वास्तुशिल्पी शामिल हैं. इसे स्वच्छता की तकनीक के क्षेत्र में महत्वपूर्ण काम करने का सम्मान भी प्राप्त हुआ है.

सुलभ इंटरनेशनल के संस्थापक बिंदेश्वर पाठक कहते हैं, "पिछले 15 साल में हमने 390 शहरों के 5 लाख घरों को शौचालय मुहैया कराए हैं और 30 शहरों में सफाई कामगारों को मैला ढोने के घृणित काम से मुक्ति दिलाई है. फिलहाल सफाई की समस्याओं से जूझने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन, यूनिसेफ, यूएनडीपी और नोराड जैसी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं सुलभ की मदद कर रही हैं.

यह सब 1969 में शुरू हुआ, जब पाठक गांधी शताब्दी समारोह समिति में प्रचारक के रूप में शामिल हुए. पटना विश्वविद्यालय से समाज विज्ञान के स्नातक पाठक ने गांधी के संदेशों को फैलाने के लिए शहर-शहर, गांव-गांव का भ्रमण शुरू किया.

लेकिन प्रचार के तरीके से उनका जल्दी ही मोहभंग हो गया. वे समिति के 'भंगी मुक्ति प्रकोष्ठ' में शामिल हो गए. लेकिन बिना किसी ठोस परिवर्तन के समिति ने अपनी गतिविधियां समेट लीं.

हालांकि पाठक बेरोजगार थे, फिर भी उन्होंने अपना काम जारी रखा और सुलभ शौचालय संस्थान की नींव रखी. बाद में इसका नाम बदलकर सुलभ इंटरनेशनल कर दिया गया. पाठक याद करते हैं, "सुलभ को सफलता की राह नौकरशाही अड़चनों से होकर गुजरनी पड़ी थी." बिहार सरकार को सुलभ की अवधारणा को समझने में पूरे चार साल लगे और आखिरकार 1974 में उसने पटना में भंगी मुक्ति का काम सुलभ को सौंप दिया. उसके बाद से पाठक ने पीछे मुड़कर नहीं देखा.

हालांकि दुनिया भर में 19 तरह के शौचालय इस्तेमाल में लाए जा रहे हैं लेकिन भारत में व्यापक पैमाने पर इस्तेमाल के लिए सिर्फ तीन तरह के शौचालय तकनीकी रूप से उपयुक्त पाए गए. एक तरफ जहां सीवर प्रणाली और सेप्टिक टैंक ख़र्चीले हैं, वहीं दूसरी ओर सुलभ सबसे सस्ता है और प्रदूषण रहित भी.

एक सुलभ शौचालयः साफ और सस्ता

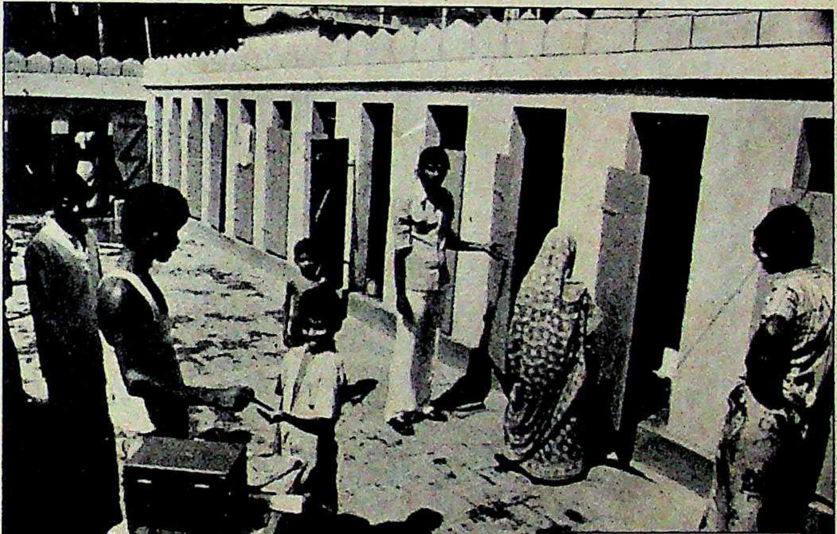

सीवर प्रणाली और सेप्टिक टैंक बहुत खर्चीले हैं जबकि सुलभ सबसे सस्ता और प्रदूषण रहित है

बिंदेश्वर पाठक

हाल ही में सुलभ ने फ्लश के काम के लिए पानी की कम मात्रा वाली टंकी बनाई है. इसमें 12 लीटर पानी आता है और एक बार फ्लश करने पर सिर्फ 2.5 लीटर पानी ही निकलता है. यह पानी की किल्लत वाले इलाकों में फायदे की विधि होगी. सुलभ के प्रमुख सलाहकार ए.के. राय कहते हैं, "मौजूदा फ्लश प्रणाली में थोड़े-से सुधार से ही बहुत सारा पानी बचाया जा सकता है.

तीसरी दुनिया के देशों के लिए इस अवधारणा की उपयुक्तता को देखते हुए विश्व बैंक ने दक्षिण-पूर्व अफ्रीका, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका के 19 देशों को इस तरह का शौचालय बनाने की सलाह दी है. पाठक कहते हैं, "अभी हम विदेशों में शौचालय नहीं बना रहे हैं लेकिन यदि भारत सरकार इस मामले में द्विपक्षीय परियोजनाएं तैयार करती है तो हम वहां सुलभ शौचालय बना सकते हैं."

आज सुलभ इंटरनेशनल एक प्रयोगशाला, एक कंप्यूटर विभाग और एक दस्तावेजीकरण विभाग से युक्त है और वह देश में सफाई की निराशाजनक स्थिति को बदलने की तैयारी में है.

इस संस्था ने यह दिखाने के लिए कि इसके शौचालय साफ-सुथरे और बदबू रहित होते हैं, पटना के गांधी मैदान स्थित अपना पंजीकृत दफ्तर इस तरह के 48 शौचालयों के बीच में बनाया है. और यहां रोजाना 4,000 लोग शौच करते हैं. हालांकि आम तौर पर दफ्तरों में तो शौचालय होते हैं पर यह अपने आप में एक अनोखा उदाहरण है कि किसी शौचालय में ही दफ्तर चलता है.

—सुधीरेंद्र शर्मा

ट्रायमॉल राहत दिलाए

'इस से पहले कि सरदर्द पागल कुत्ते का काटा बन जाए

सरदर्द होता है आपको, और आप झुंझलाते हैं, औरों पर.
परेशानी क्यों? अपने साथ-साथ दूसरों के
लिए सरदर्द क्यों बनें?
ट्रायमॉल का दुनिया भर में जाना-माना ज़ोरदार,
राहतदायक, भरोसेलायक ट्रिप्पल एक्शन फ़ार्म्यूला
आपको आराम दिलाए,
आपकी मुस्कान वापिस ले आए.

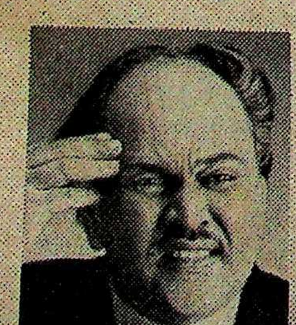

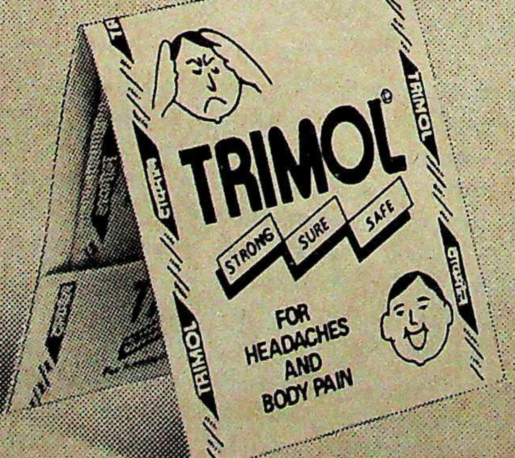
TRIMOL
STRONG
SURE
SAFE
FOR HEADACHES AND BODY PAIN

A product of ap ajanta pharma limited 21-31 Satyam, 318 Linking Road, Khar (West), Bombay 400 052.

गंगा सफाई अभियान

जलचरों का जौहर

सरीसृप की प्रतिभा का सही इस्तेमाल

गंगा नदी की धारा में बहते, फूले शव रोग और दहशत फैलाने की वजह से अरसे से एक गंभीर समस्या बने हुए हैं. बार-बार यही सवाल उठता है कि स्नान करने आए श्रद्धालुओं को इतना गंदा पानी किस तरह पवित्र कर सकता है. गंगा की 2,525 किमी लंबी धारा को साफ करने की 292 करोड़ रु. की भारी-भरकम परियोजना ज्यों-ज्यों मंथर गति से आगे बढ़ रही है, उत्तर प्रदेश सरकार और गंगा परियोजना निदेशालय (जीपीडी) ने जलती चिताओं में फेंके अधजले शवों को ठिकाने लगाने की नई तरकीब खोज ली है. इसके मुताबिक ये शव अब मांसाहारी कछुओं का चारा बनेंगे.

परियोजना के निदेशक एस.के. रंजीत सिंह बताते हैं, "शवों को ठिकाने लगाने का कोई तकनीकी हल चूंकि अभी तक नहीं ढूंढ़ा जा सका इसलिए उनसे छुटकारा पाने के लिए कछुओं का उपयोग सुरक्षित विकल्प लगा." गंगा के किनारे हालांकि 32 विद्युत शवगृह बनाए जा रहे हैं, जो बहुत कम समय में शवों को राख कर सकते हैं, लेकिन गंगा के घाट पर ही अंतिम संस्कार के पीछे जुड़ी धार्मिक भावना के चलते ये शायद ही उपयोगी साबित हों.

पर श्रद्धालु हिंदुओं को नहीं लगता कि अधजले शवों से मांस नोचते गिद्ध इस पवित्र नदी को अपवित्र कर सकते हैं. दो दशकों से बनारस के घाट पर दाह-संस्कार कराने वाले महंत सेवादास कहते हैं, "भगीरथ द्वारा स्वर्ग से उतारी इस नदी के अमृत-तुल्य जल के स्पर्श से सगर के साठ हजार बेटे जी उठे थे. इसीलिए हिंदू लोग मुर्दों के संस्कार के लिए यहीं आते हैं ताकि उनकी आत्मा को मोक्ष प्राप्त हो."

ऐसी आस्था के बावजूद कुकरैल और सारनाथ के फार्मों में ट्रिओनिक्स गेंगेटिक्स और लिसेमिस पंकटेटा ग्रेनोसा प्रजाति के 7,000 कछुए पाले जा रहे हैं. कछुओं की 200 प्रजातियों में से केवल छह मांसाहारी होते हैं. उक्त दोनों प्रजातियां भी इन्हीं में शुमार होती हैं. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान से पढ़ाई अधूरी छोड़ आए ध्रुवज्योति बसु, जो लखनऊ के नजदीक कुकरेल फार्म में इस परियोजना के अध्यक्ष हैं, इसके प्रति बहुत उत्साहित हैं. अल्प बजट में मामूली लागत से तैयार इन्क्यूबेटर में अंडे सेने की प्रक्रिया में वे कछुओं के प्रजनन की 60 फीसदी दर हासिल कर चुके हैं. प्राकृतिक वातावरण में तीन फीसदी दर को देखते हुए बसु के प्रयास निश्चय ही काबिले-तारीफ हैं. वे कहते हैं, "आदिवासियों से लेकर वातानुकूलित दफ्तरों में काम करने वाले नागरिकों तक सभी लोग कछुए से परिचित हैं लेकिन धीमी चाल के लिए विख्यात इस सरिसृप की इस 'प्रतिभा' को बहुत कम लोग जानते हैं."

गंगा में तैरते शवः प्रदूषण

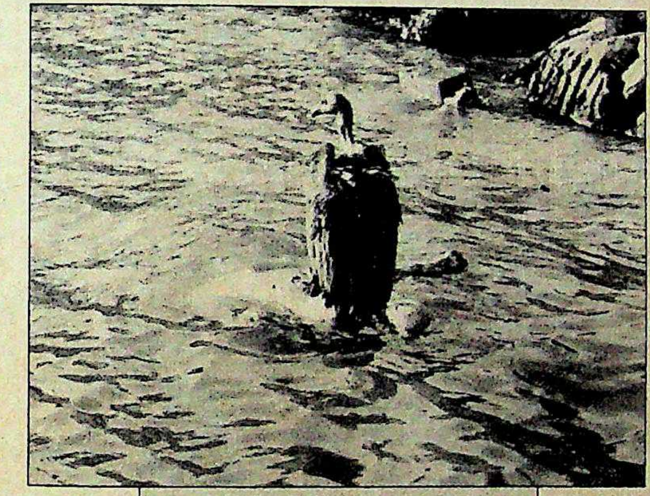

अब कछुओं को अगर इस भूमिका में खरा उतरना है तो मनुष्यों और पशुओं के शव खाने में उन्हें अपना कौशल भी दिखाना होगा. अकेले बनारस में ही हर साल 10,000 शव जलाए जाते हैं. एक प्रयोग में 35 किलो के भुने सुअर का मांस छह कछुओं ने छह से भी कम घंटों में चट कर दिया.

जीपीडी के एक निदेशक और कछुआ परियोजना के प्रभारी के. मोहन का कहना है, "जब तक गंगा के कुछ क्षेत्र अभ्यारण्य घोषित नहीं कर दिए जाते, कछुओं को नदी में उतारना घातक हो सकता है."

अब डर इस बात का है कि कछुओं ने अगर बदलाव के लिए गरम रक्त और मांस का स्वाद चखने के लिए डुबकी लगाते श्रद्धालुओं को काट खाया तो? लेकिन बसु इस डर को कतई निराधार बताते हैं.

नई तरकीब के मुताबिक अब कछुओं को मनुष्यों और पशुओं के शव खाने में अपना कौशल दिखाना होगा

परियोजना के अधिकारी इस सुस्त और जाहिल सरीसृप की सुरक्षा को लेकर भी चिंतित हैं. हालांकि इससे पहले भी इस दिशा में कानून बनाए गए हैं लेकिन जैसा कि रंजीत सिंह बताते हैं, "यदि कोई और तरीका कारगर साबित नहीं हुआ तो हमें लोगों से कहना पड़ेगा कि ये कोई मामूली जंतु नहीं बल्कि विष्णु और कच्छपों के देव कूर्म के साक्षात् दूसरे अवतार हैं."

फिर भी अधजले शव कछुओं को खिलाने की इस योजना के धार्मिक पहलू को लेकर काफी हो-हल्ला मचने की संभावना है. जब तक इस योजना को चलाने वाले लोग कछुए सरीखे ही धीमे मगर मजबूत कदम रखने को तैयार नहीं होते, योजना सफल नहीं हो पाएगी.

—सुधीरेंद्र शर्मा, लखनऊ में

केंचुआ

शशिप्रभा शास्त्री ने मानवीय संवेदनाओं और संवेगों का अपनी कृतियों में बखूबी वर्णन किया है. संबंधों का नाजुक ताना-बाना उनकी रचनाओं में खुर्दबीन से देखे दृश्य के समान स्पष्ट होकर उभरता है. प्रस्तुत कहानी सभ्य समाज की मानसिकता पर करारा व्यंग्य है.

एक अजीब तरह का एहसास हुआ था कल्याणी को. उसके होंठों ने फटाक से उचारा था 'केंचुआ!'

लड़का शब्द नहीं सुन पाया था, वह तो वहां उस चबूतरे पर सटे-सटे बैठे अपने भाई-बंदों के बीच घुसकर बैठने की कोशिश में लगा था. उसे अपनी कोशिश के साथ झगड़ते हुए छोड़कर कल्याणी आगे बढ़ गई थी, पर उसके होंठ अब भी बुदबुदा रहे थे, "लफंगे, गंदे, बेसऊर लोग सुबह-सुबह बीच सड़क पर, आकर बैठ जाते हैं, चांडाल कहीं के! भला उस रेले से बचकर कौन जा सकता है, पल्ले को जाओ, चाहे उल्ले को, टक्कर तो लगेगी ही. न जाने कहां-कहां से आ मरते हैं ये लोग. कंबख्तों को रुजगार चाहिए."

कल्याणी के होंठ लगातार हिल रहे थे. उस स्पर्श का गलाजत भरा एहसास मिट ही नहीं रहा था. 'कैसी रगड़ खाकर निकला था मरा'—होंठ बराबर बुदबुदा रहे थे. कहीं से चुल्लू भर पानी मिल जाए और वह अपनी कमर पर लिपटी साड़ी के उस हिस्से पर पानी का गीला हाथ फेर ले, शायद उस गिजगिजी से वह मुक्त हो सके जो उसे इतनी दूर चले आने पर भी चल-बिचल बनाए हुए थी.

* * *

नगर के बीचोबीच निर्मित घंटाघर जब आठ का घंटा ठनठनाता और सूरज की किरणें धरती पर बिछतीं तो कामगारों का वह रेला भी सड़क पर आ जुड़ता था. कमर का मुसा-सिमटा तहमद या मैला पाजामा या धूल भरी पैंट, देह पर जगह-जगह से फटी बनियान या कुर्ता, पैरों में पुरानी चमरौधे की भारी जूतियां या तस्मे वाले या बिना तस्मों के ही किरमिच के मैले जूते और कंधे पर टंगे या हाथ में थमे झोले में अलसवेरे ईंटों के चूल्हे पर ठेपी गई रोटियां, प्याज़ के कच्चे-गंठे और नमक-मिर्च.

शहर के हर हिस्से के जरूरतमंद शख्स को मजदूर तलाशने के लिए यहीं आना पड़ता था जहां यह भीड़ मौजूद रहती थी. पुताईगर, रंगपुतैए, मेमार, मिस्तरी, गिट्टी फोड़ने सामान ढोने वाले, नसैनी पर चढ़कर के तसले, पानी की बाल्टियां और मि चुनी हुई ईंटों के ढेर थमाने वाले. गर कि हर किस्म का मजदूर यहीं मिल था. मजदूर तलाशने वाले लोग साइ स्कूटर, मोटरसाइकिल, कार जैसे लेकर ज्यों ही पहुंचते, मजदूरों का झुंड चारों ओर घिर जाता था, "बाबू जी तरह का काम है?" "साहेब हम काम." जैसे जुमले उचारते मजदूर सा पड़ने के लिए उद्यत हो थे. साथ-साथ मजदूरों किए जाने का सिलसि शुरू हो जाता था. वह भी जल्दी ही निबट था, और तब वे इन वाहनों में बैठकर या अदृश्य हो जाते थे.

जिन मजदूरों को नहीं मिलता था, वे वाले अगले ग्राहक जार में खड़े रहते, सि खुजलाते, गप्पें मारते, मजाक करते, एक-दू उलझते, चपतियाते लोग डाकघर के मु के पास निर्मित आय चबूतरे पर खड़े लंबूतरे और हरे डाकबंबों के टिककर बैठ जाते. हालत में चिट्ठी डालने लोगों को खासी होती. तब वे या तो बैठे मजदूरों के सि उचककर ही अपनी बंबे में छोड़ते, या मजदूरों को दड़बड़ा देते, "भइया, तनिक तो दो, कोई भला चिट्ठी बंबे में छो कैसे!"

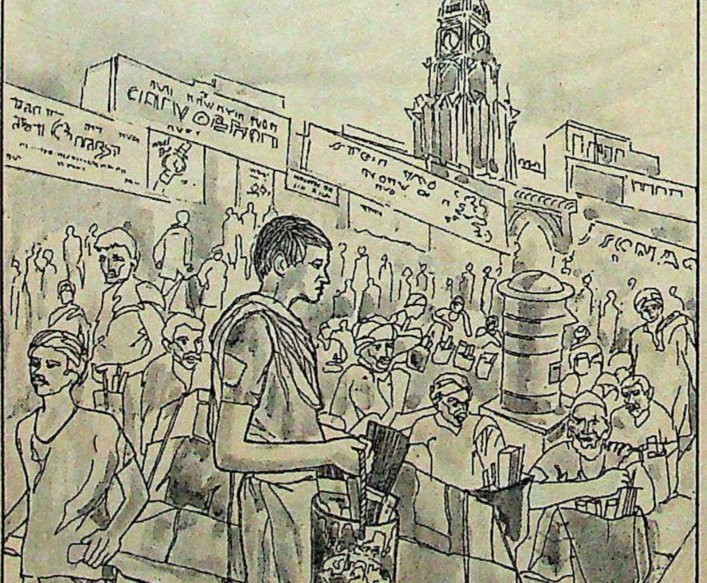

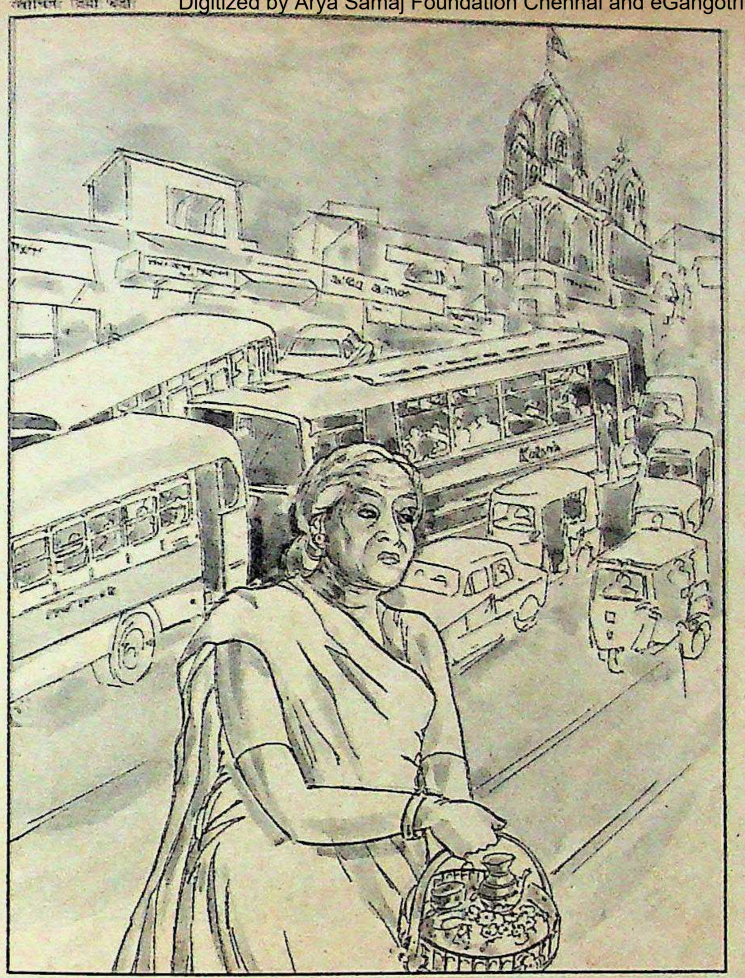

बाबू, तुम्हारे
हम छोड़ देंगे!"
सरकते हुए अपनी
अर्जित करते. पर
दूर से चलकर आया
डब्बे में खुद ही
चाहता.

कल्याणी की भिड़ंत
छोकरे से हुई थी जिसे
केंचुआ नाम दिया
-जैसा मरगिल्ला, फटी
कमर पर मैली लुंगी
कंधे पर टंगा चारखानी
—जो अपने साथियों
घुसकर बैठने का
कर रहा था.

कल्याणी को चिट्ठी
की जरूरत ही क्या
तो वह चिट्ठी-पत्री
ही कम थी. कभी
भी तो बेटे-पोते
डब्बे में छोड़ देते. पर
उसके चलते-चलते
पोते अभय ने ही
कर रहा था "दादी,
मंदिर जा रही हो न तो
में लेटरबक्स पड़ेगा,
मेरी यह चिट्ठी डाल
दोगी न?" और
पहले कल्याणी कोई
दे, वह पढ़ने के लिए वापस अपने
चला गया था. वह छोकरा इसी
में टकराया था.

* *

नहीं ही मिला था और गंदगी के
एहसास को लादे हुए कल्याणी बढ़ती
मंदिर अभी दूर था पर वह गंदा
था कि मिट ही नहीं रहा था.

क्या होगा? क्या इस गंदे एहसास को
ही वह पूजा करेगी?

करूं, लौट जाऊं और घर से नहा-
फिर आऊं?

भी क्या हो गया. आबादी बढ़
तो टकराहटें तो बढ़ेंगी ही. बचो,
हो? कहां जाओगे बचकर?
तो होती ही रहती हैं. कभी साथ
व्यक्ति आदमी-औरत के कपड़े छू
कोई भीड़ में चप्पल या सैंडिल
रख देता है, कभी सामने से आते
का ध्यान कहीं और, वह खुद कहीं
और फिर टकराहट. पर कमर पर की
ने तो भीतर तक गिजगिजाकर रख
गरम बदबूदार भभका-सा लगा
में.

तुम नहा-धोकर शीतल पाक देह लिए तुरंत जो बाहर निकली तो इसीलिए न!

कितने-कितने विचारों को लिए चल रही थी कल्याणी. मन दोलायमान—मंदिर जाऊं न जाऊं? आगे बढ़ूं न बढ़ूं?

चाल में कंपन. आगे-पीछे आते-जाते व्यक्ति और वाहनों से अचेत, अपने में डूबी-खोई हुई कल्याणी लपझप चली जा रही थी. विचारों की ऊहा में वह भूल ही गई थी कि मंदिर की गली में घुसने से पहले बीच की सड़क को पार करना होता है. एकाएक ध्यान जागा तो वह घूमी थी. अब चली ही चलूं. घर में एक बार घुसकर फिर वापस लौटने का झमेला, काम और आए-गयों से मिलना-मेटना, छुटकारा पाना मुश्किल ही होगा. सड़क पार करने के लिए उसने कदम बढ़ाया ही था कि तेजी से आते एक वाहन के झटके ने उसे पूरी तरह झनझना डाला. लुढ़कती देह में कुछ देर के लिए जैसे कोई चेतना ही न रही हो.

चेतना लौटी तो लगा पुराना एहसास न जाने कहां लुप्त हो गया है. एक दूसरी नई प्रकार की दबोच के एहसास ने उसे पूरी तरह ढांप लिया था. फुटपाथ पर उसे कौन ले आया? देह भर में एक विचित्र सिहरन, जैसे बिल्ली ने मुंह में दबोचकर अपने बच्चे को एक ओर रख दिया हो, या किसी क्रेन से उठकर वह वहां आई हो. पिंजरीली उंगलियों के समूचे स्पर्श के दबोच की विचित्र-सी अनुभूति.

"हम न उठा लेते तो मैया तुम तो गई ही थीं." थूथन-सा मुंह लटकाए छोटी-सी लुंगी पहने, कंधे पर गमछा टांगे वह खड़ा था.

"केंचुआ!" कल्याणी चीखी थी.

"केंचुआ!" उस समय छोकरे ने वह शब्द नहीं सुना था, अब सुना तो 'केंचुआ' कहकर वह हो-हो कर हंस पड़ा था.

"मैया, काम नहीं मिला तो हम इसी रस्ते से लौट रहे थे, तब ही—"

"काम नहीं मिला!" दिल की धड़कन अब भी सम पर नहीं लौटी थी.

"काम नहीं मिला? चल तू मेरे साथ चल, मैं तुझे काम दिलवाऊंगी, चल रे." कल्याणी के होंठों में डपट थी और ममत्व भी.

केंचुआ पूजा की डोलची थामे अब कल्याणी के पीछे-पीछे रेंग रहा था. डोलची की चीजें सड़क पर दौड़ते वाहनों के बीच कहीं दूर तितर-बितर हो चुकी थीं.

कल्याणी के होंठ लगातार हिल रहे थे. उस स्पर्श का गलाज़त भरा एहसास मिट ही नहीं रहा था. 'कैसी रगड़ खाकर निकला था मरा'—होंठ बराबर बुदबुदा रहे थे. कहीं से चुल्लू भर पानी मिल जाए और वह अपनी कमर पर लिपटी साड़ी के उस हिस्से पर पानी का गीला हाथ फेर ले...

कथा संग्रह

कड़वा स्वाद

अनुवाद से बिगड़ा अफसाना

नाम से धोखा मत खाइए. इस संग्रह में आपको मशहूर अरबी क्लासिक "अल्फ लैला" (हजार रातें) के एक हजार एक अफसाने पढ़ने को नहीं मिलेंगे. इस संग्रह में तो 'अल्फ लैला' की महज 64 रातों के अफसाने हैं. इसलिए इसका नाम अगर 'सहस्त्र रजनी चरित्र' के बजाए 'चतुष्षष्टि: रजनी चरित्र' होता तो बेहतर था. इन अफसानों की संख्या में हुई इस कटौती के लिए संपादक की सफाई है कि "प्रस्तुत संग्रह में केवल सर्वमान्य कहानियां दी गई हैं."

सहस्त्र रजनी चरित्र

सहस्त्र रजनी चरित्र
कथा संग्रह
सं. सरस्वती सरन कैफ
हिंदी प्रचारक संस्थान,
पिशाचमोचन, वाराणसी
कुल पृष्ठ: 462;
कीमत: 60 रु.

खैर, किस्सागोई की शैली में लिखी गई इन 'सर्वमान्य कहानियों' का एक अपना ही आकर्षण, एक अपना ही लुत्फ, एक अपना ही इतिहास है. कुल जमा कहानी एक ऐसे बादशाह की है जो किसी घटनाक्रम में यह मान बैठता है कि औरत बेवफा होती है. कैसी भी हो वह सिर्फ दगा ही देती है, और इसके बाद वह हर शाम एक लड़की से शादी करके अगली सुबह उसे मरवा देता है आखिर में मंत्री की बेटी उससे शादी करती है. वह बादशाह को हर रात एक कहानी सुनाती है और हर कहानी का अंत एक नई कहानी की शुरुआत होता है, जो अगली रात को सुनाई जाती है. और हर बार अगली कहानी सुनने के कौतूहल में बादशाह हर रोज उसकी मौत को टालता जाता है. हजार रातों तक हजार कहानियां सुनने के बाद बादशाह का हृदय परिवर्तन हो गया और उसने हर सुबह रानी को मरवा देने का नियम भी छोड़ दिया.

लेकिन प्रचारक ग्रंथावली परियोजना की इस पुस्तक में इन कहानियों का रसास्वादन कर पाना इतना आसान नहीं है. पूरी पुस्तक इतने बारीक टाइप में छापी गई है कि लगातार आंख गड़ाकर पढ़ सकने और सिरदर्द का जहमत मोल ले सकने की हिम्मत रखने वाले ही इन अफसानों का लुत्फ उठा सकते हैं.

और मामला सिर्फ इतना ही नहीं है. ये अफसाने आसानी से न पढ़े जा सकें इसके लिए अनुवादक ने भी कोई कसर नहीं छोड़ी है. इन अफसानों की रोचकता बनाए रखने के लिए अनुवाद में जिस प्रवाहमय भाषा का इस्तेमाल होना चाहिए था वह कहीं नहीं है. किस्सागोई के प्रवाह को उन्होंने जगह-जगह अनुवाद के हथौड़ों से ऊबड़-खाबड़ बना दिया है. फिर यह अरबी के 'अल्फ लैला' का अनुवाद है भी नहीं. यह पुस्तक तो उसके अंग्रेजी अनुवाद 'अरबियन नाइट्स' का 'छायानुवाद' है. कथित 'छायानुवाद' अंग्रेजी से हुआ है इसलिए अंग्रेजी से अनुवाद की जितनी गलतियां मुमकिन हो सकती हैं, इसमें हो गई हैं. मसलन: "नितांत वे दोनों चले..." या "किंतु मैं नितांत अकेला और द्रव्यहीन था." अगर यह छायानुवाद होता तो इस द्रव्यहीन की जगह किसी मुहावरे का इस्तेमाल होता. या जगह-जगह 'आश्चर्यकारी' जैसे अप्रचलित शब्दों का इस्तेमाल है. मगर इन गलतियों के लिए आप किसी को कोस भी नहीं सकते क्योंकि इस पुस्तक में अनुवादक का नाम ही नहीं दिया गया. सिर्फ संपादक का नाम छापा गया है. गड़बड़ियों के लिए संपादक को ही कोसा जा सकता है.

—हरजिंदर

राजनीति

इतिहास की बातें

सामाजिक-राजनैतिक आकलन

उत्तर भारत के कम्यूनिस्ट आंदोलन के अगुआ लोगों में गिने जाने वाले राम प्यारा सराफ की किताब '1947 उपरांत भारत का सामाजिक यथार्थ' पढ़ना इतिहास से गुजरने जैसा है. सिर्फ बातों के कहने भर के तरीके के अलावा कहीं से भी नहीं लगता कि यह लेखक कभी मार्क्सवादी (और फिर बाद के दौर में नक्सली आंदोलन का भी एक प्रमुख सदस्य) रहा होगा.

1947 उपरांत भारत का सामाजिक यथार्थ
लेखक: राम प्यारा सराफ
प्रकाशक: इंटरनेशनलिस्ट डेमोक्रेटिक पार्टी, सी-5,
वीपीसीआई क्वार्टर्स,
ढक्का, दिल्ली-9
कुल पृष्ठ: 127;
कीमत: 60 रु.

करीब सवा सौ पृष्ठों की इस किताब में आजाद भारत के लगभग हर पहलू को समेटा गया है. प्रामाणिक आंकड़े देकर अब तक की असफलताओं (साथ ही सफलताओं को भी) गिनाया गया है, राजनैतिक प्रणाली में इसके कारण देखने की कोशिश की गई है और आखिर में लोकतंत्रीकरण के कुछ ठोस सुझाव भी दिए गए हैं.

चालीस वर्षों से भी अधिक समय तक कम्युनिस्ट रहे सराफ ने इस दर्शन की सीमाओं का एहसास होते ही उससे बहुत हद तक मुंह मोड लिया. समता और लोकतंत्र के घनघोर समर्थक हो जाने के बाद भी उनमें कुछ मार्क्सवादी असर बाकी दिखता है. मार्क्स द्वारा धर्म को अफीम बताने की बात पर वे किस हद तक भरोसा करते हैं यह नहीं कहा जा सकता पर धर्म से परे की धर्मनिरपेक्षता निश्चित रूप से व्यावहारिक नहीं है.

गांधी के बारे में मूल्यांकन भी इसी कारण बहुत सही नहीं लगता. गांधी घोषित हिंदू थे. और ऐसे गांधी को 'दोषी' बताना और जिंदगी भर बाबाओं, जोगिनों और ज्योतिषियों के चक्कर में पड़े रहने वाली नेहरू मंडली को कांग्रेस में प्रगतिशील और धर्मनिरपेक्ष घोषित करना सही मूल्यांकन नहीं है. असलियत यही है कि शुद्ध हिंदू गांधी ने जातीय और धार्मिक भेदभाव के खिलाफ जितना काम किया उतना किसी भी एक आदमी ने नहीं किया है.

लेकिन सराफ ने नेहरू के मूल्यांकन में आम कम्युनिस्टों वाली गलती नहीं की. शासक संस्कृति में अनैतिकता लाने, आचरण की गड़बड़, लोकतांत्रिक संस्थाओं के अवमूल्यन, सरकार के चरित्र का जन-विरोधी हो जाना, छद्म गुटनिरपेक्षता और आर्थिक नीतियों की गड़बड़ी से पैदा वर्तमान बदहाली के लिए उन्होंने सिर्फ राजीव गांधी और इंदिरा गांधी को दोषी बताने की जगह नेहरू में इसका मूल देखा है.

सराफ की एक और 'गैर-कम्युनिस्ट' राय देश के सार्वजनिक क्षेत्र के बारे में है. जब आर्थिक प्रगति का मूल्यांकन करने के क्रम में वे सार्वजनिक क्षेत्र की चर्चा करते हैं तो लगता नहीं कि वे कम्युनिस्ट रहने के कारण व्यावहारिक गणित भूल गए हों. ऐसा भी नहीं कि उन्होंने निजी क्षेत्र की तरफदारी की हो. अमीर-गरीब के बढ़ते फासले पर चिंता जाहिर करके उन्होंने अपनी निष्ठा साफ कर दी है.

लेकिन भारत का नाम 'इंडिया' रखने, राष्ट्रीय प्रतीक चिह्न, राष्ट्रगीत, संस्कृत को राष्ट्रीय भाषा मानने पर आपत्ति और अंग्रेजी को कामकाज की भाषा रखने की वकालत सचमुच विवादास्पद है.

—अरविंद

BPL

25
YEARS
IN PURSUIT OF PERFECTION

बीपीएल का 25 वर्षों का परिश्रम ... आपके हर दिन को परिपूर्ण बनाने के लिए

25 YEARS IN PURSUIT OF PERFECTION

बीपीएल अपनी 25वीं इलेक्ट्रॉनिक जयंती मना रही है. प्रतिदिन अधिकाधिक इलेक्ट्रॉनिकमय जीवन के लिए कार्यरत.

आज बीपीएल 400 करोड़ रु. का समूह, जिसमें 4000 कर्मचारी, विभिन्न स्थानों पर 1,000,000 वर्ग फुट निर्मित फैक्टरी क्षेत्र, उपभोक्ता इलेक्ट्रॉनिक्स से लेकर व्यावसायिक इलेक्ट्रॉनिक्स तक के 6 उत्पाद समूह, 2500 से अधिक विक्रेता और देश भर में फैले बिक्री एवं सेवा केंद्र.

आज बीपीएल टीवी, वीसीआर, टू-इन-वन, इलेक्ट्रॉनिक पीएबीएक्स, संचार नेटवर्क, पुशबटन टेलीफोन, प्लेन पेपर कॉपियर, कम्प्यूटर, इलेक्ट्रोकॉर्डियोग्राफ, इंटेंसिव कॉरोनरी केयर यूनिट ..... आदि बनाती है और शीघ्र ही इसकी कॉर्डलेस टेलीफोन, राइस कुकर, माइक्रोवेव ओवन, डिश वाशर, वैक्यूम क्लीनर, वाशिंग मशीनें और रेफ्रिजरेटर बाजार में आने वाली हैं

सारे उत्पाद बीपीएल की क्वॉलिटी के मोहर के साथ. क्वॉलिटी जो कि महत्वपूर्ण यंत्रावयवों को अपने यहां बनाने और अनेक कड़े से कड़े परीक्षणों से विकसित हुई है ताकि आपको प्राप्त हों भरोसेमंद उत्पाद जो टिकाऊ हों, परिशुद्ध हों.

बीपीएल. भारत के इलेक्ट्रॉनिक्स अग्रदूत. एक 25 वर्ष पुरानी कंपनी जो आपकी जरूरतों और पसंदों के प्रति सदा जागरुक रही है और रहेगी.

बीपीएल. भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स सुविज्ञता बढ़ाते जाएं ताकि आपके जीवन में आएं — श्रेष्ठतम वस्तुएं.

BPL GROUP

IN PURSUIT OF PERFECTION

Computers • Communication • Components • Instrumentation (Industrial, Medical & Measurement) • Office Automation • Consumer Electronics

400 करोड़ रु. का विक्रयावर्त • 40 उत्पाद • 1,000,000 वर्ग फुट निर्मित फैक्टरी क्षेत्र • 4000 से अधिक कर्मचारी • 3 विकास एवं अनुसंधान केन्द्र • 26 बिक्री एवं बिक्री उपरान्त सेवा केन्द्र • 2500 विक्रेता • जापान के सैन्यो से विशिष्ट तकनीकी व्यवस्था।

Mudra:Blr:BPL:233:89 HIN

भभकती लौ

फिल्म जगत के गलियारों में उस घटना की गूंज अभी बाकी ही है. इस घटना के बारे में सुनने वाले हतप्रभ हैं कि ऐसा क्यों हुआ होगा? निर्माता-निर्देशक अब यह जानने की कोशिश में लगे हुए हैं कि रजनीश आश्रम-पलट **विनोद खन्ना** की मर्दानगी में आखिर ऐसी कौन-सी कमी आ गई है जिसे छिपाए रखने के लिए उन्हें दिखावा करना पड़ रहा है.

जिस फिल्म के सेट पर यह वाकया हुआ उसकी न सिर्फ शूटिंग रुकने को आ गई थी बल्कि एक समय तो यह लगने लगा था कि फिल्म हमेशा के लिए 'कोल्ड स्टोरेज' में चली जाएगी. लेकिन अब, मामला सुलझ गया लगता है. क्योंकि उस फिल्म पर काम फिर से शुरू हो गया है.

घटना बहुत छोटी-सी थी. विनोद चाहते थे कि हीरोइन के साथ उनके गहन चुंबन का एक शॉट जरूर लिया जाना चाहिए और कमसिन हीरोइन ने इसके लिए इनकार कर दिया अक्सर ऐसी बातें आई- जाती हैं. कोई उन पर ध्यान नहीं देता. लेकिन कभी अपने सुझाव को 'प्र प्वाइंट' बना लेने से तो बावेला खड़ा हो जाता है यहां हुआ. विनोद अपनी से हटने को राजी नहीं थे अब जबकि हर फिल्म में चुंबन का शॉट होता ही यहां किसी ने मना करने जुर्रत आखिर क्यों की?

इस जिद के आगे झुकी हीरोइन ही, यह कह "चलो, कर लेने दो उन्हें भी. दिये की लौ कब इतनी ज्यादा भभकने लगती है भला कौन नहीं जानता?"

यानी हीरोइन ने उन का जवाब भी अनजाने में दिया जो निर्देशकों को दिनों से परेशान कर रहा आखिर अपनी फिल्मों में चुंबन शॉट रखने की इतनी क्यों करने लगे हैं?

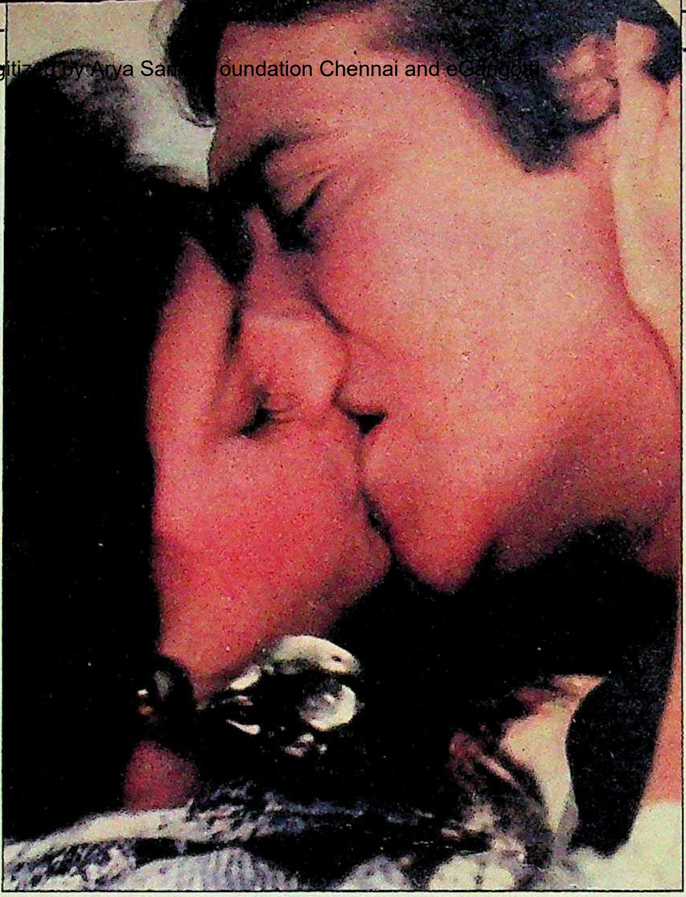

विनोद और किमी: मान न मान...

साफगोई का साहस

अपने किए पर तो आम तौर पर लोग गलती का एहसास होने के बाद गुपचुप पछताते हैं, मगर उसे खुले मन से स्वीकार बिरले ही कर पाते हैं. **सोनू वालिया** को इस बात के लिए सचमुच दाद देने को जी चाहता है कि उन्होंने जो बदतमीजी की उसे खुले मन से स्वीकार कर लिया और वह वजह भी खुले मन से बता दी जिसने उन्हें ऐसा करने पर मजबूर कर दिया था. निर्देशक अनिल शर्मा की नई फिल्म 'तहलका' के मुहूर्त पर इस घटना से जो बड़ा तहलका मचता वह सोनू की साफगोई से ही बच गया.

प्रशंसकों की भीड़ में से किसी ने सोनू से वही कह दिया जो सभी प्रशंसक आज तक कहते और जिसे सोनू भी कल तक मेरा सौभाग्य है' कहकर स्वी करती रही हैं. यहां उसी को सु सोनू इतनी बिगड़ीं कि देखने वाले दंग रह गए. फि मुहूर्त की शुभ बेला में चितकों ने समझा-बुझाकर शांत कर दिया और फि सोनू ने भी माफी मां समझदारी जाहिर कर दी

लेकिन ऐसा क्या था सुनकर सोनू बिगड़ीं? प्रश सिर्फ यही कहा था, "आ सुंदर हैं. बिलकुल परवीन जैसी दिखती हैं." अब भ प्रशंसक क्या जानता था कि बरसों से गायब परवीन जैसे अचानक गायब हुई ही अचानक लौट भी आ लेकिन पहले के मुकाबले होकर. ऊपर से यह कि मानसिक संतुलन पर संदेह किया जाने लगा है परवीन से अपनी तुलना सोनू नाराज न हों खुश हों?

सोनू वालिया: सम

फरहा और विंदू: जमाने को दिखा देंगे

पहलवान पुत्र के सौगंध उठाने की नौबत मध्य रात्रि में तब आई जब सर्दियों की रात की उस पार्टी का माहौल सुरा और सुंदरियों की मौजूदगी से खासा गरमा चुका था. विंदू उस रात अकेले थे. पार्टी में बात तो शुरू हुई इस सवाल से कि वे कोरी मोहब्बत कब तक करते रहेंगे? शादी का धमाका कर डालने से घबराते क्यों हैं?

उनके इस जवाब का कि अभी उनकी प्रेमिका को अपनी मां और छोटी बहन की भी फिक्र करनी है, पार्टी में मजाक बनाया जाने लगा. मजाक ही मजाक में यारों ने सुझाव देना शुरू किया, 'क्या करोगे एक्टर-वैक्टर बनकर? सीधे-सीधे घरजवांई बनो. सुंदर सास, जवान साली और अमीर बीवी...' इतना सुनना था कि विंदू भड़क गए पर बात ज्यादा बिगड़ती, इसके पहले उन्हें अपनी कमजोर स्थिति का एहसास हो गया. "आप लोग यह सोच रहे हैं न कि मैं फरहा से मोहब्बत उसके पैसे की वजह से करता हूं? तो देख लीजिएगा, मैं साबित करके दिखा दूंगा कि फरहा के लिए सबसे सही आदमी विंदू ही था..." उन्होंने घोषणा की.

और अगली सुबह उन्हें बांहों में लेकर सांत्वना देती मर्दाने दुर्गुणों वाली उनकी अभिनेत्री प्रेमिका फरहा ने क्या कहा? "तुम्हें यह साबित करने की जरूरत नहीं. मैं यह जानकर ही सबको छोड़कर तुम्हारे पास आई हूं."

यही नहीं अपने पूर्व प्रेमी, उम्र में फरहा से काफी बड़े निर्देशक राजेश सेठी को विवाह की वेदी तक लाकर छोड़ देने और विंदू से घनिष्ठता बढ़ती जाने के बाद फरहा ने एक अलग फ्लैट भी ले लिया है. और वे इस नए फ्लैट में अक्सर 'अकेली' रहने चली जाती हैं.

माधुरी और गोविंदा: किस से परहेज

ही उनका जरूरी हिस्सा बनाया जा चुका होता है. लेकिन एक बार फिर उन्होंने उस पार्टी में जो जुहू के पांच सितारा होटल में हुई थी, अपनी इस बात को दोहराया कि 'किस' उन्हें किसी भी हालत में पसंद नहीं आता. पर क्या उन्हें सिर्फ 'किस' पसंद नहीं या फिर आलिंगन पर भी कोई आपत्ति है? अपनी पहली फिल्म 'आक्रोश' को याद करती हुई माधुरी ने कहा, "मैं तो वैसी ही अबोध-सी इमेज चाहती थी पर 'दयावान' का चुंबन दृश्य जो मैंने अनजाने में किया था, मेरे साथ ऐसे जुड़ गया है कि छूटता नहीं." लेकिन माधुरी इस बात का कोई सीधा जवाब नहीं दे सकीं कि 'परिंदा' में उनकी सुहागरात भी क्या अनजाने में ही फिल्माई गई?

"अब मैंने इस मामले में कड़ाई बरतने का फैसला कर लिया है," उन्होंने बताया. क्या आप जानना चाहेंगे कि कैसे? "गोविंदा के साथ और ज्यादा फिल्में साइन करके," उन्होंने हंसकर कहा, "क्योंकि गोविंदा सेंसर की कैंची का डर दिखाकर हर फिल्म में ऐसे सीन के बीच पहले से ही पूरा फासला रखने में यकीन करते हैं."

जंग का ऐलान

उनकी अभिनय प्रतिभा के लिए भले ही आज उन्हें नहीं सराहा जा रहा लेकिन **विनीता गोयल** के एक कदम की इन दिनों हर कोई सराहना कर रहा है. विनीता ने फैसला किया है कि ऐसे हर निर्माता, निर्देशक और अभिनेता के खिलाफ वे स्वयं सेविकाओं की कुमुक लेकर जंग छेड़ देंगी जो नई अभिनेत्रियों से अपनी शर्तें मनवाने की जिद पर अड़ा रहता है.

विनीता के पिता स्व. देवेंद्र गोयल अपने जमाने के उन सफलतम निर्माता-निर्देशकों में से थे जिनकी बनाई फिल्में आज भी नई फिल्मों के मुकाबले कहीं ज्यादा अच्छा बिजनेस करके दे रही हैं. विनीता के भाई ज्योतींद्र खुद निर्माता-निर्देशक हैं. तब क्या विनीता का यह कदम पारिवारिक प्रतिष्ठा और हितों के खिलाफ जाता नहीं लगता?

विनीता: शोषण के खिलाफ

"खिलाफ तब जाता जब हमारे परिवार में भी 'एक्सप्लाइटेशन' जैसी कोई बात कभी हुई होती. मेरे पिता जी के जमाने में फिल्म की हीरोइन को परिवार की बेटी जैसी इज्जत देने की परंपरा रही है. लेकिन आज ज्यादातर जगह क्या हो रहा है? जिसे देखो वही नई अभिनेत्री को नोच खाने को तैयार है," विनीता का आरोप है.

जीतेंद्र आर्य

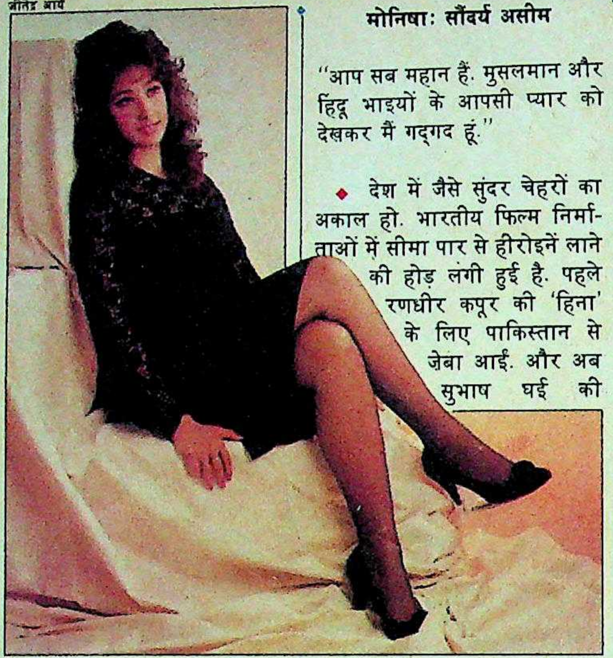

मोनिषा: सौंदर्य असीम

◆ पंद्रह बरस पहले उनके घूंसों का लोहा दुनिया मानती थी. लेकिन पिछले पखवाड़े **मुहम्मद अली** जब मद्रास में थे तब उन्होंने घूंसे नहीं उपहार बांटे. यह उनकी 'आध्यात्मिक यात्रा' थी जिसका उद्देश्य था शिकागो स्थित 'मुहम्मद अली फाउंडेशन' की मद्रास शाखा की स्थापना. इस संस्थान के जरिए गरीबों को शिक्षा और आवास की सुविधाएं प्रदान की जाती हैं.

वैसे तो अली ने अपना समय एम. करुणानिधि और फिल्म अभिनेता दिलीप कुमार के संग बिताया लेकिन उन्होंने जो संदेश दिया उससे भारतवासियों का सीना जरूर चौड़ा होगा. महान घूंसेबाज की यह महान उक्ति है, "आप सब महान हैं. मुसलमान और हिंदू भाइयों के आपसी प्यार को देखकर मैं गद्गद हूं."

मुहम्मद अली: आध्यात्मिक यात्रा

◆ देश में जैसे सुंदर चेहरों का अकाल हो. भारतीय फिल्म निर्माताओं में सीमा पार से हीरोइनें लाने की होड़ लगी हुई है. पहले रणधीर कपूर की 'हिना' के लिए पाकिस्तान से ज़ेबा आई. और अब सुभाष घई की 'सौदागर' के लिए नेपाल से आई हैं **मोनिषा कोइराला**. मोनिषा नेपाल के एक पूर्व प्रधानमंत्री की, जिन्हें देश से निर्वासित कर दिया गया था, पोती हैं. खुशी से फूले नहीं समा रहे घई कहते हैं, "वह कितनी मासूम और अनछुई है." लेकिन मोनिषा अपने को ज्यादा परिपक्व बताती हैं. उनके ही शब्दों में, "मेरे पिता को मालूम है कि मैं अपने निर्णय खुद ले सकती हूं." आखिर 17 की उम्र कोई कम तो नहीं होती.

मदर टेरेसा के साथ लेपियर

◆ 'सिटी ऑफ ज्वॉय' यानी कलकत्ता को अब फिल्म निर्देशक **रोलां जौफ** के कैमरों की पहुंच से दूर कर दिया गया है. इस प्रसिद्ध निर्देशक को डॉमिनिक लेपियर की किताब पर फिल्म बनाने की इजाजत नहीं दी गई हैं. सूचना और प्रसारणमंत्री पी. उपेंद्र कहते हैं, "कलकत्ता की केवल झोंपड़पट्टियों को दिखाने की जरूरत नहीं है." मदर टेरेसा पर बनने वाले लेपियर के वृत्तचित्र का भी यही हश्र हो रहा है. लगता है उनके हिस्से के आनंद का प्याला अब रीता हो रहा है.

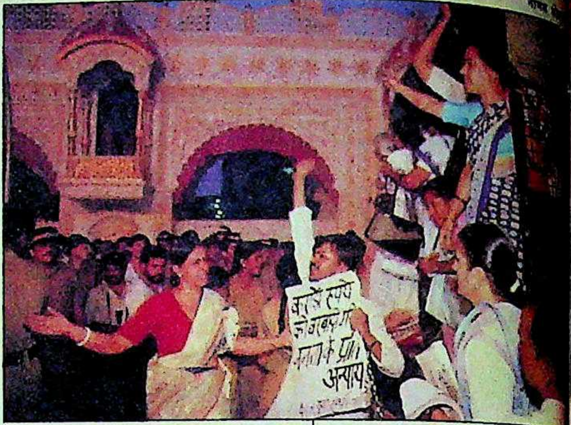

फिजूलखर्ची का विरोध

◆ बंबई के वानखेड़े स्टेडियम में पिछले दिनों जो हुआ वह क्रिकेट नहीं था. बंबई के चोटी के हीरा व्यापारियों ने एक विवाह समारोह पर जिस तरह करोड़ों रुपए खर्च किए वह कइयों की आंख की किरकिरी बन गई. **मेहता** और की फिजूलखर्ची का खूब वि हुआ. दुलहन के पिता कहते "विरोध करने वाले लोग भूल गए कि रोजगार देकर दलितों की कितनी मदद करता बेचारे शाह!

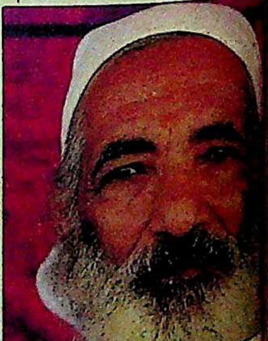

बहुगुणा: सफलता

◆ वर्षों का आंदोलन जो नहीं करा सका, आठ दिनों के शन ने करवा दिया. चिपको **सुंदरलाल बहुगुणा** के उपवा सरकार को टिहरी बांध के नि को रोकने पर मजबूर कर दि अब तक परियोजना पर चार खर्च हो चुके हैं. लेकिन अब यो आयोग की नई टीम बांध का सिरे से निरीक्षण करेगी. इतना नहीं, ऐसी और भी परियोज की समीक्षा की जाएगी. व पर्यावरणवादी की यह स कितनी स्थायी हो पाती है य समय ही बताएगा. फिलहाल पर्यावरण प्रेमियों के लिए बढ़ाने वाला है ही. छपते-छपते है कि जिला प्रशासन की के खिलाफ बहुगुणा फिर अनशन पर बैठ गए हैं.

28 फरवरी 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

त-पाकिस्तान: लड़ाई की ललकार

ट किट्स प्रकरण: साजिश का भंडाफोड़

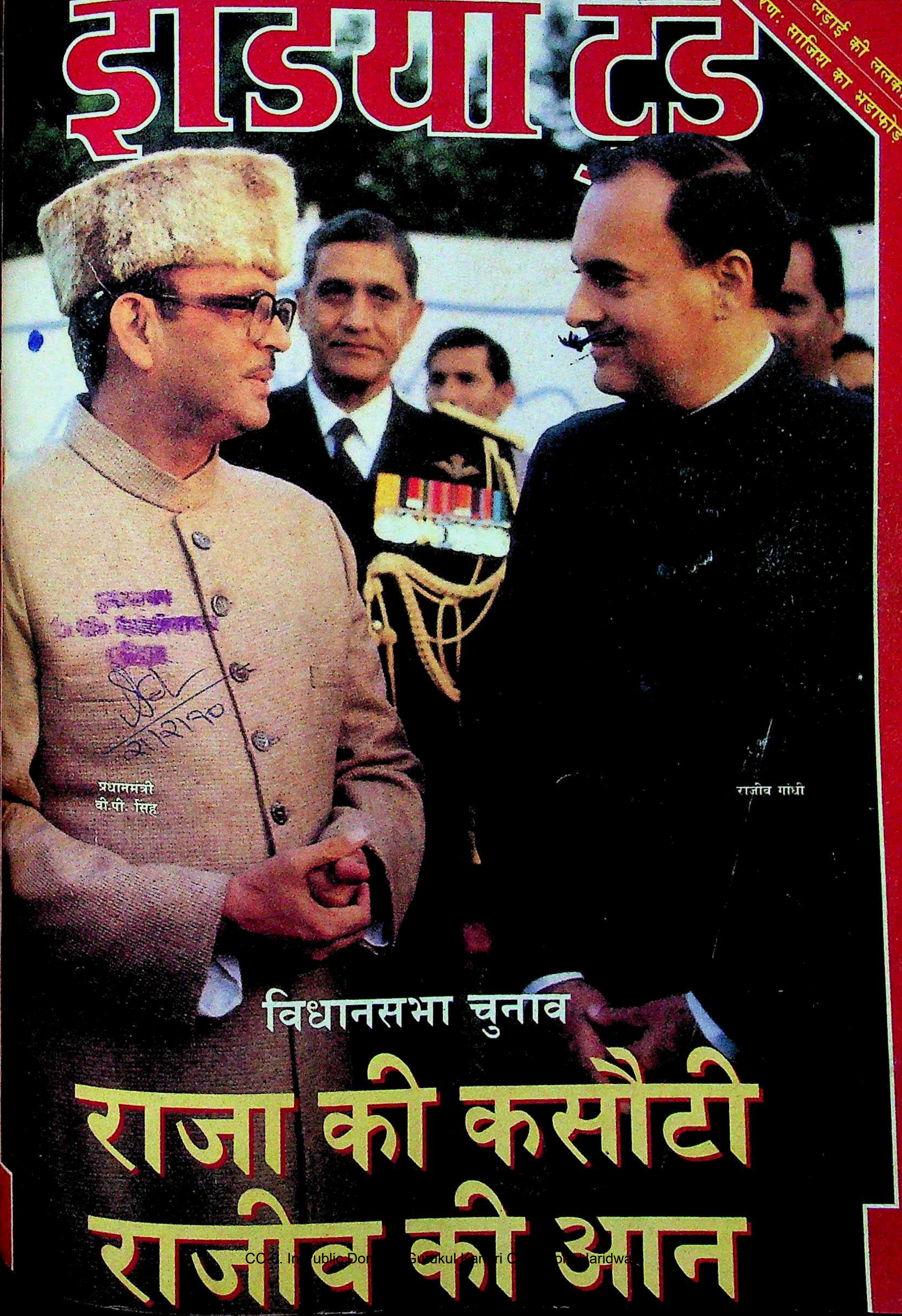
प्रधानमंत्री
वी.पी. सिंह
राजीव गांधी

विधानसभा चुनाव

राजा की कसौटी राजीव की आन

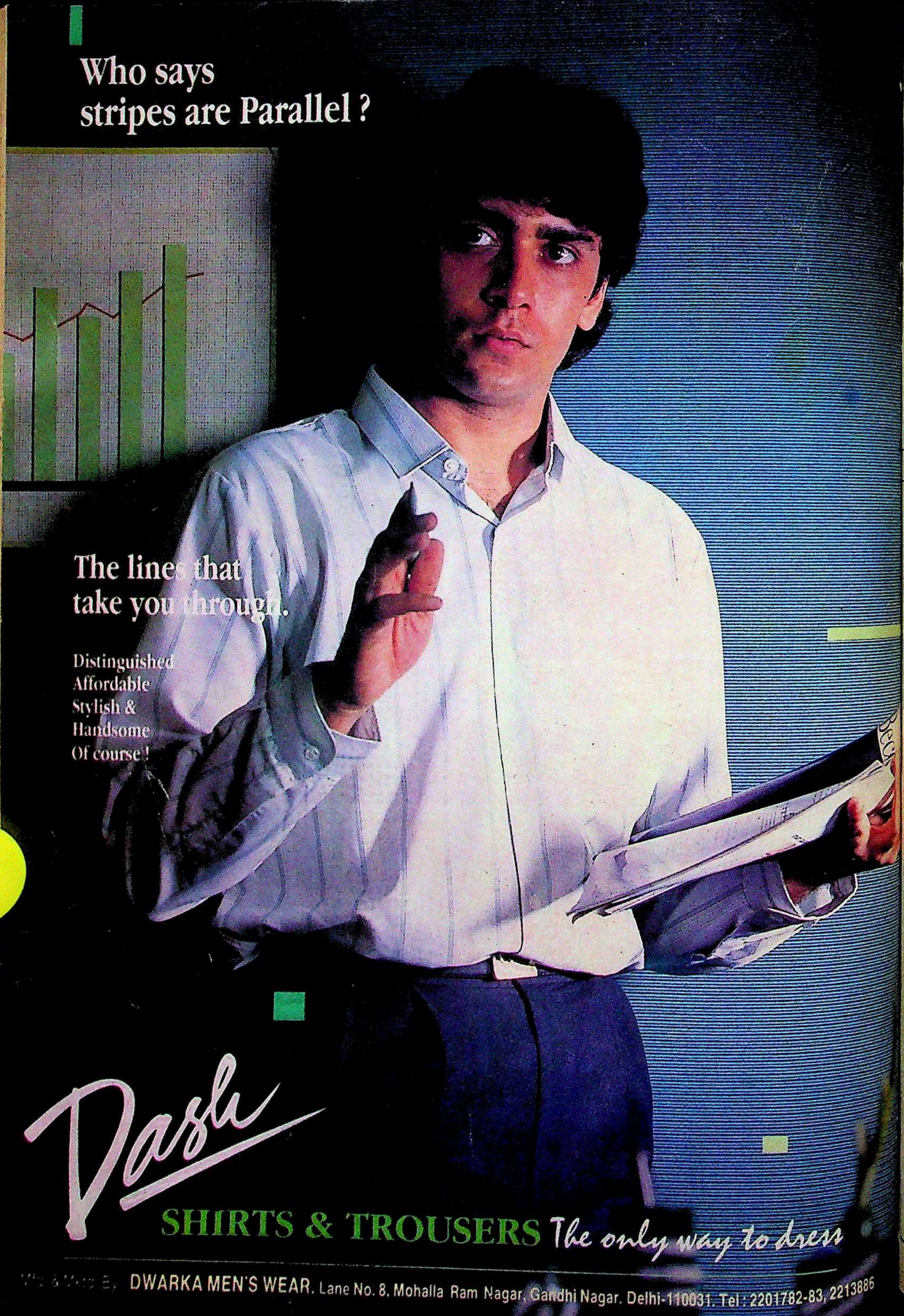
Who says
stripes are Parallel ?
The lines that
take you through.
Distinguished
Affordable
Stylish &
Handsome
Of course!
Dash
SHIRTS & TROUSERS The only way to dress
Mfd & Mktd By DWARKA MEN'S WEAR. Lane No. 8, Mohalla Ram Nagar, Gandhi Nagar, Delhi-110031. Tel : 2201782-83, 2213886

अपनी बात

हरिंदर बवेजा

इतिहास में संयोग आम होते हैं. प्रभा दत्त जनवरी 1984 में 'इंडिया टुडे' से जुड़ीं लेकिन दो महीने बाद ही दिमाग की नस फटने से उनकी असामयिक मृत्यु हो गई. पत्रिका को उनका साथ थोड़े समय के लिए ही मिला पर इतने समय में ही उन्होंने अपनी छाप छोड़ी. पत्रकारिता के 20 साल के कैरियर में अपनी ईमानदारी और साहस के लिए मशहूर इस मुखर संवाददाता ने पत्रिका में अलग पहचान बनानी शुरू कर दी थी.

प्रभा दत्त के प्रति श्रद्धांजलि के बतौर खुशवंत सिंह और बी.जी. वर्गीज समेत उनके कई मित्रों ने प्रभा दत्ता स्मारक न्यास की स्थापना की. और तिमाही पत्रिका 'मीडिया इंडिया' ने खोजी पत्रकारिता में हर साल एक महिला पत्रकार को पुरस्कार देने की घोषणा की. इसका मकसद भारतीय पत्रकारिता में महिलाओं के महत्वपूर्ण योगदान को उजागर करना था.

इसलिए पिछले पखवाड़े जब दिल्ली स्थित हमारी वरिष्ठ संवाददाता 28 वर्षीया **हरिंदर बवेजा** को खोजी पत्रकारिता के लिए इस पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया तो हमें विशेष संतुष्टि का एहसास हुआ. यह पुरस्कार उन्हें पंजाब और हरियाणा की बेहतरीन रिपोर्टिंग खासकर उनकी उस रपट पर मिला जिसमें उन्होंने पंजाब में आतंकवादियों के कृत्यों से अनाथ हुए बच्चों की अपने जीवन को फिर राह पर लाने की कोशिश का मार्मिक चित्रण किया था (देखें इंडिया टुडे, 15 नवंबर 1989).

इस रिपोर्ट के छपने के बाद कई लोगों ने जानना चाहा कि इन अनाथ बच्चों के पुनर्वास में वे किस तरह मदद कर सकते हैं. छह महीने पहले हमारे साथ जुड़ीं बवेजा के लिए यह पुरस्कार उत्साहवर्द्धक है. वे कहती हैं, "मैं उस समय भावविह्वल हो उठी जब प्रभा दत्त के पति ने मुझे स्मृति चिन्ह और पदक सौंपा." **इंडिया टुडे** के लिए यह खुशी और स्मृति दोनों का ही मौका है.

अरुण पुरी

इस पखवाड़े

राजा की कसौटी, राजीव की आन

27 फरवरी को होने वाले विधानसभा चुनाव मिनी आम चुनाव से कम नहीं हैं. इसमें प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह और राजीव गांधी दोनों का भविष्य ही दांव पर नहीं लगा है बल्कि इससे इस दशक के पूर्वार्द्ध तक देश की राजनीति की दिशा भी तय होनी है.

आवरण कथा......................................20

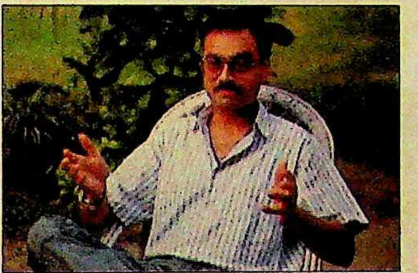

साजिश का भंडाफोड़

सेंट किट्स घोटाले के चर्चा में आने के छह माह बाद ही नई सरकार की जांच से कुछ सनसनीखेज तथ्यों का रहस्योद्घाटन हुआ है: वी.पी. सिंह को बदनाम करने में उच्च पदस्थ अफसर, पी.वी. नरसिंह राव समेत इंकाई नेता, चंद्रास्वामी और कुछ विदेशी शामिल रहे.

खास रपट......................................14

लड़ाई की ललकार

कश्मीर का मुद्दा गरमाने के साथ ही भारत और पाकिस्तान के बीच जंग छिड़ने की संभावना को नकारा नहीं जा सकता. दोनों देशों की सामरिक ताकतों की समीक्षा और युद्ध के खतरे का लेखा-जोखा. साथ ही पाकिस्तान के हालात पर मौके से रिपोर्ट.

खास रपट......................................50

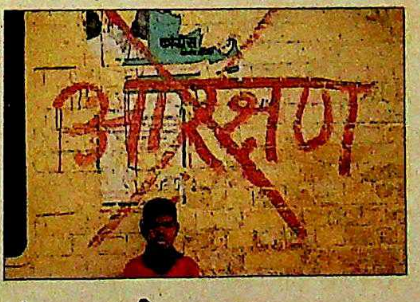

इंकलाब की इबारत

नई सरकार के गद्दीनशीन होते ही आरक्षण विरोधी आंदोलन ने पूरे उत्तर भारत के शहर-कस्बों की दीवारों पर नई इबारत लिख दी. मंडल आयोग की रपट लागू करने की चुनावी घोषणा को पूरा करने के लिए राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को फूंक-फूंककर कदम रखना होगा.

खास रपट......................................72

अगले पन्नों पर

कसौटी......................................8
तेवर......................................9
राजरंग......................................10
हिंदोस्तां हमारा......................................12
खास रपट
सेंट किट्स प्रकरण:
साजिश का भंडाफोड़......................................14
आवरण कथा
विधानसभा चुनाव: राजा की कसौटी,
राजीव की आन......................................20
आजकल
राजीव गांधी: पहले जैसी सुरक्षा चाहिए...32
आंध्र प्रदेश: घिसटते कदम......................37
असम: मतभेद भुलाने की मजबूरी..........38
मध्य प्रदेश: नाजायज फैसला..................39
खास रपट
डिज्नीलैंड:
देसी दिमाग का विदेशी फितूर..................42
जम्मू-कश्मीर: कायम हो रहा कायदा.......46
भारत-पाकिस्तान: लड़ाई की ललकार......50
राज्य-दर्पण......................................60
व्यापार चक्र......................................65
सम्मान
श्रीनारायण चतुर्वेदी: लोगों ने सराहा.......68
खास रपट
आरक्षण: इंकलाब की इबारत..................72
खेलकूद
राष्ट्रमंडल खेल: मैदान फिर मार लिया....78
टीवी
टीपू सुलतान: तलवार पर तलवार..........80
रहन-सहन
मॉडलिंग: दिल जीत रही दिल्ली............82
कहानी......................................88
किताबें......................................92
परदे के उस पार......................................94
चर्चित चेहरे......................................96

आवरण: प्रमोद पुष्करणा

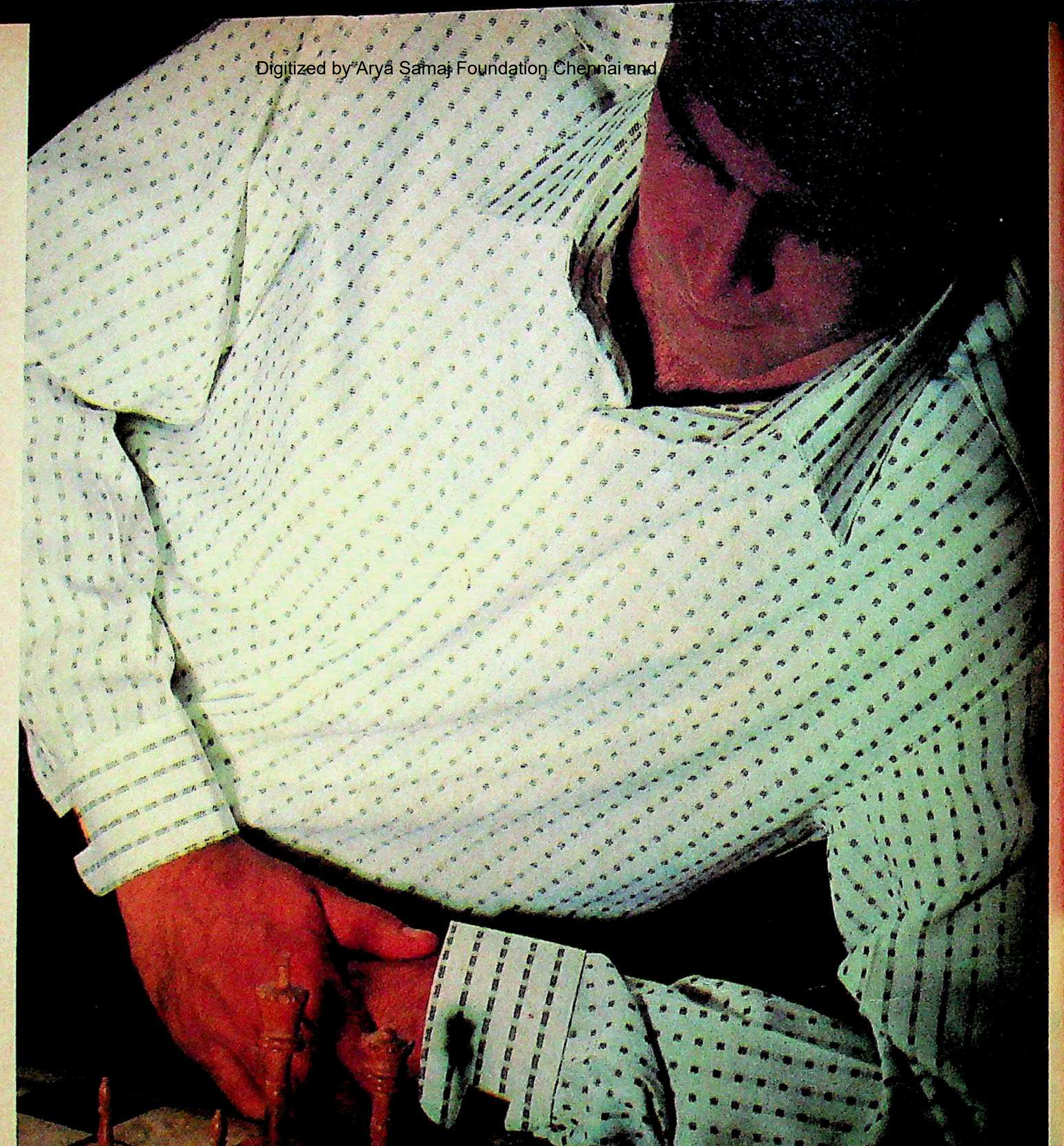

एक बेहतरीन स्पन ब्लेंडॅड शर्टिंग. जिसमें है कॉटन का सुखद अहसास. सटीक फ़ाल.

और ऐसी नर्म कसावट कि सिलवटें न पड़ सकें.

भारत की सब से ज़्यादा बिकने वाली शर्टिंग फ़ैब्रिक. हर महीने ३०० से भी ज़्यादा नए डिजाइन.

पर्सनल
पावर

VIMAL®
A RELIANCE PRODUCT

प्रीमियम शर्टिंग्स

Mudra:A:RIL:5100 Hin.

"बड़ा पाऊच लेता हूँ! ड़ी बचत करता हूँ!"

पान पराग
स्वादिष्ट
पान मसाला

नए

पान पराग के ज़िप पाऊच

ान मसाला और ताज़गी दोनों बचाएँ

ी हाँ, इन नए सादे पान पराग और ज़र्दा युक्त पाऊचों का यही ो मज़ा है– चाहे जितना खाएं, चाहे जितनी बार खाएँ– पान मसाला कभी पॉकेट में न गिरे, और ताज़गी, वह भी अन्त तक बची रहे !

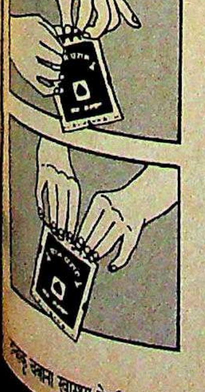

- पहले सील फाड़ें.
- दोनों हाथों से पकड़कर ज़िप लॉक खोलें.
- खाने के बाद लॉक को दबाकर बंद करें.

पान पराग
स्वादिष्ट
पान मसाला
पान पराग
पान मसाला
ज़र्दा-युक्त
PAN PARAG

पान पराग®
पान मसाला
पान मसाला ज़र्दा युक्त
कोठारी उत्पादन

ना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ।

everest/d90/KP/58 hin

"हमारे केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर में विश्वविख्यात 'पावर-सेवर" कम्प्रैसर लगा है"

जी हां. सभी केल्विनेटर रेफ्रिजरेटरों में विश्वविख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर लगा होता है। यह जल्दी ठंडा करता है और उस से भी जल्दी बर्फ़ बनाता है। वोल्टेज के तीव्र उतार चढ़ाव सहन करते हुए, बिजली की कम खपत करता है। सच तो यह है कि विश्व भर को निर्यात किया जाने वाला यह एक मात्र भारतीय रेफ्रिजरेटर कम्प्रैसर है।

केल्विनेटर की उत्कृष्ट विशेषताएं :

- पूर्णतः स्टील निर्माण तथा सुदृढ़ लाइनर
- ज़्यादा स्टोरेज के लिए ज्यादा शेल्फ़ें
- सब से अधिक, आठ मॉडल, नौ आकर्षक रंगों में उपलब्ध

केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर लाखों संतुष्ट परिवारों के संगी साथी।

300 LITRE DOUBLE DOOR
286 LITRE CORONA
286 LITRE MASTERPIECE
165 LITRE DOUBLE DOOR
165 LITRE MASTERPIECE
165 LITRE CORONA
165 LITRE STERLING
90 LITRE
65 LITRE
275 LITRE VERTICAL
85 LITRE VERTICAL
425 LITRE CHEST TYPE
DEEP FREEZERS

घर में लाइए खुशियां घर में लाइए

केल्विनेटर

बिक्री एवं सर्विस के लिए : एक्सपो मशीनरी लिमिटेड प्रगति टावर, 26, राजेन्द्र प्लेस नई दिल्ली-110008.

Mutual 5070d

इंडिया टुडे
दुखदायी बदलाव

दुखदायी नहीं, रचनात्मक बदलाव

सोवियत संघ में हो रहे परिवर्तनों को 'दुखदायी बदलाव' (15 फरवरी) की संज्ञा नहीं दी जानी चाहिए. गोर्बाचेव की आलोचना करने वालों को याद रखना चाहिए कि एक खुला समाज अपने आप में एक अच्छाई है और समाज को बुराइयों से मुक्त करने के लिए बुराइयां व्यक्त करने का मौका देना पड़ता है. गोर्बाचेव की उपलब्धि यह है कि उन्होंने यह मौका दिया. सोवियत संघ में जो कुछ हो रहा है वह रचनात्मक बदलाव का एक दुखद पहलू भर है.

—**प्राची**, मुरादाबाद (उ.प्र.)

■ पूर्वी यूरोप के बाद रूस में आ रहा बदलाव यह सोचने को मजबूर करता है कि क्या साम्यवाद अब अप्रासंगिक हो गया या उसके क्रियान्वयन में कहीं खोट रह गई. क्योंकि पूंजीवाद ने भी अब अपना रूप बदलकर प्रबंध में श्रम को भागीदारी दी है तो फिर सर्वहारा के कल्याण के लक्ष्य को लेकर चला साम्यवाद उन्हीं की नजरों में बेमानी क्यों हो गया है? यह रूस में खान मजदूरों की हुई हड़ताल से स्पष्ट है. ध्यान से देखें तो पता चलेगा कि साम्यवाद के सिद्धांतों का पालन हुआ ही नहीं और यह सिर्फ गिने-चुने चाऊशेस्कुओं के निरंकुश हाथों का खिलौना बन गया.

—**अतुल लारे**, ग्वालियर (म.प्र.)

■ गोर्बाचेव ने न केवल विश्व के तनावों को कम करने में मदद दी है बल्कि रोमानिया, पूर्वी जर्मनी, पोलैंड तथा खुद सोवियत संघ के लोगों को असली 'आजादी' दी है. सोवियत संघ के घटनाक्रम से समाजवाद का नारा धराशायी हो गया है लेकिन लगता है भारत की कम्युनिस्ट पार्टियां इस बदलाव से अलग ही रहना चाहती हैं.

—**सुरेश चंद्र गुप्ता**, मुरादाबाद (उ.प्र.)

राजनैतिक इच्छाशक्ति जरूरी

'अलगाववाद की आंच' के लिए (31 जनवरी) सबसे ज्यादा जिम्मेदार फारूक सरकार है जिसने जनभावनाओं को समझने और उग्रवादियों पर नजर रखने की ओर ध्यान नहीं दिया. अलगाववादियों को सिर्फ गोली से नहीं डराया जा सकता. उनके मन में राष्ट्रभक्ति की भावना को जगाने की राजनैतिक इच्छाशक्ति आवश्यक है.

—**संजय रांका**, सैलाना (म.प्र.)

पाठकों से

पिछले दो अंकों से हमने पाठकों की सर्वोत्तम चिट्ठी पर पुरस्कार देने की योजना शुरू की है. इस अंक के किसी भी लेख पर लिखी सर्वोत्तम चिट्ठी पर 100 रु. और दूसरे स्थान पर रहने वाली चिट्ठी पर 50 रु. पुरस्कार दिया जाएगा. चिट्ठी अधिकतम 150 शब्दों की हो. इसके साथ इस अंक में चिट्ठियों वाले पहले पेज पर छपा आवरण पृष्ठ का फोटो काटकर भेजें. आपके पत्र हमें 5 मार्च तक मिल जाने चाहिए.

—संपादक

■ शेख अब्दुल्ला की मृत्यु के बाद से ही सत्ता की जो राजनीति शुरू हुई उसमें जनता के हितों की उपेक्षा होती रही. उपेक्षित जनता के मन में राष्ट्रद्रोहियों ने धीरे-धीरे अलगाववाद का जहर भरना शुरू कर दिया. राज्यपाल जगमोहन को सबसे पहले इसी जहर को निकालना होगा. उन्हें यह एहसास दिलाना होगा कि उनके हितों की रक्षा भारत सरकार ही कर सकती है.

—**श्रीभूषण पांडेय**, गोरखपुर (उ.प्र.)

■ दरअसल घाटी के निवासियों की भारतीय लोकतंत्र से आस्था समाप्त हो गई है. वोटों की प्रदूषित राजनीति और प्रशासनिक असफलता से किसी क्षेत्र की स्थिति कितनी बदतर हो सकती है इसका उदाहरण कश्मीर घाटी है.

—**ज्ञानशंकर प्रसाद**, पटना (बिहार)

■ यदि भारत सरकार पाकिस्तान का हौवा खड़ा करके इस ज्वलंत समस्या को टालना चाहती है तो याद रहे कि जिस प्रकार भारत का विरोध पाकिस्तान की मजबूरी हो गई है उसी प्रकार पंजाब व कश्मीर में हो रही हिंसक गतिविधियों में पाकिस्तानी हाथ होने का राग अलापना भारत की भी मजबूरी हो जाएगी.

—**महेश कुमार पटवारी**, खीरी (उ.प्र.)

■ कश्मीर समस्या हमारे राजनैतिक सोच का नतीजा है. कोई भी राजनैतिक दल ऐसा नहीं जिसका इससे ताल्लुक नहीं है. राजनैतिक लाभ जब देश से बड़ा हो जाता है तो यही होता है.

—**सुरेश भाटिया**, कोटा (राज.)

■ यह सच है कि घाटी में पनपे उग्रवाद को पाकिस्तान ने हवा दी है. पर पंजाब की तरह वहां की युवा पीढ़ी को राजनीतिकों ने सही दिशा नहीं दी वरना स्थिति इतनी भयावह न होती. अब गोली का जवाब गोली से देने के बजाए हृदय परिवर्तन जैसा कदम उठाने की जरूरत है.

—**अशोक वधावन**, कैथल (हरियाणा)

■ यह समस्या मात्र आंच नहीं बल्कि धधकता हुआ ज्वालामुखी बन चुकी है जिसके लावे में कश्मीर का उग्र वर्ग पुलिस व सेना से टक्कर लेने लगा है. जनता द्वारा दुकानें बंद करना आतंकवादियों के समक्ष आत्मसमर्पण है. अपने देश में फैल रहे असंतोष से लोगों का ध्यान बंटाने के लिए पाकिस्तान आतंकवादियों को हर तरह से सहयोग दे रहा है. भारत सरकार को पाकिस्तान से कड़े शब्दों में कह देना चाहिए कि इस तरह की हिंसक गतिविधियां खुद पाकिस्तान के लिए घातक हो सकती हैं.

—**चंद्र प्रकाश बुद्धिराजा**, रोहतक (हरियाणा)

वर्ष: 4, अंक: 8, 16-28 फरवरी 1990
■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4. टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलिट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ई-4, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273, टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3136 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता. ● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता. ● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

प्रथम पुरस्कार

अलगाववाद की आंच (31 जन.) पढ़कर लगा कि मुसलमानों में कुछ ऐसे भी लोग हैं जो अपने वतन को पाकिस्तान की जमीन का एक टुकडा बनाना चाहते हैं. एक बार फिर, भारतीय मुसलमान अपनी मातृभूमि के साथ विभाजन की दुखद घटना को दुहरा देने का षड्यंत्र रचने वालों के समर्थन में दिख रहा है.

कश्मीर भारतीय मुसलमानों की नाक है. अगर यह अलग हो गई तो हम इतिहास को मुंह दिखाने के लायक नहीं रह जाएंगे. हमारी ऐसी दुर्दशा होगी कि उसे लफ्जों में बयान नहीं किया जा सकेगा. आजाद कश्मीर की मांग करने वाले हमारी राष्ट्रीयता के ही नहीं इस्लाम के 'एक रहो' के संदेश के भी शत्रु हैं. हम चाहें तो पाकिस्तान के निर्माण से हमारी राष्ट्रनिष्ठा पर जो दाग लगा था वह आज धुल सकता है. कश्मीर की तथाकथित मुक्ति का प्रबल विरोध करके हम अपनी देशभक्ति का अटूट प्रमाण दे सकते हैं.

—**मुहम्मद असलम 'हाबी'**, खुर्जा (उत्तर प्रदेश)

■ जगमोहन को पुनः राज्यपाल बनाकर केंद्र सरकार ने तो उचित कदम उठाया है पर दूर के दीप से कभी रोशनी नहीं मिल सकती, हां दीप के जलने का आभास जरूर रहता है. असली उजाला तो सीमा सुरक्षा बल की पाकिस्तानी सीमा पर और अधिक चौकसी व पाकिस्तानी मोहजाल में फंसे नौजवानों के मोहभंग से ही होगा.

—**शशांक त्यागी**, मेरठ (उ.प्र.)

दुर्बल चित्त

'जयललिता के नाटकीय हथकंडे' (31 जनवरी) पढ़ा. उनके साथ समस्या यह है कि उनकी महत्वाकांक्षाएं प्रबल और चित्त दुर्बल है. जब-जब उनकी महत्वाकांक्षाएं असफल होने लगती हैं, वे संन्यास का राग अलापने लगती हैं.

—**लाखन सिंह गौतम**, गंजबासौदा (म.प्र.)

गलत परंपरा

'बोर्ड का बाउंसर' (31 जनवरी) आश्चर्यजनक लगा. इस तरह बार-बार टीम के कप्तान बदलना एक गलत परंपरा है जो टीम के हित में नहीं है. इससे खिलाड़ियों में अस्वस्थ परंपरा उपजेगी. पाकिस्तान, ऑस्ट्रेलिया आदि देशों से हमें सबक लेना चाहिए. —**रमण शाह**, फरीदाबाद (हरियाणा)

■ बोर्ड और चयन समिति में घुसी राजनीति तथा अहं का ऐसा उदाहरण शायद ही मिले. चयन समिति के अध्यक्ष की बातें दंभ से भरी हैं. वे यह जताने की कोशिश कर रहे हैं कि वे अब तक के सबसे कुशल अध्यक्ष हैं जबकि यह कार्रवाई सरासर उनके बदले की भावना ही दर्शाती है. —**शिलावित्य सिन्हा**, आरा (बिहार)

■ राज सिंह डूंगरपुर ने जितने विवादों को जन्म दिया है, उतना चयन समिति के किसी और अध्यक्ष ने नहीं दिया. यदि न्यूजीलैंड में यह युवा टीम असफल रहती है तो क्या वे और नए खिलाड़ी लाएंगे. उनका यह सनकीपन भारतीय क्रिकेट के लिए घातक हो सकता है.

—**गोपालकृष्ण पोद्दार**, रायबरेली (उ.प्र.)

धनात्मक पहलू

'पार लगाने की पहल' (31 जनवरी) में पंजाब के जिन धनात्मक पहलुओं पर बखूबी से चर्चा की गई है वह देश के दुखते घावों पर मरहम-पट्टी सा लगा. पंजाब का घाव सचमुच गहरा है. मान गुट के प्रवक्ता अपनी बात अंतरात्मा की पुकार पर कह रहे हैं तो यह देश के भविष्य के लिए बेहद सुखद है और अमन-चैन का सुखद संकेत भी.

—**नारायण सिंह राजपूत**, टीकमगढ़ (म.प्र.)

■ खास रपट पढ़कर ग्लानि ही हुई. लुधियाना में संपन्न रैली को 'सर्वदलीय' करार देना, पाठकों को गुमराह करना ही है. देश की सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस (आई) का भाग न लेना दुर्भाग्यपूर्ण एवं महत्वपूर्ण घटना है. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने व्यक्तिगत रूप से अच्छी पहल की है लेकिन देवीलाल तथा सिमरनजीत सिंह मान का अहंकार पंजाब समस्या को कहीं और नीचे ढकेलेगा.

—**कौशलेंद्र ओझा**, बक्सर (बिहार)

जीतने की तिकड़म

'तबादलों पर तकरार' (31 जनवरी) पढ़ा. अगले माह होने वाले विधानसभा चुनाव में कांग्रेस की स्थिति लोकसभा चुनाव जैसी ही न हो. शायद इसलिए डॉ. मिश्र ने मुख्यमंत्री पद संभालते ही बिहार के कई आला अफसरों को हटाकर अपने समर्थक अफसरों की नियुक्ति कर दी. किसी भी कामचलाऊ मुख्यमंत्री को इस तरह का अधिकार नहीं है. लेकिन डॉ. मिश्र ने सारी आचार संहिता को ताक पर रख दिया.

—**राजू बौंदिया**, रामगढ़ कैंट (बिहार)

घातक निर्णय

'कोष खाली होने का खतरा' (31 जनवरी) पढ़कर लगा कि सत्ता हासिल करने के लिए कर्ज माफी की घोषणा कर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने भारतीय अर्थ व्यवस्था के लिए घातक निर्णय लिया है. आखिर यह माफ की गई राशि हमसे ही तो वसूली जाएगी, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष करों के जरिए. और उपभोक्ता वस्तुओं के दाम फिर आसमान छूने लगेंगे.

—**अमृतलाल मारू 'रवि'**, धार (म.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

कश्मीर जल रहा है. कौन जिम्मेदार है बाहरी ताकतें या हम स्वयं? हो सकता है बाहरी ताकतें भारत में अनिश्चितता का वातावरण पैदा कर अनुचित लाभ लेना चाहती हों. पर हम सावधान हैं; सतर्क हैं. आत्मनिरीक्षण करें हम स्वयं कितने जिम्मेदार हैं? क्या हमने कश्मीरी जन-भावनाओं की उपेक्षा नहीं की? क्या हमने उनकी उचित आकांक्षाओं को पूरा किया है? क्यों कश्मीरी युवक एवं जनता आज इतनी उद्वेलित है? क्या राजनेता और नौकरशाह अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु अंग्रेजों की पुरानी नीति 'डिवाइड ऐंड रूल' का खतरनाक खेल नहीं खेल रहे हैं?

कश्मीर समस्या, पंजाब समस्या, बोडो समस्या आदि का एक ही समाधान है—केंद्र सरकार की सत्ता का परिसीमन. सत्ता का मुख्य स्रोत पंचायतें एवं नगरपालिकाएं हों, न कि केंद्र सरकार. नौकरशाही के पर काटे जाएं ताकि वह लोकशाही का गला न घोंट सके. इस मामले में जनता का दिल जीतने की आवश्यकता सर्वोपरि है.

—**बाबा नारायणदास**, बरकत नगर, जयपुर (राज.)

यह कैसा राज

'अनिश्चय की गिरफ्त में' (31 जनवरी) मन को छू गया. वी.पी. सिंह कहते थे कि स्वच्छ सरकार देंगे, पारिवारिक शासन का खात्मा करेंगे, भ्रष्टाचारियों को निकाल बाहर करेंगे. लेकिन सत्ता में आते ही देवीलाल ने अपने पुत्र को गद्दी दे दी. क्या यह पारिवारिक शासन नहीं है? विभिन्न गुटों की अल्पमत वाली सरकार में कितने स्वच्छ छवि के हैं? मुलायम सिंह की अपराधियों से सांठगांठ, उनके घर में कुख्यात अपराधियों का आना-जाना, क्या सिद्ध करता है?

—**कमलेश कुमार**, कानपुर (उ.प्र.)

विज्ञापन निगम द्वारा फ्री प्रेस जर्नल और महाराष्ट्र टाइम्स में दि. २६-७-८९ को प्रकाशित वैधानिक विज्ञापन के पश्चात दिया जा रहा है. गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनीज तथा विविध गैर बैंकिंग (विज्ञापन) नियमों, १९७७ के नियम ३ के अन्तर्गत वांछित सभी विवरण आवेदन पत्र में दिए गए हैं.

एच·डी·एफ·सी

डिपॉजिट्स

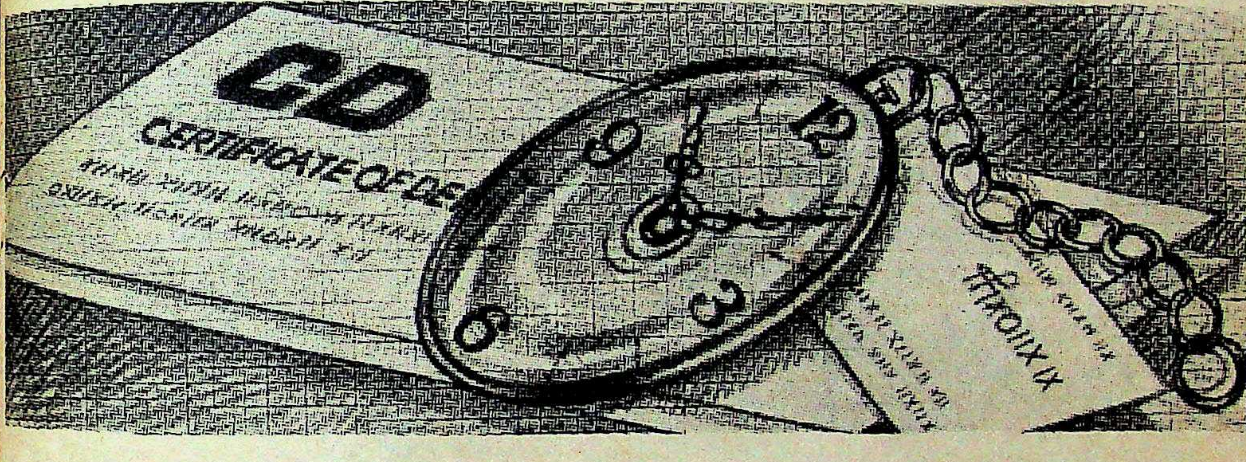

त्वरित सेवा

दस वर्षों के अनुभव और रु.५५० करोड़ से अधिक की जमाराशियों के साथ एच डी एफ सी देश में जमा स्वीकार करने वाली एक प्रमुख संस्था है. हार्दिक और दोस्ताना ग्राहक सेवा हमेशा से एच डी एफ सी के काम करने के ढंग का एक जाना माना हिस्सा रही है.

हमारी जमा योजनाओं में क्युम्युलेटिव और नॉन-क्युम्युलेटिव दोनों विकल्प हैं, २५ से ८४ माह की परिपक्वता अवधियां हैं, १२.५ % तक की ब्याज दरें हैं और वे धारा ८० एल के अन्तर्गत आयकर में रु.१०,००० प्रति वर्ष तक की छूट भी दिलाती हैं. अधिक जानकारी के लिए इस कूपन को नीचे दिए गए हमारे कार्यालयों में से किसी को भी भेजिए.

✂

कृपया मुझे एच डी एफ सी सी डी/सी आई योजनाओं पर मुफ्त पुस्तिका भेजिए

नाम : ____________________

पता : ____________________

ITH

सीडी एवं सीआई

(सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट) (क्युम्युलेटिव इण्ट्रेस्ट)

योजनाएं

एच·डी·एफ·सी

हाउसिंग डेवलपमेण्ट फाइनेन्स कॉर्पोरेशन लिमिटेड

पंजी. कार्यालयः बम्बई

ADROIT:236/89 Hin

दिल्ली: पालिका भवन, पहला तल, सेक्टर-१३, आर.के. पुरम, नई दिल्ली ११० ०६६. फोनः ६०३१४६, ६०३१४७. **लखनऊः** कोहली हाउस, ४-ई, रामतीर्थ मार्ग, पोस्ट बॉक्स नं. ३९४, २२६ ००१. फोनः ३५०५५, २४७५०५. **चण्डीगढ़ः** दूसरा तल, एस सी ओ १११०,१११, सेक्टर २२-बी, चण्डीगढ़ १६० ०२२. फोनः २४८४३. **जयपुरः** सी-९६, जगन पथ, सरदार पटेल मार्ग, जयपुर ३०२ ००१. फोनः ७७५५७. **इन्दौरः** ९/१/१, एम.जी.रोड, निकट फिल एण्ड फ्लाई पेट्रोल पम्प, इन्दौर ४५२ ००१. फोनः ७७८४, ७३७६.

इतिहास के पन्नों में झांकिए

कश्मीर के मसले पर इन दिनों जो गरमागरम बहस छिड़ी हुई है उसमें शरीक होने वाले जानकार लोग तक भारतीय संविधान के अनुच्छेद 370 की आलोचना करते पाए जाते हैं. उनके मुताबिक यह अनुच्छेद कश्मीर घाटी और पूरे देश के लिए मुसीबत का एक बड़ा कारण है. भारतीय जनता पार्टी तो अरसे से इसके खिलाफ मुहिम छेड़े हुए है. उसका तर्क रहा है कि यह अनुच्छेद तुष्टीकरण का प्रतीक है और साथ ही कश्मीर के मुसलमानों को खास दर्जा देने का राजनैतिक और संवैधानिक बहाना भी. इस पार्टी के मुताबिक संविधान के इस अनुच्छेद को रद्द कर दिया जाए तो आधा मसला हल हो जाएगा.

लेकिन वास्तव में देखा जाए तो यह तर्क सचाई से परे है. अनुच्छेद 370 को रद्द करना व्यावहारिक हो तो भी इससे भारत के लिए खतरनाक वैधानिक समस्याएं खड़ी हो जाएंगी और इससे कश्मीर का मसला अंतरराष्ट्रीय स्वरूप ले सकता है. अगर यह अनुच्छेद गलती से भी किसी तरह की रियायत थी तो उस समय देश के कर्णधारों के पास स्पष्ट विकल्प भी नहीं थे. इस अनुच्छेद की ऐतिहासिक आवश्यकताओं को समझना जरूरी है.

रेखाचित्र: अजीत नैनन

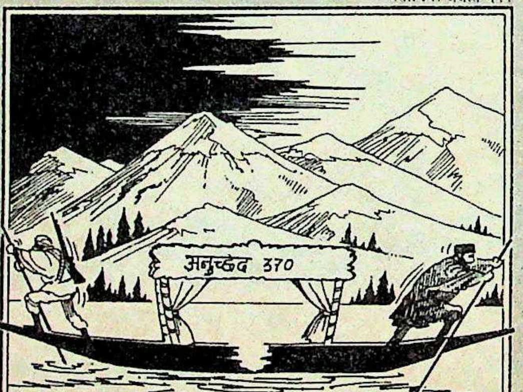

पहली सचाई तो यह है कि यह मुसलमानों की मांग पर नहीं बल्कि कश्मीर के भूमिपति वर्गों की पंडित सभा और डोगरा सभा की मांग पर बनाया गया था. ये सभाएं 1893 से जारी उस ब्रिटिश नीति का विरोध कर रही थीं जिसके तहत पंजाबी मुसलमानों को घाटी में जमींदार, जागीरदार और सरकारी अधिकारी बनाने की कोशिशें हो रही थीं. कड़ी प्रतियोगिता के डर से डोगरों और पंडितों ने '20 के दशक के आखिर में कश्मीर के महाराजा पर पहली प्रादेशिक नागरिकता अधिसूचना जारी करने का दबाव डाला. इसके तहत कश्मीर के बाहर के नागरिक कश्मीर में जमीन नहीं खरीद सकते.

1947 में पाकिस्तानी कबाइलियों की घुसपैठ के बाद महाराजा हरि सिंह ने शेख अब्दुल्ला की सलाह पर कश्मीर को भारत का अंग बनाने के अंगीकार पत्र पर दस्तखत किया था. इसके बावजूद भारत के साथ कश्मीर का रिश्ता दूसरे पूर्व रजवाड़ों से अलग तरह का रहा है. अंगीकार पत्र पर दस्तखत करने का मतलब यह था कि ये राज्य और रजवाड़े इंडीपेंडेंस एक्ट के तहत अपनी प्रतिरक्षा, विदेश नीति, मुद्रा और संचार संबंधी नीतियां नए राष्ट्र को अपनी मर्जी से सौंप रहे हैं. वल्लभ भाई पटेल के प्रयासों का अच्छा नतीजा यह रहा कि कश्मीर को छोड़कर इन सभी राज्यों का भारत में विलय हो गया.

कश्मीर का मामला कुछ तो इसलिए अलग रहा क्योंकि पंडित नेहरू ने पाकिस्तान के साथ युद्धविराम से पहले संयुक्त राष्ट्रसंघ में वादा कर लिया था कि कश्मीर में जनमतसंग्रह कराया जाएगा, और कुछ इसलिए भी क्योंकि कश्मीर ऐसे राज्यों में शुमार था जिनमें बहुसंख्यक समुदाय पर अल्पसंख्यक समुदाय का राजा शासन कर रहा था. इसलिए इसके अंगीकार पत्र में खास तौर से कहा गया कि इस राज्य का संविधान अलग होगा और इसका प्रादेशिक नागरिकता कानून जारी रहेगा और जब राज्य में सामान्य स्थिति पूरी तौर पर बहाल हो जाएगी तब राज्य के नागरिकों की रायशुमारी की जाएगी. इसलिए भारत जबकि अपने संविधान के निर्माण में लगा हुआ था, उधर कश्मीर की अपनी संविधान सभा अलग कश्मीरी संविधान बनाने में जुटी हुई थी. भारतीय संविधान सभा के सामने, जिसमें 1949 में कश्मीर का प्रतिनिधि भी शामिल हुआ, अजीब दुविधा की स्थिति थी.

संविधान निर्माताओं के मुताबिक यह अंगीकार पत्र संधि के करार जैसा है. उन्होंने सोचा कि इसे एक ऐसा संवैधानिक स्वरूप दिया जाए जिसके तहत कश्मीर भारत का हिस्सा तो बना रहे लेकिन वह पूर्ण विलय और जनमतसंग्रह के बीच चुनाव करने के लिए आजाद भी हो.

अनुच्छेद 370 की बात यहीं से शुरू होती है. आजाद कश्मीर का सपना देखने वाले शेख अब्दुल्ला ने पाकिस्तानी दबाव टालने के लिए भारत का अंग बनने का समर्थन किया. लेकिन वे अनुच्छेद 370 के सख्त खिलाफ थे. इस अनुच्छेद के तहत जम्मू और कश्मीर भारत का अंग बनाया गया है और यह व्यवस्था की गई है कि भारतीय संसद कश्मीरियों की सहमति के बगैर कश्मीर में लागू होने वाले सभी केंद्रीय मुद्दों पर कानून बना सकती है. और सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह कि इस अनुच्छेद में संशोधन या इसे रद्द करने का अंतिम फैसला कश्मीर की संविधान सभा करेगी.

दूसरे शब्दों में भारतीय संसद चाहे भी तो भारतीय संविधान के इस अनुच्छेद में संशोधन कश्मीर की संविधान सभा की सहमति के बिना नहीं कर सकती. बहरहाल, भंग होने से पहले अगस्त 1954 में कश्मीरी संविधान सभा ने इस अनुच्छेद को मंजूरी दे दी.

आज इसी अनुच्छेद के सहारे भारतीय कानून कश्मीर में लागू हो रहे हैं. इसी अनुच्छेद के सहारे भारत सरकार इस राज्य में शासन कर रही है. तकनीकी रूप से इस अनुच्छेद को रद्द नहीं किया जा सकता क्योंकि कश्मीर की भंग संविधान सभा को अब दोबारा जीवित नहीं किया जा सकता. किसी तरह अगर इस अनुच्छेद को रद्द कर भी दिया जाए तो कश्मीर अंगीकार पत्र का वैधानिक मुद्दा उठाते हुए जनमत संग्रह कराने की मांग कर सकता है. और इस तरह कश्मीरियों को आजादी की मांग करने तथा पूरे मामले को अंतरराष्ट्रीय स्वरूप देने का बहाना मिल सकता है.

लेकिन राजनीति के तौर-तरीके निराले ही हैं. जो लोग ज्यादा स्वायत्तता की बात करते हैं और कश्मीर में भारत विरोधी जुमलेबाजियां करते हैं वे तो इस अनुच्छेद को अक्षुण्ण रखना चाहते हैं लेकिन जो लोग अलगाववाद पर काबू करना चाहते हैं वे इसे रद्द करने की वकालत करते हैं. काश! ये नेतागण इतिहास के पन्नों में भी झांकने की कोशिश करते.

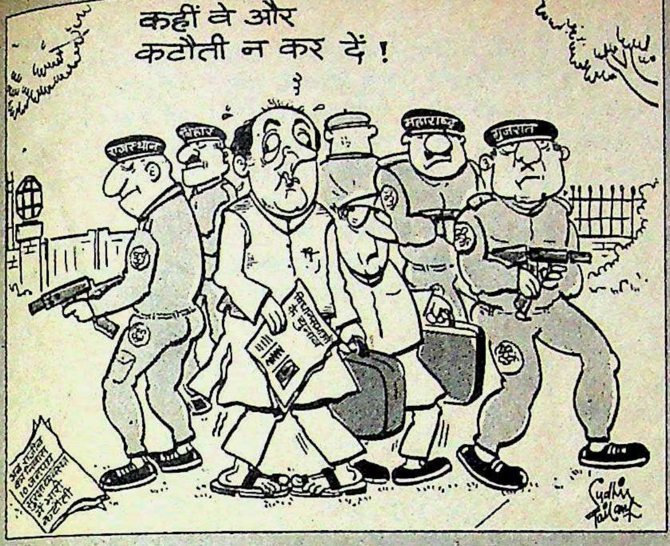

- मैं अपनी तरफ से सरकार को और तीस दिन का समय देता हूं कि मेरे खिलाफ सबूत पेश करे या वह सारे देश से माफी मांगे. **■ अमिताभ बच्चन**, *अमर उजाला*

- आप बिहार में चुनाव प्रचार करने न जाएं क्योंकि यदि आप न्याय (टिकट बंटवारे में) नहीं कर सकते तो आपको वोट मांगने का नैतिक अधिकार नहीं है.
■ हुकुमदेव नारायण यादव (बिहार जनता दल नेता) का पत्र प्रधानमंत्री को

- अगर वे (भाजपा वाले) सोचते हैं कि हम अकेले सरकार (राजस्थान में) बना सकते हैं तो हम भी बना सकते हैं.
■ नाथूराम मिर्धा (राजस्थान जनता दल अध्यक्ष), *धर्मयुग*

- अगर जयप्रकाश नारायण और अर्जुन सिंह डकैतों का हृदय परिवर्तन कर सके तो मैं क्यों नहीं कर सकता? **■ मुलायम सिंह यादव** (उ.प्र. के मुख्यमंत्री), संडे

- यदि भारत सरकार हमारा भला चाहती है तो कांग्रेस पार्टी को भंग कर देना चाहिए तथा जर्मनी की नाजी पार्टी की तरह उसे प्रतिबंधित कर देना चाहिए.
—सिमरनजीत सिंह मान, *माया*

- अगर मेरी सुरक्षा वे इसी तरह करना चाहते हैं तो ठीक है. ईश्वर महान हैं, वही मेरी रक्षा करेंगे.
■ बूटा सिंह, *संडे ऑब्जर्वर*

- बिहार का मुख्यमंत्री बनने की न तो मुझमें क्षमता है और न ही अक्ल. यह बात जरूरी है कि ज्यादातर मुख्यमंत्री ऐसे ही हैं जिनके पास न तो शक्ल है और न ही अक्ल.
■ शत्रुघ्न सिन्हा, *हिंदुस्तान*

- दरअसल विजय मांजरेकर का बेटा होने के फायदे और नुकसान दोनों हैं
■ संजय मांजरेकर, *नवभारत टाइम्स*

- मैं कभी असफल नहीं होऊंगी. मैं कभी असफल हुई ही नहीं.
■ रूपा गांगुली, *फिल्मफेअर*

- अगर मैं किसी स्कैंडल या किसी के साथ मुहब्बत में गिरफ्तार नहीं हूं तो इसका ये मतलब तो नहीं कि मैं बहुत ठंडी लड़की हूं. **■ मीनाक्षी शेषाद्रि**, *नई दुनिया*

- ये सभी (दूरदर्शन और फिल्म डिवीजन) खुद्दार आदमी को बरबाद करने वाली संस्थाएं हैं.
■ मुजफ्फर अली, *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

2.85
भारत INDIA
हांगुल
KASHMIR STAG
समय पर
इंडिया टुडे
आपके घर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर !
बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए !

नाम: ______________________
____
डाक पता: ______________________
____
____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम–चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक
की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706.
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन
MILESTONES/IT/120

दस्ते के दावे

● खास तौर पर प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए गठित 750 सदस्यों वाले विशेष सुरक्षा दस्ते (स्पेशल प्रोटेक्शन ग्रुप) को भंग करने के सवाल पर इन दिनों विवाद छिड़ गया है. इस विवाद का मुख्य मुद्दा सिर्फ यही नहीं है कि इस दस्ते की जरूरत राजीव गांधी को ज्यादा है या कि विश्वनाथ प्रताप सिंह को, और यह भी नहीं कि क्या सचमुच इस दस्ते को बने ही रहना चाहिए. इसके लिए बड़ा दबाव खुद इसके भीतर से ही उठ रहा है.

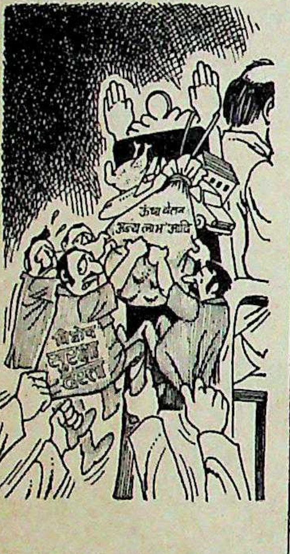

उम्मीद के मुताबिक इस दस्ते के वरिष्ठ अधिकारी इसे बनाए रखने के लिए जमकर प्रचार और जोड़-तोड़ कर रहे हैं. इसकी मुख्य वजह यह है कि अगर दस्ते को भंग किया जाता है तो इसके अधिकारियों और कर्मचारियों को वित्तीय तथा दूसरी सुविधाओं से हाथ धोना पड़ेगा. पुलिस या अर्द्धसैनिक बलों के कर्मचारियों को उनके वेतन और भत्तों में लगभग 50 फीसदी बढ़ोतरी देकर इस दस्ते में लाया गया था. उन्हें देश के भीतर और विदेश में यात्राओं के लिए भत्ता तो मिलता ही है, इसके अलावा उन्हें कार और वर्दी भत्ता भी मिला करता है. आश्चर्य नहीं कि इस दस्ते के अधिकांश कर्मचारी इन सुविधाओं को छोड़ना नहीं चाहते और अपनी सेवा तथा विशेष पहचान को बनाए रखने के लिए जोड़तोड़ कर रहे हैं. यह भी गौरतलब है कि इनमें से ज्यादातर को इंका नेताओं और वरिष्ठ अधिकारियों से अपने रिश्तों के चलते पुलिस बलों से इस दस्ते में लाया गया है. इसलिए उनकी जोड़-तोड़ का असर भी पड़ रहा है. हालांकि प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह इस दस्ते को भंग करने पर अडिग हैं परंतु तमाम जोड़तोड़ इस उम्मीद से की जा रही है कि शायद आखिरी मौके पर सिक्का चल ही जाए.

हांक और हौसले का फर्क

● कथनी और करनी में फर्क होता है. और यह फर्क राष्ट्रीय मोर्चा की सरकार भी अपने आचार-व्यवहार से उजागर कर रही है. दूरदर्शन और आकाशवाणी को स्वायत्तता देने की तमाम घोषणाएं अपनी जगह, इसके लिए वास्तव में काम करने का इरादा अपनी जगह. सरकार की तेज निगाहें हमेशा दूरदर्शन पर लगी हैं. नतीजा यह कि गिरफ्त कायम है.

इसका ताजा उदाहरण है अजरबैजान की जातीय हिंसा की खबरें प्रसारित करने के बारे में उसे दिया गया सरकारी निर्देश. दूरदर्शन के पास इस सीमावर्ती सोवियत गणराज्य में दो समुदायों के बीच हिंसक घटनाओं से संबंधित चित्र उपलब्ध थे परंतु इसके अधिकारियों से कहा गया कि समाचारों में न्यूनतम अंश ही दिखाए जाएं.

कार्टूनः अजीत नैनन

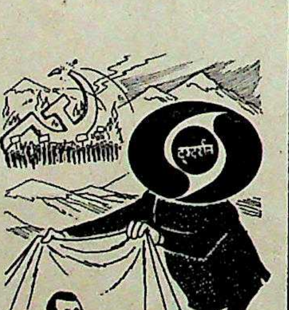

मतलब यह कि समाचार पढ़ो, घटनाओं को दिखाओ मत. वजह? सोवियत साम्राज्य को स्थानीय जनता द्वारा चुनौती दिए जाने के दृश्यों से कश्मीर के अलगाववादियों को वैसा ही कुछ करने का उकसावा मिल सकता है. जाहिर है, आजादी की हांक लगाना आजादी देने से ज्यादा आसान है.

किस्सा-ए-अकबर

● इंका में सितारे जितनी तेजी से उभरते हैं, उतनी ही जल्दी लुप्त भी हो जाते हैं. पार्टी की यह लंबी परंपरा रही है. बहरहाल, इस श्रेणी में उभर रहे ताजा नेता 'टेलिग्राफ' के पूर्व संपादक एम.जे. अकबर हैं जो अब प्रेस विज्ञप्तियां लेते नहीं, जारी करते हैं. पार्टी महासचिवों केदारनाथ सिंह और वी.एन. गाडगिल के साथ अकबर इन दिनों प्रेस कान्फ्रेंसें संबोधित करते हैं और दोनों महासचिव महोदय चुपचाप सिर हिलाते रहते हैं. वे न सिर्फ अखबारों में छपी सामग्री पर ही टिप्पणी करते हैं बल्कि सरकार पर हमला बोलने की उतावली में अक्सर समाचार एजेंसियों की उन खबरों पर भी अपनी जुबान चलाते हैं जो अभी छपने वाली होती हैं. यही नहीं, छोटे-मोटे मामलों पर भी वे मुंह खोलने से नहीं चूकते. मसलन, उनकी यह घोषणा कि राजीव गांधी ने वे सभी कारें और उपहार सरकार को लौटा दिए हैं जो उन्हें प्रधानमंत्री के रूप में मिले थे.

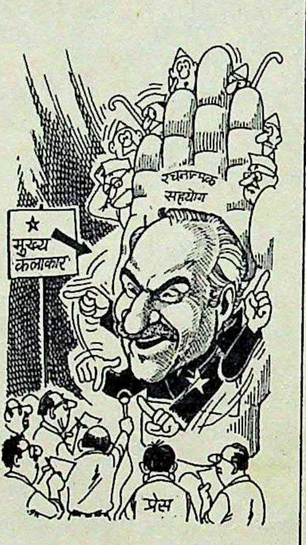

हां, अकबर के कई दावों का खंडन भी किया जा रहा है. मसलन, उनका यह आरोप कि जगमोहन को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख बाला साहब देवरस के कहने पर जम्मू-कश्मीर का राज्यपाल बनाया गया और देवीलाल ने ईसाई संप्रदाय के क्षुब्ध लोगों से न्यूयॉर्क चले जाने को कहा—इन दोनों ही बयानों को मनगढ़ंत बताया गया. लेकिन अकबर के कान पर इससे जूं तक नहीं रेंगी, वरिष्ठ इंकाई नेताओं में उनके इस रवैये पर उभरे गुस्से से भी नहीं. उनके मौजूदा रुतबे को राजीव गांधी का वरदहस्त प्राप्त लगता है लेकिन राजीव के तौर-तरीके भी अनिश्चित माने जाते हैं. आनंद शर्मा इसकी सटीक मिसाल हैं ही. अभी कल तक उनके सितारे बुलंद हुआ करते थे पर आज गर्दिश में हैं.

महाकाव्यात्मक समस्या

● अपने सामयिक राजनैतिक कटाक्षों के कारण टीवी सीरियल 'महाभारत' ने खासी लोकप्रियता पाई है. लेकिन अब हालत यह है कि यह कई राजनीतिकों के लिए असुविधाएं पैदा कर रहा है, नए शासकों के लिए भी.

विधानसभाओं के चुनाव में सीटों पर तालमेल के लिए चली सौदेबाजी के दौरान भाजपा नेताओं के सख्त रवैये को नरम करने के लिए मध्य प्रदेश जनता दल अध्यक्ष विद्याचरण शुक्ल ने प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह की लोकप्रियता का पांसा फेंका. पिछले पखवाड़े उन्होंने भोपाल में आननफानन एक रैली आयोजित की जिसमें प्रधानमंत्री को आना था. कार्यक्रम तय करने के बाद विद्याचरण को यह भान हुआ कि जिस समय भोपाल में प्रधानमंत्री का पदार्पण होना है उस समय दूरदर्शन पर 'महाभारत' आता रहेगा. कहा जाता है कि उन्होंने एक सहयोगी से कहा, "मैं नहीं चाहता कि प्रधानमंत्री की अगवानी सूनी सड़कें करें."

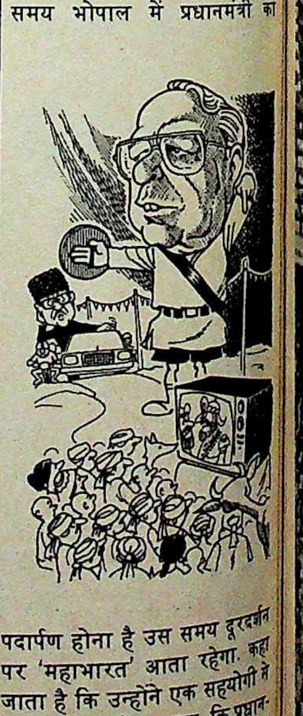

इस महाकाव्यात्मक समस्या का कोई हल न सूझता देख विद्याचरण ने अंततः प्रधानमंत्री से ही संपर्क साधा और उनसे कुछ देर बाद पहुंचने का अनुरोध किया.

को राजीव
प्त लगता है
र-तरीके भी
हैं. आनंद
मसाल हैं ही
सितारे बुलंद
गर्दिश में है.

समस्या

राजनैतिक
वी सीरियल
लोकप्रियता
त यह है कि
ों के लिए
रहा है, नए

नाव में सीटों
ली सौदेबाजी
ओं के सख्त
के लिए मध्य
विद्याचरण
पी. सिंह की
फेंका. पिछले
म में आनन-
योजित की
आना था.
बाद विद्या-
था कि जिस
ानमंत्री का

य दूरदर्शन
रहेगा. कहा
सहयोगी से
कि प्रधान-
ड़कें करें."
समस्या का
विद्याचरण
ही संपर्क
देर बाद
.

साठ साल के बूढ़े या
साठ साल के जवान?

देखा आपने? ६० साल की उम्र में भी कितनी शक्ति, कितनी स्फूर्ति! जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थकान महसूस करते हैं. क्यों?
इसका जवाब है – केसरी जीवन.
हर दिन, दिन में दो बार दो चम्मच.
ज़ाफ़रान (केसर) – अनमोल तत्व!
केसरी जीवन की बोतल खोलिए... दुनिया की सबसे महँगी जड़ी-बूटी असली ज़ाफ़रान की खुश्बू आपका स्वागत करेगी... कश्मीर की वादियों से चुना गया ज़ाफ़रान.
केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के आरोग्यकर और सौन्दर्यवर्धक गुणों के साथ ताज़ा आंवला व अन्य अनेक जड़ी-बूटियों भी तो हैं जो शरीरगठन मज़बूत बनाएं, शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त रखें, तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी के तनावों से मुक्त रखने में सहायक हों और बीमारियों से मुकाबला करने की शक्ति दें.
ज़िंदगीभर सेहत का अनमोल रत्न
आप भी पाइए. जीभर कर जीने की तरो-ताज़गी महसूस कीजिए.

झंडु
केसरी
जीवन

रग रग में जान – ज़िन्दगी की शान

ZP/21/254 HIN

चोर हो तो ऐसा

■ नागरिकों को अक्सर शिकायत रहती है कि चोरी-चकारी की शिकायतों के मामले में या तो पुलिस मामला ही दर्ज नहीं करती या फिर उस पर पूरी कार्रवाई नहीं करती. पिछले दिनों महानगर कलकत्ता के एक इलाके में नागरिकों की भी यही शिकायत थी लेकिन किसी खुराफाती चोर ने अपने हाथ का एक कमाल दिखाकर ही इन पीड़ित लोगों के दिल पर मरहम का गुदगुदा फाहा रख दिया.

सभी कार्टून: अनिल शर्मा

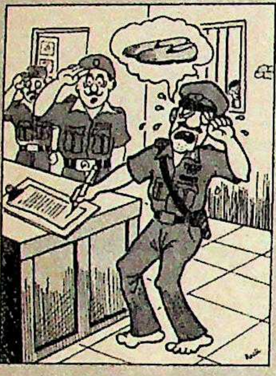

शहर के साल्ट लेक इलाके में पिछले कुछ महीनों में चोरी की वारदातें अचानक बढ़ गई. आए दिन ऐसा होने लगा कि किसी बिल्डिंग में से बिजली का जेनरेटर गायब हो गया, तो कहीं चोर लगे-लगाए पानी वाले पंप को ही उतारकर चलते बने. नागरिकों ने कई शिकायतें कीं लेकिन पुलिस को वे सक्रिय कर पाने में कामयाब नहीं हो पाए. नागरिकों की इस बढ़ती हताशा और पुलिस की बढ़ती निष्क्रियता ने चोरों की मंडली का हौसला ऐसा बढ़ाया कि एक रात स्थानीय पुलिस डीआईजी के घर में भी वे जा घुसे. हालांकि उनके हाथ बहुत बड़ा माल तो नहीं लगा पर जाते-जाते वे अपने साथ डीआईजी साहब के नफीस जूतों का एक जोड़ा जरूर लेते गए.. अगली सुबह जब अफसर महोदय के यहां हुई चोरी की खबर थाने में पहुंची तो हड़कंप मच गया. पुलिस आनन-फानन 'अटेंशन' की मुद्रा में आ गई. कई जगह छापे मारे गए, पुराने चोरों की खबर ली गई. लेकिन लगता है कि जादुई जूतों ने चोर को भी पुलिस की गिरफ्त से परे पहुंचा दिया है.

सपनों की धुलाई

■ कहते हैं कि घूरे के दिन भी फिरते हैं. और अगर दिन फिरवाने का इच्छुक मन में ठान ही ले तो उसकी मुराद पूरी होते देर नही लगती. हां, यह बात अलग है कि अगर मुराद पूरी करने के लिए कोई धांधली भरा रास्ता अपनाता है तो मुसीबत में फंसने में भी उसे देर नहीं लगती. कुछ ऐसा ही किस्सा पिछले पखवाड़े ग्वालियर के एक धोबी के साथ हुआ.

इस धोबी के यहां कपड़े धुलवाने वालों में पुलिस के लोग भी थे जिनकी कड़क वर्दी पर इस्त्री करते हुए अक्सर उसके मन में अफसर बनने की हुमक उठती थी. लेकिन इस हुमक के अलावा कोई ठोस कोशिश न करने के कारण उसका यह सपना कभी अपनी खयाली दुनिया के बाहर कदम नहीं रख पाया. आखिर पिछले पखवाड़े उसने इस इंतजार को तिलांजलि देकर शार्ट-कट अपनाने का फैसला किया और कलफ लगी एक वर्दी पहनकर मैदान में उतर ही आया.

वर्दी ने अपना रंग जमाने में ज्यादा देर नहीं लगाई और कुछ देर में ही धोबी महाशय का रौब आसमान में परवाज करने लगा. उसने कुछ लोगों को पुलिसिया अंदाज में अपने रौब की पटखनी भी दे डाली. लेकिन उसके रौब के लपेटे में कुछ ऐसे लोग भी आ गए जो उसे पहले से जानते थे. बात जल्दी ही अपने ठिकाने तक जा पहुंची और कुछ देर बाद ही पुलिस ने उसे धर पकड़ा. असली वर्दी वालों को देखते ही उसके होश ठिकाने आ गए. पिछले समाचार आने तक पुलिस हवालात में उसके सपनों की धुलाई हो रही थी.

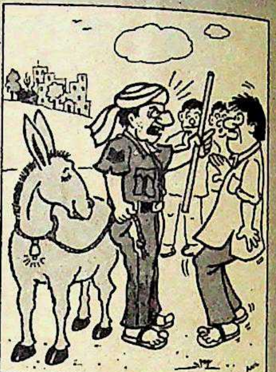

असली गणतंत्र दिवस

■ हर साल की तरह इस बार भी गणतंत्र दिवस देश भर में मनाया गया—कहीं विशुद्ध सरकारी अंदाज में फौजी परेड और बैंड-बाजे के साथ, तो कहीं स्थानीय लोगों और प्रशासकों द्वारा जोड़े गए स्थानीय रंग के साथ. उदाहरण के लिए अमृतसर के समारोह में जिला आयुक्त को 9.5 किलोग्राम वजन वाला गोभी का एक फूल भेंट किया गया और पुलिस के दो जासूस कुत्तों 'मिथुन चक्रवर्ती' और 'मिस्सी' ने भीड़ में गायब हो चुके नकली आतंकवादियों को धर पकड़ने के करतब दिखाए.

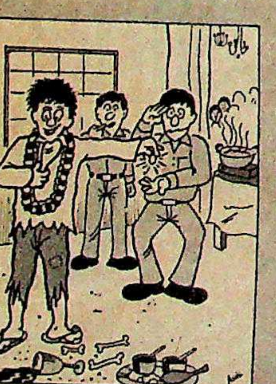

लेकिन नीमच के नागरिकों ने जिस अंदाज में गणतंत्र दिवस के मौके पर देश के असली 'गण' की ओर 'तंत्र' का ध्यान खींचा वह काफी अनूठा रहा. चालीसवें गणतंत्र दिवस की सुबह यहां के एक स्थानीय संगठन के सदस्यों ने शहर के चालीस भिखारियों को बटोरा और कारों में बिठाकर उन्हें एक बढ़िया होटल में ले गए.

वहां पहले तो फूलमालाएं पहनाकर उनका जोरदार स्वागत किया गया और फिर उन्हें सलाद, सूप और मिठाई समेत शानदार भोजन कराया गया. इस दौरान होटल के बाहर एक बैंड हवा में संगीत लहरियां भरता रहा. आदर और स्नेह के साथ कराए गए इस तृप्तिदायक भोजन के बाद भिखारी मेहमानों ने खुश होकर होटल के वेटरों को पचास-पचास पैसे टिप भी दी. मार्के की बात यह कि आयोजक इन मेहमान भिखारियों को कार में बिठाकर भीख मांगने वाले उनके अपने-अपने ठिकानों पर छोड़कर आए.

'ताऊ' के नाम पर

■ नेताओं की सफलता का पैमाना उनकी लोकप्रियता होता है. जिस नेता को जनता जितना अधिक याद करे और बात-बात में उसका उदाहरण दे बस समझिए कि लोकप्रियता की वैतरणी उसी ने पार कर ली. इस पैमाने पर अगर आज के नेताओं को नापा जाए तो मानना होगा कि उप-प्रधानमंत्री देवीलाल की तूती बोल रही है—कम-से-कम पानीपत से आने वाली खबरों में तो इस तूती की गूंज बाकी सभी राजनैतिक नगाड़ों से ऊंची सुनाई दे रही है.

पिछले पखवाड़े चौधरी साहब के नाम पर बजाई जाने वाली इस तूती ने वहां के कचहरी बाजार के दुकानदारों में ऐसा हड़कंप मचाया कि बाजार में हड़ताल हो गई. खबरों के मुताबिक पिछले कुछ दिनों से कुछ शरारती छात्रों ने यह तरीका बना रखा था कि वे किसी दुकान से सामान लेने के बाद यह कहकर वहां से रफूचक्कर हो जाते कि इसके पैसे 'ताऊ' देगा. इसकी प्रेरणा उन्हें शायद चुनावों के दौरान दिए गए कर्जमाफी वाले वादों से मिली थी.

विद्यार्थियों और दुकानदारों के बीच शुरू हुई इस अदावत ने तब एक अच्छे-खासे विवाद का रूप ले लिया जब एक दुकानदार के अनुसार एक स्थानीय कॉलेज के कुछ छात्र उसके यहां से एक रेडियो यह कहकर उठा ले गए कि 'इसके पैसे ताऊ देगा.' दुकानदारों के धीरज का बंध जैसे टूट गया. उन लोगों की ओर से स्थानीय थाने में रपट दर्ज कराई गई लेकिन जब पुलिस ने किसी को गिरफ्तार नहीं किया तो दुकानदारों ने बाजार में हड़ताल कर दी.

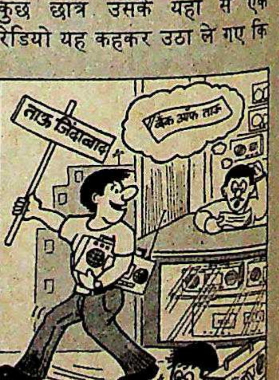

भरोसेमंद शेयर की चकाचौंध

तेजी से पांव पसारते सेरामिक टाइल उद्योग के क्षितिज पर जल्द ही एक नया नाम जगमगाने लगेगा.

स्टाइल्ज़ इंडिया लि. आंध्र प्रदेश में तिरुपति के निकट लक्ष्मीनगरम में फर्श और दीवारों के लिए सेरामिक टाइल बनाने वाली 21 करोड़ रु. की परियोजना.

जिसमें इटली की जानी-मानी **सेक्मी** कंपनी के सहयोग से दुनिया की नवीनतम तकनीक का समावेश है. अप्रैल 1990 से यहां उत्पादन भी होने लगेगा.

स्टाइल्ज़ इंडिया की शानदार शुरुआत!

आधुनिक कौशल, एकमुश्त 'फास्ट फायरिंग' टेक्नोलॉजी और देश की अत्याधुनिक भट्ठी होने से इसमें ऊर्जा की 10 फीसदी से भी अधिक बचत होगी.

प्रमुख कच्चे माल, चीनी मिट्टी का प्रबंध कंपनी अपने स्रोतों से करेगी. इसलिए इसमें लागत खर्च काफी घट जाएगा.

कंप्यूटरीकृत क्वालिटी कंट्रोल के चलते इसमें बनी हर टाइल दुनिया की कड़ी से कड़ी कसौटी पर खरी उतरेगी.

और फिर विक्रेताओं और वितरकों का विशाल तंत्र होने से हमारा माल देश भर में कुशाग्र खरीदारों के लिए उपलब्ध रहेगा.

जी हां, स्टाइल्ज़ इंडिया सेरामिक टाइल उद्योग में एकदम धूम मचा देगी. फर्श और दीवारों के लिए विभिन्न प्रकार के सेरामिक टाइल देखकर आप ठगे रह जाएंगे और इसके विविध रंग तो आपको चकाचौंध ही कर देंगे.

स्टाइल्ज़ इंडिया लि. हर प्रकार से एक भरोसेमंद औद्योगिक शेयर.

इटली की दुनिया भर में जानी-मानी 'सेक्मी' कंपनी के तकनीकी सहयोग से

स्टाइल्ज़ इंडिया लि.

◆ बी-2-703/9, रोड नं. 12, बंजारा हिल्स,
हैदराबाद-500 034

पूंजी लगाएंगे तो जानेंगे

PRESSMAN

वी.पी. सिंह और अजेय

सेंट किट्स प्रकरण

साजिश का भंडाफोड़

विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार द्वारा सेंट किट्स घोटाले की जांच से इसमें उच्चस्तरीय लोगों के शामिल होने के सबूत मिलते हैं

छह महीने पहले सामने आए सेंट किट्स प्रकरण पर खासा बावेला मचा. दरअसल आरोप बहुत गंभीर थे. यानी कैरिबियन द्वीप समूह के सेंट किट्स में प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह के 33 वर्षीय बेटे अजेय सिंह का विदेशी खाता होने के. और 2.1 करोड़ डॉलर (35 करोड़ रु.) के इस खाते के लाभभोगी खुद वी.पी. सिंह बताए जा रहे थे. वे आम चुनावों की अग्निपरीक्षा से गुजरने को मुस्तैद हो रहे थे कि यह आसमान टूट पड़ा.

इंका ने यह मसला हाथोंहाथ लपक लिया. तत्कालीन सूचना और प्रसारणमंत्री कमलाकांत तिवारी ने कह दिया, “वी.पी. सिंह जब वित्तमंत्री थे तब उन्होंने यह रकम लंदन की निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों से जुटाई. उन्होंने घूस ली और पैसा इस बैंक खाते में जमा कराया गया.” बाद में संसद पटल पर दस्तावेजों को रखते हुए तब के वित्त राज्यमंत्री एडुआर्डो फलेरो ने कहा, “इन
प्रामाणिकता पर शंका करने का हमारे
कोई आधार नहीं है.”

> *“मुश्किल...यह है कि निदेशालय को मिले दस्तावेज...सिर्फ फोटो प्रतिलिपियां हैं—इससे हस्ताक्षरों का मिलान और पुष्टि मुश्किल हो जाती है”*
>
> **के.एल वर्मा**, पूर्व प्रवर्तन निदेशक, वित्त मंत्रालय को चिट्ठी में

मूल

Vishwanadin Pratap Singh

फर्जी

> **"धमकियां लैरी कॉल्ब से मिलीं...जो सतीश शर्मा और राजीव के करीबी बताए जाते हैं. 13 अक्तूबर 1989 को उन्होंने फ्लोरिडा से फोन करके मुझसे पूछा कि भारत में मेरा बॉस कौन है"**
>
> **शिव कुमार**, त्रिनिदाद और टोबैगो में भारतीय उच्चायुक्त

इसके बाद जैसे यह घोटाला एकाएक वैसे ही चर्चा से गायब भी हो गया. सचमुच इसे बिसार देने को उत्सुक दिखी. पिछले पखवाड़े जाहिर हो गया कि नई सरकार इस मसले को भुला देने को तैयार सरकार ने अधिकारियों का एक दल का भेजा और इस मामले पर सीबीआई सक्रिय किया. वित्त मंत्रालय और प्रवर्तन निदेशालय के दस्तावेजों तथा सरकारी जांच जो कुछ पता चला है वह हैरतअंगेज है:

- वी.पी. सिंह को बदनाम करने की सारी कार्रवाई का संचालन विवादास्पद चंद्रास्वामी और विदेशी चेलों की मदद से नई ल्ली से हो रहा था.
- इस कार्रवाई में तत्कालीन विदेशमंत्री नरसिंह राव, मौजूदा सचिव एस.के. सिंह, के प्रधानमंत्री के सह- आर.के. धवन, पूर्व सचिव टी.एन. विदेश मंत्रालय में सचिव प्रकाश दिल्ली के दो पत्रकार कई मध्यम दर्जे के शामिल थे.
- कई विदेशियों को भी जुटाने के काम में गया.
- विदेशमंत्री और वित्त- के दफ्तर से सेंट किट्स अमेरिका में भारतीय को दस्तावेज में लगे विदेशियों की करने के लिए सीधे संदेश भेजे गए.

तरह सरकारी जांच-पड़ताल से वह पक्का शक सही ही साबित होगा जो अगस्त को घोटाले के उजागर होने कइयों में मन के उभरा था. मसलन, की पहली खबर दो अखबारों 'कुवैत टाइम्स' और तुर्की के 'गोल्जे आजम' ने दी.

इन दोनों अखबारों का आरोप था कि अजेय सिंह का सेंट किट्स के बेसेटर स्थित फर्स्ट ट्रस्ट कॉर्पोरेशन लि. में खाता है. अपनी रिपोर्ट की पुष्टि के लिए दोनों अखबारों ने कुछ दस्तावेजों की कॉपी छापी जिनमें दिखाया गया कि अजेय सिंह ने खाते में 2.1 करोड़ डॉलर जमा कराए. इसके लाभभोगी उनके पिता वी.पी. सिंह बताए गए.

दूसरे दिन यह रिपोर्ट 'हिंदुस्तान टाइम्स' और 'टेलीग्राफ' में भी छपी. उस समय 'टेलीग्राफ' के संपादक अब इंका के सांसद बने एम.जे. अकबर थे. कुछ दिनों तक अखबारों में इसकी चर्चा रही. इसके बाद लोकसभा चुनावों के पांच हफ्ते पहले इंका ने इस मुद्दे को संसद में उठाया. सबूत के तौर पर न्यूयॉर्क में भारतीय दूतावास के अधिकारियों द्वारा सत्यापित कुछ दस्तावेज पेश किए गए.

मामा जी (बाएं) और चंद्रास्वामी

भवान सिंह

दस्तावेजों को संसद पटल पर रखने का फैसला 13 अक्तूबर को संसद भवन में धवन के दफ्तर में हुई बैठक में किया गया. इस बैठक में तत्कालीन राजस्व सचिव नीतीश सेनगुप्त, तत्कालीन राजस्व राज्य-मंत्री अजीत पांजा, तब के प्रवर्तन निदेशक के.एल. वर्मा और आर्थिक मामलों के विभाग में तत्कालीन संयुक्त सचिव एस.एल. बजाज शामिल थे. बजाज अब अतिरिक्त सचिव हैं.

कुछ अधिकारियों के आपत्ति उठाने पर बैठक फलेरो के दफ्तर में हुई. वहां शीला दीक्षित, पूर्व वित्त सचिव गोपी अरोड़ा और शेषन भी चले आए. नई सरकार की एक संबंधित फाइल में लिखी टिप्पणी के मुताबिक दस्तावेजों की प्रति संसद में रखने का तत्कालीन प्रवर्तन निदेशक और वित्त सचिव ने विरोध किया. टिप्पणी में यह भी लिखा है कि "फिर भी (राजीव) सरकार ने इस मामले में राजनैतिक फैसला किया और कुछ दस्तावेज सदन पटल पर रखे गए."

इसके पहले राजीव सरकार ने प्रवर्तन निदेशालय को निर्देश दिया था कि अजेय सिंह को गिरफ्तार करने की संभावना की जांच की जाए. इस कदम का भी कुछ वरिष्ठ अधिकारियों ने विरोध किया.

ऐसा कोई उपाय नहीं था जिससे इन दस्तावेजों को सही साबित किया जा सके. नरसिंह राव के दबाव में न्यूयॉर्क के भारतीय वाणिज्य दूतावास ने इसका सत्यापन कुछ ही दिनों पहले किया था. यह बात पिछले महीने उस समय जाहिर हुई जब न्यूयॉर्क में भारतीय वाणिज्य दूत आर.के. राय से इस प्रकरण में अपनी स्थिति स्पष्ट करने को कहा गया.

> **"कैलाशनाथ अग्रवाल (मामा जी) ने एस.सी. गुप्त (उप-उच्चायुक्त) को फोन किया और बोलकर एक चिट्ठी लिखवाई... (जिसे) सेंट किट्स और नेविस के प्रधानमंत्री को भेजा जाना था"**
>
> **शिव कुमार**, पोर्ट ऑफ स्पेन में भारतीय उच्चायुक्त

ESCORTS

- सुगम गति के लिये 175 सी. सी. का इंजिन.
- रख-रखाव इतना आसान कि साधारण मैकेनिक भी आसानी से इसकी सर्विसिंग कर सकें.
- कम दाम के असली पुर्जे हर जगह उपलब्ध.
- वर्षों चलने के लिये मजबूत डबल क्रैडल फ्रेम.

10,00,000 से भी ज्यादा राजदूत सवार इसके साक्षी हैं.
क्रेशबार, साड़ी गार्ड, साईड स्टैंड एवं हैलमेट अतिरिक्त उपवस्तुएं हैं.

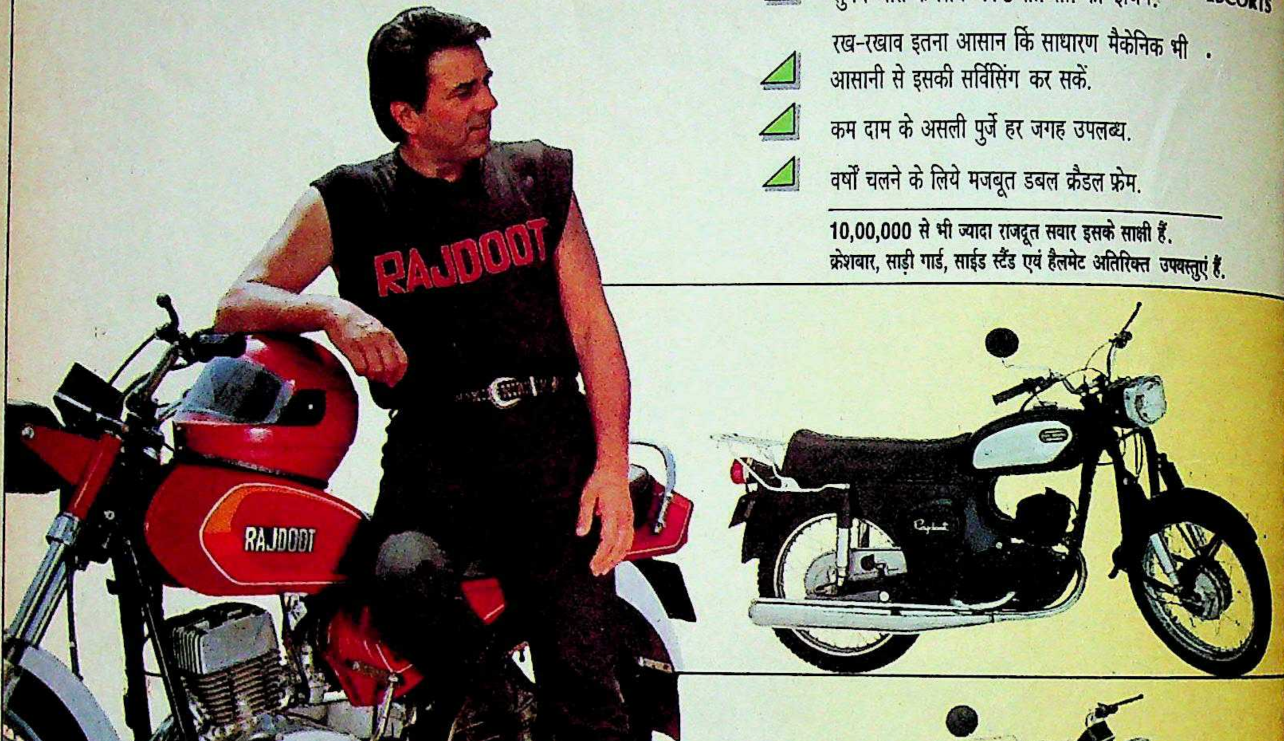

जानदार सवारी, एक शानदार सवारी

राजदूत

जाना-परखा • भरोसेमंद • बेमिसाल

हमेशा प्रयोग करें
असली
राजदूत
पुर्जे

With Love
Dharmender

AKSHARA/ESC-2517-H

"फिलहाल....स्थिति यह है कि (प्रवर्तन निदेशालय) के उप निदेशक ए.पी. नांदे द्वारा लाए गए दस्तावेजों की प्रामाणिकता की जांच अभी तक नहीं हो पाई है"

के.एल. वर्मा, 1989 में हुए आम चुनाव के बाद वित्त मंत्रालय से

सचिव एस.के. सिह को राय ने लिखा नसे 4 अक्तूबर 1989 को नरसिह राव के न्यूयॉर्क के होटल के कमरे में मिलने हा गया. राय कहते हैं, "जब मैं मंत्री से तो उन्होंने मुझसे कहा कि प्रवर्तन शालय का एक अधिकारी कुछ दस्तावेज ज्य दूतावास में सत्यापन के लिए लाएगा मुझे ही उनका सत्यापन करना है."

अधिकारी प्रवर्तन निदेशालय में उप-शक ए.पी. नांदे थे जिन्हें सेंट किट्स खाते जांच के लिए चुना गया 29 सितंबर को नांदे के एक दैनिक के के साथ सेंट किट्स ए रवाना हुए. उनकी के मुताबिक वे न्यू- और सेंट किट्स गए वहां फर्स्ट ट्रस्ट कॉर्पो- के पूर्व प्रबंध निदेशक मैक्लीन तथा बैंक से एन. साल्वेसन तथा ब्रायने से मिले. वहां सबूत के तौर पर इकट्ठा किए जिनसे सिंह के खाते की खबर साबित' होती है.

ता है, उन्होंने बड़ी में इस काम को अंजाम 30 सितंबर '89 को पहुंचने के 24 घंटे उन्होंने ब्रायने और को खोज लिया.

बाद वे मियामी से किट्स जा पहुंचे, दोनों के बयान लिये यह सब निबटाकर आठ घंटे में ही लौट आए. उनकी यात्रा कितनी थी इसका अंदाज इसी से लगाया ता है कि विमान से मियामी से पहुंचने में ही चार घंटे लग जाते हैं.

इसके तुरंत बाद नांदे दस्तावेजों के साथ वाणिज्य दूतावास में पहुंच गए. इन दस्तावेजों में मैक्लीन का बयान भी था जिसमें अजेय सिंह के खाते की पुष्टि की गई थी.

नियमों के अनुसार विदेश में तैनात भारतीय अधिकारियों को दस्तावेजों के सत्यापन का अधिकार है बशर्ते दस्तावेज में हस्ताक्षर उनके सामने किए गए हों. लेकिन इस मामले में वाणिज्य दूत राय ने मैक्लीन के हस्ताक्षर बिना उनसे मिले ही सत्यापित कर दिए. वाणिज्य दूतावास के अधिकारियों ने बैंक में जमा कराई गई रकम की रसीदों और वी.पी. सिंह तथा उनके बेटे के पासपोर्ट की प्रति को भी सत्यापित किया. संसद में सरकार का बयान इन्हीं 'सत्यापित' दस्तावेजों पर आधारित था.

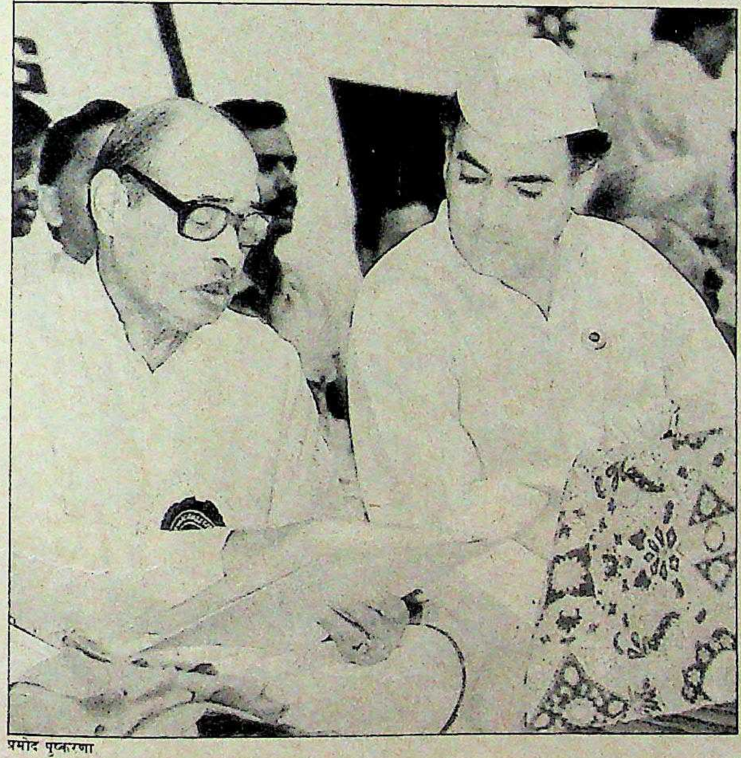

प्रमोद पुष्करणा

राजीव गांधी के साथ नरसिंह राव

यही नहीं, वाणिज्य दूतावास फर्स्ट ट्रस्ट कार्पोरेशन के एक निदेशक एलन टांक्स के अजेय सिंह के खाते की पुष्टि करने वाले बयान का भी सत्यापन किया. लेकिन खाते संबंधी बयान पर टांक्स के हस्ताक्षर गवाही के वक्त किए गए हस्ताक्षर से नहीं मिलते. इसलिए या तो बैंक खाते से संबंधित बयान पर किए गए हस्ताक्षर फर्जी थे या फिर भारतीय अधिकारियों के सामने किसी और टांक्स को प्रस्तुत किया गया था.

नांदे की उपलब्धियों पर कुछ गंभीर खामियों की वजह से पानी फिरा. एक तो यही कि साल्वेसन और ब्रायने को लिखी गई चिट्ठियां और उनके जवाब एक ही टाइपराइटर के टाइप किए गए हैं. जवाब में ऐसे मुद्दे भी उठाए गए जिनके बारे में नांदे की चिट्ठी में पूछा ही नहीं गया. और साल्वेसन तथा ब्रायने ने जिस भाषा का प्रयोग किया वह बेसेटर की नहीं बल्कि भारत के किसी सरकारी दफ्तर की भाषा लगती है. एक उदाहरण, "उक्त पत्र में उठाए गए सवाल या हमारे जवाब के बाद बातचीत में आपने जो पूछा." संयोग यह कि दोनों चिट्ठियों का मसौदा लगभग मिलता-जुलता है.

मैक्लीन ने भी नांदे को जो जवाब दिया उसकी वाक्य रचना भी भारतीय अंग्रेजी जैसी है. इसमें वे कहते हैं कि वे अजेय सिंह से कभी नहीं मिले. इससे मतलब यह निकलता है कि

"जब मैं मंत्री (नरसिंह राव) से मिला तो उन्होंने मुझसे कहा कि प्रवर्तन निदेशालय का कोई अधिकारी कुछ दस्तावेज लाएगा....और कि मैं खुद ही उनका सत्यापन करूं"

आर.के.राय, भारतीय वाणिज्य दूत, न्यूयॉर्क

> *"निदेशालय से यह भी पूछा गया कि उपलब्ध दस्तावेजों के आधार पर क्या अजेय को गिरफ्तार करना या उन पर मुकदमा चलाना संभव है....(लेकिन निदेशालय) इसके पक्ष में नहीं था"*
>
> **के.एल. वर्मा,** कैबिनेट सचिव के नाम चिट्ठी में

खाता खोलने के लिए यह जरूरी नहीं कि खाता खोलने वाला या उसका लाभभोगी उनसे खुद आकर मिले.

एक और घपला है. नांदे जब मैक्लीन से मिले तब तक वी.पी. सिंह के हस्ताक्षर वाले खाते के दस्तावेज छप चुके थे. बाद में मैक्लीन ने अपने बयान में कहा कि वी.पी. सिंह के पासपोर्ट में किए गए हस्ताक्षर के आधार पर ही उन्होंने उन्हें लाभभोगी स्वीकार कर लिया. वी.पी. सिंह के हस्ताक्षर समेत उनके पासपोर्ट की एक प्रति भी मैक्लीन के बयान के साथ सबूत के तौर पर छापी गई लेकिन वे एक बात नजरअंदाज कर गए. बैंक के साथ समझौते में वी.पी. सिंह के हस्ताक्षर हिंदी में हैं जबकि पासपोर्ट पर अंग्रेजी में.

प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारियों को अब यकीन हो गया है कि ये दस्तावेज नई दिल्ली में ही तैयार किए गए.

नामस भोजानी

एडुआर्डो फलेरोः विवाद के घेरे में

लगता है अपनी जांच-पड़तालों में नांदे ने चंद्रास्वामी से बहुत मदद ली. नई सरकार के शपथ लेने के बाद पूर्व प्रवर्तन निदेशक के.एल. वर्मा वित्त मंत्रालय को भेजे गए एक गुप्त संदेश में लिखते हैं, "नांदे ने अनौपचारिक रूप से मुझे सूचित किया कि मियामी में वे लैरी कॉल्ब के साथ चंद्रास्वामी और कैलाश अग्रवाल उर्फ मामा जी (चंद्रास्वामी के खासमखास) से मिले. मुझे यह भी बताया गया कि ये लोग उनके (नांदे के) साथ सेंट किट्स और मियामी भी गए थे."

सरकारी अधिकारियों का कहना है कि चंद्रास्वामी ने फेयरफैक्स के अध्यक्ष माइकल हर्शमैन से भी मदद देने के लिए संपर्क किया (उल्लेखनीय है कि राजीव सरकार ने वी.पी. सिंह को रिलायंस उद्योग और अमिताभ बच्चन के विदेशी खातों की जांच का काम फेयरफैक्स को सौंपने के लिए आड़े हाथों लिया था). अधिकारियों का कहना है कि चंद्रास्वामी ने सेंट किट्स प्रकरण की सारी कार्रवाई का संचालन अंतरराष्ट्रीय हथियार दलाल अदनान खाशोगी के न्यूयॉर्क स्थित अपार्टमेंट से किया.

वी.पी. सिंह पर अभियोग लगाने की राजीव सरकार की कोशिश सिर्फ चंद्रास्वामी या नांदे जैसे वफादार अधिकारियों की मदद लेने तक ही सीमित नहीं रही. उनकी सरकार अधिकारियों के कान उमेठने की रणनीति से भी बाज नहीं आई जैसा कि पोर्ट ऑफ स्पेन में भारतीय उच्चायुक्त शिव कुमार द्वारा नई सरकार को भेजी गई चिट्ठी से जाहिर है.

19 जनवरी की अपनी चिट्ठी में शिव कुमार लिखते हैं कि नरसिंह राव, कोई लैरी कॉल्ब और न्यूयॉर्क में भारतीय वाणिज्य दूतावास ने उन पर वी.पी. सिंह के खिलाफ दस्तावेजी सबूत जुटाने में चंद्रास्वामी की मदद करने के लिए दबाव डाला. शिव कुमार आगे लिखते हैं, "नांदे ने न्यूयॉर्क से फोन पर उनसे कहा कि लैरी कॉल्ब (राजीव गांधी के दोस्त) उन्हें फैक्स से कुछ भेजेंगे जिस पर 'फौरन' कार्रवाई होनी चाहिए."

इस जल्दबाजी की वजहः संसद का सत्र, जिसमें राजीव सरकार सबूत पेश करना चाहती थी, जल्दी ही खत्म होने वाला था.

शिव कुमार को कॉल्ब से फैक्स मिला. उसमें उन्हें इस मामले की जांच में मदद के लिए सेंट किट्स के प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखने का निर्देश दिया गया था. शिव कुमार का आरोप है कि फैक्स के बाद उन्हें कैलाशनाथ अग्रवाल का फोन मिला जो अपने को नरसिंह राव का करीबी दोस्त बता रहे थे. जाहिर है कि सेंट किट्स सरकार से मदद लेने के लिए शिव कुमार द्वारा अपने लेटरहेड पर औपचारिक पत्र लिखना जरूरी था. आखिरकार, भारतीय उच्चायोग का एक अधिकारी प्रधानमंत्री सीमंड्स से मिला परंतु उसने उन्हें कोई पत्र नहीं दिया. कॉल्ब काफी नाराज हुए और अधिकारियों को डांट पिलाई. उन्होंने भारतीय उप-उच्चायुक्त एस.सी. गुप्त को चिट्ठी तक लिख डाली कि "आपको मेरी सलाह है कि नीचे बताए गए तरीके से (सेंट किट्स के) प्रधानमंत्री के नाम फौरन चिट्ठी लिखें और उस पर दस्तखत करें." अधिकारियों ने उनका निर्देश मानने से मना कर दिया.

इसके कुछ समय बाद ही देश में चुनाव के बाद सरकार बदल गई. अब हिसाब-किताब बराबर करने का समय है.

—प्रभु चावला

> *"दस्तावेजों की प्रतियों को लोकसभा में प्रस्तुत करने के कदम का (मैंने) और वित्त सचिव ने विरोध किया. मगर सरकार (फलेरो) ने इस मामले में राजनीति से प्रेरित होकर फैसला किया"*
>
> **के.एल. वर्मा,** वित्त मंत्रालय से

. शिव कुमार
र्क से फोन पर
जीव गांधी के
जेंगे जिस पर
''

संसद का सत्र,
पेश करना
ने वाला था.
फैक्स मिला
च में मदद के
स के प्रधान-
ी लिखने का
या था. शिव
ारोप है कि
उन्हें कैलाश-
का फोन
ी को नरसिंह
ी दोस्त बता
है कि सेंट
से मदद लेने
कुमार द्वारा
पर औप
नखना जरूरी
र, भारतीय
एक अधि
ी सीमंड्स के
त्र नहीं दिया
अधिकारियों
ारतीय उच्च
ट्ठी तक लिख
है कि नीचे
किट्स को
ी लिखें और
धिकारियों ने
र दिया.
श में चुनाव
अब हिसाब
है.
—प्रभु चावला

बीत गये हैं
आपके 30 साल...

फिर भी रखिये क़ायम
वही सुनहरा काल!

आपके जीवन के सुहाने दिन आपके इन्तेज़ार में हैं. शानदार, विश्वासपूर्ण और उमंगों भरे दिन.

अगर आप पहले की तरह तन्दुरूस्त नहीं तो क्या?

ज़्यादा काम-धाम से थकान और तनाव महसूस करते हैं, और पुन: शक्ति चाहते हैं, तो आपके ही लिए है थर्टी प्लस.

थर्टी प्लस में है जिनसेंग...

सदियों से एशिया के साइंटिस्ट जिनसेंग का महत्व मानते आए हैं. अपने शक्ति दायक तत्वों के कारण आज जिनसेंग की बेहद मांग है.

जिनसेंग सुरक्षित है और प्राकृतिक उत्तेजना दायक भी. अपनी तन्दुरुस्ती, दम और कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए कई खिलाड़ी इसे इस्तेमाल करते हैं.

दुनिया के जाने-माने लोग जिनसेंग इस्तेमाल करते रहे हैं, जिन में इन्दिरा गान्धी, हेन्री किसिंजर और मार्लन ब्रांडो शामिल हैं.

... और अश्वगन्धा

हमारे अपने देश की जड़ अश्वगन्धा का उल्लेख वेदिक साहित्य में एक आयुर्वेदिक टॉनिक और स्वास्थ्य वर्धक ख़ूराक के रूप में है.

थकान, तनाव और लम्बी बीमारी से उत्पन्न कमजोरी में अश्वगन्धा मांसपेशियों को ताक़त देती है और शरीर में ताज़ा शक्ति दौड़ाती है.

बैहतरीन ताल-मेल

कोरियन जिनसेंग और अश्वगन्धा दोनों ही उमंग-तरंग भरे तत्वों के लिए जाने-माने हैं. अध्ययन से भी सिद्ध हो चुका है कि इन दोनों के बारे में जो विश्वास हैं, वे सही हैं.

थर्टी प्लस. यानी एक कैप्स्यूल में जिनसेंग और अश्वगन्धा का शानदार ताल-मेल.

शक्ति से भरपूर थर्टी प्लस आपको दे चुस्ती-फुर्ती और तन्दुरुस्ती ताकि आपको मिले सहन-शक्ति और तनाव से मुकाबला करने में मदद, साथ ही ताक़त में वृद्धि. और सुहाने दिनों का भरपूर आनंद.

Thirty Plus
ENERGY
RECHARGERS

आप के लिए दम-दमा-दम

30+
Thirty Plus
ENERGY
RECHARGERS
10 capsules of Ginseng and Ashwagandha

A product of ajanta pharma limited
21-31 Satyam, 318 Linking Road, Khar (West), Bombay 400 052.

विधानसभा चुनाव

राजा की कसौटी

सत्ताइस फरवरी को हो रहे विधानसभा चुनाव वर्तमान प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के बीच शायद सबसे कांटे की और निर्णायक राजनैतिक टक्कर साबित होगी. ये चुनाव नवंबर में हुए लोकसभा चुनाव जितने नाटकीय बदलाव लाने वाले भले न दिखें लेकिन ये मिनी आम चुनाव की तरह ही हैं. आठ राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश की कुल 1619 विधानसभाई सीटों का फैसला इन चुनावों में होना है. इनमे से 1081 सीटें अभी इंका के पास हैं.

यह मिनी आम चुनाव कांग्रेसी संस्कृति में पनपे, उभरे दो नेताओं के भविष्य का तो फैसला करेगा ही, अगले पांच वर्षों के लिए देश की राजनीति और नेताओ की दिशा भी तय करेगा तथा भावी राजनैतिक कार्यसूची का चरित्र भी.

इस बार विपक्षी पार्टियां उतनी एक नहीं हैं और न ही इंका को पछाड़ने के लि उनके पास कोई चुनावी मुद्दा है. लोकस चुनाव में उनके पास नारा था—'राजी गांधी हटाओ'. यह नारा हिंदीभाषी क्षेत्रों उनके लिए फलदायी भी रहा. लेकि विधानसभाओं के चुनाव में विपक्ष के बंटे हो की मुख्य वजह यह है कि राज्यों में जनत दल के भीतर मुख्यमंत्री पद के अनेक दावेदा पैदा हो गए हैं. ऐसे प्रत्ये नेता ने अपने अधिक अधिक समर्थकों को टिक दिलवाने की कोशिश की.

परिणाम यह हुआ कि जनता दल और भारती जनता पार्टी, दोनों बिहार, गुजरात औ राजस्थान में तिको मुकाबलों में फंस गई नामांकन पत्र वापस लेने समय समाप्त होते ही स्पष्ट हो गया कि भाज और जनता दल के उम्मी वार करीब 30 फी सीटों पर एक-दूसरे खिलाफ लड़ेंगे (देखें चार्ट इससे इंका को फायदा हो

सभी फोटो: प्रशांत पंजियार

इन विधानसभा चुनावों में राजीव गांधी को उन गलतियों को सुधार का मौका मिला है जिनके चलते उनकी गद्दी छिनी. उनके लिए यह राजनीति में फिर पांव जमाने का अवसर है...

राजीव की आन

इन चुनावों से साबित हो जाएगा कि ता दल, और खास तौर से इसके नेता ी. सिंह में वोट बटोरने का जादू करार है या नहीं. लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह है कि ये चुनाव केंद्र की अल्पमत ार के कामकाज पर एक जनमत संग्रह होंगे. इन चुनावों में यह भी साबित होगा वी.पी. सिंह में पार्टी की नैया खेने की ता है या नहीं. अगर वे असफल होते हैं तो मतलब निकाला जाएगा नवंबर के चुनाव में वोट के पक्ष में नहीं, इंका के लाफ पड़े थे. तब इंका का बल ही नहीं बढ़ेगा, ता दल के भीतर हताशा आ सकती है.

दूसरी ओर, पिट चुकी ा और इसके निस्तेज के लिए ये चुनाव डूबते तिनके का सहारा जैसे रहे हैं. निजी तौर पर व गांधी के लिए तो यह गलतियों को सुधारने स्वर्णिम अवसर है जिनके उनकी गद्दी छिन गई पिछले चुनाव से उन्होंने सबक लिए हैं. पहला सबक: लोकसभा चुनाव में वोट बदलाव के लिए डाले गए. इसलिए जोर बदलाव पर.

और, इस बार राजीव गांधी ने बदलाव इंका संसदीय बोर्ड के माध्यम से किए. उन्होंने विधानसभाओं के चुनाव में बड़ी संख्या में नए लोगों को टिकट दिलवाए. पिछले संसदीय चुनाव में जिन विधायकों के क्षेत्र में इंका 10,000 से अधिक वोटों से पीछे रही थी, उन्हें (आम तौर पर) टिकट नहीं दिया गया. परिणाम यह हुआ कि अधिकांश मौजूदा विधायकों को टिकट नहीं मिले. मध्य प्रदेश के 250 इंका विधायकों में से 124 के टिकट कट गए. राजस्थान में 49 विधायकों को, जिनमें छह तो हरिदेव जोशी मंत्रिमंडल के सदस्य हैं, टिकट नहीं दिया गया. ओडीसा में सर्वशक्तिमान मुख्यमंत्री रहे जानकी वल्लभ पटनायक को भी टिकट नहीं मिल पाया.

अपनी पार्टी में यह 'सफाई अभियान'

उधर वी.पी. सिंह के लिए ये चुनाव मतदाताओं को आकर्षित करने की उनकी क्षमता की परीक्षा के साथ ही उनकी सरकार के कामकाज पर जनमत संग्रह भी साबित होंगे

अगर राजीव पिछले लोकसभा चुनाव के समय ही चलाते तो अधिक फायदा होता. तब उनकी किसी भी बात का विरोध नही होता क्योंकि पार्टी पर उनकी पकड़ थी और राजनैतिक माहौल भी अस्पष्ट था. जोखिम लेने का भी खास समय होता है. यह भी माना जाता है कि जीत से एकता मजबूत होती है और पराजय से बिखराव बढ़ता है.

बहरहाल, जैसे-जैसे चुनाव पास आते गए, इंका में अजीब घटनाएं घटने लगीं. महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री शरद पवार ने उम्मीदवारों की सूची में अपने लोगों को भर दिया और पार्टी में बगावत-सी छिड़ गई. इससे भी बुरी चीज यह हुई कि गुस्सा सीधे राजीव के खिलाफ निकला. पूर्व उप-मुख्यमंत्री नासिक राव तिरपुडे और पार्टी के वरिष्ठ नेता रफीक जकारिया पार्टी छोड़कर जनता दल में शामिल हो गए.

असंतुष्ट नेताओं द्वारा पार्टी छोड़ने का जो क्रम शुरू हुआ वह धीरे-धीरे भागमभाग की स्थिति में बदलता गया. बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री अब्दुल गफूर ने पार्टी छोड़ दी. मध्य प्रदेश में मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल, माधव राव सिंधिया और मोतीलाल वोरा की नई त्रिमूर्ति ने अर्जुन सिंह के समर्थकों की जगह अपने लोगों को टिकट दिलवाए.

केंद्रीय नेतृत्व की कमजोरी को भांपते हुए मुख्यमंत्रियों ने अपनी ही चलाने की धमकी दे दी. राजस्थान के मुख्यमंत्री के करीबी माने जाने वाले एक नेता कहते हैं, "अगर हमें दिल्ली के समर्थन के बिना अपने ही बल पर चुनाव लड़ना है तो जाहिर है कि उम्मीदवारों की सूची भी हमारी ही होनी चाहिए."

इस विद्रोह का मुख्य कारण तो उनकी कार्यशैली में बदलाव न आना ही है. राजीव की रणनीति आत्मविश्लेषण पर आधारित न होकर अपना एकाधिकार बनाए रखने की प्रवृत्ति का नतीजा दिखती है. आज भी वे उसी मंडली की सलाह पर चल रहे हैं जिसकी सलाह ने पिछले चुनाव में पार्टी का बेड़ा गर्क कर दिया था. मणिशंकर अय्यर, एम.जे. अकबर, जैसे 'चिंतकों'; आर.के. धवन, माखनलाल फोतेदार जैसे 'तिकड़मियों' और सतीश शर्मा जैसे 'बदनाम' लोगों की सलाह आज भी उनके लिए सबसे ज्यादा अहमियत रखती है.

विधानसभाओं के चुनाव का मसला राजीव गांधी के लिए अगर परेशानियां पैदा कर रहा है तो वी.पी. सिंह की नींद भी उडी ही हुई है. जनता दल के गठन के समय जो विवाद उठे थे और जो लोकसभा चुनाव से पहले टिकट बांटते समय अधिक जोर से उभरे थे, वे फिर और जोर से उभर आए और सब गुड़गोबर होता दिखा.

राजस्थान में देवीलाल ने अपने 10 रिश्तेदारों को टिकट दे दिया. बिहार में जेपी आंदोलन में प्रमुख नेता रहे शिवानंद तिवारी का टिकट चंद्रशेखर ने कटवा दिया. राज्य संसदीय बोर्ड ने उनका नाम मंजूर कर दिया था. अब तिवारी बागी बनकर चुनाव लड़ रहे हैं. पार्टी के विभिन्न घटकों की ऐसी लड़ाई में वी.पी. सिंह को हर तरह की भूमिका निभानी पड़ी—नेता की भी और मान-मनौवल करने वाले की भी.

राजस्थान और गुजरात की जनता दल की इकाइयों ने अकेले ही चुनाव लड़ने का आत्मघाती फैसला कर लिया था. वे भाजपा से तालमेल नहीं करना चाहती थीं. इन दोनों प्रदेशों के मामले में वी.पी. सिंह को खुद पहल करनी पड़ी ताकि गैर-कांग्रेसी वोट नहीं बंटें. और ये बातें मनवाने के लिए उन्होंने अपना पुराना 'हथियार' ही अपनाया. उन्होंने राजस्थान जनता दल के नेताओं से साफ कह दिया कि अगर वे लोग सीटों पर तालमेल नहीं करते हैं तो वे राजस्थान में चुनाव प्रचार करने जाएंगे ही नहीं. गुजरात में भाजपा और जनता दल द्वारा अपनी-अपनी पूरी सूचियां जारी कर देने के बाद भी वी.पी. सिंह ने राज्य जनता दल के नेता चिमनभाई पटेल को तालमेल का फार्मूला तय करने के लिए विमान भेजकर दिल्ली बुलवाया.

वी.पी. सिंह उसी रणनीति के सहारे फिर से चुनाव लड़ना चाहते हैं जिसने लोकसभा चुनाव में जीत दिलवाई थी. इसी बात को ध्यान में रखकर वे भ्रष्टाचार के मुद्दे को चुनाव तक जिंदा रखना चाहते हैं. विधानसभा चुनाव के समय ही सीबीआई की टोली द्वारा बोफोर्स तोप सौदे के दलालों का नाम पता करने की कोशिश में जुटना इसी बात का प्रमाण हैं.

हालांकि वे अच्छी तरह जानते हैं कि हिंदू वोट अभी भी भाजपा के पक्ष में ही जाएंगे, इसलिए वे मुसलमान मतदाताओं को अपने पक्ष में ही बनाए रखना चाहते हैं. राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण चार महीने के लिए टलवा लेने में उन्हें मिली सफलता इस संदर्भ में बहुत महत्वपूर्ण है. यह सफलता उन्होंने भारत-पाक सीमा पर तनाव का हवाला देते हुए बहुत ही होशियारी भरी अपील के जरिए हासिल की. इस अपील के जरिए उन्होंने अपनी राजनैतिक सूझबूझ का परिचय दिया. उन्होंने स्पष्ट संकेत दिया था कि मंदिर निर्माण मौजूदा स्थिति में राष्ट्रीय हितों के खिलाफ होगा. परिणामस्वरूप विश्व हिंदू परिषद के नेताओं के सामने भी मंदिर निर्माण की तारीख 14 फरवरी से आगे टालने के सिवा कोई चारा नहीं रहा. इस फैसले का स्पष्ट संदेश मुसलमानों के लिए भी था कि वी.पी. सिंह ने उनके हितों की रक्षा की है.

चालाकी भरी एक और रणनीति के तहत उन्होंने इंका के लोगों का दलबदल कराके उन्हें जनता दल में शामिल किया. 1988 के उपचुनाव में उनके खिलाफ इंका के उम्मीदवार रहे सुनील शास्त्री जनता दल में आ गए. इससे पहले महाराष्ट्र के पूर्व मुख्यमंत्री बाबा साहेब भोंसले और शालिनीताई पाटील जनता दल में आ चुकी

राजनैतिक गठजोड़

सीटों की संख्या

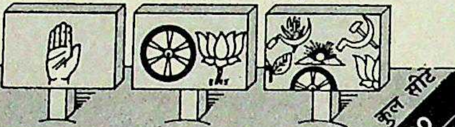

	इंका	जद-भाजपा गठजोड़	बहुकोणीय मुकाबला	कुल सीटें
अरुणाचल प्रदेश	60		60	60
बिहार	324	84	240	324
गुजरात	182	136	46	182
हिमाचल प्रदेश	68	68		68
मध्य प्रदेश	320	300	20	320
महाराष्ट्र	288		288	288
ओडीसा	147		64	147
पांडिचेरी	30		30	30
राजस्थान	200	160	40	200

(ओडीसा में बाकी 83 सीटों पर सीधा मुकाबला है)

लोकसभा चुनाव की तरह इस बार जनता दल और भाजपा में सीटों का तालमेल नहीं हो सका है और वे 30 फीसदी स्थानों पर एक-दूसरे के खिलाफ भिड़ेंगी

भी मुसलमानों में अपनी लोकप्रियता बनाए रखने के लिए उन्होंने जकारिया से जनता दल में शामिल होने का आग्रह किया. उधर गफूर ने भी मुस्लिम हितों के संरक्षण के मामले में उनमें विश्वास जताया है. और फिर, वी.पी. सिंह अपनी और राजीव गांधी की काम करने की शैली में फर्क को उजागर करने की कोशिश भी कर रहे हैं.

अंततः दोनों ही प्रचार नायक एक भंवर में फंसे हुए लगते हैं. इंका की हार से पार्टी के भीतर राजीव के खिलाफ एक नए अभियान की शुरुआत हो सकती है, जिससे अंततः पार्टी टूट सकती है. और अगर जनता दल का प्रदर्शन खराब रहा तो वी.पी. सिंह की पकड़ ढीली पड़ सकती है. यानी उनकी छवि सरकार के दो पायों—भाजपा और वामपंथियों—की कठपुतली की रह जाएगी. इस हालत में भाजपा असली विजेता बनकर उभरेगी जो इन चुनावों के माध्यम से शक्तिकेंद्र बनने की सोच रही है.

—भास्कर राय

भाजपा

महाबली बनने का मंसूबा

उत्तर-पश्चिम भारत में प्रभावी ताकत के रूप में उभरने की जबरदस्त तैयारी

पिछले नवंबर के लोकसभा चुनाव में अप्रत्याशित रूप से 86 सीटें बटोरकर ताकतवर 'किंगमेकर' बन गई भारतीय जनता पार्टी अब विधानसभा चुनाव में नए शक्तिकेंद्र के रूप में उभरने को तैयार दिखती है. यह नए दशक की सबसे महत्वपूर्ण घटना साबित हो सकती है. पार्टी को अब इंतजार है भारतीय राजनीति में नए महाबली के रूप में उभरने का.

पार्टी अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी को यकीन है कि पांच राज्यों में भाजपा के मुख्यमंत्री होंगे और इन राज्यों में वह अपने बूते सरकार बनाने में सफल होगी. इस तरह पार्टी उत्तर-पश्चिम भारत में प्रभावी ताकत के रूप में उभरने को कृतसंकल्प है.

जनता दल के साथ सीटों के तालमेल को लेकर भाजपा नेताओं ने जिस आत्मविश्वास से बात की उससे भी उनका संकल्प झलकता है. आडवाणी के साथ कुशाभाऊ ठाकरे, मुरली मनोहर जोशी, सुंदर सिंह भंडारी, गोविंदाचार्य और कैलाशपति मिश्र जैसे नेताओं ने जनता दल के साथ बातचीत में सोची-समझी रणनीति अपनाई. एक तो यह कि अपने गढ़ों में अकेले ही मैदान मारा जाए. दूसरे, बिहार और ओडीसा जैसे राज्यों में तालमेल में उदारता बरतते हुए गैर-इंकाई वोटों को बंटने से रोकने की कोशिश की जाए (देखें नक्शा).

पिछले लोकसभा चुनाव में भाजपा ने जनता दल को समायोजित करने के वास्ते कई स्थानों से अपने कदम वापस खींचे थे. लेकिन इस बार उलटी रणनीति अपनाई गई. मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश जैसे उसके गढ़ों में जनता दल ने अपनी ताकत से ज्यादा सीटें मांगी तो पार्टी ने त्रिकोणीय मुकाबलों से भी परहेज न करने का इरादा जताया.

मध्य प्रदेश और हिमाचल में तो पार्टी को स्पष्ट बहुमत पाने की उम्मीद है जबकि राजस्थान और गुजरात में वह जनता दल के साथ सत्ता में साझीदार बन सकती है. महाराष्ट्र में भाजपा-शिवसेना गठजोड़ सत्ता का प्रबल दावेदार है. जब दिल्ली में चुनाव होंगे तो यहां भी भाजपा के सत्तारूढ़ होने की स्थिति दिख रही है. विधानसभा चुनाव में मजबूत स्थिति के मद्देनजर राज्यसभा में

रैली में वाजपेयी, आडवाणी और खुराना

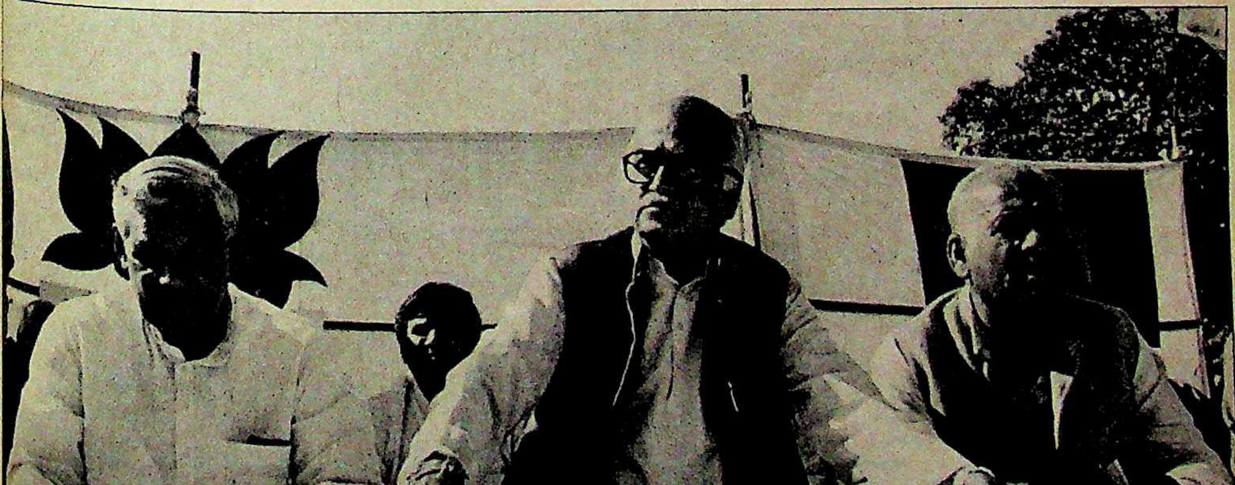

प्रमोद पुष्करणा

भी इसकी ताकत बढ़नी ही है.

नतीजतन '80 के दशक में पार्टी में छायी हताशा की जगह अब उत्कट आशावादिता ने ले ली है. इसने मुख्यधारा की स्थायी और जनाधार वाली पार्टी की तरह अपनी भविष्य की योजनाएं भी बनानी शुरू कर दी हैं. पार्टी ने नया सदस्यता अभियान चलाने की योजना बनाई है. अभी पार्टी के 30 लाख सदस्य हैं. संगठनात्मक चुनाव भी साथ ही होंगे और इससे नया नेतृत्व उभर सकता है. दूसरी पार्टियों के विपरीत भाजपा आंतरिक अनुशासन पूरी निर्ममता से लागू करने की सोच रही है. लोकसभा चुनाव में सफलता दिलाने वाली पार्टी के पदाधिकारियों में से 20 फीसदी की छंटनी की जाने वाली है.

इसका अंतिम लक्ष्य? जैसा कि पार्टी महासचिव और विचारक मुरली मनोहर बताते हैं, "हम सतत प्रगति की ओर बढ़ रहे हैं और ऐसी स्थिति भी आ सकती है जब हम देश में प्रभावी ताकत बनकर उभरेंगे."

पार्टी ने पिछले चार बरस से जिस सूझबूझ से तैयारियां की हैं, उससे तो यही लगता है कि राष्ट्रीय राजनीति में प्रभावशाली बनने की उसकी आकांक्षा कोरी कल्पना नहीं है. मई 1986 में आडवाणी ने पार्टी के लिए नई योजना बनाई और इसकी अलग वैचारिक पहचान पर जोर दिया जाने लगा.

साथ ही किसानों में अपना असर बढ़ाने के लिए भाजपा ने पहली दफा उनसे संबंधित मुद्दों को गंभीरता से उठाया. राजस्थान और गुजरात में पार्टी के नवगठित किसान सेल ने कर्ज मुक्ति आंदोलन चलाया जो किसानों के बीच काफी लोकप्रिय रहा.

लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है पार्टी का अपने मूल संगठन—राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ—से मेल बैठना. इस रणनीति की सफलता इससे जाहिर होती है कि पिछले चुनावों में संघ कार्यकर्ताओं ने भाजपा के लिए काम किया ही और इस समय भी करेंगे.

पार्टी के रणनीतिज्ञों के मुताबिक महज 5 फीसदी वोटों की बढ़ोतरी से भाजपा ने 1984 के लोकसभा चुनाव में मिली दो सीटों से मौजूदा 86 सीटों का फासला तय कर लिया. पार्टी महासचिव सुंदर सिंह भंडारी कहते हैं कि इस 5 फीसदी महत्वपूर्ण बढ़ोतरी का आंशिक श्रेय पार्टी के उम्दा सांगठनिक क्रियाकलापों को है और अंशतः राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद से बने 'भावनात्मक रुझान' को. विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के कार्यकारी अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया का दावा है कि पिछले साल देश भर में रामशिला पूजन में करीब 11 करोड़ लोगों ने हिस्सेदारी की.

हालांकि पार्टी के विचारक इसकी चुनावी सफलता का श्रेय महज राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद मुद्दे को ही देने को तैयार नहीं हैं. वे इसे ज्यादा बड़े परिप्रेक्ष्य में देखते हैं. उनके लिए भाजपा का हिंदू पुनरुत्थानवाद 'राष्ट्र के रूप में भारत की पहचान की पुष्टि' है. जोशी इसकी एक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं, "नेहरूवादी संस्थाओं का ढांचा यूरोपीय लोकतंत्रों की नकल है और यह देश की बौद्धिक परंपरा के अनुकूल नहीं बैठता."

बहरहाल, भाजपा की सफलता इस नई जागरूकता का नतीजा है या महज चुनावी जोड़तोड़ का, यह तो भविष्य ही बताएगा. लेकिन फिलहाल तो पार्टी अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने को तत्पर दिखती है. **—भास्कर राय**

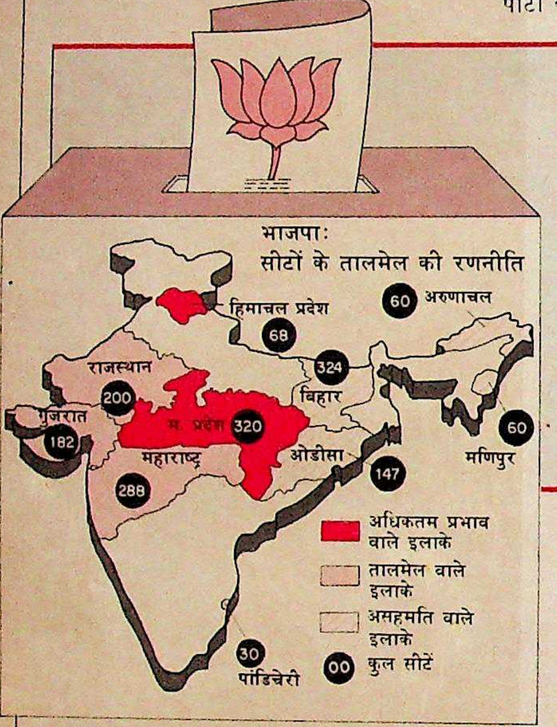

नक्शा: बी.के. शर्मा

नवंबर की तरह भाजपा ने जनता दल को समायोजित करने की नरमी दिखाने की जगह एकदम उलटी रणनीति अपना ली है

महाराष्ट्र

कई दावेदार

कोई दल स्पष्ट बहुमत न पाएगा

मैदान एक और उम्मीदवार कई. ऐसे में घमासान होना तो तय ही है. और नतीजा? कोई भी अंदाज लगा सकता है.

महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव प्रचार जोर पकड़ने के साथ ही जानकार लोग विधानसभा में किसी को स्पष्ट बहुमत न मिलने की भविष्यवाणी करने लगे हैं. वजह कुल 288 सीटों मे से अधिकांश पर इंका-रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया गठजोड़, शिवसेना-भाजपा गठजोड़, जनता दल की अगुआई वाले मोर्चे और इंकाई बागियों वाली महाराष्ट्र इंदिरा कांग्रेस के बीच चौकोनी मुकाबला है. इसके अलावा प्रकाश आंबेडकर की अगुआई में रिपब्लिकन पार्टी के एक धड़े और शिवसेना तथा भाजपा के विद्रोही उम्मीदवारों के कई सीटों पर खड़े होने से स्थिति और भी पेचीदा हो गई है.

हर पार्टी विद्रोह भड़कने से अपने को कमजोर पा रही है. लेकिन विद्रोह से इंका को सांघातिक घाव सहने पड़े हैं. इंकाई विद्रोहियों की नवगठित पार्टी महाराष्ट्र इंदिरा कांग्रेस ने लगभग 200 उम्मीदवार खड़े करने का दावा किया है. ये विद्रोही दर्जन भर सीटों से ज्यादा तो नहीं जी

सभी तालिकाएं: राजीव

कुल सीटें	288
कुल मतदाता:	4,71,87,773

1985 के चुनावों के बाद पार्टियो की स्थिति

इंका	162
कांग्रेस (स)	54
जनता पार्टी	20
भाजपा	16
अन्य	36

सनकी सुझाव

खुद को अमेरिका में उपभोक्ता सामान का बिचौलिया बताने वाले कल्की गौड़ को पिछले चुनाव में लुभावने नारों के बूते हजार वोट मिल गए थे. इस बार भी उन्होंने कोलाबा विधानसभा क्षेत्र की दीवारों को अजीबोगरीब नारों से पोत दिया है. जैसे 'तिब्बत को मिला लो' और 'राजीव पर देशद्रोह के लिए मुकदमा चलाओ'.

सभी कार्टून: अजीत नैनन

अब
तीन सुविधाओं
का
लाभ
उठाइए

घर बैठे ही

इंडिया टुडे
समय पर...
आपके घर.

कैसे?
जानने के लिए इसे पलटिए.

इंडिया टुडे

पाइए

1

समय पर

2

सुरक्षित रूप से घर पर
आप तक पहुंचे — मुफ्त

3

5.50 रु. में ही
हालांकि नया मूल्य
7 रु. है

साथ ही
विशेष
जोखिम-रहित पेशकश

धन बचत कूपन
इस पत्र के उलटी तरफ संलग्न है.

पवार (बाएं) और ठाकरे

ने पर ये इंका के वोट बैंक में सेंध लगाने क्षमता तो रखते ही हैं.

विद्रोह भड़कने का बड़ा कारण उम्मीद- ों के चयन का मुख्यमंत्री शरद पवार का का है. हाल तक प्रदेश अध्यक्ष रहीं भा पाटील इंका की भीषण हार की विष्यवाणी करती हैं. उनका नाम भी उन ों में शुमार है जिन्हें टिकट नहीं मिल ा पर अभी तक वे इंका में बनी हुई हैं.

हालांकि दूसरे दो वरिष्ठ नेताओं—पूर्व -मुख्यमंत्री नासिकराव तिरपुडे और इंका उपाध्यक्ष डॉ. रफीक जकारिया इसे पार्टी छोड़ने का सही समय माना. इन दोनों को उम्मीदवार बनाने की श की गई थी पर बाद में चली जोड़- की वजह से उन्हें दरकिनार कर दिया . जकारिया और तिरपुडे ने आरोप या कि पार्टी के आधे से ज्यादा उम्मीद- पवार खेमे के हैं. विदर्भ क्षेत्र के दिग्गज पुडे ने संवाददाता सम्मेलन में भावुक र घोषणा की कि वे जनता दल में मिल हो रहे हैं. उन्होंने राजीव गांधी पर बोला, "मौजूदा नेतृत्व के तहत इंका कोई भविष्य नहीं है."

इंका के लिए ये घटनाएं अनिष्टकारी हैं. के लोकसभा चुनाव में पार्टी को 48 में 28 सीटों पर ही विजय मिली जबकि सेना-भाजपा गठजोड़ ने 14 सीटें झटक . राज्य में इस गठजोड़ की पहले कोई नहीं थी. गौरतलब बात यह है कि के लोकसभा चुनावों के मुकाबले इस सत्तारूढ़ दल ने करीब 6 फीसदी वोट दिए. और चूंकि पार्टी को हमेशा लोक- चुनाव में ही ज्यादा वोट मिलते रहे हैं मार्च महीने में राज्य में सत्ता परि- की संभावना प्रबल है.

वैसे, शिवसेना और भाजपा दोनों के पाले भी विद्रोह भड़का है. महत्वपूर्ण मराठ- क्षेत्र में शिवसेना का एक प्रभावी धड़ा या और भाजपा के विद्रोहियों के साथ गया. हालांकि ये लोग ज्यादा-से-ज्यादा ही मचा सकने की स्थिति में हैं. पर पैदा करने वाली दूसरी घटनाएं भी कई हिंदू संगठनों ने विश्व हिंदू परिषद और आरक्षण का विरोध करने के लिए सेना प्रमुख बाल ठाकरे की आलोचना की है.

जनता दल लोकसभा चुनाव के मुकाबले इस बार बेहतर परिणाम ला सकता है पर वह भी असंतोष से मुक्त नहीं है. टिकट वितरण के खिलाफ पार्टी के लोगों ने इसके प्रदेश मुख्यालय पर प्रदर्शन किया. पर ऐन मौके पर कई इंकाई दिग्गजों के इसमें शामिल होने से इसका प्रभाव क्षेत्र बढ़ सकता है. और जब प्रचार आखिरी दौर में पहुंचेगा तब अफरातफरी का माहौल और स्पष्ट हो जाएगा. नतीजे तो अनिश्चित जान पड़ते ही हैं इसलिए अधिकांश पार्टियों के नेता एक भविष्यवाणी करने लगे हैं—नई सरकार के शपथ ग्रहण के पहले खरीद-फरोख्त का सिलसिला चलेगा.

—एस. रहमान

मध्य प्रदेश

अबकी टूटेगा गढ़

तीन मोर्चों का संघर्ष

इस महीने विधानसभा चुनाव के दौर से गुजरने वाले राज्यों में सबसे ज्यादा जटिल और संघर्षपूर्ण मुकाबले मध्य प्रदेश की 320 सीटों पर होने जा रहे हैं. मूलतः तीन मोर्चे जोर आजमाइश कर रहे हैं. ये हैं—सभी सीटों पर उम्मीदवार खड़े करने वाली इंका, 270 सीटों के लिए लड़ रही भाजपा और जनता दल जिसने अपने वामपंथी सहयोगियों के साथ 137 सीटों के लिए उम्मीदवार खड़े किए हैं. इसके अलावा 191 सीटों पर किस्मत आजमा रही छुपी रुस्तम बहुजन समाज पार्टी (बसपा) भी है

फिर आंकड़ों के हिसाब से इंका की हालत बहुत खराब नहीं है. पिछले आम चुनावों में इसने न सिर्फ 30 फीसदी वोट पाए बल्कि 78 चुनाव क्षेत्रों में पार्टी आगे और 217 क्षेत्रों में दूसरे स्थान पर रही. 38 विधानसभा क्षेत्रों में तो पार्टी 5,000 से भी कम वोटों से हारी. इसलिए इनमें से कई हलकों में इंका को बहुकोणीय संघर्ष का लाभ मिल सकता है.

मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल का यह कथन पार्टी के उत्साह को ही प्रतिबिंबित करता है, "1977 में हमें विधानसभा चुनावों के लिए उम्मीदवार नहीं मिल रहे थे लेकिन इस बार तो टिकटों के लिए छीना-झपटी मची रही." प्रदेश इंका अध्यक्ष अर्जुन सिंह भी कहते हैं, "हालात इतने निराशाजनक नहीं हैं."

महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि भाजपा-जनता दल इंका विरोधी वोट जुटाने में कितने कामयाब हो पाते हैं. एकजुट विपक्ष यहां पहले भी अच्छा प्रदर्शन कर चुका है. 1977 में जनता पार्टी ने राज्य की 40 लोकसभा सीटों में से 38 सीटें जीती थी. और '89 के लोकसभा चुनाव में जिन 39 सीटों के लिए वोट पड़े, उनमें 32 सीटें जद-भाजपा गठबंधन की झोली में गईं. इसके विपरीत 1984 के लोकसभा चुनाव में जब विपक्ष एकजुट नहीं था तो 35 फीसदी वोट पाने के बावजूद उसके हाथ एक सीट भी नहीं लगी.

जनता दल और भाजपा दोनों में तालमेल की ज्यादा से ज्यादा सीटें हथियाने की होड़ रही. जनता दल केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के प्रति बनी सहानुभूति वाले ऐसे तमाम वोट खींच लेना चाहता है जो उसकी अनुपस्थिति में भाजपा की ओर जा सकते हैं.

कुल सीटें	320
कुल मतदाता	3,75,95,559
1985 के चुनावों के बाद पार्टियों की स्थिति:	
इंका	250
भाजपा	58
जनता पार्टी	5
अन्य	7

दादागीरी का दबदबा

मध्य प्रदेश में इस बार निर्दलीय उम्मीदवारों में सबसे प्रमुख 32 वर्षीय वीर विक्रम सिंह उर्फ भैया राजा हैं. उन पर 32 आपराधिक मामले हैं. फिलहाल वे अकबर अहमद उर्फ 'डंपी' के फार्महाउस में एक हत्या के सिलसिले में नैनीताल जेल में बंद हैं. जो लोग उनके खूंखार तरीकों और पालतू अजगर की बात सुन दहशत में हैं, वे 'बैलेट' पेटी का इस्तेमाल कर उनसे बदला भंजा सकते हैं लेकिन बुलेट में विश्वास रखने वाले कुछ लोग उनका समर्थन भी करेंगे.

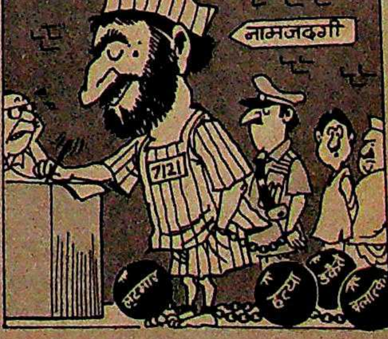

उसकी मंशा ऐसी साझा सरकार बनाने की है, जिसमें दूसरे गैर-इंका दलों के समर्थन से दल की प्रमुख भूमिका हो. इसलिए दल ने भाजपा को छोड़ी गई 27 सीटों पर भी उम्मीदवार खड़े कर दिए.

भाजपा में पूर्व मुख्यमंत्री वीरेंद्र कुमार सकलेचा, पूर्व मंत्री राजेंद्र धारकर और नरेश जौहरी जैसे दिग्गजों को टिकट न दिए जाने से जबरदस्त असंतोष फैला हुआ है. पार्टी की राज्य शाखा के पूर्व अध्यक्ष शिवप्रसाद चनपुरिया ने उम्मीदवारों की सूची में एक 'गुट के प्रभुत्व' के विरोध में राष्ट्रीय कार्यकारिणी से इस्तीफा दे दिया है.

श्यामाचरण, विद्याचरण और पटवा

इंका की हालत भी कोई अच्छी नहीं है. मौजूदा 247 विधायकों में से 121 को टिकट न दिए जाने के कारण पार्टी में विरोध की आंधी चल पड़ी है. अर्जुन सिंह के गुट के लोग खास तौर पर नाराज हैं. इनमें रमाशंकर सिंह, विष्णु राजौरिया और बंसीलाल धृतलहरे प्रमुख हैं. धृतलहरे कहते हैं, "शुक्ल तो 12 साल तक सक्रिय राजनीति से दूर रहे, इसलिए राजनैतिक अंतर-प्रवाहों का उन्हें बिलकुल ज्ञान नहीं है."

वामपंथी दलों के साथ 22 निर्वाचन क्षेत्रों में तालमेल करने वाले जनता दल के चुनाव अभियान की दिशा तय नही है. मध्य प्रदेश जनता दल अध्यक्ष विद्या चरण शुक्ल कहते हैं, "इन निर्वाचन क्षेत्रों में हमारी स्थानीय इंकाइयां तय करेंगी कि भाजपा या वामपंथी दलों में से किसे समर्थन दें

इंका और भाजपा एक से धरातल पर खड़ी हैं. भाजपा को इस बार अल्पसंख्यकों के वोट शायद न मिल पाएं. इस बार उम्दा संगठन तंत्र पर निर्भर कर रही है. सत्ता के दूसरे दावेदार जानते हैं कि कार्यकर्ता आधारित पार्टी यदि सत्ता में आ जाए तो उसे हटाना आसान नहीं होता.

—नरेंद्र कुमार सिंह

बिहार

बगावत से बेजार

टिकट बंटवारे पर झमेला

बिहार विधानसभा की 324 सीटों तीन बड़े दावेदारों ने टिकट बांटने उठापटक में ही इतना समय गंवा दिया चुनाव प्रचार के दौरान एक-दूसरे के खिला आग उगलने का कम ही दमखम उनमें गया लगता है.

सभी दलों को अपने-अपने वरिष्ठ केंद्री नेताओं को इस उठापटक का निबटारा करने के लिए यहां भेजना पड़ा. उठापटक का सबसे ज्यादा असर प्रदेश भाजपा पर पड़ा. इसके

कुल सीटें	324
कुल मतदाता	5,36,00,000
1985 के चुनावों के बाद पार्टियों की स्थिति:	
इंका	196
लोकदल	46
भाजपा	16
जनता पार्टी	13
अन्य	53

महम

डांवाडोल रथ

तीन महीने पहले देवीलाल अपने जिस विजय रथ पर सवार हो लोकसभा के दो निर्वाचन क्षेत्रों से जीतकर लौटे थे, वह आज उनके बेटे और हरियाणा के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला के हाथों डांवाडोल हो रहा है.

रोहतक के जाट-बहुल महम विधानसभा क्षेत्र में जनता दल के विद्रोही उम्मीदवार आनंद सिंह दांगी के मुकाबले उतरे चौटाला के पैरों तले जमीन खिसक रही है. ऊपर से मुश्किल यह है कि मुख्यमंत्री बनने के छह महीने के भीतर ही चौटाला को विधानसभा में पहुंचना है.

मदीना गांव के दांगी एक मायने में स्थानीय उम्मीदवार हैं. साथ ही महम में देवीलाल के चुनाव अभियानों के संचालक रहने के कारण उनके संपर्क निचले स्तर के कार्यकर्ताओं तक फैले हुए हैं. देवीलाल महम से 1982, 1985 और 1987 में भारी बहुमत से जीत चुके हैं. दांगी के पक्ष में एक और बात यह है कि हरियाणा अवर सेवा चयन बोर्ड के अध्यक्ष की हैसियत से उन्होंने क्षेत्र के सैकड़ों लोगों को भर्ती किया था. और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उन्हें 24 गांवों की प्रभावशाली जाट पंचायत महम चौबीसी का समर्थन प्राप्त है. पूरे निर्वाचन क्षेत्र में कुल 30 गांव हैं.

भवान सिंह

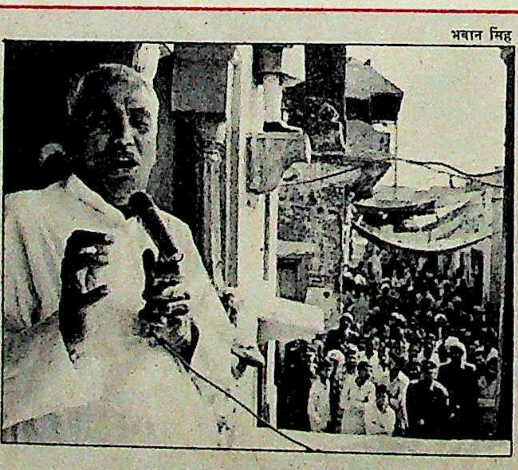

चौटाला: मुश्किल मुकाबला

परंपरागत रूप से चौबीसी अपनी पसंद के उम्मीदवार को ही समर्थन देती है. खबर है कि महम की ऐतिहासिक जगह, चबूतरा पर हुई सभा में चौबीसी ने दांगी को अपना उम्मीदवार घोषित किया. लेकिन चौटाला के समर्थकों का कहना है कि पंचायत के नियमों का पालन नहीं किया गया.

विवादों के बावजूद चौटाला आश्वस्त नजर आते हैं. उनके अनुसार, "मैंने महम से चुनाव लड़ने का फैसला इसलिए किया ताकि मैं यहां के लोगों की इच्छा पूरी कर सकूं. जनवरी में मेरी यात्रा के समय उन्होंने मुझसे यहां से लड़ने का अनुरोध किया था."

लेकिन चौटाला खेमे में घबराहट तो है ही. हरियाणा मंत्रिमंडल के तीन चौथाई मंत्री महम में पड़ाव डाले हैं. खुद चौटाला कोई कसर नहीं छोड़ रहे हैं. विजय रथ पर निर्वाचन क्षेत्र के तीन दिन के तूफानी दौरे में चौटाला ने एलान किया, "मैं पूरे देश में महम को विकास की मिसाल बना दूंगा. आप मुझे चुनेंगे तो मेहम क्षेत्र में एक भी बेरोजगार व्यक्ति नहीं होगा."

जनता दल दांगी के भाई के खिलाफ दी साल पहले दायर हत्या के एक मामले को उभार है. दांगी कहते हैं, "केस झूठा है. ऐसी चालों से कुछ नहीं होने वाला." लेकिन जाहिर है कि चौटाला ऐसा नहीं मानते.

—कंवर संधू

मिश्र (बाएं) और सूरजदेव सिंह

प्रदेश अध्यक्ष इंदर सिंह नामधारी ने पार्टी की राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजयाराजे सिंधिया पर आरोप लगाया कि वे अपने लोगों को राज्य पर थोप रही हैं. इससे भी बुरा यह हुआ कि पार्टी ने दो ऐसे उम्मीदवारों को भी सहरसा में टिकट दे दिया जिन्हें टिकट देने से इंका ने इनकार कर दिया था. प्रदेश भाजपा ने मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र के बड़े भाई मृत्युंजय मिश्र को भी टिकट दे दिया. भाजपा के एक कार्यकर्ता की प्रतिक्रिया थी, "यह बहुत दुखद तथ्य है कि इंका की संस्कृति हमारी पार्टी में भी घुस आई है."

इंका के हालात भी बेहतर नहीं थे. पार्टी के मौजूदा विधायकों के एक गुट को जब टिकट नहीं मिला तो उन्होंने विरोध में रैली करने की धमकी दे डाली. प्रदेश इंका अध्यक्ष तारिक अनवर के किसी भी समर्थक को टिकट नहीं मिला. तारिक अनवर ने इसके प्रति नाराजगी जाहिर करते हुए एक बयान दे डाला कि वे चुनाव प्रचार नहीं करेंगे. कमोबेश यही स्थिति दो पूर्व मुख्यमंत्रियों—भागवत झा आजाद, सत्येंद्र नारायण सिंह—के समर्थकों की भी रही.

टिकटों का बंटवारा हो जाने के बाद जनता दल में भी बगावत का झंडा बुलंद हो गया. वरिष्ठ नेता और सांसद हुकुमदेव नारायण यादव ने धमकी दे डाली कि वे देवीलाल और अजीत सिंह को उत्तर बिहार में चुनाव प्रचार नहीं करने देंगे. उन्होंने शिकायत की, "दल के केंद्रीय नेता जगन्नाथ मिश्र की मदद कर रहे हैं क्योंकि दरभंगा और मधुबनी के ब्राह्मण-बहुल क्षेत्रों में जनता दल ने एक भी ब्राह्मण को टिकट नहीं दिया." एक और असंतुष्ट नेता सरयू राय ने भी शिकायत की, "हैरत की बात यह है कि जनता दल ने पटना, भोजपुर, नालंदा, गया और जहानाबाद में एक भी मुसलमान उम्मीदवार नहीं खड़ा किया है."

अगर कुछ नेता जाति के आधार पर टिकट पाने की कोशिश कर रहे थे तो कुछ नेता आपराधिक तत्वों के पक्ष में या।खिलाफ तलवारें भांज रहे थे.

जनता दल की सूची में विजेंद्र गोप, दिलीप सिंह, सूरजदेव सिंह और विष्णुदेव चौधरी जैसे संदेहास्पद रिकार्ड वाले लोगों के नाम थे. परंतु प्रदेश के पार्टी नेता लालू प्रसाद यादव का कहना है कि जब तक अदालत सजा नहीं दे देती, इनमें से किसी को भी अपराधी नहीं माना जा सकता. दूसरी तरफ हुकुमदेव यादव ने तय किया है कि वे जनता दल के ऐसे उम्मीदवारों को हरवाने की पूरी कोशिश करेंगे. इससे भी बड़ी बात यह है कि समाजवादियों के एक गुट ने पार्टी छोड़कर सोशलिस्ट पार्टी (लोहिया) के टिकट पर चुनाव लड़ने का फैसला किया है.

इंका विरोधी मोर्चे ने सीटों पर तालमेल के जो प्रयास किए उनसे स्थिति और पेचीदा ही हुई. नवंबर में हुए लोकसभा चुनाव में लोकसभा की 54 सीटों में 31 पर चुनाव जीतने वाले जनता दल ने विधानसभा की 236 सीटों के लिए अपने उम्मीदवारों की अंतिम सूची जारी की. भाजपा 200 सीटों पर चुनाव लड़ने पर अड़ी हुई थी. इसके अलावा भाकपा 120, माकपा 10 और झारखंड मुक्ति मोर्चा 70 सीटों पर चुनाव लड़ेगा.

भीतरी बगावत के बावजूद जनता दल को उम्मीद है कि राष्ट्रीय राजनीति में विश्वनाथ प्रताप सिंह की जो छवि है उसका फायदा उसे जरूर मिलेगा. पिछले विधानसभा चुनाव में लोकदल को 46, जनता पार्टी को 13 और भाजपा को 16 सीटें मिली थीं, जबकि इंका ने 196 सीटों पर जोरदार जीत हासिल की थी. जनता दल के पास प्रचार में गिनाने के लिए बहुत कम ही उपलब्धियां हैं. परंतु उसका उत्साह जरूर सातवें आसमान पर है.

—उत्तम सेनगुप्त

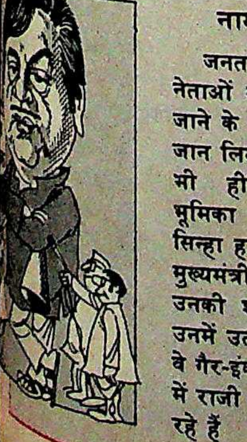

नायक का नकार

जनता दल के कुछ बड़े नेताओं की ओर से धकियाए जाने के बाद शत्रुघ्न सिन्हा ने जान लिया है कि राजनीति में भी हीरो खलनायक की भूमिका में उतर सकते हैं. सिन्हा हालांकि कह रहे हैं कि मुख्यमंत्री बनने की न तो उनकी शक्ल है और न ही उनमें उतनी अक्ल है फिर भी वे गैर-इंका दलों को अपने पक्ष में राजी करने की कोशिश कर रहे हैं

गुजरात

दोनों हाथ ऊपर

इंका विपक्ष में बैठने के मूड में

इस बार के विधानसभा चुनाव में इंका को अजीब स्थिति का सामना करना पड़ रहा है. कैबिनेट मंत्री महंत विजयदास जी, हरि सिंह महीदा, सुरेश मेहता और विधानसभा अध्यक्ष बरजौरी पारडीवाला समेत कई दिग्गजों ने पार्टी टिकट ठुकरा दिए. यहां तक कि मुख्यमंत्री माधव सिंह सोलंकी ने भी मैदान में उतरने से बचने की पुरजोर कोशिश की और काफी मान-मनौवल के बाद वे अपेक्षाकृत सुरक्षित बोरसाड से लड़ने को राजी हुए. इससे पता चलता है कि इंका की संभावनाओं को लेकर पार्टी के आला नेता किसी मुगालते में नहीं हैं. उन्हें जनता दल-भाजपा का गठबंधन सत्ता के चौखट पर पांव रखे दिख रहा है.

कुल सीटें	182
कुल मतदाता	2,43,30,170
1985 के चुनावों के बाद पार्टियों की स्थिति:	
इंका	149
जनता पार्टी	14
भाजपा	11
अन्य	8

चिमनभाई (बाएं) और सोलंकी

इंका अपने निराश कार्यकर्ताओं को उत्साहित करने की हताश कोशिश में लगी हुई हैं. सोलंकी ने पार्टी की एक बैठक में कहा, "लोकसभा चुनाव के नतीजे एक दुर्घटना थी. और दुर्घटनाएं बार-बार नहीं हुआ करतीं. हम बहुमत प्राप्त करने की स्थिति में हैं." हालांकि इंका का बहुमत हासिल करना तो दिन में तारे देखने जैसा है, लेकिन उसे 60 से ज्यादा सीटें मिलने की संभावना है. नवंबर चुनाव में उसे केवल 32 विधानसभा क्षेत्रों में बढ़त हासिल हुई थी.

इंका अपनी कामयाबी के लिए 2.50 लाख मजदूरों को कर्जमाफी की हाल की

घोषणा और स्कूल अध्यापकों को दी गई वेतन वृद्धि से उम्मीदें बांधे हुए हैं. पिछड़े वर्ग के नेता के रूप में सोलंकी की छवि से भी पार्टी को लाभ मिलने की आशा है.

लेकिन जनता दल और भाजपा ने अपनी तैयारियों पर काफी मेहनत की है. हालांकि सीटों के तालमेल पर उनकी बातचीत पूरी कामयाब नहीं रही लेकिन 182 में से 136 सीटों पर उनमें तालमेल हो गया है और शेष पर उनमें मुकाबला होगा. लेकिन संभावना यह भी है कि दोनों दल गैर इंकाई वोट न बंटने देने के लिए आखिरी मौके पर अपने कमजोर उम्मीदवार हटा लेंगे.

बातचीत टूटने का कारण रहा जनता दल नेता चिमनभाई पटेल द्वारा 91 से ज्यादा सीटों पर अपने उम्मीदवार खडे करने की जिद. ये सीटें पहले ही तय कर ली गई थीं लेकिन भाजपा नवंबर में हुए चुनाव के नतीजों को आधार बनाकर 91 सीटों पर लड़ने के लिए कह रही थी. उस चुनाव में भाजपा ने लोकसभा की उसे मिली सभी 12 सीटें जीती थीं, जबकि जनता दल 14 में से 3 सीटें हार गया था.

जनता दल और भाजपा ने मुख्यमंत्री सोलंकी के खिलाफ 1985 का जातीय संघर्ष भड़काने का आरोप जोरदार तरीके से उछाला है. उस दंगे में 400 लोग मारे गए थे. मिलकर चुनाव लड़ने के पक्ष में दोनों दल केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के अच्छे प्रदर्शन का तर्क दे रहे हैं. इंका कश्मीर की स्थिति से फायदा उठाने की कोशिश करेगी.

भाजपा ने पूर्व मुख्यमंत्री बाबूभाई पटेल को समर्थन देने का एलान किया है. वे लोकस्वराज मंच के सदस्य के रूप में चुनाव लड़ रहे हैं. भाजपा की रणनीति चिमनभाई पटेल के व्यापक प्रभाव के मुकाबले बाबूभाई की बेहद साफ-सुथरी छवि से फायदा उठाने की है. लेकिन ऐसे हथकंडों से जनता दल और भाजपा दोनों को ही नुकसान होगा.

अगर चुनाव के बाद दोनों मिलकर सरकार बनाने की स्थिति में हुए, तो मुख्यमंत्री पद के लिए खींचतान की संभावना रहेगी. भाजपा अभी से मुख्यमंत्री के लिए अपने संसदीय बोर्ड अध्यक्ष केशूभाई पटेल का नाम उछाल रही है, जबकि ऊंझा सीट पर इंका की फिल्म अभिनेत्री उम्मीदवार श्रद्धा पनचोटिया के मुकाबले चुनाव लड़ रहे चिमनभाई पटेल की निगाह भी इस कुर्सी पर जमी हुई है. फिर भी, ऊपरी तौर पर सब कुछ ठीकठाक लग रहा है. एक साझा संवाददाता सम्मेलन में उन्होंने कहा, "अगर चुनाव में बहुमत प्राप्त हुआ तो दोनों दल के विधायक इस मसले को तय आपस में विचार-विमर्श से करेंगे."

अब सत्ता का बंधन ही इन दोनों दलों को बांधे रख सकता है.

—उदय माहूरकर

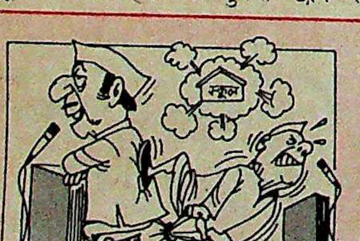

विद्रोही की व्यथा

यूं तो चुनाव का मौसम पार्टी टिकट न मिलने पर राजनैतिक विचारधारा त्यागने और विद्रोही बनने का होता है, पर गुजरात में एक इंकाई विद्रोही सिर्फ अपने 34,000 रु. वापस पाना चाहता है जो उसने इससे पहले पार्टी के उम्मीदवार को अपना पक्ष लेने के लिए दिए थे.

पांडिचेरी

हर खेमा बंटा

पर इंका का पलड़ा अभी भारी

छोटे-से केंद्रशासित प्रदेश पांडिचेरी (जनसंख्या: 7 लाख) के लिए 30 विधानसभा सीटें कुछ अधिक लग सकती हैं. लेकिन विभिन्न पार्टियों में चल रही अंदरूनी रस्साकशी को देखते हुए यह संख्या कम ही है.

फारूक: मजबूत दावा

17 सीटों पर चुनाव लड़ रही इंका ने जब अपनी सूची जारी की तो उसकी युवा शाखा में बगावत हो गई. यही नहीं, पार्टी तीन गुटों में भी बंट गई है जिनके नेता मुख्यमंत्री एम.ओ.एच. फारूक, प्रदेश इंका अध्यक्ष षणमुगम और स्वास्थ्य-मंत्री पी. कन्नन हैं.

इंका की चुनावी सहयोगी अन्ना द्रमुक में भी स्थिति बहुत अलग नहीं है. वह 13 सीटों पर लड़ रही है. नाराज पार्टी कार्यकर्ताओं का कहना है कि जयललिता ने बिना किसी नियम-कायदे के अंतिम सूची तय कर डाली.

विपक्षी खेमे में, 18 सीटों पर भाग्य आजमा रही द्रमुक दो गुटों में बंटी है. एक का नेतृत्व

कुल सीटें	30
कुल मतदाता	5,85,175
1985 के चुनावों के बाद पार्टियों की स्थिति	
इंका	15
अन्ना द्रमुक	6
द्रमुक	5
जनता पार्टी	2
अन्य	2

पूर्व मुख्यमंत्री डी. रामचंद्रन और दूसरे का तमिलनाडु के मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि के खासमखास आर.वी. जानकीरमण कर रहे हैं. इसके अलावा द्रमुक सदस्यों का मानना है कि भाकपा के लिए तीन और माकपा के लिए दो सीटें छोड़कर पार्टी ने अनावश्यक दानवीरता दिखाई है.

जनता दल सात सीटों पर लड़ रहा है. पांडिचेरी के 'मिस्टर क्लीन' माने जाने वाले पेथुपेरुमल के नेतृत्व में पार्टी के अंतर्विरोध उस समय उभरकर सामने आए जब उन्होंने पूर्व जनता विधायक सुब्बरैया गौंडर को टिकट देने से इनकार कर दिया. सुब्बरैया वन्नियार जाति के हैं. चूंकि वन्नियार आबादी यहां अच्छी-खासी है इसलिए पार्टी के चुनाव परिणामों पर इसका असर पड़ सकता है. चुनाव मैदान में वन्नियारों की पार्टी 'पाताली मक्कल काची' भी है, जो सभी 30 सीटों पर लड़ रही है. इससे द्रमुक को गंभीर हानि पहुंच सकती है.

फिलहाल इंका का पलड़ा भारी लगता है. इसका प्रमुख चुनावी मुद्दा यह है कि वह स्थायी सरकार देने में सफल रही. मूपनार ने कहा, "इंका सरकार ने अच्छा प्रशासन दिया. इसलिए जीत हमारी ही होनी चाहिए." पांच साल में एक बार भी मंत्रिमंडल में फेरबदल नहीं हुआ. यह उपलब्धि कांग्रेस के इतिहास में एक बड़ा कीर्तिमान है. फारूक मतदाताओं को इसी से रिझा रहे हैं.

—कविता शे

खुद के खिलाफ

पांडिचेरी के एक गांव में माइक के तार ऐसे जुड़े कि प्रचार में अजीब रंग घुल गया. एक उम्मीदवार के माइक के तार दूसरे के माइक से जुड़ गए. इस तरह दोनों ने खुद को ही हराने की आवाज बुलंद की.

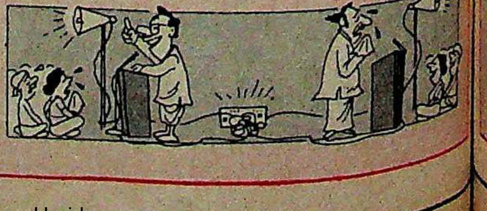

ओडीसा

भरोसे का भाव

जनता दल के हौसले बुलंद

कामयाबी से बढ़कर कोई और नशा नहीं होता. लोकसभा चुनाव में 21 में से 18 सीटों पर जनता दल के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय मोर्चे की जीत के बाद अब बीजू पटनायक को पूरा भरोसा है कि राज्य का सिंहासन अब उनसे ज्यादा दूर नहीं है. जनता दल, भाकपा और माकपा का गठबंधन अभी सत्तारूढ़ इंका के खिलाफ विधानसभा चुनावों की तैयारी में जुटा ही था कि पटनायक ने अतिशय आत्मविश्वास में आकर यह घोषणा कर डाली कि पारादीप में दूसरा इस्पात संयंत्र और क्योंझर में स्पंज आयरन का कारखाना लगाया जाएगा.

इंका फिर सत्ता में लौटेगी यह भरोसा प्रदेश इंका अध्यक्ष नंदिनी सत्पथी को ही है. वे दावा भी करती हैं, "हम जीतने के लिए लड़ रहे हैं. लेकिन लोकसभा के पिछले आम चुनाव में 147 विधानसभाई हलकों में से सिर्फ 17 में आगे रहने के कारण इंका के नेता बुरी तरह पस्त हो गए थे. इसी वजह से इसने तब के मुख्यमंत्री जे.बी. पटनायक को ताक पर रख दिया और 50 मौजूदा विधायकों को पार्टी टिकट भी नहीं दिया.

कुल सीटें	147
कुल मतदाता	1,94,35,289
1985 के चुनावों के बाद पार्टियों की स्थिति:	
इंका	117
जनता पार्टी	21
माकपा	1
अन्य	8

बीजू पटनायक और नंदिनी सत्पथी

परंतु इसका ज्यादा लाभ नहीं होने वाला. चुनाव अभियान में जे.बी. पटनायक राज का भ्रष्टाचार मुख्य मुद्दा होगा. जनता दल के विधायक भागवत देहरा कहते हैं, "उनके भ्रष्टाचार के लिए उन्हें कौन माफ कर सकता है?" पर जे.बी. पटनायक इसे नहीं मानते. वे कहते हैं कि "ओडीसा में भ्रष्टाचार कभी भी मुद्दा नहीं रहा है" और स्थानीय मुद्दे व उम्मीदवार की अपनी छवि ही नतीजा तय करते हैं.

लेकिन जनता दल की भी अपनी ही समस्याएं हैं. टिकटों को लेकर जिस तरह की धमाचौकड़ी मची उसके चलते हर किसी को संतुष्ट नहीं किया जा सका. अब पार्टी को 12 बागी उम्मीदवार भी झेलने पड़ेंगे. जनता दल खुद 134 सीटों पर चुनाव लड़ रहा है जबकि भाकपा और माकपा को क्रमशः 12 व चार सीटें दी गई हैं. ये दोनों ही पार्टियां इससे नाख़ुश हैं. भाकपा के राज्य सचिव लोकनाथ चौधरी कहते हैं, "अगर इतनी ही जबरदस्ती करनी थी तो फिर सीटों पर तालमेल की जरूरत ही क्या थी?"

चुनाव में कुछ शाही रंग भी दिखेगा. जनता दल ने सात राजाओं और चार रानियों को टिकट दिया है जबकि इंका ने दो को. भाजपा के 60 उम्मीदवारों में भी तीन राजा हैं. एक और मजेदार बात यह है कि चुनाव लड़ने वालों में जनता दल के तीन सांसदों की बीवियां हैं और चार पूर्व मुख्यमंत्रियों के बेटे भी. और यह भी कि नंदिनी सत्पथी का बेटा तथागत उन्हीं के गढ़ ढेंकानाल सदर से जनता दल के टिकट पर चुनाव लड़ रहा है. इसी वजह से वे खुद लड़ने के लिए पड़ोस के गोंडिया में चली गई हैं.

जनता दल का चक्र मंजिल की ओर बढ़ने लगा है. इंका में इतनी ताकत नहीं दिखती कि वह इसे रोक सके. —रुबेन बनर्जी

हिमाचल प्रदेश

तगड़ी चुनौती

वीरभद्र सिंह की गद्दी खतरे में

दूसरे इंकाई मुख्यमंत्री जहां पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की फेरबदल की नीति का शिकार होते रहे, वहीं वीरभद्र सिंह इससे बचते हुए हिमाचल प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में अपना कार्यकाल पूरा

कुल सीटें	68
कुल मतदाता	29,74,325
1985 के चुनावों के बाद पार्टियों की स्थिति:	
इंका	58
भाजपा	7
अन्य	3

उत्तर प्रदेश

परीक्षा की घड़ी

एक संसदीय और पांच विधानसभाई सीटों के उपचुनाव में प्रचार अभियान का बड़ा मुद्दा इस भावना के इर्दगिर्द केंद्रित होगा कि मुलायम सिंह यादव की सरकार पिछड़े वर्गों की सरकार है. अनुसूचित जातियां कुछ कदर निराश हैं और इंका उनके वोट खींच पाई तो वह मैदान मार सकती है. प्रदेश की नई इंका अध्यक्ष राजेंद्र कुमारी वाजपेयी के लिए यह परीक्षा की घड़ी है. हरदोई आरक्षित संसदीय हलके में यह चीज खास तौर पर देखने को मिलेगी. नवंबर के चुनावों में जीती इस सीट को बचाने के लिए जनता दल के चांदराम इंका के सुखदेव प्रसाद के खिलाफ मैदान में उतरे हैं. आम चुनाव में जद के परमाई लाल को 43 फीसदी मत मिले थे जबकि इंका के मुन्नीलाल को 37.7 फीसदी. परमाई लाल के अपनी विधानसभाई सीट पर कायम रहने के फैसले से यहां उपचुनाव हो रहा है.

वाजपेयी: परीक्षा

मेरठ छावनी विधानसभा क्षेत्र में 38 उम्मीदवार हैं लेकिन मुकाबला भाजपा, जनता दल और इंका के बीच होगा. नवंबर के चुनावों में भाजपा के दिवंगत परमात्मा शरण मित्तल ने यह सीट इंका से छीनी थी.

नानपरा विधानसभा क्षेत्र में 1947 से 1977 तक जीतती आ रही भाकपा फिर भाजपा और इंका को चुनौती दे रही है. खकरा में जनता दल और इंका आमने-सामने हैं जबकि सिकंदराबाद और चांदपुर में तिकोना मुकाबला है.

इन उपचुनावों से पर्याप्त संकेत मिल जाएंगे कि आम चुनावों के दौरान विस्फोटक सांप्रदायिक माहौल किस कदर इंका के खिलाफ गया था. उधर, इंका को यह साबित करना है कि वह राज्य में राजनैतिक रूप से असहाय बनकर नहीं रह गई है. —दिलीप अवस्थी

करने में कामयाब रहे. लेकिन अब राज्य के मतदाताओं की ओर से चतुर वीरभद्र को गद्दी की चुनौती मिलने लगी है. लोकसभा चुनावों में ही लोग उनकी पकड़ से निकल गए थे. सो, आगामी विधानसभा चुनावों में वीरभद्र उस फैसले को उलट देना चाहते हैं. पर मुश्किल यह है कि कुर्सी के दावेदार भाजपा-जनता दल गठजोड़ में सभी सीटों पर तालमेल हो गया है. इनमें भाजपा 51 सीटों पर और जनता दल 17 सीटों पर मुकाबला कर रहा है.

वीरभद्र के लिए पांसा भले ही उलटा है पर वे हताश नहीं हैं. उनका कहना है, "आम चुनाव राष्ट्रीय मुद्दों पर लड़े गए थे. मैंने राज्य के लिए बहुत कुछ किया है इसलिए लोग मुझे ही समर्थन देंगे." इंका आलाकमान ने उनके कट्टर प्रतिद्वंद्वी और पूर्व केंद्रीय मंत्री सुखराम की ओर से प्रस्तावित उम्मीदवारों की सूची रद्द करके वीरभद्र के लिए रास्ता साफ कर ही दिया है.

वीरभद्र (बाएं) ; और शांता कुमार

वीरभद्र के लिए पार्टी के हर वर्ग का समर्थन पाना जरूरी हो गया है क्योंकि शांता कुमार चूंकि राज्य की राजनीति में लौट आए हैं इसलिए भाजपा की स्थिति मजबूत हो गई है. भाजपा के इस दिग्गज ने जब लोकसभा का चुनाव जीता तो बहुत से लोगों का खयाल था कि वे अब राष्ट्रीय स्तर की राजनीति करेंगे. लेकिन भाजपा महासचिव केदारनाथ साहनी के मुताबिक, "शांता कुमार से यही उम्मीद की जाती रही कि वे राज्य में लौटकर पार्टी को सफल बनाएंगे."

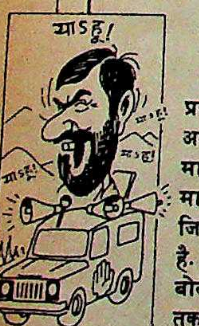

आवाज का आनंद

हिमाचल प्रदेश में चुनाव प्रचार के लिए आनंद शर्मा ने अलग ही रथ बनवा लिया. मारुति जिप्सी में उन्होंने माइक की ऐसी व्यवस्था की है जिससे आवाज कई बार गूंजती है. उन्हें उम्मीद है कि उनके बोल पहाड़ियों में लंबे समय तक गूंजते रहेंगे.

दूसरी तरफ, जनता दल को राज्य में पार्टी ढांचे के अभाव का एहसास हुआ है. प्रदेश अध्यक्ष विजय सिंह मनकोटिया समेत उसके सभी संसदीय उम्मीदवार हार गए थे. पूर्व मुख्यमंत्री रामलाल के पार्टी में शामिल होने के बावजूद उसे कोई फायदा नहीं हुआ.

अब रामलाल जुब्बल कोटखई हलके से मुख्यमंत्री के खिलाफ भिड़ गए हैं जिससे वीरभद्र को मजबूर होकर रोहड़ु हलके से भी नामांकन भरना पड़ा. शांता कुमार कांगड़ा से जीत के प्रति आश्वस्त हैं, तो वीरभद्र मुश्किल में दिखते हैं.

—पंकज पचौरी

राजस्थान

बदली बयार

भाजपा-जद तालमेल रंग लाएगा

असंतोष, विरोध और बगावत के साथ राजस्थान में चुनावी रण शुरू हो गया है. नौवीं विधानसभा में सत्ता के सिंहासन को निशाना बनाकर राजनेताओं ने अपने तीर तरकस से निकाल लिए हैं.

पर इस बार यह लड़ाई संभावित परिवर्तन की ओर जाती दिखती है, इस बार उम्मीदवारों को प्रतिद्वंद्वियों के अलावा अपने बागी साथियों से भी लड़ना होगा. सबसे ज्यादा असंतोष हमेशा संगठित दिखाई देने वाली भारतीय जनता पार्टी में उभरा है तो अंतरकलह और भितरघात कांग्रेस के हिस्से में आई है तथा बागियों की लंबी सूची कांग्रेस के अलावा जनता दल खेमे में भी है.

राज्य की तीनों बड़ी पार्टियों ने अपने कई वर्तमान विधायकों के टिकट काट दिए, लेकिन सबसे बड़ा फैसला कांग्रेस ने किया. पार्टी के पूर्व अध्यक्ष अशोक गहलोत के गुट का सफाया कर दिया गया. इस काट-छांट में वे सब लोग वापस आ गए जिन्हें राजीव गांधी ने 1985 में स्वच्छ छवि न होने और भ्रष्टाचार के आरोपों की वजह से विधानसभा में टिकट नहीं दिया था. इनमें राजस्थान आवासन मंडल के अध्यक्ष श्रीराम गोटेवाला और बीस सूत्री कार्यक्रम प्रकोष्ठ के संयोजक दूलाराम भी हैं.

पांच साल पहले युवा फौज पर राजीव गांधी ने भरोसा किया था और नेतृत्व की जिम्मेदारी गहलोत को सौंपी थी. पर इस बार गहलोत गुट के सभी लोगों का नाम सूची से हटाकर मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष परसराम मदेरणा ने पुराना हिसाब चुकता कर लिया है.

कुल सीटें	**200**
कुल मतदाता	**2,58,12,548**

1985 के चुनावों के बाद पार्टियों की स्थिति:

इंका	113
भाजपा	39
लोकदल	27
जनता पार्टी	10
अन्य	11

कांग्रेस ने इस बार सात मंत्रियों और नौ पूर्व मंत्रियों सहित चालीस विधायकों का पत्ता साफ कर दिया है. इन सात मंत्रियों में दो काबीना मंत्री माधवसिंह दीवान व रघुनाथ परिहार, राज्यमंत्री दीनबंधु वर्मा, मूलचंद मीणा, मांगीलाल आर्य और राजेंद्र चौधरी तथा संसदीय सचिव प्रणवीर व्यास शामिल हैं. जिन पूर्व मंत्रियों के टिकट काटे गए उनमें अश्क अली टांक, भैरूलाल भारद्वाज, सुजान सिंह यादव, चंद्रशेखर शर्मा, भरतलाल मीणा, दीपचंद राठौर, खेमराज कटारा, सूरजपाल सिंह और जयनारायण बैरवा (सभी विधायक) हैं. पर पार्टी की सूची में 11 महिलाओं को जरूर जगह दी गई है.

जोशी के अलावा चार पूर्व मुख्यमंत्री—भैरोंसिंह शेखावत, जगन्नाथ पहाड़िया, शिवचरण माथुर और हीरालाल देवपुरा—भी चुनाव मैदान में हैं. जोशी को बांसवाड़ा में और देवपुरा को कुंभलगढ़ में तिकोने संघर्ष का सामना करना पड़ेगा. शेखावत अकेले ऐसे उम्मीदवार हैं जो दो स्थानों, छबड़ा और धौलपुर से चुनाव लड़ रहे हैं.

सभी फोटो: मनोज छाबड़ा

भैरोंसिंह शेखावत और कल्याण सिंह कालवी

कांग्रेस के एक बागी उम्मीदवार के कहा, "लोकसभा चुनावों में मदेरणा गुट ने अशोक गहलोत को हरवा दिया था. अबकी बार बाजी हमारे हाथ है." एक दूसरे बागी नेता की टिप्पणी थी, "राजीव गांधी ने अब भी

बंद कर रखी हैं, नतीजा अंधेरा मिलेगा शायद तब उनकी आंखें खुलें." टिकट मिलने से असंतुष्ट कांग्रेस नेता चंद्रराज वी बगावत पर उतर आए हैं. उन्होंने ठावान कांग्रेसी मंच' के अध्यक्ष के रूप में करने की घोषणा की है. उनके अनुसार में निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में 40 ऐसे निष्ठावान कांग्रेसी विधान- का चुनाव लड़ेंगे.

दूसरी ओर जोशी गुट के एक वरिष्ठ नेता मानना था कि अगर मुख्यमंत्री से समझौते नीति अपनाई गई होती तो गहलोत र्थकों को और अधिक टिकट मिलते.

200 विधानसभाई सीटों वाले इस राज्य जनता दल और भाजपा में 160 सीटों पर झौता हो गया है पर 40 सीटें खुली छोड़ गई हैं. दोनों दलों के हिस्से में समझौते 80-80 सीटें आई हैं.

साझा सरकार बनाने की उम्मीद लिए रही भाजपा में इस बार सबसे ज्यादा क्रोश रहा. युवा कार्यकर्ताओं का आरोप है इस बार शेखावत ने मनमानी चलाई. टी के कई सांसदों ने भी इस मामले में राजगी जताई. उदयपुर से सांसद गुलाब कटारिया तो शेखावत से बातचीत के रान गुस्से में फाइल फेंककर चले गए. दौसा सांसद नाथू सिंह ने अपना विरोध राष्ट्रीय मंत्री केदारनाथ साहनी के सामने जताया सवाई माधोपुर के सांसद और भारतीय ता युवा मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष डॉ. रोड़ीलाल मीणा तो अपनी शिकायत लेकर जपा राष्ट्रीय अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी पहुंच गए. उनकी शिकायत थी कि उन्हें तो सवाई माधोपुर जिले के नामों पर और ही मोर्चा के अध्यक्ष की हैसियत से सुनवाई मौका दिया गया. इनके अलावा कैलाश वाल, रासा सिंह और नंदलाल मीणा भी नाराज सांसदों में शामिल हैं.

उधर, भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष भैरोंसिंह शेखावत कहते हैं, "जीतने वाले उम्मीदवारों को टिकट दिए गए हैं. कोई भेदभाव नहीं बरता गया." प्रदेश अध्यक्ष भंवरलाल शर्मा भी इस आरोप को गलत बताते हैं. उनका कहना है, "थोड़ी बहुत नाराजगी तो चलती ही रहती है."

अपने एक सौ बीस उम्मीदवारों में से भाजपा ने पांच महिलाओं को टिकट दिए हैं. पर सांगानेर में भाजपा की विद्या पाठक की उम्मीदवारी ने जयपुर की पूर्व सांसद और राजमाता गायत्री देवी को नाराज कर दिया है तथा अब वे विपक्षी चुनाव प्रचार में हिस्सा नहीं लेंगी. गायत्री देवी ने अपने भतीजे जितेंद्रपाल सिंह उर्फ जोनसिंह को सांगानेर क्षेत्र से उम्मीदवार बनाने की सिफारिश की थी जिस पर भाजपा ने ध्यान नहीं दिया. अब राजमाता ने आडवाणी और देवीलाल को तार भेजकर कहा है, "मैं पहले ही सूचित कर चुकी हूं कि आने वाले चुनावों में जे.पी. सिंह का पूरे दिल से समर्थन करूंगी, भले ही वे निर्दलीय उम्मीदवार क्यों न हों."

इस आपाधापी में जनता दल ने जिस तरह अपने उम्मीदवारों की सूची जारी की है, वह उम्मीदवारों की कम और रिश्तेदारों की सूची ज्यादा लगती है. हर जिले में पार्टी के बड़े नेताओं के किसी-न-किसी रिश्तेदार को टिकट दिया गया है. इसमें प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के साले मंधाता सिंह, उपप्रधानमंत्री देवीलाल के पौत्र अजय सिंह, केंद्रीय खाद्य एवं आपूर्ति मंत्री नाथूराम मिर्धा के पुत्र रामप्रकाश, वरिष्ठ नेता और कुंभाराम आर्य की पुत्रवधू सुचित्रा आर्य भी शामिल हैं. सूची में देवीलाल के 10 और नाथूराम मिर्धा के छह रिश्तेदारों का नाम है.

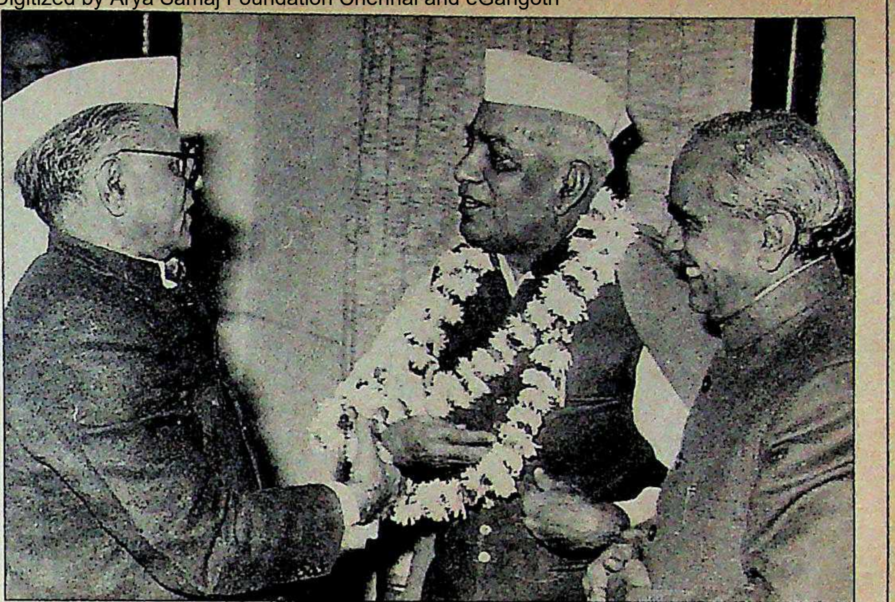

हरिदेव जोशी, मदेरणा और देवपुरा (ऊपर); और गायत्री देवी (नीचे बाएं); तथा नाथूराम मिर्धा

रिश्तेदारी की बंदरबांट से कार्यकर्ता काफी नाराज हैं. पार्टी के प्रमुख नाथूराम मिर्धा इस दौरान जयपुर आए ही नहीं ताकि कार्यकर्ताओं के गुस्से से बचा जा सके विपक्षी दलों में तालमेल कराने में अगुआ रहे जनता दल अभियान समिति के संयोजक मोहन छंगाणी की त्रासदी यह रहेगी कि उन्हें बनीपार्क क्षेत्र में तिकोने संघर्ष का सामना करना पड़ेगा. इससे व्यथित छंगाणी कहते हैं, "मुझे समझौते के प्रयासों की कीमत चुकानी पड़ी है." इसी गुट के माणिकचंद्र सुराणा को भी बीकानेर में तिकोने संघर्ष की सीट मिली है. टिकटों के बंटवारे में मिर्धा की प्रमुखता रही जबकि मुख्य महासचिव दिग्विजय सिंह और विरोधी दल के नेता प्रो. केदार की कुछ खास नहीं चली. जद ने अपने हिस्से की चार सीटें कम्युनिस्टों को दी हैं.

बहरहाल, पौने तीन करोड़ मतदाताओं वाले इस राज्य में अब 3,090 उम्मीदवार मैदान में हैं. पिछले विधानसभा चुनावों में करीब डेढ़ हजार उम्मीदवार पर असंतोष के सायों के बावजूद मतदाता लोकसभा चुनावों जैसे नतीजे ही देते दिखते हैं.

प्रमुख की परेशानी

राज्य भाजपा प्रमुख भैरोंसिंह शेखावत को उनके घर पर आ जुटे 3,000 टिकटार्थियों से जूझने में काफी पसीना बहाना पड़ा. उन्होंने नजदीक के एक होटल में शरण ली. दो दिनों तक इंतजार के बाद ही भीड़ छंटी.

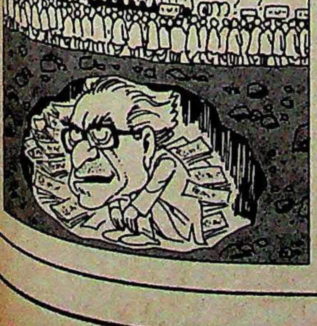

राजीव गांधी

पहले जैसी सुरक्षा चाहिए

बाकी इंका नेता भी सुरक्षा में कमी को लेकर बिसूर रहे

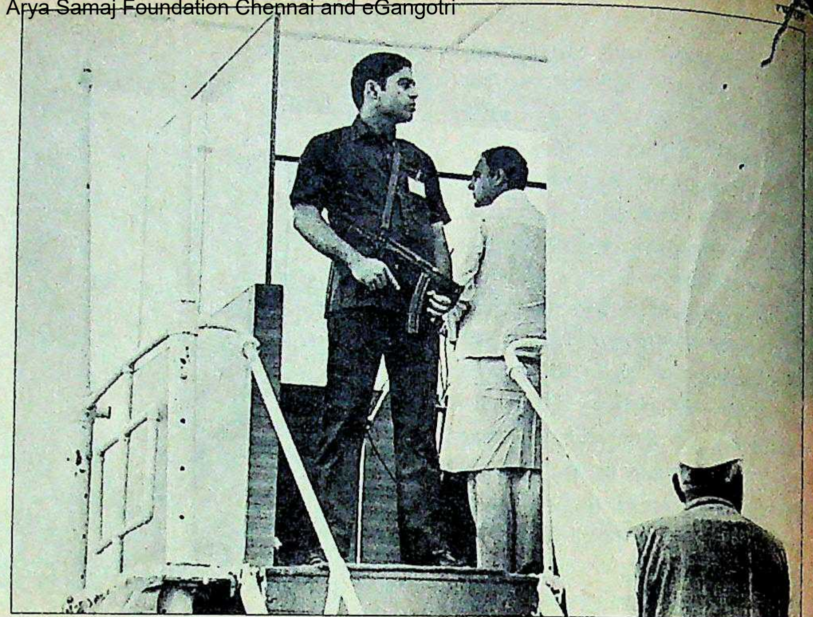

अभेद्य कवच से घिरे राजीव

> **राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने राजीव की सुरक्षा पर होने वाले वार्षिक खर्च को पांच करोड़ से घटाकर एक करोड़ रु. कर दिया है**

विपक्ष के नेता राजीव गांधी के हाल के मणिपुर दौरे से कोई राजनैतिक उठापटक तो नहीं हुई लेकिन इंका के भीतर जरूर बैचेनी फैल गई. वजह थी—पूर्व प्रधानमंत्री के साथ इस बार सिर्फ एक सुरक्षा गार्ड था.

इससे पार्टी को विशेष सुरक्षा दस्ता (एसपीजी) भंग करने के राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के फैसले पर बरसने का एक और मौका मिल गया. पिछले कुछ वर्षों से यही सुरक्षा दस्ता राजीव की हिफाजत कर रहा था. केंद्र सरकार ने राजीव की सुरक्षा पर हर साल हो रहा भारी-भरकम खर्च 5 करोड़ रु. से घटाकर एक करोड़ रु. कर दिया है. 1985 से 1988 के बीच राजीव की सुरक्षा पर 12 करोड़ रु. खर्च किए गए.

विशेष सुरक्षा दस्ता भंग करने से चिंतित वरिष्ठ इंका नेता कमलापति त्रिपाठी को प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पत्र लिखकर आश्वासन दिया कि राजीव की सुरक्षा के सभी जरूरी प्रबंध कर दिए गए हैं. उनका कहना था कि राजीव को दी गई सुरक्षा किसी भी सत्ताच्युत नेता को दी जाने वाली सुरक्षा से कहीं ज्यादा है.

लेकिन इंका नेताओं को यह नाकाफी लगती है. एक वरिष्ठ नेता की टिप्पणी थी, "भगवान न करे, यदि राजीव को कुछ हो गया तो उसकी जिम्मेदारी राष्ट्रीय मोर्चा सरकार पर होगी."

इस पर जनता दल प्रवक्ता जयपाल रेड्डी का तीखा जवाब था, "उन्हीं का बनाया कानून कहता है कि एसपीजी सिर्फ प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए ही है. राजीव को दी गई सुरक्षा छह कैबिनेट मंत्रियों की सुरक्षा व्यवस्था के बराबर है." लेकिन अब इंका की मांग है कि 1985 में गठित और 1988 में केंद्रीय सशस्त्र बल का दर्जा पाने वाले एसपीजी के दायरे में पूर्व प्रधानमंत्रियों की सुरक्षा को भी शामिल किया जाए.

1 फरवरी को गृह मंत्रालय ने पुलिस विभाग और इंटेलिजेंस ब्यूरो के मशविरे से राजीव की सुरक्षा के वैकल्पिक प्रबंधों की समीक्षा कर तय किया कि उनके लिए राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) के 125 सुरक्षाकर्मी, चार बुलेटप्रूफ कारें और संग चलने वाली कार काफी होगी. एनएसजी तो एसपीजी के गठन के पहले से ही अस्तित्व में है और बूटा सिंह की सुरक्षा में लगा है. जनपथ पर राजीव अपने नए 10 नंबर के बंगले में जो अतिरिक्त सुविधाएं चाहते थे, वे भी सरकार ने पूरी कर दी.

राजीव की मांग थी कि बंगले में अतिरिक्त जांच प्रकोष्ठ, खास किस्म की खिड़कियां, विस्फोट विरोधी दीवारें और पूरे परिसर में एक साथ बत्तियां जलाने जैसी सुविधाएं भी जोड़ी जाएं. सुरक्षा प्रबंधों के समन्वय के लिए एक पुलिस उपायुक्त की नियुक्ति भी की गई. राजीव के अनुरोध पर सुरक्षाकर्मियों की संख्या 125 से बढ़ाकर 150 कर दी गई.

लेकिन इंका प्रवक्ता एम.जे. अकबर को अब भी शिकायत है. उनके मुताबिक, "जरूरतों को देखते यह सुरक्षा व्यवस्था कम है. हमारे लिए यह गंभीर मामला है और इससे हम राजनीति नहीं खेल सकते. आखिर यह जिंदगी और मौत का सवाल है." लेकिन सरकारी सूत्रों का कहना है कि चूंकि राजीव अब प्रधानमंत्री नहीं रहे इसलिए उन्हें उतना खतरा नहीं है.

राजीव भी मौजूदा सुरक्षा व्यवस्था से खुश नहीं हैं. उन्होंने इस बारे में एक बार और बातचीत करने की मांग की है. बताया जाता है कि उन्होंने कहा, "हम अपने सुझाव रखेंगे और केंद्र के विचार जानेंगे."

इंका की दूसरी शिकायत है कि राजीव की सुरक्षा में लगे एनएसजी को आतंकवाद विरोधी अभियानों का ही प्रशिक्षण दिया गया है. लिहाजा यह पूर्व प्रधानमंत्री की सुरक्षा में न तो सक्षम हैं, न ही प्रशिक्षित. लेकिन एनएसजी के एक वरिष्ठ अधिकारी इस धारणा का खंडन करते हैं, "आतंकवाद विरोधी अभियानों में विशिष्ट व्यक्तियों की सुरक्षा का प्रबंध शामिल रहता है."

राजीव ही नहीं, अब तो बूटा सिंह भी अपनी सुरक्षा व्यवस्था में कटौती पर बिसूरने वाले इंकाइयों की पांत में आ गए हैं. उनकी शिकायत है कि 215 सुरक्षाकर्मियों और संग चलने वाली चार कारों की सुरक्षा व्यवस्था में बेरहमी से कटौती कर सिर्फ 54 सुरक्षाकर्मी और संग चलने वाली चार कारें ही उन्हें दी गई हैं.

हारे, असहाय व्यक्ति की छवि बनाकर ये इंका नेता राजनैतिक लाभ उठाने की कोशिश में हैं. जयपाल रेड्डी कहते हैं, "इंका के पास अब कोई मुद्दा नहीं रह गया है. हमारी सरकार के अच्छे काम की वजह से उसके पास आलोचना करने को कुछ खास है नहीं. बोफोर्स का फंदा भी कस रहा है. लोगों का ध्यान बंटाने को कुछ तो चाहिए ही."

—शर्मिला

व
ीव

ो इस बारे
बातचीत
है. बताया
ोंने कहा,
रखेंगे और
नेंगे."
क राजीव
ातंकवाद
ाण दिया
मंत्री की
प्रशिक्षित.
अधिकारी
ातंकवाद
क्तियों की
."
सिंह भी
ौती पर
ें आ गए
5 सुरक्षा-
ार कारों
ी कटौती
ंग चलने
हैं.
बनाकर
ठाने की
कहते हैं.
नहीं रह
काम की
करने को
भी कस
कुछ तो
मिला बंधा

महफ़िल की जान
यह नई शान!
DIPLOMAT
McDowell's
DIPLOMAT
DISPOSABLE
ICE CUBE BAGS
The new
smooth choice!
McD
McDOWELL & CO. LTD.
McDowell's
DIPLOMAT
Ice Cube Bags

बॉबकार्ड BOBCARD
बैंक ऑफ़ बड़ौदा
Bank
VISA

आप उन्हें भेजेंगे बेहतरीन कारीगरी के नमूने के साथ या दिल दुखाकर!

रंग-बिरंगी कशिदाकारी से भरपूर ''सिंफनी'' सा कालीन... लेकिन रात होने को है और विसा कार्ड पर मिलनेवाली खर्च की सीमा भी पार हो चुकी है. **बॉबकार्ड की रात-दिन सेवा** ने उनकी सहायता की. बॉबकार्ड से सम्पर्क किया गया. जिन्होंने विसा से सम्पर्क कर उनकी क्रेडिट-सीमा को बढ़ा लिया. कुछ ही मिनटों में उनका बिल चुकता हुआ. और भारतीय कला का अनूठा नमूना पाकर वे गौरवान्वित हुए, प्रसन्न हुए.

भारत में केवल बैंक ऑफ़ बड़ौदा का बॉबकार्ड ही **रात-दिन सेवा में तत्पर है.**

बम्बई में ''रात-दिन सेवा'' के लिए सम्पर्क :
दूरध्वनी क्र. 2020728 या 232827. – टेलेक्स – 011-6004

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
चौबीसों घंटे उपलब्ध प्राधिकरण-सुविधा!
आपको इसकी कभी भी ज़रूरत पड़ सकती है।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा
(भारत सरकार का उपक्रम)

CLEA/912/BOB HIN

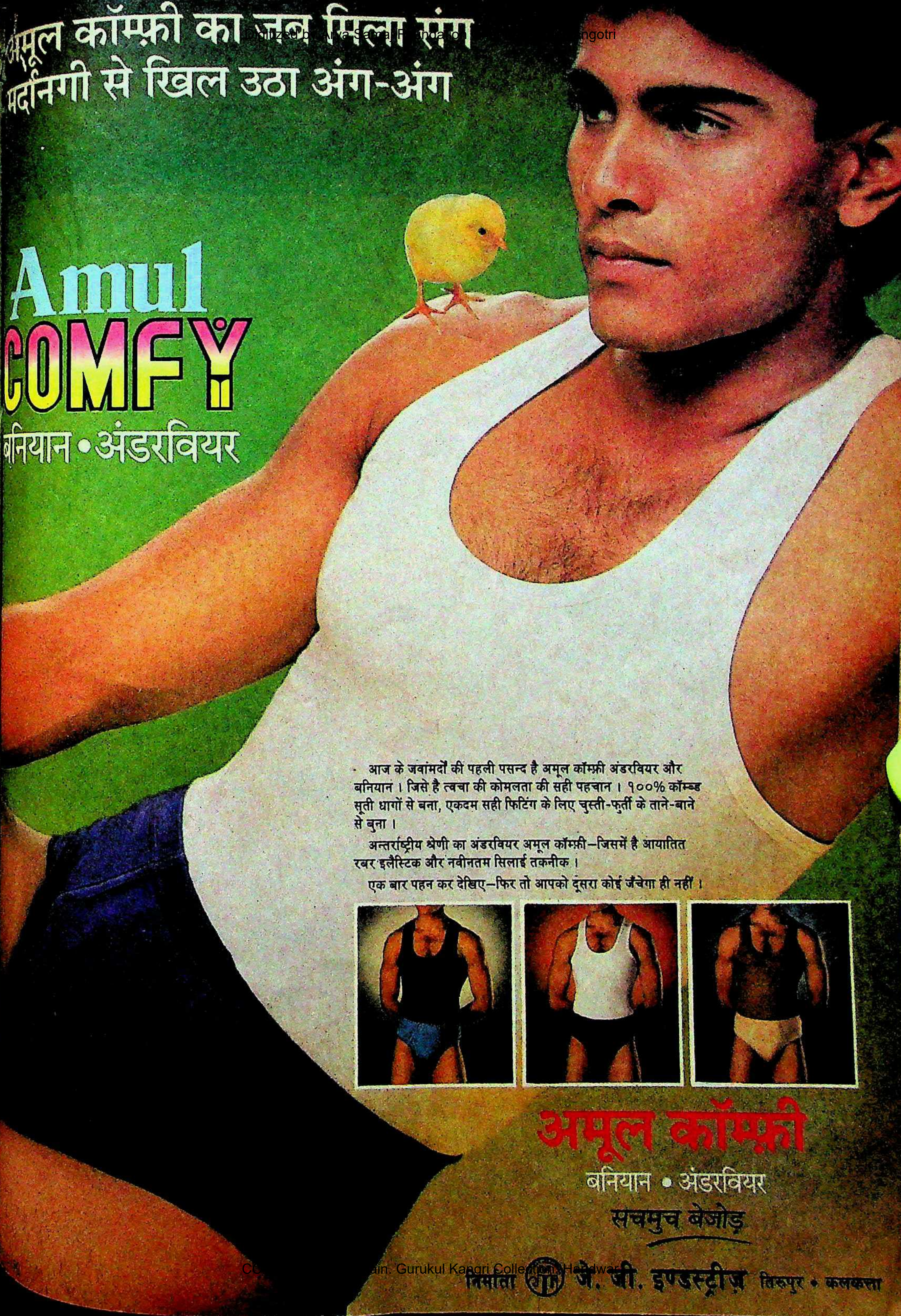
अमूल कॉम्फ़ी का जब मिला संग
मर्दानगी से खिल उठा अंग-अंग
Amul
COMFY
बनियान • अंडरवियर

आज के जवांमर्दों की पहली पसन्द है अमूल कॉम्फ़ी अंडरवियर और बनियान। जिसे है त्वचा की कोमलता की सही पहचान। १००% कॉम्बड सूती धागों से बना, एकदम सही फिटिंग के लिए चुस्ती-फुर्ती के ताने-बाने से बुना।

अन्तर्राष्ट्रीय श्रेणी का अंडरवियर अमूल कॉम्फ़ी—जिसमें है आयातित रबर इलैस्टिक और नवीनतम सिलाई तकनीक।

एक बार पहन कर देखिए—फिर तो आपको दूसरा कोई जँचेगा ही नहीं।

अमूल कॉम्फ़ी
बनियान • अंडरवियर
सचमुच बेजोड़

निर्माता जे. जी. इण्डस्ट्रीज़ तिरुपुर • कलकत्ता

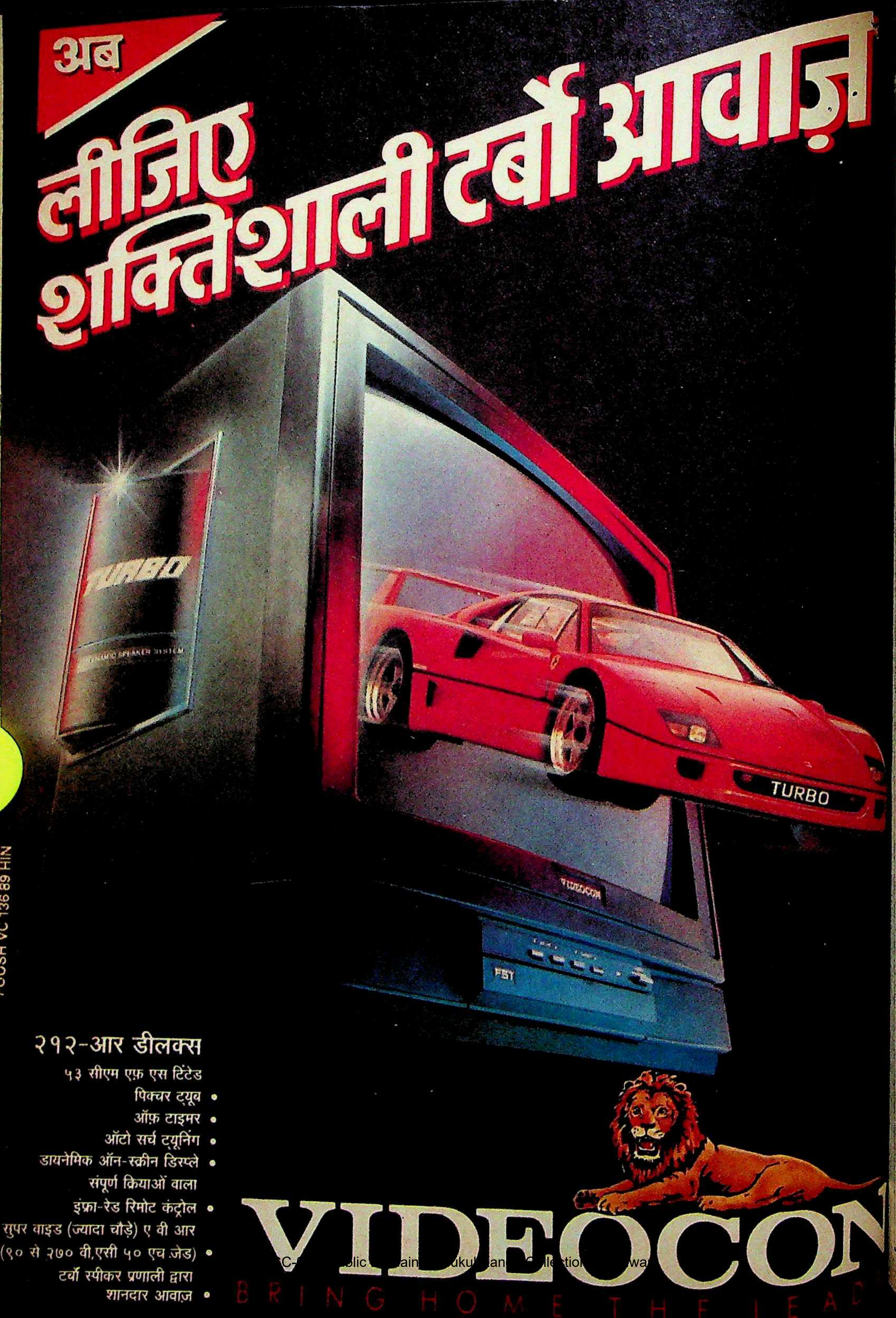
अब
लीजिए
शक्तिशाली टर्बो आवाज़
TURBO
DYNAMIC SPEAKER SYSTEM
TURBO
VIDEOCON
VIDEOCON
BRING HOME THE LEAD
POUSH VC 136 89 HIN

२१२-आर डीलक्स
- ५३ सीएम एफ़ एस टिंटेड पिक्चर ट्यूब
- ऑफ़ टाइमर
- ऑटो सर्च ट्यूनिंग
- डायनेमिक ऑन-स्क्रीन डिस्प्ले
- संपूर्ण क्रियाओं वाला इंफ्रा-रेड रिमोट कंट्रोल
- सुपर वाइड (ज्यादा चौड़े) ए वी आर (९० से २७० वी.एसी ५० एच.जेड)
- टर्बो स्पीकर प्रणाली द्वारा शानदार आवाज़

आजकल
इंडियन एय
एक
नई एअ
पहले से
के लि
एअरलाइन
समय और
चकाचक
हवाई अड्डे
ग्रस्त हो ग
ज्ञान चली
इस वि
तब भी ग
के सबसे बु
छह घंटों
पहुंचे नाग
खां ने कह
गई है. अ
सुधरती ल
14 फ
एस.एस.
संख्या आ
ही लग र
चुके इस
एअर बस
नई नहीं
उड़ाने का
इसकी फैक
बंबई से
के दौरान
यात्रियों क
परमाणु अ
एस.सी.
तकलीफदेह
तीन बार
लेकिन क
सिधवा के
सचाई
सहचालक
कोई संकेत
ऊपर लाक
ही साफ
विमान को
इजाजत
जॉन कहते
क्रम ने उ
विमान र
लेकिन प
गया और
गोल्फ मैद
किनारे ब

इंडियन एयरलाइंस

एक और हादसा

नई एअर बस दगा दे गई

पहले से ही बदनाम इंडियन एअरलाइंस के लिए यह और भयानक झटका था. एअरलाइन की प्रतिष्ठा पिछले पखवाड़े उस समय और गर्त में चली गई जब इसकी चकाचक नई एअर बस ए-320 बंगलूर हवाई अड्डे पर उतरने के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गई और इसमें सवार 90 लोगों की जान चली गई.

इस विमान पर सवार करीब 50 लोग बच भी गए पर यह इस घरेलू विमान सेवा के सबसे बुरे हादसों में से एक है. हादसे के छह घंटों के भीतर ही दुर्घटनास्थल पर पहुंचे नागरिक उड्डयनमंत्री आरिफ मुहम्मद खां ने कहा, "यह बहुत ही दुखद घटना हो गई है. और वह भी तब जबकि स्थिति सुधरती लग रही थी."

14 फरवरी को 11.35 पर कैप्टन एस.एस. गोपुजकर ने बंबई से उड़ान संख्या आई सी-602 को संभाला तब ऐसा ही लग रहा था. 10300 घंटे उड़ान भर चुके इस 46 वर्षीय पायलट के लिए इस एअर बस की पूरी प्रणाली निश्चित रूप से नई नहीं रही होगी क्योंकि उन्होंने इसे उड़ाने का प्रशिक्षण तौलूस, फ्रांस स्थित इसकी फैक्टरी में ही जाकर लिया था.

बंबई से बंगलूर की 90 मिनट की उड़ान के दौरान क्या हुआ इस बारे में जीवित बचे यात्रियों का कहना भिन्न-भिन्न है. तारापुर परमाणु अनुसंधान केंद्र, बंबई के इंजीनियर एम.सी. त्रिपाठी बताते हैं, "यह बहुत ही तकलीफदेह उड़ान थी. विमान कम-से-कम तीन बार जोर से झटका खा गया था." लेकिन कनाडा में बस गए भारतीय फिल सिधवा के अनुसार, "उड़ान शानदार थी."

सचाई चाहे जो हो, गोपुजकर और उनके सहचालक सिरिल फर्नांडीस इस गड़बड़ी का कोई संकेत दिए बिना विमान को बंगलूर के ऊपर लाकर रनवे की सीध में ले आए. बहुत ही साफ और सामान्य मौसम में इस अभागे विमान को एअर कंट्रोल रूम से उतरने की इजाजत मिली. हवाई अड्डे के कंट्रोलर ए.सी. जॉन कहते हैं, "मौसम साफ था और कंट्रोल रूम ने उतरने की इजाजत तुरंत दे दी." विमान रनवे की ओर सामान्य ढंग से आया लेकिन पलक झपकते ही एकदम नीचे आ गया और रनवे से 1500 मीटर पहले ही गोल्फ मैदान से टकराया. फिर यह मैदान के किनारे बने बांध से टकराया और इसके दोनों इंजन व चक्के अलग हो गए. विमान का शेष हिस्सा एक सूखे तालाब के अंदर जाकर रुका. मलवा वहां बिखर गया.

मुश्ताक अहमद

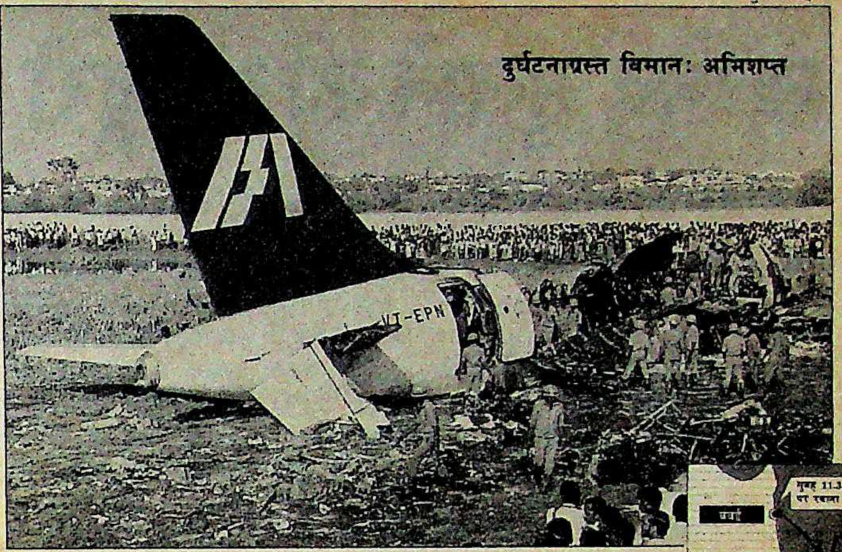

दुर्घटनाग्रस्त विमान: अभिशप्त

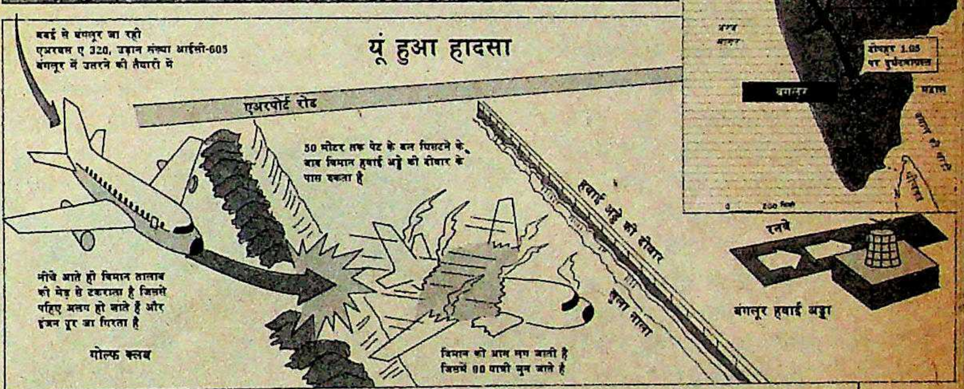

यूं हुआ हादसा

बंबई से बंगलूर जा रही एअरबस ए 320, उड़ान संख्या आईसी-605 बंगलूर में उतरने की तैयारी में
एअरपोर्ट रोड
50 मीटर तक पेट के बल घिसटने के बाद विमान हवाई अड्डे की दीवार के पास रुकता है
हवाई अड्डे की दीवार
सूखा नाला
नीचे आते ही विमान तालाब की मेड़ से टकराता है जिससे पहिए अलग हो जाते हैं और इंजन दूर जा गिरता है
गोल्फ क्लब
विमान को आग लग जाती है जिसमें 90 यात्री भुन जाते हैं
सुबह 11.35 पर रवाना
बंबई
अरब सागर
बंगलूर 1.05 पर दुर्घटनाग्रस्त
बंगलूर
मद्रास
बंगाल की खाड़ी
श्रीलंका
0 200 किमी
रनवे
बंगलूर हवाई अड्डा

चार्ट: वी.के. शर्मा

सूखे तालाब के अंदर पहुंच कर जब विमान रुका तब तक उसके अगले हिस्से में आग लग गई. पर पिछले हिस्से ने आग नहीं पकड़ी थी और बचे यात्री पिछले दरवाजे की ओर दौड़ रहे थे. जीवित बची तीन विमान परिचारिकाओं ने इसका पिछला दरवाजा खोल दिया और यात्रियों को विमान से कूदकर निकल जाने को कहा. 21 वर्षीय सोमालियाई छात्र सोलेह अहमद, जो इंजीनियरिंग कोर्स में नाम लिखाने आ रहे थे, कहते हैं, "परिचारिकाएं समझदार थीं. उन्होंने जबरदस्त होशियारी दिखाई." बंगलूर के व्यापारी असलम पाशा पहली बार हवाई यात्रा कर रहे थे. उन्होंने कहा, "हवाई यात्रा से अब मैंने तौबा कर ली." सांई बाबा के दर्शनों के लिए जा रही फ्रांसीसी महिला मैरी हेलेन अपने बचने को भगवत्कृपा मानती हैं. लेकिन उद्योगपति अशोक बिड़ला, उनकी पत्नी सुनंदा और बेटी सुजाता समेत 90 यात्रियों पर भगवान ने कृपा नहीं की.

फिल सिधवा कहते हैं कि जो लोग आगे थे उनके लिए बचने का कोई रास्ता नहीं था क्योंकि कुछ सेकंड में ही अगला हिस्सा जल उठा. वे पीछे थे इसलिए बचे.

बंगलूर के पुलिस आयुक्त एस. रामलिंगम भी मदुरै जाने के लिए इसी उड़ान के इंतजार में हवाई अड्डे पर बैठे थे. दुर्घटना की खबर मिलते ही उन्होंने वायरलेस से फायरब्रिगेड को तुरंत सूचना दी. 20 गाड़ियां आईं लेकिन उनके पहुंचने तक विमान का दो-तिहाई हिस्सा जलकर खाक हो गया था. सीट बेल्ट से बंधी दर्जनों लाशें इतनी जल चुकी थीं कि उनकी पहचान कठिन हो गई. विमान में बिखरी लाशें बचने की कोशिश की साक्षी थीं.

बड़े हिम्मती लोगों के लिए भी हादसे की जगह पर खड़ा रह पाना मुश्किल हो रहा था. जली लाशें, पिघली धातु, बिखरा सामान और मानव मांस जलने की गंध एक और भीषण हादसे की गवाह थी. हिंदुस्तान एरोनाटिक्स लि. और वायु सेना के अस्पताल का दृश्य भी हृदय विदारक था. घायलों को वहीं रखा गया था. रोने-बिलखने वाले सगे-संबंधियों के बीच उन घायल लोगों का व्यवहार भी सन्न कर देने वाला था, जिन्हें अभी भी अपने साथ उड़े 90 लोगों की मौत का पता तक नहीं था.

—चिदानंद राजघट्टा

असम

मतभेद भुलाने की मजबूरी

महंत और फूकन ने हाथ मिलाए मगर कड़वाहट कायम

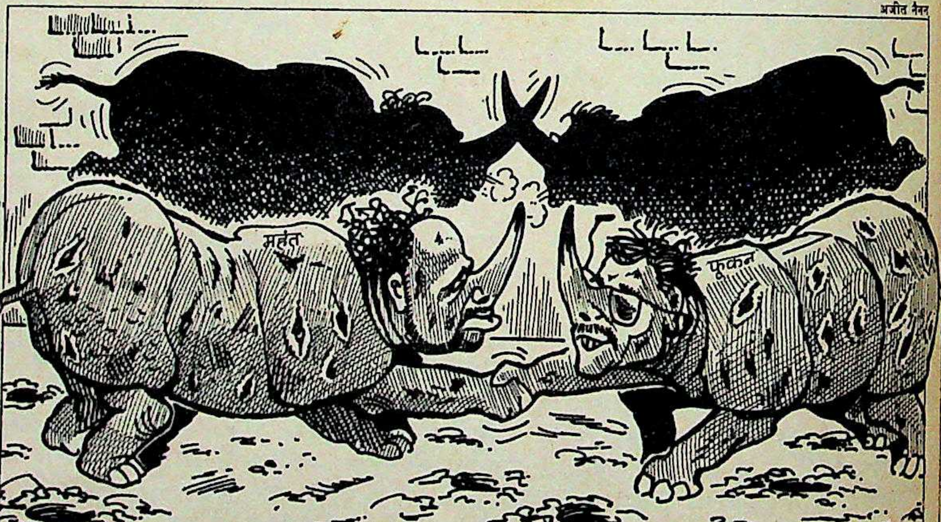

अजीत नैनन

पांच साल पहले प्रफुल्ल कुमार महंत और भृगु फूकन के नेतृत्व वाली असम गण परिषद ने जब दिसपुर स्थित जनता भवन में सत्ता की कुर्सी संभाली थी, तब इन दोनों नेताओं को पराक्रमी पुरोधा कहा गया था. लेकिन पिछले पखवाड़े ये दोनों एक दूसरे के खिलाफ अपना पराक्रम दिखाने की मुद्रा में नजर आए.

लेकिन उनकी यह मुद्रा जल्दी ही लुप्त भी हो गई. भिड़ंत से दोनों को ही नुकसान पहुंचेगा इस बात का एहसास होते ही दोनों नेताओं ने आपसी मतभेदों को भुलाकर न सिर्फ हाथ मिला लिए, वरन अपने व्यवहार के लिए जनता से माफी भी मांगी. संयुक्त बयान में उन्होंने कहा, "अगर असम की जनता को इस प्रकरण से तकलीफ पहुंची है, तो हम उससे माफी मांगते हैं."

लेकिन इस युद्धविराम के बावजूद भीतर-भीतर ही कुछ उबल भी रहा है. चूंकि अगप का नेतृत्व जोशीले युवा नेताओं के हाथ में है इसलिए आंतरिक कलह इसका पुराना मर्ज बन गया है. अगर असम में इस साल चुनाव न होने वाले होते तो बहुत मुमकिन है कि ये आपसी झगड़े जारी रहते. अगप को सत्ता में लाने वाले असम आंदोलन के मुख्य नीति नियंता 68 वर्षीय निवारण बोरा का कहना है, "महंत और उनकी टीम न तो सरकार चलाना सीख सकी और न ही सार्वजनिक आचरण का तौर-तरीका."

इस बयान में सचाई है. और, सचाई यह भी है कि मतभेद भुलाकर हाथ मिलाने के ऐलान के बावजूद कड़वाहट बरकरार है. सुलह-सफाई के बाद गृहमंत्री फूकन का कहना था, "मुख्यमंत्री के साथ मेरे मतभेद कभी भी व्यक्तिगत नहीं रहे. वैसे जो भी मतभेद हैं उन्हें मैं पार्टी के भीतर ही निबटाऊंगा. अपनी शिकायतें मैं प्रेस को कभी नहीं बताऊंगा और भ्रष्टाचार के मामले पर कभी समझौता भी नहीं करूंगा."

छात्र आंदोलन के दौरान प्रशंसनीय सूझबूझ और संकल्प का परिचय देने वाले महंत और फूकन के बीच मतभेद कुछ दिनों से पनप रहे थे. मुख्यमंत्री को शक होने लगा था कि उनका गृहमंत्री बहुत महत्वाकांक्षी होता जा रहा है और उन्हें गद्दी से हटाने के लिए असंतुष्टों को एकजुट कर रहा है. अगप सूत्रों के अनुसार महंत को यह संदेह भी हो गया था कि राज्य में बोडो आंदोलनकारियों से फूकन का गुप्त संबंध है.

इस बीच महंत को निरंतर मजबूत होते बोडो आंदोलन, और घोटालों के भारी-भरकम आरोपों के कारण काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है. असंतुष्टों के लिए ये पर्याप्त मसाले थे. असंतुष्टों ने, जिनमें अधिकतर नेता अक्टूबर 1988 में मंत्रिमंडल के फेरबदल में हटाए गए मंत्री थे, कई बैठकों के बाद तय कर लिया था कि फूकन या सार्वजनिक निर्माणमंत्री अतुल बोरा में से किसी को मुख्यमंत्री बनाया जा सकता है.

बहरहाल, महंत ने राजनैतिक सूझबूझ का परिचय दिया. पिछले साल जुलाई में जब अगप की केंद्रीय कार्यसमिति की बैठक हुई तो उन्होंने पार्टी से तीन असंतुष्टों को बरखास्त करा दिया. यह कठोर रुख का संकेत था. लेकिन उस समय फूकन के खिलाफ कार्रवाई करना जल्दबाजी होती. फिर भी दैनिक 'नतुन' को दिए गए चौंकाने वाले इंटरव्यू में उन्होंने खुलकर चेतावनी दे दी थी, "समस्या यह है कि फूकन कभी-कभी ऐसा व्यवहार करते हैं मानो मुख्यमंत्री वे ही हों. सरकार की सामूहिक छवि की चिंता किसी को नहीं रहती."

तलवारें खिंच चुकी थीं. महंत ने जनवरी में फिर हमला किया और अपने गृहमंत्री पर 'विश्वासघात' का आरोप लगाया, उन्हें 'कानून-व्यवस्था की स्थिति में गिरावट' के लिए जिम्मेदार ठहराया और उन पर 'भ्रष्टाचार, अक्षमता और अहंकार' के आरोप भी लगाए. जवाब में फूकन ने महंत को ये आरोप सिद्ध करने और 'जन अदालत' का सामना करने की चुनौती दे डाली. महंत ने उन्हें पत्र द्वारा जवाब दिया, "पिछले चार साल में आप कई बार जन अदालत में जा चुके हैं. पार्टी अनुशासन को इस प्रकार भंग करके आप जनता के हितों को ही नुकसान पहुंचा रहे हैं."

29 जनवरी को फूकन से ये छह विभाग छीन लिए गए—आबकारी, जेल, पर्यटन मुद्रण और लेखन सामग्री, पासपोर्ट और पर्वतीय विकास. एवज में उन्हें असम समझौता कार्यान्वियन जैसा पेचीदा विभाग दे दिया गया. महंत के घनिष्ठ मित्र दुर्गादास बोरो को गृहराज्यमंत्री बनाया गया.

इस उठापटक और आरोप-प्रत्यारोप से पार्टी विधायकों में गंभीर नाराजगी पैदा हुई. शिक्षामंत्री वृंदावन गोस्वामी ने इस्तीफे की धमकी दे दी और स्वास्थ्य राज्यमंत्री समसिंग हांसे ने अपना त्यागपत्र भेज दिया. साफ था कि इन सबसे पार्टी में दरारें पड़ जातीं. इसी के मद्देनजर दोनों नेताओं ने आपसी टकराव खत्म करके सुलह-सफाई का रास्ता अपनाया. लेकिन मजबूरी में की गई यह दोस्ती इस चुनावी वर्ष के दबावों को कितना झेल पाएगी यह भविष्य ही बताएगा.

—फरजंद अहमद

मध्य प्रदेश

नाजायज फैसला

शुक्ल का एक और कारनामा

पिछले पखवाड़े मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल ने एक ही झटके में राज्य की तमाम कॉलोनियों को नियमित करने का फैसला कर लिया. छह साल पहले अर्जुन सिंह ने भी सरकारी जमीन पर अतिक्रमणों को नियमित करके झुग्गीवासियों को मालिकाना हक दे दिया था.

अब भ्रष्ट आचरण निरोधक कानून में किया गया संशोधन नगरों के मास्टर प्लान की धज्जियां ही नहीं उड़ाता, विशेषज्ञों की राय में उसका मकसद गरीबों की मदद करना भी नहीं है. असली फायदा कॉलोनाइजरों, भू-संपत्ति व्यवसायियों, जमीन हड़पने वालों और गैरकानूनी काम करने वालों को पहुंचेगा. जाने-माने नगर नियोजक एम.एन. बुच के अनुसार, "यह दूसरे लोगों के लिए इशारा है कि वे भी गैरकानूनी काम करने में संकोच न करें.

आर.सी. साहू

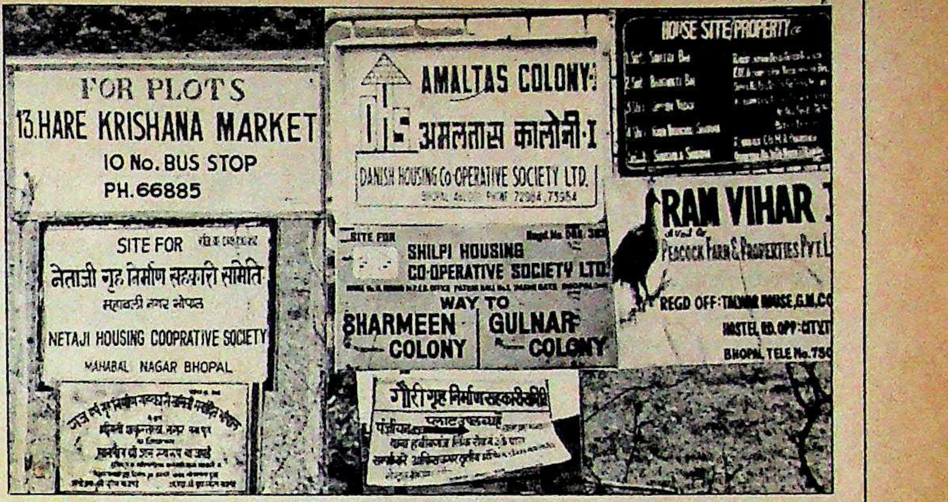
FOR PLOTS
13.HARE KRISHANA MARKET
10 No. BUS STOP
PH.66885
SITE FOR
नेताजी गृह निर्माण सहकारी समिति
महाबली नगर भोपाल
NETAJI HOUSING COOPRATIVE SOCIETY
MAHABAL NAGAR BHOPAL
AMALTAS COLONY-I
अमलतास कालोनी-I
DANISH HOUSING Co-OPERATIVE SOCIETY LTD.
SITE FOR
SHILPI HOUSING
CO-OPERATIVE SOCIETY LTD.
WAY TO
SHARMEEN COLONY
GULNAR COLONY
गौरी गृह निर्माण सहकारी
HOUSE SITE/PROPERTY
RAM VIHAR
PEACOCK FARM & PROPERTIES PVT. L
REGD OFF:
BHOPAL TELE No.

अवैध कॉलोनियों के बोर्ड, और (दाएं) शुक्ल

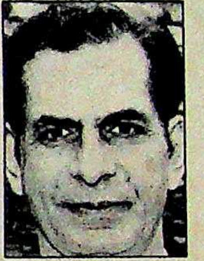

राज्य सरकार का दावा है कि गैरकानूनी कॉलोनियों को नियमित करने का उसका फैसला वहां रह रहे लोगों को फायदा पहुंचाने के लिए है, "ताकि रातोरात कॉलोनाइजर बने लोगों के हाथों धोखा खाने वाले मध्यम वर्ग

इंडियन पोस्ट

जगह का झमेला

बंबई का दैनिक 'द इंडियन पोस्ट', इन दिनों खबरें छापने के बजाए खुद खबरों में है. प्रबंधकों और कर्मचारियों के बीच चल रहे झगड़े के कारण 26 जनवरी से अखबार का प्रकाशन बंद है.

अखबार का स्वामी शाह परिवार, जो अहमदाबाद के दैनिक, 'गुजरात समाचार' का मालिक भी है, अखबार के कार्यालय को मध्य बंबई में स्थित नए भवन में ले जाना चाहता है. शाह अखबार के पूर्व मालिक और रेमंड समूह के मालिक विजयपत सिंघानिया से किया वादा पूरा करना चाहते थे कि गणतंत्र दिवस से पहले कार्यालय को खाली कर देंगे. लेकिन कर्मचारी नए भवन में जाने के लिए कतई तैयार नहीं हैं. उनका कहना है कि नए कार्यालय में बहुत ही कम जगह है, गिनती के टाईपराइटर हैं और फर्नीचर भी बहुत कम है.

इन लोगों ने पुराने कार्यालय के भवन को घेर लिया है और तब तक खाली करने के लिए तैयार नहीं हैं, जब तक कि 'सलीकेवाली' वैकल्पिक व्यवस्था नहीं हो जाती. अखबार के कर्मचारी संघ के अध्यक्ष जेसीका महादेवन के अनुसार, "अखबार निकालना संभव नहीं है क्योंकि बुनियादी सुविधा हमें नहीं दी जा रही हैं." पिछले पखवाड़े खेल संवाददाता, इवान क्रेस्टो को इमारत के बाहर सुरक्षा कर्मचारियों ने कथित रूप से पीट डाला.

लेकिन शाह का कहना दावा है कि उन्होंने शहर के बीच जगह तलाश की थी. परेल में उनके पास जगह थी, इसलिए उन्होंने चाहा कि अखबार के कार्यालय को वहां ले जाया जाए.

विरोध अब 'द इंडियन पोस्ट' की सीमाओं से बाहर हो गया है. शहर के पत्रकारों ने जुलूस निकाला और उनके प्रतिनिधिमंडल ने केंद्रीय सूचना तथा प्रसारणमंत्री पी. उपेंद्र से भेंट की. उपेंद्र ने अखबार फिर शुरू कराने के लिए सहयोग का वचन दिया. मामला अदालत में पहुंच गया है. पत्रकारों की दलील है कि सिंघानिया को 'द इंडियन पोस्ट' से पुराना दफ्तर खाली कराने का कोई हक नहीं है. कारण: यह भवन राष्ट्रीय कपड़ा निगम की मिल्कियत है. वह वर्तमान किराएदार सिंघानिया से भवन खाली कराने के लिए मुकदमा लड़ रहा है.

वैसे 'द इंडियन पोस्ट' के लिए यह तीन साल के मुसीबत भरे इतिहास का एक और पन्ना ही है. कर्मचारी उम्मीद बांधे हुए हैं कि गणतंत्र दिवस का अंक आखिरी अंक नहीं था.

—सलिल त्रिपाठी

Indian Post

कर्मचारियों का विरोध प्रदर्शन

के भोलेभाले लोगों की मदद हो सके," और उनकी "पानी और बिजली जैसी बुनियादी जरूरतें पूरी की जा सकें." भोपाल बिल्डर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष विनय अग्रवाल मानते हैं, "सरकार की घोषणा होते ही अवैध कॉलोनियों में भूखंडों की कीमतें काफी बढ़ गई हैं."

भाजपा के भैरूलाल पाटीदार ने मांग की, "गैरकानूनी निर्माणों को नियमित करने के बजाए धन बटोरने वालों के खिलाफ कार्रवाई चाहिए."

सरकार ने जमीन हड़पने वालों की सुविधा के लिए कानून में जानबूझकर पर्याप्त खामियां छोड़ दी लगती हैं. मिसाल के लिए, सरकार ने कॉलोनियों को नियमित करने की अंतिम तारीख 31 दिसंबर 1989 मुकर्रर की थी. लेकिन पिछले पखवाड़े तक सरकार के पास राज्य में गैरकानूनी रूप से बनी कॉलोनियों की प्रमाणित सूची ही नहीं थी.

यह अकेला घोटाला नहीं है, जो सरकार के दो महीने के शासनकाल में उजागर हुआ है. पिछले पखवाड़े राजस्वमंत्री कृष्णपाल सिंह ने मात्र 125 मिनट में शहरी भूमि हदबंदी कानून के तहत 2,000 हेक्टेयर जमीन से संबंधित 134 मामलों का निबटारा कर दिया. शुक्ल का तर्क है, "हदबंदी संबंधी मामलों के निबटारे में देरी से शहरी क्षेत्रों में जमीन के दाम काफी बढ़ गए थे." राज्य जनता दल महासचिव विनय दीक्षित कहते हैं, "सवाल खरीद-फरोख्त का नहीं बल्कि यह है कि इससे समाज के कमजोर वर्गों का आवास मुहैया कराने का भूमि हदबंदी कानून का मकसद ही बेकार तो नहीं हो जाएगा." पर सरकार की चिता यह नहीं लगती.

—नरेंद्र कुमार सिंह

संजय सिंह

जोरदार स्वागत

उनका शरीर गवाह है कि मौत से वे किस कदर जूझे. अक्खड़पन की जगह बाल सुलभ मासूमियत ने ले ली है. कसा हुआ शरीर अब हड्डियों का ढांचा भर रह गया है.

लेकिन कोई जैसा दिखता है जरूरी नहीं कि वह वैसा ही हो. नवंबर में चुनाव प्रचार के दौरान लगी गोलियों और लखनऊ, बंबई, लंदन के अस्पतालों में गुजरे लंबे अरसे ने संजय सिंह की जिस्मानी ताकत भले ही छीन ली हो पर उत्तर प्रदेश की राजनीति में उनका रुतबा जस का तस है. 1 फरवरी को लखनऊ लौटने पर उ.प्र. जनता दल के इस युवा महामंत्री का जैसा जोरदार स्वागत हुआ वह इसका गवाह है.

सरकारी हवाई जहाज से जैसे ही वे बाहर निकले, उनके हजारों समर्थकों ने 'शेर-ए-यूपी' के नारे से आसमान गुंजा दिया. राज्य के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव भी उनकी अगवानी के लिए मौजूद थे. हवाई अड्डे से उनके घर के रास्ते पर करीब सैकड़ा भर स्वागत द्वार बने थे. और जनता दल का क्रांति रथ जब उनको लेकर चला तो दोनों ओर खड़े समर्थकों ने उन पर फूल बरसाए.

पर यह स्वागत सत्कार स्वत:स्फूर्त नहीं था. इसका मकसद यह जता देना था कि जनता दल की ठाकुर लॉबी को सेंत-मेत में नहीं लिया जा सकता. वाराणसी, सुलतानपुर, बस्ती, गोंडा, रायबरेली और दूसरे जिलों के ठाकुर स्वागत के लिए हवाई अड्डे पर जुटे थे. और रास्ते में लगे हर बैनर में स्वागतकर्ता के नाम में सिंह लगा हुआ था.

आर.के. गुप्त

संजय सिंह की अगवानी: सियासी ताकत

ठाकुर एकजुट इसलिए हुए क्योंकि उन्हें लगा कि उनकी उपेक्षा की गई है. मौजूदा मंत्रिमंडल में सिर्फ एक ठाकुर है—खाद्यमंत्री दिवाकर विक्रम सिंह. विनम्र स्वभाव के इस नेता से ठाकुरों के हितों की रक्षा की उम्मीद कम ही है. जनता दल की जिला इकाइयों में हुई ताजा नियुक्तियों में भी ठाकुरों को बहुत नुमाइंदगी नहीं मिली है. तत्कालीन लोकदल (अ) गुट के एक ठाकुर विधायक कहते हैं, "पिछले दो महीनों से हमें लग रहा है कि हम महज दर्शक ही हैं."

पर फिलहाल संजय की शारीरिक हालत ऐसी नहीं है कि वे ठाकुरों को नेतृत्व दे सकें. लंदन में नौ घंटे तक चले ऑपरेशन समेत दो बड़े ऑपरेशन होने के बाद उन्हें आराम की जरूरत है. उनका कहना है, "दो महीने के आराम के बाद ही मैं राजनीति में सक्रिय हो सकूंगा."

और राजनीति के अखाड़े में उतरते ही कई कड़ी चुनौतियां उनके सामने होंगी. पिछले विधानसभा चुनाव में वे अपनी सीट गंवा चुके हैं. इसलिए सबसे पहले दलगत प्रतिद्वंद्वियों को उन्हें अपनी सियासी ताकत दिखानी होगी. खबरें उड़ रही हैं कि संजय को शायद उप-मुख्यमंत्री बना दिया जाएगा या मुलायम सिंह यादव उनके लिए पार्टी की राज्य इकाई का अध्यक्ष पद खाली कर देंगे. लेकिन इन दोनों ही कदमों का विरोध हो सकता है. पर प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से उनकी घनिष्ठता के चलते विरोध के सुरों में वैसी जान नहीं हो सकती.

राजनैतिक लड़ाइयों के अलावा उन्हें व्यक्तिगत मोर्चे पर भी जूझना पड़ेगा. केंद्रीय जांच ब्यूरो ने उन्हें बैडमिंटन खिलाड़ी सैयद मोदी की हत्या के मामले में घसीटा है. संजय कहते हैं, "मामला अब अदालत में है. वहीं साबित होगा कि मैं कसूरवार हूं या नहीं." अदालत का फैसला चाहे जो हो और उनके विरोधी उनके लिए जितनी ही मुसीबतें खड़ी करें, लड़ाई लड़े बिना संजय हार नहीं मानने वाले. मौत के मुंह से वापसी इसी जीवट का सबूत है.

—दिलीप अवस्थी

आंध्र प्रदेश

घिसटते कदम

इंका सरकार के खाते में अभी उपलब्धि नहीं

सत्ता संभालने के दो महीने बाद भी आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मर्रि चेन्ना रेड्डी कोई मार्का अंजाम नहीं दे पाए हैं. उनकी अब तक की उपलब्धि बस यही है कि उन्होंने पूर्ववर्ती तेलुगु देशम सरकार के कई निर्णयों को उलट दिया और घोषणा की कि रोजगार के अवसर पैदा करने वाली 100 करोड़ रु. की महत्वाकांक्षी योजना के लिए वित्त वर्ष 1989-90 में 25 करोड़ रु. अलग से रखे जाएंगे.

उनकी इंका सरकार ने यदि किसी दिशा में कोई कदम बढ़ाया है तो वह नक्सलवाद की समस्या से निबटने की ओर है. मगर इसके लिए भी रेड्डी के प्रयास कम, हालात ज्यादा जिम्मेदार हैं. नक्सलवादी जिस तरह विधायकों और प्रजा परिषद सदस्यों का अपहरण कर रहे थे उसके चलते सरकार के सामने कार्रवाई करने के अलावा कोई चारा था भी नहीं.

रेड्डी की तारीफ की ही जानी चाहिए कि उन्होंने इसे पुलिस द्वारा निबटाए जाने वाले कानून और व्यवस्था का मामला बनाने के बजाए राजनैतिक समस्या मानकर सुलझाया. उन्होंने घोषणा की कि जिन नक्सलवादियों पर मुकदमे चल रहे हैं वे यदि अदालत में जमानत की अर्जी दें तो उन्हें रिहा कर दिया जाएगा. नतीजतन, ऐसे 141 नक्सलवादी रिहा भी किए गए. रेड्डी ने उन इलाकों में, जहां नक्सलवादी सक्रिय रहे हैं, अशांत क्षेत्र कानून लागू करने के आदेश भी रद्द कर दिए. इसके अलावा, उन्होंने नक्सलवादियों से अपना आंदोलन खुलेआम चलाने की भी पेशकश की है, बशर्ते वे हिंसा की राजनीति का त्याग कर दें.

बहरहाल, नक्सलवादियों ने अभी तक झुकने के कोई संकेत नहीं दिए हैं. लेकिन मुख्यमंत्री ने बातचीत के दरवाजे खुले रखे हैं. इनमें रेड्डी के दूसरे बेटे शशिधर रेड्डी की आंध्र प्रदेश नागरिक अधिकार समिति के अध्यक्ष के.जी. कन्नाबीरन से बातचीत एक महत्वपूर्ण प्रयास है. कन्नाबीरन ही नक्सलवादियों के नागरिक अधिकारों के हनन के खिलाफ आवाज उठाते रहे हैं.

प्रशांत पंजियार

चेन्ना रेड्डीः अनिश्चय हावी

पर ये प्रयास दूसरे मोर्चों पर सरकार की सुस्त रफ्तार की भरपाई नहीं करते. परिवहनमंत्री जी.वी. सुधाकर राव सरकार की धीमी प्रगति की कैफियत देते हैं, "हमने जीर्ण-शीर्ण हो चुकी सरकार विरासत में पाई है. जन कल्याण की नई योजनाएं शुरू करने से पहले हमें सब कुछ फिर से व्यवस्थित करना होगा."

मगर असली वजह कुछ और ही है. रेड्डी का अपना जनाधार नहीं है. पार्टी में भी उनकी गिरफ्त मजबूत नहीं है इसलिए अपने नेतृत्व को कायम रखने के वे पूरी तरह पार्टी अध्यक्ष राजीव गांधी पर निर्भर हैं. इसीलिए वे ऐसा कोई नीतिगत फैसला करने में हिचकिचाते हैं जो पार्टी के किसी गुट को नाराज कर दे. मसलन, रेड्डी गरीबी दूर करने वाला कार्यक्रम जारी रखना चाहते हैं पर खर्च घटाने के लिए राज्य में दो रु. किलो की दर पर चावल मुहैया कराने की योजना में परिवर्तन लाना चाहते हैं. लेकिन मंत्रिमंडल के दूसरे सहयोगियों के दबाव के कारण उन्हें यह विचार त्याग देना पड़ा.

रेड्डी को मिलने वाले राजनैतिक समर्थन या उसके अभाव की वजह से उनके मंत्रिमंडल का आकार भी छोटा है. रेड्डी समेत मंत्रिमंडल में कुल 19 सदस्य हैं. देश के चौथे सबसे बड़े राज्य में 1970 के बाद यह सबसे छोटा मंत्रिमंडल है. इसके विस्तार में देरी करके रेड्डी शायद उन विधायकों के असंतोष को थोड़ा और टाल देना चाहते हैं, जो मंत्रिमंडल में शामिल नहीं हो पाए हैं. लेकिन यह रणनीति शायद ज्यादा दिन नहीं चल पाए.

विभिन्न गुटों की नाराजगी से बचने के लिए रेड्डी ने अपने मंत्रियों को कई बड़े फैसले लेने से भी रोका हुआ है. इसके बजाए उन्होंने अर्थव्यवस्था, कृषि एवं ग्रामीण विकास, पिछड़े वर्गों के कल्याण, समाज सेवा तथा राजनैतिक और विधानसभा मामलों पर नीति निर्धारण और उनके क्रियान्वयन की रणनीति तैयार करने के लिए पांच स्थायी समितियों का गठन किया है.

ये समितियां किसी मुद्दे पर एकमत होने में तो उपयोगी होंगी ही, इनका अल्पकालिक उद्देश्य भी है. फरवरी के अंत में रेड्डी इलाज तथा परीक्षण के लिए इंग्लैंड और शायद अमेरिका भी जाएंगे. उनकी अनुपस्थिति में ये समितियां ही सरकार चलाएंगी.

रेड्डी गंभीर रूप से बीमार होने की अफवाहों को हंसकर टाल देते हैं. वे कहते हैं, "इस तरह की अफवाहें मैंने ही उड़ने दी थीं. यह पता लगाने के लिए कि कौन व्यक्ति मुझे हटाकर मुख्यमंत्री बनना चाहते हैं. कम-से-कम तीन लोग मुझे हटाने को उतारू हैं." लेकिन यह शायद हंसी में टाल देने वाला मामला नहीं है क्योंकि असंतुष्ट भी हाथ पर हाथ धरे नहीं बैठे हैं और केंद्रीय नेतृत्व भी उनका पूरा समर्थन करता नहीं लगता. बहरहाल विदेश में बाई पास सर्जरी के तुरंत बाद एन.टी. रामराव को उखाड़कर भास्कर राव के मुख्यमंत्री बनने का उदाहरण उन्हें विचलित करने के लिए काफी है.

—अमरनाथ के. मेनन

डिज़्नीलैंड

देसी दिमाग का विदेशी फितूर

मनोरंजन का मायालोक बनाने के लिए 14,000 एकड़ कृषियोग्य जमीन के अधिग्रहण की राज्य सरकार की योजना पर विवाद भड़का. लेकिन सरकार पर इसका कोई असर नहीं.

फिजूलखर्च भी शायद ऐसा नहीं सोच सकता. सिर के ऊपर घूमते हुए एक विशाल तारामंडल की कल्पना कीजिए. उसके दाएं एक पार्क है जिसमें धरती के हर देश की प्रतिनिधि त्रिआयामी मानव-आकृतियां हैं. बाएं, एक विशाल विज्ञान पार्क है जिसमें तेजी से चक्कर काटते हुए गिज़मो और आंख मिचकाते रोबोट हैं. बगल में पानी पर स्कीइंग करने वालों से भरी एक झील है और उससे सटा एक पारिस्थितिक पार्क है जिसमें रोंगटे खड़े कर देने वाले रॉयल बंगाल टाइगर (बाघ) दहाड़ रहे हैं. 28,000 एकड़ में फैले इस कल्पना लोक में असंख्य चक्कर-झूले भी हैं. यही नहीं, पृष्ठभूमि में सारी सुख-सुविधाओं से संपन्न तीन होटल और छत पर घूमने वाला एक रेस्तरां भी है.

यह अमेरिका के वेस्ट कोस्ट का कोई नया मायाजाल नहीं बल्कि हरियाणा के ग्रामीण इलाके में बनने वाला देसी डिज़्नीलैंड है. यहां इंदिरा गांधी अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से कार द्वारा महज आधे घंटे में पहुंचा जा सकता है. हरियाणा पर्यटन विभाग के सचिव एस.के. शर्मा कहते हैं, "दिल्ली-हरियाणा सीमा पर मनोरंजन के लिए यह शहर इसलिए बनाया जा रहा है कि हवाई जहाज से उतरकर पर्यटक सीधे वहां जा सकें."

लेकिन मनोरंजन शुरू होने में अभी देर है. इसकी राह में डेढ़ लाख आंदोलनकारी किसान अड़ंगा डाले बैठे हैं क्योंकि यदि इस मायालोक को मूर्तरूप दे दिया गया तो उनकी रोजी-रोटी के साधन छिन जाएंगे.

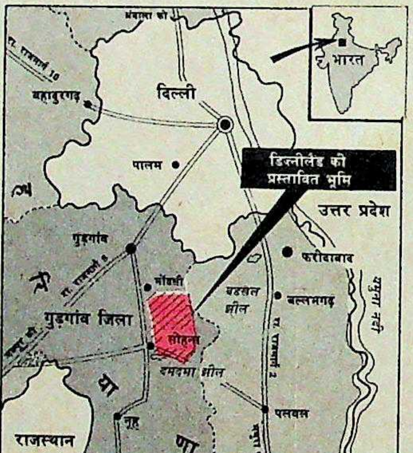

नक्शा: बी.के. शर्मा

वजह: राज्य सरकार 7 जनवरी की एक अधिसूचना के जरिए 14,381 एकड़ कृषियोग्य जमीन का अधिग्रहण करने जा रही है. जलक्रीड़ा के लिए इस्तेमाल होने वाली 574 एकड़ में फैली दमदमा झील, 3,685 एकड़ पंचायती जमीन और 9,323 एकड़ पहाड़ी जमीन भी अधिग्रहीत की जाएगी.

मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला इस परियोजना को सिरे चढ़ाने के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं. दूसरी तरफ किसान भी उसे रोकने के लिए पूरी शिद्दत से डटे हुए हैं. किसानों के एक समूह की प्रतिक्रिया थी, "चौटाला विदेशियों का मनोरंजन करना चाहते हैं. हम जान दे देंगे पर अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे." इस अटल इरादे को प्रदर्शित करने के लिए चुटकी भर मिट्टी उठाकर वे अपने ललाट पर रगड़ लेते हैं. कुछ और किसान कहते हैं, "वे गोली चलाते हैं तो चलाएं! हम भी बंदूक चलाना जानते हैं."

यह थोथी धमकी नहीं है. अधिसूचना के

प्रधानमंत्री निवास पर किसानों का प्रदर्शन

कार्टून: अजीत नैनन

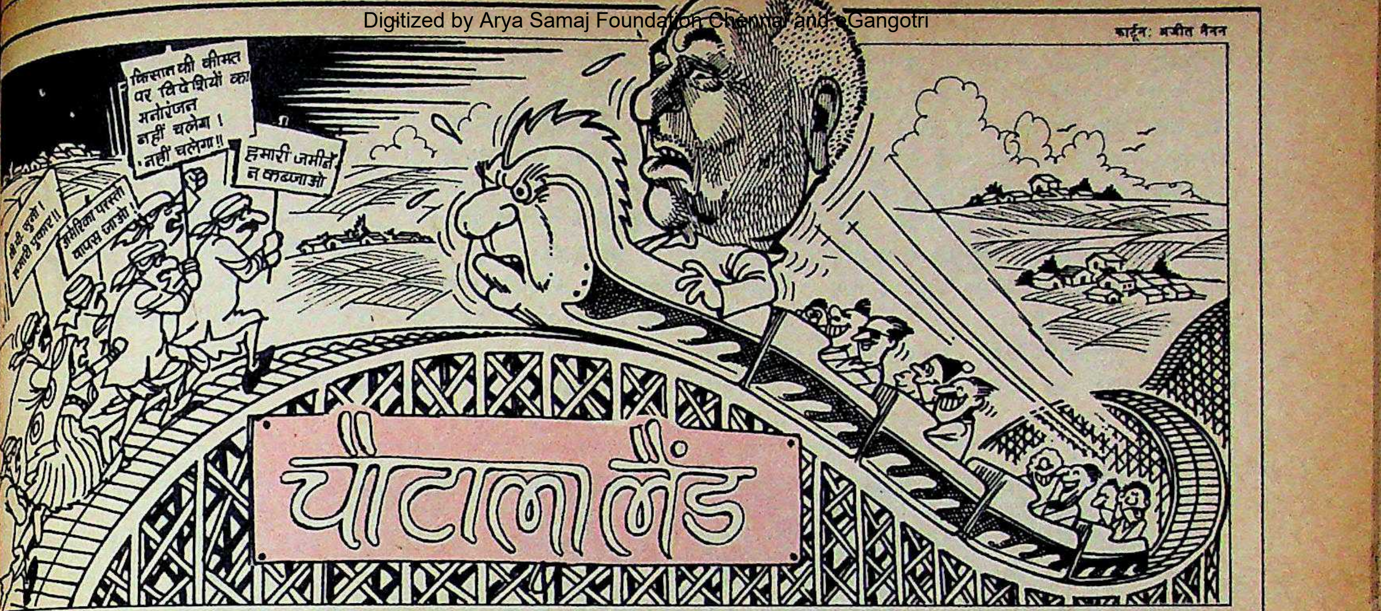
किसान की कीमत पर विदेशियों का मनोरंजन नहीं चलेगा! नहीं चलेगा!!
हमारी जमीनें न कब्जाओ
अमेरिका परस्तो वापस जाओ!
चौधरी सुनो! हमारी पुकार!!

चौटालालैंड

ज़द में आने वाले 28 गांवों के किसानों ने इस परियोजना का विरोध करने के लिए 'डिज़्नीलैंड विरोधी किसान मोर्चा' बना लिया है. 7 फरवरी को वे हजारों की तादाद में प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के निवास पर आ पहुंचे और 'हम अपनी जमीन नहीं छोड़ेंगे' की आवाज बुलंद की. आखिरकार, वी.पी. सिंह ने उनके सामने ही चंडीगढ़ में चौटाला को फोन किया और मनोरंजन पार्क परियोजना की फाइल भेजने को कहा.

हरियाणा में मनोरंजन पार्क बनाने की बात 1986 में बंसीलाल के मुख्यमंत्रित्व काल में सोची गई थी. उस समय इस परियोजना के लिए सूरजकुंड और बडखल झील के बीच 10 किमी लंबी पट्टी चुनी गई थी. लेकिन भूविज्ञानियों का मत था कि यह जमीन रोलर कोस्टर और दूसरे झूले बैठाने के लिए उपयुक्त नहीं है. इसके बाद जैसा कि शर्मा बताते हैं, "भूविज्ञान, खनन और उद्योग—सभी के सलाहकारों ने दमदमा (अधिसूचित क्षेत्र) को सर्वोत्तम जगह माना."

अक्तूबर 1989 में हरियाणा पर्यटन विभाग के अधिकारियों की एक समिति ने मनोरंजन पार्कों के अध्ययन के लिए स्पेन, हांगकांग, सिंगापुर और अमेरिका के दौरे किए. वहां से लौटकर उन्होंने सिफारिश की कि यहां वैसा ही मनोरंजन शहर बनाया जाए जैसा कि फ्लोरिडा में है.

चौटाला के सत्ता संभालने के बाद इस परियोजना में आश्चर्यजनक रूप से तेजी आ गई. उनके शपथ-ग्रहण करने के तत्काल बाद जमीन अधिग्रहण की सूचना जारी कर दी गई. चौटाला का वादा है कि "हम किसानों के हितों की रक्षा करेंगे." लेकिन किसानों को इस पर भरोसा नहीं है. रिठोज गांव के सरपंच राजाराम कहते हैं, "डिज़्नीलैंड बने या न बने पर चौटालालैंड जरूर बनेगा."

अधिग्रहीत किए जाने वाले 28 गांवों के बीसियों किसान इससे सहमत हैं. इनमें अधिकांश गांव गूजरों के हैं जबकि अलीपुर गांव जाटबहुल है. ये सभी इंका के परंपरागत समर्थक रहे हैं. उनका मानना है कि इसी वजह से चौटाला अब उन्हें सता रहे हैं.

अधिग्रहण के लिए 28,000 एकड़ जमीन जिस तरह से चुनी गई, उससे इन किसानों का आरोप पुख्ता ही होता है. एक तरफ तो किसानों की जमीन अधिग्रहण के लिए योजनाबद्ध तरीके से अधिसूचित की गई जबकि दूसरी तरफ बड़े भवन निर्माताओं को बख्श दिया गया है. भूमि अधिग्रहण कलेक्टर के कार्यालय में अधिसूचना के खिलाफ याचिकाएं दाखिल करने में किसानों की मदद करने वाले वकील धर्मपाल खटाना कहते हैं, "जून 1987 में जब देवीलाल हरियाणा के मुख्यमंत्री बने, तभी से कॉलोनाइजरों पर चौटाला की नजरेइनायत रही हैं."

भोंडसी गांव को ही लें. यहां वाटिका डेवलपर्स की 100 एकड़ और स्किपर्स की 250 एकड़ जमीन है. लेकिन इन दोनों को बख्श दिया गया. यही स्थिति जनता दल के नेता चंद्रशेखर (जिनका यहां फार्महाउस है) और मारुति उद्योग (जिसने 200 एकड़ जमीन खरीदी है) की भी है. लेकिन बाकी गांव का अधिग्रहण किया जा रहा है.

हजारों किसानों ने अधिसूचना के खिलाफ 7 फरवरी के पहले याचिकाएं दायर कर दीं. याचिकाएं दायर करने की यह आखिरी तारीख थी. अब इन याचिकाओं को खारिज करना या मंजूर करना कलेक्टर के ऊपर है. किसानों को अपनी याचिकाएं मंजूर होने की बहुत कम उम्मीद है. खटाना कहते हैं, "कलेक्टर सरकार का ही तो प्रतिनिधि है."

यदि याचिकाएं खारिज हो गईं तो भूमि अधिग्रहण कानून की धारा 6 अपने-आप लागू हो जाएगी और मुआवजे के बदले में 28,000 एकड़ जमीन अधिग्रहीत हो जाएगी. पर किसान मुआवजा लेकर चुप बैठ जाने के मूड में नहीं हैं. विरोधी मोर्चा दमदमा झील सैरगाह के दो प्रवेश द्वारों पर अवरोध खड़ा करने की सोच रहा है.

इस बात की संभावना भी कम ही है कि सरकार बाजार दर पर मुआवजा देगी. चूंकि ज्यादातर खरीद-फरोख्त में कीमत का एक बड़ा हिस्सा काले धन में दिया जाता है इसलिए मौजूदा औसत दर महज 50,000 रु. प्रति एकड़ बैठती है, जबकि बाजार दर 5 लाख रु. प्रति एकड़ है. भवन निर्माताओं ने किसानों को प्रति एकड़ 6 लाख रु. देने की पेशकश की थी लेकिन उन्होंने उसे ठुकरा दिया क्योंकि वह जमीन ही उनकी आजीविका का एकमात्र साधन थी.

बहरहाल, मुआवजा ही एकमात्र समस्या नहीं है. किसानों का कहना है कि मनोरंजन पार्क के लिए आखिर इतने बड़े इलाके की क्या जरूरत है. पांच एकड़ जमीन के मालिक लक्ष्मी चंद का कहना है, "मैंने डिज़्नीलैंड देखा तो नहीं पर मुझे विश्वास है वह 200 एकड़ में ही होगा. फिर उन्हें 28,000 एकड़ जमीन की क्या जरूरत है?"

इस बीच, हरियाणा सरकार परियोजना को आगे बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही है. वास्तुकार इसके नक्शे बनाने में लगे हुए हैं और विश्वव्यापी निविदाएं तैयार की जा रही हैं. शर्मा कहते हैं, "निविदाएं महीने भर में दूतावासों में पहुंच जाएंगी. काम उसी को मिलेगा जो सबसे बढ़िया मूल्यांकन और सुविधाएं मुहैया करेगा—चाहे वह भारतीय हो, क्यूबाई या कोई और."

रकम जुटाने के लिए सरकार तीन होटल स्थल बेचेगी. चौटाला कहते हैं, "सिर्फ

मुआवजे के भुगतान के लिए ही सरकार को 10 करोड़ रु. रखने होंगे." लेकिन मुआवजे की यह रकम संदेहास्पद है क्योंकि यदि सरकार 50,000 रु. प्रति एकड़ की दर से भी जमीन का अधिग्रहण करती है तो उसे टेंट से 140 करोड़ रु. निकालने होंगे. चौटाला के एक करीबी सहायक ने रहस्योद्घाटन किया कि सरकार विश्व बैंक से कर्ज लेने की सोच रही है.

पर्यटन अधिकारियों को पूरा भरोसा है कि परियोजना का काम चार महीने के भीतर शुरू हो जाएगा. उनके मुताबिक, "छह हफ्ते में निवेशकों की निविदाएं आएंगी और अगले छह हफ्ते उनकी जांच में लगेंगे." लेकिन चौटाला कुछ ज्यादा ही आशावादी हैं. वे कहते हैं, "इस परियोजना का एक भाग साल भर में पूरा हो जाएगा." उनका आरोप है कि पत्रकार "इस परियोजना के खिलाफ निंदा अभियान चला रहे हैं," क्योंकि उनमें से कुछ की जमीन अधिसूचित क्षेत्र में है.

लेकिन विरोधी कई और भी हैं. बताया जाता है कि वी.पी. सिंह इस परियोजना के विरोधी तो हैं लेकिन वे इसे रोकने के लिए शायद सीधे न कहें क्योंकि इससे उपप्रधानमंत्री देवीलाल नाराज हो सकते हैं.

इससे भी महत्वपूर्ण बात यह कि उनके दो वरिष्ठ सहयोगी—उद्योगमंत्री अजीत सिंह और वित्तमंत्री मधु दंडवते इस परियोजना को रोकने के लिए अपनी तरफ से पूरी कोशिश करेंगे. मनोरंजन का यह खेल चौटाला की गणना से शायद पहले ही शुरू हो जाए.

—हरिंदर बवेजा

ओमप्रकाश चौटाला कदम-कदम पर विवाद से घिरे दिखते हैं. कभी छोटे भाई रंजीत सिंह से उनकी लड़ाई तो कभी हरियाणा का मुख्यमंत्री बनने का उनका तौर-तरीका विवाद का मुद्दा बन जाता है. लेकिन डिज़्नीलैंड परियोजना के बारे में उनका मानना है कि इसके इतने विरोध की उम्मीद नहीं थी. प्रमुख संवाददाता ***कंवर संधू*** *के साथ उनकी बातचीत के कुछ अंश:*

प्रमोद पुष्करणा

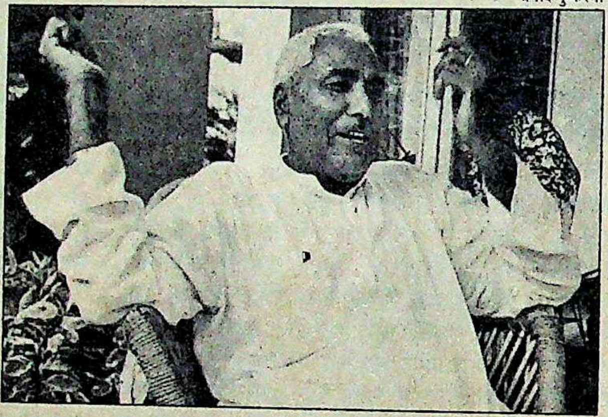

ओमप्रकाश चौटाला

'विकास का काम कभी रुकना नहीं चाहिए'

● ***अमेरिका का डिज़्नीलैंड 2,000 एकड़ में है. आप 28,000 एकड़ जमीन का अधिग्रहण कर रहे हैं?***

हमारा मनोरंजन पार्क भी 2,000 एकड़ में बन सकता है. लेकिन होटल, रेस्तरां और हवाई पट्टी जैसी बुनियादी सुविधाओं के लिए ज्यादा जमीन की जरूरत है क्योंकि यहां लाखों लोग आएंगे. सरकार ने कीमतों को बढ़ने से रोकने और खेती की जमीन की बिक्री की नई रजिस्ट्री बंद करने के लिए ढेर सारी अतिरिक्त जमीन को अधिसूचित किया है. लेकिन सारी जमीन का अधिग्रहण नहीं किया जाएगा.

● ***क्या आपकी योजना देवीलाल के उस बयान के विपरीत नहीं है जिसमें उन्होंने संसाधनों का 50 फीसदी हिस्सा कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों में लगाने की बात कही थी?***

जितनी जमीन का अधिग्रहण किया जाना है, उसमें सिर्फ 7421 एकड़ किसानों की है. उन लोगों को उन्हें दूसरी जगह खेती की जमीन देकर या मुआवजे के रूप में पर्याप्त रकम देकर पुनर्वासित किया जाएगा. इसमें कोई विरोधाभास नहीं है. मेरी सरकार गरीबों, किसानों, काश्तकारों और कमजोर तबकों की शुभचिंतक है.

● ***आरोप है कि आपने कॉलोनाइजरों की जमीन को बख्श दिया.***

यह उन लोगों का दुष्प्रचार है जिन्होंने मुनाफा कमाने के लिए जमीन खरीदी थी. अब वह जमीन उनके हाथ से निकल रही है. स्टांप शुल्क से बचने के लिए उन्होंने जमीन की रजिस्ट्री कम दरों पर करवाई जबकि भुगतान उससे अधिक किया. इस तरह की लगभग 7,000 एकड़ जमीन होगी. इसके मालिकों में स्वामी अग्निवेश भी हैं जो इस परियोजना के खिलाफ हल्ला मचा रहे हैं. दिल्ली के कुछ पत्रकार भी शामिल हैं जिन्होंने यह जमीन खरीदी है. यही नहीं, कुछ फर्जी सोसाइटियां भी बनी हुई थीं. किसी भी कॉलोनाइजर को लाभ नहीं पहुंचाया जाएगा.

● ***कहा जा रहा है कि डिज़्नीलैंड बने या न बने, चौटालालैंड जरूर बनेगा.***

चौटालालैंड कैसे बनेगा? क्या सरकार द्वारा इस परियोजना के लिए जमीन का अधिग्रहण करने से? यदि मैं जमीन खरीदना चाहता तो मुझे कौन रोक सकता था. अपने पैतृक गांव में मेरे पास पर्याप्त जमीन है. इसलिए चौटालालैंड की बात बकवास है. इस इलाके में मेरे किसी संबंधी या 'मित्र' की एक मरला भी जमीन नहीं है.

● ***क्या आपने अमेरिका का डिज़्नीलैंड देखा है? आखिर गुड़गांव में इस तरह का डिज़्नीलैंड बनाने के लिए आपको किस चीज ने प्रेरित किया?***

मैंने डिज़्नीलैंड और डिज़्नीवर्ल्ड दोनों ही देखे हैं. वहां की हर चीज शानदार है. लेकिन एक चीज ने मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित किया. वहां के असंख्य झूले बच्चों को साहसी बनाते हैं.

● ***बताया जाता है कि प्रधानमंत्री वी.पी सिंह और वित्तमंत्री मधु दंडवते इस परियोजना के खिलाफ हैं. इसके बावजूद क्या आप इसे आगे बढ़ाएंगे?***

प्रधानमंत्री और वित्तमंत्री जो कहेंगे वही होगा. वे कहेंगे तो इस पर पुनर्विचार किया जाएगा. यह महज एक विकास परियोजना है. हमारे मनमुताबिक यह पूरी हो गई तो हमें राज्य के लोगों पर नए कर लगाने की जरूरत नहीं पड़ेगी.

● ***तो आप इस परियोजना को अमली जामा पहनाएंगे ही?***

विकास का काम कभी नहीं रुकना चाहिए. अखबारों के जरिए कुछ लोग इस तरह की आवाज उठाकर विकास कार्य ठप कर देना चाहते हैं.

आइए, श्रेष्ठता के शिखर पर

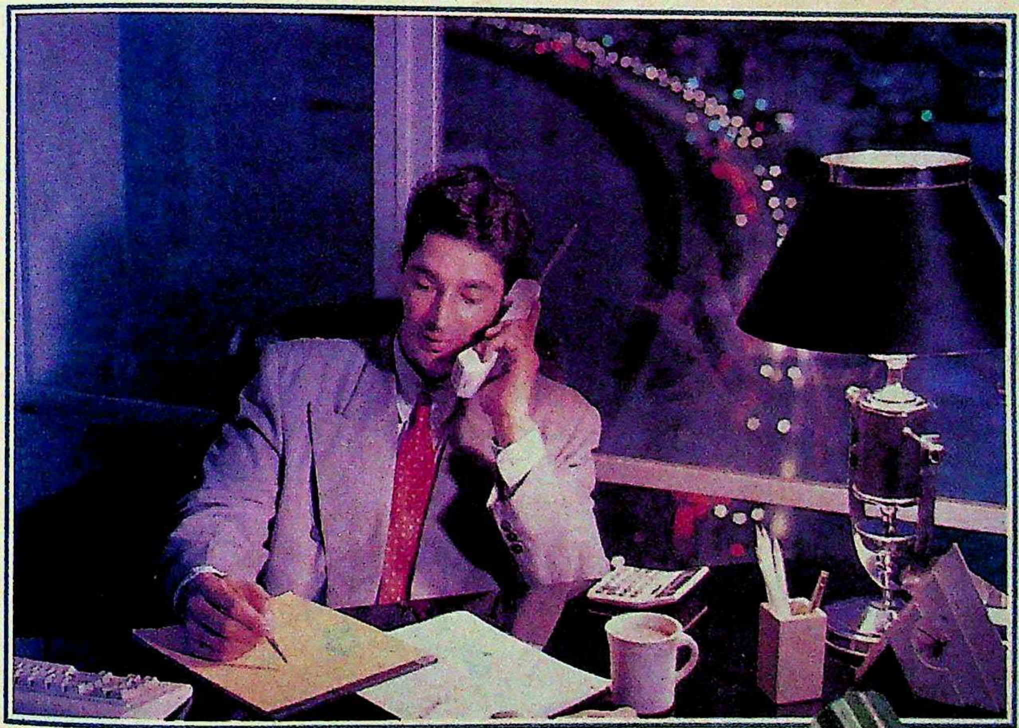

श्रेष्ठता के शिखर पर तो बिरले ही पहुँचते हैं.
जैसे कि आप. और हाँ, ब्लू स्ट्रैटोस भी.
यूरोप की ख़ास ख़ुशबू, जो लिपटी रहे
आपके पहलू से, सारा दिन.
ब्लू स्ट्रैटोस आफ़्टर शेव लोशन और कोलोन.

blue stratos
AFTER SHAVE LOTION

ब्लू स्ट्रैटोस के साथ श्रेष्ठता का शिखर चूमिए

यूरोप की ख़ास ख़ुशबू, अब आपके लिए

HTA 1996

भारत-पाकिस्तान

लड़ाई की ललकार

कश्मीर का मसला गरमाने के साथ दोनों देशों के बीच एक और युद्ध की आशंका

हालात पहले की तरह ही भयानक हो उठे. एक-दूसरे को फूटी आंखों न सुहाने वाले दो पड़ोसी देशों—भारत और पाकिस्तान—का एक-दूसरे पर बाजी मारने का अरसे से चला आ रहा खेल अचानक वाक्‌युद्ध में तब्दील हो गया और महाशक्तियों को अपनी कूटनैतिक चालें चलने पर मजबूर होना पड़ा. ऐसे में उन्माद भड़काने के लिए अगर जरूरत थी तो बस एक चिनगारी की.

फिलहाल, सशस्त्र लड़ाई के आसार कम ही हैं लेकिन उसकी संभावना से इनकार भी नहीं किया जा सकता. दरअसल, इसकी संभावना कश्मीर में संकट बढ़ने पर टिकी हुई है. पाकिस्तानी प्रधानमंत्री बेनज़ीर भुट्टो ने पिछले हफ्ते जो भड़काऊ बयान दिया (देखें साथ वाली रिपोर्ट का बॉक्स) उससे माहौल और गरम हो उठा. बेनज़ीर ने घोषणा की, "जरूरत की घड़ी में जम्मू-कश्मीर के लोग हमें अपने साथ ही पाएंगे." इस तरह के भड़काऊ बयान से भारत के समरनीतिज्ञों को यकीन हो गया है कि पारंपरिक लड़ाई की संभावना चाहे न हो, पाकिस्तान जम्मू-कश्मीर में आग लगाने की अपनी गुप्त गतिविधियां और तेज कर देगा. इसका नतीजा सीमित सैन्य लड़ाई के रूप में सामने आ सकता है. नई दिल्ली में रक्षा अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान के प्रमुख एअर कमोडोर जसजीत सिंह कहते हैं, "कश्मीर में लगातार छोटी-मोटी झड़पें होती ही रहेंगी जो बढ़कर युद्ध का रूप भी ले सकती हैं." 'इंडियन डिफेंस रिव्यू' के संपादक लेफ्टिनेंट जनरल मैथ्यू थॉमस की भविष्यवाणी है कि पाकिस्तान "सैन्य लड़ाई के बजाए मनोवैज्ञानिक लड़ाई लड़ना पसंद करेगा—यानी वह कश्मीर में गृहयुद्ध भड़काना चाहेगा."

पर कश्मीर का मुद्दा न भी हो तो कई ऐसी सामरिक मजबूरियां हैं जो उतनी ही निर्णायक भूमिका निभा सकती हैं. पाकिस्तानी सेना और उसकी सामरिक योजना का विकास और उनमें आया बदलाव इसकी एक मिसाल है. या पाकिस्तानी थल सेनाध्यक्ष जनरल मिर्जा असलम बेग के शब्दों में इसे 'नई हकीकतों का उभरना भी कह सकते हैं.'

इनमें सबसे प्रमुख यह विश्वास है कि पाकिस्तान पर हमेशा भारी पड़ने वाली

■ **कराची में वी.पी. सिंह का पुतला जलाते भारत विरोधी प्रदर्शनकारी: उन्माद**

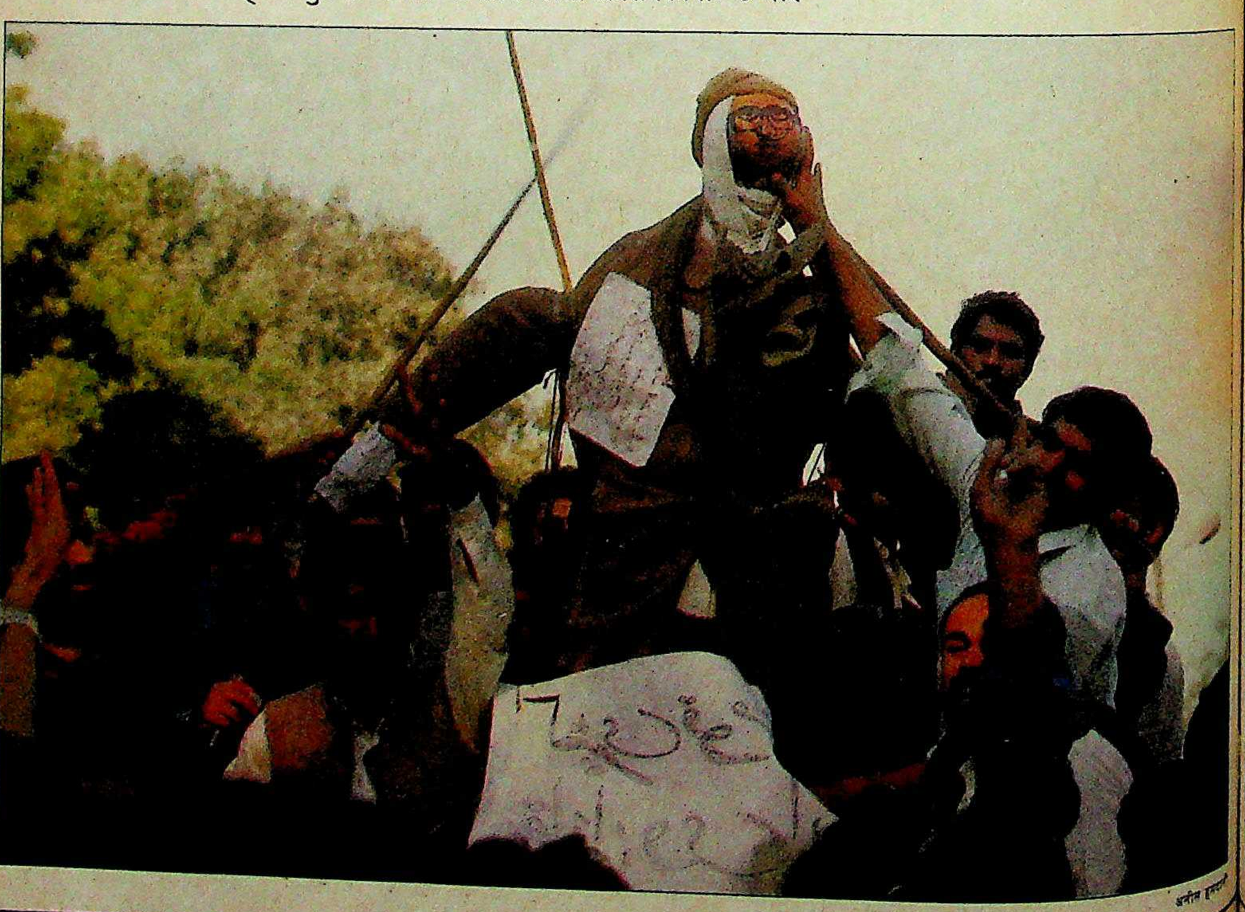

अनीस हुसैन

रतीय सैन्य ताकत में पिछले दशक में भारी मी आई है. दरअसल कई रक्षा विश्लेषकों का तो यहां तक मानना है कि दो या तीन हफ्ते की 'छोटी किंतु घमासान लड़ाई' में दोनों पक्ष बराबर रह सकते हैं. अपने विशाल आकार के कारण भारत सैनिकों की संख्या और हथियारों के लिहाज से बेहद मजबूत तो दिखता है लेकिन पाकिस्तान ने पिछले एक दशक में अपनी सेना का इतना आधुनिकीकरण कर लिया है कि सामरिक परिदृश्य एकदम बदल गया है. पूर्व थल सेनाध्यक्ष के. सुंदरजी कहते हैं, "पाकिस्तान ने अफगानिस्तान में इतना अनुभव बटोरा है और उसे इतनी सामरिक मदद मिली है कि उस पर हमारी बढ़त बहुत कम रह गई है." रक्षा विश्लेषक के. सुब्रह्मण्यम भी कहते हैं, "कई क्षेत्रों में वह अब लगभग हमारे बराबर है."

इस तरह, पाकिस्तानी सेना की नजरों में भारत पर चढ़ाई करने के फायदे ज्यादा और नुकसान कम हैं. उसका मानना है कि अचानक जंग छेड़ देने और उसमें पूरी तरह ताकत को झोंक देने से उसे शुरुआती लाभ मिल जाएगा—यानी वह भारत के कुछ हिस्से पर कब्जा कर लेगा और जब तक युद्धविराम के लिए अंतरराष्ट्रीय हस्तक्षेप होगा, वह भारतीय सैनिक अड्डों को भारी नुकसान पहुंचा देगा. 1965 और 1971 में भी उसने यही रणनीति अपनाई थी लेकिन दूरदर्शी सैन्य नेतृत्व न होने के कारण वह नाकाम हो गई.

अब वैसी बात नहीं है. पिछले एक दशक में पाकिस्तानी सेना 'इस्लामी सेना' में तब्दील हो गई है. उसने मुजाहिदाना रुख अख्तियार कर लिया है. प्रेरणा और मनोबल के लिहाज से यह एक महत्वपूर्ण पहलू है. इसके अलावा उसके नेतृत्व और सामरिक सोच की गुणवत्ता में भी वृद्धि हुई है.

यही नहीं, अत्याधुनिक हथियार हासिल करने से पाकिस्तान की सैन्य ताकत में नाटकीय वृद्धि हुई है. पाकिस्तान की परमाणु क्षमता से भी सेना का मनोबल ऊंचा उठा है. और फिर पंजाब और जम्मू-कश्मीर में 'नई हकीकत' भी उभरी है, जो अरसे से भारत-पाकिस्तान झगड़े के रणक्षेत्र रहे हैं. इन दोनों सीमावर्ती राज्यों में बढ़ रही बगावत से पाकिस्तान के समरनीतिज्ञों में यह धारणा बैठ गई है कि जंग होने पर स्थानीय लोग भारतीय सेना का साथ नहीं देंगे.

ये सारी चीजें 'हमला और बचाव' की पाकिस्तानी सामरिक नीति में बिलकुल सही बैठती हैं. मतलब यह कि पाकिस्तान शुरुआती लाभ उठाने के लिए हमला करने को तैयार है. पाकिस्तान को अच्छी तरह मालूम है कि अगर लड़ाई (तीन हफ्ते से ज्यादा) लंबी खिंची तो भारत की सेना, जो ताकत और तादाद दोनों में अधिक है, पांसा पलट देगी और पाकिस्तान को अपना बहुत सारा क्षेत्र गंवाना पड़ेगा. हाल ही में एक इंटरव्यू में जनरल बेग ने कहा, "हम आक्रामक सुरक्षा की नीति अपना ली है. अगर जंग हुई तो हमारी सेना बड़े पैमाने पर हमला कर भारत की धरती पर लड़ेगी."

जहां तक भारत की सामरिक स्थिति का सवाल है, इसके विशाल आकार के कारण इसकी सेना दूर-दूर तक के इलाकों में स्थित है जिससे उसकी तुरंत लामबंदी करने, आपस में तालमेल बिठाने, संवाद कायम करने और रसद भेजने में परेशानी होती है. लेकिन पाकिस्तान अपने छोटे आकार के कारण सेना की तुरंत लामबंदी कर उसे सीमा की ओर कूच करा सकता है. 19 डिवीजनों में संघटित पाकिस्तान की अग्रिम पंक्ति की सेना (जो कि छह समूहों में विभाजित है) आम तौर पर पूर्व दिशा में स्थित है. इसके ज्यादातर सैनिक और तकरीबन सारे टैंक भारत से लगी लंबी सीमा पर तैनात हैं.

लेकिन '80 के दशक की रणभूमि के बदलते परिदृश्य में और दोनों तरफ की सेनाओं में विध्वंसक हथियारों की मौजूदगी से पाकिस्तान के लिए उसका छोटा आकार भी सामरिक नजरिए से नुकसानदेह है. चूंकि यह उत्तर से दक्षिण की ओर संकरा है इसलिए इसकी संचार लाइनें, इसकी थल सेना और वायु सेना के मुख्य अड्डे, कराची स्थित इसका एकमात्र बंदरगाह और इसके प्रमुख औद्योगिक केंद्र भारतीय वायुसेना के लड़ाकू विमानों और लंबी दूरी तक मार करने वाली नई मिसाइलों की जद में आते हैं.

पिछली दो लड़ाइयों की तरह ही इस बार भी मुख्य मैदाने-जंग पंजाब-सिंध-राजस्थान ही होंगे. यह ऐसा इलाका है जहां टैंक बिना बाधा के दौड़ सकते हैं

इस बीच दो दशकों में रणभूमि संबंधी क्षमताओं में भारी परिवर्तन आ गया है. टैंक, युद्धक विमान और तोप जैसे परंपरागत हथियार अब अचूक मारक क्षमता के साथ लड़ाई के अत्याधुनिक मंच बन गए हैं. मिसाइल युग में प्रवेश कर जाने से इनके साथ ऐसे संहारक हथियार जुड़ गए हैं जो बड़ी इमारतों को ध्वस्त कर सकते हैं, हवाई अड्डों को नष्ट कर सकते हैं और अपने क्षेत्र में टैंक हमले को रोक सकते हैं. और फिर, 'बैटल ऑफ द बीम' (किरण पुंजों की जंग) भी भविष्य में होने वाली किसी भी लड़ाई का निर्णायक कारक बन गई है.

अब दोनों पक्षों की ताकत का आकलन उनके सैनिकों की तादाद से नहीं बल्कि उनके हथियारों की विध्वंसक क्षमता से किया जाता है. रक्षा विश्लेषक भी अब 'बल बर्द्धक' जैसी शब्दावली का इस्तेमाल करते हैं जिसका अर्थ है कि किस तरह कोई एफ-16 या मिग-

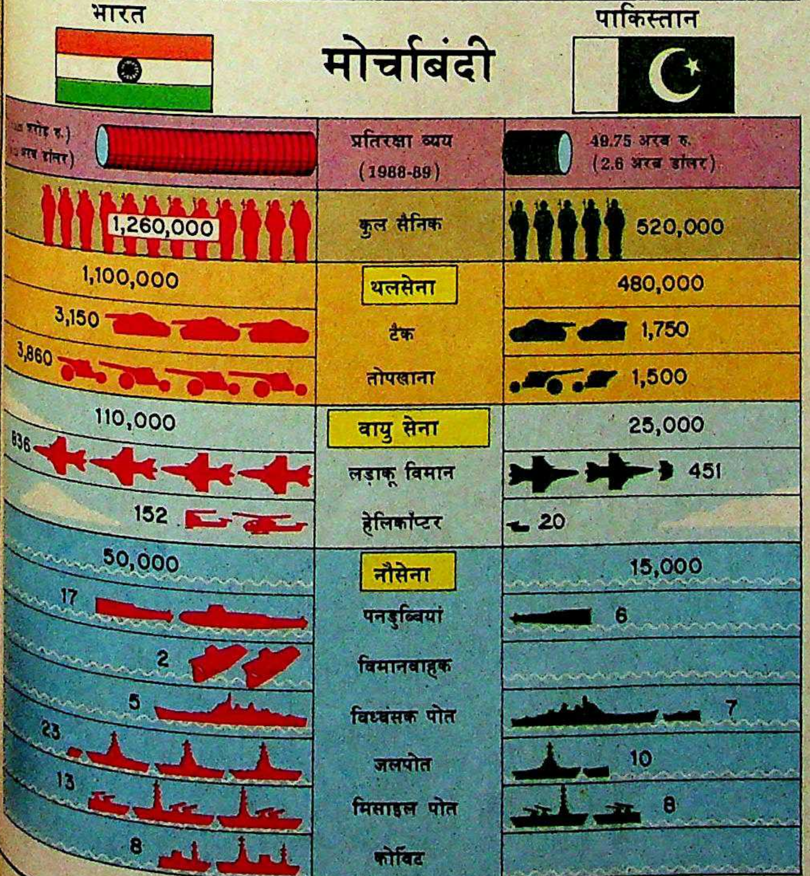

चार्ट: बी.के. शर्मा

वायु

■ भारतीय वायु सेना की ताकत मिराज-2000 और मिग-29 विमानों से बढ़ी

प्रमोद पुष्करणा

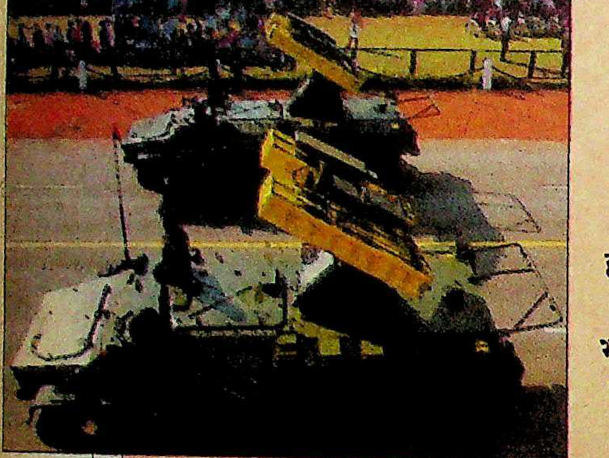

■ स्ट्रेला 10-एम मिसाइल लांचर

अगर दो या तीन हफ्ते की छोटी लड़ाई हुई तो भारत की भारी-भरकम सामरिक स्थिति भी डांवाडोल हो जाएगी

के. रमेश

■ पनडुब्बी 'चक्र' से नौसैनिक लड़ाई में नया अध्याय जुड़ गया है

29 लड़ाकू विमान अकेले ही समूची तोपची बटालियन जितना विध्वंस कर सकता है.

सुरक्षा विश्लेषकों के मुताबिक पाकिस्तान की 'जर्ब-ए-मोमिन' कसरत ने यह साबित कर दिया है कि पाकिस्तान की रिजर्व फौज उत्तर-दक्षिण की महत्वपूर्ण धुरी में बेहद मजबूत है. उसने न सिर्फ इन क्षेत्रों में दो हमलावर कोर खड़े किए हैं बल्कि उसके पास दो घातक हमलावर कोर भी हैं. इनकी सहायता के लिए कई टीओडब्ल्यू एंटी टैंक लांचर और घातक कोबरा हेलिकॉप्टरों की एक पूरी स्क्वाड्रन (20 विमानों वाली) भी है. थॉमस कहते हैं, "यह भारी-भरकम सुरक्षित सेना किसी भी जंग में खासा नुकसान पहुंचा सकती है."

माहिरों का विचार है कि मैदानी लड़ाई में निर्णायक भूमिका टैंकों की रहेगी. आधुनिक उपकरणों की वजह से ये टैंक अब रात के अंधेरे में भी निशाना साध सकते हैं. लेसर रेंज फाइंडर की वजह से अचूक निशाने की क्षमता भी काफी बढ़ गई है.

इसके बावजूद, पाकिस्तान के चीन निर्मित टी-59 टैंकों के मुकाबले भारत के सोवियत निर्मित टी-72 टैंक उसे बेहतर स्थिति मुहैया करते हैं. टी-72 कहीं ज्यादा आधुनिक और घातक हैं. छोटे आकार की वजह से इसका पता लगाना मुश्किल होता है. इसका कवच भी खास तरह का है जो परंपरागत हथियारों से नहीं भेदा जा सकता. पाकिस्तान की बख्तरबंद डिवीजन इसके मुकाबले पुराने किस्म के टैंकों से लैस है.

और फिर, सुंदरजी के जमाने में पैदल सेना के आधुनिकीकरण पर काफी ध्यान दिया गया था. इसी के चलते जो पुनर्गठित थल सेना की पैदल डिवीजन (रैपिड) बनी उसकी सामरिक क्षमता परंपरागत पैदल डिवीजन के मुकाबले कुछ कम है. पर इसकी भरपाई उसकी बढ़ी हुई गतिशीलता, और बदलते हालात में खुद को ढालने की क्षमता के साथ ही ज्यादा लक्ष्य भेदन, निगरानी क्षमता और टैंक भेदन क्षमता से हो जाती है.

दोनों पक्षों के तोपखाने में भारी आग्नेयास्त्र क्षमता और हमले से बचाव के लिए 'दागो और भागो' की सुविधाओं वाली बड़ी तोपें भी शामिल कर ली गई हैं. सबसे ज्यादा संहारक दोनों पक्षों की रॉकेट प्रक्षेपण टुकड़ियां हैं. भारत के बीएम-21 रॉकेट प्रक्षेपकों की एक टुकड़ी 20 सेकंड में ताबडतोड़ 240 रॉकेट छोड़ सकती है जो एक वर्ग किलोमीटर के दायरे में वस्तुत: तबाही मचा सकते हैं.

लेकिन अगर लड़ाई 'छोटी किंतु घमासान' हुई तो मुख्य युद्धभूमि यानी मैदानों और रेगिस्तानों में लड़ाई एकतरफा नहीं होगी. अपनी आक्रामकता का फायदा उठाकर पाकिस्तान की बख्तरबंद डिवीजनें भारी

कम भारतीय सेना और उसके टी-72 ों के मोर्चा संभालने से पहले ही हमला कर भारी नुकसान पहुंचा सकती हैं. नी, टैंकों की लड़ाई पारंपरिक न रहकर ानी खेल है. 'इंडियन डिफेंस रिव्यू' के सलाहकार संपादक मेजर शंकर भादुड़ी के नुसार, "छोटी लड़ाई में आग्नेयास्त्र क्षमता के बजाए मैदाने-जंग में सैनिक नेतृत्व की वता और साहस ही महत्वपूर्ण होगा."

पाकिस्तान की ओर से पहल की सूरत में माहिरों ने युद्ध के कई परिदृश्यों की परिकल्पना की है. एक तो यह कि छंब क्षेत्र पर ने की तरह आधे-अधूरे 'मन से हमला करने के बजाए वह शकरगढ़ मोर्चे पर अपनी पूरी ताकत झोंक सकता है. इसके पीछे रणनीति यह होगी कि पुंछ जैसे भारत के सीमावर्ती कस्बों पर कब्जा कर लिया जाए ताकि कश्मीर घाटी पर इसका मनोवैज्ञानिक असर पड़े, और इस बीच घाटी में हथियाबंद विद्रोह भड़काया जाए जिससे भारतीय फौज में बिखराव आए.

मगर ऐसे में जरूरी नहीं कि भारत रक्षात्मक रुख ही अपनाए. पाकिस्तानी सेना को पीछे धकेलने के बजाए भारतीय सेना हमला बोलकर उसे घेरने की रणनीति अपना सकती है ताकि पाकिस्तानी टुकड़ियों का विता तोड़कर उन्हें खत्म किया जा सके.

पाकिस्तान के सामने एक और विकल्प 'अंधाधुंध' हमले का हो सकता है. इसके तहत वह अपने दो विशाल रिजर्व कोर सतलुज के उत्तर और दक्षिण में प्रमुख तौर पर लेकिन सीमित क्षेत्रों पर हमला बोलने के लिए तैनात कर सकता है. इसका मकसद पंजाब के कुछ सीमावर्ती शहरों के निकट आकर भारतीय सेना पर दबाव डालना है.

मान लीजिए पाकिस्तान पहल करता है तो इसके लिए भारत के पास भी कई विकल्प हैं. वह पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर पर भारी आक्रमण कर उसके कुछ महत्वपूर्ण शहरों पर काबिज हो सकता है और पाकिस्तान के दो संहारक कोर पर आक्रमण केंद्रित कर उन्हें तितर-बितर कर सकता है (इसमें वायुसेना के मामले में भारत की सर्वोच्चता बड़े काम की साबित होगी). अगर पाकिस्तान एकाध जीत हासिल भी कर ले तो भगदड़ी में सुरक्षात्मक रुख अपनाने के बजाए वह मौका और ठिकाने चुन-चुनकर वायु सेना के जरिए पाकिस्तानी क्षेत्र में काफी भीतर तक घुसपैठ करके जवाबी आक्रमण कर सकता है.

माहिरों का कहना है कि भारत के पास तरह-तरह के युद्धक विमानों के रहते हवाई युद्ध में उसका पलड़ा साफ तौर पर भारी है. लड़ाकू विमान के मशहूर पायलट रहे जीत सिंह कहते हैं, "हवाई युद्ध में तो हम

पाकिस्तानी वायु सेना का मुख्य लड़ाकू विमान नांचांग क्यू-5

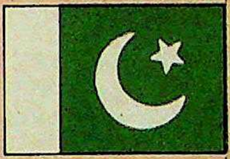

पाकिस्तान को अपने हथियार अत्याधुनिकीकरण कार्यक्रमों के चलते भरोसा है कि उसकी सामरिक शक्ति भारत के बराबर है

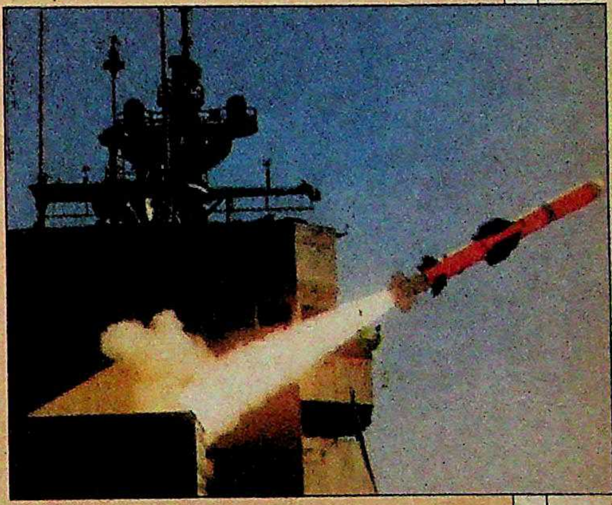

'हारपून' पनडुब्बीः संहारक क्षमता

क्रोटल मिसाइल घातक मार कर सकती है

उसकी ऐसी-तैसी कर देंगे." पर कुछ दूसरे लोग इतने निश्चित नहीं हैं. पाकिस्तान के एफ-16 विमानों में भी पुणे जैसे शहरों के प्रमुख शहरी और फौजी ठिकानों अथवा बंबई के परमाणु और नौसैनिक प्रतिष्ठानों पर आक्रमण करने की वैसी ही क्षमता है. पाकिस्तान के पास फिलहाल एफ-16 की दो स्क्वाड्रन (45 विमान), साइडविंडर मिसाइलों से युक्त मिराज-3 और मिराज-5 की पांच स्क्वाड्रन (90 विमान), सरगोधा कांप्लैक्स से संचालित चीन में बने एफ-7 की चार स्क्वाड्रन हैं. इसके अलावा नांचांग क्यू-5 की तीन स्क्वाड्रन पाकिस्तानी वायु सेना को आक्रामक वायु कवच प्रदान करती हैं. लेकिन एफ-16 के बाद पाकिस्तान को सबसे ज्यादा गर्व कोबरा हेलिकॉप्टरों पर है जो उसकी संहारक क्षमता को कई गुना बढ़ा देते हैं.

पर भारत के युद्धक विमान ज्यादा संहारक हैं. भारतीय वायु सेना के पास बहु-भूमिका वाले मिराज-2000 की दो स्क्वाड्रन (जिन पर खुद इसके पायलटों को नाज है), और मिग-29 की तीन स्क्वाड्रन हैं (जिन्हें कई मायनों में एफ-16 से बेहतर माना जाता है). उनके पास मिग-21, मिग-21 एफसी तथा मिग-23 एम और उच्च स्तर के मिग-23 और मिग-27 भी हैं. भारतीय हवाई सुरक्षा को पुख्ता बनाने के लिए उसके पास जमीन से हवा में मार करने वाली क्रोटल मिसाइलों की चार स्क्वाड्रन के अलावा सैम-3 और सैम-13 की 38 स्क्वाड्रन भी हैं.

पर 'छोटी किंतु घमासान' लड़ाई होने पर भारतीय वायुसेना के लिए हवाई युद्ध पहले 10 दिन के बाद ही निर्णायक साबित होगा. तब तक के लिए छोटे-से वायु सुरक्षा क्षेत्र वाला पाकिस्तान भी उतना ही नुकसान पहुंचा सकता है जितना कि भारतीय वायु सेना. पर पाकिस्तानी सेना अभी भी नए विमान शामिल करने और हवाई रणनीति को पुनर्गठित करने के काम में जुटी है. माहिरों का मानना है कि इसी वजह से आसमान में भारत का दबदबा है. उधर, पाकिस्तान का दबदबा इलेक्ट्रॉनिक युद्ध में है.

लड़ाई के नतीजों में 'किरण पुंजों की जंग' की महत्वपूर्ण भूमिका होगी. पिछले एक दशक में इलेक्ट्रॉनिक युद्ध का नाटकीय विकास हुआ है. इलेक्ट्रोचुंबकीयता और ऑप्टिकल के क्षेत्र में ऐसे शक्तिशाली राडार विकसित किए गए हैं जो अपने इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों से ऐसे ही दूसरे राडार को जाम कर सकते हैं. पर इसका भी जवाब तैयार कर लिया गया है जिसमें आवृत्ति बदलकर या लेसर जैसे दृश्य माध्यम बदलकर इस तरह के जाम से बचा जा सकता है. पूर्व एअर मार्शल वीरनारायण कहते भी हैं, "सबसे पहले राडार की लड़ाई जीतनी होती है. जो ऐसा कर लेगा, उसी का बोलबाला रहेगा."

इस उपमहाद्वीप में सटीक मार वाली मिसाइलों की भरमार से इलेक्ट्रॉनिक लड़ाई काफी महत्वपूर्ण हो गई है. दोनों ही देशों के पास एक्सोसेट, मट्रास, स्पैरोस और साइडविंडर जैसी ऐसी ही मिसाइलों के जखीरे हैं. मिसाइलों के इस युद्ध ने अब लड़ाइयों को दृश्य सीमा से परे की चीज बना दिया है. ये मिसाइल 20 से 100 किलोमीटर तक बहुत ही तेज गति से मार कर सकती हैं और बेहद घातक साबित हो सकती हैं.

जमीन से जमीन पर मार करने वाली मिसाइल 'पृथ्वी' के सफल परीक्षण के बाद भारत इस मामले में पाकिस्तान से आगे हो गया है. सटीक निशाने के साथ इसे पाकिस्तान के ठिकानों पर छोड़ा जा सकता है. बताया जाता है कि पाकिस्तान ने भी अपनी मिसाइल हत्फ-2 का परीक्षण कर लिया है जिसके बारे में दावा यह है कि उसकी क्षमता 'पृथ्वी' के बराबर ही है.

पिछले साल पाकिस्तानी नौसेना के विस्तार के बाद से भारत की नौसैनिक सर्वोच्चता धीरे-धीरे कम हुई है. पाकिस्तान ने ब्रुक-गर्शिया स्तर के आठ और युद्धपोतों को शामिल करके अपने बेड़े की ताकत को दोगुना कर लिया है. पर भारतीय नौसेना को सबसे ज्यादा डर पाकिस्तान की अत्याधुनिक हमलावर पनडुब्बियों (तीन अंगोस्ता और चार डेफ्ने) से है जो भारत की आ फॉक्सटाट और छह किलो स्तर की पनडुब्बियों के मुकाबले ज्यादा तेज, ज्यादा दांव-पेंच वाली हैं और जिनका पता पाना ज्याद आसान नहीं होता. इनमें से किसी भी पनडुब्बी से छोड़ी गई हारपून मिसाइल ऐसे किसी भी युद्धपोत या मैदान ठिकाने को नष्ट कर सकती है जो पनडुब्बी भेदी तारपीडो की जद से बाहर हो.

पर भारत ने हाल ही में दो एचडीडब्ल्यू टी-209 पनडुब्बियां खरीदकर और सोवियत चार्ली-1 श्रेणी भी परमाणु पनडुब्बी 'चक्र' को पट्टे पर लेकर अपने दबदबे को फिर कायम कर लिया लगता है. इसमें लंबी दूरी तक मार करने वाले निर्देशित तारपीडो और मिसाइल तो फिट हैं ही, साथ में पानी के भीतर सुराग लगाने की भी व्यवस्था है. अपने शिकार का तो यह बिना नजर आए काम तमाम कर सकती है. पर छोटी लड़ाई में पाकिस्तानी पनडुब्बियों की क्षमता तबाही ढा सकती है.

लेकिन सतही लड़ाई में भारत का अमला पाकिस्तान पर निश्चय ही काफी भारी पड़ेगा. भारत के पास बहुआयामी हैरियर जंप जेट से युक्त दो विमानवाहकों का बेड़ा है

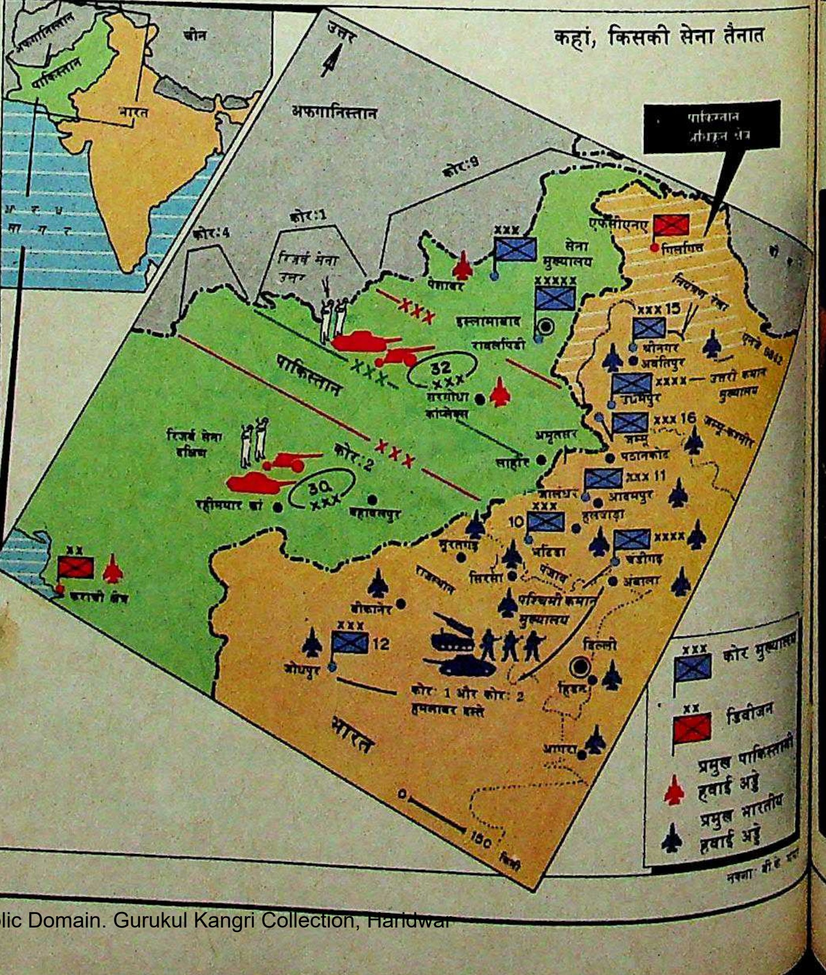

कहां, किसकी सेना तैनात

अफगानिस्तान
चीन
पाकिस्तान
भारत
अ र ब सा ग र
उत्तर
अफगानिस्तान
कोर:9
कोर:1
कोर:4
रिजर्व सेना उत्तर
पेशावर
सेना मुख्यालय
इस्लामाबाद
रावलपिंडी
पाकिस्तान
32 XXX
सरगोधा कांप्लेक्स
रिजर्व सेना दक्षिण
कोर:2
30 XXX
रहीमयार खां
बहावलपुर
कराची क्षेत्र
पाकिस्तान अधिकृत क्षेत्र
एफसीएनए
गिलगित
नियंत्रण रेखा
XXX 15
श्रीनगर
अवंतिपुर
XXXX — उत्तरी कमान मुख्यालय
उधमपुर
XXX 16
जम्मू
जम्मू-कश्मीर
पठानकोट
अमृतसर
लाहौर
XXX 11
जालंधर
आदमपुर
हलवाड़ा
10
भटिंडा
XXXX
चंडीगढ़
अंबाला
सूरतगढ़
सिरसा
पंजाब
राजस्थान
पश्चिमी कमान मुख्यालय
बीकानेर
12
जोधपुर
कोर: 1 और कोर: 2 हमलावर दस्ते
दिल्ली
हिंडन
आगरा
भारत
0
150 किमी
XXX कोर मुख्यालय
XX डिवीजन
प्रमुख पाकिस्तानी हवाई अड्डे
प्रमुख भारतीय हवाई अड्डे
नक्शा: बी.के. दत्त

अलावा कशिन श्रेणी के चार विध्वंसक गोदावरी श्रेणी के चार बहुपयोगी पोत, श्रेणी के छह पोत, व्हाइटने श्रेणी के दो और रूस में पेत्या श्रेणी के 12 डुब्बी भेदी जंग के लिए) और कृत क्रेस्टा श्रेणी के तीन मिसाइल वाहक उसके पास हैं. इसके विपरीत पाकिस्तान पास सिर्फ दो क्रूजर, छह विध्वंसक और युद्धपोत हैं.

दोनों पक्षों को जंग से दूर रखने वाली बड़ी चीज इसके लिए चुकाई जाने वाली कीमत है. एक दिन की लड़ाई का खर्च 500 से 700 करोड़ रु. के बीच बैठेगा. इसलिए कोई भी पक्ष इसे ज्यादा अरसे तक जारी नहीं रख सकता. ताजा संकेतों से लगता है कि पाकिस्तान कश्मीर मुद्दे पर पूरी तरह से नहीं भिड़ना चाहता. ज्यादा संभावना यह है कि पाकिस्तान इसका कोई सस्ता विकल्प खोजेगा. जैसे वह जम्मू और कश्मीर में ऐसी गुपचुप दखलंदाजी कर सकता है जिससे विद्रोह बढ़े. वह कश्मीर के उग्रवादियों को घातक हथियारों और विस्फोटक पदार्थों की आपूर्ति बढ़ा सकता है और उनकी मदद के लिए नागरिकों के वेश में घुसपैठियों को भेज सकता है जो रणनीति बनाने और निशाने तय करने का काम करें.

पाकिस्तान ने कश्मीर पर अपना दांव काफी बढ़ा दिया है और दोनों देशों का तनाव खतरे के निशान के निकट पहुंच गया है. इस निशान के पार जाने का मतलब होगा दोनों देशों में खूनी लड़ाई जिसे कोई भी पक्ष न तो चाहता है और न ही झेल सकता है.

—दिलीप बॉब और राज चेंगप्पा

पाकिस्तान

पुराना राग अलापने की मजबूरी

बावजूद इसके पाकिस्तान भारत से झगड़ा नहीं मोल ले सकता

भारत-पाकिस्तान के बीच शुरू हुई जबानी लड़ाई भले ही चौथी जंग में ती न दिख रही हो लेकिन तनातनी तरफ है. जनवरी तक कश्मीर का मुद्दा मोश पड़ा था. लेकिन पिछले पखवाड़े जब कश्मीर घाटी भारी मौसमी ठंडक के बावजूद गरमा गई तो यही मुद्दा पाकिस्तान की राजनीति का केंद्रबिंदु बन गया. कुछ समय के लिए ही सही जातीय और राजनैतिक रूप से बंटी पाक जनता भी एकजुट हो गई.

5 फरवरी को जब पाकिस्तान में देशव्यापी बंद का आह्वान किया गया तो उस दिन रावलपिंडी के भीड़-भाड़ वाले राजा बाजार की खामोशी देखकर ही अंदाज लगाया जा सकता था कि पाकिस्तान के लिए

अपनी घटती लोकप्रियता और कश्मीर के मामले में जन-उन्माद के कारण बेनजीर को सख्त रुख अपनाना पड़ा है

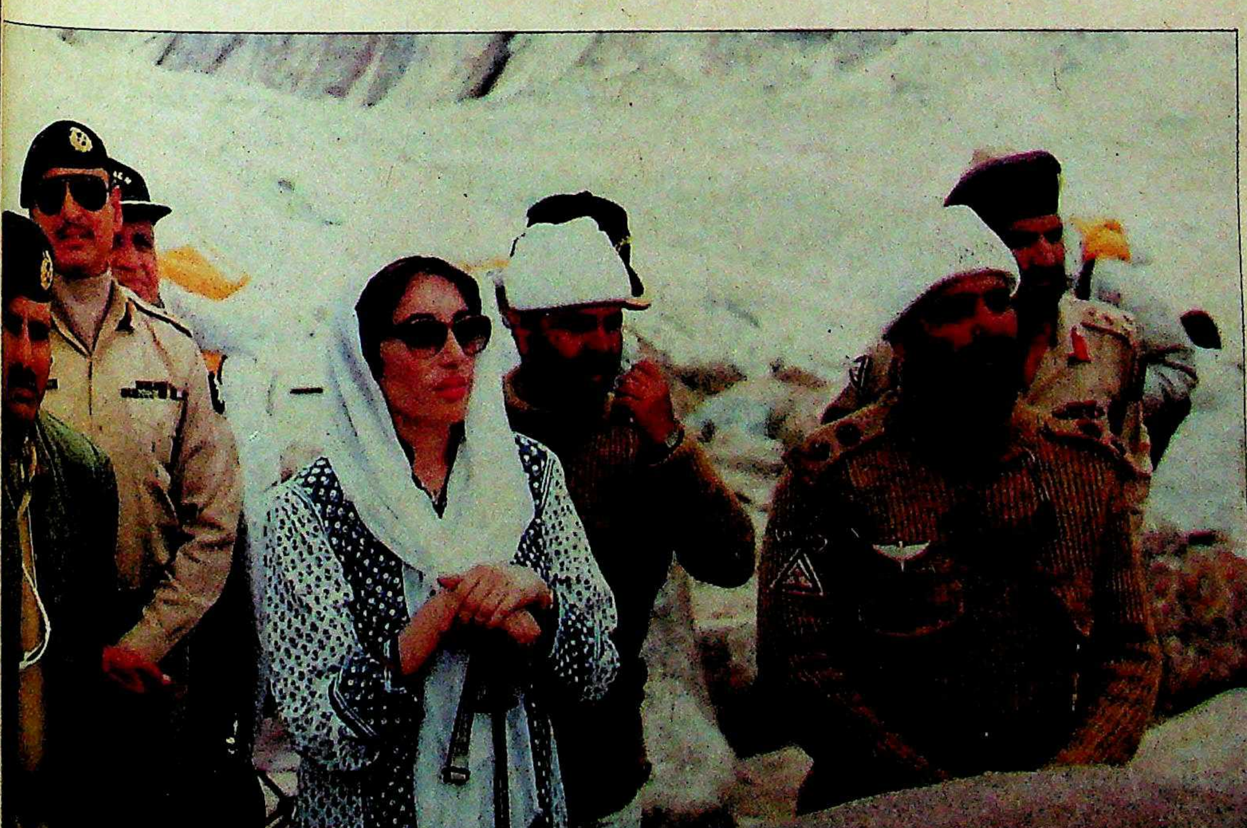

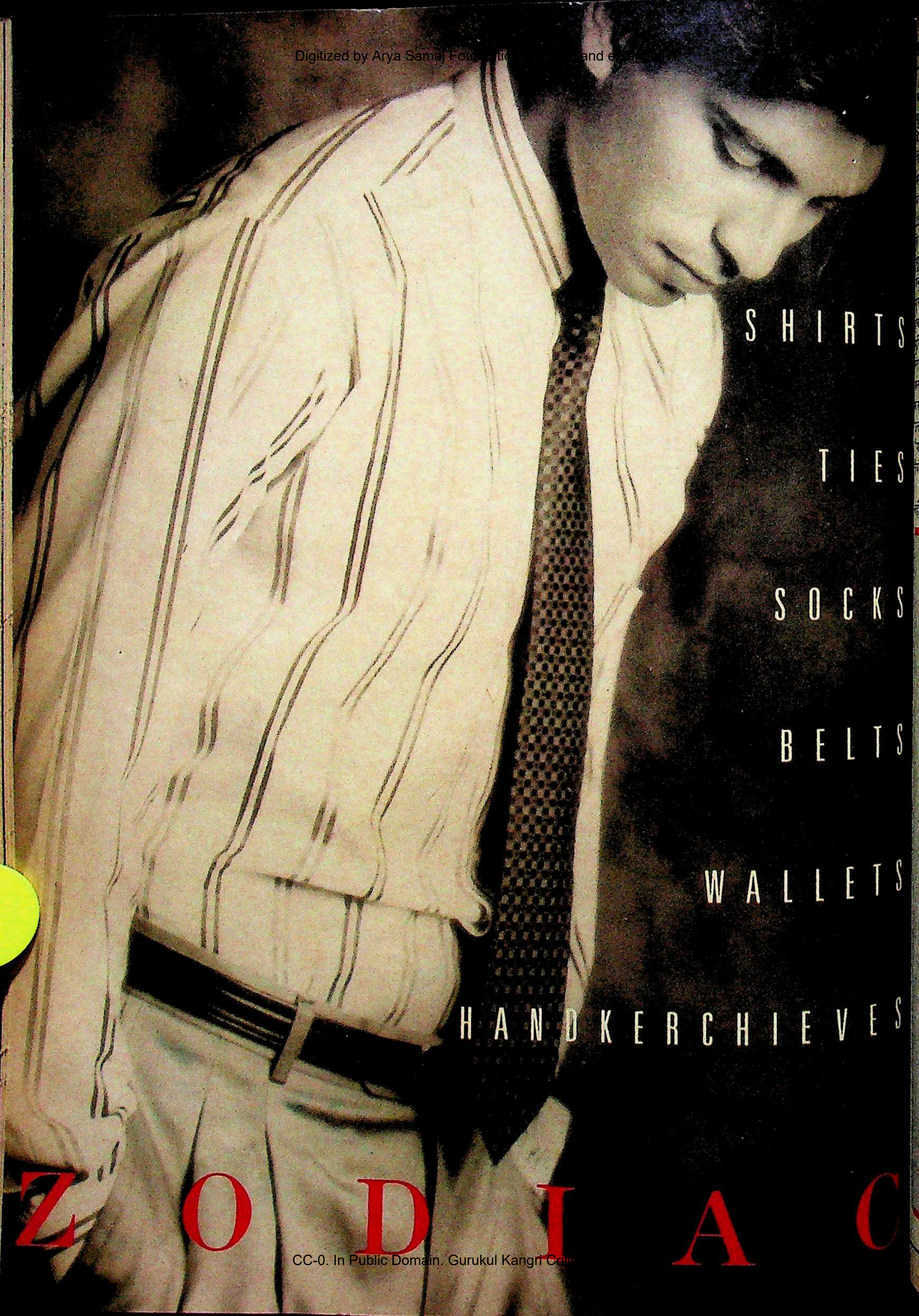
SHIRTS
TIES
SOCKS
BELTS
WALLETS
HANDKERCHIEVES
ZODIAC

श्मीर का मसला कितना महत्वपूर्ण है. एक की कार पर चिपके स्टिकर से भी लोगों ड का पता चलता है. इस स्टिकर पर था, "कश्मीर फतह करने का वक्त आ है." इस जनभावना का लाभ न लेने की कोई भी राजनेता नहीं कर सकता. जनवरी को बेटी बख्तावर को जन्म देने बाद 10 फरवरी को प्रधानमंत्री बेनज़ीर ने इस मुद्दे पर बुलाए गए संसद के सत्र को संबोधित किया. 'इस खूब- घाटी पर लगे खून के धब्बे' का ला देते हुए उन्होंने कहा, "क्या उम्माह (जगत) और पाकि- न खामोश रह सकते हैं? एक विद्रोह को कुछ शरारती तत्वों की तूत नहीं बताया जा सकता." होंने कहा कि उनकी फौज अपनी तृभूमि की रक्षा करने के लिए ार और चौकन्नी है."

पर बेनज़ीर के पास और रास्ते भी थे. कुछ दिन पहले नेशनल असेंबली में बहस के दौरान विपक्षी सदस्यों ने कश्मीर की हलचल को 'जेहाद' करार दिया था. लेकिन (शायद) मुल्ला-मौलवियों को छोड़कर और कोई भी इस मुद्दे पर एक और जंग नहीं चाहता.

पाकिस्तानी सेना खामोश ही रही. पिछले पखवाड़े पाकिस्तानी सेना के प्रमुख जनरल मिर्जा असलम बेग सीमा वाले इलाके के दौरे पर गए थे और उन्होंने सेना से चौकन्ना रहने को कहा. एक विश्वासपात्र सूत्र ने, जिसका मानना है कि सेना अभी जंग के लिए एकदम तैयार नहीं है, कहा, "सेना ने अभी ही जर्ब-ए-मोमिन खत्म किया है जिससे इसके 35 फीसदी उपकरण खस्ताहाल हो गए हैं."

खुद राष्ट्रपति गुलाम इस्हाक खां ने भी चेतावनी दी कि हालात इस हद तक न ले जाएं कि देश को एक और जंग में, जिसकी कोई जरूरत नहीं है, फंसना पड़े. पाकिस्तानी विदेश सचिव तनवीर अहमद खां कहते है, "लड़ाई न हो, इस बात पर स्पष्ट रूप से पूरे राष्ट्र की सहमति है."

पिछले पखवाड़े दो दफा पाकिस्तानी लोगों का हुजूम नियंत्रण रेखा को पार करता हुआ भारत में आ गया. जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के नेता मकबूल बट की बरसी के मौके पर 11 फरवरी को करीब 100 लोग चकोठी के पास सीमा रेखा को पार कर गए. भारतीय सेना ने गोली चलाई तो वे भाग गए. लेकिन तुरंत दोगुनी भीड़ के साथ फिर आ पहुंचे. इसके बाद सेना ने स्टेनगनों

शाहिद अहमद

अमानुल्ला खां

'हम कश्मीर को स्विट्ज़रलैंड बनाएंगे'

अभी पिछले महीने तक कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) के 55 वर्षीय अध्यक्ष अमानुल्ला खां और उनके आंदोलन को पाकिस्तान में गंभीरता से नहीं लिया जाता था. लेकिन कश्मीर की ताजा घटनाओं ने उन्हें महत्वपूर्ण मुकाम दिला दिया है. संयोग से अमानुल्ला खां घाटी के नहीं बल्कि गिलगित्त के रहने वाले हैं. पिछले पखवाड़े प्रमुख संवाददाता ***मधु जैन*** *ने इस्लामाबाद में उनसे बातचीत की. उसके अंश:*

● ***रुबाइया सईद का अपहरण जेकेएलएफ के लिए कितना जरूरी था?***

कश्मीर का मुद्दा ठंडा पड़ता जा रहा था. रुबाइया वाली घटना ने इसे राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मुद्दा बना दिया.

● ***क्या ऐसे में राजीव गांधी ने आपके लोगों को रिहा कर दिया होता?***

नहीं. मैं वी.पी. सिंह की ईमानदारी के प्रति कद्र करता हूं.

● ***जेकेएलएफ के उग्रवादियों से आपका संपर्क कैसे होता है? क्या आप उन्हें हथियार और मुजाहिद मुहैया कराते हैं?***

आजादी के आंदोलन में लोगों को मौके पर हिदायतें देनी पड़ती हैं. सीमा पार लोगों को ले जाना नामुमकिन नहीं है.

● ***आपको पैसा कहां से मिलता है?***

दुनिया भर में रह रहे कश्मीरियों से. करीब दस लाख तो पाकिस्तान में ही हैं. 'आजाद कश्मीर' के 2.5 लाख लोग मध्य-पूर्व में हैं और डेढ़ लाख ब्रितानिया में हैं. पैसा जुटाने के लिए हमारे तीन संगठन मध्य-पूर्व में और पांच यूरोप में हैं.

● ***लेकिन यहां कश्मीरियों के दूसरे गुट कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाना चाहते हैं. आपका क्या कहना है?***

70 फीसदी नौजवान हमारे साथ हैं. कल तक मैं कश्मीर को आजाद कराने की बात करता तो पाकिस्तानी मुझे भारतीय एजेंट करार देते थे. आज जेकेएलएफ घाटी में सबसे महत्वपूर्ण पार्टी है.

● ***आपका संगठन किस तरह का कश्मीर चाहता है?***

स्विट्ज़रलैंड जैसा. हम पाकिस्तान और भारत दोनों से दोस्ताना रिश्ते रखेंगे.

● ***और गैर-मुसलमान कश्मीरियों का क्या होगा?***

कश्मीरी पंडित हमारे भाई हैं.

● ***क्या पाकिस्तान सरकार से आपको अपने लोगों को सीमा पार कराने में मदद मिलती है?***

पाकिस्तानी घुसपैठ का भारतीय आरोप बकवास है.

● ***लेकिन पाकिस्तान में बैठकर कश्मीर की आजादी की बात करना?***

हां. मैं पाकिस्तान के लिए परेशानी का सबब हूं...हम अपनी बातें भारत और पाकिस्तान दोनों से ही खुफिया रखते हैं.

● ***क्या कश्मीर एक मोहरे की तरह नहीं बन गया है?***

हां, हर कोई कश्मीर का नाम लेता है. नवाज शरीफ की 10 फीसदी हिमायत ही जायज है बाकी 90 फीसदी तो पीपुल्स पार्टी के खिलाफ इस्तेमाल के लिए है. बेनज़ीर भुट्टो शरीफ के असर को मिटाने के लिए एकता सप्ताह मनाती हैं. भारत में राजीव गांधी, भाजपा और कम्युनिस्ट कश्मीर को वी.पी. सिंह के खिलाफ इस्तेमाल कर रहे हैं.

● ***म्हात्रे की हत्या क्यों की गई?***

भारतीय उच्चायोग की गलतियों की वजह से. वह हर मामले में अपनी नाक घुसेड़ने लगा था.

● ***क्या आप किसी के एजेंट हैं?***

1971 में भारतीय एजेंट होने के आरोप में मैं 15 महीने पाकिस्तान जेल में रहा. इसी तरह मेरी गैर-मौजूदगी में श्रीनगर में मुझ पर मुकदमा चलाया गया.

तथाकथित 'आजाद कश्मीर' के सदर सरदार अब्दुल कयूम ने कश्मीर के पाकिस्तान में विलय का आह्वान किया है. वे नियंत्रण रेखा से पार चार लाख लोगों के नेतृत्व का दावा करते हैं. प्रमुख संवाददाता ***मधु जैन*** *ने उनसे इस्लामाबाद में बात की. कुछ अंश:*

अब्दुल कयूम

'लड़ाई टल नहीं सकती'

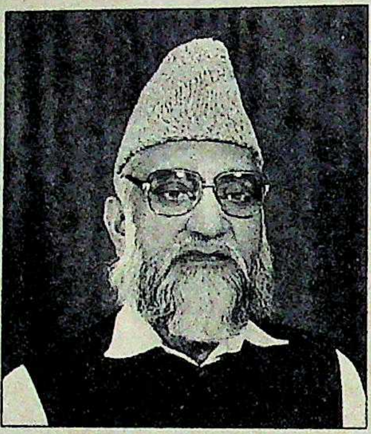

- ***कश्मीर के पाकिस्तान में विलय के कारणों के बारे में.***

कश्मीर के आजाद होने से सोवियत संघ और चीन भड़क जाएंगे. यह भारत और पाकिस्तान के साथ विश्वासघात भी होगा.

- ***कश्मीर पर युद्ध की संभावनाएं.***

युद्ध तो अब किसी भी कीमत पर टल नहीं सकता. लेकिन बर्फ पिघलने तक यह संभव नहीं. मेरा मकसद तो जनमत संग्रह कराना है. एक करोड़ बीस लाख लोगों की जानें जाएंगी. यदि कोई जिंदा नहीं रहता तो भी कोई बात नहीं, कश्मीर तो आजाद हो ही जाएगा.

- ***नियंत्रण रेखा पर गतिविधियां.***

तकरीबन 100 शरणार्थी इस पार आए हैं लेकिन ये वे लोग हैं, जिन्हें युद्ध विराम रेखा से खदेड़ दिया गया. हम अब लोगों का इस तरफ आना बंद करेंगे. हमें उस पार जाना है, न कि उन्हें इस पार.

- ***पाकिस्तान सरकार से मदद लेने पर.***

सिंध में अभी जो घटा उससे पहले पूरा देश कश्मीर के मसले पर एकजुट था. वे अभी तक तय नहीं कर पाए हैं कि क्या करें. जनरल जिया ने हमें समर्थन देना शुरू कर दिया था.

- ***कश्मीरी हिंदुओं के बारे में.***

उन्हें कोई दिक्कत नहीं होगी. हम इतने वर्षों से कश्मीर में मिलजुलकर उनके साथ रहते आए हैं.

- ***घाटी में हथियार भेजे जाने पर.***

सरकारी तौर पर तो ऐसा नहीं है लेकिन छिटपुट रूप से जाते ही हैं.

से दो चक्र गोलियां चलाईं. पाकिस्तान का कहना है कि इससे कई लोग मरे. इन घटनाओं से हालात भले ही उतने गंभीर न हुए हों लेकिन घाटी में जो कुछ भी होता है उसका असर पाक अधिकृत कश्मीर पर तुरंत पड़ता है. अप्रैल में बर्फ पिघलने तक यह मसला नहीं सुलझा तो इस बात का अंदेशा है कि गरम दिमागवाले लोग ज्यादा संख्या में सीमा पार करके भारत में जाने की कोशिश करेंगे. पाकिस्तान सरकार के लिए उन्हें रोक पाना आसान नहीं होगा.

जंग नहीं छिड़ने के पक्ष में एक बड़ी बात दोनों महाशक्तियों का रुख भी है. माना जाता है कि अमेरिका ने पाकिस्तान से कहा है कि वह जंग की बोली न बोले. पाकिस्तान ने दूतावासों में ज्यादा विवेकशील लोगों को रखने का फैसला किया है. भारतीय विदेश सचिव एस.के. सिंह की मास्को और वाशिंगटन यात्रा के बाद राष्ट्रीय सुरक्षा के मामलों में बेनज़ीर के सलाहकार इकबाल अखुंद पाकिस्तान का पक्ष रखने के लिए इन दोनों राजधानियों की यात्रा करेंगे.

इस सबके बीच कश्मीर, पाकिस्तानी राष्ट्रवाद और भारत के चुनावों के लिए गरमागरम मुद्दा हो गया है. कुछ विपक्षी नेताओं का मानना है कि यह दोनों ही सरकारों के लिए बिल्ली के भाग से छींका टूटने जैसा मसला बन गया है. जुल्फिकार अली भुट्टो सरकार में सूचना एवं प्रसारणमंत्री रहे मौलाना कौसर नियाजी कहते हैं. "दोनों ही देशों में कमजोर सरकारें हैं. इतनी गरमागरम बातें आंतरिक नाराजगी को दबाने के लिए ही की जा रही हैं. हम ऐसी (लड़ाई की) ऐय्याशी नहीं झेल सकते."

दो हफ्तों की खामोशी के बाद बेनज़ीर भी अब तीखे रुख के साथ पेश आने लगी हैं. वे शायद 'भारत के प्रति नरम' होने का लेबल अपने ऊपर नहीं लगनें देना चाहतीं. अभी वे बचाव की मुद्रा में हैं क्योंकि उनके सामने और भी समस्याएं हैं. पिछले पखवाड़े कराची में हुए जातीय दंगों में 50 से अधिक लोग मारे गए. सिंध अभी भी सुलग रहा है. इसके साथ ही असीम अधिकारों वाले राष्ट्रपति, कभी भी सत्ता हथियाने के लिए तैयार बैठी सेना और महत्वाकांक्षी इंटर-सर्विसेज इंटेलिजेंस मंडली के बीच फंसी बेनज़ीर अब तीन 'क' के चक्कर में पड़ी हैं—कराची, कलाशिनकोव और कश्मीर. और जिस बात को किसी भी कीमत पर वे टालना चाहेंगी वह जंग ही है. रमजान के महीने के दौरान लोगों के भावनात्मक उफान को शांत करने के लिए वे जो कुछ भी कर सकती हैं, करेंगी.

—**मधु जैन**, इस्लामाबाद में

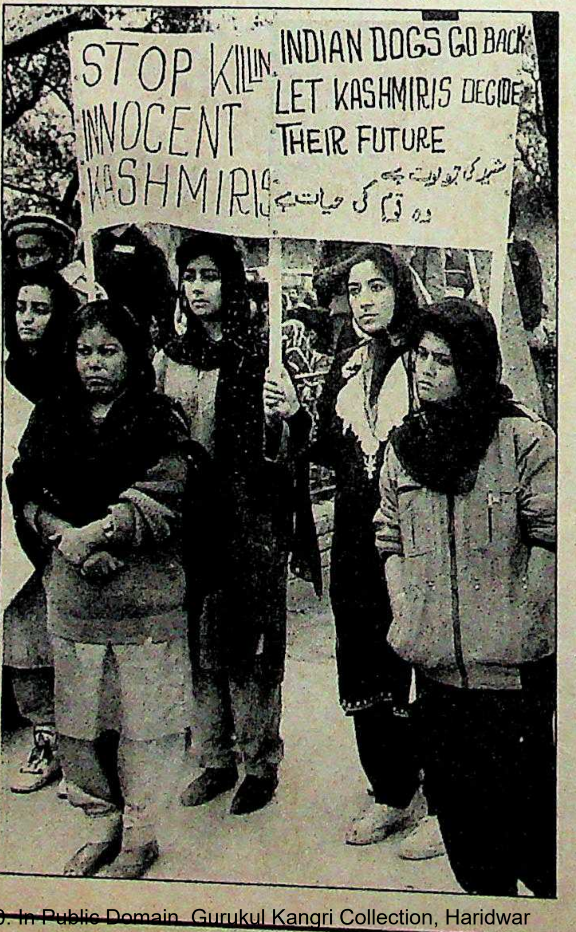

■ **कराची में
भारत विरोधी प्रदर्शन**

अपनी नौकरी के अन्तिम दिन क्या आप अपनी पत्नी से यह कह सकेंगे—"चिन्ता न करो, हमारे दिन अच्छी तरह ही कटेंगे"?

एक जिम्मेदार पिता के रूप में आपने अपने बच्चों के भविष्य को सुरक्षित कर दिया है, यह ठीक है। परन्तु क्या आप पूरे भरोसे के साथ यह कह सकते हैं कि आपने ऐसा प्रबन्ध भी कर लिया है कि सेवा-निवृत्ति के बाद आप दोनों पति-पत्नी को नियमित रूप से एक निश्चित रकम मिलती रहेगी ? एल आई सी की पेंशन योजनाएँ — जीवन धारा और जीवन अक्षय, सेवा-निवृत्ति के बाद नियमित आय सुनिश्चित करनेवाली आदर्श योजनाएँ हैं। सर्वोपरि, इन योजनाओं से आयकर अधिनियम की धारा ८० सी सी ए के अन्तर्गत आपको आकर्षक कर-छूट की सुविधा भी मिलती है। आज ही एक पॉलिसी लीजिए। अधिक जानकारी के लिए किसी एल आई सी एजेन्ट अथवा निकटतम एल आई सी कार्यालय से सम्पर्क कीजिए।

सेवा-निवृत्ति एक सच्चाई है
आप इसे टाल नहीं सकते।

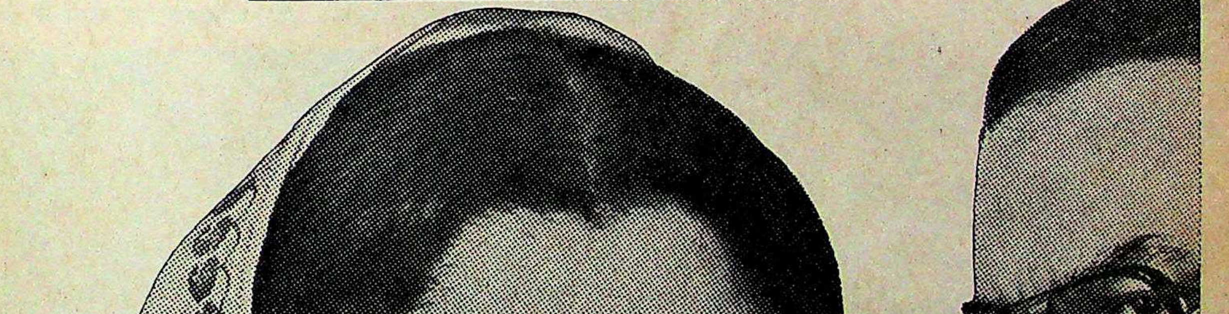

भारतीय जीवन बीमा निगम

जम्मू कश्मीर

कायम हो रहा कायदा

जगमोहन के राज्यपाल बनने के बाद से अलगाववाद की आंच में झुलस रही घाटी को कुछ राहत मिली है, लेकिन प्रशासन को अभी कई पड़ाव तय करने हैं

घाटी में सर्दी पूरे यौवन पर है. अब भी अधिकतम तापमान 5 डिग्री सेल्सियस तक ही पहुंचता है. श्रीनगर, अनंतनाग, सोपोर और बारामुला जैसे शहरों में दिन भर गिरने वाली फुहारें सूरज छिपने के साथ ही बर्फ में बदलकर फिरनधारी कश्मीरियों के लिए सड़कों को फिसलन भरी बना देती हैं जिससे उनकी परेशानी बढ़ जाती है. यही परेशानी महाराष्ट्र, तमिलनाडु, बिहार और उत्तर प्रदेश से आए केंद्रीय रिजर्व पुलिस और सीमा सुरक्षा बल की 57 कंपनियों के उन 9,000 जवानों को भी पेश आती है जो अब इन शहरों की सड़कों, चौराहों और पुलों की चौकसी पर तैनात हैं.

गुपकार रोड और डल झील के साथ-साथ बल खाती बुलवर्ड पर आहत नेता फारूक अब्दुल्ला चमड़े की जैकेट में हाथ डाले अकेले ही खामोश घूमते हैं, शायद यह दिखाने के लिए कि उन्हें अपनी जनता से कोई डर नहीं है. वे यह भी जताना चाहते होंगे कि अकेले घूमते रहने पर भी कोई उन पर हमला नहीं करता, जबकि राज्यपाल जगमोहन दिन-रात सुरक्षा पहरे में रहते हैं. जगमोहन की हत्या के लिए आतंकवादी संगठनों ने 5 लाख रु. इनाम नाम घोषित कर रखा है.

पूर्व मुख्यमंत्री के गुपकार रोड स्थित निवास से कुछ ही दूर राजभवन है. राजभवन और उससे थोड़ी दूर पर सर्दियों का लघु सचिवालय रात भर रोशनी में नहाए रहते हैं. प्रायः आधी रात के बाद ही सो पाने वाले राज्यपाल बमुश्किल पांच घंटे नींद ले पाते हैं. सुबह उठते ही वे कानून और व्यवस्था की हालत पर आई खुफिया रिपोर्टें पढ़ते हैं और उन फाइलों का अध्ययन करते हैं, जो उनसे मिलने आने वाले नागरिकों की परेशानियों को हल करने के लिए की गई कार्रवाई से संबंधित होती हैं.

राजभवन में सुबह 8 बजे से ही चहल-पहल शुरू हो जाती. उग्रवादियों की धमकियों और बहिष्कार के फतवे से बेअसर सैकड़ों

शिकायतें सुनते जगमोहन

भवान सिंह

फारूक अब्दुल्ला: दरकिनार

घाटी के विभिन्न हिस्सों से आकर कड़ी वाले इसके दरवाजे पर जमा होने हैं. शपथ लेते समय उन्होंने खुद को जैसा सेवक' कहा था. उसी तरह वे यादियों को दफ्तर में बिठाते हैं, उनकी सुनते हैं और फौरी कार्रवाई के आदेश करते हैं. फरियादियों की तादाद अब लगी है.

घाटी में शांति बहाल हो गई है, यह अभी जल्दबाजी होगी. योग्य प्रशासन बूते एक बार कश्मीरी जनता का दिल चुके जगमोहन के फिर राज्यपाल बन और फारूक के हट जाने से कश्मीरी राष्ट्रीय गान गाने लगेंगे, इसकी अभी द नहीं है. इतना जरूर है कि कानून व्यवस्था के प्रति लोग सचेत हुए हैं और लगा है कि वे शांति चाहते हैं. उल्लेख- है कि व्यापक तनाव और हिंसा के ों के बावजूद अनेक वर्षों के बाद पहली 11 जनवरी का दिन बिना किसी घटना बीत गया. छह साल पहले इसी दिन ीरी अलगावादी मकबूल बट्ट को फांसी ई थी. इसी तरह 5 और 6 जनवरी कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (केएलएफ) के उग्रवादियों ने पाकिस्तान में आयोजित एकजुटता सप्ताह के समर्थन में मुकम्मल हड़ताल का आह्वान किया था, श्रीनगर की घनी आबादी वाले रावलपुरा, बरजुल्ला और सिल्क फैक्टरी रोड की अधिकांश दुकानें खुली रहीं. पांपोर. अवंतीपुर, बिजबिहाड़ा और अनंतनाग होते हुए जम्मू-श्रीनगर राजमार्ग पर बसें और दूसरे वाहन चलते रहे तथा भीगे मैदानों में बच्चे क्रिकेट खेलते रहे.

उग्रवादियों के मुख्य केंद्र अनंतनाग में केएलएफ भूमिगत हो गया है. नेता दरकिनार हो गए हैं. गुस्से में भरे नौजवानों के नेताविहीन झुंड गाहे-ब-गाहे शहीद चौक और चीनी बाजार में पथराव करते और भारत विरोधी नारे लगाते हैं. लेकिन करीबी बातचीत में उनकी वही शिकायतें सामने आती हैं. भ्रष्ट अधिकारी, बर्बर पुलिस, बेरोजगारी, राहत योजनाओं की नाकामी, दिक्कतें सुनने वाला कोई नहीं—न तो फारूक जिनसे वे नफरत करते हैं, न मुस्लिम युनाइटेड फ्रंट के नेता जिन पर उन्हें भरोसा नहीं है, न उनके विधायक जो भ्रष्ट हैं. इसलिए वे दोष भारत को देते हैं. दैनिक 'शोएब' के संपादक कासिम सज्जाद कहते भी हैं, "कुछेक भ्रष्ट अफसरों को सजा दे दीजिए और इन नौजवानों के साथ इज्जत से पेश आइए तो आपको बहुत बड़ा फर्क दिखने लगेगा. उनका भरोसा तो जीतना ही होगा. राज्यपाल के लिए लोगों के

मोहन

आतंकवादी पंजे को कुचलना होगा'

गमोहन संकटमोचन के रूप में वर्षों से नी पहचान बनाए हुए हैं. अपनी इसी ता के अनुरूप वे जम्मू-कश्मीर के से भी विचलित नहीं हैं. कार्यकारी ***इंद्रजीत बधवार*** *ने उनसे श्रीनगर में त की. कुछ अंश:*

● ***फारूक अब्दुल्ला राज्यपाल के रूप में की नियुक्ति का विरोध कर रहे हैं. पीछे मुख्य वजह शायद यह है कि 2 जुलाई 1984 को उन्हें बरखास्त किया था.***

उनके इस रवैये पर चकित हूं. फारूक ल्ला को यह अच्छी तरह मालूम है कि लाई 1984 को मैंने राज्य में राज्य-शासन की सिफारिश की थी, न कि शाह को मंत्रिमंडल गठन करने देने की.

● ***20 जनवरी 1990 को तड़के ली गई पर विवाद के बारे में आपका क्या है?***

19 जनवरी 1990 की शाम को पथ दिलाई गई और 20 जनवरी श्रीनगर में तलाशी ली गई. मेरे पद भार संभालने के कुछ ही घंटों के भीतर इस तरह का फैसला करने का सवाल ही पैदा नहीं होता.

● ***मेरे विचार से सिर्फ आपके आदेश से ही नहीं बल्कि खुद आपकी देख-रेख में तलाशियां ली जा रही हैं और छापे डाले जा रहे हैं?***

आतंकवाद के पंजे को कुचलने के लिए मैं वह हर चीज करूंगा जिसकी कानून मंजूरी देता है.

● ***मृतकों की संख्या के बारे में आपका क्या कहना है?***

यह दुर्भाग्यपूर्ण ही है कि कुछ अखबारों, खासकर विदेशी अखबारों ने मृतकों की संख्या बहुत बढ़ा-चढ़ाकर बताई है. सचाई तो यह है कि मृतकों की संख्या 50 से कम है. हम जल्दी ही मृतकों की एक सूची प्रकाशित करने की सोच रहे हैं.

● ***आपकी नियुक्ति को लेकर कुछ हलकों में आलोचना हुई है. आपकी टिप्पणी?***

इस पद को कबूल करने का एकमात्र मकसद एक राष्ट्रीय संकट के हल में मदद करना था. मैंने अपने और अपने परिवार के लिए खुद जोखिम मोल ले लिया है. यहां तक कि मैं तनख्वाह भी नहीं ले रहा हूं. मुझे जो प्रशासनिक मशीनरी मिली हुई है, वह जर्जर हो चुकी है.

● ***कश्मीर संकट सुलझाने के लिए आप कौन से बुनियादी कदम उठा रहे हैं?***

मेरे विचार से कश्मीर के संकट को सुलझाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि राज्य व्यवस्था की ताकत का पुरजोर एहसास कराया जाए और लोगों में यह धारणा बनाई जाए कि तोड़फोड़ करने वाले तत्वों और उनके सहयोगियों से हर कीमत पर कड़ाई से निबटा जाएगा और उन्हें खत्म किया जाएगा.

इसके साथ ही यह भी जरूरी है कि दिन-प्रतिदिन के प्रशासन में लोगों से ठीक बरताव किया जाए और भ्रष्टाचार तथा फिजूल सरकारी खर्चों को खत्म करते हुए उनकी शिकायतों को दूर करने की कोशिश की जाए.

● ***इसका राजनैतिक समाधान क्या है?***

पहले तो भ्रष्टाचार और शोषण से मुक्त माहौल बनाकर इस व्यवस्था में लोगों का विश्वास फिर से कायम करने के लिए हमें समय दिया जाना चाहिए. मैंने राज्य विधानसभा को तुरंत भंग करने और छह महीने के बाद नया चुनाव कराने की भी सिफारिश की थी.

दिल में अभी भी प्यार है."

लेकिन अविश्वास और विद्रोह के घने काले बादलों के बीच दिखती इन किरणों से संतोष नहीं किया जा सकता. स्कूली दीवारें 'भारतीय कुत्तो वापस जाओ' के नारों से पटी पड़ी हैं. सैनिक अफसरों से कह दिया गया है कि वे अपने परिवारों को घर भेज दें या नागरिक क्षेत्रों से छावनियों में ले आएं. स्कूली अध्यापक घर से निकलते डरते हैं. जाने-माने वकीलों ने सरकारी पदों से इस्तीफे दे दिए हैं. वे अब सरकारी मुकदमों की पैरवी के लिए तैयार नहीं हैं. वकील अल्ताफ नायक कहते हैं, "ये समझदार और अमनपसंद लोग हैं लेकिन उन्हें हिंदुस्तान का नाइंसाफी वाला पहलू ही देखने को मिला है जिससे उन्हें लगता है कि दूसरे हिंदुस्तानियों को हासिल हकूक से उन्हें महरूम रखा गया."

लेकिन लोगों की लाख नाराजगी के बावजूद यह मानना ही पड़ेगा कि पिछले साल हड़तालों और बंद के जरिए 120 दिन तक शहरों में जनजीवन ठप किए रखने वाले आतंकवादियों की पकड़ कुछ ढीली हुई है. उनके कारनामे अब बम फेंकने और हत्याएं करने के रूप में सामने आ रहे हैं.

21 जनवरी को अपने सलाहकारों के साथ जगमोहन के श्रीनगर आने तक लोग बेहिचक कर्फ्यू तोड़ते थे और पुलिस मूक बनी रहती थी. लेकिन अगले पांच दिन के दौरान पुलिस बल को सेना की मामूली मदद, हिंसा करती भीड़ पर गोली से 35 लोगों की मृत्यु और आजादी के एलान के लिए ईदगाह पर बुलाई भीड़ को इकट्ठी होने की इजाजत न देने से बागी तेवर कुछ हद तक काबू में आए.

आतंकवादियों के खिलाफ यह शायद पहली फतह थी. अगले दो दिन में दर्जन भर तलाशियां ली गईं. अधिकारी मानते हैं कि इन तलाशियों से अभी तक न तो हथियारों की कोई बड़ी बरामदगी हो सकी है (अनुमान है कि घाटी में कम-से-कम 200 स्वचालित हथियार हैं) और न आतंकवादी पकड़े जा सके हैं. आतंकवादी अब गांवों में अपनी शाखाएं फैलाने में लगे हैं. स्थानीय पुलिस भी पहली बार ऊपरी आदेशों पर अमल करती दिख रही है. नए प्रशासन का मुख्य जोर शांति बनाए रखने और कानून-व्यवस्था को सुधारने पर है. साथ ही मस्जिदों को आतंकवादियों की पनाहगाह बनने से भी रोका जा रहा है पर यह काम अभी शुरुआती दौर में है.

गिरफ्तारियां बड़े पैमाने पर नहीं, चुनींदा स्तर पर की जा रही हैं. उन संदिग्ध लोगों को खास मियाद के बाद रिहा किया जा रहा है, जिनके खिलाफ सबूत नहीं मिलते. अभी तक का नतीजा यह है कि 'नर्स' जख्मों पर मरहम लगाने के साथ-साथ जरूरत होने पर दावा की कड़वी गोली भी खिला सकती है.

"जबकि हम हिंसा की ताकतों से लड़ रहे थे, मेरी सरकार की बरखास्तगी और राज्यपाल बदलने की मांगें उठाई गईं"

फारूक अब्दुल्ला
जनवरी 1990 में

◆

"गवर्नर साहब, हमें आपकी सख्त जरूरत है. चमत्कार आप ही कर सकते हैं. मैं गलती करूं तो मेरे कान खींचने से हिचकिएगा नहीं"

फारूक अब्दुल्ला
7 नवंबर 1986 को

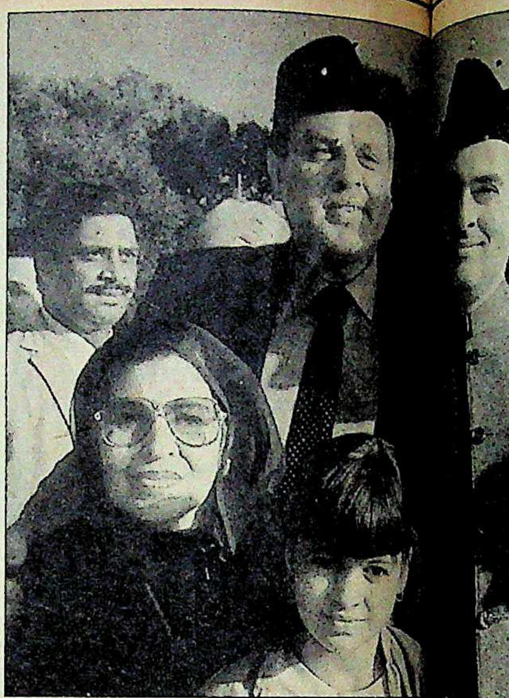

राजीव सरकार

चेतावनियां ताक पर

तत्कालीन राज्यपाल जगमोहन के अत्यावश्यक संदेशों की राजीव सरकार द्वारा अनदेखी से मामला और उलझा

कश्मीर घाटी में प्रशासन ठप पड़ जाना और हिंसक अलगाववाद का फिर से भड़क उठना अप्रत्याशित नहीं था. हकीकत तो यह है कि राज्यपाल जगमोहन ने अपने पहले कार्यकाल की समाप्ति के कुछ समय पूर्व ही मार्च और जून 1989 के दौरान तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को अत्यावश्यक संदेशों के जरिए अलगाववाद के नए स्वरूप और उसके कारणों की विस्तृत जानकारी भेजी थी.

इन संदेशों का सीधा मतलब यह था कि देश की अखंडता पर मंडराते संकट को दूर करने के लिए तत्काल कार्रवाई करने की जरूरत थी. गृह मंत्रालय की फाइलों से पता चलता है कि इन चेतावनियों को ताक पर रख दिया गया. यही नहीं, इंका सरकार ने फारूक अब्दुल्ला सरकार को भरपूर समर्थन देना जारी रखा, हालांकि उस पर हालात काबू से बाहर होने देने के आरोप लग रहे थे.

अब राजीव और फारूक एक स्वर से राज्यपाल के रूप में जगमोहन की पुनर्नियुक्ति की आलोचना कर रहे हैं. वे जगमोहन और जनता दल पर एक लोकप्रिय सरकार गिराने और घाटी में स्थिति बदतर बनाने के आरोप थोप रहे हैं (देखें बॉक्स). यही नहीं, वामपंथी पार्टियों की मदद से उन्होंने केंद्र को इस बात के लिए मजबूर करने की कोशिश की है कि वह फारूक से ही वास्ता रखे जबकि फारूक जगमोहन की नियुक्ति के विरोध में 19 जनवरी को ही इस्तीफा दे चुके हैं. वामपंथी पार्टियां जगमोहन की नियुक्ति की आलोचक इसलिए हैं क्योंकि वे उन्हें घाटी के प्रति भाजपा नीति के साथ जोड़कर देखती हैं.

प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह और फारूक की हाल की भेंट के बाद जगमोहन ने फारूक सरकार के नाकारापन के बारे में वी.पी. सिंह को साफ-साफ लिख भेजा.

विडंबना तो यह है कि फारूक को अहमियत देकर केंद्र कश्मीर के प्रति अपने लक्ष्य की ही अनदेखी करता दिख रहा है. ऐसा माहौल बना दिया गया कि फारूक का फिर से सत्ता पर काबिज होना तय है. ऐसे में पुराने राज और नई बागडोर के बीच झूलती नौकरशाही यदि जगमोहन के साथ वांछित सहयोग नहीं कर पा रही है तो आश्चर्य की कोई बात नहीं.

यह न सिर्फ नए राज्यपाल के लिए बल्कि केंद्र सरकार के लिए भी राजनैतिक संकट

योग जॉय

ति है. जगमोहन के निकट- सूत्रों के मुताबिक, अगर केंद्र से पूरा सहयोग नहीं ला तो वे इस्तीफा देने को र बैठे हैं. उन्होंने वी.पी. को भी अपनी भावना से ट रूप से अवगत करा दिया होंने लिखा, "मैं आपसे ना करता हूं कि आप हमारे लोचकों को कश्मीर भेज दें. द तब जाकर वे सचाई से किफ हो पाएं."

इस सबका नतीजा यह है कि जगमोहन वी.पी. सिंह का वरद- पाने में सफल हो गए हैं. न फारूक और राजीव ले जगमोहन के आलोचक नहीं चाहेंगे कि जगमोहन के नायक या शांतिदूत कर उभरें.

इन ताकतों का फौरी इरादा रत विरोध में बदलती जा फारूक विरोधी भावनाओं जगमोहन विरोधी लहर में दिया जाए. श्रीनगर में तब कुछ हद तक कामयाबी मिली जब फारूक के निष्ठा- नौकरशाहों ने 20 जनवरी घर-घर तलाशी का आदेश . नेशनल कान्फ्रेंस और नेता जगमोहन को दिल्ली जा गया 'काफिर' करार दे है जो राज्य को कुचलने

> **क**श्मीर के मामले में केंद्र ने ऐसे आदमी को भेजकर गलती की है जो मान्य नहीं है... और वहां की लोकप्रिय सरकार को बरखास्त करके उसने इस गलती को और संगीन बना दिया तथा पाकिस्तान को मौके का फायदा उठाने की छूट दे दी"
>
> राजीव गांधी
>
> *जनवरी 1990 में*

आया है और साथ ही अलगाववादियों के आंदोलन को चुपचाप समर्थन भी दे रहा है.

इन लोगों का दूरगामी लक्ष्य है अमन की कोई भी कोशिश कामयाब न होने देना और केंद्र तथा राज्यपाल को पुलिस की कठोर कार्रवाइयों की मदद लेने के लिए मजबूर कर देना ताकि लोग और भी भड़क उठें.

अगर राजनीतिक ऐसा माहौल बनाने में सफल हुए तो वे लोगों से कह सकेंगे कि चूंकि कश्मीर की जनता की पूरी आजादी संभव नहीं है, इसलिए उन्हें कम नुकसान वाला विकल्प चुनना चाहिए. यानी राज्यपाल को हटाकर फिर से फारूक की बहाली.

संकट के इस दौर में जगमोहन अगर हालात को कामचलाऊ भी बना पाते हैं तो उन्हें एक हद तक कामयाब समझा जाएगा. वैसे, वर्तमान परिस्थिति में प्रशासनिक क्षमता और उपाय दूरगामी राजनैतिक लक्ष्य की प्राप्ति के साधन ही हैं.

अभी तक तो कश्मीरी अलगाववादियों को पाकिस्तान से मदद मिलने का वादा थोथा ही साबित हुआ है बल्कि कुछ हद तक हास्यास्पद भी, खास तौर से पिछले पखवाड़े 4,000 'मुक्तिदाताओं' द्वारा सीमा पार से घुसपैठ करने का प्रयास. इन घटनाओं पर अधिकांश इस्लामी संसार तटस्थ रहा है और महाशक्तियों ने भी सावधानी बरतने का संकेत दिया है.

कश्मीरी लोगों के दिमाग में यह बात उतारना सबसे जरूरी है कि पाकिस्तान या कोई और ताकत एक दिन उन्हें आजाद कराएगी, उनका यह भरोसा काल्पनिक है. और हथियारों तथा आतंक का सहारा लेना खुदकुशी के सिवा कुछ न होगा. इसके साथ ही वहां के लोगों को यह भरोसा भी दिलाना होगा कि भारत में ऐसे लोग और ऐसी ताकतें हैं जो कश्मीर को सियासी खेल का उपकरण नहीं बल्कि अपने धर्मनिरपेक्ष आदर्शों तथा प्रगति और विकास में एक ऐसा महत्वपूर्ण सहयोगी मानते हैं जिसे स्वतंत्र तथा निष्पक्ष चुनावों के जरिए मर्जी की सरकार चुनने का हक है.

यह महज राज्यपाल जगमोहन की अग्निपरीक्षा नहीं है. विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार के लिए भी यह सबसे प्रबल चुनौती है.

—इंद्रजीत बधवार

जगमोहन की चेतावनी

"हालात तेजी से बिगड़ रहे हैं. सब कुछ तकरीबन बेकाबू हो गया है. पिछले पांच दिनों में बड़े पैमाने पर हिंसा, आगजनी, हड़तालें, फायरिंग, मौतें और न जाने क्या-क्या सामने आया है. हालात सचमुच नियंत्रण से बाहर जा रहे हैं. हर दिन कोई न कोई मसला सिर उठाता रहता है. कल बारी थी मकबूल बट्ट की, आज 'सैटेनिक वर्सेज' की, कल 'दमन दिवस' होगा और उसके बाद कुछ और.

मुख्यमंत्री की कोई बिसात नहीं बची. उनका प्रभाव समाप्त हो चुका है—राजनैतिक और प्रशासनिक दोनों ही, सिर्फ संवैधानिक खानापूरी की देर है. हालात की मांग है कि तुरंत प्रभावी हस्तक्षेप किया जाए. आज समय है, कल तक हो सकता है बहुत देर हो जाए."

◆

"8 से 13 मई के दौरान बम विस्फोट की 14 घटनाएं हुई हैं. फायरिंग और आपस में गोलियां चलने के छह मामले सामने आए हैं. चार लोग मारे गए और करीब 20 घायल हो गए. एक पर्यटन बस पर गोलियां चलीं और चार पर्यटक जख्मी हुए. वर्तमान प्रशासनिक और राजनैतिक ढांचा एक बार फिर नाकारा साबित हुआ है. हड़ताल के दौरान तोड़फोड़ करने वालों के इरादों को नाकाम करने के लिए राजनैतिक हलकों की ओर से कोई ठोस प्रयत्न नहीं हुआ.

सबसे अधिक चिंताजनक बात यह है कि हर 'जीत' तोड़फोड़ करने वालों के हौसले बुलंद कर रही है और वे केंद्रीय अधिकारियों के खिलाफ दुश्मनी साधने लगे हैं. मैंने मुख्यमंत्री को अपनी चिंता से अवगत करा दिया है."

—मई 1989 में लिखा पत्र

बिहार

मिश्र मेहरबान

विधानसभा चुनाव की सारी तैयारियां हो चुकने के बाद बिहार सरकार के एक फैसले ने वहां जनता दल के हाथ में अचानक एक भारी चुनावी मुद्दा थमा दिया है. मुख्यमंत्री डॉ. जगन्नाथ मिश्र ने टाटा घराने को पट्टे पर दी गई जमशेदपुर शहर की जमीन के उपकर के बकाए के 20 करोड़ रु. माफ कर दिए हैं. इस राशि पर काफी समय से राज्य सरकार और टाटा घराने के बीच विवाद चल रहा था. इतना ही नहीं, जगन्नाथ मिश्र की सरकार ने टाटा को आगे भी उपकर न अदा करने की छूट दे दी है.

टाटा समूह के कर्ताधर्ताओं का कहना है कि उन्होंने जमशेदपुर शहर का निर्माण किया है, सड़कें बनाई हैं, बिजली-पानी की व्यवस्था की है इसलिए उनसे उपकर नहीं लिया जा सकता. जनता दल इस फैसले को टाटा के हाथों बिक जाना करार दे रहा है. इसके नेताओं का कहना है कि टाटा के तर्क के आधार पर कोई भी व्यक्ति जमीन का उपकर देना बंद कर सकता है, क्योंकि शुरू में कहीं भी, किसी भी जमीन पर बिजली-पानी आदि की व्यवस्था नहीं होती.

भवान सिंह

मिश्रः बुरे फंसे

मजेदार बात तो यह है कि टाटा जैसे समूह को जमशेदपुर की जमीन मात्र 16 रु. एकड़ सालाना की दर से पट्टे पर दी गई है और यह 20 करोड़ रु. उपकर का मसला 35 वर्षों से लटका हुआ है. मिश्र का मानना है कि यह फैसला राजनैतिक कारणों से नहीं किया गया है, "यह फैसला तो टाटा समूह द्वारा निवेश को बढ़ावा देने की खातिर किया गया है." लोग उनके इस तर्क से सहमत हैं या नहीं, यह तो अब विधानसभा चुनाव के परिणामों से ही पता चलेगा.

मध्य प्रदेश

संन्यास से मातृत्व तक

विमल गुप्ता

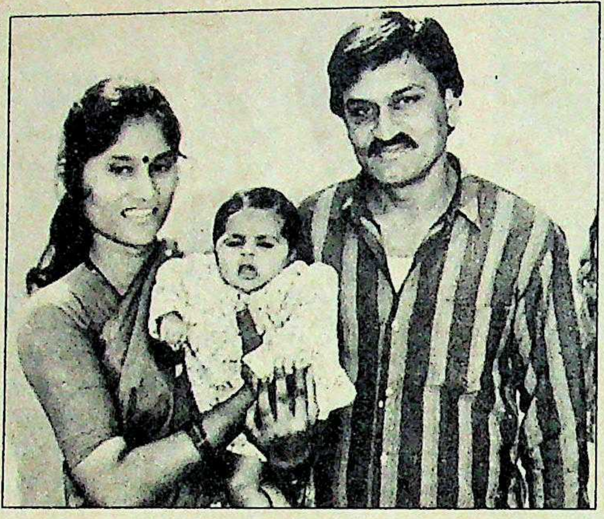

इंदुप्रभा और राधेश्याम अपनी बच्ची के साथः अटल

जैन संन्यासिनी रही इंदुप्रभा एक बार फिर खबरों में हैं. 1987 में जब इस 23 वर्षीया संन्यासिनी ने संन्यास छोड़कर एक विवाहित ग्वाले राधेश्याम के साथ रहने की घोषणा की थी तो इंदौर में बवाल मच गया था. तब जैन समुदाय के लोगों का कहना था कि उसका अपहरण किया गया है. बाद में धरना-प्रदर्शनों के बाद बंदी प्रत्यक्षीकरण याचिका दायर हुई, न्यायिक जांच हुई. राधेश्याम को हिरासत में लिया गया. और जब अदालत ने यह फैसला दिया कि इंदुप्रभा को जबरन राधेश्याम के घर में नहीं रखा गया है, तो आंदोलन फिस्स हो गया था.

इंदुप्रभा ने पिछले महीने एक बच्ची को जन्म दिया. वे कहती हैं, "यह बच्ची उन लोगों का जवाब है जो कहा करते थे कि मेरा अपहरण किया गया है. अब तो मामला खत्म ही हो गया है, इसलिए जांच आयोग वाले फरेब को भी खत्म किया जाना चाहिए." और उन्हें अपने फैसले पर पछतावा भी नहीं है. वे कहती हैं, "औरत के लिए मातृत्व सुख ही जीवन की सार्थकता है."

केरल

चुनाव से पहले जीत

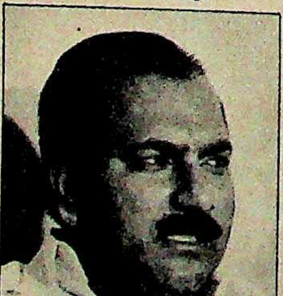

एंटनीः बाजी जीती

केरल प्रदेश इंका अध्यक्ष ए.के. एंटनी और उनके खेमे के नेताओं को पिछले पखवाड़े खुश होने का एक बड़ा बहाना मिला. उन्होंने के. करुणाकरन के खेमे से एक बड़ी लड़ाई जीती. मुद्दा था हरिपद लोकसभा सीट के उपचुनाव के लिए उम्मीदवार का चयन.

एंटनी युवक कांग्रेस के नेता एस. मुरली को उम्मीदवार बनाना चाहते थे जबकि करुणाकरन केरल स्टुडेंट्स यूनियन के अध्यक्ष के.सी. वेणुगोपाल को लड़ाना चाहते थे.

एंटनी गुट यह मानकर चल रहा था कि उम्मीदवार का चुनाव बहुत महत्वपूर्ण है. लोकसभा के आम चुनाव के समय करुणाकरन ने अपने बेटे समेत अधिकांश मनचाहे लोगों को टिकट दिलवा दिया था. और वे यह जताने भी लगे थे कि केरल में उन्हीं की चलती है.

अब ऐसे दावे करने का मौका एंटनी को हाथ लगा है.

तमिलनाडु

नाम के नाम पर

तमिलनाडु में सड़कों और इमारतों के नामकरण में बहुत गंभीरता बरती जाती है. इसकी मिसाल है उपनगरीय मरैमलै नगर रेलवे स्टेशन को नया नाम देने के सवाल पर इंका और शासक दल द्रमुक के बीच छिड़ा विवाद. दोनों दल अपने-अपने नाम पर अडिग हैं.

पिछले साल यहां इंका के अधिवेशन के दौरान यह स्टेशन बना था. इंका इसका नाम कामराज से जुड़ा रखना चाहती है जो द्रमुक को हरगिज मंजूर नहीं है. वह तो तमिल विद्वान मरैमलै अडिगल के नाम पर इसका नाम मरैमलै नगर रखना चाहती है.

लेकिन अब एक नया विवाद शुरू हुआ है. मुख्यमंत्री एम. करुणानिधि के आग्रह पर प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मद्रास में घोषणा की कि मद्रास हवाई अड्डे का नाम दो नेताओं—अन्ना और कामराज—के नाम पर रखा जाएगा. परंतु एक बडी गड़बड़ हो गई लगती है. हवाई अड्डा एक ही है और दो नामों की घोषणा की गई. मामला यह है कि एक नेता का नाम रखने से दूसरे नेता के प्रशंसक नाराज हो जाते. वैसे, दो टर्मिनल बनाकर उनके अलग-अलग नाम जरूर रखे जा सकते हैं लेकिन इससे यात्रियों को ही परेशानी होगी.

भवान सिंह

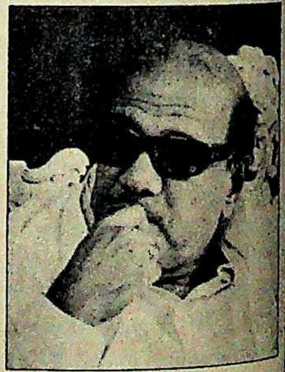

करुणानिधिः नाम पर बवाल

हां, इसे अन्ना-कामराज हवाई अड्डा कहा जा सकता है जिससे शायद दोनों नेताओं में से किसी के भी प्रशंसक नाराज नहीं होंगे. एक संवाददाता सम्मेलन में करुणानिधि ने मजाक में कहा भी, "भगवान को भी तो कई नामों से पुकारा जाता है." बहरहाल, अभी विवाद मुलझा नहीं है.

पंर

ड़कों और
में बहुत
है. इसको
य मरैमलै
या नाम देने
शासक दल
वाद. दोनों
र अडिग है.
इंका के
यह स्टेशन
म कामराज
है जो द्रमुक
है. वह तो
अडिगल के
रैमलै नगर

या विवाद
एम. करुणा-
प्रधानमंत्री
ने मद्रास में
वाई अड्डे का
और काम-
खा जाएगा.
गई लगती

भवान सिंह

र बवाल

है और दो
ई. मामला
नाम रखने
नाराज हो
न बनाकर
जरूर रखे
से यात्रियों

राज हवाई
है जिससे
किसी के
होंगे. एक
करुणानिधि
भगवान को
कारा जाता
ाद सुलझा

Godrej®
PRIMA
गति दे. खूब चले.

Godrej
PRIMA

भारत का सब से ज्यादा बिकने वाला टाइपराइटर.
ULKA-12812 HIN

ट्रायमॉल राहत दिलाए

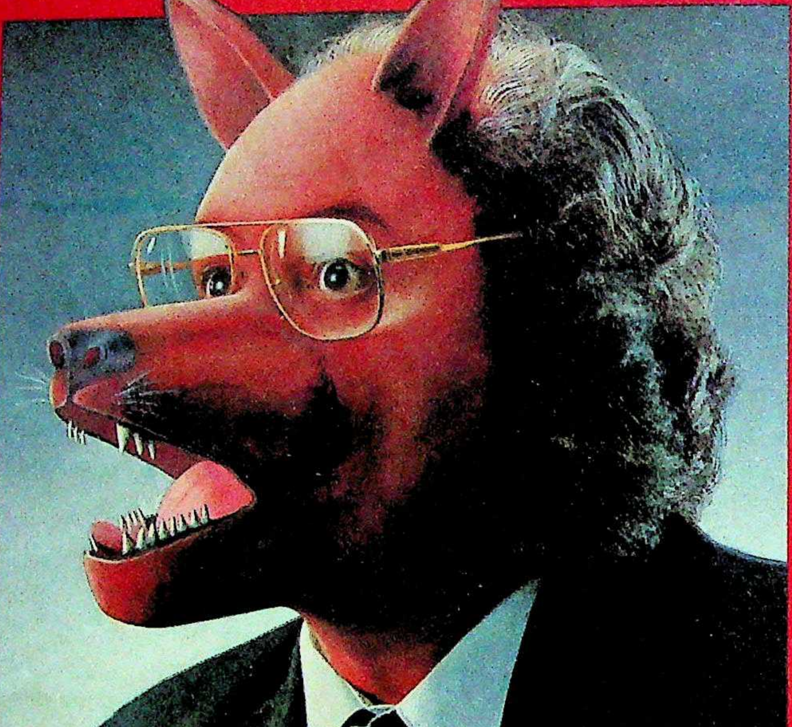

इस से पहले कि सरदर्द पागल कुत्ते का काटा बन जाए

सरदर्द होता है आपको, और आप झुंझलाते हैं,
औरों पर.
परेशानी क्यों? अपने साथ-साथ दूसरों के
लिए सरदर्द क्यों बनें?
ट्रायमॉल का दुनिया भर में जाना-माना ज़ोरदार,
राहतदायक, भरोसेलायक ट्रिप्पल एक्शन फ़ार्म्यूला
आपको आराम दिलाए,
आपकी मुस्कान वापिस ले आए.

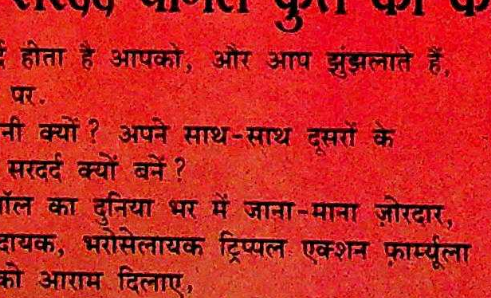
TRIMOL
STRONG
SURE
SAFE
FOR HEADACHES AND BODY PAIN
ट्रायमॉल

A product of ap ajanta pharma limited 21-31 Satyam, 318 Linking Road, Khar (West), Bombay 400 052.

भड़कीला चमकदार...

या काम में चमत्कार

लर टी वी खरीदते समय पी आई पी,९९ चैनेल, जैसे भड़कदार शब्दों के जाल में मत फंसिए।

सोचकर देखिए कि आप कीमत किस चीज़ के लिए हैं? निश्चय ही अच्छी तस्वीर और बढ़िया आवाज़ के ।

ये दोनों ही गुण जिसमें सर्वोत्तम हों, जांच-परख कर तो बुद्धिमानी है।

खूबियों के लिए नये सोनोडाइन क्वैन्टम रेन्ज पर री तरह भरोसा कर सकते हैं। क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में सोनोडाइन की विशेषज्ञता कई कदम है।

करीब के डीलर के यहाँ जाकर इसे जांचिए, । तब पैसे खर्च करके आपका टी वी खरीदना पूरी र्थक होगा।

रेन्ज की बिक्री-बाद देखभाल के लिए सारे देश में. है सर्वाधिक कार्यकुशल सर्विस नेटवर्क ।

आर: ब्लैक ५३ सें° मी° एफ एस टी पिक्चर ट्यूब, रिमोट सहित।

आर: ब्लैक ५१ सें° मी° पिक्चर ट्यूब, रिमोट सहित।

: ब्लैक ५१ सें° मी° पिक्चर ट्यूब।

: ५१ सें° मी° पिक्चर ट्यूब।

अधिकृत डीलरों के पास उपलब्ध।

TSA-C/SQTV/289 HN

नया

SONODYNE®

Quantum

एक अलग दृष्टिकोण

* डिज़ाइन और ट्रेडमार्क रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया गया है।

शार्प-टी जॉटर बॉलपेन पांच सितारा खूबियों के साथ

Sharp-T
१
२
३
४
५

१	२	३	४	५
स्टेनलैस स्टील पुशर	स्टेनलैस स्टील कैप	स्टेनलैस स्टील टिप	टंगस्टन कारबाइड बॉल	ज़्यादा बड़ी रीफिल, ज़्यादा इंक

१ स्टेनलैस स्टील पुशर:
अकेला ऐसा बॉलपेन जिसका है स्टेनलैस स्टील पुशर जिस पर न जंग लगे, न दाग पड़े.

२ स्टेनलैस स्टील कैप:
अकेला ऐसा बॉलपेन जिसकी है स्टेनलैस स्टील कैप जो हमेशा चमचमाए.

३ स्टेनलैस स्टील टिप:
अकेला ऐसा बॉलपेन जिसकी है स्टेनलैस स्टील टिप जो इंक के बहाव को नियंत्रित रखे.

४ टंगस्टन कारबाइड बॉल:
अकेला ऐसा बॉलपेन जिसकी है टंगस्टन कारबाइड बॉल जो माइक्रोस्कोपिकली टैक्सचर्ड है ताकि आपको मिले एकसार और आसान लेखन.

५ ज़्यादा बड़ी रीफिल, ज़्यादा इंक:
अकेला ऐसा बॉलपेन जिसकी है बड़ी रीफिल, ज़्यादा और ज़्यादा लिखे और ज़्यादा दिन चले

तो समझदारी से काम लीजिए और अनोखी खूबियों वाला, विश्व स्तर का शार्प-टी जॉटर बॉलपेन ही खरीदिए. लाल, नीली और काले रंग की इंक और चार रंगों की बॉडी में उपलब्ध. पसन्द कीजिए और अपनी कल्पनाओं को शब्द दीजिए.

खूबियां देखिए कीमत पर न जाइए

Sharp®-T

जॉटर बॉलपेन और रीफिल्स

इको शार्प मार्केटिंग कम्पनी
१८, सुभाष रोड, विले पार्ले (पू). बम्बई ४०० ०५७.

बड़ों पर हावी छोटे

दवा उत्पादन उद्योग के छोटे उत्पादक अब बहुराष्ट्रीय कंपनियों समेत बड़ी कंपनियों पर टूट पड़े हैं. यह वित्त और उद्योगमंत्रियों के उस बयान का नतीजा है जिसमें उन्होंने लघु उद्योगों के लिए सुरक्षित क्षेत्रों में बड़े घरानों को घुसने से रोकने की जरूरत बताई थी.

आल इंडिया स्माल ड्रग मैन्युफैक्चरर्स एसोसिएशन ने सरकार से शिकायत की है कि कुछ बड़ी कंपनियां गलत तरीके अपनाकर छोटे उत्पादकों को मिलने वाली रियायतें झटक ले रही हैं. बड़ी कंपनियां अपना ब्रांड नाम और उत्पादन अधिकार भारी रॉयल्टी के बदले छोटी निजी कंपनियों या ट्रस्टों को 'बेच' देती हैं. लेकिन ये कंपनियां और ट्रस्ट परोक्ष या प्रत्यक्ष रूप से बड़ी कंपनियों से ही जुड़े होते हैं. छोटे उत्पादकों का मानना है कि इससे न सिर्फ कानून का उल्लंघन होता है बल्कि बड़ी कंपनियों को गलत ढंग से फायदा भी मिलता है. अभी सरकार की प्रतिक्रिया का इंतजार हैं.

कार्ड का कमाल

खराब वसूली की वजह से कई राष्ट्रीयकृत बैंकों के लिए क्रेडिट कार्ड का धंधा चला पाना मुश्किल होता जा रहा है, जबकि कुछ दूसरे बैंक इस धंधे में कामयाबी के लिए एड़ी-चोटी का जोर लगा रहे हैं. मसलन सिटी बैंक-डाइनर्स क्रेडिट कार्ड गठजोड़ को मार्च तक रिजर्व बैंक की इजाजत मिल जाने की उम्मीद है. प्रकाशन व्यवसाय की दिग्गज बेनेट, कोलमैन ऐंड कंपनी की वित्तीय सेवा 'टाइम्स गारंटी' भी इस मैदान में अपनी किस्मत आजमाने आ रही है. इसके लिए यह किसी विदेशी बैंक या होटल शृंखला से हाथ मिलाने की सोच रही है. इतना ही नहीं टाटा का ताज ग्रुप ऑफ होटल्स अपना क्रेडिट कार्ड शुरू कर चुका है.

लालभाई की गोटियां

अहमदाबाद का लालभाई समूह ढेर सारे विदेशी गठजोड़ करने जा रहा है. इसकी 153 करोड़ रु. का धंधा करने वाली अरविंद मिल्स लिमिटेड ने हाल ही में अमेरिका में लोकप्रिय ऐरो ब्रांड की कमीज़ें भारत और विदेशों में बेचने का सौदा किया है. इसके पहले कंपनी अमेरिका की मशहूर वस्त्र निर्माता लेवी स्ट्रास से जींस बनाने के लिए भी गठजोड़ कर चुकी है. वस्त्रों के अलावा यह समूह टीवी बनाने के लिए जापान के हिताची से एक नया समझौता कर रहा है, हालांकि इसका पिरामिड टेलीविजन बाजार में ज्यादा चल नहीं रहा. इसने जापानी कंपनी जीवीसी के सहयोग से वीडियो टेप बनाने के लिए नया लाइसेंस भी हासिल कर लिया है जिसके बदले में जीवीसी उत्पादन का एक भाग खरीदेगी.

आखिर फैसला हो गया

महीनों की टालमटोल के बाद स्कूटर निर्माता एलएमएल ने सिंथेटिक फाइबर की अपनी बीमार इकाई को बेच देने का फैसला कर लिया है. वजह: उसे अपने मुख्य धंधे स्कूटर निर्माण में लगाने के लिए पैसे की जरूरत है. पिछले साल के आखिर में जे.के. सिंथेटिक्स के हाथों इस इकाई को बेच दिया जाना लगभग तय हो गया था. लेकिन कानपुर की कंपनी को देखने वाले दो सिंघानिया भाइयों के मतभेदों की वजह से मामला टल गया. अब इस फाइबर इकाई को बेचने के लिए तीन कंपनियों से बातचीत शुरू हो गई है.

इस बीच एलएमएल ने इटली की मशहूर स्कूटर उत्पादक पिआजियो से समझौते के कार्यक्षेत्र को बढ़ा दिया है. एलएमएल को तकनीक देने वाली पिआजियो इस कंपनी में 7 करोड़ रु. लगाने पर राजी हो गई है. इससे कंपनी में उसकी हिस्सेदारी 28 फीसदी हो जाएगी. इतनी ही हिस्सेदारी सिंघानिया परिवार की भी है.

चांदी की चमक फीकी

देश के सर्राफा बाजार का मिजाज फिलहाल अजीबोगरीब लग रहा है. पिछले पखवाड़े बंबई सर्राफा में चांदी की कीमत गिरते-फिसलते 6,935 रु. प्रति किलो पर पहुंच गई जबकि 5 दिसंबर को यह 7,244 रु. प्रति किलो की बुलंदी पर थी. घरेलू और औद्योगिक मांग बढ़ने के बावजूद चांदी की कीमतें क्यों घट रही हैं? इसकी एक वजह तो यह सफेद धातु अब भारी मात्रा में तस्करी के जरिए देश में लाई जा रही है.

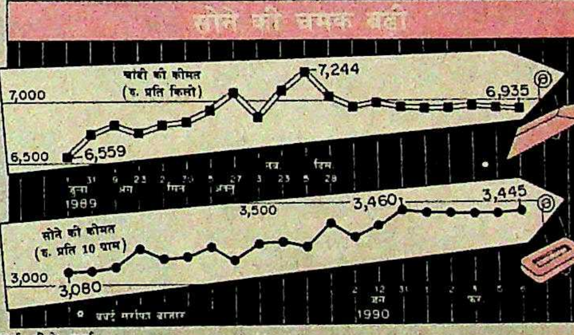

चार्ट: बी.के. शर्मा

देसी खरीदारों के लिए

सिटीकॉप की सहयोगी इकाई सिटीकॉप ओवरसीज सॉफ्टवेयर लिमिटेड बंबई के मुक्त व्यापार क्षेत्र सांताक्रूज एक्सपोर्ट प्रोसेसिंग जोन में स्थित होने की वजह से ढेर सारे घरेलू धंधे से हाथ धो बैठी है. और अगर यह भारतीय कंपनियों को कंप्यूटर सॉफ्टवेयर बेचे तो इसे तकरीबन 120 फीसदी शुल्क अदा करना पड़ेगा. लिहाजा यह सीओएसएल सिटीकॉप इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी इंडस्ट्रीज नाम की एक कंपनी शुरू कर रही है जो सिर्फ देसी खरीदारों के लिए ही उत्पादन करेगी.

पांचतारों की बुलंदी

पांचतारा होटलों का धंधा अभी भी तेजी से फल-फूल रहा है. राजधानी में तकरीबन 4.5 एकड़ बेशकीमती जमीन पर होटल निर्माण के लिए तकरीबन 18 समूह जुटे हुए हैं. इनमें टाटा ओबेराय, एशियन, आईटीसी और रीजेंट जैसे समूह भी हैं जो पहले से ही इस धंधे में लगे हुए हैं. अंसल्स, हांगकांग के हैरिलिलास, शॉ वैलेस और यूनिटेक बिल्डर्स भी इनमें शामिल हैं. उधर हैदराबाद में 25 करोड़ रु. की लागत से साझा तौर पर होटल बनाने के लिए वेलकम ग्रुप और श्रीनिवास रिसॉर्ट जुट गए हैं.

पेप्सी

बतंगड़ जारी

अब सरकार में भी विरोध

पेप्सी परियोजना सदा खबरों में बनी रहने के लिए अभिशप्त लगती है. पिछले पखवाड़े यह अमेरिकी बहुराष्ट्रीय कंपनी पनीर और मक्के से बने नाश्ते का व्यंजन—चीतोस—बाजार में उतारने की तैयारी में ही था कि उस पर फिर चौतरफा हमला होने लगा. चीतोस 2.50 रु. पैकेट के हिसाब से दिल्ली में बिकना था.

इसके सबसे बड़े आलोचक हैं रेलमंत्री जार्ज फर्नांडीस, जिन्होंने हाल में ही इस कंपनी पर फरेब करने और दलाली देने के लिए मशीन की कीमत गलत बताने का आरोप लगाया.

लेकिन पेप्सी के भी अपने समर्थक हैं. पंजाब के पूर्व कृषिमंत्री अमरिंदर सिंह इस आरोप को 'हवाई' मानते हैं. उन्होंने फर्नांडीस पर एक भारतीय शीतल पेय निर्माता की शह पर काम करने का आरोप लगाया. उनका इशारा पारले की रमेश चौहान की ओर था. 900 करोड़ रु. के शीतल पेय बाजार के 70 फीसदी हिस्से पर इस कंपनी का कब्जा है और अप्रैल से उसे पेप्सी कोला की ओर से मजबूत चुनौती मिलने वाली है.

अमरिंदर इतने पर ही नहीं रुके. उन्होंने प्रधानमंत्री को पत्र लिखकर इस परियोजना को बंद नहीं करने का आग्रह किया. उनका कहना था कि "किसानों में इसके प्रति बहुत दिलचस्पी पैदा हो गई है और अनेक किसानों से तो विभिन्न तरह की फसल उगाने का सौदा हो भी चुका है."

मगर पेप्सी के आलोचकों पर इन तर्कों का असर नहीं पड़ा है वे इस पर खर्च होने वाली राशि के 1986 के 21 करोड़ रु. से बढ़कर पिछले साल 50 करोड़ रु. हो जाने पर सवाल खड़े कर रहे हैं. यही नहीं, इस परियोजना के भागीदारी पंजाब कृषि उद्योग निगम के अध्यक्ष ए.एस. पूनी का तो कहना है कि यह खर्च 75 करोड़ रु. तक का भी हो सकता है.

लेकिन पेप्सी के प्रवक्ता का दावा है कि इस खर्च में से 15 करोड़ रु. का उपयोग अपना बिजली घर, पानी शुद्ध करने के प्लांट और एक कोल्ड स्टोर बनवाने में होगा. इसके अलावा रुपए का अवमूल्यन और मुद्रास्फीति के चलते आयातित मशीनों पर भी अधिक खर्च होगा. फलों के प्रोसेसिंग यूनिट की क्षमता बढ़ाने के फैसले से भी कीमत बढ़ेगी.

इन बातों से भी आलोचकों की शंकाएं नहीं मिटी हैं. वे नवंबर 1988 में जगदीश टाइटलर द्वारा किए गए उस दावे की ओर इशारा करते हैं जिसमें कहा गया था कि इस परियोजना से 50,000 लोगों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से काम मिलेगा. अभी तक पेप्सी ने 500 से कम कर्मचारी रखे हैं और 100 से कुछ ही अधिक किसानों से फल-सब्जी उगाने का करार किया है.

IT'S NOT EASY BEING CHEESY
HOSTESS
Chee·tos
Rs. 2.50
PEPSI FOODS LTD.
(VILLAGE) ZAHURA, DISTT. HOSHIARPUR
WELCOMES YOU
PEPSI
PEPSI

पेप्सी का होशियारपुर प्लांट; (ऊपर) पनीर और मक्के का व्यंजन; और (बाएं) शीतल पेय

टी.एल. बेरी

पंजाब कृषि उद्योग निगम और पेप्सी के प्रवक्ताओं का कहना है कि आने वाले वर्षों में और लोगों को रोजगार मिलेगा. वैसे वित्तीय संस्थाओं से कर्ज लेने की अर्जी में कंपनी ने 20,000 लोगों को रोजगार उपलब्ध कराने की संभावना बताई थी. अब कंपनी के लोगों का कहना है कि इस तरह की योजना में शुरू में कुछ प्रगतिशील किसान ही हिस्सा लेते हैं.

पंजाब के जो किसान आगे आए हैं, वे भी कंपनी के व्यवहार से नाराज हैं. कंपनी वालों को उनके टमाटर में गूदा नहीं मिलता, उनका आलू मीठा और उनके संतरे—मौसमी का स्वाद खट्टा लगता है. वैसे कंपनी के सूत्रों का दावा है कि इसका लुधियाना स्थित अनुसंधान केंद्र (जो 2.8 करोड़ रु. की लागत से बना है) मई में काम करना शुरू करेगा लेकिन तब तक होशियार स्थित फ्रूट प्रोसेसिंग प्लांट काम शुरू कर देगा और चन्नों प्लांट में शीतल पेय और स्नैक्स का उत्पादन शुरू हो जाएगा.

संयोग से कंपनी की फूड प्रोसेसिंग का काम तीन हफ्ते पिछड़ चुका है. कारण है ट्रैक्टरों के आयात में देरी और सीमा शुल्क अधिकारियों द्वारा टमाटर प्रोसेस करने वाली मशीनों को रोक लेना.

फर्नांडीस और चौहान जैसे लोगों का मानना है कि शीतल पेय को फूड प्रोसेसिंग से जोड़कर पेप्सी ने दुनिया के एकमात्र ऐसे देश (भारत) को भी ब्लैकमेल कर लिया है जहां कोई विदेशी शीतल पेय नहीं बिकता था. उधर, पेप्सी के सहप्रबंध निदेशक असीम घोष का मानना है कि इस तरह की परियोजना को, जिसे पहले सात वर्षों में नुकसान ही उठाना है, अपने घाटे वाले धंधे में लगाने के लिए सुविधाजनक शर्तों पर पैसों की जरूरत है.

आरोप और प्रत्यारोपों के बीच ही खाद्य संसाधनमंत्री शरद यादव ने कहा है कि इस परियोजना पर केंद्रीय मंत्रिमंडल पुनर्विचार करेगा. और इस बीच पेप्सी हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने के अलावा कोई और चारा नहीं है. **—परंजय गुहा ठाकुरता और कंवर संधू**

यर बाजार

गिरावट का रुख

बस उम्मीदों का सहारा

देश के शेयर बाजारों में पिछले पखवाड़े हालत यहां तक पहुंच गई कि लोग यह नहीं पूछ रहे थे कि शेयरों की कीमत गिरेंगी या नहीं. सवाल यह उठ रहा था कि ये कितनी जल्दी और कहां तक गिरेंगी. माहौल में हताशा इस कदर थी कि निवेशक बाजार से ही नदारद थे.

और निवेशक उस समय भी हरकत में नहीं आए जब यह खबर मिली कि टाटा टी आरपीजी इंटरप्राइजेज की नाक के नीचे वाली हल्दिया पेट्रोरसायन परियोजना पर काबिज होने जा रही है. आम तौर पर ऐसे मौके पर टाटा कंपनियों के शेयरों को बुलंदियों की ओर बढ़ जाना चाहिए था पर वह भी नहीं हुआ. हां, टाटा टी के शेयर 182 रु. से बढ़कर 195 रु. पर पहुंचे और फिर ठंडे पड़ गए. टाटा स्टील व टाटा लोकोमोटिव के शेयर तो गोता लगाने लगे. सिएट टायर के शेयरों का भाव भी 15 दिनों में 32 फीसदी तक कम हो गया.

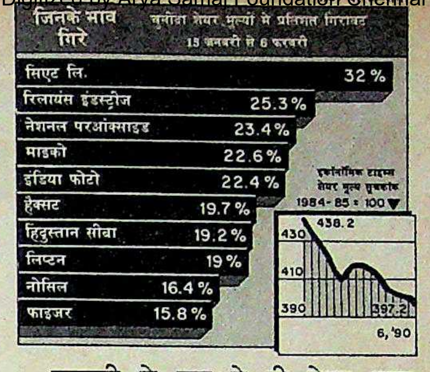

जनवरी के शुरू से ही शेयर मूल्य सूचकांकों ने गिरावट का रुख अपना लिया था. और इस बात के कोई संकेत नहीं थे कि यह रुख तेजी से पलट भी सकता है. इकॉनॉमिक टाइम्स का अखिल भारतीय शेयर सूचकांक 6 फरवरी को 397.2 के निम्न बिंदु पर जा पहुंचा, यानी यह 15 जनवरी के 438.2 से ठीक 41 अंक तक गिर गया था. बंबई शेयर बाजार का 100 शेयरों वाला राष्ट्रीय सूचकांक 19 जनवरी के 394.58 से गिरकर 2 फरवरी को 380.88 पर जा पहुंचा.

आईसीआई, अशोक लेलैंड, एशियन पेंट्स, कैडबरी और पांड्स समेत कई पुख्ता शेयरों की कीमतें एक हफ्ते के अंदर 10 से 20 फीसदी तक गोता खा गईं. और राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के सत्ता में आने के बाद से रिलायंस के शेयरों ने गिरावट का जो रुख पकड़ा था वह उसी तरह जारी रहा और मध्य जनवरी से 6 फरवरी तक तो उसके शेयर अपने एक-चौथाई बाजार मूल्य से ही हाथ धो बैठे.

इतना ही नहीं, देश के सबसे बड़े बंबई शेयर बाजार के दलाल हड़ताल पर चले गए जिससे सामान्य भुगतान और धंधे की सारी कार्यसूचियां चौपट हो गईं. 29 जनवरी को धंधे के बहिष्कार का फैसला शेयर बाजार के अधिकारियों की इस घोषणा के बाद किया गया कि बाजार में हेराफेरी करने वाले सदस्य दलालों को सुधारा जाएगा. इससे दलालों को अपने उस गुस्से के इजहार का 'मौका' मिल गया जो धंधे के नियमों और प्रक्रियाओं में फेरबदल की वजह से उनमें भरा हुआ था.

नतीजतन, रोकड़ा शेयरों और अवर्गीकृत शेयरों का भुगतान 1 फरवरी को नहीं हो सका और इसके निपटान के लिए शेयर बाजार चार दिन तक बंद रहा. इस अव्यवस्था से भी कुछ भला नहीं हुआ और हताश निवेशक यही उम्मीद लगाए रहे कि हालात अब और खस्ता नहीं होंगे.

उम्मीदें, सुहानी उम्मीदें! ... फिलहाल तो बाजार बस उन्हीं के आसरे है.

मा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	बंद 6.2.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
अशोक लेलैंड	99.00	83.50	83.50	10.00 −
सिएटेड सीमेंट	355.00	320.00	327.50	6.50 −
शियन पेंट्स	255.00	207.50	213.75	11.25 −
कोफ्को	48.00	38.00	39.00	2.00 −
ज ऑटो	417.50	380.00	390.00	5.00 −
ौदा रेयॉन	817.50	685.00	705.00	2.50 −
टा इंडिया	77.50	66.00	67.00	6.00 −
ल्लारपुर	155.00	123.50	126.00	12.00 −
रत फोर्ज	93.75	85.00	91.00	1.25 −
ड़ला जूट	66.00	50.50	52.50	4.50 −
म्बे डाइंग	231.00	190.00	194.00	10.00 −
टानिया इंडिया	119.00	100.00	100.00	12.00 −
क बांड	107.00	93.00	93.00	8.00 −
चुरी स्पिनिंग	2840.00	2420.00	2520.00	30.00 −
राइड इंडिया	92.00	82.50	84.50	5.60 −
लगेट पामो.	196.25	176.25	182.50	2.50 −
यनामिड	115.00	92.50	92.50	10.00 −
[illegible]	53.50	47.75	48.25	2.25 −
[illegible]	75.50	58.50	60.00	6.00 −
होटल्स	65.25	58.50	61.00	2.00 −
स्कॉर्ट्स	88.00	78.00	79.00	2.00 −
फिनोलेक्स केबल्स	282.50	245.00	245.00	17.50 −
फूड स्पेशियलिटीज	122.00	101.75	103.50	1.50 −
गरवारे नायलोन	69.00	54.00	55.00	3.00 −
जी.ई. शिपिंग	54.75	45.00	46.00	2.00 −
गुजरात स्टेट फर्टि.	185.00	155.00	162.50	—
ग्लैक्सो इंडिया	129.00	106.00	108.25	5.75 −
हिंदु. एल्यूमिनियम	270.00	220.00	255.00	30.00 −
हिंदु. सीबा	1660.00	1090.00	1160.00	40.00 −
हेक्स्ट इंडिया	172.50	142.50	143.75	8.75 −
हिंदुस्तान लीवर	117.50	101.00	103.00	2.25 −
हिंदुस्तान मोटर्स	31.30	23.50	24.50	4.30 −
आई.सी.आई.	49.50	36.00	36.00	7.00 −
इंडियन आर्गेनिक	58.75	47.00	54.00	4.00 +
इंडियन रेयन	108.00	84.00	86.50	3.50 −

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	बंद 6.2.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
इंडाल	246.25	193.75	200.00	15.00 −
इंगरसोल-रैंड	245.00	190.00	202.50	17.50 −
आई.टी.सी.	64.00	48.75	51.00	7.50 −
जे.के. सिंथेटिक्स	67.00	53.00	54.00	7.00 −
काइनेटिक इंजी.	155.00	137.50	147.50	4.00 −
किर्लोस्कर क्युमिंस	90.00	65.00	68.75	4.25 −
केसीबी पंप्स	210.00	190.00	197.50	2.50 +
लारसन-टुब्रो	85.00	62.50	65.00	7.50 −
लिप्टन	112.00	84.00	85.00	7.00 −
लोहिया-मशीन्स	21.00	15.00	16.00	2.00 −
मदुरा कोट्स	111.00	107.00	107.00	4.00 −
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	72.50	75.00	12.50 −
मिल्क फूड	280.00	210.00	220.00	10.00 −
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	785.00	820.00	50.00 −
मुकुंद लिमि.	157.00	127.50	131.00	7.00 −
नेशनल आर्गेनिक	1660.00	1260.00	1270.00	140.00 −
निरलॉन	22.00	16.00	16.00	2.00 −
ओरके सिल्क मिल्स	20.50	15.25	16.00	1.25 −
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	32.50	24.50	25.50	3.00 −
फाईजर	113.75	85.00	86.25	4.75 −
पांड्स	230.00	185.00	192.50	11.25 −
प्रीमियर ऑटो	74.50	63.00	64.50	—
रेमंड	76.00	70.00	73.00	1.00 +
रिलायंस इंडस्ट्रीज	90.00	58.00	59.00	10.00 −
सीमेंस इंडिया	120.00	96.00	102.00	3.00 −
शॉ वैलेस	92.00	72.50	73.00	7.00 −
श्रीराम फाइबर्स	71.00	51.25	54.50	0.50 +
एसकेएफ बैयरिंग्स	1570.00	1260.00	1300.00	80.00 −
स्पिक	62.00	51.00	51.50	2.50 −
टाटा स्टील	119.75	103.75	105.75	2.00 −
टेल्को	130.00	110.00	112.25	5.25 −
वाम ओर्गेनिक	167.50	137.50	137.50	5.00 −
वीडियोकोन	192.50	147.50	165.00	5.00 −
वोल्टास	785.00	630.00	650.00	40.00 −
विमको	32.50	22.00	22.75	2.00 −

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.2062	13.0601
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	144.1260	143.5153
बहरीन	दीनार	1	45.6230	44.5653
बांग्लादेश	टका	100	54.3131	52.9213
कनाडा	डालर	1	14.4194	14.2669
डेनमार्क	क्रोना	1	2.6459	2.6174
मिस्र	पौंड	1	6.7238	6.6411
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.0488	2.9718
हांगकांग	डालर	1	2.1902	2.1677
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9505	0.9356
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.3786	1.3613
जापान	येन	100	11.9760	11.6822
केन्या	शिलिंग	1	0.7921	0.7633
कुवैत	दीनार	1	58.3913	56.4493
मलेशिया	डालर	1	6.3417	6.2749
मारीशस	रुपया	1	1.1639	1.1481
नेपाल	रुपया	1	0.5972	0.5890
हालैंड	गिल्डर	1	9.0666	8.9697
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8074	0.7984
सिंगापुर	डालर	1	9.1637	9.0657
स्पेन	पेसो	1	0.1582	0.1564
श्रीलंका	रुपया	1	0.4301	0.4255
स्वीडन	क्रोना	1	2.8010	2.7721
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	11.4708	11.3428
तंजानिया	शिलिंग	1	0.0950	0.0891
थाईलैंड	बहत्त	100	67.3568	65.3853
ब्रिटेन	पौंड	1	28.7646	28.5551
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	17.1086	16.9348
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.6605	4.6094
सोवियत संघ	रूबल	1	27.5723	27.2702
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.3520	10.0908

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 3.2.90

श्रीनारायण चतुर्वेदी

लोगों ने सराहा

हिंदी साहित्य में अनोखी घटना

यह सरकारी पुरस्कार नहीं था. साहित्य के इतिहास में पहली बार जनता ने किसी साहित्यकार को उसकी सेवाओं के लिए पुरस्कृत किया था. 31 जनवरी को वसंत पंचमी के पावन अवसर पर हिंदी साहित्य के भीष्म पितामह, 96 वर्षीय पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी को लखनऊ के उनके निवास पर 1,11,111 रु. के जनता-भारत भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया. भाजपा नेता अटलबिहारी वाजपेयी ने अनके जाने-माने हिंदी साहित्यकारों की उपस्थिति में उन्हें यह सम्मान अर्जित किया.

इस वयोवृद्ध साहित्यकार ने पिछले साल सरकार द्वारा 1986 के लिए घोषित एक लाख रु. का भारत भारती पुरस्कार उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाए जाने पर ठुकरा दिया था. पक्षाघात से पीड़ित होने के कारण बिस्तर पर पड़े चतुर्वेदी को सम्मानित करते हुए वाजपेयी ने कहा, "भैया साहब, हम हिंदी अपमान बर्दाश्त नहीं करेंगे. सभी साहित्यकार आपके दर्शन हेतु आए हैं."

'भैया साहब' नाम से चर्चित चतुर्वेदी चर्चाओं के शिखर पर अपनी लंबी जीवन यात्रा के आखिरी पहर में पहुंचे. और यह चर्चा भी उनके साहित्यिक कृतित्व से कम, व्यक्तित्व से ज्यादा उपजी. आज उन पर टिप्पणी के लिए कोई हमउम्र साहित्यिक पुरुष जीवित नहीं. पर बाद वालों में एक, श्रीलाल शुक्ल के अनुसार, "वे अपनी परंपरा और विश्वास को बहुत स्पष्ट तरीके से रखते रहे और उसके लिए जोखिम उठाने को भी तैयार रहे."

उनकी परंपरा और विश्वास क्या हैं? इस पर कई उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के साथ भी नत्थी करके देख सकते हैं क्योंकि हिंदी भाषा की सेवा के काम में वे किसी संघी से कहीं ज्यादा निष्ठा और समर्पण से लगे रहे. राज्य के पूर्व मंत्री, दिवंगत वासुदेव सिंह के साथ 1980 में उर्दू को दूसरी राजभाषा बनाए जाने का विरोध करने पर उनकी चर्चा शुरू हुई. फिर, वाजपेयी के हाथों पुरस्कार स्वीकारने की वजह से उनके बारे में संघ समर्थक होने का भ्रम हुआ. लेकिन प्रगतिशील लेखक संघ के प्रांतीय सचिव वीरेंद्र यादव के अनुसार, "चतुर्वेदी जी खुद में एक संस्था हैं, भले ही पुरातन सही. संस्थाएं उनकी अनुगामी हो सकती हैं, वे संस्थानुगामी नहीं हो सकते."

गोरखपुर विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास विभाग में प्रोफेसर उनके ज्येष्ठ पुत्र शैलनाथ चतुर्वेदी बताते हैं, "हमारे दादा पं. द्वारिका प्रसाद चतुर्वेदी भी हिंदी के बड़े साहित्यिक मनीषी थे. दादा ने करीब सौ पुस्तकें लिखीं और ढेरों पुस्तकों के अनुवाद किए. आधा दर्जन के करीब तो शब्दकोष तैयार किए." श्री नारायण चतुर्वेदी को यह विरासत मिली. बाद में इस परंपरा को संजोते हुए उन्होंने हास्य-व्यंग्य, कविता, निबंध, संस्मरण, आलोचना, इतिहास, अनुवाद और संपादन कर्म में झंडे गाड़ दिए. उनके रचना संसार की लंबी फेहरिस्त वैसे ही भ्रम खड़ी करती है, जैसे उनका व्यक्तित्व. एक ओर उन्होंने तालस्ताय की जीवनी लिखी तो दूसरी ओर कांग्रेस संस्थापक ए.ओ. ह्यूम की.

हिंदी के प्रति जबरदस्त आग्रह के बावजूद चतुर्वेदी ने अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू पर भाषायी अधिकार हासिल किया. उच्च शिक्षा के लिए वे छात्र जीवन में लंदन में तीन बरस रहे. उनके एक खास परिचित के.सी. सोनेरेक्सा के अनुसार इस दौरान उन्होंने साइकिल से पूरा यूरोप घूमा. पर वे शाकाहारी बने रहे. यह परंपरा के प्रति उनका आग्रह ही था कि वे हमेशा कहते कि "मार्क्सवादी होकर भी यशपाल (दिवंगत) अपनी परंपरा भूला नहीं है. मेरे पांव छूता है."

साहित्य में गुटबाजी की परंपरा के बावजूद वे गुटहीन रहे हैं. छायावाद और प्रगतिवाद के बंटवारे से भी उनका सरोकार न रहा. हां, भिन्न मुद्दों पर उनके दृष्टिकोण को लेकर हमेशा वाद-विवाद होता रहा. इसमें सबसे ताजा उदाहरण 'भारत भारती' पुरस्कार पर उनके और अमृतलाल नागर के रवैए पर पैदा हुआ. इसकी खासी चर्चा हुई 'इंडिया टुडे' 15 फरवरी 1990 के अंक में छपी नागर की चिट्ठी से. चतुर्वेदी समर्थक कुछ लोग इससे उत्तेजित भी हुए. इस सबके अलावा चतुर्वेदी उ.प्र. हिंदी साहित्य सम्मेलन से ही जुड़े रहे. विद्यानिवास मिश्र इस संस्था के अध्यक्ष हैं और चतुर्वेदी कार्यवाहक अध्यक्ष. इसी की ओर से सरकार की भाषा नीति के विरुद्ध वे कानूनी लड़ाइयां लड़ते रहे. 13 अक्तूबर को पक्षाघात ने इस हिंदी सेवी को बिस्तर पकड़ने पर मजबूर कर दिया.

आज से 52 वर्ष पहले महाकवि निराला ने अपने खंडकाव्य 'तुलसीदास' के समर्पण पृष्ठ पर लिखा था—"आदरणीय अग्रज पं. श्रीनारायण जी चतुर्वेदी महोदय के करकमलों में साहित्य, स्नेह, स्मृति, रूप तुलसीदास." जानकार अचरज होता है कि चतुर्वेदी 1938 में निराला और उनके समकक्षों के आदर के पात्र थे. यह एक अनोखी उपलब्धि थी. पर आज वे समस्त हिंदी प्रेमियों की श्रद्धा के पात्र बन गए हैं.

—शीतल

वाजपेयी के हाथों सम्मानः लोकार्पण

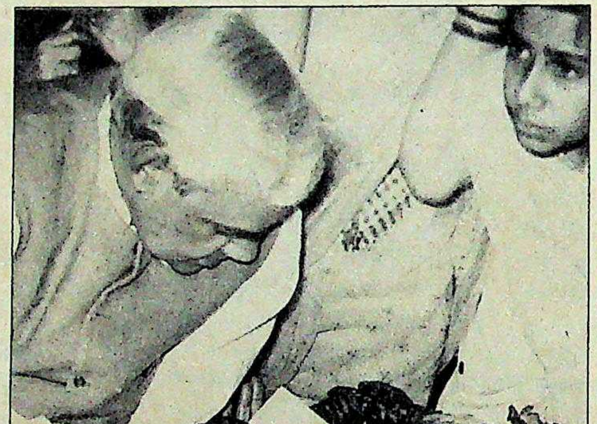

आर.के. गुप्ता

अपनी परंपरा और विश्वास को बहुत स्पष्ट तरीके से रखने वाले भैया साहब उसके लिए जोखिम उठाने से भी नहीं हिचकते

■

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-3

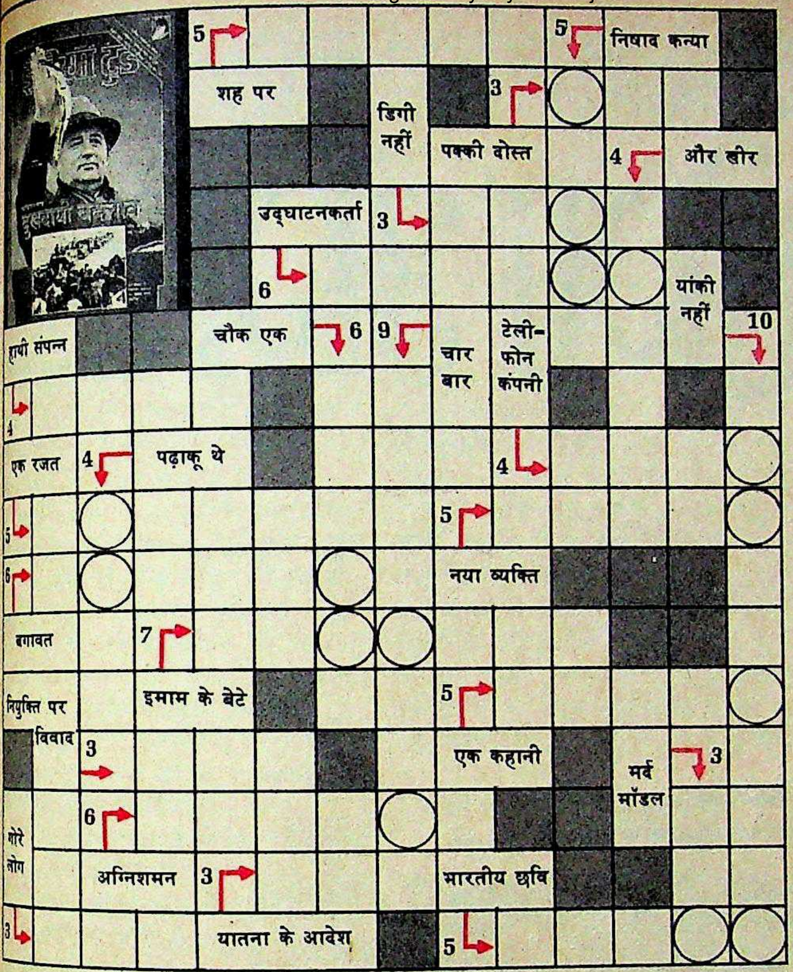
निषाद कन्या
शह पर
डिगी नहीं
पक्की दोस्त
और खीर
उद्घाटनकर्ता
यांकी नहीं
चौक एक
चार बार
टेली-फोन कंपनी
हाथी संपन्न
एक रजत
पढ़ाकू थे
नया व्यक्ति
बगावत
नियुक्ति पर
इमाम के बेटे
विवाद
एक कहानी
मर्द मॉडल
गोरे लोग
अग्निशमन
भारतीय छवि
यातना के आदेश

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-3, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि: 1 मार्च 1990

परिणाम के लिए देखें 31 मार्च 1990 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 15 फरवरी 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुन: होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-1 का हल

इन तीनों को पुरस्कार स्वरूप 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

पुरस्कार विजेता

1. **नीरज जैन**
   द्वारा—महावीर प्रसाद जैन
   255, आर्य नगर स्कीम नं.-1
   अलवर (राज.)
2. **राजेंद्र कुमार श्रीवास्तव**
   माली टोला, पुरानी बस्ती
   बस्ती (उ.प्र.)
3. **अभय नारायण**
   द्वारा—श्रीमती मनोरमा सिन्हा
   नाला रोड, बांकीपुर
   पटना-800004 (बिहार)

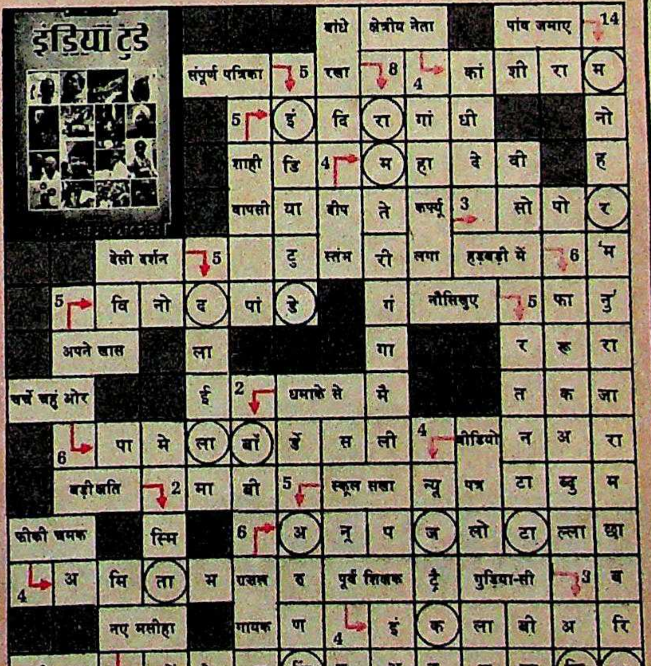
इंडिया टुडे
बांधे
क्षेत्रीय नेता
पांव जमाए
संपूर्ण पत्रिका
रखा
शाही
वापसी
बेली वर्गन
स्तंभ
लगा
हड़बड़ी में
नौसिखुए
अपने खास
चारों चहुं ओर
धमाके से
बीडियो
बड़ी क्षति
स्कूल सज्जा
फीकी चमक
पूर्व शिक्षक
गुड़िया-सी
नए मसीहा
गायक
असली राजा

यूनाइटेड इंडिया संभाले आपके मन में मंडराते
तीन शब्दों की चिन्ता...

"क्या होगा अगर..."

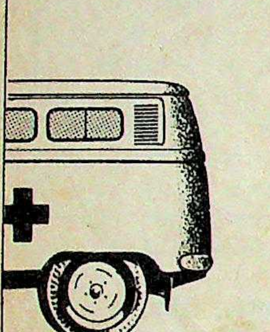

... आपके पिताजी की किडनी अचानक बिगड़ जाये.
... काम के तनाव से यकायक आपका स्वास्थ्य खराब हो जाये.
... उछल-कूद के दौरान आपके बच्चे की हड्डी टूट जाये.

यह दुर्घटनाओं की कोई सूची नहीं.

भगवान करे, ऐसा क़भी न हो.

हम आपको सिर्फ़ यह बताना चाहते हैं कि देशभर में हजारों लोगों को अब मेडिक्लेम का पता चल गया है. डॉक्टरी इलाज के बढ़ते खर्चों को पूरा करने का यह एक सरल उपाय है.

इस खर्च-वापसी योजना के अंतर्गत, सिर्फ़ २५० रुपयों में आप १७,६०० रुपयों तक के मूल्य के अस्पताल-खर्च की वापसी पा सकते हैं.

हम चाहें या न चाहें, ज़िन्दगी में उतार-चढ़ाव तो आते ही रहेंगे.

कल ही काम पर जाते वक्त यूनाइटेड इंडिया के अपने नज़दीकी कार्यालय में आइये. आप भी ज़रूर मानेंगे कि...

**समझदारी मेडिक्लेम की सुरक्षा में है,
बीमारी की चिन्ता में नहीं.**

MED-I-CLAIM

यूनाइटेड इंडिया इन्श्यूरेन्स कं. लि.
(जनरल इन्श्यूरेन्स कॉर्पोरेशन ऑफ़ इंडिया की सहायक संस्था)
२४, व्हाइट्स रोड, मद्रास ६०० ०१४.

HTA 7350

केरल

अनुकरणीय उपलब्धि

एर्नाकुलम में पूर्ण साक्षरता के साथ सामाजिक चेतना भी

अगर लोग संगठित होकर किसी कार्यक्रम में जुट जाएं तो क्या चमत्कार हो सकते हैं, यह उसी की कहानी है. लोगों के दृढ़ निश्चय ने केरल के एर्नाकुलम जिले को पूर्ण साक्षरता की मंजिल तक पहुंचा दिया है. यह एक ऐसी मिसाल है जिससे देश भर की जनता को सबक लेना चाहिए.

पिछले पखवाड़े 'ऑपरेशन फ्लडलाइट' के पूरा होने के अवसर पर एर्नाकुलम पहुंचे प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने यह घोषणा की. इस जिले के 5 से 60 साल की उम्र के हर बच्चे-बूढ़े को साक्षर बनाने की योजना 'ऑपरेशन फ्लडलाइट' कलक्टर के.आर. राजन की कल्पनाशीलता की देन थी. अब देश के दूसरे हिस्सों में भी साक्षरता अभियान एर्नाकुलम के ही नक्शेकदम पर चलाए जाने की उम्मीद है.

रोचक बात तो यह है कि इस योजना ने लोगों में न केवल सीखने की जिज्ञासा पैदा की बल्कि उन्हें उनके अधिकारों और योग्यताओं के प्रति भी जागरूक बना दिया. नतीजतन, ये नव-साक्षर अब मूल सुविधाओं की मांग उठाने लगे हैं. भावविभोर हुए राजन बताते हैं, "हम यही चाहते थे. हमारा मकसद महज अक्षर ज्ञान देना नहीं था."

नव-साक्षरों के ढेरों पत्र रोजाना राजन के दफ्तर पहुंचते हैं, जिनमें उन्हें एक नई दुनिया में पहुंचाने के लिए धन्यवाद दर्ज होता है. एक वनवासी लड़की पारुकुट्टी की मांग है कि जंगल से घिरी उसकी झोंपड़ी में एक लाइब्रेरी होनी चाहिए. दूसरी लड़की माधवी जानना चाहती है कि क्या वह अंग्रेजी भी सीख सकती है या नहीं.

राजन ने जब पूर्ण साक्षरता लाने के इस प्रयोग का सुझाव दिया तो कुछ लोगों ने इसे सनक बताकर खिल्ली उड़ाई थी. उनका कहना था कि इस भारी-भरकम समयबद्ध कार्यक्रम में पैसा तो ढेर सारा लगेगा, इससे कुछ हासिल नहीं होगा. लेकिन राजन अपने फैसले पर अडिग रहे.

आज वे आलोचक इस सफलता का श्रेय स्वयंसेवकों के सहयोग को देते हैं, जो योजना के हर चरण में मिला. समाज के हर तबके से लगभग 22,000 स्वयंसेवक बिना किसी तकाजे के अनपढ़ों को अक्षर ज्ञान कराने के लिए आगे आए. इनमें वझाकुलम में चौथी कक्षा में पढ़ने वाली नौ साल की इंदु भी है. प्रशिक्षकों में वह सबसे कम उम्र की थी. राजन बताते हैं, "इन 22,000 कार्यकर्ताओं को वेतन दिया जाता तो शायद यह योजना ठप हो जाती. लोग तब पैसा कमाने के लिए ही यह काम करते."

इस कार्यक्रम का लक्ष्य राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के 15-35 आयु वर्ग के लोगों को शिक्षित करने के मुकाबले कहीं ऊंचा था. पिछले साल 18 मार्च को 50,000 साक्षरता कार्यकर्ताओं द्वारा किए गए विशेष सर्वे से पता लगा कि जिले की 30 लाख जनसंख्या में से 1.85 लाख लोग निरक्षर थे. इनमें भी 70 फीसदी महिलाएं थीं. इस तरह इस जिले की साक्षरता दर 98 फीसदी हो गई है, जो अंतरराष्ट्रीय मानदंडों के अनुसार पूर्ण साक्षरता दर है.

इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी चुनौती लोगों में यह भावना पैदा करने की थी कि अनपढ़ व्यक्ति का कोई भविष्य नहीं होता. इसके लिए नुक्कड़ नाटक, गीत, पैदल मार्च, गली-गली में जनसभाएं और घर-घर जाकर इस मिशन के प्रति चेतना जगाने का अभियान शुरू हुआ.

लोगों के उत्साह का आलम यह रहा कि 106 वर्षीय मुंडी मुथासी भी अक्षर ज्ञान पाने को कटिबद्ध लगे और उनके शिक्षक थे कोचीन के रिटायर्ड शिक्षक, 69 वर्षीय एंथनी. यहां तक कि बुरी तरह विकलांग हो चुकी 14 वर्षीया सुधर्मा के पिता अपनी बेटी को अनपढ़ नहीं रहने देना चाहते थे.

त्रिपुनिथरा में एक छोटे-से रेस्तरां में काम करने वाले 16 वर्षीय मुसगन को होटल के ही दो कर्मचारियों ने उसे पढ़ाने की पेशकश की.

और जो पढ़ाया गया वह अक्षर ज्ञान भर ही नहीं था. वहां स्वास्थ्य, स्वच्छता, पर्यावरण की रक्षा, पोषण और परिवार कल्याण की बुनियादी जानकारी भी दी गई. प्रशिक्षक शशिधरन कहते हैं, "हम साक्षरता से विकास को भी जोड़ना चाहते थे."

इस अभियान का एक महत्वपूर्ण सामाजिक प्रभाव यह भी रहा कि यहां अपराध कम हो गए. अवैध शराब बनाने के लिए कुख्यात आइलैंड गोथुरुथ का तो हुलिया ही बदल गया. लोगों ने शराब खींचना छोड़ नौकरियां पकड़ लीं.

एर्नाकुलम की यह सफलता ऐसी गौरवपूर्ण उपलब्धि है जिसके अनुकरण की जरूरत है.

—रमेश मेनन, एर्नाकुलम में

साक्षरता कक्षा में महिलाएं; (नीचे) प्रोत्साहन के लिए नुक्कड़ नाटक

शरद सक्सेना

आरक्षण

इंकलाब की इबारत

आरक्षण विरोधी आंदोलन ने उत्तर भारत के कई राज्यों में पिछले दिनों एक साथ सिर उठाया. इससे लंबे जातीय संघर्ष का खतरा पैदा हो गया

उत्तर भारत के शहरों-कस्बों की दीवारों पर इन दिनों एक नई इबारत देखी जा सकती है. इसकी लिखावट में न कोई कलात्मकता होती है और न ही साथ में कोई चित्रकारी. आड़े-तिरछे ढंग से एक शब्द 'आरक्षण' लिखा होता है जिसे दो रेखाओं से काटा गया होता है. कहीं-कहीं इसे काटने के बदले इसके आगे प्रश्नचिन्ह लगा होता है.

ठेठ देसी लहजे में जारी किया गया संदेश बिलकुल स्पष्ट है—'अनुसूचित जातियों व जनजातियों के लिए आरक्षण खत्म करो.' होंठों पर यह नारा और हाथों में ईंट-पत्थर लिये आरक्षण विरोधियों ने दिसंबर और जनवरी के महीनों में चारों तरफ तूफान मचाए रखा. इलाहाबाद से भड़की यह चिनगारी जंगल की आग की तरह फैल गई. उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, ओडीसा, गुजरात, महाराष्ट्र और बिहार के लगभग 175 जिलों को इसने अपनी गिरफ्त में ले लिया. यहां तक कि लड़कियां और स्कूली बच्चे भी सड़क पर उतर आए.

ज्यादातर राज्यों में यह आंदोलन तो अब मंद पड़ गया है परंतु आरक्षण विरोधी गुस्सा शांत नहीं हुआ है. मध्य प्रदेश में, जहां सभी 17 जिले इसकी चपेट में आए, आंदोलन थमने का कोई संकेत नहीं देता. मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल की कार पर बिलासपुर में पथराव हुआ. वे कहते हैं, "इससे जाति संघर्ष छिड़ने का खतरा पैदा हो गया है."

शायद इस कथन में सचाई भी हो. पिछड़ी जातियों में पैठ रखने वाली बहुजन समाज पार्टी (बसपा) इस आंदोलन के खिलाफ मुहिम चलाने की तैयारी कर रही है. इसके नेता कांशीराम कहते हैं, "यह आंदोलन बताता है कि अल्पसंख्यक ऊंची जातियां अभी भी परिवर्तन की प्रक्रिया में किस तरह रोड़ा अटका रही हैं." पिछले चुनाव में डाले गए वोटों के विश्लेषण के मुताबिक बसपा अब हिंदीभाषी क्षेत्र में चौथी बड़ी ताकत के रूप में उभर रही है और यह जाति संघर्ष को तेज करने की भूमिका निभा सकती है.

आंदोलन की शुरुआत के पीछे एक कारण गलतफहमी भी है. संसद और विधानसभाओं में आरक्षण को अगले 10 साल तक बढ़ाने के सरकारी निर्णय का मतलब यह समझ लिया गया कि इससे नौकरियों में आरक्षण की समय सीमा बढ़ाई जा रही है. लेकिन इसके अलावा आंदोलन की एक और महत्वपूर्ण वजह भी है. राष्ट्रीय मोर्चा ने अ
चुनाव घोषणापत्र में मंडल आयोग की रि
पर 'तेजी से' अमल करने का वादा किया
इस लिहाज से यह आंदोलन ऊंची जाति
की इस इच्छा का भी प्रदर्शन लगता है
उन्हें यह कदम पूरी तरह अस्वीकार है.

1980 में पेश की गई अपनी रिपोर्ट
मंडल आयोग ने 3,743 'अन्य पिछ
जातियों' की पहचान की और इन्हें भी उन
संख्या के आधार पर शिक्षा और नौकरियों
आरक्षण देने की सिफारिश की. चूंकि
अन्य पिछड़ी जातियों की आबादी
फीसदी है इसलिए आरक्षण का कुल का
74.5 फीसदी हो जाता (पहले ही अनुसूचि
जातियों के लिए 15 फीसदी और अनुसूचि
जनजातियों के लिए 7.5 फीसदी आर
की व्यवस्था है). लेकिन सुप्रीम कोर्ट
आरक्षण सीमा 50 फीसदी तय की
इसलिए मंडल आयोग ने दूसरी पिछ
जातियों के लिए 27.5 फीसदी आरक्षण
सिफारिश की.

उम्मीद के मुताबिक इस रिपोर्ट ने आ
क्षण समर्थकों और विरोधियों को आम
सामने खड़ा कर दिया. कांशीराम कहते

अब
ंडिया टुडे' की
अपनी प्रति
समय पर पाइए ...

सीधे हमसे.

यानी अनिश्चित वितरण प्रणाली पर निर्भर होने की जरूरत नहीं. न विक्रेता तक जाने की और न देरी के बारे में फिक्र करने की आवश्यकता.

आपको अपनी प्रति सही समय मिले इसकी विशेष व्यवस्था की गई है. इसके लिए बाज़ार में प्रतियां भेजने से पहले ग्राहकों की प्रतियां सीधे दिल्ली से डाक द्वारा भेजी जाती हैं. आपको अपनी प्रति समय पर मिलती है. और आपको घर बैठे मिलती हैं, ताज़ा खबरें, नई खबरें.

ुरक्षित रूप से
के घर पहुंच जाए
-मुफ्त

सीधे ग्राहक बनकर आपको न केवल समय पर 'इंडिया टुडे' पढ़ने का फायदा मिलेगा बल्कि घर पर ही सुरक्षित रूप से प्रति भी मिल जाएगी.

एक अतिरिक्त सुविधा, बिना किसी अतिरिक्त खर्च के, बिना किसी प्रयास के और बगैर चिंता या इंतजार के.

हजारों ग्राहक इस सुविधा का पहले ही लाभ उठा रहे हैं. आप भी आज ही ग्राहक बनकर इस सुविधा का लाभ पा सकते हैं.

ब 5.50 रु. में
लांकि नया मूल्य
7 रु. है

ग्राहक बनकर आप 'इंडिया टुडे' की अपनी प्रति पुराने मूल्य 5.50 रु. में ही पा सकते हैं हालांकि नया मूल्य अब 7 रु.है.

यानी हर प्रति पर 1.50 रु. की बचत. जरा जोड़िए तो इसे यानी 12 महीने में 36 रु. की बचत.

फिर ज्यादा दाम क्यों चुकाएं जब कम में मिल जाए ? और घर पर समय से प्रति की सुविधा का भी लाभ.

आप पहले से ही ग्राहक हैं तो विशेष ग्राहक सुविधा की सूचना अपने मित्र को दीजिए.

इंडिया टुडे की 12 महीने का चंदा भेजकर ग्राहक बनने के लिए आपको बस इतना ही करना है कि इस पत्र के नीचे तरफ जुड़ा ग्राहक कूपन भरकर, अपने 132 रु. (विशेष चंदा दर) के चैक या बैंक ड्राफ्ट के साथ हमें भेज दीजिए.

आप जैसे चाहें रेखांकित चैक या बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से रकम भेज सकते हैं. यह लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय होना चाहिए. यदि आप बैंक ड्राफ्ट द्वारा रकम भेजते हैं तो आपकी पहली प्रति सूचना मिलने के 2 से 4 सप्ताह के भीतर आप तक पहुंच जाएगी.

यदि आपने चैक से धन भेजा है तो कृपया हमें 6 से 8 सप्ताह की अवधि की मोहलत दें.

यदि आप दिल्ली से बाहर के बैंक का चैक दे रहे हैं तो कृपया बैंक शुल्क के 5 रु. भी इसमें जोड़ दें यानी तब आपको 137 रु. का चैक बनाना चाहिए.

यदि ग्राहक कूपन का किसी और ने इस्तेमाल कर लिया है तो कृपया हमें नीचे दिए पते पर आवश्यक राशि का मनिआर्डर करके लिखिए. हम आपको ग्राहक के रूप में पंजीकृत करके प्रसन्न होंगे.

अपना पत्र इस पते पर भेजिए:

लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. आ. बॉक्स 29
नई दिल्ली 110 001.

विशेष जोखिम-रहित ग्राहकी

यदि आप किसी कारण से असंतुष्ट हैं तो आप अपनी ग्राहकी किसी भी समय रद्द कर सकते हैं.

बस आप रद्द करने की सूचना हमें भेज दीजिए और इसे लागू करने के लिए हमें 4-6 सप्ताह का समय दीजिए. तब हम आपके अप्रयुक्त धन का हिस्सा आपको वापस कर देंगे, बिना किसी पूछताछ के.

यहां से काटें

विशेष तीन लाभ वाला ग्राहक कूपन

जी हां, मैं 'इंडिया टुडे' का वार्षिक ग्राहक बनना और इस तीन फायदों वाली योजना का लाभ उठा

नाम ____________________

पता ____________________

____

____

(कृपया बड़े अक्षरों में लिखिए)

☐ मैं लिविंग मीडिया इंडिया लि. को देय 132 रु. एक वर्ष के चंदे के रूप में चैक / बैंक ड्राफ्ट से
हूं जिसका नं. ---------- है.

☐ मैं दिल्ली से बाहर का 137 रु. का चैक भेज रहा हूं.

दिल्ली, बंबई, कलकत्ता और मद्रास में देय चैक / बैंक ड्राफ्ट सिर्फ एमआईसीआर ही होने चाहिए

कृपया इस कूपन को भर कर धनराशि के साथ, लिविंग मीडिया इंडिया लि., पो. आ.
नई दिल्ली 110 001 को भेजें.

सभाओं के चुनाव के
हमारा एक ही नारा
-वादे के मुताबिक
आयोग की रिपोर्ट
रो."

जातियों के युवकों
मंडल आयोग की
भड़काऊ दस्तावेज है.
ज़ारों युवकों का तो
क मानना है कि
शिक्षा देने वाले
ों में दाखिले या सर-
नौकरी पाने की राह
आरक्षण का मौजूदा
ही बड़ा रोड़ा है.
ाम की तरह उनका
सूत्री नारा है, 'आर-
हटाओ.'

ाहिर है, ऐसा होगा
योंकि केंद्र में सत्तारूढ़
मोर्चे की ही तरह
हर महत्वपूर्ण राज-
दल आरक्षण का समर्थक है.
में, आरक्षण विरोधियों के भारी दबाव
ते सरकार मंडल आयोग की सिफा-
ों को ज्यों का त्यों लागू करने से मुकरती
रही है. गौरतलब बात यह है कि रिपोर्ट
अमल करने के सवाल की जांच के लिए
मंत्रिमंडलीय समिति के अध्यक्ष देवीलाल हैं. देवीलाल ने आर्थिक आधार पर आरक्षण की खुलेआम वकालत की है. देवीलाल तो परिवार के एक व्यक्ति को ही आरक्षण दिए जाने के हामी हैं. वे पूछते हैं, "इसमें गलत क्या है? जगजीवन राम भी इस विचार से सहमत थे."

पासवान भी कहते हैं कि सरकार विचार-विमर्श के लिए तैयार है, "राष्ट्रीय मोर्चा अपने वादे के प्रति प्रतिबद्ध है पर चूंकि यह राष्ट्रीय मुद्दा है इसलिए इस पर हम सर्वानुमति चाहते हैं."

जाहिर है, यह रवैया अपनाने की एक वजह यह है कि सरकार थोड़ी मोहलत चाहती है. इसके अलावा मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू करने से दूसरी समस्याएं भी उभरेंगी. तब वास्तव में नई विषमताओं के पैदा होने का भी खतरा है. मसलन, आयोग ने जिन जातियों को पिछड़े वर्ग में शुमार किया है उनकी हालत सभी राज्यों में एक जैसी नहीं है. एक ही जाति एक राज्य में तो शैक्षणिक और आर्थिक तौर पर पिछड़ी है, तो दूसरे राज्य में वह भूमिपति वर्ग में गिनी जा सकती है. माकपा नेता हरकिशन सिंह सुरजीत कहते हैं, "अन्य पिछड़ी जातियों को आरक्षण देने के लिए जातिगत वर्गीकरण का एक फार्मूला अपनाना अवास्तविक होगा. आर्थिक मानदंड भी रखना चाहिए."

फरवरी के अंत में जब उक्त मंत्रिमंडलीय समिति की बैठक होगी तो उसमें इस मुद्दे पर भी विचार किया जाएगा. इसका फैसला जो

'आरक्षण लागू न करना दंडनीय अपराध माना जाए'

बिहार में हरिजन जाति के पुलिस महानिरीक्षक मैकू राम के लिए सरकार से टकराव कोई नई बात नहीं है. पिछले महीने सरकार ने उन पर अपने कर्त्तव्यों की अनदेखी करके अनुसूचित जाति एवं जनजाति कर्मचारी संघ की सभाओं में विषैले भाषण देने का आरोप लगाया. वे संघ के अध्यक्ष हैं. मैकू राम का मानना है कि आरक्षण लागू न करना दंडनीय अपराध माना जाए. बच्चे आरक्षण का फायदा उठाएं, इसे वे अनुचित नहीं मानते. वे कहते हैं, "बढ़िया से बढ़िया स्कूल में पढ़े मेरे बच्चों में भी हीन भावना घर कर गई है." वे याद करते हैं, "एक दिन तो मेरे बेटे ने स्कूल से आकर मुझे 'चमार' शब्द का अर्थ पूछा." उनका आगे कहना है, "बहरहाल, बिहार में आरक्षित पदों में से महज पांच फीसदी ही भरे जाते हैं. अगर मेरे जैसे लोगों के बच्चे भी वहां तक न पहुंचे तो ये पांच फीसदी आरक्षित उम्मीदवार भी नजर न आएं."

कृष्णमुरारी किशन

'उन्हें मुफ्त शिक्षा, मुफ्त घर दो. मुफ्त नौकरी की क्या तुक?'

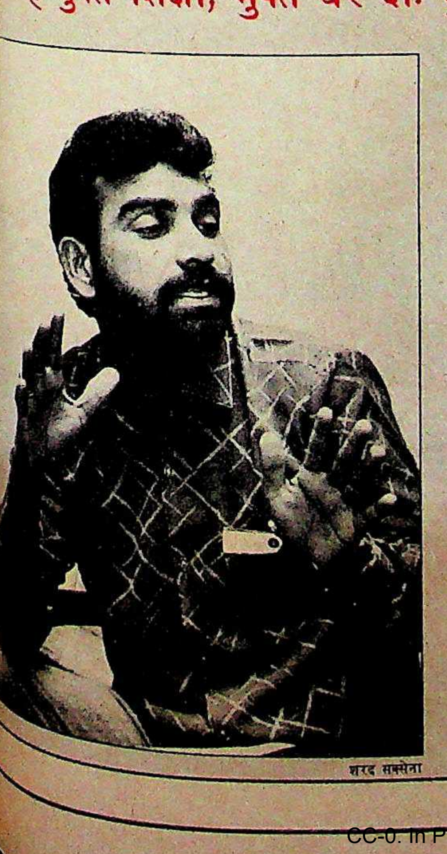

शरद सक्सेना

ऊंची जाति के 28 वर्षीय नरेश सक्सेना शिक्षित बेरोजगार होने के कारण आरक्षण विरोधी हैं. उत्तर प्रदेश के बदायूं जिले के उझनी गांव के निवासी सक्सेना इतिहास और अर्थशास्त्र दोनों में एमए हैं. उन्होंने विद्युत इंजीनियरिंग का कोर्स भी कर रखा है. लेकिन उत्तर प्रदेश बिजली विभाग में तीन साल तक प्रशिक्षु रहने और अगले तीन साल तक अस्थायी नौकरी करने के बाद उन्हें फिर नौकरी की तलाश करनी पड़ रही है. वजह यह कि आरक्षण का कोटा भरने के सरकारी फैसले के बाद सभी अस्थायी पद समाप्त कर दिए गए थे.

उझनी में शिक्षित युवा बेरोजगार संघ के अध्यक्ष बने सक्सेना आरक्षण के जिक्र से ही उत्तेजित हो उठते हैं. उनका कहना है, "अगर सरकार उनका जीवन स्तर ऊंचा उठाना ही चाहती है तो उन्हें मुफ्त घर, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त कपड़े और मुफ्त दवाइयां दे. लेकिन मुफ्त नौकरी की क्या तुक है?"

भी हो, परंतु जाहिर है सरकार सबको खुश नहीं कर सकती. अगर वह अपने चुनावी वादे से पीछे हटती है तो उसे पिछड़ी जातियों का गुस्सा झेलना पड़ेगा. और यदि वह रिपोर्ट लागू करने का फैसला करती है तो उस पर आरक्षण विरोधियों का नजला गिरेगा.

वैसे, राष्ट्रीय मोर्चा सरकार कोई पहली सरकार नहीं है जिसे यह एहसास हो रहा हो कि वादा करना एक बात है और उस पर अमल करना दूसरी बात. 1985 में जब गुजरात सरकार ने राणे आयोग की रिपोर्ट पर अमल करने की घोषणा की थी तो राज्य हफ्तों तक दंगों की चपेट में रहा. इस आयोग ने अनुसूचित जातियों के अलावा दूसरी जातियों को 18 फीसदी अतिरिक्त आरक्षण देने की सिफारिश की थी. आखिरकार तत्कालीन मुख्यमंत्री माधव सिंह सोलंकी को इस्तीफा देना पड़ गया था.

आरक्षण के विरोध में तर्क भी विचित्र हैं. मसलन यह कि इससे अकुशल इंजीनियर, खतरनाक डॉक्टर, निकम्मे प्रशासक वगैरह-वगैरह बनते हैं. यह भी कि चूंकि पिछड़ी जातियों के लड़के सरकारी नौकरियों के प्रति आश्वस्त होते हैं इसलिए वे स्कूल-कॉलेजों की पढ़ाई में मेहनत नहीं करते और चूंकि उन्हें नौकरी में प्रोमोशन की गारंटी होती है इसलिए वे कामकाज में सुस्त रहते हैं. गुजरात में नाडियाड में धरम सिंह देसाई इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी के डॉ. डी.एन. देसाई कहते हैं, "आरक्षण की नीति के चलते हमारी शैक्षणिक संस्थाओं, सरकारी नौकरियों और बिजली बोर्डों, एअरलाइंस तथा रेलवे जैसे सार्वजनिक उपक्रमों का स्तर खतरनाक हद तक गिर गया है."

उत्तर प्रदेश के एक डिवीजनल कमिश्नर कहते हैं, "यह आरोप निचले तबके के कर्मचारियों के बारे में तो कुछ हद तक सही हो सकता है परंतु मुझे नहीं लगता कि प्रथम ग्रेड के आरक्षित वर्ग के और गैर-आरक्षित वर्ग के कर्मचारियों में कोई फर्क होता है." रामविलास पासवान का तर्क है, "ठीक है कि आरक्षित वर्ग के छात्र को मेडिकल कॉलेज में कम अंकों पर ही दाखिला मिल जाता है. पर डॉक्टर बनने के लिए तो उसे परीक्षा पास करनी ही पड़ती है. वहां तो कोई आरक्षण नहीं है. क्या वह उस डॉक्टर से ज्यादा खतरनाक होगा जिसने चंदा देकर डॉक्टरी की डिग्री खरीदी है?"

लेकिन यह तर्क दमदार लगता है कि शैक्षणिक संस्थाओं और नौकरियों में आरक्षण से एक महत्वपूर्ण सामाजिक मकसद भी सधता है. इससे सदियों से दबी-कुचली जातियों में स्वाभिमान और आत्मविश्वास जगता है. ये जातियां शैक्षिक तौर पर दूस के मुकाबले पिछड़ रही हैं यह बात इसी जाहिर है कि उनके लिए आरक्षित ज्यादा पद खाली पड़े रहते हैं. अनुसूचित जातियों जनजातियों के लिए सरकारी नौकरियों 22.5 फीसदी पदों के आरक्षण की व्यव 1951 से है पर करीब 7 फीसदी ही ज भर पाती है. 20 फीसदी आरक्षण वाले उ प्रदेश में प्रथम श्रेणी की नौकरियों में म 8.1 फीसदी और चतुर्थ श्रेणी की नौकरि में 18.1 फीसदी पर ही पिछड़ी जातियों लोग हैं.

वजह सीधी-सादी है कि इन पदों के उम्मीदवार पर्याप्त संख्या में नहीं मिल

बिहार राज्य
आरक्षण विरोधी मंच
आरक्षण

पटना में (ऊपर) आरक्षण का विरोध; और भोपाल में भी: विषमता के खिलाफ

'उस पर परमात्मा की कृपा रही है, आगे भी रहेगी'

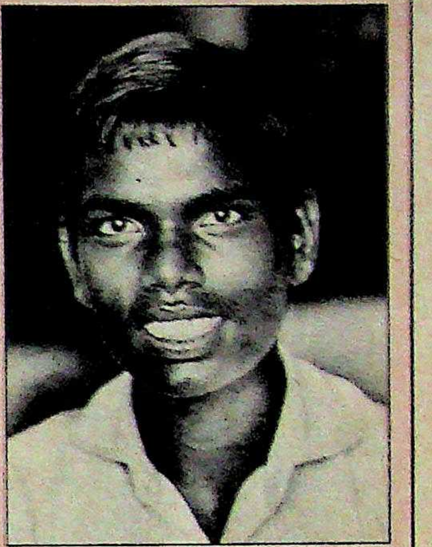

प्रशांत पंजियार

आरक्षण की मेहरबानी से 15 वर्षीय जगबीर कटारिया स्कूल की पढ़ाई पूरी कर पाएगा. पर लगता है उसके लिए रास्ते आगे बंद हैं.

हरियाणा में मदीना गांव के एक खेत मजदूर के बेटे जगबीर को निकटवर्ती कस्बे झज्झर में सरकार द्वारा चलाए जा रहे एक निःशुल्क रिहायशी स्कूल नवोदय विद्यालय में दो साल पहले भर्ती कराया गया था. पिता राम प्रसाद खुश हैं कि उसका बेटा ऐसे स्कूल में पढ़ता है जहां के मेस हॉल में टेलीविजन सेट है. ब्याहने योग्य उसकी दो बेटियां भी हैं. वह साफ कहता है कि स्कूल की पढ़ाई होने के बाद वह जगबीर की शिक्षा का बंदोबस्त नहीं कर सकता. भविष्य के बारे में वह भाग्य भरोसे है और कहता है, "मेरे पास न तो पैसा है, न जमीन. जगबीर पर परमात्मा की कृपा रही है. आगे भी उसके लिए वही करेगा."

ाहिर है कि पिछड़ी ों को बराबरी पर लाने लिए शिक्षण संस्थाओं में लिए आरक्षण जारी होगा.

किन आरक्षण की व्यवस्था लाफ सबसे गंभीर आरोप है कि इसका लाभ भी में रहने वाला पिछड़ी यों का एक छोटा तबका उठा पाता है. चूंकि चित जातियों और जन-यों की करीब 13 करोड़ आबादी में से सिर्फ 16 ी लोग ही शहरों में बसते और इनमें भी सरकारी रियों के लिए शिक्षित लोगों ख्या और भी कम है. इसलिए आरक्षण तो सिर्फ ऊंट के में जीरा ही है.

टे तौर पर अनुसूचित यों-जनजातियों की 11 करोड़ आबादी ों में बसती है. इनमें से एक-चौथाई दी छोटे किसानों की है जो खेतिहर र भी हैं. दूसरे लोग अपने पारंपरिक —चमड़े का काम, बुनाई, मछली मारना छोटे-मोटे हस्त उद्योगों—में लगे हैं. यह संख्या लगभग आरक्षण नीति के दायरे से र है. कल्याण मंत्रालय में अनुसूचित -जनजाति विभाग का कार्यभार संभाल नए सचिव पी.एस. कृष्णन कहते हैं, इसका लाभ दिलाना ही वास्तविक ती है."

इसी चुनौती के आगे पूर्ववर्ती सरकारें बुरी तरह असफल साबित हुई हैं. मसलन भूमि सुधारों को ही लें. जैसा कि मंडल आयोग ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है, "जब तक मौलिक भूमि सुधारों पर अमल करके उत्पादन के मौजूदा रिश्तों की जकड़न नहीं तोड़ी जाती, तब तक सुविधाहीन वर्गों पर असरदार ऊंची जातियों का दबदबा जारी रहेगा." हरकिशन सिंह सुरजीत भी इसी तर्क के हिमायती हैं. वे बताते हैं कि पश्चिम बंगाल में बड़े पैमाने पर भूमि सुधारों के ही कारण वहां आरक्षण विरोधी आंदोलन इतना प्रबल नहीं है.

लेकिन केंद्र और दूसरे राज्यों में स्थिति अलग है. 1951 में जवाहर लाल नेहरू की सरकार ने भूमि हदबंदी कानूनों के तहत 51 लाख एकड़ जमीन को हदबंदी से अधिक बताया था. पिछड़ी जातियों को गांवों में ही आय की पुख्ता व्यवस्था के लिए इस जमीन को उनके बीच बांटा जाना था. लेकिन अब तक वास्तव में सिर्फ 17 लाख एकड़ जमीन ही भूमिहीनों में बांटी गई है. बाकी जमीन का क्या हुआ? पासवान कहते हैं कि ये जमींदारों के पास ही 'उनके कुत्तों, बिल्लियों, तोतों और मैनाओं' के नाम पर बेनामी पड़ी हुई है.

दुर्भाग्यवश, पूर्ववर्ती सरकारों ने गांवों में बसने वाली पिछड़ी जातियों की अपेक्षाकृत मूक आबादी को दरकिनार किए रखा और उनके मुखर शहरी तबकों का तुष्टीकरण किया. चुनावी फायदे के लिए यह उन्हें जरूरी लगा. नतीजतन दंगों और आंदोलनों का सिलसिला शुरू हुआ जिसमें पिछड़ी जातियों पर ही अक्सर मार पड़ी. इसलिए सरकार आरक्षण के सवाल पर सावधानी से कदम बढ़ाए तो बेहतर होगा. कश्मीर और पंजाब जैसी विकट समस्याओं के साथ-साथ जाति संघर्ष का खतरा भी सरकार क्यों मोल लेना चाहेगी.

—पंकज पचौरी,
फिलिप जॉर्ज और ब्यूरो रिपोर्ट

पूर्वाग्रही समाज में आरक्षण के बिना कोई चारा नहीं

महेश भट्ट

कन्नड के अगुआ दलित कवि और इस समय विधान परिषद के मनोनीत सदस्य, 36 वर्षीय सिद्धलिंगैया मानते हैं कि उनके बचपन से लेकर अब तक हालात में बहुत मामूली ही अंतर आया है. उनका कहना है, "जब तक यह पूर्वाग्रही, अमानवीय समाज बना रहेगा, आरक्षण से नहीं बचा जा सकता."

पर सिद्धलिंगैया मानते हैं कि आरक्षण से कई बार विचित्र स्थिति भी पैदा हो जाती है. मसलन बंगलूर विश्वविद्यालय के कन्नड विभाग में, जहां सिद्धलिंगैया पढ़ाते हैं, प्रोफेसर का एक पद खाली है और वह अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित है. यह पद उन्हीं को दिए जाने की संभावना है, हालांकि इसी विभाग में उनके गुरु चंद्रशेखर कांबर सरीखे दूसरे साहित्यकार अभी भी लेक्चरर और रीडर पद पर ही हैं. सिद्धलिंगैया खेदपूर्ण लहजे में कहते हैं, "वे मेरे गुरु ही नहीं बल्कि इस पद के लिए अधिक योग्य भी हैं. आरक्षण व्यवस्था ऐसे विरोधाभासों की जनक भी है."

सोने की तस्करी

नित नए तरीके

भंडाफोड़ होने पर तस्कर दूसरा तरीका ईजाद कर लेते हैं

पिछले महीने बंबई के भिंडी बाजार में सिगरेट की एक छोटी-सी दुकान के मालिक मोइनदीन अंगक्कलरी को ऐसा प्रलोभन दिया गया जिसे वह इनकार न कर सका. उससे बस एक छोटा-सा काम करने को कहा गया जिसके लिए 10,000 रुपए की पेशकश की गई. काम था—वीडियो कैसेट से भरे सूटकेस को दुबई से तिरुवनंतपुरम पहुंचाना. यात्रा खर्च अलग से.

27 जनवरी को जब मोइनदीन दुबई से सीधी उड़ान भर के तिरुवनंतपुरम पहुंचा तब दस हजार रुपयों का खयाल उसे रोमांचित कर रहा था. उस समय तक मोइनदीन तो क्या, किसी को भी शक नहीं था कि इन वीडियो कैसेटों में सोना भरा हुआ है. लेकिन सीमा शुल्क अधिकारियों की पैनी नजरों को यह कुछ घोटाले का मामला लगा. पांच कैसेटों को खोला गया तो उनमें से सोने के 201 बिस्कुट गिर पड़े. इन बिस्कुटों का कुल वजन 23.5 किलो पाया गया और कीमत 76.10 लाख रु. आंकी गई. मोइनदीन को जेल की हवा खानी पड़ी.

लेकिन तिरुवनंतपुरम हवाई अड्डे के टर्मिनल नं दो पर, जहां अंतरराष्ट्रीय उड़ानें आती हैं, तैनात सीमा शुल्क अधिकारियों के लिए यह घटना नई नहीं थी. सोने के तस्कर अजीबोगरीब तरीके अपनाते जा रहे हैं. सोने को चूंकि हर आकार में ढाला जा सकता है इसलिए कुछ वर्षों से इसकी तस्करी बटन, चाबियां, सूटकेस के पहिये और फ्रेम, मशीनों के पुर्जे, पेटियों के हुक, छतरी की कमानियों, आदि के रूप में होती रही है. सीमा शुल्क अधीक्षक ए.के. गोविंदनकुट्टी बताते हैं, "हम तस्करों के एक तरीके का पता लगाते हैं तो वे चार और तरीके ईजाद कर लेते हैं. उनकी कल्पनाशीलता वाकई लाजवाब है."

मिसाल के तौर पर मुहम्मद हुसैन मुहम्मद मुमताज ने 521 ग्राम सोना (कीमत: 1.56 लाख) ऐसी जगह रखा जिसकी कल्पना—उसके मुताबिक—कोई नहीं कर सकता था. उसने दो बिस्कुट अपने मलद्वार में रखे और बाकी के सोने की गोलियां बनाकर केले के साथ निगल लिया. लेकिन टर्मिनल पर तैनात अधिकारियों की नजरों से वह बच नहीं पाया. पूछताछ के बाद उसने सब उगल दिया. एक पखवाड़े तक, जब तक उसके पेट से सोने का एक-एक टुकड़ा नहीं निकल गया, उसे हवाई अड्डे पर ही रखा गया.

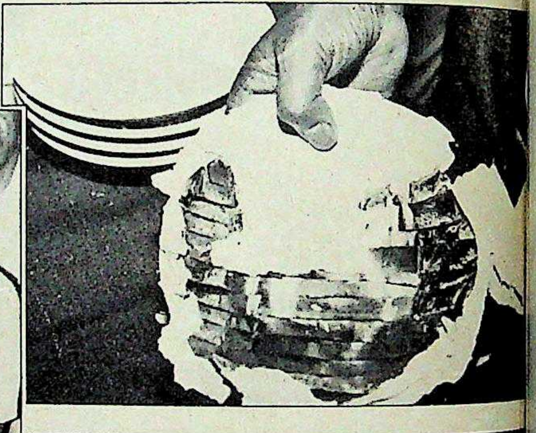

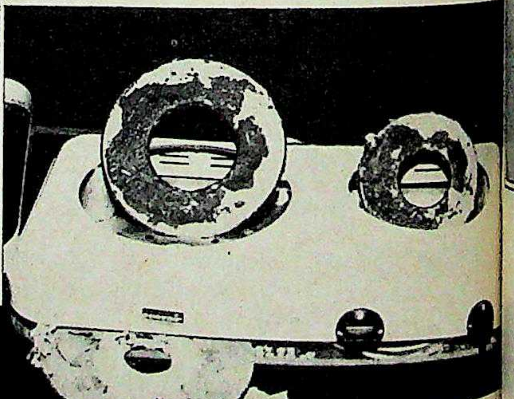

कैसेटों में सोना; (ऊपर दाएं) डिनर सेट; और गैस चूल्हे में भी

सीमा शुल्क अधिकारी यात्रियों के अलावा जहाज से आने वाले माल की भी बारीकी से जांच करते रहे हैं. एक बार खास तौर से तैयार किया गया एअरकंडीशनर बरामद किया गया जिसमें सोने की 40 छड़ें लगी थीं. इनकी कीमत 28.40 लाख रु. से ज्यादा थी. एक बार मेलामाइन के डिनर सेट में दो परतों के बीच तकरीबन 5.25 लाख रु. के सोने की पतली परत लगाई हुई थी. लेकिन अधिकारी अब कोई मौका हाथ से जाने नहीं देना चाहते. सीमा शुल्क आयुक्त वी.के. अग्रवाल कहते हैं, "तिरुवनंतपुरम हवाई अड्डे पर हम सोने की तस्करी का हर संभव रूप देख चुके हैं."

और सोने की तस्करी की मुख्य वजह है—भारी मुनाफा. अंतरराष्ट्रीय बाजार में 24 कैरेट के एक किलो सोने की कीमत दो लाख रु. है और भारत में 3.25 लाख रु. खुफिया अधिकारी मित्र प्रसाद कहते हैं, "सोने की तस्करी तो होती ही रहेगी. सिर्फ तरीके बदलते रहेंगे."

सोने की ज्यादातर तस्करी दुबई, मस्कट, बहरीन, सऊदी अरब और अबू धाबी में बसे सुसंगठित मलयाली तस्कर गिरोहों के जरिए ही की जाती है. तस्करी का सोना ढोने वाले वे गरीब मलयाली होते हैं जो खाड़ी देशों में नौकरियों में मांग खत्म होने से बेरोजगार हो चुके हैं. कुछ अभागे ऐसे भी हैं जो वापसी के टिकट के पैसे न होने के कारण सोने की तस्करी के लिए मजबूर हो जाते हैं.

तस्करी का सोना पकड़े जाने की इतनी घटनाओं के बावजूद सीमा शुल्क अधिकारियों को तस्करी में कमी आने के कोई आसार नजर नहीं आते. सोने की चमक ने कइयों को अंधा बना रखा है और आगे भी बनाती रहेगी, भले ही यह कितनी घातक क्यों न हो.

—रमेश मेनन

जीवन का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय जो आप दोनों को मिलकर लेना होगा

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों ने एक दूसरे का हो जाने व जीवन के उतार-चढ़ाव में साथ निभाने का निर्णय ले लिया है। अब अपने जीवन का दूसरा सबसे महत्वपूर्ण निर्णय लेने का आप दोनों के लिए यही समय है। आप दोनों को सन्तान व अन्य बढ़ती ज़िम्मेदारियों के दैनिक चक्र में बन्धने से पूर्व अपने आप को कुछ वर्ष देने होंगे। इसके लिए आपको आवश्यकता है एक ऐसे गर्भनिरोधक की जो आप दोनों के अनुकूल हो।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है। ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम।

KOHINOOR
PINK LUXURY CONDOMS
A ttk Product

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पत्ति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं। कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है। यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है। सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है। कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलिभाँति समझते हैं। कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है।

ttk उत्पादन

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग!

...COMMUNICATIONS 916 A HIN

सभी फोटो: एसएमजी

राष्ट्रमंडल खेल

मैदान फिर मार लिया

समापन समारोह में ब्रिटेन की रानी एलिजाबेथ

आॅकलैंड, न्यूजीलैंड में 15वें राष्ट्रमंडल खेलों का समापन होने के साथ ही पिछले पखवाड़े उनके महत्व और उनकी सफलता की समालोचना होती रही. इसमें एक बात साफ तौर पर उभरी कि राष्ट्रमंडल खेलों का पुनर्जन्म हो गया है.

चार साल पहले स्कॉटलैंड के एडिनबर्ग में हुए पिछले राष्ट्रमंडल खेलों का अफ्रीकी, कैरेबियाई और भारत समेत कई एशियाई देशों ने दक्षिण अफ्रीका के विरुद्ध आर्थिक प्रतिबंध लगाने की मांग को लेकर बहिष्कार किया था. नतीजतन ये खेल तब घाटे का सौदा साबित हुए.

ऑकलैंड में भी बहिष्कार की संभावनाएं थीं. पर सौभाग्य से अफ्रीकी देशों ने बहिष्कार का फैसला नहीं किया हालांकि इंग्लैंड की बागी क्रिकेट टीम और ऑस्ट्रेलिया की रग्बी टीम दक्षिण अफ्रीका गई हुई थी. राष्ट्रमंडल खेल संघ के अध्यक्ष पीटर हीटली के अनुसार, "ऑकलैंड में एक बार फिर बहिष्कार का मतलब होता इन खेलों की तबाही. और फिर कभी कोई देश राष्ट्रमंडल खेल अपने यहां आयोजित करने को तैयार न होता."

लगा जैसे ऑकलैंड की समूची जनता को इसका आभास था. खेलों के आयोजन से ऑकलैंड को 1.9 करोड़ न्यूजीलैंड डॉलरों (20.4 करोड़ रु.) का घाटा उठाना पड़ा पर खेलों के जनसंपर्क महाप्रबंधक देई बिडॉफ के अनुसार, "इसके बावजूद आयोजन काफी अच्छा रहा."

खेलों के वित्तीय महाप्रबंधक क्रिस नोल्स ने बताया, "हमने किसी तरह ऐसी कंपनियों को प्रायोजक बनवाया जिनका राष्ट्रमंडल से कोई लेना-देना नहीं, जैसे जापानी कंपनियों को. इससे राष्ट्रमंडल खेलों में छिपी संभावनाएं जाहिर होती हैं."

पर कंपनियों को इन खेलों में पैसा लगाने के लिए राजी करने में ऑकलैंड के आयोजकों को एड़ी-चोटी का जोर लगाना पड़ा. इसके लिए उन्होंने शुरू से ही पेस्को नैली इंटरनेशनल (पीएनआई) जैसे व्यावसायिक संगठनों की सेवाएं लीं. पीएनआई ने ऑकलैंड की तरफ से सारे प्रस्ताव रखे और प्रायोजकों को तैयार कर लिया. पीएनआई की न्यूजीलैंड शाखा के अध्यक्ष मॅल्कम बेट्टी बताते हैं, "न्यूजीलैंड तथा दूसरे देशों में खेलों के प्रसारण से प्रायोजको को काफी लाभ हुआ यह सब करके हमने राष्ट्रमंडल खेलों भविष्य सुरक्षित कर दिया है."

प्रतिबंधित दवा कांड से खेलों को झटक जरूर लगा. राष्ट्रमंडल खेल अभी तक

वेल्स के रिकी चैप्लिन: दवाओं का खेल

रायटर

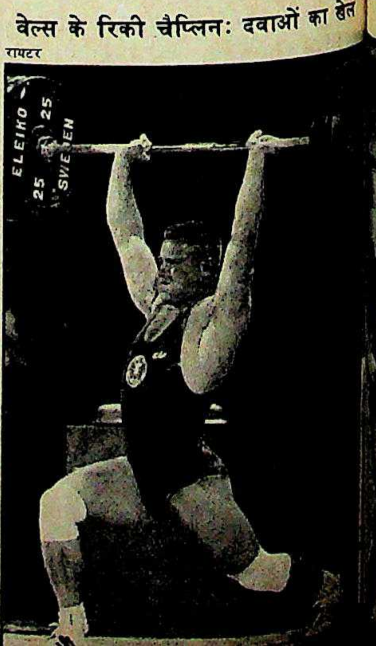

बचे हुए थे पर ऑकलैंड में तीन लकों के परीक्षण में पाया गया कि प्रतिबंधित स्टीरॉयड का इस्तेमाल था. इनमें दो वेल्स के थे और तीसरे, सी कांड में फंसने वाले पहले भारतीय कुमार पाल थे.

के पहले राष्ट्रमंडल खेलों में ऐसा कांड कभी नहीं हुआ था. बहस, और तर्क शुरू हो गए. आयोजक थे. वेल्स के खिलाड़ी और अधिकारी मारे मरे जा रहे थे और भारतीयों को ाने की जगह नहीं मिल रही थी. यह लिए भी ज्यादा थी क्योंकि भारतीय लन टीम के प्रशिक्षक पाल सिंह संधू डॉक्टर मनमोहन सिंह ने इसके पहले था, “भारतीयों ने बिना प्रतिबंधित के इतना अच्छा प्रदर्शन किया.”

रजत और एक कांस्यपदक जीतने 67.5 किलोग्राम वर्ग के पाल वापस भेज दिए गए पर अपने साथ वे उन को भी लेते आए जिन्हें उन्होंने नूनी ढंग से जीता था. भारतीयों की स्मती यह रही कि तभी वेल्स के दो ड़ियों का मामला पकड़ा गया और का ध्यान उन पर से हट गया. 82.5 ग्राम वर्ग में तीन स्वर्णपदक जीतने वेल्स के भारोत्तोलक डेविड मोर्गन बड़ी के साथ खेल छोड़कर चले गए. कहा, “मैं अपने खेल पर शर्मिंदा हूं. में कई धोखेबाज भरे पड़े हैं. पर इसके सिर्फ खिलाड़ी को ही दंड नहीं दिया चाहिए. अधिकारियों को भी दंडित जाना चाहिए. उनमें से कई तो लकों को ऐसी चीजें लेने के लिए हित करते हैं.”

के हादसे के बावजूद, प्रदर्शन के से राष्ट्रमंडल खेल भारत के लिए सबसे अच्छे रहे. 13 स्वर्ण, 8 रजत और 11 कांस्यपदकों के साथ ऑकलैंड में भारत ने पांचवां स्थान हासिल किया.

खेलों के पहले दिन तक तो लग रहा था कि सिर्फ भारोत्तोलन में ही भारत को काफी पदक मिल जाएंगे. और यही हुआ भी. पर जब खेल आगे बढ़े तो कई और स्पर्धाओं से भी पदक भारत की झोली में गिरने लगे. भारतीय निशानेबाजों ने एक स्वर्ण, एक रजत और तीन कांस्यपदक जीत लिए जबकि दो कांस्यपदक जूडो में और एक मुक्केबाजी में भी मिला. जिन छह स्पर्धाओं में भारत की टीमें शामिल हुईं उनसे चार में भारत को पदक मिले. बैडमिंटन में दीप्ति थाणेकर कांस्यपदक के बहुत पास पहुंचकर हार गई.

भारतीय एथलीटों के न होने से कुछ पदक जरूर हाथ से खिसक गए. गोला फेंक और 4 × 400 मीटर महिला रिले दौड़ में तो पदक मिलने तय ही थे और शायद महिलाओं को 400 मीटर बाधा दौड़ में भी पदक हाथ लग जाता पर पी.टी. उषा के उपलब्ध न होने की वजह से भारतीय एमेच्योर एथलेटिक्स फेडरेशन ने टीम नहीं भेजी.

पर राष्ट्रमंडल खेलों में भारत की कुल जमा कामयाबी आंखें खोल देने वाली है. ऑकलैंड का सबक साफ है कि अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में मौका दिए जाने पर पदक मिल सकते हैं.

—वी. कृष्णास्वामी, ऑकलैंड में

के पीटर: 1,500 मीटर विजेता

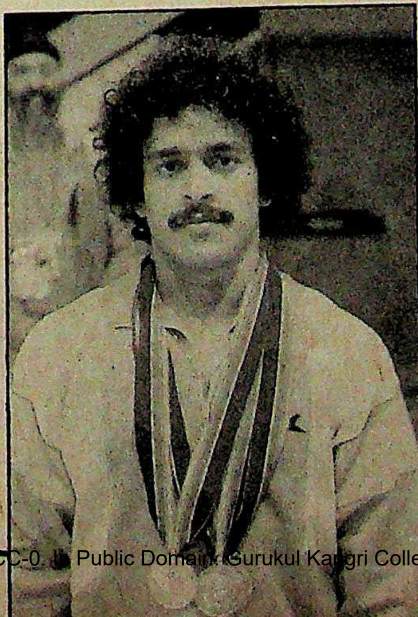

पुन्नुस्वामी: तीन स्वर्णपदक

टेनिस

नया सितारा

अमृतराज बंधुओं की विवादास्पद विदाई के बाद भारतीय टेनिस का भविष्य कुछ धुंधला सा लगने लगा था. परंतु अब लगता है कि एक नया उभरता सितारा इसे नई चमक देगा. और वह सितारा है—16 वर्षीय लिएंडर पाएस. यह 'बैट (ब्रिटेनिया-अमृतराज टेनिस) की उपलब्धि है.

प्रमोद पुष्करणा

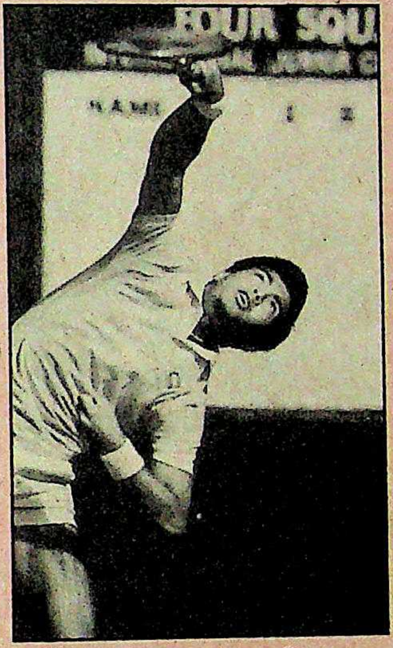

लिएंडर पाएसः उभरता सितारा

पिछले पखवाड़े इस दुबले-पतले, सांवले खिलाड़ी ने मेलबोर्न में आस्ट्रेलियाई ओपन टेनिस की जूनियर प्रतियोगिता के फाइनल में पहुंचकर टेनिस प्रेमियों को हैरत में डाल दिया. फाइनल में वह दूसरे दर्जे की वरीयता प्राप्त पश्चिम जर्मनी के डर्क डायर से हार गया.

अगर पाएस ने मेलबोर्न में फाइनल भी जीत लिया होता तो उसका नाम भी टेनिस के दिग्गज खिलाड़ियों की सूची में शामिल हो जाता.

पाएस का कहना है, “यह काफी कड़ी प्रतियोगिता थी. मुझे उम्मीद है कि इसकी आदत पड़ जाएगी.” पाएस को अब विश्व जूनियर टेनिस में पांचवां स्थान मिल गया है.

खेल पाएस को विरासत में मिला है. उसके पिता विसी पाएस हॉकी के अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी थे और मां जेनिफर बास्केटबाल की खिलाड़ी थीं. वे भारत का प्रतिनिधित्व भी कर चुकी हैं. 16 वर्ष की उम्र में ही अपने भविष्य के बारे में पाएस का दिमाग काफी साफ है, “मैं दुनिया का नंबर एक खिलाड़ी बनना चाहता हूं.”

—चिदानंद राजघट्टा

टीपू सुलतान

तलवार पर तलवार

संजय खां के धारावाहिक के खिलाफ कट्टरवादियों की मुहिम

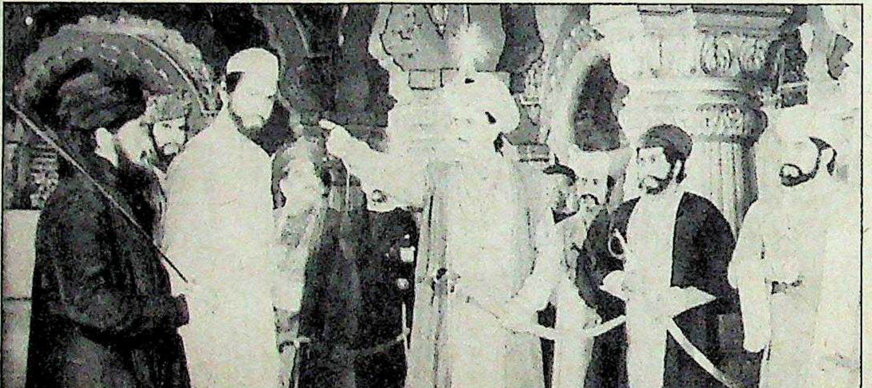

टीपू के एक दृश्य में संजय (बीच में); और (ऊपर) पुस्तक के साथ गिडवानी: बवाल की वजह

आख्यानों में चर्चित मैसूर के 18वीं सदी के शासक पर संजय खां द्वारा बनाए गए 52 भागों वाले टीवी धारावाहिक 'टीपू सुलतान की तलवार' पर सांप्रदायिकता की कटार लटक गई है. नामी-गिरामी फिल्मी सितारों वाले 2.5 करोड़ रु. की लागत से बने धारावाहिक की पहली कड़ी के 10 फरवरी को प्रदर्शन के लिए संजय खां तैयारी कर चुके थे. लेकिन यह प्रदर्शन नहीं होना था.

टीपू को जननायक बनाने के खिलाफ जहरीले बयानों की झड़ी लगते देख सूचना और प्रसारणमंत्री पी.उपेंद्र अचकचा गए. उन्होंने कहा, "इसका प्रसारण होगा, पर इसके विरोध को नजरअंदाज तो नहीं ही किया जा सकता."

सचमुच, वे कर भी नहीं सके क्योंकि विरोधी आंदोलन की अगुआ राष्ट्रीय मोर्चा सरकार की मुख्य सहयोगी भारतीय जनता पार्टी है. विश्व हिंदू परिषद उसका प्रबल समर्थन कर रही है. भाजपा की केरल और महाराष्ट्र इकाइयां भगवान एस. गिडवानी की पुस्तक पर आधारित इस धारावाहिक पर प्रतिबंध लगाने की मांग कर रही हैं.

केरल भाजपा अध्यक्ष के.आर. पिल्लै कहते हैं, "टीपू देशद्रोही और अत्याचारी था. उसने बड़े पैमाने पर धर्मपरिवर्तन करवाया." उपेंद्र को दिए गए परिषद के ज्ञापन में टीपू को हिंदुओं पर अत्याचार करने वाला धर्मांध कहा गया है. इतिहासवेत्ता डॉ. रवींद्र रामदास ने बंबई हाईकोर्ट में दायर एक याचिका में कहा है कि गिडवानी की पुस्तक इतिहास को झुठलाती है.

कुपित गिडवानी जवाब में कहते हैं, "ये लोग 13 साल से कहां थे, जब मेरी पुस्तक बिक रही थी?" कनाडा में जा बसे गिडवानी इस बखेड़े को सुलझाने यहां आए थे. लेकिन वे कहते हैं, "बुद्धिजीवी के रूप में हिंदू और मुसलमान के नाम पर हो रहे विवाद से लगता है कि मैं खुदकुशी कर रहा हूं."

संजय खां भी कहते हैं कि यह पुस्तक "सांप्रदायिक सद्भाव का स्वागत योग्य दस्तावेज हैं. विरोध करने वाले अपना मकसद साधना चाहते हैं." वे पूछते हैं, "वरना, अक्तूबर 1986 में जब मैंने इस धारावाहिक को बनाने का काम शुरू किया था या पिछले साल जब फिल्मांकन के दौरान लगी आग के कारण देश भर में एक बार फिर उस पर लोगों का ध्यान गया था, उस समय विरोध क्यों नहीं किया गया?"

संजय खां की स्थिति सांप-छछूंदर जैसी है. वे कट्टरवादियों और सूचना प्रसारण मंत्रालय के ढुलमुल अधिकारियों के बीच फंसे हैं. संजय से इतिहासवेत्ताओं से धारावाहिक की समीक्षा कराने की पेशकश की गई. लेकिन इसे उन्होंने ठुकरा दिया. वे गुस्से में पूछते हैं, "इतिहासवेत्ता क्या फैसला करेंगे? यह कोई सौंदर्य प्रतियोगिता है?"

टीपू सुलतान के बारे में संजय और गिडवानी की मान्यता का जाने-माने इतिहासकार बिपन चंद्रा समर्थन करते हैं. वे कहते हैं, "18वीं सदी के इतिहास के संदर्भ में अगर किसी को नायक का तमगा दिया जा सकता है तो वह टीपू ही है. वह अकेला ऐसा शासक था, जो ईस्ट इंडिया कंपनी के खतरनाक इरादे समझ सका था. यह कहा जा सकता है कि टीपू जवाहरलाल नेहरू जैसा धर्मनिरपेक्ष नहीं था. लेकिन निश्चित रूप से उसने न तो इस्लामी साम्राज्य बनाने की कोशिश की और न इस्लाम को बढ़ावा देने के लिए अपनी सत्ता का इस्तेमाल किया."

इतिहास बताता है कि टीपू ने अनेक मंदिरों को धन-संपदा दिल खोलकर दान की. शिव और पार्वती की छाप वाले सिक्के चलाए. कट्टरवादियों के मुताबिक सत्ता और महत्वाकांक्षा के लालच में टीपू ने ज्योतिषियों की सलाह पर ऐसा किया था.

बिपन चंद्रा ने स्पष्ट किया कि टीपू ने हिंदुओं की हत्या भी की, लेकिन दुश्मन के रूप में, हिंदू के रूप में नहीं.

हालांकि संजय खां कहते हैं, "मैं शरारतियों के हाथों अपने अधिकारों की हत्या नहीं होने दूंगा." लेकिन मंत्रालय तो इन शरारतियों के कारण ही परेशान है. जैसा कि अतिरिक्त सचिव भास्कर घोष कहते हैं "दूरदर्शन की ताकत के सामने तर्क नाकाम हो जाता है."

बहरहाल, संजय खां क्योंकि इतिहासकारों से समीक्षा कराने के खिलाफ हैं, लगता यही है टीपू की तलवार पर सांप्रदायिकता की कटार लटकी ही रहेगी. —हरिंदर बवेजा

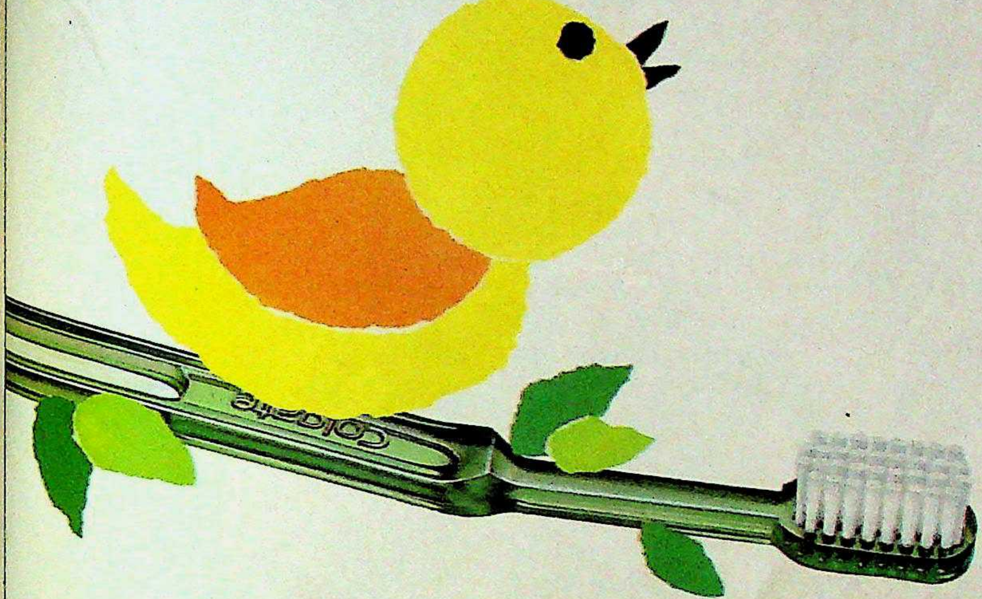

जागो भारत, सजी सुबह !

कोलगेट फ़ॉर्वर्ड एंगल सुबह-सुबह आपकी मुस्कान में नई चमक डाल देता है. क्योंकि इसकी बनावट ही कुछ ऐसी है कि ये आपके दांतों के कोने-कोने की सफ़ाई कर डालता है. आगे का सिरा छोटा, किन्तु घना. जो आराम से मुंह में कहीं भी पहुंच जाए. और ब्रिसल इतने बेहतरीन कि ये न सिर्फ़ आपके दांतों और मसूढ़ों का ख्याल रखें, बल्कि लम्बे समय तक भी चलें.

कोलगेट फ़ॉर्वर्ड एंगल. इतनी आसानी से दांतों की सफ़ाई करे कि दिन बन जाए!

नया कोलगेट फ़ॉर्वर्ड एंगल
दांतों के कोने-कोने तक पहुंचे

FORWARD ANGLE
Colgate
TOOTHBRUSH

Rediffusion/CP/7851 C HN

मॉडलिंग

दिल जीत रही दिल्ली

राजधानी में विज्ञापन एजेंसियां बढ़ने से मॉडलों का भी रुतबा बढ़ा

- भारत में पहली बार वाईएसएल (ईव सां लारां) फैशन शो आयोजित होता है. स्थान है—नई दिल्ली.
- वाईएसएल की सबसे बढ़िया मॉडल चुनने की प्रतियोगिता में देश भर से फाइनल में पहुंची 75 लड़कियों में दिल्ली की शीना सिंह प्रथम स्थान पर रहती हैं.
- सबसे अच्छे फैशन फोटोग्राफर की प्रतियोगिता में दिल्ली के प्रबुद्ध दासगुप्त जीतते हैं. दूसरे स्थान पर दिल्ली के ही रोहित चावला रहते हैं.
- अपने नए विज्ञापन अभियान के लिए नया मॉडल ढूंढ़ रही लॅक्मे कंपनी अपनी विज्ञापन एजेंसी को उत्तर भारत, खासकर दिल्ली की लड़की सुझाने को कहती है.

ये गिनी-चुनी घटनाएं भर नहीं हैं. दरअसल ये भारत के चमक-दमक वाले मॉडलिंग व्यवसाय में आ रहे बदलावों के संकेत हैं. ये घटनाएं बताती हैं कि अब तक फैशन और मॉडलिंग की राजधानी बनी रही बंबई का एकाधिकार टूटता जा रहा है. और इसे चुनौती दे रही है देश की राजधानी दिल्ली जिसे इस क्षेत्र में अब तक उजड्ड, असभ्य और बिना नफासत वाला शहर माना जाता था.

आज यह शहर मॉडलों, फैशन फोटोग्राफरों, मॉडलिंग एजेंटों, फैशन डिजाइनरों, आर्ट डाइरेक्टरों, मॉडल कोआर्डिनेटरों से भर गया है जिन्हें सफलता और नाम दोनों ही मिलने लगे हैं. इसकी शुरुआत 1986-88 के दौर में हुई जब देश की अनेक विज्ञापन एजेंसियों ने दिल्ली में अपनी शाखाएं खोलीं और यहीं से बड़ी-बड़ी कंपनियों का काम संभालना शुरू कर दिया. देश की सबसे बड़ी विज्ञापन एजेंसियों में से एक हिंदुस्तान थॉमसन एसोसिएट्स (एचटीए) के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और प्रबंधक निखिल नेहरू कहते हैं, "चार वर्षों में ही हमारा वार्षिक कारोबार 7 करोड़ रु. से 26 करोड़ रु. हो गया है."

अब बड़ी कंपनियां अपने सामान के विज्ञापन के लिए मॉडल ढूंढ़ने के लिए बंबई की ओर रुख नहीं करतीं. 'कैटवाक' नामक मॉडलिंग एजेंसी चलाने वाले कमल हजूरिया कहते हैं, "मुझे नेस्कैफे,

> "पहले हालत यह थी कि मुझे खुद ही अपना सिंगार करना पड़ता था, अपने केश खुद ही संवारने पड़ते थे पर आज हर छोटी चीज, यहां तक कि चूड़ियों के लिए भी विशेषज्ञ उपलब्ध हैं"

रोहित चावला

फिरोज गुजराल

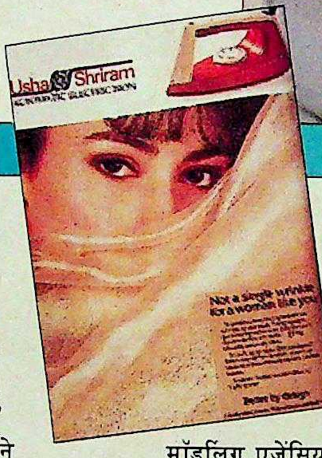

बाटा, उषा, फोर
वायर और जेसीटी
बड़ी कंपनियों के
मॉडल सुझाने
विज्ञापन एजेंसियों
संदेश आते हैं."
दिल्ली में नित
मॉडलिंग एजेंसियां खुल रही हैं और यहां
मॉडलों को भी बंबई के प्रमुख मॉडलों
ही पैसा मिलता है.

यह कोई मामूली उपलब्धि नहीं है.
वर्ष पहले तक ही दिल्ली के मॉडलों
दर्जा काफी नीचे माना जाता था.
विज्ञापन अभियान की शूटिंग के लिए
को बंबई से लाने-ले जाने का हवाई खर्च
देना पड़ता. दिल्ली की प्रमुख मॉडल,
वर्षीया क्वीनी सिंह (जिन्होंने सनसिल्क
की मॉडलिंग भी की है) कहती हैं, "दिल्ली
रहते हुए भी मुझे ढेर सारा काम मिलता है

दिल्ली की फिरोज गुजराल,
कक्कड़, क्वीनी सिंह, शिखा स्वरूप,
सिंह, रवि धवन और गुरप्रीत सिंह
आज देश के प्रमुख मॉडलों में गिने जाते
दिल्ली की पुरानी मॉडलिंग एजेंट
लल्ला कहती हैं, "ग्लैमर सिर्फ बंबई
मॉडलों में है यह भ्रम अब टूट चुका है."

इसके संकेत भी चारों ओर दिख रहे
देश की सबसे पुरानी और बड़ी मॉडलिंग
एजेंसियों में से एक 'एडवेव' की कर्ता
कोमल जी.बी. सिंह कहती हैं, "पहले हम

सभी फोटो: प्रमोद पुष्करणा

अपने दफ्तर में कोमल जी.बी. सिंह (बीच में

ली के मॉडल
खूबसूरत हैं
न्हें प्रोत्साहन
हीं मिला. जो
मैंने दिल्ली
उनके बारे
अक्सर पूछा
है यह बंबई
का कहां का
शॉट है"

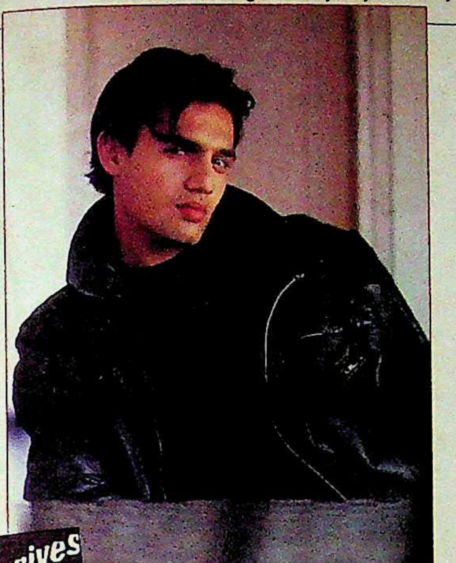

"सच मानिए अब
मुझे मॉर्डलिंग का
काम तलाशने के
लिए बंबई जाने
की जरूरत नहीं
रही. अब मुझे
दिल्ली में रहते
हुए ही जरूरत से
ज्यादा काम मिल
जाता है"

मॉर्क रोबिंसन

क्वीनी सिंह

Who gives
a damn!
OSWAL
PREMIUM
SUITINGS

THE NEW INDIAN CLASSIC
CLASSIC

अच्छी लड़कियां बंबई चली जाती थीं. ग्रवाल, किरण जुनेजा, अनु आहूजा, लिया जैसी लड़कियां यहीं की हैं पर में जा बसीं. लेकिन पिछले दो-तीन वर्षों क्रम बंद हो गया है. यह बदलाव ही कुछ कह जाता है."

स तरह से कॉलेज जाती लड़कियों और का 'रेला' मॉडलिंग की ओर मुड़ा है, भी बदलाव के संकेत मिलते हैं. परंपरा- मध्यमवर्गीय परिवारों का यह समूह पैसा और नाम के लिए इधर आ रहा मल जी.बी. सिंह के दफ्तर में ही प्रति 250 से 300 नए लड़के-लड़कियां मौके लाश में आते हैं. 32 वर्षीय प्रबुद्ध कहते हैं, "काफी सारे लोग तो मंशा से इस काम में आ रहे हैं, पर आ हो हैं."

मॉडलिंग के नक्शे पर दिल्ली के उभरने कारण यहां फिरोज गुजराल जैसी का रहना भी है. उन्हें देश की सबसे मॉडलों में माना जाता है. उषा पंड, दिरजाम, नीविया क्रीम और जैसे विज्ञापनों के लिए मॉडलिंग फिरोज ने ही शूटिंग के लिए बंबई जाने की परंपरा डाली वरना अभी तक बंबई की लड़कियों को ही बाहर बुलाया-भेजा जाता था. वे कहती हैं, "दिल्ली की मैं ऐसी पहली मॉडल हूं जिसने कंपनियों और विज्ञापन एजेंसियों के कहने पर बंबई में बसने के बजाए यहीं रहने का फैसला किया और फिर भी मेरा काम खूब चमका."

सुविधाओं की कमी भी तेजी से दूर होती जा रही है क्योंकि अधिकांश विज्ञापन कंपनियां दिल्ली में पहुंचने लगी हैं और यहां उन्हें काफी काम भी मिल रहा है. 1988 की भारत सुंदरी और आज की व्यस्ततम मॉडलों में से एक, शिखा स्वरूप कहती हैं, "चार साल पहले की दिल्ली की मरियल एजेंसियों के मुकाबले आज सारे नए लटके-झटके वाली एजेंसियां यहां पहुंच गई हैं जो बड़ी कंपनियों का सारा काम संभालने लगी हैं."

मॉडलों को प्रशिक्षित करने के लिए कल्पना देसवाल ने जब हाल ही में पहली अकादमी सर्किट-2000 खोली तो इसका पहला विज्ञापन आते ही यहां नाम लिखाने के लिए 400 लड़के-लड़कियों की भीड़ जुट गई.

इसके अलावा बंबई की भागमभाग भरी जिंदगी की तुलना में दिल्ली में थोड़ी शांति और सकून है. अनेक सौंदर्य प्रतियोगिताएं जीत चुकी और तेजी से लोकप्रिय हो रहीं मॉडल, 19 वर्षीया तीस्का ज़रीब अरोड़ा कहती हैं, "बंबई की तुलना में दिल्ली में मॉडलिंग करना अधिक सुखकर है. वहां तो सिर्फ काम ही काम की पड़ी रहती है."

दिल्ली में इस धंधे के बढ़ने का दूसरा बड़ा कारण टीवी है. शिखा स्वरूप कहती हैं, "टीवी विज्ञापनों ने इस पेशे के प्रति लोगों के नजरिए को बदलने में मदद की है. इसमें जो खुश और भरा-पूरा परिवार दिखाया जाता है उसमें बच्चे और दादा-दादी तक मौजूद होते हैं जिसे विज्ञापनों की विश्वसनीयता और बढ़ जाती है. और अब तो खुद मेरी दादी मां भी मॉडल बनना चाहती हैं."

इस परिवर्तन के कारण मॉडलिंग से कमाई भी कई गुना बढ़ गई है. पहले दिल्ली के मॉडलों को सबसे कम पैसा मिलता था. करीब एक दशक से मॉडलिंग के काम में लगे गुरप्रीत सिंह बजाज के मुताबिक, "कमाई अब छह गुना से भी बढ़ गई है. आज मुझे जिस काम के लिए 10,000 रु. मिलते हैं उसी के लिए पांच साल पहले तक 1,500 रु. मिलते थे." नई मॉडल तीस्का अरोड़ा किसी एजेंसी द्वारा स्वीकृत एक फोटो के लिए 3,000 रु. तक वसूल करती हैं. दो साल पहले तक उन्हें मात्र 1,000 रु. पर संतोष करना पड़ता था.

अब लगता है 'मुकाबले' की अंतिम घड़ी आ गई है. बंबई फैशन और मॉडलिंग का केंद्र होने का अपना पुराना गौरव बचाए रखने में लगी है जबकि दिल्ली सिर्फ राजनैतिक क्रियाकलापों का केंद्र बनकर ही चुप नहीं बैठना चाहती. अब वह देश की ग्लैमर राजधानी बनने के लिए भी प्रयासरत है.

—शर्मिला चंद्रा

Sangotri

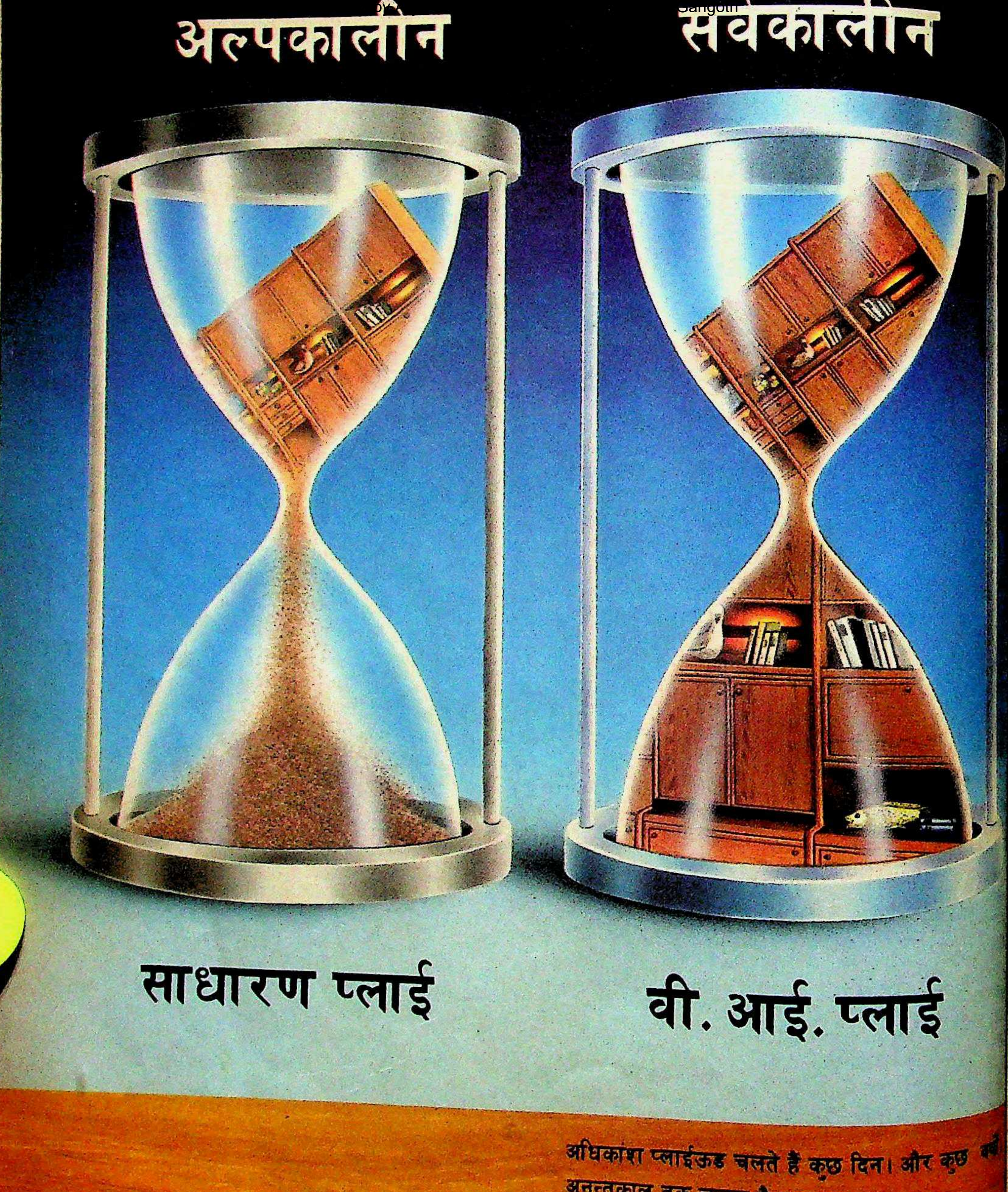
अलपकालीन
सर्वकालीन
साधारण प्लाई
वी. आई. प्लाई

अधिकांश प्लाईऊड चलते हैं कुछ दिन। और कुछ वर्ष
अनन्तकाल तक चलता है एक मात्र-

V.I.PLY

अजर-अमर प्लाईऊड

अरुणाचल फारेस्ट प्रोडक्ट्स लि.

निगम कार्यालय: ४, फेयरली प्लेस, कलकत्ता-७०० ००१ फोन: [illegible]
शाखा कार्यालय: १, [illegible] (प०) बम्बई-४०० ०५६. फोन: ६१४८४१५, [illegible] टेलेक्स: ०२१२५३०
[illegible] ११ बी. बी. गुप्ता रोड

ष्ठ रोग

निवारण की आशा

ए टीके विकसित हो रहे हैं, नतीजे उत्साहवर्धक

क जमाना था जब इसे उतना ही भयंकर माना जाता था जितना आज को. कुष्ठ रोग के जीवाणु का पता लगे साल हो चुके हैं पर वैज्ञानिक अभी इसका टीका नहीं तैयार कर सके.

लेकिन अब कुछ उम्मीदें जगी हैं. और त, जहां दुनिया के सबसे ज्यादा—50 —कुष्ठ रोगी हैं, टीका खोजने की इस में सबसे आगे है. इस समय जिन चार कों का परीक्षण हो रहा है या वाला है उसमें तीन भारत ने विकसित किए हैं.

महाराष्ट्र के तीन जिलों के पीड़ितों को 1987 से टीका या जा रहा है. यह टीका बंबई कैंसर रिसर्च सेंटर ने विकसित या है. उधर राष्ट्रीय इम्यूनोलॉजी तिरक्षण) संस्थान (एनआईआई) विकसित किया गया टीका दिल्ली में लोगों को दिया गया है. मद्रास भारतीय आयुर्विज्ञान शोध परिषद आईसीएमआर) इन दो टीकों के परीक्षण लावा उस टीके का भी परीक्षण रहा है आर्मडिल्लो नाम के बिल में रहने वाले के ऊतकों से बना है. और लखनऊ के य औषधि संस्थान द्वारा तैयार किए गए को भी हरी झंडी मिलने का इंतजार है.

यह रोग धीरे-धीरे बढ़ता है इसलिए की क्षमता साबित होने में वर्षों लग हैं. पर अभी तक जो नतीजे मिले हैं, पता चलता है कि नए टीके कुष्ठ का तेजी से रोक देते हैं. मसलन इम्यूनो- संस्थान के टीके से ऐसे कुष्ठ रोगी के चंगे होने की अवधि दो-तीन साल कम हो जाती है जो कुष्ठ से गंभीर रूप से पीड़ित है. संस्थान के निदेशक प्राण तलवार के अनुसार, "कुष्ठ रोग के टीके का मामला कभी भी इतना उम्मीद भरा नहीं था. शुरुआती नतीजे उत्साहवर्धक हैं पर जीत अभी काफी दूर है."

वैसे यह लड़ाई इतनी आसानी से जीती भी नहीं जा सकेगी. यह रोग फैलाने वाला डंडे के आकार का रोगाणु धीरे-धीरे हमला तेज करता है और चेहरे तथा अंगों के बाहरी स्नायु तंत्र को नाकाम कर देता है. आम धारणा के विपरीत यह जीवाणु अंगों को विकृत नहीं करता बल्कि वे तो संवेदना खत्म होने और दूसरी परेशानियों से विकृत हो जाते हैं.

कोढ़ के टीके के परीक्षण 1939 में ही शुरू हो गए जब यह पता लगा कि क्षय रोग के बीसीजी टीके कुष्ठ रोग पर भी अपना असर दिखाते हैं. पर '70 के दशक में जब इस पर धुआंधार परीक्षण चले तो मिले-जुले नतीजे सामने आए. युगांडा जैसे कुछ देशों में यह टीका कुष्ठ रोग के खिलाफ काफी कारगर रहा पर भारत जैसे कुछ दूसरे देशों में इसके नतीजे अपेक्षित नहीं रहे.

अगला मोड़ '70 के दशक में तब आया जब पता चला कि आर्मडिल्लो कुष्ठ रोग के प्रति अतिसंवेदनशील होता है. इससे संभावना बनी कि इसमें रोगाणु को भारी पैमाने पर रोपा जा सकता है, फिर इनकी विषाक्तता को कम करके मानव शरीर में डाला जा सकता है जिससे शरीर में इस रोग के लिए प्रतिरोधी क्षमता पैदा हो सके. ज्यादातर टीके इसी सिद्धांत पर बनते हैं. आर्मडिल्लो से लिए गए जीवाणु के नतीजे अनियमित मिले पर जब इसे बीसीजी टीके के साथ मिलाकर इस्तेमाल किया जाता है तो आश्चर्यजनक नतीजे मिलते हैं.

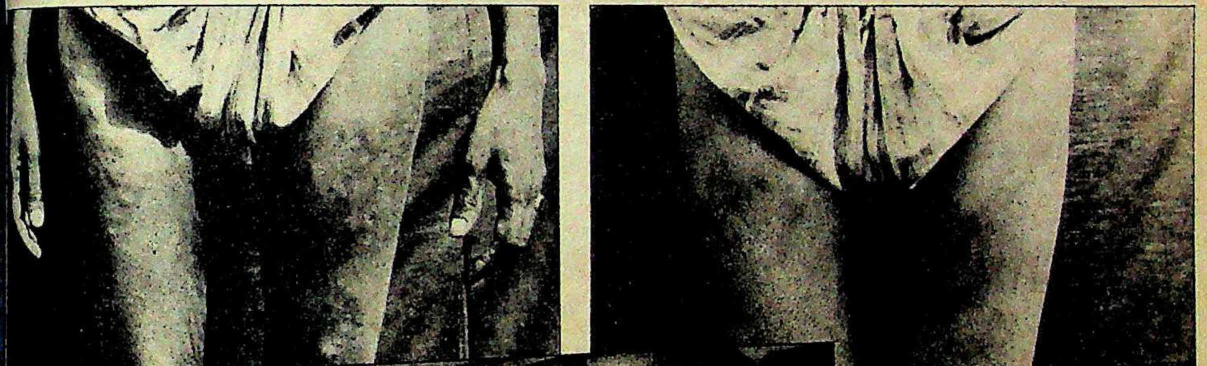

ICRC
BCG + M.leprae
M.W.

(ऊपर बाएं से दाएं) टीका लेने से पहले और बाद; और (नीचे) टीके

इस बीच भारतीय वैज्ञानिकों ने अलग ही रास्ता अपनाया है. उनका शोध इस तथ्य पर आधारित है कि आबादी का एक फीसदी हिस्सा ही इस रोग से प्रभावित है. शोध से जाहिर हुआ कि इन लोगों के भीतर कुष्ठ रोग के जीवाणुओं के लिए प्रतिरक्षण क्षमता कम है. किसी वजह से उनका प्रतिरक्षण तंत्र इस रोग के खतरे को पहचान नहीं पाता. अगर कुष्ठ रोग जैसा ही कोई जीवाणु—जिससे रोग न होता हो—प्रतिरोपित किया जा सके तो इसे टीके की तरह इस्तेमाल किया जा सकता है.

इसी उम्मीद से कैंसर रिसर्च इंस्टीट्यूट ने 1979 में आईसीआरसी नाम के उन जीवाणुओं के साथ फिर शोध शुरू किया जो 1958 में कुष्ठ रोगियों के घावों से निकाले गए थे. वैज्ञानिकों ने पता लगाया कि यह जीवाणु कुष्ठ रोग के विरुद्ध प्रतिरक्षण की क्षमता पैदा कर सकता है. इसी समय इम्यूनोलॉजी संस्थान भी कुष्ठ रोग के जीवाणु जैसे एक दर्जन जीवाणुओं पर शोध कर रहा था. काफी परीक्षणों के बाद उन्होंने

पाया कि माइकोबैक्टीरियम डब्ल्यू से बने टीके से कुछ अच्छे नतीजे निकलते हैं. कैंसर शोध संस्थान के एम.जी. देव के अनुसार, "भारतीय टीकों की खासियत है कि वे बहुत सस्ते हैं और उनका इस्तेमाल इलाज और परहेज दोनों के लिए किया जा सकता है."

होड़ जैसे-जैसे बढ़ रही है, भारतीय वैज्ञानिक आयुर्विज्ञान शोध परिषद से इस बात की अनुमति मांग रहे हैं कि उनके टीके का परीक्षण भी विश्व स्वास्थ्य संगठन के आर्मडिल्लो टीके के साथ ही किया जाए. देव का आरोप है कि परिषद भारतीय टीके को नजरंदाज कर रही है और "दुनिया भर में संदेहास्पद रिकार्ड वाले महंगे टीके को भारत में लाने" की इजाजत दे रही है. मद्रास में परीक्षण के लिए बनी परिषद की कुष्ठ रोग क्षेत्रीय इकाई के प्रभारी अधिकारी एम.डी. गुप्ता इसका खंडन करते हैं, "हमने सभी टीकों को परीक्षण की इजाजत देने का फैसला किया है. अब बेहतर टीका ही जीतेगा."

आखिरी विजेता तय होने में तो वर्षों बीत जाएंगे पर एक अच्छी बात यह है कि इन टीकों में इलाज की क्षमता भी है. लंबे समय से रहस्य बने इस रोग के मामले में यह भी कम खुशी की बात नहीं.

—राज चेंगप्पा, दिल्ली और बंबई में

एड्स गर्ल्स

शक की सजा

चार महीने पहले पार्वती अपनी बेटी वेन्निला के पास रहने के लिए पांडिचेरी से मद्रास आई. लेकिन 21 वर्षीया वेन्निला, जो एक वेश्या है, 1985 से मद्रास विजिलेंस होम में बंद है. वेन्निला के मेडिकल परीक्षण में उसमें एचआईवी-पॉजिटिव पाया गया जिसका मतलब यह था कि उसे एड्स हो गया है. अधिकारियों को आशंका है कि यदि उसे रिहा किया गया तो वह इस रोग को फैला सकती है. सो, उसकी सजा दो साल पहले खत्म हो जाने के बावजूद उसे रिहा नहीं किया गया.

पार्वती अपनी बेटी के रिहा होने का लंबे अरसे से इंतजार कर रही है. उसने मद्रास में घरेलू नौकरानी का काम कर लिया है. जब भी छुट्टी मिलती है, वह विजिलेंस होम जाती है और अपनी बेटी की रिहाई की प्रार्थना करती है. उसने बताया, "हर बार वे यही कहते हैं कि पोंगल के बाद उसे रिहा कर देंगे. लेकिन उसकी सजा खत्म हो जाने के बाद दो पोंगल बीत गए और अभी तक वह मद्रास विजिलेंस होम में बंद है."

वेन्निला एचआईवी-पॉजिटिव वाली उन 20 महिलाओं में शामिल है जो अपनी सजा खत्म हो जाने के बाद भी मद्रास विजिलेंस होम में बंद हैं. वहां के अधिकारी और दूसरे लोग उन्हें 'एड्स गर्ल्स' कहते हैं. अधिकांश सामाजिक कार्यकर्ताओं, मेडिकल विशेषज्ञों और शोध छात्रों के लिए भी वे 'परीक्षण जंतु' से ज्यादा कुछ नहीं हैं. कई वेश्याओं ने मुक्त होने की मांग की है, लेकिन इसके कोई आसार नहीं दिखते. 1988 में कुड्डलूर में गिरफ्तार की गई वेश्या राजेश्वरी गंभीरता से कहती है, "मुझे संदेह ही है कि सजा खत्म हो जाने पर वे मुझे रिहा कर देंगे."

मान्यता प्राप्त स्कूलों और सतर्कता सेवाओं की निदेशक एम.पी. निर्मला कहती हैं, "यदि हम उन्हें रिहा कर दें तो वे फिर वेश्यावृत्ति करने लगेंगी. और उससे यह रोग फैल सकता है." लेकिन एक तथ्य यह भी है कि एचआईवी-पॉजिटिव वाली सभी वेश्याएं एड्स से पीड़ित नहीं भी हो सकती हैं.

पिछले साल अक्तूबर में मद्रास विजिलेंस होम के अधीक्षक ने 'इंस्टीट्यूट ऑफ सेक्सुअली ट्रांसमिटेड डिज़ीजेज जनरल हॉस्पिटल' के निदेशक को चिट्ठी लिखकर पूछा कि क्या इन महिलाओं को रिहा कर दिया जाए. लेकिन अस्पताल की एड्स सतर्कता समिति की बैठक में यह फैसला किया गया कि इन्हें और दो महीने तक बंद रखा जाए.

दो महीने बीत चुके हैं, लेकिन इन्हें रिहा नहीं किया गया. मजेदार बात तो यह है कि सारे डॉक्टर इस बात से कतई सहमत नहीं हैं कि समस्या का समाधान इन महिलाओं को बंद रखना है.

दूसरे लोगों का तर्क है कि एड्स से पीड़ित होना कोई अपराध नहीं है. यह सही है कि वेश्याओं से एड्स फैलने का खतरा ज्यादा है, लेकिन इसके लिए सिर्फ उन्हें ही दोषी नहीं ठहराया जा सकता.

सभी फोटो: के. रवि शंकरन

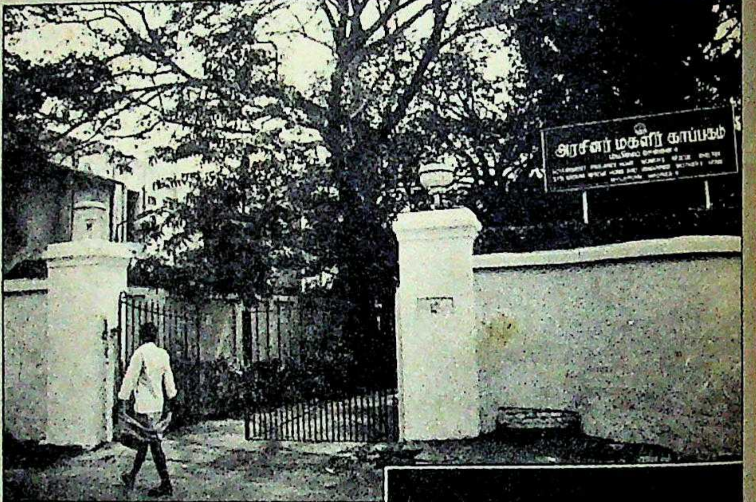

विजिलेंस होम ; और एक बंदिनी

एचआईवी-पॉजिटिव वाली कुछ महिलाओं से आठ महीने पहले मिलने वाली सामाजिक कार्यकर्ता श्यामला नटराज कहती हैं, "जनमत हमेशा उनके खिलाफ ही रहेगा क्योंकि वे वेश्याएं हैं. उनके पास जाने वाले पुरुषों को कभी दोष नहीं दिया जाएगा. क्या सारा दोष सिर्फ उन्हीं के मत्थे मढ़ा जाना चाहिए?" इनकी रिहाई के लिए श्यामला जल्दी ही एक जनहित याचिका दायर करने वाली हैं.

मद्रास विजिलेंस होम में बंद वेश्याओं के लिए यह याचिका आशा की एक किरण जैसी है.

—कविता शेट्टी

आई फिर चुनाव की बेला

देश का दिल दिल्ली इधर दुखी है. आसपास इलेक्शन हो रहे हैं. लगे हाथ राजधानी की विधानसभा का भी हो जाता. चुनाव की अस्थायी संपन्नता के समाजवाद का सुख दिल्ली के बंदे भी भोग लेते. बिहारी भाई "ऊपी" वालों को मुंह चिढ़ाते हैं—

"देखा! सरकार ने कैसा बेवकूफ बनाया आपको!"

"ऊपर वाले ने एक बार बना दिया है. अब कोई क्या खाकर हमें मूर्ख बनाएगा", यूपी वाले ने नाराजगी जताई.

"एक ही बार में निबटा दिया न आप लोगों को. हमारे यहां तो एसेंबली के लिए फिर से वोट पड़ रहा है.

"यही तो फर्क है यूपी-बिहार में. हमने एकबारगी दो सरकारें बदल दीं. आपको फिर मेहनत करनी पड़ेगी."

बात सच है. बिहार में चुनाव की तैयारी कौन आसान है. कहीं कुल पड़े मतों का प्रतिशत दूसरे राज्यों के मुकाबले कम रह गया तो जनता की बदनामी और राज्य के आत्मसम्मान का सवाल है. फिर आम आदमी की सहूलियत का भी ख्याल रखना है. बेचारा खैनी बनाए-खाए कि वोट देने जाए. इसीलिए नए सिरे से बूथ-कैप्चर का अभ्यास चल रहा है. होली के पहले ही बिलकुल होली का माहौल है.

"इस बार कंडीडेट के पास पैसा कौड़ी का टोटा है क्या!"

"क्यों न हो! देश का खजाना जो खाली पड़ा हुआ है."

"भैया! न बिना पेट्रोल के गाड़ी चलती है, न बिना चाय-पानी के चुनाव प्रचार.

"पर आप तो उसूल के नाते उनका समर्थन कर रहे हैं."

"अरे! कैसन असूल. सब पापी पेट की खातिर पैसा वसूल कर रहे हैं. वे जीते तो उनकी टंपरेरी नौकरी पांच साल की है. अपना रोजगार तो कुल जमा पंद्रह बीस दिन का है."

"बस उनको यम.एल.ए. बनने दो. फिर उनके नाम पर पैरवी कर आप दो जून की रोटी की जुगत तो भिड़ा ही लेंगे."

"यही तो दिक्कत है. अब न करप्शन है न 'कमीशन'. क्लीन लोग सीधे खाने-कमाने में यकीन रखते हैं."

इस दौरान सीट और टिकट सत्ता दल और उसके समर्थक दलों में बंट चुके हैं. एक निराश उम्मीदवार नाराज हैं—

"यह सीटों का बंटवारा नहीं बंदर-बांट है."

"अब आप क्या करेंगे."

"हमने रेल को अपना समझकर हमेशा बेटिकट किया है. सियासत में भी सोर्स वाले टिकट ले गए. अब तो अपना राजनैतिक सफर भी बगैर टिकट ही होगा. हम इस चुनाव क्षेत्र के आजाद प्रत्याशी हैं."

"हम एक हैं" के सार्वजनिक कोरस के बावजूद चुनावी दोस्ती की दीवारों में बेहिसाब दरारें हैं. कांग्रेसी मल्लों की टेक है कि वे नेक हैं. उनके एक शुभचिंतक सवाल करते हैं—

"इस बार कोई हो-हल्ला ही नहीं. न सांप-बिच्छु वाले विज्ञापन, न देश को बचाने के धुंआधार भाषण."

"हम चुपचाप कुर्सी की सेवा में यकीन रखते हैं. पिछले आम चुनाव से साबित हो गया है कि जनता को जानवर पसंद नहीं हैं. शोर क्यों मचाएं. जहां मौका मिला, विरोधियों के समझौते की संधि में सेंध लगाकर मैदान मार लेंगे."

"मतदाता का मत जीतने के लिए कोई कार्यक्रम बनाया है आपने?"

"उनका वादा दस हज़ार तक के लोन माफ करने का है. हम उससे दोगुने कर्ज बट्टे-खाते में डाल देंगे. वे सिर्फ अनाज का वसूली मूल्य बढ़ाएंगे, हम हर चीज की कीमत. अंतर बस 'अप्रोच' का है."

"कोई खास फर्क है आप लोगों के दृष्टिकोण में.

"हम होम्योपैथी में विश्वास करते हैं, वे एलोपैथी में."

"राजनीति की चर्चा से आप दवा-दारू पर कैसे पहुंच गए."

"अपने देश की हर परेशानी को मूल से मिटाने के लिए हमने होम्योपैथिक पद्धति अपनाई थी. इसमें मरीज को मीठी गोली देकर पहले मर्ज को उभारते हैं. फिर जब बीमारी असहनीय हो जाती है, उसे जड़ से साफ कर देते हैं."

"आपके इस अभिनव प्रयोग के क्या परिणाम रहे...?"

"यही तो रोना है. हम अब तक गरीबी, बेरोजगारी, मूल्यों, सांप्रदायिकता और कश्मीर में आतंक जैसी समस्याओं को बढ़ावा दे रहे थे. जब तक उनके निदान की बारी आती, हमारी सरकार ही साफ हो गई."

फिलहाल तकरीरों के अलादीन के चिराग को बार-बार जनसभाओं में घिसकर हर नेता अपने सपनों का रामराज्य लाने पर उतारू है. हर दल का ख़याल है कि वह इधर चुनाव जीता, उधर घी-दूध की नदियों का बहना तय है. तय नहीं है तो सिर्फ इतना कि कौन जीतेगा. पिछले चुनावों तक तंत्र-मंत्र और गणित की जोड़-भाग से परिणामों की भविष्यवाणी ज्योतिषी करते थे. हाल की नाकामयाबी से उनका धंधा अब मंदा है. नई पीढ़ी के चुनाव विशेषज्ञ अपने निजी कंप्यूटर पर आंकड़े जुटाकर विश्लेषण में व्यस्त हैं. पुराने चुनावों के आधार पर इस इलेक्शन की नई गेंद जाने किधर 'स्विंग' करेगी. एक दिन का राजा यानी वोटर, किसी भी बड़े आका की तरह, फैसला कर चुका है पर सबको खुशामद का समान अवसर दे रहा है. सिर्फ वही जानता है कि चुनाव के कीचड़ में कमल खिलेगा, चक्र चलेगा या हाथ उभरेगा.

रेखाचित्र: अनिल शर्मा

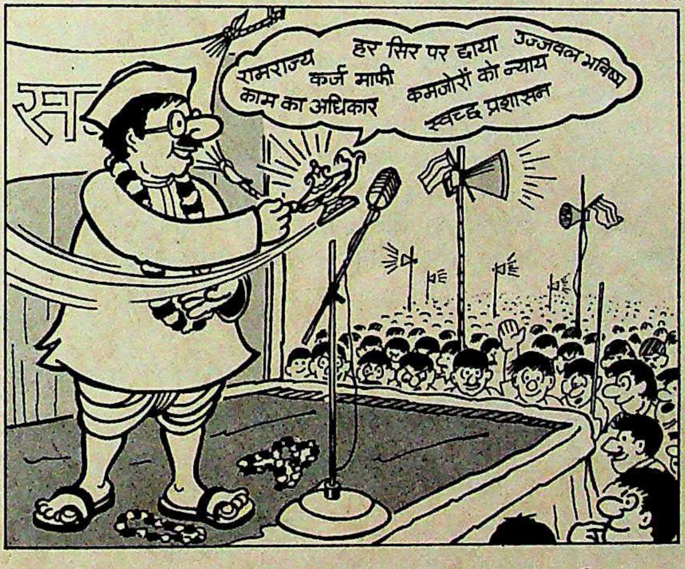

मंजुल भगत

अंतिम बयान

'अनारो' और 'खातुल' जैसे पांच उपन्यासों और छह कहानी संग्रहों की लेखिका मंजुल भगत रचनाएं अक्सर महिला पात्रों के ही आसपास बुनी होती हैं. प्रस्तुत कहानी में महुआ और लम के माध्यम से एक आम हिंदुस्तानी पति-पत्नी के रिश्ते के एक विशिष्ट पक्ष को उघाड़ा गया

"तू भी एक ही डंटैया हो. न कछु देखे न भाले. बस हो गए हमरी टांड पे सवार. आज ऊ सगा कान में कछु टुपक दिया, कल ऊ ठोंग मार दिया, बस हो गया चिल्ला-चिल्ली शुरू." महुआ को आज लमछड़ की डपट कतई सहन न हुई. सो उसने सुना दी.

"त ऊ हमार सगा है कि नांही?" लमछड़ ने उबलकर कहा.

"त हम दिए तो हैं तोहार सगा को भात पसा के, उबला आलू, हरी मिर्चा साथ धर के. अउर का रबड़ी-बसौंधी, दोना-पतोखा में परस के दई? हर बेला बस गाम-भाई, जात-भाई. हमरे हीया नांही? हम तोहार लुगाई नांही?"

लमछड़ चुप मार गया. लमछड़ यानी खूब दुबला-पतला, छड़ी-सा लंबा उसका पति. इसी बुलाकी नाथ इस्टेट में सुबह-शाम मोटरें धोता है. कपड़ा मंडी के थोक व्यापारी पोशाकीमल ने रहने को क्वाटर दे रखा है. पोशाकीमल की गद्दी चौक में है. कई पार्टनर हैं और कई मुनीम. सबकी गद्दियां बड़े हाल में जमीं हैं जिसे सब 'कोठी' पुकारते हैं. लमछड़ वहां माल की गांठें बंधवाता है. फिर माल ठेलों पर भी उसे ही लदवाना होता है ट्रांसपोर्ट तक पहुंचाने को, बाहर शहर ले जाने को. कोई एक काम है 'कोठी' में? ऊपर की मंजिल पर तो बिस्तरे और उस्तरे, सब तैयार रखने पड़ते हैं. बाहर शहर से आए व्यापारी रात-बिरात ठहर जाते हैं.

उधर दिन भर गद्दी पर भांति-भांति का खान-पान चलता रहता है, व्यापारियों की खातिर में. कभी लमछड़ गली से हलवा-नगौरी का परोसा लेने दौड़े तो कभी खोमचा-चाट. सब उसी 'कोटर' की महिमा है जो पोशाकीमल ने काम के बदले उसे दे रखा है.

भौजी आप तो बैठी हैं, गांव-खेत सहेज के और इन दोनों को छत-छाजन के बाहर ला खड़ा किया, कि जाओ शहर में कामकाज खोजो. क्वाटर का सुराग पड़ते ही मेला भरने लगा उनकी कुठरिया में. सबसे अव्वल तो भौजी ने अपने भाई को ही भेज दिया. सब खा-पी के, खेस-कंबल ले के 'कोटर' की अगाड़ी पड़ जाते हैं. उनकी रोजी-रोटी का जुगाड़ लमछड़ को ही करना है. इतने जवां-मर्दों के मांडे थेपना बड़े कसाले का काम है. सो, किलसती है महुआ.

अब इहां लमछड़ भी तो जाके बाहर गांव-भाइयों में सो रहता है. एक रोज महुआ ने पांव की पाजेब दीवार पे दे मारी. तो आवाज़ सुनके उसका छोटा-सा देवर, नान्हरिया ही भीतर दौड़ा आया और उसकी बगल में सो रहा. एक चादर में शीत काटती महुआ ने चादर भी देवर पर डाल दी. बिन-मां का उसका यह नन्हा देवर उसका लाडला है. सत्यनारायण की कथा के लिए भूना, आटे-बूरे का घना सारा कसार वह अपने इस देवर के लिए बचा रखती है.

लमछड़ को तो अपनी ही औरत जैसे दिखलाई ही नहीं पड़ती. बस रोटी पोने, भात पसाने की लाल-हरी चूड़ियां पहने कोई मशीन हो जैसे. भात में कोई कंकर-कुर हुआ तब उसे औरत मानके बतियाना जाता. वह भी कैसे, दूर से उछल-उछल मोटरिया के भोपू माफ़िक हुआं-हुआं क जिससे सबको पता चल जाए कि कोई म अपनी जोरू को बरज रहा है.

महुआ ऐसा नहीं चाहती. वह चाहती कि उसका आदमी उसमें खोट भी निकाले नजर की आंच में, धीमे-धीमे, बतकही गुलगुलों के बीच. पर लमछड़ को तो गां भाई पोसने से फुरसत नहीं. सुधड़ भलाई चाहिए.

फिर, पकाना-जिमाना, खाना-खिडा उसी ढब पर आ गया. लमछड़ की नजर ज्यों महुआ हो ही ना. आया, रोटी मांगी बैठ गया पंगत में आलती-पालती मार कुल्ला किया और पड़ गया खटिया पे, व

महुआ चाहती है कि उसका आदमी उसमें खोट भी निकाले तो नजर की आंच में, धीमे-धीमे, बतकही के गुलगुलों के बीच. पर लमछड़ को तो गांव-भाई पोसने से फुरसत नहीं

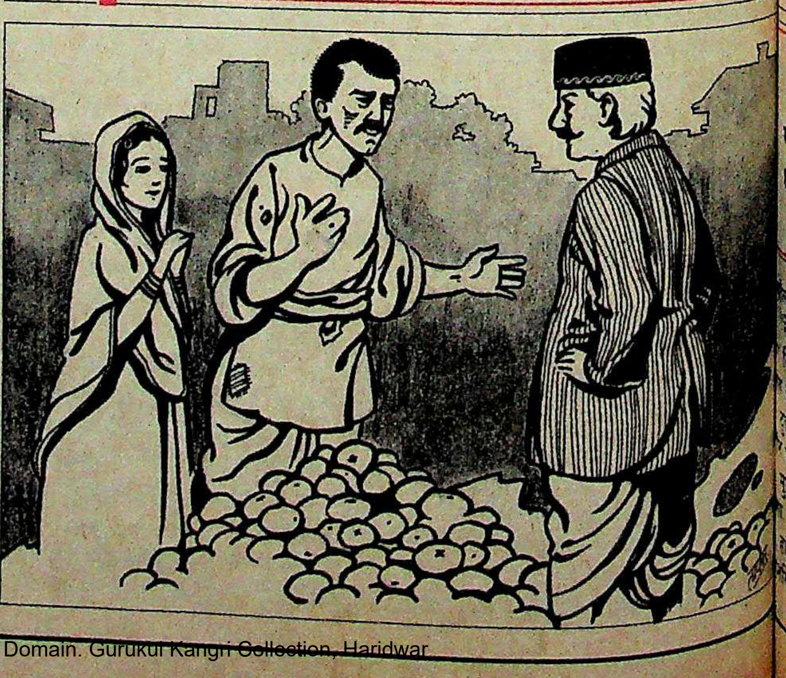

फिर मुनक्का पड़ा हो कि टुइयां, उसे खर्राटों से मतलब.

र एक रोज महुआ ही नए सिरे से उठी.

"मको एकै ठो किरासिन का इश्टोव ओ. लक्कड़ धुआंता है. हमरी आखिन लाती हैं."

"रे, भौजी तुहू को कौन समझा दिया रे, का मामला?" टुइयां कौर मुख में खी-खी कर उठा. पंगत में बैठे, जीमते ड़ का सीना घरवाली की इस मांग पर जैसे कुछ फूल उठा.

"हां, हां, लाय देब, लाय देब," उसने दिया. कुछ देर फिर सबमें नए के नए सामान को लेकर गप्पबाजी हो और एक रोज़ लमछड़ ने मिट्टी के तेल टोव ला पटका और खीस निपोरकर करने लगा.

, औरत जात. आज हम इश्टोव ला के है, कल को बरफ की अल्मारी न बइठे ससुरी."

भगा गया राशन की दुकान पर कनस्तरी मिट्टी का तेल कटा लाया. का बटर-बटर .भोजन बनते देखने भर-जोश से धूं-धूं जलने लगा. में कलछुल चलाती महुआ ने से देखा, उसका आदमी उसे भरपूर नजर देख रहा है.

खा-पीकर सब एक-एक कर खिसकने लगे. लमछड़ अब भी जोरू के इर्द-गिर्द मंडराता रहा. महुआ दम साधे रही, कहीं बेसब्री से आदमी अकबका के भग न ले. इतने में लमछड़ हुमचकर उकड़ूं बैठ गया और झपट कर मुट्ठी में स्त्री की बाह भींच ली. बस तभी हांका-सा पड़ गया. बाबू थे. बिन सांस काढ़े चिल्लाते ही गए, मानो यम ने जकड़ रखा हो, और लमछड़ आके छुड़ावेगा. दौड़ा लमछड़, और दिखते ही गद्दी पे पठा दिया गया. बाहर शहर का व्यापारी आ गया था. उसका नहाना, खाना-सोना होना था. जब तक लमछड़ बाबू का कच्चा चिट्ठा हाथ में लिये थका-हारा लौटा, क्वाटर के सामने खर्राटों और करवटों का घेरा था. वह भी उसी में घुस कर ढेर हो गया.

सभी रेखाचित्र: तापस

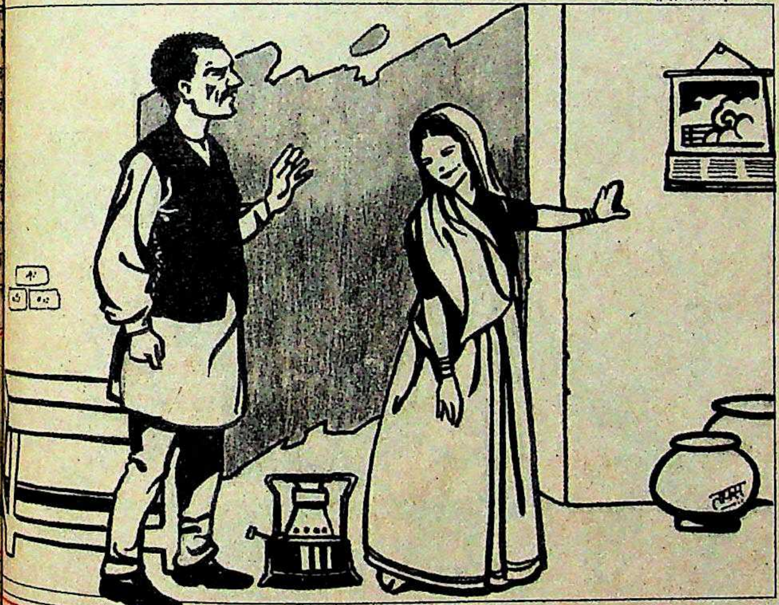

एक रोज लमछड़ ने मिट्टी के तेल का स्टोव ला पटका और मखौल करने लगा, "ले, औरत जात. आज हम इश्टोव ला के धर दिए हैं, कल को बरफ की अल्मारी न मांग बइठे ससुरी"

अगले रोज लमछड़ गद्दी पर से कचौड़ियां लेने गली में उतरा तो अपनी अंटी भी खोल आया. उसने छींट की एक जनाना धोती खरीदी और मैल-खोर रंग का नाइलोन का पेटीकोट. धोती ऐसी, मोटे सूत की कि पहनने वाली की उम्र बीत जाए पर धोती न फटे और पेटीकोट का रंग धुआं-धुआं सा, धुले न धुले, एक ही सा. सांझ को लाके बंडल उसने घरवाली के सामने ला पटका जात-भाइयों के बीचोबीच. पर रात को मारे झेंप के वह बाहर ही पड़ रहा.

भला-सा सबेरा हुआ. सब इधर-उधर चले गए तो महुआ नहाई. छींटा-छपाका नहीं, सच में नहाई. मल-मल के चिकनी मूरत-सी काया निकल आई. नाइलोन का नया पेटीकोट और साड़ी पहनी. कोरा कपड़ा और सुथरा तन, दोनों गमकने लगे.

अब रसोई करेगी महुआ जी-जान से, ऐसी कि आलू-टमाटर और सोंधी रोटी की महक बाहर से ही उसकी नाक पकड़ ले. भूले न कभी, आज का पकाया-पचाया. भाजी पका डाली, रसदार-झालदार.

रोटी पोते तो उसे अपने आप रिझाने लगा. रोटियां बेलते चूड़ियां हंसने लगीं. तवे पर पड़ें, तो फिर से झन्न. रोटी फुला-फुला के वह भू पे पटक, घी चुपड़े और सर्र से कटोरदान में खिसका दे. "आज तो मांडे बड़ी मौज में सिकते जाएं हैं, आप से आप. गोल-गोल, सोंधे-सोंधे." उसने साड़ी का साया घुटनों तक लेकर कमर में खोंस लिया.

"रामा रे! आज रसोई करत जी न अघात." वह हंसने लगी और बीन-धो, भात भी चढ़ा दिए. रसा-रसा तरकारी में भात खूब रचेगा.

"ऐल्लो. इश्टोव झपक-झपक सोने लगा. हे रे भाई, निंदासा है का रे? पेट नहीं भरा ना का?" उसने लाड़ से नए स्टोव को उकसाया और पंप मारना शुरू किया. जल्दी-जल्दी, तेज-तेज.

"मुनक्का कहत रहा कि पिन से कुरेद दओ बस इश्टोव नखरा छोड़ भक्क-भक्क जल परे." वह पटरा खिसकाकर पिन खोजने लगी.

कैसा गुप्पा-चुप्पा बखत है. बीबी जी का बाजा साफ सुन पड़ रहा है,—

"लाडो मेरी ने यूं कहियो जाए,
सावन में लूंगी बुलाए."

पल भर को महुआ की आंखों के सामने महतारी का भोला चेहरा घूम गया. फिर वह दांत तले अंचरा दबाकर हंस पड़ी धत! भरतार को पोई-खिलाई की न्यारी मौज है. पिन भी मिल गया. राम जी, आज उसका आदमी ही पहलो-पहल आवे.

भक्क से स्टोव जल उठा और भात समेत हंडिया निगल गया. भट्टी का मुंह खुल पड़ा हो जैसे. अब आग, लप-लप करके महुआ का पेटीकोट चाट रही थी. वह एकदम से खड़ी हो गई और घबराहट भरी रुलाई के साथ नाड़े की गांठ खोलने लगी. वह उलटे और कस गई. पेटीकोट तन पर गरम, पिछले मोम-सा चिपटता गया. उसने साड़ी खींच नीचे छोड़ दी और घबराकर देखा. पेटीकोट बचा ही कहां था, बस मुट्ठी भर नाड़े से लटका पड़ा था. पर आग अब भी सुर्र-सुर्र नाड़े पर चल रही थी. आग छाती की तरफ बढ़ रही थी. उसने हाथ बढ़ाकर टोंटी खोलनी

चाही. वह सूं-सूं की आवाज़ के साथ सुन्न खड़ी रही. महुआ के बदन में चिनगारियां लहक रही थी. 'मइया री ऽऽ!' वह जोरों से चीखी और फिर चीखती ही चली गई. उसकी चीखें बीबी जी के कमरे में गीत के बोलों के बीच, ढोलक की खाल के आरपार हो रही. बीबी जी एक झटके से उठ बैठीं.

'लाडो मेरी ने यूं कहियो जाए' के बीच बकरा-सा कैसे कटने लगा? वह चीख की दिशा समझने का प्रयत्न करने लगी. बकरा हल्कान-सा डकराए चला जा रहा था.

और महुआ जल मरी. पर, अभी मरी कहां? वह तो पूरे होश में थी. अपने नंगे, बेआबरू बदन पर पड़े, गेंद भर बड़े फफोलों को साफ देख पा रही थी. सड़े मांस की दुर्गंध सूंघ पा रही थी. मुट्ठी भर पेटीकोट नीम तले राख-सा पड़ा था. साड़ी काई लगी तलैयासी भू पे पसरी थी.

सबसे पहले भौजी का भाई पहुंचा था. पल भर तो वह महुआ की उसांसे भरती हांफती काया को एक टक घूरता रह गया था. उसके बदन पर जलने को कुछ बाकी न बचा था! चुटिया का लाल रिबन और आधे बाल जल चुके थे. वह अब भी हथेलियों से थप-थप कर आग बुझा रही थी. भौजी के भाई ने देखा, उसके वक्ष का ऊपरी भाग, गरदन और चेहरा आग से अनछुआ रह गया था. तभी टुइयां भी पहुंच गया. उसने लपककर भीतर से चादर ला, महुआ का तन ढंकना चाहा, पर वह तड़प उठी. मुनक्का और नान्हरिया एक साथ पहुंचे. दोनों ने तानकर चादर का परदा किया और शोर मचाने लगे. "दौड़ो-दौड़ो—बचाओ—आग—आग—आग!"

अब जाकर बीबी जी दौड़ीं, ठीक उठते शोर की सीध में.

पोशाकीमल की गाड़ी भी तभी बुलाकीनाथ इस्टेट में दाखिल हुई. देखा, चादर का परदा तना है. उसके पीछे से लमछड़ की बहू गरदन उठाकर जख्मी हिरनी-सी इधर-उधर ताक रही है. आंखों की पुतलियां घूम-घूमकर किसी को खोज रही हैं. एक छोटी भीड़ जमा हो रही है.

पोशाकीमल गाड़ी से कूदकर पत्नी के समीप जा खड़े हुए.

"अरे रे. क्या हो पड़ा? यहां, ऐसे कैसे खड़ी हो तुम?"

"ऐसे मैं खड़ी हूं? यह देखो तुम्हारे नौकर की बीवी पूरी की पूरी जल गई," पत्नी ने बताया.

"किसने जलाई? कैसे जली? अस्पताल ले के चलो फौरन, सेठ की मोटर में," भीड़ भिड़ों के छत्ते की मानिंद गुन-गुन करने लगी. पोशाकीमल ने अपने को घिरा पाया.

"अरे, रामभजन इसे गाड़ी में अस्पताल पहुंचा आओ फौरन," उन्होंने आदेश दिया. महुआ की साध-भरी आंखें भरपूर सेठ के चेहरे पर टिकी थीं.

"मोरे राजा को बुलाय देव," वह फुसफुसाई. पोशाकीमल हकलाते से पीछे को हट गए. "अरे इसके आदमी को बुला लाओ, कोई!" उन्होंने कहा.

"अरे इसे कुछ पहनाओ तो सही," किसी औरत ने कहा. बीबी जी का दिमाग कौंधा. वह दौड़ी गईं और अपने पहनने का ढीला-ढाला गाउन उठा लाई. महुआ के होश उसकी साध के साथ और पैने हो गए थे.

"हमरा आदमी?" उसकी नजर की सीध में पड़ी बीबी जी भी 'हां-हां' हकलाने लगीं. मोटर चल पड़ी. टुइयां और मुनक्का

"कौन है महुआ का आदमी?"

लमछड़ हाथ जोड़े सामने आ गया. ही गया कि एक गैर मर्द उसकी औरत नाम ले रहा है. वह लमछड़ की बहू है न वह महुआ का आदमी.

"यह हादसे के वक्त मौके पर उन्होंने बीबी जी से पूछा.

"बिलकुल नहीं."

"किसी ने इसे हादसे से जरा पहले बाद में यहां से भागते तो नहीं देखा?"

"जी नहीं," सबने एक सुर होकर

"फिर यह कहां था?"

"सेठ की गद्दी पर," बीबी जी बोली.

"जी हां था," सेठ ने हामी भरी.

आग छाती की तरफ बढ़ रही थी. महुआ के बदन में चिनगारियां लहक रही थीं. 'मइया री ऽऽ!' वह जोरों से चीखी और फिर चीखती ही चली गई

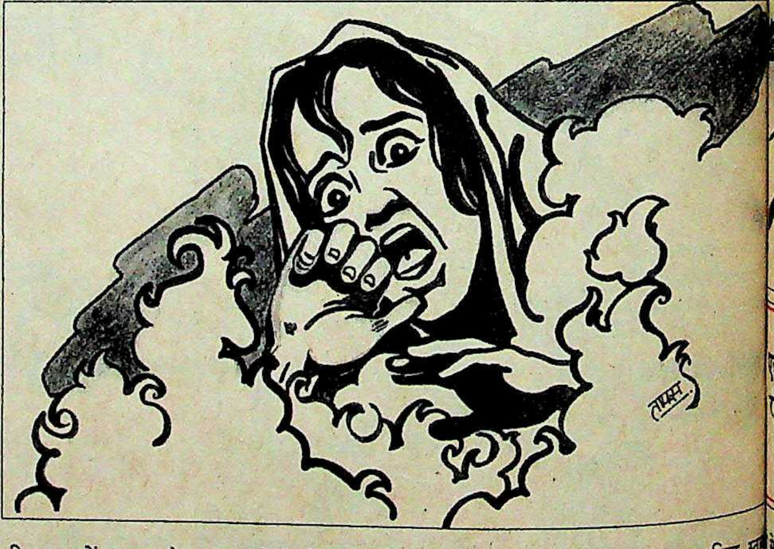

भी साथ में गए, और एक और औरत भी.

लमछड़ के घर पहुंचने से पहले ही पुलिस-वैन इस्टेट में दाखिल हो चुकी थी. बीबी जी पहला बयान लिखवा रहीं थीं, एफआईआर यह उनके जीवन का प्रथम महत्वपूर्ण बयान था. कोठरी के भीतर और आसपास के अनेक चित्र लिए जा रहे थे. बुझा हुआ स्टोव, धरती पर फैली साड़ी, मुट्ठी भर पेटीकोट की अहम भूमिका थी.

पोशाकीमल रह-रहकर पत्नी को घूरते कि इतना अधिक बक-बक मत किए जाओ. जाने कौन-सी कील पे पुलिस उन्हें और उनके बयान को फंसा दे. बातों के भी तो कच्चे खाते होते हैं.

महुआ का नाम-पता दर्ज होने के बाद एस.पी. साहब दरयाफ्त करते हैं:

लमछड़ मुंह बाये खड़ा था, चकित, रोटी पोती औरत की इतनी बड़ी

"इसके पीहर से मां-बाप-भाई, किसी भी लेकर आओ, उनका बयान जरूरी एस पी साहब एफआईआर पर करवा के फाइल बंद करके बोले.

"बाप नहीं है हुजूर"—भौजी का बोल पड़ा. "बाकी दूर गाम रहते हैं," जोड़ा.

"दूर गाम के बच्चे, सब घर लिये उनमें से ही किसी को आकर कहना है उनकी लड़की यहां सताई नहीं गई, पीटी नहीं जाती रही. बिना बच्चे औरत के साथ और भी झंझट है. अभी कटा के चले जाओ कोई."

"साब, ये इत्ते लोग, हम सब

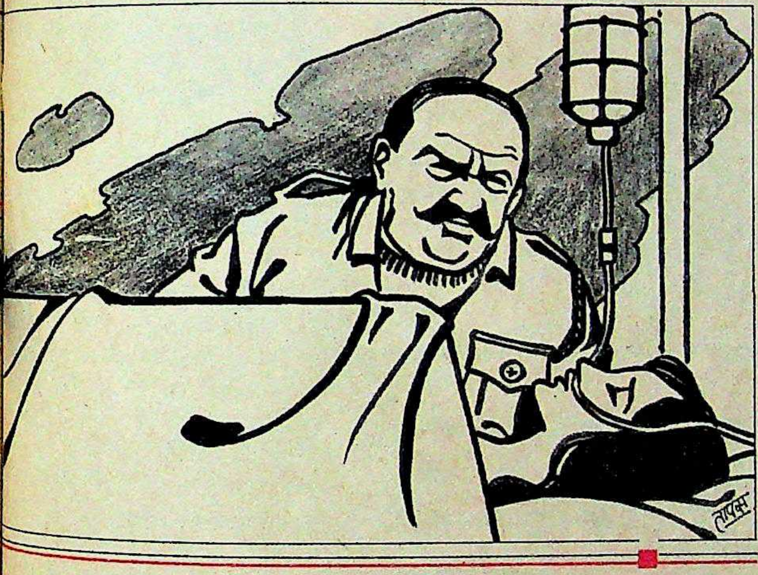

एसपी साहब अपनी खीझ लमछड़ पर उतार रहे थे, जैसे चाह रहे हों कि जली हुई औरत उसकी ओर बस उंगली भर उठा दे और वह फांय से उसे धर पकड़ें

कहत हैं कि लमछड़ अपन अऊरत नांही सताया," भौजी के भाई ने तरफ से कहा.

प. तुम सब महुआ के ससुरालिए हर वाला चाहिए."

चुप. औरत जब जली तब ऐसा नहीं खिंचा जैसा कि अब.

एसपी साहब चले गए तभी वह टूटा. टुइयां और मुनक्का, महुआ को करवा लौट आए थे और लमछड़ को समझाकर भेज दिया था वहां. ही तय पाया कि अब बैठकर वे रोटियां जाएं जो महुआ पो गई है. अन्न तो अन्न है. नान्हरिया अभी बच्चा है,

सूखे मुंह बैठा रहा. फिर सलाहकर जोड़-जाड़कर तोताराम को महुआ भेज दिया गया.

मुंह लटकाए वापस आ गया. बोला, आत्ते."

?" सबने पूछा.

कै दई हमने बेट्टी दान कर दई, फूको चायें जिताओ."

इसमें चाल है. बाद को मौका पीटेंगे लमछड़ को," भौजी का भाई मुद्रा में बोला.

कुछ नांही. नांवा खरचने का से नांही आएं."

में महुआ, शीशे के बक्से के पड़ी थी. शीशे पर कपड़ा फैला कर्तव्यनिष्ठ, प्रेमी-पति की तरह, घबराया-सा भू पे बैठा था. उसके हाथ बार-बार प्रणाम की मुद्रा में अधजली लाश की ओर उठ जाते, जैसे वह वरदान देने वाली कोई देवी हो.

एसपी साहब महुआ को उकसा रहे हैं, "हां तो बोलो महुआ देवी, घबराओ नहीं, सब सच-सच कहो."

फिर राज फोड़ने की नरम आवाज में बोले "कोई तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता. हम हैं न?"

महुआ ने पुलिस की वर्दी को कतई अनदेखा कर, लाचार, चाव भरी नजर से पति की ओर देखा.

"मोरे राजा," वह फुसफसाई. ऐसी पिघलती आवाज, जैसे जलती मोमबत्ती बोल पड़ी हो. लमछड़ ने घबराकर एसपी साहब की ओर देखा.

"यह कोई बयान नहीं हुआ," उन्होंने कहा. "बयान दो जल्दी करो महुआ." एसपी साहब फिर सख्ती पर आ गए.

लमछड़ स्तब्ध था. उसकी घरवाली या कहो चूल्हे-चौके वाली अचानक एक अजूबा बन गई थी जिसकी चलती सांस का एक-एक पल अनमोल हो गया था और बोल पड़े तो एक-एक बोल लाखों का. उधर, एसपी साहब अपनी खीझ लमछड़ पर उतार रहे थे, जैसे चाह रहे हों कि जली हुई औरत उसकी ओर बस उंगली भर उठा दें और वह फांय से उसे धर पकड़े और कर दे अंदर.

लमछड़ के क्वाटर में छोटी-सी बिरादरी जमा हो चुकी थी. भौजी का भाई उनका मुखिया बना बैठा था.

चार ईंट जोड़ के बनाया गंवई चूल्हा जल रहा था. किरासिन का स्टोव भूत की परछाईं सा एक कोने में पड़ा था. सब पकाते-बनाते बतिया रहे थे. मगर बहुत डरे-धीमे.

"लहास तो छूट गई भइया, अब दाह फौरन करे का परे." भौजी का भाई बोला.

"का दाह करिहो अब. पहले ही जल-फुंक गई." मुनक्का बोला.

"अरे करेका तो परी, नांही ते भूत ना डोलत फिरी?" भौजी के भाई ने डपटा.

"अब, लमछड़ आ जाई थाना से तो मरघट चला जाई."

"लमछड़ थाना काहे गया?"

"हम कहा. बहू बयान जो दिया, ओही का फोटू खेंचा लाने को" भौजी का भाई बोला.

इतने में लमछड़ बयान की फोटोकापी हवा में लहराता आ पहुंचा. उसे एसपी साहब ने खुद बयान पढ़के सुनाया था. वह कागज सामने कर यों बोलने लगा ज्यों पढ़ के बता रहा हो, "ई मां लिखा है कि, ऊ बोली के हमार मरद ऊ बखत इश्टेट मां नांही था. अऊर, ऊ हमकू बहौते चाहता रहा. नवा पेटीकोट अऊर साड़ी ऊ ही लाए के दिया रहा. ऊ हमें अपन बच्चे का माफिक चाहता रहा, साहेब."

आखरी जुमले पे लमछड़ एकदम से रीझ गया. उसी दरियादिली में उसने महुआ को सुहाग बख्शा. बोला, "सुनो, लहास जमना किनारे पहुंच गई हुई. हम सैंदूर-चूड़ी, सिंगार-साड़ी सब नवा मोल लाए हैं. पहिले दुलहिन का मुख धुलाया जाई. दो-एक अऊरत लोग साथे चली. ऊ का कपड़ा-लत्ता पहिराके, बेंदी-चूड़ी पहिराये का परी."

भौजी का भाई इस्टेट की दो-चार औरतों को इकट्ठा करने लगा तो बोल सुन कर बीबी जी हाथ में एक नरम दुशाला लिये चली आईं, "लो लाश पर डाल देना."

"देखो महुआ का भाग. जाड़ा सूती चादर में बिता दिया और मरते ही दुशाला पा गई," औरतों ने कहा.

लमछड़ को अंतिम बयान की कापी क्या मिली, वाणी मिल गई. बोला, "दाह के बाद में सबहीं गाम जावेंगे जहां भर बिरादरी जिमावेंगे. ऊ का नाम पे हम खुदै पोवे-बनावेंगे और पंडत-पुजारी जिमावेंगे."

"अरे! पुरनिया बंस की बहू मरी है तिस पर सुहागन."

महुआ के बासी जले बदन पर छींटा देकर उसके माथे पर बिंदी सिंदूर कर जब औरतों ने लाल किनारी का पल्ला कर दुशाला डाल दिया तब लाश चकाचक सुहागन लग रही थी. लग रहा था लमछड़ ने उसे सुहाग नहीं, महुआ ने ही उसे मर्दानगी बख्शी हो.

रंगमंच

नखलिस्तान की कल्पना

भारतीय रंगमंच के संघर्ष और जिजीविषा का अनूठा दस्तावेज

एक ऐसे समाज में जहां नाटक देखने की 'एय्याशी' सीमित वर्ग के घेरे में बंधी हुई हो और नाटक लिखने-खेलने का 'जोखिम' उठाने वालों की बिरादरी भी उंगलियों पर गिनी जाने काबिल हो वहां नाटक के बारे में पढ़ने वालों की संख्या का अंदाज लगाना बहुत मुश्किल नहीं होना चाहिए. लेकिन इन सीमाओं के बावजूद नाटक के क्षेत्र में होने वाले बदलाव को कलमबद्ध न करना ऐसी जोखिम होगी जिसे उठा पाना कोई भी भाषा गवारा नहीं कर पाएगी—कम-से-कम हिंदी भाषा. के लिए तो यह असंभव होगा.

पिछले पखवाड़े भारतीय रंगमंच की इकलौती पत्रिका 'नटरंग' के पचासवें अंक का विमोचन यह एहसास दिलाने के लिए काफी था कि भारतीय रंगधारा के प्रवाह को दर्ज करने के प्रयास जारी हैं—लड़खड़ाते हुए ही सही. पिछले 25 साल के अपने प्रकाशन काल में कभी छपने और कभी अचानक गायब हो जाने वाली इस त्रैमासिक पत्रिका का यह अंक पूरी तरह हिंदी रंगमंच को समर्पित है. हालांकि तकनीकी तौर पर यह एक पत्रिका का एक अंक है लेकिन इसमें प्रकाशित सामग्री की मात्रा और उसका स्तर इसे उन कई किताबों के मुकाबले बेहतर दस्तावेज की श्रेणी में रखने लायक बनाता है जो रंगमंच से संबद्ध विषयों के बारे में कभी-कभार बाजार में आती रहती हैं.

लगभग 200 पन्नों की यह सामग्री मोटे तौर पर सात खंडों में विभाजित है. 'रंग-संवाद' के तहत तीन खंडों में भीष्म साहनी, मृणाल पांडे, त्रिपुरारी शर्मा, हबीब तनवीर, उत्तरा बावकर, राजिंदर नाथ और बंसी कौल जैसे 13 चर्चित नाटक लेखकों, अभिनेताओं और निर्देशकों के साथ भेंटवार्ताओं तथा उनके लेखकों के माध्यम से हिंदी रंगमंच की मौजूदा हालत की चर्चा की गई है. आरंभिक खंड में भी अशोक वाजपेयी, असगर वजाहत, ए.के. हंगल, ओम शिवपुरी, कुंवर नारायण, प्रसन्ना, भानु भारती और रमेशचंद्र शाह जैसी 23 हिंदी व गैर-हिंदीभाषी हस्तियों के वक्तव्य रंगमंच तथा संगीत, साहित्य और नृत्य के आपसी रिश्तों पर केंद्रित हैं. एक और खंड में रघुवीर सहाय, जयदेव तनेजा, मदन सोनी तथा वसंत देव के लेखों के माध्यम से नाटक की भाषा और बोलियों के सवाल पर गंभीर बहस शामिल की गई है. इनके अलावा नटरंग के संपादक और रंगकर्मी नेमिचंद्र जैन ने पत्रिका का इतिहास बताने के रास्ते हिंदी रंगक्षेत्र की खस्ता हालत का बयान भी इसमें शामिल किया है और सुधीश पचौरी, सुरेश अवस्थी तथा कमलेश दत्त त्रिपाठी जैसे बुद्धिजीवियों के लेख भी. एक खंड में 78 नए-पुराने चुनींदा नाटकों के छायाचित्र भी अपनी अलग हैसियत रखते हैं. पत्रिका के अंत में महेश आनंद ने नटरंग के पिछले सभी अंकों में छपी सामग्री की सूची दी है जो पूरे नटरंग को ही संदर्भ ग्रंथ जैसा दर्जा उपलब्ध कराती है.

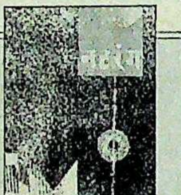

नटरंग (पचासवां अंक)
संपादक/प्रकाशक: नेमिचंद्र जैन
आई-47, जंगपुरा एक्सटेंशन,
नई दिल्ली-14
पृष्ठ: 236, कीमत: 30 रु.

> **जहां नाटक देखने वालों की ही निरुत्साहित कर देने वाली उपस्थिति हो वहां नाटक-रंगमंच के बारे में पढ़ने और लिखने वालों की कमी होना आश्चर्य की बात नहीं**
>
> —इसी किताब से

कुल मिलाकर इस अंक में लगभग 50 प्रतिष्ठित रंगकर्मियों या संबंधित कलाओं से जुड़े लोगों के विचार प्रस्तुत किए गए हैं. लेकिन जैसा कि स्वयं संपादक ने भी स्वीकार किया है, इनमें से अधिकांश दिल्ली में सक्रिय लोग ही हैं. संपादकीय के अनुसार केवल आरंभिक खंड के लिए ही 70 लोगों से लिखने का आग्रह किया गया था पर उनमें से केवल 23 लोगों ने ही अपने वक्तव्य भेजे. ऐसे में नटरंग के 'स्वयंसेवकों' ने हड़बड़ी में ऐसे कुछ प्रतिष्ठित रंगकर्मियों के साक्षात्कार लेकर इस कमी को पूरा करने की कोशिश की जो दिल्ली में उपलब्ध थे.

मगर इन कमियों के बावजूद यह विशेषांक हिंदी रंगमंच के प्रति नाटक, रंगमंचीय कलाओं तथा साहित्य से जुड़े लोगों की आशा (कुंवर नारायण) और निराशा (भानु भारती), प्यार-दुलार (अशोक वाजपेयी) और तिरस्कार (कैलाश पंड्या), आत्मविश्वास (प्रसन्ना) और विवशता (ओम शिवपुरी), सार्थक आलोचना (प्रतिभा अग्रवाल) और कड़वाहट (एम.के. रैना) तथा घोर आदर्शवाद (ए.के. हंगल) का जो सोंधा पुलाव परोसता है वह केवल हिंदी के ही नहीं बल्कि पूरे भारतीय रंगमंच की जिजीविषा को जाहिर करने के लिए काफी है.

इसके अलावा अलग-अलग भेंटवार्ताओं और लेखों के माध्यम से नटरंग में ऐसे कई सवाल उठाए गए हैं जो न सिर्फ रंगमंच, विशेषकर हिंदी रंगमंच, की अंदरूनी हालत का कच्चा चिट्ठा पेश करते हैं बल्कि इस हालत के लिए जिम्मेदार चिरपरिचित कारणों पर भी फिर से सोचने को उकसाते हैं. उदाहरण के लिए सुधीश पचौरी ने अपने लेख 'सिर्फ दर्शक होने से क्या होगा' में रंगकर्मियों की खबर लेते हुए उन्हें अपने गिरेबान में झांकने के लिए अच्छी तरह लताड़ा है. नाटक की भाषा के मुद्दे पर भी रघुवीर सहाय, जयदेव तनेजा और वसंत देव ने उस बहस को आगे बढ़ाया है जो फिलहाल अधूरी है. इसी तरह मदन सोनी समेत कई रंगकर्मियों ने नाटक पर निर्देशक के जरूरत से ज्यादा हावी हो जाने और दूसरे रंगकर्मियों को एकदम गौण रख छोड़ने के संकट को भी फिर से उघाड़ा है.

इस विशेषांक के लोकार्पण के साथ-साथ नेमिचंद्र जैन ने ब.व. कारंत, नामवर सिंह, सोनल मानसिंह और भास्कर चंदावरकर समेत दिल्ली की रंगमंच बिरादरी की उपस्थिति में 'नटरंग प्रतिष्ठान' की स्थापना की भी घोषणा की. विशेषांक में प्रतिष्ठान के उद्देश्यों की चर्चा करते हुए बताया गया है कि इसके माध्यम से रंगमंच, साहित्य, कला और दूसरे संबद्ध विषयों पर अनुसंधान, प्रकाशन और विचार-विमर्श को प्रोत्साहन दिया जाएगा. है. यदि ऐसा है तो रंगमंच के मरुस्थल में नखलिस्तान की कल्पना का हर कोई स्वागत करेगा.

—विजय

ने ही अप
के 'स्वयंसेवकों
ठत रंगकर्मियों
को पूरा करने
में उपलब्ध थे
जूद यह विशे
टक, रंगमंचीय
जुड़े लोगों की
और निराशा
ार (अशोक
कैलाश पंड्या)
और विवशता
आलोचना
वाहट (एम.के.
(ए.के. हंगल)
है वह केवल
ारतीय रंगमंच
ाहिर करने के

ग-अलग भेंट
के माध्यम
ाल उठाए गए
ंच, विशेषकर
ूनी हालत का
हैं बल्कि इस
दार चिरपरि
फिर से सोचने
हरण के लिए
ने लेख 'सिर्फ
होगा' में रंग
हुए उन्हें अपने
लिए अच्छी
की भाषा के
सहाय, जयदेव
ने उस बहस
जो फिलहाल
मदन सोनी
ने नाटक पर
हावी हो जाने
कदम गौण रख
से उघाड़ा है
के साथ-साथ
नामवर सिंह
र चंदावरकर
बिरादरी की
न' की स्थापना
में प्रतिष्ठा
ए बताया गया
मंच, साहित्य
यों पर अनु
ार-विमर्श की
दि ऐसा है तो
स्तान की इ
करेगा.
—विजय

Golden moments. McDowell moments
Unmistakably No.1...McDowell's
McDowell's
THE SODA WITH SPIRIT

मूंछों का मामला

जुहू के पांच सितारा होटल की पार्टी में उठा एक सवाल, "**धर्मेंद्र** सबसे ज्यादा किससे डरते हैं?" सवाल जितना दिलचस्प था, उसके जवाब भी उतने ही दिलचस्प थे. सवाल इसलिए जोर पकड़ गया क्योंकि वे एक फोटो सेशन के प्रस्ताव से भाग खडे हुए थे. सवाल के जवाब में किसी ने कहा, "दारू पीने की अपनी आदत से जिसे वे हर सुबह छोड़ते हैं." किसी ने घिसा-पिटा जवाब दिया, "अपनी पत्नी से." तो सवाल पर सवाल जड गया, "कौन-सी पत्नी से ज्यादा और किससे कम?" कुछ लोगों ने उन्हें बुढ़ापे से डरने वाला बताया तो उस पर भी टिप्पणी हो गई, "बुढ़ापा तो खुद धर्मेंद्र से डरता है...."

आखिरकार जो जवाब बताया गया वह था, "धर्मेंद्र डरते हैं अपने छोटे बेटे बॉबी से." धर्मेंद्र के सामने प्रस्ताव रखा गया था अपने छोटे बेटे बॉबी के साथ एक फोटो सेशन करने का जिसे रणधीर कपूर और बबीता की बेटी के साथ हीरो बनाकर फिल्म शुरू करने की 'कोशिश' की जा रही है. 'कोशिश' का मतलब यह कि घोषणा के बावजूद शूटिंग शुरू नहीं हो पा रही जबकि दोनों में से कोई व्यस्त नहीं है.

और धर्मेंद्र के डरने की वजह? उम्र का असर जो बड़े बेटे के मुकाबले इतना साफ नजर नहीं आता जितना बॉबी के सामने जिसकी अभी मूंछें उग रही हैं.

धर्मेंद्रः उम्र का खौफ

इतिहास का बोझ

भाभी को अपना यह दिलफेंक देवर जरा भी पसंद नहीं, यह खबर इसी स्तंभ ने आप तक पहुंचाई थी. बड़े भैया संजय खां ने जिम्मेदारी डाल ही दी तो हर विरोध के बावजूद अकबर खां को टीपू के निर्देशन का भार उठाना ही पड़ा था.

जिस दिन अकबर की तुनकमिजाजी के कारण कैमरामैन के.के. महाजन शूटिंग छोड़कर जयपुर से बंबई लौट आने के लिए मजबूर हो गए थे, उसी दिन भाभी ने कह दिया था, "मैंने तो पहले ही कहा था... पर मेरी सुनता कौन है?" उस वक्त तो किसी तरह काम चला लिया गया लेकिन दरार दिन पर दिन बढ़ती गई और टीपू सुलतान पर सौ मुसीबतें पड़ने के बावजूद अकबर खां ने इसके निर्देशन से पल्ला झाड़ अलग खड़े हो जाना बेहतर समझा. दस-बारह कड़ियों के बाद टीपू सुलतान फिर शशोपंज में हैं कि उनकी नैया कौन पार लगाएगा?

इस बार अकबर के बड़े भैया संजय ने सबसे बड़े भैया फीरोज खां के द्वार पर दस्तक दी है निर्देशन संभालने के लिए. फीरोज इसे मानते हैं कि नहीं, इसका फैसला होने के पहले उनकी योग्यता पर फैसला दिया जा चुका है—"जिससे न तो अपनी फिल्म संभली (दयावान) और न अपनी बीवी (सुंदरी), वह टीपू का इतिहास संभालने चला है. इतिहास के साथ इससे बड़ा मजाक भला और क्या हो सकता है?"

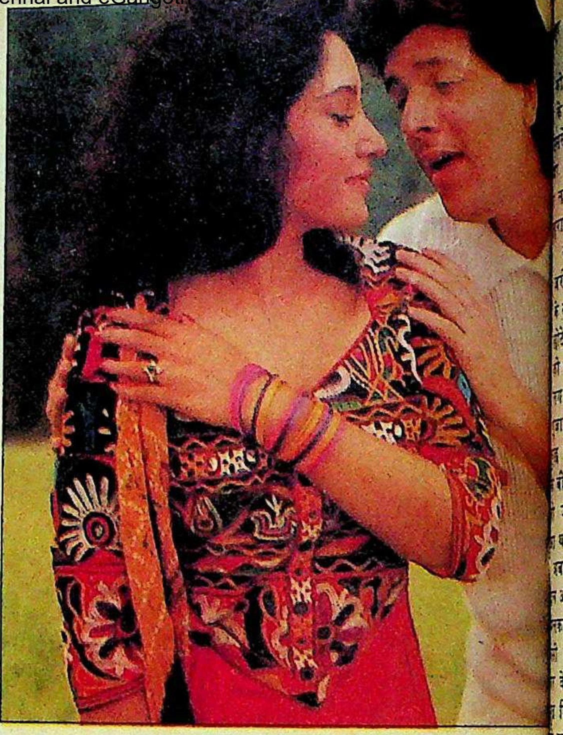

टूटे दिलों का मेल

दो टूटे हुए दिल आपस में किस आसानी से मिल जाते हैं, इस बारे में कुछ कहने की जरूरत नहीं

बीते दिनों की हीरोइन

की कमसिन बेटी **सबीहा** ने

खन्ना के साथ बड़े शौक से

फिर 'भेड़िया आया'

भेड़िया आया...भेड़िया आया वाला पुराना नुस्खा आजमाकर **रेखा** ने एक बार फिर से अपनी जगहंसाई करा ली है.

नवीनतम घटना के मुताबिक हैदराबाद में 'मेरा पति सिर्फ मेरा है' नाम की फिल्म की शूटिंग पर गई रेखा

शाम अपनी कार से वापस न

अपनी ड्रेस डिजाइनर की

बैठ गई. बीच रास्ते में मोटर

किल सवार कुछ लड़कों ने

पहचानकर छेड़ना और

कसना शुरू कर

इसके जवाब

रेखाः नुस्खा पुराना, 'पटकथा' नई

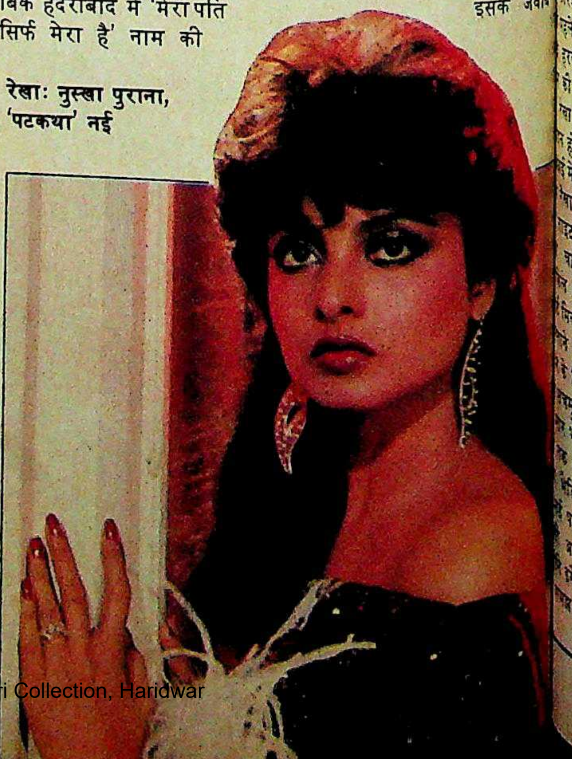

और आदित्य: नई जोड़ी

थी लेकिन राजेश खन्ना दौरान जिस तरह पेश मां बेटी दोनों का दिल उस दौरान राजेश खन्ना गाए गए आरोपों को न ना ही अच्छा है.

बीते दिनों की हीरोइन रीना वहाब ने बड़े भरोसे साथ उम्र में अपने से कहीं आदित्य के साथ शादी थी मगर आदित्य का दिल गया अपने से कहीं छोटी बेदी के साथ. और फिर समय बाद आदित्य-पूजा बीच भी वही कुछ हो गया ज़रीना-आदित्य के बीच था.

अगर आदित्य का टूटा और सबीहा का टूटा दिल एक हो गए हैं तो इसमें को आपत्ति क्यों हो? वे गहराती रात के वक्त किनारे के गहरे अंधेरे में नजर आते हैं तो शिकायत किसका और कैसे बनता है अगर वे साथ में फिल्में कर तो यह जोड़ी किसी को क्यों लगे भला?

भी तेवर दिखाए तो कार के आगे मोटर लगाकर कार को रुकने मजबूर कर दिया. रेखा ने उनका मुकाबला किया. कई थे, रेखा बेचारी एक! अकेले भी हों तो कोई न करिश्मा तो हो ही जाता है. कि वे रेखा के साथ कोई हरकत कर बैठते, पीछे से यूनिट के लोग आ गए गुंडों के सामने सचमुच हो गई...

में कई लोग यह सोचने लगे को इस स्क्रीनप्ले के लिए का अवार्ड दिला दिया चाहिए और उन मोटर सवारों को बेस्ट एक्टर मिलना चाहिए जो बहुत कम पर इस सीन का खतरा लिए राजी हो गए जिसमें का गुंडा समझ पब्लिक भी पड़ सकती थी. क्योंकि ऐसा नहीं किया जाएगा, 'आया' की थीम पर कथाएं लिखना बंद नहीं आखिर पब्लिसिटी के लिए पुराना आजमाया नुस्खा रखा है.

मेनका का सम्मोहन

मिठुन चक्रवर्ती के कंधे खासे मजबूत हैं, इस बात को चोरी-छिपे कई हीरोइनें जान गईं. लेकिन मिठुन के लिए मुश्किल हो गई कि वे आखिर किस-किस को सहारा दें? संगीता बिजलानी के बाद उन्होंने तय कर लिया था कि अब दरियादिली के लिए दरवाजे बंद रखेंगे और विश्वामित्र की तरह तपस्या में लीन हो गए—नं. एक स्टार की पदवी की ओर जाते अनिल कपूर के बढ़ते कदम रोकने के लिए.

लेकिन तभी मेनका उनके पास जा पहुंची और उनका व्रत भंग कर डाला. **मीनाक्षी शेषाद्रि** की मुसीबत यह है कि जब से उन्होंने 'विश्वामित्र' साइन की, उन पर जैसे ग्रहण ही लग गया. न खुदा ही मिला न विसाले सनम! वे न इधर की रहीं न उधर की! अनिल कपूर के पास दाल गली नहीं तो आखिर उन्होंने अपना मद्रासी सिर रख दिया बंगाली बाबू के कंधों पर और बंगाली बाबू ने उनके बालों से आती नारियल तेल की सुगंध से जैसे विचलित होकर उन्हें मदद का वचन दे दिया. आजकल अगर आपको मिठुन को लेकर फिल्म बनानी हो तो कहानी सोचने की जरूरत नहीं. सिर्फ एक बात सोचिए—मीनाक्षी के घर तक पहुंचने का सबसे छोटा रास्ता कौन-सा है?

मीनाक्षी और मिठुन: दरियादिली

देवी का दावा

अब इसे समय की मार न कहें तो और क्या! जिन भारत भूषण को एक समय सफलता का पर्यायवाची माना जाता था, आज **दीपिका** जैसी गुमनाम होती जा रही अभिनेत्री भी उनके बारे में कोई बात नहीं सुनना चाहती.

दीपिका: 'इमेज' बदलने की उम्मीद

हाल ही में दीपिका ने इस बात की घोषणा बड़े जोर-शोर से की कि उन्होंने अपनी सीता वाली 'इमेज' धो डाली है और अब फिर से उन्हें दूसरी तरह के रोल मिलने लगे हैं. यह सभी जानते हैं कि 'रामायण' से पहले की गई फिल्मों में से तीन में दीपिका पर बलात्कार के दृश्य फिल्माए गए थे. 'इमेज' बदलने को उन्होंने बड़ी उपलब्धि की तरह सुनाया तो किसी ने पूछ ही लिया कि इमेज बदलकर उन्हें हासिल क्या होगा? उन्हें यह बताया गया कि भारत भूषण 'बैजू बावरा' और 'मिर्जा गालिब' से स्थापित अपनी इमेज की वजह से आज तक एक खास तरह के रोल बिना मेहनत पाते रहे हैं तो दीपिका इसे अपना मुकाबला "भारत भूषण जैसे चुके हुए कलाकार" से मानकर बिगड़ गईं. उस सज्जन ने तो दिलासा दिलाने के लिए कहा था पर उन्हें याद नहीं रहा कि समय बदल गया है. 'इमेज' का मतलब भी.

इस देवी का दावा यह है कि वह भगवान से इंसान बनकर खुद ही दिखा देगी. उसे किसी के उदाहरण की मोहताज न समझा जाए.

मीताः शास्त्रीय भूमिका

◆ अभिनय, नृत्य और गायन तीनों में उन्हें एक-सा लुत्फ आता है—बशर्ते वह शास्त्रीय श्रेणी में आते हों. रोटरडम अंतरराष्ट्रीय फिल्म समारोह में 'क्रिटिक्स अवार्ड' जीतने वाली कुमार शाहनी की फिल्म 'ख्याल गाथा' में रानी रूपमती की भूमिका के लिए 27 वर्षीया **मीता वशिष्ट** खूब प्रशंसा बटोर रही हैं. फिल्म में हिंदुस्तानी संगीत की ख्याल परंपरा की व्याख्या कुछ प्रसिद्ध प्रेमी युगलों के जरिए की गई है. मीता की प्रतिक्रिया है, "फिल्म में काम कर अलग ही तरह का अनुभव मिला." लेकिन समांतर सिनेमा में जौहर दिखाने वाली नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा की इस छात्रा को अलग अनुभव तो व्यावसायिक सिनेमा में ही होगा.

◆ संगमरमरी ताज से रोमांस करने जा रही हैं तेजतर्रार सुंदरी **पूजा बेदी**. भारत-सोवियत संघ के संयुक्त प्रयास से बन रही टेलीफिल्मों की शृंखला 'हीरोज ऑफ हिस्ट्री' की पहली टेलीफिल्म 'रोमांसिंग द ताज' में फिल्म में पूजा आधुनिक लड़की तराना की भूमिका निभा रही हैं जो अपने दोस्त से झगड़ पड़ती है. बाद में आगरा के किले में घूमते हुए वह खयालों मे खो जाती है जिसमें उसकी मुलाकात शाहजहां से होती है. पूजा भावुकता से कहती हैं, "काश! कोई मेरे लिए भी ताज बनवाए."

पूजाः शाहजहां कहां से लाऊं

पी.एस. सीबिया

◆ मानो यह एंग्री यंगमैन नहीं, उनके अपने जीवन का एक पहलू हो. कल के सुपर स्टार **अमिताभ बच्चन** के जीवन पर बीबीसी के चैनल-4 द्वारा बनाई जा रही फिल्म 'फालो द स्टार' में एक जगह वे बताते हैं कि पिता ने सीख दी थी कि यदि किसी दरवाजे पर ताला लगा दिखाई दे तो वे दीवार फांद जाएं. अमिताभ फिल्म को 'परिपूर्ण' बताते हैं क्योंकि कम-से-कम इसमें तो विवादास्पद कुछ नहीं.

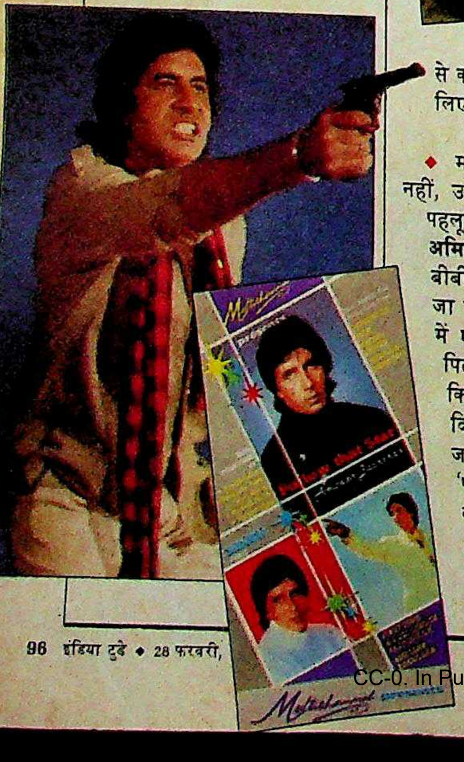

बच्चनः अपनी जिंदगी

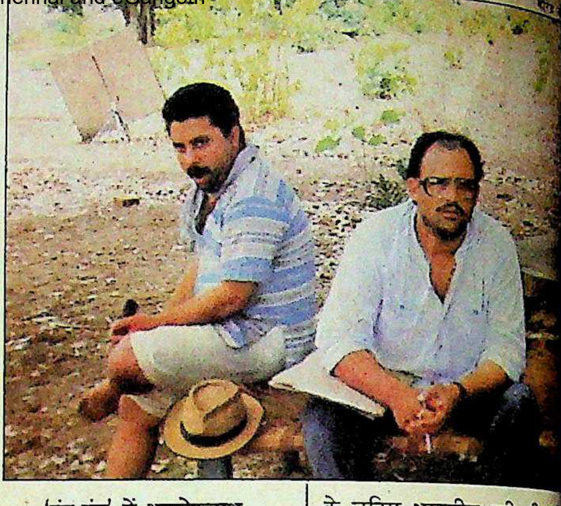

'बूंद-बूंद' में आलोकनाथ

◆ बात ज्यादा पुरानी नहीं है. दूरदर्शन ने धारावाहिक 'बूंद-बूंद' दिखाना शुरू किया तो एक पात्र की शक्ल वी.पी. सिंह से मिलती नजर आई. अभिनेता थे **आलोकनाथ**; उनका अपराधः जनता दल नेता से साम्यता; सजाः जुलाई 1989 में एक प्रकरण के बाद ही धारावाहिक छोटे परदे से गायब. अब मंडी हाउस का वी.पी. सिंह से परहेज खत्म हो गया है. लिहाजा 22 फरवरी से 'बूंद-बूंद' फिर दर्शकों के सामने होगा. इसके निर्माता, हरीश धवानी की टिप्पणी, है, "हमें उस दिन का बेसब्री से इंतजार है."

◆ पीटर ब्रुक की महाभारत में द्रौपदी बनते रहने के बाद **मल्लिका साराभाई** ने छह एकल प्रदर्शनों की नृत्य नाटिका 'शक्ति' के जरिए भारतीय स्त्री की श
को मंच पर प्रस्तुत करने का
और भगीरथ प्रयास किया
उनका कहना है, "मैं कुछ ऐसा
करना चाहती थी जो
भावनाओं और विचारों
जोरदार पैरवी कर सके
भरत नाट्यम, कुचि
और कथकली तीनों
शैलियों से तैयार इस
नाटिका में झांसी की रा
मीरा बाई से लेकर
के अभाव में आत्मह
करने वाली केरल की
बहनों के प्रसंग दर्शाए
हैं—जो निश्चय
मल्लिका की शक्ति
प्रतीक भी हैं.

'शक्ति' में मल्लि
महिला की ताक

For the gracious people
W.D. & H.O. WILLS
GOLD FLAKE
HONEY DEW
Quality that's forever
W.D. & H.O. WILLS
GOLD FLAKE
HONEY DEW
STATUTORY WARNING

STATUTORY WARNING: CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH

Every genuine
WILLS GOLD FLAKE
cigarette bears the name
W.D. & H.O. WILLS

CLARION C-GFK-16R

एक छोटा-सा कारण
एक सुरक्षित स्कूटर लेने के लिए

बेहतर स्थिरता के लिए बेहतर संतुलन

तुरंत रुके फिसले नहीं

ख़तरनाक स्थितियों से निकाल ले जाने के लिए शक्तिशाली इंजन

आगे तथा पीछे दिशासूचक इंडिकेटर

LML
vespa
बेहतर सुरक्षा. बेहतर डिज़ाइन.

everest/90 LML/27 hi

इंडिया टुडे

15 मार्च 1990 7 रुपए

राजीव गांधी

राजीव गांधी: 'यह कमजोर सरकार है'

एचडीडब्ल्यू सौदा: घोटाला अबकी सतह पर

पुस्तकालय
गु० कां० विश्वविद्यालय
हरिद्वार

8/3/90

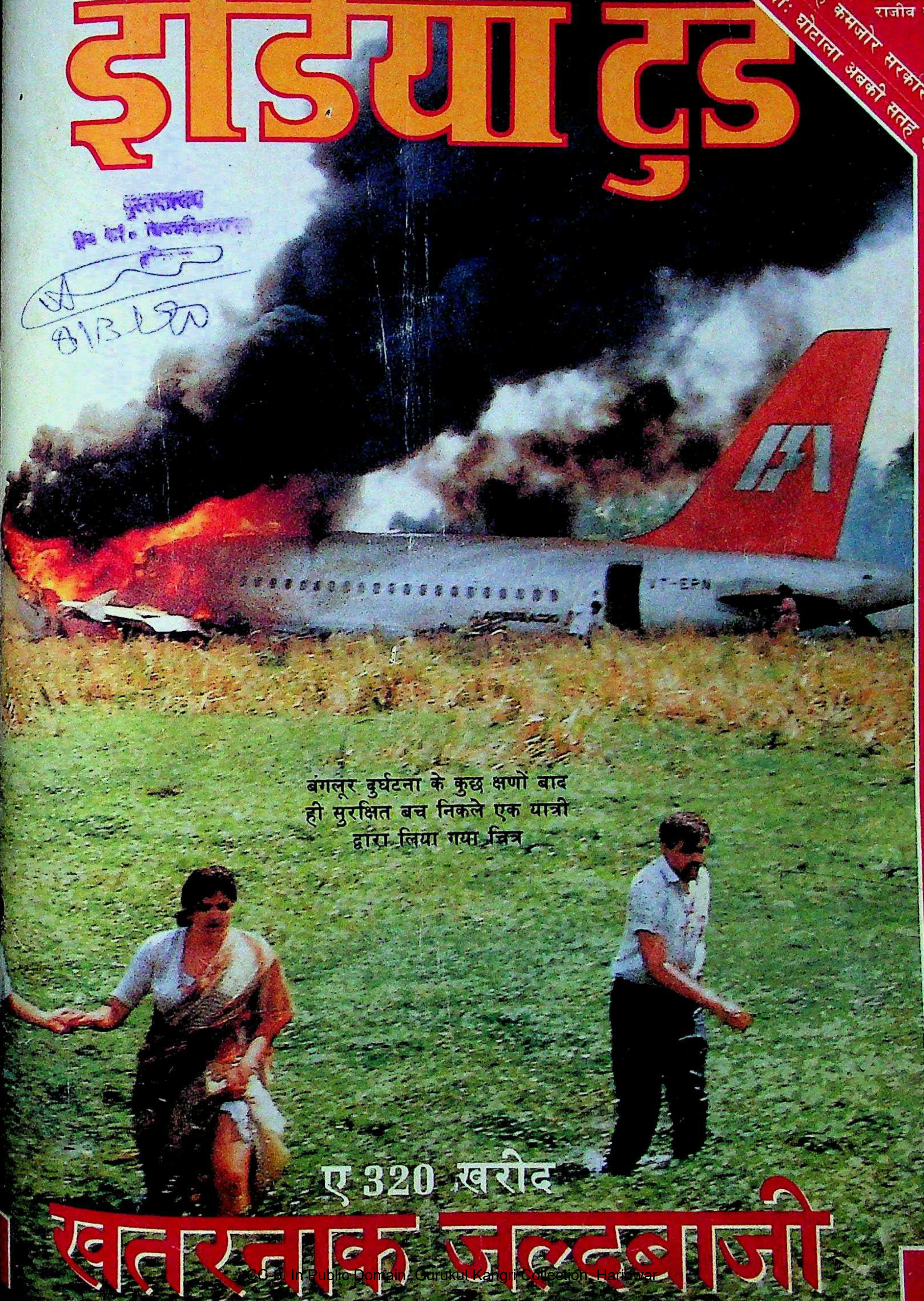

बंगलूर दुर्घटना के कुछ क्षणों बाद
ही सुरक्षित बच निकले एक यात्री
द्वारा लिया गया चित्र

ए 320 खरीद

खतरनाक जल्दबाजी

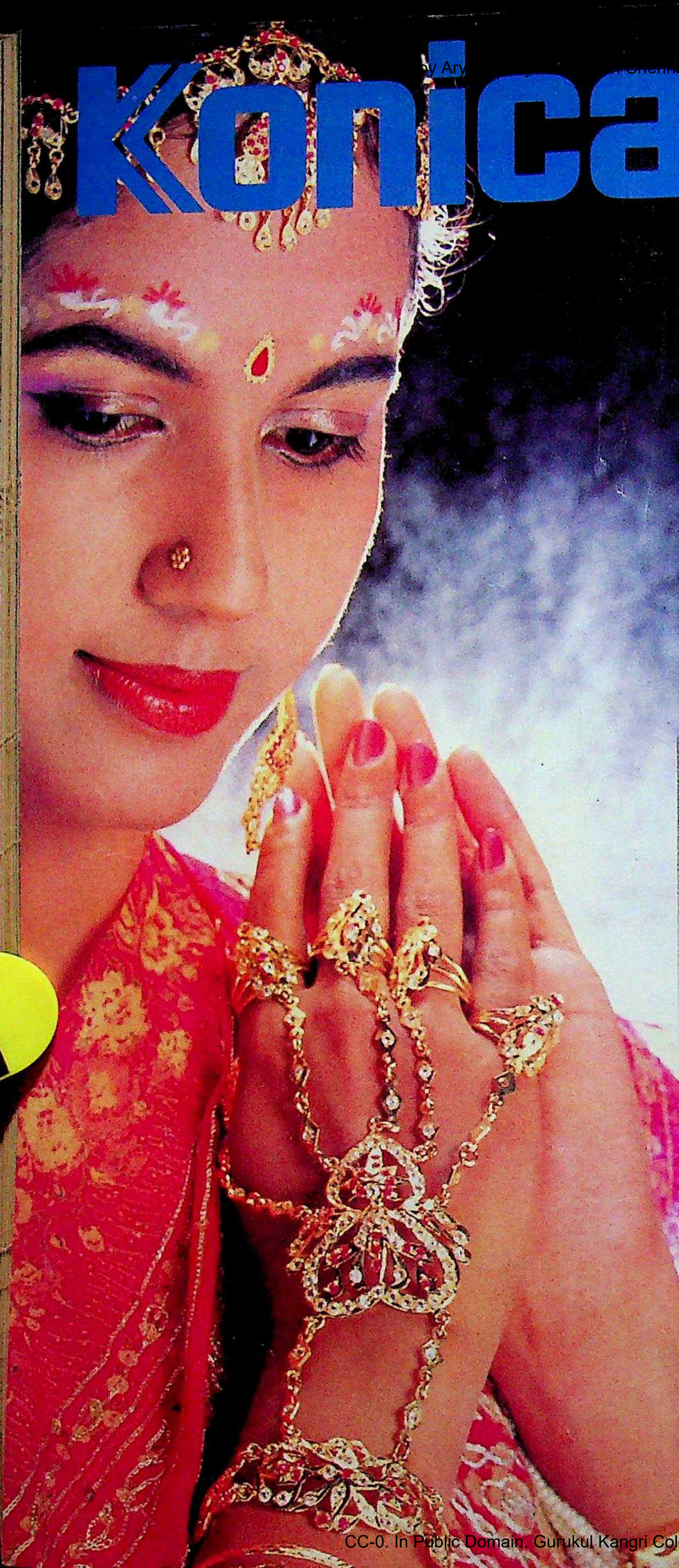

अब ऐसी तसवीरें,
जिनकी बात ही कुछ और है.

कोनिका कलर नैगेटिव फ़िल्म की एक नई श्रे है-SR-G कलर इमल्शन संबंधी आधुनिकतम विकसित तकनीक से तैयार, ये है फ़ोटोग्राफ़ी क दुनिया के लिए एक विशेष उपहार.

तभी तो तसवीर में बारीक से बारीक चीज़ उभरकर आए, त्वचा का हर रंग स्वाभाविक नज़ आए, ज़ेवर-गहने और वेशभूषा अपनी असली रंग-छटा झलकाएं.

कोनिका की SR-G कलर नैगेटिव फ़िल्म I 100, 200, 400 और 3200 वाली विशिष्ट श्रेणी में उपलब्ध हैं और साथ ही पेशेवर लोगों क लि है-ISO 160.

आप शौकिया फ़ोटो खींचते हों या कलात्म फ़ोटोग्राफ़ी में रुचि रखते हों, यदि आपने कों SR-G को चुना है तो निश्चय ही आपकी तसवीरों मे विशिष्टता होगी.

Konica
Konica
FÜR FARBBILDER/PRINT FILM
SR-G100
36/135
Konica
FILM FOR COLOUR PRINTS
100
36
Konica
Color Print Film
SR-G100
DX

KONICA CORPORATION.
No. 26-2, Nishishinjuku 1-chome,
Shinjuku-ku, Tokyo 163, Japan
Tel: (03) 349-5125

स पखवा

तरनाक

बंगलूर में
ने के बाद
लने से पता
त मंत्राल
धिकारियों
रीद का फैस
आवरण क

पह कमजो

मत्ता से इ
हले इंटरव्यू
जाब समस
रकार के त
धानमंत्री ने
त्र कांग्रेसी
मुलाकात

राजा के

नेपाली
पोर्ने के हाथ
लड़ाई ने नय
हिमालय की
हलचल की
नज़रबंद नेत
पास-पड़ो

तरनाक जल्दबाजी

बंगलूर में ए-320 एअरबस के दुर्घटनाग्रस्त ने के बाद उसके सौदे से जुड़ी पुरानी फाइलें ने से पता चलता है कि नागरिक उड्डयन एवं न मंत्रालय तथा योजना आयोग के धिकारियों के विरोध के बावजूद ए-320 की रीद का फैसला जल्दबाजी में किया गया.

आवरण कथा..................................14

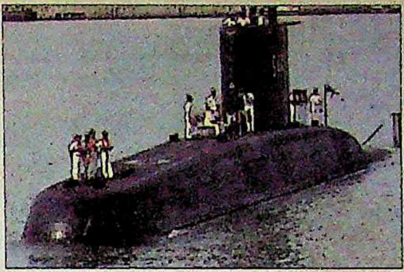

घोटाला अबकी सतह पर

एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी सौदा फिर चर्चा में आ गया है. केंद्र में सरकार बदलने के बाद सीबीआई ने इस मामले को दोबारा खोला है और एचडीडब्ल्यू के पक्ष में तथ्यों को तोड़ने-मरोड़ने वाले वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज कराई है.

खास रपट..................................26

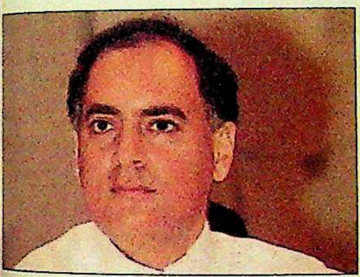

'यह कमजोर सरकार है'

सत्ता से हटने के बाद दिए गए अपने पहले इंटरव्यू में राजीव गांधी ने कश्मीर और पंजाब समस्या से निबटने के वी.पी. सिंह सरकार के तौर-तरीकों पर हमले किए हैं. पूर्व प्रधानमंत्री ने इस चर्चा को भी गलत बताया कि अब कांग्रेसी उनके खिलाफ होने लगे हैं.

मुलाकात..................................30

FSN
LA ALEGERI

बदलाव का बवंडर

पूर्वी यूरोप ऐतिहासिक बदलाव के दौर में है. रोमानिया, चेकोस्लोवाकिया और पूर्वी जर्मनी लोकतांत्रिक लहर की 'चपेट' में आ चुके हैं. यहां सरकारों की कंगाली और मुश्किलें तो देखने को मिलती ही हैं, लोगों को मिली नई आजादी का लुत्फ उठाते भी देखा जा सकता है.

विशेष लेख..................................46

राजा के खिलाफ प्रजा

नेपाली कांग्रेस और सात दलों के वामपंथी मोर्चे के हाथ मिला लेने से नेपाल में लोकतंत्र की लड़ाई ने नया स्वरूप अख्तियार कर लिया है. हिमालय की गोद में बसे इस देश की राजनैतिक हलचल की रिपोर्ट और नेपाली कांग्रेस के नजरबंद नेता गणेशमान सिंह से भेंटवार्ता.

पास-पड़ोस..................................70

जाग उठे दबे-छिपे देवता

एलोरा में हाल में सामने आई 28 गुफाएं हिंदू धर्म के मूर्ति शिल्पों से भरी पड़ी हैं. इन मध्यकालीन गुफाओं के शिल्प एलोरा के शिल्पों से मेल खाने के कारण बहुत महत्वपूर्ण हो उठे हैं. साथ ही इनसे शैव मत के प्रभाव का भी पता लगता है.

धरोहर..................................80

अगले पन्नों पर

कसौटी..................9
तेवर..................10
राजरंग..................11
हिंदोस्तां हमारा..................12

आवरण कथा

ए-320 विमानों की खरीद:
खतरनाक जल्दबाजी..................14

खास रपट

एचडीडब्ल्यू: घोटाला अबकी सतह पर.....26

मुलाकात

राजीव गांधी: 'यह कमजोर सरकार मुश्किल
मामले निबटा ही नहीं सकती'..................30

चुनाव विशेष

विश्वनाथ प्रताप सिंह:
दिल की जुबां, दिल की बातें..................32
राजीव गांधी: आंख खुली पर देर से........34
चुनाव चकल्लस..................36

विशेष लेख

पूर्वी यूरोप: बदलाव का बवंडर..............46

खास रपट

कश्मीर:
पतली डोर पर चलने का करतब............53

आजकल

बिहार: न्याय के मामले में नाउम्मीदी......56
तमिल शरणार्थी:
दोहरी विपदा के शिकार..................57
उत्तर प्रदेश: भविष्य अनिश्चित..............58
पश्चिम बंगाल: मुश्किल में माकपा..........59
ओडीसा: अमीरों का लिहाज..................61
असम: समझौते का फंदा..................64
राज्य-दर्पण..................65
व्यापार चक्र..................66

कारोबार

अर्थव्यवस्था: आसार अच्छे नहीं............67
शेयर बाजार..................69

पास-पड़ोस

नेपाल: राजा के खिलाफ प्रजा..............70

स्मृति

अमृतलाल नागर: कलम का सिपाही........75

खेलकूद

विश्व कप हॉकी: मंसूबों पर पानी..........76

धरोहर

एलोरा: जाग उठे दबे-छिपे देवता............80

टीवी

वागले की दुनिया:
मेरी तेरी उसकी बात..................84
आरपार..................85

चिकित्सा

कामोत्तेजक दवाएं: कमाल की कशिश......87
कहानी..................88
किताबें..................92
परदे के उस पार..................94
चर्चित चेहरे..................96

आवरण: फिल सिधवा

इंडिया टुडे
INDIA TODAY
SATANIC STORM
INDIA TODAY
NATIONAL FRONT
TURBULENT TRANSITION
EXCLUSIVE ACCOUNT OF THE LEADERSHIP BATTLE

अब हम हो गए 5

भारत की सबसे ज्यादा बिकने वाली समाचार पत्रिका का मलयालम संस्करण भी अब निकलने लगा है. इस संस्करण का विमोचन होने के साथ ही हमने समाचार पत्रिका संबंधी पत्रकारिता के प्रति अपनी वचनबद्धता की ओर एक और महत्वपूर्ण कदम बढ़ाया है. 1982 में अंतरराष्ट्रीय संस्करण निकालकर हमने ऐसा पहला कदम उठाया था. यह संस्करण आज 104 देशों में व्यापक रूप से पढ़ा जाता है. इसके बाद 1986 में हिंदी संस्करण का प्रकाशन शुरू हुआ जो साल भर में ही बाजार का अगुआ बन गया. तमिल संस्करण अगस्त 1989 में शुरू हुआ और चार महीने के भीतर ही 2.7 लाख की प्रसार संख्या पारकर वह एक और मील का पत्थर साबित हुआ.

अब मलयालम संस्करण की शुरुआत से हम जानकारी के व्यापक प्रसार का अपना निर्धारित कार्य पूरा करने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़े हैं. खोजपूर्ण और विश्लेषण भरी जानकारी देना ही हमारा लक्ष्य रहा है — ऐसी जानकारी जो सही भी है और पूर्वाग्रह रहित भी तथा जो तेजी से बदल रहे भारत के बारे में लोगों की समझ को गहरा करती है.

आज पांच संस्करणों वाले **इंडिया टुडे** के एक करोड़ से भी अधिक पाठक हैं जो हमेशा आगे बने रहने के लिए इस पर निर्भर हैं.

इंडिया टुडे

रखे दो कदम आगे

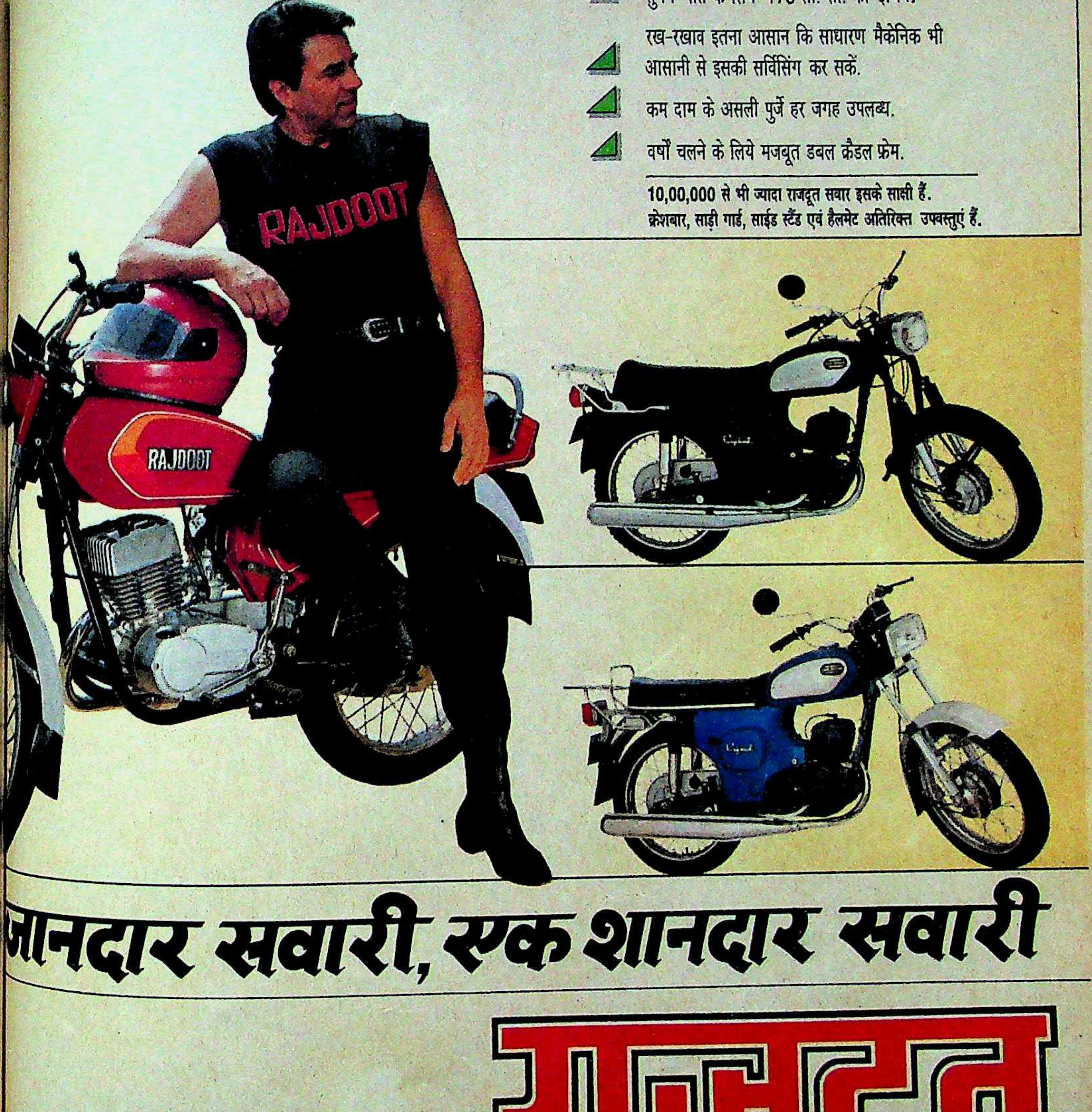

ESCORTS

- सुगम गति के लिये 175 सी. सी. का इंजिन.
- रख-रखाव इतना आसान कि साधारण मैकेनिक भी आसानी से इसकी सर्विसिंग कर सकें.
- कम दाम के असली पुर्जे हर जगह उपलब्ध.
- वर्षों चलने के लिये मजबूत डबल क्रैडल फ्रेम.

10,00,000 से भी ज्यादा राजदूत सवार इसके साक्षी हैं.
क्रेशबार, साड़ी गार्ड, साईड स्टैंड एवं हैलमेट अतिरिक्त उपवस्तुएं हैं.

जानदार सवारी, एक शानदार सवारी

राजदूत

जाना-परखा • भरोसेमंद • बेमिसाल

हमेशा प्रयोग करें असली राजदूत पुर्जे

With love Dharmender

ARA/ESC-2517-H

टूथपेस्ट तो किया पर क्या माउथवॉश पाया ?

आख़िर यह माउथवॉश है क्या ?
माउथवॉश
ALL NEW Close-up
For shiny-white teeth, fresher breath.
ALL NEW Close-up
For shiny-white teeth, fresher breath.

अगर नहीं तो आपका टूथपेस्ट अधूरा है. क्योंकि इसकी सफ़ाई दांतों तक जाए, पर सांसों को छोड़ जाए. आपको चाहिए नया-नवेला क्लोज़-अप, असली माउथवॉशवाला. क्लोज़-अप अपनाइए, दांतों की सफ़ेदी के साथ माउथवॉश भी पाइए. माउथवॉश सांसों में तरोताज़गी लाए, आत्मविश्वास बढ़ाए, आपको औरों के क़रीब लाए.

नया-नवेला

क्लोज़-अप

असली माउथवॉशवाला टूथपेस्ट

सांसों में तरोताज़गी, दांतों में जगमगाती सफ़ेदी.

LINTAS CX 68 2720 HI

हिन्दुस्तान लीवर का एक उत्कृष्ट

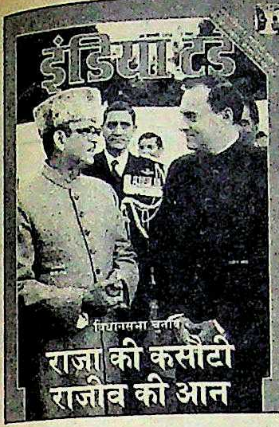

वोट बटोरने की तरकीब

आरक्षण पर विशेष लेख 'इंकलाब की इबारत' (28 फरवरी) निष्पक्ष तो है लेकिन आरक्षण अब अनुसूचित जाति-जनजाति और पिछड़े वर्गों की उन्नति का आधार न रहकर वोट बैंक पक्का करने का साधन बन गया है. अन्यथा विभिन्न राजनैतिक दल इस पर उठे विवाद का कोई सर्वमान्य हल जरूर ढूंढ़ निकालते.

—**विजय प्रताप सिंह**, शाहजहांपुर (उ.प्र.)

■ आरक्षण के बिना तो व्यवस्था कुछ-कुछ ऐसी ही होगी कि एक विकलांग और एक सामान्य-स्वस्थ व्यक्ति को एक साथ दौड़ में शामिल कर, एक से लक्ष्य उनके सामने रख दिए जाएं, फिर कहा जाए कि जो पहले पहुंचेगा वही जीतेगा.

—**मयंक जैन**, दिल्ली

शर्म मगर नहीं आती

जम्मू-कश्मीर में 'कायम हो रहा कायदा' (28 फरवरी) राष्ट्रीय मोर्चा सरकार और राज्यपाल जगमोहन की प्रशासनिक सूझ का ही परिणाम है. उन्हें हिंदू संप्रदायवादी कहने वाले इकाइयों को अब थोड़ी शर्म आनी चाहिए.

—**गीता**, दिल्ली

हाय-तौबा किसलिए

इकाइयों की राजीव को 'पहले जैसी सुरक्षा' (28 फरवरी) देने की मांग उनकी हताशा भरी ढिठाई ही है. यदि इसी तरह हर नेता की सुरक्षा पर करोड़ों रु. खर्च होता रहा तो देश और उसकी सुरक्षा के लिए क्या बचेगा?

—**रोहित शर्मा**, पटियाला (पंजाब)

लावा उबल पड़ा

सोवियत संघ का 'दुखदायी बदलाव' (आवरण कथा, 15 फरवरी) पढ़ी. धरती हर जगह गरम है. लोकतांत्रिक देशों में लावा निकलता रहता है. लेकिन सोवियत संघ सहित पूर्वी यूरोपीय देशों में इसे लंबे समय से दबाए रखा गया. अब यह साम्यवादी व्यवस्था को चरमराता हुआ उबल पड़ा है. यदि गणराज्यों का पुनर्गठन कर (भारत की तरह) सभी को समानता का दर्जा दिया जाए तो समस्या का कुछ हल हो सकता है.

—**जगदीश चाहर**, झुंझुनू (राज.)

पाठकों से

पिछले तीन अंकों से हमने पाठकों की सर्वोत्तम चिट्ठी पर पुरस्कार देने की योजना शुरू की है. इस अंक के किसी भी लेख पर लिखी सर्वोत्तम चिट्ठी पर 100 रु. और दूसरे स्थान पर रहने वाली चिट्ठी पर 50 रु. पुरस्कार दिया जाएगा. चिट्ठी अधिकतम 150 शब्दों की हो. इसके साथ इस अंक में चिट्ठियों वाले पहले पेज पर छपा आवरण पृष्ठ का फोटो काटकर भेजें. आपके पत्र हमें 20 मार्च तक मिल जाने चाहिए.

—संपादक

■ गोर्बाचेव के पूर्ववर्ती शासकों की दमनकारी नीतियों से अल्पसंख्यक लोग दुखी तो बहुत थे पर डर के कारण चुप थे. अब जब गोर्बाचेव ने उनके कंधों पर उदारवादी नीतियों का प्यार भरा हाथ रखा तो वे रो पड़े.

—**जसपाल सिंह**, जालंधर (पंजाब)

■ सोवियत संघ में उपज रही समस्याओं की तुलना भारत से करना उचित नहीं है. वहां अलगाववाद की लहर कम्युनिस्ट शासन की दमनकारी नीतियों का प्रतिफल है जबकि भारत की समस्याएं लोकतंत्र की उदारता का लाभ उठाने वाले अवसरवादी नेताओं की करतूतों का नतीजा हैं.

—**संकेत ठाकुर**, खरगौन (म.प्र.)

■ सोवियत संघ की वर्तमान समस्या निश्चित ही वहां उदारवादी हवाएं चलने के कारण उपजी हैं. वहां की परिस्थिति देखकर तो यही लगता है कि गोर्बाचेव ने सोवियत मानसिकता को बिना बदले ही लोकतंत्र का स्वाद उन्हें चखाकर शायद जल्दबाजी कर दी.

—**प्रेमनाथ मोदी**, आरा (बिहार)

■ लेनिन ने 1917 में जारशाही और सामंतवाद के विरुद्ध क्रांति करके रूस में वर्गविहीन समाज की स्थापना की थी. इस साम्यवादी व्यवस्था में स्तालिन जैसे शासकों ने विकृति पैदा की. फलस्वरूप हिंसा और अनैतिकता खुलकर उभरी. इस व्यवस्था को सुधारने के लिए रूस में एक दूसरी क्रांति की आवश्यकता हो गई थी, जिसके लिए गोर्बाचेव के रूप में लेनिन का पुनर्जन्म हुआ है.

—**हंसराम राम साहू**, रायगढ़ (म.प्र.)

■ 'दुखदायी बदलाव' पढ़कर मन कांप उठा. अलगाववाद की समस्या ने सोवियत संघ के सामने अनेक ज्वलंत प्रश्न खड़े कर दिए हैं, जिनकी सलीब पर लटका हुआ यह विशाल समाजवादी साम्राज्य अपनी अखंडता की ओर घायल दृष्टि से देख रहा है.

—**धीरेंद्र कुमार चौबे**, पारबेलिया कोलियरी (प. बंगाल)

लक्ष्मण रेखा कौन-सी

आपकी सारगर्भित कसौटी 'हाथ सेंकिए, घर न जलाइए' (15 फरवरी) में उठाए गए अधिकांश वैचारिक मुद्दों पर सहमत होते हुए भी कांग्रेस सरकार द्वारा प्रशासनिक सेवा परीक्षा में आयु सीमा घटाकर 26 साल किए जाने संबंधी तर्क से सहमत नहीं हो सकते. अनुभव के लिए क्या 26 वर्ष की आयु ही लक्ष्मण रेखा है? यदि ऐसा है तो शिक्षा व शोध से लेकर राजनीति तक के सभी क्षेत्रों में यही आधार होना चाहिए.

—**बीरबल शर्मा**, हिसार (हरियाणा)

वर्ष: 4, अंक: 9, 1-15 मार्च 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 331 5801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8. टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: सर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स: 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ई-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स: 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN, तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089. टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता.

● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.

● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

प्रथम पुरस्कार

सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप के साम्यवादी देशों में आ रहा 'दुखदायी बदलाव' (15 फरवरी) इस बात का प्रतीक है कि साम्यवादी रूसी क्रांति का जादू टूट रहा है और दुनिया फ्रांस की 1789 की क्रांति की तरफ लौट रही है. रूसी क्रांति के 'मजदूर एकता' और 'आर्थिक समानता' के सिद्धांतों के बजाए फ्रांसीसी क्रांति के समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के व्यावहारिक व सार्वभौम सिद्धांत लोगों को अधिक रास आ रहे हैं. साम्यवादी आवरण के पीछे निर्मम तानाशाही से त्रस्त साम्यवादी प्रजा फ़्रांसीसी क्रांति के मानव अधिकारों को पाना चाहती है.

—**कु. वर्षा सुर्वे**, देवास (म.प्र.)

■ मोर्चा सरकार द्वारा प्रशासनिक सेवाओं के लिए उम्र सीमा बढ़ाने पर आपकी टिप्पणी भ्रामक और तर्कहीन लगी. सरकार ने उम्र बढ़ाने का जो फैसला किया है वह कई छात्र संगठनों के अनवरत आह्वान पर और गांवों में पढ़ रहे 70 फीसदी प्रतिभासंपन्न छात्रों को ध्यान में रखकर किया है. क्या देर से शिक्षण शुरू करने वाले ग्रामीण छात्रों को मौके नहीं मिलने चाहिए? —**के.के. मणि**, पटना (बिहार)

निबटारा जरूरी

'फिर तकरार की नौबत' (15 फरवरी). भारत-पाक रिश्तों का विश्लेषण करने पर लगता है कि पाकिस्तान के सिर पर युद्ध का भूत सवार है. पूर्व विदेशमंत्री मेनन ने एक बार कहा था कि पूर्वी पाकिस्तान भारत की फूंक से उड़ जाएगा. 1971 में वही हुआ. पाक ने भारत को युद्ध के लिए फिर मजबूर किया तो इस बार नतीजे अवश्य ही गंभीर होंगे.

—**प्रभाष चंद्र झा**, पीरपैंती (बिहार)

■ पाकिस्तान ने चाणक्य के इस कथन कि 'जिस देश की सीमाएं हमारे देश से मिलती हैं, प्रकृति से ही हमारा शत्रु होता है' को चरितार्थ कर दिया है.

—**बी.डी. सिंह**, इलाहाबाद (उ.प्र)

■ इतिहास गवाह है कि जब-जब पाकिस्तान की राजनीति पर संकट गहराता है या भारत की राजनीति का परिदृश्य बदलता है, पाकिस्तान कश्मीर का मामला उठाकर भारत पर युद्ध थोपने की कोशिश करता है. यह नासूर फिर न उभरे, इसके लिए भारत सरकार को इसे जड़ से ही मिटा देना चाहिए.

—**दिलीप जायसवाल**, धनबाद (बिहार)

कैसी जनता

'अंधेरों में खोया बचपन' (15 फरवरी) से यही निष्कर्ष निकला कि बिहार सरकार के साथ-साथ वहां की जनता भी भारत की भावी पीढ़ी के साथ अन्याय व उत्पीड़न का रवैया अपनाए हुए है. कानून का पालन न करके 500 से अधिक मासूम बच्चों के भविष्य के साथ खिलवाड़ करना कहां का न्याय है? —**सुधीर खरे 'कमल'**, बांदा (उ.प्र.)

■ कहते हैं, यदि किसी व्यक्ति या जाति को मिटाना हो तो उसका बचपन छीन लो. यह मात्र कल्पना नहीं, इतिहाससम्मत सत्य है और अनुभवों पर आधारित है. बच्चों पर देश का भविष्य निर्भर है. पर यह हमारे देश का दुर्भाग्य ही है कि इन्हें सुधारगृहों में मरने, सिसकने और सड़ने के लिए ही डाल दिया जाता है.

—**कमल कुमार**, कानपुर (उ.प्र.)

नैतिक साहस की कमी

'आसान नहीं है राह बनाना' (15 फरवरी) में कांग्रेसियों ने जम्मू-कश्मीर के राज्यपाल को बाला साहब देवरस की सिफारिश पर नियुक्त किए जाने का आरोप लगाया है. यह कांग्रेसियों के सच स्वीकार करने के नैतिक साहस की कमी को तो दर्शाता ही है, उनकी 'किसी भी कीमत पर राज करो' की मंशा को भी स्पष्ट करता है.

—**पूरनलाल**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ कश्मीर समस्या रूपी मरीज को अच्छा करने के लिए प्यार, सहानुभूति और सेवा-भाव से काम करने का राज्यपाल का संकल्प उनकी प्रशासनिक कुशलता का ही सबूत है. गणतंत्र दिवस पर किसी राष्ट्रविरोधी घटना का न होना यह उम्मीद जरूर बंधाता है कि कश्मीर की कठिन परिस्थितियों में राह बनाना आसान नहीं तो असंभव भी नहीं है.

—**वीरेंद्र कुमार**, भोजपुर (बिहार)

जमीन से जुड़े नेता

'अक्खड़ शैली के धनी' (15 फरवरी). देवीलाल के बारे में आपके विचार सही भले ही हों लेकिन यह भी उतना ही सच है कि अब भी वे जमीन से जुड़े नेता हैं. उनकी ही पहल पर पूरा विपक्ष एक मंच पर आ खड़ा हुआ. उनके साथ समस्या यह है कि थोड़ी सफलता हाथ लगते ही वे पुनः अपनी अक्खड़ शैली पर आ जाते हैं और यही बात खटकने लगती है.

—**प्रतीक दलाल**, दमोह (म.प्र.)

■ देवीलाल जिस तरह लापरवाही भरे बयान दे रहे हैं, उससे राष्ट्रीय मोर्चा सरकार का सिरदर्द बढ़ेगा और उसके किए-धरे पर पानी फिर जाएगा. देवीलाल को कृषिमंत्री के रूप में ज्यादा सफल होने का प्रयास करना चाहिए, न कि उप-प्रधानमंत्री के रूप में.

—**गौतम कुमार राय**, भागलपुर (बिहार)

■ देवीलाल ने नई सरकार के लिए धर्मसंकट पैदा कर दिया है. केंद्रीय मंत्रिमंडल के सदस्य संयुक्त दायित्व से आबद्ध होते हैं. अतः किसी नीति संबंधी मसले पर अपनी राय जाहिर करने से पहले उसके नतीजों के बारे में सोच लेना चाहिए.

—**संजय कुमार**, दिल्ली

■ 'ताऊ' बनने का दम भरने वाले देवीलाल की हरकतें बचकानी भले ही लगती हों लेकिन यह उनकी सोची-समझी रणनीति भी हो सकती है ताकि सत्ता का शिखर पुरुष होने का भ्रम बना रहे. वैसे, उनकी अक्खड़ बयानबाजी केंद्र सरकार पर खतरे के संकेत भी देती है जिससे जनता दल के नेताओं को सचेत हो जाना चाहिए.

—**कांता शर्मा**, जम्मू

द्वितीय पुरस्कार

'अंधेरों में खोया बचपन' (15 फरवरी) दिल और दिमाग को झकझोर डालता है. 'अप्पू घर' के चक्कर लगाने की उम्र में 'अदालत' की परिक्रमा करने वाला 'पप्पू कुमार माहुली' हो या 'पागल शांति' का 'नन्हा अमर' कहानी सभी की कमोबेश एक जैसी ही है. राम बहादुर लामा जैसे कितने ही होंगे जो अपनी मेहनत की कमाई मांगने के जुर्म में सफेदपोश धनपशुओं के शोषण का शिकार होते हैं. गोभी के एक फूल चुराने की सजा हमारा सभ्य समाज 10 वर्षीय बच्चे को तो 10 वर्ष हिरासत में रखकर देता है पर उस समाज की सजा कौन तय करेगा जिसमें एक बच्चा गोभी चुराता है? —**हरीश कुमार करमचंदानी**, बीकानेर (राज.)

हडको ने जल आपूर्ति, जल और मल निकास तथा ऐसी अन्य शहरी स्तर की नगरीय संरचनात्मक परियोजनाओं की वृद्धि, उन्नयन तथा व्यवस्था के वित्त पोषण हेतु अलग से एक शहरी संरचनात्मक वित्त विभाग की स्थापना की है। ऐसी परियोजनाओं के लिए मार्च, 1990 तक कम से कम 160 करोड़ रुपये स्वीकृत करने का प्रस्ताव है। इसके अतिरिक्त वर्ष 1989-90 के दौरान निर्माण-अन्तर्गत (आन साइट) कम लागत सफाई के लिए 70 करोड़ रुपये से अधिक स्वीकृत किए जाऐंगे। आठवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान, हडको का केवल शहरी संरचनात्मक परियोजनाओं के लिए 4000 करोड़ रुपये स्वीकृत करने का महत्वाकांक्षी इरादा है।

इस प्रकार की ऋण सहायता के लिए पात्र एजेंसियों में नगरपालिका प्राधिकरण, विकास प्राधिकरण, जल आपूर्ति तथा सिवरेज बोर्ड, औद्योगिक संरचनात्मक विकास निगम आदि शामिल हैं। यह ऋण 10 लाख से कम जनसंख्या वाले शहरों में 15 वर्षों में प्रतिदेय अवधि सहित 11.5 प्रतिशत पर उपलब्ध है। लाभकारी परियोजनाओं के लिए तथा दस लाख से अधिक जनसंख्या वाले नगरों के लिए ब्याज की दर 15 प्रतिशत है।

समग्र

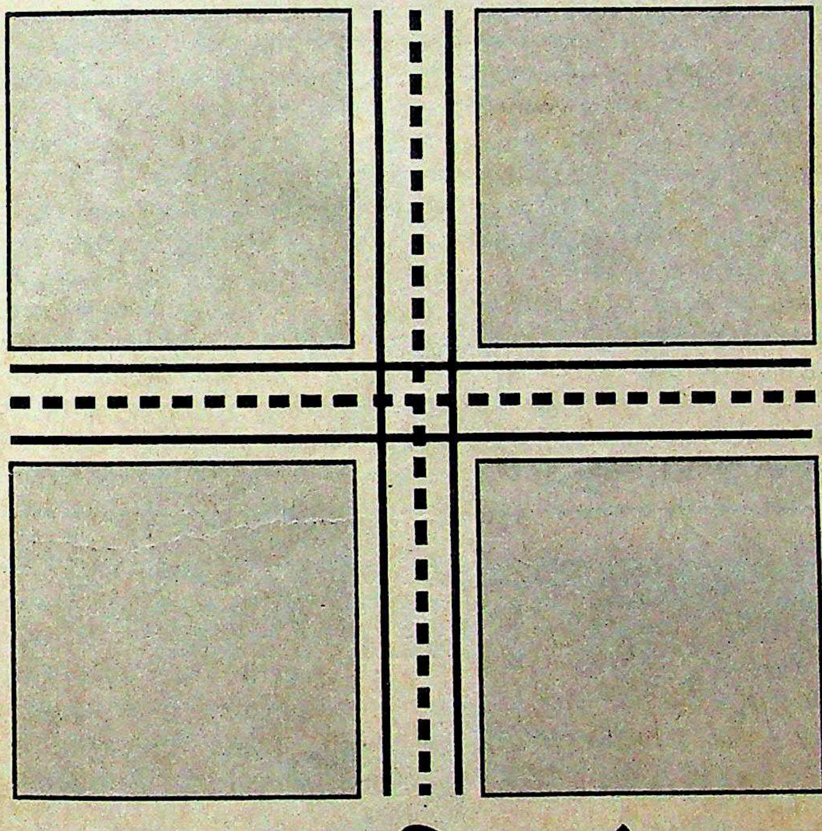

जन सुविधाएं

विस्तृत जानकारी के लिए हडको के नैगमिक, आंचलिक, क्षेत्रीय या विकास कार्यालयों से सम्पर्क करें।

हडको

घर अपना सच सपना

आवास तथा नगर विकास निगम लि
मुख्यालयः हडको हाउस, लोधी रोड, नई दिल्ली- 110003 फोनः 699534 टैलेक्स 031-61037 एचयूडीसी इन ग्रामः हडको फैक्सः 625308
आंचलिक कार्यालयः मद्रास क्षेत्रीय कार्यालयः अहमदाबाद, बम्बई, बंगलौर, कलकत्ता, चंडीगढ़, गुवाहाटी, दिल्ली, जयपुर
विकास कार्यालयः भोपाल, भुवनेश्वर, हैदराबाद, लखनऊ, पटना, पोर्ट ब्लेयर, त्रिवेन्द्रम

INCENTIVE/HUDCO/HHEC Design Cell/90

जटिल समस्या

'मुद्दई चुस्त और गवाह भी' (15 फरवरी). भोपाल गैस कांड के मुआवजे का मामला खिंचता ही जा रहा है. पांच वर्ष बाद भी मुआवजे की राशि न मिलना अफसोसनाक है. गैसपीड़ितों के इतने अधिक संगठन बन गए हैं कि सरकार कोई भी फैसला करे, उसके विरोध में कोई न कोई संगठन आ खड़ा होता है. गैसपीड़ितों में कई नाम ऐसे भी हैं, जो गैस रिसाव के दिन भोपाल में थे ही नहीं. सरकार को चाहिए कि सभी संगठनों और पीड़ितों से मिलकर ही मुआवजे की राशि का वितरण करे.

—**गिरीश कुमार भावसार,** बडौत (म.प्र.)

गलत दांव

'इधर जाऊं या उधर जाऊं' (15 फरवरी). भागलपुर जेल से रिहाई के बाद बहुत-से लोग सिमरनजीत सिंह मान को पंजाब समस्या का समाधानकर्ता मानने लगे हैं जबकि वे महज एक धड़े के नेता ही हैं. सिर्फ उनकी मदद से समस्या का हल नहीं हो सकता. उनका यह कथन कि 'पाकिस्तान आतंकवादियों की मदद नहीं कर रहा' हैरतअंगेज ही है.

—**युक्तिनाथ मिश्र,** भोजपुर (बिहार)

संभ्रमों का सौदागर

'सपनों के सौदागर' (15 फरवरी). रजनीश वास्तव में सपनों का नहीं बल्कि संभ्रम का व्यवसाय करते थे. सम्मोहक शब्दजाल, उत्तेजक संगीत और मुद्राओं के तमाशे का ऐसा कारोबार पहले कभी नहीं हुआ. रजनीश तो दमा, मधुमेह से जर्जर काया छोड़कर चले गए. लेकिन उनके आर्थिक-आध्यात्मिक साम्राज्य के प्रबंधकों की चिंता है कि कम्यून में सब कुछ लुटा चुके शिष्यों का अब क्या किया जाए?

—**अरुण कुमार,** जबलपुर (म.प्र.)

■ रजनीश प्रखर दार्शनिक होकर भी भारत में कोई सम्मान नहीं पा सके. इसके कई कारण हैं. देश छोड़ते समय उन्होंने भारत की जी-भरकर निंदा की थी. बाद में उन्हें इसी देश में अपना आखिरी समय बिताना पड़ा. वे अमीरों के ही गुरु रहे. गरीबों के लिए न उनके मन में संवेदना थी, न उनके लिए उन्होंने कभी कुछ किया.

—**प्रताप हजारी,** पुणे (महाराष्ट्र)

फिजूल की बातें

'भूख को भुनाने की कोशिश' (15 फरवरी) पढ़कर लगा कि सेंसर बोर्ड या तो खुद नासमझ है या जनता को बेवकूफ बनाता है. जिन फिल्मों के नाम से ही उनके 'उद्देश्य' जाहिर होते हों, उन्हें वह 'सेक्स एजुकेशन' का लेबल लगाकर कैसे पास कर देता है. निर्माता-वितरक जोगिंदर महाजन से पूछा जाता कि कितने लोग इन फिल्मों में 'शिक्षा' पाने जाते हैं.

—**महेश चंदानी,** नासिक (महाराष्ट्र)

अधूरा विश्लेषण

विश्व कप हॉकी जैसी प्रतियोगिता के लिए 'मुकाबले को तैयार' (15 फरवरी) लेख अधूरा लगा क्योंकि भारत के मुकाबले इसी ग्रुप की दूसरी टीमों का आकलन नदारद था.

—**भरत प्रसाद चौधरी,** मुजफ्फरपुर (बिहार)

कानून कैसे-कैसे

खास रपट 'इंसाफ की ओखली: गरीब का सिर' (15 फरवरी). मुकदमों की बढ़ती संख्या और न्याय में विलंब के लिए ऊटपटांग कानून भी जिम्मेदार हैं जैसे, 'उत्तर प्रदेश शहरी किराया नियंत्रण एवं बेदखली अधिनियम'. जो मकान मालिकों और किराएदारों को मुकदमा लड़ने के लिए उकसाता है. —**माया शुक्ला,** कानपुर (उ.प्र.)

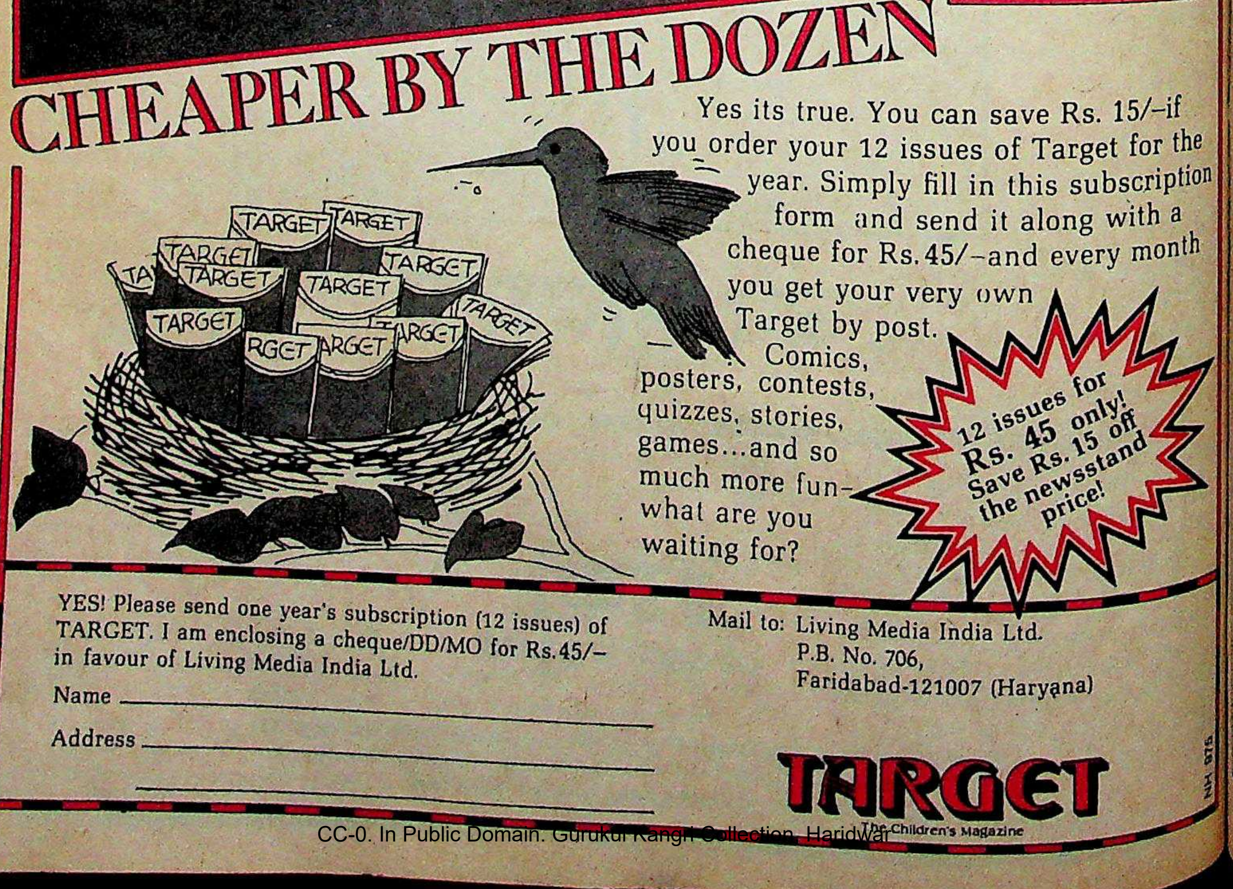

CHEAPER BY THE DOZEN

Yes its true. You can save Rs. 15/–if you order your 12 issues of Target for the year. Simply fill in this subscription form and send it along with a cheque for Rs. 45/–and every month you get your very own Target by post.

Comics, posters, contests, quizzes, stories, games...and so much more fun–what are you waiting for?

12 issues for Rs. 45 only! Save Rs. 15 off the newsstand price!

YES! Please send one year's subscription (12 issues) of TARGET. I am enclosing a cheque/DD/MO for Rs.45/– in favour of Living Media India Ltd.

Name ______

Address ______

Mail to: Living Media India Ltd.
P.B. No. 706,
Faridabad-121007 (Haryana)

TARGET
The Children's Magazine

NH 875

इससे पहले कि लोहा ठंडा पड़े

जानकार लोग कह गए हैं कि वक्त बड़े-बड़े जख्मों को भर देता है. इसके साथ ही यह भी कहा जा सकता है कि बाज अवसर भी जख्मों को भर दिया करते हैं. राजीव गांधी की सरकार की हार और नई सरकार के गठन के साथ जो बातें जुड़ी थीं उनसे यह उक्ति पंजाब के संदर्भ में सही लगती है. प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने पंजाब समस्या को सर्वोच्च प्राथमिकता देने की घोषणा करके नई उम्मीद जगाई थी. वे इस कहावत पर चलते हुए दिख रहे थे कि हथौड़ा तभी मारो जब लोहा गरम हो.

उनके हथौड़े की कुछ शुरुआती चोटें सही पड़ीं, जैसे अमृतसर की यात्रा, 59वें संविधान संशोधन को रद्द करना, राज्यपाल सिद्धार्थ शंकर राय का हटाया जाना, 1984 के दंगों के अपराधियों के लिए विशेष अदालतों के गठन की घोषणा, और सर्वदलीय बैठक आदि.

लेकिन यह जोश-खरोश मंद पड़ता दिख रहा है और लोहा भी ठंडा पड़ता जा रहा है. एक बार फिर लाशों और 'खूंखार आतंकवादियों' की गिनती और मुठभेड़ों का दौर शुरू हो गया है. हिंसा और तेज हो गई है. अर्द्धसैनिक बलों पर हमले हो रहे हैं. जालंधर और फिल्लौर के बेहद सुरक्षित क्षेत्रों में बम विस्फोट हुए हैं और बारूदी सुरंगों जैसे अत्याधुनिक हथियारों का इस्तेमाल हो रहा है.

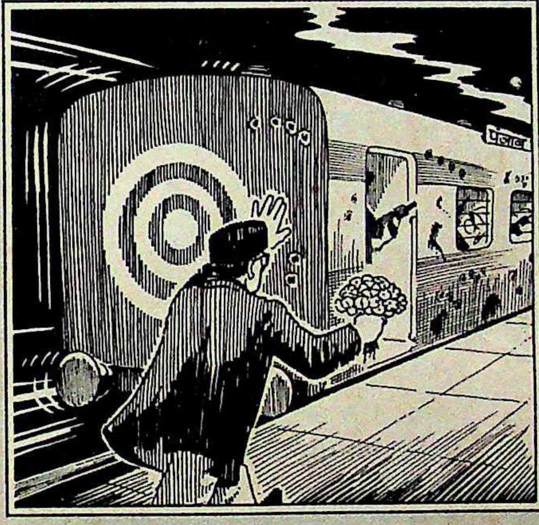

रेखाचित्र: अजीत नैनन

पंजाब पर नजर रखने वालों का मानना है कि राजीव सरकार की पंजाब नीति सिख विरोधी रंगत लिये हुए थी जबकि नई सरकार के साथ ऐसी बात नहीं दिखती. इस लिहाज से यह सरकार पंजाब के आम लोगों में ज्यादा लोकप्रिय मानी जा रही है. इसकी शुरुआती घोषणाओं और कार्रवाइयों ने इसकी लोकप्रियता में इजाफा ही किया. लेकिन अब लगता है कि कहीं कुछ गड़बड़ है. पहले वाली वह तेजी नहीं दिख रही है. यह सुस्ती खास तौर से एक महत्वपूर्ण मामले में विपरीत प्रभाव डालती दिख रही है. यह मामला है प्रशासन तंत्र में आमूलचूल परिवर्तन का. राय की रवानगी से उम्मीद बंधी थी कि प्रशासनिक या राजनैतिक कार्रवाइयों की जगह दमनकारी पुलिस कार्रवाइयों को तरजीह देने की प्रथा का अंत होगा और अपेक्षाकृत उदार राज्यपाल के तहत प्रशासन का नया और मानवीय चेहरा सामने आएगा.

इसमें संदेह नहीं कि राज्यपाल निर्मल कुमार मुकर्जी बेहद शालीन और समझदार प्रशासक हैं लेकिन पंजाब की बेहद जटिल स्थिति में इन विशेषताओं से ही काम नहीं चलने वाला. इसके लिए चाणक्य बुद्धि और प्रबंध कौशल चाहिए. राय तो चले गए लेकिन उनके बाद जो कार्रवाई जारी रहनी चाहिए थी, वह नहीं रही. नतीजा यह है कि उनके तौर-तरीकों में विश्वास करने वाले प्रशासनिक और पुलिस अधिकारी मौजूद हैं. यह एक खतरनाक चूक है. पुरानी व्यवस्था के प्रतीक माने जाने वाले कई अधिकारी ऐसे हैं जिनका निहित स्वार्थ पुरानी भ्रष्ट व्यवस्था को जारी रखने में है और जो सुलह की प्रक्रिया को हर तरह से बाधा पहुंचाने पर आमादा हैं. यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आतंकवाद के माहौल में सरकारी भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है. हत्यारों और अधिकारियों में एक तरह का रिश्ता बन जाता है. पंजाब की संगीन स्थिति को अधिकारियों ने अपने किए-कराए की जवाबदेही से बचने का सुविधाजनक बहाना बना लिया है. और वे बदलती परिस्थितियों में भी खुद को बदलने के लिए तैयार नहीं हैं.

राजनैतिक दृष्टि से भी सरकार एक महत्वपूर्ण अवसर खो चुकी है. सिमरनजीत सिंह मान इसी अवसर के प्रतीक थे. उनकी अवास्तविक और अव्यावहारिक मांगों को रद्द करके सरकार ने ठीक ही किया लेकिन दूसरे राज्यों के साथ पंजाब में भी विधानसभा चुनाव कराने के उनके सुझाव पर अमल का खतरा, उठाने लायक था. इससे आतंकवादी गुटों की कीमत पर वहां राजनैतिक प्रक्रिया की शुरुआत हो सकती थी.

लोकसभा चुनाव के नतीजों से नई सरकार को हिम्मत बांधनी चाहिए थी. इन नतीजों के मद्देनजर यह तर्क बेमानी हो जाता है कि विधानसभा चुनाव कराना आतंकवादियों को दमन का एक और हथियार देना होगा. आखिर, इंका का उम्मीदवार गुरदासपुर से जीता और राष्ट्रीय मोर्चा के विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल जालंधर से भारी वोटों से जीते. इन दोनों इलाकों में आतंकवादियों का दबदबा माना जाता है. आतंकवादियों के प्रभाव वाले कई इलाकों में बहुजन समाज पार्टी के गैर-सिख उम्मीदवारों को अच्छे वोट मिले. जो लोग यह तर्क देते हैं कि विधानसभा के चुनाव में आतंकवादी गुटों के लोग चुनकर आ जाएंगे और खालिस्तान के गठन की घोषणा कर देंगे उन्हें खास तौर से इस तथ्य को ध्यान में रखना चाहिए कि पंजाब में लोकसभा का चुनाव कहीं भी खालिस्तान के सवाल पर नहीं लड़ा गया. एक और उत्साहवर्द्धक तथ्य यह भी है कि लोकसभा चुनाव में दमदमी टकसाल और ऑल इंडिया सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के कुछ उग्रवादी गुट स्वेच्छा से शरीक हुए.

पंजाब में विधानसभा चुनाव न कराया जाना भी वहां के सिख समुदाय के लिए इस बात का प्रतीक बन गया है कि उसका खास तौर से दमन किया जा रहा है. यह एक हकीकत है कि इस समुदाय की सहायता और सक्रियता के बिना आतंकवाद के खिलाफ जनमत तैयार करने की आशा नहीं करनी चाहिए. समस्या का राजनैतिक समाधान नहीं किया गया और सत्ता में पुलिस तथा प्रशासन के बदनाम लोग हावी रहे तो वे उग्रवादी भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में शरीक होने से बचते रहेंगे जो सचमुच इसमें सक्रिय होना चाहते हैं.

कहा गया है कि बोला गया शब्द, धनुष से छूटा तीर, बीत चुका वक्त और खोया अवसर वापस नहीं आता. इसलिए विश्वनाथ प्रताप सिंह अगर उस अवसर का लाभ नहीं उठाते जिसे उन्होंने खुद तैयार किया है तो इतिहास उनकी सरकार की पंजाब नीति के बारे में यही कहेगा कि उन्होंने कोई सबक नहीं लिया.

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

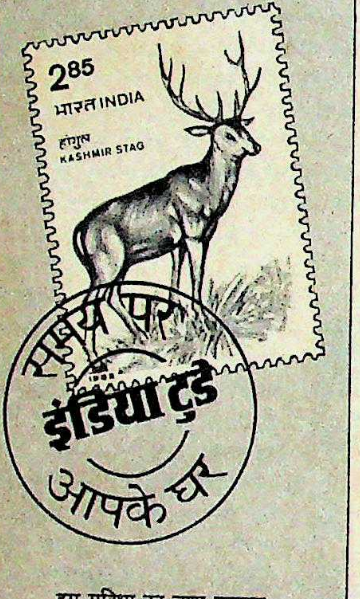

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे — नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!
बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: ____________
____
डाक पता: ____________
____
____

मूल्य: वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

अबु, डेक्कन क्रॉनिकल

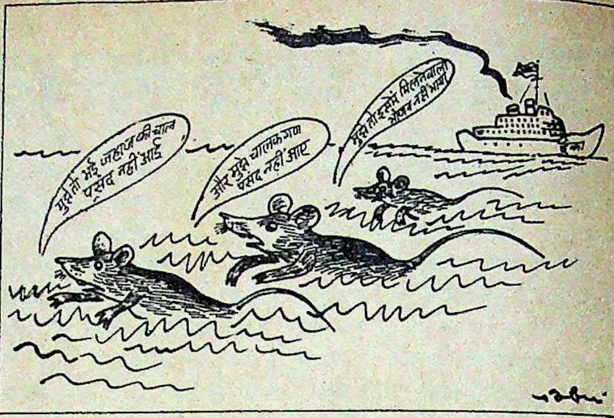
मुझे तो भई जहाज की चाल पसंद नहीं आई
और मुझे चालक गण पसंद नहीं आए
मुझे तो इसमें मिलनेवाला भोजन नहीं भाया

- भाजपा के लोगों ने अपने आपको क्या समझ रखा है? उनके साथ बहुत रियायत की गई है. अब और अधिक छूट नहीं दी जाएगी.... वह चाहे तो राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से अपना समर्थन वापस ले सकती है.
  ■ **देवीलाल,** *दैनिक जागरण*

- ठीक है, मैं मानता हूं कि हम (कश्मीर में) नाकाम रहे. लेकिन इसके लिए वे (राष्ट्रीय मोर्चा सरकार) ही क्या कर रहे हैं?
  ■ **राजीव गांधी,** *जनसत्ता*

- जहां तक (पंजाब में) विधानसभा चुनाव का संबंध है, मुझे कोई उतावलापन नहीं है...आप चाहें, दस साल चुनाव टाल दीजिए, जीत हमारी ही होगी.
  ■ **अतिवरपाल सिंह,** *नवभारत टाइम्स*

- आज की तारीख में शरद पवार के माने है 'शुगर लॉबी'. बिल्डर्स इसके दोस्त हैं, उद्योगपति इसके साथी-संगाती.
  ■ **नासिक राव तिरपुडे,** *माया*

- अच्छा हुआ कि डॉक्टर फारूक अब्दुल्ला के हाथ से कुर्सी निकल गई.
  ■ **अब्दुल गनी लोन** (जम्मू-कश्मीर के विपक्षी नेता), *जनसत्ता*

- मैं तो यही आशा करूंगा कि युद्ध न हो. मैं न तो तलवार खनखनाने वालों में, न ही युद्धपिपासु लोगों में से हूं.
  ■ **इंद्र कुमार गुजराल,** *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

- पंडित नेहरू और लालबहादुर शास्त्री आज जीवित होते तो या तो वे कांग्रेस छोड़ देते या फिर उन्हें कांग्रेस से निकाल दिया जाता.
  ■ **अनिल शास्त्री,** *नई दुनिया*

- हम लोग किसी बाबरी मस्जिद, किसी गुरद्वारे, किसी गिरजाघर को ढहाने नहीं देंगे.
  ■ **सिमरनजीत सिंह मान,** *राजस्थान पत्रिका*

- मुझे विश्वास है कि कोई भी मुझे (आगे बढ़ने से) रोक नहीं सकता.
  ■ **अतुल वासन** (उभरते क्रिकेट खिलाड़ी), *स्पोर्ट्सवर्ल्ड*

- मैं महिला हूं यह अच्छा ही है...कोई परेशानी नहीं है मुझे.
  ■ **मधुमिता बिष्ट** (बैडमिंटन खिलाड़ी), *स्पोर्ट्सस्टार*

- जब पहले जैसी फिल्में देखने वाले ही नहीं रहे तो बनाने वाले बनाएं क्या?
  ■ **देवानंद,** *साप्ताहिक हिंदुस्तान*

- मैं किसी फिल्म में न तो बिकनी पहनूंगी और न ही चुंबन के दृश्य दूंगी.
  ■ **शिल्पा शिरोडकर,** *सिने ब्लिट्ज*

- क्या आप विश्वास करेंगे कि मैंने शिल्पा शिरोडकर पर 70 लाख रु. खर्च कर दिए? पता नहीं मैंने यह क्यों किया. लेकिन आज उसे यह याद न हो तो याद दिलाना मेरा काम नहीं.
  ■ **मिथुन चक्रवर्ती,** *शो टाइम*

फिजूलखर्ची पर नजर

● जनता से कई बड़े-बड़े वायदे करके राष्ट्रीय मोर्चा ने चुनाव जीता. और अब अपने शुरुआती वादे के अनुरूप राष्ट्रीय मोर्चा की नई सरकार ने कुछ काम भी शुरू कर दिए हैं. सत्ता संभालने के पहले दिनों में ही उसने घोषणा की थी कि देश का खजाना खाली है. सो, इस घोषणा को जायज ठहराने के लिए

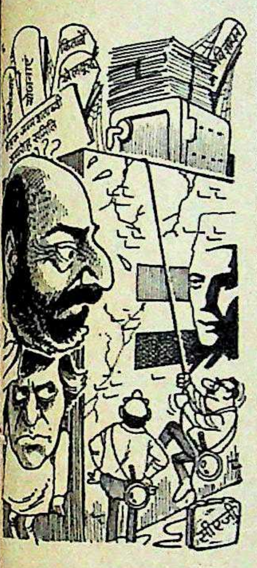

उसने उन योजनाओं पर कैंची चलानी शुरू कर दी है जो पिछली सरकार को बेहद प्रिय थीं और जिन पर फिजूलखर्ची की आशंका है.

नई सरकार बहुत-सी योजनाओं की गहराई से जांच कर रही है. इसकी टेढ़ी नजर हाल ही में भंग की गई नेहरू जन्म शताब्दी समारोह समिति पर भी पड़ी है. समिति ने पिछले साल 'फ्रीडम रन' और 'दांडी मार्च' जैसी बहुप्रचारित नौटंकियों का आयोजन किया था. इस समिति ने 'मेरा भारत महान' जैसा नारा भी उछाला जिसकी बहुत खिल्ली उड़ाई गई.

नई सरकार इस समिति के बेशुमार खर्चों पर खास नजर डाल रही है क्योंकि इससे अरुण नंदा और रोमी चोपड़ा जैसे कुछ लोग जुड़े थे जो पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के खासमखासों में रहे हैं. नियंत्रक व महालेखा परीक्षक (सीएजी) के खुफिया अधिकारियों को बताया गया था कि यह समिति 300 करोड़ रु. खर्च कर चुकी है लेकिन वास्तव में इसने लगभग 5 करोड़ ही खर्च किया है क्योंकि इसकी कई योजनाएं तो शुरू ही नहीं हो पाईं.

बहरहाल, इस जांच से हड़कंप मच गया है. इस समिति से जुड़े कई लोग आज सहमे-से हैं.

राजा या चाचा?

● प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के निवास 28, लोदी इस्टेट पर सुरक्षा इंतजाम में नरमी के कारण आगंतुकों का तांता लगा रहता है. कई तरह के लोग कभी भी आ धमकते हैं. निवास के लोग और कर्मचारी इन सबके आदी हो चले हैं. लेकिन पिछले पखवाड़े प्रधानमंत्री के निवास पर बच्चों का झुंड जिस तरह आ पहुंचा उसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी.

पड़ोस के ही एक हाईस्कूल की निचली कक्षा के छात्रों ने घर लौटते हुए या बस स्टॉप की ओर जाते हुए तय कर लिया कि आज देश के मुख्य प्रशासक से ही क्यों न भेंट कर ली जाए. सो, वे प्रधानमंत्री निवास के गेट पर पहुंच गए. उन्हें यह देखकर अचरज हुआ कि उन्हें बिना किसी खास रोक-टोक के अंदर जाने की अनुमति दे दी गई. इस तरह वे भीतर लॉन में जा पहुंचे. कुछ मिनट बाद जब खुद वी.पी. सिंह ने हंसते हुए उनका स्वागत किया तो वे और भी हैरत में पड़ गए. प्रधानमंत्री ने उनसे कहा, "बच्चों की आवाज सुनना कितना सुखद है." लेकिन बच्चे आखिर बच्चे ही ठहरे. उन्होंने कड़े सुरक्षा इंतजामों और सड़क पर लगे अवरोधों की शिकायत कर डाली. वी.पी. सिंह ने उन्हें कुछ कविताएं सुनाकर मनाया. लगता है राजा अब चाचा बनते जा रहे हैं.

सभी कार्टून: अजीत नैनन

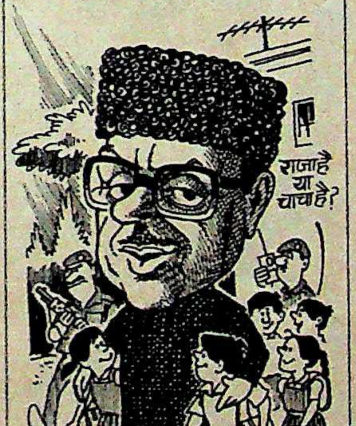

संतानों की सुरक्षा

● सुरक्षा इंतजामों की देखरेख करने वाले सरकारी अधिकारियों में इन दिनों गरमागरम बहस का मुद्दा यह है कि किस हस्ती की कितनी सुरक्षा की जाए. नई सरकार के शपथ-ग्रहण के बाद एक फैसला यह किया गया था कि मंत्रियों के परिवार के सदस्यों की अब वैसी कड़ी सुरक्षा नहीं की जाएगी जैसी राजीव गांधी की सरकार के जमाने में की जाती थी.

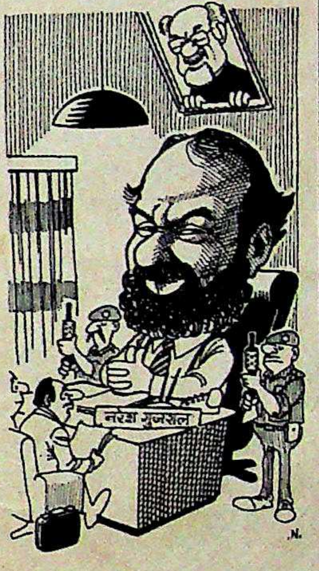

लेकिन राष्ट्रीय मोर्चा सरकार के सत्ता संभालने के चंद दिनों के भीतर ही गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद की बेटी रुबाइया का श्रीनगर में अपहरण हो गया. किसी तरह उन्हें आतंकवादियों के चंगुल से छुड़ाया गया. इसके बाद गृहमंत्री के परिवार की चौबीसों घंटे कड़ी सुरक्षा की जाने लगी. लेकिन सुरक्षा अधिकारियों का आकलन यह भी है कि सभी प्रमुख मंत्रियों के बच्चे आतंकवादियों के 'आसान निशाना' बन सकते हैं. इसलिए उनकी सुरक्षा की जानी चाहिए. परंतु उनके बालिग बच्चों का क्या हो? इस श्रेणी में आने वाले एक सज्जन को लेकर पिछले पखवाड़े बहस चलती रही. ये हैं विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल के व्यापारी बेटे नरेश गुजराल, जो 35 से ऊपर के हैं.

हिम्मती और हंसमुख नरेश को ऐसी सुरक्षा की जरूरत शायद न पड़े क्योंकि लोकसभा चुनाव के दौरान उन्होंने पंजाब के सबसे आतंकग्रस्त इलाके में भी अपने पिता के लिए जमकर प्रचार किया था. सरकार जोखिम मोल नहीं लेना चाहती और गुजराल चाहें या नहीं, उनके लिए सुरक्षा इंतजाम बढ़ाए जाने की उम्मीद है.

'न्याय' का दौर

● राजीव राज से टक्कर लेकर नुकसान झेलने वाले लोगों को नई सरकार से 'न्याय' मिलने की उम्मीद है. भारतीय चिकित्सा शोध परिषद के महानिदेशक डॉ. ए.एस. पेंटल का कार्यकाल दो साल बढ़ाने का फैसला पिछले महीने किया गया तो उनके साथी और वे खुद आश्चर्य में पड़ गए. इस तरह वे वी.पी. सिंह के हाथों न्याय पाने वाले अधिकारियों की लंबी फेहरिस्त में शामिल हो गए हैं.

पेंटल का कार्यकाल पिछले अगस्त में ही पूरा हो चुका था और बताया जाता है कि वे पिछली सरकार की वक्र दृष्टि के शिकार थे. सो, उनका कार्यकाल बढ़ाए जाने से इनकार कर दिया गया और उपयुक्त व्यक्ति की तलाश तक उन्हें पद पर बने रहने को कहा गया था. इस बीच आम चुनाव की घोषणा हो गई और पेंटल को थोड़ी और मोहलत मिल गई.

पेंटल ने पिछली सरकार को

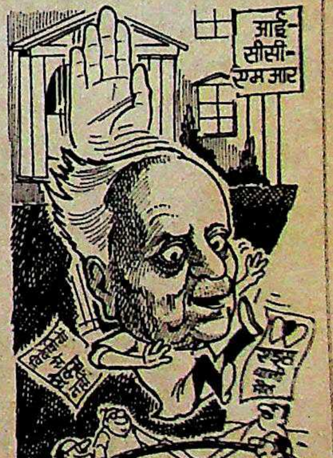

एड्स की रोकथाम के लिए भारतीयों पर विदेशियों के साथ सेक्स संबंध बनाने पर पाबंदी लगाने के उद्देश्य से कानून बनाने की सलाह दी थी. उन्होंने जनसंख्या नियंत्रण के लिए गर्भनिरोधक टिकिया को उम्दा बताया था. अब जबकि वे और दो साल तक इस पद पर बने रहेंगे, उम्मीद है कि कुछ और भी ऐसे विचार सामने आएंगे.

जंगल में लॉटरी

होता तो अक्सर यह है कि किसी बड़े जानवर को फंसाने के लिए लगाए गए चारे को चूहे चट कर जाते हैं और शिकार फांसने के लिए बैठा शिकारी टापता रह जाता है. लेकिन उत्तर-पश्चिमी बंबई में बोरिवली राष्ट्रीय उद्यान के वन रक्षकों का अनुभव इस बार कुछ उलटा ही रहा और सुखद भी.

सभी कार्टूनः जयंतो

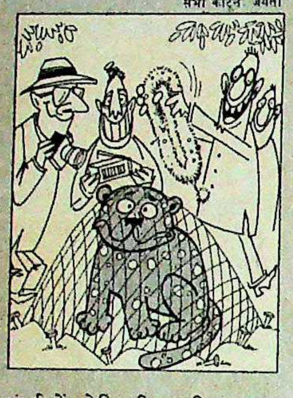

हुआ यह कि जंगल के एक हिस्से में चूहों ने काफी दिनों से बहुत उत्पात मचाया हुआ था जिससे निबटने के लिए वन रक्षकों ने वहां एक जाल बिछाकर चूहों को पकड़ने का फैसला किया. जाल बिछाकर चारा डाला गया और अगले दिन तक चूहों की फौज से हथियार डलवाने की उम्मीद में वन रक्षक अपने डेरे पर चले गए.

अगले दिन जब वे चूहों की गिरफ्तारी के लिए औजार लेकर वहां हाजिर हुए तो उन्हें जाल में जो चीज मिली वह उनकी उम्मीद से परे की थी. जाल में कोई मोटा तगड़ा चूहा नहीं बल्कि बिल्ली जाति का एक ऐसा जानवर था जो बहुत दुर्लभ माना जाता है. तेंदुए और बिल्ली की मिली-जुली शक्ल वाला यह जानवर किसी जमाने में इस इलाके में उपलब्ध था लेकिन खूबसूरत खाल के शौकीन लोगों की भूख ने इसका लगभग सफाया कर दिया है. इस जानवर की खासियत यह है कि अपने भाई शेर-चीतों की तरह यह बड़े जानवरों का शिकार नहीं करता बल्कि चिड़िया मारकर अपना गुजारा करता है.

राष्ट्रीय उद्यान के अधिकारियों ने अब इस दुर्लभ जानवर को सुरक्षित इलाके में पालने का फैसला कर लिया है.

अंतरजातीय विवाह

पिछले पखवाड़े कर्नाटक के एक शहर उलसूर में एक 'अंतरजातीय' विवाह खासा चर्चा का केंद्र बन गया. इस विवाह की खासियत यह थी कि इसमें 'वर' और 'वधू' को प्रणयसूत्र में बांधने का काम उन लोगों ने किया जिनका इनमें से किसी के साथ 'पारिवारिक' संबंध तो क्या दूर का 'रिश्ता' नहीं था.

यह आश्चर्यजनक विवाह हुआ पीपल के एक पेड़ और उसकी 'पड़ोसन' नीम के बीच, और विवाह कराने वाले थे धार्मिक प्रवृत्ति वाले स्थानीय लोग जो इन दोनों पेड़ों का एक दूसरे के निकट उगना बहुत शुभ मानते हैं. धार्मिक विश्वासों के अनुसार पीपल को ब्रह्मा, विष्णु और महेश का प्रतिनिधि माना जाता है तथा नीम को शक्ति का.

धार्मिक रीति और परंपरागत शैली में हुए इस विवाह का आयोजन ठीक उसी अंदाज में हुआ जैसा किसी लड़के-लड़की की शादी में होता है. इस शुभ अवसर के लिए स्थानीय पंडितों ने मुहूर्त निकाला और ठीक समय पर 'दुलहन' को रेशमी साड़ी में सजाया गया और 'दूल्हे' को रेशमी धोती पहनाई गई. एक पंडित ने 'दुलहन' को सौभाग्यवती होने का प्रतीक सोने का मंगलसूत्र भी पहनाया.

स्थानीय काली मंदिर में उगे इन पेड़ों के जीवन में आए इस खुशी के अवसर को संगीत से सराबोर करने के लिए विशेष तौर से बुलाई गई वाद्य मंडली ने नादस्वर के साथ परंपरागत संगीत बजाया. दावत के बिना शादी पूरी कैसे होती, सो, 'विवाह' में शामिल मेहमानों को भोजन भी कराया गया.

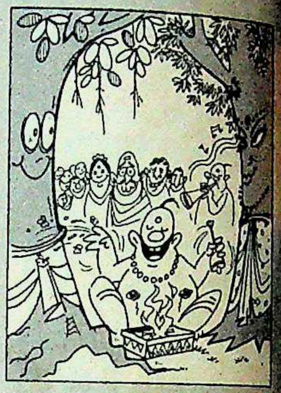

अनोखा सुझाव

सरकार ने वनवासियों के लाभ और कल्याण के लिए जो योजनाएं बनाई और चलाई हैं उनसे वनवासियों को कितना लाभ पहुंच रहा है, यह तो विवाद का विषय हो सकता है लेकिन यह बात लगभग निर्विवाद है कि इन कार्यक्रमों को लागू करने के लिए तैनात सरकारी कर्मचारियों का बड़ा वर्ग ऐसा है जो अपनी इस जिम्मेवारी से भागता है. अपनी इस जिम्मेवारी के बारे में वह ऐसा महसूस करता है गोया उन्हें कालापानी की सजा दे दी गई है. लिहाजा जंगलों और दूरदराज के इलाकों में भेजे गए ऐसे कई कर्मचारी अक्सर अपने समय और सुविधाओं का बड़ा हिस्सा इसी में खर्च करते रहते हैं कि किसी तरह शहर में तैनाती के आदेश मिल जाएं.

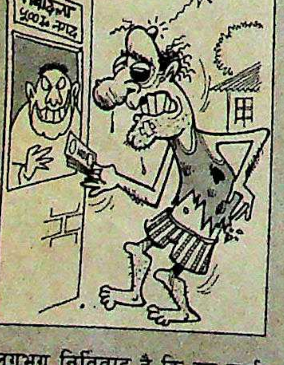

अब मध्य प्रदेश के झाबुआ जिले का ही उदाहरण लीजिए. इस वनवासी इलाके में तैनात सरकारी कर्मचारियों की शिकायतों में से एक यह है कि आए दिन ऐसे मामले होते रहते हैं जब किसी कर्मचारी को स्थानीय अपराधी न सिर्फ लूट लेते हैं बल्कि उसकी अच्छी पिटाई भी कर देते हैं. कारण: इस इलाके में 'बिना मेहनत की कमाई' को बुरा माना जाता है. यहां से भागने को आतुर कुछ स्वास्थ्य कर्मचारियों के सारे प्रयास जब असफल हो गए तो पिछले पखवाड़े उन्होंने अपने स्वास्थ्य केंद्र के बाहर एक विज्ञापन चिपका दिया जिस पर तबादला चाहने वालों के नामों के साथ-साथ वह धनराशि भी लिखी थी जो तबादला कराने वाले को इस सेवा के बदले में दी जाएगी. है न बिलकुल अनोखा तरीका!

बंदूक से कलम

हिंदुस्तानी जेलों के बारे में मशहूर है कि अगर कोई भलामानस भी वहां कुछ देर रह जाए तो बाहर आने तक वह अपराध की किसी न किसी विधा का गहरा ज्ञान अर्जित कर चुका होता है. ऐसे किस्से दर्जनों और सैकड़ों हैं जिनसे यह पता चलता है कि जेल की जिंदगी ने किसी शरीफ कैदी को शातिर बदमाश में बदल डाला. लेकिन जेल व्यवस्था की इन ढेर सारी खूबियों के बावजूद ऐसे कैदियों की संख्या भी कोई छोटी-मोटी नहीं है जो अपनी कैद के समय का पूरा-पूरा सदुपयोग करते हैं.

पिछले दिनों आंध्र प्रदेश की एक जेल से रिहा हुआ युवा कैदी राजन्ना ऐसे ही कैदियों की बिरादरी का सदस्य है. राजन्ना के बारे में बताया जाता है कि वह नक्सलवादी था जिसे हत्या के मामले में आदिलाबाद के सत्र न्यायाधीश ने दस साल पहले उम्र कैद की सजा सुनाई थी.

जिस समय वह जेल भेजा गया वह पढ़ना-लिखना बिलकुल नहीं जानता था. सो, जेल में अपनी कैद के दौरान उसने मनोयोग से पढ़ना-लिखना शुरू कर दिया. आखिरकार उसकी मेहनत रंग लाई और उसने जेल से न सिर्फ हिंदी और संस्कृत की विशेष परीक्षाएं पास कीं बल्कि बी.ए. की डिग्री भी हासिल कर ली. हाल ही में उसने जेल से पत्रकारिता के डिप्लोमा कोर्स की परीक्षा दी जिसमें वह सफल रहा. जेल से रिहाई के बाद अपने जीविकोपार्जन के लिए इन दिनों वह अपने लिए एक अच्छे रोजगार की खोज में है. है कोई उसकी यह इच्छा पूरी करने वाला?

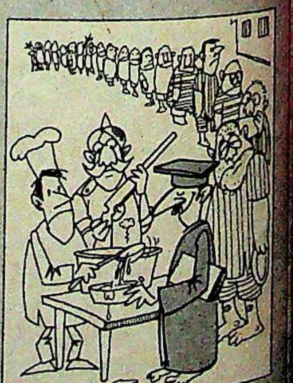

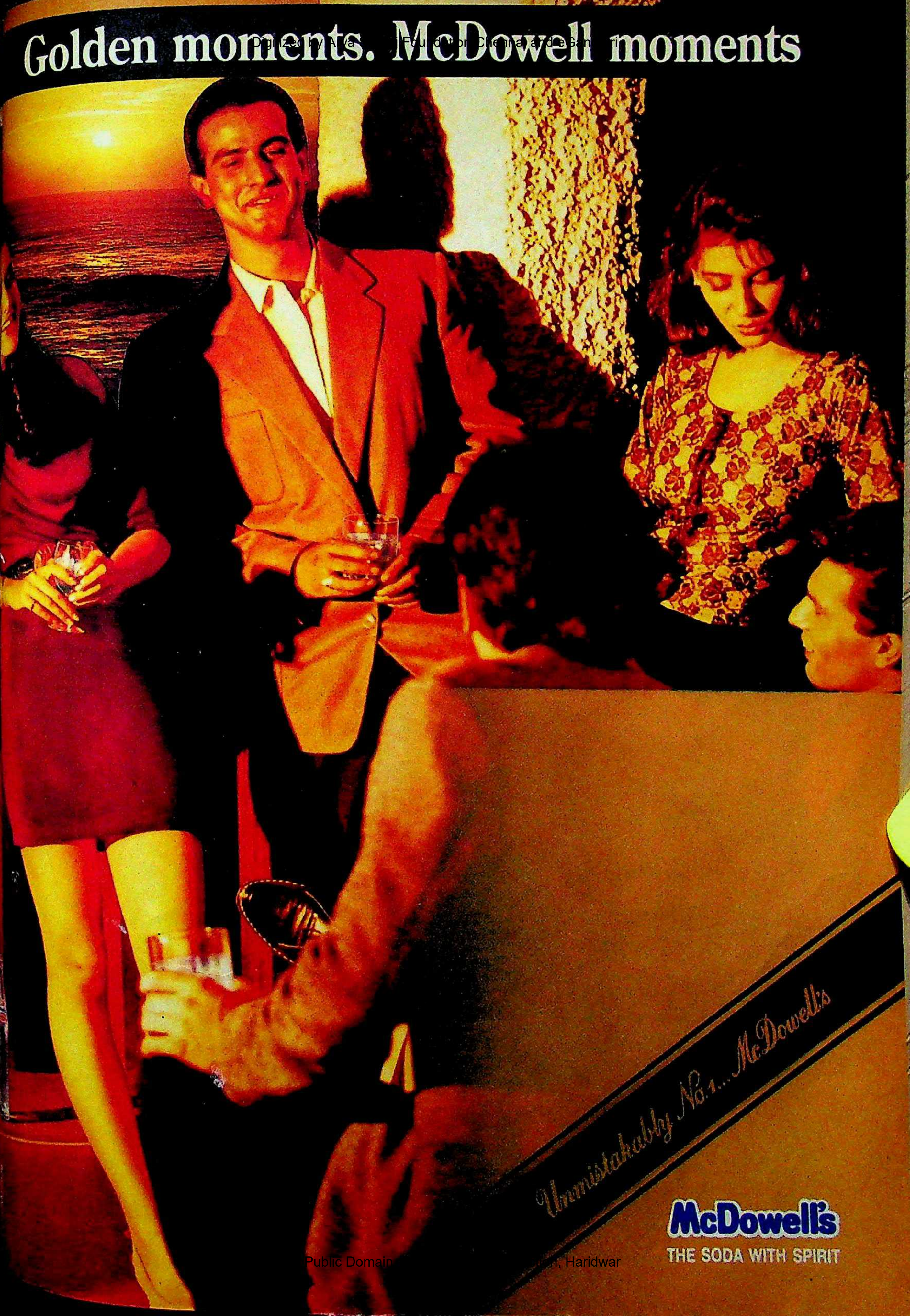
Golden moments. McDowell moments
Unmistakably No.1... McDowell's
McDowell's
THE SODA WITH SPIRIT

ए-320 विमानों की खरीद

खतरनाक जल्दबाजी

एअरबसें खरीदने के लिए राजीव सरकार ने प्रक्रिया ताक पर धर दी

केंद्रीय नागर विमाननमंत्री आरिफ मुहम्मद खां ने पिछले पखवाड़े देश के उड्डयन इतिहास का सबसे सख्त कदम उठाया. बंगलूर हादसे के बाद उन्होंने इंडियन एअरलाइंस की सभी 14 ए-320 एअरबसों को खड़ी कर देने का आदेश जारी कर दिया. इस फरमान से एक और भारी-भरकम तथा विवादास्पद सौदे की आमूल जांच का मार्ग प्रशस्त होता दिख रहा है. राजीव सरकार ने ये एअरबसें खरीदने के लिए 2,400 करोड़ रु. से ज्यादा रकम खर्च की थी.

एअरबसों की उड़ान रोक देने की फौरी वजह यात्रियों की सुरक्षा का मूल्यांकन और बंगलूर विमान दुर्घटना के कारणों का व्यापक आकलन करना है. सबसे आधुनिक यात्री विमान माने जाने वाले ए-320 की गुणवत्ता पर हालांकि अब भी उंगली नहीं उठाई जा रही है लेकिन वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा पुरानी फाइलें फिर से खोले जाने से कुछ

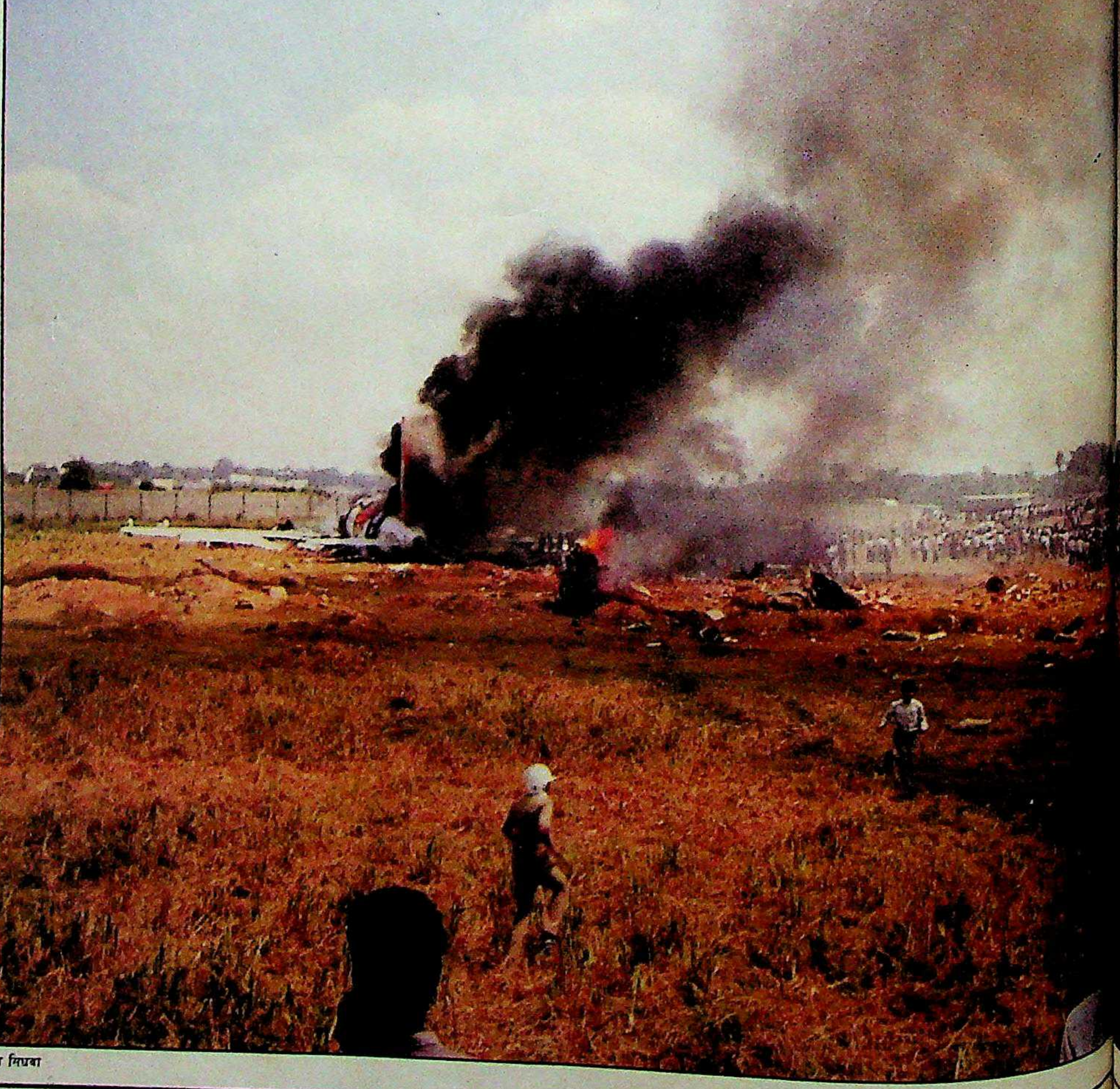

बंगलूर में विमान का मलबा

फिल सिधवा

वाले ब्यौरे सामने आने
हो गए हैं. एअरबस-320
अंतिम करारों पर सितंबर
और जुलाई 1988 में
होने तक के ब्यौरों को
से पता चलता है कि
सरकार ने इस सौदे में
जल्दबाजी की. उसने दूसरे
ों के साथ-साथ हवाई
पर इन विमानों के उतरने
अपर्याप्त व्यवस्था की अन-
की और इनके मूल्यांकन
ज्यादा समय खर्च करने की
नहीं समझी.
. आरिफ ने सीबीआई को
. सिंह की सरकार के
खतरनाक समझे जाने
भेदिए और प्रधानमंत्री

कार्यालय में संयुक्त सचिव भूरेलाल की मदद से सौदे की छानबीन करने के आदेश दिए हैं. आरिफ ने कहा, "हम सौदे की पुनर्समीक्षा की संभावनाओं का पता लगा रहे हैं."

'इंडिया टुडे' को मिली जानकारी के अनुसार, इंडियन एअरलाइंस में विमानों की कमी पूरी करने के लिए 1983 में नए विमानों की खोज शुरू हुई. उसी साल अगस्त में एअर वाइस-मार्शल दिलबाग सिंह की अगुआई वाली सात-सदस्यीय समिति ने कई तरह के विमानों पर विचार किया जिनमें एअरबस-300, मॅकडॉनल डगलस एमडी-80, ब्रिटिश एअरोस्पेस 146-100 और फॉकर एफ-28-4000 शामिल थे. समिति ने 12 बोइंग-757 विमान खरीदने की सिफारिश की. 24 जुलाई 1984 को बोइंग को 90 हजार डॉलर (1.35 करोड़ रु.) की अग्रिम रकम के साथ खरीद का आशयपत्र भेज दिया गया. खरीद का पक्का आदेश 31 अक्तूबर 1984 तक भेजा जाना था.

लेकिन 31 अक्तूबर 1984 को राजीव गांधी के प्रधानमंत्री बनने के बाद घटनाचक्र तेजी से बदलने लगा. राजीव के गद्दी पर बैठने के दो हफ्ते बाद नागर विमानन मंत्रालय ने इंडियन एअरलाइंस को एअरबस इंडस्ट्री की एक चिट्ठी भेजी जिसमें ए-320 एअरबस बेचने की पेशकश की गई थी.

सरकार इस अवांछित पेशकश की संभावना पर विचार कर ही रही थी कि राजीव गांधी जून 1985 में अपने पायलट मित्र सतीश शर्मा और दूसरे लोगों के साथ पेरिस एअरशो में गए और एअरबस-320 के कॉकपिट में 30 मिनट बिताए. इस घटना का खूब प्रचार हुआ. इसके बाद पता नहीं क्यों बोइंग को अचानक दरकिनार कर दिया गया (देखें बॉक्स) और केंद्रीय मंत्रिमंडल को सौंपी जाने वाली अंतिम परियोजना रिपोर्ट से संबंधित मंत्रालय का सारा कामकाज ठप पड़ गया.

दस्तावेजों को देखने से पता चलता है कि नागर विमानन मंत्रालय और इंडियन एअरलाइंस, बोइंग सौदे की बातचीत जिस एअर ट्रैफिक प्रोजेक्शन के आधार पर की गई थी उसे और विमान बेड़े की जरूरतों को बदलने में व्यस्त था. भारतीय अधिकारियों ने बोइंग की फिर से बातचीत की सारी कोशिशें भी बेकार कर दीं जबकि अधिकृत रूप से वह अभी भी प्रमुख प्रतियोगी थी. जून, जुलाई और अगस्त 1985 इस नाटक की महत्वपूर्ण तिथियां हैं क्योंकि इसी अवधि में इंडियन

खरीद से जुड़ी तारीखें

बोइंग-757

22 अगस्त 1983
इंडियन एअरलाइंस बोर्ड द्वारा विशेषज्ञ समिति गठित

22 मई 1984
समिति ने अपनी रिपोर्ट दी

13 जून 1984
12 बी-757 विमानों की खरीद को मंजूरी

24 जुलाई 1984
बोइंग को आशयपत्र दिया गया.

21 सितंबर 1985
आशयपत्र रद्द

19 एअरबस ए-320 विमान

अक्तूबर/नवंबर 1984
सरकार को अयाचित प्रस्ताव मिला

14 नवंबर 1984
इसे इंडियन एअरलाइंस के पास भेजा गया

16 नवंबर 1984
एअरबस की ओर से प्रस्ताव पेश

30 अगस्त 1985
एअरलाइंस बोर्ड द्वारा 19 विमान खरीदने की मंजूरी और 12 और लेने पर विचार

मध्य सितंबर
मंत्रिमंडल की मंजूरी

20 सितंबर 1985
आशयपत्र जारी

27 फरवरी 1986
19 ए-320 एअरबसों की खरीद पर मंत्रिमंडल समिति की अंतिम मंजूरी

15 मार्च 1986
खरीद का करार

12 और विमानों की खरीद को मंजूरी

8 जुलाई 1988
आशयपत्र के लिए मंत्रिमंडल की मंजूरी

25 अक्तूबर 1988
आशयपत्र दिया गया

2 जून 1988
सरकार की मंजूरी

5 जून 1989
खरीद का करार

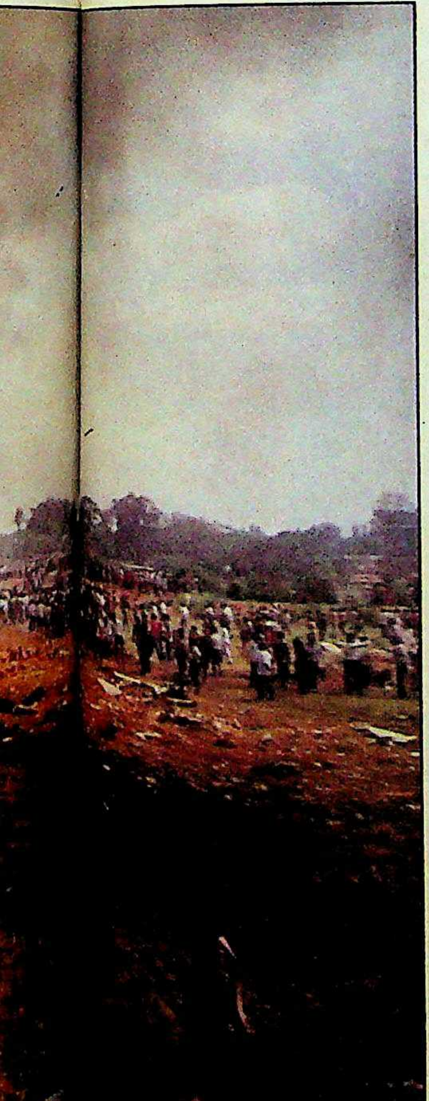

एअरलाइंस ने अचानक नई रिपोर्ट पेश कर दी जिसमें एअरबस की गुणवत्ताओं की प्रशंसा की गई और उसे हासिल करने के लाभ गिनाए गए.

इंडियन एअरलाइंस के बेड़े में एअरबस-320 शामिल करने के फैसले में निरंकुशता और जल्दबाजी झलकती है. मसलन, बोइंग-757 के चयन के पहले इंडियन एअरलाइंस बोर्ड की पूर्ण समिति ने लगभग दो साल तक उसकी कड़ी जांच-परख की थी. लेकिन एअरबस के लिए ऐसी कोई समिति नहीं बनाई गई. चुनींदा वरिष्ठ अधिकारियों ने इसकी खामियों और खूबियों पर बिना विचार किए इसे बेड़े में शामिल करने का फैसला तुरत-फुरत कर लिया.

दरअसल, सरकारी फाइलें देखने से स्पष्ट हो जाता है कि ज्यादातर अधिकारियों को पता ही नहीं था कि एअरबस से एक और सौदा होने जा रहा है. मसलन, 1 अगस्त 1985 को तत्कालीन व्यय सचिव आर. गणपति ने तत्कालीन नागर विमानन सचिव डॉ. एस. एस. सिद्धू को याद दिलाया था कि वित्त मंत्रालय ने रकम जमा करने और बोइंग को आशयपत्र भेजने की अनुमति दे दी है क्योंकि "इंडियन एअरलाइंस ने अपनी विमान संख्या स्थिर हो जाने के कारण बेड़े में वृद्धि को बहुत जरूरी बताया था." गणपति ने अपने स्मरणपत्र के अंत में लिखा, "मैं यह बताने के लिए विवश हूं कि इंडियन एअरलाइंस ने आवश्यक कर्तव्यपरायणता और आग्रह से इस मामले को आगे नहीं बढ़ाया."

सिद्धू ने इस चिट्ठी पर टिप्पणी लिखी, "हमें इस मामले को तेजी से आगे बढ़ाना है. आज मैं समीक्षा बैठक में इस पर एचएम (माननीय मंत्री)/पीएम (प्रधानमंत्री) से बातचीत करूंगा." लेकिन गणपति को मंत्रालय से कोई जवाब नहीं मिला.

हां, 26 अगस्त 1985 को इंडियन एअरलाइंस की प्रबंध निदेशक कामिनी चड्ढा की एक चिट्ठी सिद्धू के पास जरूर आई जिसमें कहा गया कि एअरबस का अवांछित प्रस्ताव हर पहलू से बोइंग के प्रस्ताव से बेहतर है. चड्ढा के अनुमान के मुताबिक 19 ए-320 एअरबसें खरीदने पर 1,238 करोड़ रु. की लागत आती और यदि अतिरिक्त 12 विमान खरीदे गए तो 958 करोड़

रघु राय

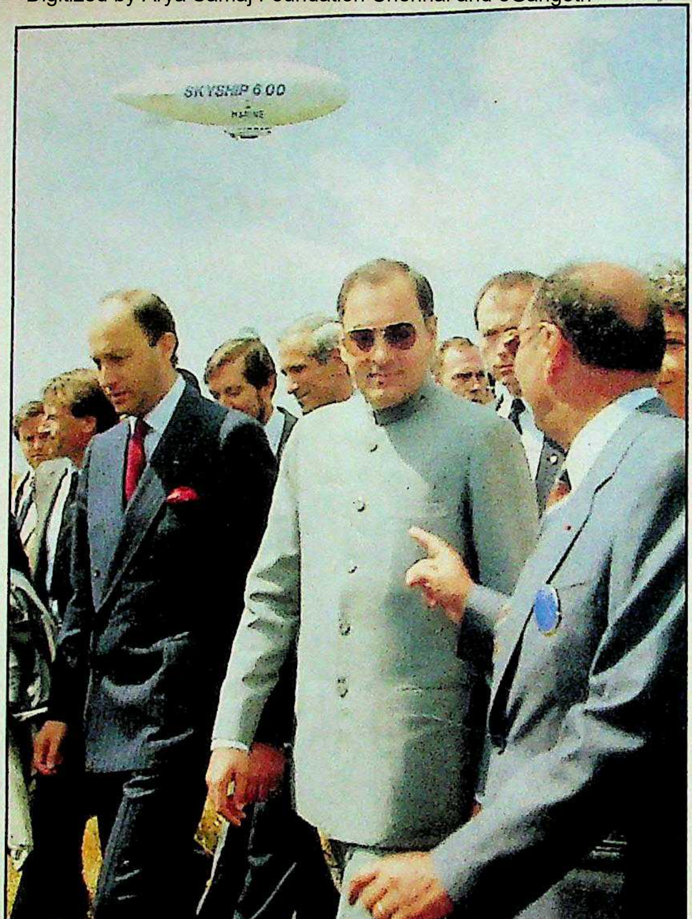

पेरिस एअरशो में राजीवः अवांछित दिलचस्पी

■ **"बारह और विमानों की खरीद से 960 करोड़ रु. की विदेशी मुद्रा का बोझ बढ़ेगा. साथ ही हवाई अड्डे की सुविधाओं को बढ़ाने पर भी काफी खर्च करने की जरूरत है. इसके अलावा, 1993 तक की जरूरतों के मद्देनजर सिर्फ चार अतिरिक्त विमानों की ही आवश्यकता है"**

—जून 1988 में वित्त मंत्रालय को योजना आयोग की राय

■ **"मुझे यह कहने में अफसोस हो रहा है कि (बोइंग की खरीद के मामले में) इंडियन एअरलाइंस ने जरूरी कर्तव्यपरायणता और आग्रह का परिचय नहीं दिया"**

—वित्त मंत्रालय में सचिव (व्यय) आर. गणपति द्वारा नागरिक उड्डयन सचिव एस.एस. सिद्धू को अगस्त '85 में भेजी गई टिप्पणी

■ **"हो सकता है कि कुछ विशेष श्रेणी के विमानों में ए-320 आज तकनीकी रूप से सबसे विकसित हो लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि यह इंडियन एअरलाइंस की मौजूदा जरूरतों के लिए सबसे उपयुक्त ही हों"**

—नागरिक उड्डयन मंत्रालय के संयुक्त सचिव पी.सी. सेन द्वारा इंडियन एअरलाइंस को जून 1988 में भेजी गई टिप्पणी

तिरिक्त खर्च होंगे. चड्ढा का आगे था कि 12 बोइंग-757 खरीदने पर करोड़ रु. की लागत आएगी जो कि ज्यादा है.

320 एअरबस के बारे में अंतिम करने के लिए इतना ही पर्याप्त था. और एअरबस में चुनाव के लिए 30 को जल्दबाजी में इंडियन एअरलाइंस की बैठक बुलाई गई. इसकी अध्यक्षता लीन अध्यक्ष ए.एम. कपूर ने की और कैप्टन डी. बोस, कैप्टन कामिनी चड्ढा, सेनगुप्त और एअर-वाइस मार्शल ला ने इसमें भाग लिया. बोर्ड ने बोइंग- के सिर्फ शुरुआती सौदे को ही नहीं बातचीत के उस प्रस्ताव को भी रद्द दिया जिसमें 737-300 विमान ए- एअरबस की कीमत पर बेचने शकश की गई थी. इसके साथ र्ड ने 19 एअरबसें खरीदने मंजूरी भी दे दी.

इंग का प्रस्ताव तो एक साल ज्यादा समय तक लटका रहा सरकार ने एअरबस के व को झपटने में आश्चर्य- फुर्ती दिखाई. साथ ही कंपनी भी कहा था कि 5 सितंबर 5 के बाद उसकी पेशकश हो जाएगी.

र्ड की बैठक के 48 घंटे के चड्ढा ने सिद्धू को परियोजना की दो प्रतियों के साथ 12 की चिट्ठी भेजी जिसमें तुरंत री मंजूरी देने की मांग की थी. उन्होंने इसमें बोइंग के उस धित प्रस्ताव का कोई जिक्र किया जिसमें 737-300 न को मुनासिब कीमत पर की पेशकश की गई थी. बाद में इंडियन लाइंस ने इन दोनों कंपनियों की पेशकश तुलना किए बिना ही. मंत्रालय को सूचित कि बोइंग की पेशकश कम आकर्षक है कि कंपनी इस मामले में 'गंभीर नहीं' है या उसने शुरू में ही पेशकश भेज दी . इंडियन एअरलाइंस का यह भी कहना कि बोइंग विमान खास रेंज पर ज्यादा खाने लगता है.

नतीजे किसी विशेषज्ञ समिति ने नहीं बल्कि इन्हें बोर्ड ने बोइंग के बजाए सूत्रों से मिले तथ्यों के आधार पर ला. दरअसल चड्ढा ने मंत्रालय को दिए दूसरे पत्र में स्वीकार किया है कि खपत के आंकड़े अस्थायी हैं क्योंकि से उन्हें कोई तकनीकी आंकड़े नहीं . साथ ही बोर्ड ने पता नहीं किन सूत्रों के र पर यह भी मान लिया कि बोइंग का

आरिफ मुहम्मद खां

'इस विमान से कई शिकायतें थीं'

इस्तीफा सौंपने के मामले में आरिफ मुहम्मद खां का शहीदाना अंदाज रहा है. बंगलूर में विमान दुर्घटना के बाद वे यही अंदाज दुहराने लगे थे. ए-320 विमानों की उड़ानें रद्द करने के उनके फैसले पर कुछ भृकुटियां भी तन उठी हैं. इस पूरे मामले पर उन्होंने वरिष्ठ संपादक ***प्रभु चावला*** *से विस्तृत बातचीत की. उसके कुछ अंश:*

भवान सिंह

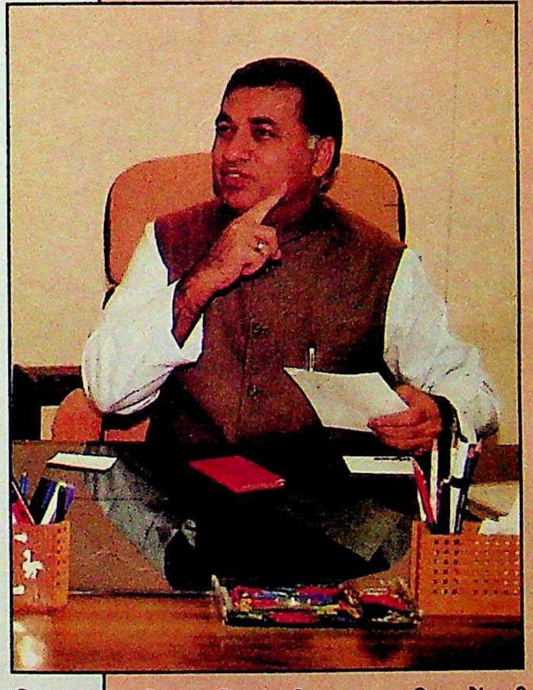

- ***प्राथमिक रिपोर्ट का इंतजार किए बिना ही आपने ए-320 विमानों की उड़ानें रद्द क्यों कर दीं?***

इस फैसले में कुछ भी असामान्य नहीं है. इस विमान के बारे में ढेरों शिकायतें मिल रही थीं और यात्री भी कुछ हद तक सशंकित थे, इसलिए विश्वास बनाए रखने के लिए यही तर्कसम्मत उपाय था. सरकार लोगों की जिंदगी को जोखिम में नहीं डाल सकती.

- ***इस फैसले का असर दुनिया भर में पड़ेगा. आपकी क्या राय है?***

हां, हम यह जानते हैं. लेकिन क्या हमें सिर्फ इसीलिए यात्रियों के जीवन से खेलना चाहिए क्योंकि इससे कुछ लोगों के व्यावसायिक या राजनैतिक स्वार्थ जुड़े हैं.

- ***यह फैसला करने से पहले क्या आपने प्रधानमंत्री से मशविरा किया?***

फैसला नागरिक उड्डयन मंत्रालय में ही किया गया. प्रधानमंत्री को सूचित जरूर किया गया और उन्होंने स्पष्ट कहा कि नफा-नुकसान देखते हुए इस मामले के फैसले की जिम्मेदारी मंत्रालय की ही है.

- ***कूटनैतिक सूत्रों के अनुसार यह सौदा कूटनैतिक मजबूरियों से भी जुड़ा है.***

जहां तक लोगों की सुरक्षा का सवाल है, सही कूटनीति और देश के हितों के बीच कोई टकराव नहीं है.

- ***क्या यह सही है कि नए विमानों के इतने बड़े बेड़े को उड़ाने की पूरी क्षमता न होते हुए भी यह सौदा किया गया?***

गड़े मुर्दे उखाड़ने से क्या लाभ. इस सौदे पर पुनर्विचार का मामला भी सरकार के ध्यान में है. पूर्व सरकार ने जिस तेजी से इस सौदे पर बातचीत की, इस पर भी शंकाएं उठाई गई हैं.

- ***लेकिन क्या आपको इस सौदे में दलाली दिए जाने का शुबहा है?***

मैं इसका जवाब कैसे दे सकता हूं? मुझे उम्मीद है कि विमान को इसकी गुणवत्ता के चलते ही खरीदा गया.

- ***एअरबस के पक्ष में बोइंग सौदा क्या सिर्फ गुणवत्ता के आधार पर ही रद्द किया गया था?***

उस समय मैं फैसला करने की प्रक्रिया में शामिल नहीं था.

- ***पर अब तो ये फाइलें आपके अधिकार क्षेत्र में हैं?***

मैं गोपनीयता की शपथ से बंधा हूं.

- ***इंडियन एअरलाइंस के प्रति आप लोगों का भरोसा कैसे बहाल करेंगे?***

इसके लिए हमारे पास एक कार्य-योजना है. अब उड़ानों को पूर्ण सुरक्षित और आरामदेह बनाने पर जोर होगा.

- ***लेकिन आयोगों की रिपोर्टों पर भी कार्रवाई करने में मंत्रालय नाकाम रहा है.***

हम इन शिकायतों पर गौर कर रहे हैं. पर अब यह फैसला किया गया है कि एअरलाइंस का कामकाज एअरलाइन भवन और एअर इंडिया मुख्यालय से ही चलेगा, सरदार पटेल भवन से नहीं. हम नीति संबंधी दिशा-निर्देश ही नहीं देंगे, इसके कामकाज पर भी नजर रखेंगे. यही नहीं, हम जवाबदेही भी तय करेंगे. इन संस्थाओं को कामकाज में पर्याप्त स्वायत्तता दे दी जाएगी तब गड़बड़ी की हालत में उनसे ही जवाब तलब किया जाएगा.

757
BOEING 757

प्रस्ताव 30 अगस्त 1985 की पेशकश के मुताबिक मानक 146 सीटों वाले जहाज का नहीं बल्कि 138 सीटों वाले जहाज का है.

बोइंग के नए प्रस्ताव पर चर्चा की कोई कोशिश नहीं की गई. यह बोइंग के क्षेत्रीय निदेशक आर.एल. इलियट द्वारा चड्ढा के नाम लिखे गए पत्र से भी जाहिर होता है. इलियट ने लिखा, ''737-300 विमान का अतिरिक्त ब्यौरा तथा कीमतें बताने में हमें खुशी होगी जिससे कि आप हमारे प्रस्ताव का आकलन कर सकें...''

हालांकि सिद्धू अधिकारियों को इंडियन एअरलाइंस के खरीद अनुरोध को जल्दी निबटाने का निर्देश दे रहे थे लेकिन मंत्रालय के दूसरे कई अधिकारी सौदे का संपूर्ण आकलन करने पर दृढ़प्रतिज्ञ थे. ऐसा करना निहायत जरूरी था क्योंकि एअरबस-320 प्रायोगिक स्तर से सीधे संचालन के स्तर पर लाई जा रही थी. दरअसल किसी और देश ने इतनी संख्या में ये विमान खरीदने की पेशकश नहीं की थी. इसीलिए मंत्रालय के अधिकारी पूरा ब्यौरा हासिल करने पर अड़े हुए थे कि खरीद में कोई अतिरिक्त गोपनीय खर्च तो नहीं आएगा.

मसलन, मंत्रालय के संयुक्त सचिव पी.सी. सेन ने 10 सितंबर 1985 को इंडियन एअरलाइंस को लिखा, ''नागरिक उड्डयन महानिदेशालय या भारतीय अंतरराष्ट्रीय विमानपत्तन प्राधिकरण द्वारा हवाई अड्डों पर दी जाने वाली जरूरी सुविधाओं के लिए क्या किसी अतिरिक्त निवेश की जरूरत पड़ सकती है.''

चड्ढा का जवाब था, ''एअरबस उन सभी हवाई अड्डों से संचालित हो सकेगी जिनसे फिलहाल बी-737 विमान संचालित होते हैं. विमान पट्टी को मजबूत बनाने या लंबा करने के लिए किसी अतिरिक्त खर्च की जरूरत नहीं पड़ेगी.'' लेकिन बहुत बाद में जाकर पता चला कि सिर्फ इंडियन एअरलाइंस को ही पायलटों, इंजीनियरों और नेविगेटरों के प्रशिक्षण पर 50 करोड़ रु. नहीं खर्च करने पड़े वरन इस विमान को इस्तेमाल करने के लिए दूसरी एजेंसियों के भी 200 करोड़ रु. खर्च हो गए.

पर सवाल उठाए जाने के बावजूद सरकार ने न सिर्फ 2 सितंबर 1985 को 1 विमानों का आर्डर दिया वरन 12 और विमान खरीदने का विकल्प भी सुर रखा. इस पर जुलाई 198 में अमल किया गया.

योजना आयोग औ मंत्रालय के कई वरिष्ठ अधिकारियों का विचार था कि अतिरिक्त एअरबस खरीदने से पहले दूसरे विमानों पर भी विचार कर लिया जाना चाहिए. पर उनके गंभीर एतराजों के बावजूद मंत्रालय तथा केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बिजली की तेजी के साथ इन दोनों आदेशों को हरी झंडी दिखा दी. 1988 में कई अधिकारी यह भी सोच रहे थे कि सरकार को उस साल हुई एअरबस की दुर्घटनाओं की जांच रिपोर्टों का इतजार कर लेना चाहिए था.

पर जिस तरह से इंडियन एअरलाइंस ने अतिरिक्त विमान खरीदने के काम को अंजाम दिया उससे स्पष्ट हो गया कि उसने बाकी विकल्पों के रास्ते बंद कर दिए थे. जून 1988 में एअरलाइंस और मंत्रालय के बीच हु पत्राचार से भी यह स्पष्ट हो जाता है अंतिम आर्डर दिए जाने के ठीक पहले मंत्रालय को जब 12 अतिरिक्त विमानों की खरीद का प्रस्ताव मिला तो सेन ने पूरी परियोजना पर सवाल उठाते हुए 11 पृष्ठों का करारा जवाब लिख भेजा. सेन ने यह भी लिखा, ''ए-320 किसी खास श्रेणी में तकनीकी रूप से सबसे आधुनिक विमान हो सकता है पर इसका यह मतलब नहीं कि यह विमान इंडियन एअरलाइंस की मौजूदा जरूरतों के हिसाब से सबसे बेहतर भी है.''

मंत्रालय ने सोवियत विमानों पर विचार न करने के रवैए पर भी सवाल उठाया. ये विमान रुपयों में भुगतान के मिल रहे थे. विदेशी मुद्रा कोष की खस्ता हालत को देखते हुए यह महत्वपूर्ण था. योजना आयोग ने भी वि मंत्रालय को भेजी गोपनीय टिप्पणी में लिखा, ''12 अतिरिक्त विमानों की खरीद से विदेशी मुद्रा कोष को 96 करोड़ रु. का झटका लगेगा.'' आयोग ने यह भी कहा कि देश की 1993 तक की जरूरतों के लिए सिर्फ चार अतिरिक्त विमानों की ही जरूरत है.

लेकिन इस खरीद का सबसे दु

बोइंग को किया बाहर

एअरबस सौदे को आनन-फानन मंजूरी

- **24 जुलाई 1984:** 12 बी-757 विमानों की खरीद के लिए इंडियन एअरलाइंस बोइंग कंपनी को आशयपत्र भेजती है जिसके अनुसार विमानों की सुपुर्दगी दिसंबर 1987 तक होनी थी. इस पत्र में कहा गया था कि पक्का आर्डर 31 अक्तूबर 1984 के पहले दे दिया जाएगा.
- **3 जनवरी 1985:** इंडियन एअरलाइंस वित्त मंत्रालय के पास बोइंग विमानों की खरीद संबंधी प्रारंभिक रिपोर्ट और निवेश प्रस्ताव भेजती है.
- **17 मई 1985:** अमेरिकी वाणिज्य विभाग में अंतरराष्ट्रीय व्यापार संबंधी अवर सचिव लिओनेल एच. ओमर तत्कालीन उड्डयन सचिव एस.एस. सिद्धू से मिलकर विस्तृत प्रस्ताव और विमानों की कीमत पर भी बात करते हैं. ओमर लिखित तौर पर भी इसकी पुष्टि करते हैं, ''अब मेरा मानना है कि बोइंग और एअरबस की कीमत के प्रस्तावों में करीब-करीब कोई अंतर नहीं रह गया है... हमारी राय है कि विमानों की सुपुर्दगी जल्दी करने और बोइंग विमान की तकनीक जांची-परखी होने से आप अपने आशयपत्र का खयाल करते हुए बोइंग से ही सौदा करेंगे.''

ओमर की चिट्ठी न तो मंत्रालय स्तर पर दिखाई गई, न इंडियन एअरलाइंस बोर्ड को. चिट्ठी मिलने के सात हफ्ते बाद 5 जुलाई 1985 को इसे एक कनिष्ठ अधिकारी के पास पहुंची फाइलों में रखा गया. रिकार्ड बताते हैं कि इस प्रस्ताव पर कोई बात नहीं हुई.

- **30 अगस्त 1985:** अमेरिकी दूतावास के उप-वाणिज्य दूत गार्डन एल. स्ट्रीब ने 737-300 विमानों का वैकल्पिक प्रस्ताव सिद्धू के पास भेजा. स्ट्रीब लिखते हैं, ''हमें भरोसा है कि भारत सरकार बोइंग विमानों के नवीनतम प्रस्ताव पर उचित ध्यान देगी और उन्हें भी वैकल्पिक विमान के बारे में पेशकश करने की वही सुविधा देगी जो एअरबस इंडस्ट्रीज को दी गई है.''
- **9 सितंबर 1985:** इंडियन एअरलाइंस बोइंग को पत्र लिखकर सूचना देती है कि उसके दोनों—बी-757 और 737-300 वाले प्रस्ताव स्वीकार किए जाने योग्य नहीं हैं और वह अपने यहां जमा कराए गए 9 लाख डॉलर (1.35 करोड़ रु.) लौटा दे.

यह कि इंडियन एअरलाइंस ने न तो 1988 में पेरिस में प्रदर्शन के दौरान हुई बस-320 दुर्घटना की जांच रिपोर्ट का न ही विमान में लगने वाले नए बी-0 इंजन के आकलन का इंतजार करने जरूरत समझी. सौदे के सरकारी आलो- का सुझाव था कि 12 अतिरिक्त नों की खरीद तभी की जानी चाहिए पहले खरीदे गए और 1989 के शुरू से में लाए जा रहे 19 विमानों में इन नों के कामकाज का जायजा मिल जाए. संयोग से दुनिया भर में उड़ रहे 79ए-320 विमानों में से भारत के अलावा सिर्फ 15 विमानों में ही बी-2500 इंजन लगे हैं.

सेन ने एक बार फिर चेतावनी दी. उन्होंने लिखा, "26 जून 1988 को फ्रांस में हुई दुर्घटना के कारणों के बारे में नागरिक उड्डयन अधिकारियों की रिपोर्ट अभी तक मिली नहीं है. इसलिए अतिरिक्त ए-320 का आर्डर देने से पहले रिपोर्ट का इंतजार जरूरी है."

पर एअरबस कंपनी के अधिकारी अंतिम तारीख बदलने को राजी नहीं हुए. अंतिम आशयपत्र पर 5 जून 1988 को दस्तखत हुए और अगले महीने ही अंतिम आर्डर दे दिया गया. दस्तावेजों से यही नहीं पता लगता कि ऊपर बैठे किस शख्स के हाथ में इस गोरखधंधे की लगाम थी और किसके इशारे पर आकलन प्रक्रियाओं का उल्लंघन किया गया तथा वरिष्ठ अधिकारियों के गंभीर एतराजों को नजरअंदाज किया गया. पर फाइलें जो नहीं बतातीं, नई सरकार उसी को उजागर करने को प्रतिबद्ध है. अभी तो सवालों का सिलसिला शुरू ही हुआ है.

—प्रभु चावला

ए-320

छोटी खामियों का बड़ा असर

यह स्पष्ट नहीं कि हादसा तकनीकी गड़बड़ी से हुआ या इंसानी गलती से

क्ट्रॉनिक कल-पुर्जों से लैस एअरबस ए-320 को दुनिया का आधुनिकतम ही सबसे सुरक्षित यात्री विमान भी माना है. लेकिन पिछले पखवाड़े इस विमान री प्रतिष्ठा इंडियन एअरलाइंस की संख्या आईसी-605 की तरह ही जैसे क्षत-विक्षत होती नजर आई.

यह विमान लोगों की नजर में इस कदर गिर गया कि 90 लोगों की जान लेने वाले इस हादसे के चार दिन बाद ही नागरिक उड्डयन मंत्रालय को एअरबस ए-320 के बाकी 14 विमानों की तमाम उड़ानों को रद्द करने का कड़ा फैसला करना पड़ा. एअरलाइंस ने अभी आठ महीने पहले ही इन विमानों को अपने बेड़े में शामिल किया था.

यह कार्रवाई समय से पहले की गई लगती है, क्योंकि हादसे के पखवाड़े भर बाद भी ऐसा कोई संकेत नहीं मिला है कि विमान

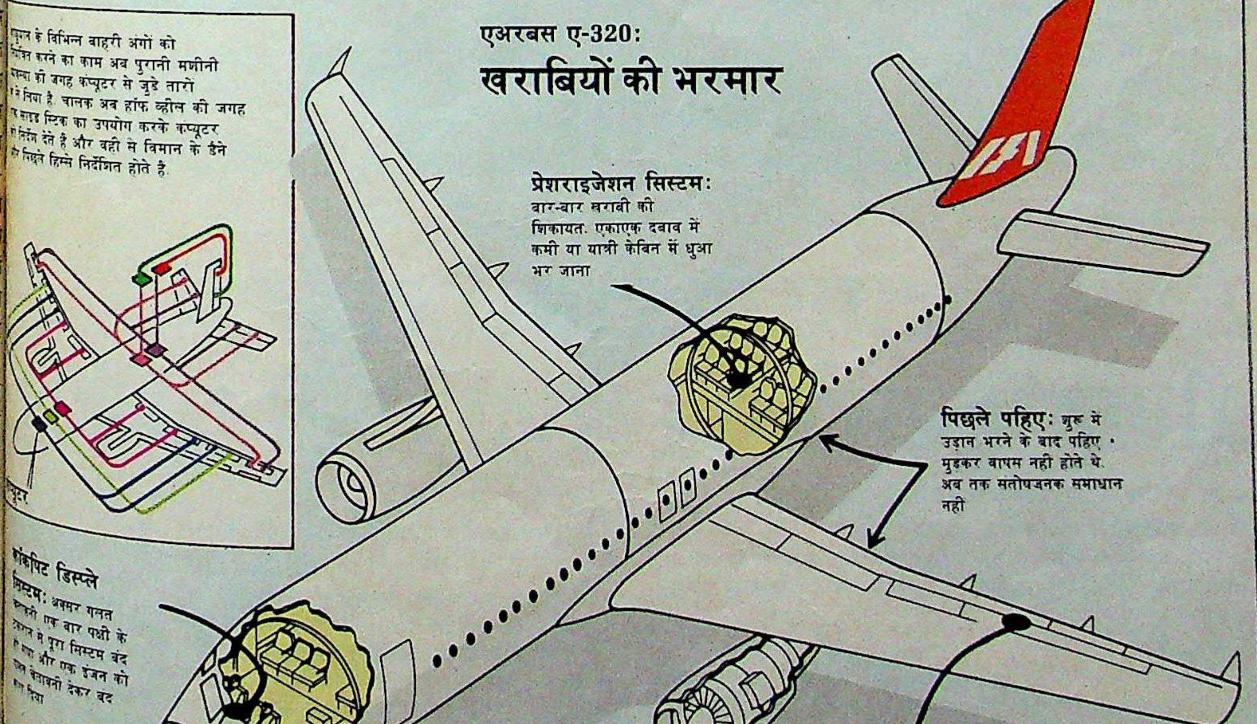
एअरबस ए-320:
खराबियों की भरमार
के विभिन्न बाहरी अंगों को न करने का काम अब पुरानी मशीनी की जगह कंप्यूटर से जुड़े तारों लिया है. चालक अब हॉफ व्हील की जगह साइड स्टिक का उपयोग करके कंप्यूटर निर्देश देते हैं और वहीं से विमान के डैने पिछले हिस्से निर्देशित होते हैं.
पूटर
प्रेशराइजेशन सिस्टमः बार-बार खराबी की शिकायत. एकाएक दबाव में कमी या यात्री केबिन में धुआं भर जाना
पिछले पहिएः शुरू में उड़ान भरने के बाद पहिए मुड़कर वापस नहीं होते थे. अब तक संतोषजनक समाधान नहीं
कॉकपिट डिस्प्ले सिस्टमः अक्सर गलत ी. एक बार पक्षी के न में पूरा सिस्टम बंद और एक इंजन को चेतावनी देकर बंद दिया
हाइड्रॉलिक सिस्टमः बार-बार लीक होने की शिकायत. इंजीनियरों को नियमित रूप से पेंच कसते रहने का निर्देश है
नोज-व्हील स्टीयरिंगः बार-बार खराबी

रेखाचित्रः बी.के. शर्मा

हॉकिन्स यूनिवर्सल — १० लीटर
हॉकिन्स हैवीबेस — ५ लीट
Hawkins UNIVERSAL PRESSURE COOKER
Hawkins FUTURA
Hawkins CONTURA
हॉकिन्स फ़्यूचुरा — ५ लीटर
हॉकिन्स कोंट्युरा — ५ लीटर

संसार के सबसे सुंदर प्रेशर कुकरों की श्रेणी में से चुनिए

हॉकिन्स यूरोप और अमेरिका में भी बिकता है

सेल्फ्रिजेस, लंदन. ब्लूमिंग्डेल्स, न्यूयॉर्क. ये तथा विदेश के अन्य बहुत-से बढ़िया स्टोर हॉकिन्स रखते हैं. भारत का कोई भी अन्य प्रेशर कुकर यह सन्मान प्राप्त नहीं कर पाया है. हॉकिन्स की इसी सुंदर श्रेणी में से अपना कुकर चुनिए.

ज़्यादा सुविधा, ज़्यादा किफ़ायत

आपके पास अपनी रसोई की हर ज़रूरत के मुताबिक सही साइज़ के हॉकिन्स हों तो आपको समय और पैसे की और भी अधिक बचत होगी. मध्यम साइज़ का कुकर आपकी दैनिक ज़रूरतों के लिए सबसे अच्छा है. बड़े साइज़ के कुकर से त्योहारों और दावतों के वक्त बड़ी सुविधा होती है. सिर्फ़ एक या दो लोगों का खाना पकाने में छोटे कुकर से बहुत बचत होती है.

हॉकिन्स श्रेणी

हॉकिन्स २, ३, ४, ५, ६.५, ७, ८, १०, १२ और २२ लीटर की क्षमताओं में उपलब्ध है. इनके अलावा अतिरिक्त विशेषताओं और लाभवाले मॉडल भी हॉकिन्स में हैं. ५ और ७ लीटर के **हॉकिन्स फ़्यूचुरा** की विशेषता है खाना चिपकने से रोकनेवाली उसकी 'सैटिलॉन फ़िनिश' जो नई दिखती रहती है. ५ लीटर के **हॉकिन्स कोंट्युरा** की बॉडी अनोखी गोलाकार है जिसके कारण खाना चलाना और कुकर की सफ़ाई ज़्यादा आसानी से होते हैं. ५ और ६.५ लीटर के **हॉकिन्स हैवी बेस** का ६.३ मिलीमीटर मोटा तला सभी प्रकार के स्टोवों पर सपाट बना रहता है और यह हलके तलने के काम के लिए बहुत उपयुक्त है. यहां लिखे हुए किसी भी विक्रेता के पास आप खुद ये सब देख लें. कोई कठिनाई हो तो इस पते पर लिखें : हॉकिन्स, विभाग १२०२ एच, पी.ओ. बॉक्स ६४८१, बम्बई ४०० ०१६.

सबसे सुरक्षित, सबसे जल्द, स्वादिष्ट खाना पकाए

भले ही आप कोई भी मॉडल चुनें, आपको मिलेगी उत्कृष्ट हॉकिन्स डिज़ाइन और क्वॉलिटी. ९८ व्यंजन - विधियोंवाली हॉकिन्स पाक - पुस्तिका हर प्रेशर कुकर के साथ मुफ़्त मिलती है. पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर भारत की पाक - विधियां १३ भाषाओं में चुनने की सुविधा. भारतभर में आपकी सेवा के लिए चुस्त, विनम्र, कुशल कर्मचारियोंवाले ३२८ अधिकृत केंद्र.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

१ करोड़ से ज़्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

® रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क १९९० कॉपीराइट हॉकिन्स कुकर्स लिमिटेड द्वारा आरक्षित

हॉकिन्स-श्रेणी विक्रेता

दिल्ली

[illegible] विहार, उषा इलेक्ट्रॉनिक्स, ३१, सेंट्रल मार्केट बेसमेंट ● **बाबू मार्केट**, पंजाब बर्तन स्टोर, सरोजिनी नगर ● [illegible] स्टेस, जानकी दास एंड कं., २३-एफ़, सुपर बाज़ार मेन ब्रांच ● **चांदनी चौक**, बल्लीमारान, १८५१ ● घनश्याम जगन्नाथ, ६३३, कूचा नटवां के सामने ● बुध सिंह एंड संस, १८५४ [illegible], १६०, बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने ● **फ़तेहपुरी**, लाड़ली प्रसाद बंसीधर, २५६, कूचा घासीराम [illegible] ● एक्सिस्को इलेक्ट्रिकल्स, २३४ ● **गांधी नगर**, भूपिंदर सिंह एंड संस, मेन बाज़ार ● देसराज [illegible], मेन बाज़ार ● **हौज़ ख़ास**, जैन ब्रदर्स, हौज़ ख़ास मार्केट ● **कालकाजी**, दास इलेक्ट्रॉनिक्स, [illegible] ● करोल बाग, आनंद क्रॉकरी स्टोर्स, १५७, गफ़्फ़ार मार्केट ● बंगाल पेंटरीज़ एंड एलाइड स्टोर, १७-१८ अजमल खां रोड ● सरगोधा बर्तन स्टोर, २५६७, अजमल खां रोड ● तमिल नाडु स्टोर्स, [illegible] पद्म सिंह रोड ● विशाल बर्तन स्टोर्स, २५६८, अजमल खां रोड, ● **कमला नगर**, क्रॉकरी [illegible] ११-एफ़ ● **कोटला मुबारकपुर**, राजस्थान हार्डवेयर स्टोर, एच-४८२, सुभाष मार्केट ● [illegible] नगर, नेशनल बर्तन भंडार, ३४, सेंट्रल मार्केट ● डायर यूटेंसिल्स, ३३, सेंट्रल मार्केट ● **मोती** [illegible], पूनम बर्तन स्टोर, मेन बाज़ार ● **राजौरी गार्डन**, न्यू वेरायटी स्टोर्स, जे-८३, मेन मार्केट ● **सदर** बाज़ार, [illegible] क्रॉकरी हाउस, ६११७, मेन मार्केट ● बृज किशोर एंड संस, ४५२२, पहाड़ी धीरज ● पंजाबी बाग़, [illegible] २७४४, कुतुब रोड ● **सरोजिनी नगर**, वंदना, ९३ ● **शाहदरा**, अग्रवाल बर्तन स्टोर, [illegible] ● सब्ज़ी मंडी घंटाघर, क्रॉकरी एंड एलाइड स्टोर्स, १५३५, चंद्रावल रोड ● **त्रिनगर**, जैन [illegible], १५१२, तोताराम बाज़ार ● **यूसुफ़ सराय**, जैन यूटेंसिल्स, १५, मंदिरवाली गली ● लक्ष्मी [illegible], ७८/२ ● मुन्नी लाल बिहारी स्वरूप, ७२/६ ● राम किशन एंड संस ७२/७ यूसुफ़ सराय.

आंध्र प्रदेश

☐ **आदिलाबाद** : एस. बी. एच. रोड श्रीनिवास एंटरप्राइजेस, ५-७-५७/४ ☐ **भीमावरम** : [illegible] राम एंटरप्राइजेस ☐ **गुंटूर** : अरंडेल पेट मद्दूपल्ली सांबमूर्ति, मेन रोड ☐ **हैदराबाद** : [illegible] विशाल होम एप्लायंसेज़, मेट्रो इस्टेट ● अमीर पेट महावीर स्टील पैलेस, सत्यम थियेटर रोड ● [illegible] रोड विजया स्टील पैलेस ● हिमायत नगर कुंदन्स, ए. पी. एस. ई. बी. सब स्टेशन [illegible] ● [illegible] स्टेशन रोड अंजली इलेक्ट्रॉनिक्स ● लक्ष्मी होम एप्लायंसेज ● सुल्तान बाज़ार [illegible] ● गुडविल स्टील स्टोर्स, ४-५-११७ ☐ **जगतियाल** : राम बाज़ार श्री पद्मजा [illegible] ☐ **काकिनाड़ा** : सूर्यराव पेठ गुप्ता एम्पोरियम, मेन रोड ☐ **करीमनगर** : टावर चौक [illegible] ☐ **कर्नूल** : पार्क रोड आंध्र किचनवेयर्स ☐ **नेल्लोर** : सिखरमवारी स्ट्रीट कुम्मर [illegible] ☐ **सिकंदराबाद** : जनरल बाज़ार प्रियंका एंटरप्राइज़ेस, कुर्मा बस्ती ● राष्ट्रपति [illegible] स्टील पैलेस, बाटा के सामने ● स्टेशन रोड कमल्स गिफ्ट लैंड, कमल स्टोर्स की असली [illegible] ☐ **विजयवाड़ा** : गवर्नर पेट ज्योति मेटल्स, प्रकाशम रोड ● श्री सत्यनारायण मेटल स्टोर्स, [illegible] ● श्रीनिवास मेटल्स, प्रकाशम रोड ☐ **विशाखापटनम** : टी. एस. आर. कॉम्प्लेक्स [illegible] एम्पोरियम, दुकान नं. २४ ● मेन रोड बॉम्बे गैस लाइट स्टोर्स ● सूर्य बाग गोपी संस, पुलिस [illegible] के सामने ● पद्मपेट रोड श्री विजया दुर्गा मेटल स्टोर्स, अल्लीपुरम्.

आसाम

☐ **बरपेटा टाउन** : बी. बी. रोड दास एजेंसी ☐ **बंगाइगांव** : मेन रोड रवि प्रकाश आनंद एंड कं. ☐ **धुबरी** : डी. डी. रोड जी. सी. रॉय एंड संस ☐ **डिब्रूगढ़** : एच. एस. रोड वर्मा क्रॉकरी स्टोर ● न्यू मार्केट एल. दत्त एंड कं. ☐ **दिग्बोई** : आई. ओ. सी. मार्केट नाथ ब्रदर्स ● जनता रोड [illegible] ☐ **गोलपाड़ा** : चौक बाज़ार विजय स्टोर ☐ **गुवाहाटी** : दिसपुर राजधानी ग्लास हाउस ● [illegible] रोड [illegible] इलेक्ट्रिकल्स ● लाखटोकिया सी. एम. स्टोर ● पलटन बाज़ार रवि प्रकाश आनंद एंड कं. ● जी. एन. बी. रोड नेशनल वेरायटी स्टोर, मालिगांव ● एस. आर. सी. बी. रोड [illegible] एंड कं., फैन्सी बाज़ार ● सांगवारिया एजेंसी ● श्याम मेटल स्टोर ● एस. एस. रोड [illegible] ☐ **जोरहाट** : चौक बाज़ार एकेश चंद्र दास ● गढ़-अली रॉय एंड कं. ● साहा ट्रेडिंग एजेंसी ☐ **करीमगंज** : स्टेशन रोड स्टेशनरी स्टोर्स ☐ **कोकराझार** : मेन रोड लक्ष्मी नारायण स्टोर ☐ **मंगलदई** : एस. एन. बी. रोड इलेक्ट्रिक स्टोर ☐ **नलबारी** : एन. टी. रोड मारुति इलेक्ट्रॉनिक्स ☐ **उत्तर लखीमपुर** : एन. टी. रोड दत्त ब्रदर्स ☐ **नवगांव** : ए. टी. रोड एस. पी. बैनर्जी एंड संस, [illegible] ● बड़ा बाज़ार जैन ब्रदर्स ● हाकापट्टी न्यू चैतन्य स्टोर ● स्टेडियम मार्केट जैन इलेक्ट्रिकल्स [illegible] ☐ **रंगापाड़ा** : मेन रोड जैन संस ☐ **शिवसागर** : मारवाड़ी पट्टी हनुमान बक्स [illegible] ● टेम्पल रोड विश्वनाथ अग्रवाल ☐ **सिलचर** : हॉस्पिटल रोड रवि प्रकाश आनंद एंड कं. ☐ **तेजपुर** : चौक बाज़ार गीता हार्डवेयर स्टोर ● मेन रोड सजावट ☐ **तिनसुकिया** : डेली बाज़ार [illegible] एंड संस ● सदा क्रॉकरी हाउस ● जी. एन. बी. रोड रवि प्रकाश आनंद एंड कं. ● थाना [illegible] कॉर्पोरेशन.

बिहार

☐ **झरिया** : गणेश स्टोर्स ☐ **आरा** : चौक, अग्रवाल बर्तन भंडार ● जेल रोड, भोला इलेक्ट्रिकल्स ☐ **औरंगाबाद** : ओल्ड जी. टी. रोड पर्ल एंड कं. ● संगीता ☐ **बरौनी** : स्टेशन रोड, सिन्हा एंड [illegible] ☐ **बेगुसराय** : के. एन. मार्केट, बिहार कमर्शियल एजेंसी, मेन रोड, दुकान नं. १ ● मेन रोड, [illegible] ● क्वालिटी स्टील एजेंसी ☐ **बेतिया** : लाल बाज़ार, सागर ☐ **भागलपुर** : [illegible] सिंह रोड, डोकानिया एंड संस ● लाइट सेंटर ● मेला स्टोर्स ☐ **बिहार शरीफ़** : [illegible] मार्केट, जैन एंड ब्रदर्स ☐ **बोकारो स्टील सिटी** : सिटी सेंटर, आम्रपाली, सेक्टर-४ ● [illegible] स्टोर्स, ई-१३ ● मेन रोड शीतल स्टोर्स ● श्री लक्खी बर्तन भंडार, बेदी मार्केट ☐ **चाईबासा** : जैन मार्केट, अग्रवाल स्टोर्स ● धीरजलाल सी. ठक्कर ● सदर बाज़ार, के. सी. पॉल [illegible] ● स्टील सेंटर, काली मंदिर के पास ☐ **छपरा** : हथवा मार्केट, रस्तोगी ग्लास हाउस ☐ **चक्रधरपुर** : क्रिस्टल ट्रेडर्स, गुरुद्वारा बिल्डिंग के पास ● मेन रोड, पैराडाइज़ इलेक्ट्रिकल्स, गुरुद्वारा [illegible] ☐ **डाल्टनगंज** : मेन रोड, चालिया ब्रदर्स ☐ **दरभंगा** : टावर चौक, भारत स्टोर्स ☐ **डेहरी ऑन सोन** : सिनेमा रोड, स्वामीना ● सहेली ● ओल्ड जी. टी. रोड, मास्टर सुईंग मशीन ☐ **देवघर** : श्यामगंज रोड, वैद्यनाथ इलेक्ट्रिक स्टोर्स ☐ **धनबाद** : बैंक मोर, बेंगाल सेरेमिक, [illegible] ☐ **दुमका** : मेन रोड, मनसादेवी इलेक्ट्रिक स्टोर्स ● परिचय स्टोर्स ● ओल्ड सिनेमा [illegible] ● सराय रोड, बजाज एंटरप्राइजेस, सी. एम. बजाज पथ ☐ **फारबिसगंज** : एस. के. [illegible] डिस्ट्रीब्यूटर्स ● स्टेशन रोड, बैजनाथ प्र. गौरीशंकर प्र. ☐ **गया** : जी. बी. रोड, इंद्रपुरी [illegible] ☐ **गिरिडीह** : चौक बाज़ार, शंकर ट्रेडर्स ● माकातपुर, प्रदीप इलेक्ट्रिक [illegible] ☐ **गुलाबबाग** : पवित्र फ़र्नीचर एजेंसी ☐ **गुमला** : मेन रोड, महावीर ग्लास [illegible] ● श्याम सुंदर ग्लास स्टोर्स ☐ **हज़ारीबाग** : भगवान महावीर मार्ग, सुगन चंद (सेठी) जैन ☐ **जमालपुर** : प्रधान इलेक्ट्रिक ☐ **जमशेदपुर** : गोलमुरी मार्केट, आम्रपाली, दुकान नं. १ ● [illegible], मेन रोड, रामनिवास लाल देवचंद, रेलवे फाटक के पास ● साकची बाज़ार, बिंदेश्वरी प्रसाद [illegible] ● ललित कुमार द्वारा/सिरोहीवाल ट्रेडिंग कं. ● नील कमल स्टील सेंटर, [illegible] ● स्टील सेंटर, १६१/१ ● स्टील सेल्स कॉर्पोरेशन, दुकान नं. १६१ ● साकची [illegible] मार्केट, कुमार हाउस, २५, ओल्ड अनु लाइन ● टेल्को, नमिता स्टील सेंटर, आज़ाद मार्केट ☐ **जहानाबाद** : [illegible] इलेक्ट्रिक वर्क्स ☐ **झरिया** : धरमटोला रोड, आशीर्वाद ट्रेडिंग कंपनी ● [illegible] इलेक्ट्रॉनिक्स, द्वारा/भाटिया इलेक्ट्रॉनिक्स ● वर्धमान पोस्टलाल अम्बानी, आदर्श मैशन [illegible] ☐ **कटिहार** : एम. जी. रोड, मोतलम एजेंसीज़ ● मंगल बाज़ार, [illegible] ● [illegible] स्टोर्स ● साइकस्टरा, स्पांग ☐ **खगड़िया** : मिल रोड, श्याम इलेक्ट्रिकल्स ☐ **लहेरिया सराय**, बाकर गंज, दयाल क्रॉकरी हाउस ● कमर्शियल चौक, स्टील हाउस ☐ **मुज़फ़्फ़रपुर**, अघर बाज़ार, संजीव ग्लास हाउस ☐ **मधुबनी** : शिवरतन प्रसाद राम अवतार ☐ **मोतीहारी** : मेन रोड, पन्नालाल एंड संस ● स्टील हाउस ☐ **मुंगेर** : चौक, महेंद्र इलेक्ट्रिक [illegible] रोड, जानकी ट्रेडर्स ☐ **मुज़फ़्फ़रपुर** : मोतीझील, दादा स्टील एंड क्रॉकरी हाउस [illegible] एम्पोरियम ● सरैयागंज, भारत ग्लास कं. ● किचन किंग ☐ **नवगछीया** : श्री गोपाल [illegible] ☐ **पटना** : बोरिंग रोड, एच. सी. एंटरप्राइजेस, नेपाली कोठी ● एग्ज़ीबीशन रोड, पारती [illegible], पटना स्टील कॉर्नर ● न्यू मार्केट, क्रॉकरीको ● सहानी इलेक्ट्रिकल्स ● बांकीपुर पोस्ट [illegible] के सामने, स्टील कॉर्नर, मुरादपुर ● स्टेशन रोड, प्रीमियर इंजीनियरिंग कं., कृष्णा चौक ☐ **पूर्णिया** : भट्टा बाज़ार रतनलाल एंड कं. ☐ **रामगढ़** : मेन रोड, राजू क्रॉकरी हाउस ● रामगढ़ [illegible] इलेक्ट्रिकल कॉर्पोरेशन ☐ **रांची** : चर्च रोड, बासन ● भोला मेटल स्टोर्स ● यूटेंसिल्स [illegible], ट्रेड सेंटर, जवाहर नगर के पास ● मेन रोड, कैलाश क्रॉकरी हाउस ● श्री हनुमान साइकिल स्टोर्स ● रांची मोटर एंड साइकिल कं., बाटा शॉप के पास ● उदयन ● उदय एजेंसी, खजांची मार्केट ● अपर बाज़ार, अशोक एंटरप्राइजेस ☐ **सहरसा** : दालान हाउस, अमर रेडियो एंड इलेक्ट्रिकल्स ☐ **साहिबगंज** : चौक बाज़ार, एस. खेमका एंड संस ☐ **समस्तीपुर** : मगरदही रोड, राजा स्टील ☐ **सासाराम** : चौखंडी रोड, न्यू जनता ग्लास स्टोर ● नवरतन बाज़ार, अशोक स्टोर ☐ **सिंदरी** : साहारपुरा, उप्पल जनरल स्टोर्स, १५, टिनरोड.

चंडीगढ़

सेक्टर १५ डी, इंडियन क्रॉकरी हाउस, दुकान ४५ ● **सेक्टर १७ ई**, जगत सिंह एंड संस, एस सी एफ़ ३२.

गोवा

☐ **मापुसा** : मारुति मंदिर के पास हैपी होम, २, शिव सागर अपार्टमेंट ● रामचंद्र बिल्डिंग मयूर एजेंसीज़, नं. १७ ☐ **मड़गांव** : जयदीप अपार्टमेंट सुरूपल इलेक्ट्रिकल्स, ३९, पैजोमोड ● न्यू मार्केट टोनाराथ डी. सरदेसाई एंड संस, पो. बॉक्स नं. ३३१ ● सिने लता के सामने दि बॉम्बे मेटल मार्ट ● म्युनिसिपल बिल्डिंग के सामने टी. डी. परोडकर एंड कं., पोस्ट बॉक्स नं. ६५ ● म्युनिसिपल गार्डन के सामने ए. पी. स्टेटलिकर एंड संस, दुकान नं. ८ ● स्टेशन रोड टी. ए. हज़ारे एंड संस ☐ **पणजी** : १८ वां जून रोड वाडकर एंटरप्राइजेस, सरस्वती मंदिर के सामने ● डॉ. पिसुर्लेकर रोड एम. एस. बी. कामुर्ली, पोस्ट बॉक्स नं. ६८ ● होटल विस्तार के सामने अब्दुल्लाभाई लालजी एंड कं. ☐ **वास्को-डा-गामा** : झुराखे बिल्डिंग बरकत अली ट्रेडर्स.

गुजरात

☐ **अहमदाबाद** : तीन दरवाज़ा अकबरअली कादरभाई एंड कं., १८२२ ● बॉम्बे नॉवेल्टी स्टोर्स, १८३९/१ ☐ **सुरत** : बरानपुरी कंसारा ठाकोरदास नगीनदास मोदी, भागल ● कुंदेलवाड शाह ठाकोरदास जीवनराम, भागल, चार रस्ता ☐ **वडोदरा** : जुबिली बाग हैपी होम, शालीमार चेंबर्स ● एम. जी. रोड पोस्टलाल कृष्णलाल कंसारा, जैन मंदिर के सामने.

हिमाचल प्रदेश

☐ **बिलासपुर** : बस स्टैंड के पास, जीवन राम वेद पॉल, कमेटी दुकान नं. ५ ☐ **नगरौटा भगवां** : निचला बाज़ार, धरम पाल एंड संस.

जम्मू-कश्मीर

☐ **अनंतनाग** : रीशी बाज़ार, अब्दुल घनी मोहम्मद हुसैन ☐ **जम्मू** : जैन बाज़ार, डीलक्स यूटेंसिल्स स्टोर ● कनक मंडी, ताराचंद कपूर चंद जैन ● रघुनाथ बाज़ार, तपुमल देसराज जैन, न्यू मार्केट ☐ **श्रीनगर** : सिल्क फ़ैक्टरी रोड, जे. एंड के. कंज़्यूमर फ़ेड. लि. द्वारा अपना बाज़ार ● टैंकीपुरा, आहूजा एजेंसीज़, डी. सी. ऑफ़िस के सामने.

कर्नाटक

☐ **बंगलोर** : ब्रिगेड रोड फॉर्ट्स एंड पैन्स, ११, फर्ज़ान कॉम्प्लेक्स ● चिकपेट राजा ट्रेडिंग कं., ८०२, चिकपेट, कालेस्ट स्क्वेयर के पास ● रश्मि स्टोल्स, ३४०, चिकपेट ● विनोद स्टेनलेस स्टील हाउस, विजयालक्ष्मी टॉकीज़ के सामने ● जयनगर अनुपमा इलेक्ट्रिक कं., ४था ब्लॉक ● इंदिरा मेटल मार्ट, ८५, ४ था ब्लॉक ● के. एच. रोड वी. जी. फ्लोरटास ● मल्लेश्वरम चंद्रशेखर इलेक्ट्रॉनिक्स, नं. १७२१, ५ वां क्रॉस, गीतांजली थिएटर के सामने ● नगरथपेट सलेचा स्टील सेंटर, ८६५/१, नगरपेट, मेन रोड ● रिचर्ड्स स्क्वेयर ऐडम्स एंड कं., १९ ● सुदामा नगर मास्टर मार्केटिंग एजेंसी, १३, अशोकपुरम मेन रोड ● यशवंतपुर रवि एजेंसीज़, ९००, ६ठा क्रॉस, के. एन. एक्स्टेंशन ☐ **बेलगांव** : मारुति गली रेवणकर इलेक्ट्रिकल्स ● उदय वस्तू भंडार, १५३६ ☐ **चिकमगलूर** : रत्नागिरी रोड मुक्ते एंटरप्राइजेस, पी. बी. नं. ८ ☐ **गुलबर्गा** : चेंबर कॉम्प्लेक्स यूनाइटेड हाउसहोल्ड ट्रेडिंग कं., मॉडर्न गैस शॉपिंग सेंटर ☐ **हासन** : दास कॉम्प्लेक्स नॉवेल्टी हाउस, संपिगे रोड, ब्रांच के. आर. पुरम ● बस स्टैंड रोड मंगलोर मेटल्स मार्ट ☐ **हुबली** : ब्रॉडवे पोरवाल स्टील्स, ६३ ● स्टेशन रोड भारत वॉच कं. ☐ **मंगलोर** : बलमट्टा सोमय्याजी इलेक्ट्रॉनिक्स, कलेक्टर्स गेट ● के. एस. राव रोड सुपर सप्लाईज़, गोकुल मार्केट ● विश सेल्स, युडसइड बिल्डिंग ● मिलाग्रेस सेंटर सूजा सेल्स सेंटर, फ़्लॉडिम बिल्डिंग ☐ **मैसूर** : सयाजी राव रोड मोहन भंडार कामधेनु ☐ **शिमोगा** : बी. एच. रोड सेलवेल ट्रेडर्स प्रा. लि. ● बसवेश्वरा मार्केट गणेश ट्रेडर्स, नं. २, बसवसदन ● नेहरू रोड साधना ट्रेडिंग कं. ☐ **सिरसी** : सी. पी. बाज़ार जयश्री इलेक्ट्रिक हाउस ☐ **उडुपी** : के. एम. मार्ग हर्षा (प्रकाश इलेक्ट्रिक).

केरल

☐ **ऐलेपी** : मुल्लक्कल भीमा स्टेनलेस स्टील एंड स्टील इंडस्ट्रीज़ ☐ **आलवे** : कैथलिक सेंटर पायसलेम मेट्रो ● सूर्ड सेंटर सी. सी. माधपन एंड कं. ☐ **अंगमाली** : हाईवे जंक्शन स्टर्लिंग स्टील पैलेस ☐ **कालीकट** : मुतालकुलम् ब्राइट मेटल्स (सर्विस सेंटर) ☐ **कण्णनूर** : कैंप बाज़ार स्टेनलेस स्टील सेंटर (सर्विस सेंटर) ● एस. एन. पार्क रोड गृहलक्ष्मी ☐ **चालकुडी** : कडीचीनी कॉम्प्लेक्स हरिश्री टी. वी. एंड होम एप्लायंसेज ● पेस्लिसेरी बिल्डिंग्स सिनी येमला ☐ **एर्नाकुलम** : ब्रॉडवे ऐयनो फ्रांसिस एंड सन ● लाइफ़ स्टाईल्स, के. टी. डी. सी. शॉपिंग कॉम्प्लेक्स ● टाउन हॉल के सामने/ ए. एफ़. मेटल मार्ट, बैनर्जी रोड ☐ **कोडुंगल्लोर** : नॉर्थ नाडा निर्मल लेडीज़ फ़ैशन ☐ **कोरटी** : मेन रोड असोसिएटेड डीलर्स ☐ **माही** : मेन रोड वर्मा एंटरप्राइजेस (सर्विस सेंटर) ● श्रीलेखा एजेंसीज़ ● सब कोर्ट के सामने रेशा एजेंसीज़ ☐ **पालघाट** : जी. बी. रोड स्टील पैलेस (सर्विस सेंटर) ☐ **पेरितलमन्ना** : बस स्टैंड बिल्डिंग जनता टी. वी. इंजीनियर्स ☐ **पेरुंबावूर** : न्यू प्राइवेट बस स्टैंड के पास मूकड्डा एजेंसीज़, पी. पी. रोड ☐ **तलश्शेरी** : लोगन्स रोड श्रीनिवास इलेक्ट्रॉनिक कं. (सर्विस सेंटर) ☐ **तोडुपुला** : मार्केट रोड जे एंड पी मेटल्स ☐ **त्रिचूर** : जिओ बिल्डिंग्स हनीफ़ ट्रेडर्स, पी. ओ. रोड ● हाई रोड ए. डी. कुरिअप्पन संस ● पी. ओ. रोड स्टीलालयम् ● राउंड साउथ केरला सैंटर कं. (सर्विस सेंटर) ☐ **त्रिपुनितुरा** : ईस्ट फोर्ट गेट मरिया स्टील हाउस ☐ **त्रिवेंद्रम** : चालई एस. इब्राहिम एंड कं., इब्राहिम बिल्डिंग्स.

मध्य प्रदेश

☐ **बालाघाट** : मेन रोड, रामदेव पीर मेटल ☐ **बैतूल** : गंज, बालमुकुंद गुप्ता ● कोठी बाज़ार, आहूजा ट्रेडर्स ● गुडविल एजेंसीज़ ☐ **भिलाई** : सर्कुलर मार्केट, पार्वती जनरल स्टोर्स, दुकान बी-१५-१६, कैम्प-२ ● सेक्टर-६, गिफ्ट हाउस, ए मार्केट ☐ **भोपाल** : १९ न्यू मार्केट, अनिमेष ट्रेडर्स, १९, प्रकाश भवन ☐ **छतरपुर** : महल रोड, अप्सेन एम्पोरियम ● चॉइस सेंटर ☐ **छिंदवाड़ा** : स्टेशन रोड, मयूर, चार फाटक ☐ **डबरा** : कमला मार्केट, आधुनिक किचनवेयर ☐ **दमोह** : सिनेमा रोड, अजंता ट्रेडर्स ☐ **गाडरवाड़ा** : झंडा चौक, मंगल कलश ☐ **ग्वालियर** : सराफ़ा बाज़ार, घोमराज हज़ारीलाल ● टोपी बाज़ार, पद्मराम पेसूराम ☐ **इंदौर** : जवाहर मार्ग, कुकर हाउस, दुकान नं. ३७० ● रामलक्ष्मण बाज़ार, एन. आर. इलेक्ट्रॉनिक्स, दुकान नं. २३ ☐ **जबलपुर** : आशीर्वाद मार्केट, आशीर्वाद स्टील एम्पोरियम, दुकान नं. १८ ● सिविक सेंटर, इलेक्ट्रिकल्स एंड इलेक्ट्रॉनिक्स, दुकान नं ७/७ ● नया बाज़ार, पी के ट्रेडर्स, दुकान नं.३१ ● वेस्ट घमापुर, शांति स्टील सेंटर, दुकान नं. ८३४ ☐ **कोरबा** : मेन रोड, गणेश स्टील एम्पोरियम ☐ **मनेन्द्रगढ़** : नई सब्ज़ी मंडी, सुप्रीम इलेक्ट्रिकल्स, नगरपालिका बिल्डिंग ☐ **नरसिंहपुर** : कंदेली, ज्योति बर्तन भंडार, मेन रोड ☐ **रायपुर** : मालवीय रोड, सुराना सेल्स ● सदर बाज़ार, एम. एस. ट्रेडर्स ● श्री पात्र भंडार, शांति विजय मार्केट ● स्टील एम्पोरियम ☐ **रीवां** : कल्पा मंदिर रोड, गुप्ता सेल्स कॉर्पोरेशन, सूर्य किरण बिल्डिंग ● प्रकाश चौक, प्रकाश एजेंसीज़, स्वागत भवन के सामने ● वेंकट रोड, विजय क्रॉकरी स्टोर्स ☐ **सागर** : कटरा बाज़ार, मॉडर्न स्टोर्स, कटरा मस्जिद ☐ **सिवनी** : बारा पत्थर, विशाल स्टील सेंटर ☐ **शाजापुर** : नई सड़क, ए. जी. ठवालवाला ☐ **उज्जैन** : फ्री गंज, लक्ष्मी स्टील सेंटर, २३४, पीपा मार्ग ● गोपाल मंदिर, मनोज पात्र भंडार, जवाहर मार्ग ● पटनी बाज़ार, महालक्ष्मी पात्र भंडार, १२५, जवाहर मार्ग ☐ **वेदन** : वेदन बाज़ार, लाइट हाउस.

महाराष्ट्र

☐ **अहमदनगर** : एम. जी. रोड कापड़ीनाथ प्रेक्षक समने, दुकान नं. २५५४, न्यू क्लॉथ मार्केट ● शाहजी रोड अभोरे एंड कं. ● रामनाथ नारायण ठंडे ● सुरेश संगम ☐ **अकोला** : ओपन एयर थियेटर रोड आनंद स्टील होम ☐ **अमरावती** : श्याम चौक मोनिका नॉवेल्टी ● जवाहर गेट के अंदर जनकनी एंड कं. ☐ **औरंगाबाद** : सराफ़ा नवीन ट्रेडिंग सेंटर ● सुपारी हनुमान रोड कृष्णा कॉर्पोरेशन, केली बाज़ार ☐ **बम्बई** : **अंधेरी (प.)** आनंद स्टील एम्पोरियम, लोखंडवाला कॉम्प्लेक्स ● हेमको स्टील सेंटर, अपना शॉपिंग सेंटर ● कोठारी गृह वस्तू भंडार, मालाड़ी चाल, एस. वी. रोड ● मेफ़ायर उमेदमल एंड कं., म्युनिसिपल मार्केट के सामने ● श्री पुष्पलक्ष्मी स्टील पैलेस, हार्बर लाईन स्टेशन के सामने ● सुपर स्टील सेंटर, सुपर शॉपिंग सेंटर ● **बांद्रा (प.)** सहकार बाज़ार, रेलवे स्टेशन के सामने ● शाज़ान, हिल रोड ● **बोरीवली (प.)** ओस्वाल स्टील सेंटर, एस. टी. रोड ● प्रामाणिक सेंटर, रेलवे स्टेशन के सामने ● **चेंबूर** अकबरअलीज़, सायन - ट्रॉम्बे रोड ● **चेंबूर कॉलोनी** चंदन स्टील सेंटर, डॉ. सी. गिडवानी रोड ● **चेंबूर** स्टेशन मिलन एम्पोरियम, ५, लक्ष्मी मार्केट ● नटराज एम्पोरियम, ४, नटराज सिनेमा बिल्डिंग ● सिल्वर सेंटर, ३, लक्ष्मी मार्केट ● **दादर (प.)** धीरज सेल्स कॉर्पोरेशन, ३३, पाध्येवाड़ी, बी. एस. रोड ● किचेन पैलेस, कबूतरखाना के सामने ● फाउंटन अकबरअलीज़, बी. एन. रोड ● **घाटकोपर (प.)**, दीपक ट्रेडर्स, बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने ● जयलक्ष्मी एम्पोरियम, बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने ● **गोरेगांव (प.)**, गोरेगांव गृह वस्तू भंडार, स्टेशन रोड ● **ग्रांट रोड** वेरायटी जनरल स्टोर्स, २९७, लैमिंग्टन रोड ● **जेकब सर्कल** रमणलाल जयंतीलाल एंड कं., चर्च के सामने, साने गुरुजी मार्ग ● **कांदिवली (प.)**, महावीर नॉवेल्टी, स्टेशन रोड ● **कंसारा चाल** रतीलाल मोहनलाल, ४६, कालबादेवी रोड ● **खार (प.)** डी. एन. जैन एंड कं., वृंदावन स्वीट के सामने, स्टेशन रोड ● **लोहार चाल** पैसिफ़िक इलेक्ट्रिक ट्रेडिंग कं., ४६ - ४८, जय महल बिल्डिंग ● संपर्क इंटरनेशनल, ६२ ● **माहीम (प.)** अरुणोदय स्टोर्स, सिटी लाइट सिनेमा के सामने ● भैरव भांडी भंडार, शोभा फ़िल्ममेकर्स के पास ● राजेंद्र गृह वस्तू भंडार, काशी विश्वेश्वर टेंपल के सामने ● **मालाड (प.)** भरत अप्लायंसेज़, नटराज मार्केट (माईनाथ रोड) ● महावीर स्टील सेंटर, नटराज मार्केट (एस. वी. रोड) ● शिरीष ट्रेडर्स, स्टेशन रोड ● **माटुंगा (मध्य रेल्वे)** सुंदर एनराजन एम्पोरियम, २रा भंडारकर रोड ● **मुलुंड (प.)** शा मिश्रीमल एम. कनकरिया, एम. जी. रोड ● **पांजरपोल** सोनिया एंटरप्राइजेस, १७९/ए, कांडोरी बिल्डिंग ● **सांताक्रूज़ (प.)** अकबरअलीज़, एस. वी. रोड ● आनंद स्टोर्स, स्टेशन रोड ● प्रोग्रेस हाउसवेअर्स, २रा हसनाबाद लेन ● महावीर स्टोर्स, स्टेशन रोड ● शीतल स्टोर्स, सोमपुरी मार्केट ● **सायन सर्कल** श्री मुरगन स्टील हाउस, ११, मेरी लैंड कॉर्नर ● **सायन हॉस्पिटल** कन्नी एवरशाइन एम्पोरियम, ५, शिव महल ● **ठाकुरद्वार** अमर एंटरप्राइज़, २३८-ए, अग्रवाल बिल्डिंग ● **विक्रोली (प.)** मुकेश सेल्स एजेंसी, स्टेशन रोड ● **विले पार्ले (पू.)** मनसुख मेटल मार्ट, अग्रवाल मार्केट ● मुरगन अप्लायंसेज़, अग्रवाल मार्केट ● पंकज स्टील सेंटर, अग्रवाल मार्केट ● पार्ले नॉवेल्टीज़, रेलवे स्टेशन के सामने ☐ **चंद्रपुर** : नेताजी नगर भवन के सामने गृह शृंगार ☐ **डोंबीवली (प.)** : हालीमा मंज़िल घनश्याम, मयूर स्टील एंड नॉवेल्टी, गुप्ता रोड ☐ **डोंबीवली** : मानपाड़ा रोड पंकज स्टील एंड नॉवेल्टी, फाटक बिल्डिंग ● स्टेशन रोड पराग स्टील एंड नॉवेल्टीज़, फाटक बिल्डिंग ☐ **गोंदिया** : बर्तन बाज़ार आदित्य मेटल्स ● गोपाल बर्तन भंडार ● लक्ष्मीनारायण बर्तन भंडार ● राजकमल बर्तन भंडार, मेन रोड ● अंजली स्टील सेंटर ☐ **इचलकरंजी** : व्यंकटराव हाईस्कूल के पास हेल्थ ट्रेड पुर, वॉर्ड नं-१०, घर नं. १५२ ☐ **जलगांव** : फुले मार्केट वेरायटीज़, दुकान नं. १९ ☐ **कल्याण** : बाज़ार पेठ प्रभात भांडी भंडार, विष्णु मंदिर के पास ☐ **कराड** : रविवार पेठ राजलक्ष्मी एंटरप्राइजेस, ३८६ ● टी. के. मोहिते, ५३ ☐ **कोल्हापुर** : शिवाजी रोड भाग्यश्री मेटल कॉर्पोरेशन ● जी. आर. शाह, शेतकरी सहकारी संघ लि., फ़्यूटेंसिल शॉप नं. १ ☐ **मालेगांव** : कैंप रोड एन. जोशी प्रा. लि., ज्ञानेश्वर बिल्डिंग ☐ **नागपुर** : गोकुलपेठ साठे एजेंसीज़, वेस्ट हाईकोर्ट रोड ● इतवारी बंदेअली मोहम्मदअली, भंडारा रोड ● जगन्नाथ बुधवारी गोलाबली स्टील सेंटर ● महल स्टील हाउस, तिलक मूर्ति के सामने ● सदर पुष्पांजली, गोखले मार्ग ● सीताबर्डी एम. एस. पांडे एंड संस, वेरायटी स्क्वेयर के पास ● पांपूला एजेंसीज़, मेन रोड ● संतोष ट्रेडर्स, टेकड़ी रोड ☐ **नासिक** : भांडी बाज़ार प्रकाश रामदास फाले, ८४८ ● शिवाजी रोड विजय ट्रेडिंग कं., शालीमार बिल्डिंग ☐ **उस्मानाबाद** : भगवान महावीर पथ बेदमुथा संस, चिमुल्कीन ☐ **पंढरपुर** : पश्चिमद्वार गजेश्वर ट्रेडर्स, २८९४, पुष्पांजली ☐ **परतवाडा** : सदर बाज़ार राधिका जनरल स्टोर्स ☐ **पुणे** : बोहरी मस्जिद बिल्डिंग जैन मेटल कॉर्पोरेशन, ६३५, रविवार पेठ ● दारूवाला पुल राजेंद्र एंड कं., ८९४, रविवार पेठ ● कर्वे रोड जैन मेटल्स, ३९/२४ बी ● मंडई बी. सी. मेहता एंड कं., गणेश्वर चौक ● तुलसी बाग के सामने मेहता ब्रदर्स, द्वारा ममता स्टील, १४७१, शुक्रवार पेठ ☐ **सांगली** : हरभट रोड भगटे स्टील सेंटर, आपटे हाईस्कूल के पास ● मेन रोड श्री अमेय स्टील सेंटर ● सराफ बाज़ार पी. एम. शिंदे, सराफ कॉर्नर ☐ **सातारा** : मोती चौक गृहराज स्टेनलेस स्टील सेंटर ☐ **श्रीरामपुर** : मेन रोड निवृत्ति घोडु हंबीर एंड संस ☐ **सोलापुर** : नवी पेठ स्टील सेंटर, ८, जनता शॉपिंग सेंटर ● सोलापुर स्टेनलेस स्टील सेंटर, ४, पारस इस्टेट ☐ **थाने** : नवपाड़ा महावीर, गौकक रोड ☐ **वाशी** : सेक्टर-१७, श्री कृष्णा स्टील एम्पोरियम, आनंद सागर, प्लॉट ३४ ☐ **वर्धा** : वॉर्ड नं. २१ शंकर स्टोर्स ☐ **यवतमाल** : नेहरू चौक पूजा स्टील.

मणिपुर

☐ **इम्फाल** : एम. जी. एवेन्यू मणिपुर बिल्डर स्टोर ● पावना बाज़ार पासा एंटरप्राइज़ ● बंगाल बाज़ार रूपक एजेंसी ● सुदर्शन.

मेघालय

☐ **शिलोंग** : बावरी मैंशन बी. के. पई एंड कं., घानखेती.

मिज़ोरम

☐ **ऐज़वाल** : बड़ा बाज़ार बी. सी. डे एंड संस ● ईस्टर्न ट्रेडिंग एजेंसीज़ ● नैशनल बिज़नेस एंटरप्राइज़.

उड़ीसा

☐ **आस्का** : बस स्टैंड के पास अशोका एंटरप्राइजेस, मेन रोड ☐ **बालेश्वर** : सिनेमा बाज़ार फ़ेयरडील कॉर्पोरेशन ☐ ई-८, फ्लाई ओवर मार्केट कॉम्प्लेक्स प्रशांत एजेंसी ● मोतिगंज मैकिल्टन एंटरप्राइजेस, आर्ट कल्चिरल रोड ☐ **बरगढ़** : मेन रोड रूप शृंगार एजेंसीज़ ☐ **बारिपदा** : सेवा संघ हॉल एरो वॉइस ☐ **बेरहामपुर** : भापुर बाज़ार सिल्सा गोपालम एंड संस ● १३, गिरि मार्केट एलाइड स्टोर्स ● सान्दो बाज़ार एपरेंट एंड कं. ☐ **भवानीपटना** : अमित फ़ैंसी एम्पोरियम, गांधी चौक ☐ **भुवनेश्वर** : १४१/१४२, अशोक नगर टी. कृष्ण पात्र ● ईस्टर्न मार्केट बिल्डिंग लालचंद एंड संस ● शहीद नगर सुरुचि ☐ **चांदपुर** : मेन रोड गौरांग इलेक्ट्रिकल्स ☐ **कटक** : चौधरी बाज़ार जनता जनरल स्टोर ● हरिपुर रोड मानस एंटरप्राइज़ेस ● महताब रोड इंडियन इंडस्ट्रीज़ ● तिनकोनिया बगीचा शंकर जनरल स्टोर ● सुनीता ☐ **ढेंकानाल** : कोर्ट बाज़ार उपहार ☐ **जाजपुर टाउन** : सिनेमा हॉल रोड भूपा जनरल स्टोर, दुर्गा सिनेमा के पास ☐ **जाशीपुर** : मेन रोड जनता एजेंसीज़ ☐ **जयपुर** : मेन रोड शांति स्टोर्स ● एम. जी. रोड विश्वनाथ स्टील सेंटर ☐ **झारसुगुडा** : मेन रोड झारसुगुडा मेटल स्टोर ☐ **केंदुझर** : न्यू मार्केट आशा सेल्स कॉर्नर ☐ **कोरापुट** : बस स्टैंड के पास विक्रम रेडियो एंड इलेक्ट्रिकल्स, मेन रोड ☐ **राउरकेला** : फर्टिलाइज़र टाउनशिप श्री बलदेवजी एंटरप्राइज़र्स ● मेन रोड चंदूलाल गुप्ता ● घनश्याम दास एंड संस, ओरियन हाउस ● सेक्टर-५ मार्केट प्रेस्टीज, दुकान नं. १ ● सिलेक्शन सेंटर, दुकान नं.१ ☐ **संबलपुर** : बैद्यनाथ चौक पोद्दार मशीनरी हाउस, उषा कुंज ● गोल्ला बाज़ार भारत स्टील सेंटर.

(शेष अगले पृष्ठ पर)

हॉकिन्स-श्रेणी विक्रेता

(पिछले पृष्ठ से आगे)

पंजाब

☐ अमृतसर : हाल बाज़ार हरबंस क्रॉकरी स्टोर • रघुबीर सिंह कटारिया एंड संस • कटड़ा बागियां मंगल सिंह एंड संस • कटड़ा जैमल सिंह पॉपुलर ट्रेडिंग कं. • प्रताप बाज़ार पुरी बैटरी स्टोर ☐ बंगा : आज़ाद चौक अविंदर कुमार शिव कुमार ☐ बरनाला : मेन बाज़ार सी.एस. प्यारेलाल ☐ बटाला : जी. टी. रोड अरोड़ा एंटरप्राइज़ेस ☐ भटिण्डा : सदर बाज़ार मदनलाल बाबूराम, मेन चौक • धोबी बाज़ार बॉम्बे स्टील एंड क्रॉकरी हाउस • गांधी मार्केट कंचन क्रॉकरी हाउस • गुप्ता एंड कं. ☐ फाज़िलका : मेन बाज़ार तुलसी दास चरण दास ☐ गुरदासपुर : गांधी चौक हंसराज मुल्खराज • हनुमान चौक केदार नाथ एंड संस ☐ होशियारपुर : जालंधर रोड बंसल क्रॉकरी हाउस, घंटाघर टावर के पास • कश्मीरी बाज़ार कैलाशदास एंड संस ☐ जगरांव : मेन बाज़ार कैलाश चंद एंड संस ☐ जालंधर : बाल्मिकी गेट भारत लाइट हाउस, मीना पैलेस के पास • बाज़ार शेखां खरबंदा शॉपिंग सेंटर • रमेश चंद्र मित्तर पाल • चौक रैनक बाज़ार गिफ्ट सेंटर • जी. टी. रोड जे. ओम प्रकाश एंड संस, सिविल हॉस्पिटल के सामने • नया बाज़ार बॉम्बे स्टेनलेस स्टील (रजि.), मिलाप चौक के पास ☐ खन्ना : मेन बाज़ार माधो मल जगदीश प्रसाद • राजन स्टोर्स ☐ कोटकपुरा : गुरुद्वारा बाज़ार सत करतार गिफ्ट हाउस • रेलवे रोड आहूजा गिफ्ट हाउस ☐ लुधियाना : चौड़ा बाज़ार जैन संस • कपूर क्रॉकरीज़ • अशोक क्रॉकरी हाउस • क्लॉक टावर ओम प्रकाश एंड कं. • घुमार मंडी जे. आर. एंड संस • सराफा बाज़ार गुप्ता क्रॉकरी हाउस • गुप्ता गिफ्ट हाउस • जैन क्रॉकरी हाउस ☐ मोगा : बाग गली क्रॉकरी पैलेस • मेन बाज़ार नंद किशोर अग्रवाल एंड संस • तपनेश्वर सिंह मार्केट बी.बी. ट्रेडर्स ☐ मोहाली : फ़ेज़-७, सुपर स्टोर्स, एस सी ओ ८१ ☐ नाभा : सदर बाज़ार मेलो राम प्रेम कुमार ☐ नवांशहर : रेलवे रोड हरि सिंह जसवंत सिंह आनंद ☐ पठानकोट : मेन बाज़ार अशोक राम कुंदनलाल • शिमला गिफ्ट हाउस ☐ पटियाला : चौक आर्य समाज मल्होत्रा स्टोर्स ☐ फगवाड़ा : लोहा मंडी रोड ए. के. ट्रेडर्स, हरि किशन राज दर्शन लाल मड्डा • लोहा मंडी चड्ढा मेटल स्टोर ☐ राजपुरा : सुभाष मार्केट गोदारा राम गुलाब चंद ☐ समाना मंडी : मेन बाज़ार मोहन लाल सुदर्शन कुमार ☐ समराला : चण्डीगढ़ रोड राजेंद्र मेटल हाउस, दुर्लभ नगर ☐ तपामंडी : मेन बाज़ार चंदूलाल चमन लाल ☐ टांडा-उड़मुड़ : मेन बाज़ार महावीर क्रॉकरी हाउस

राजस्थान

☐ अजमेर : केसर गंज, गोयल ब्रदर्स, स्टेशन रोड ☐ अलवर : होप सर्कस, जनता बर्तन भंडार, दुकान नं. ३१ ☐ भरतपुर : नीम गेट, किशोरी रमण बृजेश कुमार ☐ बीकानेर : के. ई. एम. रोड, मॉडर्न इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इलेक्ट्रिकल्स ☐ चित्तौड़गढ़ : मीरा नगर, आप की दुकान ☐ जयपुर : नेहरू बाज़ार, अशोक डिपार्टमेंटल स्टोर, मयूर सिनेमा के पास • राजा पार्क, लौंग लाइफ़ डिपार्टमेंटल स्टोर, ३७२, गली नं. १ • त्रिपोलिया बाज़ार, महावीर जनरल स्टोर, दुकान नं. २१५ ☐ जोधपुर : स्टेशन रोड सलूजा एजेंसीज़ ☐ खेतड़ी नगर : सुभाष मार्केट, अमर ज्योति फैंसी स्टोर, दुकान नं. ३८ ☐ कोटा : रामपुरा बाज़ार, बल्लू मल एंड कं. ☐ श्री गंगानगर : पब्लिक पार्क, न्यू पवन बर्तन भंडार, दुकान नं. ४३-४४ ए • स्वामी दयानंद मार्ग, हिंद बर्तन भंडार ☐ उदयपुर : बापू बाज़ार, शाह लक्ष्मीलाल प्रकाशचंद जैन, दुकान नं. १०८ • भामाशाह मार्ग, नरेंद्र ट्रेडिंग कं., दुकान नं. १३२, जौहरीया चौक के पास • घोड़ाला बाज़ार, राजेश ट्रेडर्स, चित्तौड़ा मंदिर के पास.

तमिलनाडु

☐ चिदंबरम : साउथ कार स्ट्रीट श्री विनायगार पात्तिरक्कडै, २५, साउथ कार स्ट्रीट ☐ कोयंबतूर : क्रॉस कट रोड असल ज्योति कॉर्पोरेशन, १६-ए • कोयंबा स्टोर्स, ४८, श्री लक्ष्मी कॉम्प्लेक्स • श्री मंगलम स्टील हाउस, ९/१० • राजा स्ट्रीट सुप्रीम प्लास्टिक इंडस्ट्रीज़, ८०३ • रामनगर श्री चक्र एजेंसीज़, १, सत्य मूर्ति रोड • आर. एस. पुरम अरविंदन गिफ्ट हाउस, ८, दिर माहलिंगम रोड ☐ डिंडिगल : मेन बाज़ार एस. एम. बी. मणिकम नाडार, १६२-१६३ • ग्रेनी स्कूल बिल्डिंग श्री लक्ष्मी एंटरप्राइज़ेस, ५ और ६ ☐ ईरोड : माणिक्कृष्णा स्ट्रीट यूनिवर्सल ट्रेडर्स, ३२ • नेताजी स्ट्रीट वसंत मालिगाइ, १५१ ☐ कारैकुडी : फ्रांसिस कैम्प जनरल एजेंसीज़, ७, पेरिया निलयम ☐ मद्रास : किल्पाक गार्डन मन्नी डेरी, २३७-ए • मयलापुर पोन्नम्मी चेन स्टोर्स इन्वेस्टमेंट्स लि., १७२-ए, लज चर्च रोड • १४ शॉप्स के सामने वेल वेल सुपरमार्केट, टी-१०१, अन्ना नगर (पू.) • पार्क टाउन एम. ए. ईश्वरलु नायडु, १८, हॉकिंग बाज़ार • एस. संतोष नाडार सन (फ़र्म), ८८, नारायणप्पा नायकन स्ट्रीट • पोंडी बाज़ार राज स्टोर्स (फ़र्म), ४७ • टी. नगर सरवणा स्टोर्स, १३, रंगनाथन स्ट्रीट • वॉशरमैनपेट टच्चुकॉर्नर स्टोर्स, नं. १००, एम. सी. रोड ☐ मदुरै : अम्मन सन्नदी एस. एम. कंदसामी पांडियन एंड संस, नं. ३ • कुलियर बाज़ार अनंत स्टोर्स, ४२, साउथ आवनी मूला स्ट्रीट • ईस्ट गेट अनंत मेटल कं. (फ़र्म), ४३-ए, वडम्पोक्की स्ट्रीट • एस. वेलम्मा नाडार एंड संस, २६७, यानैक्कल स्ट्रीट • सेंट्रल सिनेमा के पास मन्नी डेरी, ६९, वेस्ट टावर स्ट्रीट • नेताजी रोड मुत्तुलिंगम कॉर्पोरेशन, १०९ ☐ पुदुकोट्टै : क्लॉक टावर के पास श्री राम फर्नीचर, १९, तलपति स्ट्रीट ☐ पोंडिचेरी : कॉटन एंड कं., २२, जवाहरलाल नेहरू स्ट्रीट ☐ सेलम : बाज़ार स्ट्रीट नैशनल एजेंसीज़, ३४८ • वी. चंद्रशेखरम एंड संस, ३५७ • वी. चंद्रशेखरम एंड कं., ३६१ ☐ तेनी : पांडियन लॉज के सामने गिरि ट्रेडर्स, २९९, मुत्तन चेट्टी स्ट्रीट ☐ तिरुनलवेली : जंक्शन एस. संतोष नाडार एंड सन, ३३, हाई रोड ☐ तिरुप्पुर : कविता एजेंसीज़, १३५, ईश्वरन कोइल स्ट्रीट ☐ त्रिची : मालाई वासल के पास एवरसिल्वर मलिगाइ, ३६, एन. एस. बी. रोड • मंगल मेटल मार्ट, २४/२, एन. एस. बी. रोड • प्रेम एवरसिल्वर पैलेस, ४१, एन. एस. बी. रोड ☐ वेल्लोर : आनंद एजेंसीज़, ४७८, मेन बाज़ार • सी एम सी हॉस्पिटल के सामने सेंथू एजेंसीज़, ८०९, आरकॉट रोड.

उत्तर प्रदेश

☐ आगरा : जौहरी बाज़ार दादा प्लास्ट एंड क्रॉकरीज़ ☐ अलीगढ़ : महावीर गंज सौदागर बाबू लाल कमेश • रेलवे रोड गुप्ता स्टोर, न्यू मार्केट • जय भारत क्रॉकरी हाउस ☐ इलाहाबाद : चौक गुरु प्रसाद हीरा लाल • पत्थर गिरजा के पास नॉवेल्टी हाउस, ६-सी, कमला नेहरू मार्ग • प्रिया स्टोर्स, ६-सी, कमला नेहरू मार्ग • दि स्टार कं., ६-सी कमला नेहरू मार्ग • विवेकानंद मार्ग डायमंड टी स्टॉप, कमेली धर्मशाला के सामने ☐ आज़मगढ़ : चौक जालान इलेक्ट्रिकल्स, अग्रवाल मार्केट • नॉवेल्टी सेंटर, नेपाली मार्केट ☐ बहराइच : चौक श्याम लाल एंड संस, बाटा की दुकान के पास ☐ बलिया : स्टेशन मालगोदाम रोड विजय गन हाउस ☐ बड़ौत : भया बाज़ार अभय जनरल स्टोर ☐ बरेली : चौक बाज़ार स्टेशनरी घर हाउस ☐ देहरादून : पल्टन बाज़ार सुशील एंड कं., दुकान नं. ९५ ☐ देवरिया : मालवीया रोड राम संस • नई बाज़ार नवल जनरल स्टोर्स ☐ गाज़ियाबाद : सिहानी गेट गोयल इलेक्ट्रिक स्टोर, दुकान नं. १८६ ☐ गोंडा : अयोध्या रोड पास स्टील एम्पोरियम, राज प्लस मार्केट ☐ गोरखपुर : सिनेमा रोड गणेशी लाल एंड संस • गोलघर प्रधान क्रॉकरी हाउस, १६, जल कल भवन • मॉडर्न क्रॉकरी म्यूज़ियम, १८, जल कल भवन • टाउन हॉल विजय एजेंसीज़ ☐ हल्द्वानी : बरेली रोड सरदार क्रॉकरी हाउस ☐ हापुड़ : रेलवे रोड क्रॉकरी सेंटर, गांधी भवन ☐ हरद्वार : मोती बाज़ार ओम प्रकाश पेला राम ☐ जौनपुर : कचहरी रोड आनंद स्टोर्स, ओलंदगंज ☐ ज्वालापुर : मेन बाज़ार न्यू विमल मेटल्स ☐ कानपुर : बिरहाना रोड एस. के. ट्रेडर्स, ५८/६५ • सुप्रीम रेडियो एंड इलेक्ट्रिक कॉर्पोरेशन • गोविंद नगर एस. के. सेल्स कॉर्पोरेशन, २/७, विद्यार्थी मार्केट • गुमटी नं. ५, अमर मार्केट, हीरा इलेक्ट्रिकल्स, ११८/२, कैलाश पुरी, कमलेश सिनेमा के सामने • हर्ष नगर एम. के. एजेंसीज़, १११/२, पहली मंज़िल, बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने • मेस्टन रोड जौहरी क्रॉकरी हाउस, ६२/१३६ • नवीन मार्केट कुमार फैंसी स्टोर्स ☐ काशीपुर : मेन बाज़ार टंडन इलेक्ट्रिकल्स ☐ लखीमपुरखीरी : मेन रोड आलोक एजेंसीज़, चंपा भवन ☐ लखनऊ : अमीनाबाद एमसन्स एंड कं. • नज़ीराबाद कन्हैया लाल प्राग दास, दुकान नं. ७ ☐ मऊनाथ भंजन : सहादतपुरा गगन दीप ☐ मेरठ : खैर नगर बाज़ार मॉडर्न स्टोर हाउस, दुकान नं. २२२, पान दरीबा के पास • सदर बाज़ार कृष्णा क्रॉकरी एंड डिपार्टमेंटल स्टोर ☐ मिर्ज़ापुर : गोलाघर गंज कृष्णा इलेक्ट्रिकल्स एजेंसी, सरदार भगत सिंह मार्ग ☐ मुरादाबाद : चौमुखापुल प्रेम क्रॉकरीज़, अमरोहा गेट • कोतवाली के सामने क्रॉकरी एम्पोरियम ☐ मुगलसराय : जी. टी. रोड कृष्ण बंधु ☐ मुज़फ़्फ़रनगर : भगत सिंह रोड सेठी ब्रदर्स, दुकान नं. १९ ☐ उरई : राजमार्ग बुंदेलखंड स्टील एंड केमिकल्स वर्क्स ☐ ऋषिकेश : क्षेत्र रोड मोदी राम रतनलाल ☐ रुड़की : सिविल लाइन्स मुरादाबाद हाउस • मेन बाज़ार सुंदर लाल पुरुषोत्तम कुमार जैन ☐ रुद्रपुर : पांच मंदिर रोड खेम दत्त एंड संस ☐ सहारनपुर : नेहरू मार्केट निहाल चंद हरबंस लाल, दुकान नं. १४ ☐ शक्तिनगर : विद्युत विहार ज्योति स्टोर, शॉपिंग सेंटर ☐ सुलतानपुर : शाहगंज एस. आर. स्टील एम्पोरियम, लाला सूरजमल मार्केट ☐ उन्नाव : सदर बाज़ार न्यू हरीश चंद गुप्ता एंड संस, ७२-७३, शाहगंज ☐ वाराणसी : बांसफाटक-लहुराबीर गिफ्ट दास एंड संस • दालमंडी स्टार एंड प्लाईवुड सेंटर • लहुराबीर आरा ट्रेडर्स, गोयल बिल्डिंग • यू. पी. स्टार स्टोर्स, स्टेट बैंक ऑफ़ इंडिया के सामने • लहुराबीर-मलदहिया राजा ट्रेडिंग • विश्वनाथ लेन मित्तल ट्रेडर्स, डी ११/८, बांसफाटक.

पश्चिम बंगाल

☐ आमतोला : आमतोला हाट प्रकाश चंद्र साहा, डी. एच. रोड ☐ आरामबाग : गर्ल्स स्कूल के पास न्यू रामकृष्ण बासनालय, आरामबाग, हुगली ☐ आसनसोल : बस्तिन बाज़ार साहा स्टील हाउस, १९, सिटन स्ट्रीट • ईगल स्टार हाउस, १०३, जी. टी. रोड • घंटी फ़र्निचर हाउस, ३६१, जी. टी. रोड • प्रभात रेडियो एंड इलेक्ट्रिकल्स, जी. टी. रोड ☐ अशोक नगर : गोल बाज़ार (मेन गेट) रूपम स्टोर्स ☐ बैंची : बैंची रेल गेट सोनारपट्टी, हुगली ☐ बालूरघाट : चौरंगी होम स्टोर्स ☐ बाली : बाली बाज़ार अन्नपूर्णा स्टोर्स, ४/१, ईश्वर डे लेन ☐ बांकुड़ा : लाल बाज़ार रेडियो सेंटर, ३०६, लालबाज़ार क्रॉसिंग ☐ बशीरहाट : घोषपाड़ा मोड़ एंटरप्राइज़, आर. एन. मुखर्जी रोड • नूतन बाज़ार मुरलीधर, टाउन हॉल के पास • पुरातन बाज़ार मॉडर्न इलेक्ट्रिक ☐ बेलदा : बेलदा हाईस्कूल रोड लक्ष्मी स्टोर्स, पी. ओ. बेलदा ☐ बेरहामपुर : बन बेहारी सेन रोड आजकल, ५३ • खागड़ा घोष एंड कं., २२६, मनींद्र रोड ☐ बेतुआदहरी : काठल बेरिआ घोष एंटरप्राइज़, ग्राम/मायानलाल बोस ☐ बोलपुर : श्रीनिकेतन रोड आनंद स्टोर्स • चंद्रशेखर स्टील स्टोर्स, स्टेशन रोड ☐ बर्दवान : खोसदिघी हिंदुस्तान एल्युमिनियम, जी. टी. रोड • तेतुलतला वेस्ट बेंगाल स्टोर्स, बी. बी. घोष रोड ☐ कलकत्ता : बागड़ी मार्केट श्याम ब्रदर्स, सी-२३ • यूनाइटेड स्टेशनर्स, सी २१ • बागुइआटि दुर्गाबाड़ी मणिमाला, ए ए, १२, बागुइआटि रोड, देशबंधु नगर • बड़ा बाज़ार रामकानाई उमेशचंद्र पाल, २१३ ए, एम. जी. रोड • बाग़नगर बाज़ार मनोरंजन, २६, कालीपुर रोड • बेहाला बाज़ार बेहाला स्टील हाउस, ४००/१, डी. एच. रोड • बेलघरिया केयर बाली, ११०, फ़ीडर रोड • बेलघरिया (पूर्व पाड़ा मोड़) ईशा, २०, एम. बी. रोड • भवानीपुर गली, ३२, ए. टी. मुखर्जी रोड • विधान सरणी अशोक ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन, ८२/२ ई (श्री सिनेमा के सामने) • विधान सरणी (टाउन स्कूल) मॉडर्न म्यूज़ियम, १३७ • नैशनल वेराइटी, १३७, विधान सरणी • नैशनल वेराइटी स्टोर्स, १३७ • ब्रेबॉर्न रोड क्रॉकरी एम्पोरियम, ४२/४३, आर्मेनियन स्ट्रीट • कैनिंग स्ट्रीट तैर हाउस प्रा. लि., २३ • चांदनी चौक क्रॉकरी सेंटर, ४१बी, चांदनी चौक स्ट्रीट • नाग एंड सन, ६, चांदनी चौक स्ट्रीट • कॉलेज स्ट्रीट दत्त ब्रदर्स, बी-४१/४२, कॉलेज स्ट्रीट मार्केट • देशप्रिय पार्क नेपाल शंकर एंड कं., ८५, आर. बी. एवेन्यू • धरमतला इटालियन स्टोर्स प्रा. लि., ९/२, चौरंगी रोड • धनलप (विक्रम मार्केट) संजय सेल्स, १४०, बी. टी. रोड • गड़ियाहाट आनंदमेला, जी-९, गड़ियाहाट मार्केट • एच. आचार्य एंड संस, २१२, आर. बी. एवेन्यू (ब्लॉक ए-६) • गोलपार्क टी. आर. इलेक्ट्रिक कं., २३/३७, गड़ियाहाट • हेदुआ अर्थालया, १७३/३, विधान सरणी • लेक मार्केट श्री दुर्गा स्टोर्स, १०४, आर. बी. एवेन्यू, डी-५ • पूर्ण सिनेमा के पास अमिता स्टोर्स, १४४ ए, ए. टी. मुखर्जी रोड • पोर्सलेन स्टोर्स, २बी, एस. पी. मुखर्जी रोड • तारातला रोड के पास फ़ेयरडील, ६९, डी. एच. रोड • ओल्डचीना बाज़ार स्ट्रीट अमरनाथ कुंडु एंड ब्रदर्स, १४/३ • अभय चरण कुंडु, २०७ • एस. एस. कुंडु एंड कं., २०६ • सलकौड़ी दास एंड कं., १९६ • बेहाला ट्राम डिपो के सामने, नारायणी, १३, ब्रह्म समाज रोड • १४ नं. बस स्टैंड के सामने राणा, ३५०/१, डी. एच. रोड • पद्मश्री सिनेमा के सामने यूनाइटेड सेल्स एम्पोरियम, पी-४५, राजा एस. सी. मल्लिक रोड • पार्क सर्कस कलकत्ता हायर पर्चेज़ सेंटर, ७६, पार्क स्ट्रीट • पोस्ता न्यू स्टोर्स, ५०, कालीकृष्ण टैगोर स्ट्रीट • राणीकुठि कमला एजेंसीज़, १४८/२, एन. एस. सी. बोस रोड • सालगची मोड़ (नागेर बाज़ार) सुजाता एंटरप्राइज़ेस, ६, ए. एम. बोस रोड • सत्यनारायण पार्क मोहनलाल माधवजी, ५९, कॉटन स्ट्रीट • सियालदह लक्ष्मीनारायण बासनालय, १३३/एच, ए. जे. सी. बोस रोड (अशोक होटल, ग्राउंड फ़्लोर) • तारकनाथ स्टोर्स, १५१/ए, बी. बी. गांगुली स्ट्रीट (बोसे मार्केट के पास) • सियालदह (छायापुर सिनेमा के सामने) रूबी साइकल स्टोर्स, ११, एम. जी. रोड • श्यामबाज़ार, बागबाज़ार क्रॉसिंग बी. एस. ब्रदर्स, ४४ बी, बागबाज़ार स्ट्रीट • श्यामबाज़ार संगीता एंटरप्राइज़, १२३, विधान सरणी ☐ चकदह : पोस्ट ऑफ़िस के सामने स्टील वेराइटीज़, नेताजी सुभाष रोड ☐ चंदननगर : लक्ष्मीगंज बाज़ार वेस्टर्न ट्रेडिंग कं., रथतला ☐ चिनसुरा : खड़ुआ बाज़ार महादेव कुंडु एंड कं., नेताजी सुभाष रोड ☐ चित्तरंजन : अमलादही मार्केट मॉडर्न स्टील फ़र्निचर (यूनिवर्सल) ए/आई आर-३ ☐ कांथि : मेन रोड बसंती वेराइटी स्टोर्स • सविता भंडार ☐ कूचबिहार : बी. एस. रोड दास ब्रदर्स • एन. एन. रोड लोकनाथ दुलीचंद ☐ दार्जिलिंग : चौक बाज़ार हिंद स्टोर्स, हिल कार्ट रोड ☐ दिनहाटा : चौपाट बैद्यनाथ साहा एंड ब्रदर्स ☐ दुर्गाचौक : कॉलोनी मार्केट प्रतीक, हल्दिया ☐ दुर्गापुर : बेनाचिति ज्योति • न्यू शांति, नाचन रोड • चंडीदास मार्केट प्रिंस • मामरा बाज़ार संसद, चैटर्जी मार्केट • स्टेशन बाज़ार राज ब्रदर्स, हटतला रोड • रामपरी, स्टेशन रोड ☐ फ़रक्का : चित्तरंजन मार्केट मॉडर्न ट्रेडिंग एजेंसी, दुकान नं. जी-१९ ☐ घाटाल : कुठीबाज़ार तैजसपत्र ☐ हावड़ा : मानकुंडि भंडार, जेसोर रोड • जीरत रोड हावड़ा सुरंग कंसर्न (उषा शॉप) ☐ हरिपाल : हरिपाल स्टेशन रोड सरकार इलेक्ट्रिकल्स ☐ हावड़ा : वैष्णवपाड़ा बाज़ार प्रयोजनी, ४४/१, चंद्र कुमार बैनर्जी लेन • हावड़ा इलेक्ट्रॉनिक्स, ३ और ४, चिंतामणि डे रोड • शिवपुर बाज़ार श्री गुरु बासनालय, ३४/२, शिवपुर रोड ☐ जंगीपाड़ा : जंगीपाड़ा बाज़ार बैनर्जी बासनालय • पीना स्टोर्स ☐ कांदि : कला बागान निवारानी इलेक्ट्रिक ☐ खड़गपुर : डी. वी. सी. मार्केट कुसुम स्टील एम्पोरियम, तालबगीचा • गोल बाज़ार अरविंद स्टोर्स, ८७, रेलवे मार्केट • गंगा जमुना, टी ई-२, रेलवे मार्केट • हिंदुस्तान स्टोर्स, १२३ ए, रेलवे मार्केट ☐ कृष्णनगर : गोवारी सोनापट्टी शैलेन कुमार दत्त एंड ब्रदर्स • बी. के. चैटर्जी लेन • हाई स्ट्रीट रामकृष्ण स्टोर्स, आर. एन. टैगोर रोड • देवनाथ हाई स्कूल के पास नदिया बासनालय, विश्वंभर राय रोड ☐ मालदा : श्री विश्वनाथ स्टोर्स, ३/६२, डी. सी. आर मार्केट • नेताजी सुभाष रोड रेडियो साइन ☐ मेदिनीपुर : बड़ा बाज़ार रामनारायण हरिकिशन • ट्रंक हाउस • बीबीगंज चक्रवर्ती एंटरप्राइज़ • स्कूल बाज़ार दास इलेक्ट्रॉनिक्स ☐ मुरारई : गौरांग दत्त, स्टेशन रोड ☐ नवद्वीप : पारमतला मोड़ बुद्ध देव विश्वास, पारमतला रोड ☐ पुरुलिया : चौक बाज़ार दत्त ब्रदर्स ☐ रघुनाथगंज : दरवेशपाड़ा प्रभात स्टोर्स (दुलु की दुकान) • सदर घाट सुचंदा, म्युनिसिपल सुपर मार्केट ☐ रामपुरहाट : दत्त स्टेनलेस स्टील हाउस, देशबंधु रोड • डाक बंगला पाड़ा रेडियो स्टोर्स, नेताजी सुभाष रोड ☐ राणाघाट : चांगरापाड़ा चक्रवर्ती डिस्ट्रिब्यूटर, पंडित कालीमय घटक लेन ☐ राणीगंज : बड़ा बाज़ार सेठ ब्रदर्स, २५, एम. जी. रोड • श्री गुरु भंडार, ५१, शिवमंदिर रोड ☐ शांतिपुर : पब्लिक लाइब्रेरी के सामने, साहा इलेक्ट्रिक, ३३/१, नेताजी सुभाष रोड ☐ श्रीरामपुर : बटतला वेस्ट, जी. टी. रोड • न्यू श्यामसुंदर बासनालय २३, एन. एस. एवेन्यू • मानसी सिनेमा के पास, ईस्ट एंड ट्रेडर्स, ३९, नॉर्थ साउथ एवेन्यू ☐ शिखाला : शिखाला बाज़ार शिखाला बासनालय ☐ सिलिगुड़ी : आलू पट्टी (मेटल मार्केट) नीलम, हिल कार्ट रोड • विधान मार्केट मृणाली • स्टेनलेस हाउस, ए/९३, विधान मार्केट • बस स्टैंड नॉर्थ बेंगाल स्टोर्स, विधान रोड ☐ सिंगूर : सिंगूर बाज़ार स्टील कं., इलाहाबाद बैंक भवन ☐ सोदपुर : विद्या सागर कॉर्नर प्रयोजनी, स्टेशन रोड ☐ सोनामुखी : पाल फ़र्निचर ☐ सुरी : एस. पी. मोड़ मार्केट तरुण उद्योग, स्टॉल नं. १३ ☐ तामलुक : पार्सकुड़ा बस स्टैंड ताम्रलिप्त एल्युमिनियम स्टोर्स, रतन बासन ☐ तारकेश्वर : बी पी आर गेट सुरस सॉनिक रेडियो • थाना रोड गीत-ओ-रश्मि ☐ उखड़ा : सिनेमा रोड दुर्गापुर सेल्स कॉर्नर ☐ उलुबेरिया : हेमंत बसु मार्केट के पास रक्षित स्टील स्टोर्स ☐ उत्तरपाड़ा : उत्तरपाड़ा बाज़ार तापसी, २१९, जी. टी. रोड.

उत्तमता ऐसी कि भारतभर को है भरोसा

हॉकिन्स®

१ करोड़ से ज़्यादा प्रेशर कुकर बिके हैं

® रजिस्टर्ड ट्रेड मार्क १९९० कॉपीराइट हॉकिन्स कुकर्स लिमिटेड द्वारा आरक्षित

YOUR CHILDREN WILL LOVE IT. AND THEY'LL LOVE YOU FOR IT.

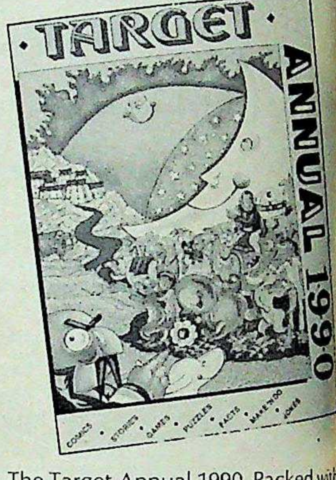
TARGET
ANNUAL 1990
COMICS · STORIES · GAMES · PUZZLES · FACTS · MAKE-TOO · JOKES

The Target Annual 1990. Packed with a whole lot of fun. Over a dozen beauti- fully illustrated stories full of mystery and adventure, fantasy, humour and science fiction. Games and puzzles, jokes and riddles, comic strips, quizzes and activi ideas. Plus, of course, lots of amazin facts and useful information that you children will simply love going through There's so much in it that they'll wis there was an Annual every month!

To order the Target Annual 1990, use the coupon below!

Please send a copy of Target Annua 1990. I enclose my crossed cheque/DD no. ______________ for Rs.45. (ad Rs.5/- for outstation cheques, i.e. outside Delhi) payable to Living Media India Ltd

Child's Name: ______________

Address: ______________

Pin: ______

Mail coupon to:
Living Media India Ltd.
P.B. No. 706
Faridabad-121007, HARYANA

TARGET
The Children's Magazine

EN
E IT.
Y'LL
OU
ANNUAL 1990
acked with
zen beauti-
nystery and
and science
jokes and
and activity
of amazing
that your
ng through
they'll wish
month!
al 1990, use
get Annual
cheque/DD
Rs.45. (add
i.e. outside
a India Ltd

प्रशांत पंजियार

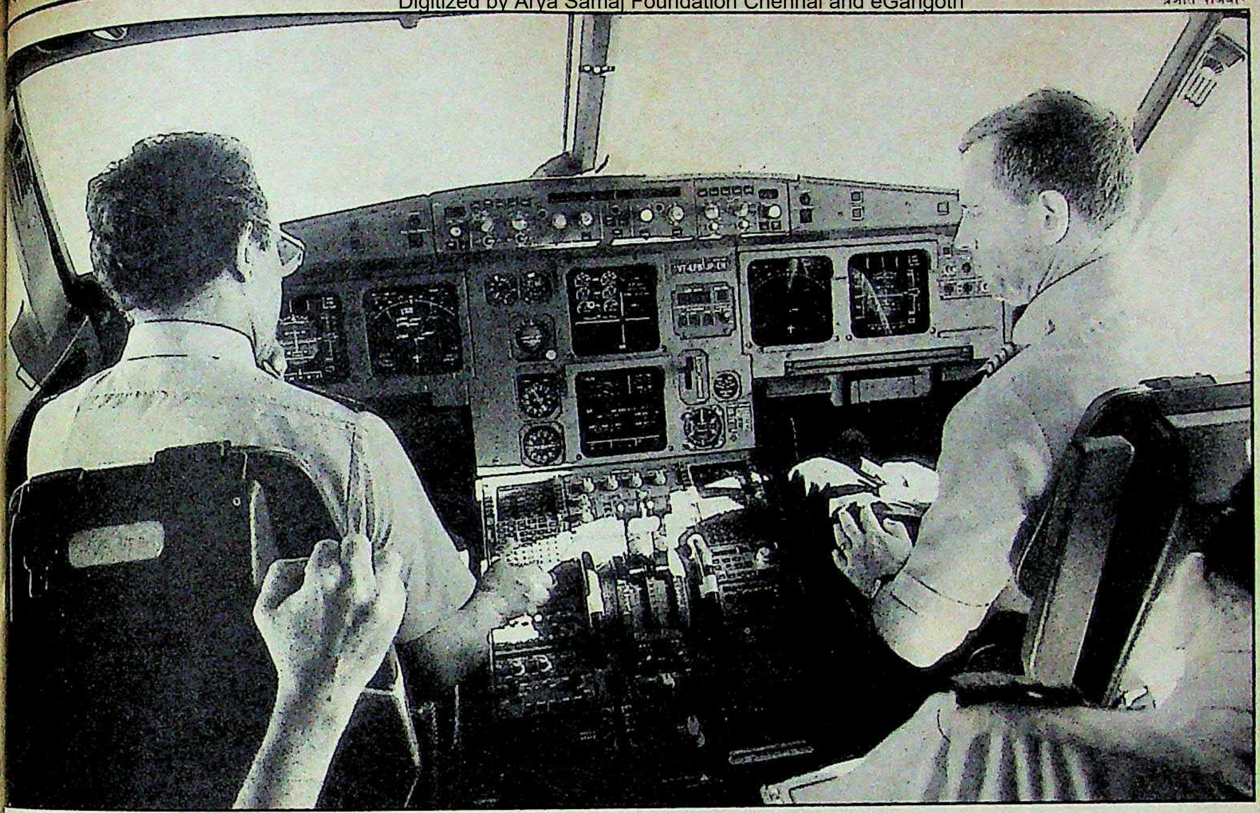

नीकी खराबियों के कारण बंगलूर हवाई की 09 हवाई पट्टी से महज 700 मी. गोल्फ मैदान में गिर गया था.

हादसे में बचे यात्रियों के ब्यौरों से पता ता है कि डेढ़ घंटे की उड़ान के दौरान आखिरी दुखद मिनटों से पहले विमान में विशेष गड़बड़ी नहीं हुई थी. और न ही ान सतीश गोपुजकर और सह-चालक फर्नांडीस ने बंगलूर कंट्रोल टॉवर को किसी आकस्मिक गड़बड़ी का संकेत दिया उस भरी दोपहर में दुर्घटना के चंद ट पहले फर्नांडीस ने टॉवर से विमान ारने की मंजूरी का निर्देश मांगा था. यानी से ठीक पहले. निर्णायक 30 सेकंड में असली गड़बड़ी हुई.

हादसा चाहे इंसानी गलती से हुआ या नी गड़बड़ी से, लेकिन बंगलूर दुर्घटना के ए-320 विमानों की उड़ान क्षमता पर में ही नहीं विदेशों में भी सवाल उठाए रहे हैं. फ्रांस में, जहां इन विमानों का दन करने वाली एअरबस इंडस्ट्री स्थित विमान चालकों ने इन विमानों को तब उड़ाने से इनकार कर दिया जब तक यह घोषणा नहीं की जाती कि विमानों में गड़बड़ी नहीं है. यह संकेत मिलने पर विशेषज्ञ समिति ए-320 विमानों को से एक के बाद एक करके उड़ाने का दे सकती है, भारतीय व्यावसायिक चालक संघ (आईसीपीए) ने भी मांग रख दी. और सबसे ज्यादा बिकने

ए-320 विमान का कॉकपिट: अत्याधुनिक

वाले विमान ए-320 का भविष्य अचानक धूमिल लगने लगा.

इससे 'तार के जरिए उड़िए' (फ्लाई-बाई-वायर) तकनीक से नागरिक उड्डयन के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक क्रांति लाने वाला यह विमान खतरनाक आशंकाओं के बीच घिरता लगा. ए-320 में विमान के नियंत्रण के लिए केबल और पुली की जगह तार बिछा दिए गए हैं जो इलेक्ट्रॉनिक संदेशों को संचालित करते हैं. ये ऐसे विकसित डिजिटल कंप्यूटरों से जुड़े होते हैं जो स्वतंत्र रूप से भी विमान को नियंत्रित रखने में सक्षम हैं. कॉकपिट के अंदर तरह-तरह के मीटरों की जगह व्यवस्थित टर्मिनल लगा दिए गए हैं जो महत्वपूर्ण सूचनाएं प्रदर्शित करते रहते हैं. यह सब चालकों के काम के बोझ को कम करने और इंसानी गलतियों को कम से कमतर करने के लिए किया गया है.

लेकिन इंडियन एअरलाइंस के बेड़े में शामिल होने के बाद से ही ए-320 एअरबसों ने लड़खड़ाना शुरू कर दिया है. पहली समस्या विमान को देश के छोटे हवाई अड्डों में उतारने योग्य बनाने के लिए इसके पिछले हिस्से में दो अतिरिक्त पहिए लगाने पर उठी. शुरू में तो ऐसा हुआ कि विमान के उड़ने के बाद विमान के पहिए मुड़कर उससे सटते ही नहीं थे. कारण: इन अतिरिक्त पहियों के दबाव से कंप्यूटर को गलत संकेत मिलते थे. एअरबस इंडस्ट्रीज ने एक हाइड्रॉलिक फ्यूज हटाकर इस समस्या को अस्थायी तौर पर निबटा दिया.

पिछले अगस्त में दिल्ली में उतर रहे एक विमान के कॉकपिट से एक चिड़िया टकरा गई. इसके बाद विमान में अजीबोगरीब बातें हो गईं. कॉकपिट के डिस्प्ले पैनल एकदम साफ हो गए. आग लगने की गलत चेतावनी गूंजी जिससे एक इंजन बंद हो गया. एअरबस इंडस्ट्रीज के लोग ऐसी गड़बड़ी रोकने के लिए डिजाइन में फेरबदल के प्रयोग कर रहे हैं.

आईसीपीए के लोगों की शिकायत है कि एअरबस में उन्हें अधिक तकनीकी खामियों से साबका पड़ता है. इसके महासचिव कैप्टन पी.के. गुप्त कहते हैं, "हम दोषरहित विमान की उम्मीद लगाए थे. लेकिन ए-320 तो उन विमानों से भी अधिक खामियों का शिकार होने वाला साबित हुआ जिन्हें हम पहले उड़ाया करते थे."

यद्यपि अनेक खामियां छोटे स्तर की थीं लेकिन ये इतने बड़े पैमाने पर सामने आईं कि पिछले सात महीनों में अकेले पश्चिमी क्षेत्र में ही ए-320 की 75 से अधिक उड़ानें तकनीकी खामियों की वजह से रद्द की गईं. जो गड़बड़ियां बार-बार सामने आई हैं उनमें केबिन के भीतर दबाव में अचानक गिरावट आना, हाइड्रॉलिक लीक, डिस्प्ले पैनलों पर झूठी चेतावनियां आना और कंप्यूटरों की गड़बड़ियां शामिल हैं.

यही हाल वी-2500 इंजनों का है जो इंडियन एअरलाइंस की उम्मीदों पर खरे नहीं उतरे हैं. इसे बनाने वाली कंपनी इंटरनेशनल एअरो इंजिस ने वादा किया था कि ये इंजन दूसरी एअरलाइनों द्वारा इस्तेमाल किए जा रहे सीएमएफ-56 इंजनों की तुलना में 5 फीसदी कम ईंधन जलाएंगे. लेकिन एअरलाइंस के इंजीनियरों का कहना है कि ये इंजन अभी 4 फीसदी बचत की सीमा भी (एक फीसदी ईंधन बचाने का मतलब एक विमान द्वारा अपने जीवनकाल में 5 से 6 करोड़ रु. की बचत कर देना है) पार नहीं कर पाए हैं. लेकिन एअरलाइंस के निदेशक (इंजीनियरिंग) यू.पी. सिंह कहते हैं, "इनमें से अनेक समस्याएं तो प्रारंभिक हैं. इसके निर्माता इन गड़बड़ियों को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं. हमें ए-320 विमानों को सुरक्षित उड़ा पाने का पूरा भरोसा है."

समस्या की एक वजह तो खुद इंडियन एअरलाइंस के कामकाज का ढंग भी है. इस विमान को खरीदने के करार पर 1985 में ही दस्तखत हुए थे जबकि इनके लिए और इंजीनियरों को प्रशिक्षित करने का काम ढीले-ढाले तरीके से चलाया गया. इस बीच विमानों को ठहराने और वर्कशॉप बनाने के लिए जगह चुनने मे देरी हुई. और जब जून 1989 में ये विमान आने शुरू हुए तो साथ-साथ अन्य सुविधाएं जुटाने में एअरलाइंस को मुश्किल होने लगी.

परिणाम यह हुआ कि अनेक मामलों में सुरक्षा संबंधी मानदंडों का उल्लंघन किया गया. आईसीपीए का कहना है कि ए-320 विमानों का जिम्मा संभालने वाले 53 चालकों को जुटाने के लिए एअरलाइंस ने नागरिक उड्डयन महानिदेशक से आग्रह किया कि सह-चालक बनने की योग्यता के लिए आवश्यक 100 घंटे उड़ान के अनुभव में ढील दी जाए.

विभिन्न नागरिक उड्डयन एजेंसियों का ढीला-ढाला काम भी इन मुश्किलों को बढ़ाने वाला साबित हुआ है. हवाई अड्डों पर विमान उतारने की सुविधाएं बाबा आदम जमाने की हैं, प्रशिक्षित चालकों और इंजीनियरों की कमी है, लाइसेंस और उड़ान क्षमता की जांच की दुरुस्त व्यवस्था नहीं है. इन सबके कारण नागरिक उड्डयन व्यवस्था खस्ताहाल हो चुकी है (देखें इंडिया टुडे, 15 अक्तूबर 1989).

स्पष्ट है कि सामान्य कामकाज भी ठीक से न चला पा रही व्यवस्था में ए-320 जैसे अत्याधुनिक विमानों का पहुंच जाना समस्या को और गंभीर ही बनाता है. उड़ान संख्या आईसी-605 इन चूकों के खतरों के प्रति सावधान होने की दुखद याद ही दिलाती है.

—राज चेंगप्पा, चिदानंद राजघट्टा, बंगलूर में, और रघुनंदन धर बंबई में

उड़ान आईसी-605

अंधेरे में तीर

बंगलूर हवाई अड्डे की हवाई पट्टी 09, जिस पर उड़ान संख्या आईसी-605 वाला विमान पहुंच नहीं पाया, कुछ रहस्यमय है. टीले के आकार की होने के कारण इस पर विमान उतार रहे चालकों को यह अपनी वास्तविक जगह से कुछ दूर लगती है. और विमान को जिस तरह गोता लगाना पड़ता है उसके कारण विमान के उतरते वक्त ज्यादा तेजी से गिरने का एहसास होता है.

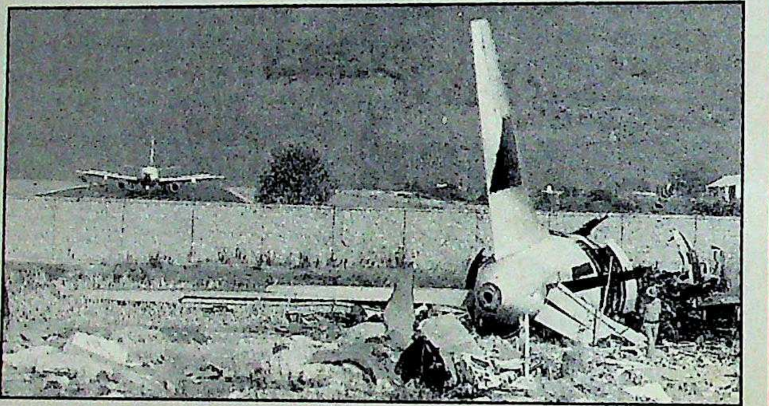
महेश भट्ट

दुर्घटना के अवशेष: अटकलें

दुर्घटना स्थल का मुआयना करने वाले विमान विशेषज्ञ, जिनकी पहुंच कॉकपिट वायस रिकार्डर तक थी, के अनुसार प्रारंभिक जांच से साफ है कि विमान जब नीचे आने लगा था तब तक इसकी किसी प्रणाली के फेल होने का पता नहीं चला.

जब विमान नीचे आता गया तो इसका 'ऑरल वार्निंग डिवाइस' (श्रव्य चेतावनी यंत्र, जो ए-320 के कॉकपिट की खासियत है) लगातार इसकी ऊंचाई बताता जा रहा था. लगता है कि दोनों चालक विमान के नीचे आने के रास्ते के सही होने के बारे में आश्वस्त थे.

विशेषज्ञों के अनुसार हो सकता है विमान की नाक बहुत नीची होने के कारण वह सामान्य से अधिक तेजी से नीचे आ रहा होगा. अधिकारियों के मुताबिक कॉकपिट रिकॉर्डर के टेपों से पता चलता है कि विमान ने बहुत तेजी से उतरने की मौखिक चेतावनी दी थी. ऐसे में गति को कम करने के लिए विमान की स्वचालित प्रणाली उसके इंजन को करीब-करीब बंद होने जैसी स्थिर स्थिति में ला देती.

लेकिन इसके बाद के कुछ सेकंडों में क्या हुआ, यह अभी स्पष्ट नहीं है. एक संभावना यह बताई जा रही है कि इंजन फेल होने से विमान में अचानक बिजली गुल हो गई होगी और वह और नीचे पहुंच गया होगा. रक्षा विमानन विशेषज्ञ गौतम सी. बोहरा का मानना है कि कंप्यूटर नियंत्रण प्रणाली में गंभीर खामी होने से हो सकता है कि दोनों इंजन बंद हो गए होंगे. इसके बाद चालक विमान को सुरक्षित उतारने में असफल रहा होगा.

लेकिन पिछले हफ्ते तक विशेषज्ञ इस दुर्घटना के लिए इंसानी गलती को ही दोष दे रहे थे. उनके मुताबिक चालकों को यह पता नहीं चल पाया कि विमान बहुत तेजी से नीचे जा रहा है और हवाई पट्टी दूर है.

अगर ऐसा हुआ है तो बंगलूर की दुर्घटना और जून 1988 में पेरिस एअर-शो में हुई ए-320 की दुर्घटना में समानता है. उस हादसे के लिए चालक को ही दोषी पाया गया था जो विमान को नीचे लाने के बाद ऊपर ले जाने में असमर्थ रहा.

बंगलूर के दुर्घटना स्थल के मलबे से भी पता चलता है कि चालकों ने फिर से विमान को ऊपर ले जाने की पूरी कोशिश की थी. चालकों का मानना है कि इंजन के पूरा सक्रिय होने में जो 7-8 सेकंड का समय लगता है वह बहुत अधिक है. उधर विशेषज्ञों का कहना है कि आम पुराने विमानों में भी छह सेकंड का समय तो लगता ही है. सो, चालकों को समय रहते कोशिश करनी चाहिए थी.

इन अनुमानों और तर्कों से आगे की बात यह है कि जांच के परिणाम आने पर ही आईसी-605 के हादसे की असलियत सामने आ पाएगी.

—राज चेंगप्पा

महाभारत
MAHABHARAT

निर्माता एवं निर्देशक: बी.आर. चोपड़ा एवं रवि चोपड़ा

ग्राहकों ! अब महाभारत के सभी अतिरिक्त टीवी एपीसोड भी वीडियो कैसेट्स में उलपबध !

आपके मनपसंद टीवी धारावाहिक महाभारत के एपीसोड अब 52 से बढ़ाकर 91 कर दिए गए हैं!

- 39 अतिरिक्त टीवी एपीसोड सर्वोत्तम स्तर के 20 वीडियो कैसेट्स में उपलब्ध हैं
- प्रत्येक कैसेट मे 45-45 मिनट के 2 टीवी एपीसोड हैं
- खुदरा कीमत: प्रति कैसेट 275 रु. (पूरा सेट: 5,500 रु.)

अब प्रति सेट पर 700 बचाइए

अगर आप महाभारत के प्रथम 26 वीडियो कैसेट्स के पहले से ही ग्राहक हैं तो आपके लिए सीरिज को पूरा करने का विशेष मौका है.
अतिरिक्त 20 कैसेट्स घटी हुई कीमत 4,800 रु. (240 रु. प्रति कैसेट) पर आपके लिए उपलब्ध. 4800 रु. के डिमांड ड्राफ्ट के साथ यह कूपन आज ही भेजें.

नए ग्राहक! आप भी यह मौका न चूकें

आप भी चाहें तो प्रथम 26 कैसेट्स 5,800 रु. में मंगा सकते हैं या इससे बेहतर यह कि पूरे 91 एपीसोड के 46 वीडियो कैसेट्स का पूरा सेट 10,800 रु. में मंगा सकते हैं. इसलिए अब भारत के महानतम ग्रंथ पर आधारित मनभावन टीवी धारा- वाहिक घर बैठे देखने को तैयार हो जाइए. डिमांड ड्राफ्ट के साथ आज ही निम्नलिखित कूपन भेजिए.

कैसेट्स आपको रजिस्टर्ड पोस्ट पार्सल के द्वारा आपके घर यथाशीघ्र पहुंचाया जाएगा.

मैं अतिरिक्त 20 कैसेट्स/प्रथम 26 कैसेट्स/46 कैसेटों का पूरा सेट खरीदना चाहता हूं.

मैं 5000/5,800 रु./10,800 रु. का डिमांड ड्राफ्ट '**बी.आर. टीवी.**' नाम भेज रहा हूं
(जो लागू न हो उसे काट दें)

मेरी ग्राहक संख्या ______________

कृपा वीडियो कैसेट्स निम्नलिखित पते पर भेजे:

नाम ______________

पता ______________

____

यह कूपन इस पते पर भेजें: बी.आर. टीवी; आनंदविला, जी-38; 15वां रोड, मांताक्रुज; बंबई-400054

जल्दी कीजिए
बचत योजना
केवल 31 मार्च,
1990 तक

विस्तृत जानकारी के लिए संपर्क करें

BR TV
बी.आर. टीवी; आनंदविला जी-38; 15वां गेड;
सांताक्रुज, बंबई-400054
टेलीफोन: 547625,531551, 538134,
532327, 535733
टेलेक्स: 011-71569 BRF IN
Grams: BAAR FILMS

THUMBPRINT 34390

बंबई एवं महाराष्ट्र के लिए अधिकृत वितरक:
एमराल्ड इलेक्ट्रॉनिक्स प्रा. लि. (वीडियो डिवीजन)
1, आर्केडिया बिल्डिंग; नरीमन प्वाइंट; बंबई-400021.
टेलीफोन: 2049315, 2049398, 2040223

उत्तर भारत के लिए एकमात्र वितरक:
मैगनम फिल्म्स,
मोती सिनेमा कम्पाउन्ड, चांदनी चौक, दिल्ली-110006
टेली: [illegible]56, 232514, 2010927, 2522288

एचडीडब्ल्यू पनडुब्बी सौदा

घोटाला अबकी सतह पर

अप्रैल 1987 में विश्वनाथ प्रताप सिंह ने रक्षामंत्री की हैसियत से जब पश्चिम जर्मनी की कंपनी एचडीडब्ल्यू से पनडुब्बियों की खरीद में ली गई संभावित दलाली की जांच का आदेश दिया तो उन्हें इस्तीफा देना पड़ा. हालांकि पिछली सरकार ने अपने को पाक-साफ बताया पर गोरखधंधे की आशंकाएं खत्म नहीं हुईं. पिछले पखवाड़े सरकार ने सीबीआई को एचडीडब्ल्यू मामले की जांच का आदेश भी दे दिया. शुरुआती पड़ताल के बाद सीबीआई का निष्कर्ष था, "भारत सरकार के धन को बेइमानी और धोखाधड़ी से दूसरे कामों के लिए इस्तेमाल किया गया." विशेष खोजपूर्ण रपट:

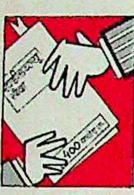

सौदा ऐसे पटा

सभी अंतरराष्ट्रीय सौदों को आखिरी इजाजत देने वाली राजनैतिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति की बैठक फरवरी 1979 में तब के प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई की अध्यक्षता में हुई. बैठक में नौसेना के लिए 350 मीटर तक गोता लगाने वाली पनडुब्बी पर मार करने वाली पनडुब्बी (एसएसके) की खरीद को स्वीकृति दे दी गई. मंत्रिमंडलीय समिति का अनुमान था तकनीकी हस्तांतरण और चार पनडुब्बियों के देश में सह-निर्माण पर आने वाला 350 करोड़ रु. का खर्च नौसेना खुद उठाएगी.

उसी महीने रक्षा विभाग के अतिरिक्त सचिव एम.के. मुकर्जी की अध्यक्षता वाली नौ सदस्यीय सौदा समिति ने चार प्रस्ताव छांटे. ये प्रस्ताव स्वीडिश कंपनी कोकुम्स, पश्चिम जर्मनी की एचडीडब्ल्यू, इटली के सौरो तथा टीएनएसडब्ल्यू-1400 के थे.

मंत्रिमंडल की इजाजत मिलने के बाद, नौसेना के उपाध्यक्ष ने मार्च 1979 में छह सदस्यों वाली समिति बना दी जिसके अध्यक्ष रियर एडमिरल ए.एल. सेठी थे. इसमें निर्देशक (पनडुब्बी) कैप्टन एम. कोंडत को भी शामिल किया गया.

सेठी समिति ने 16 मई को अपनी रपट नौसेना उपाध्यक्ष को सौंप दी. समिति ने स्वीडिश पनडुब्बी 45 कोकुम्स को पहली प्राथमिकता दी जबकि इटली की सौरो पनडुब्बी को दूसरे स्थान पर रखा गया. समिति ने तब प. जर्मनी की एचडीडब्ल्यू का प्रस्ताव इस बिना पर नामंजूर कर दिया कि वह सिर्फ 250 मीटर तक ही गोता लगा सकती है जबकि नौसेना को 350 मीटर गोता लगाने वाली पनडुब्बी की जरूरत थी.

पर एक महीने के भीतर ही 15 जून को एचडीडब्ल्यू प्रमुख दावेदार के रूप में सामने

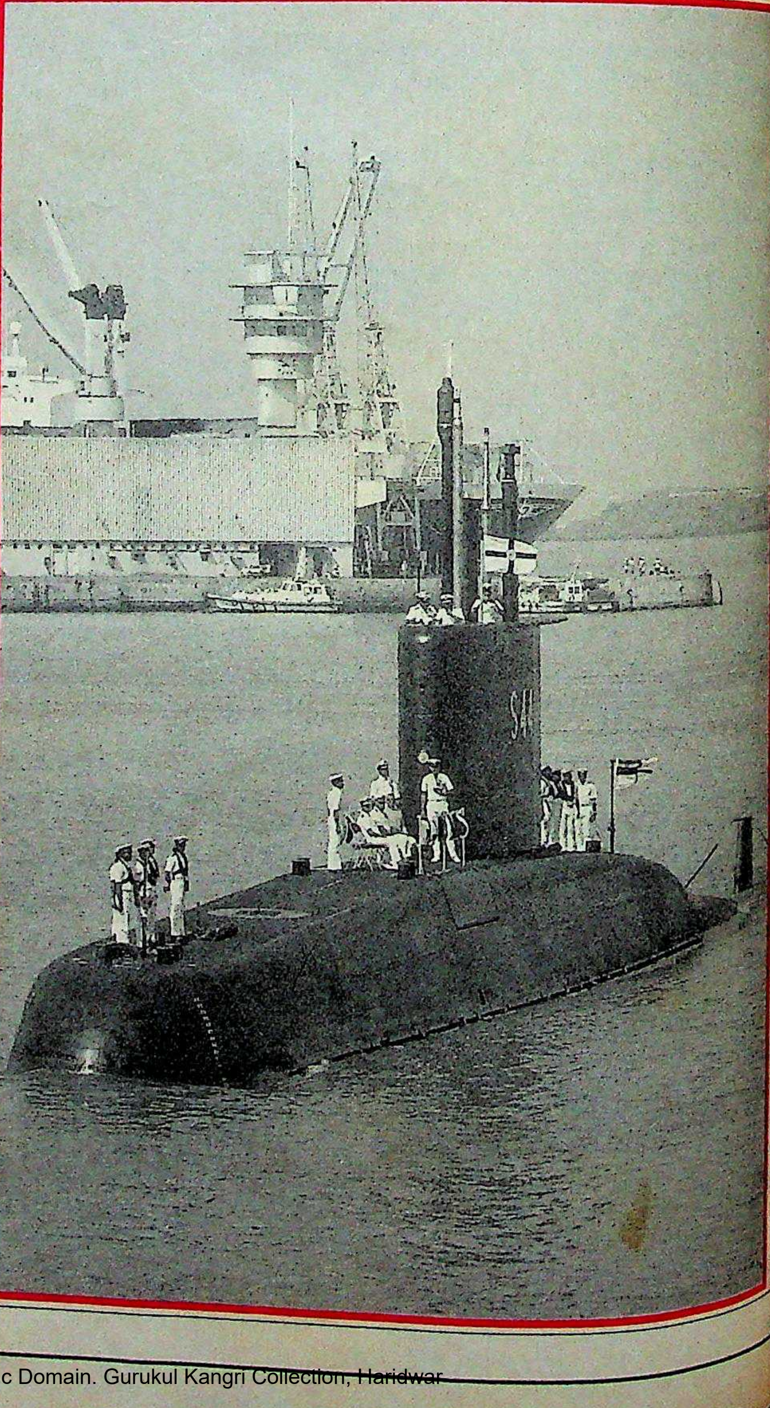

गई. समिति ने एचडीडब्ल्यू को इस ान के साथ सूची में शामिल कर लिया गर वह गोता लगाने की क्षमता सुधार तो उसके प्रस्ताव पर विचार किया जा ता है.

सी महीने रियर एडमिरल डी.एस. पेंटल ध्यक्षता में विभिन्न मंत्रालयों के अधि- यों का प्रतिनिधिमंडल उपलब्ध विकल्पों र्वेक्षण करने यूरोप तथा अमेरिका के कारखानों में गया. इसमें कैप्टन कोंडत प्रतिनिधिमंडल की पक्की राय थी कि तीय नौसेना के लिए सबसे बढ़िया पन- स्वीडन की कोकुम्स ही रहेगी. इसके मोरारजी देसाई सरकार गिर गई और ोर चरण सिंह ने संभाली.

र इस समय तक रक्षा मंत्रालय ने मंत्रिमंडलीय समिति के सामने पेश ने के लिए मसौदा तैयार कर लिया. इसमें कृत महंगी एचडीडब्ल्यू के मुकाबले करोड़ रु. लागत वाली कोकुम्स पन- को बेहतर बताया गया. मसौदे में सौदे बातचीत करने वाले दल के पुनर्गठन की भी दी गई.

1980 में समिति की बैठक की अध्यक्षता में लौट चुकीं इंदिरा गांधी ने की. तब किसी पनडुब्बी का चयन नहीं हुआ था ए सभी कंपनियों ने अपने प्रस्ताव की द 30 जून 1980 तक बढ़ा दी. रक्षा लय ने नई सरकार से सिफारिश की कि समिति की अध्यक्षता रक्षा उत्पादन को सौंपी जाए.

स वर्ष 10 अप्रैल को मंत्रिमंडलीय की बैठक श्रीमती गांधी की अध्यक्षता जिसने कोकुम्स और एचडीडब्ल्यू को देने वाली सूची को मंजूरी दी.

14 अप्रैल को जब सौदे की बातचीत वाली नई समिति की बैठक हुई तो अध्यक्षता रक्षा उत्पादन सचिव नहीं एस.एस. सिद्धू कर रहे थे. सिद्धू बैठक में और घोषणा की कि मंत्रिमंडलीय ने सौदे की बातचीत करने वाली नई सदस्यीय समिति गठित की है जिसके वे खुद हैं. सिद्धू की इस बात का कोई री रिकार्ड फाइलों में नहीं है. समिति सदस्य थे—रक्षा सेवाओं के वित्तीय कार बी.एम. मेनन, विधि मंत्रालय के एस.के. बनर्जी, वाइस एडमिरल आर. चुणकर, शोध एवं विकास के मुख्य क ले. जनरल एस.जी. प्यारा, संयुक्त डी.एन. प्रसाद और मझगांव गोदी के वाइस एडमिरल एन.आर. दत्ता.

में पनडुब्बी सौदे ने नया मोड़ लिया. 1980 में सिद्धू समिति ने जर्मनी वीडन का दौरा किया. 17 मई 1980 को समिति की औपचारिक बैठक हुई और मामला अचानक ही कोकुम्स से हटकर एचडीडब्ल्यू के पक्ष में चला गया. दलील यह दी गई कि कोकुम्स की लागत 403 करोड़ रु. हो गई है जबकि एचडीडब्ल्यू 332 करोड़ रु. में ही मिल रही है.

संजय गांधी की मौत के एक हफ्ते बाद 30 जून 1980 को मंत्रिमंडलीय समिति की बैठक हुई. उसने एचडीडब्ल्यू को आर्डर देने की सिद्धू समिति की सिफारिश स्वीकार कर ली. कुछ अरसे बाद सिद्धू की जगह एस.के. भटनागर को ले आया गया. भटनागर ने न सिर्फ बाद की सभी कार्रवाइयों की अध्यक्षता की बल्कि एचडीडब्ल्यू से सौदा पूरा होने तक वे जुटे रहे. अंततः 11 दिसंबर 1981 को करार पर दस्तखत हो गए.

करार में यह बात शामिल थी कि तारपीडो की कीमत समेत कुल 465 करोड़ रु. में चार पनडुब्बियां छह साल बाद यानी 1987 तक भारत के सुपुर्द कर दी जाएंगी.

पर 1987 के मध्य तक सिर्फ दो पनडुब्बियों की आपूर्ति हुई. उस समय विश्वनाथ प्रताप सिंह राजीव गांधी सरकार के रक्षामंत्री थे. उन्हें पता चला कि जर्मनी ने पनडुब्बी की कीमत शायद ज्यादा लगाई है. सो, उन्होंने कीमत के बारे में दोबारा बातचीत करने और बाकी दो पनडुब्बियों की कीमत कम करवाने का आदेश दिया.

इसी मोड़ पर पहली बार सौदे को लेकर गंभीर आरोप उछला. बॉन में भारत के राजदूत जे.सी. अजमानी ने सरकार को गोपनीय केबल भेजकर सूचित किया कि जर्मन कीमत कम करने को तैयार नहीं हैं क्योंकि कीमत में 7 फीसदी दलाली की रकम भी शामिल है. जर्मनों के मुताबिक यह दलाली उन्होंने सौदा प्राप्त करने के लिए दी.

विश्वनाथ प्रताप सिंह ने अप्रैल 1987 संदेश देखते ही जांच का आदेश दे दिया. इसी की वजह से न सिर्फ राजीव से उनका मनमुटाव हुआ बल्कि राजनैतिक उठापटक भी शुरू हो गई जिसने अगले दो साल में ही इतिहास बदल डाला. जांच का आदेश देने के तीन दिन बाद 12 अप्रैल को विश्वनाथ प्रताप सिंह ने मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया.

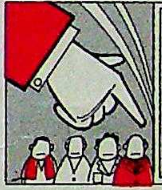

आरोप

सीबीआई ने नई दिल्ली की एक अदालत में मामले की प्राथमिकी (एफआईआर) दर्ज करा दी है. इसमें मुख्य अभियुक्त के रूप में सात नाम दिए गए हैं. आरोपियों में पूर्व रक्षा सचिव भटनागर, अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन के मौजूदा सचिव एस.एस. सिद्धू, कैप्टन कोंडत, रक्षा मंत्रालय के पूर्व वित्तीय सलाहकार बी.एस. रामस्वामी, एचडीडब्ल्यू के निदेशक और एजेंट, पनडुब्बी के तारपीडो सप्लाई करने वाली पश्चिम जर्मनी की फर्म एईजी-टी के निदेशक और एजेंट, सौदे के शुरुआती दौर में शामिल प. जर्मनी की फर्म फेरोस्टाल के निदेशक शामिल हैं.

मुख्य आरोप हैं:

▸ नौकरशाह एचडीडब्ल्यू के खिलाफ कड़ा रवैया अपनाने में नाकाम रहे.

▸ रक्षा मंत्रालय के अफसरों ने एचडीडब्ल्यू के प्रस्ताव की कुल लागत गलत आंकी. इससे खर्च शुरुआती अनुमान 332 करोड़ रु. से

आंकड़ों की बाजीगरी

		सितंबर 1979		मई 1980	
	मूल्यांकन के अधिकतम अंक	कोकुम्स 45-बी	एचडी-डब्ल्यू 1500	कोकुम्स 45-बी	एचडी-डब्ल्यू 1500
सर्वश्रेष्ठ पनडुब्बी	2000	1700	1640	1716	1709
मरम्मत और कल-पुर्जों की मदद	800	685	675	645	695
तकनीकी हस्तांतरण	1200	1085	1050	1060	1130
कुल अंक	4000	3470	3365	3421	3534
चार पनडुब्बियों की कीमत (करोड़ रु. में)		318.70 (तारपीडो समेत)	336.81	403	332

बढ़कर 465 करोड़ रु. हो गया.

▶ वरिष्ठ अधिकारियों ने विभिन्न तकनीकी और वित्तीय पैमानों मे इस तरह फेरबदल किया कि पूरे समय दूसरे नंबर पर रहने वाली एचडीडब्ल्यू पहले नंबर पर पहुंच गई.

▶ एचडीडब्ल्यू, एईजी-टी और फेरोस्टाल ने शुरू में बताई गई कीमतों को बदल दिया और दलाली खाने वालों तथा भारतीय एजेंटों की भूमिका के बारे में सरकार को कुछ नहीं बताया.

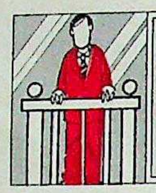

आरोपी

मांट्रियल स्थित अंतरराष्ट्रीय नागरिक विमानन संगठन के वर्तमान महासचिव 60 वर्षीय **एस.एस. सिद्धू** को प्राथमिकी में मुख्य अभियुक्त बनाया गया है. केंद्रीय जांच ब्यूरो के अनुसार सिद्धू ने एचडीडब्ल्यू को सौदा दिलाने के उद्देश्य से दूसरे प्रस्तावों के वित्तीय और तकनीकी विवरणों में काफी उलटफेर कर दिया.

सिद्धू पर यह आरोप भी है कि अप्रैल 1980 में वे खुद-ब-खुद सौदे की बातचीत करने वाली समिति के अध्यक्ष बन बैठे. बिना किसी प्रमाण वाली उनकी नियुक्ति को भी निर्विवाद तथ्य मान लिया गया. सिद्धू ने न सिर्फ एचडीडब्ल्यू के बारे में विशेषज्ञों की प्रतिकूल टिप्पणियों को छुपा लिया बल्कि राजनैतिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति को यह बताकर गुमराह भी किया कि जर्मन कंपनी तकनीक देने के मामले में समझौता करना चाहती है. दरअसल नाटो संधि का देश होने के चलते जर्मन ऐसा समझौता नहीं कर सकते थे और न ही उन्होंने किया.

सिद्धू पर दूसरे प्रस्तावों के वित्तीय और तकनीकी विवरणों में उलटफेर करने का आरोप है

प्रशात पंजियार

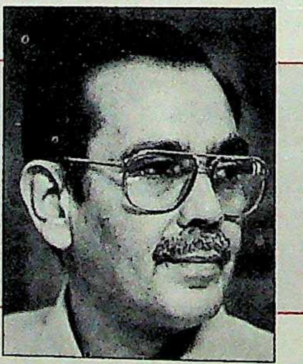

केंद्रीय जांच ब्यूरो के मुताबिक भटनागर ने एचडीडब्ल्यू की अतार्किक मांगें भी मान लीं

आरोप है कि जर्मन कंपनी के प्रस्ताव में खुदरा पुर्जे देने वाली रियायतें जोड़कर उसे स्वीडिश कोकुम्स के प्रस्ताव से बेहतर बना देने का काम भी सिद्धू ने किया (देखें चार्ट). आरंभिक प्रस्तावों के अनुसार चार कोकुम्स पनडुब्बियां 318 करोड़ रु. में आनी थीं जबकि फरवरी 1979 में एचडीडब्ल्यू का प्रस्ताव 336.81 करोड़ रु. का था.

अपने अंदरूनी मूल्यांकन में ब्यूरो का कहना है कि "रक्षा विभाग के अतिरिक्त सचिव श्री सिद्धू ने राजनैतिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति के लिए जल्दबाजी में एक प्रारूप बनाया जिसमें एचडीडब्ल्यू के आर्थिक और तकनीकी मूल्यांकन को गलत ढंग से पेश किया गया. साथ ही उन्होंने एचडीडब्ल्यू सौदे को संघीय जर्मन गणराज्य का वरदहस्त होने के बारे में भी गलत सूचना पेश की. ऐसा उन्होंने एचडीडब्ल्यू को नाजायज फायदा पहुचाने के लिए किया."

केंद्र में सरकार बदलने के बाद हाल में सिक्किम के राज्यपाल पद से इस्तीफा देने वाले 59 वर्षीय **शशिकांत भटनागर** को प्राथमिकी में दूसरा अभियुक्त बनाया गया है. बोफोर्स सौदे में अपनी भूमिका के कारण वे पहले से ही जांच के घेरे में हैं.

1980 के अंत में सिद्धू की जगह भटनागर रक्षा विभाग में अतिरिक्त सचिव बने और उन्होंने ही एचडीडब्ल्यू सौदे को मूर्त रूप दिया. सौदे की बातचीत करने वाली समिति के सदस्यों ने वित्तीय और तकनीकी पैमानों में भारी बदलाव को देखते हुए जब मंत्रिमंडलीय समिति को नया प्रस्ताव देने का सुझाव दिया तो भटनागर ने इसे ठुकरा दिया.

जैसे 18 अक्तूबर 1980 को हुई बैठक में, जिसकी अध्यक्षता भटनागर ने की थी, नौसेना उपाध्यक्ष एम.आर. चुणकर ने स्पष्ट रूप से कहा था कि एचडीडब्ल्यू ने जो तकनीकी विवरण दिए हैं वे नौसेना को मान्य नहीं हैं. उन्होंने सुझाव दिया कि सरकार को स्वीडिश कंपनी से बातचीत शुरू करनी चाहिए. उन्होंने ध्यान दिलाया कि इस पनडुब्बी की गोता लगाने की क्षमता 250 मीटर है जबकि नौसेना को 350 मीटर तक गोता लगाने वाली पनडुब्बी चाहिए.

भटनागर ने यह कहकर इन आपत्तियों से मंत्रिमंडलीय समिति को अवगत नहीं कराया कि इससे 'ढेर सारी परेशानियां' खड़ी हो जाएंगी. ब्यूरो की टीम का निष्कर्ष है "एचडीडब्ल्यू की अतार्किक मांगें मानकर भटनागर ने भारत सरकार के कोष की कीमत पर जर्मनी की इस कंपनी को वित्तीय लाभ पहुंचाया."

लेकिन भटनागर पर सबसे गंभीर आरोप यह है कि जब वे रक्षा सचिव बन गए तब उन्हें बॉन में तैनात भारतीय राजदूत जे.सी. अजमानी ने 24 फरवरी 1987 को गोपनीय संदेश भेजा कि इस सौदे में भारतीय दलालों को 7 फीसदी दलाली का भुगतान किया गया है. उनके केबल संदेश में कहा गया है, "वे (एचडीडब्ल्यू) सिर्फ 7 फीसदी दलाली वाला करार ही रद्द करने को प्रवृत्त होंगे. वे कह सकते हैं कि सरकार की नीतियों के कारण उन्हें ऐसा करना पड़ा." लेकिन यह टिप्पणी सफेद रंग से पोत दी गई और उसके बाद केवल रक्षामंत्री के पास भेजा गया. यह इस बात को दिखाता है कि भटनागर दलाली दिए जाने की बात कबूल करते थे हालांकि बाद में उन्होंने कहा कि सरकार को दलाली दिए जाने की जानकारी नहीं थी. सीबीआई ने केबल की टिप्पणी पर पोता गया सफेद रंग रासायनिक प्रक्रिया से मिटाकर केबल का पूरा मजमून हासिल कर लिया है. इस तरह भटनागर के खिलाफ उसका मामला मजबूत हो गया है. भटनागर के खिलाफ एक और आरोप यह है कि उन्होंने अजमानी का संदेश मिलने के तीन दिन बाद, 27 फरवरी 1987 को प. जर्मनी के रक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारी डॉ. मॉनिटर और एचडीडब्ल्यू के प्रबंध निदेशक रायजेंस से मुलाकात की और इस बारे में सरकार को सूचित नहीं किया.

1981 में पनडुब्बी सौदा हो जाने के बाद कैप्टन **एम. कोंडत** ने नौकरी छोड़ दी. अब ब्यूरो की रिपोर्टों के अनुसार कोंडत ने निदेशक (पनडुब्बी) की हैसियत से एचडीडब्ल्यू के पक्ष में अनेक आंकड़ों में उलटफेर

में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई.

उन पर मुख्य आरोप है कि नौसेना से अवकाश लेने के बाद जर्मन कंपनी में अपनी नौकरी पक्की करने के लिए उन्होंने एचडीडब्ल्यू का पक्ष लिया. मंत्रिमंडलीय समिति से एचडीडब्ल्यू सौदे को मंजूरी मिलने के दो महीने बाद सितंबर 1980 में कोंडत ने समय पूर्व अवकाश लेने की अर्जी दे दी.

31 दिसंबर 1981 को उन्होंने अवकाश ग्रहण किया. लेकिन एक महीने के भीतर ही उन्होंने सरकार से एचडीडब्ल्यू के दिल्ली में सलाहकार के रूप में नौकरी करने की इजाजत मांगी. एचडीडब्ल्यू के दिल्ली स्थित सलाहकार को ही एसएसके परियोजना पूरी करनी थी. रक्षा मंत्रालय ने उन्हें इजाजत नहीं दी तब भी वे 1985 तक एईजी-टी (टारपीडो देने वाली कंपनी) के प्रतिनिधियों के साथ रक्षा मंत्रालय में आते-जाते रहे. 1985 में फेरोस्टाल (एचडीडब्ल्यू की सहयोगी व्यापार कंपनी) ने दिल्ली में दफ्तर खोला तो वे उसमें नौकरी करने लगे. जांच ब्यूरो ने उन पर आरोप लगाया है कि "भविष्य में भारी तनख्वाह वाली नौकरी के लिए उन्होंने अपने पद का दुरुपयोग कर एचडीडब्ल्यू को फायदा पहुंचाया."

जब इस सौदे पर बातचीत चल रही थी और यह सौदा हुआ तब **बी.एस. रामस्वामी** रक्षा मंत्रालय में वित्तीय सलाहकार थे. एचडीडब्ल्यू और कोकुम्स कंपनियों ने जो वित्तीय पेशकश की उसका तुलनात्मक मूल्यांकन करने की जिम्मेवारी उन्हीं की थी.

रामस्वामी पर आरोप है कि उन्होंने जानबूझकर कोकुम्स का प्रस्ताव बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जिससे एचडीडब्ल्यू का प्रस्ताव सस्ता लगे. प्राथमिकी में कहा गया है कि तकनीकी ज्ञान देने के लिए कोकुम्स ने जो कीमत बताई थी उसे भी उसके मूल प्रस्ताव में जोड़कर उन्होंने यह गड़बड़ी की. इस कंपनी ने तकनीक बेचने की कीमत 25.49 करोड़ रु. रखी थी. सौदे पर दस्तखत चाहे जब होते, यह कीमत इतनी ही रहती.

मार्च 1989 में संसद में पेश अपनी रिपोर्ट में लोक लेखा समिति ने भी कहा कि कोकुम्स का प्रस्ताव एचडीडब्ल्यू की तुलना में 18.25 करोड़ रु. सस्ता था. समिति ने लिखा है कि तकनीकी ज्ञान देने के बदले कोकुम्स ने जो कीमत मांगी थी (25 करोड़ रु.) उसे उसके मूल प्रस्ताव में जोड़ दिया ताकि उसका प्रस्ताव महंगा लगे. जांच ब्यूरो के अनुसार कोकुम्स का प्रस्ताव कुल 313.75 करोड़ रु. का ही होता है न कि 349 करोड़ रु. का, लेकिन आंकड़ों की बाजी-गिरी दिखाते हुए रामस्वामी ने निष्कर्ष निकाल लिया कि एचडीडब्लू का प्रस्ताव 5.82 करोड़ रु. सस्ता है. रामस्वामी के हिसाब के के फैसले को सही बताया.

—प्रभु चावला

बोफोर्स

पर्दाफाश में देर नहीं

प्रधानमंत्री सचिवालय के संयुक्त सचिव भूरेलाल के नेतृत्व में पिछले महीने स्विट्जरलैंड गई केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) की तीन सदस्यीय टोली ने अपनी पहली यात्रा में ही जो कामयाबी हासिल की है, उससे यही लगता है कि बोफोर्स दलाली वाले रहस्य पर से जल्दी ही परदा उठने वाला है.

स्विस अधिकारियों ने न सिर्फ उन पांच खातों पर ही रोक लगा दी जिनमें दलाली की रकम जमा कराई गई थी बल्कि उस छठे खाते को भी जाम कर दिया जिसमें इन खातों से पैसा ट्रांसफर किया गया था. इस छठे खाते के असली मालिक की पहचान ही इस पूरे मामले का रहस्य है. वैसे यह खाता जिनेवा की अज्ञात-सी वित्तीय कंपनी पिकेट ऐंड कंपनी के नाम है.

इस खाते में बोफोर्स की दलाली की कुल रकम से भी अधिक राशि अभी पड़ी है. उम्मीद के मुताबिक शक की सुई अजिताभ बच्चन की ओर मुड़ती है क्योंकि उनकी दोनों कंपनियों—आर्कोलैब और आर्कोफार्मा का खाता पिकेट ऐंड कंपनी में है. पर बच्चन बंधुओं का आरोप है कि उन्हें फंसाने के लिए फर्जी दस्तावेज जुटाए गए.

लेकिन इन आरोपों पर ध्यान न देते हुए सीबीआई छानबीन जारी रखे हुए है. इसने विन चड्ढा और जी.पी. हिंदुजा को दो बार समन भेजे पर दोनों उसके सामने खुद हाजिर होने से बच रहे हैं. चड्ढा आगे क्या करेंगे, यह तो स्पष्ट नहीं है लेकिन हिंदुजा चाहते हैं कि उनसे पूछताछ दिल्ली की जगह लंदन में की जाए. दिल्ली में उन्हें अपनी गिरफ्तारी का डर है. हिंदुजा कहते हैं, "मेरे वकीलों ने तो दूसरी नोटिस का भी जवाब दे दिया है. पर हमारी पहली चिट्ठी का सीबीआई ने कोई जवाब नहीं दिया है."

पूर्व रक्षा सचिव शशिकांत भटनागर और सौदे में शामिल दूसरे अधिकारियों से भी पूछताछ हो रही है. पूर्व सेनाध्यक्ष के. सुंदरजी भी रक्षा मंत्रालय और प्रधानमंत्री कार्यालय के अनेक अधिकारियों से मिलकर इससे संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध करा चुके हैं.

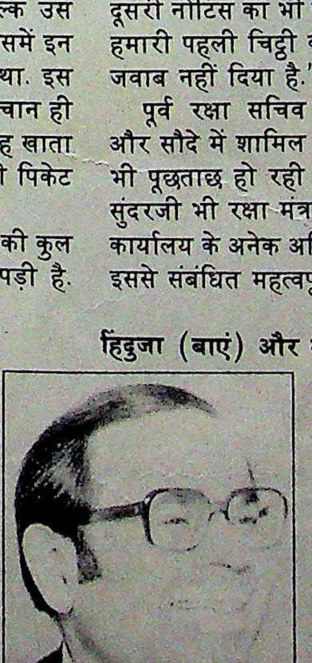

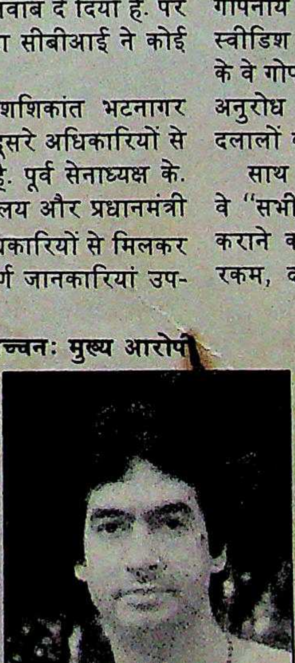

हिंदुजा (बाएं) और बच्चनः मुख्य आरोपी

इसके साथ ही सरकार स्विस और स्वीडिश सरकारों पर भी यह सोचकर दबाव डाल रही है कि इनमें कोई तो नाम जाहिर कर देगी. स्विस सरकार से उसे सहयोग की ज्यादा उम्मीद है.

पिछले महीने के शुरू में सरकार ने स्वीडिश सरकार को एक स्मरण पत्र भेजकर वहां पहुंच रही जांच टीम की मदद करने का आग्रह किया था. पांच पृष्ठों की गोपनीय चिट्ठी में उसने वहां की सरकार से स्वीडिश नेशनल ऑडिट ब्यूरो की रिपोर्ट के वे गोपनीय हिस्से भी उपलब्ध कराने का अनुरोध किया था जिसमें बोफोर्स द्वारा दलालों को पैसे देने का जिक्र है.

साथ ही इस पत्र में स्वीडिश सरकार से वे "सभी दस्तावेज और विवरण उपलब्ध कराने को कहा गया जिनसे दलाली की रकम, दलाली के बदले दी गई सेवाओं की जानकारी और यदि स्वीडिश सरकार, उसके बैंकों और दूसरी किसी भी एजेंसी की जानकारी में हो तो इससे संबंधित लोगों के नाम और पते उजागर होते हों."

जांच अधिकारियों को भरोसा है कि वे भटनागर और दूसरे लोगों से जानकारी निकलवा लेंगे. लेकिन इस पूरे रहस्य पर से परदा हटाने का असली नाटक भारत में नहीं, विदेश में खेला जाएगा.

—प्रभु चावला

राजीव गांधी

"यह कमजोर सरकार मुश्किल मामले निबटा ही नहीं सकती"

लोकसभा चुनाव में अपनी पार्टी की पराजय के बाद से पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी जैसे एकांतप्रिय बन गए हैं. उनके नए निवास 10, जनपथ पर कई पत्रकारों के अनुरोध पत्र अथवा टेलीफोन आ चुके हैं जिनमें उनसे इंटरव्यू की मांग की गई है. लेकिन वे इन अनुरोधों को ठुकराते रहे हैं.

इसकी एक वजह तो यह है कि उनके पास वक्त नहीं है. वे इधर राजधानी से न के बराबर बाहर निकले हैं. लेकिन मुख्य विपक्षी पार्टी के नेता और अध्यक्ष की भूमिका निभाने में वे बेतरह व्यस्त रहे हैं. उनका अधिकांश समय पार्टी के मामलों, पार्टी संगठन, प्रदेश पार्टी इकाइयों की समस्याओं को सुलझाने और विधानसभाओं के चुनाव की तैयारी तथा उम्मीदवारों के चयन में बीता है. राजनैतिक रूप से महत्वपूर्ण हिंदी क्षेत्र में हुए ये चुनाव पार्टी के भविष्य के लिए ही नहीं, खुद राजीव के राजनैतिक भविष्य के लिए भी बेहद अहम साबित हो सकते हैं.

इसलिए राज्यों में अपनी पार्टी की सत्ता बरकरार रखने की कोशिश में पिछले दिनों पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी तूफानी दौरे पर रहे. आठ राज्यों और एक केंद्रशासित प्रदेश की विधानसभाओं के चुनाव प्रचार के लिए वे निजी विमान से यात्रा कर रहे थे. एक-एक दिन में वे दर्जन भर जनसभाओं को संबोधित कर रहे थे.

*इंटरव्यू के लिए बार-बार आग्रह करने पर राजीव गांधी ने भोपाल में रात दस बजे होने वाली सभा के बाद वरिष्ठ संवाददाता **हरिंदर बवेजा** से बातचीत करना स्वीकार किया. यह सभा देर से शुरू हुई. इसके बाद उस दिन की अंतिम रैली में भाग लेने के लिए वे मंडीदीप पहुंचे. वहां से लौटने तक रात के सवा दो हो गए. उस समय भी वे अपनी बुलेटप्रूफ कार में प्रसन्नचित्त बैठे दिखे, सवालों के जवाब देने को तैयार. बातचीत के अंश:*

● *आपके विचार से राष्ट्रीय मोर्चा सरकार का कामकाज कैसा चल रहा है?*

यह सरकार इतनी कमजोर है कि मुश्किल मामले निबटा ही नहीं सकती. आतंकवाद के मामले में यह कमजोर पड़ गई, खास तौर से पाकिस्तान के मामले में. और कश्मीर तथा पंजाब के मामले में भी इसकी यही हालत है. जरा देखिए पाकिस्तान ने कश्मीर के मामले को किस तरह अंतरराष्ट्रीय रूप दे दिया. यह मामला तो सरकार के काबू से पूरी तरह बाहर लगता है. फिर, औद्योगिक मोर्चे पर बदहाली दिखती है. लगता है कोई औद्योगिक नीति ही नहीं है इनकी.

● *आज की स्थिति में आप होते तो पंजाब और कश्मीर की समस्या से कैसे निबटते?*

हम ऐसे हालात बनने ही नहीं देते.

● *आप कश्मीर में जगमोहन की नियुक्ति की आलोचना क्यों करते हैं? आपके समय भी तो वे वहां राज्यपाल थे?*

कश्मीर में शासन के सभी सूत्रों में पूरा तालमेल जरूरी है. जगमोहन और फारूक अब्दुल्ला के बीच मूंछ की लड़ाई थी. मुझे पहले ही पता था कि जगमोहन फारूक को बरखास्त करके गवर्नर रूल लाना चाहते है कश्मीर में लोकप्रिय सरकार की जरूर है. केंद्र का सीधा 'एक्शन' लेना ठीक नहीं है यह खतरनाक साबित हो रहा है. सरका और राज्य के किसी भी प्रभावी नेता के बी किसी तरह का संपर्क ही नहीं रह गया है लोगों को प्रेरित कर सकने वाला एक भ आदमी नहीं रह गया है. दूसरे राज्यों काडर के अफसर वहां भर दिए गए हैं.

● *विपक्ष में आपको कैसा लग रहा है?*

कई तरह से तो खास फर्क नहीं पड़ा है लेकिन कई बार जब देखता हूं कि ची कंट्रोल के बाहर हो रही हैं तो बेचैनी हो लगती है मगर तमाम मुद्दों पर सरकार क नजरिया ही काफी अलग है. जैसे आतंकवा को ही लें. इस मुद्दे पर सीपीआई और बीजे का नजरिया भी जनता दल से अलग है खैर, उनकी भी अपनी सीमाएं हैं. अब मे पास पार्टी संगठन के लिए टाइम है. इलेक्श के बाद इसी पर ध्यान देना है.

● *परिवार के लिए भी अधिक समय है*

मेरे पास हर चीज के लिए बहुत थो टाइम है. असेंबली के चुनाव इतनी जल्दी आ गए और इतना काम करना है.

● *इन चुनावों में इंका की स्थिति क रहेगी? नवंबर और आज के बीच आप कोई अंतर दिखता है?*

काफी अंतर आया है. दौरों में मुझे साफ महसूस होता है. प्रॉब्लम यह है हमारी पार्टी को कई राज्यों में भीत असंतोष का सामना करना पड़ रहा है. वि

"समझ नहीं आता मेरी सरकार पर भ्रष्टाचार के इतने आरोप क्यों लगे. बोफोर्स के मामले में हमारी कितनी धुनाई हो गई. वैसे, मेरी सरकार का कोई आदमी इसमें शामिल नहीं"

"1987 में भी ऐसी ही चर्चाएं थीं कि कई कांग्रेसी पार्टी छोड़ रहे हैं. तब कहां क्या हुआ? जो कुछ कहा जा रहा है वैसा मुझे कुछ भी नजर नहीं आता. मुझे कांग्रेसियों पर पूरा भरोसा है"

यही हालत है. लेकिन कुल मिलाकर लोकसभा चुनाव के नतीजों के मुकाबले ज्यादा अच्छे नतीजों की उम्मीद है. 'लक' (किस्मत) थोड़ा साथ दे तो बहुत अच्छा कर सकती है.

● *क्या अब आपको लगता है कि आपके हकारों और आपको घेरे रहने वाली ड़ी ने आपको गुमराह किया?*

ह कहना मुश्किल है. इस मुद्दे पर पूरी ई से सोचने का मुझे टाइम नहीं मिला नाव इतनी जल्दी आ गए कि मुझे जी में सभी चीजें जमानी पड़ीं. लेकिन मामले पर जरूर सोचूंगा. पर अभी एकाध महीने बाद.

● *आपकी सरकार पर भ्रष्टाचार के इतने प क्यों लगे?*

सचमुच कुछ समझ नहीं पाता कि मेरी र पर भ्रष्टाचार के इतने आरोप क्यों बोफोर्स के मामले में हमारी कितनी हो गई. वैसे, मेरी सरकार का कोई इसमें शामिल नहीं.

● *बोफोर्स घोटाले की सीबीआई से जांच जाने के बारे में आप क्या कहेंगे?*

अच्छा है. वे जो कुछ भी कर सकते हैं, करना चाहिए.

● *बोफोर्स घोटाले में शामिल लोगों के खिलाफ अगर सरकार कार्रवाई करती है तो आप उसका समर्थन करेंगे?*

जरूर. लेकिन सरकार को पक्के सबूतों के आधार पर ही एक्शन लेना होगा. अटकलों के आधार पर नहीं. सारी औपचारिकताएं पूरी होनी चाहिए.

● *क्या आपके विदेशमंत्री सेंट किट्स वाले फरेब में शामिल थे?*

मैं इस मामले में एक भी शब्द पर भरोसा करने को तैयार नहीं हूं. नरसिंह राव जी इस तरह के आदमी ही नहीं हैं. मैं खूब अच्छी तरह जानता हूं.

● *राम जन्मभूमि वाले मुद्दे पर आपकी क्या राय है?*

उन लोगों ने पूरे देश को मूर्ख समझ रखा है. लोकसभा चुनाव कथित शिलान्यास (9 नवंबर) से पहले ही करा लेने का विचार था. अब यह एकदम स्पष्ट हो गया है कि इस आयोजन का कोई धार्मिक मतलब नहीं था. यह एक बड़ा राजनैतिक स्टंट था. जब मैंने द्वारिका के शंकराचार्य से बात की तो उन्होंने बताया कि पवित्र शिलाएं यूं ही पड़ी हैं और लोग गंदे नाले पार करने में उनका उपयोग कर रहे हैं. स्पष्ट है कि लोगों की धार्मिक भावनाओं से खिलवाड़ करके पैसा बनाया गया है.

● *जब आप 'उन लोगों' कहते हैं तो आपका मतलब विश्व हिंदू परिषद से है?*

(मुस्कराते हुए) विश्व हिंदू परिषद और उनके राजनैतिक मित्रों से.

● *अनेक कांग्रेसी—अब्दुल गफूर, नासिकराव तिरपुडे, सुनील शास्त्री—पार्टी छोड़कर जा रहे....*

अनेक नहीं, बस दो या तीन लोग. ये वही लोग हैं जो कभी एक चुनाव तक नहीं जीत सके. यही लोग आते-जाते रहते हैं.

● *आपकी पार्टी में चर्चा है कि विधानसभाओं के चुनाव के बाद आपके खिलाफ विद्रोह होने वाला है.*

1987 में भी ऐसी चर्चा खूब थी कि कई कांग्रेसी पार्टी छोड़ रहे हैं. जो कुछ कहा जा रहा है वैसा मुझे कुछ भी नजर नहीं आता. मुझे कांग्रेसियों पर पूरा भरोसा है.

● *अपने सुरक्षा प्रबंधों से आप खुश नहीं लगते. आप असुरक्षित महसूस करते हैं?*

मैं अपने को कभी भी असुरक्षित नहीं मानता और मैंने कभी अपनी गतिविधियां कम नहीं कीं. मैं इन बातों की चिंता कभी नहीं करता.

भवान सिंह

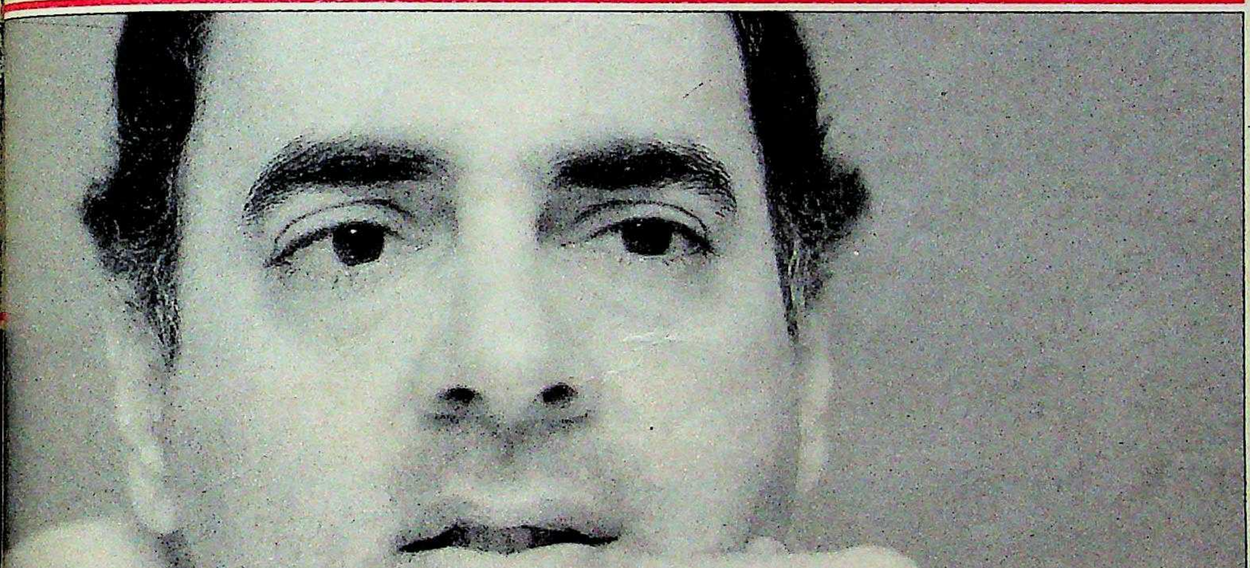

सभी फोटो: प्रकाश

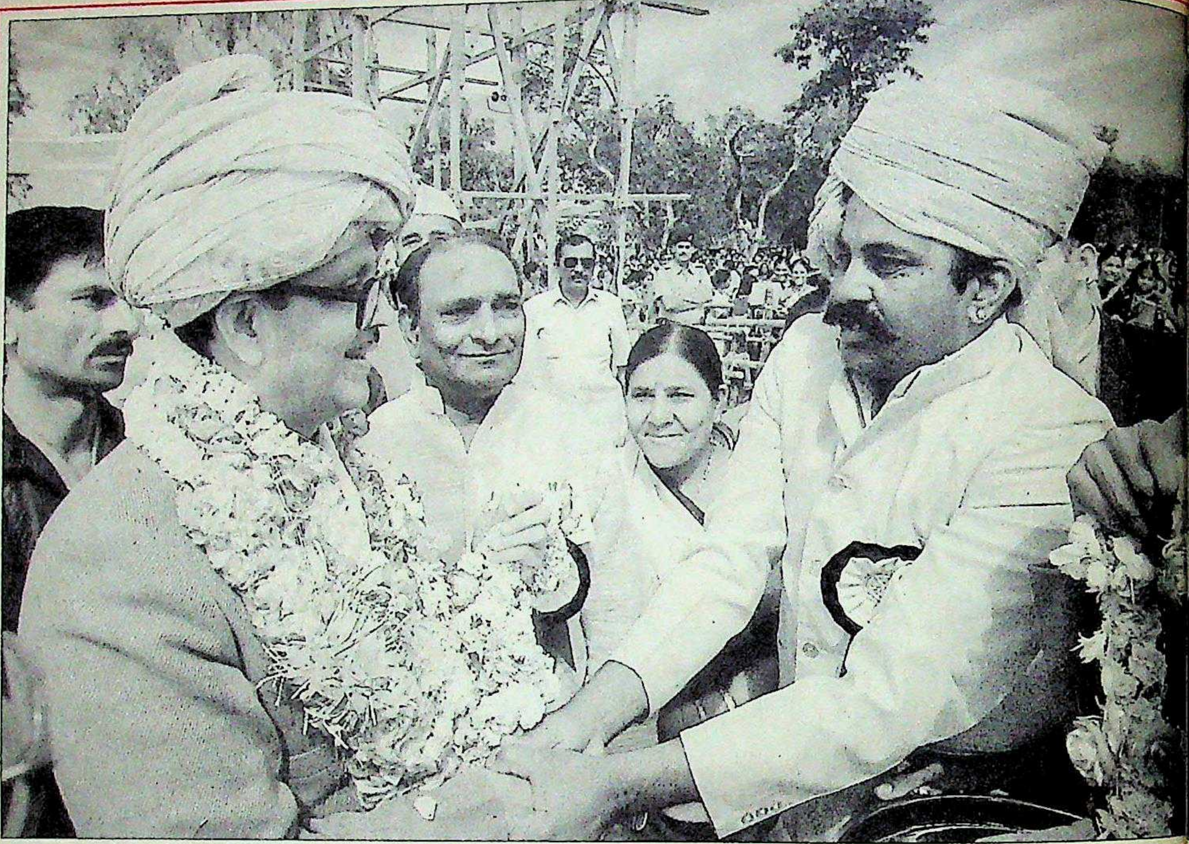

विश्वनाथ प्रताप सिंह

दिल की जुबां, दिल की बातें

काफिला बदला पर पड़ाव वही, हालात बदले पर तेवर नहीं

शीर्षक: स्टार ट्रेक-2. स्टार: विश्वनाथ प्रताप सिंह. पिछले पखवाड़े उनका जाना-पहचाना मोटर-काफिला एक के बाद एक धूल भरे पुरवों में घूम रहा था. भीड़ आनन-फानन में जुट जाती. वे लोगों को मंत्र-मुग्ध कर देने वाले वैसे ही संक्षिप्त भाषण दे रहे थे, अपनी कविताओं के अंश सुना रहे थे और घुल-मिलकर बातें कर रहे थे.

लोगों की प्रतिक्रिया काफी उत्साहवर्द्धक थी. तीन महीने पहले भी वी.पी. सिंह ने इन्हीं पुरवों का दौरा करते हुए तत्कालीन शासक दल पर करारा हमला किया था और लोगों से न जानें क्या-क्या वादे किए थे. लेकिन इस बार एक अंतर है. अब वे प्रधानमंत्री हैं और उनके पद की मर्यादा ने उनके लंबे-चौड़े वादे करने पर अंकुश लगा दिया है. हालांकि वे बहुत बढ़िया वक्ता नहीं हैं लेकिन उन्होंने सीधी-सादी भाषा में लोगों से बातचीत करने और उनसे तुरंत घनिष्ठता बना लेने में महारत हासिल कर ली है. यही अब उनकी सबसे बड़ी राजनैतिक पूंजी बन गई है. वे 'लोगों के अपने आदमी' के रूप में अपनी छवि बनाने को बहुत महत्वपूर्ण मानते हैं.

अब वे अपने चुनावी भाषणों में राजीव गांधी की खिंचाई नहीं करते, यहां तक कि उनका नाम भी नहीं लेते. उन्होंने लोगों से सवाल-जवाब का सिलसिला भी बंद कर दिया है जो कि नवंबर के आम चुनाव में उनके भाषणों की खासियत बन गया था. यही नहीं, वे बोफोर्स घोटाले पर भी बोलने से मना कर देते हैं. राजस्थान के डूंगरपुर की सभा में जब कुछ युवकों ने इस घोटाले पर बोलने के लिए जोर दिया तो उन्होंने कहा, "मैं पोलिटिकल बोफोर्स की बात कर रहा हूं." लेकिन वे कटाक्ष करने और अपनी कविताओं के अंश सुनाने में बिलकुल नहीं चूकते. उन्होंने अपने युवाकाल में जो कविताएं रची थीं, इधर के उनके राजनैतिक बयानों में यत्र- देखी जा सकती हैं.

वी.पी. सिंह अपनी कविताओं के जो अं सुनाते हैं, वे समसामयिक महत्व के होते महिलाओं की हालत पर दुख जताते हुए "चूल्हा और चक्की में बंधी रहती हैं" पंक्तियों का इस्तेमाल करते हैं. और अ वनवासी इलाकों में बोलना हो तो "आदि वासी असल में हो जाता है अंतवासी" जुमलों का इस्तेमाल करते हैं. उनकी बुनि यादी रणनीति साधारण लेकिन असरदार वे गांव के लोगों को उनकी समझ में आ वाली भाषा में अपनी सरकार की कठिना और मुद्दे बताते हैं. ग्रामीण उनकी बात सम या न समझें लेकिन उन पर पड़ने वाला अ साफ देखा जा सकता है.

प्रधानमंत्री के रूप में उनकी शायद

वी.पी. सिंह राजस्थान में; और इंडियन एअरलाइंस में सामान्य यात्रा

"प्रधानमंत्री की तस्वीर सरकार की पहचान नहीं होनी चाहिए"

"मैंने लोगों की समस्याएं जानने के लिए ही कार से यात्रा करने का फैसला किया"

"लोकपाल प्रधानमंत्री पर लगे आरोपों की भी जांच कर सकता है"

"मेरे लिए यह (प्रधानमंत्री का पद) महज एक संयोग है जबकि लोगों का समर्थन स्थायी"

तस्वीर कहीं लगी हो. इसका वे चतुराई ाभ उठाने में नहीं चूकते. उन्होंने कहा, ानमंत्री की तस्वीर सरकार की पहचान होनी चाहिए. यदि कुछ अति-उत्साही कारियों ने अपने दफ्तरों में मेरी तस्वीर है तो उसे उखाड़ फेंकिए."

अपनी वाक्पटुता और संवेदनशीलता से वे ाओं के साथ तुरंत घनिष्ठता बना लेते हैं. राजीव गांधी का नाम लिए बिना ऐसी कह जाते हैं कि लोगों पर उनका असर बिना नहीं रहता. मसलन, "इंकाई नमंत्री सवेरे-सवेरे इस घबराहट के साथ ार पड़ते हैं कि कहीं रातोरात उनकी न छिन गई हो." या "मैंने लोगों को ीक से देखने, उनकी समस्याएं जानने के ही दिल्ली से अहमदाबाद तक कार से ा करने का फैसला किया. लेकिन विपक्ष नेता अभी भी हेलिकॉप्टर और चार्टर्ड ान उड़ा रहे हैं."

ानमंत्री के काफिले में आधा दर्जन एंबेसेडर और कांटेसा कारें चलती हैं विशेष सुरक्षा दस्ते के कुछ कर्मचारी सिर्फ एक निजी सहायक होता है. रात सर्किट हाउस में वे ठहरते हैं, वहां कोई भी मिल सकता है. वहां ठकुर-ियों या स्थानीय पार्टी पदाधिकारियों का जमावड़ा नहीं लगता. डूंगरपुर में एक पुलिस अधिकारी ने कहा, "अगर यहां राज्य का कोई मंत्री भी आ जाता है तो हमारे लिए कहीं ज्यादा मुसीबतें खड़ी हो जाती हैं."

अपनी यात्रा के लिए वे जो मार्ग चुनते हैं, वह भी इस बात का परिचायक होता है कि वे जनता के आदमी के रूप में अपनी छवि बना रहे हैं. उनकी सूचियों में दूरदराज तक के कई गांवों के नाम होते हैं. मिसाल के लिए गुजरात-राजस्थान सीमा पर बसे आशपुर को ही लें. यहां प्रधानमंत्री की कौन कहे, कभी कोई वीआईपी तक नहीं आया. आशपुर के किसान रामलखन ने कहा, "42 साल में इस जगह का दौरा करने वाले वे पहले प्रधानमंत्री हैं." जैसा कि वी.पी. सिंह ने 'इंडिया टुडे' से कहा, "मुझे जनता ने इस पद पर बिठाया है. मैं जोड़-तोड़ के सहारे नहीं आया हूं."

रणनीति स्पष्ट है: राजीव की तड़क-भड़क वाली शैली के बिलकुल उलट अपने को आम जनता के आदमी के रूप में पेश करना. इसीलिए वे हर जनसभा में नई सरकार के लोकपाल विधेयक के महत्व की चर्चा करते हैं. वे लोगों को बताते हैं, "लोकपाल प्रधानमंत्री पर लगे आरोपों की भी जांच कर सकता है." अपनी साफ-सुथरी छवि को और निखारने के लिए वे इंडियन एअरलाइंस की उड़ानों में सामान्य यात्रा करते हैं.

दरअसल, यह एक बड़ी रणनीति का हिस्सा है. अल्पमत सरकार की अगुआई करने वाले प्रधानमंत्री के लिए जनसमर्थन से ज्यादा भरोसेमंद चीज और कोई नहीं हो सकती. वी.पी. सिंह ऐसा मानते भी हैं, "मेरे लिए यह (प्रधानमंत्री का पद) महज एक संयोग है जबकि लोगों का समर्थन स्थायी." और फिर जनता दल को पंगु कर देने वाली सांगठनिक समस्याओं का तोड़ भी प्रधानमंत्री की निखरी छवि और लोगों से सीधे संवाद कायम करने की उनकी कोशिशों में ढूंढ़ा जा रहा है.

फिलहाल, वे और उनके श्रोता दोनों ही 'घनिष्ठता की भाषा' बोलते हैं. हिंदी क्षेत्र में जब वे एक से दूसरे निर्वाचन क्षेत्र का दौरा कर रहे थे तो सड़क के दोनों तरफ लोगों की अभेद्य दीवार खड़ी हो जाती थी. गुजरात के साबरमती में उनका भाषण खत्म होने पर जनता दल के दो स्थानीय कार्यकर्ता उन्हें एक रंगीन पगड़ी पहनाने के लिए मंच पर चढ़ गए. उन्होंने एक झटके में पगड़ी अपने हाथ में ले ली और श्रोताओं की तरफ मुखातिब होकर कहा, "इस पगड़ी का मान तो आप रखेंगे?" और लोगों ने इस सवाल का जवाब हुंकार भरकर दिया.

—भास्कर राय

सभी फोटो : शरद सक्सेना

राजीव गांधी

आंख खुली पर देर से

झूठे दर्प की जगह विनम्रता और क्षमायाचना का भाव

नाटक के दूसरे अंक का पहला दृश्य मुलाहिजा फरमाइए: विमान हवाई पट्टी पर उतरता है. राजीव गांधी मुस्कराते हुए उतरते हैं. इस बार यह एक उड़ान क्लब का छह सीटों वाला किंगएअर विमान है. इंकाई कार्यकर्ता हाथों में फूल माला लिए तेजी से उनकी तरफ बढ़ते हैं. 'राजीव गांधी जिंदाबाद' के नारों से आसमान गूंजने लगता है. पुलिस के घेरे में राजीव गांधी प्रतीक्षारत एंबेसडर कार की तरफ बढ़ते हैं. कार के दरवाजे धड़ाम से बंद हो जाते हैं, सायरन चीखने लगता है और काफिला जनसभा स्थल की ओर तेजी से रवाना हो जाता है.

सभा स्थल पर राजीव गांधी के पहुंचने के कुछ मिनट पहले हाथ में वायरलेस सेट लिए एक सुरक्षा कर्मचारी मंच पर आकर घोषणा करता है, "वे किसी भी क्षण यहां आ सकते हैं." मंच पर मौजूद 12 इंकाई कार्यकर्ता संकेत समझकर भीड़ से नारा लगाने के लिए कहते हैं, 'देश का नेता राजीव गांधी.' तब तक नेता पहुंच जाते हैं. पहले उन्हें माला पहनाने का दौर चलता है. फिर वे भीड़ की तरफ हाथ हिलाते, धड़धड़ाते हुए मंच पर चढ़ने लगते हैं. आधे घंटे तक मुख्यमंत्री और प्रदेश इंका अध्यक्ष के भाषण होते हैं. उसके बाद राजीव माइक के सामने आते हैं.

उनका भाषण शुरू होते ही उनमें आई तब्दीली साफ दिखने लगती है. मुंहफट और आक्रामक प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जगह विनम्र और दोस्ताना भाव वाले विपक्षी नेता राजीव गांधी ने ले ली है. जब वे भीड़ की तरफ देखकर मुस्कराते हैं, बच्चों की तरफ हाथ हिलाते हैं और महिलाओं की ओर हाथ जोड़ नमस्कार करते हैं तो लगता है जैसे 1984 वाली उनकी करिश्माई छवि फिर उभर आई हो. जोधपुर की जनसभा में तैनात एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी, जिन्होंने तीन महीने पहले इसी जगह राजीव को देखा था, कहते हैं, "लगता है हार ने निश्चित रूप से उनका कुछ भला ही किया है."

अपने हर हाव-भाव से आत्मविश्वास का सिक्का जमाने की कोशिश में जुटे शख्स की जगह एक ऐसे शख्स ने ले ली है जो लोगों की तरफ मुस्कराता भी है तो क्षमायाचना के भाव से. वे इस जुमले से भाषण शुरू करते हैं "आपने हमको धक्का लगाया." उनकी विनम्रता से लोगों की नाराजगी कम हो जाती है. वे जब यह कहते हैं कि "उत्तर भारत में उनके नतीजों के कारण हमने सरकार न बनाने का फैसला किया" तो लोग तालियां बजाने लगते हैं. और फिर वे सारे राजनीतिकों का प्रिय तकिया कलाम दोहराते हैं, "हम आपके प्रति, राष्ट्र की अखंडता के प्रति वचनबद्ध हैं और इसके लिए जरूरी नहीं कि हम सत्ता में

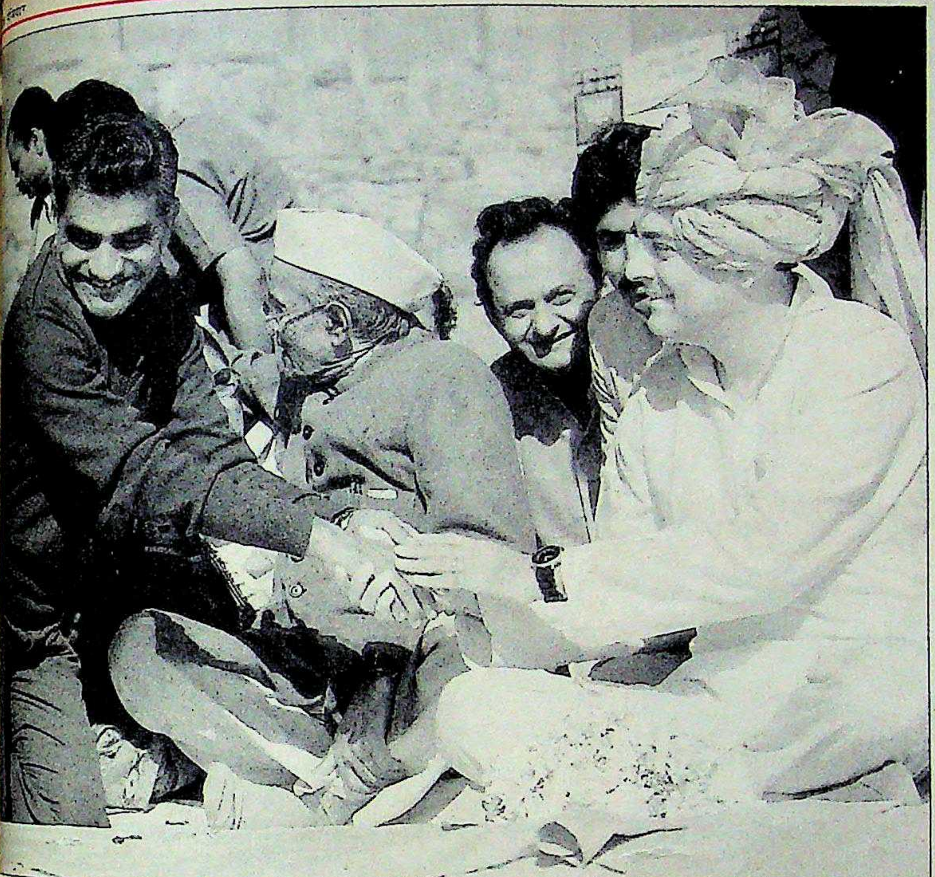

राजीव कटक (बाएं); और जोधपुर में

"आपने हमको धक्का लगाया"

"उत्तर के राज्यों में हमारा प्रदर्शन खराब रहा, इसलिए हमने सरकार न बनाने का फैसला किया"

"पंजाब में खालिस्तान पंचायतें बनाई जा रही हैं. उग्रवादी गुरद्वारों में हथियार जुटा रहे हैं. 10 हफ्तों में वहां 400 लोग मारे गए"

ो." ऐसी बातों से भीड़ ऊबने लगती है. मिनट के भाषण में वे मुख्य रूप से न, कश्मीर और पाकिस्तान के बारे में ही ते हैं.

बिहार, ओडीसा, अरुणाचल प्रदेश, गुज- मध्य प्रदेश, हर जगह राजीव पंजाब आतंकवाद से निबटने में राष्ट्रीय मोर्चा ार की 'अक्षमता' पर ही बोलते हैं. न, "पंजाब में खालिस्तान पंचायतें ई जा रही हैं आतंकवादियों के हौसले जा रहे हैं. वे गुरद्वारों में हथियार जमा रहे हैं. पिछले 10 हफ्तों में वहां 400 मारे गए." लेकिन भीड़ पर इन बातों कोई प्रतिक्रिया नहीं होती.

तब राजीव भीड़ से बातचीत करने की श करते हैं, "पंजाब के राज्यपाल ने नमंत्री को बार-बार संदेश भेजा (वे पी. सिंह का नाम कभी नहीं लेते). को मालूम है कि उन्होंने क्या जवाब ? उन्होंने जवाब दिया—हम सोच के गे." फिर वे कुछ युवकों की तरफ ित होकर पूछते हैं, "आप बताइए, मानियों को अरेस्ट करने में भी क्या ना पड़ता है? दस हफ्ते बीत गए, अभी कोई जवाब नहीं. कितना वक्त लगना ा?" तब तक एक युवक का जवाब ा है, 'एक सेकंड.' इस जवाब से राजीव को सरकार के खिलाफ जहर उगलने का बहाना मिल जाता है.

लोगों की प्रतिक्रिया भले ही ज्यादा उत्साहवर्धक न हो लेकिन नवंबर की तरह उनकी छीछालेदर नहीं हो रही है. तब तो भीड़ न जुटने के कारण उनकी सभाएं रद्द हो जाया करती थीं. मध्य प्रदेश के एक इंकाई कहते हैं, "वोट तो अब भी नहीं मिलेंगे क्योंकि राजीव के प्रति नाराजगी सिर्फ 10 फीसदी ही खत्म हुई है."

लेकिन राजीव की प्रचार शैली बिलकुल ही बदल गई है. अब वे न तो बुलेटप्रूफ कांच के घेरे से बोलते हैं और न ही बुलेटप्रूफ जैकेट पहनते हैं. वी. जॉर्ज, मणिशंकर अय्यर और सतीश शर्मा जैसे लोगों की जगह कुर्ता-पाजामाधारी कांग्रेसियों ने ले ली है.

चुनावी दौरे पर राजीव के साथ रहने वाले एक पार्टी नेता ने सफाई दी, "नवंबर में उन्हें भारी झटका लगा. और वे अच्छी तरह जानते हैं कि हिंदी क्षेत्र से वोट नहीं मिलने वाले. उन्हें मालूम है कि इंका अरुणाचल प्रदेश, पांडिचेरी और शायद महाराष्ट्र में ही कुछ कर सकती है. राजीव को पता चल गया है कि जनता के पास अकूत ताकत है."

शायद यही वजह है कि राजीव अपने थका देने वाले कार्यक्रम के बीच जब-तब विशेष सुरक्षा दस्ते का घेरा तोड़कर लोगों के पास पहुंच जाते थे. ओडीसा के चौद्वार में एक कम भीड़ वाली जनसभा में भाषण करने के बाद राजीव खुली जीप में सवार हो गए और कटक होते हुए भुवनेश्वर तक गए. हालांकि उस समय रात के 10 बज रहे थे फिर भी पुरुष, महिलाएं और बच्चे सड़कों पर उमड़ पड़े. एक जगह तो जीप उलटते-उलटते बची. बिहार में भी ऐसी घटना हुई. यहां राजीव ने पटना से गया तक एक यात्री रेलगाड़ी में यात्रा की. जिस स्टेशन पर गाड़ी रुकती लोग उन्हें देखने के लिए उमड़ पड़ते.

ऐसे क्षणों में राजीव एक बार फिर लोगों के हीरो के रूप में नजर आते. वे देश के एकमात्र प्रधानमंत्री रहे जिन्होंने स्वतंत्र भारत के इतिहास में अब तक का सबसे बड़ा जनादेश पाया था. उन संक्षिप्त लमहों को छोड़कर, जब भीड़ उन्हें घेरकर 'राजीव गांधी जिंदाबाद' के नारे लगाया करती थी, वे दूसरी दुनिया में खोए दिखते—उत्तर में अधिकतर राज्य हाथ से निकल जाने की कठोर वास्तविकता से दूर, पार्टी में विद्रोह की संभावना से भी बेखबर. लेकिन सचाइयों से उन्हें शायद जल्दी ही रू-ब-रू होना पड़ेगा.

—हरिंदर बवेजा

चुनावी चकल्लस

हाल ही के विधानसभा चुनावों में प्रचार के दौरान कुछ रोचक घटनाओं की झलकियां

महाराष्ट्र

गुर्राहट और म्याऊं

■ कभी शेर भी खरगोश के हत्थे चढ़ जाता है. मराठवाड़ा क्षेत्र में हाल में आयोजित एक रैली में पत्रकारों को 'उल्लू' और 'नाली के कीड़े' बताकर शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे ने कुछ ऐसा ही किया. उनका अंदाज आर. गुंडूराव और ए.आर. अंतुले से काफी मिलता-जुलता था, जिन्होंने अपने मुख्यमंत्रित्व काल में लेखकों को 'धूर्तों की संतान' और 'बिच्छू' बताया था. पत्रकारों ने ठाकरे से क्षमा याचना के लिए कहा. बंबई में प्रेस एसोसिएशन के भवन निर्माण के लिए पिछले साल ठाकरे के दिए एक लाख रु. भी पत्रकारों ने वापस कर दिए. चुनाव अभियान जोर पकड़ने पर ठाकरे ने खुखियाना कम कर दिया. आखिर उनकी पार्टी के एक सांसद विद्याधर गोखले प्रतिष्ठित मराठी पत्रकार हैं और सेना के सर्वेसर्वा ने महसूस किया होगा कि प्रेस का अपमान करने वाली खोखली बहादुरी महंगी पड़ सकती है. लिहाजा जल्दी ही गुर्राहट महीन म्याऊं में तब्दील हो गई.

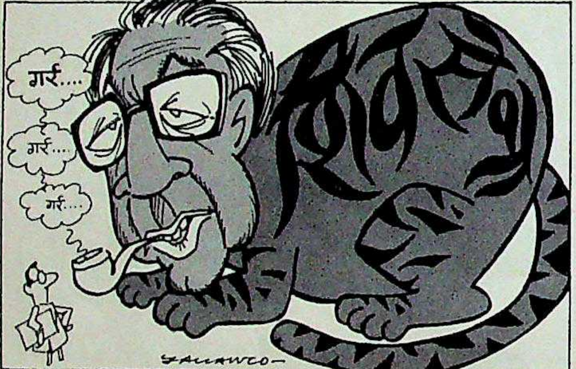
गर्र....
गर्र....
गर्र....
शिवसेना

सभी कार्टून: जयंती

सेर और सवा सेर

■ विधानसभा चुनाव से दो महीने पहले महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री शरद पवार ने महाराष्ट्र की महानता का बखान करने वाले विज्ञापनों की झड़ी लगाकर विपक्ष की नाराजगी मोल लेने के साथ-साथ पार्टी और प्रदेश के फर्क को ही खत्म कर दिया. लेकिन आम चुनाव से पहले छपे इंका के आत्मघाती विज्ञापनों (याद होगी—मेरी हर धड़कन?) के विपरीत ये विज्ञापन गलत अंग्रेजी के लिए याद रहेंगे. लेकिन जनता दल गलतियों में इंका को आगे निकलने देने के लिए शायद तैयार नहीं था. बंबई में कोलाबा क्षेत्र से जनता दल की उम्मीदवार उषा त्रिपाठी के पोस्टरों पर लिखा है, "वोट किसी को भी दीजिए, पर वोट उषा त्रिपाठी को दीजिए." असमंजस में पड़े मतदाता पूछते फिर रहे थे: क्या वे वोट लेना भी चाहती हैं या नहीं?

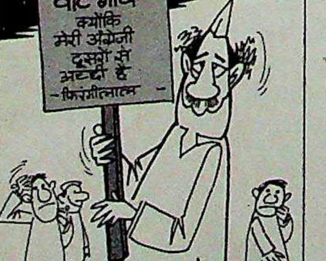
प्लिस मुझे वोट गीव क्योंकि मेरी अंग्रेजी दूसरों से अच्छी है
-फिरंगीलाल

लाल बत्ती पर महाभारत

■ ट्रैफिक लाइटें यातायात को नियमित तो करती हैं पर कभी-कभी झड़प की संभावनाएं भी बढ़ा देती हैं. चुनाव प्रचार की आपाधापी के दौरान बंबई के भीड़ वाले गोखले रोड पर भाजपा-शिवसेना की प्रचार गाड़ी हिंदुओं से समर्थन की अपील करती हुई चली आ रही थी. दूसरी ओर से 'धर्मनिरपेक्ष' विपक्षी दल शेतकरी कामगार पक्ष की प्रचार गाड़ी आ रही थी. तभी ट्रैफिक लाइट लाल हो गई और दोनों को आधुनिक महाभारत का मौका मिल गया.

राहगीर इस युद्ध के पाटों में फंस गए. दोनों तरफ के कार्यकर्ता लांछनों के ब्रह्मास्त्र फेंकने लगे. कुछ लांछन इस प्रकार थे: "भिवंडी के दंगे तुमने ही कराए थे." या "दस साल तक विपक्ष में रहते हुए तुमने कुछ नहीं किया." लेकिन तभी ट्रैफिक लाइट हरी हो गई और शिवसेना-भाजपा, जो हरा रंग देखते ही लाल-पीली हो जाती है, की गाड़ी रणक्षेत्र से नौ-दो-ग्यारह हो गई.

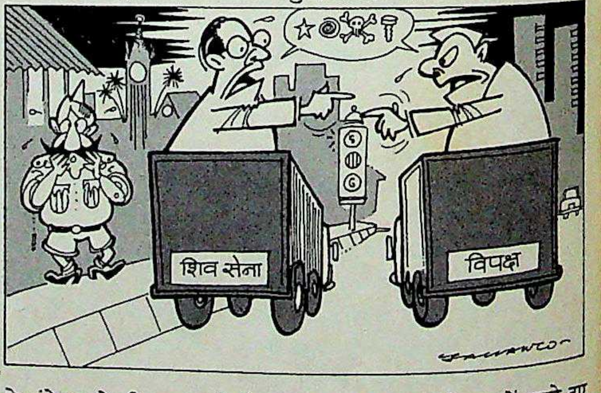

दलाल की पहचान

■ यह जानकारी भूरेलाल और उनकी टोली के लिए उपयोगी रहेगी. वे अपने जासूसों से खराब मौसम वाले स्वीडन और स्विट्ज़रलैंड के साथ-साथ महाराष्ट्र के नम समुद्री वातावरण में भी सुरागरसी करा सकेंगे.

अगर, भ्रष्टाचार निर्मूलन युवा संघर्ष समिति की बात पर भरोसा किया जाए तो बोफोर्स तोप सौदे में दलाली खाने वाले लापता व्यक्ति की अंततः पहचान कर ली गई है. समिति का दावा

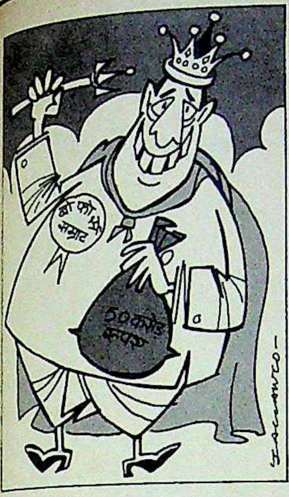

है कि वह संदिग्ध लाभभोगी और कोई नहीं, महाराष्ट्र के राज्यमंत्री रणजीत देशमुख हैं जो इस बार सावनेर विधानसभा क्षेत्र से चुनाव लड़ रहे हैं.

एक परचे में समिति ने घोषणा की है कि देशमुख 'बोफोर्स किंग' हैं. उसने राज्यमंत्री पर गुप्त सौदों के जरिए 50 करोड़ रु. (66 करोड़ नहीं, जो दलाली की राशि बताई जा रही है) बटोरने का आरोप लगाया है.

ठाकरे और तंबाकू

■ चुनावी हवाओं के बेशुमार वादों में से पुलिस को बाल ठाकरे का आश्वासन सबसे मौलिक है. एक रैली में उन्होंने वादा किया कि पुलिस थानों को तंबाकू और चूने की नियमित आपूर्ति कराई जाएगी ताकि पुलिसवाले आसपास की पान-दुकानों पर मंडराते न रहें. इस पर एक शरारती ने जड़ दिया: तब थाने ही पान की दुकानों में बदल जाएंगे.

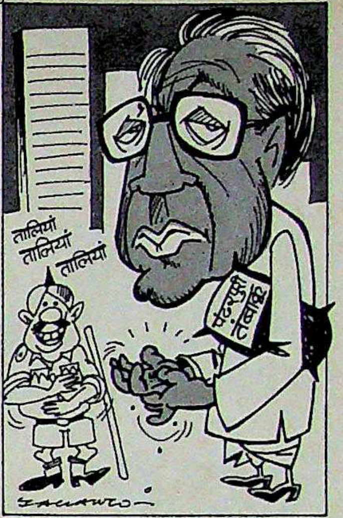

गुजरात

चिमनभाई का भूत

■ गुजरात जनता दल के अध्यक्ष चिमनभाई पटेल का 'भूत' उनका पीछा नहीं छोड़ रहा है. 1974 में जब यहां छात्रों ने नवनिर्माण आंदोलन शुरू किया था तब कांग्रेसी सरकार का नेतृत्व कर रहे चिमनभाई ही मुख्य निशाना बने थे. और उसके बाद से हर चुनाव में यह 'भूत' प्रकट हो जाने को बेचैन होने लगता है. इस बार भी इसके चलते चिमनभाई कई बार परेशान हो चुके हैं. अहमदाबाद में हुई एक विशाल रैली में पटेल ने इस उम्मीद से 'गली गली में शोर है' का नारा लगाया कि भीड़ 'राजीव गांधी चोर है' का जवाबी नारा लगाएगी. लेकिन भीड़ शायद 1974 को ही अभी नहीं भूल पाई थी. सो, उसने नवनिर्माण आंदोलन वाला जवाबी नारा लगाया—'चिमनभाई चोर है.'

सभी कार्टूनः अजीत नैनन

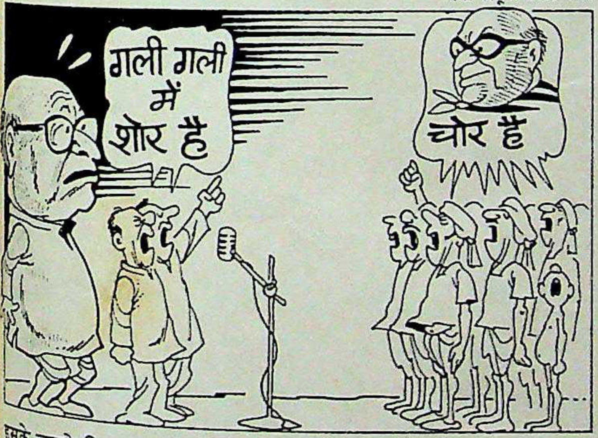
गली गली में शोर है
चोर है

चंदा ऐसे मिलता है

■ उनकी आस्था जन-शक्ति में ही नहीं, जनता के धन में भी है. गुजरात के खडिया विधानसभा क्षेत्र के भाजपा विधायक अशोक भट्ट का कोष संग्रह अभियान भी चर्चा पाने लगा है. इस बार भी चुनाव लड़ रहे भट्ट के पास चंदा जुटाने के नए-नए तरीकों की कमी नहीं. पहले चुनाव में वे दुकान-दुकान जाकर, हाथ जोड़कर चंदा मांगते थे और पीछे चल रहे समर्थक चट से रसीद पकड़ा देते थे. हाल में हुए लोकसभा चुनाव में झोला खोले वे शहर-दर-शहर घूमते रहे. इस तरह उन्होंने 1.25 लाख रु. जुटाए थे.

इस चुनाव में उन्होंने चंदे के लिए इतना घूमने का झंझट भी नहीं रखा है. खडिया कस्बे के बीच में उन्होंने एक बड़ी 'हुंडी पेटी' रख दी है. दस दिनों के अंदर इस पेटी में 20,000 रु. आ गए जिसमें अठन्नी से लेकर 100 रु. तक के नोट थे. उनका लक्ष्य इस पेटी से 50,000 रु. जुटाने का है. वे कहते हैं, "इसमें मेरा मुख्य उद्देश्य सामान्य जन को भी मूल्य आधारित राजनीति से जोड़ना है." लेकिन भट्ट को दिए पैसे का मूल्य लोगों को मिलता है या नहीं, यही देखना है.

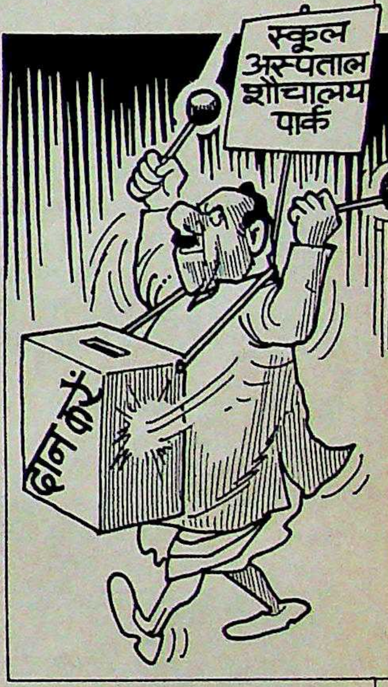

नाम ही सब कुछ

■ नाम में क्या रखा है? औरों पर भले ही यह बात लागू होती हो, पर भाजपा पर नहीं. भाजपा के प्रभुत्व वाले अहमदाबाद नगर निगम द्वारा शहर का नाम कर्णावती कर देना ऐसा ही मामला है. कहते हैं सुलतान अहमद शाह द्वारा कब्जा किए जाने के पहले इस शहर का नाम कर्णावती ही था. हिंदू मतदाताओं को अपनी ओर खींचने की रणनीति के तहत भाजपा ने यह बदलाव किया. इस फैसले से वोट मिलते हैं या नहीं लेकिन दंगों के लिए बदनाम इस शहर में हिंदू-मुस्लिम तनाव जरूर बढ़ेगा.

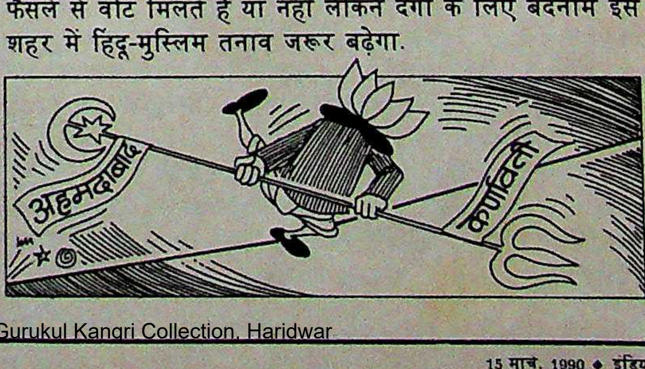

मध्य प्रदेश

सभी कार्टून: अजीत नैनन

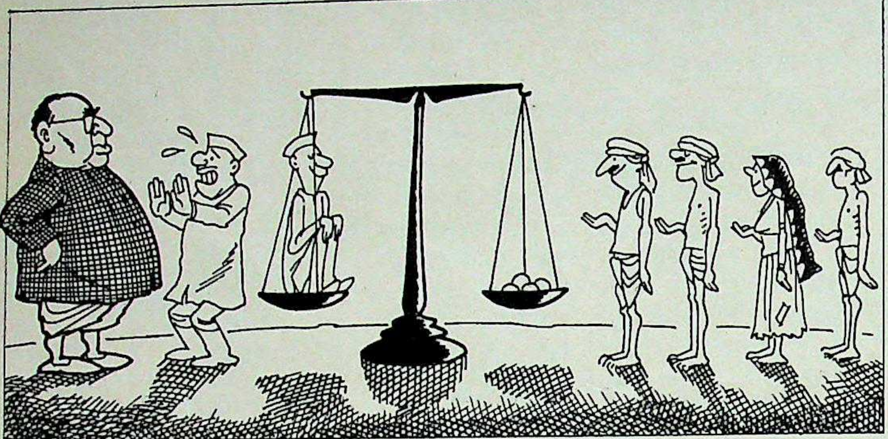

ललचाना लड्डू से

■ मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए कभी-कभी खाने की वस्तुएं भी चुनाव प्रचार का हिस्सा बन जाती हैं. मध्य प्रदेश के कुछ इलाकों में इस चुनाव के दौरान पोस्टरों, रैलियों, भाषणों और पर्चों को लड्डुओं ने पीछे छोड़ दिया. इस लोकप्रिय मिठाई का इस्तेमाल सभी पार्टियों ने किया. भाजपा के बाबूलाल गौड़ को भोपाल में लड्डुओं से तौला गया, तो इंका के मनोहर बैरागी को उज्जैन में. फिर, ये लड्डू जनता में बांट दिए गए. मीनमेख निकालने वाले कहते कि यह रिश्वत है, जबकि बाकी लोगों के मुंह में लड्डू होते थे.

तस्वीर नहीं मिलती

■ इस बार राज्य में इंका को खराब छवि की गंभीर समस्या से जूझना पड़ा. साथ ही चुनाव पोस्टरों पर छापने के लिए नेता की तस्वीर को लेकर भी उलझन रही. हाल के लोकसभा चुनाव के दौरान मतदाताओं पर राजीव की तस्वीरें बेअसर साबित हुई थीं. इसलिए इस बार पार्टी के लिए मुसीबत खड़ी हो गई कि आखिर किस नेता की तस्वीर जनता के सामने पेश की जाए. संभवत: मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल ने स्वयं को इसके लिए उपयुक्त समझा और फौरन अपनी तस्वीर वाले पोस्टर और विज्ञापन आदि प्रकाशित करा दिए. लेकिन प्रदेश इंका अध्यक्ष अर्जुन सिंह का सोच इससे अलग था. उन्होंने जो पोस्टर जारी किए, उन पर न तो राजीव गांधी की तस्वीर थी और न शुक्ल की. इधर, अपनी छवि मलिन होने के एहसास से उन्होंने अपनी तस्वीर पेश करना भी ठीक नहीं समझा. अंतत: उन पोस्टरों पर एक अज्ञात वनवासी स्त्री की तस्वीर छापी गई.

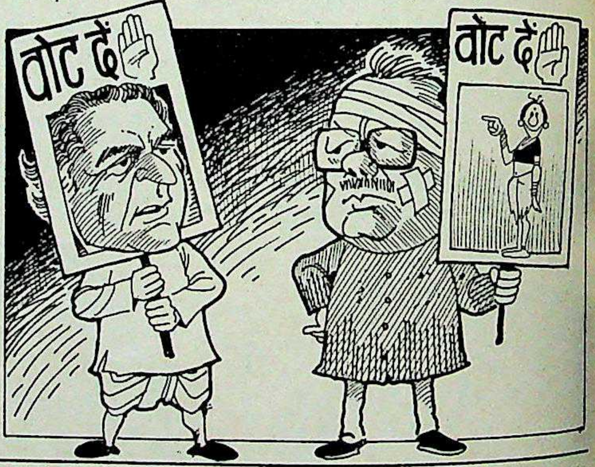

ओडीसा

सभी कार्टून: अजीत नैनन

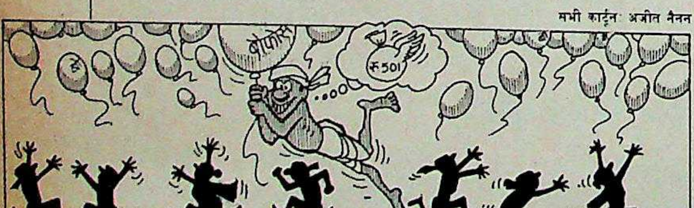

गुबार गुब्बारों के जरिए

■ उस दिन बहुत से ओडिया मतदाता आकाश की ओर ताक रहे थे, मानो अमृत वर्षा होने वाली हो. हुआ यह कि भारत मुक्ति मोर्चा की स्थानीय शाखा ने 16 फरवरी को अपने अध्यक्ष शरत राउतराय के हाथों 101 'बोफोर्स गुब्बारे' भारी शोर-शराबे के साथ हवा में छुड़वाए. मोर्चे के अनुसार इनमें से 11 गुब्बारों के साथ ऐसी पर्चियां बंधी थीं जिन पर बोफोर्स घोटाले में दलाली खाने वालों के नाम लिखे थे. मोर्चे ने एलान किया था कि जो भी व्यक्ति तथाकथित बोफोर्स गुब्बारे लेकर देंगे, उन्हें इनाम दिया जाएगा. इनाम था—इन 11 में से हरेक गुब्बारे पर 501 रु. की दलाली!

पति और पिता की परेशानी

■ ओडीसा प्रदेश इंका की कद्दावर अध्यक्ष नंदिनी सत्पथी का पति होना निश्चित ही जिम्मेदारी का मामला है. खासकर तब जब उन्हें लोग श्रीमान नंदिनी सत्पथी कहकर पुकारें. ये भद्रपुरुष उस समय और उलझन में पड़ गए जब उनकी पत्नी इंका की और उनके 32 वर्षीय पुत्र तथागत जनता दल के उम्मीदवार के रूप में चुनाव में खड़े हो गए. देवेंद्र बाबू (वे इसी नाम से पुकारा जाना पसंद करते हैं) की परेशानियों में इस बात से और इजाफा हुआ

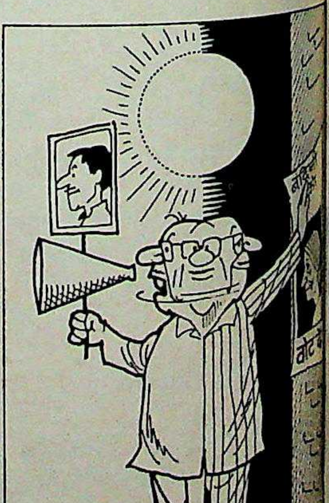

"यह बेचारी मेरे लिए कितनी मुसीबतें झेलती है! आगे चल कर इसके सपनों का घर बनाने के लिए मुझे एक-साथ बड़ी रकम की ज़रूरत पड़ेगी."

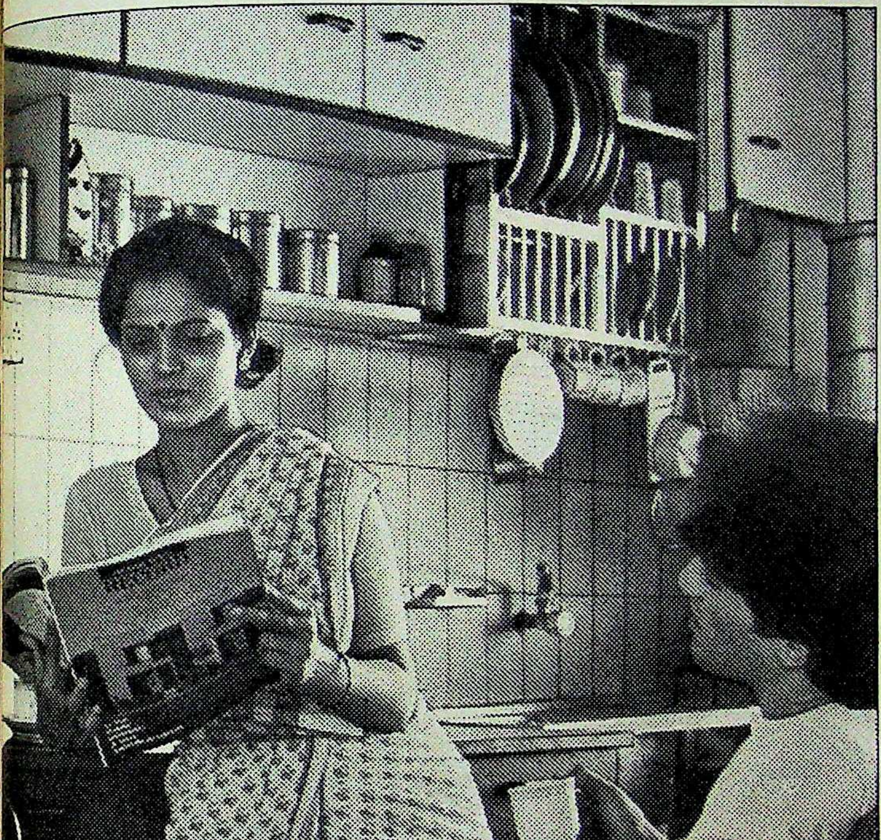

धनरक्षा में हम 10 या 15 वर्ष में होनेवाली अपनी बचत की लक्ष्य-राशि तय करते हैं. इस राशि को वार्षिक या अर्धवार्षिक समान किस्तों में बांट कर किस्तें निधि में जमा कर दी जाती हैं. इनका एक छोटा-सा हिस्सा जीवन बीमे का लाभ प्रदान करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है. बाकी राशि के बदले में 10 रुपये अंकित मूल्यवाली धनरक्षा यूनिटें दी जाती हैं. दुर्घटना बीमे का लाभ मुफ़्त मिलता है.

लाभांश की घोषणा हर वर्ष की जाएगी. उसे फिर से यूनिटों में लगा कर हमारे खाते में जमा कर दिया जाएगा. अगर दुर्भाग्य से हमें कभी कुछ हो जांए तो उस समय तक जमा हुई यूनिटों की कीमत और जो किस्तें भरनी बाकी हैं उनकी राशि भी हमारे नामांकित व्यक्तियों को देय हो जाएगी.

हम में से अधिकांश व्यक्तियों को एक-साथ बड़ी रकम जुटाना मुश्किल होता है. इसीलिए धनरक्षा यूनिटें हमारे लिए बड़ी फ़ायदेमंद हैं.

योजना की सभी किस्तें भरने पर लक्ष्य-राशि के 10% या 15% के बराबर राशि समापन उपहार के रूप में दी जाएगी.

साथ ही, आयकर अधिनियम की धारा 80C के अंतर्गत निवेश की राशियों पर तथा धारा 80L के अंतर्गत लाभांश पर कर में छूट मिलेगी.

इस प्रकार हमारी पूरी लक्ष्य-राशि अवश्य ही मिल जाएगी.

निवेश की सभी राशियां सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की निर्धारित शाखाओं में ही भरनी होंगी.

* बीमे पर खर्च होनेवाली राशि आयु के अनुसार बदलेगी. जीवन बीमा और दुर्घटना बीमा संबंधी उचित प्रतिबंध लागू होंगे. बचत की अधिकतम लक्ष्य-राशि 60,000 रुपये होगी. अधिक जानकारी के लिए जीवन बीमा निगम की किसी भी शाखा से या जीवन बीमा निगम सहयोग निधि के किसी भी एजेंट से संपर्क करें.

धनरक्षा

अपनी बचत की लक्ष्य-राशि तय कीजिए. इस आवर्ती योजना में पैसे लगाइए. अपने पैसों को बढ़ता देखिए. और साथ ही, जीवन बीमे का लाभ* भी पाइए.

अभयं सर्वदा

जीवन बीमा निगम सहयोग निधि

आपके उद्देश्य की पूर्ति में हम मदद करेंगे

R K SWAMY/LMF/4694 HN

कि मां और बेटा ढेंकानाल जिले में अगल-बगल के चुनाव क्षेत्रों में उम्मीदवार हैं—नंदिनी गोंडिया से और तथागत ढेंकानाल सदर से.

लेकिन देवेंद्र बाबू ने एक की वजह से दूसरे से मुंह नहीं मोड़ा और न ही वफादारी के संकट में फंसे. इस मुश्किल परिस्थिति से बचते हुए उन्होंने ढेंकानाल के पुश्तैनी मकान में डेरा जमा लिया. दिन में वे तथागत के चुनाव अभियान की निगरानी करते और रात को यह देखते कि पत्नी के चुनाव क्षेत्र में पोस्टर लग जाएं. इस तरह चुनाव तो पत्नी और पुत्र लड़ रहे थे लेकिन रणनीति तैयार करने का काम देवेंद्र बाबू के कंधों पर आ पड़ा.

मातृत्व की मांग पर

■ मातृत्व और राजनीति का संयोग अजीबोगरीब होता है तथा विचित्र घोषणाएं करा देता है. मिसाल के लिए, इसने नंदिनी सत्पथी से कहलवा दिया कि वे कोई राजनैतिक जीव नहीं, इंसान हैं. इस गूढ़ कथन पर आश्चर्य करने वालों को मालूम हो कि यह कहकर वे अपने उन आलोचकों को जवाब दे रही थीं जो आरोप लगा रहे थे

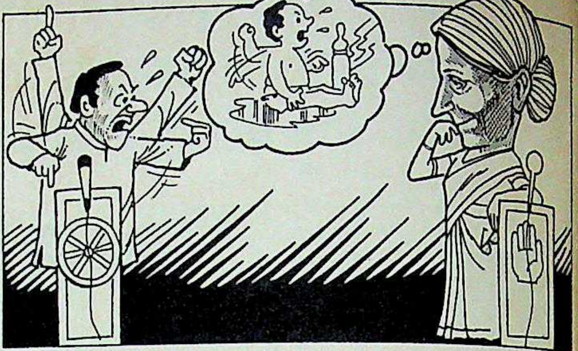

कि नंदिनी ने 1974 से उन्हें लगातार जिताने वाली ढेंकानाल सदर की सीट अपने बेटे और जनता दल उम्मीदवार तथागत की जीत को आसान बनाने के लिए छोड़ दी और खुद नजदीक के गोंडिया की सीट से लड़ीं. उनका यह बयान भी काबिलेगौर है—"बेटा तो मां के खिलाफ लड़ सकता है लेकिन भारतीय नैतिकता मां को बेटे के खिलाफ लड़ने की इजाजत नहीं देती."

बिहार

दामाद को दहेज

■ नेताओं को नाच नचाने की कूवत या तो उनके बेटों में होती है या दामादों में. मिसाल के लिए बिंदेश्वरी दुबे का ही मामला लिया जाए. उनके लिए बिहार का सबसे महत्वपूर्ण चुनावी दंगल शाहपुर में हो रहा था जहां उनके दामाद रमेश पांडेय इंका की तरफ से उम्मीदवार थे. दुबे अपना सारा कामकाज छोड़कर वहां कई सप्ताह तक डेरा डाले रहे और अपने खराब स्वास्थ्य के बावजूद जमकर चुनाव प्रचार करते रहे.

जनता दल उम्मीदवार नरेंद्र तिवारी के बारे में यह आम धारणा होने के बाद भी कि वे पलड़े पर कमजोर हैं, दुबे ने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया. तिवारी पहले के चुनावों में दुबे और के.के. तिवारी दोनों के लिए काम कर चुके हैं. बहरहाल, दुबे कोई कसर बाकी नहीं रहने देना चाहते थे. मसखरों ने चुटकी ली, "दुबे क्या ऐसा सोचते हैं कि वे शाहपुर भी दहेज में दे डालेंगे?"

सभी कार्टून: जयंतो

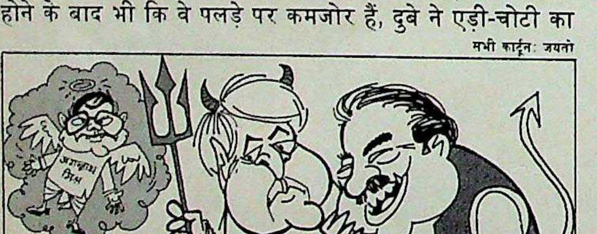

हाकिमों में दहशत

■ चुनाव अनेक लोगों में दहशत पैदा कर सकता है, खास तौर से सत्ताधारी पार्टियों की उन हस्तियों में जिनके पैरों तले की जमीन खिसक रही हो. लेकिन बिहार में सबसे ज्यादा दहशत में नौकरशाह दिखे. उनकी जमात मोटे तौर पर सत्ता में इंका की वापसी के पक्ष

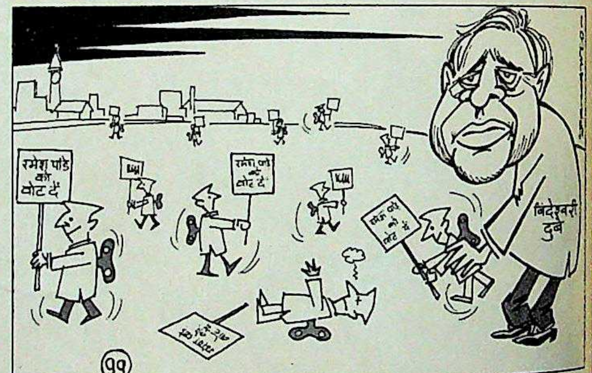
रमेश पांडे को वोट दें
रमेश जी को वोट दें
बिंदेश्वरी दुबे
११

में है. इसका पहला कारण यह है कि इंकाई मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र ने ऐसी स्थिति पैदा कर दी है कि नौकरशाहों को उनकी वापसी में ही अपनी भलाई और मलाई दिखती है.

हाकिमों को सबसे ज्यादा डर इस बात का है कि अगर जनता दल के दोनों महारथियों—लालू प्रसाद यादव और रघुनाथ झा—में से कोई एक अगला मुख्यमंत्री बन बैठा तो क्या होगा? ये दोनों ही अपनी बदमिजाजी और बाहुबल के प्रयोग के लिए मशहूर हैं. मिश्र में निष्ठा रखने वाले एक अधिकारी के अनुसार, "इन दोनों की तुलना में तो जगन्नाथ मिश्र संत हैं." वैसे, अगर इनमें से कोई मुख्यमंत्री बन जाता है तो उत्तर प्रदेश में नौकरशाहों की फजीहत करने में माहिर मुलायम सिंह यादव के साथ बनी यह जोड़ी पूरे क्षेत्र के बाबुओं को शायद मुर्गा बना देगी.

दलदल के लिए दलील

■ जुर्म जब तक साबित न हो जाए, किसी को भी अपराधी नहीं कहा जा सकता. लगता है जनता दल इसी सिद्धांत पर चल रहा है. कई असामाजिक तत्वों को पार्टी उम्मीदवार बनाए जाने के निर्णय को सही ठहराने में दल की दलील है कि जब तक सुप्रीम कोर्ट फैसला न सुना दे, तब तक किसी को अपराधी नहीं कहा जा सकता. इसलिए जब एक पार्टी उम्मीदवार दिलीप सिंह को नामांकन पत्र भरने के दिन ही जमानत पर रिहा कर दिया गया तो बिहार जनता दल के प्रधान महासचिव नीतीश कुमार ने अपनी राय यूं जाहिर की, "अगर जयप्रकाश नारायण चंबल के दुर्दांत डकैतों को

Pa
G
pr
Comm
quali
LEMAS
Bangalo
233562/
E44/13,
Mahara
Sector 2
Bani Pa
Kanpur

BPL-INDIA

Service

Pay for two check-ups. Get a full year's protection.

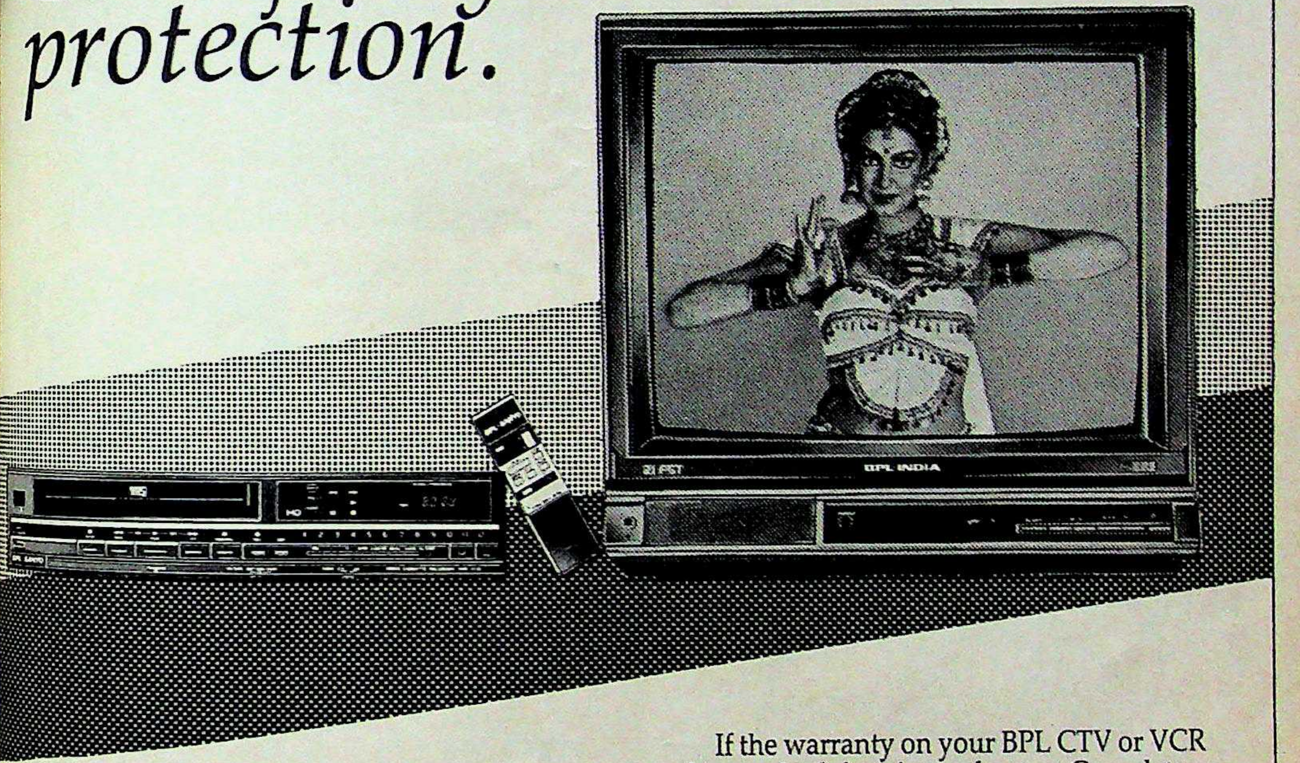

If the warranty on your BPL CTV or VCR has expired, here's good news. Complete Service Commitment - an annual service contract that protects your equipment for one full year. And it costs only Rs.275* for CTVs and Rs.350* for VCRs. Which, you'll admit, costs less than two routine check-ups.

Complete Service Commitment - nothing else is better for your system. Or easier on your pocket.

Contact the nearest service centre or write for details.

* *Sales Tax extra as applicable.*

Committed to giving you quality service - quickly

LEMAS

LEMAS HOUSE, No. 110, Lalbagh Road
Bangalore - 560 027. Ph: 233515/233527
233562/233563 Telex: 0845 8802

E44/13, Okhla Industrial Area II, **New Delhi-20**, Ph: 6846573/636000/6846574/6841954. 282 Zone II, Maharanapratap Nagar, **Bhopal-11**, Ph: 64296. Plot No.A-11, Ratlam Kothi, **Indore-2**, Ph: 30755. SCO 2463/64, Sector 22-C, Near Chandigarh Hotel, **Chandigarh-22.** C/o BPL India Limited, Plot No. D/104-III, Meera Marg, Bani Park, **Jaipur-1**, Ph: 69984. C/o BPL India Limited, 13/386, (3) Civil Lines (Behind Green Park Stadium) **Kanpur-1**, Ph: 210505.

R K SWAMY/LEMAS/4780

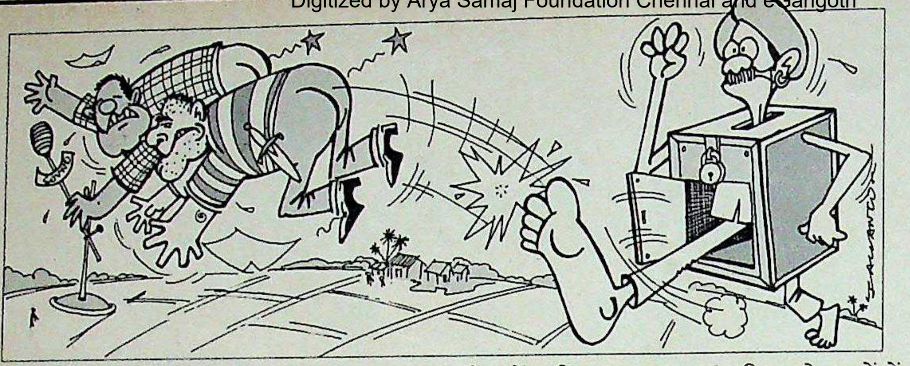

सही राह पर ला सकते थे तो जनता दल इस बात की क्यों नहीं कोशिश करे कि अपराधी जीवन व्यतीत कर चुके लोगों में सुधार हो? शायद वे भी सुधर गए हों."

दलील को आगे जारी रखते हुए उन्होंने कहा, "वास्तविकता तो यह है कि मोकामा विधानसभा सीट से दिलीप सिंह को खड़ा करने से इलाके में शांति स्थापना के प्रयासों को बल मिलेगा."

लेकिन अगर दिलीप सिंह के पार्टी सहकर्मियों की बातों पर ध्यान दिया जाए तो यह बात संभव नही लगती. उनके अनुसार दिलीप सिह के लोगों ने उस मजिस्ट्रेट का ही अपहरण कर लिया जो उनके मामले की सुनवाई कर रहा था.

उधर, दिल्ली का जनता दल आलाकमान इन घटनाओं से खासा परेशान हो गया. पार्टी प्रवक्ता यशवत सिन्हा के शब्दों में, "दल के केंद्रीय संसदीय बोर्ड को कई उम्मीदवारों के अपराधी अतीत की जानकारी नहीं थी. यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि राज्य संसदीय बोर्ड ने हमें सचाई नहीं बताई." और प्रधानमंत्री वी.पी. सिंह ने घोषणा की कि "अगर जनता दल ने गलती की है तो लोग सही व्यक्ति को चुनकर उस गलती को सुधार देंगे." यानी फैसला फिर जनता के हाथों में है.

राजस्थान

सभी कार्टून: अजीत नैनन

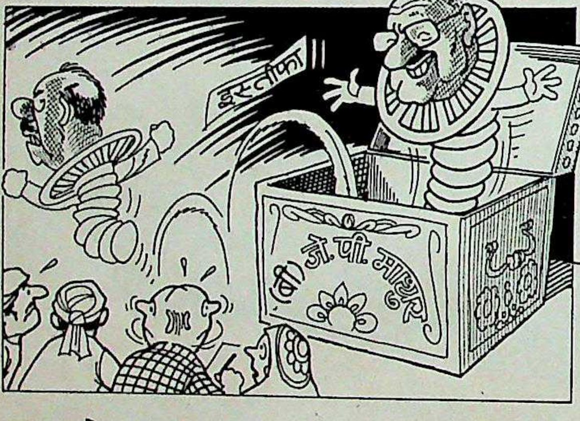

डबल रोल का चक्कर

■ डबल रोल सिर्फ बंबइया हिंदी फिल्मों की ही बपौती नहीं है. रूखी राजनीति में भी असल डबल रोल की मनोरंजक माया देखने को मिल सकती है. राजस्थान में ऐसा ही एक मामला हुआ. शुरुआत अखबारों में छपी इस खबर से हुई कि राजस्थान के वरिष्ठ भाजपा नेता जे.पी. माथुर ने विधानसभा चुनाव में टिकटों के बंटवारे के विरोध में इस्तीफा दे दिया है. खबर छपते ही पार्टी के राष्ट्रीय सचिव जे.पी. माथुर के पास टेलीफोनों का तांता लग गया.

लेकिन पत्रकार तब और हैरान हुए जब उन्हें पता लगा कि इस्तीफा राष्ट्रीय सचिव जे.पी. माथुर ने नहीं बल्कि राजस्थान के नेता जे.पी. माथुर ने दिया है. राष्ट्रीय सचिव तो उत्तर प्रदेश के हैं. राष्ट्रीय सचिव ने भ्रमित पत्रकारों को यह कहकर और भरमा दिया कि "अब आप लिख सकते हैं कि जे.पी. माथुर ने जे.पी. माथुर से अनुरोध किया है कि वे भाजपा से इस्तीफा न दें."

अधिकृत और बागी

■ राजस्थान में जनता दल और भाजपा में बड़ी जद्दोजहद से सीटों का तालमेल हुआ. लेकिन असल में जो उम्मीदवार खड़े हुए वे या तो 'अधिकृत' करार दिए गए या 'बागी' कहलाए.

जनता दल के 'अधिकृत' उम्मीदवारों को भाजपा 'अनधिकृत' मान रही थी और भाजपा जनता दल के उम्मीदवारों को. ऐसे में लोगों ने अपने प्रत्याशी खड़े कर दिए. इन निर्दलीय उम्मीदवारों में से कुछ तो इतने लोकप्रिय थे कि पार्टी के कार्यकर्ता उन्हीं का प्रचार करने लगे. नसीराबाद में जनता दल और भाजपा के कार्यकर्ता निर्दलीय उम्मीदवार के प्रचार में जुटे थे. और केखरी में जद और इंका दोनों दलों के कार्यकर्ताओं ने मिलकर निर्दलीय उम्मीदवार के समर्थन में जुलूस निकाला.

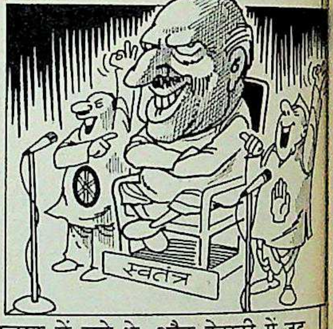

राजसी भूल

■ इसे राजसी भूल ही कहेंगे. जयपुर की पूर्व राजमाता महारानी गायत्री देवी राजस्थान के सांगानेर विधानसभा क्षेत्र के बागरू कस्बे की एक मस्जिद में जनसभा को संबोधित करने गई तो मनोरंजक उलझन में फंस गई.

हुआ यह कि निर्दलीय उम्मीदवार जीतेंद्र पाल सिंह के लिए प्रचार कर रही राजमाता गलती से इंका उम्मीदवार इंदिरा मायाराम की सभा में चली आई. और इस गलती का एहसास उन्हें मंच पर पहुंचने के बाद ही हुआ. लेकिन राजसी गरिमा निबाहते हुए गायत्री देवी उस चकराई भीड़ को संबोधित करती रही.

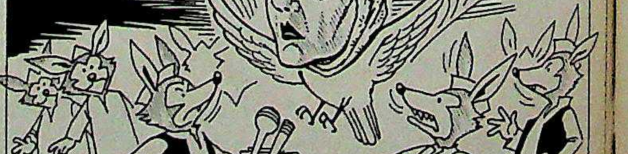

भगवान न करे
कभी ऐसा हो...

... मगर हुआ तो...

युनाइटेड इंडिया की
शॉप कीपर पॉलिसी...
एहतियात के लिए.

ज़ाहिर है, आप यह तो नहीं सोचेंगे कि दूसरे दिन आपकी दुकान का ताला टूटा हुआ मिले और यह भी नहीं चाहेंगे कि शहर के दूसरे कोने में हो रहा दंगा-फ़साद आपकी दुकान तक पहुँचे. लेकिन होनी को कोई टाल सका है?

ठीक है, क़िस्मत को बदलना किसीके बस में नहीं, लेकिन इस अनहोनी का सामना किया जा सकता है युनाइटेड इंडिया की शॉपकीपर पॉलिसी अपनाकर. इस पॉलिसी में दुकान और दुकान की सभी चीज़ें शामिल हैं, आग, बाढ़, बिजली गिरने, भूकंप, विस्फोट, दंगे, हड़ताल, डाका, कर्मचारियों द्वारा धोखाधड़ी और अन्य आकस्मिक कारणों से हुआ नुकसान. साथ ही मकान, सामान, (लेन-देन या तिजोरी/कैश बॉक्स के), पैसे, बेचने लायक सामान, साज़ो-सामान, प्लेट ग्लास और ग्लो साइन-सभी. इस पॉलिसी के तहत् व्यक्तिगत दुर्घटना और तृतीय पक्ष का उत्तरदायित्व भी सम्मिलित है.

बीमा कराने का बहुत सीधा-सरल तरीक़ा है. युनाइटेड इंडिया की देशभर में 1000 शाखाएँ हैं. निकटतम केंद्र से संपर्क करें, आपको ख़ुद ही पता चल जाएगा कि कितना आसान है हमारे द्वारा बीमा करवाना. तो अब दुर्घटना होने का इंतज़ार न करें. आज ही युनाइटेड इंडिया से बीमा करवाएँ... एहतियात के लिए.

युनाइटेड इंडिया इंश्योरन्स कंपनी लिमिटेड

(जनरल इंश्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहयोगी संस्था.)
24, वाइट्स रोड, मद्रास-600 014.

LINTAS M UI 4 2517 HI

UNITED INDIA ★ WE CARE ★

हिमाचल प्रदेश

सभी कार्टून: जयंतो

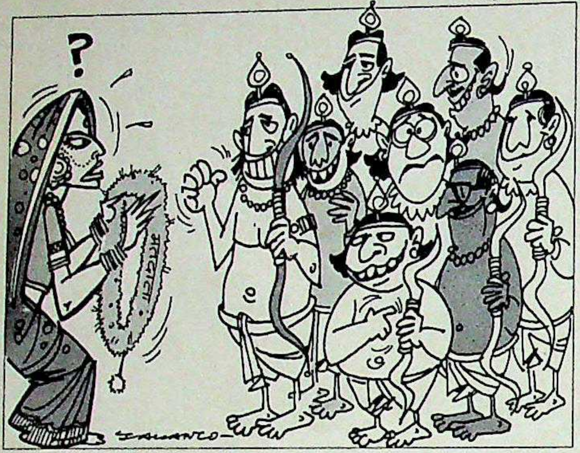

राम नहीं, राधा

■ यदि काम नाम से ही हो जाता हो तो हिमाचल प्रदेश में रामराज्य आ चुका होता. यहां विधानसभा की 68 सीटों में से 50 पर राम नाम के 90 उम्मीदवार चुनाव लड़ रहे हैं. इनमें से तीन रामलाल हैं, दो-दो रामरतन, रामरख, रामनाथ, रामचंद्र और एक-एक राम प्रताप, रामदास, रामानंद और रामकृष्ण. एक महिला उम्मीदवार हैं जो एक साथ तीन निर्वाचन क्षेत्रों से चुनाव लड़ने वाली राज्य की पहली महिला बन गई हैं. संयोग से उनके नाम के साथ भी धार्मिक नाम जुड़ा है. उनका नाम है—राधा रानी.

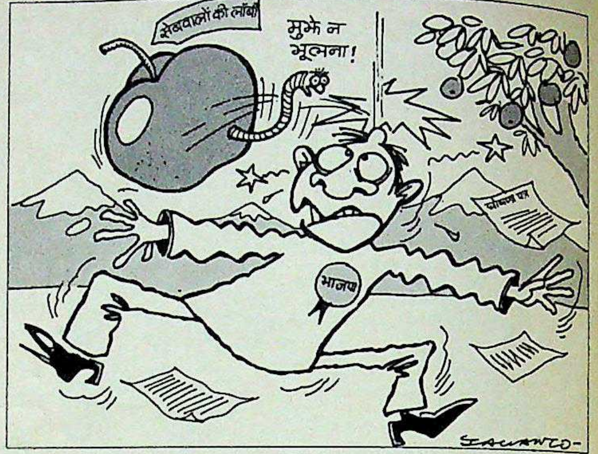

सेब पर सवा सेब

■ हिमाचल प्रदेश में सेब बन गया है अहम चुनावी मुद्दा. यहां सेब उत्पादकों की लॉबी इतनी ताकतवर है कि हर पार्टी उसे आश्वस्त करने के लिए सिर के बल नजर आई. मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह ने तो उन्हें सावधान किया कि भाजपा सत्ता में आई तो सेबों को अहमियत नहीं देगी, जबकि भाजपा के शांता कुमार का दावा है कि वीरभद्र ने ही सेबों की घोर उपेक्षा की है. जनता दल के रामलाल ने तो इस मामले में सब्जी को भी शुमार कर लिया है. उनका आरोप है कि इंका सरकार ने सैकड़ों टन आलू भी सड़ा दिए.

मणिपुर

अस्थिरता की ओर

मणिपुर विधानसभा की 60 सीटों के लिए चुनाव और फिर मंत्रिमंडल गठन के लिए चले 12 दिनों के राजनैतिक नाटक ने सारे रंग दिखा दिए. बहुमत के बावजूद विपक्षी मोर्चा टूटते-टूटते बना. आखिर मणिपुर पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष राजकुमार रणबीर सिंह के नेतृत्व में राज्य की पहली गैर-इंका सरकार ने काम संभाला.

इस सियासी घमासान में लोगों की हिंसा भी शामिल हो गई. जब मतगणना केंद्र पर जुटी भीड़ को अंदेशा हुआ कि इंका गड़बड़ करा रही है तो लोगों ने 23 विधानसभा क्षेत्रों के मतपत्र जला डाले. इनमें 12 ऐसे क्षेत्र भी शामिल थे जिनकी गिनती नहीं हुई थी.

और जब इन 12 क्षेत्रों और चुनाव स्थगित रहने वाले दो क्षेत्रों को छोड़कर 46 स्थानों के परिणाम घोषित हुए तो इंका और विपक्षी मोर्चे को 23-23 स्थान मिले थे. विपक्षी मोर्चे में मणिपुर पीपुल्स पार्टी, जनता दल, कांग्रेस (स), भाकपा, माकपा, कुकी नेशनल असेंबली और नेशनल पीपुल्स पार्टी शामिल हैं. दोनों पक्षों ने सरकार बनाने के दावे किए.

राज्यपाल चिंतामणि पाणिग्रही ने इंका विधायकों की सूची मांगी तो पार्टी पर्यवेक्षक राजेश पायलट ने इसे 'लोकतंत्र का अपमान' करार दिया. 12 विधानसभा क्षेत्रों में दोबारा पड़े मतों से निकले परिणामों ने ही इस विवाद को सुलझाया. इनमें इंका को मात्र तीन स्थान मिले जबकि विपक्षी गठबंधन को नौ. पर जनता दल और मणिपुर पीपुल्स पार्टी दोनों को ही दस-दस स्थान मिले और मुख्यमंत्री पद की लड़ाई शुरू हो गई. आखिर में जनता दल की ओर से मुख्यमंत्री पद के दावेदार अमुतोंबी सिंह को उपमुख्यमंत्री पद से ही संतुष्ट होना पड़ा.

इंका को उम्मीद है कि वह गठबंधन में कांग्रेस (स) के छह में से कुछ विधायकों को तोड़ने में सफल रहेगी. उधर, जिन क्षेत्रों में दोबारा मतदान हुआ था, वहां के अनेक हारे हुए उम्मीदवार अब अदालतों का दरवाजा खटखटाने की धमकी दे रहे हैं. इसके मद्देनजर मणिपुर में राजनैतिक स्थिरता अभी दूर की चीज नजर आती है.

—फरजंद अहमद, इंफाल में

इंफाल के उपायुक्त दफ्तर में तोड़-फोड़

पीटीआई

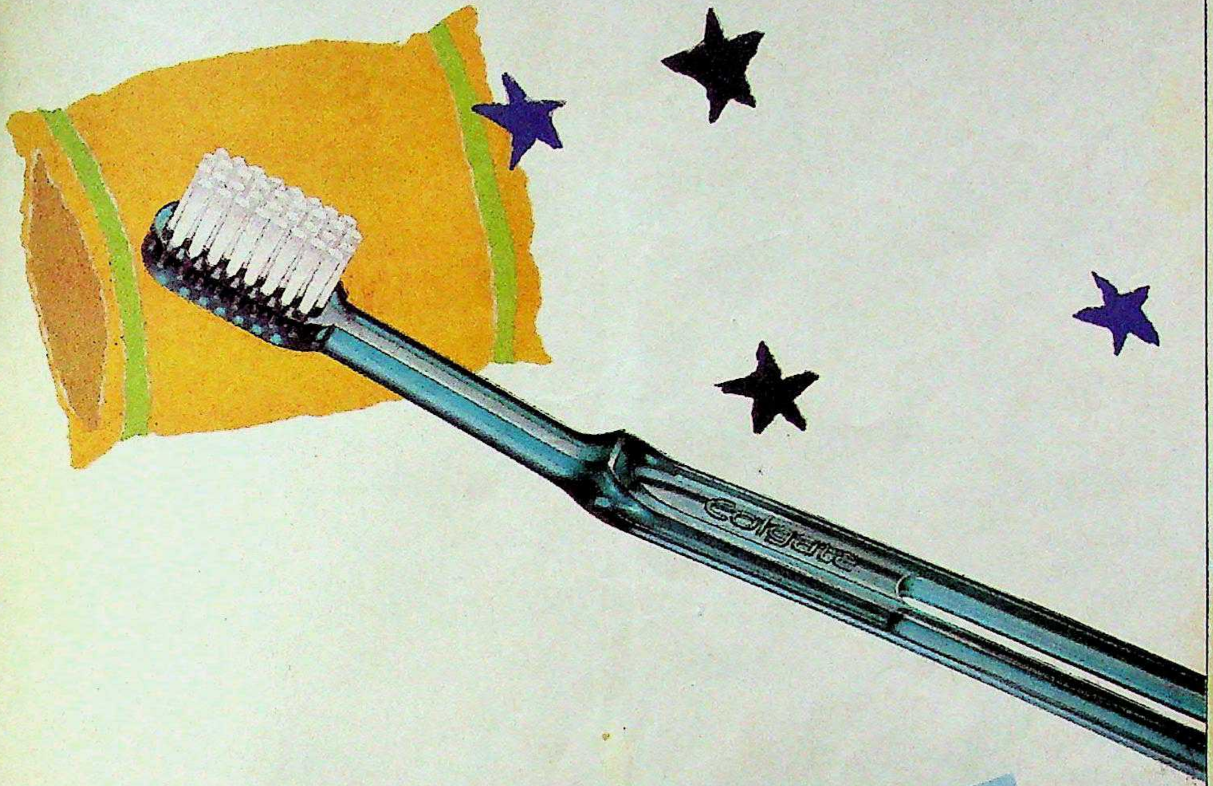

मुबारक हसीन सपने!

कोलगेट फ़ॉर्वर्ड एंगल हर रात आपकी मुस्कान में नई चमक डाल देता है. क्योंकि इसकी बनावट ही कुछ ऐसी है कि ये आपके दांतों के कोने-कोने की सफ़ाई कर डालता है. आगे का सिरा छोटा, किन्तु घना. जो आराम से मुंह में कहीं भी पहुंच जाए. और ब्रिसल इतने बेहतरीन कि ये न सिर्फ़ आपके दांतों और मसूढ़ों का ख्याल रखें, बल्कि लम्बे समय तक भी चलें.

कोलगेट फ़ॉर्वर्ड एंगल. रातों को भी दांतों को यूं चमकाए कि सपने मुस्कुरा उठें!

नया कोलगेट फ़ॉर्वर्ड एंगल
दांतों के कोने-कोने तक पहुंचे

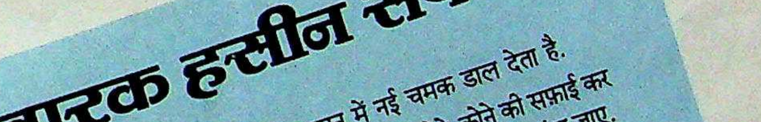
FORWARD ANGLE
Colgate
TOOTHBRUSH

Rediffusion/CP/7853C HN

■ बुखारेस्ट में ऐसे राष्ट्रध्वज लहराते प्रदर्शनकारी जिनमें से कम्युनिस्ट प्रतीक चिन्ह काट दिया गया है: समय की कसौटी पर

कसौटी प रती विचारधारा का विरोध

नक्शा बी.के. शर्मा

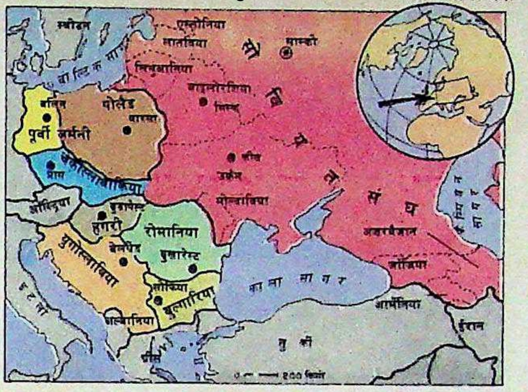
स्वीडन
एस्तोनिया
लातविया
मास्को
लिथुआनिया
बाल्टिक सागर
बाइलोरूसिया
मिन्स्क
बर्लिन
पोलैंड
वारसा
पूर्वी जर्मनी
चेकोस्लोवाकिया
प्राग
कीव
उक्रेन
मोल्दाविया
सोवियत संघ
ऑस्ट्रिया
बुडापेस्ट
हंगरी
रोमानिया
बेलग्रेड
बुखारेस्ट
यूगोस्लाविया
सोफिया
बुल्गारिया
अल्बानिया
काला सागर
जॉर्जिया
अजरबैजान
आर्मीनिया
ईरान
तुर्की
ग्रीस
इटली
200 किलो

पूर्वी यूरोप

बदलाव का बवंडर

शर्मेत्येवो अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से पश्चिम की ओर ब्रांदेनबर्ग गेट तक की यात्रा करना मानो बदलाव के झंझावात से गुजरना है. क्रेमलिन से उठी तूफानी लहरों ने यूरोप में कम्युनिस्ट साम्राज्य की चूलें हिला दी हैं, सरकारों और विचारधाराओं को लील लिया है और उन दीवारों को तोड़ दिया जिन्होंने कभी विश्व को विभाजित कर रखा था.

बीते दिनों की यादें आज भी झकझोर डालती हैं. गोश्त से लेकर गर्भनिरोधक तक; शीशे से लेकर सुरा तक और दवा से लेकर जेवरात तक हर चीज के लिए लगी लंबी कतारें. ये अक्स हैं लालच, अभाव और हताशा के. भूख, कुपोषण और दरिद्रता के नहीं, जिसके लिए एक आम भारतीय अभिशप्त है. ये उन चीजों के लिए अदम्य भूख के भी अक्स हैं जो विकसित समाज को स्वतः उपलब्ध हैं. बढ़िया किस्म की सिगरेट, चाय और कॉफी, शराब, पर्याप्त गोश्त, भरोसेमंद दवाएं, परिवर्तनीय मुद्रा आदि ऐसी ही चीजें हैं. भारतीय समाज तो सदियों से गरीबी भोगता आया है. लेकिन पूर्वी खेमे के देशों को अब एहसास हो रहा है कि वे पश्चिमी खेमे के देशों की तुलना में कितने गरीब हैं. इस एहसास से उपजी हताशा के बावजूद वहां लोकतांत्रिक शुद्धीकरण का यज्ञ भी जारी है.

कोई भी पराजय आसानी से गले नहीं उतरती, कम-से-कम वैचारिक मामले में तो कतई नहीं. इसलिए ताज्जुब नहीं कि सोवियत संघ के कट्टर साम्यवादी अपनी वैचारिक पराजय को पचा नहीं पा रहे हैं. वे अभी भी पूछते हैं, "क्या पूंजीवादी मृग-मरीचिका के लिए ही हमने क्रांति में और फासीवाद के खिलाफ लड़ाई में 3 करोड़ लोगों की कुरबानी

दी?" (पूर्वी खेमे में सोवियत संघ ही एकमात्र ऐसा देश है जहां साम्यवाद की देशभक्तिपूर्ण और भावनात्मक जड़ें हैं). लेकिन अभावों, लोगों के गिरते स्वास्थ्य, अक्षमता और रंगीन कागज के मुड़े-तुड़े टुकड़ों जैसे दिखने वाले नोटों पर एक नजर डालने से सभी शंकाएं मिट जाती हैं.

अब जो हासिल है वह है कभी पश्चाताप का भाव, तो कभी आशावादिता और आस्था का भाव. लोकतंत्र का ज्वार बढ़ता ही जा रहा है और बहुत से लोग नई क्रांति का आनंदोत्सव मना रहे हैं. वे कहते हैं, "साम्यवाद एक दु:स्वप्न था. भगवान का लाख-लाख शुक्र कि अब यह दौर खत्म हो गया है." दूसरे कई लोगों का कहना है कि यह विचारधारा इतिहास की एक निश्चित अवधि तक ही सही थी जो अंततः पुरानी पड़ गई. लेकिन मुट्ठी भर लोगों का दावा है कि यही विचारधारा दुनिया का भविष्य है.

सोवियत संघ

मास्को की 'गुनगुनी' ठंडी दोपहर में जब तापमान 19 डिग्री सेल्शियस तक पहुंच जाता है तो टैक्सी ढूंढ़ना मशक्कत का काम होता है. मैं अपने ठंडाए हुए हाथ से बार-बार आती-जाती टैक्सियों को रुकने का इशारा कर रहा था और फिर तुरंत ही हाथ अपनी जेब में डाल लेता था. तभी एक बस ड्राइवर ने इशारे से पूछा, "आप कहां जाना चाहते हैं?"

मैंने कहा, "तास ऑफिस. पर मुझे टैक्सी चाहिए."

उसने इशारे से कहा, "अंदर आ जाओ," और फिर हथेली फैला दी, "पांच रूबल."

मैं उलझ पड़ा, "पर बस का किराया तो पांच कोपेक है."

वह गुस्से में बोला, "तुम्हें जाना है कि नहीं."

समय की कमी थी. सो, मैं चढ़ लिया. उसने मुझे मंजिल पर पहुंचा दिया.

उसने कहा, "मैं इंतजार करता हूं."

मैंने कहा, "नहीं, पसेबा (शुक्रिया)." मुझे उन लोगों की बद्दुआओं की फिक्र पड़ी हुई थी जिन्हें दफ्तरों की छुट्टी के समय उसे घर पहुंचाना होगा. ड्राइवर को कोई परवाह नहीं थी. जब तक बस सरकारी संपत्ति है तब तक लोगों को भुगतना पड़े तो वह उनका सिरदर्द.

उसी शाम रेस्तरां के बेयरे ने मुझे बिल देने से इनकार कर दिया.

■ मास्को न्यूज के दफ्तर में अखबार का इंतजार करती भीड़: खबरों की ख्वाहिश

ЕННАЯ РЕДАКЦИЯ ГАЗЕТ · МОСКОВСКИ
LES NOUVELLES DE MOSCOU
NOVEDADES DE MOSCU
МОСКОВСКИ

कहा, "पर मुझे बिल तो चाहिए." उसने एक सादा कागज दिखाया जिस पर डॉलर लिखा था. वह बोला, "आपका इतना है. मुझे बस 30 डॉलर दीजिए चलते बनिए."

अगले दिन एक राजनयिक ने मुझे सम- ा कि यह कोई नई या असामान्य बात "उन्होंने पुरानी व्यवस्था खत्म कर दी उसकी जगह नई व्यवस्था कायम नहीं हो सब कुछ रामभरोसे चल रहा है." उसने सोवियत में किए गए एक रहस्योद्- न का उल्लेख किया. व्यापार में लगी एक कारी संस्था टी-82 टैंकों की एक पूरी ाइन (यानी 16 टैंक) बाल्टिक बंदरगाह एक संदिग्ध फ्रांसीसी खरीदार को भेजते ी गई. ये टैंक जिस फैक्टरी में बने, वह से 3,000 किमी दूर है. "उन्होंने री मैनेजरों, सेना, रेलवे, सीमा शुल्क ों, पुलिस और खुफिया एजेंसियों सभी को त खिलाई. इससे क्या जाहिर होता है." इससे सिर्फ यही जाहिर होता है कि कभी विचारधारा के रूप में जो व्यवस्था म की गई थी वह अब पिघलने लगी है.

नतीजतन, सरासर उन्मुक्त समाज उभर आया है. वर्षों से उन्हें जो चीजें नहीं दी उनको पाने के लिए वे जैसे बौरा गए हैं. ोक्ता सामान की उनकी भूख इस कदर चुकी है कि इसके लिए वे भीख मांगते हैं, ार लेते हैं या रिश्वत वसूलते हैं.

बेशक, इस बदलाव में ताजगी के झोंके भी लासिद नगीना मेट्रो स्टेशन के प्रवेश द्वार गार्गी शाखनाज़ारोव जब यह बताने के खड़े होते हैं कि लिथुआनिया को वियत संघ से अलग क्यों होना चाहिए तो उन्हें सुनने के लिए पुलिसवालों समेत काफी भीड़ इकट्ठी हो जाती है. अगर नई दिल्ली में कोई खालिस्तानी यह करे तो कुछ साल के लिए उसका जेल जाना तय है. संभव है उस पर मुकदमा भी नहीं चलाया जाए. इसी नई आजादी का कमाल है कि लोग अब बड़े आराम से विदेशी पत्रकारों से बात कर लेते हैं. जैसे राजनीतिशास्त्र के एक प्रोफेसर ने मुझसे बात करने के लिए मुझे रात के खाने का निमंत्रण तक दे डाला.

मास्को शहर के बीचोबीच क्रास्नाया प्रेसन्या यानी लाल सड़क पर बना दिल्ली रेस्तरां किसी परिचित को दावत पर बुलाने के लिए सबसे अच्छी जगह है. भारतीय पर्यटन विकास निगम (आईटीडीसी) द्वारा चलाया जा रहा यह रेस्तरां सोवियत संघ में

जेवरात के लिए लगी कतारें: बहुतायत के बीच दरिद्रता

विरोध के चितेरे

चित्रकार ब्लादिमीर काश्चिरीन सोवियत व्यवस्था के प्रति अपने विरोध के चित्र गुप्त रूप से बनाते रहे. अब उनके चित्र मास्को की अरबत स्ट्रीट पर खुलेआम बिकते हैं

> **"असफल भी हो गए गोर्बाचेव तो यह शानदार असफलता होगी. मैं तो चाहता हूं कि वे अपना काम जारी रखें. आज मुझे चित्रों को छुपाने की जरूरत नहीं है. आज मैं कह सकता हूं कि ईसा में मेरी आस्था है. अब वे दिन लौटने वाले नहीं"**

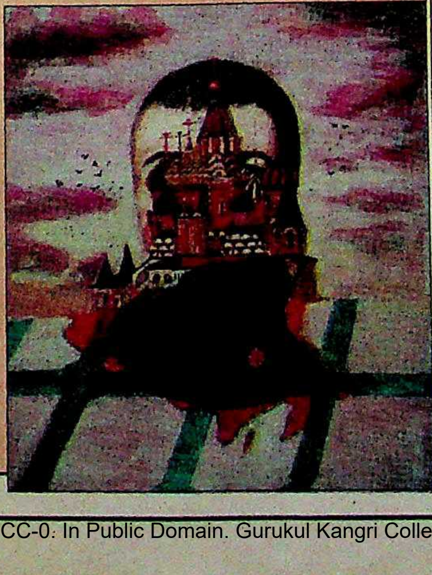

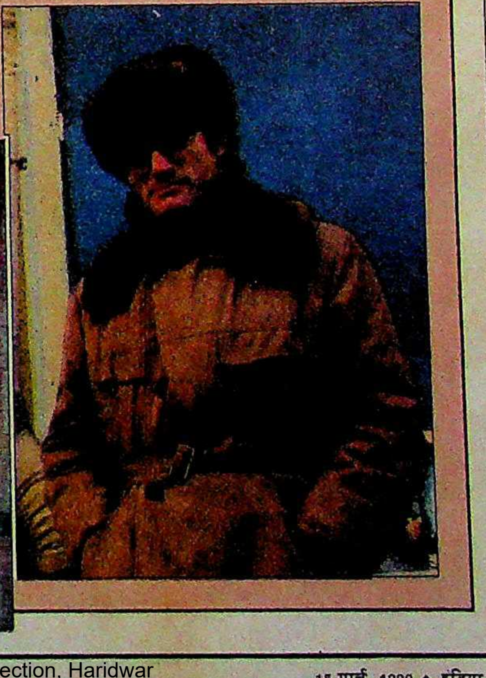

मास्को के बीचोबीच मैक्डोनल्ड की दुकानः पूंजीवाद का प्रतीक

अपनी तरह का पहला संयुक्त उद्यम है, और भविष्य के लिए एक अच्छी मिसाल भी.

सोवियत संघ जैसे देश की अर्थव्यवस्था के बंधनों को ढीला करने से क्या-क्या समस्याएं उठ सकती हैं, यह रेस्तरां इसका अच्छा उदाहरण पेश करता है. प्रबंधकों ने रेस्तरां को दो भागों में बांट दिया है. एक भाग सोवियत नागरिकों के लिए है जहां रूबल से खरीदारी की जा सकती है. दूसरा भाग विदेशियों (जिनमें भारतीय भी शामिल हैं) के लिए है जहां डॉलर चलता है. लेकिन मास्को में रहने वाले भारतीयों की पहुंच के बाहर है यह रेस्तरां, क्योंकि सोवियत संस्थानों में काम करने वाले कई भारतीयों को वेतन रूबल में मिलता है.

हिंदुस्तानी समाज ने रेस्तरां के इस विभाजन का विरोध किया. विरोध के बाद प्रबंधक थोड़े नरम पड़े. और अब बेयरे भी मदद को आतुर और संवेदना से भरे दिखते हैं. बगल की टेबल पर रखे हरे सलाद को ललचाई नजरों से देखते हुए मैंने जब अपने लिए भी एक प्लेट सलाद लाने के लिए कहा तो बेयरे ने आहिस्ता से बताया, "सलाद नौ डॉलर का है. हमारे लोगों को हरी सब्जी वगैरह भारत से विमान द्वारा मंगानी जो पड़ती है."

डॉलर की खरीद क्षमता काफी अधिक है. इसका एक कारण है तीन तरह की मुद्रा विनिमय दरों का होना. मिसाल के तौर पर, होटल का बिल देते समय मैंने असहायता के साथ देखा कि एक डॉलर की कीमत 60 कोपेक (एक रूबल के लिए मात्र 29 रु.) लगाई जा रही थी. लेकिन किसी भी बैंक में कोई विदेशी अपने डॉलर के बदले इसकी 1 गुना अधिक रकम ले सकता है. डॉलर की खरीद क्षमता की तुलना केवल मार्लबोरो सिगरेट से की जा सकती है. उपहार के तौर पर मार्लबोरो सिगरेट वह काम कर सकती है जो रूबल की गड्डी भी नहीं कर सकती.

मास्को के इमाम-खातिब

कजान के 34 वर्षीय सौम्य तातार राविल गैनुत्दीन मास्को के मुसलमानों के धर्मगुरु हैं. हालांकि कानून अभी इजाजत नहीं देता मगर वे यहां जामा मस्जिद में शहर का पहला मदरसा चलाते हैं. वे अजरबैजान में मारे गए लोगों की आत्मा की शांति के लिए अल्ला से दुआएं मांगते हैं.

"अब पेरेस्त्रोइका के बाद हम वर्षों से सोई आस्था को जगा सकते हैं. अब बच्चे भी मस्जिद जा रहे हैं. इस्लाम रूसी कट्टरपंथी चर्च से पीछे नहीं रहेगा"

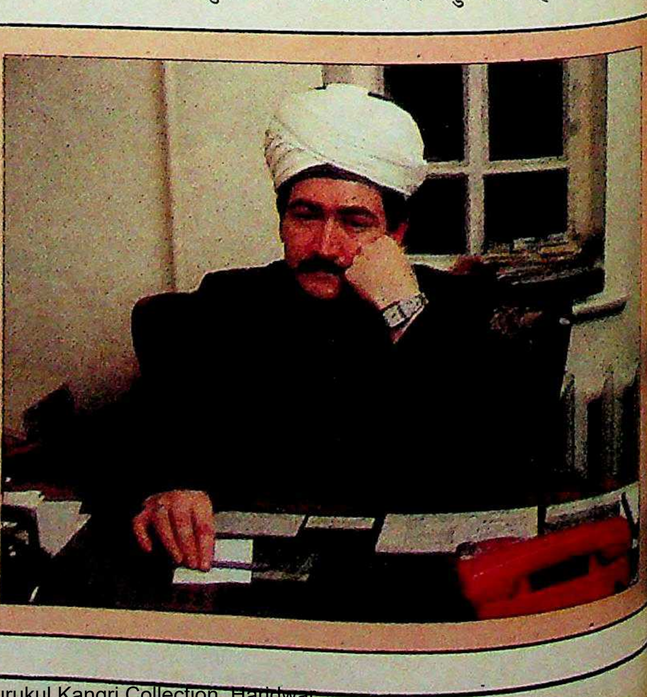

परंतु इतिहास ने अंततः एक बाधा को पार कर ही लिया. आज वह दीवार दोनों जर्मनियों को जित करने वाली रेखा पर टुकड़े-टुकड़े पड़ी है. चालीस वर्षों तक दुनिया को और पश्चिमी खेमे में बांटने वाली वह दीवार अब विचित्र छोटी-मोटी वस्तुओं आकार लेती जा रही है. मसलन इसके अब पेपरवेट, नामपट, ऐशट्रे या लख-ों के कैक्टस के बगीचों की शोभा की बनते जा रहे हैं. आज यह सैर-सपाटे की बन गई है.

र्ट श्मिट आज भी बमुश्किल विश्वास ते हैं कि उस दीवार को पार कर पाना आसान हो गया है जिसकी रखवाली ल्दी सुरंगें, इलेक्ट्रॉनिक यंत्र, अचूक नेबाज और खूंखार शिकारी कुत्ते लगे थे. अब वे सीमा प्रहरियों के आगे अपना पासपोर्ट लहराते हुए सीमा पार चले जाते हैं. लेकिन अभी भी उन्हें भरोसा नहीं हो पाता कि यह सब कितने दिन चलेगा.

पूर्वी यूरोप के समृद्ध देशों के लोग पूंजीवाद का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे हैं. अगर पूर्वी जर्मनी से बाहर जाने की रफ्तार यही रही तो तीन दशकों के बाद इस देश की जनसंख्या शायद शून्य हो जाएगी. लेकिन उसके पहले जर्मनी एक हो जाएगा और फिर वह अर्थ से लेकर खेलों तक के मामलों में एक महाशक्ति के रूप में उभर आएगा. और, जर्मन लोग चाहें तो यह एक बड़ी सैनिक ताकत भी बन सकता है. जर्मनी की एकता के लिए साम्यवाद और पूंजीवाद की दो भिन्न व्यवस्थाओं में तालमेल की संभावना पर अब कोई प्रश्न नहीं उठाया जाता.

दूसरी तरफ पश्चिम जर्मनी के लोगों का भी विजय की अनुभूति के साथ कुछ कड़वी सचाइयों से पाला पड़ रहा है. पूर्वी जर्मनी अपने साथ 20 अरब डॉलर का विदेशी कर्ज लाएगा. इसके अलावा वह पर्यावरण की समस्याएं, खस्ताहाल उद्योग और ऐसी मुद्रा भी लाएगा जिसकी अब बदली हुई दुनिया में प्रासंगिकता नहीं रही. कुछ लोग तो अभी से विरोध करने लगे हैं. पश्चिम बर्लिन में अपराधों के बढ़ने का दोष पूरब के गरीब भाइयों के मत्थे डाल दिया जाता है और वहां मजदूरी की दर घटने के लिए भी पूरब से सस्ते में मिलने वाले श्रमिकों को ही दोषी समझा जाता है. लेकिन कुछ लोग स्वागत भाव भी रखते हैं. पश्चिम के दांत के डॉक्टर माइकल ड्रेक्लफ रोज सुबह टहलने के लिए ब्रांदेनबर्ग गेट के पार जाना पसंद करते हैं. मैं उनसे पूछता हूं कि पश्चिमी और पूर्वी जर्मनी के लोगों में क्या फर्क है. वे कहते हैं, ''उनके जूतों पर निगाह डालिए. अगर वे अच्छे नहीं हैं तो समझिए कि वे पूरब के हैं...''

जूते तो खैर समस्या का महज एक पहलू हैं. असली परेशानी तो वेतन, कार, बेमेल शादियां हैं. चेकोस्लावाकिया और पूर्वी

प्राग में अखबारों के लिए लगी कतारें जाहिर करती हैं कि लोग 40 वर्षों तक किस अभाव को झेलते रहे

जर्मनी सीमा पर स्टीफन मुझसे कार में साथ ले चलने का अनुरोध करता है. वह दिन में मोटर मेकेनिक का काम करता है और रात में शतरंज खेलता है. वह छह साल पुरानी अपनी महिला मित्र और साढ़े तीन साल की बेटी से मिलने आया है. वह कहता है, "हम शादी करना चाहते हैं. लेकिन पहले एक एपार्टमेंट होना जरूरी है. हम अस्थायी तौर पर कहीं रह तो सकते हैं परंतु कार के बगैर कैसे चलेगा. आपने हमारी ट्रांबांट (पूर्वी जर्मनी की दो 'स्ट्रोक' इंजन वाली कबाड़ा कार) देखी है. उसके लिए भी सात साल तक इंतजार करना पड़ेगा. या फिर काला बाजार से दोगुने दाम में खरीदा जाए. लेकिन वह उतने के लायक नहीं."

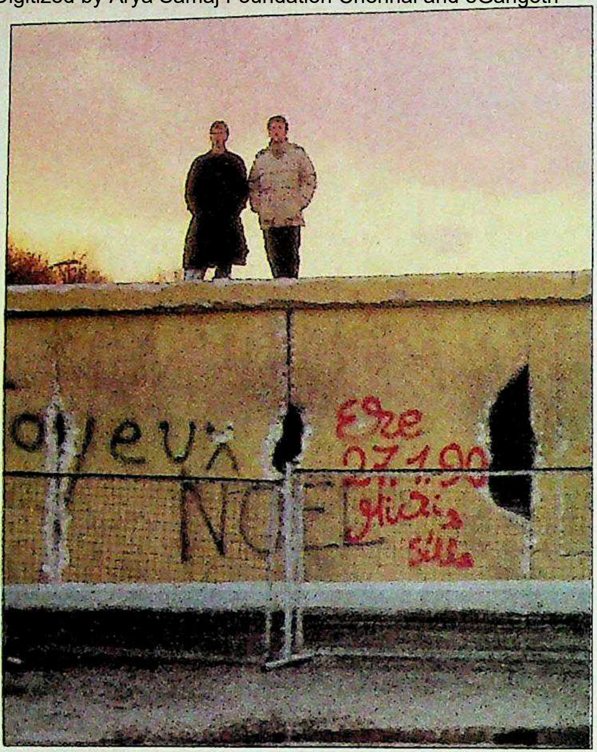

बर्लिन की दीवार अब बदलाव की प्रतीक बन गई है

समाजवाद के बारे में पूछे जाने पर वह कहता है, "इस व्यवस्था की बहुत-सी बातें अच्छी हैं. मसलन हमारे यहां बेरोजगारी नहीं है. लेकिन पश्चिम जर्मनी की ओर देखने पर, जहां बेरोजगारी भत्ता ही हमारे यहां कई लोगों के वेतन से कहीं ज्यादा है, आप इस व्यवस्था पर प्रश्न लगाने लगते हैं."

शेर्मेत्येवो से ब्रांदेनबर्ग गेट तक हमें छह भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी लोगों के इलाकों से गुजरना पड़ा. हर जगह लोगों का अतीत से मोहभंग हो रहा है. अब यह सवाल बेमानी हो चला है कि अंततः वे एक असफल या पुरानी पड़ गई व्यवस्था को अलविदा कह रहे हैं. लेकिन सबके सामने यही सवाल है कि अगर यह व्यवस्था इतनी बुरी है तो भविष्य के लिए बेहतर क्या होगा? विकल्पों में स्वीडिश व्यवस्था से लेकर भारतीय व्यवस्था तक को गिनाया जाता है. लेकिन एक व्यवस्था ऐसी है जिस पर आम सहमति है. और वह है लोकतांत्रिक व्यवस्था.

—शेखर गुप्ता, पूर्वी यूरोप में

स्लोबोजिया

विस्मृत सैनिक

प्रथम विश्वयुद्ध में ब्रिटेन की ओर से अंग्रेज सैनिक ही नहीं, लाखों भारतीय भी लड़ रहे थे. इनमें से हजारों भारतीय दूरदराज के देशों में मारे गए. परंतु रोमानिया में बुखारेस्ट से 150 किमी दूर छोटे-से शहर स्लोबोजिया के जर्मन युद्धबंदी शिविर में बेहद क्रूर परिस्थितियों में मरे 68 भारतीय सैनिकों को जिस तरह विस्मृत कर दिया गया उतना शायद किसी को नहीं भुलाया गया होगा.

जैसे ही जर्मन फौजें वहां से रवाना हुई थीं, वहां के लोगों ने इन भारतीयों के लिए अलग स्मारक बनवाया. इसे 'इंडियन वार हीरोज मेमोरियल' कहा जाता है.

अब बुखारेस्ट में हर साल भारतीय राजदूत और उनके सैनिक सलाहकार 30 जनवरी को भारतीय शहीद दिवस पर यहां श्रद्धांजलि अर्पित करने जाते हैं. उनके साथ शहर के महापौर, अन्य अधिकारी व स्थानीय सैनिक शस्त्रागार के कमांडर भी जाते हैं. रोमानियाई सैनिक अपनी बंदूकें नीची करके और बिगुल बजाकर सलामी देते हैं.

इस साल जब भारतीय राजदूत जे.एफ रिबेरो अपने सैनिक सलाहकार कर्नल कपिल विज के साथ वहां पहुंचे तो उनकी वर्दी पर भी कई तमगे चमक रहे थे. स्लोबोजिया के महापौर एड्रियन आंद्रेस्कू ने उनसे पूछा, "मान्यवर, क्या आप सेना में थे?" राजदूत का जवाब था, "नहीं, मैं पुलिस में था."

"आपका ओहदा क्या था?"

"जनरल की तरह का."

"क्या यह सेना जैसा ही नहीं है?"

रिबेरो ने अपनी पत्नी मेल्बा की ओर देखते हुए जवाब दिया, "नहीं, हमारे देश में पुलिस नागरिक सेवा के तहत है. पर मुझे अंत तक संघर्ष करते रहना पड़ा. मेल्बा और मैं घायल भी हुए थे."

ये स्मारक वैसे ही हैं जैसे कि दुनिया भर में होते हैं, इतिहास से अछूते. परंतु इन्हें एक नजर देख लेना ही किसी भी भारतीय के लिए गर्व से भर देने वाला अनभुव होता है. स्मारक पर इन वीरों के नाम लिखे हैं: चौथी गुरखा बटालियन के त्रिभान गुरंग जिन्हें जला दिया गया था, 40वीं पठान के नवाब खां और 58वीं वॉन राइफल्स के साधु सिंह हैं जिनकी समाधि पर लिखा है 'वाहे गुरु'. विमानों के आविष्कार से बहुत पहले 1916 में अलग-अलग मजहबों के भारतीय दूर किसी अजनबी देश में साथ-साथ मरे. मगर भारत में मजहबी दंगे आज भी एक बड़ी समस्या बने हुए हैं.

रोमानिया में भारतीय सैनिकों के स्मारक पर रिबेरो

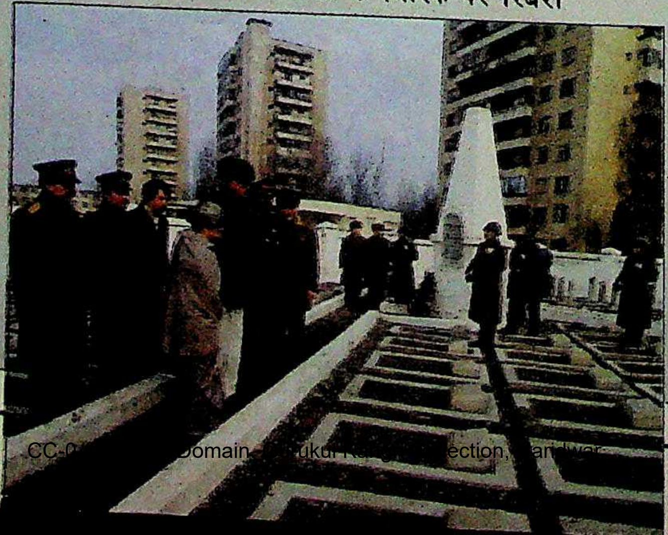

कश्मीर

पतली डोर पर चलने का करतब

जगमोहन आतंकवाद के प्रति सख्त लेकिन सियासी पहल की भी कोशिशें

इस महीने का यह पहला जुमा (शुक्रवार) था जब श्रीनगर में कर्फ्यू नहीं लगा था. फिर भी 23 फरवरी को दुकानें बंद ही रहीं. लेकिन लोग उमड़ पड़े. हवा में हाथ लहराते, उंगलियों से विजय चिह्न बनाते और हाथों में उग्रवादी संगठनों के रंगीन झंडे लिए हजारों युवक, औरतें और बच्चे सड़कों पर आ गए. वे कुरान की आयतें पढ़ रहे थे. आजादी के नारे लगा रहे थे. यह जुलूस रेजिडेंसी रोड के संभ्रांत इलाके से निकलकर संयुक्त राष्ट्रसंघ पर्यवेक्षक के कार्यालय तक गया जहां उन्होंने रायशुमारी की मांग करने वाला ज्ञापन दिया. कुछ ने तो सफेद कफन बांध रखे थे.

राज्यपाल जगमोहन उस दिन राज्य के योजना खर्च पर चर्चा के लिए दिल्ली में थे. उनके सलाहकार वेद मारवाह श्रीनगर के आसपास के इलाकों में स्कूलों और पुलों के निर्माण से संबंधित फाइलें श्रीनगर के अपने दफ्तर में निबटा रहे थे. अर्द्धसैनिक बलों के जवान शांतिपूर्वक इस जुलूस पर नजर रखे हुए थे, जो कुल मिलाकर अनुशासित था. शाम को नौकरशाहों ने प्रेस विज्ञप्ति तैयार कर दी—'जनजीवन सामान्य.'

लेकिन दिन में घटी इन घटनाओं से जो कुछ जाहिर होता है उनके पीछे भी कुछ मतलब छुपे हैं. संदेश साफ था कि एक महीने के केंद्रीय शासन, और हालात को बदतर होने से रोकने के उपायों के बाद जगमोहन अपनी दीर्घकालिक रणनीति तैयार कर रहे हैं. उन्होंने जो फार्मूला अख्तियार किया है वह अपने आप में नायाब है—शांतिपूर्ण प्रदर्शनों की इजाजत दो, भले ही उनमें लगाए जाने वाले नारे कितने भी भड़काऊ क्यों न हों, परंतु आतंकवाद के प्रति कोई रियायत न बरतो. और साथ ही यह भी कि सब कुछ कानून के मुताबिक ही करो. इसलिए अब हिंसा की हर वारदात के बाद ताबड़तोड़ छापे नहीं पड़ते या मुठभेड़ें नहीं होतीं और न ही उग्रवादियों को वैसी अहमियत दी जाती है.

जगमोहन ने इस सख्त-व-उदार नीति के साथ ही राजनैतिक पहल भी की है. पीपुल्स लीग के नेता शबीर शाह को राजनैतिक वार्ता शुरू करने के संकेत भेजे गए हैं. जेल में बंद इस महत्वपूर्ण उग्रवादी नेता ने इसके जवाब में संदेश भेजा है कि जब तक सभी उग्रवादी नेताओं को विश्वास में नहीं लिया जाता तब तक किसी वार्ता से कोई मतलब नहीं सधेगा. प्रशासकों को उम्मीद है कि विभिन्न उग्रवादी गुटों की आपसी लड़ाई के दौर के बाद उनका एक ऐसा सर्वमान्य नेतृत्व उभरेगा जो सभी गुटों का सही प्रतिनिधित्व करेगा और जिसमें मसले की जटिलता की समझ के साथ-साथ वार्ता चलाने की क्षमता भी होगी.

एक महीने तक हालात का जायजा लेने

जुलूस की अगुआई करते मातमी कपड़ों में उग्रवादी

के बाद सरकार ने यह नया रवैया अख्तियार किया है जो इस एहसास का ही नतीजा है कि राज्य में बंदूक के जोर पर शासन नहीं किया जा सकता. मामला काफी गंभीर है क्योंकि उग्रवादियों को प्रबल जनसमर्थन हासिल है. शिवरात्रि और शबे मेराज मनाने के लिए उग्रवादियों ने 'अस्थायी युद्धविराम' का आह्वान किया. और इस पर अमल किया गया. यहां तक कि जब कर्फ्यू उठा लिया गया था, उग्रवादियों की अपील पर दुकानदारों ने अपनी दुकानों को बंद रखा.

उग्रवाद की यह आंच सरकारी विभागों को भी महसूस हो रही है. श्रीनगर दूरदर्शन केंद्र के निदेशक लस्सा कौल की हत्या के बाद दूरदर्शन के सभी कर्मचारियों ने इस्तीफा दे दिया. बाद में वे इसी आश्वासन पर लौटे कि स्थानीय खबरों में कोई हेरफेर नहीं किया जाएगा. श्रीनगर हवाई अड्डे पर अब केवल दो ही स्थायी कर्मचारी हैं, बाकी प्रतिनियुक्ति पर होते हैं और हर पखवाड़े बदल दिए जाते हैं. जम्मू व कश्मीर के पुलिसवाले इसी बात को लेकर परेशान है कि उनके सिर पर सामाजिक बहिष्कार की तलवार लटक रही है. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के अनुसार, "कुछ इलाकों को छोड़ बाकी में उग्रवादियों का ही हुक्म चलता है. वह चाहे राजीखुशी से हो या दहशत से." अब तो पुलिसवालों ने यह घोषणा कर दी कि साप्ताहिक छुट्टी इतवार के बदले जुमे को हुआ करेगी.

पर सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात है न्यायिक व्यवस्था का पंगु हो जाना. उग्रवादियों की दहशत इस कदर है कि सरकारी मुकदमे लड़ने के लिए कोई महाधिवक्ता नहीं है और सरकारी वकीलों ने नौकरी छोड़ दी है. यही हाल 150 सरकारी विभागों के वकीलों और कानूनी सलाहकारों का भी है. और पिछले पखवाड़े तो खुद जम्मू व कश्मीर बार एसोसिएशन ने संयुक्त राष्ट्र-संघ से 'कश्मीर की जनता को आत्मनिर्णय का अधिकार दिलाने' के लिए हस्तक्षेप करने की अपील की. मानव अधिकारों के हनन की जांच के लिए भी एक टीम भेजने की मांग की गई.

भवान सिंह

जगमोहन प्रदर्शन की इजाजत देकर और उग्रवादियों के साथ मुठभेड़ बंद कर हिंसा पर काबू पा रहे हैं और राज्य में राजनैतिक वार्ता का रास्ता साफ कर रहे हैं

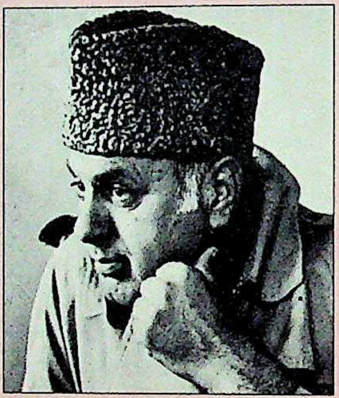

विधानसभा भंग कर दिए जाने के कारण फारूक उग्रवाद की भाषा बोलने लगे हैं. उनकी नेशनल कांफ्रेंस के एक गुट ने रायशुमारी महाज को पुनर्जीवित कर दिया है

प्रमोद पुष्करणा

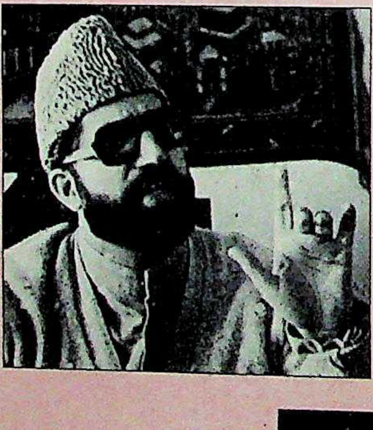

मौलवी फारूक जानते हैं कि वे उग्रवादियों को मस्जिदों का इस्तेमाल करने से नहीं रोक सकते. इसलिए वे उनके साथ राजनैतिक वार्ता के पक्ष में हैं

मेराजुद्दीन

शबीर शाह उग्रवादियों के सबसे महत्वपूर्ण राजनैतिक नेता हैं. लेकिन दूसरे संगठनों का कोई सर्वमान्य नेतृत्व न होने से वे सरकार से बातचीत नहीं कर सकते. अगर बातचीत की तो अलग-थलग पड़ जाएंगे

फारूक ने इस आग में घी डालने का ही काम किया. हालांकि उनकी पार्टी नेशनल कांफ्रेंस के शासनकाल में मानव अधिकारों के हनन के लिए कई दमनकारी कदम उठाए गए परंतु पिछले दिनों फारूक ने एक बयान में जगमोहन के शासन को 'आदमखोर' की संज्ञा दे दी. वे अपना वह बयान भूल गए कि कोई भी ताकत कश्मीर को भारत से अलग नहीं कर सकती. उन्होंने कश्मीर को 'वतन' की संज्ञा दे दी और यहां की स्थिति की अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जांच कराने की मांग कर डाली.

विधानसभा भंग होने से उनकी पार्टी का असली चेहरा भी लोगों के सामने आ गया. पूर्व मंत्री अब्दुल सलाम देवा घाटी के उन नेताओं से मिले जिन्होंने पार्टी को भंग करके रायशुमारी महाज बनाने का फैसला कर लिया. यही वह संगठन है जो 1975 से पहले 22 साल तक शेख अब्दुल्ला के नेतृत्व में आत्मनिर्णय के अधिकार के लिए संघर्ष करता रहा. उन्होंने अपनी पार्टी कार्यकर्ताओं को जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) के कार्यकर्ताओं के साथ काम करने का भी निर्देश दिया. राजनैतिक असुरक्षा के इसी भाव ने सांसद सैफुद्दीन सोज़ जैसे उदार नेताओं को भी केंद्र से यह मांग करने पर मजबूर कर दिया कि राजनैतिक

जावेद मीर

'मंजिल बस एक ही है—आजादी'

तेइस वर्षीय जावेद मीर जेकेएलएफ के खालिस नेता नजर आते हैं—नौजवान, तेजतर्रार और आत्मविश्वास इतना कि वह उनका दंभ लगता है. हालांकि उनका दावा है कि वे मुजाहिद हैं, कोई राजनीतिक नहीं पर वे आहत कश्मीरी मानस की हर बारीकी को समझते हैं. बदरंग जींस और हरी जैकेट पहने वे एक नौजवान के साथ श्रीनगर शहर में खुलेआम घूमते हैं. उनके साथ रहने वाला

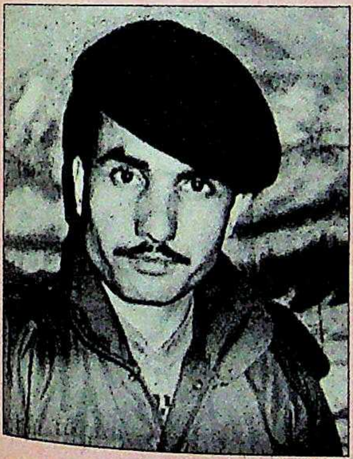

यह नौजवान है नूर मुहम्मद कलबल जो केंद्रीय गृहमंत्री की बेटी की रिहाई के बदले रिहा किया गया था. वरिष्ठ संवाददाता ***पंकज पचौरी*** *के साथ उनकी बातचीत के अंश:*

- ***क्या आप केंद्र के साथ राजनैतिक वार्ता के हक में हैं?***

नहीं. हमें आजादी के अलावा कुछ नहीं चाहिए. हम चुनाव या सीटें जीतने की कोशिश में नहीं लगे हैं. हमारी हथियारबंद जंग आजाद कश्मीर के लिए है. हम सभी मुल्कों को यह बता देना चाहते हैं कि जब तक वे कश्मीर से दोस्त मुल्क की तरह बरताव नहीं करते, तब तक कोई हल संभव नहीं.

- ***अगर सरकार बातचीत के लिए बुलाती है तो आप क्या करेंगे?***

हम सुलह जैसा कोई काम नहीं करने जा रहे. हम 40 साल से देख रहे हैं कि कश्मीर के प्रति भारत सरकार का रवैया क्या रहा है.

- ***आपको नहीं लगता कि रायशुमारी की मांग करके नेशनल कांफ्रेंस के लोग आपके कार्यकर्ताओं को तोड़ लेंगे?***

अगर अवाम उन्हें कबूल करते हैं तो हम भी उन्हें कबूल करेंगे. पर लोग उनकी असलियत जानते हैं और उन्हें कबूल नहीं करेंगे. वे पहले भी अपना उल्लू सीधा करने के लिए कश्मीर से खिलवाड़ कर चुके हैं.

- ***कुछ उग्रवादी संगठन इस्लामी राज्य की बात करते हैं जबकि कुछ दूसरे गुट धर्मनिरपेक्ष राज्य की.***

ये सब एक ही मंजिल के कई रास्ते हैं. और यह मंजिल है—भारतीय सेना को भगाना और रायशुमारी कराना.

- ***राज्य में जगमोहन के शासन पर आपकी क्या प्रतिक्रिया है?***

उन्होंने जगमोहन और अर्धसैनिक बलों को भेजकर भी आजमा लिया. यह तो सिर्फ शुरुआत थी. अब वे सेना भी भेज सकते हैं. लोगों का रुख हम देख चुके हैं. हम रोमानिया की तरह टैंकों के मुंह मोड़ सकते हैं. इसके लिए हमारे पास काफी हथियार हैं.

- ***लेकिन अगर आप पाकिस्तान से मदद लेते रहे तो इससे आपके लिए समस्या खड़ी हो जाएगी.***

पाकिस्तान सिर्फ नैतिक समर्थन दे रहा है. हथियार तो हमें आजाद कश्मीर और दुनिया के दूसरे हिस्सों में बैठे अपने भाइयों से मिल रहे हैं.

- ***पर आप लोग दूरदर्शन केंद्र के निदेशक लस्सा कौल जैसे बेगुनाह लोगों की हत्या क्यों करते हैं?***

वे जनता के साथ क्यों नहीं खड़े हुए. और उन्होंने कश्मीर की सचाई क्यों नहीं दिखाई. वे दूरदर्शन की आजादी की बात करते हैं. हर रोज वे कहते हैं कि उग्रवादी मारे गए, बंदूकें पकड़ी गईं. वे इसे टीवी पर क्यों नहीं दिखाते? हमारा कोई भी आदमी न तो गिरफ्तार हुआ और न ही मारा गया. उन्हें दिखाना चाहिए कि हजारों कश्मीरी आजादी की मांग करते हुए सड़कों पर निकल आए हैं.

- ***विश्वनाथ प्रताप सिंह के बारे में आप क्या सोचते हैं?***

दिल्ली के तख्त पर कौन आता है, कौन जाता है इससे हमें क्या? यहां तो हर जगह जेकेएलएफ ही है.

समाधान के लिए जेकेएलएफ से बातचीत की जाए. लेकिन उग्रवादियों का इरादा केंद्र से बातचीत करने का नहीं दिखता. जनसमर्थन के उत्साह में वे रायशुमारी कराने के लिए दबाव डालना चाहते हैं. एक और परेशानी यह है कि 26 उग्रवादी संगठनों में से एक भी ऐसा नहीं दिखता जिसके नेतृत्व के बारे में साफ-साफ पता चल सके और जिससे वार्ता की संभावना खोजी जा सके. फिर, मौजूदा हालात में कोई भी वार्ता के लिए आगे नही आना चाहेगा क्योंकि इससे वह अलग-थलग पड़ जाएगा. जगमोहन के एक आला सलाहकार का कहना है, "हम तुरंत ही हालात सामान्य होने की उम्मीद नहीं कर सकते. वे गुस्से से भरे हुए हैं और उनके पास हथियार हैं. इस मोर्चे पर बड़ी मात खाने के लिए हमें तैयार रहना चाहिए."

परंतु जगमोहन और उनके संकटमोचनों ने समस्याग्रस्त घाटी में राजनैतिक समाधान का दीप तो तलाश लिया है. अब जरूरत इस दिये में तेल और बत्ती डालकर उजाला फैलाने की है.

—**पंकज पचौरी**, श्रीनगर में

फार्म IV (नियम 8 देखें)

1. प्रकाशन का स्थान : नई दिल्ली
2. प्रकाशन की आवर्तिता : पाक्षिक
3. मुद्रक का नाम : अरुण पुरी
क्या भारतीय नागरिक हैं? : हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम) : लागू नहीं
4. प्रकाशक का नाम : अरुण पुरी
क्या भारतीय नागरिक हैं? : हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम) : लागू नहीं
पता : लिविंग मीडिया इंडिया लिमिटेड, के-ब्लॉक, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
5. संपादक का नाम : अरुण पुरी
क्या भारतीय नागरिक हैं? : हां
(अगर विदेशी हों, तो मूल देश का नाम) : लागू नहीं
पता : के-ब्लॉक, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001
6. उन लोगों के नाम और पते जो समाचार पत्र के मालिक हों, या जिनके पास कुल पूंजी का एक फीसदी से अधिक हो.

कुल पूंजी में एक फीसदी से अधिक की हिस्सेदारी रखने वाले शेयरहोल्डरों के नाम और पते:

1. श्री अरुण पुरी, ए-6, पालम मार्ग, बसंत विहार, नई दिल्ली.
2. श्रीमती रेखा पुरी, ए-6, पालम मार्ग, बसंत विहार, नई दिल्ली.
3. मास्टर अंकुर पुरी, (नाबालिग), ए-6, पालम मार्ग, बसंत विहार, नई दिल्ली.
4. श्रीमती मंदिरा पुरी, फाबसेट, 5, कार्लो एवेन्यू, नेपियन, ओंतारियो के-2, जी.ओ.पी.जी. कनाडा.
5. श्रीमती मधु मेहन, सी-19 माल्चा मार्ग, नई दिल्ली.
6. द ऑल इंडिया इंवेस्टमेंट कार्पोरेशन प्राइवेट लिमिटेड, के-ब्लॉक, कनाट सर्कस, नई दिल्ली.
7. एल. एम. डिस्ट्रिब्यूटर लिमिटेड, के-ब्लॉक, कनाट सर्कस, नई दिल्ली.

मैं, अरुण पुरी घोषित करता हूं कि ऊपर दिए गए ब्यौरे मेरी जानकारी और मान्यता के अनुसार सही हैं.

दिनांक: 1 मार्च, 1990

हस्ता. अरुण पुरी
प्रकाशक के हस्ताक्षर

बिहार

न्याय के मामले में नाउम्मीदी

भागलपुर दंगे के आरोपी पुलिसवालों के प्रति नरमी

सब जानते हैं कि पिछले साल अक्तूबर-नवंबर में पूरे भागलपुर को झुलसा देने वाले सांप्रदायिक दंगों में बड़ा हाथ वहां की पुलिस का भी था यह भी किसी से छिपा नहीं है कि राज्य की इंका सरकार ने अपराधियों को सजा देने के ठोस कदम नहीं उठाए. केवल तीन पुलिसवालों के खिलाफ मामले दर्ज किए गए लेकिन लगता है वे भी साफ बच निकलेंगे.

पुलिस सार्जेंट ओम प्रकाश सिंह पर भागलपुर शहर में, जिला मजिस्ट्रेट के दफ्तर में एक मुसलमान सरकारी कर्मचारी की हत्या का आरोप है. उसके खिलाफ कोतवाली में मामला नं. 4/90 तो दर्ज है लेकिन उसे निलंबित नहीं किया गया.

सहायक सब-इंस्पेक्टर रामचंद्र सिंह के खिलाफ लोगाईं हत्याकांड में शामिल होने के अपराध में गिरफ्तारी का वारंट है. सरकारी आंकड़ों के मुताबिक इस कांड में 116 मुसलमान मारे गए थे. रामचंद्र उन पुलिसवालों में एक बताया जाता है जिन्होंने हत्याकांड की खबर बाहर न पहुंचे इसके लिए पहले गांव जाने वाले सारे रास्ते खोद दिए (ताकि कोई गांव तक न पहुंच सके) फिर लाशें खेतों में गाड़ दीं. पुलिस कहती है कि रामचंद्र फरार है, जबकि लोगों का कहना है कि वह खुलेआम घूम रहा है.

लोगाईं हत्याकांड के आरोपी लोगों में से ज्यादातर के खिलाफ आरोपपत्र दाखिल नहीं किए गए और वे छुट्टे घूम रहे हैं. इसी तरह चंदेरी हत्याकांड (सरकारी रिकार्ड के मुताबिक मृतकों की संख्यां 67) के लिए जिम्मेदार लोगों के खिलाफ भी कार्रवाई नहीं की जा रही. पुलिस की रजामंदी के बिना यह कांड हो ही नहीं सकता था. पर किसी पुलिसिए को आरोपी नहीं बनाया गया. पिछले पखवाड़े तो चंदेरी हत्याकांड में गिरफ्तार सौ लोगों को जमानत पर रिहा भी कर दिया गया. वजह यह थी सीआईडी 90 दिनों की तय मियाद के भीतर आरोपपत्र दाखिल नहीं कर पाई.

इससे भी ज्यादा नुकसानदेह बात यह कि भागलपुर जिले के 40 पुलिसवाले पिछले नवंबर में जारी अपने तबादले के फरमान को ठेंगा दिखाते घूम रहे हैं. हालांकि जिले में तीन साल पूरे कर लेने वाले पुलिसवालों का तबादला होना सामान्य बात है पर उनका इनकार उनके दोषी होने की चुगली कर रहा है. एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी खुलासा करते हैं, "उन्हें पता है कि यदि वे चले गए तो जनता उनके खिलाफ न सिर्फ गवाही देगी, बल्कि दंगों में उनके शामिल होने का भंडाफोड़ भी कर देगी."

दंगों में पुलिस का हाथ होने के बारे में जो थोड़ा बहुत शक बाकी था वह भागलपुर के अतिरिक्त डीआईजी (ग्रामीण) अजीत दत्त की लोगाईं हत्याकांड पर तैयार ताजा रिपोर्ट से दूर हो गया. उनकी रिपोर्ट के आधार पर 14 व्यक्तियों के खिलाफ मामले दर्ज किए गए. इनमें से सिर्फ दो पुलिसवाले हैं.

इसीलिए पिछले पखवाड़े भागलपुर दंगों की जांच के लिए बने आयोग ने जब काम शुरू किया और जनता को गवाही के लिए बुलाया गया तो बहुत कम लोग सामने आए. इतना ही नहीं दंगों के आरोपी तीन ताकतवर अपराधी माधो मंडल, कामेश्वर यादव और रामचंद्र रमन निर्दलीय उम्मीदवार की हैसियत से चुनाव भी लड़ रहे हैं. विश्व हिंदू परिषद इन्हें समर्थन दे रही है. इनमें से माधो मंडल जेल में बंद है.

इसमें से हर बात भागलपुर के मुसलमानों के लिए भयावह है. पुलिस की भागीदारी, सरकार की उदासीनता और अपराधियों को समर्थन देने का परिषद का उत्साह तो यही संकेत देता है कि भागलपुर दंगों के पीड़ितों को कभी न्याय नहीं मिल पाएगा.

—उत्तम सेनगुप्त

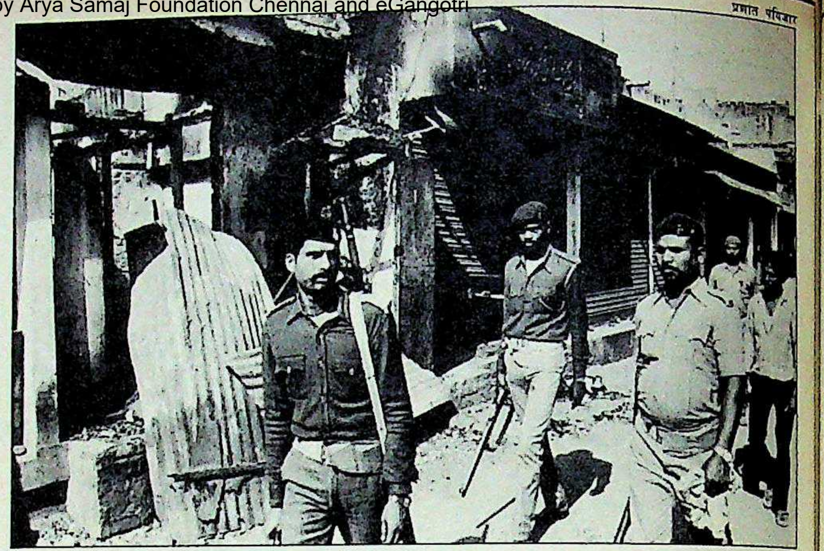

प्रशांत पंजियार

भागलपुर में चौकसी करती पुलिस; ध्वस्त घरों के बाहर दंगा पीड़ितः न्याय नहीं मिला

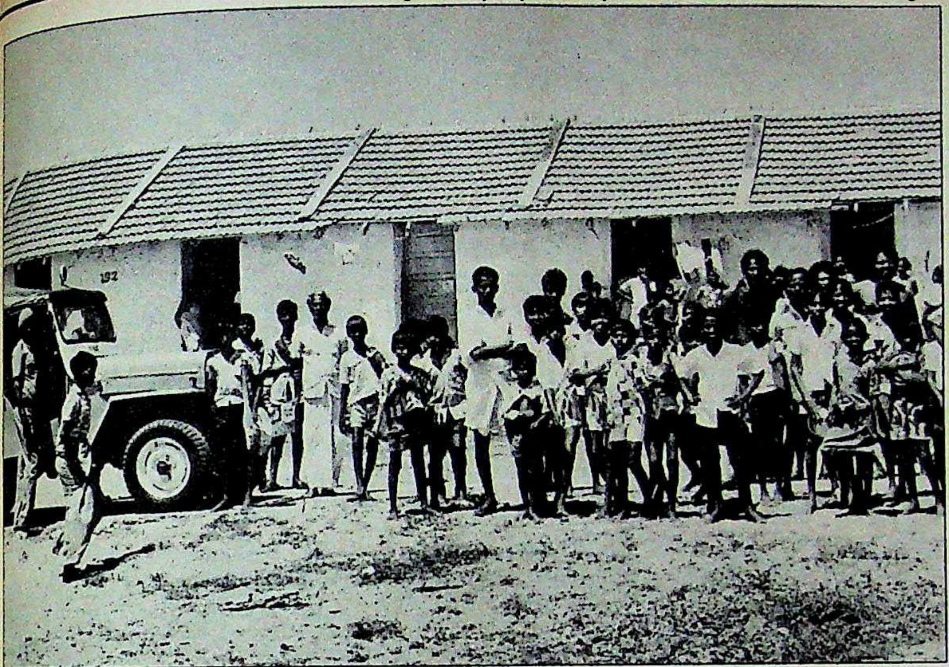

रामेश्वरम में श्रीलंका से आए शरणार्थी

तमिल शरणार्थी

दोहरी विपदा के शिकार

तमिल मुक्ति चीतों की बर्बरता से उनकी रूह कांपती है

श्रीलंका से भारतीय शांति सेना की वापसी के साथ ही एक बार फिर भारी संख्या में तमिल शरणार्थियों के भारत आने का सिलसिला शुरू हो गया है. रामेश्वरम के पास मंडपम के अस्थायी शिविर में लगभग 3000 शरणार्थी पहुंच चुके हैं. और तिरुचिरापल्लि के निकट कोट्टपट्टु में इनकी संख्या 300 है. इसके अलावा हर सुबह नौकाएं भरकर शरणार्थी पहुंचते ही हैं.

लेकिन '80 वाले दशक के शुरू से आज की स्थिति में काफी अंतर है. 300 से अधिक शरणार्थी तो मुक्ति चीतों (एलटीटीई) से इतर संगठनों—जैसे ईपीआरएलएफ, ईएनडीएलएफ, टीईएलओ और पीएलओटी—से जुड़े उग्रवादी हैं. भारतीय शांति सेना की पूर्ण वापसी की नियत तारीख 31 मार्च के बाद ऐसे शरणार्थियों की संख्या और बढ़ेगी.

ज्यादातर शरणार्थी चीतों की बर्बरता के अनुभव सुनाते हैं. पिछले महीने अपने 34 वर्षीय पति रामंथन और बच्चों के साथ मंडपम आई 30 वर्षीया नागम्मा कहती हैं, "मेरे पति सिटीजन वालंटियर फोर्स में थे. शांति सेना की वापसी हुई तभी से हमें मुक्ति चीतों से धमकियां मिलने लगीं. पहले हमने गिरजाघर में शरण ली. वहां से नाव से किसी तरह भारत पहुंचे." धामरानी ने, जिनके पति शिवनेसन ईपीआरएलएफ के सदस्य हैं, कहा, "शांति सेना की वापसी के बाद मेरे पति एक रिश्तेदार के घर में छिप गए. हर शाम एलटीटीई के हथियारबंद लोग हमारे घर आकर पूछताछ करते. इसलिए जैसे ही मौका मिला, हमने नाव का इंतजाम किया और यहां आ गए."

लेकिन द्वीप से भाग पाना आसान काम नहीं. इस महीने के शुरू में ही मुक्ति चीतों ने प्रतिद्वंद्वी तमिल गुटों के सक्रिय सदस्यों की भारत में पनाह लेने की कोशिशें रोकने के लिए दो नौकाओं पर हमला कर दिया. ईपीआरएलएफ के सदस्यों और उनके परिवारों को तंजावुर जिले के वेदरण्यम की ओर ले जा रही दो नौकाओं पर हुई इस गोलीबारी में सात लोग मारे गए और 19 घायल हो गए. इस सबके बावजूद शिविर में उग्रवादियों की उपस्थिति से स्थानीय लोग काफी चिंतित हैं.

उग्रवादियों का दावा है कि वे अपने हथियार श्रीलंका में ही छोड़ आए हैं, जो या तो उत्तरी और पूर्वी प्रांतों में सुरक्षित जगहों पर दफन हैं, या "भारतीय शांति सेना को सौंपे जा चुके हैं." लेकिन यह पूरा सच नहीं. रामंद शहर के पास दर्गावलासाई गांव में बड़ी मात्रा में हथियारों की बरामदगी इसका प्रमाण है. बरामद हथियारों में 9 मिमी की 64 पिस्तौलें, 40 हल्की मशीनगनें, 88 एके-47 राइफलें, एक एजेड रॉकेट लांचर सहित 16 मिसाइलें शामिल हैं.

शिविर में आने वाले बाहरी लोगों की तो सख्त जांच होती है लेकिन उग्रवादी या दूसरे शरणार्थियों की आवाजाही बेरोकटोक होती है. खबरों के अनुसार इनमें से कई अपने पखवाड़े का खर्च 55 रु. लेकर बाहर चले जाते हैं और बाद में अगले पखवाड़े ही शिविर में नजर आते हैं.

देश के इस हिस्से में उग्रवादियों और हथियारों के बढ़ते जमाव के साथ ही अंतरदलीय झड़पों की संभावना भी बढ़ गई है. हाल की एक घटना से इस आशंका को काफी बल मिला है. 18 फरवरी को दो जिप्सी तथा एक एंबेसेडर कार मंडपम शिविर की ओर बढ़ती दिखाई दी. पुलिस के रोके जाने पर इन गाड़ियों में सवार लोगों ने गोलियां चलानी शुरू कर दीं और फिर भाग निकले. इस घटना में दो लोगों की मृत्यु हुई और 15 जख्मी हो गए.

इधर शिविर में रहने वाले उग्रवादी बदला लिए जाने के डर से आक्रांत हैं. टीईएलओ के सदस्य 19 वर्षीय थंगीस्वरन कहते हैं, "वे हम पर कभी भी हमला कर सकते हैं." गोली चलने की घटना के बाद से मंडपम में बढ़ी सुरक्षा व्यवस्था देखते हुए तो लगता है कि पुलिस भी उनकी बात का यकीन कर रही है. शिविर के चारों ओर बनी चौकियों पर हेलमेटधारी पुलिसवाले दिन-रात मशीनगन ताने तैनात हैं. तमिलनाडु की विशेष पुलिस की चार कंपनियां भी दर्गावलासाई, मंडपम और रामेश्वरम के क्षेत्रों में उग्रवादी गतिविधियों पर नजर रख रही हैं.

कुल मिलाकर तमिलनाडु के लिए लक्षण अच्छे नहीं. अगर एलटीटीई भारत की जमीन पर बदले की कार्रवाइयां करने पर आमादा हो जाए तो पूरा राज्य ही युद्ध का मैदान बन सकता है. और मुक्ति चीतों के प्रति भारत सरकार के नरम और उदार रवैए को देखते हुए तो संभवनाएं खास तौर से खतरनाक लगती हैं. —कविता शेट्टी

उत्तर प्रदेश

भविष्य अनिश्चित

बीरबहादुर के वारिस मुश्किल में

बीते दशक में उत्तर प्रदेश की राजनीति का केंद्र रहे एक राजप्रासाद में जनवरी की आखिरी शाम एक साधारण समारोह था. समारोह की वजह हालांकि असाधारण थी पर अस्वाभाविक चुप्पी छाई थी. आते-जाते लोगों की निगाह प्रवेश द्वार की नेमप्लेट पर एक बार जरूर चली जाती थी जिस पर लिखा था... बीरबहादुर सिंह.

यह समारोह दिवंगत बीरबहादुर सिंह की दूसरी बेटी इंदु सिंह के विवाह को लेकर था. यह रिश्ता अजीबोगरीब ढंग से संपन्न हुआ. बीरबहादुर परिवार के अंगरक्षक के तौर पर तैनात रहे एक इंस्पेक्टर के लड़के से इंदु सिंह ने पिछले सितंबर में गुपचुप शादी कर ली थी. जनवरी के पहले पखवाड़े तक सब गुप्त रहा. बाद में शंका होने पर फतेहबहादुर सिंह (बीरबहादुर सिंह के पुत्र) और उस इंस्पेक्टर में हाथापाई हो गई. इस झगड़े में इंस्पेक्टर ने गोली भी चलाई पर फतेहबहादुर बच गए. बाद में कुछ लोगों के हस्तक्षेप से 31 जनवरी की शाम इस रिश्ते की स्वीकृति की रस्म उपरोक्त समारोह में अदा हो गई.

बीरबहादुर के एक रिश्तेदार ने कहा, "यह सीधा-सादा प्रेम प्रकरण नहीं है. यह अनिश्चित भविष्य से बचने की हड़बड़ी भरी कोशिश है." दूसरे रिश्तेदार ने बताया, "बीरबहादुर के बच्चों के पास कुछ खास नहीं बचा. गोरखपुर में चौदह-पंद्रह एकड़ खेती की जमीन, गोलघर वाली कोठी पर बीस लाख रुपए टैक्स के रूप में बकाया पड़ा है. हां, बैंक में तीन-चार लाख रुपए जरूर हैं जो सब में बंटे हुए हैं."

ये टिप्पणियां विस्मित करती हैं. बीरबहादुर सिंह के राजनैतिक जीवन पर शायद एकमात्र आरोप भारी जायदाद बनानें से संबंधित है. उनके ऊपर करोड़ों रु. की बेनामी संपत्ति बनाने के आरोप विधानसभा की कार्रवाइयों में दर्ज हैं. लखनऊ, देहरादून, बंबई और गोरखपुर में विशाल कोठियों, होटलों और दीगर जायदादों को उनकी बेनामी संपत्ति के रूप में शुमार किया जाता रहा. आखिर उन सबका हुआ क्या?

बीरबहादुर सिंह की उम्र राजनैतिक जरूरतों की भरपाई में खप गई पर बच्चों के बारे में उनकी आकांक्षाएं सपनीली रहीं. लखनऊ के उनके सरकारी बंगले में छोटी घुड़साल, छोटा स्वीमिंग पूल, पक्षी विहार इसके कुछ संकेत हैं. मझले लड़के को उन्होंने दून स्कूल में डाल रखा था. इस लिहाज से उनके सपनों को प्रकृति ने बड़ी बेदर्दी से रौंदा. माल एवेन्यू का बंगला इसी मार्च भर इनके पास है. दून स्कूल वाले लड़के की नए साल की फीस नोटिस मिल जाने के बाद ही जमा हो पाई. उनकी असमय मौत के कारण बडे बेटे फतेहबहादुर सिंह बंबई के सिडेन्हम कॉलेज ऑफ कॉमर्स ऐंड इकॉनॉमिक्स का कोर्स छोड़कर घर आ गए. उन्होंने राजनैतिक विरासत हासिल करने की कोशिश की पर कांग्रेस के दिन लद चुके थे. सिर्फ बड़ी बेटी कमला सिंह का विवाह उनकी मर्जी से हुआ पर वह भी पिता की मृत्यु के बाद. बीरबहादुर की पत्नी उनसे पहले ही दुनिया छोड़ चुकी थीं.

अपने दौर में जो दौलत बीरबहादुर ने जमा की उसे सहेजने का समय उन्हें नहीं मिला. उनके विश्वसनीय और नातेदार उसे ले उड़े. बीरबहादुर की कुछ बेनामी संपत्ति किसी अमर सिंह के नाम बताई गई थी. पूर्व विधायक और अब सांसद हर्षवर्धन के आरोपों का जो रिकार्ड विधानसभा में है उसमें भी यह नाम है. कुछ जायदाद उनके भाई गुलाब सिंह और दूसरे परिजनों के खाते चढ़ गई.

बीरबहादुर का बेटा और बेटी

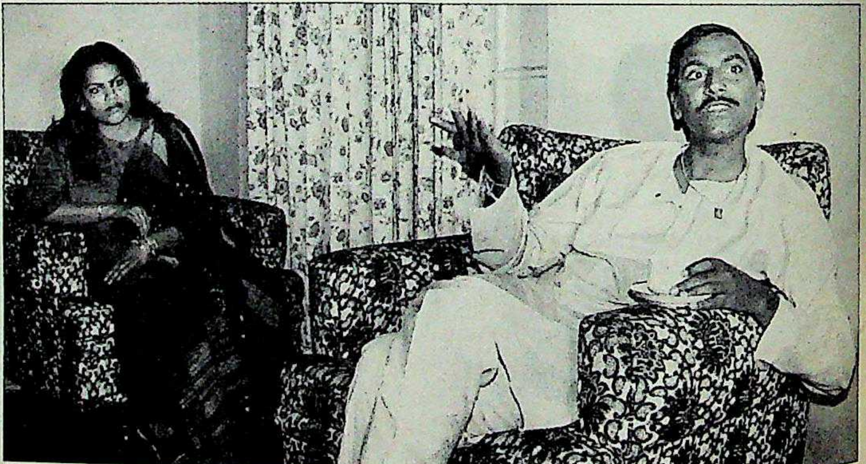

हमारे बाबू जी ने सबके लिए किया पर कुछ को छोड़कर ज्यादातर लोग धोखेबाज ही निकले"

गोरखपुर के हरनही गांव के महुरैया टोला में बीरबहादुर सिंह का पुश्तैनी मकान अभी मौजूद है पर खंडहर में बदला हुआ. उससे काफी हटकर सड़क किनारे का रिहायशी मकान गुलाब सिंह के नाम है. लखनऊ में बना विशाल भवन भी गुलाब सिंह के नाम है. देहरादून में तिब्बत बार्डर रोड का जो आलीशान बंगला बीरबहादुर की बेनामी संपत्ति के रूप में मशहूर है, उस पर एक अपरिचित व्यक्ति काबिज है.

फतेहबहादुर और कमला सिंह ने कहा, "हमारे बाबू जी ने सबके लिए किया पर कुछ को छोड़कर ज्यादातर लोग धोखेबाज निकले. एन.डी. तिवारी और बलराम यादव ने पनियारा विधानसभा के टिकट के सवाल पर ही हम भाई-बहन में झगड़ा करवाना चाहा. जीतेंद्र सिंह (पूर्व सांसद) तो सबसे खतरनाक निकला. तिवारी ने हमें यह घर (3, माल एवेन्यू) अलॉट तक नहीं किया."

उन्हें अपने पिता की 'मृत्यु' के कारणों पर भी संदेह है. फतेहबहादुर कहते हैं, "उनकी स्वाभाविक मृत्यु नहीं हुई. बाबू जी की मृत्यु के बाद उनका ट्रीटमेंट चार्ट भी लेने से मुझे रोक दिया गया."

उत्तर प्रदेश में सुचेता कृपलानी के बाद सबसे ज्यादा समय तक मुख्यमंत्री रहे बीरबहादुर सिंह के वारिसों के हाल दर्दनाक हैं. बीरबहादुर ने अपने जीवनकाल में बच्चों को अपने से दूर-दूर रखा. इसी वजह से वे उस माहौल से अनजान हैं जो उनके चारों ओर व्याप्त है. अभी तो जायदाद हड़पने का अभियान ही चला है उनकी राजनैतिक विरासत हड़पने वाले भी घात में लगे हुए हैं.

—शीतल

पश्चिम बंगाल

मुश्किल में माकपा

राज्य में पार्टी का नया नेता

लोग आते-जाते रहते हैं पर पार्टी का सफर कभी रुकता नहीं. कम-से-कम कम्युनिस्टों का तो यही मानना है. पूर्वी यूरोप में भले ही इस आस्था पर से लोगों का विश्वास उठने लगा है मगर पिछले महीने पश्चिम बंगाल में माकपा को पार्टी का स्थायित्व और निरंतरता बनाए रखने का कर्मकांड पूरा करना ही पड़ा.

मुकर्जी की शोकसभा को संबोधित करते सैलेन दासगुप्तः राह आसान नहीं

पार्टी की राज्य इकाई के सचिव सरोज मुकर्जी के निधन के एक हफ्ते बाद 10 फरवरी को उनकी जगह अपेक्षाकृत कम अहमियत वाले नेता सैलेन दासगुप्त ने संभाल ली. राज्य समिति के एक सदस्य ने कहा, "कई नेता गुजर गए पर साम्यवादी आंदोलन आगे बढ़ता ही आया है. मुकर्जी के निधन से यह विकास नहीं रुकेगा."

पर यह बदलाव शायद इतना सरल न हो. सात साल तक राज्य इकाई के प्रमुख रहकर मुकर्जी ने पार्टी के बुढ़ाते नेतृत्व और आधारभूत स्तर पर पार्टी के लगातार बढ़ते सदस्यों के बीच तालमेल बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. इसके लिए उन्होंने कई नौजवान सदस्यों को नीति-नियामक ओहदों पर भी नियुक्त किया. 65 वर्षीय दासगुप्त शायद इस भूमिका में खरे न उतर पाएं. पार्टी के आला नेताओं से संपर्क साधने में हालांकि वे दक्ष रहे हैं पर पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ मुकर्जी की तरह उनके करीबी संबंध नहीं हैं.

मगर इससे तत्काल कोई फर्क नहीं पड़ेगा क्योंकि मुकर्जी अपने पीछे ऐसा मजबूत पार्टी संगठन छोड़ गए हैं जिसके नेतृत्व का ताना-बाना राज्य से लेकर पंचायत स्तर तक फैला हुआ है. राज्य इकाई का सचिव होने के नाते भी दासगुप्त शायद ही बहुत प्रभावशाली भूमिका निभा पाएं. यह जिम्मेदारी उन्हें भूमि सुधारमंत्री विनय चौधरी और मुख्यमंत्री ज्योति बसु जैसे वरिष्ठ नेताओं के साथ निभानी होगी.

दासगुप्त के कंधों पर एक अतिरिक्त जिम्मेदारी भी होगी. मुकर्जी की जगह ही वे वाम मोर्चे के अध्यक्ष बनाए गए हैं और इस नाते उन्हें सरकार में शामिल विभिन्न दलों के बीच तालमेल बिठाना होगा, सभी के हितों में संतुलन बिठाना होगा ताकि माकपा पर दादागीरी का आरोप न लगे.

कुछ समय से वे इस जिम्मेदारी को निभाते भी आए हैं. मुकर्जी के कार्यकाल में वे विभिन्न नेताओं से निजी संपर्क बनाने में उनकी सहायता करते रहे और अब उन्हें वही भूमिका निभानी है जो वे काफी समय से निभा रहे थे.

अंततः दासगुप्त को अपनी पार्टी पर ही सबसे ज्यादा ध्यान देना होगा. राज्य में माकपा की सदस्यता दिन दूनी रात चौगुनी गति से बढ़ रही है. पर नए सदस्यों की वैचारिक शुद्धता और प्रशिक्षण के बारे में संदेह भी व्यक्त किए गए हैं. इसका एक मतलब यह है कि नए सदस्य नेतृत्व की हर बात को पहले की तरह आंख मूंदकर शायद न मानें. पूर्वी यूरोप और सोवियत संघ की घटनाओं के बाद खास तौर पर ऐसी संभावना बढ़ गई है.

फिर भी मुकर्जी के जमाने में माकपा ने तानाशाही वाली अपनी छवि धोने की कोशिश की थी. अपने पूर्ववर्ती प्रमोद दासगुप्त के नक्शेकदम पर न चलते हुए मुकर्जी ने विभिन्न स्तरों पर सामूहिक नेतृत्व विकसित करने की कोशिश की. यह काम भले ही मुश्किल हो पर सैलेन दासगुप्त को इसी विरासत के आधार पर काम करना होगा. उन्हें पार्टी के 'जनवादी केंद्रीयता' के पुराने सिद्धांत में से 'केंद्रीयता' के मुकाबले 'जनवाद' पर ज्यादा जोर देना होगा.

—फरज़ंद अहमद

विश्व हिंदू परिषद

झोली पर झमेला

संगठन के भीतर भारी मतभेद

लगता है विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के मामले में मियां की जूती मियां के सिर वाली कहावत सच हो रही है. राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जिद विवाद को तूल देने वाला यह संगठन आज खुद विवादों की चपेट में है. यही नहीं, उसमें सीधी दरार पड़ने की आशंकाएं व्यक्त की जा रही हैं. इस कारण इसके धार्मिक तेवर भी ढीले पड़ने लगे हैं. इससे भी बदतर तो यह है कि यह संगठन दूसरे कट्टरवादी गुटों के हमले का निशाना बन गया है. इनमें से हरेक गुट खुद को हिंदू हितों के एकमात्र संरक्षक के रूप में पेश करना चाहता है.

'विहिप' के लिए खतरे की घंटी तब बजी जब इसके कुछ नेताओं ने संगठन पर दबाव डालकर अयोध्या में राम मंदिर के निर्माण की तारीख आगे बढ़वाने में सफलता पा ली. पहले यह तारीख 14 फरवरी तय की गई थी. लेकिन संगठन के नेताओं में मतभेद जिस मुद्दे पर गहराया है उस मुद्दे को आमतौर पर किसी धार्मिक संस्था को बहुत अहमियत नहीं देनी चाहिए. यह मुद्दा है पैसे का.

'विहिप' ने रामशिला पूजनों के दौरान श्रद्धालुओं से 8.29 करोड़ रु. की भारी-भरकम रकम इकट्ठी कर ली. जनवरी के आखिरी हफ्ते में इलाहाबाद में हुए संत सम्मेलन में जब यह बताया गया कि शिला पूजनों और 9 नवंबर को अयोध्या में हुए शिलान्यास समारोह आदि पर 1.63 करोड़ रु. खर्च हो गए हैं, तब कई भौंहें तन गईं. कई लोगों को लगा कि खर्च की यह रकम तो बहुत ज्यादा है. अयोध्या के एक महंत का कहना था, "क्या आप मान सकते हैं कि ईंटों को लाने में इतनी रकम खर्च हो गई होगी? ज्यादातर शिला पूजनों का आयोजन हर शहर के जाने-माने लोगों ने ही किया. आखिर किस चीज पर इतनी रकम खर्च की गई?"

पिछले पखवाड़े अयोध्या में हुए इस संत सम्मेलन के दौरान संगठन के भीतरी मतभेद खुलकर सामने आ गए. इस सम्मेलन में 'विहिप' के नेता यह बताने वाले थे कि मंदिर निर्माण की तिथि क्यों टाली गई. परंतु यह सम्मेलन स्थानीय साधुओं का ही समागम भर बनकर रह गया. महंत अवैद्यनाथ और महंत रामचंद्र दास परमहंस को छोड़ अधिकांश धार्मिक हस्तियों ने यहां पहुंचना जरूरी नहीं समझा.

वित्तीय घोटाले पर संदेह और न पुख्ता हो इसके लिए इस रकम को 'विहिप' की पहुंच से और दूर कर दिया गया है. अब इस रकम का खाता तीन व्यक्तियों के हस्ताक्षर से ही चल पाएगा. ये हैं—राम जन्मभूमि न्यास के महंत रामचंद्र दास परमहंस, मुक्ति समिति के महंत नृतगोपाल दास और 'विहिप' के विष्णु हरि डालमिया. महंत परमहंस कहते हैं, ''न्यास ने शिला पूजनों और शिलान्यास आयोजन का जिम्मा 'विहिप' को सौंपा था क्योंकि उसके पास कार्यकर्ताओं की विशाल फौज है. हमारा मानना है कि कोई घोटाला नहीं किया गया. लेकिन कोई संदेह न पनपे इसलिए हमने यह व्यवस्था की है.''

अगर यह मान लिया जाए कि पैसे के मामले पर कोई कलह नहीं है, फिर भी मंदिर का निर्माण चार महीने टाले जाने के बाद 'विहिप' के भीतर और दूसरे कट्टरवादी गुटो में भी मतभेद उभरे हैं. पिछले पखवाड़े द्वारिका पीठ के शंकराचार्य ने घोषणा की कि वे 27 अप्रैल को विवादास्पद स्थल पर शिलान्यास करेंगे. इसके पहले वे 'विहिप' द्वारा 9 नवंबर को किए गए शिलान्यास की निंदा कर चुके हैं. उनका तर्क है कि यह कर्मकांडों के अनुरूप नहीं किया. साथ ही उन्होंने मंदिर निर्माण के नाम पर इतनी बड़ी रकम इकट्ठा करने के लिए भी 'विहिप' की खिंचाई की. इससे 'विहिप' के लिए एक और परेशानी खड़ी हो गई. डालमिया उन पर बरसे, ''जब हम शिलान्यास कर रहे थे तब वे कहां थे? यह सब सिर्फ प्रचार पाने का हथकंडा है.''

लेकिन मंदिर निर्माण टालने के पक्षधर लोग भी इसके भिन्न-भिन्न कारण बताते हैं. महंत परमहंस का कहना है कि देश की सीमाओं पर तनाव को देखते हुए तिथि टालनी पड़ी जबकि महंत अवैद्यनाथ कहते हैं कि यह प्रधानमंत्री की अपील पर किया गया. लेकिन वे यह भी कहते हैं, ''मंदिर निर्माण टाले जाने का विरोध करने वालों में मंदिर निर्माण के संघर्ष से जुड़े 20 प्रतिशत से ज्यादा लोग नहीं थे.''

और ऐसा भी नहीं है कि 'विहिप' प्रधानमंत्री के आसरे हाथ पर हाथ धरे बैठे रहने वाली है कि वे कोई जादुई हल खोज लाएंगे. अगले चार महीने तक वह जन-जागरण और चंदा उगाही अभियान चलाने जा रही है. महंत परमहंस कहते हैं, ''अभी तक हमने लोगों से मंदिर निर्माण के लिए चंदा नहीं मांगा है. यह मांग करने पर तो हमारे पास भारी-भरकम रकम इकट्ठी हो जाएगी.''

बहरहाल, 'विहिप' के नेतागण आपसी मतभेदों के बावजूद इस बात से तो खुद को दिलासा दे सकते हैं कि उनकी झोली भारी होती रहेगी.

—दिलीप अवस्थी

विहिप के नेताः अंतरकलह

राम जन्मभूमि विवाद को तूल देने वाली 'विहिप' आज खुद विवादों की चपेट में है. उसमें सीधी दरार पड़ने की आशंका है.

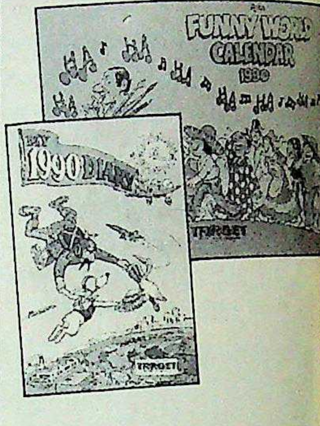
A year full of fun for your kids

The Target 1990 Diary has all the things children love. Jokes, magic tricks, puzzles, things to make'n do, amazing facts...and of course pages and pages for them to record the year.

Its perfect companion is the Target 1990 calendar with 12 rip-roaring cartoons from Ajit's Funny World in full colour.

Fill up the coupon below and gift them a year full of fun.

But hurry! As the Target Diary has been a sell-out for three years running. So book your order now to avoid disappointment.

TARGET
The Children's Magazine

I'd like to gift my child
☐ Target 1990 Diary—Rs.39.00
☐ Target 1990 Calendar—Rs.23.00
☐ Both—Rs.55 (at a saving of Rs.7!)
My cheque*/DD for Rs.......... in favour of **Living Media India Ltd.** is enclosed.

Name ______
Address ______
______
______ Pin ______

Mail Coupon to:
Living Media India Ltd.
P.B.No.29, New Delhi-110001
*Please add Rs.5 for outstation cheques, i.e. outside Delhi

ar
fun
kids
y has all the
okes, magic
to make'n
d of course
hem to
is the
with 12 rip-
. Ajit's
lour.
ow and gift
et Diary
three years
r order
ntment.
agazine
-Rs.39.00
r—Rs.23.00
ring of Rs.7!)
Media India
d.
0001
outstation
lhi

ओडीसा

अमीरों का लिहाज

ानकीबल्लभ पटनायक का एक और संगीन कारनामा

बहुत ही रमणीय नजारा है वह. कोणार्क के मशहूर सूर्य मंदिर से थोड़ी ही दूरी पर 70 एकड़ जमीन पर फैले अभयारण्य के एक किनारे से समुद्र की लहरें टकराती हैं. यहीं से एक घुमावदार जलधारा शुरू होती है जो कैसुएरिना की झाड़ियों के पीछे ओझल हो जाती है. यहां पर हिरन आराम से टहलते और चौकड़ियां भरते मिल सकते हैं.

यह नीरव जगह ही आजकल विवादों में घिरी हुई है. वजह यह कि ईस्ट इंडिया होटल्स इस संरक्षित इलाके में तटीय सैरगाह बनाना चाहती है. इसके इस प्रस्ताव को पूर्व मुख्यमंत्री जानकीबल्लभ पटनायक की मंजूरी भी मिल चुकी है.

छुट्टियां मनाने के शौकीन अमीर पर्यटकों को लुभाने के मकसद से ओबेराय होटल समूह की इस कंपनी ने इसके लिए कोणार्क के पश्चिम में कहु-ंटे गांव के पास की जगह लेनी. यह जमीन ओडीसा वन अधिनियम के तहत संरक्षित घोषित है.

उपलब्ध सबूतों से लगता है कि यह जमीन देने के लिए पटनायक ने जरूरत से ज्यादा उदारता दिखाई. इसके लिए न सिर्फ वन्य एवं संरक्षण कानूनों को ही धता बताया गया बल्कि राज्य सरकार और केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय द्वारा उठाई गई आपत्तियों की भी अनदेखी कर दी गई.

इसके लिए पहला आश्चर्यजनक कदम यह उठाया गया कि 23 अप्रैल 1987 को इस जमीन का संरक्षित दर्जा रद्द कर दिया गया. वैसे, 1980 के वन्य संरक्षण अधिनियम के तहत किसी जगह को एक बार संरक्षित घोषित करने के बाद उसकी अधिसूचना बदली नहीं जा सकती.

फिर भी एक बाधा रही. इस जमीन का एक बड़ा हिस्सा बालखुंडा-कोणार्क अभयारण्य के तहत आता था जिसकी अधिसूचना 1984 में जारी हुई थी. वन्य-जीवन (संरक्षण) अधिनियम-1972 के तहत अभयारण्य के लिए सुरक्षित जगह का दर्जा बदला नहीं जा सकता. पर पटनायक सरकार ने 1 सितंबर 1987 को अधिसूचना जारी करके इस जमीन का अभयारण्य का दर्जा खत्म कर दिया.

इस काम के लिए पटनायक सरकार ने राज्य के प्रमुख वन संरक्षक, मुख्य वन्य-जीवन निरीक्षक और जिला वन अधिकारी की आपत्तियों को कोई तरजीह नहीं दी. और तो और, तब केंद्रीय पर्यावरण राज्य-मंत्री जियाउर्रहमान अंसारी और पर्यावरण मंत्रालय में सचिव टी.एन. शेषन की आपत्तियों को भी दरकिनार कर दिया गया.

21 अप्रैल 1988 को शेषन ने पटनायक को लिखा, "निर्माण के मकसद से किया गया यह फेरबदल 31 जुलाई 1986 को केंद्र सरकार द्वारा सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों को

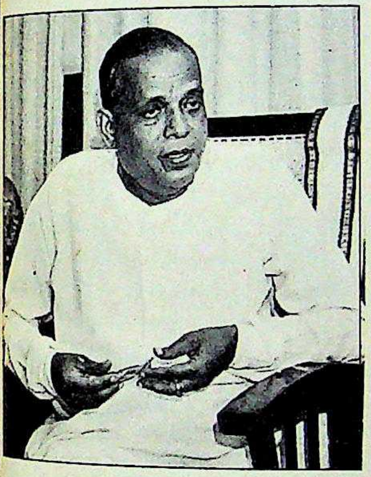

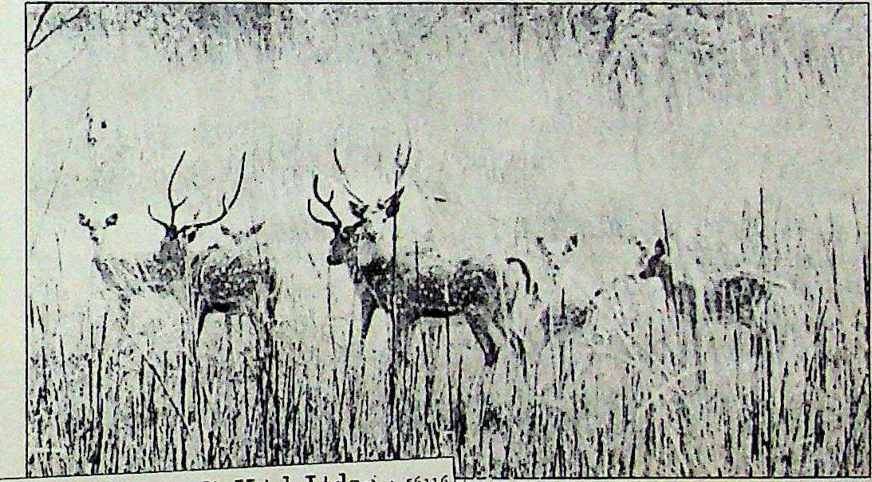

पटनायक; संरक्षित इलाका; होटल समूह की ओर से धन्यवाद की चिट्ठी; (सबसे नीचे) अंसारी का विरोध पत्र

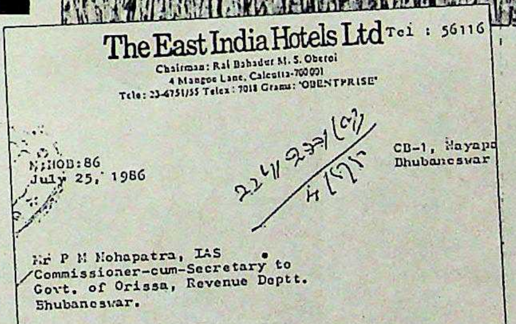

The East India Hotels Ltd Tel : 56116
Chairman: Rai Bahadur M. S. Oberoi
4 Mangoe Lane, Calcutta-700 001
Tele: 23-6751/55 Telex: 7018 Grams: "OBENTPRISE"

N:HOB:86
July 25, 1986

CB-1, Nayapa
Bhubaneswar

Mr P M Mohapatra, IAS
Commissioner-cum-Secretary to
Govt. of Orissa, Revenue Deptt.
Bhubaneswar.

Dear Mr Mohapatra,

I would like to express my gratitude on behalf of the Company for the tremendous assistance rendered by you to allot the land at Konark to us.

Your personal intervention has definitely hastened the entire process and I am sure this will go a long way in the dev of the Hotel in

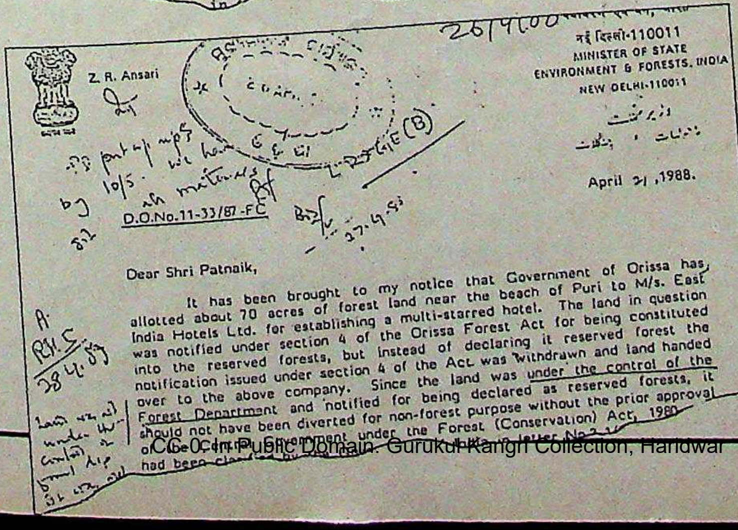

नई दिल्ली-110011
Z. R. Ansari
MINISTER OF STATE
ENVIRONMENT & FORESTS, INDIA
NEW DELHI-110011

April 21, 1988.

D.O.No.11-33/87-FC

Dear Shri Patnaik,

It has been brought to my notice that Government of Orissa has allotted about 70 acres of forest land near the beach of Puri to M/s. East India Hotels Ltd. for establishing a multi-starred hotel. The land in question was notified under section 4 of the Orissa Forest Act for being constituted into the reserved forests, but instead of declaring it reserved forest the notification issued under section 4 of the Act was withdrawn and land handed over to the above company. Since the land was under the control of the Forest Department and notified for being declared as reserved forests, it should not have been diverted for non-forest purpose without the prior approval of the Central Government under the Forest (Conservation) Act, 1980 had been cla

जारी निर्देशपत्र संख्या 2-3/86-एफ के अनुच्छेद 11 में बताई गई सरकारी नीति से मेल नहीं खाता. इसलिए अगर आप ईस्ट इंडिया होटल्स को इस जमीन का आबंटन रद्द कर दें तो मैं आपका अनुग्रही होऊंगा."

प्रमुख वन्य संरक्षक एस.सी.पाधी भी इसी तरह अड़े हुए थे. वन विभाग के सचिव को भेजी गई एक टिप्पणी में उन्होंने कहा, "बाढ़ और सूखे जैसे पर्यावरणीय असंतुलन की समस्या हमारे प्रदेश में पहले से ही काफी गहरी है और अब किसी भी संरक्षण को रद्द करने का मतलब होगा इस समस्या को और बढ़ाना. राजस्व विभाग द्वारा जारी अधिसूचना न सिर्फ गैरकानूनी और गलत है बल्कि इस लिहाज से खतरनाक भी है कि इससे गलत परंपरा पड़ जाएगी."

लेकिन पटनायक पर इसका कोई असर नहीं पड़ा. तटीय सैरगाह को मंजूरी देने के लिए उन्होंने वनमंत्री को नजरअंदाज करते हुए 5 जून 1987 को उच्चस्तरीय बैठक बुलाई. एक अधिकारी द्वारा दर्ज की गई बैठक की कार्यवाही से जाहिर होता है कि पटनायक ने यह फैसला करवाने में निजी तौर पर गहरी दिलचस्पी दिखाई. अधिकारी ने लिखा, "मुख्यमंत्री की इच्छा थी कि होटल के लिए प्रस्तावित इलाका अभयारण्य से अलग कर दिया जाए. मुख्यमंत्री की इच्छानुसार यह काम एक पखवाड़े में हो जाना चाहिए."

इस काम के लिए पटनायक सरकार ने अपनी सीमाओं से बाहर जाकर काम किया, यह बात होटल समूह के एक अधिकारी द्वारा 25 जुलाई 1986 को राज्य के राजस्व विभाग में आयुक्त-सह-सचिव पी.एम. महापात्र को लिखी एक चिट्ठी से भी जाहिर होती है. चिट्ठी में "कोणार्क में हमें जमीन अलॉट करने में भारी सहयोग के लिए" कृतज्ञता जाहिर की गई थी.

और जब इन फाइलों का भंडाफोड़ हुआ तथा लोगों की दिलचस्पी इसमें जगी तो इस सबसे परेशान पटनायक ने इस मामले पर कोई टिप्पणी करने से इनकार कर दिया. उनका कहना था कि प्रेस के पास गलत सूचनाएं हैं. इसी तरह ओबेराय के स्थानीय अधिकारियों ने भी चुप्पी साध रखी है.

इसके विपरीत, केंद्रीय पर्यावरण राज्यमंत्री मेनका गांधी ने बताया, "मुख्यमंत्री हेमनंद बिस्वाल को टेलेक्स संदेश भेजकर निर्देश दिया गया है कि इस गैरकानूनी अलॉटमेंट को रद्द किया जाए."

और फिलहाल ओबेराय समूह तो इस बढ़िया जमीन पर काबिज है मगर ठोस सबूतों ने पूर्व मुख्यमंत्री को कटघरे में खड़ा कर दिया है.

—रुबेन बनर्जी

अजीत नैनन और बी.के. शर्मा

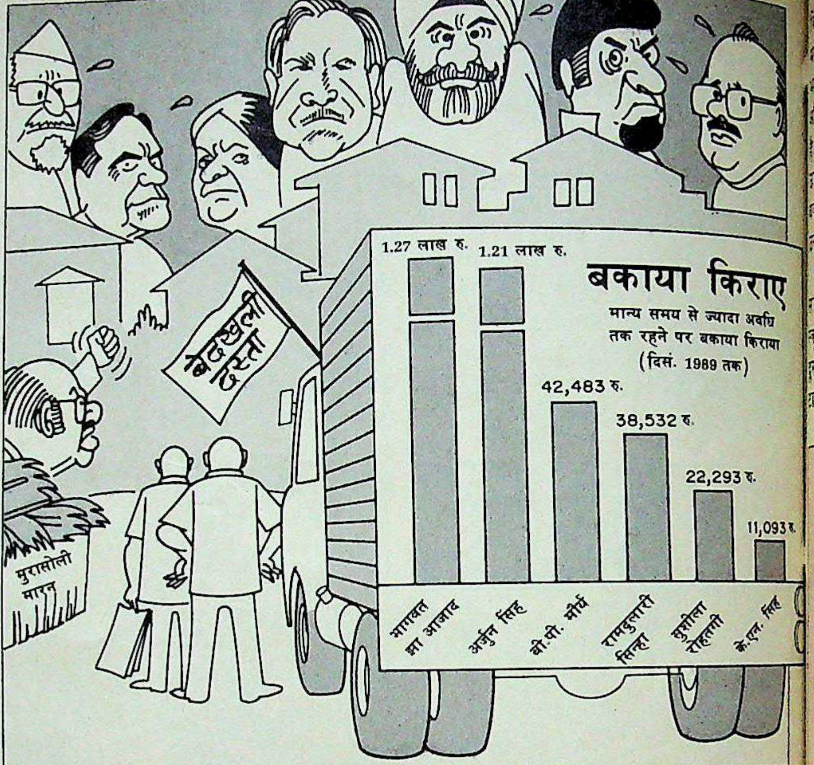

पूर्व सांसद

बेदखली का दर्द

बंगले खाली नहीं करना चाहते

इंका के महत्वाकांक्षी महासचिव के घर के हरे-भरे लॉन में हिरण कुलांचे भरते हैं. लेकिन रीढ़ की हड्डी के दर्द से उबर रहे गुलाम नबी आजाद के लिए यह घर कुछ ही दिनों बाद शायद स्मृति भर रह जाएगा. वजह: वे उन 290 पूर्व सांसदों में से हैं जिन्हें सरकारी घर खाली करने की नोटिस दे दी गई हैं.

कानून के मुताबिक, चुनाव में हार जाने या पद से हटने के एक महीने बाद सांसदों को सरकारी आवास खाली कर देना पड़ता है. ऐसा न करने पर सरकारी आवास कानून के तहत उन्हें नोटिस भेजी जाती है और फिर 15 दिन बाद घर को जबरदस्ती खाली करा लिया जाता है. लेकिन जाने-माने नेता बंगलों में आराम से पड़े रहते हैं.

आजाद कहते हैं, "घर तलाशने की बात तो दूर, दर्द के कारण मैं खड़ा भी नहीं हो सकता. पूर्व सांसदों को बंगले खाली करने के लिए लगभग छह महीने की मोहलत देने की परंपरा रही है. लेकिन इस सरकार ने अल्पकालीन नोटिस भेजकर प्रतिशोधात्मक रवैए का परिचय दिया है."

लेकिन 371 नए सांसदों को आवास मुहैया कराने के लिए सरकार के पास और कोई चारा भी नहीं है. जनता दल सांसद और लोकसभा आवास समिति के अध्यक्ष मानवेंद्र सिंह कहते हैं, "ऐसे लगभग 70 पूर्व मंत्री हैं जो विशाल सरकारी बंगलों पर कब्जा जमाए हुए हैं. इन बंगलों को खाली करवाना बहुत मुश्किल काम है."

बेदखली के लिए जारी की गई नोटिस इस मुश्किल भरे काम की शुरुआत भर है. ऐसे दो लोग तो अदालत का द्वार भी खटखटा चुके हैं. दिल्ली के पूर्व उपराज्यपाल रोमेश भंडारी ने अदालत से स्थगन आदेश भी हासिल कर लिया है. वे सरकारी बंगले में 15 मई तक रहना चाहते हैं जबकि स्थगन आदेश सिर्फ 8 मार्च तक के लिए है. सरकार को उम्मीद है कि इसके बाद वह बंगला खाली करवा लेगी. दिवंगत जगजीवन राम की पुत्री और पूर्व सांसद मीरा कुमार 6, कृष्ण मेनन मार्ग के बंगले को अपने पास तो रखना चाहती ही हैं, इसे अपने पिता का स्मारक बनाने पर भी जोर दे रही हैं. पर खुद को जगजीवन राम का राजनैतिक उत्तराधिकारी मानने वाले केंद्रीय श्रममंत्री रामविलास पासवान भी इसी बंगले पर अपनी आंखें गड़ाए हुए हैं.

जो सांसद चुनाव में हारने या सरकारी पदों से हटने के बाद भी सरकारी बंगलों में जमे रहते हैं, सरकार उनसे किराया वसूल करती है. फिलहाल कई इंका नेताओं पर

किराए की भारी-भरकम रकम बकाया है. ललन, अर्जुन सिंह पर 1.21 लाख रु., भागवत झा आजाद पर 1,26,989 रु. और ए.पी. शर्मा पर 95,000 रु. बकाया है. पूर्व पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री जियाउर्रहमान अंसारी पर लगभग एक लाख रु. बकाया है. इन पूर्व मंत्रियों पर बकाया रकम उनकी पेंशन से काटी जा सकती है.

लगभग 90 फीसदी पूर्व सांसदों ने सरकारी बंगलों को खाली करने के लिए स्कूल की छुट्टियों तक का समय मांगा है. दूसरी तरफ हरकिशनलाल भगत, जगदीश टाइटलर, राजेश पायलट और बूटा सिंह सरीखे पूर्व मंत्रियों का मानना है कि सरकारी बंगलों को छोड़कर दूसरी जगह रहना उनके लिए खतरे से खाली नहीं है. टाइटलर कहते हैं, "नई सरकार की खुफिया रिपोर्ट के मुताबिक आतंकवादी मुझ पर हमले की ताक में हैं. मैं रहने के लिए कोई सुरक्षित जगह चाहता हूं."

लेकिन जनता दल के एक प्रवक्ता ने इन सब बातों को महज बहानेबाजी करार दिया. उसके मुताबिक, "हम तो महज कानून का पालन कर रहे हैं. दरअसल, सत्ता से हटते और तामझाम छोड़ते हुए टीस पैदा होना स्वाभाविक है. यही वजह है कि ये लोग बंगले नहीं खाली कर रहे."

कई नए मंत्री सरकारी बंगलों में जाने और तामझाम का सुख बटोरने के इंतजार में हैं. के.पी. उन्नीकृष्णन को नटवर सिंह वाला (जिनका वसंत विहार में अपना मकान है), नाथूराम मिर्धा को टाइटलर वाला और अजीत सिंह को रोमेश भंडारी वाला सरकारी बंगला अलॉट हुआ है. वे उनके खाली होने का इंतजार कर रहे हैं. पी.उपेंद्र और इंद्रकुमार गुजराल को भी उपयुक्त सरकारी आवास नहीं मिला है. सो, यह मामला सुलटने तक वे 'बेघर' रहने को अभिशप्त हैं.

—शर्मिला चंद्रा

इंका

लफ्जों की लड़ाई

इंका में सरगर्मियां अचानक काफी तेज हो गई हैं. लंबी नींद से उठे पार्टी के महासचिव फिर से अखबारों की सुर्खियों में छाने को आतुर दिख रहे हैं.

एक्युपंक्चर चिकित्सा करा रहे गुलाम नबी आजाद ने अपने निवास पर संवाददाता सम्मेलन बुलाने शुरू कर दिए हैं. पिछले पखवाड़े बीमारी में ही उन्होंने यह आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह पिछली सरकार के रक्षा व्यय के बारे में तथ्यों को तोड़-मरोड़ रहे हैं. पत्रकार उनकी बातें सुनने के लिए आते रहें, यह पक्का करने के लिए उन्होंने लजीज कश्मीरी कबाब परोस डाले. कुछ ही दिनों बाद उन्होंने पत्रकारों को फिर न्यौता भेजा. लेकिन इस दफा उन्होंने विभिन्न मंत्रालयों से संबद्ध सलाहकार समितियों की बैठकों के बारे में पत्र सूचना कार्यालय की ओर से जारी विज्ञप्तियों की फोटोकापियां भर वितरित कीं. और बड़े ही मासूम अंदाज में उन्होंने कहा, "सभी मंत्रालयों ने पिछली सरकार के कामकाज की प्रशंसा की है. फिर हारने की नौबत ही क्यों आई?"

कहीं वे पीछे न रह जाएं, इस होड़ में केदारनाथ सिंह ने एक शाम संवाददाताओं के सामने कुछ बुर्काधारी औरतों और बच्चों को खड़ा कर दिया. उनका दावा था कि ये श्रीनगर में आतंकवादी हमलों और प्रशासनिक उपेक्षा के शिकार लोग हैं. उनकी इस दुर्दशा के लिए मुफ्ती मुहम्मद सईद को जिम्मेदार ठहराते हुए उन्होंने कहा, "मैं मुफ्ती पर देश की एकता को तोड़ने का आरोप लगाता हूं."

केदारनाथ यहीं नहीं रुके. दो दिन बाद ही वे पार्टी के नेताओं का एक प्रतिनिधिमंडल लेकर राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन से मिले और उन्हें पंजाब पर एक 'श्वेत पत्र' दे आए. इसके बाद वीर मुद्रा में उन्होंने घोषणा की कि बहुप्रचारित 59वां संविधान संशोधन विधेयक, जिसके तहत पंजाब में लागू आपातकालीन प्रावधानों को खत्म किया जाना है, अभी तक राष्ट्रपति की मंजूरी नहीं पा सका है.

लेकिन एक दिन बाद ही उनकी यह शेखी मातम में बदल गई और समूची पार्टी को इसके लिए शर्मिंदगी उठानी पड़ी. क्योंकि ठीक अगले दिन एक सरकारी प्रवक्ता ने बताया कि विधेयक को राष्ट्रपति के पास भेजे जाने के दूसरे ही दिन 6 जनवरी को मंजूरी मिल गई थी.

आजाद और केदारनाथ सिंह खबरों में बने रहने के लिए तीखी बोली बोलने लगे हैं. और गुटबंदी वाली इंका में अपनी जगह पर बने रहने के लिए ऐसा करना जरूरी भी है. खास तौर से जिस तरह एम.जे. अकबर इंका महासमिति के स्वयंसिद्ध प्रवक्ता के रूप में नाम कमा रहे हैं, उससे ये दोनों ही खासे चिढ़े बैठे हैं. और फिर वे राजीव गांधी को भी अपनी 'योग्यता से प्रभावित' करना चाहते हैं. जाहिर है पार्टी में फेरबदल की संभावना से उनमें स्फूर्ति आ गई है.

—भास्कर राय

शरद सक्सेना

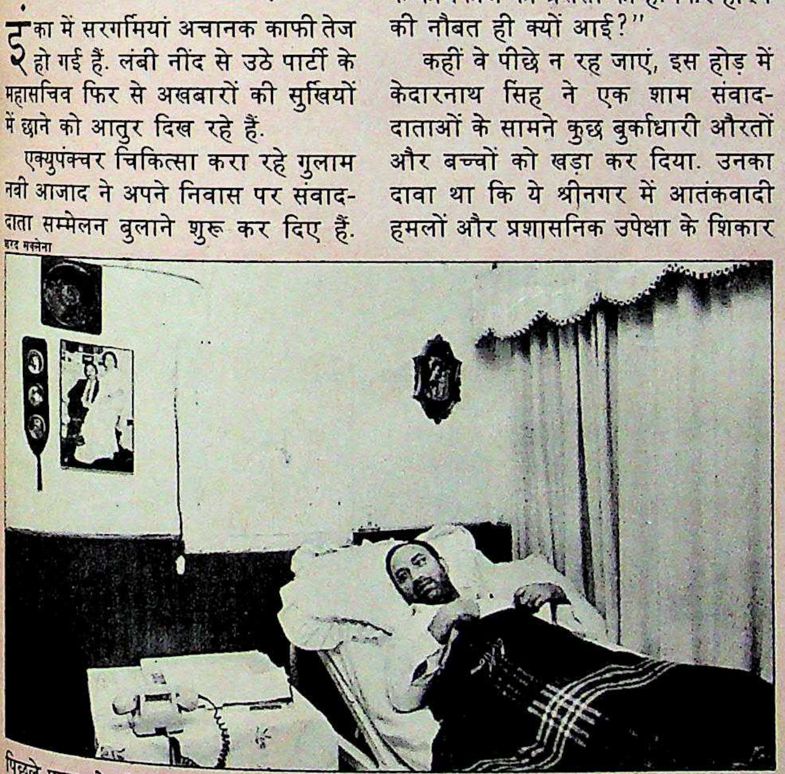

प्रमोद पुष्करणा

गुलाम नबी आजाद (बाएं) ; और केदारनाथ सिंहः नई स्फूर्ति

असम

समझौते का फंदा

अगप पर टूट पड़ा आसू

असम मानो विडंबनाओं के चक्रव्यूह में फंस गया है. साढ़े चार साल पहले असम गण परिषद (अगप) केंद्र सरकार से हुए समझौते की बदौलत सत्ता में आई. आज वही समझौता उसके गले की हड्डी साबित हो रहा है. इससे भी बड़ी विडंबना यह है कि आज राज्य सरकार के अस्तित्व को खतरा प्रतिद्वंद्वी दलों या बोडो उग्रवादियों की ओर से नहीं बल्कि अखिल असम छात्र संघ (आसू) से है. यही संगठन अगप का जनक है. और गौरतलब बात यह है कि आसू का मुख्य निशाना मुख्यमंत्री प्रफुल्ल कुमार महंत और गृह तथा समझौता कार्यान्वयन मंत्री भृगु फुकन हैं.

पिछले महीने आसू ने अगप सरकार को अंतिम चेतावनी दी कि वह 1985 के असम समझौते को लागू करने में अपनी ईमानदारी साबित करे वरना लोगों के गुस्से का सामना करने के लिए तैयार रहे. आसू के गुस्से का निशाना सिर्फ राज्य सरकार ही नहीं है. समझौते के कार्यान्वयन में जान-बूझकर टालमटोल करने के लिए केंद्र पर भी उसका नजला गिर रहा है.

दबाव डालने की इस नीति से कुछ हद तक ही सही, फायदा भी मिला. आसू प्रतिनिधियों से बातचीत के बाद केंद्रीय गृह सचिव शिरोमणि शर्मा और असम सरकार के मुख्य सचिव ए.पी. श्रवण ने 27 जनवरी को समझौते पर खास समय सीमा के भीतर अमल करने के करार पर हस्ताक्षर किए. आसू के मुखिया अतुल बोरा ने कहा, "अब समय सीमा तय हो जाने के बाद यह पता चल जाएगा कि वे कितने ईमानदार हैं."

आसू की शिकायत है कि बहिरागतों की पहचान करने, उनसे मताधिकार छीनने और उसके बाद उन्हें राज्य से बाहर भेजने से संबंधित असम समझौते की धाराओं पर अमल नहीं हुआ. संगठन के प्रचंड दबाव के कारण राज्य में लोकसभा चुनाव टाल दिए गए. संगठन का कहना था कि मतदाता सूचियों में बहिरागतों के नाम भरे पड़े हैं.

उधर फुकन समझौते पर अमल न हो पाने का दोष इंका के सिर मढ़ते हैं. उनका कहना है, "हम लोगों को बता रहे हैं कि यह हमारी गलती नहीं. केंद्र में इंका सरकार ने हमें कुछ करने की मंजूरी नहीं दी. अब हम केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से बातचीत चला रहे हैं और हालात बदलने लगे हैं."

समझौते पर अमल में मुख्य कठिनाई कानूनी पेचीदगियां हैं जिन्हें किसी बहिरागत को राज्य से निकाले जाने के पहले दूर करना होगा. दूसरे राज्यों के विपरीत यहां किसी व्यक्ति को बहिरागत साबित करना शिकायतकर्ता के जिम्मे है.

अब आसू के दबाव में असम सरकार ने केंद्र से इस कानून में संशोधन करने की मांग की है. 27 जनवरी को हुए करार के मुताबिक केंद्र को फरवरी के अंत तक इस कानून में संशोधन का फैसला कर लेना होगा. साथ ही 1971 के बाद आए लोगों की पहचान और उनको निकालने से संबंधित लटके पड़े जांच कार्य को भी 31 अक्तूबर 1990 तक पूरा करना होगा.

राज्य सरकार के स्तर पर नए करार पर अमल का जिम्मा फुकन का होगा जिन्हें हाल के मंत्रिमंडलीय फेरबदल के दौरान समझौता कार्यान्वयन विभाग सौंपा गया है. दरअसल यह विभाग अक्तूबर 1988 तक खुद मुख्यमंत्री के जिम्मे था. जब आरोप उछला कि उन्होंने इसके कार्यान्वयन की दिशा में कुछ नहीं किया तो उन्होंने यह विभाग जयनाथ शर्मा के जिम्मे कर दिया.

हालांकि जयनाथ शर्मा इस दिशा में अभी तक कोई पहल न हो पाने की बात का खंडन करते हैं. उनका दावा है कि राज्य में फिर बसने की गैरकानूनी कोशिश करने वाले 10,320 लोगों को बाहर भेजा जा चुका है और पिछले साल नवंबर तक 16,000 से अधिक मामले पंचाटों को सौंपे गए हैं.

लेकिन इन दावों से आसू का गुस्सा शांत करने में ज्यादा मदद मिलती नहीं दिखती. अब उनकी उम्मीद 27 जनवरी को हुए करार पर टिकी है. आसू के सचिव अमिताभ ठाकुरिया कहते हैं, "हमने उन्हें बता दिया है कि अगर नई समय सीमा के भीतर कुछ नहीं किया गया तो आसू नया आंदोलन शुरू करने पर मजबूर होगा."

अगर ऐसा हुआ तो अपने 25 लाख सदस्यों के बूते आसू राज्य प्रशासन को ठप कर सकता है. अगप के साथ इसका गठजोड़ अब पतली डोर से ही बंधा हुआ है. अगर यह डोर भी टूट जाती है तो अगप खुद को राजनैतिक बियाबान में भटकता पा सकती है.

—फरजंद अहमद, गुवाहाटी में

फुकन और महंत; (नीचे) असम आंदोलन का दौरः टूटे वादे

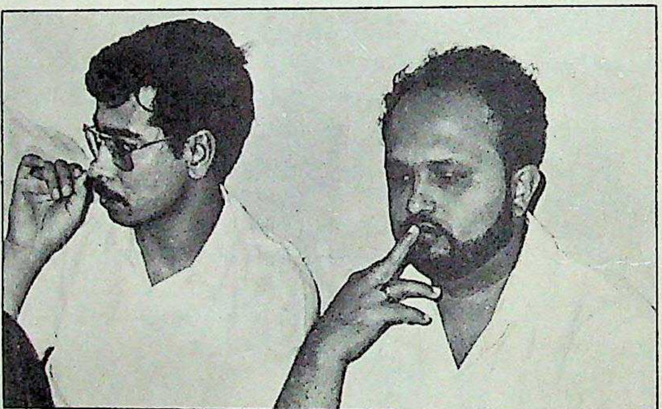

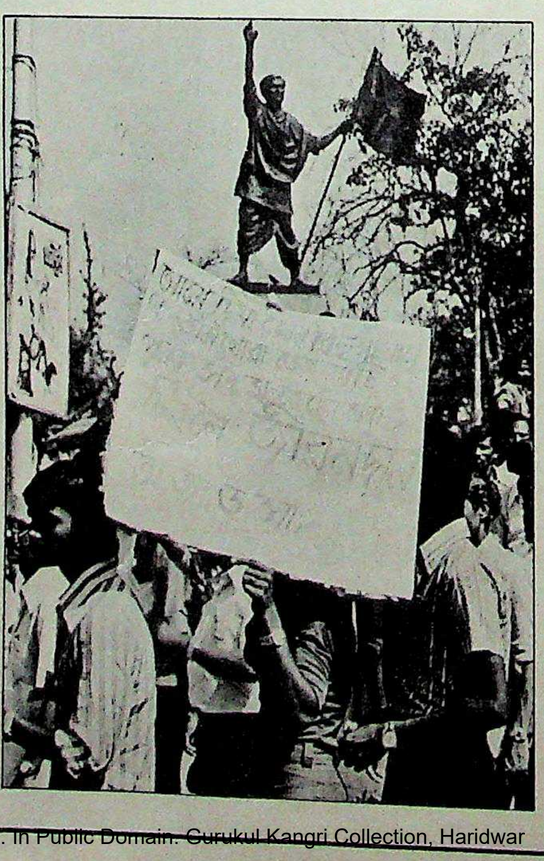

आंध्र प्रदेश

अधिकारी का आरोप

● पदभार संभालने के महज 12 दिन बाद आवास एवं नगर प्रशासन सचिव के पद से तबादले के विरोध में आवाज उठाकर एक वरिष्ठ आईएएस अधिकारी सी. अर्जुन राव ने नौकरशाही हलकों में सनसनी फैला दी है. मुख्यमंत्री चेन्ना रेड्डी से मुलाकात का समय न मिल पाने के बाद राव ने उन्हें 15 पन्नों की एक चिट्ठी में आरोप लगाया है कि उनके विभाग के मंत्री के. रंगाराव उन्हें खामख्वाह तंग कर रहे हैं. उनका कसूर महज यह है कि उन्होंने 36 ऐसी फाइलों की जांच की जिनमें मंत्री महोदय ने शहरी भूमि हदबंदी कानून के तहत कुछ लोगों को छूट दी है. अर्जुन राव का कहना है कि ऐसी छूट देने का अधिकार सिर्फ मुख्यमंत्री को है.

भाजपा महासचिव बांद्रू दत्तात्रेय ने जब मंत्री पर इस 'संदेहास्पद मामले' में शामिल होने का आरोप लगाया तो इसने राजनैतिक रंग ले लिया. रंगाराव ने इस्तीफे की पेशकश की. पर मंत्रिमंडल ने जांच आयुक्त को मामला सौंपने का फैसला किया.

तीन महीने की छुट्टी पर जाने से पहले अर्जुन राव ने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री के सचिव के.आर. परमहंस ने उन्हें और दूसरे अधिकारियों को चेन्ना रेड्डी से मुलाकात नहीं करने दी. यह सर्वविदित तथ्य है कि मुख्यमंत्री खुद भी नौकरशाहों से मेलजोल में रुचि नहीं रखते पर एक वरिष्ठ नौकरशाह की टिप्पणी थी, "मामला कुछ-कुछ ऐसे ही है जैसे मंदिर में आया नया पुजारी यही समझता है कि भगवान उसके ही हैं."

रंगाराव: संदेहास्पद फैसला

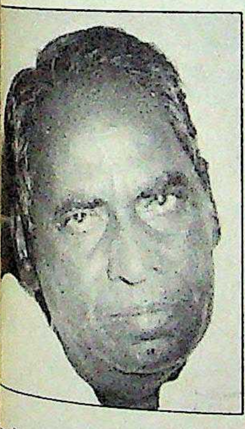

मध्य प्रदेश

संगमरमरी समस्या

आर.सी. साहू

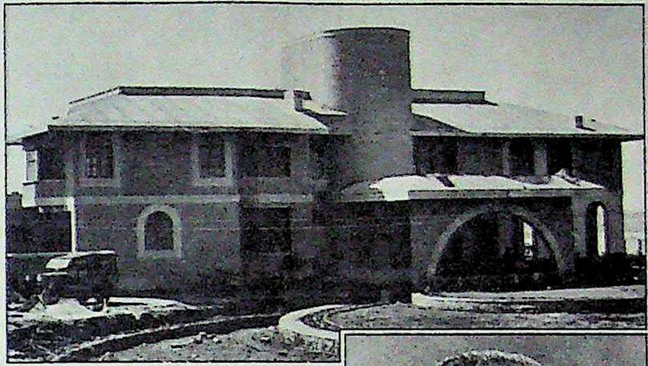

● मध्य प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और अब प्रदेश इंका अध्यक्ष अर्जुन सिंह के लिए आने वाले दिन मुश्किल भरे साबित होंगे. आयकर विभाग ने भोपाल में केरवा बांध के नजदीक 9,000 वर्गफुट में बने उनके आलीशान बंगले से संबंधित मामले की फाइल फिर खोल दी है. और इससे जुड़े कुछ ऐसे सवालों के जवाब उन्हें देने पड़ सकते हैं, जो उन्हें उलझन में डाल देंगे. उधर भाजपा नेता कैलाश जोशी द्वारा याचिका दायर किए जाने के बाद यह भी संभावना है कि अर्जुन सिंह से जुड़े चुरहट लॉटरी घोटाले की जांच कर रहा न्यायिक आयोग इस मामले की सुनवाई करे.

आयकर के अपने ब्यौरे में अर्जुन सिंह ने दावा किया था कि उनके संगमरमरी महल की लागत 17.60 लाख रु. है. लेकिन अधिकारियों का अनुमान है कि यह बंगला 60 लाख रु. से कम का नहीं. लोकायुक्त भी जांच कर रहा है कि अर्जुन सिंह के पास इस बंगले के लिए इतना पैसा कहां से आया.

लेकिन उनका कहना है, "आयकर विभाग को मैंने पूरा ब्यौरा दे दिया है. किसी और के सामने अपनी संपत्ति का खुलासा करना मेरे सिद्धांतों के खिलाफ है." यानी कड़े सुरक्षा प्रबंधों वाले इस आलीशान बंगले में सुख-चैन से दिन बिताने के लिए अर्जुन सिंह को अभी और इंतजार करना पड़ेगा.

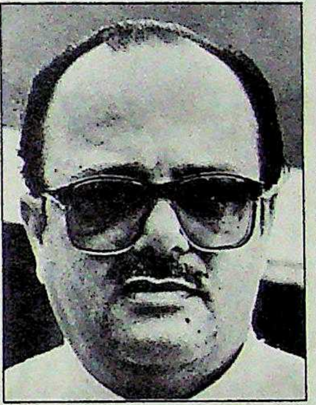

अर्जुन सिंह; और उनका महल: फिर खुली फाइल

केरल

अपहरण के बूते

● केरल में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) के समर्थक पिछले दिनों आतंकवादी तौर-तरीकों पर उतर आए. उन्होंने तिरुवनंतपुरम नगर निगम में संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चे (यूडीएफ) के दो पार्षदों का अपहरण कर लिया.

मकसद था—निगम की विभिन्न समितियों के लिए होने वाले चुनावों में वामपंथी लोकतांत्रिक मोर्चे (एलडीएफ) के उम्मीदवारों की जीत पक्की करना.

एलडीएफ को उस समय गहरा धक्का पहुंचा जब माकपा के वरिष्ठ पार्षद महापौर पद का प्रत्याशी न बनाए जाने से नाराज होकर विद्रोही उम्मीदवार के रूप में लड़े और यूडीएफ के समर्थन से चुनाव जीत गए. उप-महापौर भी एक बागी मार्क्सवादी ही चुना गया.-और तो और, छह पार्षद भी यूडीएफ में शामिल हो गए.

माकपा नहीं चाहती थी कि निगम की समितियों पर से उसकी पकड़ ढीली पड़े. शायद इसीलिए दो पार्षदों को अगवा करने का रास्ता चुना गया. इस चाल से एलडीएफ ने तीन में से दो समितियों पर कब्जा जमा लिया. चुनाव के बाद पार्षदों को तो मुक्त कर दिया गया लेकिन मार्क्सवादी नेताओं ने अभी तक इस घटना की निंदा नहीं की है.

बिहार

माफिया से मात

● धनबाद कोयला माफिया की कमर तोड़ने के केंद्र सरकार के प्रयास फिर नाकाम हो गए लगते हैं. सरकार की योजना थी कि बिहार में भारत कोकिंग कोल लिमिटेड (बीसीसीएल) द्वारा दिया जाने वाला 30 करोड़ रु. का कोयला ढोने का सालाना ठेका धनबाद के पूर्व सैनिकों की सहकारी संस्थाओं को दिया जाए.

पूर्व सैनिकों की नवगठित छह संस्थाओं को इस काम के लिए उचित कीमत से लेकर बुलडोजर और डंपर तक हर सुविधा दी गई. यह काम ठीकठाक चल रहा था कि धनबाद के उपायुक्त रामसेवक शर्मा ने अचानक पाया कि "ठेकेदारों ने पूर्व सैनिकों से नाम खरीदकर यह ठेका हथियाया हुआ है." यानी एक बार फिर माफिया ने सरकार को मात दे दी है.

रामसेवक शर्मा ने अधिकांश पूर्व सैनिकों को ढूंढ निकाला जिनके नाम पर ठेके दिए गए थे. इनमें दिल्ली के एक पूर्व सैनिक ने बताया कि अपना नाम बेचने के लिए उसे हर महीने 15,000 रु. मिलते हैं. एक दूसरी सहकारी संस्था को ठेका पूर्व केंद्रीय कोयला राज्यमंत्री सी.के. जाफर शरीफ के अतिरिक्त निजी सचिव द्वारा लिखे सिफारिशी पत्र के आधार पर दिया गया था. बीसीसीएल के मुताबिक तीन संस्थाओं को दिया ठेका रद्द कर दिया गया है और बाकियों के काम पर नजर रखी जा रही है.

कृष्णमुरारी किशन

धनबाद में अवैध खनन

अनसुलझा झगड़ा

पिछले 21 वर्षों से दो बड़ी कंपनियां, जिनमें एक भारतीय है और दूसरी अमेरिकी, कानूनी लड़ाई में उलझी हुई हैं. यह विवाद अभी जारी है. 1969 में अमेरिकी जनरल इलेक्ट्रिक कॉर्पोरेशन ने दावा किया कि बिड़ला समूह की हिंदुस्तान एल्यूमिनियम कॉर्पोरेशन की सहयोगी रेणुसागर बिजली कंपनी को टरबाइन की सप्लाई में 25 लाख डॉलर (उस समय के करीब 1.9 करोड़ रु.) का भुगतान बकाया है. कंपनी के कर्ताधर्ता इस दावे से सहमत नहीं थे. और वे भारत और दुनिया की कई अदालतों में चले इस मुकदमे में यही बात दोहराते रहे.

मिर्जापुर (उ.प्र) जिला अदालत से शुरू हुआ यह मामला इलाहाबाद, बंबई और दिल्ली के हाईकोर्टों में भी गया. बाद में इसे पेरिस और लंदन स्थित इंटरनेशनल चेंबर ऑफ कॉमर्स में भी उठाया गया. इस बीच यह रकम बढ़ते-बढ़ते 1.3 करोड़ डॉलर (करीब 22 करोड़ रु.) तक पहुंच गई है. अभी इस मामले का अंतिम फैसला नहीं हुआ है लेकिन सुप्रीम कोर्ट ने पिछले पखवाड़े बिड़ला समूह की इस कंपनी को इस राशि का आधा पैसा बंबई हाईकोर्ट के पास जमा कराने का फैसला सुनाया. साथ ही अमेरिकी कंपनी को इजाजत दी कि वह बैंक गारंटी देकर यह रकम निकाल सकती है.

मर्दों को लुभाएंगे

फैशन और सौंदर्य प्रसाधनों का बाजार अब भारतीय पुरुषों को लुभाने और उन्हें ग्राहक बनाने की तैयारी कर रहा है. मॉडर्न समूह की कंपनियां देश भर में मर्दों के लिए फैशन वाली 24 दुकानें खोल रही हैं. एमेडस सूटिंग की सफलता का लाभ लेते हुए कंपनी इसी नाम वाली अनेक चीजें पुरुषों के लिए ला रही है. इनमें रेडीमेट पैंट-कमीज, बेल्ट, शेविंग क्रीम, कोलोन, आफ्टर शेव लोशन और बाम शामिल हैं. ऐसी पहली दुकान अगले महीने इस कंपनी समूह के मुख्यालय, जयपुर में खुलेगी. कारोबार के इस नए क्षेत्र में हाथ लगाने के साथ ही इस समूह की कंपनी मॉडर्न सूटिंग्स को 1990-91 में अपना कारोबार 45 करोड़ से 60 करोड़ रु. तक बढ़ा लेने की उम्मीद है.

दक्षिण पर धावा

निजी क्षेत्र में दुग्ध सामग्री बनाने वाली कंपनी इंडाना दक्षिण भारत में भी कारोबार बढ़ाने जा रही है. 150 करोड़ रु. का कारोबार करने वाली इस कंपनी ने देश के उत्तरी और पश्चिमी क्षेत्र में इंस्टैंट कॉफी, घी और अचार के बाजार में अपनी स्थिति काफी अच्छी बना लेने के बाद बंगलूर और उसके आसपास 30 करोड़ रु. की लागत से पांच इकाइयां लगाने की सोची है. अगले साल के अंत तक इन इकाइयों में इंस्टैंट कॉफी, बिस्कुट, ब्रेड, चाय और पैकेटों में बंद तैयार खाना बनेगा. कंपनी का दावा है कि तीन वर्षों में कारोबार तीन गुना से अधिक हो जाएगा.

कर्ज मिलेगा कैसे

पिछले पखवाड़े भारतीय औद्योगिक ऋण एवं निवेश निगम ने बैंक ऑफ तोक्यो की मदद से हांगकांग में 7 करोड़ डॉलर (119 करोड़ रु.) का कर्ज उठाया. बाजार के सूत्रों के अनुसार कर्ज बहुत ही सुविधाजनक शर्तों पर मिला है. साथ ही बुरी खबर भी है. हो सकता है कि यह कर्ज आखिरी बार ही मिला हो. पांच वर्षों तक विदेशों में आसानी से कर्ज जुटाती रही भारतीय वित्तीय संस्थाओं को आसान शर्तों पर कर्ज उठाने में मुश्किलें आने लगी हैं. इसका कारण है अंतरराष्ट्रीय बैंकों द्वारा भारत के बढ़ते व्यापार और बजट घाटे के साथ ही विदेशी कर्ज का बोझ बढ़ जाने से सावधान हो जाना. वैसे अभी तक कर्ज लौटाने के मामले में भारत का रिकार्ड बहुत अच्छा रहा है लेकिन बैंक अब सूद की दरें बढ़ाने लगे हैं.

गांवों में भी असर

उपभोक्तावाद की पहुंच अब शहरी अमीर और मध्यम वर्ग तक ही नहीं रह गई है. अब इसके पांव तेजी से गांवों तक पसरते जा रहे हैं. वडोदरा स्थित बाजार अनुसंधान कंपनी, ऑपरेशन रिसर्च ग्रुप द्वारा किए गए एक अध्ययन से यही निष्कर्ष निकलता है. इस अध्ययन के अनुसार अब गांवों के लोग साबुन, टूथपेस्ट, शेविंग सोप-क्रीम, ब्लेड, रेजर, सौंदर्य प्रसाधनों और दूसरी उपभोक्ता सामग्रियों पर अधिक खर्च करने लगे हैं. इस अध्ययन के अनुमान के अनुसार 1984 से 1988 के बीच इन चीजों का ग्रामीण बाजार 733 करोड़ रु. से बढ़कर 1,500 करोड़ रु. तक पहुंच गया था. इस अध्ययन के दूसरे दिलचस्प नतीजे हैं कि सबसे तेजी से खपत उत्तरी क्षेत्र, फिर पश्चिम और दक्षिण में बढ़ी है लेकिन हैरत की बात यह है कि सौंदर्य प्रसाधनों की खपत गरीब माने जाने वाले पूर्वी क्षेत्र में भी उत्तर के बराबर थी.

चार्ट: बी के शर्मा

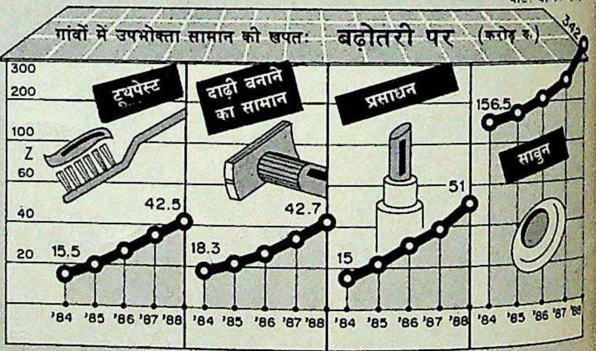

बड़े को बुलाया

बंबई स्थित एप्पल इंडस्ट्रीज के लिए काफी अच्छे दिन आने वाले हैं. देश में कंप्यूटर संबंधी कामकाज के लिए लोगों को प्रशिक्षण और जानकारी देने वाली इस कंपनी ने पिछले दिनों मीनू मोदी को अपनी संस्था में लाने में कामयाबी हासिल कर ली. मोदी ने पिछले साल टाटा समूह की कई कंपनियों के प्रबंधक मंडल से नाता तोड़ लिया था. नई कंपनी सांताक्रूज इलेक्ट्रॉनिक्स निर्यात संवर्द्धन क्षेत्र में जो निर्यातोन्मुख इकाई लगा रही है, उसके अध्यक्ष मोदी होंगे. कंप्यूटर सॉफ्टवेयर निर्यात करने वाली इस इकाई में साल के अंत तक उत्पादन शुरू हो जाएगा.

अर्थव्यवस्था

आसार अच्छे नहीं

उद्योगपतियों को बजट से बुरी खबर के अंदेशे

ये कोई उम्दा हालात नहीं हैं. पिछले साल के मध्य से भारतीय अर्थव्यवस्था के कई क्षेत्रों में गिरावट आने लगी थी. और फिलहाल उसके फिर मंजिल मार लेने के बहुत ही कम आसार नजर आ रहे हैं. कई कंपनी कर्ताधर्ताओं को तो यकीन है कि बजट उनके लिए बुरी खबर लाएगा. यानी करों का नया बोझ, आयात पर बंदिशें और नीतियों का ग्रामीण रुझान.

गिरावट के चिन्ह साफ दिख रहे हैं. 1987-88 और 1988-89 के बीच आशानुकूल ढंग से बढ़ा औद्योगिक मुनाफा इस साल कम हो सकता है. 1990-95 की आठवीं योजना की निश्चित रूपरेखा न बनने से भी गिरावट के मूड को बल मिला है. योजना कैसी और क्या होगी, इसका ठीक-ठीक पता अगस्त या सितंबर में ही लग पाएगा. तब तक योजना आयोग के मुख्यालय, योजना भवन में बैठने वाले आर्थिक विशेषज्ञ जुबानी जमा-खर्च करना ही पसंद करेंगे.

भयावह हदों को छू रहे बजट घाटे के चलते सरकार के सामने विकल्प कम हो गए हैं. फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स ऐंड इंडस्ट्री के महासचिव डी.एच. पई पणदीकर कहते हैं, "ज्यादा चिंता की बात तो यह है कि फौरी राजस्व खर्च पूरे करने के लिए हम पूंजी खाते पर ज्यादा से ज्यादा कर्ज लेते रहे हैं. इससे हमारी अर्थव्यवस्था तबाह हो चली है. ऐसी स्थिति ज्यादा दिन नहीं चल सकती." देश के विदेशी मुद्रा कोष की पतली हालत समस्या को और गंभीर बना देती है.

कंपनियों के कर्ताधर्ताओं को मालूम है कि सरकार की राजनैतिक बाध्यताएं उसे पूरी तरह गरीब समर्थक भूमिका अपनाने को विवश कर देंगी. टाटा ग्रुप के निदेशक एन.ए. सूनावाला कहते हैं, "इस बार उद्योगों के लिए किसी बड़ी रियायत की उम्मीद करना बेमानी होगा."

पिछले कुछ वर्षों में कई वस्तुओं के बाजार का तेजी से विस्तार हुआ है और कंपनियों की बिक्री और लाभ भी उसी तेजी से बढ़े हैं. बंबई के एक शोध संस्थान सेंटर फॉर मॉनीटरिंग द इंडियन इकॉनॉमी की पिछले पखवाड़े जारी रिपोर्ट से पता चलता है कि 1988-89 में भारत की निजी कंपनियों का कारोबार बहुत अच्छा रहा (देखें चार्ट). इसके अलावा चाय, कॉफी, रसायन, एल्यूमिनियम, टायर, पेपर और जहाजरानी जैसे उद्योगों ने भी पिछले साल उल्लेखनीय प्रगति दर्ज की.

लेकिन उदारवादी नीतियों के इस बहुचर्चित दौर में सभी क्षेत्र नहीं फले-फूले. कपड़ा मिलें और जूट की इकाइयां तो पिछले पांच सालों से घाटा ही दिखा रही हैं. मांग से अधिक उत्पादन क्षमता होने के कारण सीमेंट कंपनियां 1987-88 और 1988-89 में घाटे में चली गईं. इंजीनियरिंग उद्योग की कुछ इकाइयों ने भी उत्पादन धीमा कर दिया है. इधर, सार्वजनिक क्षेत्र की स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड का बिक्री योग्य स्टील का उत्पादन पिछले दो वर्षों से स्थिर है.

दूसरे आंकड़े भी मंदी के ही सूचक हैं. रिजर्व बैंक द्वारा जारी ताजा आंकड़े बताते हैं कि नवंबर से जनवरी अंत तक बैंकों ने उद्योग और व्यापार को 3,000 करोड़ रु. से कुछ ही ज्यादा उधार दिया जो कि 1988-89 के इसी दौर में दी गई रकम का आधा है. 'इंस्टीट्यूट ऑफ इकॉनॉमिक ग्रोथ' के प्रोफेसर वी.बी. भट्टाचार्य बताते हैं, "बैंक उधार की रकम में कमी की एक बड़ी वजह यह है कि बैंक में जमा खातों की वृद्धि दर पहले से बहुत कम हो गई है."

बैंक उधार में आई कमी की कुछ भरपाई शेयर बाजार से की जा सकती थी. लेकिन संसाधनों की कमी वास्तविक है और सभी इसे महसूस कर रहे हैं. हाल ही में प्रस्तावित कुछ पूंजी प्रधान बड़ी परियोजनाएं फाइलों से शायद ही बाहर आ पाएं. मसलन, तीन-तीन हजार करोड़ रु. के निवेश वाली प्रस्तावित आठ पेट्रोरसायन परियोजनाओं में से अगले पांच वर्षों में पांच के ही शुरू होने की उम्मीद है. इसी तरह विचाराधीन छह उर्वरक परियोजनाओं में से आठवीं योजना के दौरान केवल तीन ही के शुरू हो पाने की उम्मीद है.

केंद्र और सरकार के निवेश योग्य संसाधनों के आधे भाग को ग्रामीण क्षेत्र के लिए सुरक्षित रखने की सरकार की मंशा को देखते हुए उद्योग अपने पांव सिकोड़ने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो गए हैं. योजना आयोग के उपाध्यक्ष रामकृष्ण हेगड़े कहते हैं, "हम निजी और सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों से उम्मीद करते हैं कि वे खुद-ब-खुद अतिरिक्त संसाधन जुटाएं और अपनी आर्थिक जरूरतों के लिए वित्तीय संस्थाओं के पास जाएं. हम घाटे वाले सरकारी उपक्रमों को आर्थिक मदद देने का रिवाज घटाना चाहते हैं."

लेकिन कई अर्थशास्त्रियों का कहना है कि सरकार ऐसे भावुक उद्गार पहले भी उच्चार चुकी है. हालांकि इन्हें लागू करने के लिए उसने कुछ नहीं किया. एक बात और, यदि पूंजी के बड़े भाग को ग्रामीण क्षेत्र की ओर मोड़ा गया और सार्वजनिक निवेश के मौजूदा ढांचे में बड़े परिवर्तन किए गए तो कई उद्योगों में मंदी आ सकती है.

आठवीं योजना की आधी-अधूरी तैयारी और अनिश्चय भरी चर्चा ने अर्थव्यवस्था की अनिश्चितता को बढ़ाया ही है. योजना

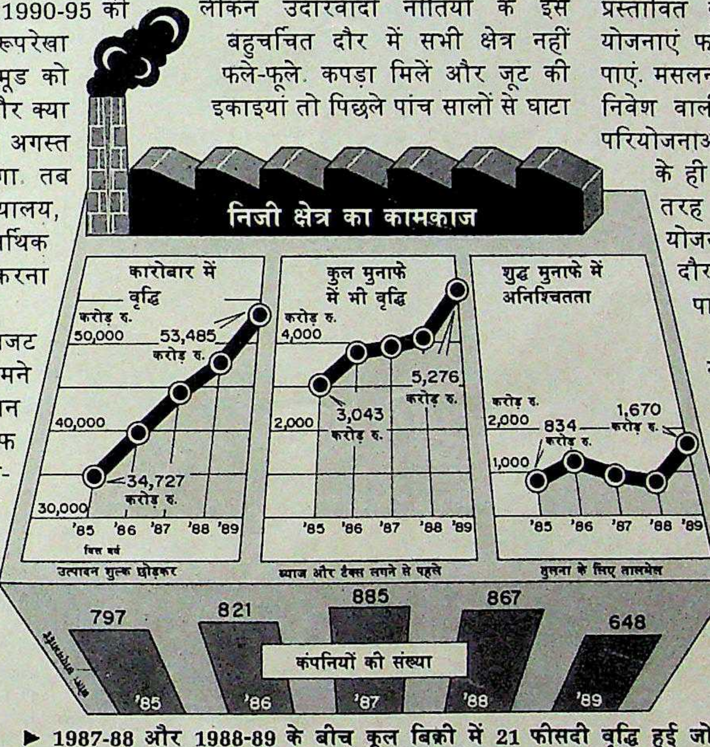

▶ 1987-88 और 1988-89 के बीच कुल बिक्री में 21 फीसदी वृद्धि हुई जो पिछले पांच साल में सर्वाधिक है.

▶ 1988-89 में शुद्ध लाभ 58 फीसदी बढ़ा जबकि 1986-87 और 1987-88 में इसमें क्रमशः 9 फीसदी और 6 फीसदी कमी आई थी.

▶ 1988-89 में करीब 400 कंपनियों ने संपत्ति बढ़ाने पर 9,151 करोड़ रु. खर्च किए यानी इस मद में 115 फीसदी की वृद्धि हुई.

आयोग के एक सदस्य से जब पूछा गया कि निवेश की क्षेत्रवार योजना क्या होगी तो उनका जवाब था, "सच पूछिए तो मैं इस बारे में कुछ नहीं जानता." उसकी यह स्वीकारोक्ति योजना के स्वरूप की पूरी व्याख्या कर देती है.

ग्रामीण क्षेत्र के लिए रखी गई अतिरिक्त रकम किस तरह खर्च की जाएगी, इस बारे में सरकार के भीतर भी एक राय नहीं. कृषि एवं सहकारिता विभाग के अगले वर्ष की खर्च योजना की बहस के ताजा दौर में एक रोचक विवाद खड़ा हो गया. उप-प्रधानमंत्री और कृषिमंत्री देवीलाल का कहना था कि वर्ष 1990-91 के लिए इस विभाग की खर्च योजना चालू वर्ष के 850 करोड़ रु. के मुकाबले 1,250 करोड़ रु. से कम नहीं होनी चाहिए.

इस पर केंद्र सरकार के सचिवों के एक गुट ने तय किया कि यह रकम घटाकर 1,060 करोड़ रु. की जानी चाहिए. और मामला अंततः जब योजना आयोग के सामने आया तो उसने फैसला दिया कि यह रकम 905 करोड़ रु. से ज्यादा नहीं होनी चाहिए. उनका तर्क था कि जो ताजा संकेत मिले उनके हिसाब से तो वर्तमान वित्तीय वर्ष में यह विभाग 800 करोड़ रु. से ज्यादा नहीं खर्च कर पाएगा. फिर ज्यादा पैसे की मांग करने का क्या फायदा? योजना आयोग के इस सवाल का 'ताऊ' के पास कोई जवाब नहीं था.

यानी सरकार चाहे तो भी निश्चित योजनाओं के अभाव में कृषि पर और खर्च नहीं कर पाएगी. एक अधिकारी कहते हैं, "रोजगार के अवसर पैदा कर आर्थिक उन्नति और ग्रामीण विकास पर ज्यादा खर्च करने की बात सुनने में तो बड़ी सुहावनी लगती है लेकिन इसे पूरा करना उतना ही मुश्किल है."

सरकार ने रोजगार के अवसर बढ़ाने, मुद्रास्फीति रोकने, ग्रामीण क्षेत्रों पर और ज्यादा खर्च करने, योजना प्रक्रिया का विकेंद्रीकरण, हथकरघे और कुटीर उद्योग को प्रोत्साहन और लघु उद्योगों के क्षेत्र में बड़े उद्योगों की घुसपैठ रोकने जैसी घोषणाएं तो बड़ी शान से कीं लेकिन इन्हें अमल में कैसे लाया जाए, इसका ठीक-ठीक पता नहीं. फिर भी यह तो स्पष्ट है कि योजना के कार्यक्रमों को लागू करने के लिए राज्य सरकारों और स्थानीय निकायों को ज्यादा अधिकार दिए जाएंगे. योजना आयोग की सदस्य इला भट्ट कहती हैं, "हमने ठीक-ठीक स्वरूप तो अभी नहीं बनाया लेकिन कुछ मामलों में हमारी नीति तय है. पहली तो यह कि पंचायतों को उनकी योजनाएं लागू करने के लिए पैसा दिया जाएगा. दूसरे, ग्रामीण स्तर की योजनाओं पर निगरानी का काम न दिल्ली से किया जा सकता है, न किया जाएगा."

ऐसा ही होना भी चाहिए. लेकिन सरकार की बहुप्रचारित रोजगार गारंटी योजना का क्या होगा? हेगड़े का कहना है कि इस योजना के लिए 5,000 करोड़ रु. से लेकर 8,000 करोड़ रु. तक हर साल खर्च किए जाने की बातें हैं. जो हो, सरकार अगले साल जवाहर रोजगार योजना और इसी तरह की दूसरी योजनाओं के लिए आबंटित रकम से 1,500 करोड़ रु. ज्यादा खर्च करेगी. रोजगार की गारंटी देने वाले कार्यक्रम की औपचारिक घोषणा प्रधानमंत्री शायद मार्च में करें. तब तक कुछ महत्वपूर्ण परिवर्तन हो जाने चाहिए.

बजट पेश करने के अलावा देश के मुख्यमंत्रियों की राष्ट्रीय परिषद के सामने आठवीं योजना की रूपरेखा संबंधी प्रारंभिक मसौदा भी रखा जाना चाहिए था, आयात-निर्यात नीति तय की जानी चाहिए थी. इसके अलावा उम्मीद है कि सरकार पेट्रोल की कीमतें बढ़ाएगी (डीजल और मिट्टी के तेल की कीमतें नहीं).

ये सब भावी संकट के ही संकेत हैं. जैसी कि एक जाने-माने उद्योगपति की टिप्पणी थी, "इस बार हम एक दूसरे तरह के सूखे की उम्मीद कर रहे हैं." लेकिन क्या देश इस सदी के सबसे भयकर सूखे से उबर नहीं गया?

—परंजय गुहा ठाकुरता और एस.एन. वासुकि

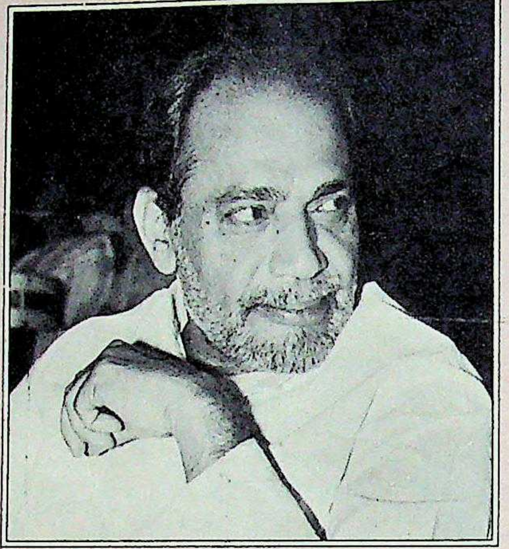

रामकृष्ण हेगड़े

'हमारे पास संसाधन बहुत ज्यादा नहीं हैं'

योजना आयोग के उपाध्यक्ष की अपनी नई भूमिका में कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री 63 वर्षीय रामकृष्ण हेगड़े खुद को असंभव मांगों की गिरफ्त में पा रहे हैं. ये मांगें सिर्फ केंद्रीय मंत्रियों की ओर से ही नहीं बल्कि देश भर के मुख्यमंत्रियों की ओर से भी उठती हैं. प्रमुख संवाददाता ***परंजय गुहा ठाकुरता*** *से हुई उनकी बातचीत के अंश:*

● ***1990-91 की वार्षिक योजना पर:***

आगामी साल की योजना में नई सरकार की प्राथमिकताओं को पूरी तरह से दर्शाना संभव नहीं है. एक शुरुआत भर की गई. पिछले साल केंद्र और राज्य के कुल निवेश का करीब 37-38 फीसदी ही ग्रामीण क्षेत्र में लगाया गया लेकिन हम 1990-91 में ही इस आंकड़े को 50 फीसदी के आसपास पहुंचाना चाहते हैं.

● ***इस पर कि क्या कुछ नई रासायनिक खाद और पेट्रोरसायन परियोजनाओं पर कैंची चलेगी:***

हमारा जोर पहले से जारी परियोजनाओं को पूरा करने पर होगा. मैं कुछ खास परियोजनाओं पर देर होने या मंजूरी न दिए जाने की संभावना को नहीं नकारता क्योंकि हमारे पास संसाधन बहुत ज्यादा नहीं हैं. फिर बढ़ते कर्ज से भी हमें निबटना है.

● ***आठवीं योजना के प्रारंभिक मसौदे में प्रधानमंत्री द्वारा फेरबदल के सुझाव पर:***

उन्होंने कहा कि हमारी प्राथमिकताओं और रणनीतियों, विचारधारा और दर्शन का बयान करना तो बहुत अच्छा है पर हम क्या चाहते हैं उसके लिए कुछ आंकड़ों और उद्देश्यों को बताना जरूरी है. अब हम उनके सुझाव प्रारंभिक मसौदे में जोड़ रहे हैं.

शेयर बाजार

मंदी ने मारा

वित्तीय संस्थान बेअसर रहे

फरवरी के पहले पखवाड़े जब देश के शेयर बाजारों ने मंदी के गहरे गोते लगाए तो विभिन्न शेयर बाजारों के प्रमुखों ने मिलकर वित्तमंत्री मधु दंडवते से आग्रह किया कि वे वित्तीय संस्थानों को बाजार में सक्रिय होने के निर्देश दें ताकि शेयर कीमतों को और नीचे जाने से रोका जा सके. दंडवते ने उनका आग्रह माना और कुछ अरसे से हाथ पर हाथ धरे बैठे ये संस्थान हरकत में आ गए. इसके बावजूद शेयर बाजार का मिजाज हताशा भरा था.

इकॉनॉमिक टाइम्स का अखिल भारतीय शेयर सूचकांक 9 फरवरी के 391.1 के बिंदु से उठा और एक हफ्ते बाद 405.9 के बिंदु पर जा पहुंचा. बंबई शेयर बाजार का 100 शेयरों वाला राष्ट्रीय सूचकांक इस अवधि में 369.95 के बिंदु से 384.94 पर जा पहुंचा. पर 19 फरवरी को बाजार फिर गोते लगा रहा था (देखें चार्ट).

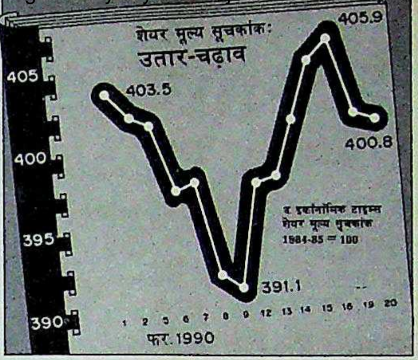

चार्ट: बी.के. शर्मा

जाहिर है कि संस्थानों का यह 'नियंत्रित' समर्थन बाजार में रंगत लाने के लिए नाकाफी था. फिर, चंद रोज पहले ही वित्तमंत्री ने इन संस्थानों पर 'गैरजिम्मेदार' तरीके से काम करने और सटोरियों की तरह दांव लगाने का आरोप लगाया था, इसलिए इन संस्थानों की सक्रियता में भी हिचक थी. सरकार अपनी आर्थिक नीति या वित्तीय प्रस्तावों पर कोई स्पष्ट बयान दे देती तो शायद यह संकट टल जाता. बजट आने वाला हो तो निश्चित आश्वासनों की भी खास जरूरत नहीं होती बल्कि राहत देने वाले कुछ संकेत ही अनिश्चितता ठंडी कर सकते हैं. पर ऐसा नहीं हुआ.

अगर संस्थानों की औपचारिक कोशिशों के बाद भी बाजार में रौनक नहीं लौटी तो कोई हैरत नहीं. इसलिए जैसा कि होना भी था—पिछले पखवाड़े निवेश के मकसद से होने वाली खरीद नहीं के बराबर ही हुई. हालांकि सटोरियों ने एसोसिएटेड सीमेंट व टेल्को जैसे कुछ चुनींदा शेयरों की खरीद पर हल्ला जरूर बोला. एसोसिएटेड सीमेंट ने जैसे ही अपने मृतप्राय संयंत्रों से पीछा छुड़ाने का फैसला किया, उसके शेयरों ने तेजी का रुख पकड़ लिया. पुणे इकाई में भीषण श्रमिक समस्या के बावजूद टेल्को ने काफी अच्छा मुनाफा कमाया जिससे उसके शेयर भी चढ़ गए.

लेकिन सटोरिए अगर खरीद रहे थे तो वे बेच भी रहे थे. सेंचुरी स्पिनिंग तक के शेयर लुढ़क रहे थे और वे 60 रु. का घाटा खाकर 2,640 रु. पर पहुंच गए. नोसिल के ठाणे संयंत्र का मामला लटक जाने की वजह से उसके शेयरों को भी पखवाड़े भर में 10 रु. की मंदी का शिकार होना पड़ा. रिलायंस और लार्सन ऐंड टुब्रो के शेयरों के फिर उठ खड़े होने का कोई संकेत नहीं दिखा.

और जब बाजार की सारी खरीद-फरोख्त ठहरो और देखते रहो के सूत्र पर टिकी हुई है, शेयरों की कीमतों का बेमकसद गिराव बरकरार है. क्या यह बजट-पूर्व का परंपरागत मिजाज ही है? अगले पखवाड़े शायद यह ज्यादा स्पष्ट हो.

मा स्टॉक

	1990 ऊंचा	1990 नीचा	बंद 20.2.90	पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
ोक लेलैंड	99.00	77.00	77.00	6.50 −
सोसिएटेड सीमेंट	355.00	320.00	338.00	10.50 +
शियन पेंट्स	255.00	207.50	215.00	1.25 +
टलस कोप्को	48.00	38.00	40.00	1.00 +
जाज ऑटो	417.50	377.50	391.25	1.25 +
ड़ौदा रेयॉन	817.50	655.00	657.50	47.50 −
टा इंडिया	77.50	65.00	66.00	1.00 −
ल्लारपुर	155.00	122.00	130.00	4.00 +
रत फोर्ज	93.75	85.00	91.25	1.25 +
रला जूट	66.00	50.50	55.00	2.50 +
म्बे डाइंग	231.00	184.00	188.00	6.00 −
टानिया इंडिया	119.00	97.00	105.00	5.00 +
क बांड	107.00	91.00	98.50	5.50 +
चुरी स्पिनिंग	2840.00	2420.00	2460.00	60.00 −
[illegible] इंडिया	92.00	82.50	85.50	1.00 +
लगेट पामो.	196.25	176.25	183.75	1.25 +
नामिड	115.00	86.25	95.00	2.50 +
सीएम	53.50	47.75	48.50	0.25 +
नलप	75.50	57.00	59.00	1.00 −
होटल्स	65.25	58.00	62.00	1.00 +
स्कॉर्ट्स	88.00	77.75	80.00	1.00 +
नोलेक्स केबल्स	282.50	232.50	232.50	12.50 −
फैसिलिटीज	122.00	101.75	103.50	—
रवारे नाइलोन	69.00	53.00	53.00	2.00 −
.ई. शिपिंग	54.75	44.00	44.50	1.50 −
जरात स्टेट फर्टि.	185.00	155.00	167.50	5.00 +
[illegible] इंडिया	129.00	106.00	108.50	0.25 +
न्दु. एल्युमिनियम	270.00	217.50	217.50	7.50 −
सीबा	1660.00	1090.00	1140.00	20.00 −
[illegible] इंडिया	172.50	133.75	140.50	3.25 −
न्दुस्तान लीवर	117.50	101.00	105.50	2.50 +
न्दुस्तान मोटर्स	31.30	22.10	23.60	0.90 −
सी.आई.	49.50	36.00	39.50	3.50 +
डियन आर्गेनिक	58.75	47.00	52.00	2.00 −
डियन रेयन	108.00	84.00	88.00	1.50 +
इंड्रॉल	246.25	181.25	181.25	18.75 −
इंगरसॉल-रैंड	245.00	190.00	217.50	15.00 +
आई.टी.सी.	64.00	48.75	52.00	1.00 +
जे.के. सिंथेटिक्स	67.00	52.00	54.00	—
काइनेटिक इंजी.	155.00	137.50	145.50	2.00 −
किर्लोस्कर क्युमिंस	90.00	65.00	75.00	6.25 +
केएसबी पंप्स	210.00	190.00	202.50	5.00 −
लारसन-टुब्रो	85.00	60.00	60.00	5.00 +
लिप्टन	112.00	84.00	86.50	1.50 +
लोहिया-मशीन्स	21.00	15.00	17.50	1.50 +
मदुरा कोट्स	111.00	107.00	108.00	1.00 +
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	67.50	76.25	1.25 +
मिल्क फूड	280.00	207.50	220.00	—
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	785.00	820.00	—
मुकुंद लिमि.	157.00	127.00	131.00	—
नेशनल आर्गेनिक	1660.00	1240.00	1260.00	10.00 −
निरलॉन	22.00	14.00	14.00	2.00 −
ओरके सिल्क मिल्स	20.50	15.25	15.75	0.25 −
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	32.50	24.00	25.50	—
फाइजर	113.75	81.25	86.50	0.25 +
पांड्स	230.00	185.00	197.00	4.50 +
प्रीमियर ऑटो	74.50	62.00	63.25	1.25 −
रेमंड	76.00	70.00	75.00	2.00 +
रिलायंस इंडस्ट्रीज	90.00	54.50	55.50	3.50 −
सीमेंस इंडिया	120.00	96.00	104.00	2.00 +
शॉ वैलेस	92.00	70.00	75.00	2.00 +
श्रीराम फाइबर्स	71.00	51.25	54.00	0.50 −
एसकेएफ बैयरिंग्स	1570.00	1240.00	1280.00	20.00 −
स्पिक	62.00	50.75	53.50	2.00 +
टाटा स्टील	119.75	103.25	105.00	0.75 −
टेल्को	130.00	110.00	115.50	3.25 +
वाम ओर्गेनिक	167.50	135.00	137.50	—
वीडियोकोन	192.50	145.00	150.00	5.00 −
वोल्टास	785.00	630.00	677.50	27.50 +
विमको	32.50	20.00	20.00	2.75 −

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.0574	12.9126
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	144.3705	143.7587
बहरीन	दीनार	1	45.7012	44.6409
बांग्लादेश	टका	100	54.4062	53.0110
कनाडा	डालर	1	14.2935	8.4839
डेनमार्क	क्रोना	1	2.6579	2.6292
मिस्र	पौंड	1	6.6945	6.6135
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.0675	2.9895
हांगकांग	डालर	1	2.1948	2.1722
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9484	0.9336
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.3843	1.3669
जापान	येन	100	11.9474	11.6550
केन्या	शिलिंग	1	0.7934	0.7846
कुवैत	दीनार	1	58.4913	56.5451
मलेशिया	डालर	1	6.3462	6.2793
मारीशस	रुपया	1	1.1580	1.1423
नेपाल	रुपया	1	0.5982	0.5900
हालैंड	गिल्डर	1	9.0966	8.9992
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8065	0.7975
सिंगापुर	डालर	1	9.2214	9.1251
स्पेन	पेसो	1	0.1594	0.1571
श्रीलंका	रुपया	1	0.4290	0.4245
स्वीडन	क्रोना	1	2.7992	2.7691
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	11.5930	11.4673
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1008	0.0942
थाईलैंड	बहृत्त	100	67.2077	65.7501
ब्रिटेन	पौंड	1	29.2184	29.0023
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	17.1380	16.9635
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.6685	4.6172
सोवियत संघ	रूबल	1	27.6196	27.3165
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.3950	10.1317

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 22.2.90

सभी फोटो: प्रशांत पंजियार

नेपाल

राजा के खिलाफ प्रजा

लोकतंत्र समर्थक आंदोलन को प्रबल जनसमर्थन

नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर में शिवरात्रि को उत्सव का माहौल था. पर इस बार भीड़ कम थी. वहां चल रहे आंदोलन की खबरों के कारण भारत और नेपाल के दूसरे भागों से तीर्थयात्री नहीं आए. तभी मुट्ठी भर लोकतंत्र समर्थक जाने कहां से प्रकट हुए और नारे लगाने लगे. पुलिस थाने पर बड़ी तादाद में मौजूद सशस्त्र पुलिस ट्रक से कूद पड़ी. लाठियां घूमने लगीं, गुस्से भरी चीखें सुनाई दीं और प्रदर्शनकारी जैसे प्रकट हुए थे, वैसे ही गायब हो गए.

पिछले पखवाड़े के आखिरी दिनों में, बहुदलीय लोकतंत्र की मांग कर रहे नेपाली कांग्रेस और वामपंथी दलों के संयुक्त मोर्चे पर सरकार ने अपना कठोर दमन चक्र चलाया. करीब 2,000 गिरफ्तारियों में विपक्ष के बड़े नेता भी शामिल हैं. 11 व्यक्तियों के मारे जाने की सरकारी और 30 की मृत्यु की गैर-सरकारी संख्या के साथ 'जन मुक्ति आंदोलन' कठिन दौर में प्रवेश कर गया है. हालांकि प्रदर्शनों में समन्वय का अभाव है लेकिन उनसे जाहिर होता है कि इस बार अधिकांश जनता आंदोलन के साथ है. नेपाली कांग्रेस की तीन दशक लंबी लड़ाई में जनता की ऐसी भागीदारी पहली बार देखने में आई.

इस बार आंदोलन इसलिए भी पैना हो गया क्योंकि नेपाली कांग्रेस के साथ सात दलीय वामपंथी मोर्चा भी है. नेपाली कांग्रेस के सर्वेसर्वा गणेश मान सिंह (देखें बातचीत) कहते हैं, ''गुलामी का जुआ उतार फेंकने के लिए यह हमारी निर्णायक और अंतिम लड़ाई है.''

पूर्व वित्त सचिव और नेपाल के मानवाधिकार संगठन के सक्रिय नेता 50 वर्षीय देवेंद्रराज पांडे कहते हैं, ''पूरी दुनिया में बदलाव

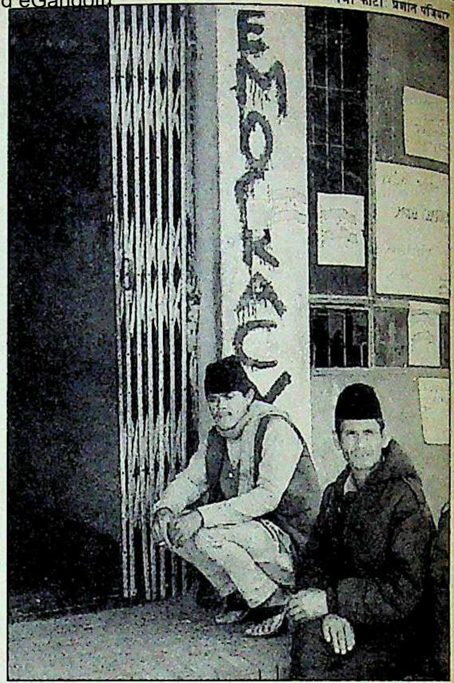

सरकार इसे उग्रवादी हाथों में चला गया आंदोलन बताती है

काठमांडो में धरपकड़; (ऊपर) लोकतंत्र का नारा

रहा है. लेकिन हमारे राजा के दिक्कत यह है कि उन्हें नेपाल निया से अलग दिखाई देता है.''

ठन ने पुलिस उत्पीड़न के मामले किए हैं. सरकार का दावा है कि वादी आंदोलन' से निबटने के मजबूरन बल प्रयोग करना ता है. सरकार का कहना है कि दोलन हिसावादी वामपंथियों के में पहुंच गया है. संचार राज्य- , 38 वर्षीय कमल थापा कहते "उग्रवादियों के साथ समझौता व नहीं है.'' लेकिन वे आंदोलन लोकप्रियता स्वीकार करते हैं.

भारत सरकार के बयानों से महल में चैन की सांस ली जा है. पर्यवेक्षकों को याद है कि ही दिन पहले राजीव गांधी की गई आलोचनाओं का राजमहल ने सख्त रुख दिया. राजा ने भारत के राजदूत ले. जनरल (सेवा-) एस.के. सिन्हा के परिचय दो सप्ताह इंतजार कराने के स्वीकार किए. बाद में रुख हो गया. सिन्हा राजीव आलोचना करने के कुछ ही दिन 21 फरवरी को विमान से पहुंचे और 24 घंटे के भीतर पोखरा जाकर अपना परिचय पत्र पेश किया. राजा वहीं आराम कर रहे थे. एक वरिष्ठ अधिकारी के अनुसार, "राजाशाही के पूरे इतिहास में पहली बार राजा ने किसी राजदूत का परिचय पत्र काठमांडो से बाहर प्राप्त किया.'' सिन्हा को राजा के साथ 40 मिनट तक एकांत वार्ता का मौका दिया गया.

राजमहल की कोशिश है कि भारत के साथ जल्दी ही समझौता हो जाए ताकि आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार हो सके. आर्थिक स्थिति को इस ताजा असंतोष का मुख्य कारण माना जा रहा है.

लेकिन भारतीय नजरिए से मौजूदा हालात सामान्य से बहुत दूर हैं. लोकतांत्रिक संगठनों को भारत राजा की तरफ झुकता लग रहा है. विदेश मंत्रालय के अधिकारी इस दुविधा को स्वीकार करते हैं, "अगर हम लोकतांत्रिक संगठनों की मदद करें और वे अगले 10 साल और सत्ता में न आ सके, तो क्या होगा? और अगर हम राजा से संबंधों को निभाते रहे और 10 साल बाद वे सत्ता में न रहे तो?''

नक्शा: वी.के. शर्मा

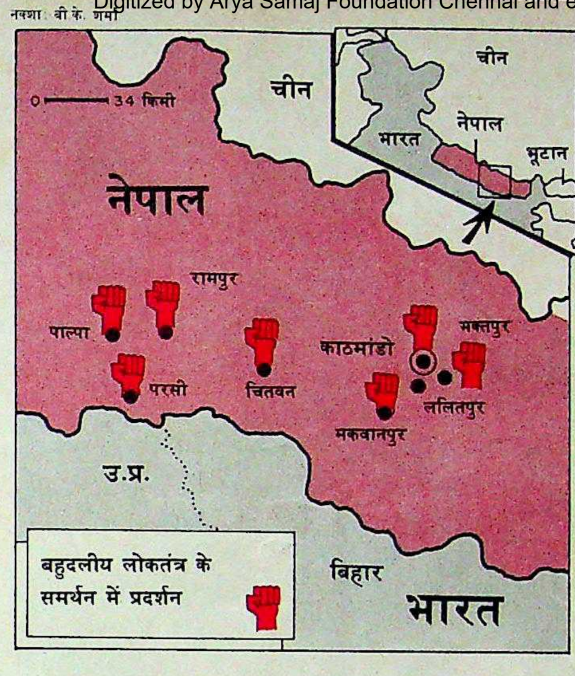
चीन
0 — 34 किमी
नेपाल
रामपुर
पाल्पा
परसी
चितवन
काठमांडो
भक्तपुर
ललितपुर
मकवानपुर
उ.प्र.
बिहार
भारत
चीन
नेपाल
भारत
भूटान
बहुदलीय लोकतंत्र के समर्थन में प्रदर्शन

सात दलीय वामपंथी मोर्चा और नेपाली कांग्रेस ने एक-दूसरे से हाथ मिला लिए हैं. इससे आंदोलन में पैनापन आ गया है

मेडिकल कॉलेज के डॉक्टर हड़ताल पर

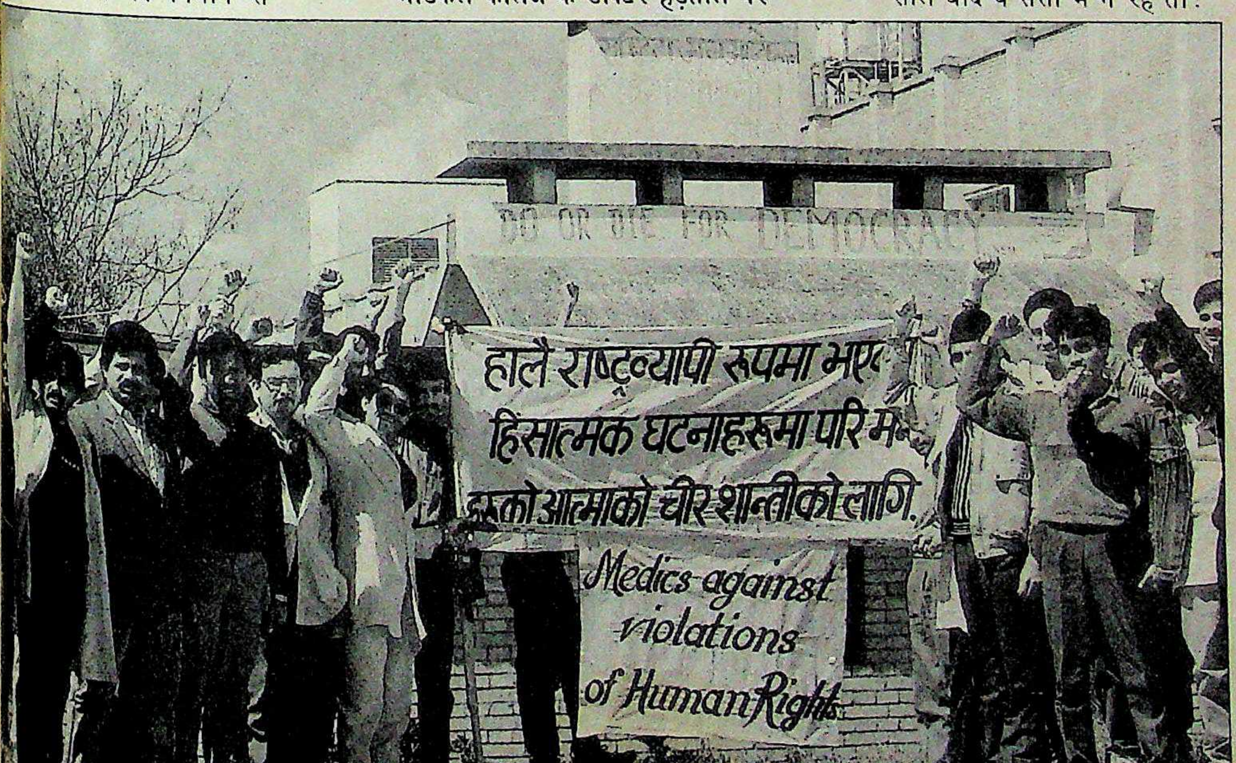
DO OR DIE FOR DEMOCRACY
हालै राष्ट्रव्यापी रूपमा भए
हिंसात्मक घटनाहरूमा परि म
हरूको आत्माको चीर शान्तीको लागि
Medics against violations of Human Rights

इसीलिए भारतीय राजनय में अत्यधिक सावधानी बरतनी होगी.

नए राजदूत ले. जनरल सिन्हा के वक्तव्यों में यह सावधानी स्पष्ट है, "नेपाल में लोकतंत्र का हम स्वागत करेंगे लेकिन किस तरह का लोकतंत्र हो और वह कैसे हासिल किया जाए, इसका फैसला नेपालियों को ही करना है."

राजमहल इस बात से खिन्न है कि पश्चिमी देश राजशाही को ज्यादा औचित्यपूर्ण नहीं मानते. पिछले पखवाड़े अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने मानवाधिकारों के उल्लंघन के लिए नेपाल की आलोचना भी की थी. इस पर नेपाल की सरकारी प्रतिक्रिया में संयम बरता गया. "हम अमेरिकी चिंता को समझते हैं. हम न्यूनतम बल प्रयोग कर रहे हैं." फिर अमेरिकी विदेश संबंध समिति के अध्यक्ष स्टीफन सोलार्ज़ और भारत स्थित पूर्व अमेरिकी राजदूत डेनियल पेट्रिक मोयनिहन सहित अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों ने राजा को संकट का हल वार्ता के जरिए करने के लिए संयुक्त पत्र भी भेजा.

थापा कहते हैं, "हमारी दिक्कत यह है कि इन लोगों को हम अपनी व्यवस्था समझाने में नाकाम रहे. हमारे यहां वयस्क मताधिकार और स्वतंत्र न्याय व्यवस्था है लेकिन

राजशाही और नेपाली कांग्रेस के बीच लोकतंत्र स्थापना को लेकर चार दशकों से चल रही लड़ाई का अज्ञात पहलू इसके नेताओं का लचीलापन है. पार्टी के तीनों बड़े नेता बूढ़े तथा काफी बीमार हैं लेकिन उनमें जवानों जैसा जोश है. नेपाली कांग्रेस के नेता 75 वर्षीय गणेश मान सिंह इनमें प्रमुख हैं. पिछले पखवाड़े नजरबंद हुए गणेश मान सिंह ने फीचर संपादक ***शेखर गुप्ता*** *से चोरी छिपे बात की. कुछ अंश:*

प्रमोद पुष्करणा

गणेश मान सिंह

'हम अपने लक्ष्य के करीब हैं'

- ***क्या यह आपके आंदोलन का अंतिम चरण है?***

राजनीति में कुछ भी अंतिम नहीं होता. लेकिन 30 वर्षों के संघर्ष के बाद अब हम अपने लक्ष्य के करीब पहुंच गए हैं.

- ***आंदोलन के प्रति भारत के रवैए से आप नाराज क्यों हैं?***

हम मानते हैं कि नेपाल सरकार के साथ रिश्ते पूरी तरह तोड़ लेना भारत के लिए संभव नहीं. लेकिन समस्या यह है कि भारत ने हमारे लिए कुछ भी नहीं किया. तब भी हमें हरदम उसका पिछलग्गू कहा जाता है. असल में राजा ही भारत के पिछलग्गू रहे हैं. जब भी राजमहल को आंतरिक संकट झेलना पड़ता है तो भारत को क्या-क्या सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं यह देखने की बात है. 1950 में भी यही हुआ. अब भी यही हो रहा है. यह बात नहीं भूलिए कि 1977 में जब हमारी जान को खतरा था तब राजा भारत में शरण लिए हुए थे.

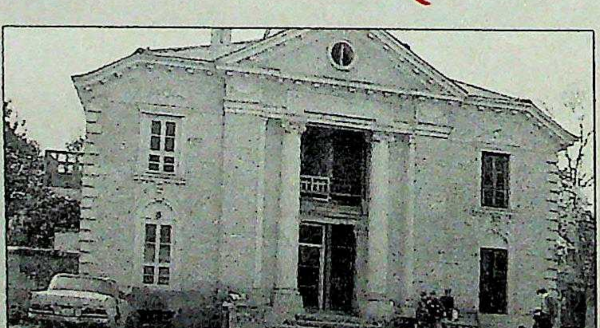

गणेश मान सिंह का घर पहरे में

- ***भारत को क्या करना चाहिए?***

हमें नैतिक समर्थन चाहिए. भारत के समर्थन के बिना ये राजा समूची सत्ता पर काबिज नहीं हो सकते.

- ***अब कैसी व्यवस्था चाहते हैं?***

राजा सिर्फ संवैधानिक प्रमुख बनकर रह सकते हैं. हमारी व्यवस्था में कोई भी नेता राजा बनने की कोशिश नहीं करेगा और हम राजा को अपना नेता नहीं मानेंगे. अगर वे नेता बने रहने की कोशिश करते हैं तो पूरी अराजकता छा जाएगी. उन्हें यह बात जाननी चाहिए कि अब पूरी दुनिया में बदलाव की हवा बह रही है.

- ***लेकिन राजभवन का कहना है कि लोगों की मांगों को उन्होंने पंचायती लोकतंत्र लाकर पूरा कर दिया है?***

पंचायत व्यवस्था के पक्षधर किस मुंह से हमसे बात करेंगे. अगर लोग हमारे साथ नहीं होते तो इतने दमन के बाद भी 30 वर्षों से राजा के खिलाफ संघर्ष करते? न तो इनके पिता, न पृथ्वी नारायण शाह और न ही राजा जंगबहादुर ने इतने सारे अधिकार ले रखे थे.

- ***क्या आप शासन चलाने की राजा की क्षमता पर शक कर रहे हैं?***

तानाशाह की योग्यता क्या होती है—सेना नियंत्रण में रखना. मुझे एक संस्कृत श्लोक याद आ रहा है जिसमें कहा गया है कि अगर आपके पास सत्ता है तो लोग तुरंत आपको विद्वान, बहादुर, योग्य और जाने क्या-क्या उपाधि दे देंगे.

- ***आपकी नजरबंदी कब तक चलेगी?***

यह शासन तो सनक पर चल रहा है. वे किसी भी क्षण कुछ भी कर सकते हैं.

विदेशी मीडिया इस तंत्र तो तानाशाही कहती है. विदेशी मीडिया के समर्थन के बिना यह आंदोलन कुछ हफ्तों में खत्म हो जाएगा."

अचंभे की बात नहीं है कि राजमहल खुद ही स्थिति को काबू में रखने के लिए बड़े पैमाने पर प्रयास कर रहा है. सरकारी सूत्र बताते हैं कि राजा ने अपने सलाहकारों के साथ लंबी मंत्रणाएं की हैं. एक बड़े अधिकारी ने कहा, "इस बार इस वास्तविकता को माना गया है कि परिवर्तन के लिए व्यापक इच्छा है." उसने यह संकेत भी दिया कि सरकार "1980 के जनमत संग्रह की राय को" पूरे तौर पर लागू करके मौजूदा ढांचे में ही लोगों को और ज्यादा आजादी देगी.

सरकार अपनी इस दलील पर अड़ी रहेगी कि बहुदलीय लोकतंत्र का मसला जनमत संग्रह के जरिए हल हो गया था. तब मौजूदा व्यवस्था के पक्ष में 10 प्रतिशत वोट अधिक पड़े थे. वर्तमान 140 सदस्यीय पार्टीविहीन पंचायत में 28 सदस्यों को राजा नामांकित करते हैं और बाकी का चुनाव पांच साल बाद वयस्क मताधिकार से होता है.

राजमहल 1980 में घोषित रियायतों को लागू करके संतुष्ट ही होगा. इनमें तीसरे संविधान संशोधन को उचित तरीके से लागू किया जाना भी शामिल है. इसके अनुसार पंचायत द्वारा प्रधानमंत्री का चुनाव किया जाएगा जो राजमहल के बजाए पंचायत के प्रति जवाबदेह होगा. इसके साथ ही पंचायत के चुनाव जल्दी कराए जा सकते हैं. ये चुनाव 1991 में होने हैं. अगर सचमुच सरकार इन कदमों पर अमल करने का फैसला ले लेती है तो इनसे नेपाली कांग्रेस और वामपंथियों में व्यापक भ्रम की स्थिति पैदा कर सकते हैं. उनमें से बहुतेरे इनमें भाग लेना चाहेंगे. साथ ही इससे बहुदलीय प्रणाली समर्थकों और पंचायत सरकार की सीधी मुठभेड़ भी हो सकती है.

स्पष्टतः राजमहल की रणनीति का मुख्य लक्ष्य स्वयं को सीधे टकराव और लोकतंत्र समर्थक समूहों से दूर रखना होगा.

—शेखर गुप्ता, काठमांडो में

"विदेशी मीडिया का समर्थन न मिले तो आंदोलन जल्द खत्म हो जाएगा"

कमल थापा
संचार राज्यमंत्री

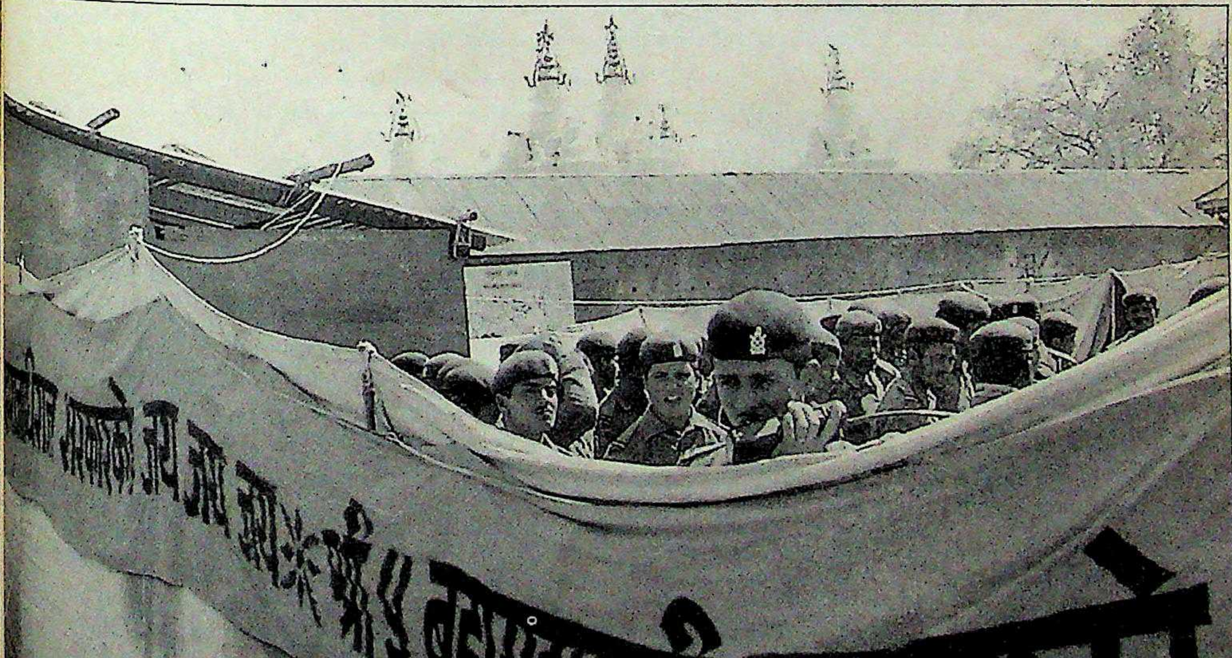

पशुपतिनाथ मंदिर में राजशाही समर्थक बैनर और पुलिस

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-4

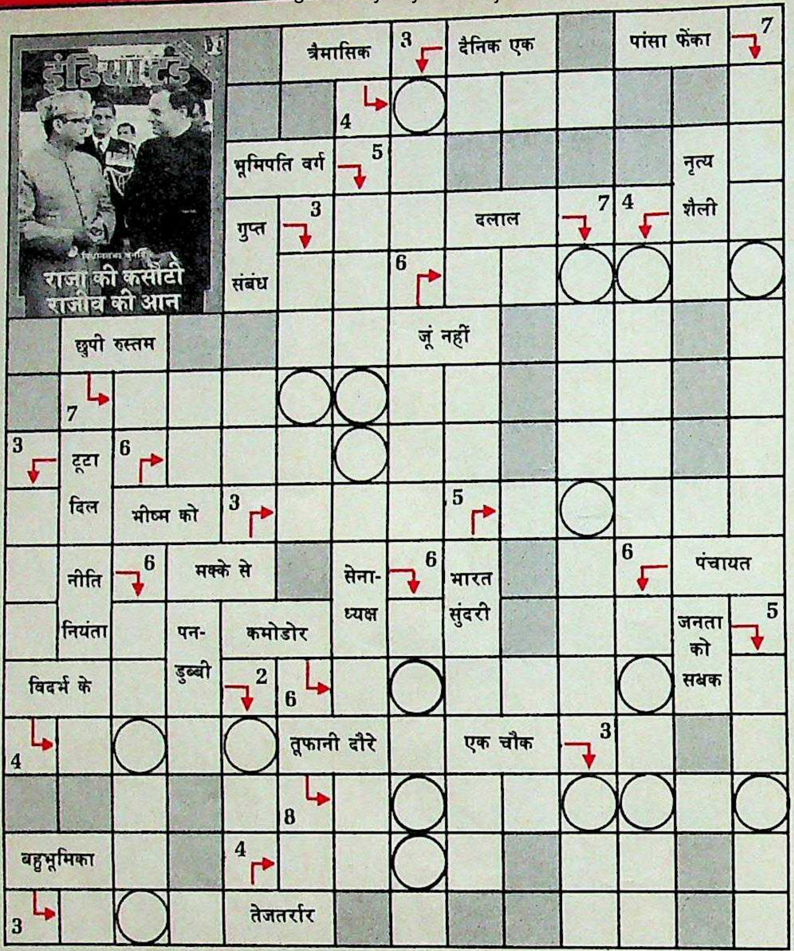
इंडिया टुडे
राजा की कसौटी
राजीव की आन
त्रैमासिक
दैनिक एक
पांसा फेंका
भूमिपति वर्ग
नृत्य शैली
गुप्त संबंध
दलाल
छुपी रुस्तम
जूं नहीं
टूटा दिल
भीष्म को
नीति नियंता
मक्के से
सेना-ध्यक्ष
भारत सुंदरी
पंचायत
पन-डुब्बी
कमोडोर
जनता को सबक
विदर्भ के
तूफानी दौरे
एक चौक
बहुभूमिका
तेजतर्रार

नाम

पता

पिन

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-4, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
16 मार्च 1990

उत्तर के लिए देखें 15 अप्रैल 1990 का अंक

- ▶ यह पहेली शब्दशः इंडिया टुडे के 28 फरवरी 1990 के अंक पर आधारित है.
- ▶ वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- ▶ तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- ▶ तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- ▶ वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- ▶ मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- ▶ शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- ▶ सर्वप्रथम पहुंचने वाले तीन **सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- ▶ लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

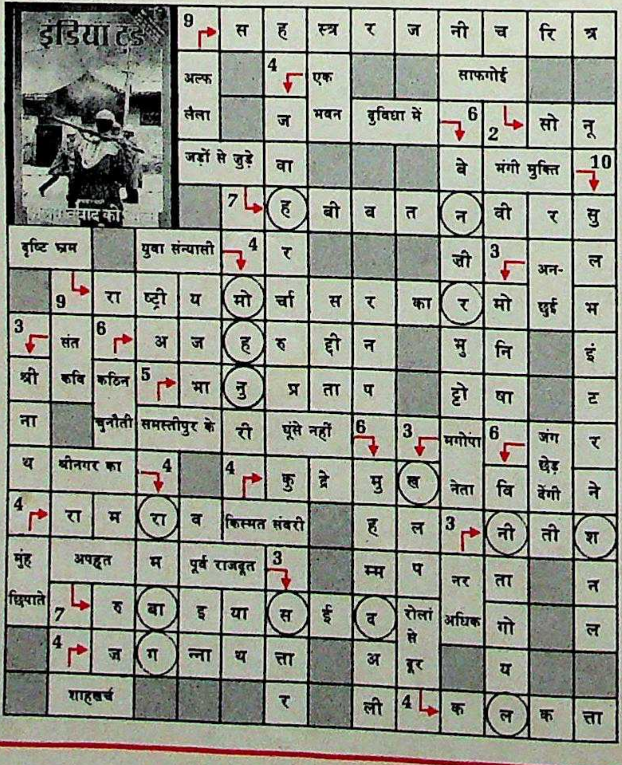
इंडिया टुडे
9 स ह स्त्र र ज नी च रि त्र
अल्फ 4 एक साफगोई
लैला ज भवन दुविधा में 6 2 सो नू
जड़ों से जुड़े वा बे मंगी मुक्ति 10
7 ह बी व त न वी र मु
वृष्टि भ्रम युवा संन्यासी 4 र जी 3 अन- ल
9 रा ष्ट्री य मो र्चा स र का र मो दुई म
3 संत 6 अ ज ह रु द्दी न मु नि इं
श्री कवि कठिन 5 मा नु प्र ता प ट्रो षा ट
ना चुनौती समस्तीपुर के री पूंसे नहीं 6 3 मगोपा 6 जंग छेड़ र
य श्रीनगर का 4 4 कु द्रे मु ख नेता वि वेगी ने
4 रा म रा व किस्मत संवरी ह ल 3 नी ती श
मुंह अपहृत म पूर्व राजदूत 3 म्म प नर ता न
छिपाते 7 रु बा इ या स ई द रोलां से दूर अधिक गो ल
4 ज ग न्ना थ त्ता अ य
शाहखर्च र ली 4 क ल क त्ता

इंडिया टुडे ← वर्ग पहेली-2 का हल

पुरस्कार विजेता

अतुल तन्खा
1244 बी, न्यू रेलवे कॉलोनी रोड नं. 5, रतलाम (म.प्र.)-457001

मुकेश पोपली
भारतीय स्टेट बैंक (शहर शाखा) बीकानेर (राजस्थान)-334001

विवेक रंजन मेहता
8, विवेकानंद कुटीर आदीपुर, कच्छ (गुजरात)-370205

इन तीनों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु. के ड्रॉफ्ट भेजे जा रहे हैं.

अमृतलाल नागर

कलम का सिपाही

उनके सभी से आत्मीय संबंध थे

नागर जी (इनसेट) और चिर निद्रा में लीन

आर के

जिंदगी के हर पक्ष के प्रति गहरी उत्सुकता और लगाव होने से उन्हें एक क्षण के लिए भी लेखन-प्रेरणा की कमी नहीं महसूस हुई

अमृतलाल नागर का निधन समाज के लिए एक दोहरी त्रासदी है. यह एक प्रखर, निरंतर रचनाशील साहित्यकार का अंत भर नहीं है, यह एक उत्कृष्ट मानवीय गुणों वाले, एक बहुत अच्छे इंसान की जीवनयात्रा का विराम भी है जिसके न रहने से हमारा समाज कई अर्थों मे विपन्न हुआ है.

बहुत-से उत्तम कलाकारों और साहित्यकारों की जिंदगी एक दोहरेपन—एक डिकॉटमी का शिकार रही है. वे एक ओर अपने कृतित्व में विशिष्ट रहे हैं, दूसरी ओर बतौर इंसान कई विख्यात कमजोरियों और असामाजिक प्रवृत्तियों की नुमाइश भी बने रहे हैं. इसके विपरीत नागर जी के कृतित्व और जीवन के बीच कहीं कोई विसंगति नही है. जिस खुलेपन के साथ वे इस विविधतापूर्ण जीवन को आधार बनाकर भूगोल और समसामयिकता की सीमाओं को अवक्रमित करते हुए अपने पाठकों के लिए गर्मजोशी के साथ एक विराट और बहुरंगी रचना-संसार की सृष्टि करते हैं वही उनके सामाजिक रूप में, व्यक्तिगत रिश्तों और पारदर्शी व्यक्तित्व में उभरकर आता है.

तीस वर्ष पहले कायम हुए हमारे पारस्परिक संबंधों में जिस सहजता से उन्होंने मुझे अपनाया और अपनी कई कृतियों की प्रतियां देते वक्त मुझे 'अनुज' लिखकर संबोधित किया, वह इस समय मन में अनेक संस्मरण जगा रही है, और उसी के साथ उनके न रहने की विकलता को भी. पर उन सैकड़ों संस्मरणों में से एक का भी उल्लेख करने से मैं अपने को रोक रहा हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि अकेला मैं नहीं, इस देश में, और विशेषतः लखनऊ में ऐसे हजारों लोग होंगे जो नागर जी की ऐसी ही सहज अंतरंगता पा चुके हैं. उनमें बड़े-बड़े मनीषी, साहित्यकार, रंगकर्मी, राजनीतिक आदि ही नहीं, पानवाले, ठंडाईवाले, खोंचेवाले, ठेला खींचने, इक्का हांकने और रिक्शा चलाने वाले भी हैं. सबके पास अपने-अपने और अनेक ढंग के संस्मरण हैं जो नागर जी के मर्मस्पर्शी, अकुंठित और सहज सामाजिक व्यक्तित्व को प्रतिष्ठित करते हैं.

इस खुली सामाजिकता के पीछे उनकी सहृदयता और संवेदनशीलता तो थी ही, जीवन के प्रति उनकी जागरूकता और गहरा लगाव भी था. तभी वह लोगों को अपरिचित, परिचित और घनिष्ठ जैसी अहंभावपूर्ण श्रेणियों में न बांटकर प्रत्येक व्यक्ति की जिंदगी को किसी गहराई या अनुभूति तक पहुंचने का माध्यम मानते थे. पर यह समाज-विश्लेषक की निगाह से नहीं, एक अच्छे साथी की तरह. यही कारण है कि उनका रचना-संसार जहां एक ओर इतना विविधतापूर्ण और असाधारण फैलाव का है, वहीं उनकी प्रत्येक कृति में—चाहे वह ऐतिहासिक हो या समकालीन जीवन की—मनुष्य अपने सारे संघर्षों और अनुभवों की गहराई के साथ प्रकट होता है. हिंदी के दो महाकवियों—सूरदास और तुलसीदास के जीवन पर लिखे उनके उपन्यास इसी बात के गवाह हैं. कबीर के जीवन पर उपन्यास लिखने की उनकी इच्छा अधूरी ही रह गई.

उनकी औपचारिक शिक्षा सीमित थी. पर जीवन के प्रति इसी चिरस्थायी ललक और जिज्ञासा ने उन्हें उत्कृष्ट कलाकार बनने के लगभग सभी उपकरण दिए थे. अनेक भारतीय भाषाओं और विभिन्न संस्कृतियों से घना परिचय, समाज के विविध वर्गों की गहरी जानकारी और आम आदमी की जिंदगी के संघर्षों में भागीदारी एक ओर, और दूसरी ओर इतिहास और पुरातत्व में अदम्य रुचि, रंगकर्म, संगीत और ललित कलाओं से लगाव और प्राचीन तथा नवीनतम साहित्य तक पहुंचे रहने की निरंतर लालसा! और इन उपकरणों के साथ उनकी विस्मयजनक रचनात्मक प्रतिभा का योग सचमुच ही एक विस्मयजनक रचना-संसार सृजित करने में समर्थ हुआ है.

अपने आरंभिक दिनों में ही बलभद्र दीक्षित 'पढ़ीस', 'निराला' और रामविलास शर्मा जैसे साथियों के साहित्यिक संस्कारों से अपनी क्रिया-प्रतिक्रिया बैठाते हुए उन्होंने लगभग पंद्रह वर्ष की आयु से जो रचना-यात्रा शुरू की थी, वह उनके अंतिम यानी चौहत्तरवें वर्ष तक जारी रही. जिंदगी के हर पक्ष के प्रति गहरी उत्सुकता और लगाव होने के कारण उन्हें शायद एक क्षण के लिए भी कभी लेखन-प्रेरणा की कमी नहीं महसूस हुई. लेखनजीवी होने के जोखिमों को जानते और बराबर उन्हें झेलते हुए भी वे लेखन के दायरे से कभी दूर नहीं गए. फिल्मों और आकाशवाणी से उनका संबंध भी इसीलिए अल्पकालीन रहा, क्योंकि वे सबसे पहले, और सब कामों से ऊपर, लेखनधर्मी थे और अपने तथा लेखन के बीच किसी बाधा को बरदाश्त नहीं कर सकते थे. जीवन के अंतिम दिनों में कई प्रियजनों की मृत्यु के सदमे झेलकर भी, और अनेक शारीरिक व्याधियों के बावजूद 'करवट' और उसके परवर्ती अप्रकाशित उपन्यास का लेखन ही उन्हें पूर्णतः सक्रिय बनाए रख सका. लेखन ही उनकी जिजीविषा का मूलाधार था, वही उसका प्रेरक था.

—श्रीलाल शुक्ल

विश्व कप हॉकी

मंसूबों पर पानी

भारतीय टीम फिर असफल

पीटीआई

■ रूस-भारत मुकाबला: किसी तरह इज्जत बची

> **कभी जिस टीम की जादुई हॉकी के सामने दुनिया भर की टीमें पानी भरती नजर आती थीं, आज उसके लिए नाकामी एक बीमारी बन गई है**

भारतीय हॉकी के लिए यह विश्व कप प्रतियोगिता करो या मरो जैसा मामला था. एक चुस्त-दुरुस्त और कुशल टीम तैयार करने में कोई कसर बाकी नहीं रखी गई थी. लेकिन इस प्रतियोगिता में लाहौर का स्टेडियम भारतीय हॉकी की कब्रगाह साबित हुआ.

भारतीय टीम के खेल से लगता था जैसे थके-हारे योद्धा जूझ रहे हों. अपने ग्रुप के लीग मैचों में से एक भी मैच जीत पाने में भारत नाकाम रहा. कई बार तो वह अच्छी बढ़त हासिल करके भी पिछड़ गया. ऑस्ट्रेलियाई टीम के मैनेजर ने कहा, "नतीजों से जो जाहिर होता है उससे यह कहीं अच्छी टीम है."

लेकिन आखिरकार कद्र नतीजे की ही होती है. भारत पूल 'ए' में सबसे नीचे रहा और प्रतियोगिता में शरीक सभी टीमों में भी सबसे नीचे न रह जाए इसके लिए उसे जी-तोड़ संघर्ष करना पड़ा. पूरी प्रतियोगिता में वह सिर्फ एक मैच जीत सका और वह भी निचली रैंकिंग के मैच में कनाडा से. इसके बाद वह अर्जेंटीना से मात खाकर दसवें स्थान पर ठहर पाया.

बहरहाल, यह नतीजा इस मामले में दुखदायी है कि भारत अब नवंबर में ऑस्ट्रेलिया में होने वाली चैंपियंस कप प्रतियोगिता में हिस्सा नहीं ले पाएगा. इससे भी बुरी बात यह कि अगले ओलंपिक में खेल पाने के लिए उसे पेइचिंग में होने वाले एशियाई खेलों में अव्वल होना पड़ेगा जो कि दूर की कौड़ी ही लगती है या फिर उसे ओलंपिक में स्थान पाने के लिए 1991 के मध्य में होने वाली प्रतियोगिता में प्रथम छह टीमों में जगह बनानी होगी.

अभी कुछ वर्षों तक जिस टीम की जादुई हॉकी के सामने दुनिया भर की टीमें पानी भरती नजर आती थीं, आज उस टीम के लिए नाकामी जैसे एक बड़ी बीमारी बन गई है. लंदन में हुई विश्व कप प्रतियोगिता के बाद यह टीम कभी उबर नहीं सकी.

उम्मीद के मुताबिक टीम के प्रदर्शन ने भारतीय हॉकी के शुभचिंतकों को निराश ही किया है. टीम हर मामले में पिछड़ती दिखी, खासकर पेनल्टी कार्नर लगाने में तो वह एकदम फिसड्डी साबित हुई. पेनल्टी कार्नरों को गोल में तब्दील करना गैर-एशियाई टीमों का बडा हथियार बन गया है. हॉलैंड के स्ट्राइकर बोरिस बोवलैंडर के तेज स्ट्रोकों को रोकना तो खास तौर से नामुमकिन लगता था. उनके ऐसे ही दो पेनल्टी कार्नरों ने फाइनल में पाकिस्तान का भाग्य तय कर दिया.

स्पेनी टीम में नया दम-खम भरने वाले हार्स्ट वीन ने कहा, "जब डी में भीड़ लग जाती है तब भारतीय खिलाड़ी वहां गेंद डालते हैं. उनके फार्वर्ड आखिरी मौके पर सही काम नहीं कर पाते. वे बस किसी तरह पेनल्टी कार्नर मारने का मौका ही हासिल कर पाते हैं." भारत के पूर्व कप्तान सोमैया के मुताबिक रक्षा पंक्ति के खिलाड़ी अपने क्षेत्र में काफी भीतर जाकर गेंद पकड़ते हैं और 'लंबे पास देते हैं जिसमें गैर-एशियाई टीमों को महारत हासिल है.'

यहां तक कि विश्व कप के पहले तक आत्मविश्वास का प्रदर्शन करने वाले कप्तान परगट सिंह भी महसूस करते हैं कि हर मायने में गलती हुई. उन्होंने 'इंडिया टुडे' से कहा, "विश्व कप में जहां हर टीम में बस मामूली अंतर ही होता है, जिस उत्साह और संकल्प की जरूरत थी उसका हममें अभाव था. और हम प्रशिक्षण के दौरान ही थककर यहां आए थे." प्रशिक्षण के नौ महीनों के दौरान टीम एक से दूसरे शिविर में जाती रही. लाहौर जाने के ठीक पहले खिलाड़ियों ने एक संगठन बनाया और उन्होंने 'निचले स्तर के किट' को लेने से मना कर दिया तथा प्रति खिलाड़ी प्रतिदिन 10 डॉलर के 'मामूली दैनिक भत्ते' से ज्यादा की मांग की.

लेकिन पाकिस्तान ने इस बार अद्भुत कौशल और दमखम का परिचय दिया. फाइनल में वह हॉलैंड की सशक्त टीम से हार गया. भारत की तरह ही पाकिस्तान भी पेनल्टी कार्नर को गोल में बदलने के मामले में फिसड्डी रहा. इंग्लैंड के खिलाफ वह 14 पेनल्टी कार्नरों में से दो को ही गोल में बदल पाया. उसके अच्छे प्रदर्शन का श्रेय उसके लेफ्ट फ्लैंकर उपकप्तान शाहबाज अहमद और वसीम फिरोज को जाता है.

इस विश्व कप प्रतियोगिता ने साफ कर दिया कि नियमों को साल-दर-साल अपनी शैली के मुताबिक बदलवाकर यूरोपीय टीमों ने इस खेल पर अपना सिक्का जमा लिया है. वीन ने कहा, "नए नियम अंपायरों सहित हर किसी को उलझन में डाल देते हैं. इनकी व्याख्या हर मैच में बदल जाती है." पाकिस्तान की ओर से दो विश्व कप और दो ओलंपिक प्रतियोगिताएं खेल चुके अरशद चौधरी ने कहा, "इस तरह तो कुछ वक्त बाद एशियाई देश अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धाओं से बाहर हो जाएंगे."

बहरहाल, पाकिस्तान के प्रदर्शन के मद्देनजर अरशद की यह बात अतिशयोक्ति लगती है. लेकिन भारत तो निश्चित रूप से अंतरराष्ट्रीय हॉकी के मैदान से बाहर होता जा रहा है.

—कंवर संधू, लाहौर से

What did the Skypak Man say to the girl from Singapore?

"Don't kill me with your charm! I have a job to do..."

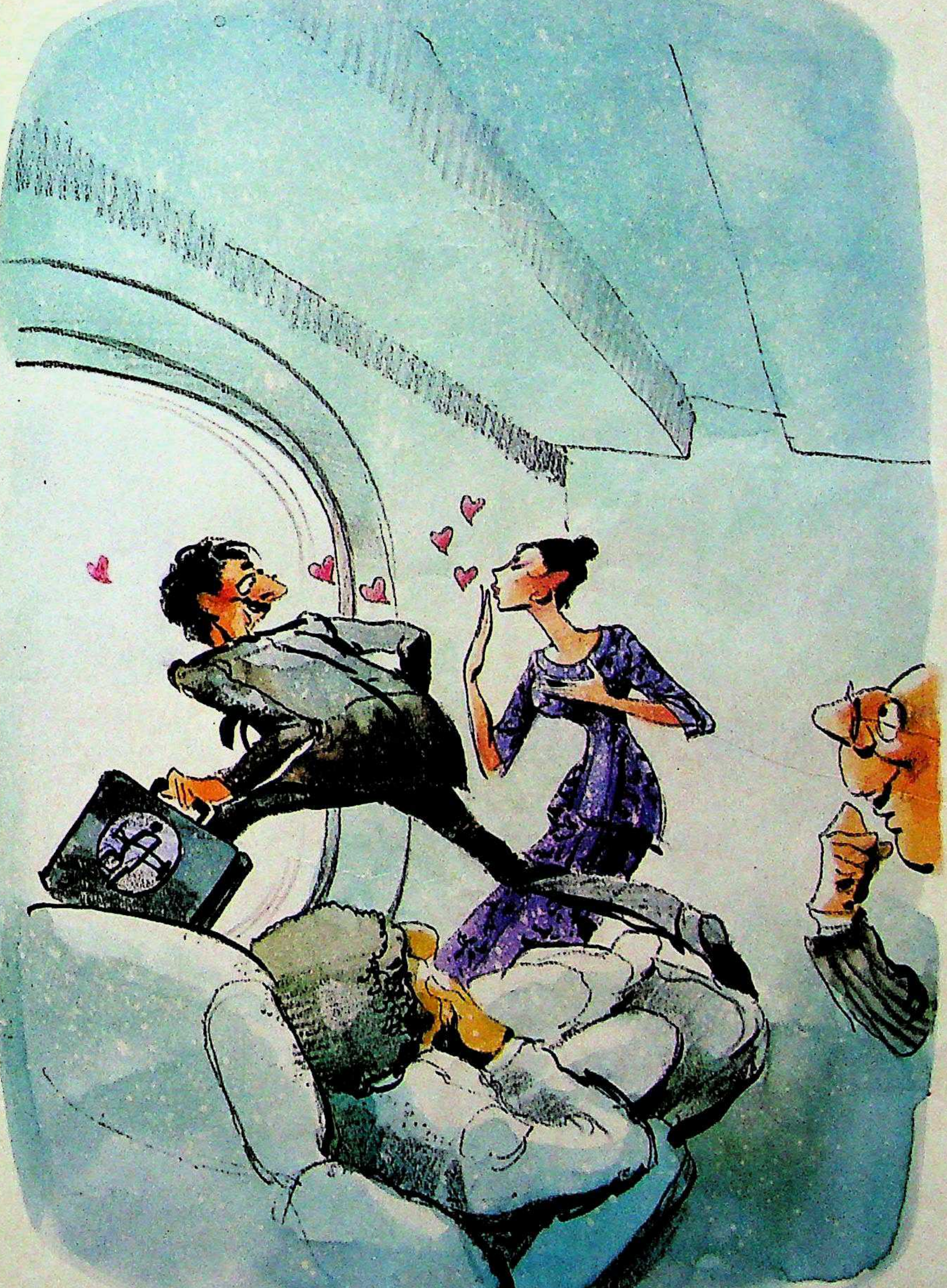

We'll deliver. Wherever on earth. *SKYPAK* The worldwide couriers.

Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

Avenues:SC:575.90

re was some opposition. From Sushma's parents. Even mine.
y wanted a huge reception. And a standup buffet dinner.

But Sushma was adamant. With me pitching in. This was going to be a traditional wedding, we argued. In every aspect. Our decision: I was going to wear a silk kurta. Not just because of the heat, either. But for its tradition. Its values. And it was every bit as smart and formal, as anything else.

u look great", Sushma whispered, as the ceremony was about
egin. I smiled and took my last breath of bachelor air.

T·R·O·P·I·C·A·L·S·
by
Park Avenue
by Raymond's

FOR THE MAN WHO KNOWS HIS OWN MIND.

LINTAS PA 109 2539

एलोरा

जाग उठे दबे-छिपे देवता

28 नई गुफाओं की खोज से कई नए तथ्य प्रकट

यह ऐसी जगह है जहां बहुत कम पर्यटक ही पहुंच पाते हैं. एलोरा की विश्वप्रसिद्ध गुफाएं जिन पहाड़ियों में हैं वे कई वर्षों से चरवाहों, साधुओं और पास के शहर औरंगाबाद से आने वाले साहसी युवकों का विश्राम स्थल बनी हुई थीं. लेकिन जनवरी महीने से झुंड के झुंड मजदूर इन पहाड़ियों में दबी गुफाओं पर से मिट्टी हटाने में लगे हैं. अब पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इस क्षेत्र में 28 नई गुफाओं की खोज की घोषणा कर दी है. इन गुफाओं में हिंदू देवी-देवताओं की मूर्तियां हैं जो ईसा के बाद 9वीं से 13वीं शताब्दी के दौरान मध्यकाल में बनाई गई बताई जा रही हैं.

एलोरा की मुख्य हिंदू, बौद्ध और जैन गुफाओं की विशालता और सौंदर्य को देखते हुए इन नए गुफा मंदिरों की खोज को प्राचीन भारतीय कला और विरासत में बहुत महत्वपूर्ण बढ़ोतरी शायद न माना

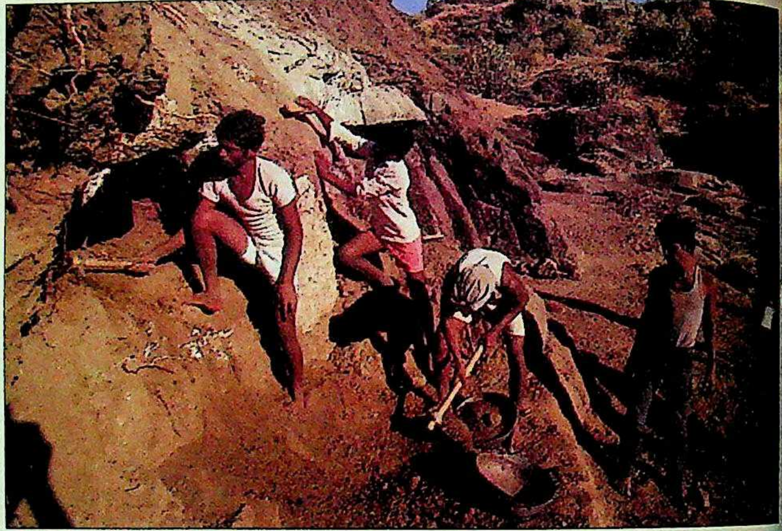

नई गुफाओं की खुदाई का कामः उघड़ती परतें

नामन भोमरी

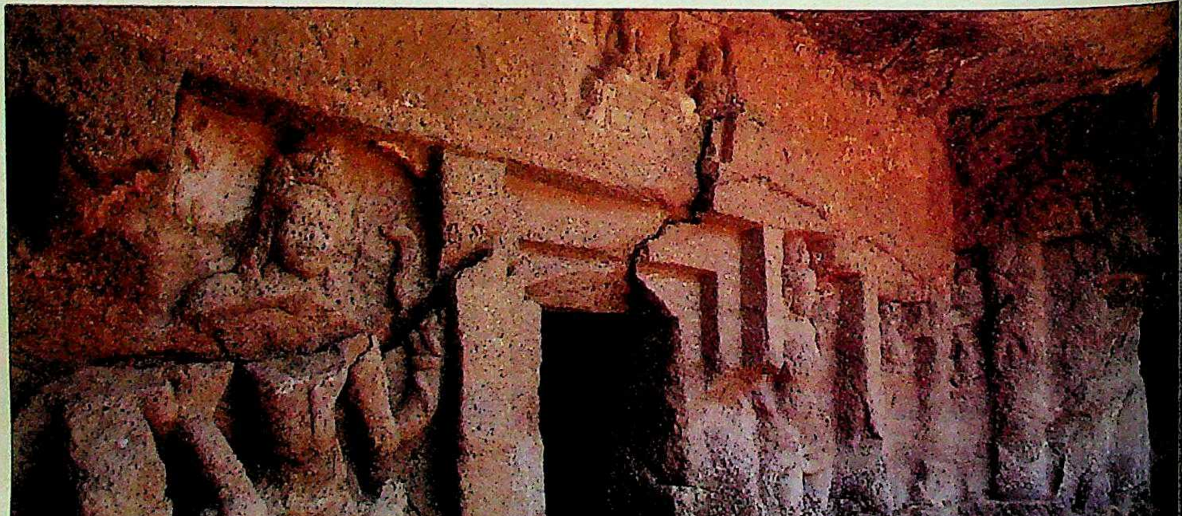

एक गुफा के द्वार पर द्वारपाल की विशाल मूर्तिः बेजोड़ कला

ब

जिए

क्तिशाली टर्बो आवाज़

TURBO
DYNAMIC SPEAKER SYSTEM
TURBO
VIDEOCON
FST

२-आर डीलक्स

५३ सीएम एफ़ एस टिंटेड
पिक्चर ट्यूब •
ऑफ़ टाइमर •
ऑटो सर्च ट्यूनिंग •
फ़िक ऑन-स्क्रीन डिस्प्ले •
संपूर्ण क्रियाओं वाला
इंफ्रा-रेड रिमोट कंट्रोल •
ड (ज्यादा चौड़े) ए वी आर
३० वी.एसी ५० एच.ज़ेड) •
टर्बो स्पीकर प्रणाली द्वारा
शानदार आवाज •

VIDEOCON
BRING HOME THE LEADER

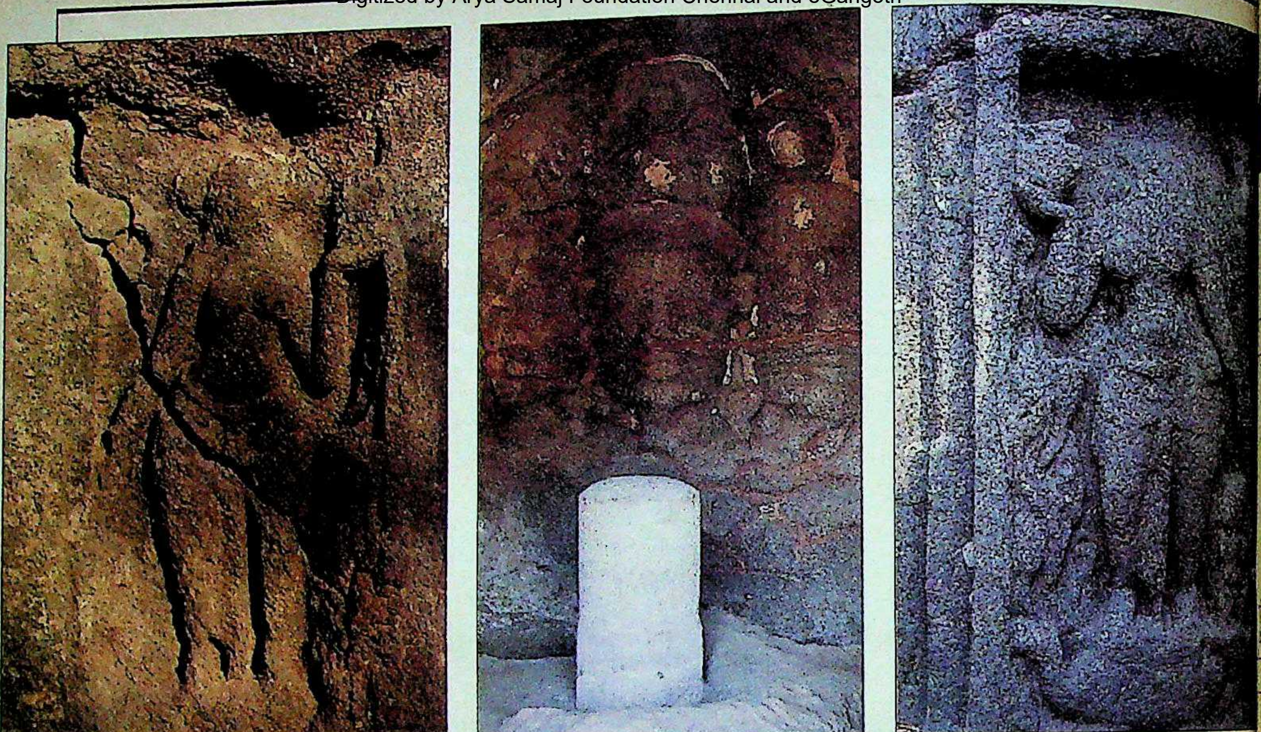

घड़ियाल पर सवार गंगा; त्रिमुख महेशमूर्ति; और अपने वाहन कछुए पर सवार यमुनाः शिल्प का कमाल

जाए, क्योंकि इन गुफाओं में से कई तो बस छोटे-छोटे कक्ष की तरह हैं. लेकिन एलोरा मंदिरों के साथ लगे होने के कारण इनके महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकेगा.

ये नई गुफाएं एलोरा के भव्य कैलाश मंदिर से कुछ ही दूर ऊपर चलकर हैं. एक ही चट्टान काटकर बनाए जाने के कारण मंदिर अगर शैव मूर्तिकला की एक खूबसूरत मिसाल है तो पहाड़ी की चोटी पर बने ये छोटे मंदिर भी शैव संप्रदाय से जुड़े रहस्य की कई जादुई परतों को उघाड़ते हैं.

ये नई गुफाएं वेलुरगंगा नदी में तीन ओर से गिरते झरनों से बने तालाब के इर्दगिर्द तीन समूहों में बनी हैं. किवदंतियों के अनुसार, शिव ने पार्वती की प्यास बुझाने के लिए एलोरा की पहाड़ियों के काले चट्टानों पर त्रिशूल मारकर यह नदी प्रवाहित की थी. उन्हीं चमत्कारी शिव को यहां महेशमूर्ति— जन्मदाता, पालनकर्ता और संहारकर्ता—के रूप में इन छोटे अंधेरे गुफा मंदिरों की काली चट्टानों पर उकेरा गया है.

वैसे, भारत की सबसे प्रसिद्ध महेशमूर्ति एलिफेंटा में है जो खंभों से भरे एक बड़े हॉल में बनी 18 फुट ऊंची विशाल प्रतिमा है. नई एलोरा गुफाओं में बनी महेशमूर्ति छोटी है. यह ऐसे कक्ष में है जो अंधेरा और बक्से के आकार का है. इसमें एक बड़ा शिवलिंग भी है. एलिफेंटा वाली महेशमूर्ति में आकृति को बड़ी सफाई से उकेरा गया है और चेहरे पर सौम्यता है. नई एलोरा गुफाओं में महेशमूर्ति के होंठ तो उतने ही उभरे हुए और मांसल हैं लेकिन चेहरे पर एक कठोर, लौकिक भाव है. कम ऊंचाई वाले कक्षों में जगह भी बस इतनी भर है कि मूर्तिकार और उसका एक सहयोगी समा सके.

नई गुफाओं को ढूंढ़ निकालने वाले दल के नेता पुरातत्ववेत्ता पी.एन. कांबले कहते हैं, "इनकी कम ऊंचाई, मूर्तियों को तराशने में कोमलता का अभाव और उन पर पल्लव और चालुक्य युगीन प्रभावों से यह भी लगता है कि इनमें से कुछ गुफाएं उन मूर्तिकारों के लिए प्रशिक्षण स्थल रही होंगी जिन्होंने एलोरा गुफाओं (जिनमें ईसा के बाद छठी और आठवीं शताब्दी के दौरान काम हुआ) में अपने कौशल का इस्तेमाल किया." इसका अर्थ तो यही होगा कि नई गुफाएं 9वीं शताब्दी से भी पहले की हैं. कांबले का विश्वास है कि एलोरा में और अजंता से 60 किमी. उत्तर स्थित बनोटी में पहाड़ के किनारे पर ऐसी और गुफाएं दफन हैं. बनोटी में कांबले को चार बौद्ध गुफाएं मिली हैं जो ईसा के बाद चौथी से छठी शताब्दी के बीच की हैं. पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग के महानिदेशक जे.पी. जोशी अभी तक इन गुफाओं को देखने नहीं गए हैं और इस खोज की प्रामाणिकता भी अभी पूरी तरह सिद्ध नहीं हो सकी है.

कांबले के अनुसार नई एलोरा गुफाओं में कम-से-कम दो मूर्तियां बेजोड़ हैं. एक है पार्वती की मूर्ति जो गुफा के द्वार पर बने द्वारपाल के साथ है. शिव की पत्नी के साथ नवग्रहों को दर्शाया गया है. तांत्रिक उपासना पद्धति में इन नवग्रहों का काफी महत्व है. दूसरी मूर्ति कुछ विलुप्त-सी है जिसमें शिव को महायोगी के रूप में कमल के फूल पर बैठे हुए, उड़ती हुई अप्सराओं के साथ अंकित किया गया है. गुफा के साथ ही एक बड़ा हॉल मिट्टी और चट्टान की मोटी परत के नीचे दबा हो सकता है.

एलोरा की मुख्य गुफाओं में नवग्रहों के छत्र के नीचे पार्वती की कोई प्रतिमा नहीं है लेकिन कई अन्य मूर्तियां दोनों जगहों पर एक-सी हैं—जैसे कछुए पर यमुना, घड़ियाल पर गंगा, गणेश और सात माता देवियां जिनके दोनों ओर वीरभद्र और गणेश हैं. इनमें से कई मूर्तियां समय के थपेड़ों से नष्ट हो गई हैं.

नई एलोरा गुफाओं में अभी तक सबसे सुरक्षित बची मूर्तियों में से है महेशमूर्ति. एक गुफा में तो मिट्टी और चूने की परत पर चढ़ा प्राकृतिक रंग अब तक बचा हुआ है लाल और हरा तथा काला और सफेद मिलकर मूर्ति के मुकुट का रंग उभारते हैं मूर्ति के दाहिने हाथ में एक माला और बाएं में एक नारियल है. काली चट्टान में बनी शिव की इस मूर्ति पर तालाब से प्रतिबिंबित होती सूर्य किरणें एक अद्भुत दृश्य पैदा करती हैं. शिव वास्तव में विश्व के स्वामी दिखते हैं.

—एम.रहमान, औरंगाबाद

द्वार पर बने
पत्नी के साथ
तांत्रिक उपा-
काफी महत्व
-सी है जिसमें
कमल के फूल
राओं के साथ
साथ ही एक
की मोटी परत

में नवग्रहों के
प्रतिमा नहीं है
नों जगहों पर
यमुना, घड़ि-
र सात मात
वीरभद्र और
तियां समय के

भी तक सबसे
महेशमूर्ति, एक
की परत पर
बचा हुआ है
ा और नर्मदा
ंग उभारते हैं
ाला और बाल
चट्टान में बनी
से प्रतिबिंबित
भुत दृश्य पेश
श्व के स्वामी
न,-औरंगाबाद

ीवन के रंग
नेस्कैफ़े के संग
NESCAFÉ
SELECT
100% pure instant coffee
निया की मनपसंद कॉफ़ी

वागले की दुनिया

मेरी तेरी उसकी बात

शहरी जीवन की आम घटनाओं की रोचक प्रस्तुति से लोकप्रियता

कितनी बार आप सिर्फ इसलिए देर से दफ्तर पहुंचे हैं कि नौकरानी वक्त पर नहीं आई? कितनी बार आप एक छोटे-से पेंचकस की तलाश में परछत्ती पर चढ़े और वहां ढेर सारा कबाड़ उलटने के बाद बाकी सब कुछ मिला मगर पेंचकस नहीं.

आम जिंदगी की ऐसी तमाम घटनाओं को समेटने वाला टीवी धारावाहिक 'वागले की दुनिया' बेहद लोकप्रिय होता जा रहा है. सोमवार की रात नौ बजे दिखाए जाने वाले इस धारावाहिक के पात्र हमारे-आपके जैसे साधारण व्यक्ति हैं और इसका नायक आर.के. लक्ष्मण का 'आम आदमी' है जो देखता सब कुछ है, कहता कुछ नहीं.

वागले भी उन्हीं लक्ष्मण की रचना है, जिनके तीखे व्यंग्यचित्रों ने 40 वर्षों से जनमानस में अपनी खास जगह बना ली है. और तो और, वागले की भूमिका निभाने वाले अंजन श्रीवास्तव की निजी जिंदगी भी वागले की जिंदगी से कुछ-कुछ मिलती-जुलती है. उसी की तरह वे बंबई की मध्यमवर्गीय सहकारी समिति की एक बिल्डिंग में रहते हैं. इलाहाबाद बैंक में नौकरी करते हैं. और वागले की तरह उनके भी दो बेटे हैं.

शायद इसीलिए उनकी भूमिका लोगों को विश्वसनीय लगती है. अंजन मानते हैं, "मैं सहकारी समिति की जिस बिल्डिंग में रह रहा हूं उसमें भी बिजली, पानी और महरी की समस्याएं ऐसी ही हैं." लेकिन इन समानताओं के अलावा वे शहरी जिंदगी के भोगे यथार्थ के सहारे इस पात्र को और वास्तविक बनाने की कोशिश कर रहे हैं.

हालांकि वागले से पहले अंजन 'इंतजार' और 'मनोरंजन' धारावाहिकों में छोटी-मोटी भूमिकाएं निभा चुके हैं लेकिन उनकी पहचान वागले से ही बनी है. वे लक्ष्मण की प्रशंसा करते नहीं थकते, "वे अपने तरह की एक खास हस्ती ही हैं. उन्होंने मुझे वागले की भूमिका विस्तार से समझाई और उसी के लहजे में मुझसे बात की. तब मुझे लगा कि वागले की भूमिका को उनसे ज्यादा अच्छी तरह कोई नहीं कर सकता." लेकिन अब जब यह धारावाहिक दूसरी बार शुरू हुआ है तो लगता है कि वागले की भूमिका अंजन के लिए ही लिखी गई थी. धारावाहिक का निर्माण करने वाली संस्था दुर्गा खोटे प्रोडक्शंस की टीना खोटे कहती हैं, "लक्ष्मण ने दर्शकों की नब्ज को छुआ है."

धारावाहिक में इस्तेमाल की गई आम बोलचाल की भाषा इसका विशेष गुण है. टीना बताती हैं, "लक्ष्मण का हिंदी ज्ञान मुझसे भी गया बीता है. इसलिए वे इसमें कोई भी ऐसा शब्द शामिल नहीं होने देते जो उन्हें समझ में नहीं आता." लक्ष्मण भी मानते हैं, "मैंने सीधी-सादी भाषा के इस्तेमाल पर जोर दिया है."

धारावाहिक के सात प्रकरणों का निर्देशन करने वाले कुंदन शाह (बाकी छह का निर्देशन रवि ओझा ने किया है) कहते हैं, "लक्ष्मण एक खास स्थिति की रूपरेखा तैयार करते हैं, हमें अभिनय करके समझाते और हम इसी के आधार पर पूरी रचना तैयार करते हैं."

(नीचे) 'वागले' के एक दृश्य में अंजन और भारती; तथा (दाएं) लक्ष्मणः यथार्थ की तस्वीर

अप्रैल में खत्म होने वाले इस धारावाहिक का अंतिम प्रकरण टेलीविजन की महिमा का बोध करा जाता है. होता यह है कि दफ्तर से लौटने पर वागले पाता है कि पत्नी (भारती आचरेकर) और बच्चे टीवी धारावाहिक 'लाइफ लाइन' की अगली कड़ी देखने पड़ोसी के यहां चले गए हैं. वागले बहुत अकेला महसूस करता है और एक टेलीविजन खरीदने का फैसला करता है. वागले परिवार और सेल्समैन की नोंकझोंक, टेलीविजन पर धारावाहिक चलते समय टीवी के हर बटन को घुमा-फिराकर देखने की वागले की हरकतें यही बताती हैं कि यदि हंसना चाहते हैं तो अपने आसपास नजर दौड़ाइए.

हर प्रकरण को सिर्फ 2 मिनट दिए जाने के निरंकुश रवैए से लक्ष्मण बेहद खफा हैं. वे कहते हैं, "यदि महाभारत को, जिसमें एक के बाद दूसरा तीर चलता दिखाया जाता है, 45 मिनट दिए जा सकते हैं तो वागले को ज्यादा क्यों नहीं?" यही सवाल अब ज्यादातर दर्शक भी दूरदर्शन से पूछने लगे हैं.

—ललित

अब होली के रंग अनेक

हम सुबह घूमकर लौट रहे थे. कुछ लड़के मुहल्ले के कूड़ेदान में पानी और मिट्टी मिलाकर एक डंडे से कोई मिश्रण घोलते नज़र आए. परीक्षा सिर है. कॉर्पोरेशन के लिए उदाहरण बने के स्वैच्छिक समाज सेवा कर रहे हैं. ने उत्सुकता जताई—

"यह क्या हो रहा है भाई?"

"होली आ रही है. उसी की तैयारी है."

हम आश्वस्त हुए. युवा शक्ति के ऐसे ही द्योग से मुल्क तरक्की करेगा.

र आए तो दर्शनशास्त्र के प्रोफेसर तायी विराजमान थे. उन्होंने अपने राप्रवाह भाषण की समाप्ति की—

"बजट और होली फागुन के दो पाहुन ते हैं."

"पर इस बार बजट तो है", हमने सूचना दी.

"होली भी फीकी होगी. हारों के कैलेंडर में बजट बाद होली रखने का एक मकसद है. भंग की रंग-ग में डूबकर लोग करों बढ़ती दरों से डर खुद-ी का खयाल छोड़ दें."

"आप होली नहीं गे?"

"खेलों से अपना जी ट गया है. हम क्रिकेट-की सब में तो हार ही रहे

"लेकिन बोफोर्स के ट्रीय खेल में तो मोर्चा ने के लिए जी-जान से जुटा हुआ है."

"काश! अपना भी स्विस बैंक में उंट होता. वह जांच करते. हम चुनौती कि सीबीआई वालो साबित करो, ना माफी मांगो.

"एक गुमनाम एकाउंट भी है. आप उसे पा लो."

"न हम नेता हैं, न हिंदुजा, न हीरो. स्टेट तक में तो अपना खाता है नहीं, स्विस में क्या खाकर होगा."

"पर दूसरे प्राध्यापक तो घंटे की दर से न पढ़ाकर कोठियां खड़ी कर रहे हैं."

"र्शन की तो ट्यूशन भी नहीं है."

"आप आने वाले इम्तहान में लड़कों पास करवाने का ठेका ले लीजिए."

कमीशन खाना और नंबर बढ़वाना जैसे परोपकार के काम हमारे देश के प्रिय उद्योग हैं. पहले होली का चंदा लेने के लिए अपने यूपी-बिहार में लोग डोर और कांटे की कारीगरी से राहगीरों की टोपी उछालते थे. फिर इज्जत की कीमत वसूलकर लौटा देते थे. पर इधर, समझदार नागरिक अपनी इज्जत टोपी में नहीं स्विस बैंक के लॉकरों में रखते हैं. लिहाजा चंदे का धंधा भी मंदा है. ऐसी होली जलाने की जरूरत भी क्या है. कश्मीर और पंजाब में आतंकवादी जनता की संपत्ति से होली खेलने में लगन से लगे हैं. नेता क्यों चूकें. वे अपराधियों को विधायक बनाकर उनके हृदय-परिवर्तन का दांव लगा रहे हैं. गांधी, विनोबा और जयप्रकाश की परंपरा निभाने के नाम पर मूल्यों की राजनीति की होली उन्हें भी तो जलानी है.

रेखाचित्र: जयंतो

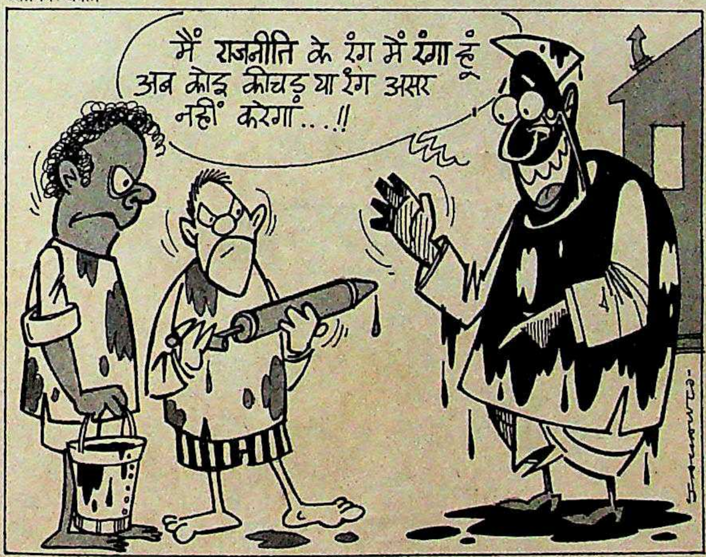
मैं राजनीति के रंग में रंगा हूं अब कोई कीचड़ या रंग असर नहीं करेगा...!!

इतने में आततायी जी फिर पधार गए. इस बार उनका इरादा सरकार से सुरक्षा लेने का था.

"आपको किससे खतरा है?" हमने जानना चाहा.

"पहले समाज में जनसेवकों का सम्मान था. फिर जिनके घर आयकर के छापे पड़े, वे बड़े हो गए. अब या तो साधु-तांत्रिक श्रेष्ठ जन हैं या काले बिल्लों से घिरे वर्तमान और भूत बने सांसद-मंत्री."

"बड़प्पन का यह फितूर एकाएक आप पर कैसे सवार हो गया?"

"सब आत्मरक्षा की तरकीबें हैं. पिछली परीक्षा में एक को नकल करते पकड़ा था तो लड़कों ने ऐसी पिटाई की कि अब तक जोड़-जोड़ दुखता है. सरकारी काले बिल्ले मिलें तो अपना भी रौब होगा."

वक्त के साथ होली का भी चरित्र सुधरा है. कहीं ड्रगों की, तो कहीं दंगों की होली है. कहीं आतंक का डंक है तो कहीं हिंदुत्व का शंख. होली समता का पर्व है. कीचड़ सुलभ होने के कारण होली का स्तर भी कीचड़ तक आ गया है. अब तो यह आलम है कि अपनी इज्जत का अस्तित्व जताने के लिए लोग एक-दूसरे पर कीचड़ उछालते हैं. फिर मन ही मन शिकायत करते हैं कि मेरी क्लीन छवि पर उससे कम दाग क्यों.

हम इस सोच में खोए थे कि 'बचाओ-बचाओ' की पुकार लगाते हमारे पड़ोसी आ गए. उनके एक गाल पर काला पेंट और दूसरे पर मिट्टी सनी थी.

"आपका मेकअप उन्होंने बड़े मनोयोग से किया है."

"पहले नाली में फेंक दिया. और और फिर बोले कि कीचड़ में कमल ऐसे ही तो खिलते हैं."

हाल-फिलहाल होली की लोकप्रियता बढ़ी है. उसकी मूल भावना रोजमर्रा की जिंदगी में शामिल हो गई है. पहले साल में एक बार एक-दूसरे को लोग रंगों का चेहरा पहनाते थे. अब तो असली चेहरे पर रोज नए मुखौटे लगाना आम बात है. अधिकारी के सामने 'यस सर' की कातरता का, पत्नी के सम्मुख ठेठ दकियानूसी भारतीय पति का और दूसरी महिलाओं के आगे गुप-चुप रोमांस का!

आततायी की तलाश कर रहे एक छात्र नेता ने अंदर आकर खुशखबरी सुनाई—

"हम हर साल की तरह महामूर्ख सम्मेलन कर रहे हैं. हमने एकमत से आततायी जी को मूर्ख शिरोमणि की उपाधि दी है. समारोह में गा-बजाकर हम उन्हें काले पेंट का डिब्बा भेंट देंगे."

"काले पेंट की जगह काला धन देते तो आततायी का भी कुछ भला होता."

"हम दो और पुरस्कार दे रहे हैं. सर्वश्रेष्ठ भ्रष्टाचारी के लिए बोफर-शिरोमणि और अंतरराष्ट्रीय जालसाजी के लिए होली-स्वामी. इनमें कुछ कमाई हुई तो बांट लेंगे. आप अपने सुझाव भी भेज सकते हैं."

ट्रायमॉल राहत दिलाए

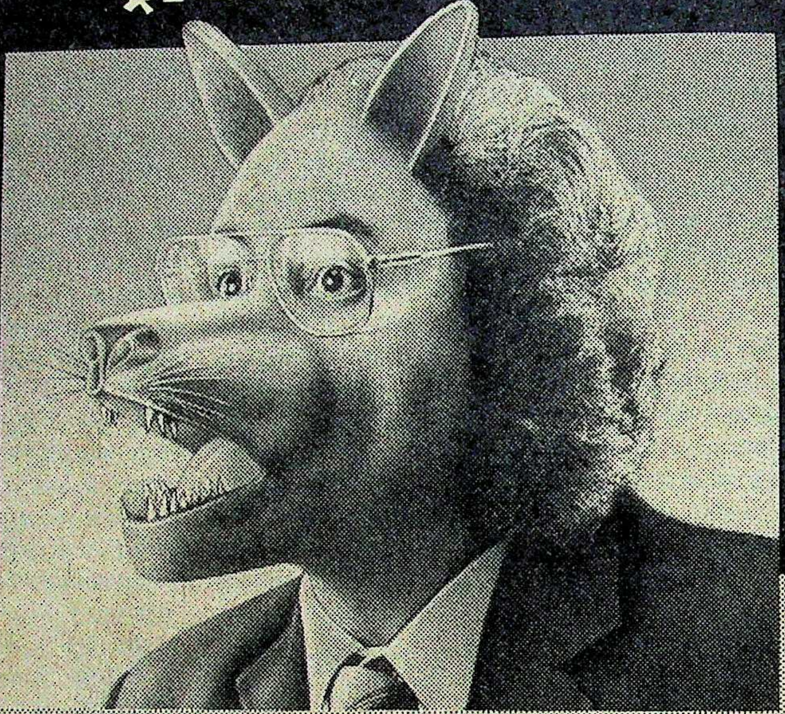

इस से पहले कि सरदर्द पागल कुत्ते का काटा बन जाए

सरदर्द होता है आपको, और आप झुंझलाते हैं, औरों पर.
परेशानी क्यों? अपने साथ-साथ दूसरों के
लिए सरदर्द क्यों बनें?
ट्रायमॉल का दुनिया भर में जाना-माना ज़ोरदार,
राहतदायक, भरोसेलायक ट्रिप्पल एक्शन फ़ार्म्यूला
आपको आराम दिलाए,
आपकी मुस्कान वापिस ले आए.

TRIMOL
STRONG
SURE
SAFE
FOR HEADACHES AND BODY PAIN

A product of ajanta pharma limited 21-31 Satyam, 318 Linking Road, Khar (West), Bombay 400052.

मोतेजक दवाएं

कमाल की कशिश

ई बड़ी कंपनियों की नई गोलियों से बाजार पटा

खोए हुए पुरुषत्व को हासिल करने के लिए चमत्कारी दवा की तलाश द सभ्यता के आदिकाल से जारी है. ुर्वेद के प्राचीन ग्रंथ चरकसंहिता में जीकरण' पर एक पूरा अध्याय ही है, समें आजीवन पुरुषत्व बरकरार रखने के ीके बताए गए हैं. पंडित और पठान ाब्दियों से तरह-तरह के लुकमानी नुस्खे रहे हैं. फिर भी अचूक दवा की तलाश ी तक नहीं हो पाई है.

दुनिया भर में लोगों की ायी पुरुषत्व की तलाश से ाहित अनेक आयुर्वेदिक र फार्मास्युटिकल कंपनियां ढेरों तरह के 'पुरुष मोतेजक' उत्पादन लेकर ार में आ गई हैं. ातार बढ़ती खपत वाले ार में कंपनी सूत्रों के ुसार इन कामोत्तेजकों की ी करीब 40 करोड़ रु. ाना है. इसके अलावा ुर्वेदिक टॉनिक च्यवन-—इसे भी अनेक लोग पोषक मानते हैं—की करोड़ रु. की सालाना ी इससे अलग है.

श्वगंधा और शिलाजीत आदि परंपरा- जड़ी-बूटियों और खनिजों को मिलाकर 03' और 'लावा' जैसे अर्थपूर्ण नामों ी तरह-तरह की गोलियां और कैप्सूल रहे हैं. चमत्कारी दवाओं के इस धंधे में कंपनियां भी शामिल हो गई हैं— स की टीटीके फार्मा ने अपनी दवा का 'मस्तंग' रखा है.

ेकिन आज की चमत्कारी दवा चरक बनाई गई दुर्लभ भारतीय जड़ी-बूटी है. वरन, प्राचीन चीनियों द्वारा मोद्दीपक माने जाने वाले कोरियाई पौधे ग की जड़ से प्राप्त सफेद पाउडर है. साल पूर्व बंबई की फार्मास्युटिकल ी इफार इंटरफ्रान इसे बाजार में लाई ाज कुल कामोद्दीपक दवाओं की एक ाई बिक्री जिनसेंग की है. वॉकहार्ड और सी जैसी नामी-गिरामी फार्मास्युटि- नियां करीब 9 ब्रांड नामों से इसका न कर रही हैं.

कामोद्दीपक दवाओं के व्यवसाय में अजंता फार्मा हाल ही में आई है. उसने 'कायाकल्प' करने वाली दवा का नाम 'थर्टी प्लस' रखा है, जिसे अश्वगंधा और जिनसेंग से मिलाकर बनाया गया है. पिछले महीने फिल्म अभिनेता जीतेंद्र को दर्शाते हुए उसने प्रमुख अखबारों में रंगीन विज्ञापन छपवाए. अजंता फार्मा के विपणन प्रबंधक सुभाष चंद्रन के अनुसार, "हम करीब एक करोड़ रु. मूल्य के 20 लाख कैप्सूलों के साथ बाजार में आए हैं."

चमत्कारी दवाएं: धुआंधार बिक्री

amber forte
Biovital
T NE UP
VITA-EX
CAPSULES
Biological E. Limited

भारतीयों में परंपरागत दवाओं के प्रति बढ़ती चाहत के कारण कामोद्दीपक नुस्खों की वापसी हुई है

पढ़े-लिखे शहरी भारतीयों में परंपरागत दवाओं के प्रति बढ़ती चाहत के कारण कामोद्दीपक नुस्खों की वापसी हुई है. शहरी जीवन के तनावों और यौन व्यवहार में आए खुलेपन के कारण पैदा हुई मांग की पूर्ति लुभावने नाम, पैकिंग और अधिक कीमत वाली गोलियों से की जा रही है. आयुर्वेदिक कामोद्दीपकों के निर्माता इंडो-जर्मन फार्मास्युटिकल्स के प्रबंध निदेशक राजीव थत्ते के अनुसार, "ये दवाएं तो बहुत पुराने समय से रही हैं लेकिन बदली हुई आदतों और वातावरण के फलस्वरूप उनकी मांग एकदम बढ़ गई है." लिनमार्क फार्मास्युटिकल के विपणन योजना प्रबंधक के. गोपाल कृष्णन बताते हैं, "जिनसेंग की मांग 80 फीसदी सालाना की दर से बढ़ रही है."

तनाव की औषधि के रूप में प्रचारित जिनसेंग पाउडर मधुमेह रोगियों की कामशक्ति बढ़ाने वाला भी बताया जाता है. लेकिन बंबई के जसलोक अस्पताल में अंतःस्रावी ग्रंथि विशेषज्ञ डॉ. शौकत सादीकोट के अनुसार इस दावे में कोई सचाई नही है. भारत के जाने-माने यौन विशेषज्ञ डॉ. प्रकाश कोठारी, जो बंबई के केईएम अस्पताल में यौन चिकित्सा विभाग चलाते हैं, भी इस दावे को संदिग्ध मानते हैं.

लेकिन गोलियां खा-खाकर निराश हो गए लोगों के लिए उम्मीद खत्म नहीं हुई है. जसलोक अस्पताल ने नपुंसकता के इलाज के लिए एक नया विभाग शुरू किया है. मूत्र चिकित्सा विशेषज्ञ डॉ. अजीत वझे के अनुसार, "नपुंसकता के इलाज में हमें मिली सफलता सही निदान का नतीजा है. हमारे पास एक ऐसा मरीज आया जिसकी साढ़े तीन साल पहले शादी हुई थी लेकिन उसने कभी संभोग नहीं किया था. उसकी नसों में खराबी थी, जो ढेरों गोलियां खा लेने पर भी ठीक नहीं हो सकती थी. एक मामूली ऑपरेशन से ठीक कर दिया."

इसके बावजूद, जब काम तृप्ति के लिए लोग घुटे हुए मोतियों से लेकर गैंडे के सींग तक कुछ भी लेने को तैयार हों तो जाहिर है, कामोद्दीपक दवाओं की बिक्री और बढ़ेगी ही.

—एम. रहमान

अंजोना

अमृतलाल नागर

नागर जी ने 15 बरस की उम्र में पहली कहानी लिखी थी. उम्र के 74वें पड़ाव तक उन्होंने उपन्यास, कहानियां, नाटक, हास्य-व्यंग्य रचकर हिंदी साहित्य में अमिट छाप छोड़ी. संबंधों की संवेदना को उकेरने वाली यह कहानी उन्होंने निधन से कुछ ही अरसा पहले 'इंडिया टुडे' को भेजी थी.

दरवाजे की कुंडी खटकी, दरवाजा खुलने पर भीतर और बाहर खड़े दोनों चेहरों पर अजनबीपन झलका. दरवाजे के बाहर गली में खड़े हुए सफेदपोश काले रंग की खिचड़ी दाढ़ी वाले चश्माधारी सज्जन ने पूछा, "यह घर अब भी खैराती खां कबाड़ी का है या—"

सफेद कोढ़ के दागों से भयंकर कुरूप लगने वाली ढलती जवानी की अज्जो ने कहा, "जी हां."

"उनका ये बाहरी हिस्सा तो बहुत टूटा-खुदा हुआ था अब तो अजसरे नौ बन गया है. क्या खैराती खां साहेब हैं?"

"जी नहीं उनको तो मरे बरसहां बरस हो गए."

"तब ये मकान अजसरे नौ किसने करवाया?"

"मेरे शौहर ने."

दाढ़ी वाले भले मानुस ने चौंककर अज्जो को देखा, फिर पूछा, "खैराती चच्चा की तो एक ही बेटी थी अज्जो."

"मैं ही हूं बुलाकी भैया."

"हाय अज्जो तुम! ठहरो पहले मुझे भीतर आ जाने दो." बुलाकी खां घर के भीतर आ गए और बाहर के दरवाजे बंद कर दिए. "यह तुम्हारा क्या हाल हुआ है अज्जो?"

अज्जो के सफेद होठों पर दुखभरी मुस्कान की रेखा खिच गई.

"तुम्हें याद है लड़कपन में मैं तुम्हारे पीछे दीवाना था?"

"याद है. मगर नसीब में तो यह दिन देखना बदा था बुलाकी भैया; वरना अब्बा आपके यहां से आने वाला पैगाम भला क्यों नामंजूर करते....आप तो सुना है कानपुर जाकर बहुत बड़े आदमी हो गए हैं?"

"बड़ा-वड़ा तो क्या. हां खुदा के फजल से दो बेटे हैं और अब तो काम संभालने लायक भी हो गए हैं. मोजे-बनियान का कारखाना रोटी-चटनी के वास्ते अच्छा सहारा बन गया है. मैं सोचता था कि यहां भी तुम्हारा और अपना घर मिलाकर छोटे बेटे के वास्ते भी एक कारखाना बनवा दूं. मैं समझता था कि खैराती चच्चा का घर अब खंडहर पड़ा होगा."

"खंडहर ही हो जाता अगर मेरे खाविंद ने इसे नए सिरे से न बनवा दिया होता. यह जगह उन्होंने अपने लड़कों के लिए ही नई करवाई थी और अब तो बुलाकी भैया इस मुसीबत के सहारे-सी जैदाद को बेचूंगी नहीं. मेरे शौहर ने ये आगे तीन दुकानें बनवा दीं. इन्हीं के किराए से बच्चों का पेट पालती हूं. इसे बेच दूं तो जाऊंगी कहां?"

"खैर अब तो सवाल ही नहीं उठता अज्जो, मैं उधर मजीद वाले घर की बात भी चला रहा हूं. सोचता था यह मकान सस्ते में मिल जाएगा और मेरे घर से लगा हु है. बीच की दीवाल तोड़कर एक कर लू

"पहली और उसके बच्चों के मारे घर-दुकान से हटा जरूर दिया है मगर मालिक तो अब भी वही हैं. मेरे भी औ कुछ यहां है उसके भी, वो इसे बेचने

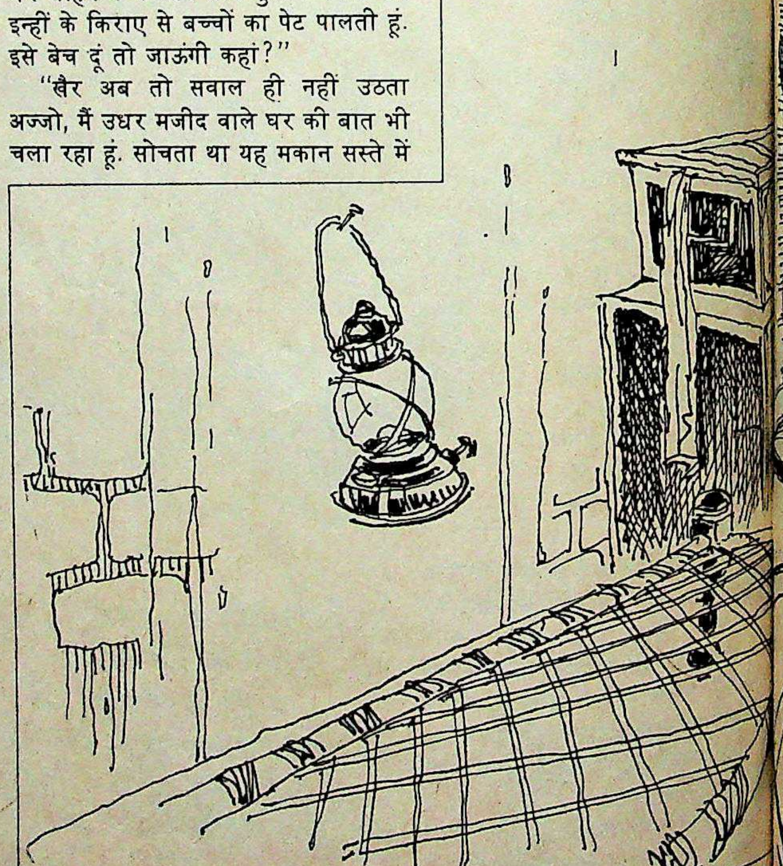

याद है. मगर नसीब में तो यह दिन देखना बदा था बुलाकी भैया; वरना अब्बा आपके यहां से आने वाला पैगाम भला क्यों नामंजूर करते.....

समझता हूं अज्जो, वह बात खत्म हो
क्या खूबसूरत थी तुम कभी. यहां
तो आठों पहर तुम्हीं-तुम दिमाग में
रती थी. खैर, तो चलता हूं. मैं यहां
ाठ-दस दिन और रहूंगा. एक आध
्हारे यहां भी फिर आऊंगा. और मेरे
कोई कामकाज हो तो बेझिझक
ा."

रेखाचित्र: जयंती

बुलाकी खां चले गए. अज्जो का मन पुरानी यादों में खो गया. बाप खैराती खां नब्बू कबाड़ी के नौकर थे. दिन भर कंधे पर बोरा डालकर गलियों-गलियों में 'टूटे-फूटे बरतन बेच डालो, खाली शीशियां, पुराने कपड़े, रद्दी अखबार बेच डालो' की आवाजें लगाते और सौदा करते घूमते थे. नब्बू अठन्नी रोज देता. कभी-कभी कम कीमत में अच्छा माल ले आने पर दो चार आने अधिक भी दे देता जो खैराती के ताड़ी-महुए के काम आ जाते थे. अज्जो पांच-छह बरस की ही थी तब उसकी मां मर गई. खैराती नशे की तलब में कभी-कभी इधर-उधर मारा-मारा घूमता फिरता और घर ही न आता था. बुलाकी मियां की अम्मा ही उसे दो रोटी खिला देती थीं. अपनी गरज से ही सही मगर अज्जो उसी के सिखाए खाना बनाने और घर-गृहस्थी के काम में कुशल हो गई. बुलाकी की मां यही चाहती थी कि अच्छी लड़की है, बुलाकी से इसका निकाह पढ़वा दूंगी तो घर की रौनक बची रहेगी. बुलाकी के बाप नन्हे हजामत बनाया करते थे. घर का चूल्हा उसी की बदौलत जलता था. नन्हे नाई जब अपने बेटे बुलाकी के लिए अज्जो का पैगाम लेकर खैराती के यहां पहुंचा तो खैराती अकड़कर बोला, "असली पठान की बेटी को साले हज्जाम की जोरू बना दूं? हरगिज नहीं, भाग जाओ."

नतीजा यह हुआ कि उधर तो बुलाकी घर से भागा और इधर रोटी से बेसहारा होकर

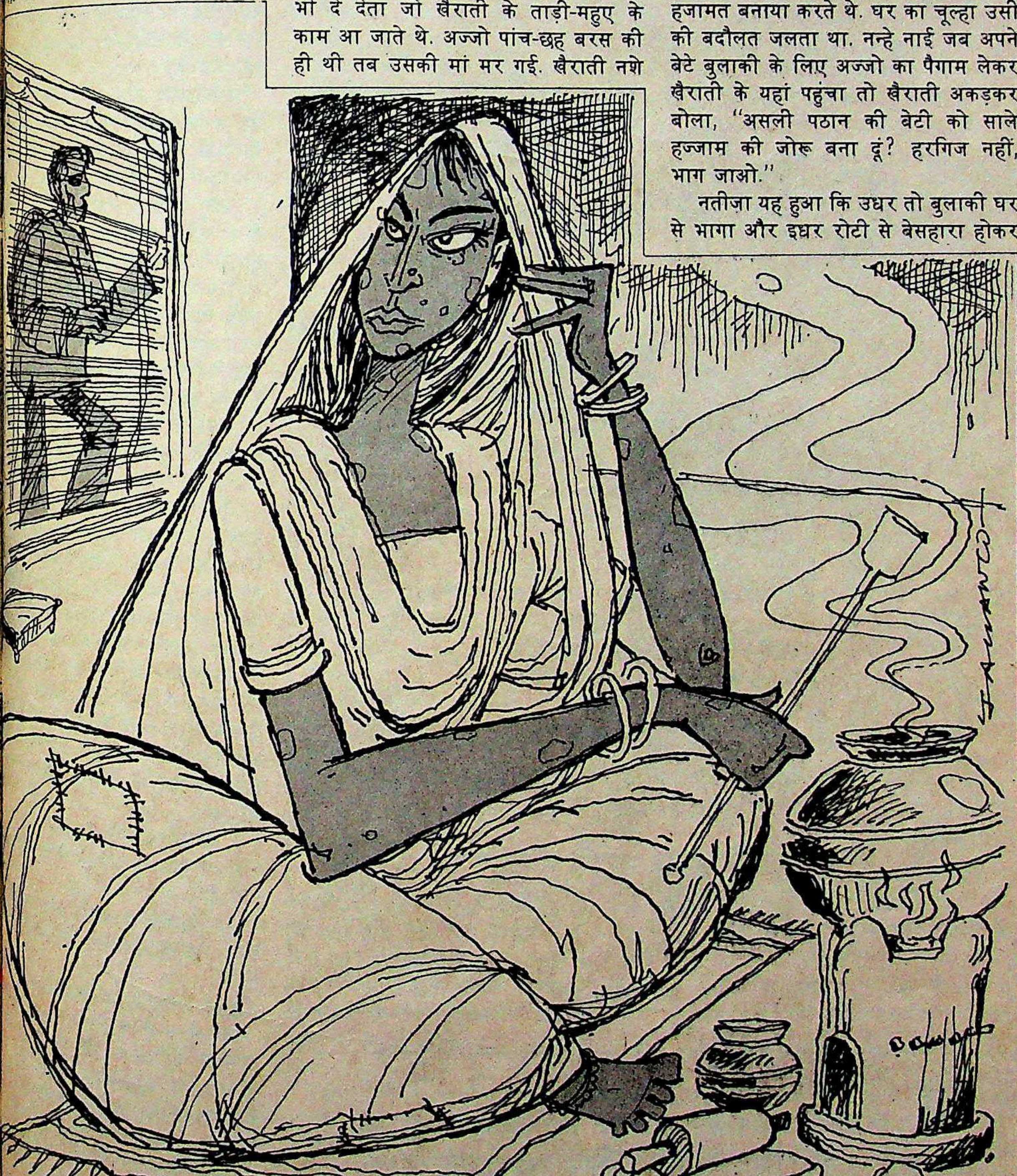

अज्जो भी घर से चली गई. भटकते-भटकते मौलवीगंज के अमजद मनिहार की घरवाली ने उसे अपने यहां रोटी पकाने की नौकरी दे दी.

अज्जो का रंग भले ही काला हो मगर नाक-नक्शा बहुत ही सुंदर था. ख़ास तौर से उसकी आंखें तो शहद भरी कटोरियां ही थीं. अमजद की बीवी अपने बच्चों के साथ एक दो रोज के वास्ते अपनी चचेरी बहन के यहां अमीनाबाद गई थी. इसी बीच में अमजद ने अज्जो के साथ अपना रिश्ता बना लिया. अमजद की पहली बीवी नूरी थी तो ख़ूबसूरत मगर जबान बहुत तेज थी. अज्जो अमजद के मन भा गई, दो बच्चे भी हुए. दो दरों वाली बड़ी दुकान की मालकिन बनकर अज्जो के चेहरे पर निखार आया और बदन भी चौड़ा हुआ. दिन अच्छे ही बीतते मगर बदकिस्मती से यह सफेद दागों की बीमारी लग गई. दाग बढ़ते ही गए. अज्जो इतनी बदसूरत हो गई कि उसको दुकान पर बिठलाना गहकिनों के लिए मनहूस साबित होने लगा. पहली बीवी नूरी के अच्छे दिन फिर से लौट आए. अज्जो और उसके दोनों बेटे मौलवीगंज से हटाए जाने पर फिर इसी गुलियादाई की गली में आ बसने को मजबूर हुए. अमजद ने यही क्या कम भलमनसाहत दिखाई थी कि अज्जो के मैके वाले घर को नए सिरे से बनवा दिया था और उसमें तीन दुकानें भी आगे को निकलवा दी थीं. उसी के नब्बे रुपए महीने की आम से अज्जो और उसके बेटों का किसी तर गुजारा हो जाता था.

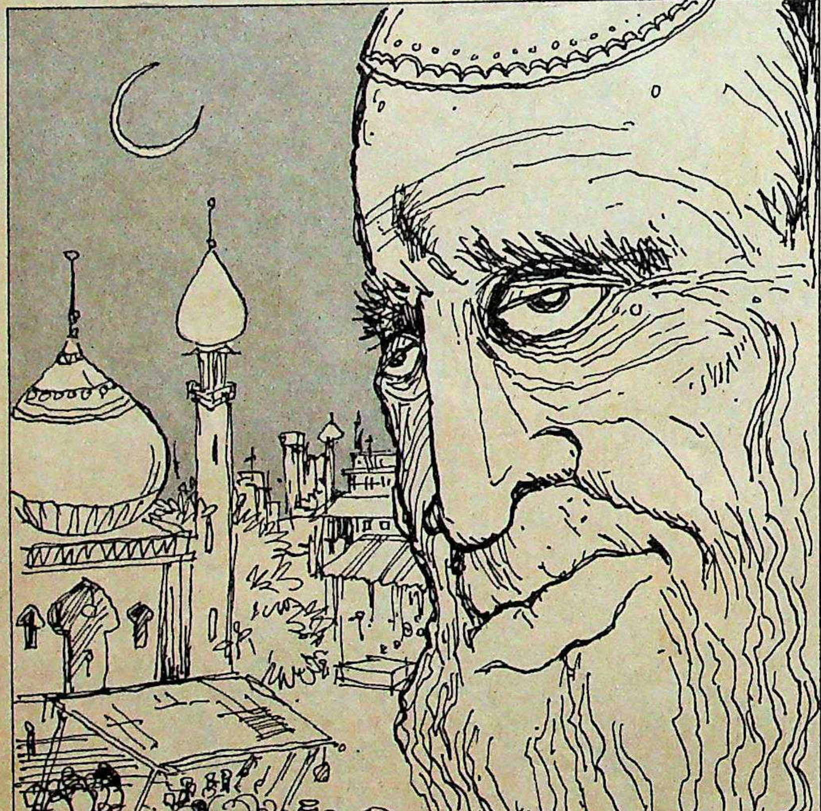

अज्जो बीबी, खुदा की मर्जी कि हम एक-दूसरे के नहीं बन सके. ...मेरे दिल में तुम्हारे लिए वही पुराना जज्बा अब भी बाकी है. तब कुछ और होते मगर अब भाई-बहन

जिस दिन बुलाकी मिले उस दिन अ अपनी बदकिस्मती पर बार-बार रोई. एक दिन वह भी देखा था जब अमजद उसका शरीर सोने-चांदी के गहनों से दिया और वह दिन भी देखा जब शौहर मन से उतर जाने पर नूरी ने उसके एक गहने उतरवा लिए थे. नंगी बूची होकर इस घर में लौटी थी. बच्चों के कपड़े फट चले थे.

रमजान के दिन आने वाले हैं. गरीबों मुहल्ला ही सही मगर हर घर में दो-चार कपड़े तो बनेंगे ही. अज्जो अपने बच्चों मन भला कैसे बहलाएगी?

आंसू थमते ही नहीं, आंसुओं से गीला गीली रूई के बोझ की तरह और भारी ही चला जाता है. तीसरे दिन बुलाकी आए. कहने लगे, "अज्जो बीबी, खुदा मर्जी कि हम एक-दूसरे के नहीं बन मगर खुदा यह भी जानता है कि मेरे दि तुम्हारे लिए वही पुराना जज्बा अब भी है. तब कुछ और होते मगर अब भाई- मेरे लायक कोई खिदमत हो तो बतलाओ, तुम्हें हमारी कसम. कुछ वगैरह की मदद—"

"नहीं बुलाकी भैया, मेरा तो बस ए मददगार है, ओ ऊपरवाला और किसी मदद नहीं लूंगी..." कहते-कहते उसकी और गला भर आया. बुलाकी मियां झुकाए खामोश बैठे रहे. आंखें पोंछकर बोली, "कल इतवारी की अम्मा कह र कि रमजान में लोग सबाब करते हैं. व थी कि जब उसके बुरे दिन थे तो साहब की सलाह से उसने कुछ मुसल भाइयों को खत लिखे थे. उसके पास स रुपए आ गए थे. मैं भी यही करना हूं."

"लेकिन करोगी कहां से बहन? तु पास तो डाक में खर्च करने के लिए भी नहीं हैं."

अज्जो कुछ न बोली, फफककर रो कहा, "अल्ला जो दिन दिखाएंगे वह लूंगी."

कुछ देर रुककर बुलाकी ने फिर "सुनो मैं तुम्हें रुपए नहीं दूंगा लेकिन इतवारी की अम्मा की सलाह ही मान तुम्हारे लिए पोस्टकारड ले आऊंगा, कोशिश करके किसी पढ़े-लिखे से लाऊंगा. तुम्हें मेरी कसम, भाई की य तो लेनी ही होगी. बाकी तुम्हें जो अ वह तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों का अज्जो बहुत न-न करती रही मगर बु मियां उठकर चले गए. उसके

भी चले गए.

दिन के बाद एक मनीआर्डर आया. का था. मनीआर्डर की चिट में 'आपका खत मिला, बच्चों के लिए भेज रहा हूं.'

चाहते हुए भी अज्जो ने वह रुपए लिए के साथ यह उम्मीद भी मन में कि बुलाकी भैया ने शायद और भी खत देखो आगे और कहां से क्या आता वाले के हाथ बहुत लंबे-लंबे हैं. हर किए का इंतजार रहने लगा. दो-चार बाद एक पांच रुपए का मनीआर्डर फिर एक दस रुपए का. उम्मीदें और राई, "अल्ला भला करे इतवारू की का और बुलाकी भैया का. अभी तो और भी आएंगे."

किए का इंतजार करते-करते दस-बारह दिन बीत गए मगर वह न आया. अब दिन भर दरवाजा खोले डाकिए में बैठी रहती. एक दिन पार्सल जरूर बुलाकी ने बच्चों के लिए चार-चार भेजी थीं. फिर दिन बीतने लगे. ईद पास आ जाता है मगर डाकिया नहीं ईद के दिन बच्चे कोई नई बनियान ही बाहर नहीं निकलेंगे. उनके लिए एक-कुरता और पाजामा तो चाहिए ही. सबाबियों का इंतजार कर रही है. का दिन हर रोज पास खिसकता ही है लेकिन किसी सबाबी का मनी-नहीं आया. अज्जो की फिक्र बढ़ती "ईद के दिन बच्चे क्या पहनेंगे? की जो बुलाकी भैया का कहा न कैसे मानती? हाय मेरे अल्ला मैं" बेबसी में आंसू और अल्ला का दिल की छटपटाहट को राहत देते हैं. एक रोज पहले इफ्तारे का वक्त प्लेटों में दोनों बच्चों के लिए रही थी कि एकाएक कुंडी खटकी. है? रहीमे देख तो कौन है?" और करीम दोनों ही भाई दरवाजे पड़े. एक आदमी हाथ में एक गट्ठर था, पूछने लगा, "खैराती खां की बीबी का मकान यही है?"

हां."

कौशला ड्रेसेज से आया हूं. इस घर में दो ही बच्चे हैं?"

हां."

अपने फर्म के मालिक की तरफ से ईद लाया हूं. नाप यहीं दीजिएगा या लिएगा." लड़के पीछे खिसके. छोटी-सी अंगनाई में आया. "सुनिए खड़े हो जाइए." लड़के उत्सुकता-आदेश का पालन करने लगे. जेब से फीता निकाला और दोनों भाइयों की नाप ले ली. फिर गट्ठर खोला. कुछ बड़े और कुछ दोनों के फिट नाप के कपड़े चुने और कहा, "हमारी फरम के मालिक राम-नाथ कौशल ने ये अपनी एक न देखी हुई बहन के बच्चों के लिए ईद की सौगात भेजी है. और ये पचास रुपए मिठाई खाने के लिए भी."

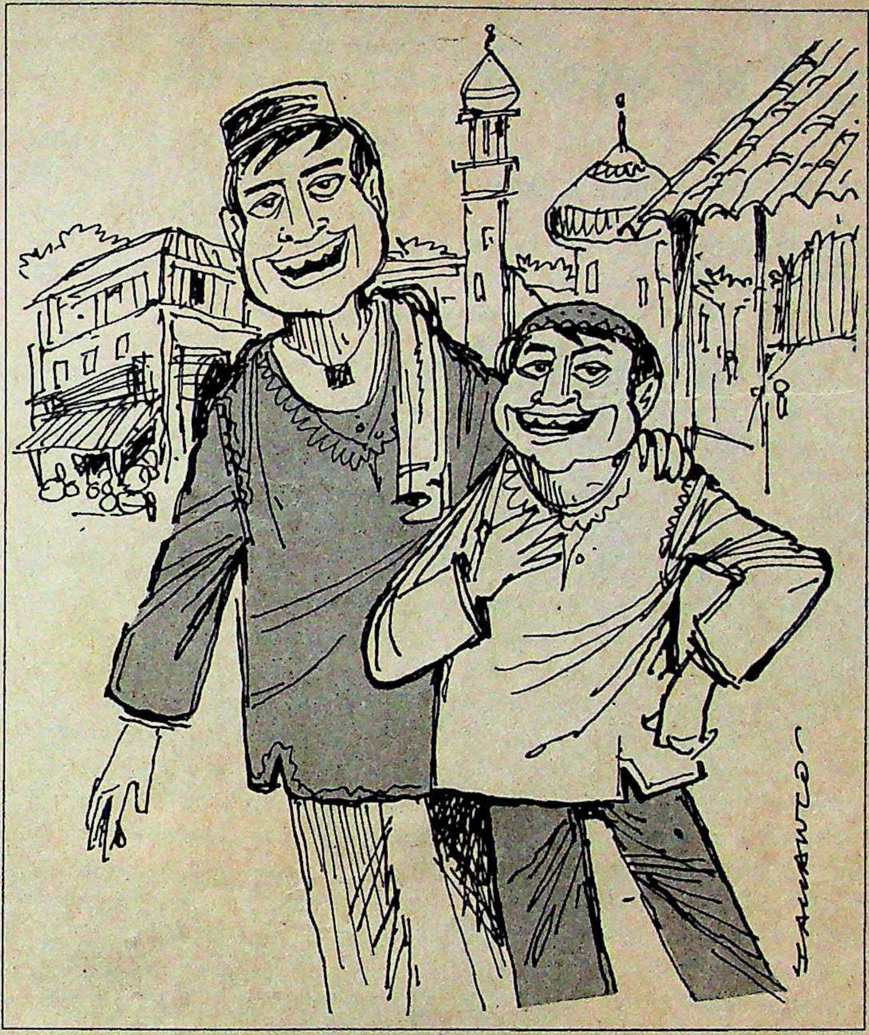

अज्जो की फिक्र बढ़ती जाती है, "ईद के दिन बच्चे क्या पहनेंगे? मैंने गलती की जो बुलाकी भैया का कहा न माना. कैसे मानती?"

कोठरी की चौखट पर खड़ी हुई अज्जो यह अनहोनी होती हुई सोच रही थी. बोली, "बैठिए इफ्तारे का वक्त है कुछ नोस फरमा लीजिए."

"नहीं बीबी जी, आज हमार बरत का दिन है, नहाय-धोके पहले शिव जी को लोटा भर जल चढावेंगे—तब भोजन-ओजन की बात होयगी. हमें माफ कीजिए."

"आपके मालिक को कैसे पता चला कि बच्चों के पास कपड़े नहीं हैं?"

"अरे एक खत आया था कानपुर के बनयान वाले की फरम है. हमारा उनका व्यवहार है. मालिक ने यह भेजा है. तीज-त्योहार तो सबके एक जैसे हैं बीबी जी. मालिक बोले—पांडे तुम्ही दे आओ. हमने कहा अच्छा."

अजीजन के बच्चे नई कमीज-पतलूनें पाकर खुशी से नाच रहे थे. अज्जो ने पचास रुपए के नोट उठाए. नोटों पर बुलाकी मियां का चेहरा झलक रहा था. अज्जो की आंखें भर आईं.

काव्य संग्रह

दबी हुई आवाजें

नाइजीरियाई कविता के तेवर

द्वितीय महायुद्ध के बाद एशिया, अफ्रीका व लैटिन अमेरिकी महाद्वीपों में आई आजादी की आंधी ने न केवल राजनैतिक सत्ता का विकेंद्रीकरण किया बल्कि सांस्कृतिक विनिमय के दरवाजे भी चारों दिशाओं में खोल दिए. इन महाद्वीपों के अधिकांश देश आज भी अपनी गरीबी और पिछड़ेपन के कारण 'तीसरी दुनिया' के रूप में जाने जाते हैं और समान रूप से यूरोपीय साम्राज्यवादी शोषण के शिकार रहे हैं. आत्मनिर्भर बनने की कोशिशों और विकास की समान स्थितियों ने भी सांस्कृतिक दृष्टि से इन राष्ट्रों को परस्पर समीप लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. इसी का नतीजा है कि हिंदी की जो पत्र-पत्रिकाएं दो-तीन दशक पहले यूरोपीय साहित्य के अनुवादों से भरी रहती थीं उनमें आज अफ्रीकी और लैटिन अमेरिकी साहित्य कहीं ज्यादा दिखाई देता है. 'पानी के छींटे सूरज के चेहरे पर' संग्रह में संकलित नाइजीरियाई कविताओं का हिंदी रूपांतरण इसी कड़ी का अगला कदम है.

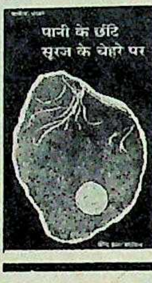

पानी के छींटे सूरज के चेहरे पर

(नाइजीरियाई कविताओं का हिंदी अनुवाद)
अनुवादः वीरेंद्र बरनवाल
रेवती कुंज, हापुड़
मूल्य: 60 रुपए

संग्रह में नोबेल पुरस्कार विजेता वोले-शोयिका सहित आठ प्रमुख कवियों की 51 कविताएं संकलित हैं. इन कविताओं पर बीसवीं सदी के प्रमुख यूरोपीय कवि मलार्मे, इलियट, हॉपकिंस और एजरा पाउंड के शिल्पगत प्रभाव आसानी से देखे जा सकते हैं. संग्रह की विस्तृत भूमिका का इस मायने में महत्व और बढ़ जाता है कि उससे नाइजीरियाई इतिहास और उसे प्रभावित करने वाले कवियों-विचारकों का भी संक्षिप्त परिचय मिल जाता है जो अनूदित कविता को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है.

वास्तव में वही कविता अनूदित होने की हकदार होती है जिसका सच, संवेदना बार-बार पाठक को लुभाए और रामचंद्र शुक्ल के शब्दों में, ''भक्ति रस की तरह वह उस आनंद को सर्वत्र बांटने के लिए प्रेरित हो.'' प्रस्तुत संग्रह की भी यही खूबी है कि अधिकांश कविताएं 'कम्युनिकेट' करती हैं. विदेशी भाषा के पुल से गुजरने के बाद भी अनुवाद में कविताओं का मूल तत्व सुरक्षित बचा रहता है. कविताओं के चुनाव की एक विशेषता यह भी है कि नाइजीरियाई कविता के हर प्रमुख तेवर को संकलन में स्थान मिला है.

अनुवाद के लिए जरूरी नहीं कि सर्वश्रेष्ठ की ही तलाश की जाए किंतु वह प्रतिनिधि लेखन तो हो. कैसा लगे यदि प्रेमचंद, रेणु या अज्ञेय के बजाए भारतीय लेखन के नाम पर गुलशन नंदा या काका हाथरसी को प्रतिनिधि के रूप में विदेशों में अनूदित किया जाए? इसलिए अच्छा हो कि अनुवाद की जिम्मेदारी उस भाषा और देश की प्रामाणिक जानकारी वाले रचनाकर्मी ही उठाएं, न कि वे लोग जो अंग्रेजी मुहावरे तक की समझ नहीं रखते और ''कुछ भी कर लेने'' के अंदाज में हिंदी पाठकों के आगे कचरा फेंक रहे हैं. प्रस्तुत अनुवाद से लगता है कि भाषा पर थोड़ी और मेहनत करके बरनवाल जैसे लोग इस कमी को बखूबी पूरा कर सकते हैं. हिंदी की समृद्धि के लिए ऐसे अनुवाद अपरिहार्य भी हैं.

—प्रेमपाल शर्मा

निबंध संग्रह

गागर में सागर

भाषा की क्लिष्टता असहनीय

महाभारत को पृष्ठभूमि बनाकर युगीन संदर्भों में उसकी व्याख्या करने की एक लहर जैसी हिंदी में आ गई हैं. चक्रवर्ती राजगोपालाचारी की कथा तो यथारूप थी परंतु अंधा युग (भारती), मौन पीड़ा (डॉ. इंदिरा दीवान) और महासागर (नरेंद्र कोहली) आदि में जो महाभारत कथा उभरी उसमें सनातन जीवन बोध को युगीन संदर्भों में उभारने की प्रवृत्ति प्रधान है. इसी आधुनिकता से प्रभावित संकल्प के साथ प्रो. डी.डी. हर्ष की कृति 'महाभारत का अर्थ' प्रकाशित हुई है और प्रथम दृष्टि में आकर्षण का केंद्र बनती है. परंतु उसके अंतरंग में प्रवेश करने पर ऐसा लगता है कि इसमें वस्तुनिष्ठ और तथ्यपरक आधुनिक विश्लेषण की अपेक्षा ललित शिल्प में भावुक प्रवचन की प्रवृत्ति प्रधान हो गई है. इतने पर भी जिस दौर में सीरियल महाभारत चल रहा है उसमें कृति का यह सीधा, क्रमिक और गहरी पैठ से पूर्ण विस्तृत विश्लेषण अपना महत्व बनाए रखता है.

लगभग डेढ़ सौ पृष्ठों की इस निबंध रचना में कुल तीन निबंध हैं—मानव का स्वरूप, मानव जीवन में मूल्यों का संघर्ष और मानव की जययात्रा. इन निबंधों में लेखक मूल रूप में जो अन्वेषित करना चाहता है वह है अपने समय के सवालों का महाभारत की कथा के माध्यम से समाधान.

निबंध 'मानव जीवन में मूल्यों का संघर्ष' बहुत गंभीर है. इसमें महाभारत नामक विशाल काव्य को इस रूप में व्याख्यायित करने का प्रयास किया गया है जैसे व 'मानव मात्र के जीवन मूल्यों और अंतर्द्वंद्वों का सर्वकालिक दर्पण' (पृष्ठ 44). लेखक का यह लक्ष्यीभूत विचार केंद्र तो बहुत ही उत्साहवर्धक और संशक्त है परंतु उसका विश्लेषण मुख्यतः केंद्र से हटकर कहानी की परिधि पर ही चक्कर काटता रहता है.

भाषा की कृत्रिम बोझिलता से उबरकर या उसे झेलकर पाठक लेखक की व्यासशैली के अंतरंग में सहृदयता के साथ यदि प्रवेश करता है तो ऐसा भी नहीं कि वह खाली लौटता है. लेखक में निहित आशा निष्ठा और विशाल महाभारत काव्य को भीतर पचाकर कुछ मूल्यवान संदेशों को प्रस्तुत करने की ईमानदारी उसे बहुत कुछ देती है. पूरे महाभारत के विराट सागर को इस छोटी-सी पुस्तक के सहारे संक्षिप्त रूप में क्रमबद्ध और व्याख्या सहित थाह लेने की फलश्रुति भी कुछ कम मूल्यवान नहीं है.

'महाभारत का अर्थ'
निबंध संग्रह
प्रो. द्वारका दास हर्ष
वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर
मूल्य: 70 रु.

निस्संदेह लेखक ने महाभारत का बहुत ही गंभीर, सांगोपांग और व्यापक अध्ययन किया. उसके भीतर अपने अध्ययन-मनन को कुछ धर्म केंद्रित निष्कर्षों के साथ प्रस्तुत करने की गहरी भावुकता भरी हड़बड़ी है. वह पूरी सचाई से अपने को अभिव्यक्त भी करता है परंतु उससे पू आधुनिक दृष्टि की आशा नहीं की सकती. अपने सनातन बोध के भीतर मह भारत को पृष्ठभूमि बनाकर भारतीय ध दर्शन, संस्कृति, मर्यादा और पुरुषार्थ आ का जो विवेचन उसने किया है उससे मह भारत को समझने की प्रबल जिज्ञासा ज है. कृति का यह शुभ लाभ रेखांकित कर योग्य है.

—विवेकी

सही निर्णय का

अन्दरूनी राज़

RUPA® Frontline
RUPA Frontline BRIEFS

त्वचा की सुरक्षा का है, तो
बरतने में ही समझदारी है।
निर्णय आपके लिये परेशानी का
बन सकता है। इसलिये रूपा
ही खरीदिये और निश्चित
भारतीय जलवायु के उपयुक्त,
तकनीक से बना रूपा
आपकी त्वचा को बराबर
देता है।

शतप्रतिशत सुती धागे से बना। इसकी उत्कृष्ट फिनिश रेशम सी कोमलता का अहसास दिलाये। फिटिंग पूर्णतः आरामदायक। इम्पोर्टेड रबर से बना इलास्टिक। निराले रंगो में उपलब्ध। इन्हीं सब खूबियों के कारण रूपा फ्रन्टलाइन सही निर्णय लेने में आपका सहायक होता है।

और अब—
नई रूपा फ्रन्टलाइन गंजी भी
टिंग कलर में!

RUPA®
Frontline
BRIEFS

फ्रन्ट ओपन की स्पेशल सुविधा

जवाब देंगे जलवे

'ऊंट अब आया पहाड़ के नीचे' यह प्रतिक्रिया है उन हीरोइनों की जो **सोनू वालिया** को अपनी प्रबल प्रतिद्वंद्वी मानती हैं. सोनू का ऊंचा कद और भरा-पूरा संतुलित शरीर इन हीरोइनों को जलाता रहा है. और इसीलिए 'आकर्षण' फिल्म में सोनू की सफलता को नकार देने वालियों ने एक ही तर्क अपनाया था, "गरदन से ऊपर एक्टिंग करके जिस दिन दिखाएगी उस दिन सोचेंगे."

मगर सोनू को खूब पता है कि गरदन से नीचे का करिश्मा कैसे-कैसे कहर ढा चुका है या ढा सकता है. इसलिए उन्होंने फिर से इसके जलवे दिखाने के लिए जो फिल्म स्वीकार की है उसका नाम है 'ओह मारिया'.

मगर 'ऊंट पहाड़ के नीचे' वाली बात इसलिए उठी है कि इस फिल्म में सोनू के साथ हैं सिल्क स्मिता. दक्षिण की सेक्स बम जिन्होंने कपड़ों को कभी कोई महत्व दिया ही नहीं. ऊपर से जो नारा इस फिल्म को प्रचारित करने के लिए गढ़ा गया है उसके मुताबिक 'सिल्क स्मिता पहले कभी इतनी सेक्सी नहीं लगीं जितनी इस फिल्म में लगेंगी.' देखें उनकी शुभेच्छा कितना रंग लाती है.

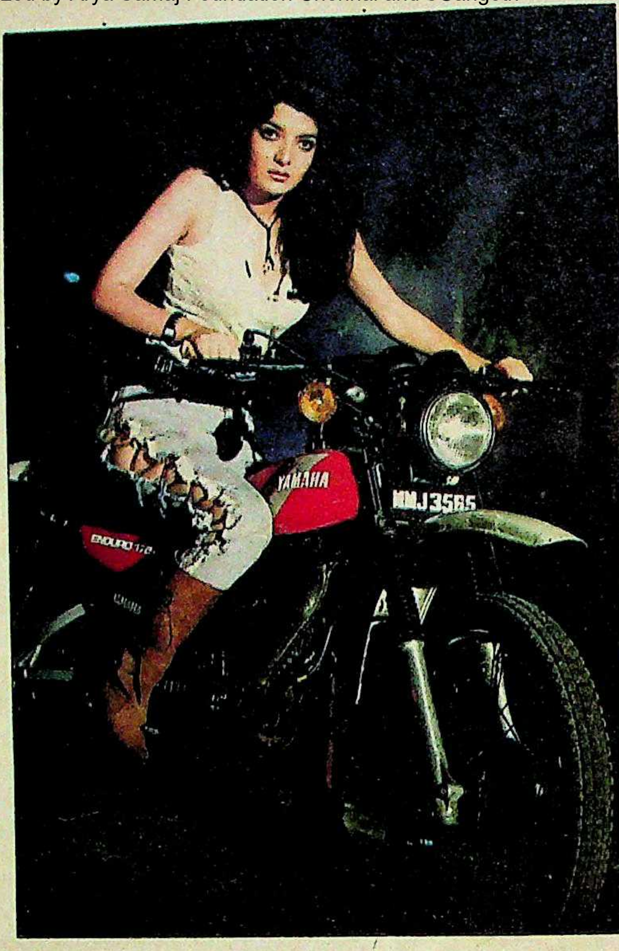

सोनू वालियाः अपना करिश्मा

काका की गुरुता

गोविंदा परेशान हैं कि तमाम कोशिशों के बावजूद उनमें वह 'स्टारों वाली बात' पैदा नहीं हो पाती जो कई कलाकारों को बिना काम भी टिकाए रखती है. सो, आजकल वे गुरुमंत्र पाने की कोशिश कर रहे हैं **राजेश खन्ना** से.

वे तब से राजेश के मुरीद हो गए हैं जब से 'खुदाई' राजेश को मिली, यह फिल्म स्व. गुरुदत्त की जिंदगी पर बन रही है.

मगर इंडस्ट्री में हर किसी को इस बात पर शक है कि राजेश गुरुदत्त को साकार कर सकेंगे. सिर्फ असफल शादी और असफल प्रेम का साम्य दोनों को बराबरी पर कैसे ला सकता है? शंका यह है.

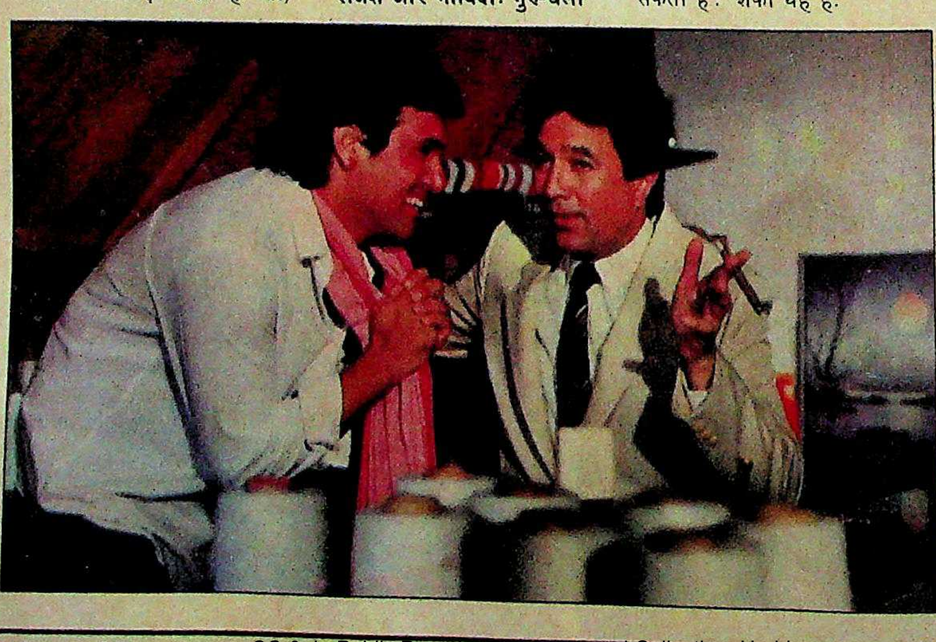

राजेश और गोविंदाः गुरु-चेला

निरंतर निचोड़ योज

खरा सौदा किसे कहते हैं समझने के लिए बी.आर. चोप ज्यादा अच्छी मिसाल और हो सकती है भला? महाभार हर हिस्से को खींच-निचोड़ दर्शनी कड़ियां बढ़ा-बढ़ाकर जितना धन रस हो सकता था लिया लेकिन गन्ने की बची लोई को वे न जलाने के पक्ष में उससे कागज बनाने के.

सीरियल के कलाकारों का सीरियल चलते ही बना रहता इसलिए 'महाभारत' के कई प्रिय पात्रों को उन्होंने अपने सीरियल 'सौदा' में फिट कर है. अब 'महाभारत' और 'सौ सेट अगल-बगल ही लगते हैं कार 'महाभारत' से फ्री हुआ 'सौदा' में, 'सौदा' से छूट 'महाभारत' में.

मगर बी.आर. इतने से ही नहीं हैं. 'महाभारत' के पात्रों अपार लोकप्रियता समय रह भुना लेने के लिए उन्होंने 'क्विकी' की योजना बना डा इस फिल्म को वे 'महाभारत' होते-होते रिलीज कर देना चा यह फिल्म पूरी तरह सोशल आधुनिक जमाने की कहानी लेकिन इसमें एक्टिंग करेंगे महाभारत वाले पात्र. अब यह भी है कि इसका सं 'महाभारत' के साथ लगाया और जब तक दो-चार कला दाढ़ी-मूंछ लगे तब तक बाकी दो-चार इस नई फिल्म के शॉट दे डालें.

कैसी लगी यह 'निरंतर नि योजना? भला ऐसी मिसाल कहां पाएंगे!

पावरहाउस बंद

सोनम ने कपड़े पहनने का कर लिया है. वे बिजलियां फिल्म इंडस्ट्री में दाखिल हु और अब, जब उनका करि भी पावरहाउस जैसा पावर चला था वे चकाचौंध करने झटके देने—दोनों गुणों को देना चाहती हैं?

इस फैसले की वजह है राय, निर्माता-वितरक गुल के निर्देशक बेटे जिन्हें यह पसंद नहीं कि उनकी भावी बनने के ख्वाब देखने वाली के अंग-प्रत्यंग को सारी दुनि आम देखती रहे.

नीलमः काम के गुर

ांच के आसरे

ड़े स्टारों के बढ़ते हाथों की ं मुंह फेरकर बैठने वाली े ठंडेपन की वजह लाख े बावजूद अब लोगों के सामने खुलती जा रही है.

इतना तो कुछ लोकप्रिय नामी हीरो जान ही चुके थे कि नीलम कोई मीनाक्षी शेषाद्रि नहीं हैं. लेकिन मीनाक्षी जैसी ठंडी न होने के बावजूद इधर साल-छह महीने से उनका बच-बचकर रहना और अपनी तरफ बढ़ते हर हाथ को हटाते चलना उन लोगों तक को चक्कर में डाले हुए था जिनके लिए एक समय नीलम 'वी आर गुड फ्रेंड्स' का दावा करती फिरती थीं.

यह गुर नीलम को किमी काटकर ने समझाया कि इन 'गुड फ्रेंड्स' के सहारे जिंदगी नहीं कटती. इनकी 'फ्रेंडशिप' कब किस तरह टूट या बदल जाती है इसके भी कई किस्से भुक्तभोगी किमी ने नीलम को सुना-सुनाकर भरोसा दिला दिया कि रोटियां गरम आंच पर ही सिकती हैं और घर की इज्जत वाली रोटी तभी मिलती रह सकती है जब आंच तेज रहते एक अदद पति पाने का जुगाड़ कर लिया जाए.

यह इसी का नतीजा है कि किमी की तरह नीलम भी अब गृहस्थी बसाने की राह पकड़े हुए हैं और अपने नायकों की मौजूदगी में भी टेलीफोन पर उससे लंबी-लंबी बातें कर लेने का कोई मौका नहीं चूकतीं जो हिंदुस्तान में नहीं पाकिस्तान में है.

ती संभावनाएं

ढ़ी रहूं कि लौट जाऊं ह सवाल है जो **जयप्रदा** ो सैंयाओं से पूछ रही हैं थ उनकी जोड़ी जमती है. ैया उन हदों को कबका ुके जिनके अंदर किसी को ना जाता है और इसीलिए ानी का भ्रम बनाए रखने ों में कम उम्र, नई नायि- ी तरफ झुक गए हैं. और ै है कि जयप्रदा को देखते ें आंटी' कहकर उन संभा- ो शुरू में ही खत्म कर देते महारे जयप्रदा कैरियर को ने की कोशिशों में हैं.

ा को उम्मीद थी कि ी बेटी' में जीतेंद्र के साथ ो काम किया, उसकी खकर जीतेंद्र खुद उनका े. इसलिए साउथ के उस सर को उन्होंने खुद जीतेंद्र ना जो बड़ी कास्ट वाली म बनाना चाहता था. ुरू में हां तो कर दी लेकिन े सवाल पर चुप्पी साध गए और जयप्रदा इंतजार में ठाढ़ी रह गई. खबर है कि जीतेंद्र ने सारा सेटअप बनवा दिया जिसमें जयप्रदा की जगह हैं माधुरी दीक्षित.

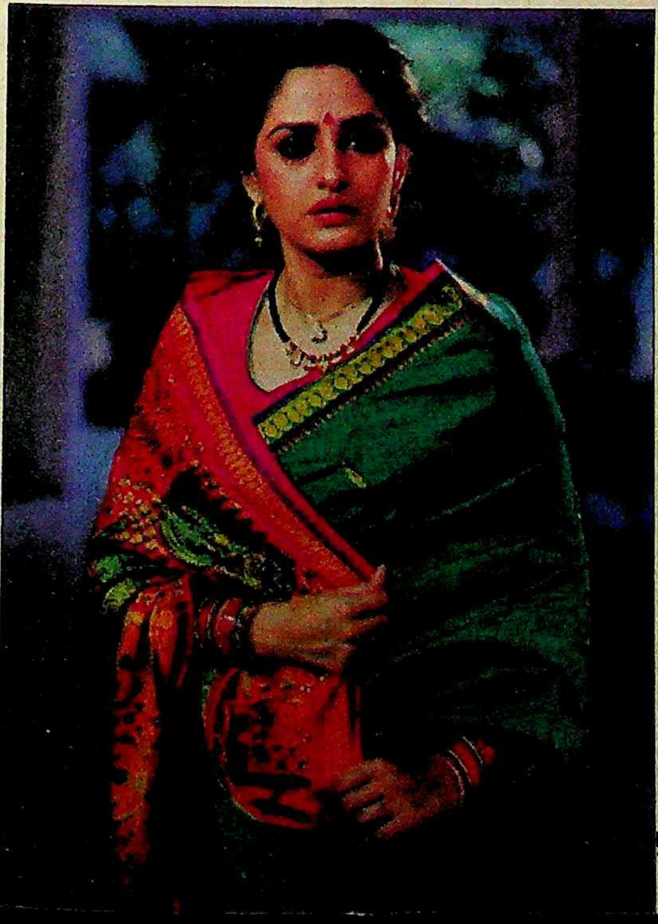

दाः [illegible] बात

संजय उवाच...

फिल्म जगत के लिए यह बात मशहूर है कि यहां आपने कितने ही झंडे क्यों न गाड़े हों, पहचाने जाएंगे आप अपनी नवीनतम फिल्म की सफलता या असफलता से ही.

हालांकि **संजय दत्त** जानते हैं कि उनके खाते में कोई ताजा हिट फिल्म भले ही न हों जो फिल्में बन रही हैं, उनमें से कोई-न-कोई चल जाएगी. लेकिन वे जिस परेशानी में पड़े हुए हैं, वह दूसरी तरह की है. अब तक 'न्यू कमर्स' यानी नए आने वाले हीरो-हीरोइनों की तुलना किसी जमे हुए आर्टिस्ट से की जाती थी. लेकिन 'मैंने प्यार किया' की बंपर सफलता के कारण संजय दत्त की तुलना लोग सलमान खां से करने लगे हैं. संजय का तब गुस्से से आगबबूला हो जाना स्वाभाविक ही था जब पिछले दिनों आउटडोर शूटिंग के दौरान उनसे किसी ने पूछ लिया, "आप शक्ल-सूरत, रंग-ढंग और एक्टिंग में सलमान खां से बहुत मिलते-जुलते हैं, यह कैसा लगता है आपको?"

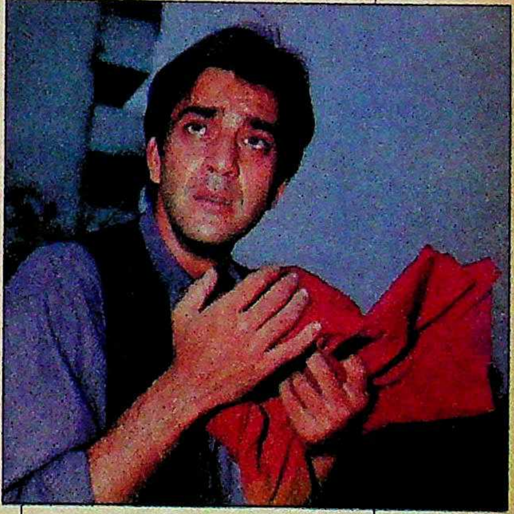

संजयः चमत्कार को नमस्कार

"कौन सलमान?" गुस्से को काबू में रखने की कोशिश में संजय ने पूछा. लेकिन सवाल से खुद फंस गए.

"साल की सबसे हिट फिल्म के सबसे सफल हीरो को नहीं जानते आप?" दूसरा सवाल आया, "आप बिलकुल उसी की तरह तो हैं."

संजय उस वक्त तो भुनभुनाते हुए काम छोड़कर कुछ देर के लिए एकांत में बैठे रहे. लेकिन बाद में ठंडे होकर लौट आए यह कहते हुए—"सफलता के चमत्कार को नमस्कार किए बगैर इंडस्ट्री में कौन टिका रह सका है भला?"

Haridwar

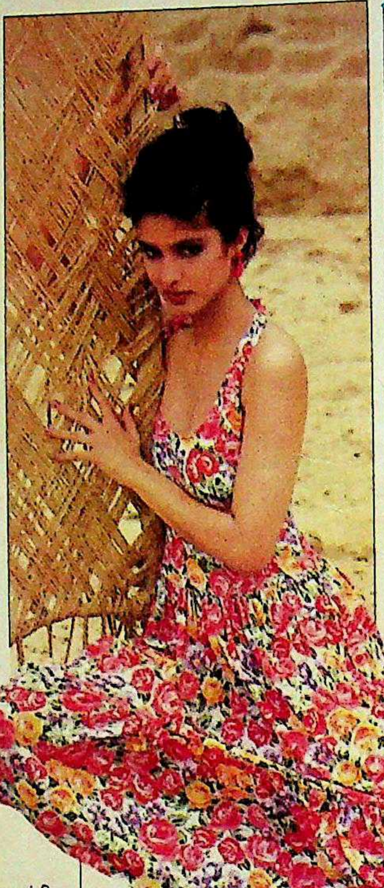

शिखा: सातवें आसमान पर

◆ भारत की सीमा में घुस आए पाकिस्तानी हुड़दंगियों को भारतीय सेना ने भले ही सख्ती से भगा दिया लेकिन पाकिस्तानी सीमा में घुसे एक भारतीय 'घुसपैठिए' के साथ ऐसा कुछ नहीं हुआ. 1988 की भारत सुंदरी **शिखा स्वरूप** उस अर्थ में घुसपैठिया थीं भी नहीं. वे साबुनों के विज्ञापन में मॉडल बनने के लिए वहां गई थीं. कराची के पास नारन में शूटिंग करके लौटने पर वे बहुत खुश थीं. उन्होंने कहा, "इतना मजा आया कि क्या कहा जाए. लगा चांद पर पहुंच गए." एक हिसाब से देखें तो यह 'ईंट का जवाब पत्थर' जैसा था. इमरान खां ने यहां सिंथाल साबुन का विज्ञापन किया तो शिखा वहां साबुन के लिए मॉडलिंग करने गई.

◆ **कुमार गंधर्व** की यह संगीत महफिल कुछ अलग ही किस्म की थी. बंबई के निकट सातवीं सदी की एलिफेंटा गुफा के पास जमी इस महफिल में वे कुछ अलग ही रंग में थे. पिछले दो वर्षों की गंभीर बीमारी का उनके स्वर पर कोई असर नहीं दिखा. गाने के बाद उन्होंने कहा, "मैं एलिफेंटा के निर्माता कलाकारों की आत्माओं का आह्वान करना चाहता था." इसे उन्होंने अपने गायन से जैसे साकार भी किया. 18 फुट ऊंची विशाल महेशमूर्ति की छाया तले उन्होंने संहार के देवता की स्तुति का गान करके श्रोताओं को भावविभोर कर दिया.

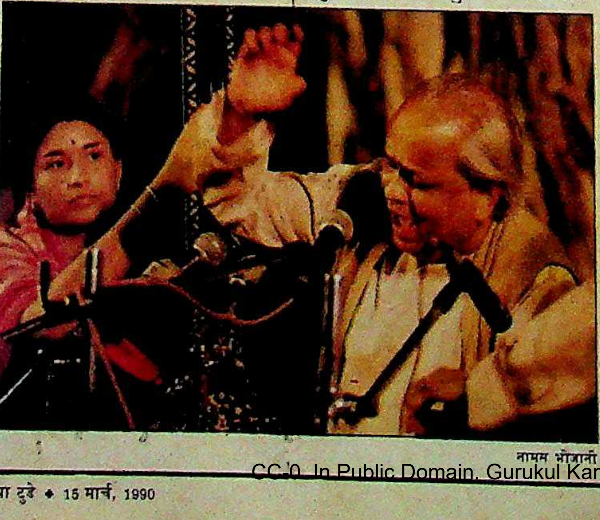

कुमार गंधर्व: दैवी स्वर

नामस भोजानी

◆ पॉप संगीत के क्षितिज पर उभरे नए सितारे का नाम है **लुसिओ मिरांडा**. प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट मारियो मिरांडा का यह चचेरा भाई आज जिन गीतों को पॉप की धुन पर 'गुनगुनाता' है उन्हें सुनकर गोवा के पुराने लोग तो बेसुध ही हो जाते. उनके पहले कैसेट, 'फारवर्ड इंटु द पास्ट' में मुख्यत: प्रेम गीत हैं. स्थापत्य के धंधे में लगे इस 53 वर्षीय 'युवा' को ढूंढ निकाला है भारतीय पॉप के बेताज बादशाह रेमो फर्नांडीस ने. रेमो ने इन गीतों की धुन भी बनाई है. रेमो कहते हैं, "लुसिओ का संगीत अलग ही युग का है. उनके गीत नहीं सुने जाते तो बड़े शर्म की बात होती."

नामस

लुसिओ: नया पॉप सितारा

अमीना: गजब का जीवट

◆ 'स्माइल प्लीज'. फोटो खिचवाते समय यह शब्द आम है. लेकिन काल गर्ल बनकर मुस्कुराहटें बिखेरती 25 वर्षीया **अमीना शेरवानी** ने जब दिल्ली के कनॉट प्लेस में लड़कियां ढूंढने वालों की तस्वीरें (छिपे कैमरे से) खिचवाईं तो ग्राहकों के चेहरों पर हवाइयां उड़ने लगीं. अमीना हिंदी की वीडियो समाचार पत्रिका 'कालचक्र' की एक कथा के लिए काम कर रही थीं.

टीवी धारावाहिक 'फौजी' में पत्रकार की भूमिका कर चु
अमीना कहती हैं, "पत्रकारों
अगर माया त्यागी और कमला
नहीं छोड़ा तो इन मर्दों को भी
छोड़ा जाना चाहिए. मैं सिर्फ
बताना चाहती थी कि ये लोग
इसी दुनिया से हैं, कहीं बाहर
नहीं टपके."

◆ प्रसिद्ध पत्रकार **कुलदीप**
ब्रिटेन की महारानी एलिजाबे
'मिलने' के लिए लंदन रवाना
चुके हैं. लेकिन वे वहां से
धमाकेदार इंटरव्यू नहीं भेजने वा
वे वहां महारानी को भार
उच्चायुक्त पद के अपने प
पत्र पेश करेंगे. सदा खबरें लाने
नैयर अब खबरों में रहेंगे. मु
बात पर सीधी-सपाट राय
करने वाले इस पत्रकार का
नयिक बन जाना कम अचरज
बात नहीं. वे कहते भी हैं, "मैं
कूटनीतिज्ञ तो हूं नहीं. अब
मितभाषी होना पड़ेगा."
शायद लिखना भी कम पड़ेगा.

नैयर: खबरों में

शरद सक्सेना

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा
THE OFFICIAL POLISH JOKE BOOK
WILLS
FILTER TIPPED
STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH
HTA 3742

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन । आज भी है यह सबसे बढ़िया । स्वाद में । तसल्ली में । हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर । लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया... फिर हमेशा के लिए अपनाया ।

WILLS
FILTER

चेतावनी:
: पीना स्वास्थ्य के लिए
रक है

SMOKING IS

REGISTERED No. L/NW/FBD
D—(

REGISTRATION NO. R.N. 45823/86

Photo-Courtesy, Reliance Cup. 1987

बुलंद
तस्वीर

उमंगों भरे क्षणों की एक झलक

एक रोमांच है क्रिकेट का

दूजा स्कूटर है बजाज का

एक में रंग है जीवन का

दूजा अंग है जीवन का

लाखों-लाख हैं दोनों के चाहने वा

दोनों ही बुलंद भारत की बुलंद तस

दर्शाने वाले

बजाज स्कूटर्स
सुपर, चेतक, प्रिया और कब.

bajaj auto
You just can't beat a bajaj
बजाज ऑटो लि., आकुर्डी, पुणे ४११ ०३५.

LINTAS BAJ 166 2729 HI

ओम प्रकाश चौटाला

ओम प्रकाश चौटाला:
[illegible] को बुलावा

लालू प्रसाद यादव:
इम्तहान का दौर

पाक अधिकृत कश्मीर: उन्माद का स्वर्ग

लालू प्रसाद यादव

31 मार्च 1990 7 रुपए

इंडिया टुडे

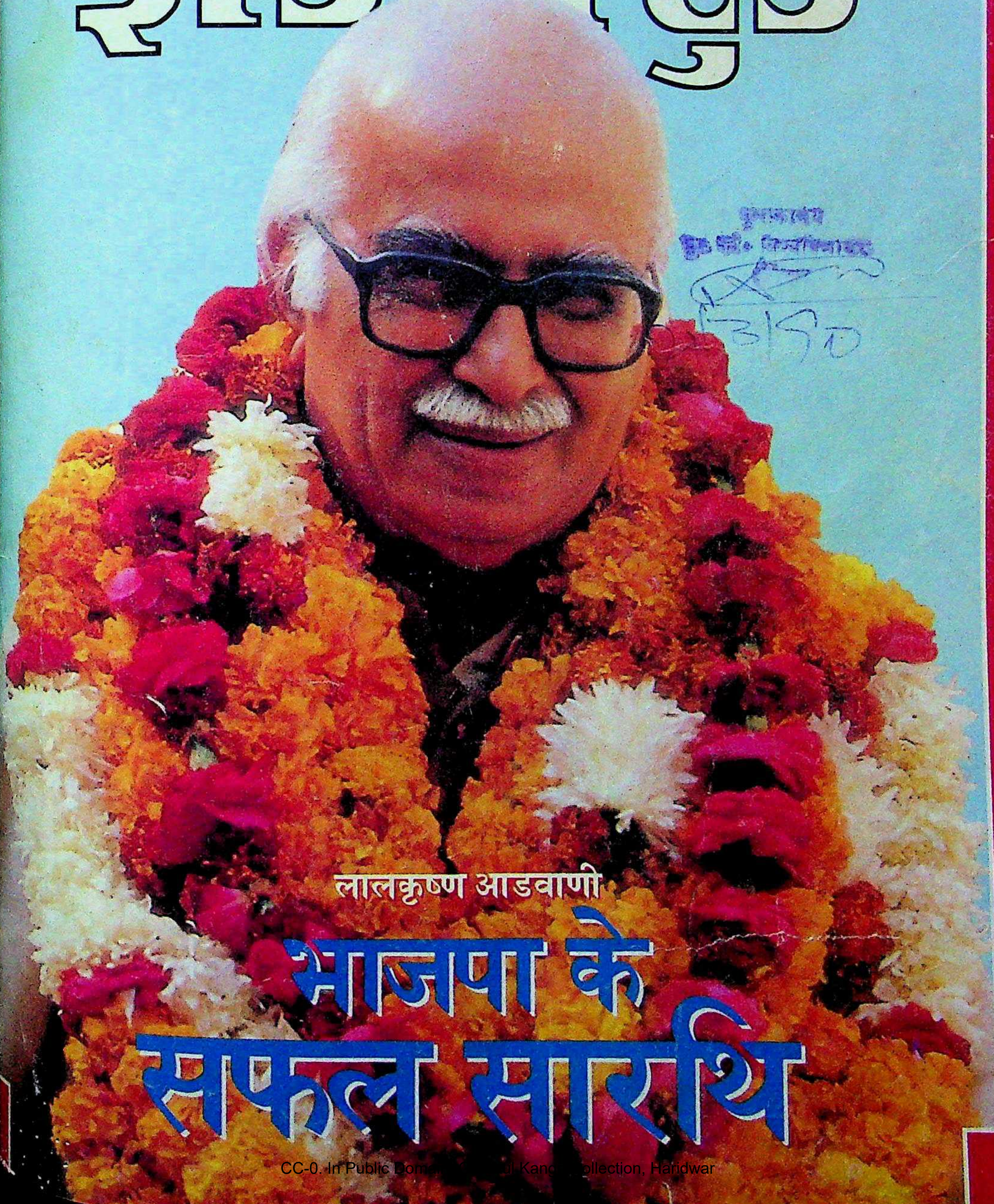

पुस्तकालय
गु० कां० विश्वविद्यालय

3/90

लालकृष्ण आडवाणी

भाजपा के सफल सारथि

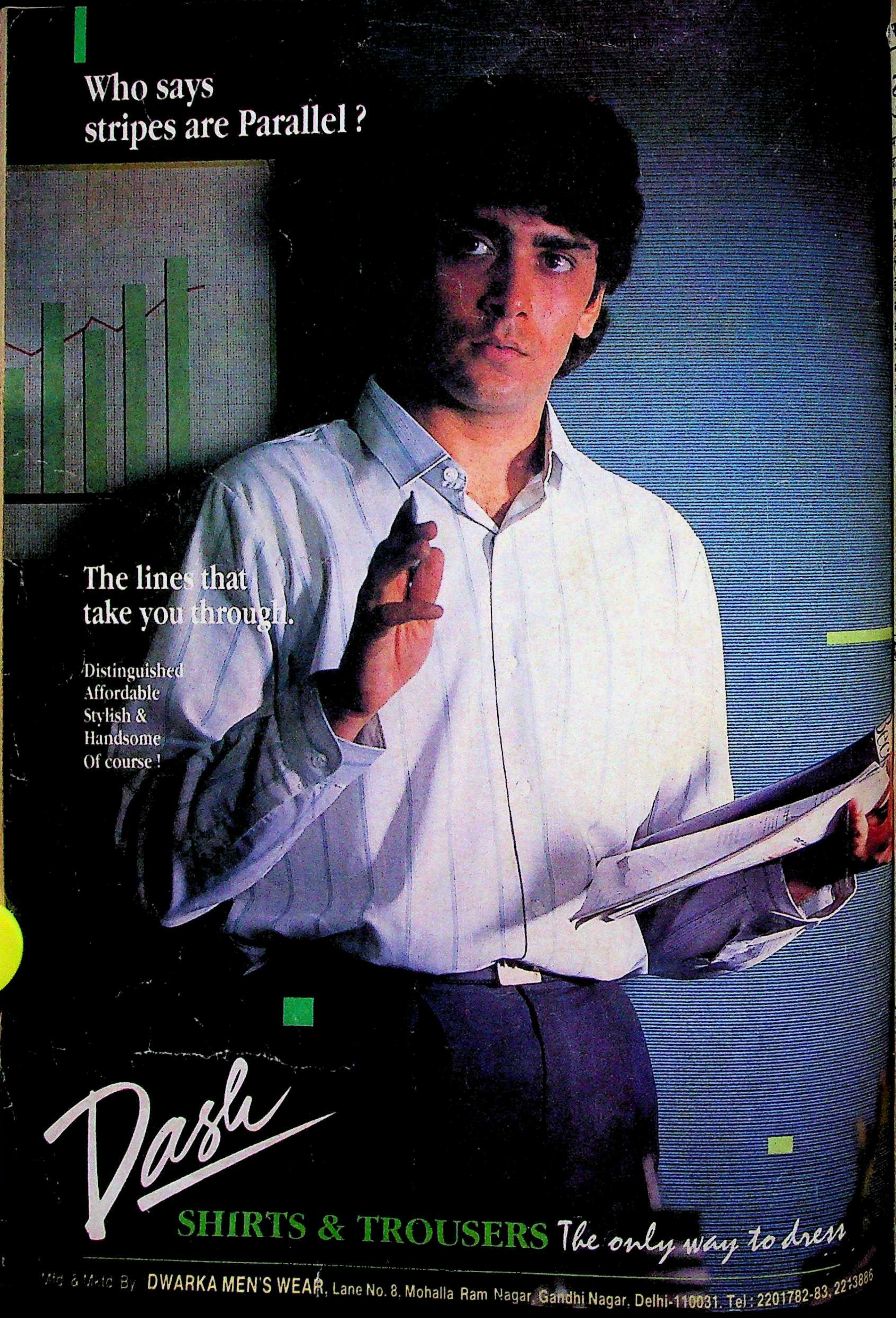
Who says
stripes are Parallel ?
The lines that
take you through.
Distinguished
Affordable
Stylish &
Handsome
Of course !
Dash
SHIRTS & TROUSERS The only way to dress
Mfd. & Mktd. By DWARKA MEN'S WEAR, Lane No. 8, Mohalla Ram Nagar, Gandhi Nagar, Delhi-110031. Tel : 2201782-83, 2213886

अपनी बात

पाक अधिकृत कश्मीर में संधू, पुष्करणा

युद्ध की तरह पत्रकारिता में भी असली लड़ाई मोर्चे पर ही होती है. पत्रकारिता के इतिहास में ऐसे अति महत्वपूर्ण क्षण भी आए हैं जब संवाददाताओं और छायाकारों ने घटनाओं का करीबी अध्ययन करते वक्त जान की बाजी तक लगा दी. भारतीय पत्र-पत्रिकाओं ने अनेक ऐसी कथाएं और चित्र छापे हैं जिन्हें विषम परिस्थितियों में जुटाया गया. पिछले कुछ वर्षों में देश की पत्रकारिता के तेवर उग्र हुए हैं तो इस पेशे में जोखिम भी बढ़ गया है. कागज-कलम या कैमरा उठाए व्यक्ति को आज कुछ वर्ष पहले की तुलना में ज्यादा खतरा है. हमारी वीडियो पत्रिका **न्यूजट्रैक** के पत्रकारों को मुहिम में पुलिस द्वारा वहशियाना पिटाई के दौरान ऐसे ही तल्ख तजुर्बे से गुजरना पड़ा. वैसे, किसी नेता का असली रूप प्रेस के प्रति उसके रवैये से ही उजागर होता है जो सच्चे लोकतंत्रवादी और ठग के बीच विभाजन रेखा का काम करता है. उम्मीद यही है कि भारतीय प्रेस ठगों की धमकियों को झेलने में हमेशा ही सक्षम साबित होता रहेगा.

सौभाग्य से **इंडिया टुडे** के पास संवाददाताओं और छायाकारों की ऐसी टोली है जो खबरें निकालने के लिए अनेक जोखिम उठाती आई है. अभी हाल में प्रमुख संवाददाता **कंवर संधू** और वरिष्ठ छायाकार **प्रमोद पुष्करणा** ने पाक अधिकृत कश्मीर की स्थिति का मौके पर जायजा लेने के लिए इस इलाके की यात्रा का फैसला करके खुद को सचमुच मोर्चे के पार खड़ा पाया. पिछले एक दशक में ऐसा करने वाले वे पहले भारतीय पत्रकार हैं.

भारत विरोधी उन्माद के उस माहौल में इन दोनों को प्रायः अपना परिचय श्रीलंका के पत्रकार के रूप में देना पड़ा. उन्हें रोजमर्रा के भारत विरोधी प्रदर्शनों से बचकर रहने की भी चेतावनी दी गई. संधू कहते हैं, "यह अनूठा अनुभव था. भारत में सांप्रदायिक बोली बोलने वालों से अमूमन कन्नी काट ली जाती है पर वहां तो उलटी बात है. हर भारतीय चीज से दुश्मनी के चलते तनाव बरकरार है." पुष्करणा को भी ऐसी ही कठिन परिस्थितियों से जूझना पड़ा. संवेदनशील सैनिक क्षेत्र होने के कारण पाक अधिकृत कश्मीर में उनकी फिल्में जब्त कर ली गईं. पर पुष्करणा दो रीलें छिपा लेने में कामयाब रहे. वे कहते हैं, "अगर सेना ने मेरी जामातलाशी ली होती तो शायद मुझ पर भारतीय जासूस होने का आरोप लगाया जाता." सौभाग्य से वे अपना काम पूरा कर चित्रों समेत खोज खबर लेकर लौटे.

तिरुवनंतपुरम के संवाददाता **रमेश मेनन** के लिए भी यह एक स्मरणीय पखवाड़ा रहा. उन्हें उत्कृष्ट अंग्रेजी पत्रकारिता के लिए माधवन कुट्टी पुरस्कार से सम्मानित किया गया. पुराने नक्सलवादियों की मौजूदा गतिविधियों पर मेनन की रपट 'बिखरे सपने, टूटे दिल' (**इंडिया टुडे**, 31 जुलाई 1989) के लिए उन्हें यह पुरस्कार मिला.

अरुण पुरी

इस पखवाड़े

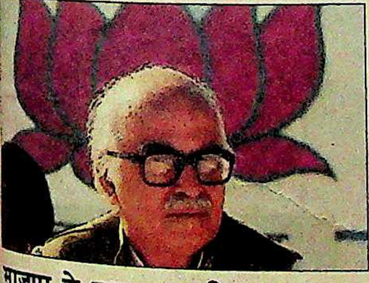

भाजपा के सफल सारथि

लालकृष्ण आडवाणी ने अपने दम पर भारतीय जनता पार्टी को पुनर्जीवित किया है. उनकी कामयाबी का राज क्या है? वे पार्टी और देश को किधर ले जाना चाहते हैं? उनके व्यक्तित्व और मानस का गहन विवेचन.

आवरण कथा 14

WEL COME
TO AZAD KASHMIR

उपेक्षा का नरक, उन्माद का स्वर्ग

पाक अधिकृत कश्मीर भारतीयों के लिए हमेशा प्रतिबंधित क्षेत्र रहा है. पर यात्रा की अनुमति पाने के बाद इंडिया टुडे को वहां विकास की कोई झलक नहीं दिखी. अलबत्ता, भारत विरोधी जुनून चरम पर है.

खास रपट 48

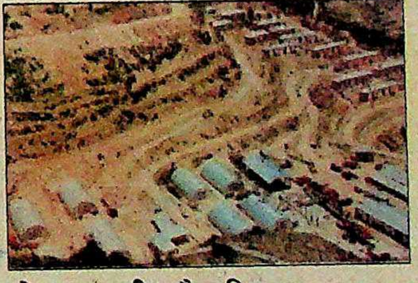

गोलमाल की और मिसाल

जम्मू कश्मीर में 1,150 करोड़ रु. की लागत वाली दुलहस्ती पनबिजली परियोजना पर, जिसका ठेका सीजीईई-एल्स्थोम के नेतृत्व वाले एक फ्रांसीसी कंपनी समूह को दिया गया है, एक विशेष खोजपूर्ण रपट.

पड़ताल 62

अगले पन्नों पर

कसौटी 8
तेवर 9
रागरंग 11
हिन्दोस्तां हमारा 12
आवरण कथा
आडवाणी: भाजपा के सफल सारथि 14
खास रपट
ओमप्रकाश चौटाला:
आफत को बुलावा 24
चुनाव विशेष
विश्लेषण:
एकछत्र साम्राज्य का अंत 28
खास रपट
पाक अधिकृत कश्मीर:
उन्माद का स्वर्ग 48
विशेष लेख
कश्मीरी शरणार्थी:
फूटे करम, टूटे दिल 54
पड़ताल
दुलहस्ती परियोजना: 62
खेलकूद
क्रिकेट: हौसला ढीला 82
परदे के उस पार 94
चर्चित चेहरे 96

आवरण: भवान सिंह

भड़कीला चमकदार...

या काम में चमत्कार

कलर टी वी खरीदते समय पी आई पी,९९ चैनेल, कैट.... जैसे भड़कदार शब्दों के जाल में मत फंसिए।

जरा सोचकर देखिए कि आप कीमत किस चीज़ के लिए दे रहे हैं ? निश्चय ही अच्छी तस्वीर और बढ़िया आवाज़ के लिए।

तो ये दोनों ही गुण जिसमें सर्वोत्तम हों, जांच-परख कर वही लेना तो बुद्धिमानी है।

इन खूबियों के लिए नये सोनोडाइन क्वैन्टम रेन्ज पर आप पूरी तरह भरोसा कर सकते हैं। क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक्स टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में सोनोडाइन की विशेषज्ञता कई कदम आगे है।

अपने करीब के डीलर के यहाँ जाकर इसे जांचिए, परखिए । तब पैसे खर्च करके आपका टी वी खरीदना पूरी तरह सार्थक होगा।

क्वैन्टम रेन्ज की बिक्री-बाद देखभाल के लिए सारे देश में. मौजूद है सर्वाधिक कार्यकुशल सर्विस नेटवर्क ।

३०४ आर : ब्लैक ५३ सें० मी० एफ एस टी पिक्चर ट्यूब, रिमोट सहित।
३०३ आर : ब्लैक ५१ सें० मी० पिक्चर ट्यूब, रिमोट सहित।
३०२ : ब्लैक ५१ सें० मी० पिक्चर ट्यूब।
३०१ : ५१ सें० मी० पिक्चर ट्यूब।

सभी अधिकृत डीलरों के पास उपलब्ध।

नया

SONODYNE®

Quantum

एक अलग दृष्टिकोण

• डिज़ाइन और ट्रेडमार्क रजिस्ट्रेशन के लिए आवेदन किया गया है।

"बड़ा पाऊच लेता हूँ!
बड़ी बचत करता हूँ!"
पान पराग
स्वादिष्ट
पान मसाला

पान पराग के नए ज़िप पाऊच

पान मसाला और ताज़गी दोनों बचाएँ

जी हाँ, इन नए सादे पान पराग और ज़र्दा युक्त पाऊचों का यही तो मज़ा है– चाहे जितना खाएं, चाहे जितनी बार खाएँ– पान मसाला कभी पॉकेट में न गिरे, और ताज़गी, वह भी अन्त तक बची रहे !

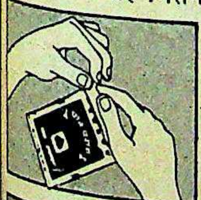

- पहले सील फाड़ें.

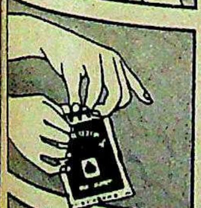

- दोनों हाथों से पकड़कर ज़िप लॉक खोलें.

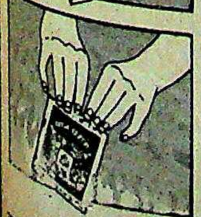

- खाने के बाद लॉक को दबाकर बंद करें.

पान पराग
स्वादिष्ट
पान मसाला
पान पराग
पान मसाला
ज़र्दा-युक्त
PAN PARAG

पान पराग©

पान मसाला

पान मसाला ज़र्दा युक्त

कोठारी उत्पादन

everest/c/90/KP58 hin

मसाला स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है ।

"हमारे केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर
की सभी छः ओर
स्टील की बॉडी है।"

जी हां ! सभी केल्विनेटर रेफ्रिजरेटरों की सभी छः ओर कोल्ड-रोल्ड स्टील की बॉडी होती है। उत्तम क्वालिटी का स्टील जो आपके रेफ्रिजरेटर को अधिक सुदृढ़ एवं टिकाऊ बनाता है। जिस से वह वर्षों आपको उत्तम सेवा प्रदान करता है।

शानदार केल्विनेटर विशिष्टताएं

★ विश्व विख्यात 'पावर-सेवर' कम्प्रैसर. ठंडा करने की अधिक क्षमता के लिए।
★ अधिक स्टोरेज के लिए ज़्यादा शेल्फें।
★ विस्तृत श्रृंखला. नौ मॉडल, सभी नौ आकर्षक रंगों में उपलब्ध

केल्विनेटर रेफ्रिजरेटर लाखों सन्तुष्ट परिवारों के संगी साथी.

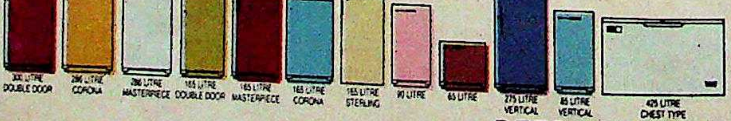
300 LITRE DOUBLE DOOR
286 LITRE CORONA
286 LITRE MASTERPIECE
165 LITRE DOUBLE DOOR
165 LITRE MASTERPIECE
165 LITRE CORONA
165 LITRE STERLING
90 LITRE
65 LITRE
275 LITRE VERTICAL
85 LITRE VERTICAL
425 LITRE CHEST TYPE
DEEP FREEZERS

घर में लाइए खुशियां घर में लाइए

केल्विनेटर

विक्री एवं सर्विस के लिए : एक्सपो मशीनरी लिमिटेड प्रगति टावर, 26, राजेन्द्रा प्लेस नई दिल्ली-110008.

Mutual 5099d/HN

आन पर कालिख

'राजा की कसौटी, राजीव की आन' (आवरण कथा: 28 फरवरी). विधानसभाओं के चुनाव परिणामों से यह सिद्ध हो गया है कि राजा कसौटी पर लगभग खरे उतरे और राजीव की बची-खुची आन पर पराजय की कालिख पुत गई. हालांकि भारतीय जनता पार्टी की प्रचंड विजय के समक्ष जनता दल की सफलता निश्चय ही बौनी प्रतीत होती है.

—**सुधीर कुमार चौधरी**, खंडवा (म.प्र.)

■ अब जबकि सभी विधानसभा चुनावों के परिणाम आ चुके हैं, यह कहा जा सकता है कि लोकसभा चुनावों का परिणाम सोचा-समझा फैसला था, न कि चुनावी लहर के कारण. कांग्रेसी अब भी अपने सामंतशाही सोच पर पुनर्विचार करने को तैयार नहीं.

—**श्रीमती अश्विनी तिवारी**, नरसिंहपुर (म.प्र.)

छिछोरी हरकत

'साजिश का भंडाफोड़' (28 फरवरी) पढ़कर अपने नेताओं पर शर्म आने लगती है. अपने प्रतिद्वंद्वी नेता का चरित्रहनन करने के लिए प्रधानमंत्री तक कितनी छिछोरी हरकतें कर सकते हैं, यह आपकी इस खास रपट से उजागर हो गया है.

—**सुनील बख्शी**, रायपुर (म.प्र.)

■ सेंट किट्स प्रकरण पर आपकी रपट मंत्रियों, नौकरशाहों, तांत्रिकों, दलालों, कुछ पत्रकारों की चाटुकारिता और धृतराष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं का ऐसा दस्तावेज है जो सेंट किट्स में निर्मित लाक्षागृह के नियंताओं की कूटनीतिक असफलता उजागर करता है. लोकसभा और विधानसभा चुनाव में कौरवों (इंका) को सजा देकर जनता ने अपना फैसला सुना दिया है.

—**भीमसेन पांडेय**, इलाहाबाद (उ.प्र.)

■ अपने राजनैतिक वजूद को बचाने के लिए राजीव गांधी ने जिस तरह पद का दुरुपयोग किया है उसके लिए उन्हें माफ नहीं किया जा सकता. इससे जनता को यह भी पता चल गया कि सत्ता केंद्र के आसपास मंडराने वाले इन संन्यासियों की जीविका कैसे चलती है.

—**विजय सिंह गंगवार**, कपूरथला (पंजाब)

पाठकों से

सर्वोत्तम चिट्ठी पर पुरस्कार की योजना के तहत पत्र आमंत्रित हैं. इस अंक के किसी भी लेख पर लिखी सर्वोत्तम चिट्ठी पर 100 रु., और दूसरे स्थान पर रहने वाली चिट्ठी पर 50 रु. पुरस्कार दिया जाएगा. चिट्ठी अधिकतम 150 शब्दों की हो. चिट्ठी के साथ इस पेज पर पहले कॉलम में छपा आवरण पृष्ठ का फोटो काटकर भेजें. आपके पत्र हमें 5 अप्रैल तक मिल जाने चाहिए.

—संपादक

छवि की कलई

'देसी दिमाग का विदेशी फितूर' (28 फरवरी) पढ़ा. जिस राज्य के शहरों व कस्बों की टूटी-फूटी सड़कें व शोचनीय सफाई व्यवस्था सार्वजनिक विकास कार्य न होने का प्रमाण देती हो उसी राज्य के मुख्यमंत्री डिज्नीलैंड जैसी योजना के पक्ष में कहते हैं कि विकास कार्य नहीं रुकने चाहिए. उपजाऊ भूमि पर डिज्नीलैंड बनवाना चौटाला की कथित 'किसानों के पक्षधर' छवि की कलई खोलता है.

—**चंद्र प्रकाश बुद्धिराजा**, रोहतक (हरियाणा)

■ किसानों से 28,000 एकड़ जमीन छीनकर विदेशियों के मनोरंजन के लिए डिज्नीलैंड बनाना ठीक वैसा ही है जैसे किसी गरीब भूखे किसान को खूबसूरत कोट पहनाना.

—**डॉ. तरुण कुमार**, मुंगेर (बिहार)

■ हैरत की बात है कि चौटाला साहब उस देश की नकल करने चले हैं जो आकार में हमसे तीन गुना बड़ा है, हमसे 171 साल पहले आजाद हुआ और जहां इतना अनाज पैदा होता है कि समुद्र में डाल दिया जाता है.

—**जितेंद्रपाल**, हिसार (हरियाणा)

आत्मविश्वास की कमी

'पहले जैसी सुरक्षा चाहिए' (28 फरवरी) रिपोर्ट पढ़ी. विशेष सुरक्षा दस्ते का गठन करते समय राजीव गांधी की सरकार ने जो कानून बनाया था उसके अनुसार यह दस्ता 'प्रधानमंत्री की सुरक्षा के लिए ही है.' तब राजीव जी ने सोचा भी नहीं होगा कि उनके नाम के पहले लगने वाला विशेषण 'प्रधानमंत्री' कभी हट जाएगा. जो देश के सबसे बड़े हितैषी और जनसेवक होने का दावा करते हैं उन्हें इतनी कड़ी सुरक्षा व्यवस्था की जरूरत पड़ गई यह हैरत की ही बात है.

—**डॉ. वेद वर्मा**, मथुरा (उ.प्र.)

■ लगता है राजीव गांधी में आत्मविश्वास की कमी है. तारीफ की बात तो यह होती कि वे स्वयं सरकार से कहते कि मुझ पर सरकार जो एक करोड़ रु. हर साल खर्च कर रही है उसमें कटौती कर दी जाए.

—**अरविंद कुमार श्रीवास्तव**, बेतूल (म.प्र.)

हीनता से ग्रस्त

आरक्षण विरोधी प्रतिक्रियावादी नारों को 'इंकलाब की इबारत' (28 फरवरी) कहकर क्या आप यह सिद्ध करना चाहते हैं कि आरक्षण का जातिगत स्वरूप गलत है. इस आरक्षण का उद्देश्य पिछड़े वर्गों की सिर्फ आर्थिक और सामाजिक हालत ही नहीं, वरन मानसिक हालत और उनमें घर कर चुकी हीन भावना को भी दूर करना है.

—**श्रवण कुमार चाहल**, रोहतक (हरियाणा)

वर्ष: 4, अंक: 10, 16-31 मार्च 1990

■ **संपादकीय कार्यालय:** लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14/15, कनाट प्लेस, नई दिल्ली-110001. फोन: 3315801-4, टेलेक्स: 31-61245 INTO IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली. ■ **मुख्य सर्कुलेशन कार्यालय:** इंडिया टुडे सर्कुलेशन मैनेजर, एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, मिडल सर्कल, नई दिल्ली-110001. फोन: 3313076-8, टेलेक्स: 31-62634 INTO IN, तार: मर्कुलेट, नई दिल्ली. ■ **मुख्य विज्ञापन कार्यालय:** 28 ए और बी, जॉली मेकर चैंबर-2, नरीमन पाइंट, बंबई-400021. फोन: 2026152, 2029326, 2029435, टेलेक्स 11-5373 THOM IN, तार: लिवमीडिया, बंबई. ■ **क्षेत्रीय विज्ञापन कार्यालय:** ई-9, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001, फोन: 3325378, 3323576, 3321323, 3321273; टेलेक्स 31-62124 THOM IN, तार: लिवमीडिया, नई दिल्ली ● फागुन चैंबर्स, 26 कमांडर-इन-चीफ रोड, मद्रास-600105. फोन: 477188, टेलेक्स: 041-6177 INTO IN. तार: लिवमीडिया, मद्रास ● 74/1 सेंट मार्क्स रोड, बंगलूर-560001. फोन: 568448, 579037, 579089, टेलेक्स: 0845-2217 INTO IN, तार: लिवमीडिया, बंगलूर ● 12-सी, एवरेस्ट 46-सी, चौरंगी रोड, कलकत्ता-700016 फोन: 445398, 447726, टेलेक्स: 021-3138 INTO IN, तार: लिवइन-मीडिया, कलकत्ता.

● कॉपीराइट 1984 लिविंग मीडिया इंडिया लि. विश्व भर में सर्वाधिकार सुरक्षित. किसी भी रूप में सामग्री की नकल प्रतिबंधित. इंडिया टुडे अनिमंत्रित प्रकाशन सामग्री को लौटाने की जिम्मेदारी स्वीकार नहीं करता.

● लिविंग मीडिया इंडिया लि., एफ-14, कंपिटेंट हाउस, कनाट प्लेस, नई दिल्ली के लिए अरुण पुरी द्वारा संपादित और प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लि. फरीदाबाद, हरियाणा में मुद्रित.

नेपाल में 8 रुपए

■ पुलिस महानिरीक्षक मैकूराम को मैं बताना चाहूंगी कि आरक्षण द्वारा नौकरी देकर किसी वर्ग विशेष की हीन भावनाओं को समाप्त नहीं किया जा सकता. वास्तव में यह वर्ग स्वयं अपना शत्रु है. वह गर्व से क्यों नहीं कहते कि वे अहीर, नाई, धोबी, चमार या जुलाहा हैं और इन जातियों का होना कोई शर्म की बात नहीं. जिस प्रकार ब्राह्मण तथा वैश्य होना कोई गर्व की बात नहीं.

—सुमन अग्रवाल, गुवाहाटी (असम)

युद्ध के बादल

'लड़ाई की ललकार' (28 फरवरी) पढ़कर महसूस हुआ कि हम युद्ध के बहुत करीब हैं. एक युद्ध तो पाकिस्तान हमसे वर्षों से करता आ रहा है, पंजाब व कश्मीर के जरिए और इस युद्ध में लगातार हमारी हार ही हो रही है. क्योंकि पाकिस्तान का हाथ होने का सबूत होते हुए भी हम कुछ कर नहीं पा रहे.

—राजेश पांडे 'गुड्डू', दमोह (म.प्र.)

प्रथम पुरस्कार

जमीन को, जो किसान की आजीविका का मुख्य स्रोत और उसका तन, मन, धन होता है, देसी दिमाग (ओमप्रकाश चौटाला) विदेशी फितूर (डिज्नीलैंड) के लिए 28 गांवों के किसानों से छुड़ा रहे हैं. इस बार भी पिसने की बारी परंपरागत रूप से किसानों की है. दुख तो इस बात का है कि चौटाला किसान खानदान से संबंधित होते हुए भी किसानों के दुख-दर्द को नहीं समझ पाए. काश! चौटाला यह जानते कि किसान से भूमि छुड़ाना उसे मौत की सजा देने के समान है. क्या किसानों की ठेकेदारी है कि वे अपनी आजीविका की कीमत पर विदेशियों का मनोरंजन करें?

—पवन व्यास, नोहर (राज.)

राजनीतिकरण का फल

'इतिहास के पन्नों में झांकिए (28 फरवरी) में आपके विचार महत्वपूर्ण हैं. दुर्भाग्यवश हमने आज साधनों-साध्यों तथा समस्याओं-समाधानों का पूरी तरह राजनीतिकरण कर दिया है. 'कसौटी' में व्यक्त धारणा अनुच्छेद 370 से जुड़े एवं उभरे प्रश्नों के समाधान की पृष्ठभूमि प्रतीत होती है. क्या हम भी फ्रांस के बूर्बो शासकों की तरह हैं जो न तो इतिहास को भूलते थे, न उससे सबक लेते थे. कहीं यह अलगाववाद इतना गहरा न हो जाए कि इस पन्ने पर व्यक्त आशंकाएं भयावह यथार्थ में बदल जाएं.

—हुकुमचंद जैन, कोटा (राज.)

सबक नहीं लेंगे

'एक और हादसा' (28 फरवरी) पढ़कर समझ में आया कि इतिहास खुद को दोहराता है. हमें उससे सबक लेना चाहिए परंतु इतिहास के जल्दी-जल्दी दोहराए जाने पर भी हम सबक न लें तो ऐसे हादसे हैरत की बात नहीं. हमारा सरकारी तंत्र हर दुर्घटना के सही कारण को जानने के बजाए कुछ प्रारंभिक औपचारिकताएं निभाकर अपना दामन पाक-साफ रखना चाहता है जैसे मुआवजा देना, ब्लैक बॉक्स नाटक तथा जांच समितियां गठित करना.

—विकास गुप्ता, सागर (म.प्र.)

क्षेत्रीयता का विष

'मतभेद भुलाने की मजबूरी' (28 फरवरी) पढ़ी. महंत और फुकन ने भले ही मतभेद भुला दिए हों, पर यहां की जागरूक जनता उन्हें कभी माफ नहीं करेगी. इस सरकार ने क्षेत्रीयता का ऐसा शंख फूंका है कि भारत के अन्य भागों से आकर यहां रहने वाला हर नागरिक असमिया लोगों की आंख की किरकिरी बन गया है. उल्फा नामक आतंकवादी गुट को मोहरा बनाकर यहां की अगप सरकार ने असमी और गैर-असमी लोगों के बीच एक लंबी-चौड़ी खाई पैदा कर दी है.

—हरीश बजाज, मरीगांव (असम)

हिंदी साहित्य का सम्मान

'लोगों ने सराहा' (28 फरवरी) पढ़ा. हिंदी के अनन्य साधक, किसी भी वाद से परे, भारतीयता के पर्याय, शाश्वत चिंतन एवं उन्मुक्त विचारधारा के प्रखर प्रवक्ता पंडित श्रीनारायण चतुर्वेदी का जनसम्मान वस्तुतः हिंदी साहित्य का सम्मान है.

—अरविंद राज मिश्र, पौड़ी गढ़वाल (उ.प्र.)

यह कैसी बगावत

'राज्य-दर्पण' में 'संन्यास से मातृत्व तक' (28 फरवरी) में इंदु प्रभा का यह कहना ठीक है कि औरत के लिए मातृत्व सुख ही जीवन की सार्थकता है. परंतु विचारणीय तथ्य यह है कि जब उन्हें मातृत्व सुख का वरण करना था तो संन्यास क्यों लिया? यदि गृहस्थ आश्रम में प्रवेश किया भी तो क्या राधेश्याम जैसे विवाहित व्यक्ति के अलावा अन्य कोई उन्हें जीवन साथी के रूप में नहीं मिला. राधेश्याम का सान्निध्य उन्हें स्वीकार करना ही था तो फिर उसके लिए अपहरण जैसी घटना क्यों निर्मित होने दी? समाज के प्रति बगावत करनी ही थी तो साहसपूर्वक व सीधे-सीधे इस कार्य को क्यों नहीं किया.

—श्रीमती हेमलता कर्नावट, उज्जैन (म.प्र.)

द्वितीय पुरस्कार

'इंकलाब की इबारत' पढ़कर लगा कि समाज का ऊपरी तबका सदियों से शोषित और दलित एक बड़े वर्ग को प्रदत्त बैसाखी (आरक्षण) छीनने को उद्यत है.

मैं पूछता हूं कि अभी भी देश के उद्योगों व कारखानों में, शिक्षा और प्रशासन तंत्र में शक्ति स्थानों पर उच्चवर्गीय लोग ही आसीन हैं. यदि वे सारा काम बड़ी योग्यता और कार्यक्षमता से कर रहे हैं, तो हमारी आर्थिक उन्नति की दर इतनी कम क्यों है? हमारे सरकारी दफ्तरों में इतना भ्रष्टाचार क्यों है? निजी क्षेत्र के उद्योग इतने बीमार क्यों हैं? सबसे बड़ी बात तो यह है कि 80 प्रतिशत दलितों-शूद्रों को सामाजिक नेतृत्व से बहिष्कृत रखने और 20 प्रतिशत 'सुयोग्य' उच्चवर्गीयों के हाथ में समाज की सारी शक्ति सौंपे रहने वाला यह देश डेढ़ हजार वर्षों तक गुलाम क्यों रहा?

—के.के. सिंह, इलाहाबाद (उ.प्र.)

निरर्थक मुहिम

टीपू की तलवार पर कट्टरवादियों की मुहिम ('तलवार पर तलवार': 28 फरवरी) समझ में नहीं आती. इतिहास तो इतिहास ही है. न उसे झुठलाया जा सकता है, न बदला जा सकता है. टीपू देश के प्रबल शत्रु अंग्रेजों का कट्टर शत्रु था. यदि इस सचाई को मराठों और निजाम ने भी समझ लिया होता तो देश का इतिहास कुछ और ही होता.

—तेज मेहता, उदयपुर (राज.)

मार्मिक अनुभूति

कहानी 'अंतिम बयान' (28 फरवरी) में लेखिका ने आम आदमी की गहन अनुभूतियों को बड़ी ही मार्मिकता से पिरोया है. पात्रों के अनुरूप भाषा शैली के प्रयोग से कहानी में अंतिम बयान तक मौलिकता पर आंच नहीं आ पाती.

—जनार्दन मिश्र, दिल्ली

श्रेष्ठ भवन निर्माता
भरोसे के इस निशान पर ही
क्यों विश्वास करते हैं

RIF ®

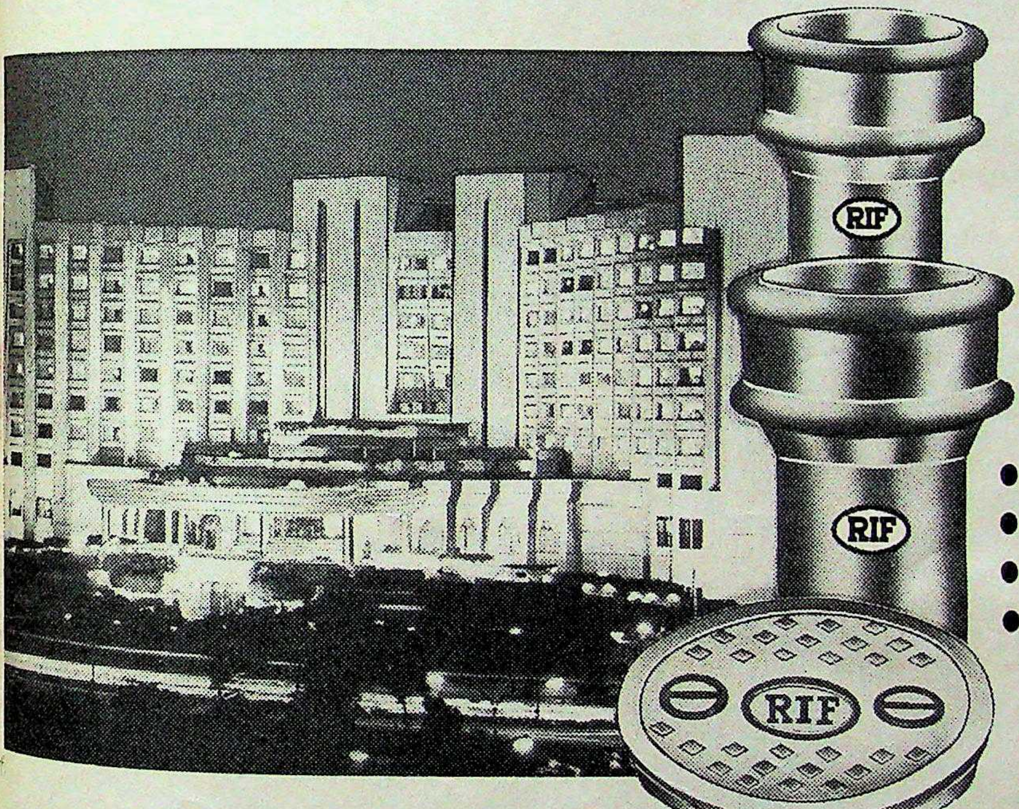

- कास्ट आइरन पाइप्स
- पाइप फिटिंग्स
- मेनहोल कवर
- फ्लशिंग सिस्टर्न्स

बात बिल्कुल स्पष्ट है।
क्योंकि जब कास्ट आइरन की वस्तुओं के चुनाव का प्रश्न आता है, तो गुणवत्ता के बारे में कोई भी समझौता नहीं किया जा सकता।

राज आयरन फाउंड्री की बनी हर वस्तु की गुणवत्ता का कठोर परीक्षण किया जाता है। इसीलिए राज आयरन फाउंड्री की कास्ट आइरन की वस्तुएं हमेशा ज्यादा भरोसेमंद होती है। ये लीक फ्रूफ, मजबूत और मौसम की मार को सहने में सक्षम हैं। ये स्वास्थ्य की दृष्टि से भी विश्वसनीय हैं।

इसलिए जब भी आप कास्ट आइरन की वस्तुएं खरीदें या खरीदने की सलाह दें तो ख्याल रखें कि ये राज आयरन फाउंड्री की ही हों। इसकी विश्वसनीयता के भरोसे के लिए इस पर राज आयरन फाउंड्री की मुहर को अवश्य देख लें।

RIF ®
राज आयरन फाउंड्री
सुलतानगंज, आगरा -282004 फोन: 76360, 61315

लोहे की शानदार कास्टिंग

ANUBHUTI

आस्तीन के सांपों से निबटिए

आजादी के बाद इस देश के नेताओं की यह खासियत रही है कि जब भी उन्हें विपरीत परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है, वे तरह-तरह के बहाने बनाने लगते हैं. कभी ऐतिहासिक मजबूरियों का बहाना बनाया जाता है तो कभी विदेशी ताकतों को दोष दिया जाता है. कभी वर्ग संघर्ष की विसंगतियों का रोना रोया जाता है तो कभी लोगों के मानस का. और कुछ नही तो तकदीर को ही कोसा जाता है. पिछले दशक और खासकर इंदिरा-राजीव के दौर में मुख्यतः राजनीति और नेताओं की वजह से उपजी समस्याओं के लिए राजनैतिक लफ्फाजी का सहारा लिया गया और विदेशी ताकतों का बेमतलब हौवा खड़ा किया गया.

इसलिए पंजाब में ऑपरेशन ब्लूस्टार को उस कमजोर पड़ते राष्ट्रीय संकल्प की पुनःअभिव्यक्ति माना गया जो भारत को तोड़ने वाली साम्राज्यवादी ताकतों से लोहा लेने के लिए जरूरी है. साम्राज्यवादी ताकतों का यह हौवा 19वीं सदी के कुछ भौगोलिक व राजनैतिक दबावों की उपज था. इसी हौवे का नतीजा है कि अब यह माना जा रहा है कि कुछ विदेशी साम्राज्यवादी ताकतें श्रीलंका, बांग्लादेश और नेपाल में उग्र भारत विरोधी माहौल बनाने की कोशिश कर रही हैं. इसी तरह पिछले पांच वर्षों से चल रही सांप्रदायिक गड़बड़ियों के बाद जब राम जन्मभूमि का मुद्दा उछला तो पूर्व गृहमंत्री बूटा सिंह को लगा कि यह भी भारत को कमजोर करने की विदेशी साजिश का ही एक खेल है.

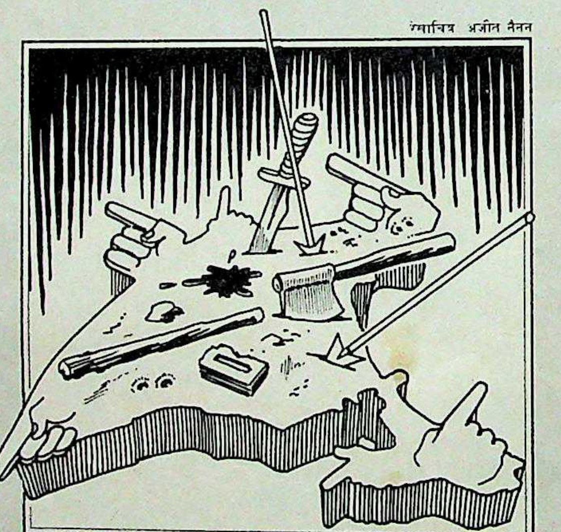

रेखाचित्र अजीत नैनन

हमारे नेतागण देश के जनमानस में यह धारणा बिठाने की निरंतर कोशिश करते रहे हैं कि भारत घेराबंदी का शिकार है. यह एक सचाई भी है. लेकिन भारत कोई नेपाल या पाकिस्तान या चीन की घेराबंदी में नहीं है. भारत खुद अपनी ही घेराबंदी का गुलाम है. ऐसी घेराबंदी को तोड़ना कहीं ज्यादा कठिन होता है. दुश्मन देशों की तोपों और बमवर्षक विमानों से कहीं ज्यादा खतरनाक होता है देश के भीतर बैठा दुश्मन.

यह देश वर्षों से अपने बाहर के दुश्मनों की पहचान और तलाश में लगा रहा है. लेकिन अपनी ही आस्तीन में छुपे सांपों को कुचलने का राजनैतिक साहस नहीं जुटा पाता. आज जबकि कश्मीर के सवाल पर अंतरराष्ट्रीय सीमाएं तनाव झेल रही हैं. और जबकि यह वक्त राष्ट्रप्रेम को जगाने का वक्त है, उस समय अपनी ही गलतियों पर गंभीरता से विचार करने का सुझाव देना शायद थोड़ा असुविधाजनक लग सकता है.

लेकिन ऐसे समय में भी यह याद दिलाना क्या निरर्थक होगा कि पंजाब समस्या को बेकाबू होने देने के लिए राष्ट्रीय स्तर के नेतागण और राजनैतिक पार्टियां काफी हद तक जिम्मेदार हैं? पंजाब में उग्रवादी गुटों को शह देकर क्या देश को पाकिस्तान के हाथों का खिलौना नहीं बनने दिया गया, वह भी छोटी-मोटी राजनैतिक उपलब्धियों के लिए.

कश्मीर का इतिहास और भारत के साथ उसके रिश्तों में हमेशा उतार-चढ़ाव आता रहा है. अब प्रकाश में आई पाकिस्तान की 'ऑपरेशन टोपैक' नामक रणनीति को छोड़ दें तो भी 1986 से कश्मीर पर लगातार नजर रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस तथ्य से इनकार नहीं कर सकता कि कश्मीर में मौजूदा संकट और अलगाववादी लहर गठबंधन सरकार के तीन वर्षों के सख्त शासन और कश्मीर की उपेक्षा तथा उसके शोषण का नतीजा है. राज्य में 1987 में हुए चुनावों में इंका और नेशनल कान्फ्रेंस ने जो धांधली की, वहां की जनता के मताधिकार का जो अपमान किया उससे इस गठबंधन ने राजनैतिक वैधता खो दी थी.

इसके बावजूद, विदेशी हाथ का हौवा 'भेड़िया आया' वाली बात नहीं भी हो सकती है. लेकिन इस तरह का हौवा खड़ा करने वाले लोग यह भूल जाते हैं कि भेड़िये को दरवाजे तक आने की छूट देने का दोष इस देश के नेताओं का ही है. महम में हुए उपचुनाव में जो कुछ हुआ उसका खयाल इसी संदर्भ में आता है. देश के चुनावी इतिहास में ऐसी बर्बरता की मिसाल नहीं मिलती. महम ने राष्ट्रीय गौरव को भी धूमिल किया.

अपने तमाम आर्थिक पिछड़ेपन और गरीबी के बावजूद भारत एक ऐसे सभ्य राष्ट्र के रूप में जाना जाता रहा है जिसकी लोकतांत्रिक प्रतिबद्धता, कुछ अपवादों को छोड़कर हर चुनौती के आगे सफल होती रही है. लेकिन महम न तो कोई अपवाद है और न ही कोई असामान्य घटना. यह एक राजनैतिक नियति है. नेताओं ने पिछले पांच वर्षों से सांप्रदायिक हिंसा और अलगाववाद और चुनावी ठगी को बढ़ावा ही दिया है, हरियाणा के जाट ग्रीन ब्रिगेड जैसे गिरोहों को जन्म दिया है और राजनैतिक दलों में अपराधियों और गिरोहबाजों के प्रवेश की न केवल छूट दी है बल्कि उससे खुश भी हुए हैं.

पंजाब में आतंकवादियों को शह देने या कश्मीर में चुनावों में धांधली करने के जो नतीजे सामने आए उनके लिए विदेशी ताकतों को दोषी ठहराना इन नेताओं को सुविधाजनक लगा. लेकिन आज यह सब भारत के ठीक बीचोबीच हरियाणा में हुआ है. महम ने पूरे देश का सिर नीचा किया है और मूल्य आधारित राजनीति के प्रति जनता दल की प्रतिबद्धताओं पर सवाल खड़े किए हैं. जाहिर है अब फिर बहानेबाजी होगी और साजिश की बातें की जाएंगी. लेकिन सचाई यह है कि भारत अभूतपूर्व राजनैतिक गिरोहबाजी के दौर में प्रवेश कर गया है. इसलिए यह वक्त है राष्ट्रप्रेम के प्रदर्शन का—किसी काल्पनिक विदेशी हाथ से लड़ने के लिए नहीं बल्कि देश को कमजोर करने वाली और उसकी लोकतांत्रिक मर्यादाओं को छिन्न-भिन्न करने वाली अंदरूनी ताकतों से लड़ने के लिए. और सिर्फ राष्ट्रप्रेम ही नहीं, यह वक्त है देश के कानूनों को निडर और निष्पक्ष होकर लागू करने का भी.

गोविंदराव, फ्री प्रेस जरनल

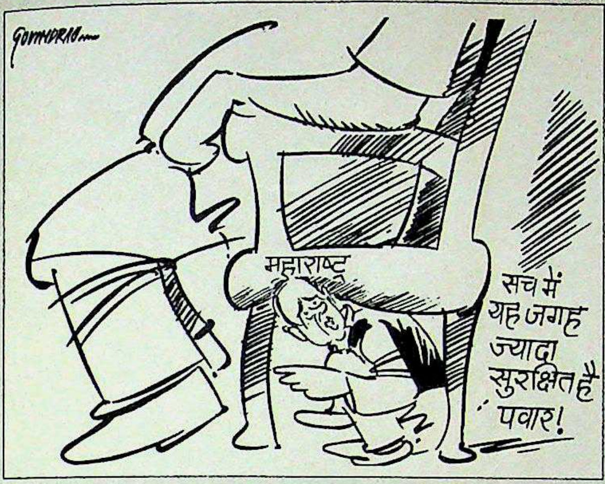
GOVINDRAO
महाराष्ट्र
सच में यह जगह ज्यादा सुरक्षित है पवार!

- पूरा हरियाणा मेरे पीछे है. मैं सब ठीक कर दूंगा. ■ **ओमप्रकाश चौटाला**, *आज*

- विधानसभा भंग कर दो. हरियाणा की जनता एहसान मानेगी. जनता अब बहुत तंग आ चुकी है. ■ **हीरानंद आर्य** (जनता दल विधायक) की देवीलाल से अपील, *पंजाब केसरी*

- राजनैतिक मंच पर हमारा देवीलाल से कोई संबंध नहीं है. हमें ऐसे व्यक्ति से क्या मतलब जो इंसान नहीं है. ■ **केदारनाथ सिंह** (इंका महासचिव), *जनसत्ता*

- मेरा प्रयास यह रहेगा कि कुर्सी कभी भी मुझ पर सवार न हो, हमेशा मैं ही कुर्सी पर सवार रहूं. ■ **सुंदरलाल पटवा** (म.प्र. के नए मुख्यमंत्री), *हिंदुस्तान*

- जनता दल के अंदर या बाहर जो कुख्यात अपराधी हैं उनमें से श्री लालू यादव नहीं हैं. हद से हद उन्हें हुड़दंगबाज के रुप में जाना जाता रहा है. ■ **चतुरानन मिश्र** (बिहार के भाकपा नेता), *नवभारत टाइम्स*

- बोफोर्स की इस बासी कढ़ी को चाहे जितना उबाला जाए, बात बनने वाली नहीं. ■ **वसंत साठे**, *माया*

- यह कहने में मुझे कोई हिचक नहीं कि पिछले सत्ताधारी दल और इस सत्ताधारी दल के राजनीतिकों में कोई ज्यादा फर्क नहीं है. सिर्फ चादर बदली हुई है. मुंगेरीलाल दोनों तरफ हैं. ■ **शत्रुघ्न सिन्हा**, *धर्मयुग*

- बंबई के लंबू अमिताभ को राजीव गांधी ने ही पैदा किया था. क्या नाचने-गाने वाले देश में राज करेंगे? ■ **सुरेश सेठ** (इंदौर के इंका नेता), *नई दुनिया*

- पूरी टीम को प्रशांत महासागर में डुबो देना चाहिए. यदि कोई भारतीय खिलाड़ी आज रात आत्महत्या करना चाहेगा तो मैं उसे नहीं रोकूंगा. ■ **बिशन सिंह बेदी** (आस्ट्रेलिया से एकदिवसीय मैच हारने के बाद), *आज*

- मूलतः सारी गलती वर्तमान पद्धति की है. राष्ट्रीय प्रशिक्षक की स्थिति तो एक क्लर्क के समान है. ■ **परगट सिंह**, *स्पोर्ट्सवर्ल्ड*

- फिल्म उद्योग के तौर-तरीकों के कारण मेरा मोहभंग हो गया है. मुझे समझ में आ गया है कि मेरा सच्चा दोस्त अगर कोई है तो वो मैं खुद हूं. ■ **सनी देओल**, *स्टारडस्ट*

- जहां तक मेरे प्रेम प्रसंगों की बात है तो वह एक तरह से बाजार में दुकान-दुकान खरीदारी करने जैसी बात रही. जाहिर है हर दुकान से मैंने उम्दा चीज ही खरीदी. ■ **किमी काटकर**, *मूवी*

आपकी चहेती पत्रिका
आपके दरवाज़े पर
न खरीदने का झंझट...
न खत्म होने का डर

2.85
भारत INDIA
हांगुल
KASHMIR STAG
समय पर
इंडिया टुडे
आपके घर

इस सुविधा का लाभ उठाइए.
अपनी चहेती इंडिया टुडे
घर बैठे – नियमित पाइए.
न खरीदने जाने की जरूरत...
न अंक खत्म होने का डर,
इंडिया टुडे
समय से पहुंच जाए आपके घर!
बस कूपन भर कर भेज दीजिए,
देर मत कीजिए!

नाम: ____
डाक पता: ____

मूल्यः वार्षिक रु. 132/-
भुगतान का माध्यम-चैक/मनीआर्डर/डिमांड ड्राफ्ट
(दिल्ली से बाहर के चैकों के लिए 5/- रु. प्रति चैक की अतिरिक्त राशि देय है।)
कृपया चैक निम्नलिखित नाम पर बनाएं और इस पते पर भेजें:
लिविंग मीडिया इंडिया लि.
पो. बॉ. नं. 706,
फरीदाबाद- 121 007
(हरियाणा)

इंडिया टुडे
देश की भाषा में देश की धड़कन

MILESTONES/IT/120

The hug of a
great Undergarment
Feather Touch from
PUJA

फिर याद आ गई

● जैसी कि उम्मीद थी, नई सरकार के सत्ता में आने के बाद कई उलटफेर हुए. कई राज्यपाल इधर से उधर हुए और कई बड़े अधिकारी भी. भद्र, सफेद बालों वाले अर्थशास्त्री आबिद हुसैन की जब योजना आयोग से छुट्टी हो गई तो वे चुपचाप प्रोफेसरी की दुनिया में चले गए. लेकिन, पिछले पखवाड़े जब प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह ने उन्हें अपने निवास पर एक दिन सवेरे साढ़े दस बजे मिलने के लिए फोन किया तो उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा. वे इस बात का कोई अंदाज नहीं लगा पाए कि आखिर प्रधानमंत्री को उनकी याद कैसे आई. बहरहाल, जिस दिन उन्हें प्रधानमंत्री से मिलना था उस दिन सवेरे 8 बजे जब वे चाय पी रहे थे तो अखबारों में छपी एक खबर पर नजर पड़ते ही उनकी चाय गले में अटक गई. खबर थी कि उन्हें अमेरिका में राजदूत बनाया जा रहा है. इस खबर की सचाई के बारे में हुसैन कुछ अतापता लगा पाते कि एक घंटे के भीतर ही वी.पी. सिंह का फिर फोन आ गया. उन्होंने हुसैन से कहा, "आप मुझसे तुरंत मिलें. मैं आपको एक जिम्मेदारी सौंपने वाला हूं. और मैं आपको यह अनुरोध ठुकराने नहीं दूंगा." अखबारों की खबर सही साबित हुई.

और यह खबर तुरंत चारों ओर फैल गई. एक दिन बाद हुसैन एक रात्रि भोज में शामिल हुए जहां उनकी मुलाकात ब्रिटेन में भारत के नवनियुक्त राजदूत कुलदीप नैयर से हुई. दोनों ने एक-दूसरे का "आइए, महामहिम" कहकर अभिवादन किया. और फिर वे दोनों दिल्ली में अपने उलटफेर वाले दिनों की बातों में खो गए.

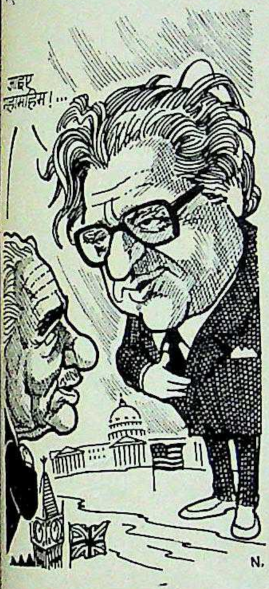

पंडित के घर ताऊ

● पंडित कमलापति त्रिपाठी के घर कभीकभार आने वाले लोगों ने ढोलक की आवाज सुनकर यही सोचा होगा कि वे अपने परिवार की राजनैतिक साढ़ेसाती के खात्मे के लिए कोई नया यज्ञ करा रहे होंगे. लेकिन सस्कृत के श्लोकों की जगह ठेठ हरियाणवी बोली सुनकर आगंतुक को घोर ताज्जुब हुआ. पूरे माहौल में लोक संगीत की गूंज थी. और एक जानी-पहचानी घरघराती आवाज की बड़े यत्न से नकल की कोशिश की जा रही थी.

जनपथ की नौवीं कोठी की, जो पंडित जी का निवास है, फैली हुई लॉन पर दरअसल नुक्कड़ नाटक 'आयो रे हमारे ताऊ' की रिहर्सल चल रही थी. इसमें उप-प्रधानमंत्री देवीलाल का मखौल उड़ाया गया है. इसके निर्माता करनाल (हरियाणा) के युवा लेक्चरार और पंडित जी की पौत्री के पति सूर्य स्वामी हैं.

विधानसभा चुनावों के दौरान खेले गए इस नाटक का विशेष प्रदर्शन पंडित जी ने अपने निवास पर कराया, और इसे देखने के लिए लोगों को आमंत्रित किया था. उम्मीद थी कि पंडित जी के अब पड़ोसी बन गए राजीव गांधी भी अपना दुख-दर्द भुलाने और हंसने के लिए यहां आएंगे. लेकिन वे नहीं आए. इसके बावजूद पंडित जी ने नाटक जारी रखवाया.

सभी कार्टून: अजीत नैनन

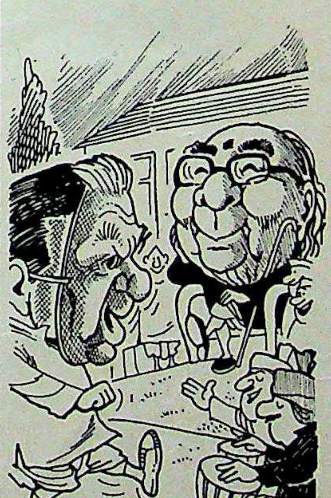

विदेश नहीं गृह सेवा

● सेंट किट्स से उठे विवादों की लहर पिछले दिनों विदेशमंत्री इंद्र कुमार गुजराल के दफ्तर तक पहुंच गई. इस विवाद पर 'इंडिया टुडे' में छपी रिपोर्ट से उत्तेजित भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के अधिकारियों का एक प्रतिनिधिमंडल गुजराल के दफ्तर में पिछले पखवाड़े आ धमका. 'इंडिया टुडे' की रिपोर्ट के अनुसार पूर्व विदेशमंत्री पी.वी. नरसिंहराव ने एक आईएफएस अधिकारी पर ऐसे हलफनामों को जारी करने का दबाव डाला था जिससे यह साबित हो सके कि सेंट किट्स के गुप्त खाते में जमा पैसे का संबंध प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह से है. इसके अलावा कई सरकारी अधिकारियों, इंका समर्थकों और कुछ विदेशियों तक ने वी.पी. की छवि को धूमिल करने के अभियान में शरीक होने के लिए आईएफएस अधिकारियों पर दबाव डालने की कोशिश की थी.

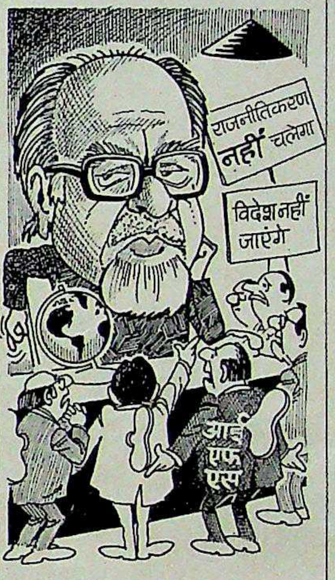

लेकिन प्रशंसनीय बात यह है कि कुछ आईएफएस अधिकारियों ने इस दबाव का प्रतिकार किया था. अब ये अधिकारी गुजराल से कहने आए थे कि मामला हद से बाहर जा रहा है. वे यह अनुरोध भी करने आए थे कि भारतीय विदेश सेवा का भारतीय प्रशासनिक सेवा की तरह राजनीतिकरण न होने दिया जाए. इन अधिकारियों का कहना था कि ऐसा आश्वासन न मिला तो वे यहीं चाहेंगे कि उन्हें देश में ही पदस्थापित किया जाए. अगर ऐसा हो जाए तो भारतीय विदेश सेवा का नाम बदलकर क्या 'भारतीय घरेलू सेवा' रखा जाएगा? या मंत्रियों के साथ उनकी नजदीकियों को देखते हुए इसका नाम 'भारतीय गृह पालन सेवा' कर दिया जाएगा.

झटके पर झटका

● बिहार के युवा इंका नेता तारिक अनवर इन दिनों परेशान-से दिखते हैं. राजीव गांधी के कभी खासमखास रहे तारिक को एक के बाद एक कई अप्रत्याशित झटके लगे हैं. पहले उन्हें जगन्नाथ मिश्र की जोड़तोड़ के कारण राज्य इंका का अध्यक्ष पद गंवाना पड़ा. फिर लोकसभा चुनाव में कटिहार में उन्हें मुंह की खानी पड़ी.

और अब किशनगंज से चुने गए सांसद एम.जे. अकबर का सितारा जिस तरह बुलंद है उसके कारण राज्य की नई पीढ़ी के मुस्लिम नेता के रूप में तारिक की स्वघोषित हैसियत पर खतरे के बादल मंडराने लगे हैं. तारिक को आशंका है कि अकबर उन्हें दरकिनार करते हुए राज्य के मुस्लिम समुदाय का प्रतिनिधि खुद बन रहे हैं. उनका मानना है कि पूर्व संपादक होने और कलम से मजबूत होने के कारण ही आज अकबर का इतना प्रभाव है.

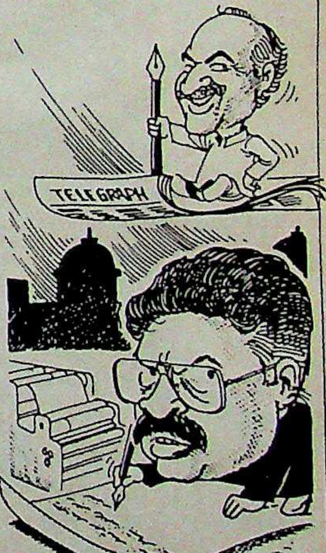

सो अब तारिक ने लोहे से ही लोहे को काटने का फैसला किया है. उन्होंने अपने खास लोगों के बीच घोषणा की है कि वे पहले एक मुखर उर्दू अखबार और उसके बाद उसका हिंदी संस्करण निकालने की योजना बना रहे हैं. लेकिन तारिक के दोस्त चुटकी लेते हैं, "अकबर कहीं तारिक के अखबार में स्तंभ लिखने का अनुरोध कर बैठें तब क्या होगा?"

रामराज्य का ट्रेलर

● क्या सतयुग आ गया है या देश में रामराज्य कायम हो गया है, जब लोग बिना कुंडी-ताले के घर वैसे ही खुला छोड़कर जाया करते थे और एक भी चीज इधर की उधर नहीं होती थी. क्या इस कलियुग में भी ऐसा होना संभव है? आप कहेंगे उस स्वर्णिम काल की स्मृतियां कुरेदकर क्यों नाहक आहत कर रहे हैं. अब तो सपने में भी ऐसा नहीं सोचा जा सकता.

सभी कार्टून: जयंतो

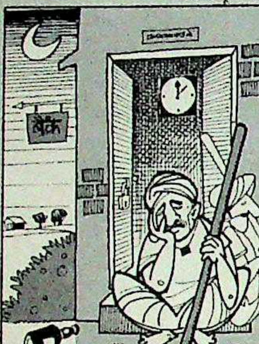

लेकिन हरियाणा में भिवानी जिले के मानहेरू गांव में रामराज्य का 'ट्रेलर' देखने को मिला है. यह राज्य के वित्तमंत्री का पैतृक गांव है. वहां एक बैंक है. चूंकि गांव का बैंक है इसलिए स्टाफ के लोग रोज शाम को गला 'तर' करने के लिए जुट जाते हैं. उस शाम उन्होंने कुछ ज्यादा ही गला 'तर' कर लिया. बड़े अफसर ने झोंक में अगले दिन की छुट्टी का आवेदन भी दराज में डाला और झूमते-लहराते घर चल दिए. स्टाफ का हर कर्मचारी एक-एक करके मस्ती में चलता बना. किसी को यह याद रखने का होश न था कि वे बैंक ही नहीं वरन बैंक की तिजोरी भी खुली छोड़े जा रहे हैं.

गांववालों को मध्य रात्रि में जाकर खयाल आया कि बैंक खुला पड़ा है. पुलिस बुलाई गई, ताला लगाया गया. पर रकम की किसी ने जांच न की. अगले दिन सुबह बैंकवालों के पहुंचने पर पंचायत जुटी, ताला खोला गया, नकदी गिनी गई जो उतनी ही निकली जितनी मदमाते कर्मचारी खुली छोड़ गए थे. गांववालों ने बैंकवालों से लिखित आश्वासन ले लिया. पर वे यह 'ट्रेलर' फिर न दिखाएंगे इसकी क्या गारंटी?

सिनेमा और सिनेमा

● फतेहपुर के पूंडरी कस्बे में सिनेमा के भीतर 'सिनेमा' हो रहा है. यानी परदे का अलग और हॉल के भीतर जीवंत सिनेमा अलग.

इस जीवंत सिनेमा में बस एक पात्र है—उसकी हीरोइन. यह कोई श्रीदेवी, सोनम, किमी, फरहा, शिल्पा, नीलम या अमला नहीं है. लेकिन उनसे कम भी नहीं है. यह हीरोइन रोज आती है और हॉल में फर्स्ट क्लास या बालकनी की किसी पसंदीदा सीट पर सशरीर बैठ जाती है. वह किसी से कुछ कहती-सुनती नहीं है. हां, बीच-बीच में अपनी अनोखी अदाएं जरूर दिखाती रहती है.

जितने दर्शक परदे का सिनेमा देखने आते हैं, उससे कहीं ज्यादा इस मतवाली हीरोइन को देखने आते हैं. पर हमारी 'हीरोइन' परदे पर बंबइया हीरो-हीरोइन और विलन को देखना ज्यादा पसंद करती है. उसे सिनेमा दिखाने से ज्यादा देखने का इतना चस्का पड़ चुका है कि उसे रोकने की कोशिश करने वाले गेटकीपरों ने अब हथियार डाल दिए हैं. दरअसल, शुरू-शुरू में उसे रोकने की कोशिश की गई तो उसने 'खलनायिका' का रोल अपनाकर गेटकीपरों को ऐसा डरा दिया कि 'नगीना' या 'निगाहें' की श्रीदेवी ने भी क्या डराया होगा. अब उसे देखते ही वे बिना कुछ कहे-सुने हॉल के दरवाजे खोल देते हैं. 'हीरोइन' इंटरवल में नाश्ते-पानी के लिए बाहर निकलती है बस. फिर ठीक टाइम पर अपनी सीट पर आन विराजती है. दर्शकों के लिए बंबइया हीरोइनों से ज्यादा दर्शनीय यह हीरोइन और कोई नहीं, बल्कि एक बंदरिया है.

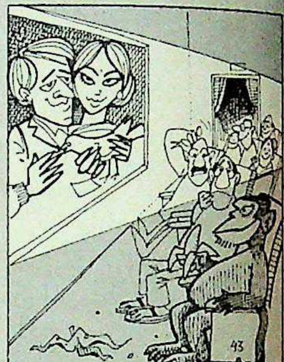

जीते तो ब्याह

● सात फेरों पर साढ़ेसाती की छाया पड़ जाए तो क्या हो? बंदा कुंआरा रह जाए, आहें भरे, शिकवे करे, सिर धुने. लेकिन इस मामले में शायद ऐसा कुछ नहीं हुआ. हां 'हार' के कारण ये सज्जन न 'हार' पहनने को तैयार हुए, न पहनाने को. उन्होंने भीष्म की तरह आजीवन स्त्री-स्पर्श न करने की प्रतिज्ञा तो नहीं की थी लेकिन इतना जरूर ठान लिया था कि जब तक विधानसभा में उनकी कुर्सी नहीं बन जाती, तब तक वे अपना ब्याह नहीं रचाएंगे.

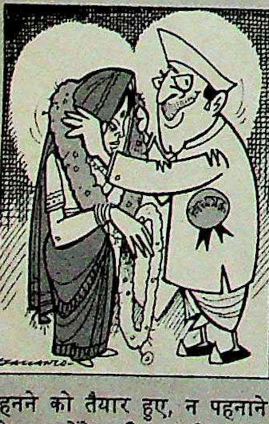

ये सज्जन हिमाचल प्रदेश की एक विधानसभा सीट पर दूसरी पार्टी के एक दिग्गज से हार गए थे. तभी उन्होंने यह कौल कर लिया. लेकिन अगले चुनाव में वे फिर पराजित हो गए. घरवालों ने, मित्रों-स्नेहियों ने लाख समझाया पर वे विवाह की वेदी पर बैठने को तैयार न हुए. ठाकुर हैं इसलिए मामला जब मूंछों पर आ जाए तो पीछे कैसे हटें, प्रतिज्ञा क्यों तोड़ें? सो, वे वैसे ही रह गए. इस बार विधानसभा चुनाव में उनका "जब तक विधायकी नही, तब तक विवाह भी नहीं" वाला कौल घर-घर पहुंच गया था. ठाकुरों के इलाकों में उनको जितवाना आन का मुद्दा बन गया. महिला मतदाताओं में तो उनके प्रति सहानुभूति की लहर ही चल पड़ी. शुरू में जो सीट संकट में लग रही थी, आखिरी दिनों में एकाएक पक्की हो गई. और जब पेटियां खुलीं तो पता लगा कि 800 वोटों से वे विजयी हो गए हैं. उन्होंने विजय के उपलक्ष्य में हार तो पहन लिए, देखना यह है कि वरमाला कब वे गले में डालते हैं.

नया आंदोलन

● छात्रों के आंदोलन के कई प्रकार आपने सुने होंगे. काली पट्टी लगाना, रास्ता रोको, चक्का जाम, धरना, धारावाहिक और अखंड भूख हड़ताल, मामला ज्यादा ही गरमाए तो आमरण (या तामरण) अनशन, घेराव वगैरह. ये सब तो सीधी कार्रवाई यानी 'डायरेक्ट एक्शन' के उदाहरण हैं. मगर जूनियर डॉक्टर या इंजीनियरिंग के नफासतपसंद छात्र जूता पॉलिश जैसे ज्यादा चर्चित होने वाले कदम भी उठाते हैं.

लेकिन गोरखपुर विश्वविद्यालय के छात्रों ने कुछ अलग ही कर दिखाने की ठानी. उन्हें आंदोलन के ये सब तरीके शायद बासी और बोरिंग लगे. वैसे, उन्होंने इनमें से कई तरीके पहले अपनाकर देख जरूर लिए. लेकिन उन तिलों से तेल न निकला तो उन्होंने एक नया तरीका ईजाद कर डाला. यहां के छात्रों को कुलपति नही चाहिए. मतलब जो मोहतरमा उस कुर्सी पर हैं उन्हें वे फूटी आंख नहीं सुहा रहीं. उनकी जगह कोई दूसरा होता तो छात्र उनसे 'सीधे' निबट लेते पर इनका क्या करें? सो, छात्रों ने तय किया कि कुलपति न सही उनके समर्थकों से ही 'सीधे' निबटा जाए. कैंपस में उन्होंने कुलपति समर्थकों को 'थप्पड़ मार अभियान' शुरू कर दिया. दो वरिष्ठ अध्यापक पहले-पहल उनके शिकार बने और कुलपति ने विश्वविद्यालय बंद करने की घोषणा कर दी. पुलिस भी हरकत में आ गई. उसने दो छात्रों को गिरफ्तार कर लिया. अब पता नहीं छात्रों का यह अनोखा आंदोलन चल रहा है या नहीं. लेकिन पुलिस उनसे निबटने को तैयार जरूर बैठी है.

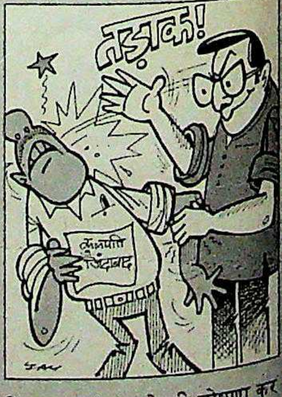

महफ़िल की जान
यह नई शान!

DIPLOMAT
McDowell's
DIPLOMAT
DISPOSABLE
ICE CUBE BAGS
The new
smooth choice!
McDOWELL & CO. LTD.

McDowell's
DIPLOMAT

लालकृष्ण आडवाणी

भाजपा के सफल सारथि

विचारों की स्पष्टता और उस पर अमल ने कामयाब बनाया

उन्हें देखकर आपको यही लगेगा कि इस शख्स को कहीं न कहीं जरूर देखा है. अगर याद न आ रहा हो तो आर.के. लक्ष्मण के हर कार्टून में आने वाले सफेद घनी मूंछों वाले नाटे कद के उस सामान्य आदमी को याद कीजिए जो राजनैतिक दुनिया में स्तब्ध होकर झांकता है. अब इस पात्र की आदमकद तस्वीर की कल्पना कीजिए. जो तस्वीर बनेगी वह लालकृष्ण आडवाणी से एकदम मिलती-जुलती होगी. आडवाणी की सिर्फ मूंछें ही नहीं बल्कि उनके चेहरे का सवालिया भाव भी उस नाटे कद के बूढ़े से मिलता-जुलता हैं. लक्ष्मण के उस पात्र और आडवाणी की समानताएं बस यहीं खत्म हो जाती हैं और पहेली शुरू हो जाती है.

आडवाणी कतई दिग्भ्रमित नहीं हैं. दरअसल, वे इतने सुलझे हुए व्यक्ति हैं कि उनके विचारों की स्पष्टता और उस पर

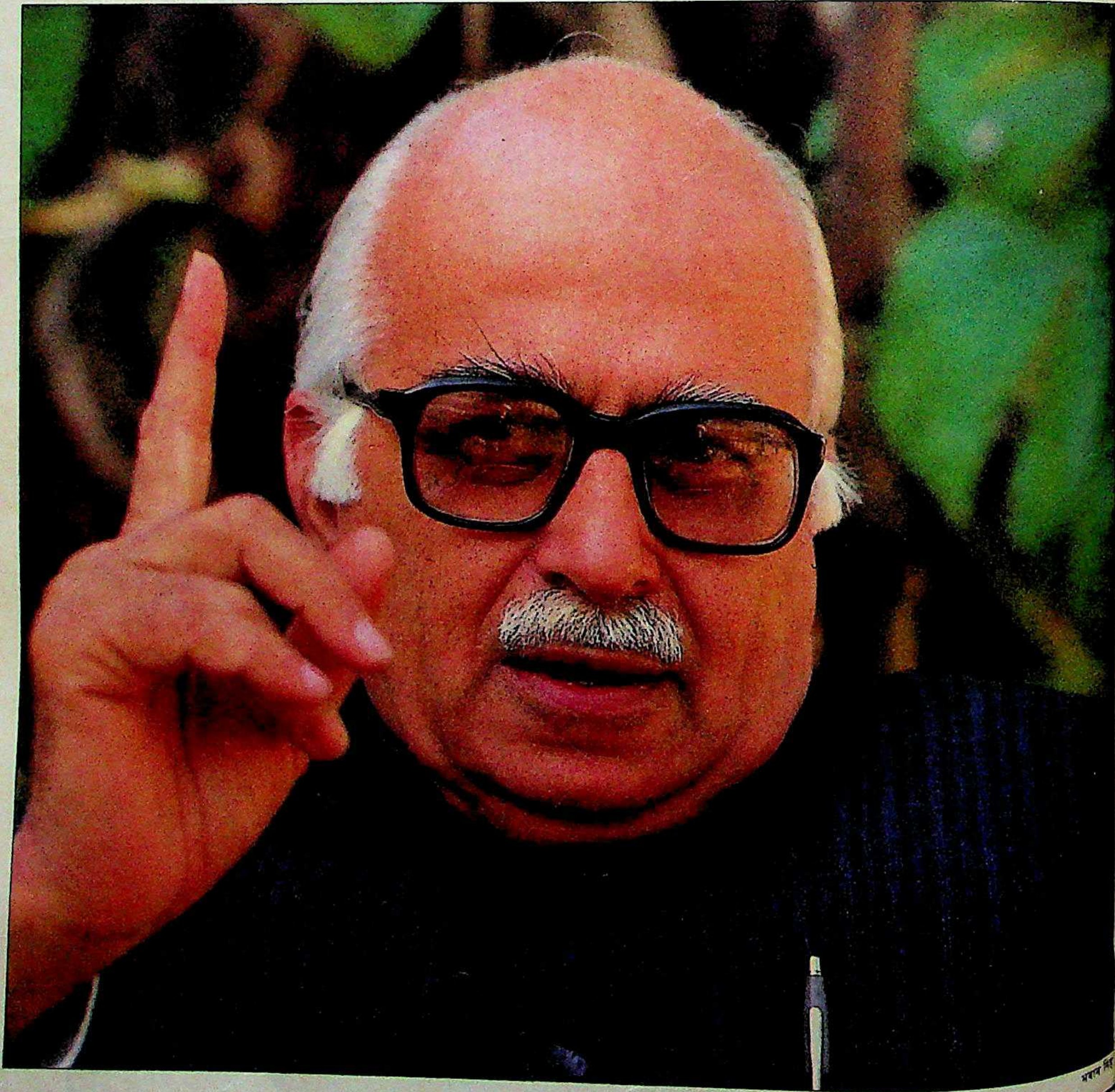

से भाजपा भी दिग्भ्रम से निकल आई और उसका आकार इतना बड़ा और त हो गया है कि पुराने समाजवादियों, लियों और कम्युनिस्टों जैसे परंपरागत निरपेक्षवादियों और राष्ट्रभक्तों को अपने पर उतर आना पड़ा.

र्टी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी परिषद के और पत्रकार जय दुभाषी कहते हैं, राजनीति में ऐसा भद्र पुरुष नहीं देखा.'' जेंसी के दौरान जेल में आडवाणी के 19 महीने तक बंद रहे वित्तमंत्री मधु ते का मानना है, ''वे दुग्ध-धवल चरित्र- मृदुभाषी कट्टरपंथी हैं. हमारे सामाजिक राजनैतिक जीवन में ऐसे लोग दुर्लभ सैयद शहाबुद्दीन की आपत्ति है, ''वे लिनवादी आपराचिक' (रूसी अफसर- के सदस्य) हैं. उनके उदारवादी हाव- के पीछे एक विध्वंसक हिंदू कट्टरपंथी हुआ है.'' भाकपा नेता एम. फारूकी वेश में कहते हैं, ''यह ऐसा आदमी राजनीति के बेहद खतरनाक खेल में है.''

आडवाणी ने ये सारी बातें सुनी है. उन्हें भले न मिली हो, लेकिन आलोचना मिली. आपको '50 और '60 के दशक है न! उस समय बुद्धिजीवियों के बीच संघी एक गंदा शब्द था. माना जाता था जनसंघियों ने ही गांधी की हत्या की. तिवादी उनसे नफरत करते थे.

हालांकि आडवाणी पर होने वाले हमलों भी कमी नहीं आई है और बेहद संवेदन- होने के कारण उन्हें इनसे चोट पहुंचती लेकिन वे मुस्कराते हुए उन्हें अनदेखा कर हैं. बहुत पूछने पर अपने बारे में वे कहते मेरा जीवन एकदम शुष्क है.''

लेकिन इस नीरस, मृदुभाषी, कट्टरपंथी 'स्तालिनवादी आपराचिक' के धी आतंकित होकर और उसके समर्थक न्मादित होकर उसे पार्टी में जान फूंकने एकमात्र व्यक्ति बता रहे हैं. और वाणी ने यह सब आधुनिक सुविधाओं कमरे में बैठकर नहीं किया है. 19 साल राज्यसभा सदस्य रहने के बाद उन्होंने साल दिल्ली से लोकसभा का चुनाव और भारी मतों के अंतर से जीते.

यानी उनका आविर्भाव और पार्टी का विर्भाव दोनों एक साथ हुआ. आज सभा में भाजपा की 86 सीटें होने के आडवाणी उस त्रिपक्षीय व्यवस्था के महत्वपूर्ण स्तंभ हैं जिस पर राष्ट्रीय मोर्चा सरकार टिकी हुई है. वे सरकार की रण- यों पर चर्चा करने के लिए हफ्ते में एक भाकपा के हरकिशन सिंह सुरजीत के प्रधानमंत्री विश्वनाथ प्रताप सिंह के खाना खाते हैं. हाल के विधानसभा चुनावों (साथ की रिपोर्ट देखें) के बाद तो उनकी पार्टी के तीन शक्तिशाली मुख्यमंत्री बन गए हैं. यही नहीं, दूसरे प्रमुख राज्यों में भी साझा सरकारें बनवाने में भाजपा की महत्वपूर्ण भूमिका रही है.

1984 में भाजपा की दुर्दशा के गवाह पार्टी महासचिव कृष्णलाल शर्मा कहते हैं, ''इसमें कोई संदेह नहीं. हम जीर्ण-शीर्ण हो गए थे और हमारा मनोबल गिर गया था. उस समय कांग्रेसियों और कम्युनिस्टों ने चारों ओर अफवाह फैला दी थी कि हमारे कार्यकर्ताओं ने हमें छोड़ दिया है और हम चुक गए हैं.'' 1984 के चुनाव में पार्टी को लोकसभा में महज दो सीटें मिली थी. उस समय पार्टी के अध्यक्ष अटल बिहारी वाजपेयी और महासचिव आडवाणी थे. पार्टी की दुर्दशा के कारणों की गहन छानबीन के बाद आडवाणी ने सकारात्मक चिंतक की ताकत दिखाने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ओढ़ ली.

आडवाणी कहते हैं, ''दरअसल, लक्ष्य हासिल करने के तरीके में कोई खास अंतर नहीं था. हां, हमारे ऊपर प्रहार हुआ था. और हार के बाद तो हर चीज ही प्रतिकूल हो जाती है.'' लेकिन आडवाणी ने राजनैतिक लड़ाई के नतीजों पर सूक्ष्मता से विचार करने के बाद पाया कि पार्टी में अभी भी जान फूंकी जा सकती है. उन्होंने सबसे पहले पार्टी को यह यकीन दिलाने की कोशिश की कि उसका प्रदर्शन उतना घटिया नहीं रहा क्योंकि उसने लोकप्रिय वोटों का 7.5 फीसदी हासिल किया. यानी विपक्ष को मिले कुल वोटों का सबसे बड़ा हिस्सा उसकी झोली में गया.

आडवाणी ने पार्टी के लोगों को आत्मग्लानि से बचाने, कुछ पार्टी दिग्गजों की मनमानी रोकने तथा पार्टी में ऊपर से नीचे तक जान फूंकने की पहल की. उन्होंने वाजपेयी को इस बात के लिए राजी कर लिया कि बडे नेताओं को लिए बगैर कृष्णलाल शर्मा की अगुआई में एक कार्यदल बनाया जाए जो नेतृत्व को आलोचना से न बख्शते हुए विस्तृत रिपोर्ट तैयार करे.

इस योजना के दूसरे साल, यानी 1986 में आडवाणी ने वाजपेयी से पार्टी अध्यक्ष पद का कार्यभार ग्रहण किया. उनके बीच न तो वैचारिक मतभेद उभरे, न सत्ता की लड़ाई ही हुई. एक तरह से देखा जाए तो आडवाणी का उभरना तय था क्योंकि उनमें स्वाभाविक क्षमता और अनुभव दोनों चीजें थीं. 15 वर्ष की आयु में वे हैदराबाद (सिंध) में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में जाने लगे थे. विभाजन के बाद वे संघ के पूर्णकालिक प्रचारक बन गए. उनका कार्यक्षेत्र था राजस्थान. वे कहते हैं, ''उस अनुभव से मुझे पहली बार अपने से बाहर की दुनिया के प्रति प्रतिबद्धता का एहसास हुआ.'' वाजपेयी समेत

अध्यक्ष आडवाणी के विचार

“

जब मीडिया सर्वोच्च सत्ता को कानून की धौंस दिखा सकने की भी ताकत रखता हो, तभी उसे वास्तव में स्वतंत्र कहा जा सकता है

हरेक लोकतंत्रवादी स्वस्थ लोकतंत्र को जरूरी मानकर तीखी आलोचना का स्वागत करता है जबकि फासीवादी व्यक्ति इसे खतरा मानता है

सरकार को होटल क्यों चलाने चाहिए? और एअरलाइंस के क्षेत्र में निजी उद्यमियों का प्रवेश क्यों नहीं होना चाहिए?

विभाजन एक भूल थी. इससे दोनों में से कोई देश फायदे में नहीं रहा. हमें भारत और पाकिस्तान के नए महासंघ का विचार रखना चाहिए

हिंदू धर्म में धर्मनिरपेक्षता आवश्यक तत्व है. इसमें सहिष्णुता पर बल है. हम हिंदू राष्ट्र होकर ही धर्मनिरपेक्ष हैं

”

संघ के दूसरे स्वयंसेवकों के साथ वे 1951 में जनसंघ के जरिए सक्रिय राजनीति में आ गए. 1973 में जनसंघ के अध्यक्ष चुने गए और उस पद पर 1977 तक रहे. वे 1967 से 1970 के बीच दिल्ली महानगर परिषद के अध्यक्ष भी रहे. साठ के दशक में उन्होंने 'आर्गनाइजर' में खूब लिखा.

और इस व्यापक अनुभव से उनका शांत लेकिन प्रभावशाली व्यक्तित्व और भी निखर आया. जैसा कि नानाजी देशमुख कहते हैं, "उन्होंने खुद को आगे बढ़ाने की कोशिश कभी नहीं की. वे समस्याओं का गहराई से अध्ययन करते हैं. वे नाप-तोलकर बोलते हैं. धोखा देना और पैंतरेबाजी करना वे जानते ही नहीं. और एक बार वे जिस रास्ते पर चलने का फैसला कर लेते हैं, उस पर से उन्हें कोई विचलित नहीं कर सकता." पार्टी को एक प्रेरणादायक नेता, एक अथक संगठनकर्ता की जरूरत थी. आडवाणी इस कसौटी पर एकदम खरे उतरते हैं.

वाजपेयी निस्संदेह अच्छे वक्ता हैं और उनका अपना नजरिया है. वे लोकप्रिय भी हैं. उनके विरोधी भी उन्हें उदारवादी के रूप में आसानी से मंजूर कर सकते हैं. बेहद भावुक वाजपेयी अपनी प्रवाहमय कविता और जादुई भाषा में लोगों को बहा ले जाते हैं. लेकिन जैसा कि एक वरिष्ठ पार्टी नेता का कहना है, "उनके बोलने के बाद आप भूल जाएंगे कि उन्होंने क्या कहा. लेकिन आडवाणी की बातें आपके दिमाग में घर कर जाती हैं क्योंकि वे तर्क और वाक्कला में माहिर हैं."

वाजपेयी में करिश्मा है लेकिन उनके व्यक्तित्व में वह बात नहीं है जो आरएसएस और भाजपा कार्यकर्ताओं को प्रेरित कर सके. ये कार्यकर्ता मध्य प्रदेश के ताकतवर भाजपा नेता कुशाभाऊ ठाकरे जैसे व्यक्तित्वों से, जिनके पास कुल मिलाकर तीन धोतियां हैं, प्रेरणा ग्रहण करते हैं. दुभाषी कहते हैं, "आप उनके कमरे में कभी भी जाएं, वे धोती साफ करते और उसे सुखाने के लिए बाहर फैलाते मिलेंगे," या फिर राजस्थान के किंगमेकर सुंदर सिह भंडारी से प्रेरणा लेते हैं जो एक कमरे में गांधी जैसा जीवन बिता रहे हैं.

आडवाणी हालांकि एकदम ऐसे नही हैं लेकिन वे तड़क-भड़क से परे होने का खास एहसास दिलाते हैं. वे सादगीपसंद तो नहीं हैं पर उनमें स्वयंसेवक के तौर-तरीके साफ देखे जा सकते हैं. आप उनके दफ्तर में बिना पूर्व सूचना के जा सकते हैं. अपने टेलीफोन भी वे खुद उठाते हैं. केदारनाथ साहनी कहते हैं, "अपनी हैसियत जताने के लिए वे तामझाम का सहारा कभी नहीं लेते."

भाजपा और संघ के कार्यकर्ता सादगी और संतुलन को विशेष महत्व देते हैं चाहे बेहतर हो या बदतर, पर आज आडवाणी हिंदुत्व समर्थक आक्रामक रवैए के प्रतीक बन गए हैं. अंदरूनी लोग मानते हैं कि

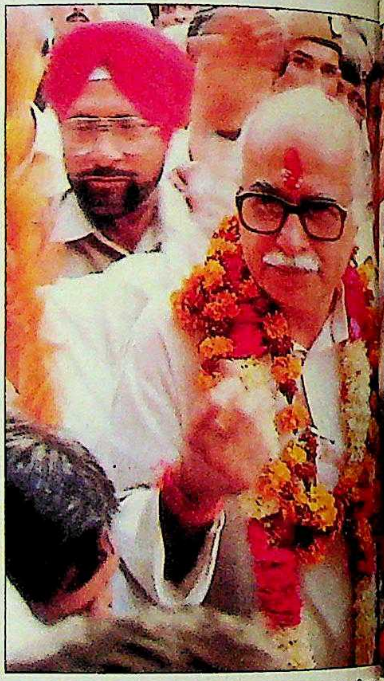

प्रशांत पंजियार

नई दिल्ली संसदीय क्षेत्र से विजयी आडवाणी; और (नीचे) वाजपेयी के साथ: आकर्षक व्यक्तित्व

1,2,3 दिसम्बर 1989, नई दिल्ली

पेयी के रवैए से, खासकर जनता पार्टी टूट की जिम्मेदारी अपने सिर पर लेने से कर्ताओं का मनोबल गिर गया था, न बावजूद इसके ये दोनों नेता एक-दूसरे पूरक हैं. वाजपेयी की तरह आडवाणी का न भी बेदाग रहा है. यहां तक कि उनके

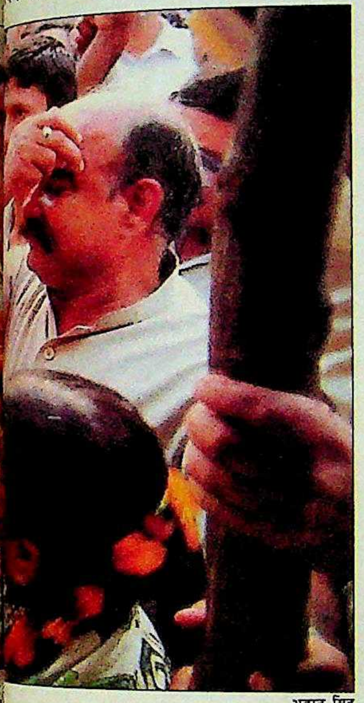

भवान सिंह

ोचक भी मानते हैं कि उन्होंने कभी ी का एहसान नहीं लिया.

शायद भाजपाई नेतृत्व के ढांचे में आडणी का विशेष स्थान तर्कसंगत दलील विकसित करने की उनकी क्षमता में हित है. वे इतने ठोस तर्क दे सकते हैं से लगे कि उनका रवैया राष्ट्रवादी है कि उनके विरोधियों का सांप्रदायिक. की 'सकारात्मक धर्मनिरपेक्षता' के सार अनुच्छेद 370 का समर्थन और ान नागरिक संहिता का विरोध अलगावी सोच है, 'अल्पसंख्यकवाद' की ओर सी है. वे विरोधियों से कहते हैं कि उर्दू दूसरी राजभाषा के रूप में प्रोत्साहन र आप 7 फीसदी आबादी के तुष्टीकरण प्रयास कर रहे है.

राम जन्मभूमि के मुद्दे पर वे अपनी दलील ताना-बाना कुछ अलग ढंग से गढ़ते हैं. वे ते हैं, "क्या कोई काबा की मस्जिद या मस्जिद को राष्ट्रीय स्मारक घोषित सकता है?" उनका कहना है कि राम भूमि का आंदोलन अपने आप में पूर्ण है उसकी अपनी प्रेरणादायी शक्ति है, चाहे पा उसके साथ रहे या न रहे. मेरी राय राम जन्मभूमि की बाबरी मस्जिद से ना दरअसल राम की तुलना बाबर से ने जैसा है."

इसमें संदेह नहीं कि 1986 से 1989 के संकटपूर्ण दौर में, जब दूसरी राष्ट्रीय पार्टियां भाजपा को दरकिनार करने की कोशिश कर रही थीं—और शायद इसी एकमात्र कारण से कि भाजपा को राष्ट्रीय राजनीति की कमजोर धारा में डाला जा रहा था, आडवाणी पार्टी की विशिष्ट पहचान बनाने के काम को गति देने में सफल रहे.

इसी क्रम में वे विचारक, संगठक और जननेता के रूप में उभरकर सामने आने लगे और पिछले बरस वे महत्वपूर्ण राजनैतिक रणनीतिज्ञ के रूप में सामने आए. परंपरागत रूप से भाजपा का वर्चस्व दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान तथा जम्मू जैसे कुछ शहरी इलाकों तक ही सीमित था. लेकिन आडवाणी ने नेतृत्व को यकीन दिलाया कि अगर पार्टी का अस्तित्व बचाए रखना है तो उसे अपने पांव फैलाने होंगे.

उनकी तात्कालिक योजना गुजरात और महाराष्ट्र में भरपूर प्रयास करने की थी, वे इसके लिए शिवसेना जैसे भस्मासुर से भी गठजोड़ करने से नहीं हिचके. आडवाणी स्वीकार करते हैं कि बाल ठाकरे के साथ एक ही मंच पर बैठना उन्हें वैसे नहीं सुहाता "क्योंकि शिवसेना में कुछ शरारती तत्व भी भरे हुए हैं." वाजपेयी, के.आर. मल्काणी और जसवंत सिंह सरीखे भाजपा के महत्वपूर्ण नेताओं ने इस गठजोड़ का विरोध किया था.

इससे इतर आडवाणी के दिमाग में चुनावी रणनीति भी थी. आखिरकार उत्तर प्रदेश और बिहार के बाद महाराष्ट्र सबसे बड़ा राज्य है. अगर भाजपा और इसके सहयोगियों ने गुजरात तथा महाराष्ट्र में प्रभावी जीत हासिल कर ली (मध्य प्रदेश उसकी झोली में जाता दिख ही रहा था) तो ऐसी स्थिति पैदा हो सकती है जब इंका पर अपनी जीत पक्की करने के लिए विपक्षी दलों को भाजपा को साथ लेना जरूरी हो जाएगा. इन सभी रणनीतियों के पीछे दीर्घावधिक तर्क भी था. आडवाणी का आकलन था कि विपक्ष के हाथ में दो जोरदार पत्ते थे वे इंकाई शासन को ध्वस्त करने के लिए पर्याप्त नहीं थे. इसमें पहला था हिंदू लहर का पत्ता जिसका मुख्य फायदा भाजपा को मिला, और दूसरा था राजीव विरोधी पत्ता जिसमें वी.पी. सिंह फायदे में रहे. लोकसभा चुनावों में तीसरा सबसे महत्वपूर्ण पत्ता विपक्षी एकता का था.

पिछले दो वर्षों में वी.पी. सिंह के साथ बातचीत में आडवाणी सीधी सपाट और दो-टूक शैली अपनाए रहे. इस शैली का मकसद वी.पी. सिंह को यकीन दिलाना था कि अल्पसंख्यकों का समर्थन हासिल करने के लिए कम्युनिस्टों के झांसे में आकर अगर वे सीटों के तालमेल से भाजपा को बाहर रखते हैं तो वे जीत नहीं पाएंगे.

वास्तविकता तो यह भी है कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार का आधारभूत त्रिपक्षीय गठजोड़ जितना वी.पी. सिंह के दिमाग की उपज है, उतना ही आडवाणी की भी. लेकिन वे अपने इस दृष्टिकोण पर जमे रहे कि सैद्धांतिक तौर पर भाजपा कहीं भी कम्युनिस्टों के साथ तालमेल नहीं करेगी.

वी.पी. सिंह और जनता दल के प्रति उनका विचार भी एक जैसा ही रहा है. आडवाणी उन सभी दबावों को निरस्त करने के प्रति दृढ़संकल्प हैं जिनसे सरकार के अस्थिर होने का खतरा पैदा होता हो. वे खुद मूर्तिपूजा में विश्वास नहीं रखते लेकिन शिवसेना के साथ साझा मंच पर खड़े होने में जैसी दुविधा उन्हें होती है, ठीक वैसी ही दुविधा लिए हुए वे दिल्ली में एक शिला पूजन में शामिल हुए ताकि विश्व हिंदू परिषद को पार्टी का समर्थन दोहराया जा सके. फिर भी जब फरवरी में सरकार संकट में घिरती दिखी तो वी.पी. सिंह के आग्रह पर आडवाणी ने राष्ट्रीय हित में मंदिर निर्माण की तारीख आगे बढ़वाने में महती भूमिका निभाई.

उन्हें जानने-समझने वाले सभी लोग इसकी गवाही देंगे कि किसी भी मुद्दे पर आडवाणी राष्ट्रीय हित को पार्टी हितों से ऊपर रखने पर जोर देते हैं. यह उनके स्वभाव

"आडवाणी 'अल्पसंख्यकवाद' और 'तुष्टीकरण' पर बरसते रहते हैं. जब मेरठ में मुसलमानों का नरसंहार हो रहा था तो क्या वह अल्पसंख्यकवाद था? और भागलपुर में उनकी हत्या क्या उनका तुष्टीकरण था?"

सैयद शहाबुद्दीन

"मैं उनके कुछ विचारों से सहमत नहीं हो सकता पर कह सकता हूं कि मतभेद के मुद्दों पर उनके कई तर्क और उनकी व्याख्या बहुत पैनी होती है."

मधु दंडवते

में है और इसका श्रेय निश्चित रूप से संघ के कारण बनी हुई मानसिकता को है. आडवाणी के 'संपूर्ण' नेता के रूप में उदय का श्रेय शायद सबसे अधिक इसी गुण को है. इनमें संघ के अनुशासन के साथ भाजपा की नई आक्रामकता का योग तो है ही, विचारों की प्रखरता, पैनी सूझबूझ, संगठन क्षमता, पढ़ने की अदम्य इच्छा, कार्यकर्ता जैसा समर्पण भाव, राजनैतिक जोडतोड़ में महारत और समाचार जगत से व्यवहार में पटु होने जैसे गुणों का भी योगदान है.

लेकिन ऐसी वैचारिक स्पष्टता ही काफी नहीं है. पार्टी के कई अंदरूनी सूत्रों का मानना है कि अगर आडवाणी कुछ मौलिक संगठनात्मक समस्याओं को सुलझाने में भी उसी तरह की कड़ाई और सूझबूझ का परिचय नहीं देते तो संकट उत्पन्न हो सकता है. एक तो यह कि कांग्रेस और कम्युनिस्टों की तरह पार्टी में बड़े नेताओं के दबदबे के चलते इमरजेंसी के दौरान आए प्रतिबद्ध कार्यकर्ताओं में से उभरे युवा नेताओं को आगे आने और उन्हें साथ लेने का काम रुका पड़ा है. इसकी वजह यह है कि राज्य इकाइयों पर आज भी उन्हीं नेताओं का नियंत्रण है जो 30 साल पहले जनसंघ में आए थे. भद्र स्वभाव के आडवाणी इस दबदबे को तोड़ने में अक्षम या अनिच्छुक रहे हैं.

हिमाचल प्रदेश में हमेशा शांता कुमार के ही हाथ में बागडोर दिखती है और उनके कारण नई संभावनाओं के साथ उभरने वाले दावेदारों को अंततः परदे के पीछे हो जाना पड़ता है. मध्य प्रदेश में सिंधिया-जोशी-पटवा की तिकड़ी की जकड़न की वजह से भाजपा की राजनैतिक जीवनधारा में नवोदित प्रतिभाएं घुस भी नहीं सकतीं. दिल्ली में विजय कुमार मल्होत्रा, केदारनाथ साहनी और मदनलाल खुराना से बना सत्ता केंद्र अविच्छिन्न दिखता है. ये नेता खुद के और अपने समर्थकों के लिए संगठनात्मक पदों के साथ-साथ विधायी पद भी हासिल कर लेते हैं. राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र में भी नए उम्मीदवारों को लाने की आडवाणी की कोशिशें नाकाम रही हैं.

पार्टी को सत्ता का स्वाद मिलने के साथ ही इसके कुछ क्षत्रपों में जोड़तोड़ और अवसरवादिता के लक्षण दिखने लगे हैं. जैसा कि मध्य प्रदेश में जोशी-पटवा की टकराहट से उजागर है. और तो और, कई राज्यों में भाजपा के स्थानीय नेताओं का दामन भी साफ-सुथरा नही है. फिर जैसा कि शहाबुद्दीन बताते हैं, पार्टी ने इस बार अपराधियों को भी टिकट दिए.

इसके अलावा खुद आडवाणी के बारे में भी कई तरह की शंकाएं हैं. वे ऐसे नेता हैं जो पार्टी में आस्था की प्रेरणा देते हैं लेकिन अपने को उदार मानने वाले कुछ लोग उनसे खौफ भी खाते हैं. अगर वे सत्ता में आते हैं तो क्या यह 'संपूर्ण' नेता 'एकाधिकारवादी' नेता बन जाएगा? क्या उनकी पार्टी अल्पसंख्यकों का नरसंहार शुरू करा देगी? क्योंकि भले ही यह गलत धारणाओं का प्रतिफल हो पर इसमें कोई संदेह नहीं कि भाजपा आज भी इतिहास

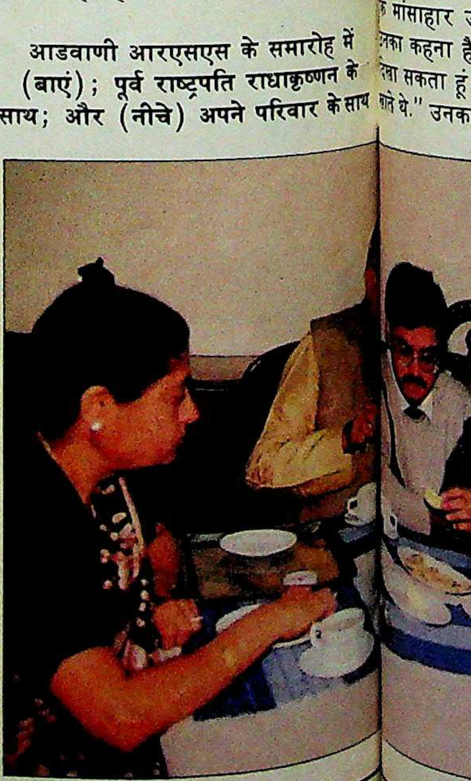

आडवाणी आरएसएस के समारोह में (बाएं); पूर्व राष्ट्रपति राधाकृष्णन के साथ; और (नीचे) अपने परिवार के साथ

नकारात्मक पक्ष का बोझ अपने सिर पर ए चल रही है और उसे मुख्यधारा की यां और प्रेस सांप्रदायिक बताते रहे हैं. को लहूलुहान करने वाली सांप्रदायिक ना के दौर में भाजपा के प्रति सहानुभूति ने वाले उग्र हिंदू गुटों या खुद भाजपा के कर्ताओं के इसमें शामिल रहने की ालें मिली हैं.

हालांकि आडवाणी उच्छृंखल और हिंसक उग्रवादियों के अस्तित्व को शायद कभी नकारें लेकिन वे कहते हैं कि ऐसा हिंदू वनाओं को आहत करने से और छद्म निरपेक्षता की प्रतिक्रियास्वरूप ही हुआ है र ऐसी भावनाओं पर भाजपा जैसी पार्टी मार्फत ही काबू पाया जा सकता है क्योंकि लोगों को सच्ची और अहिंसक हिंदूवादी निरपेक्षता की ओर मोड़ सकती है.

वरिष्ठ पत्रकार के.आर. मल्काणी उन लोचकों को 'बकवास!' कहकर खारिज देते हैं. वे कहते हैं, "हमारा मूल मंत्र हष्णुता है. हम हिंदू राष्ट्र या कोई धार्मिक ज्य नहीं बनाना चाहते. लेकिन हम हिंदू नं के सार से प्रेरित होते हैं जो हमें अपनी ड़ों का एहसास दिलाता रहता है ताकि हम धुनिक बनने की प्रक्रिया में यूरोपीयकरण बाढ़ में कहीं बह न जाएं."

व्यक्तिगत जीवन में आडवाणी का धर्म या हां तक कि रस्म-रिवाजों से दूर-दूर तक ई नाता नहीं है. उनके निवास में पूजाघर क नहीं है. वे शाकाहारी हैं पर किसी र्मिक भावना के तहत नहीं बल्कि इसलिए क मांसाहार उन्हें पसंद नहीं है. दरअसल, नका कहना है, "मैं श्रुतियों में ऐसे उद्धरण खा सकता हूं कि राम और कृष्ण भी मांस खाते थे." उनका बेटा जयंत और बेटी प्रतिभा मांसाहारी हैं और शाकाहारी पत्नी कमला 'मांस के बहुत उम्दा व्यंजन बनाती' हैं.

भवान सिंह

हाल ही में कलकत्ता के ओबेराय होटल में लॉबी मैनेजर कैलाश थडाणी से ब्याही प्रतिभा कहती हैं, "उन्होंने हम पर धर्म, हिंदुत्व या कोई विचारधारा लादने की कोशिश नहीं की. उनका आग्रह सिर्फ पुस्तकों को लेकर होता है—विज्ञान की पुस्तकें, जानवरों की पुस्तकें आदि. और वह भी इसलिए कि उन्हें पढ़ने का शौक है. उन्हें अंग्रेजी फिल्में देखने का भी शौक है. उनकी पसंदीदा फिल्मों में एक है 'माई फेयर लेडी'."

आडवाणी की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा कराची में आयरलैंड के पादरियों के एक स्कूल सेंट पैट्रिक्स में हुई. वहां विभाजन से पहले उनके परिवार का डिपार्टमेंटल स्टोर खूब चलता था. उस दौरान उन्होंने जेफरसन, वाल्तेयर, जुल्स वर्ने, ड्यूमा, ह्यूगो वगैरह को पढ़ा. उन्होंने 'मीन काफ' (हिटलर की आत्मकथा) का भी अध्ययन किया. दरअसल, किसी भारतीय द्वारा तानाशाही और फांसीवाद की सबसे तीखी खिल्ली उड़ाते हुए की गई समीक्षा और उसकी भर्त्सना आडवाणी की जेल डायरी 'ए प्रिजनर्स स्क्रैपबुक' में ही मिलती है जिसे उन्होंने इमरजेंसी में कैद के दौरान लिखा.

वाजपेयी के विपरीत वे कम बहिर्मुखी हैं. कई बार जब मैं मिला तो वे बातचीत टाल गए. वे अंतर्मुखी लगते हैं. वे आरएसएस के कट्टर कार्यकर्ता हैं"

एम. फारूकी

यह सही है कि उनके नेतृत्व में भाजपा का प्रसार हुआ है. कट्टर हिंदूवादी रुख अपनाकर पार्टी को लगता है कि वह राष्ट्रीय विकल्प का स्वरूप ले लेगी"

वसंत साठे

उन्होंने कभी हम पर धर्म, हिंदुत्व या कोई विचारधारा लादने की कोशिश नहीं की. उनका आग्रह सिर्फ पुस्तकों का रहा है और वह भी इसलिए कि उन्हें पढ़ने का शौक है"

प्रतिभा आडवाणी

लेकिन उन्हें सबसे प्रभावित करने वाली पुस्तक रही डेल कारनेगी की 'हाऊ टू विन फ्रैंड्स ऐंड इनफ्लुएंस पीपुल.' एक व्यक्ति जिसे वे अपना मित्र बना सके, वे हैं उनके जेल जीवन के साथी दंडवते. अलबत्ता वे उन्हें (दंडवते को) प्रभावित कर पाए या नहीं, यह बात अलग है. दंडवते याद करते हैं, "जेल में ही मुझे पता चला कि वे अच्छा मजाक भी कर लेते हैं. मेरे लिए यह सहमति का बिंदु था क्योंकि बिना हंसे मेरे लिए जेल जीवन असह्य हो जाता." उन्होंने मुझे अंग्रेजी के एक प्रोफेसर की कहानी बताई. एक दिन घर लौटकर प्रोफेसर साहब ने पाया कि उनकी बेटी एक पत्र रखकर कहीं चली गई है. पत्र में लिखा था, "मुझे अपने ड्राइवर से प्रेम हो गया है और उसके साथ भाग रही हूं." अपनी पत्नी की तरह प्रोफेसर भी चिंतित हो उठे. पर उनकी चिंता का कारण कुछ और था. उन्होंने कहा, "मैं अंग्रेजी का प्रोफेसर हूं और मेरी बेटी ने रनिंग के हिज्जे गलत लिखे हैं." वे इस कथा का इस्तेमाल कई राजनैतिक टिप्पणियों में करते हैं. जहां गैर-जरूरी पहलू पर ही जोर दिया जा रहा हो वहां उनकी यह टिप्पणी माकूल ठहरती है.

तो आडवाणी या उनकी पार्टी का व्यापक उद्देश्य क्या है? निस्संदेह आडवाणी अपनी पार्टी को मुख्यधारा में लाने में सफल रहे हैं, पहले के मुकाबले इसके हिंदूवादी रुझानों को उन्होंने बौद्धिक रूप से अधिक स्वीकार्य बनाया है और इसके जनाधार को चौड़ा किया है. लेकिन क्या यह पाश्चात्य धर्मनिरपेक्षता का उदारमना हिंदू विकल्प ही है?

जसवंत सिंह कहते हैं, "अगर आप सचमुच आडवाणी की तलाश कर रहे हैं तो आप उन्हें तब तक नहीं पा सकेंगे जब तक आप 'दक्षिणपंथी' और 'हिंदू कट्टरवादी' जैसे जुमलों से अपने को मुक्त नहीं कर लेते. दूसरा जुमला तो स्वतः विरोधाभासी है क्योंकि जिस हिंदू धर्म से उन्हें प्रेरणा मिलती है वह मूर्तिभंजक है और हर स्थापित चीज को चुनौती देने तथा प्रश्न करने को तत्पर रहता है." उनका कहना है कि वे लोग अपनी दिमागी काहिली से ग्रस्त हैं जो भाजपा के प्रगतिशील कदमों को नहीं देख पाते. मसलन, महिलाओं के खिलाफ अपराध के लिए कड़े प्रावधान,

काम के लिए अनाज, काम का अधिकार, खेतिहर भूमिहीनों का पुनर्वास वगैरह ऐसे कार्यक्रम हैं "जिनसे ज्योति बसु का सीना भी चौड़ा हो जाए."

इसके अलावा जसवंत सिंह की दलील है कि आडवाणी विचारों की उस धारा के प्रतिनिधि हैं जो नेहरूवादी विचारधारा की नींव को ही चुनौती देने को तत्पर है. चाहे वह केंद्रीय योजना का मामला हो या आर्थिक नियंत्रणों का या भाषावार राज्यों का गठन हो. या फिर धर्मनिरपेक्षता की 'गलत व्याख्या' पर आधारित धारणाएं हों. वे कहते हैं, "यूरोप और सोवियत संघ में जब बदलाव की बयार बह रही है तो हम उन दकियानूसी सिद्धांतों की धज्जियां उड़ाना चाहते हैं जिनसे आजादी के बाद हमारा देश दिग्भ्रमित हो गया है."

इन मुद्दों पर बोलते हुए आडवाणी किसी भारतीय राजनीतिक से अधिक स्पष्ट सूझ-बूझ का परिचय देते हैं. आर्थिक नियंत्रणों पर: व्यापक उदारता, लाइसेंस और परमिट का खात्मा. फेरा पर: प्रावधानों में रियायत. अर्थव्यवस्था की 'सीमाबंदी' पर: सरकार को नियंत्रण कम करना होगा. सार्वजनिक क्षेत्र पर: सरकार का काम होटल चलाना नहीं है; एअरलाइंस, टेलीफोन और दूसरी सार्वजनिक सेवाओं में निजी क्षेत्र के प्रवेश को मंजूरी दी जानी चाहिए. बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर: आंख मूंदकर प्रश्रय न दिया जाए बल्कि लघु तकनीकी क्षेत्रों में उनकी भूमिका सीमित रखी जाए. विकेंद्रीकरण पर: राज्यों को अधिक आर्थिक अधिकार मिलने चाहिए और उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्यों को प्रशासकीय सुविधा के अनुसार विभाजित करना चाहिए.

बहरहाल, आडवाणी और भारतीय जनता पार्टी का यह वह पहलू है जिसे इस देश की जनता शायद अपनी दिमागी काहिली की वजह से या शायद पार्टी नेताओं के हिंदू हितों के मामलों को सूलझाने में व्यस्त रहने की वजह से, लगता है आसानी से पचा नहीं पा रही है. लेकिन ये पहलू बहुत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इन्हीं से पार्टी के बारे में प्रचलित मान्यता की जगह नई प्रतिमा गढ़ी जाएगी.

और आगे आने वाले वर्षों में आडवाणी के सामने चुनौती यही दर्शाने की होगी कि उनकी पार्टी कार्यक्रमों और नीतियों यानी हर मायने में वर्षों से देश की राजनीति की पहचान बन चुके राजनैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आलस्य का सही देसी विकल्प है. शायद तभी सैकड़ों कमल खिल सकेंगे और शायद तभी विचार की सैकड़ों धाराएं भी फूट सकेंगी.

—इंद्रजीत बधवार

भारतीय जनता पार्टी

बढ़ता बाहुबल

सफलता हिंदू लहर से नहीं, संगठन के बूते पर

केसरिया रंग अब संन्यास या त्याग का प्रतीक भर नहीं रह गया है बल्कि अपनी हैसियत जताने का प्रतीक बन गया है. और यह रंग भारतीय परिदृश्य के दूसरे रंगों को मात भी करने लगा है. अरसे तक दक्षिणपंथ के दायरों में सिमटी रहने के बाद भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) लोकसभा की 86 और विधानसभाओं की 556 सीटें जीतकर भारतीय राजनीति में सशक्त रूप से उभर आई है.

पार्टी की सफलता इसलिए अहम हो उठी है क्योंकि इसे अब सत्ता पर एकाधिकार किए बैठी मध्यमार्गी पार्टियों के विकल्प के रूप में देखा जाने लगा है. एक जमाना था जब कांग्रेस (इ) का कोई ताकतवर विकल्प नहीं था और इसी के बूते वह सत्ता में टिकी हुई थी. लेकिन मतदाताओं के सामने अब और भी कई रास्ते खुल गए हैं. इंका तो बस दम साधे इस प्रतीक्षा में है कि जनता दल के नेता कब 1977-79 की अंतरकलह फिर से शुरू करें और उसे मौका मिले. लेकिन इंका में भी अगर योग्य नेतृत्व के अभाव में बिखराव हो जाता है, जैसी कि कई लोगों की राय है, तो उस हालत में विकल्प भाजपा ही होगी.

भाजपा नेतृत्व ने इतना तो स्पष्ट कर ही दिया है कि पार्टी अगले आम चुनावों में केंद्र में सत्ता हासिल करने का भरपूर प्रयास करेगी. पार्टी के इस आत्मविश्वास का कारण भी है. फरवरी में हुए विधानसभा चुनावों में भाजपा का प्रदर्शन इंका और जनता दल के मुकाबले बेहतर रहा. जिन राज्यों में इस बार चुनाव हुआ उनमें इंका सत्ता में थी. बावजूद इसके, उसे 1,559 सीटों पर लड़कर 417 सीटें ही मिलीं, जबकि भाजपा ने 1,000 से कुछ ज्यादा सीटों पर लड़कर 498 सीटें जीत लीं. 1985 के विधानसभा चुनावों में दोनों पार्टियों की स्थिति की तुलना करने पर जाहिर है कि भाजपा को इस बार 350 सीटों का फायदा हुआ जबकि इंका 664 सीटों के नुकसान में रही. मध्य प्रदेश और हिमाचल प्रदेश में भाजपा ने पहली बार अपने बूते सरकार बनाई और राजस्थान तथा गुजरात में पार्टी जनता दल के साथ सरकार में शामिल है. इसके साथ ही बिहार में जनता दल सरकार के लिए भाजपा का समर्थन बहुत महत्वपूर्ण बन गया है.

हाल के चुनावों से यह भी

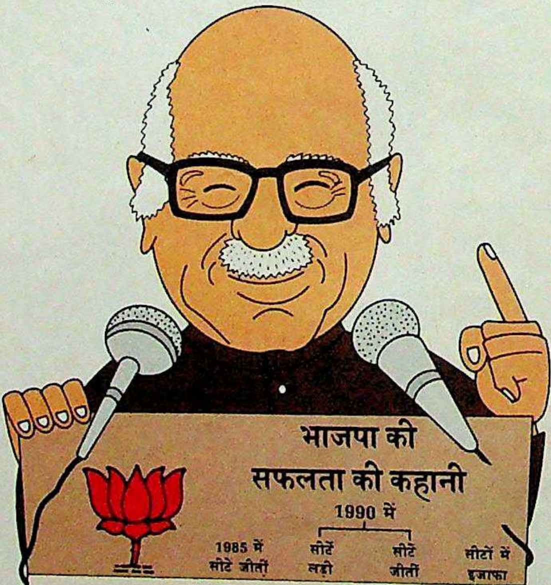

भाजपा की सफलता की कहानी

	1985 में सीटें जीतीं	1990 में सीटें लड़ी	1990 में सीटें जीतीं	सीटों में इजाफा
बिहार	17	239	39	22
गुजरात	16	143	67	51
हिमाचल प्रदेश	7	51	44	37
मध्य प्रदेश	58	269	219	161
महाराष्ट्र	16	105	42	26
ओडीसा	1	62	2	1
पांडिचेरी	–	8	0	0
राजस्थान	37	128	85	48
कुल	152	1,005	498	346

चार्ट: बी.के. शर्मा

…ित विज्ञापन निगम द्वारा फ्री प्रेस जर्नल और महाराष्ट्र टाइम्स में दि. २६-७-८९ को प्रकाशित वैधानिक विज्ञापन के पश्चात दिया जा रहा है. गैर बैंकिंग वित्तीय कम्पनीज़ तथा विविध गैर बैंकिंग …(विज्ञापन) नियमों, १९७७ के नियम ३ के अन्तर्गत वांछित सभी विवरण आवेदन पत्र में दिए गए हैं.

एच·डी·एफ·सी

डिपॉजिट्स

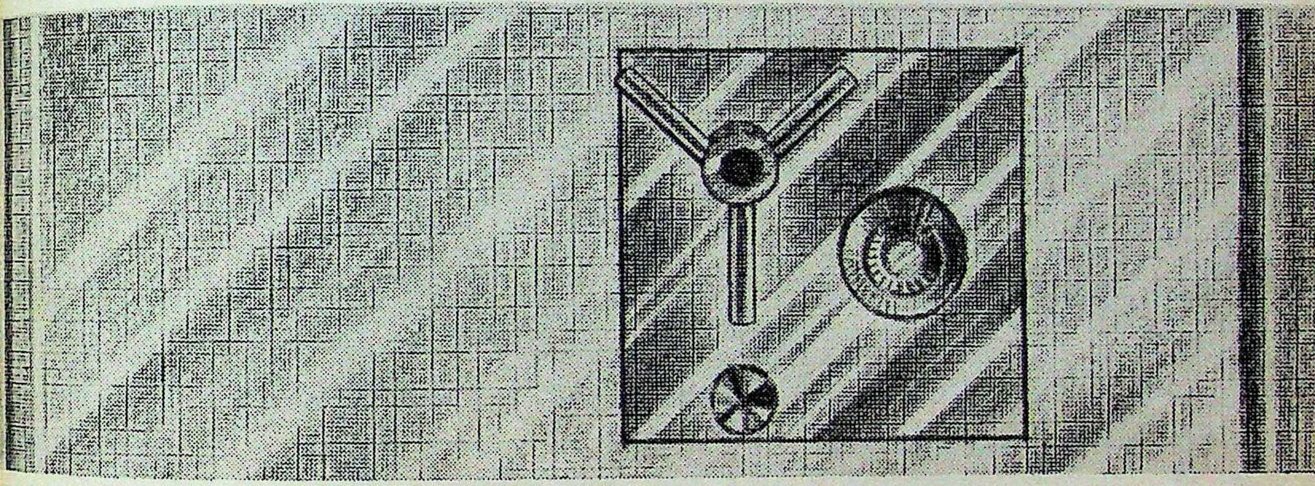

सम्पूर्ण सुरक्षा

दस वर्षों के अनुभव और रु.५५० करोड़ से अधिक की जमाराशियों के साथ एच डी एफ सी देश में जमा स्वीकार करने वाली एक प्रमुख संस्था है. इस स्थान पर इसे पहुंचाया है इसके उत्तम कार्य परिणामों ने और सुरक्षा के उस भरोसे ने जो यह जमाकर्त्ताओं को दिलाता है.

हमारी जमा योजनाओं में क्युम्युलेटिव और नॉन-क्युम्युलेटिव दोनों विकल्प हैं, २५ से ८४ माह की परिपक्वता अवधियां हैं, १२.५ % तक की ब्याज दरें हैं और वे धारा ८० एल के अन्तर्गत आयकर में रु.१०,००० प्रति वर्ष तक की छूट भी दिलाती हैं. अधिक जानकारी के लिए इस कूपन को नीचे दिए गए हमारे कार्यालयों में से किसी को भी भेजिए.

कृपया मुझे एच डी एफ सी सी डी/सी आई योजनाओं पर मुफ़्त पुस्तिका भेजिए

नाम : ____________________

पता : ____________________

D/ITH

सीडी एवं सीआई

(सर्टिफिकेट ऑफ डिपॉजिट) (क्युम्युलेटिव इण्ट्रेस्ट)

योजनाएं

एच·डी·एफ·सी

हाउसिंग डेवलपमेण्ट फाइनेंस कॉर्पोरेशन लिमिटेड

पंजी. कार्यालयः बम्बई

ADROIT-235/89 Hin

…: एच डी एफ सी हाउस, बी-६/३ सफदर जंग एन्क्लेव, डी डी ए कमर्शियल कॉम्पलेक्स, (डीयर पार्क के सामने), नई दिल्ली ११००२९. फोनः ६०३१४६, ६०३१४७ **लखनऊः** कोहली हाउस, ४-ई, रामतीर्थ …ऑफिस न. ३९४, लखनऊ २२६००१. फोनः ३५०५५, [illegible] **चण्डीगढ़ः** [illegible] सेक्टर २२-बी, चण्डीगढ़ १६००२२. फोनः २४८४३. **जयपुरः** सी-९६, जगन …पथ मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर ३०२ ००१. फोनः ७७५५७. **इन्दौरः** ९/१/१, एम.जी.रोड, निकट फिल एण्ड फ्लाई पेट्रोल पम्प, इन्दौर ४५२००१, फोनः ७७८४, ७३७६.

भवान सिंह

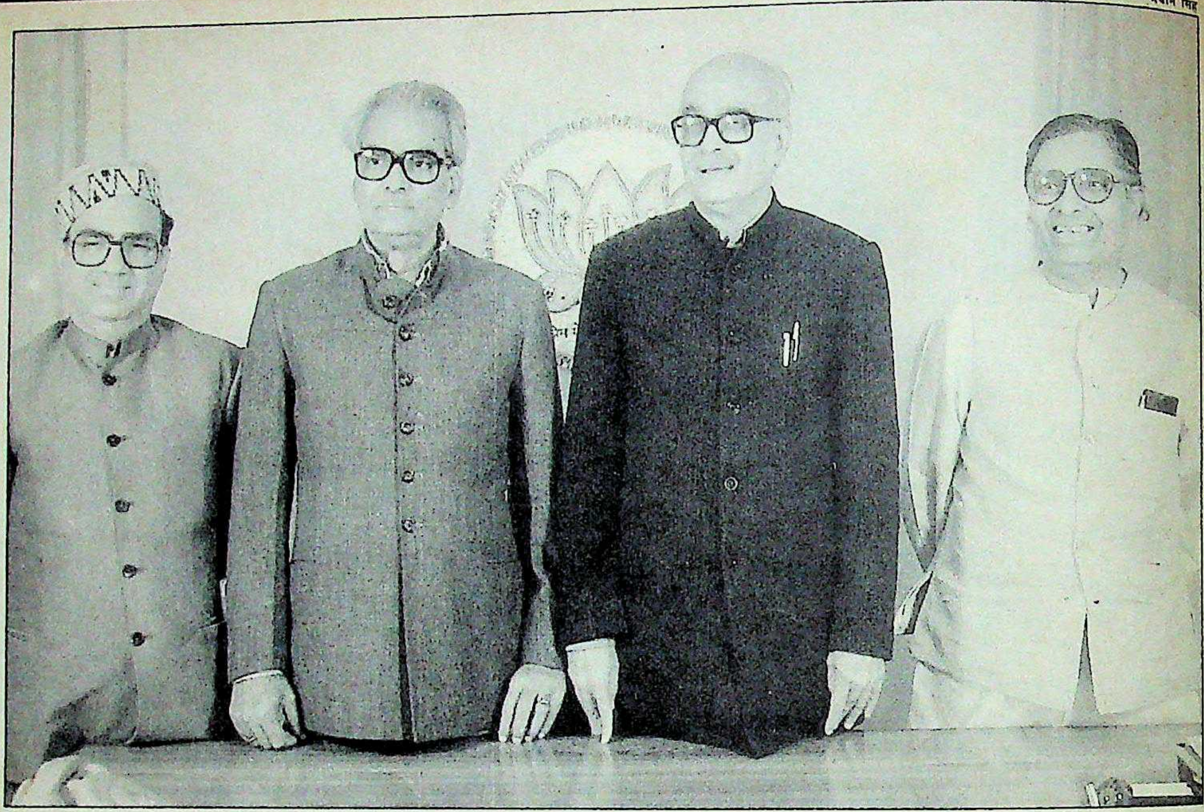

(बाएं से) शांता कुमार, शेखावत, आडवाणी और पटवा: संगठन सुख

स्पष्ट है कि उत्तर और पश्चिम में शक्ति का केंद्र बनने के साथ-साथ पार्टी ने पूरब में भी अपनी पहचान बनाई है. बिहार में इसे 39 सीटें मिलीं और ओडीसा में जनता दल की लहर के बावजूद पार्टी दो सीटें ले गई. नवंबर के आम चुनावों में मार्क्सवादियों के गढ़ पश्चिम बंगाल में भी इसके प्रदर्शन में महत्वपूर्ण सुधार हुआ. और अगर भाजपा की नवगठित राज्य सरकारें अपना कामकाज सुचारू रूप से चला लेती हैं तो विकल्प देने के इसके दावे को और बल मिलेगा.

कार्यकर्ता आधारित पार्टी होने के नाते यह अपने चुनावी फायदों को स्थायी और ठोस आधार देने के लिए काम कर सकती है. तब इसे हर चुनाव के समय हवा या लहर पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं रहेगी. तो क्या भाजपा इस मिथक को तोड़ सकती है कि केवल मध्यमार्गी दल ही भारत पर शासन कर सकते हैं? वैसे यह कहा जाता रहा है कि यह देश इतना विविध है कि कोई दक्षिणपंथी पार्टी शासन में नहीं आ सकती और परंपरा की नींव भी यहां इतनी गहरी है कि वामपंथियों को वैसी व्यापक स्वीकृति मिल ही नहीं सकती.

ये कुछ ऐसे दिलचस्प सवाल हैं जिनके निश्चित जवाब नहीं दिए जा सकते. लेकिन मध्यमार्गी पार्टियों में खतरे की घंटी बज चुकी है. इंका के महासचिव गुलाम नबी आजाद कहते हैं, "दूसरे राजनैतिक दलों की बनिस्बत भाजपा के उभरने से भारत के धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक स्वरूप को ज्यादा खतरा उत्पन्न हो गया है." और वसंत साठे जैसे दूसरे वरिष्ठ कांग्रेसी "मुसलमान और हरिजन कट्टरपंथियों के उदय को भाजपा के उग्र रवैये की प्रतिक्रिया" मानते हैं.

वास्तविकता यह है कि जब मतदाता विकल्प की खोज करने लगा तब देश के कई भागों में जनता दल के पास वह संगठनात्मक ताकत नहीं थी जिससे इंका विरोधी माहौल को वोटों में बदला जा सके. भाजपा ने इसी कमी को पूरा किया.

इस बार पार्टी की विजय इस कारण भी ज्यादा प्रभावी हो उठी है क्योंकि हिंदुत्व का उफान पहले जैसा नहीं रह गया था. यानी पार्टी ने तीव्र हिंदू लहर के बिना ऐसी सफलता हासिल की. आठ राज्यों में चुनाव के पहले ही अयोध्या का मामला ठंडा पड़ चुका था. सो, शिलान्यास और यज्ञों की अनुपस्थिति में, हिंदू धर्म का बाना ओढ़ने वाली पार्टी को इतने वोट नहीं मिलने चाहिए थे. आडवाणी के अनुसार, "लोकसभा चुनावों के तुरंत बाद हमारी सफलता को हिंदू पुनर्जागरण का परिणाम कहा जा रहा था. लेकिन विधानसभा चुनावों में राम जन्मभूमि कोई मुद्दा नहीं था. भाजपा को यह सफलता मजबूत संगठन और अलग पहचान के कारण मिली है."

राजस्थान और गुजरात में वी.पी. सिंह के चुनावी दौरों को मिला जोरदार समर्थन चुनाव के नतीजों में देखने को नहीं मिला. इंका के वोट बैंक से जो वोट सीधे जनता दल को जाने वाले थे, वे भाजपा और जनता दल में बंट गए. अगर नवंबर में भाजपा का बेहतर प्रदर्शन केवल हिंदू धार्मिक भावनाओं के कारण होता तो विधानसभा चुनाव में उसकी सफलता की दर कम हो जानी चाहिए थी. लेकिन लगता है उसे मध्यमार्गियों के पक्ष का बड़ा भाग भी मिला.

अगर भाजपा देश पर शासन करना चाहती है तो उसे साबित करना होगा कि वह कोई कमतर बुराई नहीं बल्कि बेहतर विकल्प है. इंका और जनता दल की तुलना में भाजपा अनुशासित दल है. मध्य प्रदेश में कैलाश जोशी ने बगावत के तेवर भले ही दिखाएं हों लेकिन ऐसा रुख पार्टी पर ज्यादा असर नहीं डाल सकता. पार्टी यदि दिल्ली के तख्त पर आसीन होने की उम्मीद रखती है तो इसे अपने को और व्यापक बनाना होगा. साफ है कि भाजपा की जीत सिर्फ हिंदू पुनरुत्थान का नतीजा नहीं. पार्टी को अब हिंदू कार्ड का कम से कम इस्तेमाल कर मध्यमार्गी रुख अपनाना होगा. —भास्कर राय

साठ साल के बूढ़े या साठ साल के जवान?

देखा आपने? ६० साल की उम्र में भी कितनी शक्ति, कितनी स्फूर्ति! जबकि आप अभी ३० ही के हैं फिर भी थकान महसूस करते हैं. क्यों?

इसका जवाब है - केसरी जीवन.

हर दिन, दिन में दो बार दो चम्मच.

ज़ाफ़रान (केसर) - अनमोल तत्व!

केसरी जीवन की बोतल खोलिए... दुनिया की सबसे महँगी जड़ी-बूटी असली ज़ाफ़रान की खुश्बू आपका स्वागत करेगी... कश्मीर की वादियों से चुना गया ज़ाफ़रान.

केसरी जीवन में ज़ाफ़रान के आरोग्यकर और सौन्दर्यवर्धक गुणों के साथ ताज़ा आंवला व अन्य अनेक जड़ी-बूटियों भी तो हैं जो शरीरगठन मज़बूत बनाएं, शरीर के टिशूज़ को वृद्धावस्था में भी चुस्त रखें, तेज़ रफ़्तार ज़िंदगी के तनावों से मुक्त रखने में सहायक हों और बीमारियों से मुकाबला करने की शक्ति दें.

ज़िंदगीभर सेहत का अनमोल रत्न आप भी पाइए. जीभर कर जीने की तरो-ताज़गी महसूस कीजिए.

झंडु केसरी जीवन

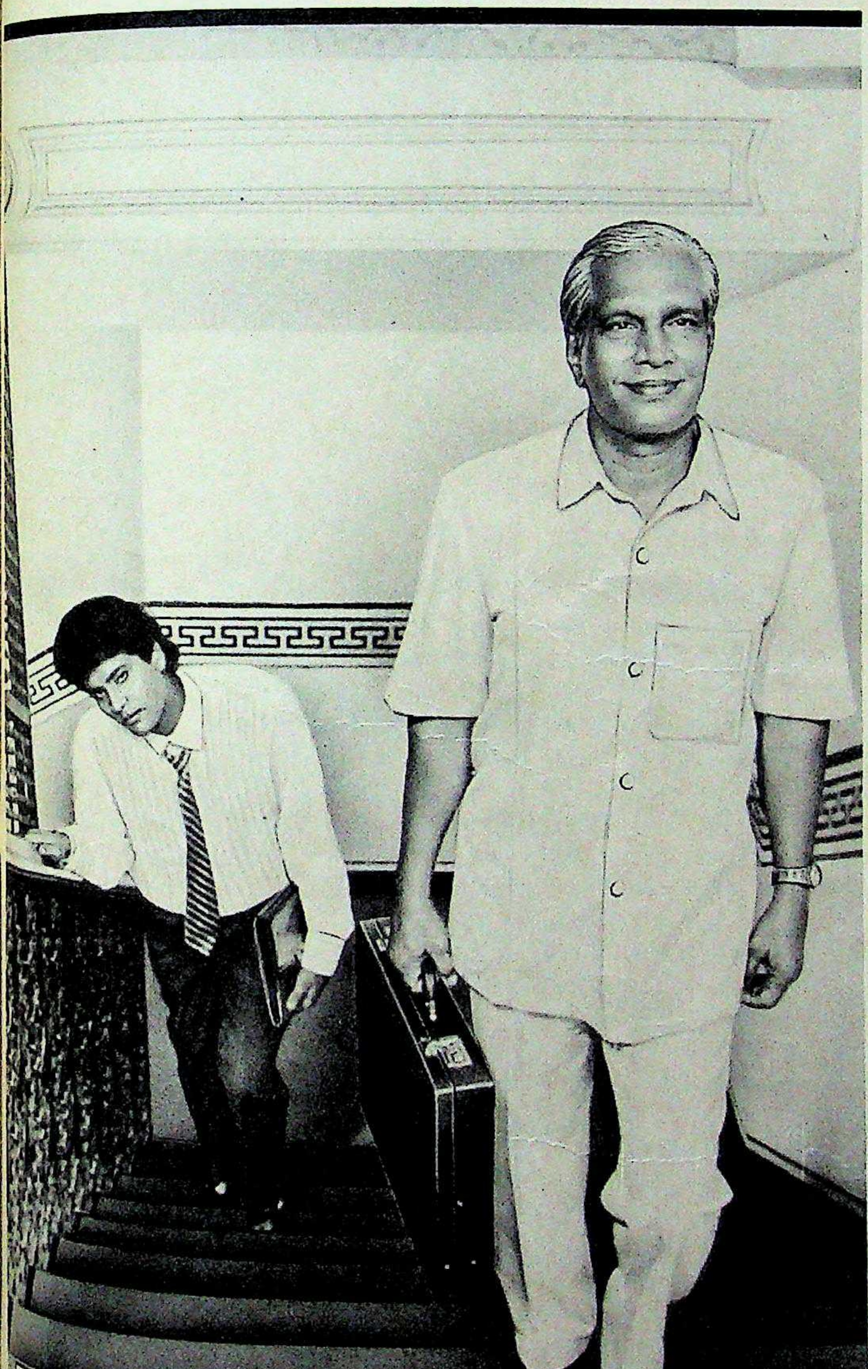

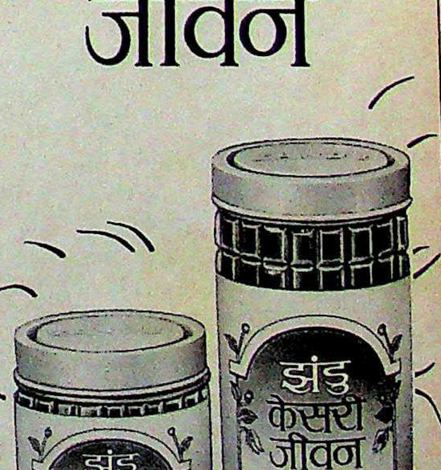

रग रग में जान - ज़िन्दगी की शान

…ON/B/ZP/21/254 HIN

ओमप्रकाश चौटाला

आफत को बुलावा

मतदान के दौरान भारी धांधली और हिंसा से मुख्यमंत्री का भविष्य अंधेरे में

बमुश्किल तीन महीने हुए होंगे जब ओमप्रकाश चौटाला मतदाताओं को अपनी जेब में समझते थे. परिवारवाद और वंशानुगत शासन के बल पर ही सही, हरियाणा का मुख्यमंत्री बनने की उनकी पुरानी हसरत तो पूरी हो ही गई थी.

लेकिन दो दिनों में जो खून-खराबा हुआ उसने न केवल देश के चुनावी इतिहास को बदरंग किया बल्कि चौटाला के लिए सब कुछ उलटकर रख दिया. उनके सिंहासन की चूलें हिल गई. इससे भी महत्वपूर्ण बात यह कि महम में हुई 'महा-मारी' से उनका राजनैतिक अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है.

इसके लिए कोई और नहीं, बल्कि खुद वे ही दोषी हैं. दरअसल, महम के गांवों में बंदूकधारी गुंडों की अगुआई करते हुए वे खुद अपने ही राजनैतिक भविष्य से खिलवाड़ कर रहे थे. कुख्यात ग्रीन ब्रिगेड ने न केवल मतपेटियों में फर्जी वोट डाले और मतदान केंद्रों पर कब्जा किया बल्कि 36 साल के एक राजनैतिक कैरियर को भी नष्ट कर दिया. हालांकि महम उपचुनाव को रद्द करने के चुनाव आयोग के फैसले से चौटाला को थोड़ी राहत जरूर मिली है. उनके प्रतिद्वंद्वी आनंद सिंह डांगी कहते हैं, ''चुनाव आयोग के फैसले से उन्हें नया जीवन मिल गया है.''

चौटाला अब चाहें तो महम सीट से दोबारा चुनाव नहीं भी लड़ सकते हैं. उनके विरोधियों को आशंका भी है कि वे किसी सुरक्षित निर्वाचन क्षेत्र से लड़ेंगे और जरूरत पड़ी तो किसी मौजूदा विधायक से इस्तीफा भी दिलवाया जा सकता है. उन्हें हर हालत में मई के अंत तक चुनाव लड़ना है, वरना मुख्यमंत्री पद से हटना पड़ेगा. उधर, चौटाला दूसरी बात कहते हैं, ''मैं महम से ही चुनाव लड़ूंगा. मैं जंग के मैदान से भागने वालों में

देवीलाल

'यह पूंजीपतियों का रचा षड्यंत्र था'

*उप-प्रधानमंत्री देवीलाल ने वरिष्ठ संवाददाता **हरिंदर बवेजा** के साथ दिल्ली के हरियाणा भवन में हुई बातचीत में अपने पुत्र ओमप्रकाश चौटाला का पक्ष लिया. भेंटवार्ता के कुछ अंश:*

● ***आपने अपने बेटे को इस्तीफे के लिए क्यों नहीं कहा?***

वह क्यों इस्तीफा दे? उसका क्या कसूर है? राजीव गांधी, आर.के. धवन और भजनलाल सहित बिड़ला, गोयनका और अंबानी परिवार के लोगों ने बहुत बड़ा षड्यंत्र रचा था. उनकी योजना मुझे तबाह करने की थी. मुझ जैसा ग्रामीण और जनाधार वाला नेता पूंजीपतियों के लिए बड़ा खतरा है. मेरे विरोधी इसलिए खौफजदा हैं क्योंकि मैं जमीन की हदबंदी के लिए भरपूर जोर लगा रहा हूं.

● ***आपकी पार्टी के वरिष्ठ नेता चौटाला के इस्तीफे के पक्ष में थे. लेकिन आप अपने बेटे का पक्ष लेते रहे हैं.***

मैं वी.पी. सिंह का पक्का समर्थक हूं. यह खेल तो मुझे निशाना बनाकर प्रधानमंत्री को कमजोर करने का था. पूंजीपति मेरे और ओमप्रकाश के जरिए वी.पी. सिंह का शिकार करना चाहते हैं. अगर मैं उन्हें न बचाऊं तो कौन बचाएगा? अरुण नेहरू, मुफ्ती या वह जॉर्ज फर्नांडीस, जिसका नाम ही इतना लंबा है?

● ***षड्यंत्र संबंधी आपकी दलील तो राजनैतिक मामलों की समिति की बैठक में ही फुस कर दी गई. मतदान में गड़बड़ी की घटनाओं में खुद चौटाला के शामिल होने के चित्र सबूत के रूप में मौजूद हैं, यह बताए जाने पर आप चुप्पी साध गए थे.***

मैंने इंदिरा गांधी के आगे हथियार नहीं डाले. दूसरों की क्या औकात है?

● ***चौटाला को हटाया गया तो इस्तीफा दे देंगे, क्या ऐसी धमकी आपने दी थी?***

यह गलत है. मैंने विधानसभा भंग करने का सुझाव जरूर दिया पर मेरी ही पार्टी ने कहा कि राज्य में फिर से चुनाव करवाकर हरियाणा के लोगों को तकलीफ देना उचित नहीं होगा.

● ***आडवाणी और वाजपेयी जैसे वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने चौटाला के इस्तीफे की मांग की है.***

वे अखबारी खबरों से प्रभावित हो गए.

● ***अगर भाजपा हरियाणा सरकार से समर्थन वापस ले ले तो?***

फिर क्या होगा. मैं बुजदिल नहीं कि दबाव में आ जाऊं. आखिर महम को लेकर इतना हो-हल्ला क्यों हो रहा है. बिहार के बारे में कोई क्यों नहीं बोलता, जहां चुनावी हिंसा में 80 लोग मारे गए?

● ***आपके बेटे रणजीत सिंह ने भी तो मंत्रिमंडल से इस्तीफा दे दिया.***

वह षड्यंत्रकारियों से मिला हुआ था और धवन जैसे लोगों से सलाह लेता रहा है. उसने सोचा मुख्यमंत्री बन जाएगा.

● ***आप पर पारिवारिक शासन को बढ़ावा देने का भी आरोप है. हाल के विधानसभा चुनावों में आपने जबरदस्ती चौटाला के बेटे अजय सिंह को राजस्थान में टिकट दिलाया.***

टिकट लोगों के कहने पर दिया गया, मेरे दबाव से नहीं. जिन लोगों को भी मैंने टिकट दिलाया, वे सभी जीत गए. नाथूराम मिर्धा का बेटा तो हार भी गया. फिर, मिर्धा पर ऐसा आरोप क्यों नहीं लगाया जा रहा है?

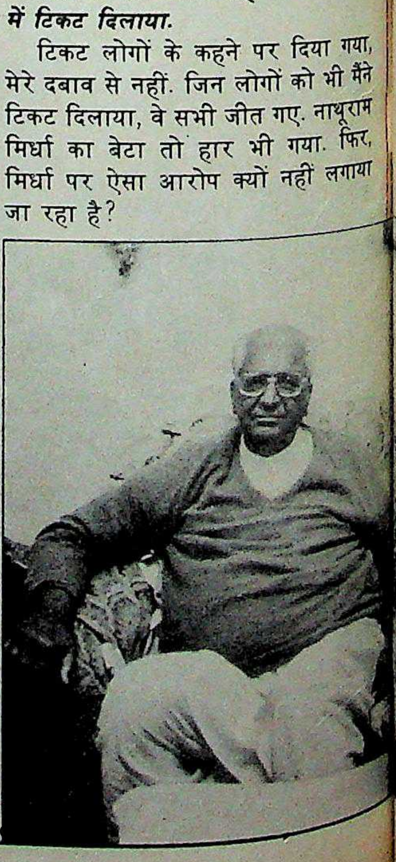

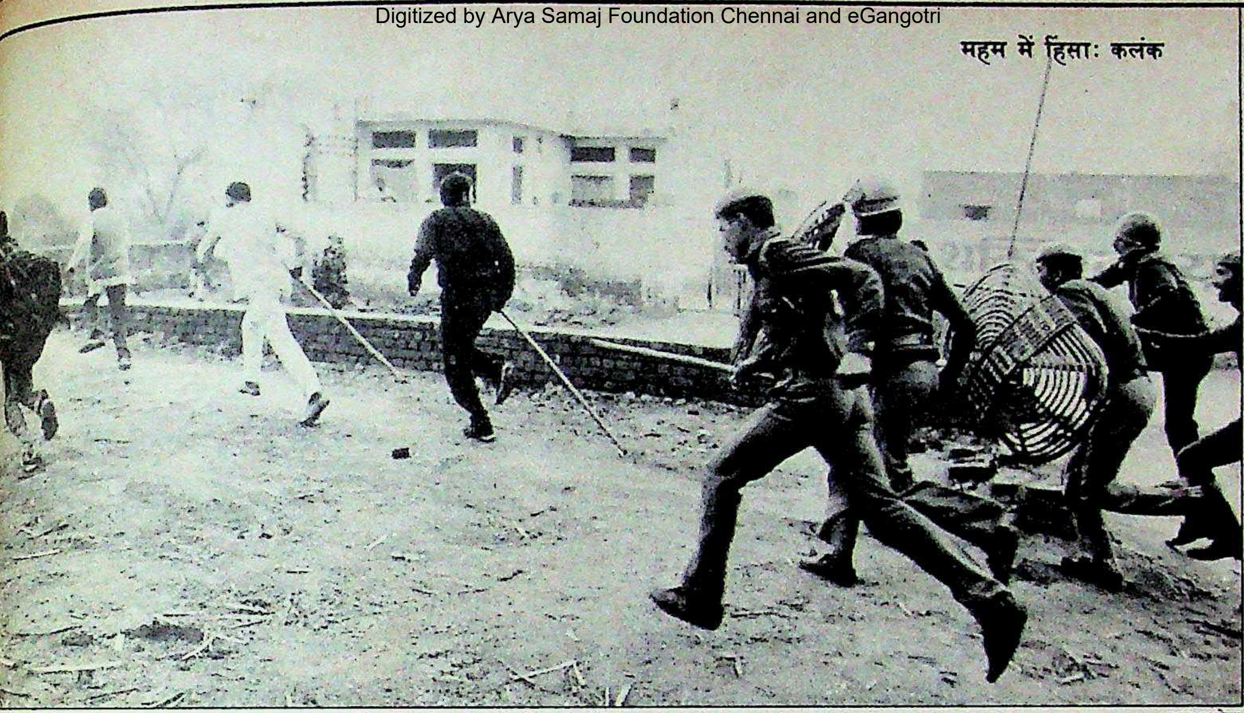

महम में हिंसाः कलंक

शरद सक्सेना

ओमप्रकाश चौटाला

'मैदान से भागने वालों में नहीं हूं'

महम उपचुनाव में गड़बड़ कराने के आरोप पर इस्तीफे की व्यापक मांग को टालते जा रहे हरियाणा के मुख्यमंत्री ओमप्रकाश चौटाला अपने राजनैतिक अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं. चंडीगढ़ के अपने सरकारी निवास में चौटाला ने जब वरिष्ठ संवाददाता ***हरिंदर बवेजा*** *से बात की तो वे काफी परेशान दिख रहे थे.*

● ***अब आपके लिए महम से ही चुनाव लड़ने की अनिवार्यता नहीं रह गई है, तो आप कोई अधिक सुरक्षित सीट खोजेंगे?***

प्रमोद पुष्करणा

मैं महम से ही चुनाव लड़ूंगा. ओमप्रकाश चौटाला जंग के मैदान से भागता नहीं, दूसरों को खदेड़ता है. इस बार भी मैं कम-से-कम 25000 मतों से जीतता.

● ***मतदान के दौरान गड़बड़ी और हिंसा के बारे में आप क्या कहेंगे?***

हिंसा और बेकसूरों की मौत के लिए चुनाव आयोग ही जिम्मेदार है. 27 फरवरी को तो शांतिपूर्वक मतदान हो ही गया था. लेकिन चुनाव आयोग के केंद्रीय पर्यवेक्षक रंजन ने आठ मतदान केंद्रों पर दोबारा मतदान के आदेश दिए. इसलिए उन्हें ही जिम्मेवार माना जाना चाहिए.

● ***कई पत्रकार चश्मदीद गवाह हैं कि 27 फरवरी को ग्रीन ब्रिगेड के लोग बूथों पर कब्जा करने में शामिल थे.***

सब बकवास है. कोई गड़बड़ी नहीं की गई थी. प्रेसवाले मुझे और चौधरी देवीलाल को बदनाम करने की साजिश में शरीक हैं. यह साजिश पूंजीपतियों, कांग्रेसियों और हमारी पार्टी के ही कुछ लोगों ने रची है.

● ***आप बैंसी में हुई हिंसा का दोष डांगी के समर्थकों को देते हैं जबकि आपके पुत्र अभय सिंह मतदान केंद्र पर कब्जा करने वाले गिरोह के अगुआ थे.***

चुनाव आयोग को बैंसी की मतपेटियां खोलने दीजिए. अगर उसमें एक भी मतपत्र पर चक्र के ऊपर मुहर लगी मिलेगी तो मैं तुरंत इस्तीफा दे दूंगा. अभय 28 तारीख को बैंसी गया ही नहीं था.

● ***आप अपनी छवि सुधारने भर के लिए ही सही, इस्तीफा क्यों नहीं दे देते?***

मैं षड्यंत्रकारियों की मदद क्यों करूं? मेरी पार्टी के 49 विधायकों में से 44 मेरे साथ हैं. जनता मेरे साथ है.

● ***भाजपा और जनता दल नेता भी इस्तीफे की मांग कर रहे हैं.***

वे अखबार की बेबुनियाद खबरों के आधार पर इस्तीफा मांग रहे हैं.

● ***आप केंद्र में बैठी अपनी पार्टी की सरकार के लिए मुश्किल बने हुए हैं. मूल्य आधारित राजनीति की उनकी प्रतिबद्धता पर यह कलंक जैसा है.***

मैं पार्टी का एक सिपाही हूं और प्रधानमंत्री की आज्ञा का पालन अपना कर्तव्य समझता हूं. अगर उनकी या पार्टी की छवि खराब हो रही है तो मेरा इस्तीफा तो छोटी चीज है. मैं तो पार्टी के लिए जीवन कुरबान करने को तैयार हूं.

● ***विधानसभा भंग करके राज्य में चुनाव कराने की मांग करके आप अपने ऊपर लगे आरोपों को धो डालने की नहीं सोच रहे?***

ऐसा क्यों करूं? जानता हूं कि लोग मेरे साथ हैं. अब जबकि घर में बैठा जयचंद मंत्रिमंडल से निकल गया है, मेरे पास स्वच्छ प्रशासन देने तथा राज्य का विकास करने का बढ़िया अवसर है.

"नहीं हूं. मैं तो दूसरों को भगाने वालों में से हूं."

चंडीगढ़ में 8 मार्च को हरियाणा जनता दल के कार्यकर्ताओं की बैठक में मुख्यमंत्री इसी भाषा में बोले, "ओमप्रकाश चौटाला हार का अर्थ नहीं जानता. मैं हार को जीत में बदलना जानता हूं."

उनकी इस हेठी की वजह 27 और 28 फरवरी को महम में हुई घटनाओं में खोजी जा सकती है. उनके बेटे अभय सिह के नेतृत्व में उनके समर्थक एक बूथ से दूसरे बूथ पर गए, मतदाताओं को डराया-धमकाया और डांगी के पोलिंग एजेंटों को आतंकित किया. इस काम में उन्होंने वरिष्ठ डीआईजी और एसएसपी की भी मदद ली. उन्होंने डांगी समर्थक होने का स्वांग भी रचा.

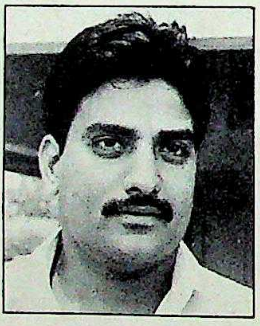

महम के मतदाता जिन्हें वोट नहीं डालने दिया गया (ऊपर); अभय सिंह (बाएं); और अभय सिंह का जैकेट लिये डांगी

लेकिन उन्होंने उन मतपत्रों को छिपाने की कोई कोशिश नहीं की जिस पर उन्होंने जनता दल के चिह्न पर धड़ाधड़ मुहर लगाई थी. पूर्व लोकदल विधायक किताब सिंह मलिक कहते हैं, "डीआईजी ने यह स्वीकार करने का दुस्साहस किया कि ताऊ की इज्जत बचाने के लिए उन्होंने बड़े पैमाने पर धांधली की."

> **अभय सिंह और उनके समर्थकों ने पुलिस की मदद से बूथ पर बूथ लूटे लेकिन लोगों को गुमराह करने के लिए डांगी समर्थक नारे लगाए**

लेकिन उलटे इससे ताऊ की इज्जत ही दांव पर लग गई है. जनता दल की राजनैतिक मामलों की समिति की बैठक में चौटाला के पिता और उप-प्रधानमंत्री देवीलाल की खूब खिंचाई हुई. अजीत सिंह, जॉर्ज फर्नांडीस, मधु दंडवते और नाथूराम मिर्धा वाला मुखर गुट इस बात पर जोर दे रहा था कि चौटाला से इस्तीफा देने के लिए कहा जाए. एक वरिष्ठ मंत्री ने टिप्पणी की, "जनता दल की विजय की शुरुआत हरियाणा से हुई थी. ऐसा न हो कि हमारी पराजय की शुरुआत भी वहीं से हो." चौटाला के एकमात्र समर्थक उनके पिता देवीलाल ने खास अंदाज में बताया कि किस तरह बिड़ला, गोयनका और अंबानी के अखबारों ने उनकी और सरकार की

वि मलिन करने के लिए षड्यंत्र रचा. होंने बाद में 'इंडिया टुडे' से कहा, ''वी.पी. ह पर बंदूक चलाने के लिए वे मेरा तेमाल कर रहे हैं.'' (देखें बातचीत).

उधर, प्रधानमंत्री अर्थपूर्ण चुप्पी साधे हुए लेकिन चूंकि केंद्र और हरियाणा की रकारों को समर्थन देने वाली भाजपा टाला के इस्तीफे पर अड़ी हुई है, सो वे इस े को टाल नहीं सकते.

यह तथ्य भी गौरतलब है कि जनता दल रूनी विद्रोह का झटका सहने की स्थिति में ी है. मंत्रिमंडल के एक वरिष्ठ सदस्य कहते े हैं, ''मौजूदा स्थिति में यदि कोई बड़ा वाद उठा तो वह वी.पी. सिंह या पार्टी के ए भारी ही पड़ेगा, खास तौर पर इसलिए क देवीलाल ने गुपचुप यह धमकी दी है कि दि उनके बेटे पर हाथ डाला गया तो वे स्तीफा दे देंगे.'' चिंता की बात यह भी है कि देवीलाल ने वी.पी. सिंह के कट्टर विरोधी द्रशेखर से फिर हाथ मिला लिया है.

देवीलाल-चंद्रशेखर सांठगांठ से अजीत ह और जॉर्ज फर्नांडीस और भी नाराज हो ए. अजीत सिंह, मधु दंडवते, फर्नांडीस, वंत सिन्हा और शरद यादव वाली पांच स्यीय उप-समिति एक अलग बैठक में इस ीजे पर पहुंची कि चौटाला को हर हालत इस्तीफा दे देना चाहिए.

दवाव उस समय और भी बढ गया जब रियाणा इंका अध्यक्ष शमशेर सिंह सुरजोला ने प्रधानमंत्री को एक ज्ञापन दिया जिसमें चौटाला को 'बेकसूर लोगों की हत्या' के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है. ज्ञापन में मांग की गई कि चौटाला को बरखास्त कर उनके चुनाव लड़ने पर अगले छह साल तक के लिए रोक लगा दी जाए.

इस्तीफे की जोर पकडती मांग के मद्देनजर चौटाला नुकसान की भरपाई में लगे हैं. उन्होंने राज्य के जनता दल विधायकों की जल्दबाजी में बैठक बुलाई जिसमें मात्र 44 विधायकों ने उनमें अपनी आस्था 'व्यक्त की'.

लेकिन यह आस्था भ्रामक साबित हो सकती है, क्योंकि इनमें से ज्यादातर विधायक चौटाला के भाई और उनके कट्टर विरोधी रणजीत सिंह के वफादार हैं. मंत्रिमंडल से इस्तीफा देने के बाद से रणजीत नई दिल्ली में पूर्व राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह के घर पर डेरा डाले हुए हैं. वे कहते हैं, मैं राजनीति का अपराधीकरण करने वाले व्यक्ति की सरकार में नहीं रह सकता.''

चुनाव आयोग ने महम उपचुनाव को रद्द करते हुए हरियाणा सरकार को निर्देश दिया है कि महम में पुलिस की भूमिका, और स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनाव कराने में सरकारी मशीनरी की विफलता की जांच कराए.

लेकिन विडंबना तो यह है कि बूथों पर कब्जे में अभय सिंह की खुलेआम मदद करने वाले पुलिस अधिकारी अब गुस्से में उबल रहे हैं. उनका मानना है कि उन्हें अब बलि का बकरा बनाया जाएगा. चौटाला को विधायकों के टूटने से कहीं ज्यादा पुलिस के बारे में चिंतित होने की जरूरत है. अभय के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज है. इस मामले में पुलिस ही चौटाला को उबार सकती है.

निचले दर्जे के पुलिस कर्मचारी तो विद्रोह पर उतारू हैं. बताया जाता है कि एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी ने कांस्टेबल हरबंस सिंह को अभय सिंह के कपड़े के साथ अपनी वर्दी की अदला-बदली करने पर मजबूर कर दिया. उस समय महम में हिंसा चरम पर थी. 28 फरवरी को बैंसी गांव में पुनर्मतदान के दिन बूथ नं. 26 में धांधली की कोशिश कर रहे अभय सिंह को जब डांगी के समर्थकों ने खदेड़ा तो उसने एक स्कूल में शरण ले ली. डांगी के समर्थकों ने हरबंस सिंह को अभय सिंह के कपड़ों में देख उसे अभय सिंह ही समझ मौत के घाट उतार दिया.

उप-प्रधानमंत्री के बेटे से लोहा लेने और हीरो के रूप में उभरने वाले डांगी कहते हैं, ''हम अब चौटाला को सिर्फ महम से नहीं, बल्कि हरियाणा की सीमाओं से बाहर खदेड़ेंगे.''

पांच सदस्यीय समिति इस नतीजे पर पहुंची है कि चौटाला को इस्तीफा दे देना चाहिए. उधर वी.पी. सिंह दुविधा में फंसे नजर आ रहे हैं

कभी देवीलाल के विश्वासपात्र और उनके प्रमुख चुनाव प्रबंधक रहे डांगी को महम में ताकतवर चौबीसी का समर्थन हासिल है. महम जैसे जाट-बहुल निर्वाचन क्षेत्र में (1.50 लाख मतदाताओं में जाटों की संख्या 90,000 है) डांगी को इतना समर्थन मिलना चौटाला के लिए खतरे की घंटी ही है.

यदि चौटाला अपने दावे के मुताबिक महम से फिर चुनाव लड़ते हैं तो उनकी हार लगभग तय लगती है. इस हार से सरकार में और राज्य में देवीलाल की हैसियत और प्रतिष्ठा को गंभीर झटका लगेगा. चुनावी नतीजा चाहे जो निकले, चौटाला के राजनैतिक भविष्य पर सवालिया निशान बरकरार रहेगा.

—हरिंदर बवेजा,
महम और चंडीगढ़ में

जनता दल की बैठक के बाद देवीलाल, वी.पी., मुफ्ती और चंद्रशेखर

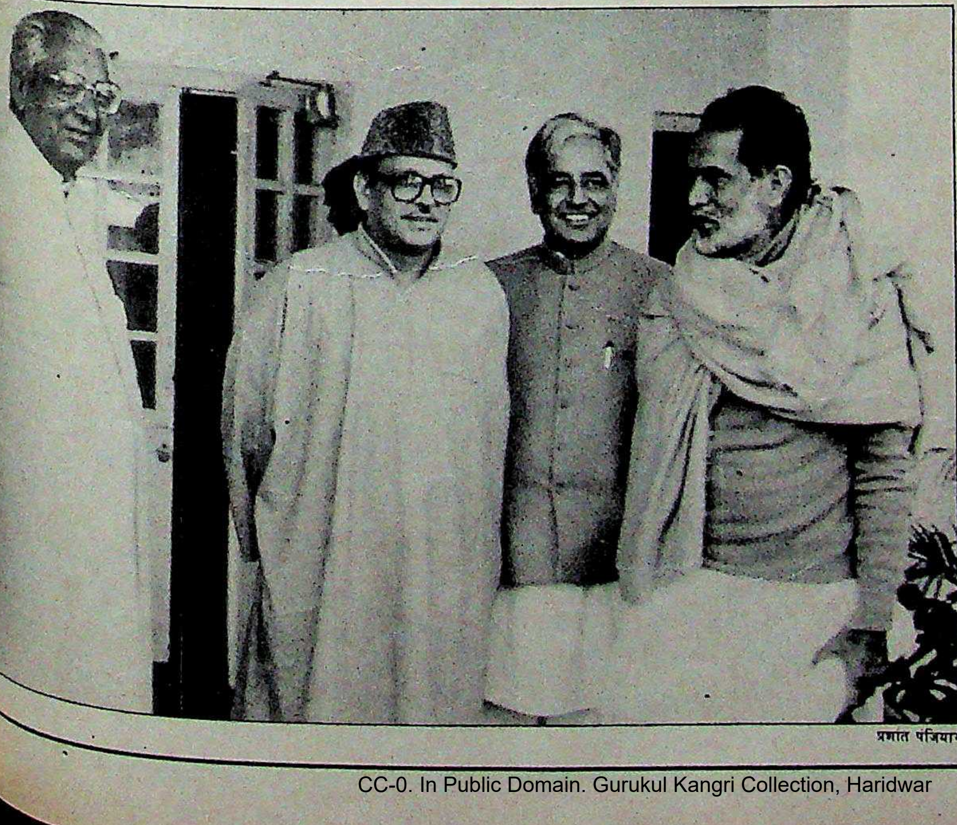

प्रशांत पंजियार

विश्लेषण

एकछत्र साम्राज्य का अंत

मतदाताओं ने किसी एक दल को सब तरफ राज करने का मौका न देकर अपने विवेक का फिर परिचय दिया

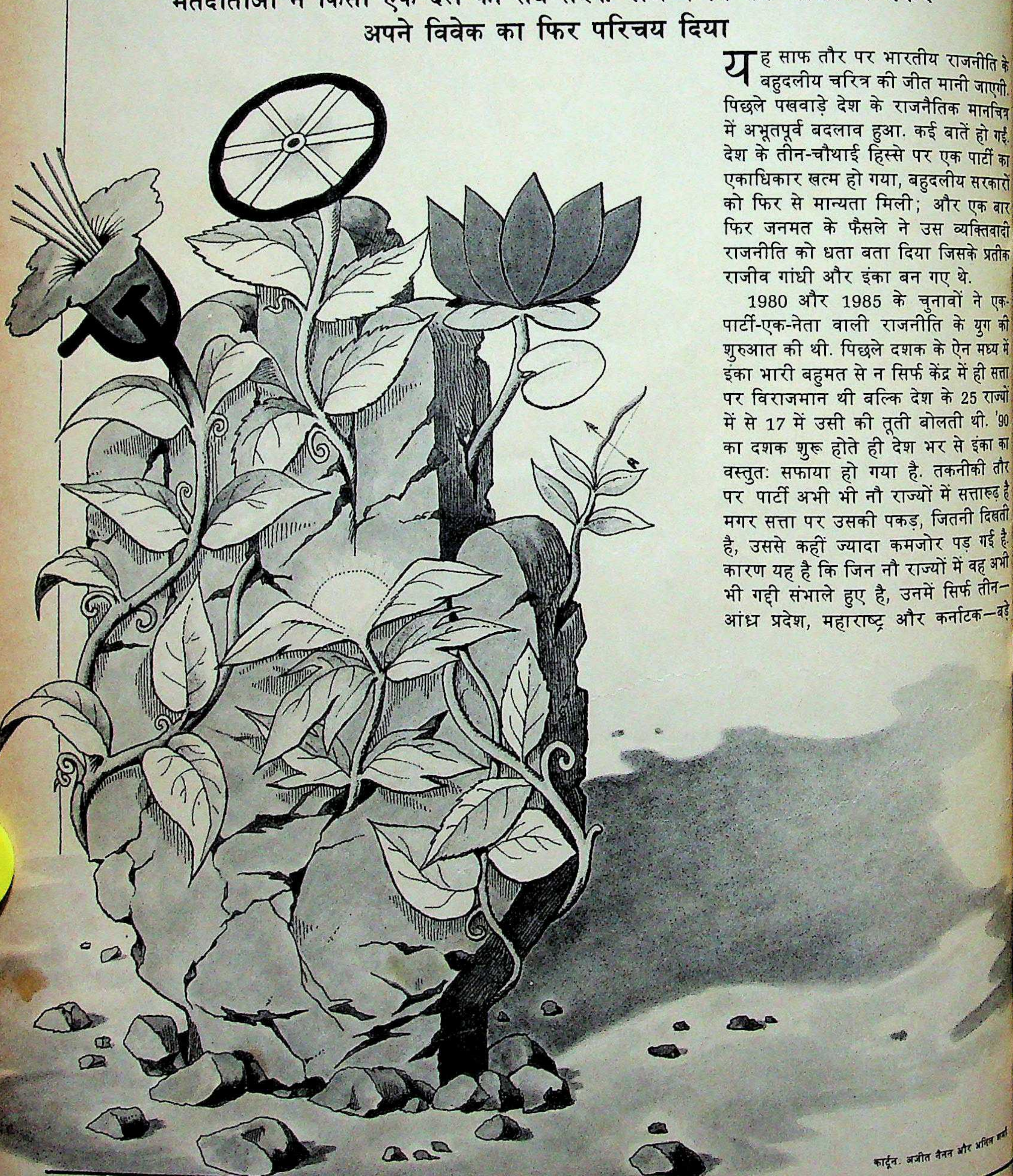

कार्टून. अजीत नैनन और अनिल

यह साफ तौर पर भारतीय राजनीति के बहुदलीय चरित्र की जीत मानी जाएगी. पिछले पखवाड़े देश के राजनैतिक मानचित्र में अभूतपूर्व बदलाव हुआ. कई बातें हो गईं. देश के तीन-चौथाई हिस्से पर एक पार्टी का एकाधिकार खत्म हो गया, बहुदलीय सरकारों को फिर से मान्यता मिली; और एक बार फिर जनमत के फैसले ने उस व्यक्तिवादी राजनीति को धता बता दिया जिसके प्रतीक राजीव गांधी और इंका बन गए थे.

1980 और 1985 के चुनावों ने एक-पार्टी-एक-नेता वाली राजनीति के युग की शुरुआत की थी. पिछले दशक के ऐन मध्य में इंका भारी बहुमत से न सिर्फ केंद्र में ही सत्ता पर विराजमान थी बल्कि देश के 25 राज्यों में से 17 में उसी की तूती बोलती थी. '90 का दशक शुरू होते ही देश भर से इंका का वस्तुतः सफाया हो गया है. तकनीकी तौर पर पार्टी अभी भी नौ राज्यों में सत्तारूढ़ है मगर सत्ता पर उसकी पकड़, जितनी दिखती है, उससे कहीं ज्यादा कमजोर पड़ गई है. कारण यह है कि जिन नौ राज्यों में वह अभी भी गद्दी संभाले हुए है, उनमें सिर्फ तीन—आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक—बड़े

हैं जबकि गोवा और उत्तर-पूर्व में अंगूठे आकार के बाकी प्रदेश खास अहमियत रखते. दूसरे 17 राज्यों में भगवे से लाल झंडे की विभिन्न विचारधाराओं सात अलग-अलग पार्टियां सत्तारूढ़ हैं. जाहिर है कि लोगों ने केंद्र और राज्यों बहुदलीय सामूहिक नेतृत्व के पक्ष में दान किया है. जिन 1,613 विधानसभाई में इस बार चुनाव हुए उनमें इंका 417 पर ही जीत सकी. कामयाबी की करीब 25 फीसदी दर अब तक की सबसे दर है. बाकी 1,196 सीटें उन आधा राजनैतिक दलों की झोली में गई होंने हाल ही में चुनावी अहमियत हासिल है. इनमें भाजपा 497 सीटें पाकर अगुआ जनता दल को 448, भाकपा को 36 माकपा को 12 सीटें मिलीं. महत्वपूर्ण यह है कि द्रमुक, शिवसेना और झारखंड मोर्चा जैसे क्षेत्रीय संगठन 100 से सीटों पर काबिज हो गए. इन आंकड़ों यह स्पष्ट है कि राज्यों और केंद्र में पहली शासन न सिर्फ किसी पार्टी अथवा गठ- न का बल्कि अनेक ऐसे गुटों का भी होगा डाले गए वोटों का बहुमत हासिल करने कामयाब रहे. व्यापक संदर्भ में इसका लब यह है कि देश संभवतः किसी प्रकार संघीय व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है. ऐसे राज्यों में सत्तारूढ़ पार्टियों को काफी हद स्वायत्तता मिल सकती है जो कि किसी लोकतंत्र के लिए बहुत जरूरी है.

विधानसभा चुनावों से जाहिर है कि दाता लगातार अपने विवेक का इस्तेमाल ता आ रहा है. दिसंबर के संसदीय चुनाव दक्षिण भारत ने जहां इंका के पक्ष में वोट या था, वहीं इस बार उसने दूसरा ही कल्प चुना. पांडिचेरी में मतदाताओं ने की अगुआई वाली सरकार को हरा या. छोटे स्तर पर, केरल में हरिपद धानसभा हलके के उपचुनाव में मतदाताओं इंका को ठुकरा दिया. संदेश साफ है: उत्तर रत की तरह दक्षिण ने भी राष्ट्रीय विकल्प नजरअंदाज करते हुए स्थानीय विकल्प के वोट दिया.

पश्चिम भारत में भी यही विवेक दिखा. गात में लोगों ने इंका के खिलाफ जनता -भाजपा गठबंधन को गद्दी सौंपी, तो राष्ट्र में भाजपा-शिवसेना गठजोड़ को ाते हुए इंका को. पूर्व भारत के अरुणाचल में इंका के गेगांग अपांग ने जन विश्वास ना. पर पड़ोसी मणिपुर में विपक्षी दलों ने का तख्ता पलट दिया.

बहुदलीय व्यवस्था का रूप हिंदी में निखरा. यहां इंका विरोधी लहर एक पार्टी की जीत के रूप में नहीं बिहार में बहुदलीय विकल्प, मध्य प्रदेश में भाजपा, ओडीसा में जनता दल और राजस्थान में भाजपा-जनता दल गठबंधन की विजय के रूप में सामने आई. पहली बार राजनैतिक दलों को अपने समर्थक मतदाताओं के अनुपात में विधानसभाओं में प्रतिनिधित्व मिला. बहुदलीय व्यवस्था छोटे स्तरों पर भी दिखाई पड़ी. इसकी बेहतरीन मिसाल बिहार का झारखंड मुक्ति मोर्चा है. पर देश भर में स्थानीय विकल्प इंका की कीमत पर ही खड़े हुए.

इन क्षेत्रीय विकल्पों के उभरने से न सिर्फ इंका में बल्कि सभी दूसरी पार्टियों में भी स्थानीय क्षत्रप फिर से पनप उठे हैं. ऐसा रुझान पहलेपहल 1983 में प्रकट हुआ था जब इंका कर्नाटक और हरियाणा में हार गई थी. लेकिन 1985 में राजीव के आगमन के बाद इसे सख्ती से कुचल दिया गया. उन्होंने राज्यों को अपनी रियासतों की तरह चलाया और पांच साल के भीतर करीब 20 मुख्यमंत्री बदल डाले. इसके नतीजे भी भयंकर निकले. स्थानीय नेतृत्व नाकारा हो गया और नेता स्थानीय जनता के बूते कुछ भी करने लायक नहीं रह गए. और पिछले साल नवंबर में पार्टी उत्तर भारत में बुरी तरह पिट गई.

> **राज्यों और केंद्र में पहली बार शासन न सिर्फ किसी पार्टी अथवा गठबंधन का बल्कि अनेक ऐसे गुटों का भी होगा जो डाले गए वोटों का बहुमत हासिल करने में कामयाब रहे. व्यापक संदर्भ में इसका मतलब यह है कि देश संभवतः किसी प्रकार की संघीय व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है**

राजीव को अपनी गलतियों का एहसास होता, तब तक काफी देर हो चुकी थी. जगन्नाथ मिश्र और माधव सिंह सोलंकी सरीखे क्षेत्रीय नेताओं को वापस लाने का कोई फायदा नहीं हुआ. लोग अब उन्हें कोई आजाद शख्सियत मानने को तैयार नहीं थे. वे उन्हें भावशून्य केंद्रीय नेतृत्व का ही अंग मानने लगे थे. इसी तरह दक्षिण में भी, जहां इंका सत्ता के बाहर थी, मतदाताओं ने बदलाव के हक में वोट देकर चेन्ना रेड्डी और वीरेंद्र पाटील सरीखे स्थानीय नेताओं को सत्ता सौंपी.

इस चुनाव की एक और महत्वपूर्ण बात यह रही कि केंद्र और राज्यों में राजनीति के जातीय समीकरण बदल गए. 1952 से लेकर केंद्र और राज्यों दोनों में ही ब्राह्मण और अन्य ऊंची जातियों, शहरी अमीरों, बड़े किसानों और सामंती तत्वों के साथ ही कुछ अमीर हरिजनों और दूसरे अल्पसंख्यकों के गठजोड़ का दबदबा रहा है. लेकिन 1990 के जनादेश में सत्ता मझोली जातियों और 1947 के बाद पैदा हुए नेतृत्व को हासिल हुई है. पहली बार दो यादव मुख्यमंत्री देश की एक चौथाई आबादी—उत्तर प्रदेश और बिहार—पर शासन कर रहे हैं. इसी तरह, केंद्र में तीन मंत्री जाट समुदाय से हैं, जिसे एक और मझोली जाति माना जाता है.

इस जनादेश का सबसे महत्वपूर्ण नतीजा शायद यह है कि सत्ता का स्वाद सभी पार्टियों को आनुपातिक रूप में चखना होगा. अब केंद्र राज्यों पर सवार नहीं हो सकेगा. और यहां तक कि नई दिल्ली के मामलों में भी दखल नहीं दे पाएगा. कोई भी नीतिगत घोषणा करने से पहले राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को भाजपा और कम्युनिस्टों, दोनों के विचारों को ध्यान में रखना होगा. पंजाब और जम्मू-कश्मीर जैसे मामलों पर तो वह इंका को भी नजरअंदाज नहीं कर सकेगी.

राज्य स्तर पर बीजू पटनायक, मुलायम सिंह यादव और चिमनभाई पटेल सरीखे मुख्यमंत्रियों का अपना अलग ही रुतबा है. न तो विश्वनाथ प्रताप सिंह और न ही देवीलाल दिल्ली से उन पर लगाम कस पाएंगे. इसी तरह, 10, जनपथ के अपने आवास से राज्यों में इंका को निर्देश देने की राजीव गांधी की क्षमता भी काफी हद तक चुक गई है. शरद पवार, चेन्ना रेड्डी और वीरेंद्र पाटील सरीखे मुख्यमंत्री तो ऐसे तेवर दिखा ही चुके हैं जो राजीव के प्रधानमंत्री रहते वक्त नदारद थे.

पर इस जनादेश में कुछ खतरे भी छुपे हुए हैं. इंका एक मजबूत नेता की अगुआई वाला विशाल संगठन थी. जनता पर से राजीव की पकड़ भले ही ढीली पड़ गई हो पर इंका पर उनकी पकड़ बरकरार है. उसमें विद्रोह की गुंजाइश तभी है जब विश्वनाथ प्रताप सिंह उससे कहीं अधिक समय काट जाएं जितना कि उसके कार्यकर्ताओं को सिखाया-पढ़ाया गया है. और वी.पी. सिंह के लिए यही सबसे बड़ी चुनौती है. वे सामूहिक नेतृत्व और मजबूत राज्यों के साथ मजबूत केंद्र की बात करते रहे हैं. अब उनके लिए असली परीक्षा यही है कि अपनी बुनियादी मान्यताओं पर बिना कोई समझौता किए वे विभिन्न राजनैतिक शक्तियों को कहां तक अपने साथ लेकर चल पाते हैं.

—प्रभु चावला

कांग्रेस (इ)

नेता के खिलाफ बगावत

राजीव गांधी को लेकर पार्टी में जोरदार खेमेबाजी का जोर

लगातार दो चुनावी संघर्षों में हार के बाद इंकाई खेमे में सदमे से उपजा सन्नाटा स्वाभाविक भी है. मगर इसे तूफान के पहले का सन्नाटा भी माना जा सकता है. इस बात के स्पष्ट संकेत हैं कि आने वाले दिन पार्टी के लिए भीषण जद्दोजहद वाले होंगे. सौ साल से ज्यादा पुरानी पार्टी के भीतर मची खलबली को भी महसूसा जा सकता है.

अविश्वसनीय किंतु सत्य यह है कि राजीव गांधी को इंका के अध्यक्ष पद से हटाने की मुहिम शुरू हो चुकी है. लोकसभा चुनावों के बाद कमलापति त्रिपाठी ने पार्टी कार्यकर्ताओं से 'एक व्यक्ति, एक पद' के सिद्धांत पर अमल करने की जो अपील की, उसे इस मुहिम का पहला कदम माना जा सकता है. अपील का मकसद साफ है कि राजीव को पार्टी अध्यक्ष का पद छोड़ देना चाहिए क्योंकि वे संसद में विपक्ष के नेता चुने जा चुके हैं. कुछ नेताओं का दावा है कि अपील पर प्रतिक्रिया 'पर्याप्त रूप से उत्साहवर्द्धक' रही.

लगता है कि इंका के पुराने दिग्गजों ने सिर उठाने का फैसला कर लिया है. इंदिरा गांधी के खास रहे यशपाल कपूर जैसे लोगों ने राजीव के विकल्प की तलाश की इस मुहिम के तहत प्रादेशिक नेताओं का मन टटोल लिया है. कपूर कहते हैं, ''हमें एक पूर्णकालिक अध्यक्ष चाहिए जिसके साथ सुरक्षा संबंधी बखेड़ा न हो और जो पार्टी कार्यकर्ताओं के लिए उपलब्ध हो.''

आज चूंकि इंका दक्षिण में सिमटकर रह गई है, इसलिए कई लोगों की मान्यता है कि अगला पार्टी अध्यक्ष दक्षिण का ही होना चाहिए. इंका संसदीय दल में दक्षिण के सदस्यों की भरमार है इसलिए दक्षिण के कुछ दिग्गजों को प्रेरित किया जा रहा है कि वे अध्यक्ष पद के लिए कोशिश करें.

अपनी शर्मनाक पराजय के जख्मों की टीस झेलते हुए कुछ पूर्व इंका सांसदों ने, जिनमें से अधिकांश उत्तर प्रदेश के हैं, अपनी शिकायतों को अभिव्यक्ति देने के लिए एक समन्वय समिति गठित की है. पिछले पखवाड़े इन लोगों ने समिति के संयोजक जितेंद्र प्रसाद के दिल्ली निवास पर बैठक की और चुनावों में हुई पराजय के कारणों की समीक्षा की.

पार्टी के कुछ हलकों में यह विचार भी व्यक्त किया जा रहा है कि राजीव को पार्टी अध्यक्ष के पद से हटने के लिए बिना किसी सीधी टक्कर के भी राजी किया जा सकता है. इस विचार की पुष्टि इस घटना से होती है—पिछले दिनों कुछ पार्टी नेताओं ने राजीव को इस बात के लिए राजी कर लिया कि वे पंजाब मसले पर राष्ट्रपति आर. वेंकटरामन से भेंट करने वाले इंका प्रतिनिधिमंडल में शामिल न हों.

पार्टी कार्यकर्ताओं में हताशा इस कदर व्याप्त है कि केवल स्वघोषित प्रवक्ता नहीं, कई छुटभैये इंकाई भी पराजय की अपनी व्याख्या व्यक्त करने से पीछे नहीं हट रहे. वसंत साठे का लहजा पहले की ही तरह सपाट था, ''हालांकि विधानसभाओं के चुनाव लोकसभा चुनाव वाले माहौल में ही हुए, पर कुल मिलाकर यही लगता है कि लोगों को इंका से भारी निराशा हुई है.'' चुनाव में हारे पूर्व केंद्रीय मंत्री हरेकृष्ण शास्त्री ने तो एक कदम आगे बढ़कर कहा, ''सुरक्षा के हौवे ने

कांग्रेस कार्यकारिणी की बैठक में राजीव और त्रिपाठी: भीतर सुलगती आग

असलम शेर खां

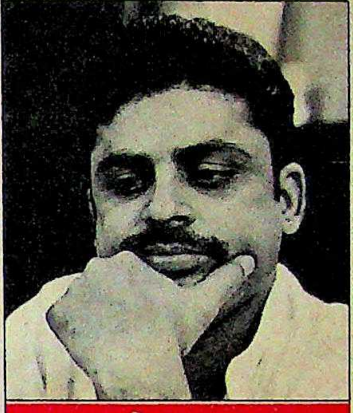

तारिक अनवर

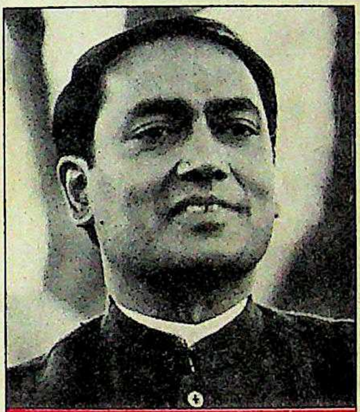

दिग्विजय सिंह

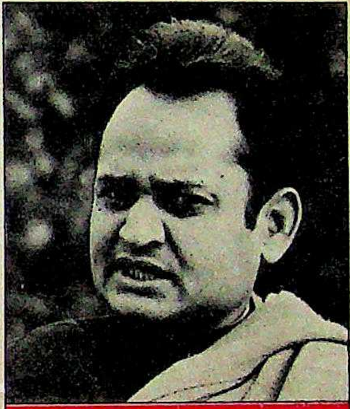

अशोक गहलोत

पार्टी के पुराने दिग्गज एकजुट हो रहे हैं तो राजीव की शह से कुछ युवा नेताओं की टोली भी जवाबी हमले की तैयारी कर रही है

ी पार्टी को इस हद तक लिया कि वह लोगों से होती गई." मध्य प्रदेश इंका के पूर्व सांसद म शेर खां तो और भी क रहे, "जिला स्तर के ब 70 प्रतिशत पार्टी कर्ताओं ने तो इंका को ड़ ही दिया है. आज पार्टी ा रीढ़ के विशाल देव ी हो गई है. पार्टी के लोग इसी उम्मीद में हैं बिल्ली के भाग्य से कभी कभी छीका टूटेगा." ऐसी ाजगी राजीव के लिए चय ही खतरे की घंटी है.

इंका के नए पार्टी अध्यक्ष मांग करने वाले खेमे को छले पखवाड़े जनता दल अध्यक्ष पद से विश्वनाथ प सिंह के इस्तीफे से त्याशित बल मिला है. इकाई तो यहां तक ने लगे हैं, "अगर राजा ा कर सकता है, तो ीव क्यों नहीं?"

भीतर मची खलबली का ास राजीव खेमे को है इसीलिए वह पार्टी-ओं का ध्यान इधर-उधर करने में लग गया पार्टी के संगठनात्मक चुनाव कराने के ाव को पिछले पखवाड़े इंका कार्यसमिति फिर से रखा गया. ये चुनाव 1972 से ही ंबित हैं. नई योजना के अनुसार पार्टी विधान में संशोधन के जो प्रस्ताव उमाशंकर ित समिति ने दिए हैं उन्हें मंजूर किया एगा. यह काम कांग्रेस के अगले अधिवेशन जो मई में होना वाला है, किया जाएगा. के बाद तीन महीनों का एक सदस्यता भियान शुरू होगा. संभव है कि साल के अंत पार्टी चुनाव कराए जाएं.

वैसे, आलोचकों का कहना है कि जब-जब नेतृत्व के सामने गंभीर चुनौती आती है तब वह पार्टी चुनावों का वादा करने ता है. ऐसी किसी कार्रवाई की पहली मार नेताओं पर पड़ेगी जिनका कोई जनाधार है परंतु जो पार्टी के ऊंचे ओहदों पर ान जमाए हैं. जाहिर है, मजबूत जनाधार नेताओं का एक वर्ग इंका से ऐसे तत्वों निकाल बाहर करने को आतुर है. इंका के कृत प्रवक्ता विट्ठल नरहरि गाडगिल ते हैं, "संगठनात्मक चुनावों से पार्टी बूत और चुस्त होगी."

अब हालत यह है कि पार्टी के पुराने ज एक ओर एकजुट हो रहे हैं तो दूसरी ओर राजीव की शह से आगे बढ़े कुछ युवा नेताओं की टोली भी 'सत्ता के दलालों के चंगुल से राजीव गांधी को आजाद' कराने के जवाबी हमले की तैयारी कर रही है. असलम शेर खां तो 'दिल्ली में आसान जमाए इन आकाओं का, जिन्होंने राजीव को मुगालते में रखा', नाम गिनाने तक को तैयार हैं. उनकी फेहरिस्त में अर्जुन सिंह, माखनलाल फोतेदार, भजनलाल, आर.के. धवन और सीताराम केसरी हैं. यहां तक कि वसंत साठे भी इस युवा टोली के साथ हैं.

इन तथाकथित युवा तुर्कों ने अपनी हैसियत जताने के लिए एक मंच बनाने का भी फैसला किया है क्योंकि 'वरिष्ठ नेताओं ने पार्टी की नैया डुबो दी है.' ये लोग अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए जल्दी ही युवक इंका के पूर्व नेताओं का एक सम्मेलन बुलाने जा रहे हैं. असलम शेर खां के अलावा जद्दोजहद में ये लोग शामिल हैं—तारिक अनवर, अशोक गहलोत, दिग्विजय सिंह और दिलीप सिंह भूरिया. राजीव के एक और वफादार गुलाम नबी आजाद कहते हैं, "देश भर के इंका कार्यकर्ताओं के लिए राजीव गांधी ही एकमात्र सहारा हैं. अध्यक्ष पद पर उनकी जगह किसी और को लाने से इंका बिखर जाएगी."

इंका के मौजूदा संकट को इसके ऐतिहासिक संदर्भों में देख बिना पूरी तरह से नहीं समझा जा सकता. भारत में दो मध्यमार्गी पार्टियां एक दौर में कभी नहीं रही हैं. इसलिए यह मान लिया जा सकता है कि दो मध्यमार्गी दलों—इंका और जनता दल—में से एक अंततः बिखर जाएगी. 104 साल पुरानी होने के नाते कांग्रेस के बचे रहने की संभावना ज्यादा है. वी.पी. सिंह इस तथ्य से भलीभांति परिचित हैं. इसीलिए इंका को तोड़ने में उनकी रुचि नहीं है. इसके बदले राजीव पर दबाव बनाए रखना चाहते हैं. कहा तो यह भी जाता है कि वी.पी. सिंह ने कुछ विद्रोही इंका नेताओं को अभी पार्टी न छोड़ने की सलाह दी है. इस तर्क के मुताबिक भविष्य में वी.पी. सिंह की 'घर वापसी' में एकमात्र अड़चन राजीव ही हैं.

अब चूंकि राजीव वह कौशल नहीं दिखा पाए हैं जो उनकी मां ने 1977-79 के दौरान दिखाया था, इसलिए उक्त संभावना को एकदम से नकारा नहीं जा सकता. बदले हुए राजनैतिक समीकरणों के अनुसार खुद को बदलने की जगह राजीव सिर्फ अपनी चौकड़ी को बदलते रहे हैं और उम्मीद लगाए बैठे हैं कि राष्ट्रीय मोर्चा सरकार कोई बड़ी भूल करे. राजीव की चौकड़ी का मानना है कि एक नकारात्मक लहर ने जिस तरह इंका का सफाया किया उसी तरह दूसरी नकारात्मक लहर वी.पी. सिंह को बहा ले जाएगी. तब तक बेहतर यही है चुपचाप तमाशा देखा जाए.

—भास्कर राय

सभी फोटो: प्रवीर पुरकायस्थ

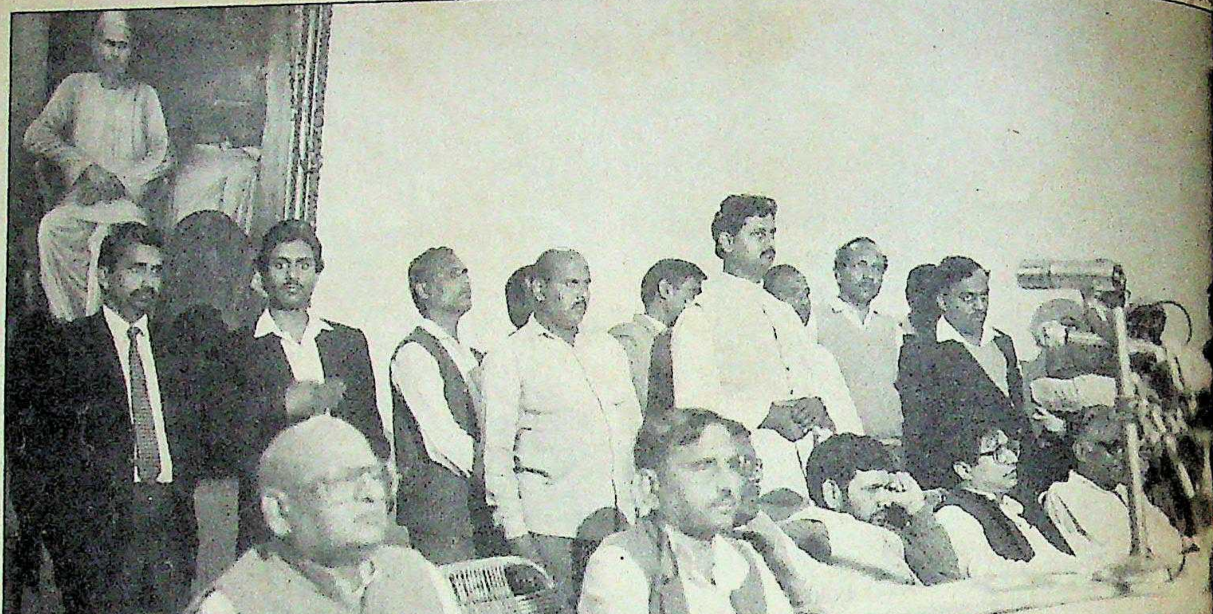

बिहार

अस्थिरता के संकेत

जनता दल

लालू यादव नेता तो चुने गए मगर उनके सामने चुनौतियां भारी

बिहार में चुनाव का अंतिम नतीजा आ जाने के बाद भी जो राजनैतिक अनिश्चितता का वातावरण बना रहा उसके प्रतीक ही दिखे लालू प्रसाद यादव. हालांकि जनता दल के नेता पद की होड़ में वे विजयी रहे. इस तरह वे मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने वाले दूसरे यादव हो गए और पांच सालों में इस राज्य के पांचवें मुख्यमंत्री. लेकिन जनता दल के कई विधायकों के तने हुए चेहरे अगर कोई संकेत देते हैं तो यही कि राज्य में छठा मुख्यमंत्री भी शायद जल्दी ही शपथ ले.

जनता दल के एक वरिष्ठ विधायक की भविष्यवाणी थी, "लालू खुद ही ज्यादा दिन टिक नहीं पाएंगे. और वे गए तो अपने साथ ही केंद्र में राष्ट्रीय मोर्चा सरकार को भी ले डूबेंगे." दूसरे विधायक की प्रतिक्रिया और तीखी थी, "राज्य को बलि का बकरा बना दिया गया है और जनता दल ने कसाई का अभिषेक कर दिया है."

नफरत से उपजी इस ईर्ष्या का एक कारण राज्य में जातिगत पूर्वाग्रह भी है. ऊंची जाति के लोग यह बात सोच भी नहीं सकते कि पिछड़ी जाति का कोई व्यक्ति मुख्यमंत्री बने. लेकिन इस पद के लिए सबको मान्य प्रत्याशी रामसुंदर दास भी हरिजन हैं. फिर भी ऊंची जाति के विधायकों को उन्हें स्वीकार करने में कोई परेशानी नहीं थी. जाहिर है लालू यादव को नेता के रूप में स्वीकार न करने की दूसरी वजहें भी थीं. एक वजह तो लालू की रूखी बोली, उनका अक्खड़ व्यवहार और उनकी लापरवाह कार्यशैली भी है.

जनता दल के विधायक दल के नेता के चुनाव में केंद्रीय पर्यवेक्षकों ने मतविभाजन टालने की भरसक कोशिश की पर लालू होड़ में बने रहे

लेकिन यह भी सही है कि लालू यादव दूसरी जातियों की मदद से ही नेतृत्व की लड़ाई जीत पाए. उनकी जीत में राजपूत विधायक जगतानंद सिंह, कुर्मी सांसद नीतीश कुमार और भूमिहार विधायक दिलीप सिं की भूमिका प्रमुख थी. हालांकि ऐसे संकेत हैं कि जनता दल के टिकट पर चुने गए 33 यादव विधायकों में से ज्यादातर ने उनका समर्थन किया परंतु सांसद हुकुमदेव नाराय यादव और लोकसभा चुनाव के बाद जनता दल विधायक पार्टी के नेता बने अनूप लाल यादव ने उनकी उम्मीदवारी की खुलकर मुखालफत की. इसलिए जाहिर है कि उनके 16 साल के राजनैतिक जीवन की इस सबसे महत्वपूर्ण लड़ाई में जाति ही एकमात्र निर्णायक कारण नहीं बना.

दरअसल, लालू प्रसाद यादव पर किस्मत हमेशा ही मेहरबान रही है. अपने छात्र जीवन में वे समाजवादी युवजन सभा के सदस्य र और पटना विश्वविद्यालय छात्र संघ चुनाव में सभा ने उन्हें गरीब परिवार जोशीला युवक होने के नाते उम्मीदवा बनाया. इसके बाद वे निरंतर आगे ही बढ़ गए. पटना विश्वविद्यालय छात्र संघ क अध्यक्ष होने के नाते वे 1974 में जयप्रका आंदोलन में कूदे और इमरजेंसी में जेल ग फिर 1977 में वे लोकसभा के सदस्य

हालांकि 1980 के लोकसभा चुनाव में हार गए लेकिन विधानसभा का चुनाव जीतने में कामयाब रहे.

फरवरी 1988 में कर्पूरी ठाकुर की आकस्मिक मृत्यु से उन्हें विधानसभा में विपक्ष का नेता बनने का मौका मिल गया. नवंबर 89 में संसद में जीतकर आने तक वे इस पद पर कायम रहे.

इस दौरान देवीलाल और शरद यादव जैसे नेताओं से मधुर रिश्ते बनाने के अलावा वे विपक्ष का नेता रहते हुए विधायकों को अपने पक्ष में करने की भी जुगत भिड़ाते रहे. और विधानसभा चुनावों में उन्होंने और उनके सहयोगी सांसद नीतीश कुमार ने अपनी पसंद के 106 उम्मीदवारों को टिकट दिलवाए. इनमें से 68 जीत गए और इन लोगों ने समर्थन का वादा किया जिससे नेता पद के चुनाव में लालू की राह आसान हो गई.

यह लगभग स्पष्ट था कि चुनाव हुआ तो लालू यादव ही जीतेंगे. इसीलिए 7 मार्च की मध्यरात्रि में जब केंद्रीय पर्यवेक्षकों का दल पटना पहुंचा तो उसने इसे टालने की भरसक कोशिश की. लालू के एक समर्थक ने माना कि शरद यादव हालांकि कूटनीतिक चुप्पी साधे हुए थे पर उन्होंने लालू को सलाह दी कि अगर उनके गुट की जीत की संभावना है तो वे होड़ में बने रहें. इसके अलावा उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव, जॉर्ज फर्नांडीस, अजीत सिंह और दूसरे पर्यवेक्षक जबकि नेता पद के दावेदारों से लगातार बातचीत करते रहे तो उधर गंगा के किनारे बृजकिशोर स्मारक भवन में विधायक उनके पहुंचने का इंतजार कर रहे थे.

राजभवन से एक के बाद एक दावेदार जब लौटकर आए तब लालू यादव और रघुनाथ झा दोनों की इस घोषणा से, कि वे चुनाव के पक्ष में हैं, आम सहमति से नेता चुने जाने की उम्मीद खत्म हो गई.

लेकिन चुनाव जो हुआ उसने तमाम आशंकाओं को झूठा साबित कर दिया. उम्मीद के विपरीत न तो मारपीट हुई, न घूंसे चले और न ही गाली-गलौज हुई.

लालू प्रसाद यादव

'चंद्रगुप्त की तरह उभरूंगा'

खास मुहावरों से लैस अपनी जबान के लिए मशहूर 42 वर्षीय लालू प्रसाद यादव पिछले साल ही तब चर्चा के केंद्र बन गए थे जब वे बिहार विधानसभा में विपक्ष के नेता चुने गए थे. अब पिछले पखवाड़े जनता दल के विधायक दल के नेता पद का चुनाव जीतकर उन्होंने एक नया शिखर छू लिया है. बधाई देने आए लोगों से देर रात गए मुक्त होने के बाद उन्होंने वरिष्ठ संवाददाता ***उत्तम सेनगुप्त*** *से बातचीत की. इसके कुछ अंश:*

● ***अपने चयन से पार्टी में विद्रोह भड़कने के अंदेशे पर:***

चुनाव की इस लोकतांत्रिक प्रक्रिया से पार्टी मजबूत ही हुई है. ऊपर से नेता थोपने की कांग्रेसी परंपरा पर चलने से कुछ हासिल नहीं होता. गुप्त मतदान से आखिर क्यों मुंह चुराया जाए? मुझे किसी ओर से परेशानी पैदा होने की उम्मीद नहीं है.

● ***अपनी सार्वजनिक छवि और उसके बारे में लोगों के बीच फैली गलतफहमियों पर:***

मैं किसी की परवाह नहीं करता. मैं साफ बातें करता हूं और मुंहफट हूं. जाहिर है इसके कारण कुछ लोग मुझसे चिढ़ जाते हैं. लेकिन जब उन्हें यह एहसास होता है कि मैं साफ-साफ बोलने वाला आदमी हूं तब वे अक्सर आ जुटते हैं. इस बार भी यही होगा.

● ***अपनी सरकार के स्थायित्व पर:***

यह जनता दल है. अगर आप सोचते हैं कि इंकाई जोड़-तोड़ का हम पर कोई असर होगा तो आप मुगालते में हैं. हम साबित कर दिखाएंगे कि यह सरकार स्थायी और अलग तरह की भी होगी.

● ***पिछली सरकार और अपनी सरकार में फर्क के सवाल पर:***

हम अपने काम से लोगों के दिल में जगह बनाएंगे. जगन्नाथ मिश्र की सरकार को तो बस स्वर्ग में सीढ़ी लगाना बाकी रह गया था. हम काम करेंगे. और आप खुद-ब-खुद फर्क महसूस करने लगेंगे.

नेता चुने जाने के बाद लालू यादव

● ***सरकार गिरने की संभावना पर:***

इंका अब लौटने वाली नहीं है. मिश्र दीवारों पर लिखी इबारत पढ़ चुके हैं. इसीलिए मुख्यमंत्री के रूप में उनका अंतिम काम था कानून में संशोधन करके विधानसभा में विपक्ष के नेता को सरकारी विमान के इस्तेमाल की सुविधा मुहैया कराना. इस सरकार को गिराने की कोई हिमाकत नहीं कर सकता. जो ऐसा करेगा उसे लोग ही गिरा देंगे.

● ***जनता दल को पूर्ण बहुमत न मिलने के सवाल पर:***

दिल्ली में भी हम यह क्यों नहीं पा सके? लोकसभा चुनाव में सभी विपक्षी पार्टियों के साथ हमारा तालमेल था. इस बार भाजपा ने हमारे खिलाफ उम्मीदवार खड़ा करने का फैसला किया. यहां तक कि इंका ने भी विपक्षी वोटों को बांटने के लिए निर्दलीय उम्मीदवार खड़े किए.

● ***इस आरोप पर कि आपराधिक पृष्ठभूमि वाले लोगों को उन्होंने उम्मीदवार बनाया:***

आपके कहने से (उनकी) छवि खराब हो जाएगी? वे जन अदालत में खरे उतरे हैं.

● ***इस आरोप पर कि उनमें अनुभव की कमी है:***

यह तो समय बताएगा. इमरजेंसी के दौरान जब मैं जेल में था, राजीव गांधी (राजनीति में) कहीं नहीं थे. लेकिन दिग्गज इंका नेता तक उनके पांव छूने लगे. मैं 1977 में सांसद बना और फिर विधायक रहा. इसलिए अनुभव की कमी का सवाल ही कहां उठता है.

● ***जनता दल सांसद हुकुमदेव नारायण यादव और विधायक सूरजदेव सिंह द्वारा की गई आलोचना पर:***

मैं यही कह सकता हूं कि उन्हें चाणक्य बनने दीजिए, लेकिन पाटलिपुत्र में मैं चंद्रगुप्त की तरह उभरूंगा.

इसके बदले माहौल शांत बना रहा और यहां तक कि लालू यादव और धनबाद के माफिया सरगना सूरजदेव सिह गले मिले और उन्होंने साथ-साथ फोटो खिचवाई. अभी कुछ दिनों पहले ही सूरजदेव ने कहा था कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने के लिए लालू के पास न तो अनुभव है और न ही क्षमता. रघुनाथ झा भी इसी तरह गले मिले. सिर्फ रामसुंदर दास पर्यवेक्षकों के साथ राजभवन में बने रहे. वे बैठक शुरू होने के ठीक पहले ही वहां पहुंचे.

भवन के बाहर बड़ी संख्या में पुलिस भीड़ को काबू में रखने का प्रयास कर रही थी. 'रामसुंदर दास जिंदाबाद', 'लालू यादव जिंदाबाद' जैसे नारे हवा में गूंज रहे थे. रघुनाथ झा के समर्थकों ने एक दिलचस्प नारा ईजाद कर लिया था—'दिल्ली में विश्वनाथ, पटना में रघुनाथ'.

बंद दरवाजे में हो रही बैठक पूरी तरह संयत थी. जनता दल के पांच विधान परिषद सदस्यों समेत सभी विधायकों में पर्ची बांटी गई और उनसे अपने पसंदीदा उम्मीदवार का नाम लिखकर उसे मंच पर रखे बक्से में डालने को कहा गया. अंततः बताया गया कि चुनाव वास्तव में आम सहमति से होगा. व्यवस्था यह की गई कि बहुमत पाने वाले को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया जाएगा, और बाकी दो उम्मीदवारों में से एक, नेता के नाम का प्रस्ताव रखेगा तथा दूसरा उसका अनुमोदन करेगा.

विधायक दल की बैठक में जद विधायक

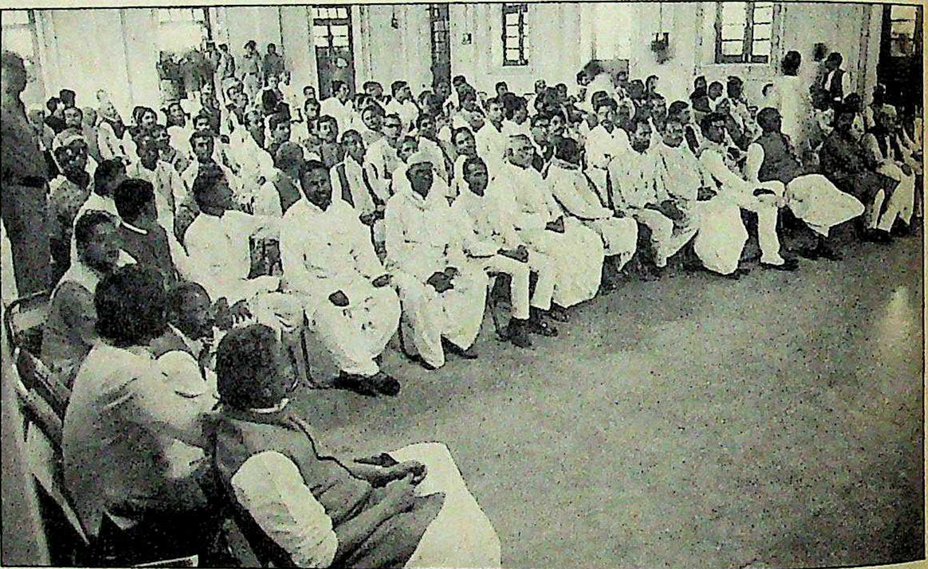

चुनाव के नतीजे की घोषणा में करीब घंटे भर का समय लग गया. इसके बाद रामसुंदर दास को लालू यादव के नाम का प्रस्ताव रखने को कहा गया. इस तरह राज्य के नए मुख्यमंत्री का फैसला हो गया.

इसके बाद राज्य में पहली दफा किसी नए मुख्यमंत्री ने चौराहे पर शपथ ग्रहण समारोह कराने का फैसला किया. पटना के गांधी मैदान के पास जयप्रकाश नारायण की मूर्ति के नीचे उन्होंने शपथ ली. 15 मिनट तक चले इस आयोजन को देखने के लिए करीब 5 हजार लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी. लेकिन भीड़ में उत्साह की कमी ही दिखी. इस आयोजन में निवर्तमान मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र और जनता दल के नेता रामसुंदर दास, रघुनाथ झा तथा दूसरे लोग उपस्थित थे. शपथ ग्रहण के तुरंत बाद नए मुख्यमंत्री ने जेपी तथा कर्पूरी ठाकुर के घर जाकर उनकी तस्वीरों पर माल्यार्पण किया.

नए मुख्यमंत्री के सामने सबसे बड़ी चुनौती है अपने विधायकों के साथ-साथ जनता का विश्वास भी हासिल करना. दरअसल, सरकार चलाने की उनकी क्षमता पर किसी को यकीन नहीं है. और तो और, लोग अगले मध्यावधि चुनाव की अटकलें लगाने लगे हैं. इन अटकलों को इस खबर से बल मिला है कि ऊंची जातियों के करीब 50 विधायक अभी भी इस नतीजे को पचा नहीं पा रहे हैं. नेता के चुनाव के बाद उसी रात उनकी कई बैठकें हुई जिनमें गरमागरम बहस का मुद्दा था कि मंत्रिमंडल में शामिल हुआ जाए या नहीं. इसके अलावा जाहिर है कि इन बैठकों में भविष्य की रणनीति पर भी बातचीत हुई. रघुनाथ झा के एक समर्थक ने कुछ संदिग्ध अंदाज में कहा, "कुछ दिन इंतजार कीजिए. शायद केंद्र की राष्ट्रीय मोर्चा सरकार भी गिर जाए."

वैसे, लालू यादव खुद उसी रात अपने प्रतिद्वंद्वियों के घर-घर जाकर तमाम उठा-पटक को शांत करने में लगे रहे. उन्होंने दूसरे दलों के नेताओं से भी मिलकर उनका समर्थन हासिल किया. उसके बाद उन्होंने राज्यपाल से मिलकर सरकार बनाने का दावा पेश किया. लेकिन लगता है अफसरशाही को भी इस अपेक्षाकृत नए नेता पर भरोसा नहीं है. उसे डर है कि नए मुख्यमंत्री मनमाने ढंग से कामकाज करेंगे.

लालू राज्य में पांच साल में पांचवें मुख्यमंत्री बने हैं. और अफवाह उठने लगी है कि जल्दी ही छठवां मुख्यमंत्री भी शपथ लेगा

जनता दल को समर्थन देने वाली दूसरी पार्टियों को भी लालू यादव के नेता चुने जाने पर आपत्तियां हैं. वैसे, भाजपा के प्रवक्ता ने कहा कि यह जनता दल को तय करना है कि वह किस तरह का नेता चाहता है. लेकिन दूसरी पार्टियों में लालू यादव के चुने जाने से इतनी घबराहट है कि सरकार में उनके शामिल होने की संभावना काफी कम हो गई है..

यही नहीं, लालू यादव को विरासत में राज्य का खाली खजाना भी मिला है. इसके अलावा राज्य सरकार के कर्मचारियों ने फिर बेमियादी हड़ताल की धमकी दी है. इस तरह उन्हें खुद अपने चुनावी वादों और पूर्ववर्ती जगन्नाथ मिश्र सरकार के वादों के बीच संतुलन बिठाने में भी लोहे के चने चबाने पड़ेंगे. और इन सबके अलावा उन्हें अपनी छवि को भी सुधारना होगा. उन्हें हुड़दंगी और अपराधियों से सांठ-गांठ रखने वाला माना जाता रहा है.

नए नेता को लेकर कई चुटकले भी चल पड़े हैं. यानी लालू प्रसाद यादव अपने राजनैतिक जीवन के सबसे कठिन इम्तहान के दौर में हैं. यह दौर उन्हें बना भी सकता है और मिटा भी सकता है.

—उत्तम सेनगुप्त

महाराष्ट्र

कायम रखी सूबेदारी

भाजपा-शिवसेना गठजोड़ को शरद पवार की मात

महाराष्ट्र के गोलमटोल मुख्यमंत्री शरद पवार राजीव गांधी और पार्टी आलाकमान की अहंकारी छाया से खुद को बचा लेने में सफल रहे. और यह काम उन्होंने बेहद नाटकीय परिस्थितियों में कर दिखाया. दूसरे राज्यों के इंकाई मुख्यमंत्री तो जनता दल और भाजपा की लहर में बह गए परंतु पवार महाराष्ट्र में बह रही इंका विरोधी लहर को रोकने में सफल रहे. उनकी पार्टी को विधानसभा की 288 में से 141 सीटों पर विजय हासिल हुई और वे 10 विद्रोही इंका उम्मीदवारों के समर्थन से सरकार बनाने में कामयाब हुए.

इंका को पिछली विधानसभा के मुकाबले इस बार 70 सीटें कम मिल पाईं लेकिन पवार की छवि एक त्राणदाता के रूप में उभरी. पार्टी के गढ़ों में भाजपा-शिवसेना गठजोड़ ने सेंध लगा दी थी, परंतु भगवा ध्वज लेकर चलने वाली सेनाएं घुसपैठ करने में कामयाब नहीं हुईं. किसी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला, लेकिन इंका अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी भाजपा-शिवसेना गठजोड़ से काफी आगे रही. पवार को निर्दलीय उम्मीदवारों का समर्थन हासिल करने में कोई परेशानी नहीं हुई और वे राज्य की सत्ता में बरकरार रहे.

वर्षों से पवार की हसरत रही थी कि उनकी हैसियत एक मजबूत, प्रभावशाली प्रादेशिक बॉस की हो जिसे आलाकमान महज एक अदना सूबेदार न समझे. यह हसरत अंततः इस चुनाव में पूरी हो गई है. शेतकरी संघटना के नेता शरद जोशी ने ठीक ही कहा, "महाराष्ट्र की पहचान राजीव गांधी से कहीं ज्यादा शरद पवार से होती है. और इस मायने में पवार की यह निजी जीत है."

यह बात नवनिर्वाचित विधायकों के पार्टी के बंबई स्थित कार्यालय विधान भवन में पहुंचने से पहले ही स्पष्ट हो चुकी थी. इस बार बैठक में केंद्रीय पर्यवेक्षकों की उपस्थिति महज रस्म बनकर रह गई. इसमें कोई संदेह नहीं रह गया था कि मुख्यमंत्री किसे होना है. और यह भी एकदम स्पष्ट था कि अपने मंत्रियों का चयन भी पवार को खुद ही करना है.

राजभवन में जब वे तीन अन्य मंत्रियों के साथ शपथ ग्रहण करने पहुंचे तो वहां भारी भीड़ जुटी हुई थी. और रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (आरपीआई) के आठवले गुट के दलित नेता रामदास आठवले को मंत्री बनाया जाना ही सबसे बड़ी आश्चर्यजनक घटना थी. विधानसभा चुनावों में आरपीआई का इंका से गठजोड़ था. हालांकि वह एक भी सीट नहीं पा सकी. लेकिन पवार चुनाव से पूर्व किए गए वादे को निभाने से पीछे नहीं हटे. उनकी नजर इंका के लिए दलितों का समर्थन पुख्ता करने पर भी है. उनकी सरकार के पास महज छह सीटों का ही बहुमत है इसलिए पवार को किसी अचानक गड़बड़ी को टालने के लिए पूरा कौशल दिखाना होगा.

हालांकि पवार की व्यवहार कुशलता इस अफवाह को शांत नहीं कर पाई कि भाजपा-शिवसेना गठजोड़ इंका के एक बड़े नेता और 40 विधायकों को तोड़ सकता है. सदन में पहली बार विपक्ष के नेता बनने वाले शिवसेना विधायक मनोहर जोशी ने कहा, "यह अस्थायी सरकार है. अंदरूनी मतभेदों के चलते अच्छी खासी संख्या में लोग इंका छोड़ देंगे." शिवसेना प्रमुख बाल

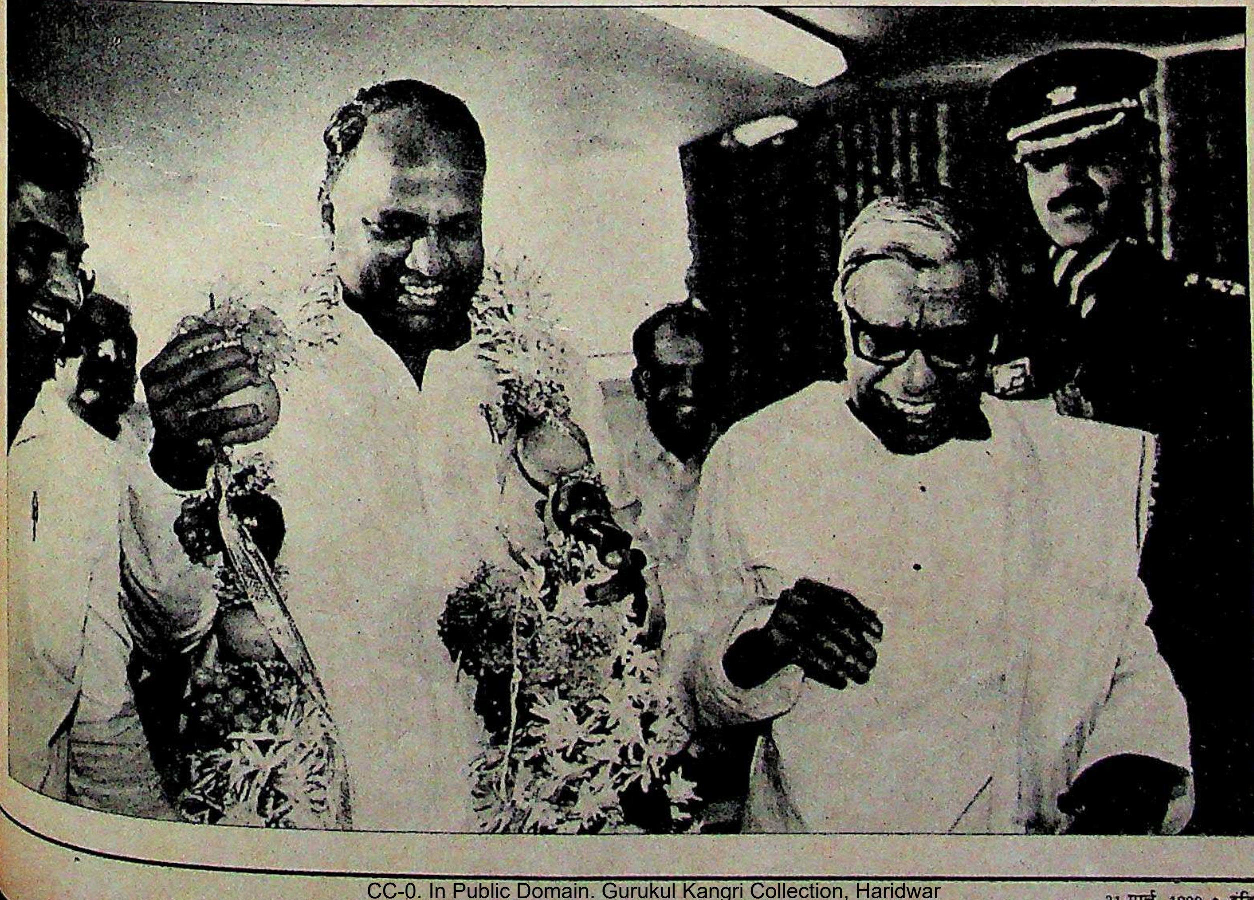

राज्यपाल सुब्रह्मण्यम (दाएं) के साथ शरद पवार: नाजुक बहुमत

नामस भोजानी

नामस भोजानी

भाजपा नेता प्रमोद महाजन (बाएं) और बाल ठाकरे

ठाकरे ने तो भविष्यवाणी ही कर दी कि नई विधानसभा की बैठक के पहले ही दिन पवार को विपक्ष में बैठना पड़ जाएगा.

लेकिन ज्यादातर इंकाई नेता ठाकरे की भविष्यवाणी की खिल्ली उड़ाते हैं. उनका कहना है कि सिर्फ एक विद्रोही इंका विधायक रायभान जाधव ही अभी भी सरकार गिराने की बात कर रहे हैं. बंबई इंका अध्यक्ष मुरली देवड़ा का मानना है, "ऐसा कुछ नहीं होगा. टिकट बंटवारे के समय भी पवार ने पार्टी के हर हिस्से को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया था. और अब भी वे ऐसा ही कर रहे हैं." पवार का कहना है कि उनकी सरकार स्थायी होगी और अपना कार्यकाल पूरा करेगी.

पवार ने बरसात के पहले ही पंचायतों और जिला परिषदों के चुनाव कराने का वादा किया है. हालांकि शिवसेना के प्रभुत्व वाले बंबई नगर निगम के चुनाव मानसून के बाद होंगे. इसकी अवधि 31 मार्च को खत्म हो रही है. इसके लिए बहाना यह बनेगा कि गर्मी की छुट्टियों में बहुत सारे लोग शहर से बाहर चले जाते हैं.

लेकिन असली वजह कुछ और ही है. इंका को बृहन्मुंबई नगरपालिका के चुनावों में भी हार झेलनी पड़ी थी. उसे बंबई की 34 सीटों में से सिर्फ 9 सीटें ही मिलीं जबकि शिवसेना 15 और भाजपा 9 सीटें झटक ले गई. मुस्लिम लीग ने भी एक सीट पाकर कई सालों के बाद अपनी जीत दर्ज की. देवड़ा ने इस हार की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेने और अध्यक्ष पद से हटने की पेशकश की. उधर, प्रदेश इंका अध्यक्ष एन.एम. कांबले पहले ही मंत्रिमंडल में ले लिए गए हैं. इसलिए लगता है कि पवार आखिरकार इन दोनों महत्वपूर्ण पदों पर अपने लोगों को बैठा देंगे.

ठाकरे चुनाव के पहले लगातार यह कहते रहे कि विधान भवन के ऊपर भगवा ध्वज लहराएगा. लेकिन उनकी पार्टी सफलता की दर 28 फीसदी से कुछ ही ऊपर रही जबकि भाजपा की दर 40 फीसदी रही. इका के 53 फीसदी उम्मीदवार सफल रहे. वहीं जनता दल 15 फीसदी सफलता पाकर चौथे स्थान पर रहा.

पवार ने कहा, "महाराष्ट्र के लोगों ने दिखा दिया कि वे कट्टरवादी ताकतों का समर्थन नही करेंगे." जनता दल की नेता मृणाल गोरे भी कुछ ऐसा ही विचार रखती हैं. उन्होंने कहा, "लोगों ने नागनाथ की जगह सांपनाथ को चुना." हालांकि इंका का प्रदर्शन हाल के लोकसभा चुनावों के मुकाबले बदतर रहा. उस समय वह 162 विधानसभाई हलकों में आगे रही थी.

अब पवार को ताकतवर इंकाई सूबेदार की हैसियत बरकरार रखने के लिए अपने राजनैतिक कौशल का ही परिचय नहीं देना होगा बल्कि पार्टी की खोई हैसियत भी बहाल करनी होगी.

—एम. रहमान

गुजरात

सहयोग से साध पूरी

जनता दल

चिमनभाई मुख्यमंत्री तो बने पर शंकाएं कायम

सोलह वर्षों के लंबे इंतजार के बाद पिछले पखवाड़े चिमनभाई पटेल के मन की मुरादें फिर पूरी हो गईं. 1974 में नवनिर्माण आंदोलन के चलते उन्हें बेआबरू होकर मुख्यमंत्री की गद्दी से हाथ धोना पड़ा था. तब उन्होंने कसम खाई थी कि सत्ता में लौटकर रहेंगे.

182 सदस्यीय विधानसभा के चुनाव में जनता दल और भाजपा ने इंका को गुजरात के चुनावी इतिहास का सबसे भयंकर झटका दिया. 100 से भी ज्यादा सीटों पर तिकोने मुकाबलों के बावजूद जनता दल की 70 और भाजपा की 67 सीटों के मुकाबले इंका महज 33 स्थान ही बटोर पाई. भाजपा के निमंत्रण पर चुनाव लड़ने वाले पूर्व मुख्यमंत्री बाबूभाई पटेल समेत 12 निर्दलीय उम्मीदवार भी विजयी रहे.

जीत का सेहरा बांधे चिमनभाई पटेल ने मुख्यमंत्री पद की शपथ ली और भाजपा नेता केशुभाई पटेल को उपमुख्यमंत्री बनाया गया. पर सत्ता की इस मंजिल पर पहुंचना इतना सहज नहीं रहा. दोनों पार्टियां स्पष्ट बहुमत से बहुत नीचे रहीं. तीन सीटें ज्यादा होने से चिमनभाई का दावा मजबूत था.

फिर भी उनके रास्ते में दो बड़ी बाधाए थीं. एक तो भाजपा का चिमनभाई के प्रति कड़ा रवैया आड़े आ रहा था. पार्टी के वरिष्ठ नेता अटलबिहारी वाजपेयी ने तो चुनाव प्रचार में उन्हें दुर्योधन तक की संज्ञा दे डाली थी. दूसरी अड़चन भाजपा के सहयोगी बाबूभाई पटेल थे.

विधानसभा चुनाव परिणामों की स्थिति साफ होते ही चिंतित चिमनभाई ने तत्काल

चिमनभाई पटेल (बाएं) और केशुभाई पटेल: अविश्वास कायम

गौतम त्रिपाठी

जीवन के रंग नेस्कैफ़े के संग
NESCAFÉ
SELECT
दुनिया की मनपसंद कॉफ़ी

सुहाना जादुई आभास.

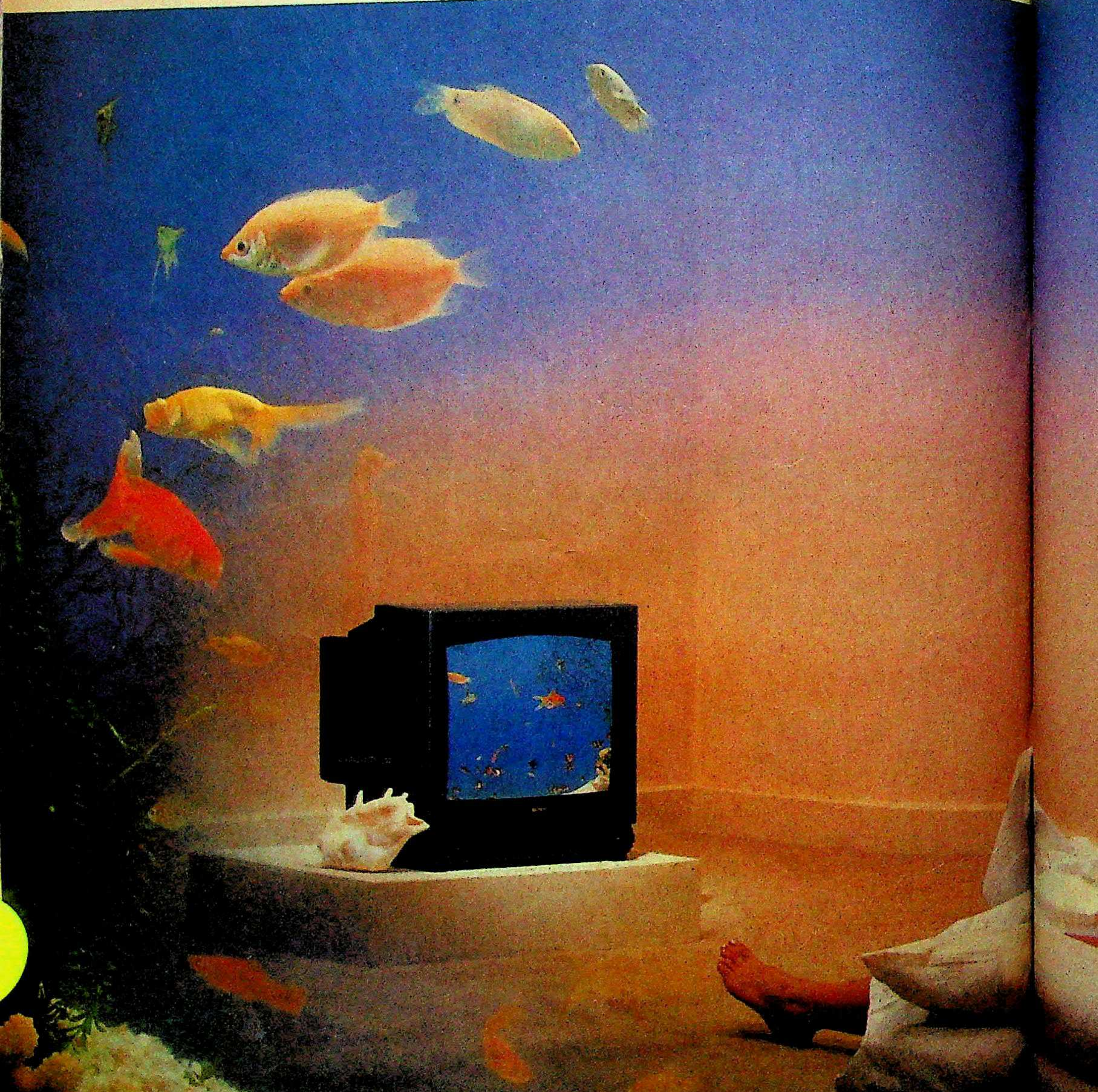

The latest Feel-the-Picture Colour TV. CTV 4002: • 53 cms (21") • Dual System PAL/NTSC • Full Function DOCKABLE Remote Control • Electronic Search Tuning • On-screen D Time Clock with

Routes/BHN-16A

• On-screen Di Time Clock with ON & OFF TIMER • COMB FILTER to eliminate Cross Colour • Auto Shut-Off • AV IN & AV OUT • Stereo Sound • 2-way 4 Speaker System • 28 Watts PMPO.

BUSH TV एक जीवंत एहसास.

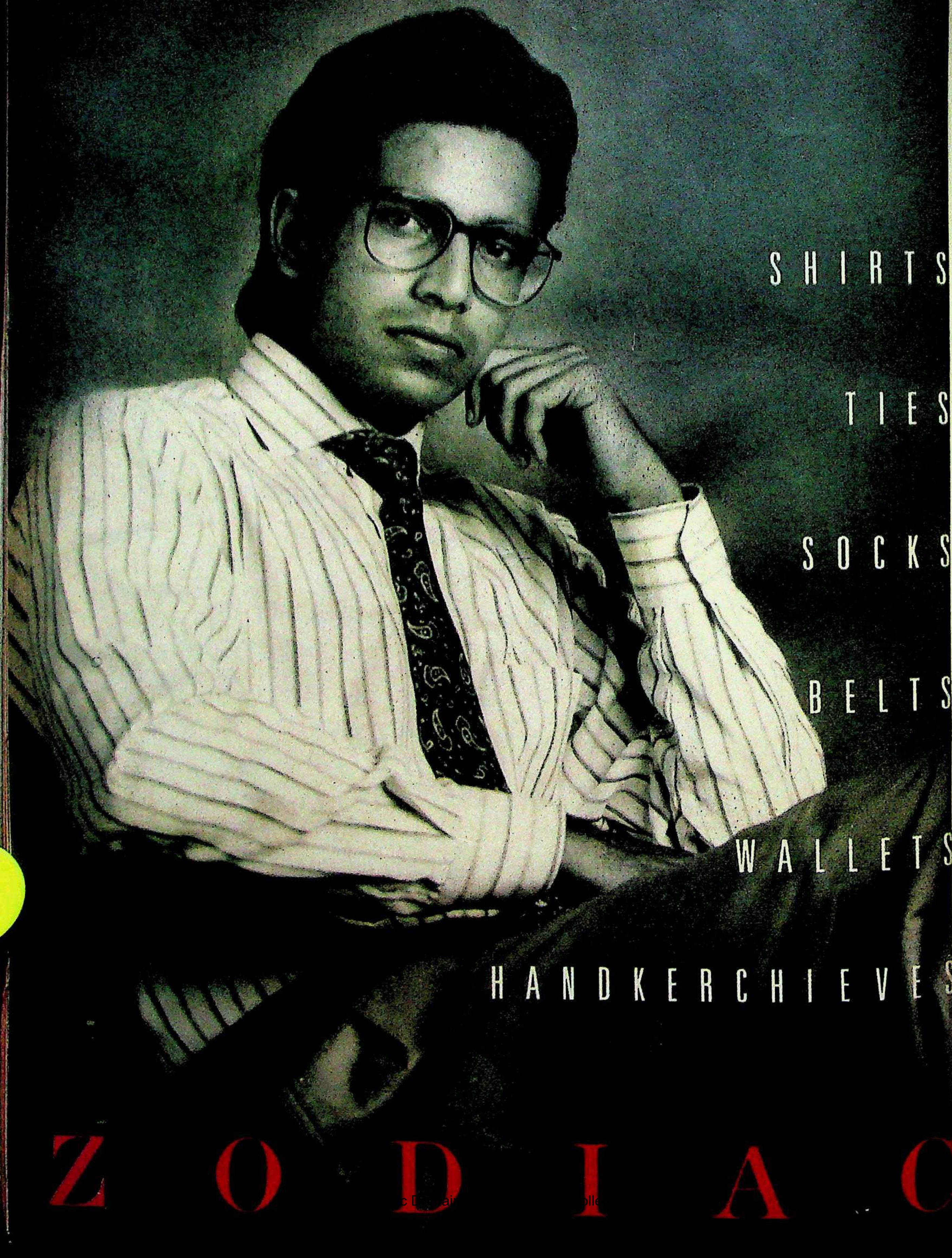
SHIRTS
TIES
SOCKS
BELTS
WALLETS
HANDKERCHIEVES
ZODIAC

चुना

एक चि
'सहयोग'
ने भी
निर्दलीय
इंका वि
गुजारिश
बनने की
फेरना
को ठुक
भाज
केशुभाई
के बाद
आई.
को इस
कि उ
मुख्यमं
उध

वि
ओडीसा
ही सुना
के नेतृ
राज्य
सीटें जी
जनता
सीटें आ
किसी
एक
व्यक्ति
जिसका
आने
ऊंचा
उन
दूसरे
थे. जा
नेतृत्व
चूं-चपड़
यहां के
नायक
जताने
अपने 7
नेतृत्व
किया.
शौकत
भवन
राज
विधाय
विधान
बनने
प्रदेश
मुख्यमं
अपनी
मंत्रियों
विडं

एक चिट्ठी में भाजपा से सरकार बनाने में 'सहयोग' मांगा. दूसरी ओर, बाबूभाई पटेल ने भी भाजपा, जनता दल और बाकी निर्दलीय विधायकों को चिट्ठी लिखकर सभी इंका विरोधी ताकतों की सरकार बनाने की गुजारिश की. इसका साफ मकसद मुख्यमंत्री बनने की चिमनभाई की कोशिशों पर पानी फेरना था. लेकिन जनता दल ने इस सुझाव को ठुकरा दिया.

भाजपा नेताओं शंकर सिंह वाघेला और केशुभाई पटेल से चिमनभाई की मुलाकात के बाद ही राह थोड़ी आसान होती नजर आई. भाजपा ने सिद्धांत रूप में चिमनभाई को इस शर्त पर समर्थन देना मंजूर किया कि उनके साथ केशुभाई को भी उपमुख्यमंत्री पद की शपथ दिलाई ज़ाएगी.

उधर, राज्य के चुनावी जातीय समीकरण भी 10 वर्षों बाद फिर पुरानी स्थिति में पहुंच गए हैं. 1980 में इंका के माधव सिंह सोलंकी मुख्यमंत्री की कुर्सी पर पहुंचने वाले पिछड़ी जातियों के पहले नेता हुए. सोलंकी और पार्टी के वरिष्ठ नेता झीनाभाई दरजी ने खाम (क्षत्रिय, हरिजन, आदिवासी, मुस्लिम) सिद्धांत लाकर पिछड़ी जातियों में पार्टी का आधार मजबूत बनाया. 1985 के चुनाव में इंका ने इसी आधार को भुनाया भी. अब इंका विरोधी लहर ने खाम सिद्धांत को पूरी तरह नाकारा बना दिया है.

लेकिन यह अस्थायी दौर भी साबित हो सकता है. मुख्यमंत्री और उपमुख्यमंत्री के पटेल होने की वजह से 'पटेल सरकार' का ठप्पा लगने के अलावा नई सरकार की हिंदू समर्थक छवि बनने का भी अंदेशा है. वजह यह कि न तो जनता दल में और न ही भाजपा में कोई मुस्लिम विधायक है.

साझा सरकार में निहित विरोधाभासों के बावजूद (भाजपा उस व्यक्ति को समर्थन दे रही है जिसके खिलाफ उसने प्रचार किया था) चिमनभाई और केशुभाई ने न्यूनतम कार्य योजना तैयार करने का फैसला किया है. संवाददाताओं के सामने उन्होंने वादा किया कि "हमने एक-दूसरे में पूर्ण विश्वास व्यक्त किया है तथा हम स्थायी और कुशल सरकार देने के लिए मिलजुलकर काम करेंगे."

लेकिन चूनाव प्रचार के दौरान एक-दूसरे की जड़ें काटने की कोशिशें जिस तरह चली थीं उनके मद्देनजर शंकाओं के बादल छंटने में अभी वक्त लगेगा.

—उदय माहूरकर

ओडीसा

अपार बहुमत

पटनायक का कद और ऊंचा हुआ

जनता दल

ईस्टर्न प्रेस एजेंसी

बीजू पटनायक: विपक्ष धराशायी

विधानसभा चुनावों में सबसे साफ फैसला ओडीसा के मतदाताओं ने ही सुनाया. यहां जनता दल के नेतृत्व वाले गठबंधन ने राज्य की 147 में से 129 सीटें जीती जिनमें से अकेले जनता दल के हिस्से 123 सीटें आईं. इस जीत का श्रेय किसी पार्टी को नहीं बल्कि एक व्यक्ति को है. यह व्यक्ति है बीजू पटनायक जिसका कद चुनाव परिणाम आने के बाद कहीं और ऊंचा हो गया है.

उनकी शख्सियत के आगे दूसरे राजनेता बौने दिख रहे थे. जाहिर है, ओडीसा में नेतृत्व के सवाल पर कोई चूं-चपड़ नहीं होनी थी. उलटे यहां के विधायक तो पटनायक के प्रति अपनी निष्ठा जताने की होड़ मचाने लगे थे. पटनायक ने अपने 75वें जन्म दिवस, 5 मार्च को उनका नेतृत्व स्वीकार करके उन्हें 'उपकृत' भी किया. शपथ ग्रहण समारोह भी पूरे शानोशौकत के साथ हुआ. इस मौके पर राजभवन के दरवाजे सबके लिए खोल दिए गए.

राज्य की विपक्षी पार्टी इंका के सिर्फ 10 विधायक ही जीत पाए हैं, जिससे वह विधानसभा में मान्यताप्राप्त विपक्षी पार्टी बनने की स्थिति में भी नहीं रह गई है. प्रदेश इंका अध्यक्ष नंदिनी सत्पथी और पूर्व मुख्यमंत्री हेमनंद बिस्वाल तो किसी तरह अपनी सीट बचा गए परंतु 26 कांग्रेसी मंत्रियों को पराजय का मुंह देखना पड़ा.

साफ फैसला सुनाने के बाद मतदाता अब पटनायक से अच्छे कामों की उम्मीद करेंगे ही. उन्होंने पहल न की तो मुश्किलें शुरू हो सकती हैं

विडंबना यह है कि पटनायक को किसी भी तरफ से—न पार्टी के अंदर से और न ही बाहर से—चुनौती न मिल पाना ही शायद अंततः नुकसानदेह साबित हो. जनता दल को विधानसभा में अपार बहुमत मिला है जिससे उसे सरकार चलाने में कोई परेशानी नहीं होगी. पूर्व मंत्री और जनता दल के प्रमुख नेता बंका बिहारी दास कहते हैं, "चिता की बात यह है कि क्या यह सरकार जवाबदेह बन पाएगी."

लेकिन फिलहाल पटनायक को कई ठोस समस्याओं से निबटना है. उन्हें एक ऐसे मंत्रिमंडल का गठन करना है जिससे पार्टी के सभी गुट खुश हों. विधायकों के तीन गुट हैं—उनके पक्के समर्थक, समाजवादी और जनमोर्चा से आए लोग. कहते हैं कि पटनायक ने अपने करीबी लोगों से कहा है कि "बहुमत ने उलझन में डाल दिया है."

वैसे, लगता नहीं कि अगले कुछ समय तक जनता दल का कोई नेता उन्हें चुनौती देने की हिम्मत करेगा. इस चुनाव में दल के वे उम्मीदवार पराजित हो गए हैं जिन्हें पटनायक का 'आशीर्वाद' नहीं मिला था. ऐसे लोगों में त्रिलोचन कानूनगो और गुलापी बेहरा प्रमुख हैं. ओडिया दैनिक 'प्रगतिवादी' के प्रबंध संपादक रबि दास कहते हैं, "विडंबना यह है कि सभी पटनायक के चेले हैं, कोई उनका दोस्त या सहयोगी नहीं है. इसलिए सामूहिक नेतृत्व उभर ही नहीं सकता." अनेक लोगों को अंदेशा है कि सिर्फ

चेले और चापलूसी करने वालों से घिरे रहने के कारण पटनायक के भीतर का तानाशाह कहीं उग्र न हो जाए.

वैसे, इन परिस्थितियों के अपने फायदे भी हैं. पार्टी की ताकत के सहारे पटनायक राज्य की मुश्किलों से अधिक अच्छी तरह निबट सकते हैं. राज्य पर कुल कर्ज 3366.90 करोड़ रु. का है, यहां प्रति व्यक्ति आय 529 रु. से गिरकर 512 रु. हो गई है, प्रति व्यक्ति उपभोक्ता खर्च न्यूनतम बिंदु पर है, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की दर गिरकर 1.2 फीसदी रह गई है. इन आर्थिक मुश्किलों से निबटने के साथ ही पटनायक को चुनावी वादे भी पूरे करने होंगे जिनमें 10,000 रुपए तक के कृषि ऋण माफ करना और राज्य में इस्पात का दूसरा सबसे बड़ा संयंत्र लगाना शामिल है.

हो सकता है कि चुनाव प्रचार के गर्द में मुद्दे छिप गए हों और व्यक्तित्व ही प्रमुख हो गए हों पर चुनावी गर्द बैठने के बाद मतदाता अब सरकार से अच्छे कामों की उम्मीद करेंगे. इसलिए सही पहल करने का मौका पटनायक के हाथ है. अगर उन्होंने देरी की तो स्थिति काबू के बाहर हो जाएगी. जनता दल के एक विधायक कहते हैं, "बीजू बाबू इस सरकार के दिल और दिमाग हैं. बाकी सभी को तो दर्शक भर कहा जा सकता है." और अभी अगर ओडीसा की जनता दल सरकार ने थोड़ी भी ढील की तो पटनायक के लिए मुश्किलें शुरू हो जाएंगी. फिर जिनसे आज उन्हें वाह-वाही मिल रही है, कल वे लोग ही उनकी आलोचना शुरू कर देंगे.

—रुबेन बनर्जी

मध्य प्रदेश

पकड़ मजबूत

लेकिन नेता के चुनाव में अनुशासन खंडित

पिछले पूरे दशक भर से भारतीय जनता पार्टी हरेक राजनैतिक पार्टी की ईर्ष्या का केंद्र रही है. दूसरी पार्टियों में बार-बार दलबदल, विभाजन और अंदरूनी लड़ाइयां जैसी समस्याएं सिर उठाती रही हैं, लेकिन भाजपा अनुशासन के लौह आवरण में अभी तक इन सबसे अछूती, साबुत बची रही है.

लेकिन पिछले पखवाड़े मध्य प्रदेश में सत्ता संभालने के मौके पर इस अखंडित अनुशासन में कुछ दरारें दिखीं. मुख्यमंत्री पद के दावेदार रहे भाजपा के वरिष्ठ नेता कैलाश जोशी ने राज्य सरकार में शामिल होने से इनकार कर दिया. और राज्य मंत्रिमंडल का गठन दो दिन रुका रहा.

इंका खेमे में इस अनुशासित पार्टी के संकट से खुशी छा गई. एक पार्टी नेता ने कहा, "यह तो ऐसा ही है मानो पड़ोस की पतिव्रता वास्तविक जीवन में किसी के भी साथ सोने को तैयार बैठी हो."

पर, इस समय तो भाजपा दरारें पाटने में सफल हो गई है. इंका की कार्यशैली की याद दिलाने वाले अंदाज में खुद जोशी ने पार्टी अध्यक्ष सुंदरलाल पटवा का नाम विधायक दल के नेता के लिए प्रस्तावित किया. पार्टी निर्णय को सिर माथे लेते हुए, जोशी ने कहा, "मैं सरकार में इसलिए शामिल नहीं हो रहा हूं क्योंकि मैं बाहर रहकर सरकार चलाना चाहता हूं."

लेकिन यह बात स्पष्ट थी कि पार्टी ने जिस तरह नेता के रूप में पटवा का चुनाव किया, उससे जोशी सरासर नाखुश थे. यहां तक कि पार्टी विधायक दल की बैठक में पटवा का चुनाव भी औपचारिकता भर रहा. भाजपा आलाकमान ने तो विधायक दल की बैठक से तीन दिन पहले ही नई दिल्ली में एक संवाददाता सम्मेलन में पटवा के नाम पर सहमति जता दी थी. नवनिर्वाचित 220 विधायकों का इतना ही काम था कि वे इस पर मुहर लगा दें.

वैसे, योग्यता के मामले में पटवा जोशी पर भारी ही पड़ते हैं. पटवा विधानसभा के लिए छह बार चुनाव जीत चुके हैं और 1980 में जनता सरकार के आखिरी दिनों में कुछ समय के लिए मुख्यमंत्री भी रह चुके हैं. और पिछले पांच वर्षों में उनके ही नेतृत्व में भाजपा का संगठनात्मक ढांचा विस्तार पाने के साथ-साथ मजबूत भी होता गया है. उनके पक्ष में एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि उन्हें पार्टी उपाध्यक्ष विजयाराजे सिंधिया, उनके राजनैतिक सलाहकार सरदार आंग्रे और कुशाभाऊ ठाकरे का समर्थन प्राप्त है. यही गुट प्रदेश भाजपा का माई-बाप है. पटवा अर्जुन सिंह के मुख्यमंत्रित्व काल में उनके करीबी माने जाते थे. यहां तक कि उन्हें "अर्जुन सिंह मंत्रिमंडल का 40वां सदस्य" भी कहा जाता था. बावजूद इसके प्रदेश भाजपा में हावी गुट ने उन्हें समर्थन दिया.

उनके प्रतिद्वंद्वी जोशी की छवि मध्य प्रदेश में सबसे ईमानदार नेता की है. लेकिन जो बात इस दफा उनके खिलाफ गई, वह थी 14 वर्ष पूर्व राज्य के मुख्यमंत्री के रूप में उनकी कार्यशैली. उच्च पद का बोझ संभाल पाने में असफल, बागली गांव के सीधे-सादे ब्राह्मण, जोशी अक्सर लंबी नींद तान लेते थे. कभी-कभी वे 36 घंटों की नींद लेते. डॉक्टरों के अनुसार, ऐसी आदत असल

> **भाजपा के अखंडित अनुशासन में कुछ दरारें दिखीं. पार्टी ने जिस तरह नेता के रूप में पटवा का चुनाव किया, उससे जोशी सरासर नाखुश थे**

प्रकाश हत्वालने

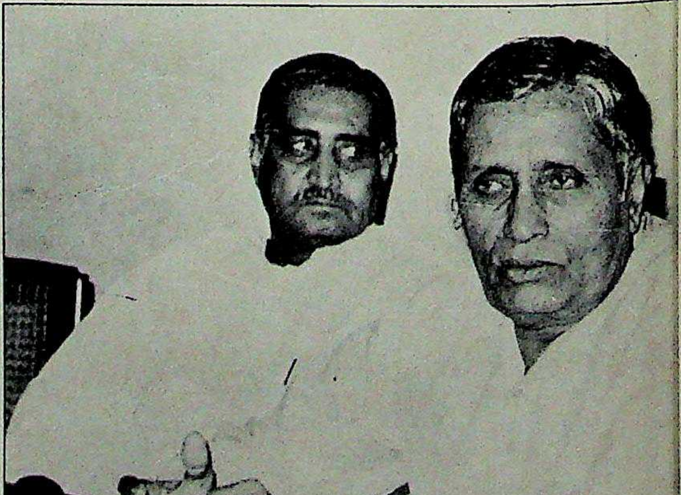

जोशी (बाएं) और पटवा: भीतर-भीतर असंतोष

न्होंने
हो
कहते
और
भर
अगर
थोड़ी
श्किलें
वाह-
उनकी
बनर्जी

नेतृत्व
स्तार
या है.
यह है
राजे
हकार
का
। का
मुख्य-
ते थे.
मंडल
था.
ुट ने

मध्य
किन
, वह
रूप
बोझ
व के
नींद
नींद
असल

अपने मनपसंद कॉरफ़ोम गद्दे खरीदिये और

THE '90s

Corfom

MEGA BONANZA

में भाग लीजिए और

आकर्षक इनाम जीतिए

हर खरीद के साथ उपहार

मुफ्त
- 620 रु. कीमत का एक आकर्षक TransAsia 6' x 3' 100% ऊनी कारपेट
- 100/- से 300/- रु. तक नकद छूट
- और इसके साथ आप प्राप्त करेंगे अन्य उत्पादों पर छूट के कूपन

मासिक प्रतियोगिताएं

प्रथम पुरस्कार	(एक)	रु. 5000/-
द्वितीय पुरस्कार	(दो)	रु. 2500/- प्रत्येक
तृतीय पुरस्कार	(तीन)	रु. 1000/- प्रत्येक
सान्त्वना पुरस्कार	(बीस)	रु. 250/- प्रत्येक

जितनी जल्दी आप गद्दे खरीदेंगे उतनी ही ज्यादा प्रतियोगिताओं में भाग ले सकेंगे।

एक ही प्रविष्टी सभी प्रतियोगिताओं के लिये प्रयोग की जायेगी

मेगा प्रतियोगिता

प्रथम पुरस्कार (एक)
Contessa Classic 1·8 GL

द्वितीय पुरस्कार (दो)
ESCORTS YAMAHA RX100
मोटर साईकिलें

तृतीय पुरस्कार (तीन)
SALORA
कलर टी.वी. रिमोट के साथ

प्रश्न तालिका व एन्टाईटिलमेन्ट फार्म, खजाना कार्ड के साथ तुरन्त भेजिए और आकर्षक इनामों के हकदार बनिये।

●

एक फार्म हर गद्दे के साथ संलग्न है

चतुर्थ पुरस्कार (चार)
वीडियो कैसेट प्लेयर्स

विशेष पुरस्कार
LADY TOUCH
21 कुक एण्ड ग्रिल

पंचम पुरस्कार (पांच)
165 लि.
रेफ्रिजरेटरस्

सान्त्वना पुरस्कार पांच सौ एक अन्य आकर्षक उपहार

कॉरफ़ोम-
सम्पूर्ण उत्तरी व पश्चिमी
भारत में विदेशी मशीनों
पर बने एकमात्र गद्दे

अधिक जानकारी के लिए अपने निकटतम डीलर से सम्पर्क करें अथवा हमें लिखें

क्वायरफ़ोम (इंडिया) प्रा. लि.
4 ई/7, झंडेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली- 110055 फोन : 529662, 529638, 6844796, 6844797

Trends/1866

कॉरफ़ोम-उपभोक्ता संरक्षण के प्रणेता

में जिम्मेदारी से पलायन का बहाना भर होती है. और सचमुच यह अंदाज सही निकला, क्योंकि उनकी जगह उनसे अधिक योग्य लेकिन भ्रष्ट माने जाने वाले वीरेंद्र कुमार सकलेचा को लाया गया तो उनकी रहस्यमय बीमारी खुद-ब-खुद गायब हो गई.

लेकिन पिछले अनुभव से खौफ खाए बिना जोशी इस बार भी अपना दावा जाहिर करने लगे. नतीजा स्पष्ट होने पर भी जोशी नाउम्मीद नहीं थे. अंततः उन्होंने विधायक दल के नेतृत्व के लिए पटवा का नाम तो प्रस्तावित कर दिया लेकिन भाजपा अध्यक्ष लालकृष्ण आडवाणी के संवाददाता सम्मेलन से उठकर चले गए और पटवा के शपथ ग्रहण के समय भी नदारद रहे.

बाद में अनेक अनुरोधों के बावजूद वे सरकार में शामिल नहीं होने के निर्णय पर अटल रहे और पार्टी को मंत्रिमंडल के गठन की पूर्वनिर्धारित तिथि 5 मार्च स्थगित करनी पड़ी. परिणाम यह हुआ कि राज्य में पहली भाजपा सरकार के शपथ ग्रहण करने का सार्वजनिक समारोह फीका पड़ गया. उस दिन केवल पटवा शपथ ले सके.

अब ये बातें पुरानी पड़ गई हैं. और शासन की बागडोर पटवा के हाथों में है. जितना भारी बहुमत लेकर भाजपा आई है, वह संकेत है कि लोगों की उम्मीदें बढ़ी हैं. और अगर पटवा अपने चुनावी वादों को पूरा नहीं कर पाते हैं तो रुख पलट भी सकता है.

—नरेंद्र कुमार सिंह

राजस्थान

चुनौतियां बेहिसाब

मुख्यमंत्री शेखावत आत्मविश्वास से भरपूर

भैरों सिंह शेखावत आत्मविश्वास से भरे दिखते हैं. अपनी पार्टी के चुनावी सहयोगी जनता दल में चली आंतरिक कलह के कारण बिगड़े माहौल से भी राजस्थान के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री विचलित नहीं हुए. वे इस बात को भी ध्यान में रख रहे हैं कि भाजपा में उनके नेतृत्व को लेकर विरोध की स्थिति उत्पन्न न हो.

बिलाशक, शेखावत की पकड़ मजबूत है. मुख्यमंत्री पद संभालने के बाद पहला काम उन्होंने यह किया कि भाजपा में अपने प्रतिद्वंद्वी ललित किशोर चतुर्वेदी को मंत्रिमंडल में चौथे नंबर की कुर्सी पर बिठाया. दूसरा स्थान उन्होंने अपने करीबी भंवरलाल शर्मा और तीसरा जनता दल के नत्थी सिंह को दिया. बाद में पत्रकार सम्मेलन में उन्होंने केंद्रीय खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति-मंत्री नाथूराम मिर्धा के इस अनुरोध की पूरी तरह अनदेखी कर दी कि नई योजनाओं के अलावा छोटे किसानों के कर्जों की माफी का एलान किया जाए. इसके बजाए शेखावत ने भाजपा के चुनाव घोषणापत्र में किए गए वादों पर विस्तार से चर्चा की. जोधपुर से निर्वाचित सांसद जसवंत सिंह ने कहा, "शेखावत सक्षम व्यक्ति हैं. वे राज्य में साझा सरकार के बावजूद इसे निर्विघ्न चला पाने की क्षमता रखते हैं."

अगर शेखावत आत्मविश्वास जताने लगे हैं तो इसकी ठोस वजह भी है. विधानसभा चुनावों में जनता दल के मुकाबले भाजपा ने कहीं बेहतर कामयाबी हासिल की है. लोकसभा चुनावों के बाद अब भाजपा ने 85 सीटें लेकर केवल 11 विधानसभा क्षेत्र खोए जबकि जनता दल ने 24 ऐसे क्षेत्र खो दिए और वे भी ज्यादातर इंका के हाथों.

200 विधानसभा सीटों के लिए हुए चुनावों में 160 सीटों पर जनता दल और भाजपा का तालमेल था जबकि 40 सीटों पर तिकोना संघर्ष हुआ. अपने खाते में आई 80 सीटों में से भाजपा 62 में विजयी रही. लेकिन तिकोने मुकाबले वाली 23 सीटें हथियाकर उसने सभी को हैरत में डाल दिया. दूसरी ओर, जनता दल अपने खाते की 80 सीटों में से महज 48 ही जीत पाया जबकि तिकोने संघर्ष वाली 40 सीटों में से उसे केवल छह ही हाथ लगीं. दरअसल, पार्टी विधायकों की पहली बैठक में जनता दल नेता प्रो. केदार शर्मा ने माना कि पार्टी का प्रदर्शन बहुत ही निराशाजनक रहा है.

शेखावत ने जनता दल से मंत्रिमंडल के लिए अपने लोगों का नाम देने को कहकर भले ही शुरुआती मुश्किलों पर काबू पा लिया है पर आने वाले दिनों में जनता दल की आंतरिक कलह उनकी सरकार के लिए परेशानी खड़ी कर सकती है. उधर, कृषि क्षेत्र को प्राथमिकता दिए जाने के सवाल पर भी सीधे टकराव की संभावना है.

बहरहाल, विधानसभा में शेखावत के लिए इंका ही परेशानी की मुख्य वजह बनी रहेगी. पूर्व मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने अशोक गहलोत की अगुआई वाले प्रतिद्वंद्वी गुट और उनके युवा समर्थकों का दबदबा घटाकर प्रदेश इंका पर अपनी पकड़ मजबूत कर ली है. और फिर, विपक्ष में जोशी,

RADIO
CENTRE
AIR

मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद शेखावत

शरद सक्सेना

अगर आज आपके हाथ में कुछ पैसे हैं...

तो कल आपकी परिवार की खुशी में उनका हाथ होने दीजिए.

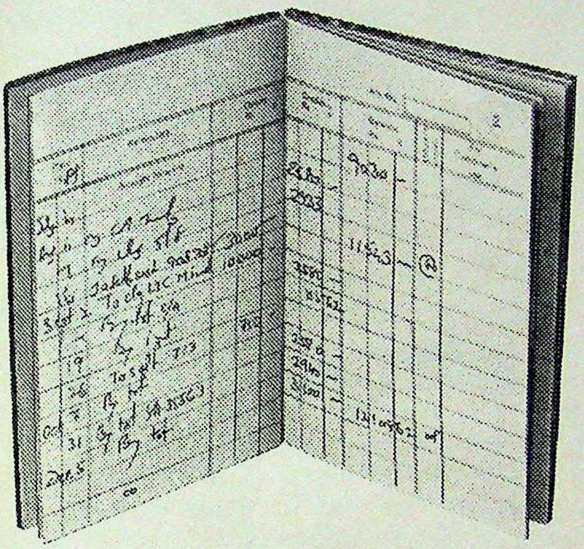

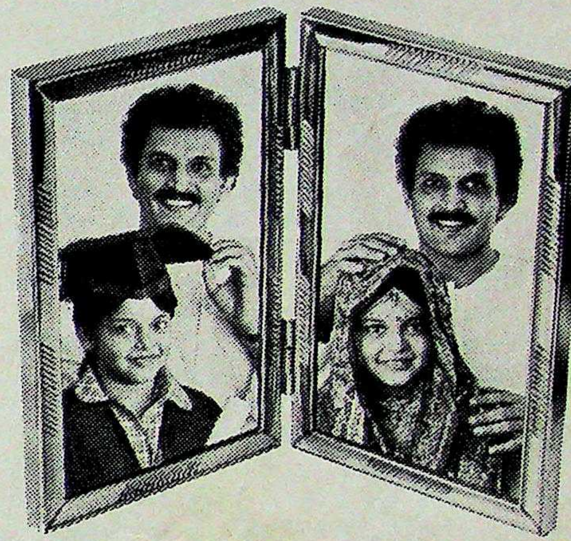

धनवृद्धि

आपकी पूंजी को दुगुने या तिगुने से ज़्यादा बनाए
आपका परिवार अनोखे जीवन बीमे की सुरक्षा पाए.*

आजकल, पैसा बचाना बहुत मुश्किल हो गया है. हां, कहीं से एक साथ बड़ी रक़म मिल जाए तो बात अलग है. बोनस, भविष्य निधि, ग्रेच्युइटी या पेंशन के ज़रिए, या फिर सावधि जमा की अवधि पूरी होने पर बड़ी रकम मिल सकती है. तब आप ऐसे निवेश की तलाश करते हैं जो ज़्यादा लाभ दे, पूरी सुरक्षा के साथ.

आप धनवृद्धि पर भरोसा कर सकते हैं

धनवृद्धि में आप कितनी भी राशि लगा सकते हैं (न्यूनतम राशि रु. 1000/- होगी). इसमें से कुछ अंश जीवन बीमे का लाभ देने के लिए लगाया जाता है. बकाया राशि की रु. 10/- प्रति यूनिट सममूल्य पर धनवृद्धि यूनिटें दी जाती हैं. यूनिटों पर 12% न्यूनतम लाभांश की गारंटी है. लाभांश अधिक भी हो सकता है. लाभांश का फिर निवेश कर दिया जाता है और सात साल में आपका पैसा दुगुने से ज़्यादा हो जाता है. दस वर्षीय योजना में आपका पैसा तिगुने से ज़्यादा हो जाता है.

आपके परिवार के लिए बढ़ते हुए बीमे की सुरक्षा

दुर्भाग्य से यदि आपको कुछ हो जाए तो आपके परिवार को यूनिटों का मूल्य नकद चुकाया जाएगा. साथ ही जीवन बीमे की एक ख़ास एकमुश्त राशि भी मिलेगी. इतना ही नहीं, दूसरे वर्ष के प्रारंभ से छठे वर्ष तक में बीमा हर साल 10% बढ़ता है. इसके अलावा दुर्घटना बीमा भी मुफ़्त उपलब्ध होता है.

निवेश की सभी राशियां सेंट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया की निर्धारित शाखाओं में ही भरनी होंगी.

अधिक जानकारी के लिए जीवन बीमा निगम की किसी भी शाखा से या जीवन बीमा निगम सहयोग निधि के किसी भी एजेंट से संपर्क करें.

* बीमे पर खर्च होने वाली राशि आयु के अनुसार बदलेगी. जीवन बीमा और दुर्घटना बीमा संबंधी उचित प्रतिबंध लागू होंगे. जीवन बीमे के लाभ की अधिकतम सीमा रु. 60,000 होगी. एक से अधिक निवेश भी किए जा सकते हैं. धारा 80L के अंतर्गत आयकर में तथा धारा 5 के अंतर्गत संपत्ति कर में रियायत मिलेगी. धनवृद्धि यूनिटें बीमे की सुविधा के बिना भी उपलब्ध हैं.

यदि आपकी जीवन बीमा पॉलिसी की अवधि पूरी होनेवाली हो तो आप जीवन बीमा निगम को यह प्राधिकार दे सकते हैं कि आपकी पॉलिसी से मिलनेवाली रकम वह जीवन बीमा निगम सहयोग निधि की किसी योजना में लगा दे.

जीवन बीमा निगम सहयोग निधि
आपके उद्देश्य की पूर्ति — हमारा ध्येय
17, मेकर चेम्बर्स, III, नरीमन पॉइंट, बंबई 400 021.

R K SWAMY/LMF/4701/HN

शिवचरण माथुर, हीरालाल देवपुरा और जगन्नाथ पहाड़िया जैसे दिग्गज इंका नेताओं के रहने से शेखावत की दिक्कतों में इजाफा ही होगा. अतीत में भी शेखावत इंका पर दमदार आक्रमण करने में सक्षम पार्टीजनों की कमी झेल चुके हैं. और इस बार तो अधिकतर वरिष्ठ भाजपा नेताओं के संसद में चुने जाने से उनको यह लड़ाई अकेले ही लड़नी पड़ेगी.

चुनौतियां बेहिसाब हैं. शेखावत ने शुरुआत नौकरशाही से की है. उन्होंने ऐसे अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई किए जाने की घोषणा की है, जिन्होंने पिछली सरकार को चुनाव से पहले 400 करोड़ रु. की लुभावनी रियायतें देने की सलाह दी थी. राज्य की निगरानी संस्था लोकायुक्त को पुनर्गठित करने और मुख्यमंत्री पद को भी उसके जांच दायरे में लाने की घोषणा उन्होंने की है. आर्थिक मोर्चे पर, राज्य के 500 करोड़ रु. के घाटे में कमी के कोई लक्षण नहीं दिखते. संसाधन-शून्य इस रेगिस्तानी राज्य की आर्थिक स्थिति को पटरी पर लाने के लिए बहुत दूरंदेशी कदम उठाने होंगे. इन चुनौतियों के बावजूद शेखावत उत्साह से भरे हैं. वे कहते हैं, "हम ऐसा शासन देंगे जिससे प्रदेश की जनता हमेशा के लिए इंका को भूल जाएगी."

इस बीच, भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व ने पार्टी के अन्य नेताओं के विरोध की अनदेखी करके शेखावत को राज्य का शासन प्रभावशाली तरीके से संभालने के लिए खुली छूट दे दी है. लेकिन उन्हें सावधानी बरतने की भी हिदायत दी गई है. अपनी सुपरिचित काव्यात्मक शैली में भाजपा नेता अटलबिहारी वाजपेयी ने राज्य के विधायकों से कहा, "अब तो काम दिखाना होगा, वरना घर वापस जाना होगा." शेखावत और उनकी टीम को यह नसीहत गांठ बांध लेनी होगी.

—पंकज पचौरी, जयपुर में

हिमाचल प्रदेश

सामर्थ्य की परीक्षा

भाजपा सरकार अपनी जड़ें जमाने को तैयार

संस्कृत में शपथ लेकर, हिमाचल प्रदेश को धार्मिक पर्यटन के केंद्र के रूप में विकसित करने का वादा करके और अपने मंत्रिमंडल में पहाड़ी क्षेत्र को प्रतिनिधित्व न देकर नए मुख्यमंत्री शांता कुमार ने साफ कर दिया है कि उनकी पार्टी—भाजपा—राज्य में अपनी जड़ें खूब मजबूत करना चाहती है. 68 सदस्यों वाली विधानसभा में 44 सीटों का भारी बहुमत पाने वाली भाजपा इस इरादे में जरूर कामयाब होगी. चुनाव में ज्यादातर इंका नेताओं के पांव उखड़ गए हैं. यह भी भाजपा के लिए अनुकूल ही साबित होगा.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक, और अध्यापक रह चुके शांता कुमार जानते हैं कि पहाड़ी क्षेत्र को, जो ज्यादातर इंका नेताओं को कामयाबी दिलाता रहा है, कोई अहमियत न देकर वे राज्य में इंका को कमरतोड़ झटका दे सकते हैं.

इस समृद्ध और प्रभावशाली पहाड़ी क्षेत्र की उपेक्षा करने के अलावा नई सरकार ने परंपरा से हटकर एक और काम किया. जीत के बाद उसने विख्यात रिज पर अपनी पहली सभा की. रिज पर अब तक केवल प्रधानमंत्री की सभा होती रही है. इस विजय सभा को फिल्म अभिनेता शत्रुघ्न सिन्हा के अलावा और कई लोगों ने संबोधित किया. गिनती के इंका विधायकों ने रिज के दुरुपयोग के विरोध में शपथ ग्रहण समारोह का बहिष्कार किया.

शपथ ग्रहण करते शांता कुमार

पीटीआई

करारी हार और टूटे मनोबल के बोझ से दबी इंका और कुछ कर भी नहीं सकती थी. नवंबर में हुए लोकसभा चुनावों में यह पार्टी 20 विधानसभा क्षेत्रों में आगे रही थी. इस बार यह सिर्फ आठ विधानसभा सीटें ही जीत पाई. लेकिन उसे सबसे करारा झटका जुब्बल कोटखई में लगा जहां मुख्यमंत्री वीरभद्र सिंह जनता दल के रामलाल से हार गए. हालांकि वे रोहड़ू से जीत गए लेकिन हार से उबरने में उन्हें थोड़ा वक्त लगेगा.

शांता कुमार ने अपनी प्राथमिकताएं तय कर ली हैं. पहले वे नौकरशाही को सुधारना चाहते हैं. वे बताते हैं, "अधिकारियों ने हमें चुनाव के लिए चंदा देने की पेशकश की थी. लेकिन हमने अपनी स्थानीय इकाइयों को आगाह कर दिया था कि इस तरह का चंदा न लें. नौकरशाही के ऐसे राजनीतिकरण को हम खत्म कर देना चाहते हैं."

शांता कुमार की योजना निजी उद्यमियों को बिजली उत्पादन के लिए आमंत्रित करने की भी है. वे उस प्रशासनिक पंचाट को भी हटा देना चाहते हैं जिसके तहत सरकारी अधिकारी किसी ऊंची अदालत में अपील नहीं कर सकते. विधानसभा में आए 23 नए चेहरों ने मुख्यमंत्री को राज्य की युवा शक्ति की महत्ता का एहसास करा दिया है. इसी युवा शक्ति का उपयोग वे पर्यटन उद्योग की कुछ विशेष योजनाओं में करना चाहते हैं. लेकिन इस तरह की योजनाओं का क्रियान्वयन मुश्किल ही होगा क्योंकि राज्य फिलहाल 175 करोड़ रु. का घाटा उठा रहा है और इसकी वार्षिक योजना सिर्फ 300 करोड़ रु. की है.

राजनैतिक मोर्चे पर 11 विधायकों वाला जनता दल शांता कुमार के लिए किसी तरह की चुनौती नहीं है. अलबत्ता इसके प्रदेश अध्यक्ष विजय सिंह मनकोटिया जरूर उनके लिए परेशानी खड़ी कर सकते हैं. मजबूत विपक्ष के अभाव में मुख्यमंत्री के अपने ही विधायक उनके लिए मुश्किल पैदा कर सकते हैं. उन्हें खुश करने की कोशिश में शांता कुमार ने अपने कट्टर प्रतिद्वंद्वी जगदेव चंद को राज्य में दूसरा महत्वपूर्ण दर्जा दे दिया है. लेकिन पार्टी की राज्य शाखा के महासचिव राधारमण शास्त्री को ऐसा कोई उपहार नहीं मिला. नाराज शास्त्री शपथ ग्रहण समारोह से बाहर ही रहे.

लेकिन नए मुख्यमंत्री के सामने सबसे बड़ी चुनौती इस पिछड़े और उपेक्षित राज्य की बेहिसाब समस्याएं हैं. इन्हें सुलझाने की मुख्यमंत्री की सामर्थ्य ही तय करेगी कि इस पद पर वे कब तक टिकेंगे.

—पंकज पचौरी

आंध्र प्रदेश

बुद्ध की जल समाधि

● यह एक महत्वाकांक्षी योजना का दुखद अंत ही था. भगवान बुद्ध की 15.17 मीटर ऊंची, 300 टन वजनी प्रतिमा को ले जा रही नौका पिछले पखवाड़े हैदराबाद की हुसैनसागर झील में उलट गई. हादसे में आठ लोगों की मौत के साथ ही 5.7 करोड़ रु. की इस योजना पर सही मायने में पानी फिर गया. इस प्रतिमा को झील में रॉक ऑफ जिब्राल्टर पर स्थापित करने के लिए खास तौर पर बनाई गई चपटे तल की नौका में ले जाया जा रहा था. नौका ने अभी तट छोड़ा ही था कि उलट गई.

ए. प्रभाकर राव

मूर्ति का आधारस्तंभ

सफेद ग्रेनाइट की यह प्रतिमा दुनिया में बुद्ध की सबसे ऊंची प्रतिमा है. शहर से 50 किमी दूर रायगीर के नजदीक एक खदान में तैयार की गई यह मूर्ति आंध्र प्रदेश और तमिलनाडु के 150 कुशल शिल्पियों की मेहनत का फल है. प्रतिमा की लागत तो कुल 60 लाख रु. ही आई लेकिन पानी में इसके लिए आधारस्तंभ तैयार करने पर 2.32 करोड़ रु. खर्च आया. इसे ढो कर ले जाने और रॉक पर स्थापित करने का जिम्मा असम-बंगाल कैरियर को सौंपा गया. इस पर 1.71 करोड़ रु. का खर्च बैठा. मूर्ति को रायगीर से शहर तक लाने के लिए सरकार ने पुलों और सड़कों को मजबूत करने पर 37 लाख रु. खर्च किए.

इस भारी-भरकम योजना के प्रति, जिसके सूत्रधार पूर्व मुख्यमंत्री एन.टी. रामराव थे, नई सरकार ने बेरुखी ही दिखाई. और अब यही लगता है कि भगवान बुद्ध ने जल समाधि ले ली है.

महाराष्ट्र

शिवसेना की धौंसबाजी

एस. वर्नेकर/टाइम्स ऑफ इंडिया

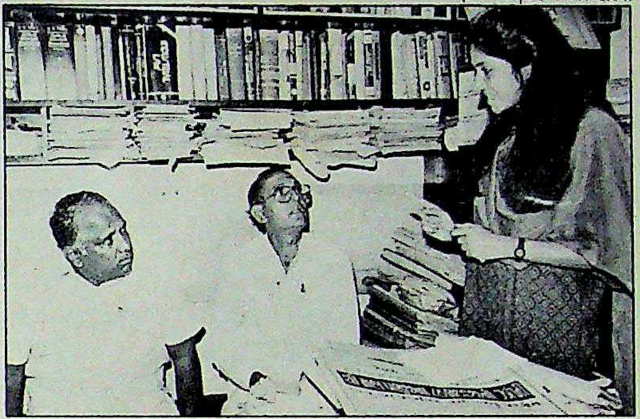

पवार, वाशी और पारुल; एकजुट

● शिवसेना की धौंसबाजी का यह ताजा नमूना है. पिछले पखवाड़े एक रात शिवसेना के सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने बंबई के वकील और जनता दल नेता एम.पी. वाशी के फ्लैट का घेराव किया. उनकी वकील बेटी पारुल के साथ भी दुर्व्यवहार किया गया.

घर के एकदम नजदीक मौजूद थाने से मदद के लिए की गई गुहारों पर कोई कार्रवाई नहीं की गई तो वाशी ने महाधिवक्ता अरविंद बोबडे को फोन किया. तब उन्होंने एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी से वाशी की मदद के लिए एक स्थानीय इंस्पेक्टर भेजने को कहा.

शिवसेना सदस्यों के आक्रोश की वजह यह थी कि वाशी सेना के खिलाफ नौ चुनाव याचिकाएं दायर करने जा रहे थे. उन्होंने 1987 में बंबई के पूर्व महापौर और शिवसेना सदस्य रमेश प्रभु के विधानसभा में निर्वाचन को बंबई हाईकोर्ट से इस आधार पर रद्द करवा दिया था कि रमेश प्रभु का चुनाव प्रचार सांप्रदायिक था.

सेना के उन्माद और पुलिस की निष्क्रियता से बावेला ही मच गया. यहां तक कि मुख्यमंत्री शरद पवार ने वाशी के घर जाकर उन्हें आश्वासन दिया कि शिवसेना की उद्दंडता और पुलिस के पक्षपाती व्यवहार की जांच कराएंगे और इसमें राजनैतिक आग्रहों को दरकिनार किया जाएगा. नगर जनता दल के सचिव प्रद्युम्न बधेका ने कहा, "यदि पुलिस इस आधार पर कार्रवाई शुरू करे कि कौन हिंदुत्व के पक्ष में है, कौन नहीं तो फिर तो सब जगह अराजकता ही फैल जाएगी."

तमिलनाडु

करुणानिधि की करुणा

● तमिलनाडु की शरणार्थी समस्या उस समय अनोखे मोड़ पर पहुंच गई जब त्रिकोमाली से 700 तमिलों को ला रहे जहाज 'हर्षवर्धन' को मद्रास बंदरगाह पर शरणार्थियों को उतारने की इजाजत नहीं दी गई. बताया जाता है कि ये शरणार्थी तमिल मुक्ति चीतों (एलटीटीई) के प्रतिद्वंद्वियों के समर्थक थे. अब तक एलटीटीई के समर्थकों को राज्य सरकार मंडपम और कोट्टापट्टु के शिविरों में पनाह देती रही थी.

बंदरगाह के अधिकारियों ने मामले पर टिप्पणी करने से इनकार करते हुए बस इतना ही बताया कि शरणार्थियों में से किसी के पास जरूरी कागजात नहीं थे. इस बीच जहाज ओडीसा की ओर मुड़ गया जहां तमिलों को अस्थायी तौर पर बसाया जाएगा.

एलटीटीई के प्रतिद्वंद्वी गुटों, खासकर ईपीआरएलएफ के समर्थकों का कहना है कि तमिलनाडु सरकार और भारत सरकार दोनों ने तमिलों की ओर से पीठ फेर ली है—सिवाय उन तमिलों के जो एलटीटीई के समर्थक हैं. तमिल शरणार्थियों के प्रति यह उदासीनता एलटीटीई के प्रति मुख्यमंत्री करुणानिधि की उदारता के आरोप की ही पुष्टि करती है.

मध्य प्रदेश

ताऊ का तमाशा

● यह जाना-पहचाना तथ्य है कि मध्य प्रदेश जनता दल के नेता विद्याचरण शुक्ल पर उनकी पार्टी के पूर्व समाजवादी नेता निशाना साधते रहे हैं. लेकिन यह किसी ने भी नहीं सोचा था कि महासमुंद के इस सांसद को नई दिल्ली में अपना सरकारी बंगला देवीलाल के कारण खाली करना पड़ेगा. जहां वे अपने आपको सबसे निश्चित मान रहे थे, वही जगह उनसे छिन गई और यह भी किसी समाजवादी के चलते नहीं, पुराने कांग्रेसी के चलते.

ताऊ को उप-प्रधानमंत्री पद की शोभा के अनुरूप ही बंगला चाहिए था. उन्हें 1, वेलिंगडन क्रीसेंट वाला बंगला ही भा गया. सो, उन्होंने इसके निवासी विद्याचरण शुक्ल को बुला भेजा और उनके सामने रोना रोया कि वे बड़े बंगले की कब से तलाश कर रहे हैं मगर मिल नहीं रहा. शुक्ल इशारा समझ गए और अपना बंगला उनके लिए छोड़ देने की पेशकश की.

शुक्लाः बंगला छिना

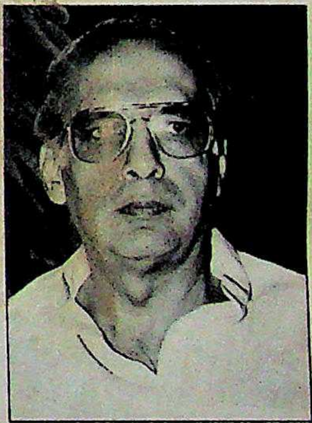

इसके तत्काल बाद शुक्ल को तुगलक रोड पर एक बंगला दे दिया गया. लेकिन शुक्ल को नए बंगले की सजावट के लिए कुछ वक्त चाहिए था. सजावट के बाद ही वे देवीलाल के लिए बंगला खाली कर पाते.

लेकिन ताऊ के सहायकों ने रोज-रोज शुक्ल के घर के चक्कर लगाने शुरू कर दिए. यह देखने के लिए कि घर खाली हुआ या नहीं. यही नहीं, उन्होंने शुक्ल की मौजूदगी में ही दीवारों पर नया रोगन लगाने के लिए पुराने रोगन की परतें उखाड़नी शुरू कर दीं. अब शुक्ल के सामने घर छोड़ने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया था.

सभी फोटो प्रमोद पुष्करणा

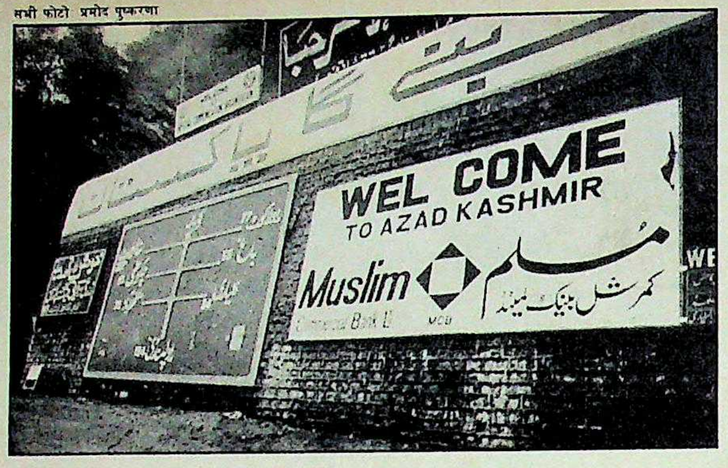
WEL COME
TO AZAD KASHMIR
Muslim
مسلم
کمرشل بینک لمیٹڈ
MCB

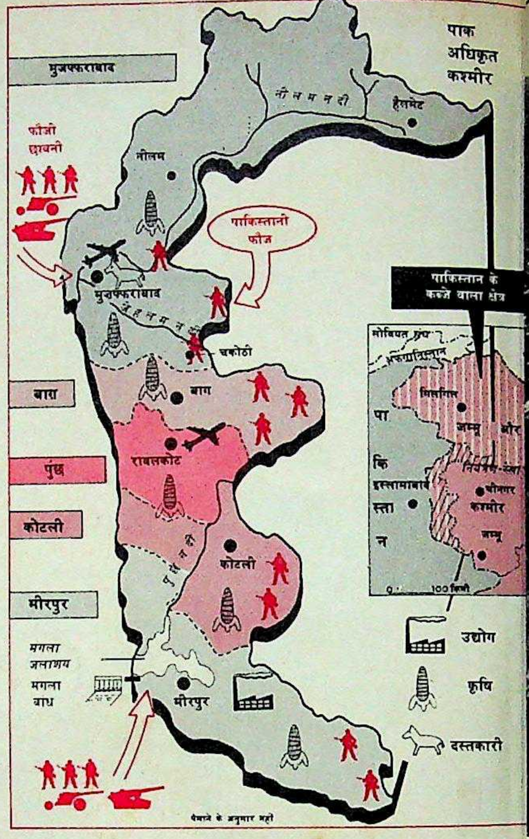
पाक अधिकृत कश्मीर
मुजफ्फराबाद
फौजी छावनी
नीलम नदी
हैसमेट
नीलम
पाकिस्तानी फौज
मुजफ्फराबाद
झेलम नदी
चकोठी
पाकिस्तान के कब्जे वाला क्षेत्र
सोवियत संघ
अफगानिस्तान
गिलगित
जम्मू और
पाकिस्तान
इस्लामाबाद
नियंत्रण-रेखा
श्रीनगर
कश्मीर
जम्मू
0 100 किमी
बाग
बाग
पुंछ
रावलकोट
कोटली
कोटली
मीरपुर
मगला जलाशय
मगला बांध
मीरपुर
उद्योग
कृषि
दस्तकारी
पैमाने के अनुसार नहीं

पाक अधिकृत कश्मीर

उपेक्षा का नरक, उन्माद का स्वर्ग

शहरों-गांवों-कस्बों में भारत विरोधी लहर

पाकिस्तान इसे आजाद कश्मीर कहता है. भारत इसे पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर करार देता है. श्रीनगर घाटी में हिंसा की लपटें तेज हुईं तो यह विवादास्पद क्षेत्र अचानक जाग उठा और उन्मादपूर्ण भारत विरोधी गतिविधि का मुख्य केंद्र बन गया.

कश्मीर का यह दूसरा भाग कैसा है? वहां लोगों के मंसूबे कितने गहरे हैं? पाकिस्तानी प्रचार के मुताबिक क्या यह सचमुच स्वर्ग है?

नाजुक क्षेत्र होने के कारण पाकिस्तानी कब्जे वाला कश्मीर भारतीयों के लिए हमेशा प्रतिबंधित रहा है. पिछले पखवाड़े 'इंडिया टुडे' ने प्रमुख संवाददाता ***कंवर संधू*** *और छायाकार* ***प्रमोद पुष्करणा*** *को वहां भेजने के लिए अनुमति हासिल की. 25 लाख की आबादी वाले इस इलाके का दौरा करने वाले ये दोनों पहले भारतीय पत्रकार हैं.*

संधू और पुष्करणा ने उन इलाकों का दौरा किया जहां किसी भारतीय ने कभी कदम नहीं रखा था. संधू की रिपोर्ट:

किसी भारतीय के लिए 'आजाद कश्मीर' की यात्रा करने का यह माकूल समय नहीं है. यहां भारत से जुड़ी हर चीज को दुश्मनी और नफरत की निगाह से देखा जाता है. बहरहाल, हमने 'आजाद कश्मीर' के सदर सरदार अब्दुल कयूम से वहां की यात्रा की इजाजत मांगी जो तुरंत मिल गई. यही नहीं, उन्होंने एक सरकारी सुरक्षा दस्ता भी हमारे साथ कर दिया. हमें बहुत ताज्जुब हुआ क्योंकि हमारी यात्रा में वे इलाके भी शामिल थे जहां 1947 के बाद से कोई भारतीय नहीं गया, कम-से-कम अधिकृत तौर पर तो नहीं ही.

कोहाला से पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में घुसते ही एकदम स्पष्ट हो जाता है कि यह इलाका किस कदर कट्टरपंथी उन्माद में जकड़ा हुआ है. इस्लामी हरे रंग में बड़े-बड़े अक्षरों में लिखे नारे 'कश्मीर बनेगा पाकिस्तान' के सामने 'आजाद कश्मीर में आपका स्वागत है' बौना लगता है.

'आजाद कश्मीर' की राजधानी मुजफ्फराबाद तक आते-आते चारों ओर दीवारों पर उत्तेजक नारे और पोस्टर दिखाई देने लगते हैं. मसलन, "दुख्तरे कश्मीर के पैरों की जंजीरें काटने की घड़ी आ पहुंची है."

मुजफ्फराबाद कश्मीर लिबरेशन सेल का मुख्यालय भी है. इसे "कश्मीरियों के आत्म-निर्णय के आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए 1987 में बनाया गया था. संघीय और पाक अधिकृत कश्मीर सरकार से इसे सालाना 50 लाख रु. मिलते हैं.

मीरपुर शहर में तो और भी ज्यादा उन्माद है. धार्मिक राजनैतिक गतिविधि के केंद्र शहीदां चौक का चप्पा-चप्पा भारत विरोधी नारों और पोस्टरों से अटा पड़ा है. कुछ पोस्टरों में शिमला समझौते को कोसा गया है तो कुछ में शेख अब्दुल्ला परिवार को. अभी हाल तक इस इलाके में भारतीय फिल्मों के गाने लोकप्रिय थे. लेकिन कट्टरवाद बढ़ने और कश्मीर को 'मुक्त कराने' के आह्वान से अब नए गाने चल पड़े हैं. फिलहाल, पाक अधिकृत कश्मीर में सबसे लोकप्रिय कैसेट 'कश्मीर से आती है सदा' है जो हर जगह उपलब्ध है. इसके शुरुआती बोल हैं: अल्ला हो अकबर/मर्दे मुजाहिद/मर्दे खुदा/तलवार उठा/मैदान में आ.

यहां के गांवों और पुरवों में भारत विरोधी जुलूस निकालना रोजमर्रा का काम हो गया है. इनमें विश्वनाथ प्रताप सिंह के पुतले जलाए जाते हैं या लाठियों से पीटे जाते हैं. युवा छात्र तख्तियां और बैनर लिये गलियों में घूमते हैं और कश्मीर की मुक्ति के नाम पर 'जेहाद फंड' मांगते हैं. लोग अपनी औकात के अनुसार चंदा देते भी हैं. यही नहीं, हर जुमे को दोपहर की नमाज के बाद जेहाद छेड़ने की जरूरत के बारे में भड़काऊ तकरीरें की जाती हैं.

पाक अधिकृत कश्मीर में भारतीय होना अहितकर है जबकि सिख होना फायदेमंद. 'आजाद कश्मीर' के लोग मुसलमानों को दोस्त और हिंदुओं को दुश्मन मानते हैं. सिखों की स्थिति इन दोनों के बीच की है. पंजाब के मौजूदा हालात के मद्देनजर अब उन्हें अपना

पाक
अधिकृत
कश्मीर
जम्मू और
श्रीनगर
कश्मीर
जम्मू
उद्योग
कृषि
दस्तकारी

को कोसा
परिवार
भारतीय
कट्टरवाद
कराने' के
पड़े हैं.
में सबसे
है सदा' है
शुरुआती
ाहिद/मर्दे

में भारत
का काम
सिंह के
पीटे जाते
नर लिये
मुक्ति के
ोग अपनी
यही नहीं,
ाद जेहाद
ऊ तकरीरें

तीय होना
फायदेमंद.
मानों को
हैं. सिखों
पंजाब के
न्हें अपना

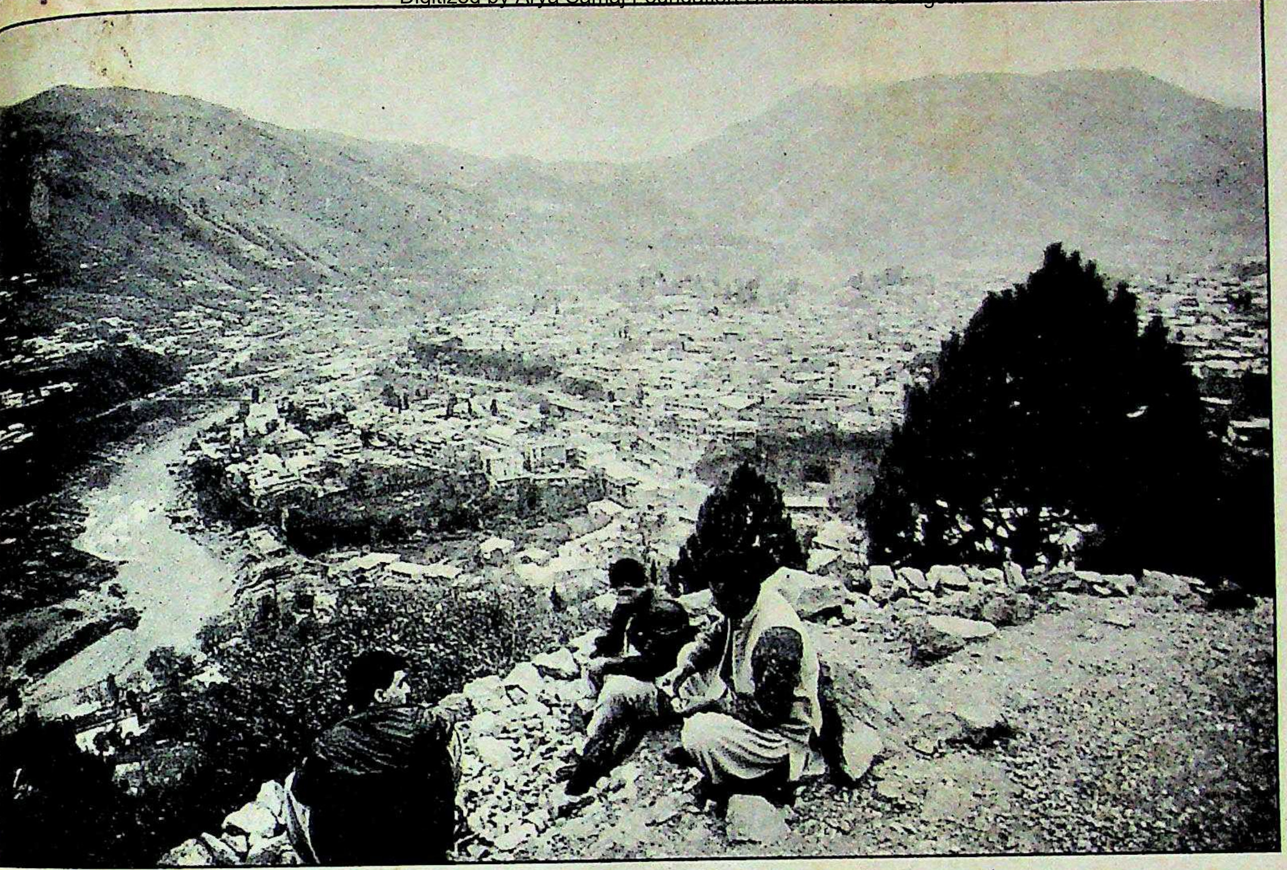

(ऊपर बाएं) पाक अधिकृत कश्मीर का प्रवेश द्वार; (ऊपर) मुजफ्फराबाद; और (नीचे) भारत विरोधी प्रदर्शन

तरफदार माना जाता है. हर सिख से एक ही सवाल होता है, "आपका खालिस्तान आंदोलन कैसा चल रहा है?" उसके तुरंत बाद हिंदुओं के खिलाफ विषवमन शुरू हो जाता है.

लेकिन सिख होना हमेशा फायदेमंद नहीं होता क्योंकि भारतीय के रूप में वे आसानी से पहचान लिए जाते हैं. और उन्माद के माहौल के कारण सभी भारतीय संभावित निशाना होते हैं. चकोठी एक छोटा-सा, बरबाद शहर है जहां पिछले महीने 4,000 लोगों ने इकट्ठा होकर पाकिस्तानी सेना द्वारा लगाई गई कंटीली बाड़ को फांदकर नियंत्रण रेखा पार करने की कोशिश की. सीमा पर तैनात भारतीय सैनिकों को मजबूर होकर गोली चलानी पड़ी जिसमें तीन लोग मारे गए और कई घायल हो गए. कुछ घायलों का इलाज स्थानीय सैनिक अस्पताल में चल रहा है. जाहिर है, भारत विरोधी भावनाएं अभी चरम पर हैं. एक पुलिस अधिकारी चेतावनी देते हैं, "कलाश्निकोवधारी नौजवान घूमते फिर रहे हैं और भारतीय होने के नाते आप उनका निशाना बन सकते हैं." आखिर, मुझे अपनी पगड़ी पर हैट पहनने और खुद को श्रीलंकाई पत्रकार बताने का फैसला करना पड़ा.

घूमने-फिरने की इजाजत होने के बावजूद हमारे सुरक्षा अधिकारी हमें संवेदनशील सैन्य इलाकों से दूर ही रखते हैं. हमारे ऊपर निगरानी भी रखी जाती है (पाक अधिकृत कश्मीर का ज्यादातर हिस्सा युद्ध की कार्रवाई वाले क्षेत्र के तहत आता है जहां 13 ब्रिगेडें तैनात हैं). लेकिन विदेशी पत्रकारों पर इस तरह की कोई पाबंदी नहीं है. 'आजाद कश्मीर' के ज्यादातर इलाके अभी बेहद पिछड़े हुए हैं. सड़कों का रखरखाव भी शायद इसलिए किया जाता है कि सैनिकों की आवाजाही में परेशानी न हो. गांवों और छोटे शहरों में दरिद्रता फैली हुई है.

जम्मू-कश्मीर के उलट, पर्यटन यहां आय का स्रोत नहीं है. यहां पर्यटकों को आकर्षित करने वाली एकमात्र खूबसूरत जगह नीलम घाटी है. इससे भी ज्यादा ताज्जुब की बात यह कि यहां से कोई अखबार नहीं निकलता. दरअसल, यहां का पहला उर्दू दैनिक 'आजादी' अभी पिछले पखवाड़े मुजफ्फराबाद से शुरू हुआ.

जम्मू-कश्मीर की तुलना में 'आजाद कश्मीर' उपेक्षा का शिकार है, हालांकि पिछले पांच वर्षों से गांवों में बिजली पहुंचाने और प्राथमिक शिक्षा मुहैया कराने जैसे विकास कार्यों पर बहुत जोर दिया जा रहा है. लकड़ी इस क्षेत्र का प्रमुख व्यवसाय है और मुजफ्फराबाद अपने पारंपरिक अखरोट फर्नीचर उद्योग के लिए मशहूर है. लेकिन पर्याप्त विपणन और वितरण के अभाव में यह भी पंगु हो गया है. मंगला बांध के पास के मीरपुर को अब औद्योगिक शहर के रूप में विकसित किया जा रहा है क्योंकि यह ग्रांड ट्रंक सड़क से सटा हुआ है.

विभाजन के पहले मुजफ्फराबाद इस उपमहाद्वीप के सबसे पिछड़े जिलों में एक था. विभाजन के बाद भी राजनैतिक अनिश्चितता के कारण यहां का आर्थिक विकास नहीं हुआ. दरअसल, मुजफ्फराबाद के चत्तर इलाके में वजीरेआजम का आधुनिक कार्यालय और सचिवालय भवन भी हाल में बना है.

लेकिन मौजूदा कट्टरपंथी लहर में इस तरह की खामियों पर कोई ध्यान नहीं दे रहा. स्कूल ऑफ इस्लामिक स्टडीज़ के निदेशक डॉ. खां ज़मान मिर्ज़ा कहते भी हैं, "जिंदा रहने के लिए रोटी के अलावा भी कई चीजें चाहिए."

इस्लामीकरण के कारण पाक अधिकृत कश्मीर के ज्यादातर कश्मीरी कश्मीर का पाकिस्तान में विलय चाहते हैं. इसलिए कश्मीर की आजादी का शोर मचाने वाले डॉ. अमानुल्ला खां के जम्मू ऐंड कश्मीर लिबरेशन फ्रंट की यहां ज्यादा अहमियत नहीं है. यहां तो लोग बस रायशुमारी चाहते हैं.

शिमला समझौते का यहां कोई नाम तक नहीं लेता. मुजफ्फराबाद के एक वरिष्ठ नेता जमात-ए-तुल्बा के शेख अकील-उर-रहमान कहते हैं, "जिस जेहाद के लिए लोगों को हम तैयार कर रहे हैं उसके लिए हम अपने खून का हर कतरा बहा देंगे." वे युवकों के प्रशिक्षण के लिए पहाड़ियों में शिविर बनाए जाने का दावा तो करते हैं पर उसका कोई ब्यौरा देने से इनकार कर देते हैं. दरअसल उनके जैसे नेता सड़कों और दूसरे विकास

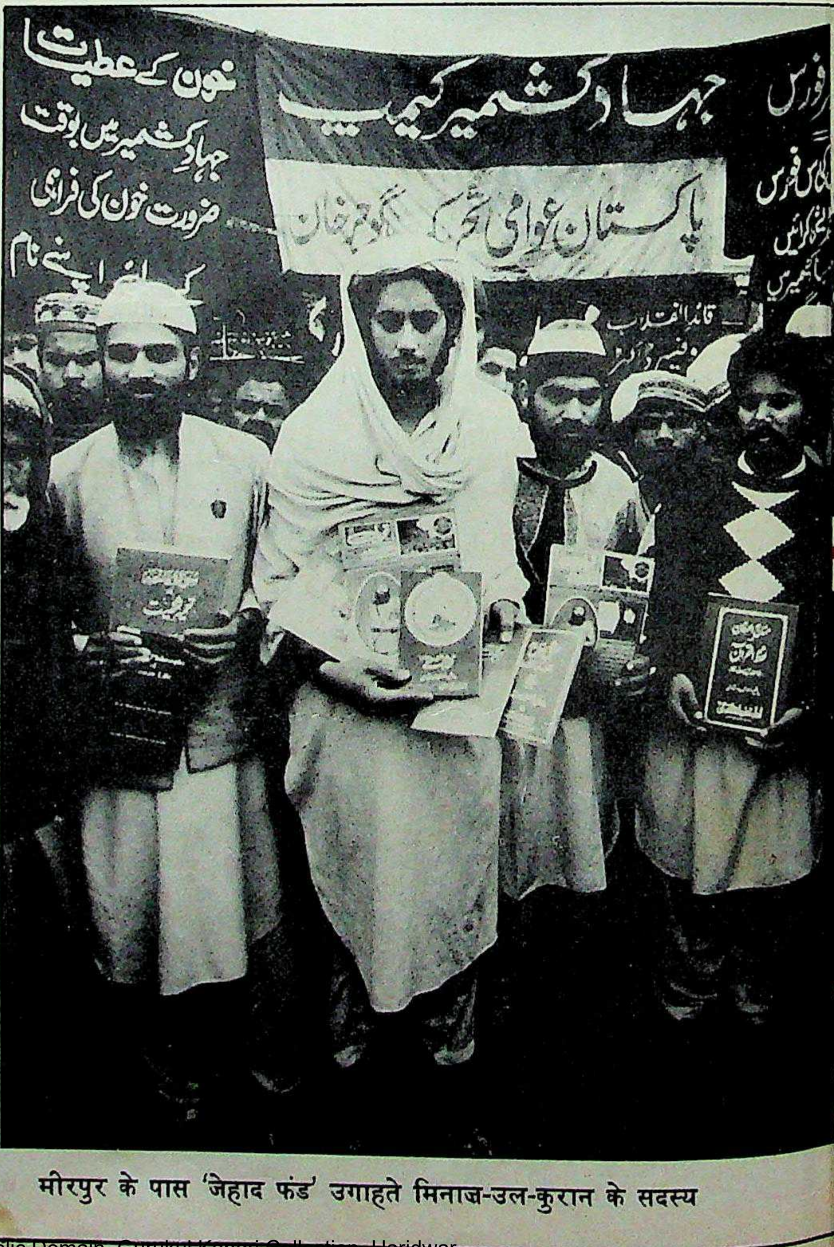

मीरपुर के पास 'जेहाद फंड' उगाहते मिनाज-उल-कुरान के सदस्य

पहाड़ियों पर लिखे आजादी के नारे

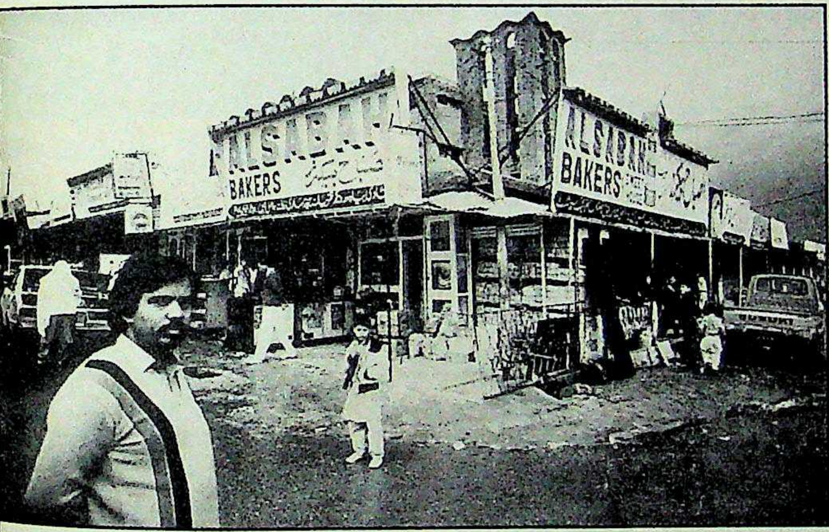

मीरपुर का नया बाजार

पाक अधिकृत कश्मीर का अंतिम गांव चकोठी, श्रीनगर से 120 किमी दूर

कार्यों पर रकम खर्च करने के लिए पाकिस्तान और पाक अधिकृत कश्मीर सरकार की आलोचना करते हैं. उनका कहना है, "महत्वपूर्ण बात तो श्रीनगर पर कब्जा करना है."

मुजफ्फराबाद होते हुए श्रीनगर जाने वाली पुरानी सड़क चकोठी से लगभग दो किलोमीटर पहले ही खत्म हो जाती है. यहां से श्रीनगर लगभग 120 किमी दूर रह जाता है. दोनों देशों को अलग करने वाली जेहलम नदी पर बने पुल के एक ओर पाकिस्तानी सेना तो दूसरी ओर भारतीय सेना तैनात है. टीटवाल सेक्टर में नीलम नदी के किनारे बसे गांव चलियाना से तलहटी में स्थित एक भारतीय सैनिक चौकी साफ दिखाई पड़ती है.

'आजाद कश्मीर' में पता ही नहीं चलता कि किसका शासन चल रहा है—'आजाद कश्मीर' के सदर सरदार कयूम का, सेना का, अदृश्य लेकिन सर्वव्यापी इंटर सर्विसेज इंटेलिजेंस का, या इस्लामाबाद का? यात्रा के मध्य में स्थानीय अधिकारी हमें रोक लेते हैं और सेना की मंजूरी के लिए हमारे फिल्म रोल मांगते हैं. इनकार करने पर जनसंपर्क निदेशक प्रोफेसर एम. इकबाल मिर्ज़ा हमें तुरंत पाक अधिकृत कश्मीर छोड़ने का आदेश देते हैं. यह बताने पर कि 'आजाद कश्मीर' के सदर के इजाजत से हम यहां आए हैं, वे बड़ी अशिष्टता से कहते हैं, "वे तो 'दिखावे के सदर' हैं. मुझे तो मुल्क के मालिकों से सीधा फरमान मिलता है." यह सब बताए जाने पर कयूम गुस्से से लाल-पीले हो उठते हैं. वे दोषी अधिकारियों की खिंचाई करते हैं और हमें वापस जाने की इजाजत देते हैं.

'आजाद कश्मीर' में बड़ी संख्या में राजनैतिक पार्टियां और कट्टरपंथी संगठन हैं जो अपनी-अपनी डफली बजा रहे हैं. इससे यहां कट्टरपंथी राजनैतिक गतिविधियां बहुत तेजी से फैल रही हैं. इस उग्र सांप्रदायिक परिदृश्य में हम उस समय हैरत में पड़ जाते हैं जब मीरपुर में नेशनल स्टुडेंट्स फेडरेशन के सदस्य हमें बातते हैं कि वे कश्मीर को मुक्त कराने पर अटल हैं लेकिन उसे सांप्रदायिक रंग देने के खिलाफ हैं. पाक अधिकृत कश्मीर में फिलहाल 17 राजनैतिक पार्टियां और युवाओं के उग्र संगठन हैं. उनके बीच साझी बात शायद कश्मीर की 'आजादी' ही है.

चलियाना में स्थानीय निकाय के सदस्य अजीज-उर-रहमान से जब यह पूछा गया कि वे किस राजनैतिक पार्टी के हैं तो उनका जवाब था कि, "पार्टियों वाली सियासत अब खत्म हो गई है." भावनात्मक उन्माद ने पाक अधिकृत कश्मीर की महिलाओं को भी परदे के बाहर कर दिया है. हाल ही में मुजफ्फराबाद में राबिया जिलानी की सदारत में महिलाओं का एक संगठन दुख्तराने-मिल्लत-ए-

कश्मीर समस्या

जंग की मुखालफत

पाकिस्तान में कश्मीर पर रवैया अब बदल रहा है. पिछले महीने इस देश में फैला युद्ध का उन्माद अब नरम पड़ गया है और सुलह बातचीत पर जोर दिया जाने लगा है. पाकिस्तान में कश्मीर मामलों के मंत्री मुहम्मद हनीफ खां ने हालांकि कि यह कहा कि भारत लोगों को ताक़त से नहीं दबा सकता पर उन्होंने 'इंडिया टुडे' को बताया कि "हम जंग नहीं चाहते."

पाकिस्तानी रणनीति अब इस मुद्दे को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उठाने की है. पाकिस्तान में आए विदेशी नेताओं के साथ भी कश्मीर के मुद्दे पर बातचीत की गई. उनमें सबसे प्रमुख पिछले महीने यात्रा पर आए फ्रांसीसी राष्ट्रपति फ्रांक्वा मित्तरां हैं. फ्रांसीसी नेता के साथ संयुक्त पत्रकार वार्ता में बेनज़ीर भुट्टो ने कहा, "हम शिमला समझौते की बुनियाद पर भारत से दोतरफा बातचीत करने को तैयार हैं. यह बातचीत यूएनओ में भी हो सकती है. हम नहीं समझते कि कश्मीर भारत-पाकिस्तान के बीच मसला बन कर रहे." पर तहरीक-ए-इस्तिक्लाल पार्टी के सदर एअर मार्शल (रिटायर्ड) असगर खां ने कहा, "कश्मीर को आजाद कराने के लिए जंग की मांग करने वाले लोग कश्मीर के खैरख्वाह नहीं हैं." अखबारों ने भी युद्ध के खिलाफ चेताया.

लेकिन पाक अधिकृत कश्मीर में भारतीय सुरक्षा बलों की गोली से हुई मौतों की खबरों से अभी भी उन्माद बरकरार है. जाहिर है, घाटी की राजनैतिक उथल-पुथल का असर यहां पड़ा है. मई में यहां चुनाव होने हैं. पाक अधिकृत कश्मीर असेंबली में विपक्ष के नेता, तहरीक-ए-अमल पार्टी के मेजर जनरल (रिटायर्ड) मुहम्मद हयात खां ने कहा, "यह चुनाव कराने का वक्त नहीं है. कश्मीर में आजादी के आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए हमें आजाद जम्मू-कश्मीर में कौमी इंकलाबी सरकार बनानी चाहिए." जेकेएलएफ के अध्यक्ष अमानुल्ला खां और अधिकृत कश्मीर में पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष सरदार मुहम्मद इब्राहिम भी इंकलाबी सरकार बनाने पर एकमत हैं.

ज्यादातर पाकिस्तानी हालांकि अभी भी राष्ट्रसंघ के प्रस्तावों के तहत हल ढूंढ़ने के हिमायती हैं पर इस गतिरोध को तोड़ने का दबाव लगातार बढ़ रहा है. राष्ट्रसंघ के प्रस्तावों के हिमायती सरदार कयूम ने 'इंडिया टुडे' को बताया; "दोनों तरफ के कश्मीरी लोगों को एक साथ बैठकर कोई हल ढूंढ़ना चाहिए. वे भारत या पाकिस्तान के साथ जाने या अपनी अलग पहचान बनाए रखने पर सहमत हो सकते हैं. या वे शेख अब्दुल्ला के सुझाए गए सहशासित राज्य पर भी मान सकते हैं. लेकिन लोग इसे शायद ही पचा पाएं."

—कंवर संधू, इस्लामाबाद में

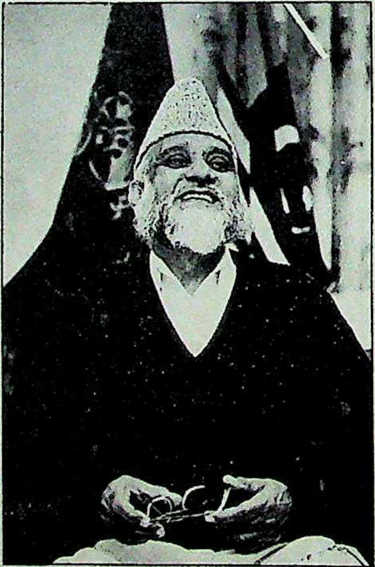

बेनज़ीर (बाएं) और सरदार कयूम

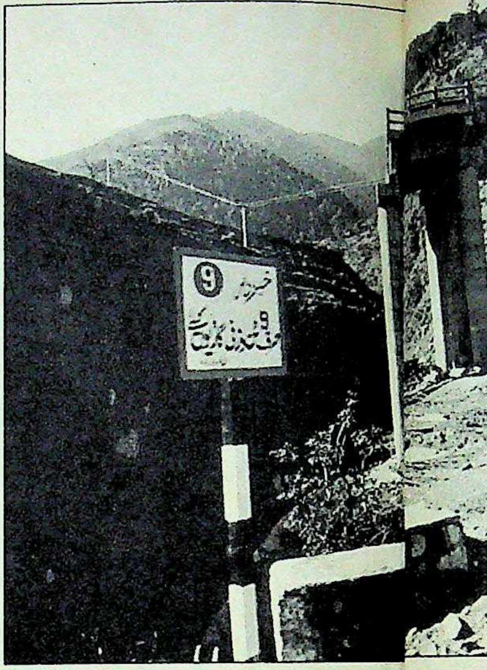

■ मुजफ्फराबाद के पास नीलम नदी प

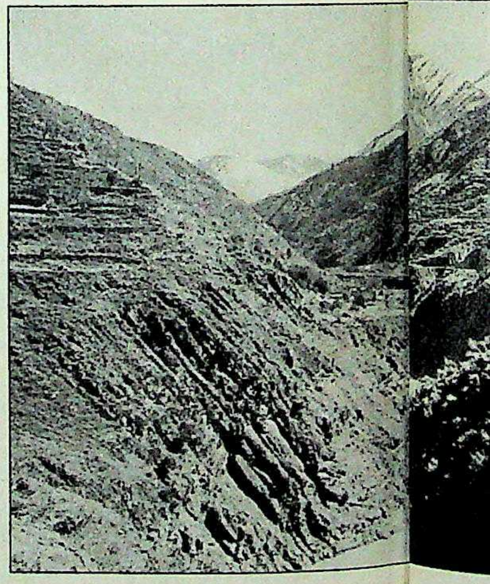

■ जेहलम घाटीः आगे की पह

कश्मीर (कश्मीरी कौम की बेटियां) बना है
'आजाद कश्मीर' की एक निर्वाचित
असेंबली भी है जिसे कानून बनाने क
अधिकार मिला हुआ है (एकमात्र अपवाद
करारोपण है जिसका फैसला पाकिस्तान
प्रधानमंत्री की अगुआई वाली 14 सदस्यीय
परिषद करती है). पाक अधिकृत कश्मीर
भी गैर-कश्मीरी लोग जायदाद नहीं खरीद
सकते. छोटे और मंझोले स्तर के सभी
अधिकारी कश्मीर कैडर के हैं जबकि राज्य
पुलिस प्रमुख (आईजी रैंक) और मुख्य
सचिव पाकिस्तान सरकार द्वारा प्रतिनियुक्त

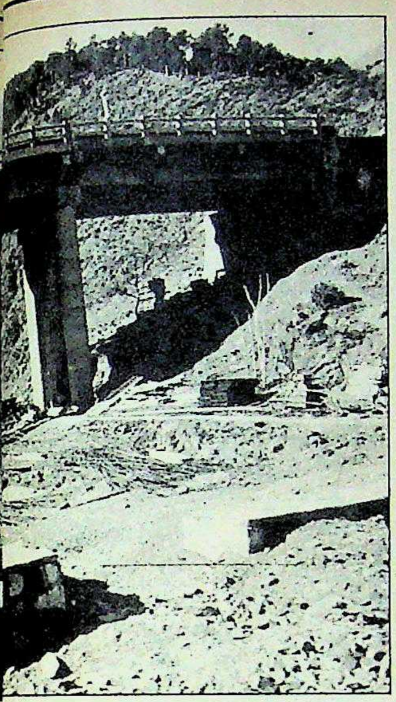

न नदी पर्माण

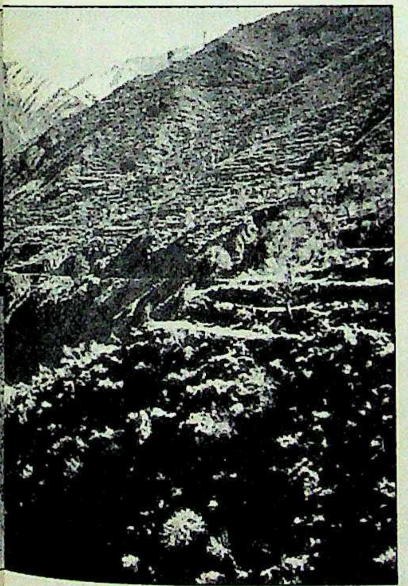

की पह्तान में, पीछे की भारत में

ए गए हैं. लेकिन सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि सभी स्थानीय अधिकारी, कथित हरीके आजादी' में शामिल हैं.

पाक अधिकृत कश्मीर के दौरे के बाद यही गा कि 40 साल के बाद 'आजाद कश्मीर' ाग उठा है. आज यहां सभी लोग उस जेहाद सिपाही हैं जो कश्मीर को 'आजाद श्मीर' कराने के लिए छेड़ा गया है. इनमें छ इस्लाम की धर्मांधता से लैस हैं तो कुछ लाश्निकोव से. विडंबना यह है कि इसके ए दुष्प्रेरणा इस्लामाबाद से नहीं बल्कि ीनगर और दिल्ली से मिली है.

कुरबान अली खां

'भारत-पाक दोनों दुश्मन'

पाक अधिकृत कश्मीर में इस्लाम की प्रबल भावना के चलते ऐसा शख्स ढूंढ़ पाना असंभव-सा लगता है जो कश्मीर की मौजूदा दुर्दशा के लिए भारत और पाकिस्तान को बराबर का दोषी समझता हो और धर्म को व्यक्तिगत मामला मानता हो. लेकिन लंदन से बैरिस्टरी पास करके लौटे मीरपुर कस्बे के कुरबान अली खां से मिलने पर यह धारणा टूट जाती है. अधिकृत कश्मीर में पीपुल्स नेशनल पार्टी (पीनेपा) के अगुआ खां से प्रमुख संवाददाता ***कंवर संधू*** *की बातचीत के कुछ अंश:*

- ***कश्मीर के मुद्दे पर आपकी पार्टी का क्या रुख है?***

पीनेपा कश्मीर की आजादी की हिमायती है. भारत और पाकिस्तान दोनों को कश्मीर से अपनी फौजें हटा लेनी चाहिए. है, पाकिस्तान में मिलने की भी.

- ***क्या आपको लगता है कि लद्दाख के बौद्ध और जम्मू के हिंदू कश्मीर की आजादी के नारे का साथ देंगे?***

यह कोई मजहबी मसला नहीं है. यह कश्मीरी लोगों की आजादी की लड़ाई है.

- ***अपने मकसद को आप कैसे हासिल कर पाएंगे?***

चूंकि हम पाकिस्तान वाले हिस्से में हैं इसलिए पहले इसे ही आजाद होना होगा. तभी हम भारत के कब्जे वाले कश्मीर को आजाद कराने की बात कर सकते हैं. पहले हमें लोगों को जगाना है और फिर हथियारों की ट्रेनिंग देनी होगी.

- ***आप भारत को बड़ा दुश्मन मानते हैं या पाकिस्तान को?***

दोनों ही बराबर के दुश्मन हैं. उन्होंने कश्मीर को सियासी और माली लिहाज से चूस लिया है. जब भी पाकिस्तान में कोई आंदोलन छिड़ा, उसे रौंद दिया गया. अब भारत भी वही करने लगा है.

میرپور 2
دینہ 21
راولپنڈی 118
لاہور 198

- ***मुकम्मल आजादी का आधार?***

हर फिरके को अपनी किस्मत का फैसला करने का हक है.

- ***लेकिन क्या कश्मीर जैसा राज्य, जिसकी समुद्री सीमा नहीं है, जिंदा रह सकता है?***

कश्मीर अलग रहकर जिंदा नहीं रह सकता, यह हौवा मतलबपरस्त लोगों ने खड़ा किया है.

- ***यानी जेकेएलएफ की तरह आप भी कश्मीर की आजादी चाहते हैं?***

जेकेएलएफ आजादी की बात करता

- ***कश्मीरी लोगों की भलाई के लिए दोनों देशों में से किसने ज्यादा काम किया है?***

किसी ने भी नहीं. सिर्फ फौजों की आवाजाही के लिए कुछ सड़कें बनाई गई हैं. यहां खेतीबाड़ी की हालत खस्ता है और उद्योग तो नहीं के बराबर हैं. भारत के कब्जे वाले कश्मीर में कम-से-कम कुछ उद्योग तो लगाए गए हैं.

सभी फोटो: प्रशांत पंजियार

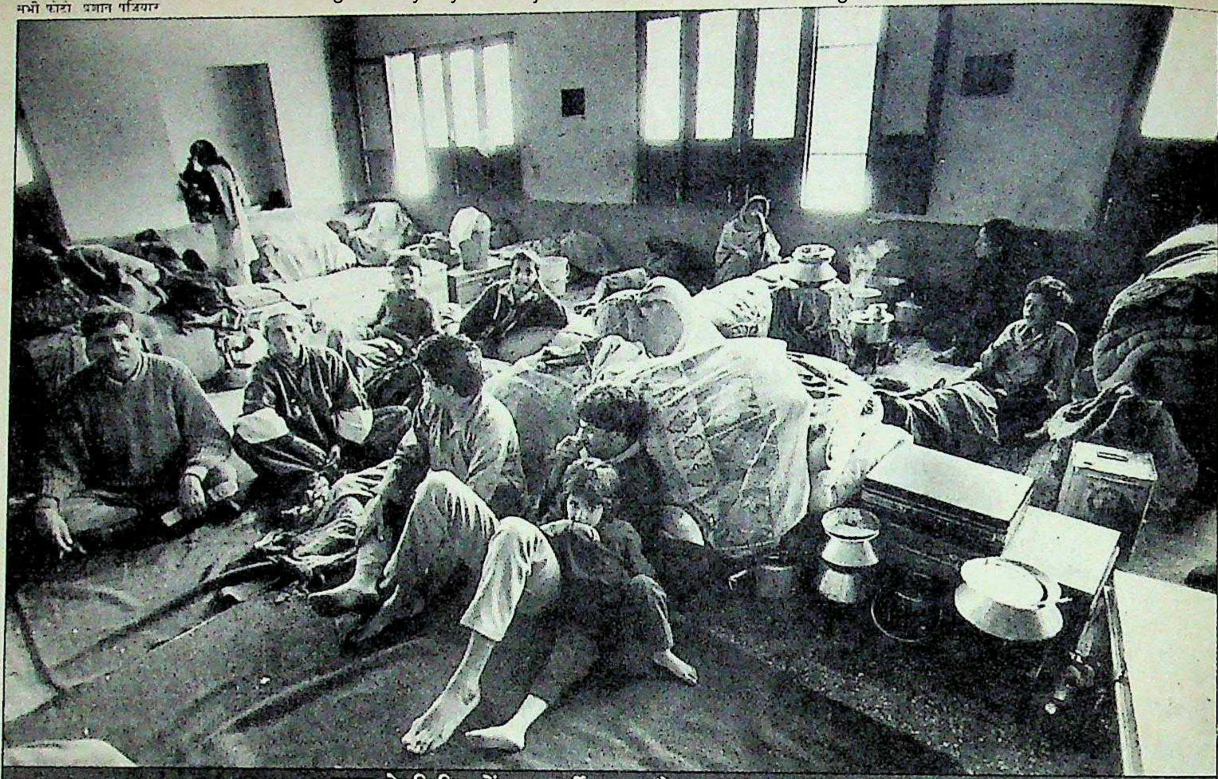

जम्मू के शिविर में शरणार्थी: डर और असहायता का एहसास

कश्मीरी शरणार्थी

फूटे करम, टूटे दिल

कश्मीर घाटी से भागे हिंदू शरणार्थी सांप्रदायिक दुष्प्रचार की चपेट में

पाकिस्तानी घुसपैठियों ने 1947 में जब कश्मीर के हिंदुओं के घर लूटे थे तब सीमावर्ती जिले कुपवाड़ा का सोहनलाल सात साल का था. भागकर श्रीनगर आने से पहले वह अपने पिता और आठ रिश्तेदारों को खो चुका था. दो साल बाद जब वह घर लौटा तो वहां के पड़ोसी मुसलमानों ने नए सिरे से जिंदगी शुरू करने में उसकी मदद की. कालांतर में सोहनलाल एक स्थानीय स्कूल में अध्यापक हो गया.

पिछले पखवाड़े सोहनलाल को कुपवाड़ा से फिर भागना पड़ा. लेकिन इस बार उसके घर पर कोई हमला नहीं हुआ था, न कहीं कत्ल हुआ था, न कत्ल की धमकी दी गई थी. वजह यह थी कि हर साल शिवरात्रि के बाद अनंतनाग और श्रीनगर से लौटने वाले उसके रिश्तेदार इस बार उससे मिलने नहीं आए. तब दहशत में डूबे सोहनलाल ने घर में ताला लगाया, चाबियां और मवेशी अपने मुसलमान दोस्त के हवाले किए और नौ

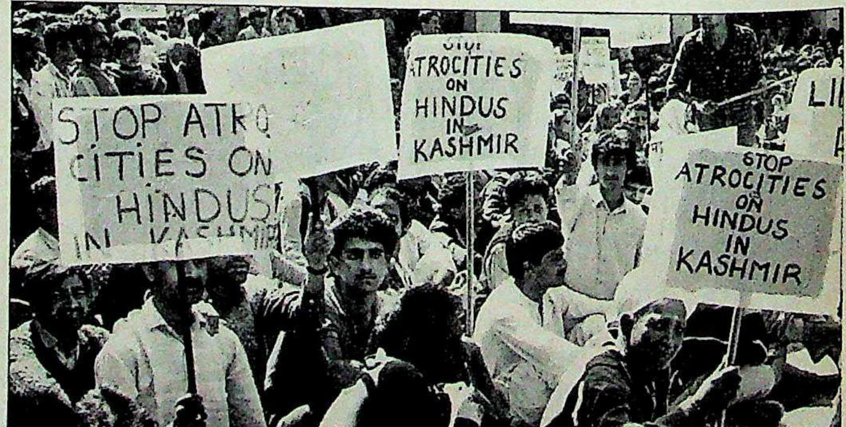
STOP ATROCITIES ON HINDUS IN KASHMIR
ATROCITIES ON HINDUS IN KASHMIR
STOP ATROCITIES ON HINDUS IN KASHMIR

जम्मू में शरणार्थियों का जुलूस: अनिश्चितता

परिवारों के साथ जम्मू के राहत शिविर की ओर चल पड़ा. वह बताता है, "किसी तरह का सांप्रदायिक तनाव तो नहीं था लेकिन हमारा डर दूर होने में छह दिन लग गए."

जम्मू में तीसरे दिन सोहनलाल को एक अनोखी स्थिति का सामना करना पड़ा. विश्व हिंदू परिषद (विहिप) के कार्यकारी अध्यक्ष विष्णु हरि डालमिया की अगुआई में दस हजार लोगों के जुलूस में वह शामिल हुआ. जैसे-जैसे यह जुलूस जम्मू की गलियों की ओर बढ़ता गया, इसके नारे सांप्रदायिक रंग में रंगते गए. 'जम्मू में हिंदुओं को सुरक्षा दो', 'पाकिस्तान मुर्दाबाद' के नारे 'हर हर महादेव' और 'भारतवर्ष में रहना होगा तो वंदे मातरम् कहना होगा' में बदल गए. जुलूस की बागडोर आरएसएस कार्यकर्ताओं के हाथ में आने के बारे में जो भी संदेह बचा था वह तब जाता रहा जब वह तख्ती ऊंची की गई जिस पर लिखा था—'भारतीय धर्मनिरपेक्षता मुर्दाबाद'. सोहनलाल ने ऐसा सांप्रदायिक उन्माद पहले नहीं देखा था.

वह तो घाटी छोड़कर आने वाले उन दस हजार हिंदू परिवारों में से था जिनकी असुरक्षा की भावना को आरएसएस और विहिप जैसी संस्थाएं भुनाने की कोशिश कर रही हैं. अगर ये शरणार्थी इस सांप्रदायिक दुष्प्रचार के जाल में फंस जाते हैं तो कश्मीर समस्या को सुलझाने के राजनैतिक प्रयास निष्फल हो जाएंगे. गृहमंत्री मुफ्ती मुहम्मद सईद कहते हैं, "अब हम और ज्यादा गड़बड़ी का जोखिम नहीं उठा सकते." जम्मू के एक आईएएस अधिकारी कहते हैं, "हमारे पास भारी संख्या में शरणार्थी आ गए हैं. और हम नहीं चाहेंगे कि किसी तरह की सांप्रदायिक आग यहां फैले."

जब तक सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल श्रीनगर पहुंचा तब तक 40,000 लोग जम्मू, 2,500 लोग उधमपुर, 600 लोग कठुआ और करीब 2,000 लोग हरिद्वार और दिल्ली पहुंच चुके थे. जम्मू के दर्जन भर गंदे शिविरों और दिल्ली के कश्मीर भवन में ठहरे शरणार्थियों में से अधिकांश

भवान सिंह

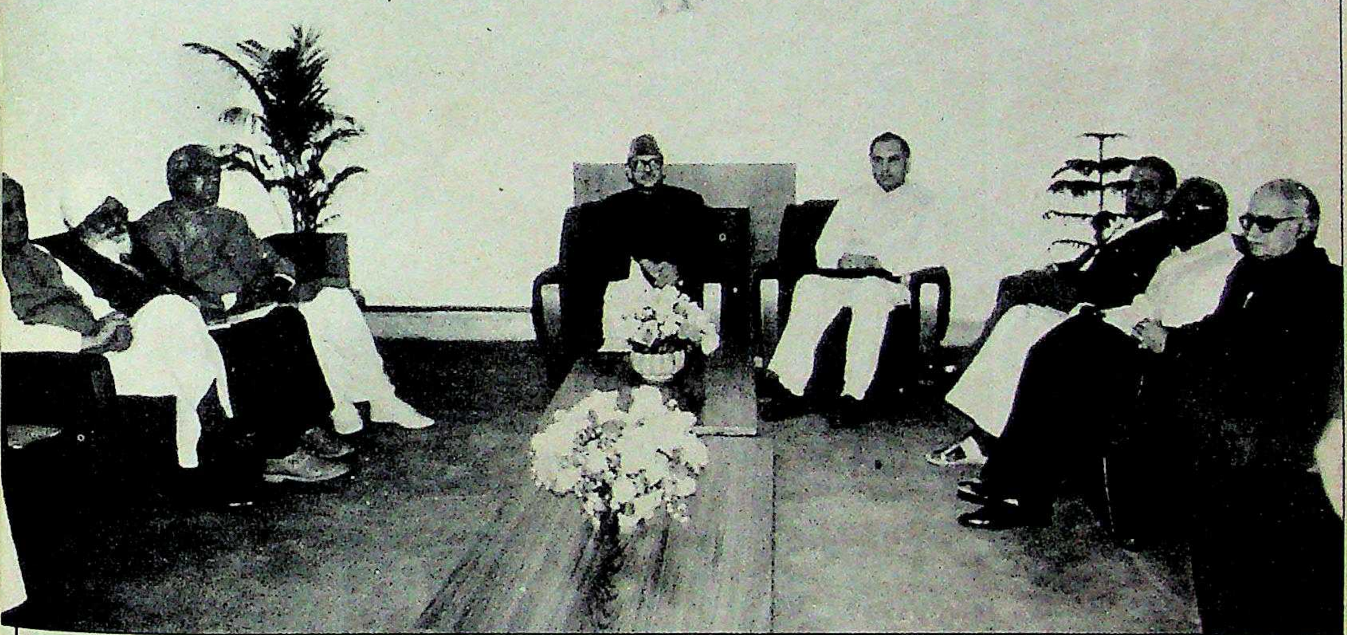

बैठक में विभिन्न दलों के नेता

सर्वदलीय बैठक

नतीजा सिफर

कश्मीर समस्या का समाधान खोजने के लिए पिछले पखवाड़े राष्ट्रीय मोर्चा सरकार द्वारा आयोजित सर्वदलीय बैठक के साथ कुछ क्रूर विडंबनाएं भी जुड़ी रहीं. कश्मीर की मौजूदा दुर्दशा के लिए अप्रत्यक्ष रूप से जिम्मेदार माने जाने वाले राजीव गांधी और फारूक अब्दुल्ला भी इस बैठक में शामिल हुए.

सिलसिला यहीं नहीं रुका. राजीव की 'सलाह' पर एक सर्वदलीय टीम (फारूक को छोड़) हालात की गंभीरता का मौके पर जायजा लेने के लिए अगले दिन विमान से श्रीनगर पहुंची. देश की विभिन्न राजनैतिक विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करने वाली इस टीम के सदस्यों ने अगले 24 घंटे कर्फ्यूग्रस्त शहर में डल झील के किनारे बने आलीशान होटल सेंटोर में बिताए. राजीव गांधी की पहले राज्यपाल जगमोहन से और फिर भाजपा नेता जसवंत सिंह से तीखी नोक-झोंक इस दौरे की दूसरी खासियतें रहीं.

लेकिन जल्द ही यह स्पष्ट हो गया कि महत्वपूर्ण माना जाने वाला यह दौरा नेताओं की एक-दूसरे को नीचा दिखाने की धींगामुश्ती का अखाड़ा बनकर रह गया है. बहरहाल दौरे की कुछ उपलब्धियां भी रहीं. इसमें प्रमुख यह थी कि सभी प्रतिनिधि इस जटिल समस्या पर उग्रवादियों से संवाद कायम करने के बारे में एकमत हुए. भाकपा के प्रतिनिधि सैफुद्दीन चौधरी का कहना था, "वहां जाकर कश्मीरियों को गुस्से के इजहार का मौका दिया जाए तो बातचीत शुरू करने में मदद मिलेगी. यह तो एक सिलसिले की शुरुआत भर है."

हालात तेजी से बेकाबू होते जाने और जगमोहन के वहां घिर जाने का एहसास होते ही राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने सभी दलों को साथ लेकर चलने की रणनीति अपनाई ताकि यदि हालात बिगड़ें तो वह अकेले जिम्मेदारी से बच सके. लेकिन प्रतिनिधिमंडल के महत्वपूर्ण नेता राजीव गांधी के बहस में उलझने के मूड (जैसे वे उप-प्रधानमंत्री देवीलाल को वरीयता क्रम में बिठाने के मामले पर जगमोहन से उलझ पड़े थे) को देखते हुए इस नई पहल से कुछ ठोस उपलब्धि की उम्मीद नहीं.

—पंकज पचौरी

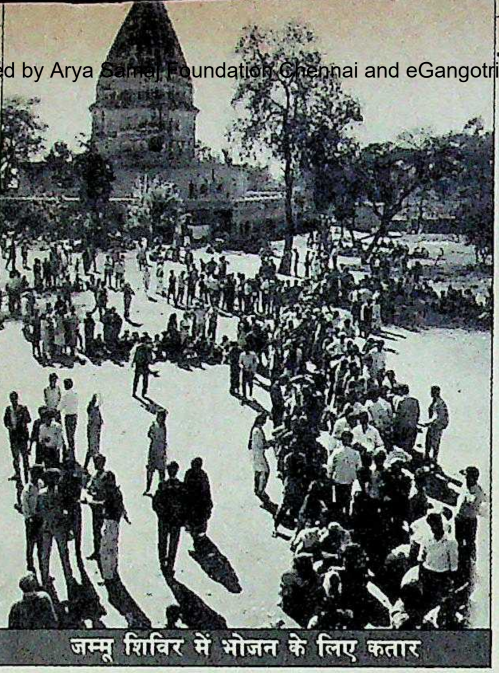

जम्मू शिविर में भोजन के लिए कतार

का कहना था कि हालांकि जगमोहन के राज्यपाल बनाए जाने से उन्हें थोड़ा आश्वासन मिला था लेकिन उग्रवाद पर रोक नहीं लगी. श्रीनगर के एक डॉक्टर का कहना था, "हम इस्लामी राज या पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे कैसे लगा सकते हैं?" जाहिर है, इस उग्रवादी आंदोलन से घाटी के एक लाख बीस हजार हिंदू अलग-थलग पड़ गए हैं.

जम्मू प्रशासन चूंकि शरणार्थियों की बाढ़ के लिए तैयार नहीं था, इसलिए समस्या और गभीर हो गई. शरणार्थियों का पहला दस्ता जनवरी के मध्य में यहां आया और उन लोगों ने एक धर्मशाला गीता भवन में शरण ली. गीता भवन के प्रबंधकों ने जब शरणार्थियों के दर्द के बारे में सुना तो उन्होंने अखबारों में सूचना छपवा दी कि पनाह चाहने वाले लोग उनके पास आ सकते हैं. इसके बाद तो गीता भवन में शरणार्थियों का तांता ही लग गया. और गीता भवन उन्हें संभाल नहीं पाया तो मामला प्रशासन ने अपने हाथ में ले लिया. लेकिन जब सरकारी भवन भी भर गए तो आखिरी दस्ते को जम्मू से 12 किमी दूर नगरोटा में तवी नदी के किनारे सौ तंबुओं के शिविर में टिकाया गया. इन शरणार्थियों को, जिनमें ज्यादातर मध्यवर्गीय कश्मीरी ब्राह्मण हैं, डर है कि कहीं उन्हें तंबुओं में ही रहने को मजबूर न किया जाए.

सुख-सुविधा से भरपूर घर छोड़कर यहां आने की वजह सहज ही समझी जा सकती है. जो सरकारी अधिकारी उग्रवादियों की गोलियों का निशाना बने वे कश्मीरी पंडित ही थे. फिर, घाटी में यह आंदोलन धार्मिक रूप लेता जा रहा है. आंदोलनकारी कुरान की आयतें पढ़ते हैं और इस्लामी राज्य की मांग कर रहे हैं. जगमोहन द्वारा जुलूसों की छूट देने पर हजारों कश्मीरी सड़कों पर निकल आए तो कई हिंदुओं को कश्मीर का अलगाव अवश्यंभावी लगने लगा.

घाटी के उग्रवादी मुसलमानों के चंगुल से निकलकर अधिकांश शरणार्थी कट्टरवादी हिंदुओं के जाल में जा फंसे. इन गुटों ने इस तथ्य की ओर ध्यान ही नहीं दिया कि बार-बार लगकर उठने वाले कर्फ्यू और ठप पड़े प्रशासन से दुखी होकर कई मुसलमान भी घाटी से भाग आए हैं. दिल्ली में ही घाटी के कई विस्थापित मुसलमानों को कश्मीरी शॉल और गलीचे बेचते देखा जा सकता है. लेकिन कश्मीर समस्या का कट्टरवादी हिंदुओं की अवधारणा में ऐसी सचाइयों के लिए शायद जगह नहीं है. इसलिए शरणार्थी शिविरों में वे अफवाहें फैला रहे हैं कि उग्रवादी आंदोलन का निशाना गैर-मुसलमान ही हैं, और यह कि उग्रवादी तत्व शिविरों में जाकर इन शरणार्थियों की टोह ले रहे हैं.

श्रीनगर में जगमोहन: चुनौतियां

प्रशासन अब तक ऐसे सांप्रदायिक दुष्प्रचार की अनदेखी-अनसुनी करता रहा है. मसलन डालमिया विहिप के दूसरे नेताओं के साथ शरणार्थियों से हमदर्दी जताने जम्मू गए तो उन लोगों ने शरणार्थियों को पूरा समर्थन देने का वादा तो किया ही, उनमें से एक ने सार्वजनिक सभा में सरेआम कहा, "वी.पी. सिंह एक करोड़ का चेक लेकर भागलपुर क्यों दौड़े गए? वह पैसा सिर्फ मुसलमानों में ही बांटा गया. इसलिए अब उन्हें यहां भी ढाई करोड़ रु. का चेक लेकर आना चाहिए."

इसके तुरंत बाद जगमोहन ने आनन-फानन में घोषणा कर डाली कि दो राहत आयुक्तों की नियुक्ति की जाएगी और राहत शिविर घाटी में ही खोले जाएंगे. जिन सरकारी कर्मचारियों और पेंशनभोगियों को घर छोड़ने पर मजबूर किया गया उन्हें वेतन अथवा पेंशन नियमित रूप से मिलता रहेगा. लेकिन ये घोषणाएं अब बेमानी ही थी.

इस समस्या का एक पहलू यह भी है कि हिंदुओं के पलायन से कश्मीर के कई उग्रवादी खुश नहीं हैं. खासकर जम्मू-कश्मीर लिबरेशन फ्रंट (जेकेएलएफ) तो महसूस करता है कि यदि सांप्रदायिकता को मुद्दा बनाया जाता रहा तो उनके आंदोलन को बट्टा लग जाएगा. जेकेएलएफ के चार क्षेत्रीय कमांडरों ने हाल में लिखित बयान जारी किया है कि "अगर कोई स्वतत्र एजेंसी या अखबार यह साबित कर दे कि उन्होंने किसी व्यक्ति की सिर्फ इसलिए हत्या की कि वह एक समुदाय विशेष का था तो वे अलगाववादी आंदोलन से 'रिटायर' हो जाएंगे."

शरणार्थियों के प्रति जम्मू के निवासियों का द्वेषपूर्ण रवैया समस्या को और पेचीदा बना देता है. इस द्वेष की वजह यह है कि जम्मू के हिंदू लोग कश्मीरी पंडितों के सरकारी नौकरियों पर काबिज होने और उनकी सुख-समृद्धि से लंबे अरसे से खीजते रहे हैं.

अब चूंकि इन शरणार्थियों का भाग्य कश्मीर समस्या के समाधान के साथ ही जुड़ गया है इसलिए लगता है कि उनकी अग्निपरीक्षा का दौर लंबा खिंच सकता है. उनकी तकलीफों को यदि सांप्रदायिक रंग देने की कोशिश की गई तो इसके परिणाम भयावह हो सकते हैं क्योंकि हिंदुओं की ओर से किसी तरह का मुंहतोड़ जवाब कश्मीर के कट्टरवादी मुसलमानों के पक्ष को और मजबूत ही करेगा.

—पंकज पचौरी जम्मू में, और निशा पुरी

ोगों ने
देने का
एक ने
कहा,
ा चेक
ए? वह
बांटा
भी ढाई
आना

हन ने
ली कि
क्त की
ाटी में
ी कर्म-
को घर
ा उन्हें
रूप से
षणाएं

ी है कि
के कई
जम्मू-
क) तो
कता को
ांदोलन
के चार
बयान
स्वतत्र
दे कि
इसलिए
विशेष
ांदोलन

म्मू के
समस्या
इस द्वेष
के हिंदू
रकारी
और
रसे से

तों का
ान के
लगता
ा दौर
तक-
ा देने
परि-
क्योंकि
ह का
कट्टर-
और

ा पुरी

Golden moments. McDowell moments

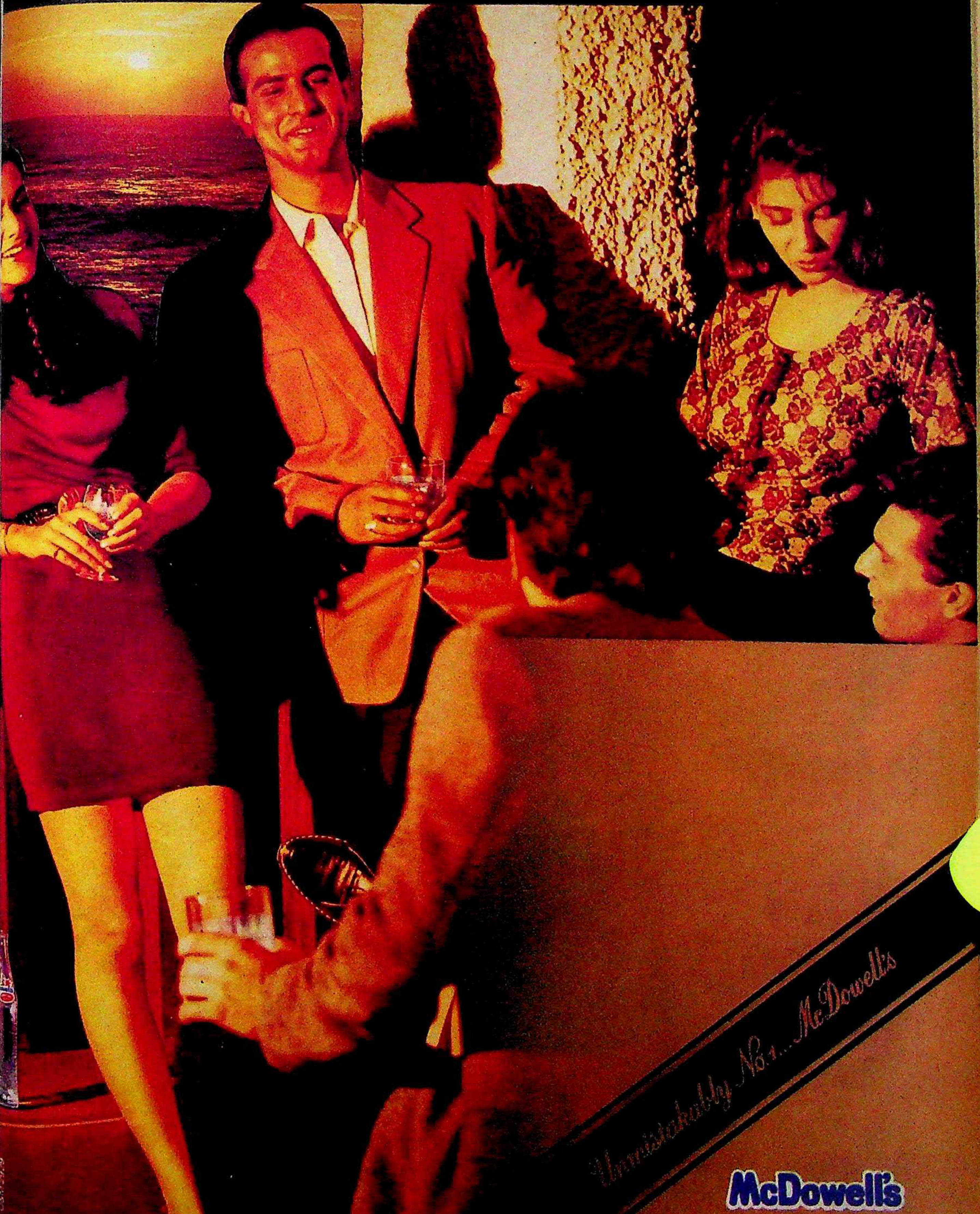
Unmistakably No.1... McDowell's

McDowell's
THE SODA WITH SPIRIT

कायनेटिक होंडा
गिनीज़ बुक में शामिल हो चुका है !

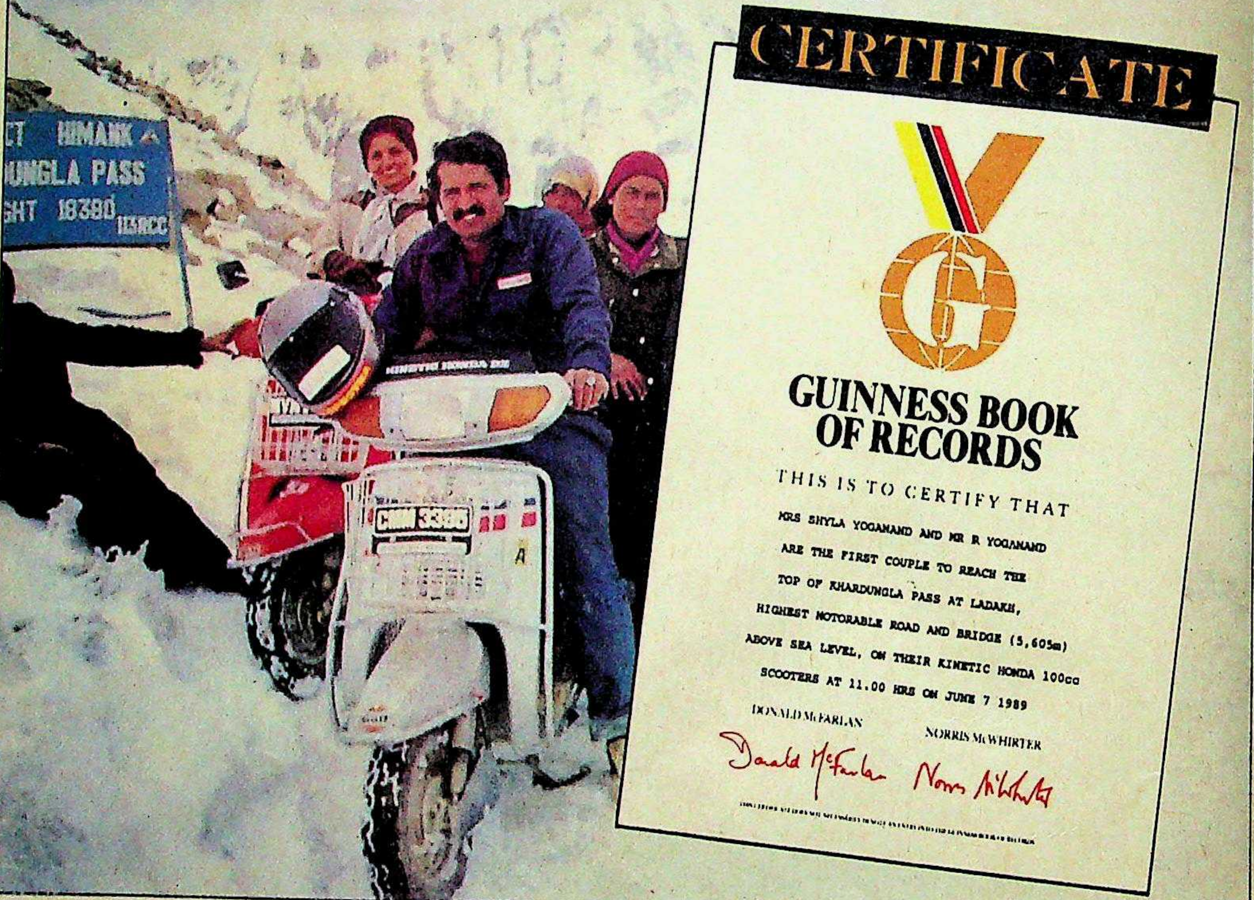

CERTIFICATE

GUINNESS BOOK
OF RECORDS

THIS IS TO CERTIFY THAT

MRS SHYLA YOGANAND AND MR R YOGANAND
ARE THE FIRST COUPLE TO REACH THE
TOP OF KHARDUNGLA PASS AT LADAKH,
HIGHEST MOTORABLE ROAD AND BRIDGE (5,605m)
ABOVE SEA LEVEL, ON THEIR KINETIC HONDA 100cc
SCOOTERS AT 11.00 HRS ON JUNE 7 1989

DONALD McFARLAN — NORRIS McWHIRTER

Donald McFarlan — Norris McWhirter

कायनेटिक होंडा सबसे पहला स्कूटर है जिसने दुनिया की सबसे ऊंची सड़क पर अपनी जीत का झंडा गाड़ दिया – लद्दाख में, समुद्र सतह से १८,३८० फुट ऊंची खारदंगला पास की ऊंचाइयों पर!

श्री एवं श्रीमती योगानंद

पहले दंपत्ति हैं जिन्होंने अपने कायनेटिक होंडा पर ७ जून, १९८९ को फतह किया यह दुर्गम रास्ता!

इन्होंने पुणे से लद्दाख तक ११,००० कि.मी. का वापसी सफ़र तय किया. कुल ३१ दिनों की कठिन यात्रा – गुजरात में कच्छ के दलदली इलाके में २०० कि.मी. दूरी, राजस्थान में थर के रेतीले रास्तों पर ६०० कि.मी. का सफ़र, मध्य प्रदेश में अमरकंटक के घने बीहड़ जंगलों में २५० कि.मी. की यात्रा और हिमालय की घाटी में दुर्गम ऊबड़-खाबड़ जोज़िला पास सड़क पर ३,७०० कि.मी. यात्रा करके ये सकुशल वापस लौट आए.

एक बार फिर कायनेटिक होंडा ने अपनी ज़बर्दस्त कार्यक्षमता का सुबूत दिया – और ४९°से. से लेकर-२३°से. जितने विपरीत तापमान पर, ऊबड़-खाबड़ रास्तों, सूखे रेगिस्तानों, दलदली इलाकों और बर्फ़ीली सड़कों को अपने पहियों तले रौंदकर सही-सलामत लौट आया ! सफ़र में बिना रुके, अटके... बिना कोई पुर्ज़ा बदले.

कायनेटिक होंडा की अद्भुत कामयाबियों में शामिल हो गया एक और कीर्तिमान!

WAMS 136/89

KINETIC HONDA
SIMPLER ■ SAFER ■ SUPERIOR

चुनिए वही जो सब से जुदा हो

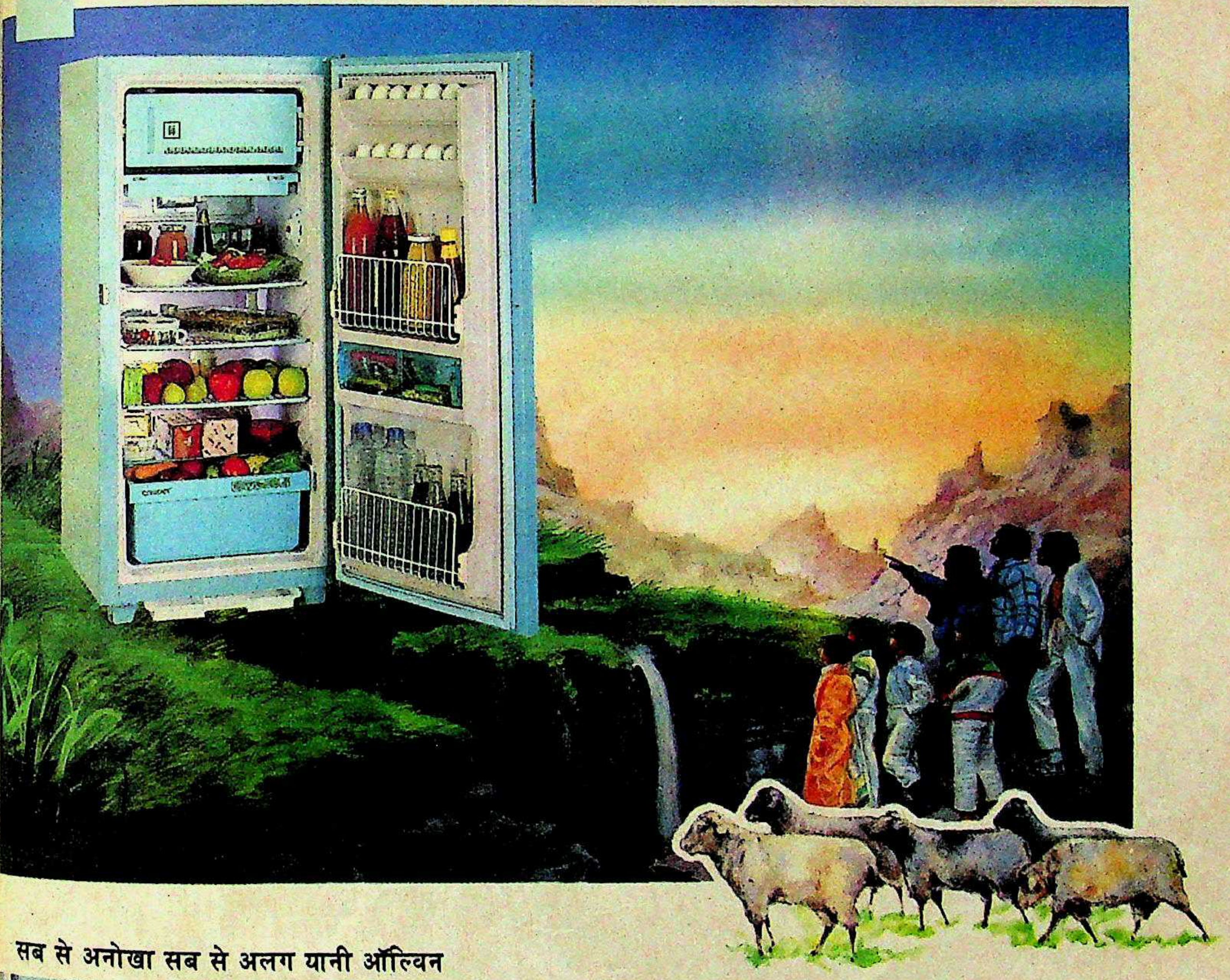

सब से अनोखा सब से अलग यानी ऑल्विन

▲ बेआवाज मज़बूत भरोसेमंद आल्विन कम्प्रेसर हिटाची तकनॉलॉजी से बना है। इसीलिए बेआवाज रहे., बिना झंझट काम करे, ▲ टिल्टिग बॉटल रैक्स ताकि बोतलें आसानी से सरकाई जा सकें ▲ डिफ्रॉस्टिग इसके लिये है एक सक्षम, बिना घिचपिच किए, तुरंत "सेल्फ ड्रेनिग सिस्टम" इससे रेफ्रीजेरेटर दोबारा खुद स्टार्ट हो जाता है ▲ वोल्टेज के उतार चढ़ाओ का इस पर कोई असर नहीं होता (170V से 250V) ▲ आल्विन भारत में रेफ्रीजेरेशन के अग्रगामी ▲ 165 लिटर सिंगल डोर और 165, 300 व 380 लिटर डबल डोर मॉडल अनेक रंगों में सात साल की ग्यारंटी और सात साल के "फ्रोटेक्शन कॉन्ट्रोक्ट" की अतिरिक्त सुविधा भी ▲ ISI

अब इत्मीनान रखिए आपने वही चुना है जो सब से जुवा है. ऑल्विन.

ALLWYN
REFRIGERATORS
QUIET · STURDY · FAITHFUL

Mudra:H:HAL:254

अब

लीजिए शक्तिशाली टर्बो आवाज़

TURBO
DYNAMIC SPEAKER SYSTEM
TURBO
VIDEOCON
FST

POUSH VC 136 89 HIN

२१२-आर डीलक्स

- ५३ सीएम एफ़ एस टिंटेड पिक्चर ट्यूब
- ऑफ़ टाइमर
- ऑटो सर्च ट्यूनिंग
- डायनेमिक ऑन-स्क्रीन डिस्प्ले
- संपूर्ण क्रियाओं वाला इंफ्रा-रेड रिमोट कंट्रोल
- सुपर वाइड (ज्यादा चौड़े) ए वी आर (९० से २७० वी,एसी ५० एच.जेड)
- टर्बो स्पीकर प्रणाली द्वारा शानदार आवाज़

VIDEOCON

BRING HOME THE LEADE

विदेशी विमान सेवाएं

भारतीयता का जादू

भारतीय यात्रियों को रिझाने की कोशिशें

यूरोपीय भोजन की जगह भारतीय व्यंजन. लजीज टिक्कियां, शामी कबाब और मटन बिरयानी का शबाब जोरों पर है. और कानों में घुलने वाला संगीत भी थोड़ा अलग-सा है. बीथोवन् की 'फिफ्थ सिंफनी' या लुई आर्म्सस्ट्रांग के बदले अब सुनने को मिल रहा है 'ओए ओए' या 'एक दो तीन चार....' अंतरराष्ट्रीय उड़ान भरने वाले विमानों में भारतीय रंग बिखरने लगा है. भारत में विमान उड़ाने वाली विदेशी विमान सेवा कंपनियां भारतीय यात्रियों को लुभाने के लिए लीक से हटकर कुछ नया करने की कोशिश कर रही हैं. भारतीय भोजन तथा संगीत, भारतीय भाषाओं की पत्रिकाएं और भारतीय विमान परिचारिकाएं इसी बदलाव की कड़ियां हैं.

सबसे पहले कोई पांच बरस पूर्व ब्रिटिश एअरवेज ने विदेश यात्रा करने वाले भारतीयों के लिए विशेष सेवाएं शुरू की थीं. अब इस सूची में लुफ्थांसा, कैथे पैसिफिक, सिंगापुर एअरलाइंस, अमीरात ऐंड गल्फ एअर भी शामिल हो गई हैं. और दूसरी विमान सेवा कंपनियां भी उच्च श्रेणी के तार बढ़ते हुए उच्च श्रेणी के यात्री समुदाय को लुभाने की तैयारी कर रही हैं. ब्रिटिश एअरवेज के भारत स्थित प्रबंधक एलेन बर्नेट कहते हैं, "भारतीय बाजार में प्रतिद्वंद्विता बढ़ रही है. अगर हम नई सेवाएं नहीं शुरू करेंगे, तों नुकसान उठाना पड़ेगा."

चार महीने पहले पश्चिम जर्मनी की लुफ्थांसा ने भारत से उड़ने वाले अपने सभी विमानों में तमिल और हिंदी फिल्मों के गानों की धुनें और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत बजाना शुरू कर दिया था. इसके अलावा यात्रियों को अब शाकाहारी भोजन भी सुलभ है. हांगकांग की एअरलाइंस कैथे पैसिफिक ने तो मांसाहारी भोजन की जगह अब आम तौर पर शाकाहारी भोजन ही देना शुरू कर दिया है.

इस होड़ में पिछड़ने को पैन एम भी तैयार नहीं है. उसने दिल्ली से फ्रांकफुर्त होकर लंदन जाने वाले अपने विमानों में केवल भारतीय कर्मचारियों को तैनात कर दिया है. मध्य पूर्व, कनाडा और ब्रिटेन की ओर जाने वाले विदेशी एअरलाइंस के विमानों में इस तरह के बदलाव तो और भी नाटकीय हैं. गल्फ एअर के क्षेत्रीय प्रबंधक सईद ए. ज़होर कहते हैं, "पहले सिर्फ एअर इंडिया ही भारतीय पर्यटकों को आकृष्ट कर पाता था. अब तो सभी विमान सेवाएं देसी रंगढंग अपना रही हैं."

ब्रिटिश एअरवेज, जिसने 1985 में ही भारतीय यात्री सेवा शुरू की थी, अब हर महीने भारतीय यात्रियों के औसतन 1,100 आवेदनों से बड़ी मुश्किल से निबट पाती है. लंदन उतरने वाले भारतीय यात्रियों को इस एअरलाइन की तरफ से कई प्रकार की सेवाएं दी जाती हैं.

इसकी वजह विदेश यात्रा करने वाले भारतीयों की संख्या में बढ़ोतरी है. प्रसिद्ध ट्रैवेल एजेंसी सीता वर्ल्ड ट्रैवेल के अध्यक्ष इंदर शर्मा कहते हैं, "समूचा बाजार करीब 12 प्रतिशत प्रति वर्ष की रफ्तार से बढ़ रहा है." पांच साल पहले यह वृद्धि मात्र 5 प्रतिशत सालाना थी.

सिंगापुर एअरलाइंस तो पहली बार कनाडा जाने वाले भारतीय यात्रियों को अपनी ओर खींचने के लिए खास तौर से प्रयत्न कर रही है. सिंगापुर एअरलाइंस के उत्तरी भारत क्षेत्र के प्रबंधक कोक छोएथेम के अनुसार, "इनमें से अधिकांश यात्री अंग्रेजी नहीं बोल पाते. इसलिए उन्हें विशेष सहायता की जरूरत होती है."

यात्रियों को रिझाने का सिलसिला जारी है. मगर अजीबोगरीब बात तो यह है कि जहां एअर इंडिया पाश्चात्य रंगरूप अपनाने में लगा है, वहीं अंतरराष्ट्रीय विमान सेवा कंपनियां भारतीय राग आलाप रही हैं.

—सुरजीत दासगुप्त

शाकाहारी भोजन, भारतीय पत्रिकाएं और हिंदी गीत-संगीत के अलावा विदेशी विमान सेवाओं में भारतीय परिचारिकाएं भी रखी जाने लगी हैं

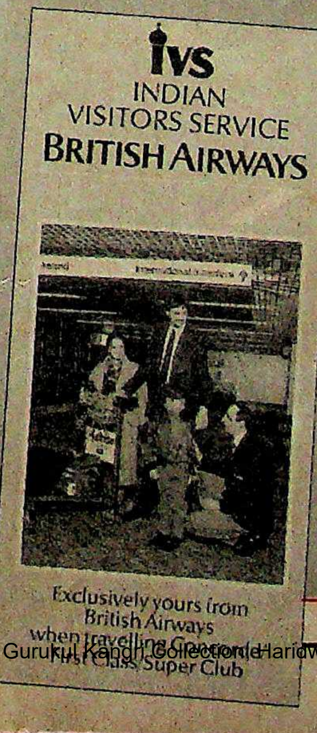

ivs
INDIAN
VISITORS SERVICE
BRITISH AIRWAYS

Exclusively yours from
British Airways
when travelling Concorde
First Class Super Club

(ऊपर दाएं) भारतीय व्यंजन, (बीच में) ब्रिटिश एअरवेज की पुस्तिका, (बाएं) पैन एम की भारतीय परिचारिकाएं

दुलहस्ती पनबिजली परियोजना

गोलमाल की और मिसाल

फ्रांसीसी कंपनी के प्रति राजीव सरकार की मेहरबानी की दास्तान

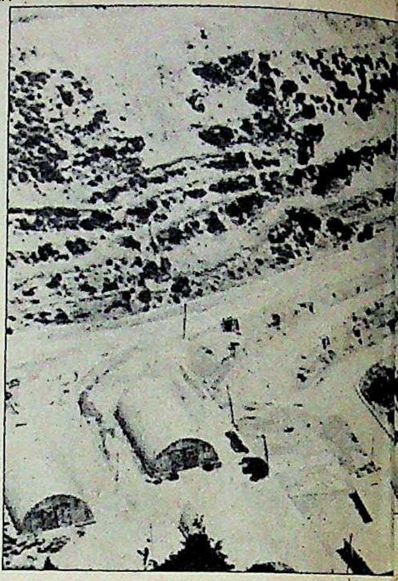

यह पिछली सरकार द्वारा किए गए उन 15 सौदों में से एक है जिनकी जांच राष्ट्रीय मोर्चा सरकार करा रही है. प्रधानमंत्री कार्यालय, ऊर्जा मंत्रालय के अधिकारियों और केंद्रीय जांच ब्यूरो की शुरुआती जांच से कुछ संकेत मिलता है तो यही कि जम्मू-कश्मीर में चिनाब नदी पर 1,100 करोड़ रु. की लागत से बनने जा रही दुलहस्ती पनबिजली परियोजना राजीव गांधी के गले में एक और फंदा बनने जा रही है. वरिष्ठ संपादक ***प्रभु चावला*** *द्वारा की गई छानबीन से पता चलता है कि सीजीईई-एल्स्थोम के नेतृत्व वाला फ्रांसीसी कंपनी समूह और राष्ट्रीय पनबिजली निगम के बीच हुए समझौते में काफी गोलमाल है. उनकी रिपोर्ट:*

सौदेबाजी सात वर्षों से भी ज्यादा चली. एक तरफ सीजीईई के नेतृत्व वाला फ्रांसीसी कंपनी समूह और इंडो-आस्ट्रो-जर्मन (आईएजी) कंपनी समूह थे, तो दूसरी ओर राष्ट्रीय पनबिजली निगम और विभिन्न सरकारी समितियों के अधिकारी थे. बातचीत में सामान्य तौर-तरीकों की उपेक्षा तो की ही गई, फ्रांसीसी ठेकेदारों का चयन भी सौदा करने वाली समिति और ऊर्जा मंत्रालय के विशेषज्ञों की सिफारिशों की अनदेखी करके किया गया. मुख्य गड़बड़ियां इस प्रकार हैं:

- फ्रांसीसी ठेकेदारों को शर्तें और नियम तय होने से पहले ही आशय पत्र दिया गया.
- सीमा शुल्क और आयकर में छूट देने संबंधी ठेकेदारों की गलत मांग को भी सरकार ने फ्रांसीसी दबाव पर मान लिया.
- सरकार ने सौदे की राशि में भारी वृद्धि बिना किसी स्पष्टीकरण के मंजूर कर ली.
- उसने जर्मन नेतृत्व वाले समूह द्वारा पेश की गई अनुकूल शर्तों की अनदेखी की.

चरण 1

1980-83: देसी विकल्प छोड़ दिए गए

दुलहस्ती परियोजना (130 मेगावाट वाली तीन इकाइयां) को सरकार ने दिसंबर 1980 में ही मंजूरी दी थी. तब इस पर 183.5 करोड़ रु. खर्च का अनुमान था. इस परियोजना को राष्ट्रीय पनबिजली निगम ही पूरा करने वाला था. अगस्त 1983 में वित्त मंत्रालय को अचानक लगा कि उसके पास इस परियोजना के लिए कोष नहीं है. तब तक जर्मन और फ्रांसीसी कंपनी समूहों ने इस परियोजना को पूरा करने का प्रस्ताव सरकार के पास भेज दिया था.

23 अगस्त 1983 को पूर्व वित्तमंत्री प्रणव कुमार मुखर्जी की अध्यक्षता में हुई बैठक में इस बात पर सहमति हुई कि "विदेशी मदद के प्रस्ताव के परिप्रेक्ष्य में दुलहस्ती परियोजना पर पुर्नविचार हो."

चरण 2

1983-86: फ्रांसीसी कंपनी समूह को ठेका

इसके बाद सीजीईई-एल्स्थोम के नेतृत्व वाले फ्रांसीसी कंपनी समूह और यूनिवर्सेल बाऊ के नेतृत्व वाले इंडो-आस्ट्रो-जर्मन कंपनी समूह के दोनों प्रस्तावों पर सरकार ने विचार किया. इन विदेशी कंपनियों के प्रस्ताव से जुड़ी वित्तीय मदद वाली पेशकशों पर संचालन एवं वार्ता समिति ने विचार किया जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण के अध्यक्ष कर रहे थे.

समिति ने मई 1986 में अपनी रिपोर्ट जटिल तकनीकी मुश्किलों पर गौर करने के बाद दी. उसने पाया फि फ्रांसीसी प्रस्ताव के कथित मूल्य में से उसका निहित अनुदान घटाने पर यह प्रस्ताव 444.60 करोड़ रु. का रह जाता है और यह आईएजी के 450.57 करोड़ रु. के प्रस्ताव से सस्ता है.

5 नवंबर 1986 को राजीव गांधी की अध्यक्षता वाली आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडलीय समिति ने इस प्रस्ताव को 496 करोड़ रु. की लागत पर स्वीकृति दे दी. दो हफ्ते बाद 24 नवंबर को इस स्वीकृति व सूचना राष्ट्रीय पनबिजली निगम को दी ग 2 दिसंबर को फ्रांसीसी कंपनी समूह को श स्पष्ट किए बिना और करार पर दस्तख करने की आखिरी तारीख बताए बिना आश पत्र दे दिया गया.

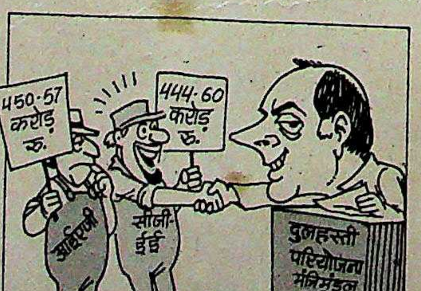

सभी कार्टून: अजीत नैनन

चरण 3

1986-88: फ्रांसीसी समूह ने रुख बदला

लेकिन आशय पत्र के साथ संतोषजन समझौता वार्ता की पूर्व शर्त जोड़ दी ग थी. इन सबको निबटाने के लिए पनबिज निगम ने दिसंबर 1986 में एक कार्यद गठित किया. एकाएक 29 दिसंबर बिजली विभाग ने पनबिजली निगम दूसरी संचालन एवं वार्ता समिति गठित क के लिए अधिकृत किया. समिति की अध्यक्ष केंद्रीय विद्युत प्राधिकरण को सौंपी गई अ इसमें बिजली और वित्त मंत्रालयों, प बिजली निगम, प्राधिकरण और जल आयो के प्रतिनिधि सदस्य शामिल किए गए.

दोनों समितियों ने फ्रांसीसी कंपनी सम के प्रतिनिधियों से कई दौर की बातचीत लेकिन प्रतिकूल भूगर्भीय बदलावों की स्थि में शर्तें क्या होंगी, ऐसे महत्वपूर्ण मुद्दों कोई सहमति नहीं हो सकी. आशय प पहले ही हथिया चुके फ्रांसीसी प्रतिनि दर्जनों दौर चली इस बातचीत में कड़ा अपनाने लगे और ये शर्तें रखने लगे:

- अगर प्रतिकूल भूगर्भीय स्थितियां ब तो कंपनी अतिरिक्त वित्तीय और समय क्षतिपूर्ति पाने की हकदार होगी.
- विवाद की स्थिति में मामलों का नि

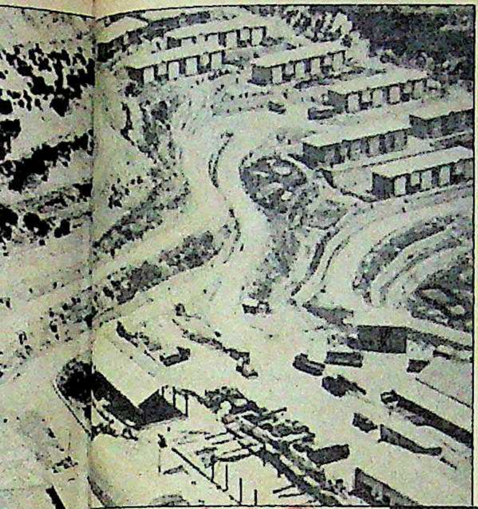

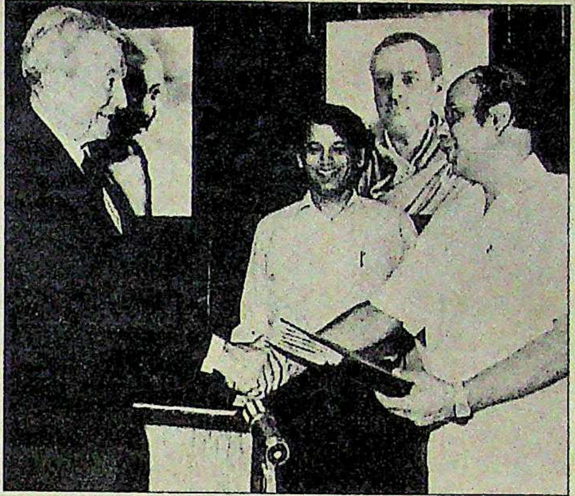

परियोजना स्थल (बाएं) और ठेके पर दस्तखत के बाद (ऊपर)

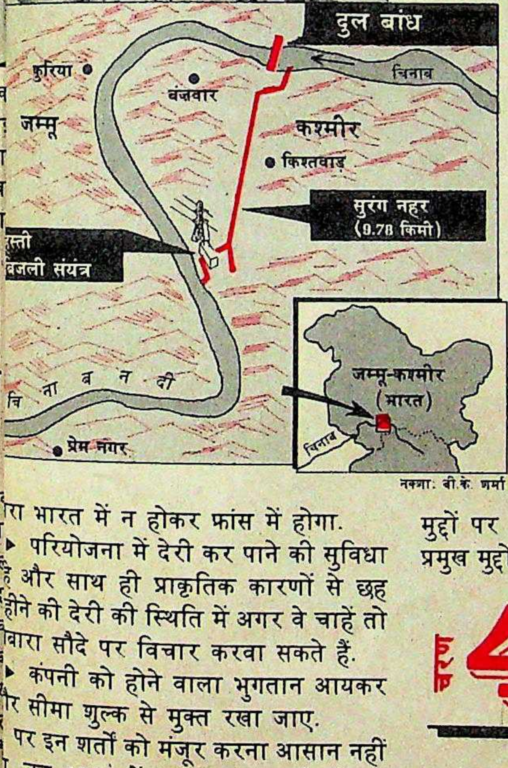

नक्शा: बी.के. शर्मा

रा भारत में न होकर फ्रांस में होगा.

▶ परियोजना में देरी कर पाने की सुविधा और साथ ही प्राकृतिक कारणों से छह हीने की देरी की स्थिति में अगर वे चाहें तो बारा सौदे पर विचार करवा सकते हैं.

▶ कंपनी को होने वाला भुगतान आयकर र सीमा शुल्क से मुक्त रखा जाए.

पर इन शर्तों को मंजूर करना आसान नहीं . जून 1988 में यह मामला सचिवों की मिति के पास भेज दिया गया जिसमें जली विभाग द्वारा इसे रद्द करने की फारिश भी जुड़ी हुई थी. लेकिन समिति ने ासीसी प्रतिनिधियों को बातचीत के लिए न महीने का समय और दे दिया.

अपनी जिद पर अड़े रहकर फ्रांसीसी तिनिधियों ने जब पूरी बातचीत में अपना भुत्व जमा लिया तो यह तय था कि कहीं न हीं से आपत्ति उठती ही. यह आपत्ति कालीन ऊर्जामंत्री वसंत साठे ने उठाई. 27 नवरी 1989 को उन्होंने प्रधानमंत्री को ठी लिखकर फ्रांसीसी प्रतिनिधियों के अड़ि- रवैये पर कड़ी आपत्ति की. साठे ने सा, "समिति ने अपनी रिपोर्ट में यह संकेत या है कि फ्रांसीसी कंपनी समूह के लोगों से कई दौर की बातचीत के बाद भी नियम और शर्तों को अंतिम रूप नहीं दिया जा सका है, इसलिए अब इस कंपनी समूह से ठेके पर करार करना संभव नहीं है. समझौता बातचीत के दौरान इस कंपनी समूह के लोगों ने पहले तय हुए अनेक मुद्दे फिर से उठाने के साथ-साथ अनेक नए मुद्दे भी उभारे हैं. दीर्घकालिक बातचीत के बाद अब अनेक मुद्दों पर सहमति हो सकती है लेकिन कुछ प्रमुख मुद्दों पर मतभेद अभी भी बरकरार है."

4 1988: नए प्रस्ताव मंगाए गए

अगस्त 1988 में सरकार को एक और मुश्किल का सामना करना पड़ा क्योंकि फ्रांस की सरकार ने भी मसला सुलझाने में मदद नहीं की. पनबिजली निगम ने भारतीय दूतावास से आग्रह किया कि वह फ्रांस की सरकार को बीच में लाकर समझौता पूरा कराने में मदद करे. लेकिन न तो फ्रांस की सरकार और न ही ठेका चाहने वाले कंपनी समूह की ओर से कोई आशाजनक संकेत मिला.

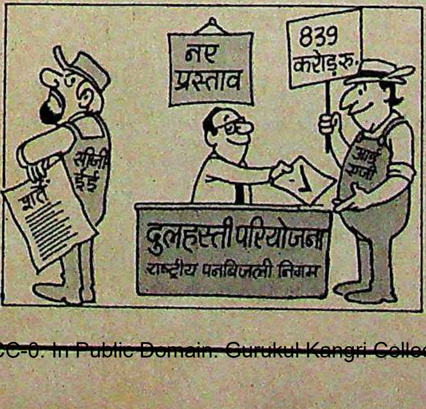

12 अगस्त को विवश होकर सरकार ने परियोजना के समूचे ठेके के मामले को फिर से खोल दिया. पनबिजली निगम को आईएजी से बात करने को कहा गया. फ्रांसीसी समझौता वार्ता के लिए तत्पर होते दिखे. फ्रांसीसी कंपनी समूह और आईएजी ने नई निविदाएं भरीं जो 24 अक्तूबर 1988 को खुलीं. आईएजी ने 930.50 करोड़ रु. का प्रस्ताव रखा था जो 1130.43 करोड़ रु. के फ्रांसीसी प्रस्ताव से कम था.

5 1988: आईएजी को ठेके की सिफारिश

सरकार ने लागत खर्च कम करवाने के लिए दोनों से बातचीत शुरू की. लंबी बातचीत के बाद आईएजी ने जो 838.99 करोड़ रु. का प्रस्ताव रखा, वह भी फ्रांस के 932 करोड़ रु. के नए प्रस्ताव से कम ही था.

21 नवंबर को पनबिजली निगम की वार्ता समिति ने फ्रांसीसी कंपनी समूह को 1986 में दिया गया आशय पत्र दोबारा रद्द करने और आईएजी को ठेका देने का सुझाव दिया. उसकी रिपोर्ट में कहा गया, "समिति को लगा कि वे (फ्रांसीसी) करार में ऐसी शर्तें शामिल करवा लेना चाहते हैं जिनसे उन्हें इस परियोजना के काम के दिनों में काफी अधिक रकम का दावा करने की सुविधा हो... इस स्थिति में पहुंचने के बाद कीमतों में बढ़ोतरी करना उनकी तरफ से भारी अनैतिकता है."

समिति के अनुसार आईएजी का प्रस्ताव सस्ता था और उसने पनबिजली निगम की सारी शर्तें मान लीं. तकनीकी रूप से भी वह फ्रांसीसी कंपनी से बेहतर थी. इसलिए उसे ही ठेका देने की सिफारिश की गई. खुद साठे को आईएजी की पेशकश सस्ती लगी. अपनी गोपनीय टिप्पणी में उन्होंने लिखा, "दोनों पार्टियों से बातचीत करने और नए प्रस्ताव मंगाने के बाद समिति का निष्कर्ष है कि ठेका आईएजी को दिया जाना चाहिए क्योंकि उसने कम रकम की निविदाएं भरी हैं."

लेकिन फ्रांसीसी खेमे के तरकस में अभी कई तीर बचे थे. 21 नवंबर को ही, जिस

दिन उन्हें मिले आशय पत्र को रद्द करने की सिफारिश की गई थी, फ्रांसीसी दूतावास ने एक नया प्रस्ताव भेजा. जापानी येन के आधार पर भेजा गया यह प्रस्ताव पहले वाले उनके प्रस्ताव से 49.50 करोड़ रु. सस्ता था.

साठे भी परियोजना के लागत खर्च के बारे में समिति के निष्कर्षों से सहमत थे. उन्होंने लिखा, "अपनी-रिपोर्ट में समिति ने बताया है कि फ्रांसीसी कंपनी समूह ने 24.10.88 के अपने पत्र में लागत खर्च के अपने प्रस्ताव को अप्रैल 1986 के 737.85 करोड़ रु. के प्रस्ताव से 440.76 करोड़ रु. बढ़ाकर पेश किया है. फिर 7 नवंबर 1988 को उन्होंने अपने प्रस्ताव को 968.90 करोड़ रु. करके इसे 209.64 करोड़ रु. कम कर दिया. तब भी यह प्रस्ताव उनके अप्रैल 1986 के प्रस्ताव से 231.11 करोड़ रु. अधिक (अक्तूबर'88 के विनिमय दर के अनुसार) है. समिति का मानना है कि लागत खर्च में इतना बड़ा अंतर इस कंपनी समूह द्वारा खर्च के पूरे मामले पर अपनाए जा रहे गैर-जिम्मेदार रुख को दर्शाता है."

चरण 6

अक्तूबर 1988: फ्रांसीसियों की वापसी

आईएजी से सरकार की बातचीत शुरू होते ही फ्रांसीसियों ने भी तत्परता दिखाई और अपना कड़ा रुख बदला. 17 अक्तूबर को उन्होंने सरकार को सूचना दी कि उन्हें एक नया निर्माण ठेकेदार मिल गया है जो काम हाथ में लेना चाहता है. पहली समझौता वार्ता असफल हो जाने और फिर दोबारा निविदाएं मंगाने की जरूरत इसीलिए पड़ी थी कि इस कंपनी समूह के निर्माण संबंधी ठेकेदार ने कठोर शर्तें रखी थीं.

लेकिन यहां तक आते-आते यह साफ हो गया था कि करार फ्रांसीसी समूह से ही होगा. और फिर समिति की स्पष्ट सिफारिशों को नजरअंदाज करते हुए उससे समझौता वार्ता दोबारा शुरू की गई. तत्कालीन वित्त सचिव एस. वेंकिटरमनन ने अब सरकार की ओर से हस्तक्षेप किया और "5 दिसंबर 1988 को फ्रांसीसी कंपनी समूह की ओर से आए नए प्रस्ताव में काफी सुधार करवा लिया." और अब आईएजी को यह ठेका मिलने की जो भी उम्मीदें थीं, समाप्त हो गई. वार्ता समिति को भविष्य में होने वाले कीमतों के अंतर और सीमा शुल्क का हिसाब लगाते हुए इस नए प्रस्ताव का फिर से मूल्यांकन करने को कहा गया. समिति ने निष्कर्ष निकाला कि अगर यह काम फ्रांसीसी कंपनी समूह को दिया गया तो खर्च 1,158

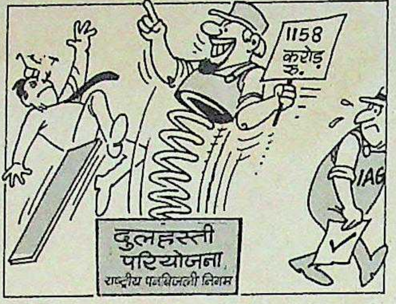

करोड़ रु. होगा और आईएजी को दिया गया तो 1,051 करोड़ रु.. मंत्रिमंडलीय समिति ने जब परियोजना को स्वीकृति दी थी, उससे यह राशि 367.5 करोड़ रु. अधिक थी.

अन्य अनुमानों के अनुसार देसी तकनीक से बिजली पैदा करने पर प्रति यूनिट 50.53 रु. का ही खर्च आता जबकि फ्रांसीसी तकनीक लेने पर यह खर्च 54.67 रु. आ रहा था. फ्रांसीसी कंपनी को इस सौदे की दौड़ से बाहर करने के दूसरे ठोस कारण भी थे. लेकिन उसके रिश्ते बहुत ऊपर तक थे. विडंबना यह है कि उसे सौदा दिलाने में बिजली विभाग की जगह वित्त मंत्रालय और खास तौर से उसके सचिव वेंकिटरमनन ने अप्रत्यक्ष रूप से काफी दिलचस्पी ली.

वित्त मंत्रालय ने इस प्रकरण में एक नया पहलू, नरम शर्तों पर कर्ज और अनुदान उपलब्ध होना भी जोड़ा जिस पर पहले कोई चर्चा ही नहीं थी. इसके बाद वित्त मंत्रालय का निष्कर्ष था कि येन में कर्ज उपलब्ध होने और फ्रांसीसी प्रस्ताव से जुड़े कर्ज की कुल मात्रा को देखते हुए उसी का प्रस्ताव सस्ता पड़ेगा. वित्त मंत्रालय ने माना कि फ्रांसीसी प्रस्ताव महंगा है लेकिन अनुदान वगैरह को जोड़ लेने के बाद यह सस्ता हो जाता है. मसलन, आईएजी के प्रस्ताव में 256.9 करोड़ रु. के कर्ज की पेशकश थी जबकि फ्रांसीसी प्रस्ताव में 429.80 करोड़ रु. की. वित्त मंत्रालय ने यह निष्कर्ष भी निकाला वि परियोजना के लिए नरम शर्तों पर जर्म अनुदान की पेशकश भी नहीं की गई है.

23 दिसंबर को वेंकिटरमनन ने ऊज मंत्रालय को सूचित किया कि फ्रांसीसी प्रस्ताव मंजूर कर लिया जाए. नया तर्क य था कि जर्मन सरकार की मिश्रित ऋ व्यवस्था उपलब्ध नहीं होगी. इसके पक्ष सबूत के तौर पर 13 दिसंबर 1988 क जर्मन राजदूत की चिट्ठी को पेश किया गया

मामले में ऊर्जा मंत्रालय को दरकिनार किया गया जबकि वित्त मंत्रालय और वित्त सचिव वेंकिटरमनन ने फ्रांसीसी कंपनी का पक्ष लिया

प्रमोद पुष्करणा

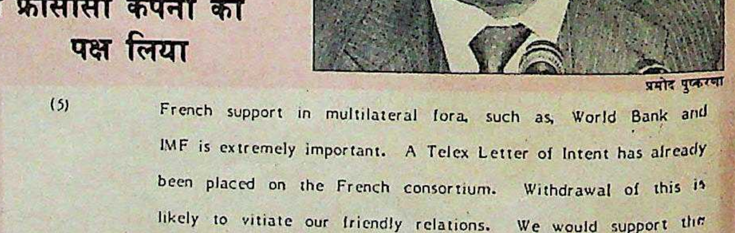

(5) French support in multilateral fora, such as, World Bank and IMF is extremely important. A Telex Letter of Intent has already been placed on the French consortium. Withdrawal of this is likely to vitiate our friendly relations. We would support the views of Ministry of External Affairs on this.

(S.Venkitaramanan)
Finance Secretary

प्रशांत पंजियार

सचिव राजगोपाल की अगुआई में ऊर्जा मंत्रालय के कई अधिकारी फ्रांसीसी कंपनी समूह को ठेका देने का विरोध कर रहे थे

"फ्रांसीसी कंपनी समूह के अड़ियल रवैये को देखकर तो यही लगता है कि परियोजना पूरी होने में देर लगेगी"

वसंत साठे
पूर्व ऊर्जा मंत्री

7 जनवरी 1989: साठे ने खोट तलाशा

अब मालूम हुआ है कि वेंकिटरमनन ने श्चिम जर्मनी के राजदूत की चिट्ठी की नमानी व्याख्या प्रस्तुत की. वसंत साठे की पनीय चिट्ठी से भी यही निष्कर्ष निकलता कि राजदूत की चिट्ठी का मतलब वह नहीं जो वेंकिटरमनन ने बताया. राजदूत ने खा था, "मेरी सरकार इस परियोजना पर ने वाले खर्च में इसी शर्त पर भागीदारी रेगी कि यह रकम भारत-जर्मन आर्थिक हयोग संधि में तय राशि के अंदर ही मिल मान ली जाए."

जबकि वित्त सचिव ने निष्कर्ष निकाला , "जर्मन पक्ष से समय-समय पर मिलने ले संकेतों और 13 दिसंबर 1989 की जदूत की चिट्ठी से, जो उन्होंने ऊर्जामंत्री लिखी है, मिलने वाले संकेतों के मद्देनजर ह फैसला किया गया है कि परियोजना के ए जर्मन सरकार से मिश्रित ऋण व्यवस्था लब्ध नहीं होगी."

लेकिन इस पूरी परियोजना के हर पहलू बारीकी से अध्ययन करने वाले साठे ने ट से वेंकिटरमनन की व्याख्या को ठुकराते लिखा, "लेकिन प. जर्मनी के राजदूत ने लग से सूचित किया है कि उनकी सरकार परियोजना पर रकम खर्च करने को यार है बशर्ते इसे भारत-जर्मन आर्थिक हयोग संधि के वार्षिक कार्यक्रम में शामिल न लिया जाए और यह कि परियोजना के ल्यांकन का अच्छा असर पड़ा है. इस बीच ईएजी कंपनी समूह ने यह संकेत भी दिया कि 1988-89 और 1989-90 में परिजना लागत में प. जर्मनी का ऋण अगर नहीं पड़ेगा तो वे उस कमी को बिना कोई अतिरिक्त फायदा लिए पूरा करने को तैयार हैं. आईएजी के प्रस्ताव के अनुदान वाले अंश को मिश्रित ऋण व्यवस्था के आधार पर मूल्यांकित किया जाए तो यह प्रस्ताव फ्रांसीसी कंपनी समूह के प्रस्ताव से सस्ता होगा." साठे ने लिखा, "वित्त मंत्रालय का अंदेशा (जर्मन अनुदान के बारे में) गैरवाजिब है."

8 सितंबर 1989: फ्रांसीसियों को ठेका मिला

ऊर्जा मंत्रालय द्वारा उठाई गई गंभीर तकनीकी और वित्तीय आपत्तियों के बावजूद आखिर में वित्त सचिव की बात ही चली. वेंकिटरमनन ने साठे की टिप्पणी के जवाब में कैबिनेट सचिव को 29 जनवरी 1989 की अपनी चिट्ठी में कहा, "इसे (समझौते को) तोड़ने से दोनों देशों के दोस्ताना रिश्तों पर बुरा असर पड़ने का अंदेशा है."

पर दुलहस्ती परियोजना हथियाने की दौड़ अभी खत्म नहीं हुई थी. वित्त मंत्रालय से विशेष आदेश पाकर ऊर्जा मंत्रालय ने इस प्रस्ताव के मूल्यांकन के लिए एक और समिति गठित कर दी.

फ्रांसीसी टोली के प्रमुख लोगों ने तो दिल्ली में डेरा ही डाल लिया. दिल्ली दौरे पर आए फ्रांसीसी वाणिज्यमंत्री ने 31 जनवरी 1989 को साठे को पत्र लिखकर अपने देश के कंपनी समूह की वकालत की.

आखिर में सारी आपत्तियों और संदेहों को दरकिनार करते हुए इस करार पर दस्तखत हो गए. राष्ट्रीय पनबिजली निगम और सीजीईई-एल्स्थोम के नेतृत्व वाले पांच कंपनियों के समूह के बीच 9 सितंबर 1989 को करार पर दस्तखत हुए. यह करार लोकसभा चुनाव से मात्र तीन हफ्ते पहले हुआ. तब तक 1981 में 183 करोड़ रु. की लागत वाली यह योजना 1,150 करोड़ रुपए तक की लागत वाली हो चुकी थी.

दुलहस्ती परियोजना उन कुछ सौदों में से एक है जिसमें दोनों सरकारों के बड़े लोगों की भागीदारी स्पष्ट है. आखिरी दौर में फ्रांसीसी राष्ट्रपति भी इस चक्कर में आ गए थे. साठे के पत्र में कहा गया है, "विदेश मंत्रालय का मानना है कि प्रधानमंत्री इस मसले पर भारत सरकार के नजरिए से फ्रांसीसी राष्ट्रपति को अवगत कराना चाहते हैं... हमारे लिए फ्रांसीसी राष्ट्रपति को यह बताना जरूरी है कि इस परियोजना में हमारा काफी समय बरबाद हो चुका है और लागत खर्च में 200 करोड़ रु. से अधिक की बढ़ोतरी हो चुकी है."

जब ऐसी ऊंची बातें दांव पर हों और इतने ऊंचे स्तर पर बात पहुंचे तो शुरू से नियम-कानूनों पर अमल न होना कोई अचरज की बात नहीं है. ऐसी ही एक गड़बड़ 1986 में करार की शर्तों-नियमों के तय हुए बिना आशय पत्र का टेलेक्स संदेश देना है. इससे भी बड़ी गड़बड़ यह है कि इस परियोजना में बिजली मंत्रालय को दरकिनार करके वित्त मंत्रालय ही हावी रहा—शुरू में प्रणव कुमार मुखर्जी और बाद में वेंकिटरमनन के माध्यम से. और इसी के चलते फ्रांसीसी कंपनी समूह को करार मिल गया.

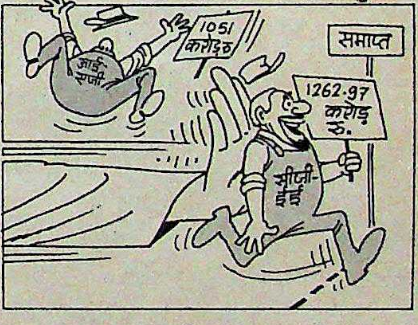

समिति के अनुसार फ्रांसीसी कंपनी समूह से समझौता वार्ता एक दुष्कर काम था. और इतनी मेहनत का जो नतीजा निकला वह भी बहुत निष्पक्ष नहीं लगता. जिस तरह से इस परियोजना को विदेशी कंपनियों के लिए खोला गया, फ्रांसीसी कंपनी समूह को दन से आशय पत्र दे दिया गया, उन्हें आगे करने तथा आईएजी को पीछे करने के लिए जो दांव चले गए, वित्त सचिव ने जो असामान्य दिलचस्पी ली तथा ऊर्जामंत्री के रूप में माहिर प्रशासक माने जाने वाले वसंत साठे ने जिस तरह से इन सबकी धज्जियां उड़ाई—भले ही इनकी अनदेखी हो गई—ये सब बातें ऐसी अनेक शंकाएं खड़ी करती हैं कि इस सौदे में भी दलाली खाई गई है.

और जब फ्रांसीसी कंपनी समूह के लोग चिनाब नदी के तट पर सुरंगें खोदने में लगे हैं, नई सरकार भी इस सौदे की तह तक पहुंचने की कोशिश में है.

धारा उलटने के इरादे

कंपनियों के कारोबार के माहिर लोग शायद आईएफबी इंडस्ट्रीज का नाम भूल गए हों. लेकिन सच यह है कि कभी इंडियन फाइन ब्लैंक के नाम से मशहूर इस इंजीनियरिंग कंपनी की स्थापना कलकत्ता के तकनीकविद् बिजोन नाग ने 1977 में की थी. 1984 से 1987 के बीच इसका कुल कारोबार 2.5 करोड़ रु. से बढ़कर 25 करोड़ रु. का हो गया. उन्होंने पश्चिम बंगाल में पूर्वी भारत का पहला मशीन टूल्स संयंत्र लगाया. फिर उन्होंने दो बीमार चाय बागान खरीदे. उनमें नई जान फूंकी और फिर कृषि-आधारित रासायनिकों के उत्पादन की इकाई लगाई. आईएफबी अब बंगलूर और गोवा में दो नए कारखाने लगाने जा रही है. पहला कारखाना मारुति कारों के लिए खास तरह की सीटें बनाने का होगा और दूसरे में कपड़े धोने वाली पूर्णतः स्वचालित मशीनें बनाई जाएंगी. उम्मीद है इस समूह का कारोबार, जो फिलहाल 50 करोड़ रु. का है, बढ़कर तीन गुना से भी ज्यादा का हो जाएगा.

और अब उसके पास एक अति महत्वाकांक्षी योजना है. नाग ने यात्री गाड़ियों के लिए महत्वपूर्ण सुरक्षा उपकरण बनाने के लिए इंग्लैंड में 8 करोड़ रु. की लागत से एक इकाई लगाने के लिए सरकार की इजाजत मांगी है. महत्वपूर्ण बात यह है कि इस कंपनी में ज्यादातर हिस्सेदारी आईएफबी की होगी और ब्रिटिश संयंत्र में लगने वाले पूंजीगत उपकरण भारतीय इकाइयों से भेजे जाएंगे. क्या उपनिवेशवाद की धारा उलटी बहेगी?

आगे बढ़ने की बेताबी

डीसीएम लिमिटेड की बीमार कंप्यूटर इकाई, डीसीएम डाटा प्रोडक्ट्स विश्व बाजार में कूदने की तैयारी कर रही है. हाल ही में चिप तकनीक बेचने के लिए इसने अमेरिकी कंपनियों—सिलिकन वैली टेक्नोलॉजी और कैपरीकॉर्न—से समझौता किया है. टेक्सास इंस्ट्रूमेंट्स, डेल और स्पियर से भी सौदेबाजी चल रही है. इसके एक ऑपरेटिंग सिस्टम के एक हिस्से का डिजाइन तैयार करने का आंशिक ठेका सॉफ्टवेयर धंधे की धुरंधर 'माइक्रोसॉफ्ट' को मिला है. साथ ही डीसीएम सिंगापुर की 'मल्टीटेक' के साथ हाजिरी रिकार्डर और दूसरे उपकरण बनाने के लिए संयुक्त उद्यम लगा रही है, कंप्यूटर क्षेत्र में कई तरह से पहल करने के बाद अपने प्रतिद्वंद्वियों से काफी पिछड़ जाने वाली इस कंपनी ने लगता है अब इस होड़ में आगे निकल जाने की ठान ली है.

हमदर्दी की आस

भारत में होटलों की 'चेन' चलाने वाली कंपनियां कुछ समय से सरकार से मांग कर रही थीं कि उन्हें विदेशी पर्यटकों के लिए कमरों के किराए रुपए के बदले अमेरिकी डॉलर में बताने की इजाजत दी जाए. वजह साफ है. डॉलर या दूसरी दुर्लभ मुद्राओं की तुलना में रुपए की कीमत जितनी तेजी से गिरती है उतनी तेजी से वे अपने किराए नहीं बढ़ा पाते. इस तर्क पर पर्यटन विभाग ने हमदर्दी से विचार किया और फिर उसे वित्त मंत्रालय के पास भेज दिया. क्या मंत्रालय भी उनसे हमदर्दी दिखाएगा?

नई सेवाओं का इरादा

भारत में अपने कामकाज से उत्साहित होकर बैंक ऑफ अमेरिका ने अगले कुछ महीनों में बाजार में धूम-धड़ाके से कुछ नई सेवाएं शुरू करने की योजना बनाई है. वह अब कुछ उपभोक्ता वस्तुओं के लिए कर्ज देने की योजना बना रहा है. वित्तीय सेवाओं और जोखिम पूंजी के क्षेत्र में कूदने की भी योजना है. और फिर पिछले छह महीने में उसका आप्रवासी विदेशी मुद्रा कोष दोगुने से भी ज्यादा बढ़कर 30 करोड़ डॉलर (500 करोड़ रु. से ज्यादा) का हो गया है. उसे उम्मीद है कि साल के अंत यह कोष 40 करोड़ डॉलर (680 करोड़ रु.) का हो जाएगा.

वीडियो-विकार

वीडियो क्रांति ने अब देश की अर्थव्यवस्था की खटिया खड़ी करनी शुरू कर दी है. भारत में वैध तरीके से बेचे जाने वाले हर वीडियो कैसेट रिकार्डर या प्लेयर के साथ ही इनके तीन सेटों की तस्करी भी कर दी जाती है. यह नतीजा दिल्ली की एक कंपनी क्रिसंस इलेक्ट्रॉनिक्स सिस्टम्स लिमिटेड ने अपने एक अध्ययन से निकाला है. यह कंपनी देश में कानूनी रूप से बिकने वाले 1.2 लाख वीसीआर और वीसीपी में से एक चौथाई को कल-पुर्जे जोड़कर तैयार करती और बेचती है. अध्ययन से पता चला है कि कानूनी तौर पर होने वाली बिक्री तो स्थिर है परंतु तस्करी के माल की बिक्री बढ़ रही है (देखिए चार्ट). कंपनी ने हिसाब लगाया है कि इससे उत्पादन शुल्क, बिक्री कर और सीमा शुल्क के रूप में देश को हर साल 250 क़रोड़ रु. का घाटा हो रहा है.

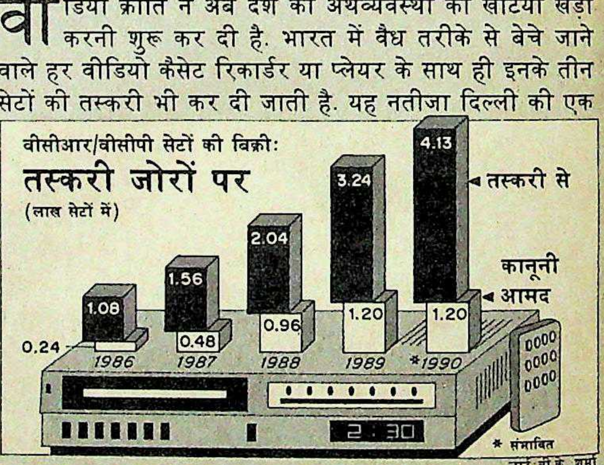

चार्ट: बी.के. शर्मा

मेहरबानी की उम्मीद

मई के पहले हफ्ते में दुनिया भर के सर्वश्रेष्ठ और उदीयमान बैंकर्स नई दिल्ली में एशियाई विकास बैंक (एडीबी) की सालाना बैठक में भाग लेने पहुंचेंगे. पिछले कुछ वर्षों में इस बैंक ने भारत को दी जाने वाली अपनी सहायता में काफी बढ़ोतरी की है. पर शायद इस बैठक का असली मकसद है नई सरकार की आर्थिक नीतियों को आंकना. पिछले साल इसकी बैठक पेइचिंग में हुई थी और उसके तुरंत बाद थ्येन आन मन चौक में नरसंहार का हादसा हो गया था. तब से चीन में दुनिया के बैंकिंग समुदाय की दिलचस्पी कम हो गई. तो क्या अब उनकी दिलचस्पी भारत में बढ़ेगी?

सॉफ़्टवेयर निर्यात – एक चुनौती. आपको इस चुनौती में सफल बनाने के लिए हमारी सहायता उपलब्ध है !

सॉफ़्टवेयर निर्यात - एक अवसर : क्या आप लाभ उठाने को तैयार हैं?

बिना प्रयास यह संभव नहीं है। आपके लिए सारा विश्व आपका बाज़ार है, साथ ही वह आपका प्रतियोगी भी है। इस कड़े मुकाबले के माहौल में सॉफ़्टवेयर की माँग का स्वरूप तेज़ी से बदलता रहता है और इसलिए ठीक समय पर, ठीक स्थान पर,सही सॉफ़्टवेयर उपलब्ध कराना भारी अनिश्चितताओं का सामना करने के बराबर है। लेकिन इन सभी अनिश्चितताओं के बीच जो बात निश्चित है वह है एक्ज़िम का वित्तीय पैकेज।

सॉफ़्टवेयर निर्यात का उत्प्रेरक : एक्ज़िम बैंक

जब हम प्रमुख साधनों की बात करते हैं - धन; तकनीकी जानकारी, समय - तब एक्ज़िम बैंक का पैकेज अपनाना लाभप्रद है। भारत सरकार ने नवम्बर 1986 में सॉफ़्टवेयर नीति की घोषणा की थी। तभी से एक्ज़िम बैंक ने भारतीय कंप्यूटर सॉफ़्टवेयर निर्यातकों को 100 करोड़ रुपयों से अधिक निर्यात लक्ष्य आयोजन करने में सहायता की है। महत्वपूर्ण साधनों को शीघ्रता से और एक ही स्रोत से उपलब्ध कराने का एक्ज़िम बैंक का प्रस्ताव है। इन साधनों के लाभ इस प्रकार हैं :

- समग्र वित्तीय पैकेज -विदेशी मुद्रा और रुपया सावधि ऋण, इसके अतिरिक्त कार्यशील पूँजी की व्यवस्था।
- एक्ज़िम बैंक द्वारा जाँच किए गए प्रस्तावों पर सीमा शुल्क की छूट।
- कंप्यूटर -प्रणाली के आयात के लिए अनुमति लगभग पन्द्रह दिनों में।

इसके अलावा सॉफ़्टवेयर नीति के लाभ

- नई कंप्यूटर -प्रणाली के आयात, मौजूदा कंप्यूटर -प्रणाली के विकास और विदेशी सॉफ़्टवेयर कंपनियों के अभिग्रहण के लिए अतिरिक्त निर्यात आय के 30 प्रतिशत की सुलभता।
- विदेश में मार्केटिंग संबंधी खर्चों के लिए विदेशी मुद्रा की उपलब्धता।
- विदेशी कोलॅबोरेशन/इन्वेस्टमेन्ट अवसर
- नकदी क्षतिपूर्ति सहायता।
- प्रत्यक्ष करों में लाभ।
- उपग्रहों के माध्यम से विदेशी डेटा बेस की सुलभता।

क्या आप एक्ज़िम बैंक के ज़रिये तेज़ गति से आगे बढ़ना चाहेंगे?

मूलतः इसके लिए ज़रूरी है एक अच्छी परियोजना हो और उसके साथ –

- आपकी प्रबंधन क्षमता सिद्ध करने वाला पिछला रिकॉर्ड।
- आकस्मिक खर्च निपटाने के लिए मज़बूत आर्थिक स्थिति।
- निर्यात संबंधी ऐसी व्यापक योजना जिसके लिए मार्केटिंग में भागीदारी/सहयोग का समर्थन प्राप्त हो।

यदि आपके पास ये सब हैं तो आज ही हम से मिलिए।
अधिक जानकारी के लिए लिखिए :
पो.बॉक्स सं. 11697, बम्बई

भारतीय निर्यात - आयात बैंक
लाभों की सूची आपके लिए सुलभ

निरलॉन

कर्ताधर्ता कौन बने

घाटे में चल रही कंपनी से पंजा को हटाने के बाद वित्तीय संस्थाएं दुविधा में

पंजा को अध्यक्ष पद से हटना होगा.

—29 जनवरी को वित्तीय एवं औद्योगिक पुनर्गठन बोर्ड (बीआईएफआर) के समक्ष स्टेट बैंक ऑफ इंडिया के मुख्य महाप्रबंधक **आर.पी. श्रीवास्तव** के बयान का अंश.

इस खबर ने बंबई के शांत बैंकिंग जगत को हैरत में डाल दिया. 2 मार्च को निरलॉन लिमिटेड के सबसे बड़े संस्थागत शेयरधारक भारतीय यूनिट ट्रस्ट ने कंपनी के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक एस.आर.बी. पंजा को एक संक्षिप्त चिट्ठी में सूचित किया कि वे अपने पद से हटा दिए गए हैं. इसी व्यक्ति को सरकारी वित्तीय संस्थानों ने 156 करोड़ रु. के कारोबार वाली सिंथेटिक यार्न और नायलॉन बनाने वाली इस बीमार कंपनी का कभी प्रमुख कर्ताधर्ता बनाया था.

विडंबना साफ झलक रही थी. देश के सबसे बड़े वित्तीय संस्थान भारतीय औद्योगिक विकास बैंक (आईडीबीआई) के पूर्व अध्यक्ष पंजा को जब बीमार निरलॉन की सेहत सुधारने के लिए इस पद पर बिठाया गया तो वे रिटायर जिंदगी बिता रहे थे. पर दो साल बाद ही उनके पूर्व आकाओं की उन पर नजरे-इनायत नहीं रही.

मई 1988 में जब पंजा को निरलॉन का अध्यक्ष बनाया गया था तो कंपनी की माली हालत रामभरोसे थी. उस पर 200 करोड़ रु. के कर्ज का बोझ था. 26 करोड़ रु. का सालाना ब्याज भरने के अलावा कंपनी 42 करोड़ रु. के घाटे में भी चल रही थी. उम्मीद थी कि स्टेट बैंक और आईडीबीआई मिलकर बीआईएफआर के सामने घाटे में चल रही इस कंपनी के पुनर्गठन की योजना पेश करेंगे पर तब तक पंजा ने आसन जमा लिया था.

पर असल समस्याएं तो कंपनी में नई जान फूंकने की इन कोशिशों के बाद आई. कंपनी के मुख्य बैंकर स्टेट बैंक को लगा कि निदेशक मंडल में महत्वपूर्ण फैसले करते समय पंजा वित्तीय संस्थानों और बैंकों के प्रतिनिधियों की राय नहीं लेते और स्थापित कायदों को ताक पर रख देते हैं. इसके जवाब में पंजा कहते हैं, "मैं समझता हूं कि मेरा मकसद बैलेंस शीट को दुरुस्त करना था. पर बदकिस्मती से काम के मुकाबले कायदों को ज्यादा अहमियत दी गई."

पहला बखेड़ा अगस्त 1988 में खडा हुआ. स्टेट बैंक के नामांकित प्रतिनिधि और तत्कालीन वित्त निदेशक सी.बी. फडनीस ने तीन महीने में ही कंपनी को छोड़ दिया. फडनीस ने तो यही कहा कि वे 'निजी कारण' से कंपनी छोड़ रहे हैं पर जानकारों का

मानना है कि पंजा लगातार उनके खिला
शिकायतें कर रहे थे इसलिए स्टेट बैंक
उन्हें वापस बुला लिया. फडनीस की जग
पी.वी. राव को एक साल बाद नामांकि
किया गया.

बीआईएफआर की पूछताछ में स्टेट बैं
के अधिकारियों ने आरोप लगाया कि नि
लॉन में राव को बहुत कम अधिकार दिए ग
थे और पंजा ने उनकी राय लिए बिना
कंपनी की लेखा रिपोर्ट (मार्च 1989
खत्म होने वाले 18 महीनों के लिए
को अंतिम रूप दे दिया था. अपने बचाव
पंजा का कहना है कि लेखा रिपोर्ट को रा
की नियुक्ति से चार दिन पहले ही अंतिम रू
दे दिया गया था. पर स्टेट बैंक को उन
खिलाफ कुछ और भी शिकायतें हैं.

कर्मचारी यूनियन से हु
निरलॉन के वेतन समझौते व
तारीख दिसंबर 1986
खत्म हो गई थी. पंजा ज
अध्यक्ष बने तो 2,600 कर्म
चारियों का प्रतिनिधित्व कर
वाली यूनियन ने उनसे न
वेतन समझौता किया. बात
चीत जनवरी 1989 में शु
हुई पर गतिरोध बना र
और 1989 के मध्य में यूनि
यन ने 45 दिन तक हड़ता
रखी जिससे 10 करोड़ रु.
घाटा हुआ. पंजा के मुताबि
वित्तीय संस्थाओं की बैठक
उन्हें इस बात की 'मौखिक
स्वीकृति दे दी गई थी
यूनियन से समझौते के लि
'प्रबंधन का फैसला' मा
होगा. इसके बाद पंजा ने
करोड़ की सालाना वेतन वृ
देकर समझौता कर लि
और हड़ताल खत्म हो गई.

स्टेट बैंक ने अब यह कहन
शुरू कर दिया कि पंजा
वेतन समझौता करने से पह
न तो संस्थानों और न
निदेशक मंडल की राय ल
पर पंजा का दावा है
उन्होंने 'यूनियन से निबटने
अपने अधिकार के तहत' है

नामम भोजानी

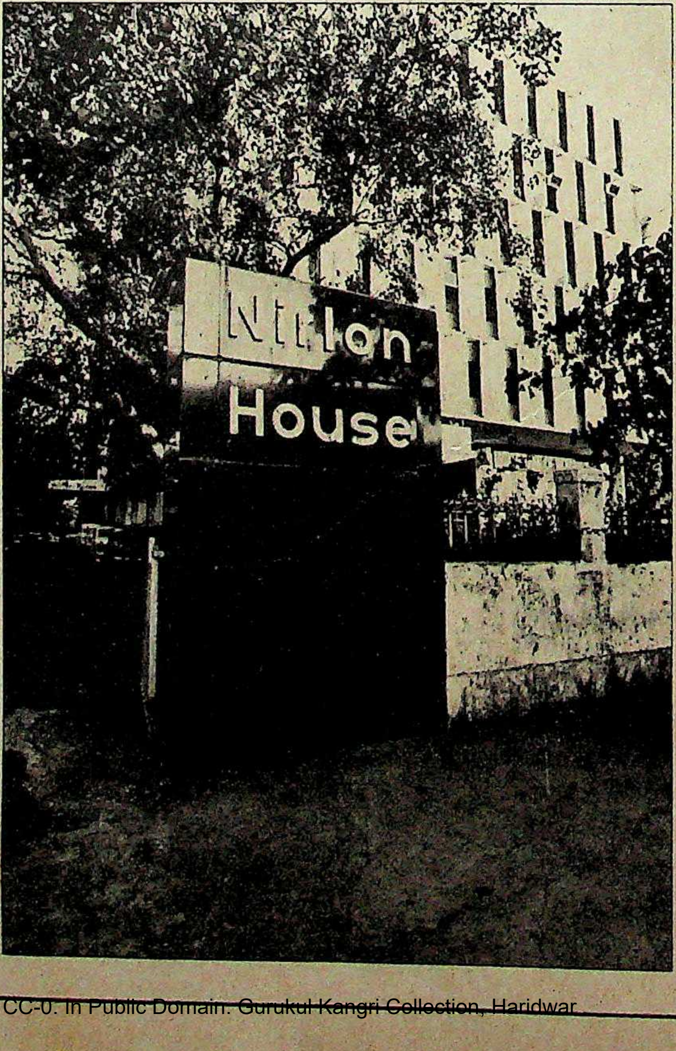

भगवान न करें
कभी ऐसा हो...

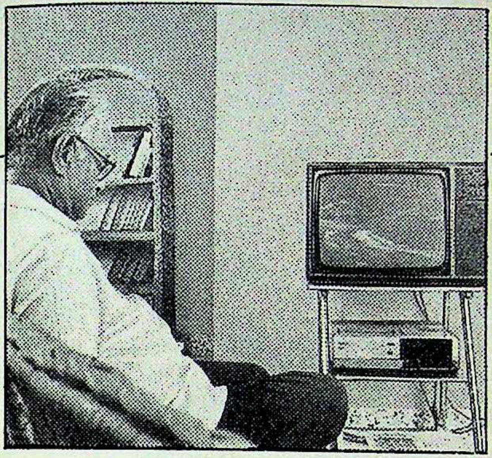

—...मगर हुआ तो...

युनाइटेड इंडिया
टी.वी. पॉलिसी
एहतियात के लिए.

ज़ाहिर है टी वी देखते वक्त हम यह नहीं चाहेंगे कि वोल्टेज बढ़कर हमारे सेट को क्षति पहुँचाए, या वोल्टेज के उतार-चढ़ाव से पिक्चर ट्यूब फट जाए. लेकिन होनी को कोई टाल सका है?

ठीक है, क़िस्मत को बदलना किसी के बस में नहीं, लेकिन अनहोनी का सामना किया जा सकता है युनाइटेड इंडिया की टी वी पॉलिसी अपनाकर. इस पॉलिसी में शामिल है आग, बाढ़, तूफ़ान, भूकंप, चोरी, दंगे-फ़साद, शॉर्ट-सर्किट, टंकियों से बहते पानी से हानि, फट जाना और दुर्घटनाओं से हुए नुकसान एवं आकस्मिक कारणों से हुई टी वी सेट को हानि.

बीमा करवाने का बहुत सीधा-सरल तरीक़ा है. युनाइटेड इंडिया की देशभर में 1000 शाखाएं हैं. निकटतम केंद्र से संपर्क करें, आप को खुद ही पता चल जाएगा कि कितना आसान है हमारे द्वारा बीमा करवाना. तो अब दुर्घटना होने का इंतज़ार न करें, आज ही युनाइटेड इंडिया से बीमा करवाएँ... एहतियात के लिए.

UNITED INDIA

युनाइटेड इंडिया इंश्योरन्स कंपनी लिमिटेड
(जनरल इंश्योरन्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया की सहयोगी संस्था)
24, वाइट्स रोड, मद्रास 600 014.

UNITED INDIA
UNITED INDIA
WE CARE

LINTAS MUI 32517 HI

ऐसा किया था. बीआईएफआर के अधिकारियों का तर्क है कि कंपनी बीमार है इसलिए कर्मचारियों से भी कुछ त्याग की उम्मीद की जानी चाहिए.

पिछले साल मार्च के अंत तक निरलॉन पर कर्ज भार 206 करोड़ रु. तक पहुंच गया. कंपनी हांगकांग बैंक और सिटी बैंक समेत अनेक विदेशी बैंकों की 81.5 करोड़ रु. की कर्जदार है. जनवरी 1988 से आईडीबीआई इन बैंकों से अनुरोध करता रहा कि वे इस कर्ज का 70 फीसदी माफ कर दें. माना गया कि इससे कंपनी में फिर से प्राण का संचार हो सकता है. 1989 के आखिर में पंजा ने कई बैंकों से मिलकर इस आशय-पत्र पर दस्तखत किए कि वे अपने कर्जे 18.4 करोड़ रु. तक कम कर लेंगे. निरलॉन इन बैंकों को 3.62 करोड़ रु. का भुगतान पहले ही कर चुका है.

हेमंत पीठवा

स्टेट बैंक को लगा कि पंजा महत्वपूर्ण फैसले लेने से पहले बैंकों और वित्तीय संस्थानों की सलाह नहीं लेते

पंजा: विवादों के घेरे में

इस बीच स्टेट बैंक ने समझौते को यह कहते हुए चुनौती दी कि इसमें भारतीय राष्ट्रीयकृत बैंकों के तकरीबन 24 करोड़ रु. के दावों पर विचार नहीं किया गया, जिसमें खुद स्टेट बैंक के 3 करोड़ रु. थे. पर पंजा ने समझौते को सही ठहराते हुए कहा कि विदेशी बैंकों द्वारा कर्ज माफी से निरलॉन पर लदा घाटे का बोझ 110 करोड़ रु. से घटकर 65 करोड़ रु. हो जाएगा. उनका कहना है, "अगर यह न हुआ तो कंपनी कभी नहीं चल सकेगी."

चार्ट: बी.के. शर्मा

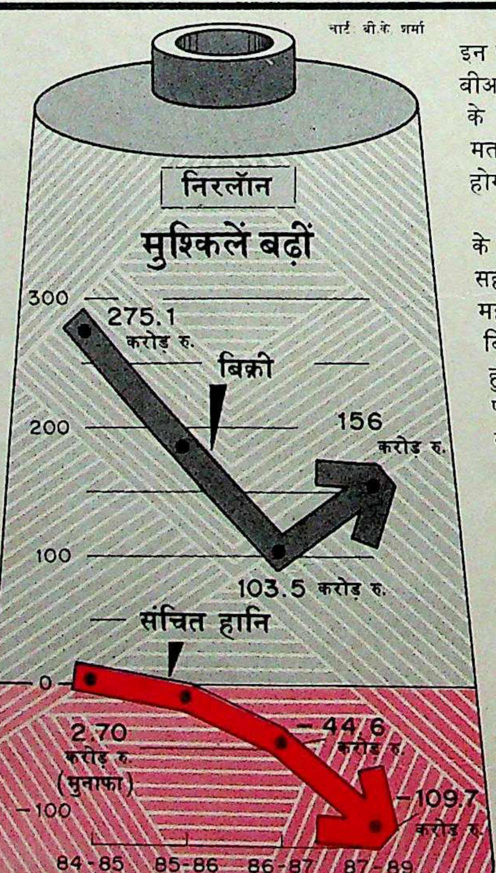

स्टेट बैंक ने पिछले साल पंजा के खिलाफ एक और गंभीर आरोप लगाया कि निरलॉन ने उसकी जानकारी या स्वीकृति के बिना ही बैंक ऑफ इंडिया के एक खाते में 25 करोड़ रु. जमा करवाए. नियमानुसार कर्जदाता कंपनी को सबसे पहले अपना अतिरिक्त धन उस बैंक में जमा करना होता है जिससे उसने कर्ज लिया है. पिछले पखवाड़े निरलॉन के निदेशकों को भेजे गए एक नोट में कंपनी को 'गैर-संघीय' बैंक में पैसा जमा कराने का दोषी ठहराया गया है. यह कदम पंजा ने इस अंदेशे में उठाया कि स्टेट बैंक कंपनी को सुविधाएं देना बंद कर सकता है और इससे कंपनी के सामने कार्य पूंजी जैसी आधारभूत जरूरतों का संकट पैदा हो सकता है. यह इस बात का संकेत था कि कंपनी और बैंक के रिश्ते किस हद तक खराब हो चुके हैं.

एक और प्रमुख घोटाला निरलॉन के पूर्व प्रबंध निदेशकों और प्रवर्तकों विरंची वी. सागर और मनहर भगत से संबंधित है. उन्होंने अपने नियंत्रण वाली कई सहयोगी कंपनियों के जरिये निरलॉन से 12 करोड़ रु. हासिल कर लिए. पिछले साल बीआईएफआर ने इन सहयोगी कंपनियों से निरलॉन के लेन-देन के विशेष लेखा परीक्षण का आदेश जारी कर दिया. माना जाता है कि चार्टेड एकाउंटेंट फर्म हरिभक्ति ऐंड कंपनी की लेखा रिपोर्ट में प्रक्रिया संबंधी कई गलतियों का उल्लेख तो हुआ पर वह किसी बड़ी वित्तीय अनियमितता को नहीं पकड़ पाई.

पिछले महीने के अंत तक सागर के नियंत्रण वाली दो कंपनियों ने निरलॉन की ज्यादातर धनराशि (2.28 करोड़ रु.) लौटा दी. लेकिन 9.98 करोड़ रु. लिए बैठी भगत की कंपनियों ने अभी अपने बकाए का भुगतान नहीं किया है. भगत ने बीआईएफआर से कहा, "निरलॉन को बकाए के भुगतान का एक प्रस्ताव दे दिया गया है जो निरफैब्रिक्स (उनके नियंत्रण वाली सहयोगी कंपनी) को आगे मिलने वाले काम स जुड़ा है." यह कंपनी निरलॉन के मुख्यालय के ए हिस्से पर काबिज है औ उसे छोड़ने का काम काफ सुस्त गति से कर रही है.

एक सरकारी अफसर क टिप्पणी थी, "अजीब बा तो यह है कि कंपनी की इ दुर्गति के लिए जिम्मेदार दोनों आदमी (सागर औ भगत) अभी बोर्ड में बने हु हैं." उनका दावा है कि पज इन दोनों के प्रति काफी उदार हैं और उन्हो बीआईएफआर से कह दिया है कि इन दोन के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने क मतलब खुद अपनी मात को निमंत्रण देन होगा.

पंजा का दावा है कि इस साल निरलॉ के दिन बहुरेंगे. पर बहुत से दूसरे लोग उनसे सहमत नहीं हैं. 1989-90 के पहले छ महीनों में कंपनी को 45 करोड़ रु. क बिक्री पर 14.33 करोड़ रु. का घाट हुआ. अब कुछ सुधार हुआ है क्योंकि पॉलिएस्टर और नायलॉन फिलामेंट या व टायर कार्ड के बाजार में तेजी है.

पर निरलॉन का सरदर्द अभी दूर नह हुआ. इस पर बैंकों का 75 करोड़ बकाया है. वह सावधि जमा और ऋण पत्र धारकों की देनदार भी है. उसे टाय कार्ड संयंत्र हासिल करने के लिए सीम शुल्क के 8.5 करोड़ रु. का भुगतान भ करना है.

और सबसे बढ़कर संदेह यह है वि वित्तीय पुनर्गठन की योजना क बीआईएफआर की औपचारिक मंजूर कब मिलेगी. पर सबसे बड़ा सवाल तो यह है कि निरलॉन का प्रबंध कौन संभालेगा. सूत्रों के अनुसार फिल हाल तो कर्ताधर्ता अधिकारी की तला जारी है. पर इसके लिए वक्त कम है बचा है.

—एस.एन. वासु
और ब्यूरो रिपो

A new star is born in the chemicals industry

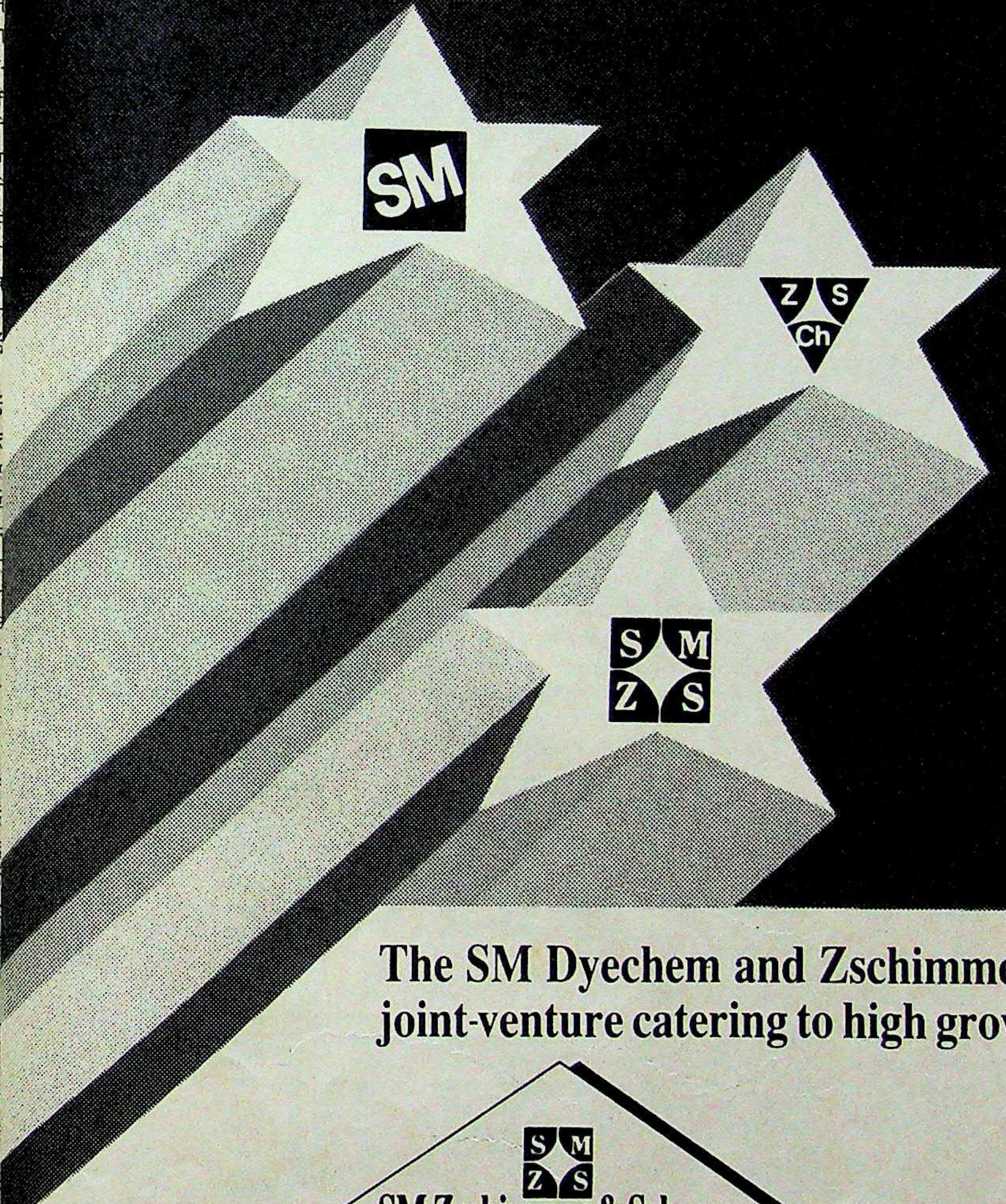

The SM Dyechem and Zschimmer & Schwarz joint-venture catering to high growth industries

S M Z S
SM Zschimmer & Schwarz
Chemicals Ltd

An SM Dyechem promoted company

The Chemistry of
Success

Regd. Office: 11 Sahakar Road, Vile Parle (E), Bombay 400 057.

Issue details to be announced soon

Adfactors/SMZS/19290

शेयर बाजार

डांवाडोल दौर

बजट की ओर टकटकी

बजट पेशी का दिन ज्यों-ज्यों पास आ रहा है, देश के शेयर बाजार आत्म-परीक्षण के दौर से गुजरने लगे हैं. न तो तेजड़ियों की चल रही है, न मंदड़ियों की. शेयर मूल्य सूचकांक में उतार-चढ़ाव हो रहा है, पर जनवरी और फरवरी जितना नहीं. विधानसभा चुनाव में महाराष्ट्र और अरुणाचल प्रदेश को छोड़कर अन्य राज्यों में इंका के हाथ से सत्ता निकलने की खबर से निवेशकों का उत्साह थोड़ा बढ़ा था.

लेकिन यह टिका नहीं. मार्च के शुरू में शेयर मूल्य गिरने लगे. इसका एक कारण 5 मार्च को वित्तमंत्री मधु दंडवते की एक घोषणा थी. उन्होंने कहा था कि अर्थ-व्यवस्था पर से मुद्रास्फीति के दबाव को कम करने के लिए सरकार 10,000 करोड़ रु. की अतिरिक्त नकदी उठाएगी. इससे व्यापारी वर्ग में डर समा गया कि उद्योग और व्यापार जगत को मिलने वाले ऋण में तंगी बढ़ेगी. पर इससे बाजार में अफरातफरी नहीं मची. शेयर मूल्यों में उतार-चढ़ाव मामूली रहा.

चार्ट: बी.के. शर्मा

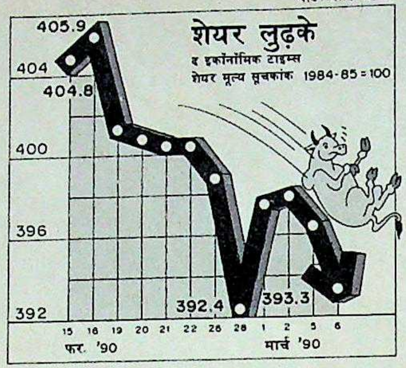

बंबई शेयर बाजार का 30 शेयरों वाला सूचकांक 20 फरवरी के 674.47 अंक से बढ़कर 1 मार्च को 692.59 पर आ गया. लेकिन चार दिन बाद वह 685.88 तक गिर गया. सूचकांक के चढ़ने का एक कारण तो टिस्को के शेयरों का मोल काफी बढ़ना है. सरकार द्वारा इस्पात पर से कंट्रोल उठाने की चर्चा एक बार फिर शुरू होने से इसकी कीमत 105 रु. से बढ़कर 112.75 रु. पर आ गई थी. लेकिन यह अफवाह जल्दी ही थम गई और पिछले पखवाड़े भर में इसकी बढ़त सिर्फ 3.25 रु. ही रह गई.

दूसरी ओर इकॉनॉमिक टाइम्स शेयर मूल्य सूचकांक गिरा. 20 फरवरी को यह 400.8 पर था जो 6 मार्च को 393.3 पर आ गया. फिर भी संतोष इसी बात का है कि यह स्तर 28 फरवरी के 392.4 से थोड़ा ऊपर ही है.

खबर है कि फरवरी के अंत और मार्च के शुरू में बैंकों और कई कंपनियों ने 400 करोड़ रु. से अधिक की यूनिटें यूनिट ट्रस्ट को वापस बेची हैं. अनेक लोगों को अंदेशा है कि यूनिटों पर मिलने वाली कर रियायत अगले बजट में समाप्त की जा रही है. दूसरी तरफ अच्छी खबर यह थी कि केनरा बैंक द्वारा साढ़े पांच वर्षों में राशि दोगुनी करने वाली साझा कोष योजना 'कैनडबल' में 250 करोड़ रु. आ गए. यह रकम लक्ष्य से पांच गुनी अधिक है.

इंडियन रेयन, ओसवाल एग्रो मिल्स, स्टरलाइट इंडस्ट्रीज और मोदीपोन जैसी कंपनियों के अच्छे अर्द्धवार्षिक परिणामों ने भी उत्साह बढ़ाया. जहाजरानी कंपनियों के शेयरों में तेजी आई. साउथ इंडिया शिपिंग ने सात साल बाद लाभांश दिए हैं.

बाजार के जानकार लोगों का मानना है कि आने वाले बजट में करों का बोझ जरूर बढ़ेगा लेकिन सरकार ऐसा कोई कदम नहीं उठाएगी जिसका शेयर बाजार पर बहुत बुरा असर पड़े.

जमा स्टॉक

	1990			पखवाड़े में स्टॉक की स्थिति
	ऊंचा	नीचा	बंद 6.3.90	
अशोक लेलैंड	99.00	73.00	74.50	2.50 −
एसोसिएटेड सीमेंट	355.00	325.00	349.00	11.00 +
एशियन पेंट्स	255.00	207.50	216.25	1.25 +
एटलस कोप्को	48.00	37.00	38.50	1.50 −
बजाज ऑटो	417.50	377.50	386.25	5.00 −
बड़ौदा रेयॉन	817.50	617.50	632.50	25.00 −
बाटा इंडिया	77.50	62.75	64.50	1.50 −
बल्लारपुर	155.00	122.00	126.00	4.00 −
भारत फोर्ज	93.75	85.00	92.50	1.25 +
बिरला जूट	66.00	50.50	53.50	1.50 −
बॉम्बे डाइंग	231.00	178.00	182.50	5.50 −
ब्रिटानिया इंडिया	119.00	97.00	104.00	1.00 −
ब्रुक बांड	107.00	91.00	98.00	0.50 −
सेंचुरी स्पिनिंग	2840.00	2420.00	2675.0	215.00 +
फ्लोराइड इंडिया	92.00	82.50	85.50	—
कोलगेट पामो.	196.25	176.25	180.00	3.75 −
सायनामिड	115.00	87.50	96.00	1.00 +
डीसीएम	53.50	45.50	47.00	1.50 −
डनलप	75.50	53.50	53.50	5.50 −
ईआई होटल्स	65.25	58.00	61.00	1.00 −
एस्कार्ट्स	88.00	77.75	83.00	3.00 +
फिनोलेक्स केबल्स	282.50	215.00	215.00	17.50 −
फूड स्पेशिलिटीज	122.00	101.75	107.00	3.50 +
गरवारे नाइलोन	69.00	49.00	50.00	3.00 −
जी.ई. शिपिंग	54.75	44.00	45.50	1.00 +
गुजरात स्टेट फर्टि.	185.00	155.00	176.25	8.75 +
ग्रासिम इंडिया	129.00	106.00	108.25	0.25 −
हिंदु. एल्यूमिनियम	270.00	215.00	218.75	1.25 +
हिंदु. सीबा	1660.00	1050.00	1060.00	80.00 −
कैडबरी इंडिया	172.50	133.75	150.00	9.50 +
हिंदुस्तान लीवर	117.50	101.00	107.50	2.00 +
हिंदुस्तान मोटर्स	31.30	21.80	21.90	1.80 −
आई.सी.आई.	49.50	36.00	37.75	1.75 −
इंडियन आर्गेनिक	58.75	47.00	50.00	2.00 −
इंडियन रेयन	108.00	84.00	90.00	2.00 +
इंडॉल	246.25	161.25	168.75	12.50 −
इंगरसॉल-रैंड	245.00	190.00	225.00	7.50 +
आई.टी.सी.	64.00	48.75	54.00	2.00 +
जे.के. सिंथेटिक्स	67.00	52.00	53.00	1.00 −
काइनेटिक इंजी.	155.00	135.00	137.50	8.00 −
किर्लोस्कर क्युमिंस	90.00	65.00	75.00	—
केसीबी पंप्स	210.00	190.00	200.00	2.50 −
लारसन-टुब्रो	85.00	60.00	62.00	2.00 +
लिप्टन	112.00	84.00	86.50	—
लोहिया-मशीन्स	21.00	15.00	16.50	1.00 −
मदुरा कोट्स	111.00	100.50	108.00	—
महिंद्रा-महिंद्रा	103.00	67.50	75.00	1.25 −
मिल्क फूड	280.00	200.00	207.50	12.50 −
मोटर इंडस्ट्रीज	1200.00	785.00	840.00	20.00 +
मुकुंद लिमि.	157.00	127.00	132.50	1.50 +
नेशनल आर्गेनिक	1660.00	1185.00	1200.00	60.00 −
निरलॉन	22.00	14.00	16.50	2.50 +
ओरके सिल्क मिल्स	20.50	15.00	15.50	0.25 −
पेइको इलेक्ट्रॉनिक्स	32.50	24.00	25.75	0.25 +
फाईजर	113.75	77.50	77.50	9.00 −
पांड्स	230.00	185.00	193.75	3.25 −
प्रीमियर ऑटो	74.50	56.00	57.00	6.25 −
रेमंड	78.00	70.00	75.00	—
रिलायंस इंडस्ट्रीज	90.00	51.50	52.00	3.50 −
सीमेंस इंडिया	120.00	96.00	103.00	1.00 −
शॉ वैलेस	92.00	70.00	71.00	4.00 −
श्रीराम फाइबर्स	71.00	51.25	56.00	2.00 +
एसकेएफ बैयरिंग्स	1570.00	1240.00	1290.00	10.00 +
स्पिक	82.00	50.75	53.50	—
टाटा स्टील	119.75	103.25	108.25	3.25 +
टेल्को	130.00	110.00	115.50	0.50 −
वाम ओर्गनिक	167.50	132.50	137.50	—
वीडियोकोन	192.50	115.00	115.00	35.00 −
वोल्टास	785.00	630.00	690.00	12.50 +
विमको	32.50	17.50	17.50	2.50 −

भारतीय रुपए का मूल्य

देश	मुद्रा	इकाई	बिक्री मूल्य (रुपए में)	क्रय मूल्य (रुपए में)
आस्ट्रेलिया	डालर	1	13.0712	12.9261
आस्ट्रिया	शिलिंग	100	141.6029	141.0154
बहरीन	दीनार	1	45.5610	45.0367
बांग्लादेश	टका	100	54.4996	53.1011
कनाडा	डालर	1	14.4689	14.3154
डेनमार्क	क्रोना	1	2.6232	2.5952
मिस्र	पौंड	1	6.8945	6.7699
फ्रांस	फ्रैंक	1	3.0257	2.9499
हांगकांग	डालर	1	2.1981	2.1754
इंडोनेशिया	रुपिया	100	0.9575	0.9424
ईरान	रियाल	100	25.5368	25.2559
इटली	लीरा	100	1.3647	1.3497
जापान	येन	100	11.5607	11.2740
केन्या	शिलिंग	1	0.7930	0.7813
कुवैत	दीनार	1	57.9979	57.3098
मलेशिया	डालर	1	6.3395	6.2728
मारीशस	रुपया	1	1.1369	1.1216
नेपाल	रुपया	1	0.5992	0.5910
हालैंड	गिल्डर	1	8.9390	8.8433
पाकिस्तान	रुपया	1	0.8175	0.7724
सिंगापुर	डालर	1	9.1657	9.0674
स्पेन	पेसो	1	0.1493	0.1475
श्रीलंका	रुपया	1	0.7458	0.7356
स्वीडन	क्रोना	1	2.7892	2.7598
स्विट्जरलैंड	स्विस फ्रैंक	1	11.4335	11.3094
तंजानिया	शिलिंग	1	0.1010	0.0944
थाईलैंड	बहत्त	100	67.3231	65.3552
ब्रिटेन	पौंड	1	28.1611	27.9564
सं. राज्य अमेरिका	डालर	1	17.1674	16.9924
सं. अरब अमीरात	दिरहाम	1	4.6765	4.6250
सोवियत संघ	रूबल	1	27.6670	27.3629
पश्चिम जर्मनी	जर्मन मार्क	1	10.2145	9.9602

स्रोत—बैंक ऑफ तोक्यो, नई दिल्ली, 7.3.90

When you want to step into medicine, Agrawal will help you with the first step.

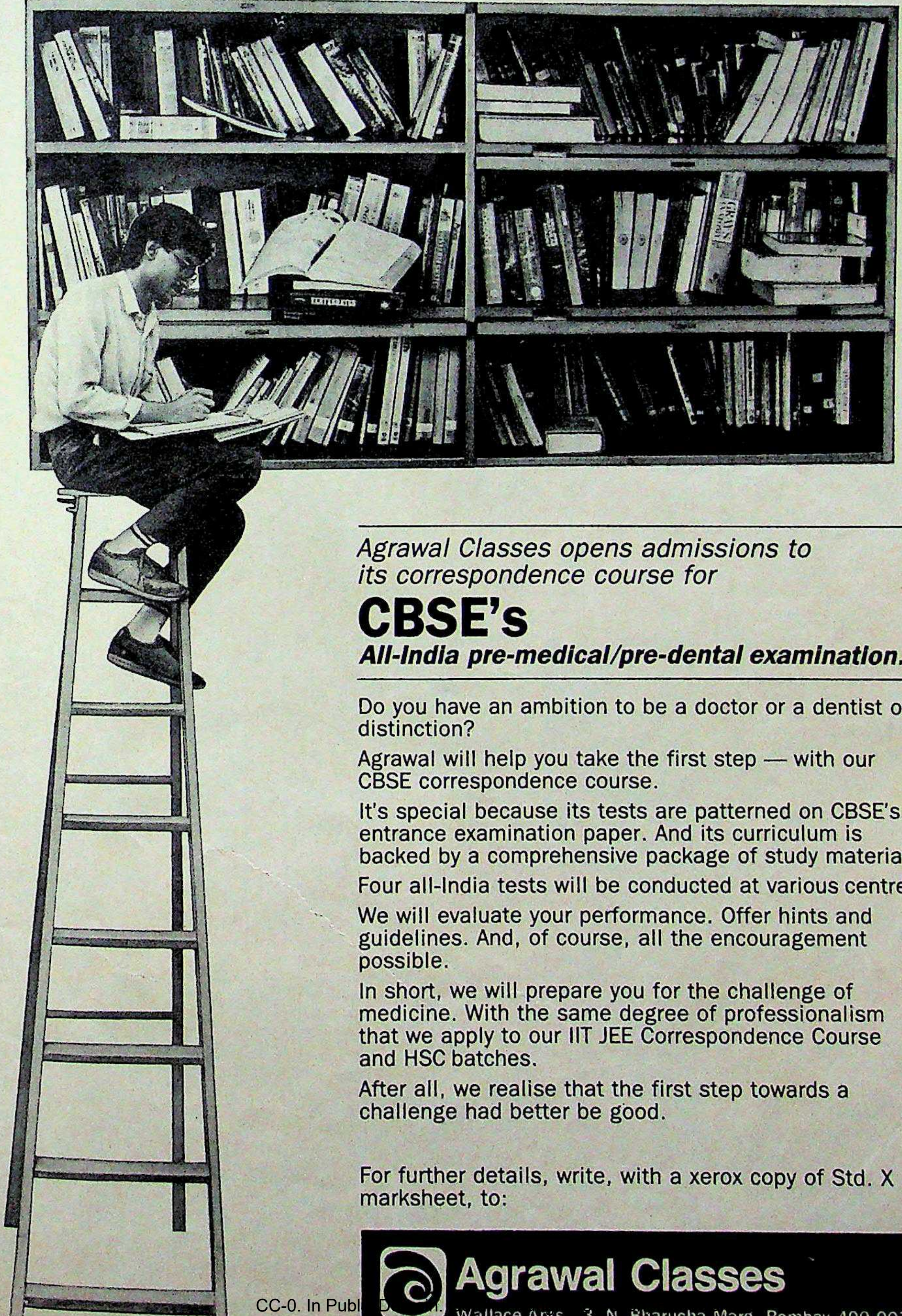

Agrawal Classes opens admissions to its correspondence course for

CBSE's

All-India pre-medical/pre-dental examination.

Do you have an ambition to be a doctor or a dentist of distinction?

Agrawal will help you take the first step — with our CBSE correspondence course.

It's special because its tests are patterned on CBSE's entrance examination paper. And its curriculum is backed by a comprehensive package of study material.

Four all-India tests will be conducted at various centres.

We will evaluate your performance. Offer hints and guidelines. And, of course, all the encouragement possible.

In short, we will prepare you for the challenge of medicine. With the same degree of professionalism that we apply to our IIT JEE Correspondence Course and HSC batches.

After all, we realise that the first step towards a challenge had better be good.

For further details, write, with a xerox copy of Std. X marksheet, to:

Agrawal Classes
Wallace Apts., 3. N. Bharucha Marg, Bombay 400 007.

Dattaram-AC 33/90

इंडिया टुडे वर्ग पहेली-5

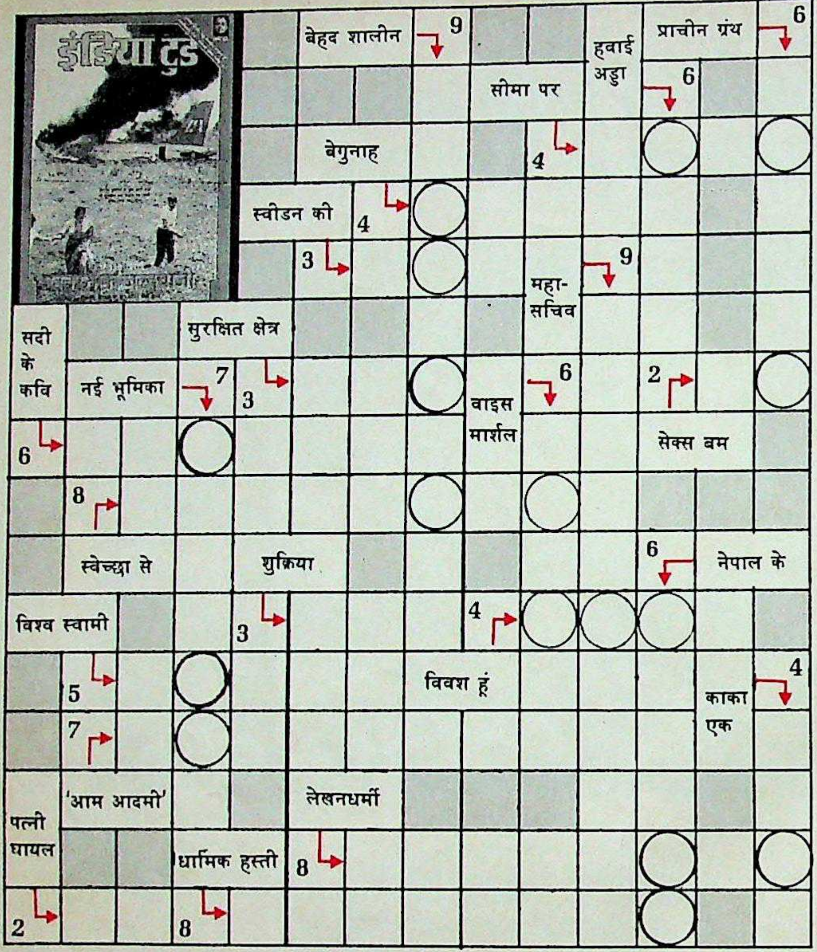
इंडिया टुडे
बेहद शालीन 9
हवाई अड्डा 6
प्राचीन ग्रंथ 6
सीमा पर
बेगुनाह
4
स्वीडन की 4
3
महा-सचिव 9
सदी के कवि
सुरक्षित क्षेत्र
नई भूमिका 7
3
6
2
वाइस मार्शल
6
सेक्स बम
8
स्वेच्छा से
शुक्रिया
6
नेपाल के
विश्व स्वामी
3
4
5
विवश हूं
काका एक
4
7
'आम आदमी'
लेखनधर्मी
पत्नी घायल
धार्मिक हस्ती
8
2
8

नाम ______

पता ______

______

पिन ______

हल इस पते पर भेजें:

वर्ग पहेली-5, इंडिया टुडे,
एफ-14/15, कनॉट प्लेस,
नई दिल्ली-110001

प्रविष्टियां भेजने की अंतिम तिथि:
1 अप्रैल 1990

उत्तर के लिए देखें:
16-30 अप्रैल '90 का अंक

- यह पहेली शब्दश: इंडिया टुडे के 15 मार्च 1990 के अंक पर आधारित है.
- वर्गों के भीतर दिए गए शब्द ही संकेत हैं.
- तीर के चिन्ह बताते हैं कि शब्द कहां से शुरू होकर किधर जाते हैं.
- तीर के चिन्ह के साथ दिए अंक हर हल में प्रयुक्त वर्गों की संख्या दर्शाते हैं.
- वृत्त का अर्थ है कि उसमें आने वाले शब्दांश का प्रयोग पुनः होगा.
- मटमैले रंग वाले वर्ग रिक्त ही रहेंगे.
- शब्द वैसे ही लिखें जैसे पत्रिका में छपे हैं.
- सर्वप्रथम पहुंचने वाले **तीन सर्वशुद्ध हलों को पुरस्कारस्वरूप 500-500 रु.** दिए जाएंगे.
- लिविंग मीडिया इंडिया लि. के कर्मचारी और उनके परिवार के सदस्य इसमें भाग नहीं ले सकते.

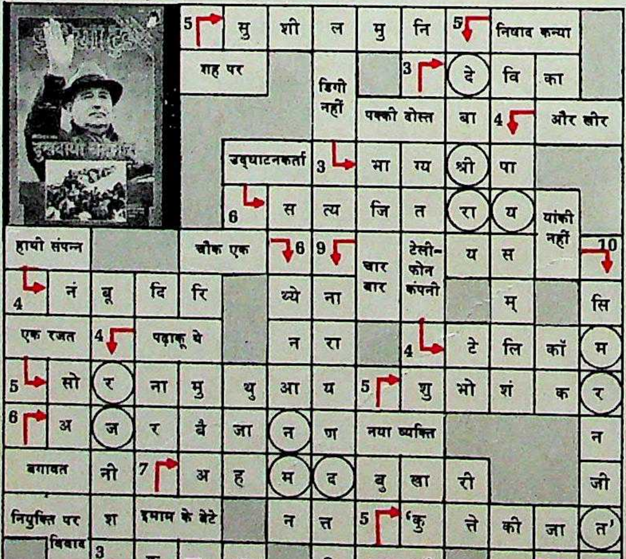
5 मु शी ल मु नि
5 निषाद कन्या
राह पर
डिग्री नहीं
3 दे वि का
पक्की दोस्त बा
4 और और
उद्घाटनकर्ता 3 मा ग्य श्री पा
6 स त्य जि त रा य
यांकी नहीं
हाथी संपन्न
चौक एक 6
9
चार बार
टेली-फोन कंपनी
य स
10
4 नं बू दि रि ध्ये ना म् सि
एक रजत 4
पढ़ाकू ये
न रा
4 टे लि कॉ म
5 सो र ना मु थु आ य
5 शु भो शं क र
6 अ ज र बै जा न ण
नया व्यक्ति न
बगावत नी
7 अ ह म द बु खा री जी
नियुक्ति पर श
इमाम के बेटे
न त्त
5 'कु त्ते की जा त'
विवाद
3 कु दा ल ति
एक कहानी
मर्द मॉडल
3 सि
6 वे द मा र वा ह
गोरे लोग
जि ह
अग्निशमन 3 ब रा री
भारतीय छवि
तें मा
3 'प के हा'
यातना के आवेग
5 सु धा चं द्र न

← **'इंडिया टुडे' वर्ग पहेली-3 का हल**

पुरस्कार विजेता

राजकुमार सिंह जादौन
चौबे गली, गणेशपुरा
मुरैना-476001 (म.प्र.)

श्रीमती निशा बोहरा
द्वारा/श्री बद्रीदास पुरोहित
डॉ. गंगाराम के मकान के
पास/कबूतरों का चौक,
जोधपुर-342001 (राज.)

प्रदीप कुमार सोमानी
40, स्ट्रांड रोड, 2 तल्ला
कमरा नं. 43 बी,
कलकत्ता-700001
(प. बंगाल)

इन तीनों को 500-500 रु. के चेक भेजे जा रहे हैं. विजेताओं को बधाई.

बीत गये हैं आपके 30 साल...

फिर भी रखिये क़ायम वही सुनहरा काल!

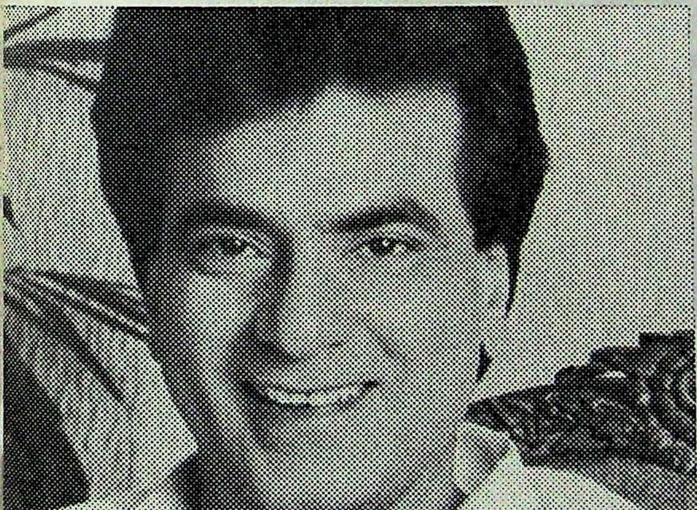

आपके जीवन के सुहाने दिन आपके इन्तेज़ार में हैं. शानदार, विश्वासपूर्ण और उमंगों भरे दिन.

अगर आप पहले की तरह तन्दुरुस्त नहीं तो क्या?

ज़्यादा काम-धाम से थकान और तनाव महसूस करते हैं, और पुनः शक्ति चाहते हैं, तो आपके ही लिए है थर्टी प्लस.

थर्टी प्लस में है जिनसेंग...

सदियों से एशिया के साइंटिस्ट जिनसेंग का महत्व मानते आए हैं. अपने शक्ति दायक तत्वों के कारण आज जिनसेंग की बेहद मांग है.

जिनसेंग सुरक्षित है और प्राकृतिक उत्तेजना दायक भी. अपनी तन्दुरुस्ती, दम और कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए कई खिलाड़ी इसे इस्तेमाल करते हैं.

दुनिया के जाने-माने लोग जिनसेंग इस्तेमाल करते रहे हैं, जिन में इन्दिरा गान्धी, हेन्री किसिंजर और मार्लन ब्रांडो शामिल हैं.

... और अश्वगन्धा

हमारे अपने देश की जड़ अश्वगन्धा का उल्लेख वेदिक साहित्य में एक आयुर्वेदिक टॉनिक और स्वास्थ्य वर्धक ख़ूराक के रूप में है.

थकान, तनाव और लम्बी बीमारी से उत्पन्न कमजोरी में अश्वगन्धा मांसपेशियों को ताकत देती है और शरीर में ताज़ा शक्ति दौड़ाती है.

बैहतरीन ताल-मेल

कोरियन जिनसेंग और अश्वगन्धा दोनों ही उमंग-तरंग भरे तत्वों के लिए जाने-माने हैं. अध्ययन से भी सिद्ध हो चुका है कि इन दोनों के बारे में जो विश्वास हैं, वे सही हैं.

थर्टी प्लस. यानी एक कैप्स्यूल में जिनसेंग और अश्वगन्धा का शानदार ताल-मेल.

शक्ति से भरपूर थर्टी प्लस आपको दे चुस्ती-फुर्ती और तन्दुरुस्ती ताकि आपको मिले सहन-शक्ति और तनाव से मुकाबला करने में मदद, साथ ही ताक़त में वृद्धि. और सुहाने दिनों का भरपूर आनंद.

Thirty Plus

ENERGY
RECHARGERS

आप के लिए दम-दमा-दम

30+
Thirty Plus
ENERGY
RECHARGERS
10 capsules of Ginseng and Ashwagandha

A product of **ajanta pharma limited**
21-31 Satyam, 218 Linking Road, Khar (West), Bombay 400 052

जादू-टोना

अंधविश्वासों की ओट

केरल में प्रेतपूजा मंदिरों और ओझा-गुनियों की चांदी

तिरुवनंतपुरम जिले के वरकला के निवासी सलालुद्दीन के अनुसार भूतों ने उसे करीब ढाई साल तक परेशान रखा. कभी उसकी छत पर पत्थरों की बारिश होती तो कभी कपड़े गायब हो जाते, कभी चादरों और साड़ियों में आग लग जाती, और कभी घर के पिछवाड़े सिरकटी भेड़ पड़ी मिलती. उसकी परेशानी तब और भी बढ़ जाती जब उसकी 16 वर्षीय भतीजी सेलिना अक्सर मूर्च्छित हो जाती और कहती कि उसे 'कुट्टीचाथन' (प्रेत) दिखाई दिया था. इस प्रेतबाधा से निजात पाने के लिए सलालुद्दीन और उसके भाई लहाक ने सितंबर 1989 तक अनेक ओझाओं ओर जादू-टोने वालों के नुस्खे आजमाए. और इन अनुष्ठानों पर करीब 20 हजार रु. से

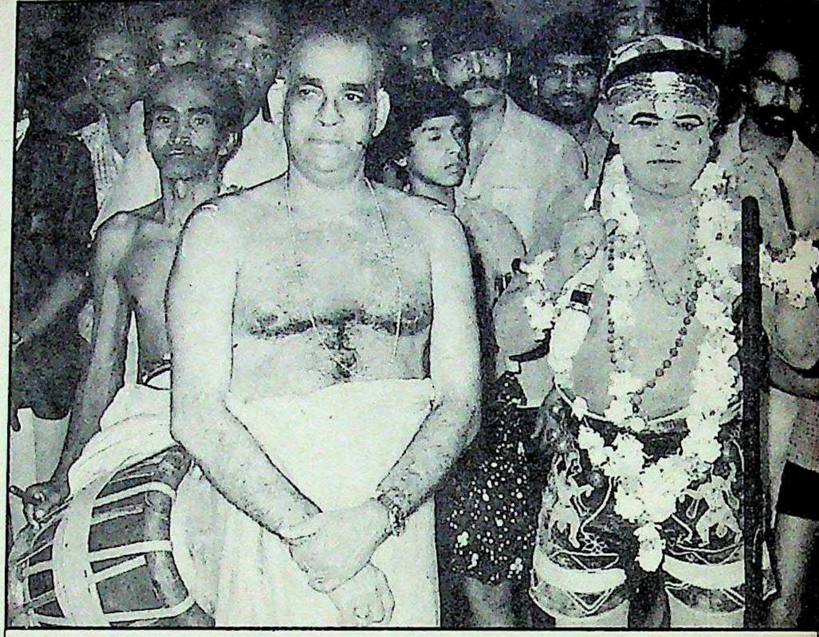

अंध-विश्वासों को बढ़ावा देने वाले ओझा-गुनियों ने अपने लिए बंगला, कारें आदि सुख-सुविधा के तमाम आधुनिक साधन जुटा लिए हैं

(ऊपर) षण्मुगन; और प्रेतपूजा मंदिर में अनुष्ठान

Russia isn't the only place you can get top quality Ajay toothbrushes.

They're available at your nearest store as well.

The Ajay toothbrush is specially designed for better reach. Which is why it's popularity extends even beyond the Iron Curtain. And the way things are going, it will cross over to the other side as well.

Export Houses who want their cash register to keep ringing, do call or write to us at: Ajay Home Products Pvt. Ltd., C-114, Naraina Industrial Area Phase I, New Delhi - 110 028. Phone: 5455312, 5455313.
Telex: 031-76217 AJAY IN, Cable: 'WELLGROME'

Ajay®
PREMIUM
QUALITY
TOOTHBRUSHES

Now Being Exported

SPEER 198 90

प्रेतबाधा दूर करने का अनुष्ठानः ठगी का धंधा

भी ज्यादा खर्च कर दिए.

अंत में, किसी अब्दुल हकीम ने दोनों भाइयों को यह विश्वास करा दिया कि प्रेत का निवास दरअसल सलालुद्दीन के 10 महीने के बेटे शिहाज़ में है. सो, एक सुबह जब पाया गया कि शिहाज़ गायब है तो घरवालों ने मान लिया कि उसे प्रेत ले गया होगा. बाद में बच्चे की लाश एक कुएं से मिली तो यह मान लिया गया कि प्रेत ने ही उसे जल-समाधि दे दी होगी. पुलिस ने प्रारंभिक जांच-पड़ताल के बाद सलालुद्दीन, लहाक और अब्दुल हकीम को गिरफ्तार कर लिया.

यह घटना केरल के लोगों में भूत-प्रेतों के प्रति अंधविश्वास का उदाहरण है. अकेले तृशूर जिले में एक दर्जन से ज्यादा ऐसे मंदिर हैं जहां ओझा प्रेतबाधा दूर करते हैं. इनमें पड़ोसी राज्यों से पूरे साल हजारों श्रद्धालु पहुंचते हैं. इन मंदिरों में पूरा माहौल विचित्र रहस्यमय होता है. ओझा और पुजारी अस्वाभाविक आवाजों और मुद्राओं में इसे डरावना भी बना देते हैं. विभिन्न दिमागी बीमारियों से ग्रस्त लोगों की 'प्रेतबाधा दूर करने के लिए' अक्सर उन्हें झाड़ू से मारा जाता हैं. तिरुवनंतपुरम मानसिक अस्पताल के अधीक्षक डॉ. एम. आर.आर. मेनन कहते हैं कि ओझाओं के अपराध अक्षम्य हैं, क्योंकि वे मरीज की हालत को अक्सर ज्यादा बिगाड़ देते हैं.

लोग चूंकि कुछ भी ऊटपटांग बात मानने के लिए तैयार रहते हैं इसलिए इन मंदिरों का धंधा भी खूब चलता है. मलयाली, तमिल और तेलुगु अखबारों में तो इनके विज्ञापन तक छपवाए जाते हैं. विज्ञापनों में बताया जाता है कि अगर कोई व्यक्ति स्वयं न आ सके तो जन्मकुंडली के अनुसार अपनी राशि बताते हुए अपनी समस्या लिखकर भेज दे. मनीआर्डर से धन भेज देने पर पूजा करके प्रसाद भक्त को भेज दिया जाता है. ओझा टी.एस. वेलायुदन बताते हैं, "प्रेतात्माओं को प्रसन्न करने के अनुष्ठान पर 300 से 1000 रु. तक खर्च आ सकता है. लेकिन इसकी कोई सीमा नहीं है."

दक्षिण भारत के भोले श्रद्धालु इन विज्ञापनों के झांसे में इन मंदिरों को देखने तृशूर पहुंच जाते हैं. बस स्टॉप और रेलवे स्टेशनों पर दलाल उन्हें मंदिर दिखाने ले जाते हैं, जहां उन्हें ठगा जाता है. केरल के प्रमुख सुधारवादी पवनन के अनुसार, "यह सब सुनियोजित षड्यंत्र है. शिकार को वश में करने के लिए सम्मोहन भी किया जाता है."

अक्सर व्यक्ति जितना धनी होता है, उसके अंधविश्वास उतने ही विचित्र होते हैं. हाल ही में तमिलनाडु के एक उद्योगपति ने हफ्ते भर तक तृशूर में डेरा डाले रखा. उसके कारखाने को रिश्तेदार न हड़प लें, इसके लिए कराए गए अनुष्ठान पर उसने 21,000 रु. खर्च किए. कर्नाटक के एक रबड़ बागान मालिक ने 20,000 रु. खर्च किए, क्योंकि उसे डर था कि प्रेतबाधा के कारण ही उसका परिवार तबाह हुआ है.

ये दोनों तृशूर जिले के अंधीकड स्थित कनाडी मंदिर में गए थे. इस मंदिर का कामकाज 61 वर्षीय षण्मुगन चलाते हैं. षण्मुगन 26 साल से भले ही अंधविश्वासों को बढ़ावा दे रहे हैं, लेकिन अपने लिए उन्होंने आधुनिक युग की हर सुविधा जुटा ली है. शानदार बंगला, कई कारें और सुख-सुविधा की सब चीजें उनके पास हैं. वे फिल्म वितरण कंपनी और दो सिनेमाघरों के मालिक भी हैं. कुछ किलोमीटर दूर, एक और ओझा टी.एस. वेलायुदन ने सोने के जेवरात का व्यापार शुरू किया है. और तृशूर में ही षण्मुगन के भतीजे के.वी. पद्मनाभन ने अपने चाचा के नक्शेकदम पर चलते हुए एक प्रेतपूजा मंदिर स्थापित कर लिया था. आज वे करवानूर के सबसे रईस लोगों में गिने जाते हैं. ऐसे अधिकांश मंदिर मालामाल हैं, क्योंकि ज्यादातर चढ़ावा नकदी के रूप में आता है.

कुछ ओझाओं को दिमागी मरीजों को ठीक करने में कामयाबी मिल जाती है तो इसका कारण झाड़-फूंक के साथ मनोवैज्ञानिक इलाज का इस्तेमाल है. तृशूर के पेरुंबादप्पू के प्रसिद्ध ओझा केत्तुमदम नारायणन नंबूदिरीपाद अक्सर प्रसाद में मिलाकर आयुर्वेदिक दवाएं देते हैं. मकसद यही है कि श्रद्धालुओं को फायदा हो.

लेकिन सारे ओझा नंबूदिरीपाद जैसे नहीं हैं. नंबूदिरीपाद विरोधाभास के शिकार हैं. उन्होंने इब्सन पर किताब लिखी है, जो कॉलेजों के पाठ्यक्रम में शामिल है, नाटक और रंगमंच पर दर्जनों निबंध लिखे हैं. इसके बावजूद वे अंधविश्वास को बढ़ावा दे रहे हैं. एक उदाहरण अमिनिअम्मा का है जो एक दशक से ज्यादा समय से कोवलम में ओझागीरी कर रही थीं. लेकिन जब उनकी बेटी संगीता का व्यवहार अटपटा दिखाई दिया तो प्रेतात्माओं को प्रसन्न करने के बदले वे उसे तिरुवनंतपुरम के मानसिक अस्पताल ले गईं.

—रमेश मेनन

चढ़ावा

ीजों को
ती है तो
मनोवैज्ञा-
तृशूर के
म नाराय-
मिलाकर
ही है कि

जैसे नहीं
ाकार हैं
है, जो
है, नाटक
लिखे हैं
बढ़ावा दे
ा का है
विलम में
ब उनकी
ा दिखाई
करने के
मानसिक
मेश मेनन

What did Flo Jo of the U.S. say to the Skypak Man?

"And you thought, you were the only one who could smile while moving at record-breaking speed?"

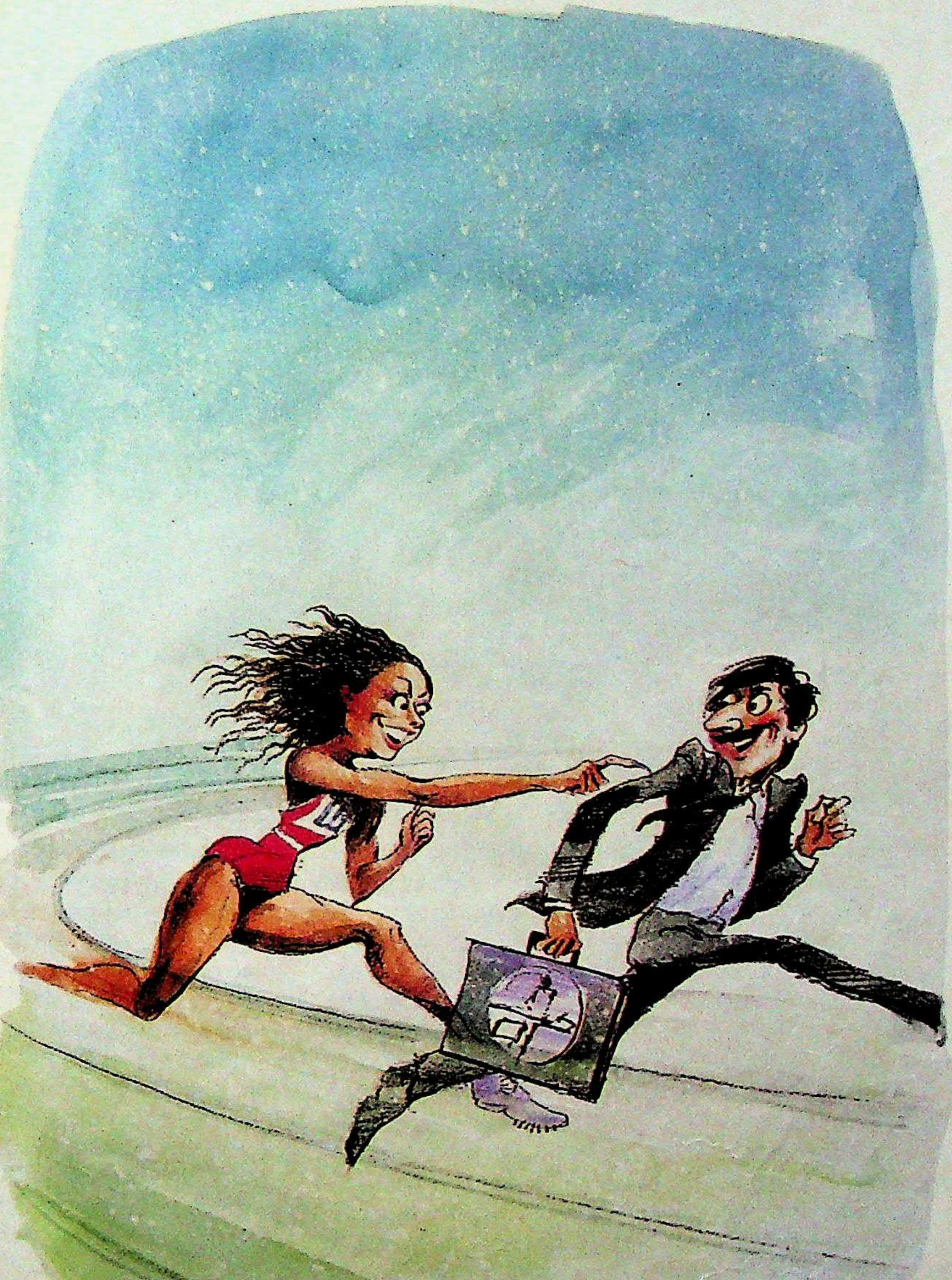

We'll deliver. Wherever on earth. SKYPAK The worldwide couriers.

Skypak House, Off M. Vassanji Road, Marol, Andheri (E), Bombay 400 059.

Avenues:SC.568 90

सभी फोटो: प्रदीप मथानी

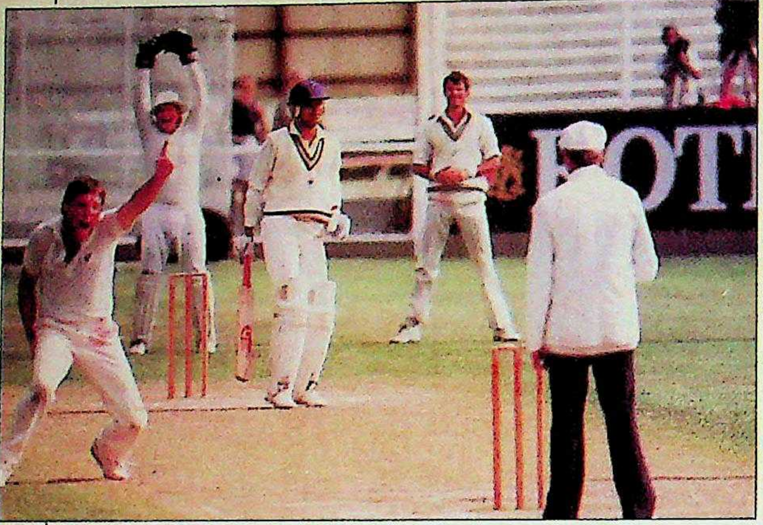

▲ बेदी और कपिलः हास परिहास का दौर

◄ ऑकलैंड में सलामी बल्लेबाज रमन

▼ ऑकलैंड में दर्शकों की भीड़

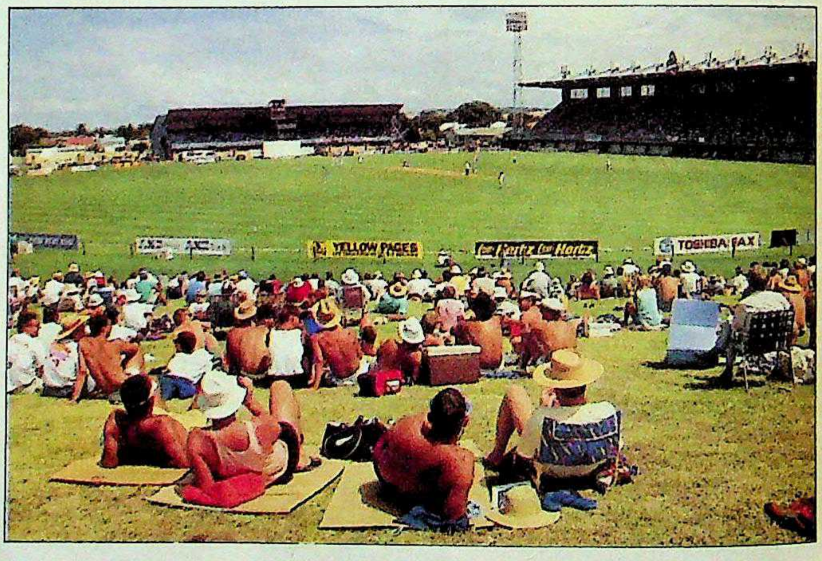

क्रिकेट

कुछ कर दिखाने का हौसला ढीला

न्यूजीलैंड के दौरे ने भारतीय टीम की कमजोरियां उजागर की

नई-नवेली भारतीय क्रिकेट टीम जब न्यूजीलैंड रवाना हुई थी तब उसे '90 के दशक की टीम' कहा गया था. और अब इस दौरे की समाप्ति के बाद इस टीम को लेकर कई सवाल खड़े हो गए हैं. यह स्पष्ट हो गया कि मौजूदा टीम के कई खिलाड़ी दशक तो क्या एक साल भी नहीं चल पाएंगे. पिछले साल के आखिर में पाकिस्तान से टेस्ट सिरीज 0-1 से हार जाना भारत के लिए एक सदमा था जिससे उबर पाने का दमखम उसमें नहीं आ सका है.

यह हताशा एकदिवसीय सिरीज तक चलती रही. कपिलदेव की निर्णायक गेंद से वेलिंग्टन में जब रिचर्ड हैडली आउट हुए तो भारत को एक रन से खासी उत्तेजना भरी जीत हासिल हुई. परंतु भारत के खाते में चढ़ चुकी तीन मात और रनों की कमतर दर ने उसे फाइनल में नहीं पहुंचने दिया.

सलामी बल्लेबाज नवजोत सिंह सिद्धू के घायल होने जैसी कुछ समस्याएं ऐसी थीं जिनके लिए कुछ नहीं किया जा सकता था. बाकी समस्याएं खुद अपनी ही बनाई हुई थीं. इनके पीछे खिलाड़ियों के चयन की वह नीति थी जिसे क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने खिलाड़ियों की कथित यूनियनबाजी के विरोध में तैयार किया था. दो पूर्व कप्तानों के. श्रीकांत और दिलीप वेंगसरकर को टीम में न लिये जाने से ही खासा फर्क पड़ गया. दौरे के मैनेजर बिशन सिंह बेदी को जल्द ही वेंगसरकर की कमी महसूस भी हो गई. पर उनके साथ जो बरताव हुआ उसने 100 से ज्यादा टेस्ट मैच खेलकर 6,000 से ज्यादा रन बनाने वाले इस खिलाड़ी के हौसले पस्त कर दिए. उनका अधिकतम स्कोर 47 रन था. आस्ट्रेलिया के खिलाफ पहले एकदिवसीय मैच में उन्होंने 35 रन बनाए. भारत यह मैच हार गया. हर बार यही लगा कि उनकी आक्रामकता अभी मरी नहीं है. परंतु वे चयन को लेकर होने वाले प्रायः सारे विवादों के केंद्र में रहे. जब कप्तान अजहरुद्दीन उन्हें खेलाना चाहते थे तो बेदी ने इसका विरोध किया, पर जब अजहर ने उनके इस फैसले को मान लिया तब बेदी ने अपना विचार बदल दिया.

बेदी ने ज्यादा मशक्कत क्षेत्ररक्षण का अभ्यास करवाने में की. लेकिन हाल के वर्षों में क्षेत्ररक्षण का यह घटिया प्रदर्शन था.

बेदी का कहना है कि "सिर्फ एक दोपहर के प्रदर्शन से हमारे बारे में कोई फैसला कर बैठना ठीक नहीं." यह क्राइस्टचर्च की वह दोपहर थी जब भारत के तीन विकेट पर 146 रन थे और फिर 164 रनों के योग पर पूरी टीम ही लुढक गई थी. नैपियर के दूसरे टेस्ट में बारिश ने बाधा खड़ी कर दी, जबकि तीसरा टेस्ट ड्रा हो गया. इस टेस्ट मैच में भारत की बल्लेबाजी सबसे बेहतर रही. अजहर ने अपनी सबसे बेहतरीन पारी खेली और 192 रन बनाए.

अजहर की टीम काफी लोकप्रिय भी रही. हर जगह इसका स्वागत हुआ और इसके अच्छे व्यवहार की हर जगह प्रशंसा हुई. खुद बेदी के लोकप्रिय व्यक्तित्व ने भारत की इस छवि में खासा योगदान किया. न्यूजीलैंड क्रिकेट काउंसिल के अध्यक्ष बैरी पैटरसन ने भी टीम की तारीफ की.

टेस्ट सिरीज ने भारत को भविष्य के लिए दो अच्छे खिलाड़ी दिए—मध्यम गति

आइए, श्रेष्ठता के शिखर पर

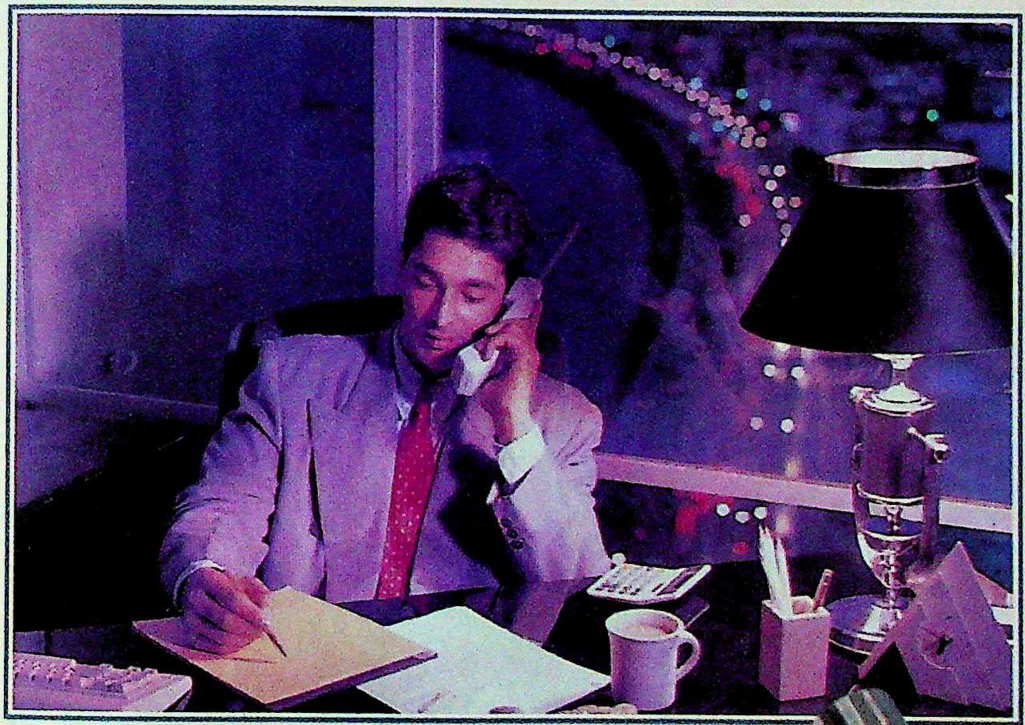

श्रेष्ठता के शिखर पर तो बिरले ही पहुँचते हैं.
जैसे कि आप. और हाँ, ब्लू स्ट्रैटोस भी.
यूरोप की ख़ास खुशबू, जो लिपटी रहे
आपके पहलू से, सारा दिन.

ब्लू स्ट्रैटोस आफ़्टर शेव और कोलोन.
साथ-साथ टाल्क और शेविंग क्रीम
की उत्कृष्ट जोड़ी.

आप की तरह ही, सामान्य से न्यारी.

blue
stratos
AFTER SHAVE LOTION

ब्लू स्ट्रैटोस के साथ श्रेष्ठता का शिखर चूमिए

यूरोप की ख़ास खुशबू, अब आपके लिए भारत में.

Old Spice बनानेवालों की पेशकश

HTA 2356

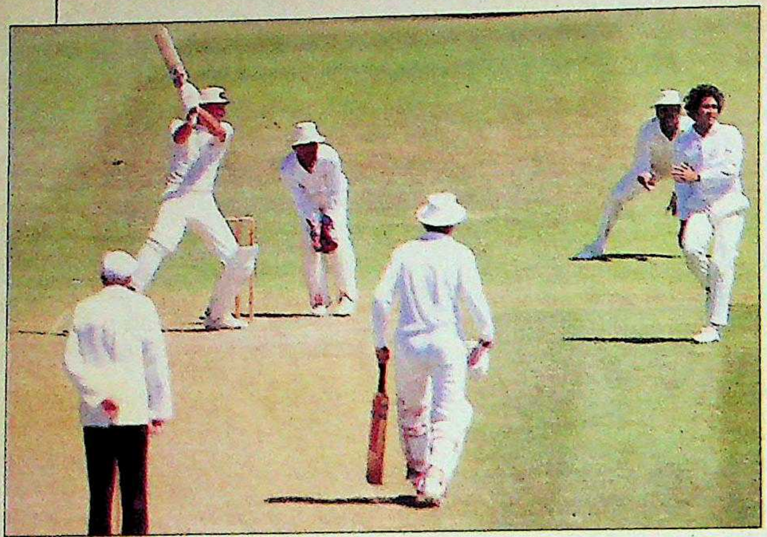

▲ अजहरुद्दीन का जन्मदिन मनाती टीम

◀ ऑकलैंड टेस्ट में हैडली

▼ तेंदुलकर (बाएं), वेंगसरकर और मांजेरकर

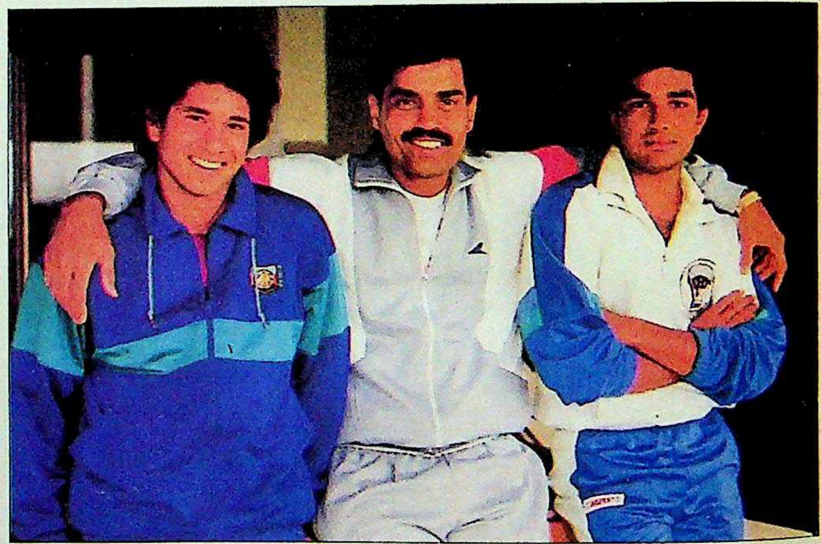

के तेज गेंदबाज अतुल वासन और बाएं हाथ के फिरकी गेंदबाज वेंकटपति राजू. कप्तान के अलावा अच्छा प्रदर्शन करने वाले बल्लेबाज रहे मनोज प्रभाकर, डब्लू.वी. रमन और किरण मोरे. बाकी बल्लेबाजी और गेंदबाजी की आक्रामकता के रूप में भारत को कपिलदेव से जो ताकत हासिल है उसका कोई जवाब नहीं.

टीम को दूसरी कमजोरियों के साथ अंदरूनी कमजोरियों को भी ढोना ही था. सलामी बल्लेबाजों की कोई स्थापित जोड़ी थी ही नहीं. रमन ने काफी अच्छा प्रदर्शन किया और कुछ अर्धशतक भी जमाए. और मनोज प्रभाकर तो अपना पहला टेस्ट शतक लगाने के करीब तक पहुंच गए थे.

भारतीय टीम के लिए तो हैडली का हौवा महंगा पड़ा. अगर श्रीकांत होते तो बहुत ही काम के साबित होते. या तो हैडली की गेंदबाजी की उतनी ही तेजी से धज्जियां उड़ा दी जातीं या फिर उनकी गेंदबाजी के छोटे से दौर को रक्षात्मक खेल खेलने वाले खिलाड़ी ही निबटा देते. रक्षात्मक खेल का दमखम संजय मांजरेकर में था जो सिरीज में अच्छा नहीं खेल पाए. सचिन तेंदुलकर सिर्फ 12 रनों से चूक गए वरना वे 16 वर्ष की (सबसे कम) उम्र में टेस्ट शतक जमाने वाले पहले खिलाड़ी बन जाते. भारतीय टीम की मुख्य समस्याएं हैं—सलामी बल्लेबाजों की जोड़ी का अभाव, खराब क्षेत्ररक्षण और कुछ कर दिखाने की प्रेरणा की कमी. बेदी ने भी स्वीकार किया, ''हमारे लड़कों को खुद अपने ऊपर गर्व नहीं था, और उनमें इस बात का भी गर्व नहीं था कि वे अपने देश के लिए खेल रहे हैं.''

फिर, कुछ खिलाड़ियों को लेकर समस्या यह थी कि उनका क्या किया जाए. जैसे, पाकिस्तान में थोड़ा अच्छा प्रदर्शन करने वाले विवेक राजदान या फिर अजय शर्मा, जिन्हें एकदिवसीय मैच के लिए तो हर कोई ठीक मानता है पर टेस्ट के लिए नहीं. कुछ सवाल और भी थे. क्या 27 वर्षीय गुरशरण उम्र के लिहाज से चुक नहीं गए हैं? विकेटकीपर या सलामी बल्लेबाज या दोनों के रूप में वी.वी. चंद्रशेखर की किस्मत क्या किरण मोरे की किस्मत पर निर्भर करेगी? हैमिल्टन के एक छोटे-से मैच के सिर्फ एक खराब प्रदर्शन के कारण ही ऑफ स्पिनर वेंकटरमन का पत्ता साफ हो जाएगा?

बेदी से जब भारतीय क्रिकेट संबंधी उनकी योजना के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा, ''मैं हमेशा ही भविष्य के बारे में सोचता रहता हूं.'' उनके तरीके से कोई सहमत हो या न हो, पर उनकी ईमानदारी पर शक नहीं किया जा सकता. जहां तक अजहर का सवाल है, उन्होंने अपनी कप्तानी को अपनी बल्लेबाजी पर हावी नहीं होने दिया. उनकी बल्लेबाजी और निखरी ही.

फिलहाल बोर्ड सबसे अच्छी चीज यही कर सकता है कि कम-से-कम इंग्लैंड दौरे के लिए कप्तान और मैनेजर को न बदले. पिछली तीन सिरीज में भारत ने तीन कप्तान बदले. टीम बनाने का तरीका यह नहीं है.

फिलहाल टीम में आत्मविश्वास बहाल करने की वैसी ही जरूरत है जैसा कि आस्ट्रेलियाई टीम में किया गया. आस्ट्रेलियाई टीम के पुनर्निर्माण की मुख्य बात यह थी कि कुछ ठोस खिलाड़ियों को बना रहने दिया गया था जबकि नए खिलाड़ियों को परिपक्व होने के पर्याप्त अवसर दिए गए. वरिष्ठ खिलाड़ियों को निकालना ही था तो उनके उपयुक्त विकल्प खोजे गए.

केवल युवा या केवल अनुभवी खिलाड़ियों को लेकर ही टीम नहीं बन सकती. का संतुलन जरूरी है. न्यूजीलैंड दौरे से मिले इस सबक पर अमल किया गया तो दौरे में चुकाई गई कीमत सार्थक हो जाएगी.

—टोनी सिंह, न्यूजीलैंड में

र

यही कर
रे के लिए
. पिछली
ान बदले.
है.
स बहाल
जैसा कि
. आस्ट्रे-
ुख्य बात
को बना
खिलाड़ियों
सर दिए
ालना ही
जे गए.
खिलाड़ियों
कती. का
से मिले
ो दौरे में
गी.
न्यूज़ीलैंड में

PAVONIE. IT'S ITALIAN STYLE.
PAVONIE. IT'S ITALIAN STYLE. PAVONIE. IT'S ITALIAN STYLE. PAVONIE. IT'S ITALIAN STYLE.
PAVONIE. IT'S ITALIAN STYLE.
Pavonie

मयूर की पेशकश. पवोनी, रेडी टू वियर. हरेक अदा इटेलियन अदा.

टाइल. बस दिखावा नहीं. एक परंपरा जिसे मिला है एक नया नाम, पवोनी. लिबास.... फ़ैशन में ऐसे ढलें, आपके व्यक्तित्व की तस्वीर बनें. देखिए एक-एक अदा. स्पिलट योक्स, गॉन्टलेट बटन्स, बार टैकिंग. इतनी ारीकी, इतनी सूझ-बूझ कि फ़र्क साफ़ नज़र आए. आपकी पसंद का भी पूरा-पूरा ख़्याल. शर्ट्स जनमें हैं बटन्ड-डाउन या विंग टिप्स कॉलर्स. धारीदार, चैक या फ़ॉर्मल शर्ट्स, ॉर्मल या प्लीट्स वाले बैगी ट्राउज़र्स. हर मौक़े, हर मूड के लिए. और उस पर ब्रिक. बेहतरीन पॉलिएस्टर ब्लेंड और प्योर कॉटन. अब तैयार है वह लिबास जिसे ोई भी इटेलियन फ़ैशन का पारखी देखे, तो कहे...बेमिसाल

Pavonie
For Men
शर्ट्स • ट्राउज़र्स.

मयूर शूटिंग्स के निर्माताओं का एक

Mudra:A:RSW.5121 Hin.

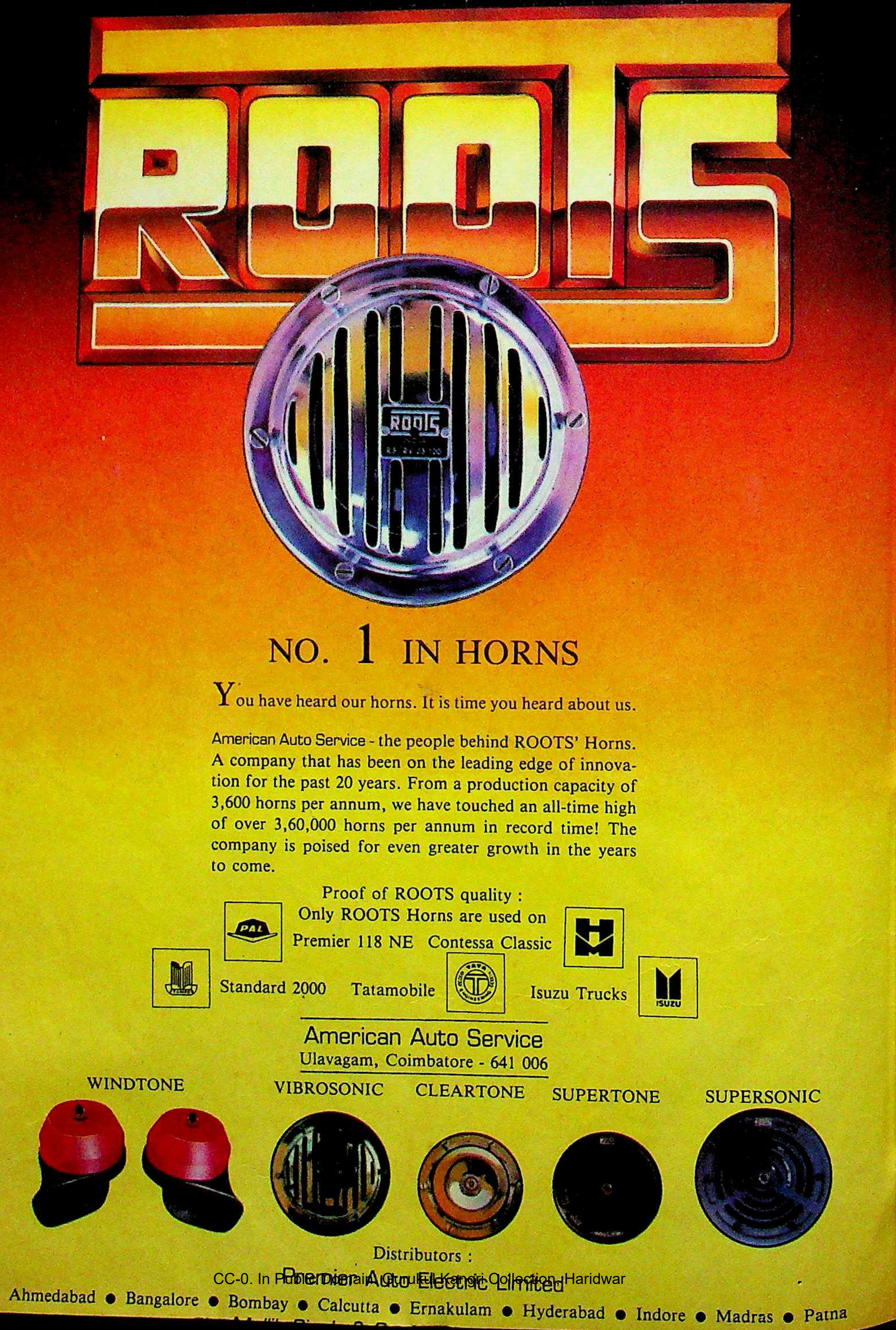

NO. 1 IN HORNS

You have heard our horns. It is time you heard about us.

American Auto Service - the people behind ROOTS' Horns. A company that has been on the leading edge of innovation for the past 20 years. From a production capacity of 3,600 horns per annum, we have touched an all-time high of over 3,60,000 horns per annum in record time! The company is poised for even greater growth in the years to come.

Proof of ROOTS quality :
Only ROOTS Horns are used on
Premier 118 NE Contessa Classic
Standard 2000 Tatamobile Isuzu Trucks

American Auto Service
Ulavagam, Coimbatore - 641 006

Distributors :
Premier Auto Electric Limited
Ahmedabad • Bangalore • Bombay • Calcutta • Ernakulam • Hyderabad • Indore • Madras • Patna

समाजवाद की पटरी पर

आजादी के बाद से हम लगातार समाजवाद की ओर अग्रसर हैं. कुछ साल तक गांवों के विकास की यात्रा समता का संदेश लिये धूल उड़ाती जीपों ने की, फिर झंडा फहराती कारों ने. यकायक सरकार को खयाल आया कि इस राष्ट्रीय महत्व के काम में रेल का भी रोल होना चाहिए. बस एक दिन थर्ड क्लास की गरीबी हटा दी गई. तब से अब रेल में सब बिलकुल बराबर हैं. कुछ वातानुकूलित माहौल में 'सफर' करते हैं, कुल धूल-धक्कड़, मक्खी-मच्छर के साथ.

यों भी तीन सौ पैंसठ दिनों में करीब तीन सौ अस्सी करोड़ लोगों को ढोना कोई मखौल तो है नहीं. जितने डिब्बों के अंदर ढुलते हैं, उतने ही उनके ऊपर. रेल भी क्या करे. विवश है बेचारी. डिब्बे कम हैं. यात्रियों को उनकी मंजिल तक ले जाना ही सिर्फ रेल की जिम्मेदारी नहीं है. परिवार कल्याण के दायित्व के तहत मुसाफिरों को ऊपर भी तो पहुंचाना है. डिब्बे पूरे हुए तो यह कैसे हो पाएगा.

अभी कल ही की बात है. ट्रेन समय से पिछड़कर मंथर गति से हिचकोले खा रही थी. एक मुसाफिर ने अपनी खुशी का इजहार किया, "लगता है इधर रेलों से सामंतवाद जाने लगा है!"

"वह कैसे?" हमने उनकी प्रसन्नता के राज में भागीदार बनना चाहा!

"गाड़ी कितने आराम से चल रही है! जैसे ही डेरे के सामने पहुंची, हम जंजीर खींचकर उतर जाएंगे!"

"पर इससे तो ट्रेन और लेट होगी," हमने उनके होम डिलीवरी के इरादे पर चिंता जताई!

"वक्त के पंक्चुअल गोरे अंग्रेज चले गए. हम काले क्यों उनकी नकल करें? रेल जनता की सवारी है. हमारी बस्ती में 'टेसन' नहीं बनाया तो हम क्यों नहीं चेन खींचकर ट्रेन रोकें!"

इतने में किसी दूसरी कोच के समझदार ने हमारी कोच की सलाह पर अमल कर ही डाला. गाड़ी रुक गई. लोग लघु और दीर्घ किस्म की शंकाओं का समाधान करने पटरी के आसपास झाड़ीनुमा ओट की तलाश में निकल पड़े. सामूहिक सेहत की दिशा में रेल की पटरी का बहुत ही अहम योगदान है.

चार सज्जन एक भैंस को हांकते हमारे डिब्बे तक तशरीफ लाए. फिर दरवाजे से उसे अंदर ढकेलने लगे. हम अपने शरीर के मर्मस्थल में भैंस के पैने सींगों की चुभन का सोचकर डर गए. हमने गार्ड साहब को पुकारा. उन्होंने आकर हमारी खबर ली, "क्यों फिजूल में हल्ला मचा रहे हैं!"

"ये लोग...भैंस...", हमने हकलाकर दरवाजे की ओर इशारा किया.

"क्यों भैंस को कहां जाना है?"

"यही दो कोस पर भैंसापुर तक."

रेखाचित्र: जयंतो

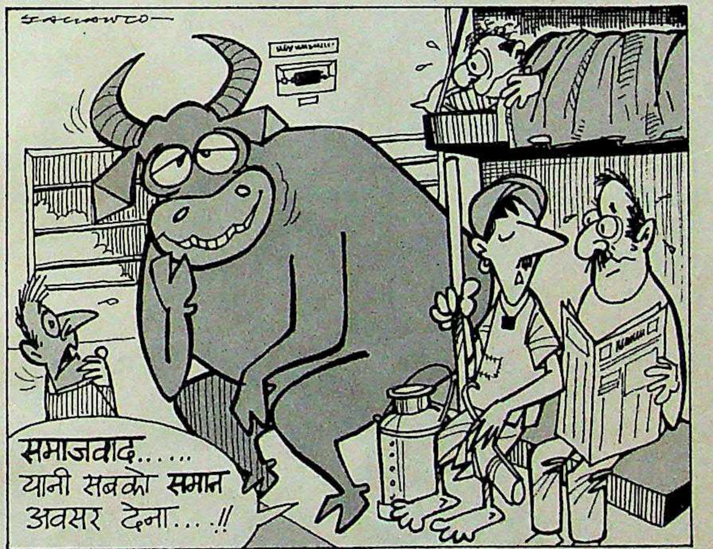
समाजवाद......
यानी सबको समान
अवसर देना....!!

"आप अपने इलाके के एम.पी. से रेल प्रशासन को लिखवाइए कि कोच के दरवाजे और चौड़े बनाएं. कितनी नाइंसाफी है कि दो पैरों वाले ढोर अंदर बैठकर सफर करें और चौपाये हांके जाएं."

दिक्कत यही है. न जानवरों का वोट है, न वे अल्पसंख्यकों में शुमार हैं. जाहिर है कि बहुसंख्यकों की तरह प्रजातंत्र में उनका हक भी मारा जाए. गाड़ी उधर चली, आपस में चर्चा इधर: "रेल के पूरे सिस्टम में सुधार जरूरी है."

"क्या खराबी आ गई है भैया."

"खाना कैसा रोल में देते हैं. कीमत जास्ती और माल कमती. रिजर्वेशन कंप्यूटर करते हैं. आदमी का निबटारा मशीन करे! इंसान की कोई इज्जत ही नहीं है!"

"पर इससे आपको एतराज क्या है."

"हमारे दिल को ठेस लगती है जब मशीन हमें ठेंगा दिखाती है. वह दिन भी क्या दिन थे! कंडक्टर के पास रोए-गाए, भेंट-पूजा की और बर्थ पक्की."

"सही भैया. आदमी को रोजगार तो है नहीं, कंप्यूटर की क्या दरकार?" बड़े राजा को हवाई उड़ान का शौक था, महाराजा को तेज रफ्तार की शान का. शताब्दी गाड़ियों से जनता को क्या फायदा!

कोच में से जनता अपने हिस्से के बल्ब ले जा चुकी थी. अंधेरा बढ़ने लगा और ट्रेन अचानक रुक गई. पता लगा कि आगे का मार्ग दुर्घटना के कारण बंद है. एक यात्री ने गार्ड साहब से जानकारी चाही "हम टकनपुर कब तक लगेंगे सरकार?"

"आज रात तक पहुंचना था. अब कल रात तक शायद पहुंच जाएं. आपको खुश होना चाहिए. रेल दो सौ का किराया लेकर आपको चार सौ किलोमीटर की सैर कराती है."

एक टिकट में दो के मजे के विचार से गद्गद होकर एक मुसाफिर सरकार के गुण गाने लगा, "प्रधानमंत्री इंडियन एअरलाइंस से उड़ते हैं. रेलमंत्री मालगाड़ी में सफर करते हैं. बाकी मंत्री क्या बैलगाड़ी से चलेंगे?"

"अपने यहां वक्त तो हर सवारी से बराबर ही लगता है. जनता सरकार है, जनता से सफर में नहीं तो क्या सुख-दुख में जुड़ेगी."

हमें यकीन है कि रेल ने सामंतवाद से समाजवाद की यात्रा शुरू कर दी है. आरक्षणीकरण का मशीनीकरण न होकर फिर से इंसानीकरण होगा. मिलजुल के खाने-पीने और आपसी भाईचारे का सौहार्दपूर्ण दौर अब दूर नहीं है. यात्रा में समता और समानता होगी. बड़े क्लास वाले किराया देंगे. सेकंड वाले फ्री में चलेंगे. सबको खटमल की इफरात और पेयजल के अभाव की बराबर सुविधाएं मिलेंगी. बड़ी लाइन वालों को बड़े होने के मुगालता न हो, इसलिए उनकी गाड़ियां छोटी लाइन की न्यूनतम रफ्तार से रेंगेंगी. समाजवाद उसूलन सबको समान अवसर देने में यकीन रखता है.

ज्ञानप्रकाश विवेक

वजह

ज्ञानप्रकाश विवेक नई पीढ़ी के उन कथाकारों में से हैं जिनका दखल कहानी के अलावा गज़ल जैसी विधाओं में भी है. 'जोसफ चला गया', 'अलग-अलग दिशाएं' और 'शहर गवाह है' कथा संग्रहों के लेखक के दो गज़ल संग्रह भी प्रकाशित हो चुके हैं.

अचानक मेरी नज़र उस पर पड़ी. मेरे हाथ से कॉफी का कप छलक गया. कनु....कनु और यहां?... इस रेस्तरां में? इस कदर अप्रत्याशित रूप से वह मिल जाएगी मैंने सोचा भी नहीं था.

मैं उठकर उसके पास जाने को हुआ. लेकिन तभी मेरे जेहन ने मुझे खींच-सा लिया—मूर्ख जल्दबाज़ी अच्छी नहीं. थोड़ी और तसल्ली कर ले. अगर पिलर की ओट में बैठी वह स्त्री कनु न हुई तो खूब भद्द पिटेगी.

मैं फिर बैठ गया था. अपनी कुर्सी पर बैठे-बैठे उसके जिस्मानी रंग-रूप का जायज़ा लेने लगा था. कनु की तरह सलीके से बंधे हुए बाल, कनु जैसी आंखें—किसी एहसास को दृष्टि की कलम से लिखती हुई, वही कनु जैसा बंद किताब जैसा चेहरा, कनु जैसे हल्के रंग के कपड़े....

कनु जैसा ही तो है सब! वही खोयापन—अपनेआप को अलग रखकर किसी खोज में मसरूफ़! मानो, जिंदगी की आकाशगंगा में किसी सितारे की तलाश में मुद्दतों से भटक रही हो....

वही भरा हुआ कप मेज पर. वही, आंखें कहीं शून्य में टंगी हुई. वही आसमानी रंग की साड़ी, वही चेहरे पर ठहरी हुई उदासी—ज़िदगी के अनुवाद जैसी!

लेकिन कनु इस भीड़भाड़ वाले रेस्तरां में?... नहीं, नहीं, यह स्त्री कनु नहीं हो सकती. भीड़ से तो कनु को सख्त चिढ़ थी. भीड़ देखती तो बौखला-सी जाती. जोरदार ठहाके, सिगरेट का धुआं, कप-प्लेट, छुरी-कांटों की आवाजें—कनु का दम घुटने लगता था. चिढ़कर प्लेटफार्म!... जानते हो ध्रुव, भीड़ में हम क्या होते हैं—न तुम ध्रुव होते हो, न मैं कनु. हम महज़ भीड़ होते हैं, भीड़ जिसकी कोई पहचान नहीं होती.

सचमुच अगर यह कनु है तो उसे यहां नहीं होना चाहिए था...लेकिन...लेकिन यह तो नाक पर उंगली रखकर बैठी है. नाक पर उंगली को धीरे-धीरे बजाने लगी है...

एक बार मैंने टोक भी दिया था कनु को—"नाक पर उंगली को बजाने लगती हो तो पता है कैसी लगती हो...?"

"तबलची!" धीरे से मुस्कराकर कहा था कनु ने. फिर हम दोनों हंस पड़े थे. मैंने हंसी रोककर कहा था—"नहीं दार्शनिक!.. सचमुच, गंभीर विचारों में लीन कोई चिंतक लगती हो."

"थैंक्स फार कंप्लीमेंट्स!" कनु ने कहा था और हम फिर हंस पड़े थे.

वह स्त्री जो सामने बैठी है, अब भी अप तर्जनी को अपने नाक पर बजा रही है. बिलकुल कनु की तरह! ...यह कनु ही है. मन ने अपना फैसला सुना दिया था.

अगर यह स्त्री कनु है तो फिर हंगामाखेज़ रेस्तरां में क्यों है—मेरे दिमाग

रेखाचित्र: जयंतो

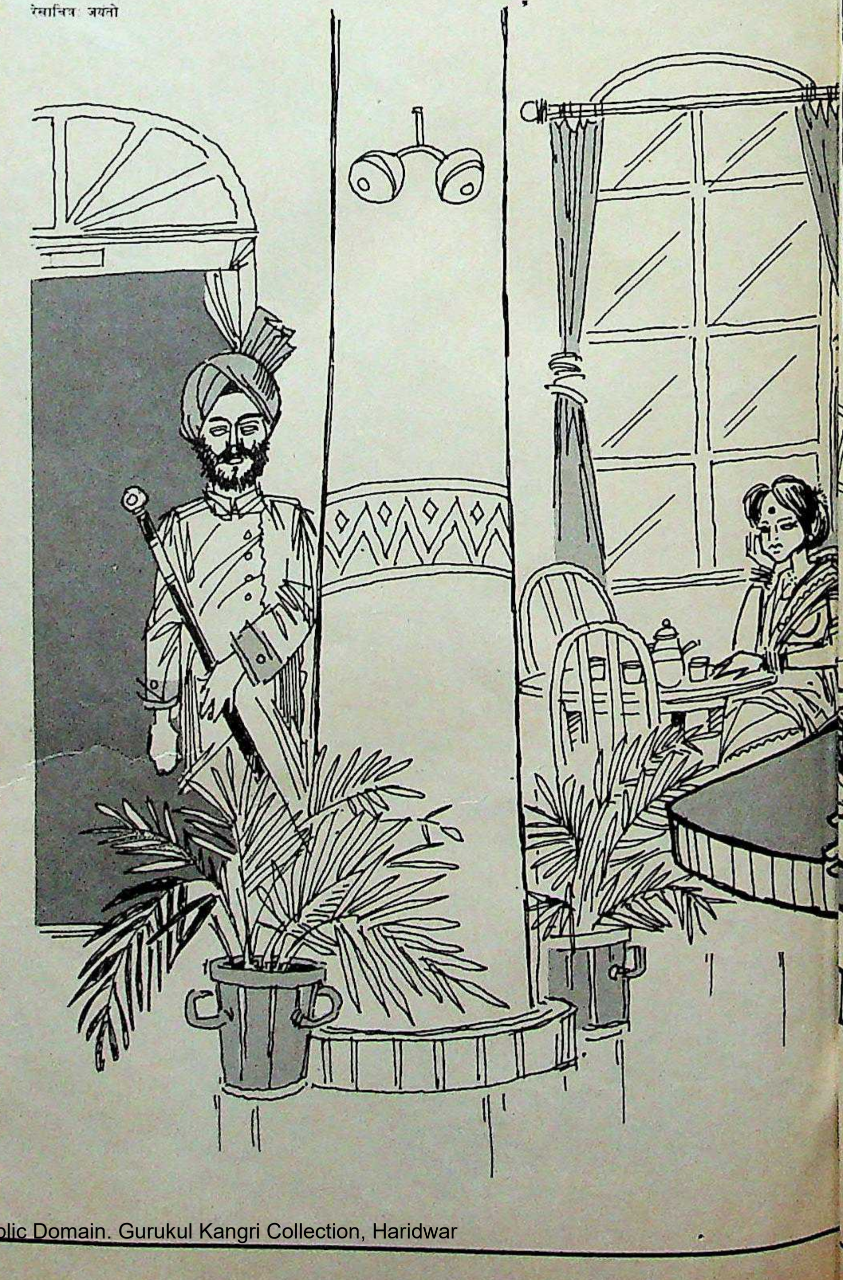

के अलावा
हर गवाह

अब भी अप
जा रही है.
कनु ही है.
ा था.
तो फिर
मेरे दिमाग

ही इसका प्रतिवाद किया.

सने कॉफी में चीनी मिलाने के लिए ब उठाया था. कनु तीन क्यूब चीनी के ी में मिलाया करती थी. देखना है यह ने क्यूब मिलाती है. उसने एक क्यूब ी कप में डाला था. इसके बाद सामने से गुजरने लगे थे और मैं देख नहीं पाया कि उसने कितने क्यूब चीनी के डाले थे. किन चीनी की मात्रा से किसी स्त्री की ान करना शायराना अंदाज भले ही हो, गत बिलकुल नहीं हो सकता.

नु..! मेरी पत्नी! तीन वर्ष तक हम साथ-साथ रहे. हमने प्रेम-विवाह किया और उसके बाद तीन वर्षों तक एक दूसरे के साथ भावनाएं बांटी, जिस्म की खुशबुएं बांटी, धड़कनें बांटी, सांस बांटे, स्पर्श बांटे, अनुभूतियां बांटी, सुख बांटे, दुख बांटे.... और अब यहां मैं उसे पहचान के फ्रेम में फिट कर रहा हूं. यह स्त्री कनु है, और कनु नहीं है—इसी द्वंद्व में घिरा हूं. लेकिन उसके पास जाने से डर रहा हूं. मैं एक खंभे की ओट में हूं. सामने वह स्त्री है. मैं उस स्त्री को जितना ज्यादा पहचान रहा हूं, उतना ज्यादा शंकित, उतना ज्यादा भयभीत, उतना ज्यादा घबरा भी रहा हूं. घबराना लाज़िमी भी है. उसके पास जाकर कैसे बात करूंगा, कैसे परिचय दूंगा, कैसे...? और अगर उसने पहचानने से इनकार कर दिया तो...?

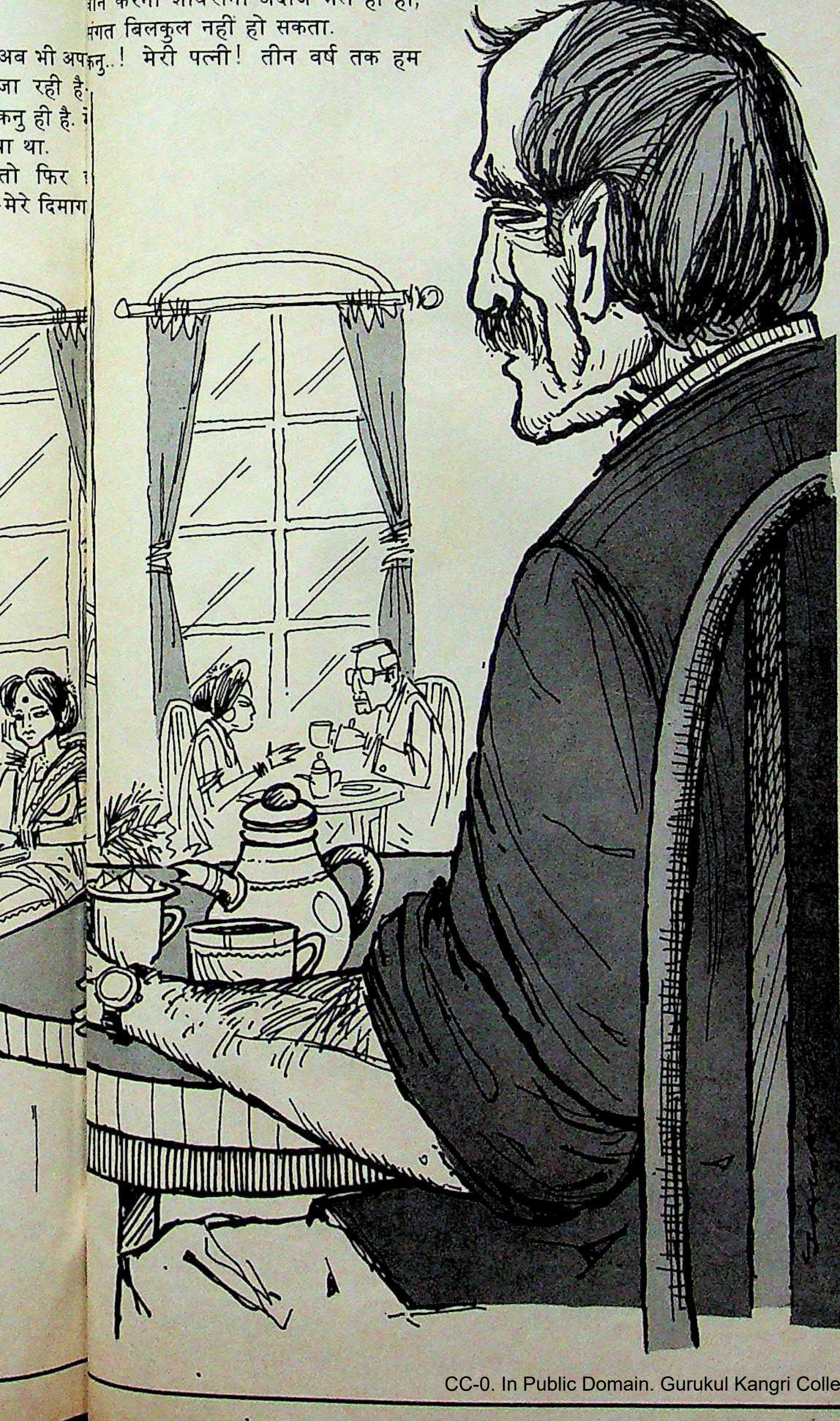

बल्ब की रोशनी में वह वक्त देखने की कोशिश कर रही है. हां, यह कनु ही है. अब मेरे प्रतिवादी ज़ेहन ने भी इस बात को तसलीम कर लिया है. कनु हमेशा बायीं कलाई पर घड़ी बांधती थी. घड़ी देखती तो सोच में गुम हो जाती जैसे वक्त के पेड़ से टूटे लम्हों को उठा रही हो....इसका बायीं कलाई पर घड़ी बांधना, समय देखना और फिर धीरे से कहीं सोच की तलहटियों में उतर जाना—यह सब कनु जैसा.

अब मैं आश्वस्त हो चुका था कि सामने खंभे के परे जो स्त्री बैठी है, वह कनु है. कनु, जो मेरी जिंदगी की अंधेरी गली में सुबह की धूप रखकर विदा हो गई.

अजीब स्वभाव था कनु का. लोग कनॉट प्लेस में खरीदारी करते सजी-धजी दुकानें देखते लेकिन कनु पुराने किले के खंडहरों में भटकती रहती; खामोशियों को सुनती. फिर धीरे-धीरे कहती—पता है ध्रुव, इन खामोशियों में बहुत सारी कहानियां छुपी हैं... पेड़ पौधों को देखकर ठिठक जाती—जैसे उनसे बतिया रही हो. फूलों की किस्में, उनका स्वभाव, बहुत कुछ जानती थी कनु, मानो बॉटनी की प्रोफेसर हो.

सामने खंभे की ओट में कनु बैठी है. वह मुझे नहीं देख पा रही. लेकिन मैंने उसके रग-रेशे को देख लिया है, पहचान लिया है. यह कनु ही है जिसके साथ मैंने किताबें बदलीं, पेन बदले, जिसके साथ उम्र की धूप बदली, एहसास की छांव बदली—इस समय वही कनु सामने बैठी है.

मैं कनु के पास जाना चाहता हूं लेकिन कोई भय मुझ पर हावी होने लगा है. मेरी धड़कनें तेज हो उठी हैं. अतीत के पुराने कैलेंडर, जर्द तारीखों को मेरे सामने खोल रहे हैं. मैं उन तारीखों के घने जंगल में उतरकर भटकने लगा हूं.

कनु ने कितना बड़ा कदम उठाया था. यह उसके भीतर का आत्मविश्वास ही था जो वह अपने माता-पिता, भाई-बहन सबके विरुद्ध तनकर खड़ी हो गई थी. उसके माता-पिता ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था—किसी एक को चुन लो—हमें या ध्रुव को.

कनु ने मुझे चुना था. हम दोनों ने विवाह कर लिया था. माता-पिता के द्वार उसके लिए बंद हो चुके थे. लेकिन कनु ने कभी जिक्र तक

नहीं किया इस बात का.

तीन साल तक हम बहुत अच्छे ढंग से रहे थे. छोटी-मोटी लड़ाइयों की घटा-जमा न करूं तो शेष जो था वह सुखद था.

लेकिन अचानक एक ऐसी बात हो गई थी कि हम एक-दूसरे के खिलाफ़ खड़े हो गए थे... कनु ने खुश होकर बताया था कि वह गर्भवती है. खुश मैं भी हुआ था लेकिन मैंने एक सलाह भी दी थी कि अल्ट्रासाउंड करा ले.

"क्यों?" उसने चिढ़कर पूछा था. मैंने बड़े स्थिर भाव से कहा था—इसलिए कि लड़की हुई तो...

मेरे वाक्य को काटते हुए उसने तिलमिलाकर पूछा था—तो...? तो क्या? मैं गर्भ गिरवा दूं?

"हां!" मैंने तटस्थ होकर कहा था.

"नहीं!" इंपॉसिबल! वह चीख पड़ी थी.

"चीखो मत... मुझे लड़कियों से चिढ़ है." मैंने सिंथेटिक शब्दों में कहा.

"भूलो मत, मैं भी किसी की लड़की हूं. अगर मेरे माता-पिता मेरे जन्म से पूर्व मेरी हत्या कर देते तो..."

"तुम अल्ट्रासाउंड तो करा लो." मैंने थोड़ा नम्र पड़ते हुए कहा.

"करा लूंगी लेकिन भ्रूण हत्या नहीं होने दूंगी." उसने यकीन के साथ कहा था.

अल्ट्रासाउंड से हमें पता चल गया था कि कनु के पेट में जो बच्चा पल रहा है—वह लड़की है.

एक दिन फिर मैंने ज़िद बांधी थी. वह चिढ़कर बोली—"तुम भीतर से इतने गलीज़, कुंठित पाशविक हो, मैं नहीं जानती थी... अगर मैं जानती तो...?" उसने बौखलाकर कहा था.

"तो क्या?" मैंने भी बौखलाहट में पूछा.

"मैं तुमसे विवाह न करती."

"अब भी अलग हो सकती हो." मैंने लापरवाही से कहा.

कनु मुझे देखती रही थी कातर नज़रों से. दीर्घ श्वास लेकर बोली थी—"क्या मैं बासी पड़ गई हूं?"

"कनु, मुझे जज़्बाती मत बनाओ." मैंने दृढ़ता से कहा था.

"ये अचानक क्या हो गया है तुम्हें?" कनु सिहरकर बोली थी.

"मुझे लड़कियां पैदा करने वाली औरतें पसंद नहीं."

बस वही क्षण मुझे अब भी याद है. तत्काल उठी थी कनु, किसी भूखी शेरनी की तरह झपट पड़ी थी मुझ पर, चीखकर बोली थी—"मैं—मैं एक स्त्री हूं. ज़रखेज़ ज़मीन नहीं जिस पर तुम अपनी मनचाही फ़सल उगाओ.. तुम मेरे वजूद को नकार रहे हो...मैं अब नहीं रहूंगी यहां."

पता नहीं मुझे क्या हो गया था? मैं चुपचाप बैठा रहा था. मैं एक घिनौना खेल खेल रहा था—जो मेरे स्वभाव के विपरी
था. कनु भी हैरान थी. हैरान और दुखी.

कुछ पल हम दोनों के बीच डरावनी-
खामोशी बैठी रही थी. कनु उठकर मेरे पा
आई थी. मेरे कंधे पर हाथ रखकर बोली
"मैं जा रही हूं."

उसने सोचा था मैं उसे रोक लूंगा. लेवि
मैं तो ईगो के किले में कैद हो चुका था. मु
मालूम था कनु कहीं भी नहीं जा सकत
अपने माता-पिता से तो वह पहले ही झग
चुकी है. और कोई भी नहीं जो उसे पनाह
मेरे भीतर का 'मर्द' कनु को पूरी तरह त्र
करना चाहता था.

वह कसमसाते हुए उठी थी. सामान बांध
लगी थी. रात के दस-ग्या
बजे थे. उसे सो जा
चाहिए था लेकिन वह वा
रोब से साड़ियों को उत
रही थी. वह हैंगर से सा
को उतारती, फिर मु
देखती. उसकी आंखों
शिकायत थी. उसकी आं
में मर्द की सुलगती दि
सिलाइयां थीं. उसकी आं
में एक उम्मीद भी थी कि
उठूंगा और उसे रोक लूं
रोक लूंगा और बाहों
भरकर कहूंगा— कनु
बच्ची, यह तो नौटंकी थी
लेकिन मैं चुपचाप सिग
फूंकता रहा था. अंधा धुं
कमरे में भटकता रहा था

वह धीरे-धीरे साम
उठा रहा थी. छोटी-ब
वस्तु को उठाने के बाद
मुझे देखती है. उसकी आं
में एक गिला है कि मैं
रोक क्यों नहीं रहा?
छोड़ते हुए उसे तकलीफ़
रही थी. किसी विवाहिता
लिए पति का घर छोड़
रिश्तों की किरचों पर
पांव खड़े होने जैसा है.

दिन निकलने तक
सामान पैक कर चुकी
थोड़ी देर के लिए वह प
पर लेटी थी. एक ओर
था, दूसरी ओर वह थी
जिंदा मांसपिंड की तरह
रहे थे हम दोनों.

सरासर मेरी गलती
लेकिन मैं ऐसे मुंह बना
बैठा रहा था जैसे सारा
कनु का हो. अहम का का
चश्मा लगा लेने के पश्च

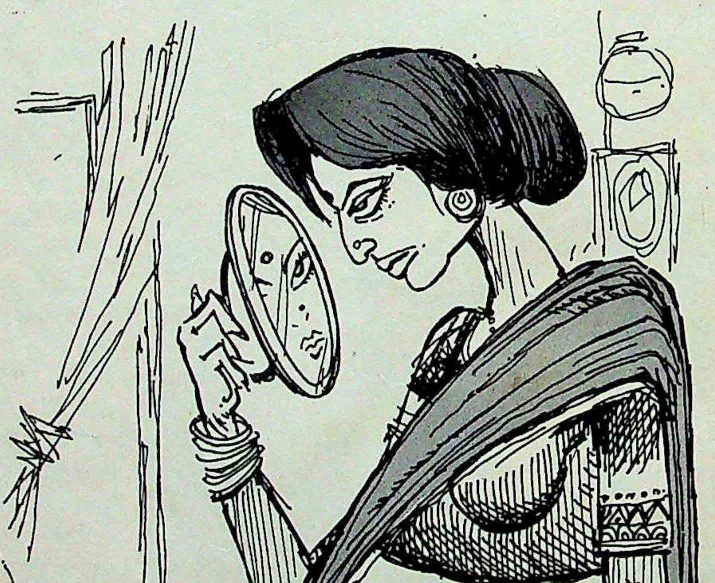

चीखकर वह बोली, "मैं एक स्त्री हूं. ज़रखेज़ ज़मीन नहीं जिस पर तुम अपनी मनचाही फसल उगाओ, तुम मेरे वजूद को नकार रहे हो... मैं अब नहीं रहूंगी यहां"

BPL-Iेत जीवन
है ?
Service

पुस्तकालय
078605
विश्वविद्यालय

Pay for two check-ups. Get a full year's protection.

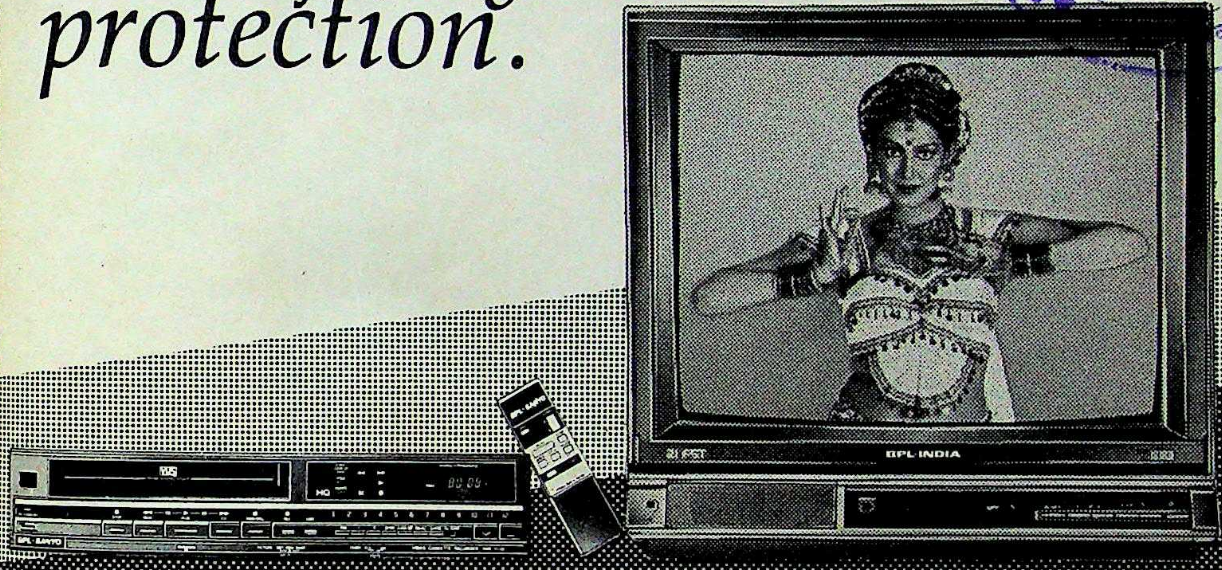

If the warranty on your BPL CTV or VCR has expired, here's good news. Complete Service Commitment - an annual service contract that protects your equipment for one full year. And it costs only Rs.275* for CTVs and Rs.350* for VCRs. Which, you'll admit, costs less than two routine check-ups.

Complete Service Commitment - nothing else is better for your system. Or easier on your pocket.

Contact the nearest service centre or write for details.

* *Sales Tax extra as applicable.*

Committed to giving you quality service - quickly

LEMAS

LEMAS HOUSE, No. 110, Lalbagh Road
Bangalore - 560 027. Ph: 233515/233527
233562/233563 Telex: 0845 8802

R K SWAMY/LEMAS/4780

E44/13, Okhla Industrial Area II, **New Delhi-20**, Ph: 6846573/636000/6846574/6841954. 282 Zone II, Maharanapratap Nagar, **Bhopal-11**, Ph: 64296. Plot No.A-11, Ratlam Kothi, **Indore-2**, Ph: 30755. SCO 2463/64, Sector 22-C, Near Chandigarh Hotel, **Chandigarh-22**. C/o BPL India Limited, Plot No. D/104-III, Meera Marg, Bani Park, **Jaipur-1**, Ph: 69984. C/o BPL India Limited, 13/386, (3) Civil Lines (Behind Green Park Stadium) **Kanpur-1**, Ph: 210505.

नहीं किया इस बात का. [illegible] ती है.

तीन साल तक हम ब[illegible] थी. उसने थे. छोटी-मोटी लड़[illegible] आंखों में बवंडर थे तो [illegible] हुई दिशाहीन अंधियां.

वह गेट के बाहर खड़ी थी. अभी कोई उम्मीद थी उसमें कि मैं भावुक हो उठूंगा. लेकिन मैं झटपट कमरे में चला आया था.

कनु चली गई थी. सचमुच वह मेरा घर छोड़कर चली गई थी. कुछ दिन तक मैं अपनी 'ईगो' के किले में कैद रहा था—देखता हूं. कहां जाती है?...चार दिन में वापस न आ जाए तो... औरत को उसकी औकात बता देनी चाहिए..

कुछ दिन बाद मुझे कनु की कमी महसूस हुई थी. उठते-बैठते, चाय पीते, खाना खाते कनु का न होना मुझे विचलित कर जाता. मैं इधर-उधर भटकने लगता. अपने आप पर झुंझला जाता. अब मुझे एहसास हुआ था कि मैंने कितनी बड़ी गलती की है? .... मेरे पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई थी जब मुझे यह मालूम हुआ कि कनु अपने माता-पिता के घर भी नहीं गई...

कहां गई होगी? मैंने अकुलाकर अपने आप से पूछा था. मैं बेचैन था. बेचैन और डरा-डरा. कहां ढूंढूं?... किससे पूछूं कि कहां है कनु?

दिन-पर-दिन, महीने और साल गुजरते चले गए थे लेकिन कनु का कोई पता नहीं चला था. इधर मैं था कनु के बगैर—आधा-अधूरा, थका-टूटा-सा.

पूरे आठ साल बाद उसे देख रहा हूं—इस रेस्तरां में. मेरी हिम्मत नहीं हो रही कि उठकर उसके पास जाऊं. लेकिन उसे देखकर इतना बेचैन, इतना व्याकुल हो उठा हूं कि मन करता है भागकर जाऊं और लिपट जाऊं कनु से.

क्या वह पहचान लेगी मुझे?... आठ साल में तो पहचान के सभी आईने धुंधले पड़ जाते हैं. यह पहचान भी ले तो क्या सहज होकर मेरा स्वागत करेगी? मैं ही तो हूं उसके भटकाव का जिम्मेदार! और यह भी उम्मीद पालूं कि वह मुझे अपनी बाहों में भर ले—यह तो महज़ खुशफहमी होगी.

मैं उसके पास जाने के लिए धीरे-धीरे उठा था. मेरे दिल की धडकनें तेज हो गई थीं. एक उत्तेजना भी थी और एक द्वंद्व भी.

मैं उसकी टेबल के पास जाकर खड़ा हो गया था. मेरे मुंह से कोई भी शब्द नहीं निकल पाया था. बस्स, टकटकी लगाकर मैं कनु को देखता रहा था. आहट पाकर उसने मुझे देखा था. एक पल के लिए वह अस्थिर हो उठी. यूं अचानक आठ साल बाद मैं उसके सामने आकर खड़ा हो जाऊंगा—उसने सोचा भी न होगा. वह ज़रा हड़बड़ा-सी गई थी. मैं खड़ा हुआ था, वह बैठी थी. नहीं, वह बैठी कहां थी? ऐसा प्रतीत होता था कि वह बेचैनी की नंगी कीलों पर टिकी है. वह स्वयं को बहुत ज्यादा असुविधाजनक महसूस करने लगी थी. उसने मुझे पहचान लिया था, यही शुक्र था. वरना परिचय के लिए शब्द जुटाने कठिन पड़ जाते. क्या कहता—कनु मुझे पहचाना नहीं, मैं तुम्हारा पति हूं.

कुछ पल यूं ही खड़े रहने के बाद मैंने महसूस किया एक चुप्पी हम दोनों के बीच सर पटक रही है. खड़ा रहना मुझे दूभर लगने लगा था. मैंने इधर-उधर देखा फिर कनु को देखा, उसकी नज़रें कॉफी के कप पर गड़ी थीं.

मैं कुर्सी खींचकर बैठने लगा. तभी ऐसे लगा जैसे कनु को करंट लगा हो—कुछ इस तरह वह चौंककर बोली—प्लीज़, इस कुर्सी पर मत बैठिए...

मैं हड़बड़ा-सा गया. हाथ में पकड़ी कुर्सी को छोड़कर कनु को देखने लगा.

कनु मेरी आंखों में अटका प्रश्नवाचक देखकर तनिक मुस्कराई, बोली—अभद्रता के लिए क्षमा चाहती हू लेकिन क्या है कि अभी मेरे पति आने वाले हैं, वे इस पर बैठेंगे....

"पति..?."

"हां पति!... मेरे पति और साथ वाली कुर्सी पर भी मत बैठना प्लीज, उस पर मेरी बिटिया बैठेगी.. मेरी बिटिया.... ध्रुवस्वामिनी."

"ध्रुवस्वामिनी...आपकी बिटिया?"

"हां वही बिटिया जिसकी तुम भ्रूण हत्य करना चाहते थे."

"क्या मैं बिटिया से मिल सकता हूं?"

"नहीं."

"लेकिन...?"

"मैं अपने छोटे-से परिवार में किसी तीसरे का दखल सहन नहीं कर सकती."

"तीसरा....तीसरा यानी मैं!"

मैं रेस्तरां से निकलकर बाहर आ गया था. मुझे ऐसा लगने लगा था कि जैसे मैं एक आईना हूं और खुद से ही मुंह छुपाकर भाग रहा हूं.

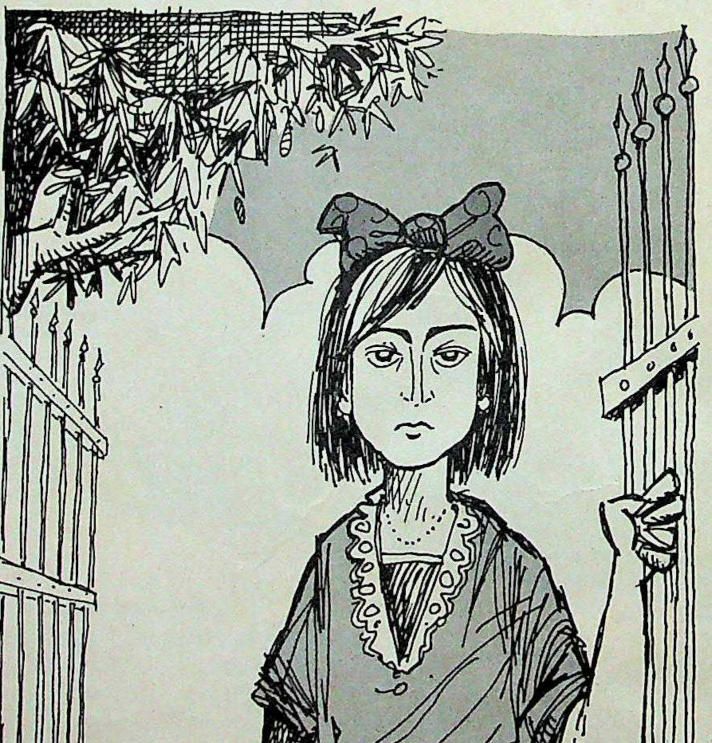

"...साथ वाली कुर्सी पर ...मेरी बिटिया बैठेगी... ध्रुवस्वामिनी." "ध्रुवस्वामिनी... आपकी बिटिया?" "हां वही बिटिया, जिसकी तुम भ्रूण हत्या करना चाहते थे"

उचित गर्भनिरोधक के बिना विवाहित जीवन आखिर कब तक सुखी रह सकता है ?

कोहिनूर

बेहतरीन गुलाबी कॉन्डोम

आप दोनों का प्यार ही आपको एक-दूसरे के इतने निकट ले आया है। ऐसा प्यार जो विवाह के बन्धन में बन्धने व मिलकर ज़िम्मेदारियाँ निभाने से बढ़ता और सुदृढ़ होता है। किसी भी विवाहित जीवन को सुखी बनाए रखने के लिए आवश्यकता होती है ऐसे दो व्यक्तियों की जो उसे आपस के विश्वास, भरोसे व घनिष्टता से भर दें। साथ ही एक दूसरे को सुखी रखने के लिए इतने समर्पित हों कि एक ऐसे गर्भनिरोधक का चुनाव करें जो दोनों के अनुकूल हो।

ऐसा गर्भनिरोधक जो सम्पूर्ण सुख व सुरक्षा प्रदान करने के लिए शरीर पर अनुचित प्रभाव नहीं डालता, कष्टकर डाक्टरी जाँच को आवश्यक नहीं बनाता व दिन गिनने और तापमान मापने की चिन्ता व तनाव को दूर रखता है। ऐसा सुरक्षित, आसान व विश्वसनीय गर्भनिरोधक है कॉन्डोम।

KOHINOOR
PINK LUXURY CONDOMS
A TTK Product

विश्वसनीय कोहिनूर

हज़ारों युवा दम्पत्ति अपने बच्चों के जन्म में उचित अन्तर रख अपने परिवार का नियोजन विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे करते हैं। कोहिनूर आपके मिलन के सुख में बाधा डाले बिना बहुत सहज ढंग से आपको सम्पूर्ण आनन्द प्रदान करता है। यह उच्च कोटि के लेटेक्स रबड़ से बनाया जाता है। सम्पूर्ण सुरक्षा प्रदान करने के लिए इसकी इलेक्ट्रॉनिक जाँच की जाती है। कोहिनूर के निर्माता आपकी एकांतता व सुरक्षा की आवश्यकता को भलिभाँति समझते हैं। कोहिनूर — इसे नाम लेकर ही खरीदिए और विश्वसनीय कोहिनूर के सहारे निश्चिन्त हो जाइए।

कोहिनूर तीन कॉन्डोम व दस कॉन्डोम के पैकेटों में उपलब्ध है।

ttk उत्पादन

परिवार नियोजन — विश्वसनीय कोहिनूर के संग।

COMMUNICATIONS 917A HIN

कविता संग्रह

नया धरातल

देशज बिंबों का सुंदर प्रयोग

प्रस्तुत संग्रह में कवि-पत्रकार प्रताप सिंह की कविताएं कुछ बीते दशक से पहले की हैं तो कुछ अत्यंत नई भी. यह संग्रह एक कालखंड में हुए-अनहुए का मर्म, दंश, व्यंजना को समेटे हुए है. इस दौरान व्यक्ति और समाज, राजनीति और देश के संबंधों में ऐसी होनी-अनहोनी घटनाएं घटी हैं जिससे कई-कई बार 'भूचाल' से गुजरने का एहसास होता आया है. शायद इस एहसास की पीड़ा ही इन कविताओं की ताकत है और सीमा भी.

अक्षर
कविता संग्रह
प्रताप सिंह
जयश्री प्रकाशन,
शाहदरा, दिल्ली
कीमत: 40 रु.;
कुल पृष्ठ: 100

मुक्तिबोध ने कभी लिखा था, "असल में नई कविता मानसिक तरंगों (प्रतिक्रिया) का चित्रण करती है. ये तरंगें क्षणस्थायी हैं. उनका महत्व तो तब चिरस्थायी होगा जब पूरे जीवन को प्रभावित करने लायक क्षमता धारण करेंगी." प्रताप का कवि-कर्म इससे इतर जाने को सचेष्ट लगता है. हालांकि अपेक्षाकृत नई कविताओं में यही सीमा अनुभव की व्यापकता के आड़े भी आती है. लेकिन उनका शिल्प और देशज बिंबों को उकेरने की उनकी सतत कोशिश ही उन्हें औरों से अलग करती है. देशज शब्दों का प्रयोग कहीं-कहीं चौंकाता है पर इनसे कथ्य को निस्संदेह एक नया धरातल भी मिल जाता है.

कवि ने इन कविताओं को तीन खंडों में बांटा है—'इतना सुंदर संसार', 'देखे जाने से परे' और एक निर्णायक स्थिति'. "नए मनुष्य अपने मशीनी खुरों से/रौंद डालेंगे उनका यह सुंदर संसार/तो वे युगल शावक खौफ से देखेंगे... इस 'निर्मम-संसार' को!!" 'गाम-गुहांड' के इस सुंदर संसार के बिखरने, टूटने का एहसास कवि में गहरा है. 'टिटहरी' भी अब "चाह की राह छोड़—'टेह' और 'कोतरी' की भाखा" बोलने लगी है. इन बिंबों से एकबारगी आज की दुरावस्था की आग मन में धधकने लगती है.

लेकिन इसके बावजूद इन कविताओं में उस तत्व का संकेत कहीं-कहीं ही मिलता है जो हमारे काल में सतह पर दिखने वाली तमाम उथल-पुथल के बीच में व्यक्त-अव्यक्त रूप में कहीं है. कवि चूंकि पत्रकार भी है इसलिए उसमें अखबार में काम करने वाले अदना स्याहीजीवी लोगों का दंश तो है पर वह 'संपादक की कलम से निकला हुआ ब्रह्मास्त्र' से परे 'खबरों की इस दुनिया' का अव्यक्त रूप नहीं दिखा पाता.

संकलन में आदमी के बारे में संचित बिंबों के टूटने और इस टूटन की पीड़ा को आत्मसात की हुई कई कविताएं हैं. 'लड़की', 'दूसरी लड़की', 'औरत', 'मां' ऐसी ही कुछ कविताएं हैं. 'कुछ और आत्मस्वीकृतियां' में भी कवि मानो आज की प्रतिस्पर्धा के जुए से जुड़े शहरी लोगों और निखालिस बुद्धिजीवियों पर सटीक टिप्पणी करता है. इस संग्रह में 'शमशेर', 'सर्वेश्वर' जैसे कुछ कवियों पर भी कविताएं हैं. इन कविताओं में कल्पना का विस्तार दिखता है. बहरहाल, कविताओं की भाषा, शिल्प, व्यंजना, उनमें निहित भाव कवि से काफी उम्मीदें जगाती हैं. इस लिहाज से यह संग्रह महत्वपूर्ण है.

—**हरिमोहन मिश्र**

कथा संग्रह

विकारों का संसार

एडल्टरी के बोझ में दबी रचना

डॉ. मोतीलाल जोतवाणी की कथाकृति 'नियमित' में तीन उपन्यासिकाएं संकलित हैं. यह तीन पात्रों के माध्यम से कही गई एक ही पात्र मि. लाल की कहानी है जो अपनी मध्यवर्गीय हैसियत से महानगरीय जीवन के दबावों, खासकर (सेक्स) संबंधी नैतिकता के सवालों से घिरा है.

नियमित
कथा संग्रह
डॉ. मोतीलाल जोतवाणी
राजेश प्रकाशन, कृष्ण नगर,
कृष्ण नगर, दिल्ली.
कीमत: 40 रु.;
कुल पृष्ठ: 108

लेखन पर पड़ रहा दबाव वास्तव में आदमी पर पड़ रहा दबाव ही है. महानगरीय जिंदगी (जहां लेखक अक्सर रहते हैं) इतनी फुटकर और विपर्यस्त हो गई है कि लेखन में उसका असर साफ नजर आता है. हालांकि लेखक ने भूमिका में लिखा है, "ये लोग, पीली बत्ती पर, नियमित—तीनों 'मॉरल विज़न' या नैतिक दृष्टि की उपन्यासिकाएं हैं."

'ये लोग' एक ऐसे नवयुवा की कहानी है जो शहर से नौकरी करने महानगर आ गया है. पिता की बीमारी का तार पाकर भी वह इस द्वंद्व में है कि पिता को देखने आगरा जाए या कमरे पर कॉलगर्ल रेखा और फ्रिज में लगी बियर के साथ रहे. अंततः कॉलगर्ल द्वारा प्रबोधित होकर वह अपने पिता को देखने तो चला जाता है लेकिन उस हावी जीवन की तर्कहीनता और संबंधहीनता का बोध निरस्त नहीं होता. वह एक वकील से अपनी बहन की बेइज्जती का बदला लेने जाता है. लेकिन "मदन को दिल्ली वाले अपने छोटे कमरे और रेखा की याद हो आई. उसने सोचा हम सब हमाम में नंगे हैं." वह बहन का बदला लिए बिना ही लौट आता है.

'पीली बत्ती पर' का कथानायक मनोहर पत्नी और वेश्या की भूमिकाओं के नैतिक सवाल में उलझा है. मनोहर पत्नी से जबरदस्ती संभोग की प्रक्रिया में होता है कि उनकी बेटी जग जाती है. अतृप्त मनोहर रात को एक ऐसे अड्डे पर जाता है जहां रात भर पुरुषों का 'मनोरंजन' होता है. वहां से निकलते हुए उसे अपने प्रोफेसर देशपांडे भी मिलते हैं. इसमें लेखक शायद अतृप्त कामवासना लिये भटकते विवाहितों की पीड़ा को बताना चाहता है.

'नियमित' का घटना स्थान विदेश मे है—अमेरिका. मोहनलाल वहां किसी अकादमिक मिशन पर गया हुआ है. ए स्त्री लेडा उसे एक द्वीप पर भारती दृष्टिकोण से स्त्री स्वातंत्र्य पर बोलने लिए ले जाती है. वहां मोहनलाल पौराणि अर्द्ध-नारीश्वर के बिंब से स्त्री स्वातंत्र्य क भारतीय व्याख्या देता है. स्त्री स्वातंत्र्य क प्रसंग वास्तव कहानी की नायिक 'लेडा के जीवन-संद से जुड़ा है जो अप बच्चे के साथ पति अलग रहती शरीर की मांग पूर्ति के लिए वह न्यू यॉर्क में मर्द खरीदत है. अपने बेटे का उ ध्यान नहीं रहता.

ये तीनों उपन्यासिकाएं 'एडल्टरी' बोझ तले दबी हैं. समाज में व्यक्त विकृ कामवासना की पहचान कराती हैं. लेकि पात्रों के सोच और आचरण में लेखक खु घुलता-सा लगता है. कथाकृति की भा सहज और प्रवाहयुक्त है. शिल्प का निर्वा भी लेखक कर पाया है.

—**प्रेम सि**

40 out of 51 Prize Winners

Used

ROLON

SPECIAL CHAIN

33rd All India Motor Race Meet at Sriperambudur

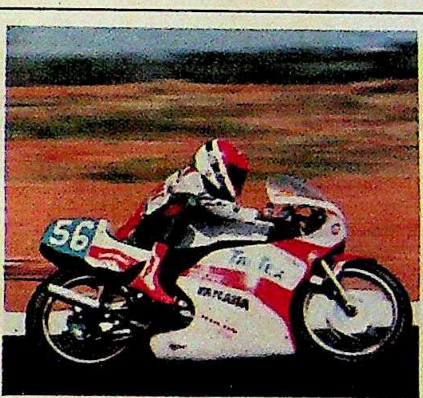

TVS-SUZUKI
ROLON
CHAIN
KAWASAKI-BAJAJ
ROLON
CHAIN
Special
YAMAHA
ROLON
CHAIN
Special
HERO HONDA
ROLON
CHAIN

15 Outright Wins !

25 placings !

STATISTICS	
Number of Rolon Chains used	40
Number of Imported Chains used	2
Number of Other Chains used	9

Motor Cycles events 100CC and above

MAA COMMUNICATIONS 9029

ROLON-*The Champion of Champions*

अरुणाः 'देसी' का नशा

पुरानी भट्ठी

रेखा की इतनी ठेठ पब्लिक ज़बान में तारीफ करने के लिए पब्लिक के शौक, खास तौर पर बंबई की पब्लिक के शौक की पहचान तो होनी ही चाहिए. और **अरुणा ईरानी** चूंकि बंबई के गहरे गली-कूचों में बचपन बिता चुकी हैं, उनसे ज्यादा इस ज़बान से आखिर परचा हुआ कौन हो सकता है?

जिक्र हो रहा था हाल में प्रदर्शित 'बहूरानी' का. इस फिल्म में रेखा के साथ .अरुणा ईरानी का वह डांस दर्शकों ने बहुत पसंद किया है जिसमें सहेलियों की हिंदुस्तानी अंदाज की छेड़छाड़ है. जब से नीलम और किमी काटकर जैसी मॉडर्न लड़ि ने वेस्टर्न डांस के साथ दोहरे वाले लटके-झटके मिलाकर पीढ़ी को भरमाना शुरू किया, खांटी चुहल देखने को नहीं मिल थी. रेखा की ही तरह अरुणा ने शरीर की देखभाल में कोई कसर छोड़ी नहीं है इसलिए उ अदाओं का जादू भी बरकरा लेकिन फिर भी मांग कम हो से पैदा हुई खटास उनकी बात कहीं झलक ही आई.

'बहूरानी' की बात और अ की तारीफ हुई तो अरुणा ने आई लड़कियों को दरकिनार हुए कहा, "वेस्टर्न डांस हिंदुस्तानी दर्शकों को मजा नहीं जो दिनभर की थकान मि सिनेमाघर में आते हैं. उन्हें पहली धार की देसी बोतल जैस नशा चाहिए जो उन्हें चित क हल्के नशे से उनका कुछ बनता और नए नुस्खे से तेज नौटांक व नहीं. उसके लिए तो किसी न गिरामी, बार-बार आजमाई पुरानी भट्ठी की मदद लेनी पड़ती है."

एक और कीर्तिपताका

गोरा रंग, लंबा कद, भरे-पूरे शरीर में मांसल गोलाइयां और उन्हें दिखाने को मचलता मन इससे ज्यादा और क्या चाहिए किमी काटकर बनने को? ऊपर से अगर रास्ता भी वही हो जिससे होकर किमी ने अपनी कीमत आनन-फानन बढ़ा ली थी तब भला प्रोड्यूसर क्यों न दौड़ें नई नवेली बाला की ओर? और क्यों करें अफसोस इस बात का कि किमी शादी करके फिल्म इंडस्ट्री छोड़ रही हैं?

'किमी काटकर को भुला देने की कसम खाकर' परदे पर कदम रखा है कुमारी **कीर्ति सिंह** ने. किमी की पहली फ़िल्म 'टारजन' की तरह उसकी भी पहली फिल्म जंगल पर ही है, 'जंगल लव'. टारजन के हीरो की तरह उसका हीरो रॉकी लंबा तगड़ा नौजवान है जिसके मुकाबले नायिका कहीं ज्यादा कोमल और सुंदर नजर आती है. कीर्ति सिंह को चुंबन दृश्यों से जरा भी परहेज नहीं ('किमी को भी कब था?') और फिर 'सुंदर शरीर तो दिखाने की चीज है ही!'

बेचारी किमी! उसने भला यह कब सोचा था कि यह क्रूर इंडस्ट्री जहां उसने प्यार-पैसा-जवानी सभी कुछ खोया, सभी कुछ पाया, इतनी जल्दी उसे भुलाने की तैयारियां शुरू कर देगी?

कीर्तिः किमी को चुनौती

झूठा आत्मविश्वास

जिस बात को लोग गोवि बुरे दिनों की शुरुआत मान र गोविंदा का आत्मविश्वास उ अपने रोबदाब का असर म कह रहा है— 'क्या हुआ जे फिल्म 'तांडव' से हटा दिया ग मुझे काम की कमी है, न प्रो को हीरो की.' लेकिन 10 रील फिल्म के हीरो को हटाना पड़ यह बात हीरो के पक्ष में नहीं खास तौर से तब जब विपक्षी भी कोई मामूली नहीं, हिंद मशहूर कवियत्री माया गोविंद हो. 'तांडव' के निर्माता के नाम चाहें जिसका जाए जानते हैं कि वह फिल्म माया गोवि बना रही हैं.

गोविंदा इस फिल्म में डबल कर रहे थे और अब इसमें दो लिए जाने की बात हो रह गोविंदा इस खबर से भी खुश यह मानकर चल रहे हैं वि काम वे अकेले कर सकते थे कराने को दो हीरो लगेंगे दोगुना खर्च, दोगुनी भागदौड़

इंडस्ट्री का अंदाजा है कि य जिसे 'स्टार ट्रेंड्रम्स' माने हुए में उसका अनुवाद 'दुर्दिन' ही

CC-0. Gurukul Collection, Haridwar

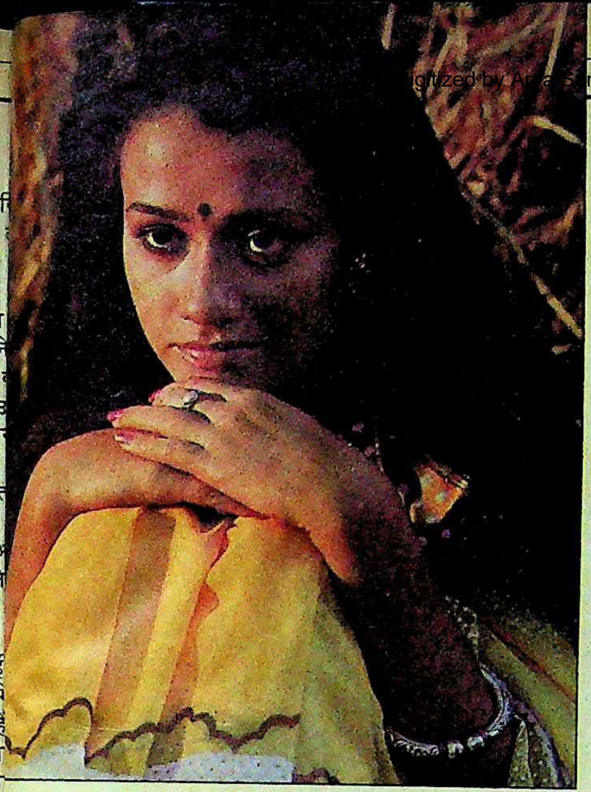

खट्टा हुआ मन

दौर थोड़े-थोड़े दिन में लौट-ता ही है. हीरोइनों की एक ड़ी शादी के लिए बावली हो है और फिर फिल्म जगत में ओं का अकाल पड़ता मालूम गता है.

किमी काटकर और नीलम शादी की राह पर हैं ही, फरहा भी किसी भी दिन बिंदू के साथ घर बसाने की घोषणा कर सकती हैं. सोनम और राजीव राय ने एक हो जाने का फैसला कर ही लिया है. खबर है कि 'पुष्पक' से तहलका मचाती आई हीरोइन **अमला** ने भी अब शादी का

अमलाः घर बसाने की तैयारी

मन बना लिया है.

हिंदी फिल्मों में अमला के पांव अभी जमे भी नहीं थे. फिर वे पांव भारी करने की राह पर क्यों चल पड़ीं? इसकी सबसे बड़ी वजह बताई जाती है बंबई में उन्हें मिला गलत व्यवहार. यह बात अमला ने कई बार कही थी कि बंबई के हीरो और निर्देशक उंगली छूकर कलाई पकड़ लेने में ज्यादा देर नहीं लगाते. जबसे उनको लेकर बनाई जा रही अकबर खां की फिल्म 'कहते हैं मुझको कृष्णा' रुकी और उसे फिर से शुरू करवाने की कोशिशों में 'मदद' देने के लिए अमला को बाध्य किया जाने लगा तबसे उन्होंने पक्का फैसला कर लिया कि अब हिंदी फिल्म जगत में अगला कदम रखना ही नहीं है.

'शिवा' फिल्म के कर्ताधर्ता के साथ घर बसाने का अमला का फैसला अकबर खां पर गाज बनकर गिरा है. अपनी हीरोइन को इस बात के लिए मनाने के खातिर मद्रास के उनके चक्कर लगातार बेकार ही साबित हुए हैं. अकबर उन्हें यह समझा पाने में नाकाम रहे कि अमला अपने फैसले पर फिर से विचार कर देखें.

खेलना आग से

र यह गम-दो चार दिन तो कोई बात कभी-कभी यूं का कर लेना भी करता है. चूंकि खबर विपरीत है **माधवी** के कों को ना स्वाभा-है. माधवी कौन-सा गम है जो उन्हें बोतल में डूब जाने को बाध्य कर रहा है? मुहब्बत में निराशा, परिवारवालों की बेरुखी अथवा अकेलेपन का एहसास? हालांकि पूछने पर माधवी ने तीनों ही बातों का जोरदार खंडन किया पर इस बात से इनकार भी नहीं कर सकीं कि बंबई में उनका दोस्त कह सकने लायक कोई नहीं है और वे शामें अकेली, कमरे में बंद काटना ज्यादा पसंद करती हैं.

लेकिन भीतरी जानकारी यह कहती है कि माधवी की निराशा कैरियर को लेकर है. उम्दा शरीर की यह मालकिन डांस भी अच्छा जानती है और अच्छी शुरुआत के साथ ही हिंदी फिल्मों में आई थी. जाने कहां क्या कमी रह गई. गम की जिस धीमी आंच को वे बोतल में बुझा रही थीं उसमें घी पड़ गया 'अग्निपथ' की असफलता से.

गमगुसारी

परीक्षित की परीक्षा

टेलीविजन पर जब दिवंगत बलराज साहनी की फिल्म 'सीमा' दिखाई गई तभी से **परीक्षित साहनी** के भाव घर बैठे बढ़ने लगे हैं.

लेकिन वे इस बात से परेशान हैं कि सीधा प्रसारण की तरफ जाता उनका सीरियल 'गुल-गुलशन-गुल-फाम' यह किस चपेट में आ गया? निर्देशक वेद राही के साथ उन्होंने इसकी शूटिंग तीन महीने तक कश्मीर में की. लेकिन जबसे कश्मीर में दंगे-फसाद शुरू हुए तबसे थोड़े बहुत बचे हुए काम के लिए कश्मीर जाने का हर कार्यक्रम रद्द ही होता रहा है. इतना ही नहीं, यह भी जरूरी कर दिया गया कि इस सीरियल की सारी शूटिंग दिल्ली दरबार में दिखाई जाए.

और तो और, उन्हें लेकर जो एक बड़ा असरदार सीरियल बनाया जाने वाला था वह सिर्फ इसलिए उनके हाथ से छूट गया कि उनकी पत्नी ने अपने सजे-सजाए घर में शूटिंग की इजाजत नहीं दी.

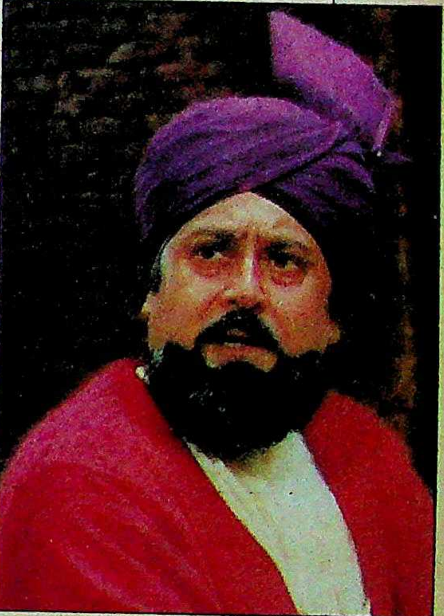

परीक्षितः परेशानियों की मार

Dig Samaj Foundation d eGangotri

◆ पिछला पखवाड़ा फिल्मी हस्तियों की शादियों की शहनाई के स्वरों से गूंजता रहा. कुछ जोड़ियां परिणय सूत्र में बंध गईं तो कुछ बंधने की तैयारी में नजर आईं. इनमें सबसे चर्चित शादी रही, 37 वर्षीया अभिनेत्री **रेखा** और दिल्ली के 36 वर्षीय व्यवसायी **मुकेश अग्रवाल** की. टेलीफोन पर परवान चढ़ा यह प्रेम प्रसंग छह हफ्ते में शादी के मंडप तक पहुंच गया.

▲ मुकेश और रेखा: शहनाई की गूंज

प्रशात पंजियार

स्वभाव के विपरीत रेखा ने अपनी शादी की शहनाई के स्वरों को धीमा ही रखा. वजह: उनके पति उनके जीवन के सबसे चर्चित व्यक्ति—अमिताभ बच्चन—से कई मायने में एकदम उलट हैं. लेकिन तेरह साल की उम्र में तकदीर आजमाने के लिए मध्यवर्गीय घर से भागे मुकेश की जिंदगी रंक से राजा बनने की कहानी है. बहरहाल, हॉटलाइन स्टोव से सफलता की सीढ़ियां चढ़ने वाले मुकेश अब 'हॉट' रेखा के स्वामी बन गए हैं.

लेकिन 39 वर्षीय **ओम पुरी** और 30 वर्षीया टीवी अभिनेत्री **सीमा कपूर** का पवित्र गठबंधन में बंधना एकदम अप्रत्याशित नहीं था. दो साल से चले आ रहे इस रोमांस की विवाह में परिणति 28 फरवरी को झालावाड़ (राजस्थान) में हुई. सीमा पर वे क्यों रीझे, इसके जवाब में कक्का जी कहिन—''सीमा अपने आसपास की जिंदगी में दिलचस्पी लेती है और उसका नजरिया व्यापक और उदार है.''

मगर जिस शादी का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है, वह है सुपरहिट 'त्रिदेव' के निर्माता **राजीव राय** और सेक्सी **सोनम** की. कई महीनों से चल रहे इस रोमांस की खबर लोगों को तब लगी जब एक फिल्मी पत्रिका ने उनसे सच उगलवाकर छाप दिया. बकौल सोनम, ''एक लड़की के लिए इससे ज्यादा रोमांचक कुछ और हो ही नहीं सकता.'' राय कहते हैं, ''मे माता-पिता को सोनम पसंद है किसी फिल्मी हीरोइन से अपने इकलौते बेटे के रोमांस की खबरों से वे जरा भी परेशान नहीं हैं.'' है 'ओए, ओए' करने वाली बात?

एक और फिल्मी जोड़ा ज विवाह बंधन में बंधने जा रहा है वह है **किमी काटकर** और फोटो ग्राफर **शांतनु शिओरे** का. बाक अभिनेत्रियों के विपरीत किमी क टिप्पणी थी, ''जिंदगी के ये दि मुझे बहुत याद आएंगे.''

क्या यह एहसास उन्हें फि कैमरे के सामने लौटने पर मजबू नहीं कर देगा?

▲ पुरी और सीमा: कक्का और काकी?

नामम भोजानी

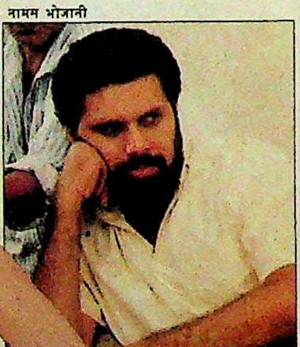

◀ किमी और शांतनु: कैमरे के आरपार

▲ राजीव और सोनम: ओए, ओए

ह और हो ही
कहते हैं, "मेरे
नम पसंद है
इन से अपने
त की खबरों से
नहीं हैं." है न
ाली बात?
ी जोड़ा ज
ने जा रहा है
र और फोटो
रे का. बाक
रीत किमी क
ी के ये दि
ी."
स उन्हें फि
ने पर मजबू

ा:

नीनम:

जोड़ी अनोखी मेल अनोखा
THE OFFICIAL POLISH JOKE BOOK
WILLS
FILTER TIPPED
STATUTORY WARNING
CIGARETTE SMOKING IS INJURIOUS TO HEALTH
HTA 3742

वर्षों पहले विल्स फ़िल्टर ने शुरू किया था सिगरेटों में फ़िल्टर का चलन। आज भी है यह सबसे बढ़िया। स्वाद में। तसल्ली में। हाथ से चुने वर्जीनिया तम्बाकू और शानदार फ़िल्टर के मेल का अनोखा संगम—विल्स फ़िल्टर। लाखों सिगरेट प्रेमियों ने इसे आज़माया... फिर हमेशा के लिए अपनाया।

WILLS
FILTER

क चेतावनी:
गरेट पीना स्वास्थ्य के लिए
निकारक है

y Warning
ARE SMOKING IS
URIOUS TO HEALTH

फ़िल्टर और तम्बाकू का अनोखा मेल

एक छोटा-सा कारण
एक सुरक्षित स्कूटर लेने के लिए

बेहतर स्थिरता के लिए बेहतर संतुलन

तुरंत रुके फिसले नहीं

खतरनाक स्थितियों से निकाल ले जाने के लिए शक्तिशाली इंजन

आगे तथा पीछे दिशासूचक इंडिकेटर

LML
vespa

बेहतर सुरक्षा. बेहतर डिज़ाइन.

Compiled
10-9-200[illegible]